कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(४) महर्षि दयानन्द उवाच

● आप महाराज कुमार की शिक्षा के लिए किसी मुसलमान व ईसाई को मत रखिए। नही तो महाराज कुमार इनके दोष सीख लेगे और आपके सनातन राजनीति को न सीखगे। न वेदोक्त धर्म की ओर उनकी निष्ठा होगी। क्योकि बाल्यावस्था मे जैसा उपदेश होता है वही दृढ हो जाता है। उसका छूटना कठिन है। महाराज कुमार के सस्कार सब वेदोक्त कराइयेगा।

● परमात्मा की इस सृष्टि मे अभिमानी अन्यायकारी अविद्वान् लोगो का राज्य बहुत दिन तक नही चलना।

Delhi - 9, 16, 24, 30, 31, 32, 34, 35, 42-49, 58, 2 = (12)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र | दूरभाष । ३२७४७७१ | वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे

वर्ष ३१ अंक १] दयानन्दाब्द १६८ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९३ फाल्गुन कृ० ८ सं० २०४९ १४ फरवरी १९९३

महर्षि दयानन्द सरस्वती का १६९वां जन्मदिवस विश्वभर की आर्य समाजों द्वारा फा०वदी १० तदनुसार १६-२-९३ को उत्साह पूर्वक मनाये जाने की जोरदार तैयारियां

एक सप्ताह का वेद प्रचार कार्यक्रम, पूर्णाहुति ऋषिबोध दिवस पर

दिल्ली मे मुख्य समारोह तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम मे मनाया जायेगा

राष्ट्रीय जागरण के अग्रदूत, महान् वेदोद्धारक एव आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का १६९वा जन्म दिन आगामी १६ फरवरी १९९३ को तदनुसार फा० वदी दशमी सम्वत् २०४९ को पूरे विश्व की आर्य समाजो द्वारा उत्साह पूर्वक मनाने की जोरदार तैयारिया चल रही है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने बताया कि दिल्ली की समस्त आर्य समाजो गुरुकुलो, आर्य समाज के विद्यालयो और डी०ए०वी० शिक्षण सस्थाओ की ओर से १६ फरवरी १९९३ को दिल्ली के तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम मे महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म दिवस पूरे समारोह के साथ सम्पन्न होगा।

स्वामी जी ने समस्त आर्य समाजो को निर्देश दिया कि महर्षि के जन्म दिवस के उपलक्ष मे एक सप्ताह का वेद प्रचार कार्यक्रम रखा जावे। इस अवसर पर सामूहिक यज्ञ, विद्वानो द्वारा वैदिक सिद्धान्तो के अनुसार जीवन चर्या अपनाने पर बल तथा महर्षि के जीवन की घटनाओ पर उपदेश तथा विद्यालयो मे विभिन्न प्रतियोगिताओ का आयोजन किया जावे और बृहद् यज्ञ की पूर्णाहुति ऋषि बोध दिवस के अवसर पर यानि १९ फरवरी १९९३ को की जावे।

स्वामी दयानन्द सरस्वती पूरी मानव जाति के युगद्रष्टा थे, उनका कार्यक्षेत्र वेद प्रतिपादित वैदिक सिद्धान्तो के आधार पर पूरी मानव जाति के कल्याण का था। अत इस अवसर पर भारत सरकार तथा राज्य सरकारो से महर्षि के जन्म दिन पर सरकारी अवकाश की जोरदार माग की जावे।

महर्षि दयानन्द जन्मदिवस

१६ फरवरी १९९३ तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम नई दिल्ली मे स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे। मुख्य अतिथि आन्तरिक गह राज्यमन्त्री श्री राजेश पायलट।

ऋषि बोधोत्सव

१९ फरवरी १९९३ को दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान मे दक्षिण केसरी प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव की अध्यक्षता मे होगा। मुख्य अतिथि मुख्यमन्त्री चौधरी भजनलाल जी होगे। अन्य और भी नेता पधारेगे।

मुसलमानों की दारुल हरब और दारुल इस्लाम की सोच देश की राष्ट्रीय धारा में बाधक

नई दिल्ली ७ फरवरी।

विवादित स्थल की खुदाई करके अब पूरी खोज-बीन करा ही लेनी चाहिये कि वहा मन्दिर था या नही। यह बात समाजवादी पार्टी के सासद उदय प्रताप ने "अयोध्या आगे क्या" विषय पर हुई एक गोष्ठी में कही। इस गोष्ठी मे प्राध्यापक रत्नाकार पाडय, स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, यशपाल जैन, श्री निवास शर्मा और पत्रकार अनिल नरेन्द्र ने अपने विचार रखे। गोष्ठी की अध्यक्षता श्री यशपाल जैन ने की।

गोष्ठी मे बोलते हुये स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी ने कहा कि आज कुछ मुसलमानो के दिमाग मे इस्लाम का झण्डा फहराने की बात है और यह एक मौलाना सोच है। जब तक मुसलमानो के दिमाग से दारुल हरब और दारुल इस्लाम की भावना को दूर नही किया जाता, मुसलमान कभी भी देश की राष्ट्रीय धारा से नही जुड सकता। उन्होने कहा कि अब तो काशी और मथुरा के बारे मे भी कहा जा रहा है लेकिन यह तो भविष्य की बात है इस समय मुख्य

(शेष पृष्ठ १६ पर)

सम्पादक डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सत्यार्थ प्रकाश में क्या है

सविता गायकवाड़, जबलपुर

सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास का प्रारम्भ "शन्नो मित्रः" इस मन्त्र से हुआ है। इससे आगे तत्तिरीय आरण्यक का नमो ब्रह्मणे सन्दर्भ उद्धृत है इस प्रकार इसमें "जो कहूंगा सत्य कहूंगा सत्य के अतिरिक्त कुछ भी न कहूंगा" इस प्रकार की प्रतिज्ञा है। सर्वप्रथम परमेश्वर के मुख्य नाम "ओ३म्" का विवेचन है। इसमें प्रत्येक अक्षर से तीन-२ नामों का ज्ञान होता है, जैसे अकार से विराट, अग्नि, विश्वादि।

उकार से हिरण्यगर्भ, वायु, तैजस।
मकार से ईश्वर, आदित्य, प्राज्ञादि।

इस प्रकार व्यापक होने और वेदादि शास्त्रों में उल्लेख होने से ओ३म् नाम परमेश्वर का मुख्य नाम है।

सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में शिक्षा का विधान किया गया है। स्वामीजी के अनुसार शिक्षा का अभिप्राय केवल साक्षरता नहीं है, सत् संस्कार पूर्वक ज्ञान प्राप्त करना वस्तुतः शिक्षा है। इसमें स्वामी जी महाराज ने प्रतिपादित किया है कि वह कुल धन्य होता है और उस कुल की सन्तान बड़ी भाग्यशाली होती है जिनके माता पिता धार्मिक और विद्वान हो।

सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में माता-पिता व आचार्य के मुख्य कर्तव्यों का निर्देश किया गया है। और नीति शतक के श्लोक का भावार्थ देते हुए वाणी को ही वास्तविक आभूषण कहा गया है। इसमें इतिहास व पुराण का अर्थ बताते हुए वैदिक मत मानने का उल्लेख है। इसमें ब्रह्मचर्य, पठन-पाठन व्यवस्था और पढ़ने-पढ़ाने की भी रीति है।

सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में समावर्त विवाह संस्कार व गृहस्थाश्रम की चर्चा की गई है। इसमें वेद विरुद्ध वचनों को स्वीकार न करके वेदानुकूल आचरणों का निर्देश है। तथा मनु के अनुसार गृहस्थाश्रम की उच्चता के लिए चार श्लोक प्रस्तुत किए गए हैं।

पांचवे समुल्लास में वानप्रस्थ व संन्यास का विधान किया गया है शतपथ के उदाहरण के साथ ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थाश्रम और संन्यासाश्रम पालन करने का विधान है। संन्यास ग्रहण करने का अधिकार ब्राह्मण को देते हुए पात्रता की स्थिति में सभी वर्णों को दिया गया है।

छठवें समुल्लास में राजधर्म की व्याख्या करते हुए क्षत्रियों के कर्तव्य का सर्वप्रथम उल्लेख हुआ है इसमें राजा व प्रजा के परस्पर सम्बन्ध में विवाद के अठारह स्थान व उनके निर्णय का विषय है। इसमे मनु के अनुसार राजा द्वारा कर-ग्रहण विहित है।

सातवें समुल्लास का प्रारम्भ ईश्वर के गुणो के "वर्णन में चार वेदमन्त्रों को उद्धृत करते हुए किया है। बहुदेवताओ" के सम्बन्ध मे प्रश्न उठाते हुए तैंतीस देवताओ की चर्चा है। यहीं पर जीव ईश्वर के स्वरूप और गुण कर्म स्वभाव की चर्चा है।

आठवें समुल्लास मे सृष्टि उत्पत्ति व प्रलय के विषय का व्याख्यान है। वेदो के मन्त्रो, दर्शनों के सूत्रों, उपनिषद वचनो से परमेश्वर को जगत का निमित्त कारक बतलाया है। यहां पर जगत उत्पत्ति के तीन कारणो की चर्चा की गई है।

नौवें समुल्लास में विद्या अविद्या, बन्ध, मोक्ष का व्याख्यान किया गया है। सर्वप्रथम यजुर्वेद के अन्तिम अध्याय के मन्त्र से विद्या व कर्म से मोक्ष की प्राप्ति बतलाई है। इसमें योग से चित्त-वृत्ति निरोध व त्रिविध दुखो से छुटकारा पाने के लिए अत्यन्त पुरुषार्थ का विधान है।

दसवें समुल्लास में आचार-अनाचार का लक्षण करते हुए मनु प्रोक्त धर्म को सार्थक उद्धृत किया है। धर्म के साथ विशेष कर्तव्यों का भी कथन है।

ग्यारहवें समुल्लास में आर्य्यावर्त्तीय मत मतान्तर के खण्डन मंडन का विषय है। ईश्वर के अतिरिक्त किसी को देव नहीं मानना चाहिए। धर्म कभी अलग नहीं होते सत्य धर्म होता है। सब को इसका पालन करना चाहिए। इस प्रकार एक जिज्ञासु सभी मत मतान्तरों से परिचित हो सत्य ग्रहण कर अपने मत का प्रचार प्रसार शुद्धि कार्यों को करना योग्य है। यह स्वामी जी की मान्यता है।

बारहवें समुल्लास मे चार्वाक, बौद्ध व जैन मत का विषय है। चार्वाक मत का प्रवर्तक बृहस्पति नामक पुरुष था, उसके विचार से शरीर ही जीव है। उसके नाश से सब नष्ट हो जाता है। बौद्धों की चार प्रमुख शाखाएं हैं। जैनियों के मत से जीव ही परमेश्वर हो जाता है। ईश्वर के बिना सृष्टि का निर्माण सम्भव नहीं है।

तेरहवें समुल्लास में ईसाई मत का विषय है। इसके प्रारम्भ में बाइबिल के तौरेत का विषय लिखा है। बाइबिल में पृथ्वी का बेडौल होना लिखा है। इसमें आकाश, पृथ्वी की रचना का अवैज्ञानिक वर्णन देखने में आता है।

चौदहवें समुल्लास मे मुसलमानों के मत का विषय है। कुरान ईश्वर रचित नहीं हो सकता क्योंकि अल्लाह के साथ आरम्भ करने वाला स्वयं अल्लाह नहीं दूसरा और कोई होना चाहिए, जो ईश्वर सब पर दयालु है, वह मांस खाने की आज्ञा कैसे दे सकता है, दूसरों को मारने की आज्ञा कैसे दे सकता है। कुरान कभी भी ईश्वरीय ज्ञान नहीं हो सकता।

सार्वदेशिक सभा की प्रमुख बैठकें

(१) २६-२-९३ को धर्मार्य सभा की बैठक धर्माधिकारी डा० भवानी लाल भारतीय की अध्यक्षता मे आर्य समाज दीवान हाल में होगी। इस बैठक में प्रमुख विद्वान पधार रहे हैं।

(२) सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग बैठक २७-२-९३ को और वार्षिक अधिवेशन २८-२-९३ को दीवान हाल मे होगा।

स्वामी दयानन्द का जन्म दिन मनाइये

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

संम्मत् अठारह सौ इक्यासी—जन्मे दयानन्द संन्यासी,
फाल्गुन वदी दशमी को कभी न भुलाइये।
सत्य के पुजारी का, अटल व्रतधारी का,
स्वामी दयानन्द जी का जन्म दिन मनाइये॥
परम पुरातन कल्याणी को, पवित्र वेदवाणी को,
सकल विश्वभर में घर-घर पहुंचाइये।
राष्ट्र-रक्षार्थ को बढ़े कदम, रहे अग्रसर हम,
नई जवानियों में चेतनता लाइये।
राम-कृष्ण की सन्तान, करें वेद यशगान,
नाशकारी भारी कुप्रथायें मिटाइये।
घोर अविद्या की रात, लाओ नूतन प्रभात,
सौख्यप्रद ज्ञान की ज्योति जलाइये।
विविधि विकारों की धार, अटकी नैया मंझधार,
जन गण जलयान डूबने से बचाइये।
देश धर्म हित प्यार, करें वेदों का प्रचार,
वैदिक ऋचाओं की ध्वनि गुनगुनाइये।
स्वामी दयानन्द का जन्म दिन मनाइये
संम्मत् अठारह सौ इक्यासी, जन्मे दयानन्द संन्यासी,
फाल्गुन वदी दशमी को कभी न भुलाइये॥
जन्म दिन मनाइये॥

महर्षि दयानन्द सरस्वती

पथ सत्यम् शिवम् सुन्दरम् का,
धारणा ध्यान से प्राप्त हुआ।
ऋषि दयानन्द आनन्द कन्द,
इस युग प्रभात में आप्त हुआ।
मथ कर साहित्य सिन्धु गहिरा,
सत्याथ प्रकाश दिया जग को।
तमसो मा ज्योतिर्गमय छन्द,
द्यौः अन्तरिक्ष में व्याप्त हुआ॥

भारत को 'दारुल हरब' मानने वाले राष्ट्रीय नहीं

—स्व० पं० दीनदयाल उपाध्याय—

क्या कभी भारत का मुसलमान राष्ट्र की मुख्य धारा से जुड़ पाएगा? उत्तर है हां! लेकिन एक शर्त है, उसे भारत पर शासन करने की राजनीतिक महत्वाकांक्षा और आक्रामक मानसिकता का त्याग करना होगा। इस सन्दर्भ में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एक लेख का यह सम्पादित अंश आज भी प्रासंगिक है।

अखण्ड भारत के विषय में प्राय: लोग अपनी भावनाएं और शंकाएं प्रकट करते हैं। वे पूछते हैं कि यह कैसे बनेगा? कुछ लोग कहते हैं कि यह बन ही नहीं सकता। हममें से जिनकी श्रद्धा अखण्ड भारत में है, वे भी पूछते है कि यह अखण्ड भारत होगा कैसे?

फिर एक और प्रश्न पूछा जाता है कि किन किन देशों को मिलाकर अखण्ड भारत बनेगा? अखण्ड भारत मे बर्मा (म्यानमार) और पाकिस्तान को मिलाना चाहिए, यह विचार अवश्य उत्पन्न होता है, पर सामान्यत: लंका और नेपाल अखण्ड भारत में आते हैं या नहीं, यह पूछा नहीं जाता! यह क्यों?

जब नेपाल हमसे अलग हुआ, तब लोगो के अन्त:करण में 'देश का विभाजन हुआ है' ऐसा भाव उत्पन्न नहीं हुआ। किन्तु जब पाकिस्तान का निर्माण हुआ, तब जनता के अन्त:करण में यह भाव जाग्रत हुआ कि यह तो देश का विभाजन हुआ। जब नेपाल का निर्माण हुआ, तब जनता ने इसे 'विभाजन' नहीं माना और अब भी जनता इसे विभाजन न मानकर अपना ही देश मानती है, भले ही वहा का राजनीतिक सगठन भिन्न है। लेकिन यही बात पाकिस्तान के विषय मे दिखाई नही देती, जनता इसे देश के विभाजन के रूप मे देखती है, यह क्यो? इन दो दृष्टिकोणो के बीच का अन्तर समझने के लिए 'भारत की राष्ट्रीयता क्या है' समझ लेंगे, तब कठिनाई नही होगी।

इस प्रकार का विभेद उत्पन्न करने वाला तत्व पाकिस्तान था। पर नेपाल ने हमारी सस्कृति व एकात्मता का विरोध किया है, ऐसा कही भी दिखाई नही देता।

यह हमारी परम्परागत विशेषता है कि हम 'राज्य' और 'राष्ट्र' को एक नही मानते और साथ ही साथ यह कभी हमारा दृष्टिकोण भी नही रहा कि राजनीतिक दृष्टि से भारत और नेपाल एक बने। बहुत से लोग राज्य और राष्ट्र मे अन्तर नही समझते।

नेपाल मे रहने वाला नेपाल का नागरिक रहेगा। परन्तु राष्ट्रीय दृष्टि से हम और वे अलग नही है। राजनीतिक दृष्टि से हम, आग्ल-भारतीय और मुसलमान भारत के नागरिक है पर राष्ट्रीयता की दृष्टि से हममे, आग्ल-भारतीयो और मुसलमानो मे जमीन-आसमान का अन्तर है।

मुस्लिम समस्या—

हमारे देश में मुसलमानो के सम्बन्ध मे बड़ा भ्रम पाया जाता है। वे मस्जिद मे जाते है इस आधार पर हमने कभी उनका विरोध नहीं किया। पन्थ उप-पन्थ को हम कभी महत्व नहीं देते। 'एकम् सद्विप्रा: बहुधा वदन्ति' ऐसा हम कहते है। सत्य एक है पर तत्ववेत्ता उसे अलग-अलग तरह से प्रकट करते है। इसी आधार पर हम ईश्वर को गणेश, शिव, विष्णु आदि के रूप मे पूजते हैं। यदि किसी ने मोहम्मद की पूजा की तो भी आपत्ति की बात नहीं। परन्तु जो मुसलमान मोहम्मद का अनुयायी है, यदि वह अनुयायी मात्र ही हो तो कोई चिन्ता की बात नहीं, पर चिन्ता का विषय यह है कि मुसलमान बनने के बाद उसकी प्रकृति ही बदल जाती है। वह राष्ट्र से अलग हो जाता है और राष्ट्र के लिए शत्रु हो जाता है। जब यह स्थिति उसकी हो जाती है तब हिन्दू और मुसलमान में भेद दिखाई देता है।

एक समय श्री गुरु जी की विनोबा जी से भेंट हुई। बातचीत के दौरान विनोबा जी ने संघ के कार्य सम्बन्धी बातचीत मे कहा कि 'संघ मुसलमानो का शत्रु है' और इस पर चर्चा प्रारम्भ हुई। उन्होने कहा मुसलमानो मे भी भले आदमी हैं। तब श्री गुरु जी ने कहा– 'हम मुसलमानों के शत्रु नहीं हैं। पर विचारणीय बात यह है कि हिन्दू व्यक्तिश: बुरा हो सकता है लेकिन सामूहिक रूप से वह अच्छा ही है, इसके विपरीत व्यक्ति रूप मे मुसलमान अच्छा हो सकता है, पर सामूहिक रूप मे वह बुरा ही है।'

'सहिष्णु' और 'असहिष्णु'—

हममे धार्मिक सहिष्णुता बहुत है। हिन्दू समाज मे हमे ऐसे असख्य उदाहरण देखने को मिलते है कि एक ही परिवार मे रहकर वे विभिन्न पन्थो की उपासना करते है। यदि पति आर्यसमाजी है और पत्नी हनुमान जी की भक्त है, इस कारण उनमे झगडा हुआ हो ऐसा कभी दिखाई नही देता। परन्तु जब कोई मुसलमान बनता है तो वह तुरन्त नयी प्रकृति ग्रहण करता है। मुसलमान बनते ही पहला विचार यदि कोई करेगा तो वह यह कि सारी दुनिया को मुसलमान बनाऊगा। केवल इतना ही विचार हो तो वह खराब नही है। हमने भी कहा है 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम'। इस प्रयत्न को हमने कभी द्वेषपूर्ण दृष्टि से नही देखा। किन्तु मुसलमान समझता है कि जो मुहम्मद को मानता है वह अपना है और जो नहीं मानता वह काफिर है। इस तरह वह दूसरे धर्मो के प्रति असहिष्णु है।

भारत के कुछ मुसलमान कहते है कि इस्लाम उनका मजहब भी है और संस्कृति भी। लेकिन संस्कृति का सम्बन्ध देश और राष्ट्र के साथ होता है। मजहब के साथ उसका कोई सम्बन्ध नही रहता इसलिए इस्लाम को 'सस्कृति' कहना गलत है। आज अफगानिस्तान, इण्डोनेशिया, अरब ये सभी देश इस्लाम मजहब को मानने वाले हैं पर प्रत्येक की संस्कृति भिन्न है। उसी प्रकार ईसाई मजहब जो फ्रांस, ब्रिटेन, अमरीका आदि मे है, वह तो एक ही है, पर उनकी सस्कृति एक-दूसरे से भिन्न है। इस तरह यदि यहां का मुसलमान अपनी मुस्लिम सस्कृति अलग समझता है तो उसकी वह कौन सी विशेष संस्कृति है? भारत की संस्कृति से भिन्न यदि उसकी संस्कृति है तो यह देश उसका कैसे हो सकता है? इसलिए कहना पड़ता है कि अलग संस्कृति की बात करने वाला यहां का अधिसंख्य मुसलमान राष्ट्रीय नहीं है हिन्दुस्तान

(शेष पृष्ठ १५ पर)

हम गंगा को पवित्र मानते हैं, तो वह डायग्रस और यूफ्रेटिस को पवित्र मानता है। कोयल और कमल हमारे साहित्य वर्णन में अद्वितीय स्थान प्राप्त किये हैं। इसके विपरीत वह बुलबुल और नरगिस को अपने साहित्य का आलम्बन बनाता है। हमारे यहा हिमालय पर्वत को श्रद्धा का स्थान मिला है, पर वह कोयकाफ पर्वत को श्रद्धा की दृष्टि से देखता है। जब आर्य समाज ने शुद्धि आन्दोलन चलाया, उस समय मुसलमानों ने एक गीत बनाया—

'मेरे मौला बुला ले मदीना मुझे।'

यह गीत आर्य समाज के विरुद्ध रचा गया था। इसलिए इसकी अन्तिम पक्ति इस प्रकार थी—

'यहा न जीने देगे आर्य मुझे।'

इस तरह यहा का मुसलमान संकट के समय मदीना की याद करता है।

ऋषि तुम्हें प्रणाम

डा० महेश विद्यालंकार

देव दयानन्द ! तुम इस धरा पर एक विचार, चिन्तन, प्रेरणा एवं आदर्श बनकर आए थे। तुम्हारे समग्र व्यक्तित्व और कृतित्व ने इस भूमण्डल पर ज ं आलोक विकीर्ण किया, वह युगों तक वन्दनीय व स्मरणीय रहेगा। तुमने अपनी संजीवनी-शक्ति से मानव-परिवार समाज राष्ट्र, नारी आदि जिसे भी स्पर्श किया, उसे ही नव-जीवन की प्रेरणा से भर दिया। तुम्हारे दिए हुए ही अमर-सन्देश के फलस्वरूप ही गुरुकुलों, आश्रमो मन्दिरो और धर्मस्थानो पर आज पवित्र वेद मन्त्रो का श्रवण, मनन और चिन्तन हो रहा है। तुम्हारी ही दिव्यवाणी के सिंहनाद से समाज में व्याप्त अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियां, रूढ़ियां, अज्ञान मिटा था। तुम्हारे ही पुरुषार्थ से ईश्वर, वेद, यज्ञ, धर्म, संस्कार आदि का सच्चा व सीधा स्वरूप देखने को मिला था। तुम्हारी ही कृपा से स्वधर्म, स्वदेश स्वसंस्कृति, स्वभाषा और स्वस्वरूप का दिग्दर्शन हुआ। तुम्हारी ही दयासे नारी जातिको वेद-धर्म-शिक्षा का अधिकार मिला। तुम ही ने सत्य को जीवित रखने के लिए संसार को सत्यार्थ प्रकाश की मशाल दी। तुम ही थे, जिन्होंने "सिंह को कुतिया का साथ अच्छा नहीं होता' का सत्य बोलकर जीवन का खतरा मोल लिया था। तुम दया के अनन्त भण्डार थे, जिन्होने अपने प्राण घातक को क्षमा और धन देकर दूर भागने का परामर्श दिया था। तुम्हारा ही चमत्कार था कि मृत्यु के क्षणो में गुरुदत्त को आस्तिक बना दिया। तुम्हारी ही शक्ति थी जिसने मृत्यु के अध्याय मे जीवन का अमर सन्देश दिया। यह तुम्हारी ही निस्पृहता थी जिन्होने कहा था मेरी मृत्यु के पश्चात मेरा कोई स्मारक न बनाना। मैं तुम्हारे महत्व एव सत्य कल्याण कामना का चिन्तन कहा तक करूं ? यह मेरी अल्प विषयामति से परे है। यदि संसार के महापुरुष तराजू के एक पलड़े पर रखे जाय, और ऋषि तू दूसरे पलड़े पर रखा जाय तो मैं विश्वास और दृढ़ता के साथ कह सकता हू कि मेरे ऋषि का पलड़ा भारी होगा। क्योकि तेरे आद्यन्त जीवन में कोई, किसी प्रकार की त्रुटि नहीं थी। कभी तूने अपने लिए सोचा ही नही था ? मदमाता यौवन तूने भूखे, रहकर तप और त्याग मे गुजार दिया। तूने जीवन मे कहीं स्वार्थ नाम, पद, लोभ, अहंकार नही आने दिया। जीवन भर गाली, अपमान, पत्थर, जहर पीता रहा। उसके बदले संसार को सत्यमार्ग और जीवनामृत लौटाता रहा। शायद हम अज्ञानी भारतीयों के पास तुझे देने के लिए यही था ? तू इसे हंसते हंसते झेलता रहा, पीता रहा और ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है" का सन्देश दे गया। तेरे ऋण और उपकार अनन्त है।

सोचता हू ऋषि ! सच हम भारतीयो ने तेरा मूल्याकन ही नहीं किया। यदि तू कही यूरोप की भूमि पर पैदा हुआ होता तो संसार तेरी देवदूतो की तरह पूजा करता। दुनियां तेरे चित्रो को श्रद्धा भक्ति, पूजा सम्मान के साथ सिर पर उठाकर नाचतीं। ससार तेरे जीवन्त उपदेश सन्देशो को धरती के कोने कोने मे फैलाता। तेरे जीवन की एक एक घटना को दुहराता। तेरे मानवतावादी अमर सन्देशो को शिला लेखो और स्तूपो पर खुदवाता। तेरे लगाए पौधे को महान वटवृक्ष का रूप दे देता। तेरे एक एक शब्द को शाश्वत् व चिरन्तन बना देता ? तेरी मसीहो की तरह पूजा करता ?

किन्तु हाय ! ऋषि क्या कहू ? क्या लिखूं ? मन पीड़ा से पीड़ित है। तेरे अनुयायियो ने तेरे नाम पर व्यापार शुरू कर दिया है। तेरे नाम को उच्चता, पवित्रता और दिव्यता से गिराकर साधारण कोटि मे लाया जा रहा है। किसी ने संस्था, किसी ने सस्थान, किसी ने, प्र शन, किसी ने ट्रस्ट किसी ने आश्रम, किसी ने मैरिज ब्यूरो, किसीने कालेज, किसी ने बस रेल यात्राए, न जाने क्या क्या तेरे नाम पर खोल लिए हैं ? जहां मात्र स्वार्थ अहंकार पद-मद धन की पूजा होती है। मात्र लेबल के तौर पर तेरा नाम है काम बिल्कुल छूट रहा है। समाज मन्दिरो से धार्मिकता सात्विकता पवित्रता-स्वच्छता लोप हो रही है। अधिकांश धर्मस्थल मात्र रविवार को खुलते हैं। अनुयायियो में धार्मिकता आस्तिकता नैतिकता एवं सेवा त्याग की भावना घट रही है। इसीलिए स्कूल और दुकानें खोलने की ललक व फैशन बढ रहा है। जो घातक बनेगी।

कभी कभी जोश उठता है तो तेरे नाम पर जलसे जलूस, उत्सव और सम्मेलन करके लंगर खाकर अपने को सन्तुष्ट कर लेते हैं। तेरे मन्तव्यों और सिद्धान्तों की खुलेआम धज्जियां उड़ाई जा रही हैं। तूने जो कहा था। आर्य वह है जो ईश्वर और वेद में विश्वास करे जिसमें ज्ञान गति प्राप्ति, सदाचार नैतिक मूल्य और जो खान-पान से शुद्ध हो। किन्तु तेरे कुछ धर्मध्वजी मांस-मदिरा और अण्डो में लिप्त होते हुए भी सबसे ऊंचे, पक्के, पहले अपने को अनुयायी बताते हैं। उन्हीं का बोलबाला है। तेरे बलिदानी अनुयायियों ने जिन गुरुकुलों, संस्थाओ, आश्रमो, मन्दिरो और संगठनो को बनाया था। उनकी हालत आज बड़ी ही चिन्तनीय और गम्भीर है। वहां बाह्य चिह्न ही शेष है क्रियात्मक आचरण और जीवन पर प्रश्नचिह्न है। तेरे तथाकथित अनुयायी तेरे नाम को इतना सस्ता, हल्का, विकृत बना रहे हैं कि श्रद्धालु भावनाशील, भावुक व्यक्ति दूर हटने लगे है। तूने जिन बातों का खण्डन और निषेध किया था। अधिकांश लोग उन्हीं को अपनाते जा रहे है। सर्वत्र पदलिप्सा, अधिकार, स्वार्थ अहकार, ईर्ष्या द्वेष की विषाक्त भावना फैल रही है। कहां तक गिनाऊं तेरे अनुयायी ही तेरे किए कराए पर पानी फेर रहे हैं। इसके बावजूद भी इनके चेहरो पर कही भी पीड़ा बेचैनी, चिन्ता और अफसोस नही है। उन्हें ग्लानि और प्रायश्चित नही है कि हम मूल आर्यत्व की भावना से कट रहे है। हम अपने स्वार्थ अहंकार एवं पदलिप्सा के कारण एक महापुरुष के मिशन को पीछे कर रहे हैं।

हम आपका जन्म दिन मना रहे हैं आपको याद करने के नाम पर रिवाजी मेला जुड़ेगा पर नहीं यह आकुलता व्याकुलता नहीं है कि आज का दिन हमारे लिए आत्मचिन्तन आत्मनिरीक्षण और आत्मविश्लेषण का है। उनके गुण-कर्म स्वभाव, योगदान का चिन्तन मनन करें। संकल्प व्रत ले कि हम अपने जीवन को सुन्दर पवित्र एवं उपकारी बनायेंगे। कुछ सोचो, विचारो, अपने को बदलो तभी हम ऋषि को प्रणाम करने के अधिकारी बनेंगे। अन्यथा बातें, भाषण लेख, सम्मेलन और उत्सव सुनते, पढ़ते, जीवन गुजरा जा रहा है। फिर कुछ हाथ न लगेगा ? पुन: उस पुण्यात्मा-ऋषि को अनेकश: प्रणाम।

स्वामी दयानन्द के तप को

स्वामी दयानन्द के तप को, हमे समझना ही होगा।
वरना सुन लो दुनियां वालो ! पशु तुमसे बेहतर होगा ॥
आर्य समाजी कहते आज, हम हैं सच्चे ऋषि सन्तान।
फिर भी देख रहें 'चित्रहार', साथ में अन्य अवैदिक कार्य।
जो पत्थर पडा अक्ल पर, उसको आज हटाना ही होगा ॥
राजन् ! मत कर कुतिया संग, पुरखों सम तू कर सत्सग।
पर अब चारो ओर कुसग, शिथिल पड़ रहे मनुज के अंग।
ऐसी घोर निशा मे, ब्रह्मचर्य अपनाना ही होगा ॥
राष्ट्र का पतन देख ऋषिराज, व्यथित हो उठते बारम्बार।
धर्म हित सहते कष्ट अपार, चतुर्दिक करते वेद-प्रचार।
ओ३म्-ध्वज की छाया मे, अखिल विश्व को आना ही होगा ॥
बन चुके थे जब हम निष्प्राण, बनाकर ऋषि ने 'आर्यसमाज'।
पूर्ण की अपने गुरु की चाह, दिखाकर जग को सच्ची राह।
सत्य-पथ पर चलने का, साहस हमें दिखाना ही होगा ॥
जगाने वसुन्धरा के भाग्य, चल पड़े जो वैदिक इन्सान।
दीप सम जलकर बने महान्, वही हैं सच्चे ऋषि-सन्तान।
बढ़ते 'आर्य पुत्र' के कदम मे, कदम मिलाना ही होगा ॥

—पं० रामाज्ञा 'आर्य पुत्र'
(बौद्धिकाध्यक्ष, आर्य वीर दल पूर्वी उ.प्र.)

एक अद्वितीय ऋषि—महर्षि दयानन्द सरस्वती

—डा० जयसिंह 'सरोज'

महर्षि दयानन्द के आविर्भाव से पूर्व प्राचीन वैदिक संस्कृत साहित्य हेय एवं वेद गडरियों के गीत समझे जाते थे। अथर्ववेद को पढ़ना गाली समझा जाता था। वेदों की देवता समझकर मूर्तियां बनायी जाने लगी थी। लोग वेद के नाममात्र से परिचित थे। वेद में क्या है इससे पूर्ण अपरिचित थे। परिणाम स्वरूप पोर्चगीज पादरी ने ईसाई मत युक्त कल्पित यजुर्वेद की रचना कर डाली। आज भी यह वेद पेरिस के पुस्तकालय में मौजूद है। भारतीयों ने स्वराज्य, स्वराष्ट्र, स्वदेशी की भावना का परित्याग कर दिया था। ये अपनी ही संस्कृति से नफरत करने और आंग्ल संस्कृति एवं भाषा के मोह व्यूह में फंस गए थे। अशिक्षा, बाल विवाह, पशुबलि, नरबलि आदि पाखण्ड कुरीतियां समाज में व्याप्त थी।

महर्षि इन सामाजिक एवं राजनैतिक बुराईयों को समूल नष्ट कर सांस्कृतिक पुनरुत्थान के प्रणेता थे। स्वराज्य, स्वराष्ट्र, स्वभाषा स्वदेशी के मन्त्रदाता थे। अफसोस है कि ऋषि द्वारा किये गये मूर्ति पूजा खण्डन पाखण्ड निवारण, ब्राह्मणवादी व्यवस्था की आलोचना आदि के कारण लोगों ने ऋषिवर को जानने का यत्न ही नहीं किया। ऋषि क्या थे उनकी अर्न्तभावना, अर्न्तवेदना क्या थी इसे समझ न सके। वास्तव में वह अद्वितीय ऋषि ही नहीं बल्कि ब्रह्मर्षि थे। वह ज्ञान, कर्म एवं भक्ति के द्वारा मानवमात्र का कल्याण चाहते थे।

अनेकों विदेशियों यथा ह्यूम, एन्ड्रूज, मेक्समूलर एनीबेसन्ट, हेस्टिंग्ज, संत रोमांरोल्या, प्रासि बिलान आदि तथा भारतीयों यथा योगीराज अरविन्द, सांस्कृत्यायन, वास्वानी, जैनेन्द्र कुमार, महाकवि निराला एवं टैगोर, सबीवा बेगम, डा० राजेन्द्र प्रसाद, सर सैय्यद अहमद खां, स्वामी श्रद्धानन्द, मदनमोहन मालवीय, तिलक, लाला लाजपतराय आदि ने महर्षि को जानने समझने का यत्न किया था। इन्होंने महर्षि को युग स्रष्टा, युग सृष्टा, युग गौरव, योगीवर, वेदों वाला, महर्षि वेदोद्धारक, अछूतोद्धारक, नारी उद्धारक, विशाल हृदय, प्रबल सुधारक संस्कृतज्ञ, आध्यात्मवेत्ता, श्रेष्ठ पुरुष आदि नामों से अलंकृत किया। खेद है भारतीय राजनीतिक महर्षि से अपरिचित बने रहे।

महात्मा गांधी ने कहा था 'मैं जैसे-२ प्रगति करता हूं वैसे-वैसे मुझे महर्षि दयानन्द का मार्ग दिखाई देता है"। काश देश के राजनीतिक महात्मा गांधी की इस बात का अनुकरण करते तो आज देश स्वराष्ट्र स्वदेश की भावना से ओत प्रोत होता। अलगाववाद, आतंकवाद, जातिवाद प्रदेशवाद, भाषावाद का कहीं नाम न होता।

ऋषि दयानन्द वैचारिक क्रान्ति लाना चाहते थे। पुणे के प्रवचन में महर्षि दयानन्द ने कहा था "यदि मैं चाहूं तो वेदों के आधार पर वायुयान की रचना कर सकता हूं परन्तु आवश्यकता है विचारों के बदलने की।' मालूम हो उस समय तक लोग वायुयान का नाम भी नहीं जानते थे। शासन ने वायु एवं जल प्रदूषण पर करोड़ों रुपया खर्च किया परन्तु वैचारिक प्रदूषण दूर करने की कोई योजना कार्यान्वित नहीं की। इसी का परिणाम है कि आज देश की एकता अखण्डता खतरे में है।

विचारों के न बदलने के कारण ही आज भ्रष्टाचार ही भ्रष्टाचार नजर आता है। बोफोर्स, पनडुब्बी काण्ड, हर्षद मेहता, रेल डिब्बे काण्ड जैसे आज अनेक भ्रष्टाचार काण्ड हैं जिन्होंने देश को दिवालिया बना दिया है और विदेशों में भी हमारी छवि को धूमिल कर दिया है। महर्षि ने कहा था "सत्य के ग्रहण करने और असत्य छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।" महर्षि के सत्य के पुजारी होने के कारण ही तो माता कस्तूरबा गांधी ने कहा था ' स्वामी दयानन्द के जीवन में सत्य की खोज झलकती है इसीलिए आर्य समाजियों के लिए ही नहीं बल्कि सारी दुनिया के लिए वे पूज्य हैं"। महात्मा गांधी ने भी तो सत्य के हथियार से हमें स्वतन्त्रता दिलाई थी राष्ट्र निर्माताओं का परम कर्तव्य था वे भारत की संतति में सत्य आचरण समावेश हेतु कुछ करते परन्तु नहीं किया जिसका खामियाजा आज भुगतना पड़ रहा है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का मानना था कि स्वभाषा राष्ट्र एकता एवं आपसी सामंजस्य के लिए परमावश्यक है। ऋषि ने कहा था "हिन्दी ही सारे राष्ट्र को एक सूत्र में बांध सकती है। इस भावना की परिणति संस्कृत तथा गुजराती के प्रकाण्ड पंडित होते हुए भी समस्त साहित्य की उनकी हिन्दी रचनाएं हैं। महात्मा गांधी ने भी हिन्दी भाषा के सम्बन्ध में यही विचार प्रकट किए थे। परन्तु हमारे राष्ट्र नायक वोट की राजनीति के कारण भाषा आधार पर प्रदेशों की रचना किए। उर्दू को द्वितीय भाषा दिलाने में मगन रहे। उर्दू के प्रचार प्रसार एवं विकास की बात करते रहे। संविधान व्यवस्था अनुसार हिन्दी को राष्ट्र भाषा के पद पर आसीन न कर सके। अंग्रेजी भाषा के मानसिक गुलाम बने हैं। करोड़ों रुपए उर्दू विश्व विद्यालय की स्थापना पर व्यय करते जा रहे हैं। बात करते हैं ऐसी कि जैसे देश की एकता के लिए बहुत चिन्तित हैं। ये तो वास्तव में बहुरूपिया हैं।

महर्षि जाति विहीन एवं वर्ग विहीन समाज की रचना करना चाहते थे। मानव मात्र में सद्भावना तथा सामंजस्य युक्त ऐसी वर्ण व्यवस्था लाना चाहते थे जिसमें ऊंच नीच,जाति-पांति का कोई स्थान न हो एक ही परिवार में अनेक वर्ण के लोग सम्मिलित रहें।

"वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना का सृजन हो। वैदिक संस्कृति 'संगच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्" का लोग वरण कर भाई चारे से रहें। परन्तु इसके विपरीत राज्य के कुर्सी लोलुपों ने राजनीति का आधार जाति बना दिया है। मानव मात्र को जाति आधार पर बांट रहे हैं। योजनाओं का क्रियान्वयन भी जाति के आधार पर हो रहा है। महर्षि द्वारा प्रतिपादित प्राचीन वर्ण व्यवस्थाओं को साकार रूप नहीं दिया गया तो भविष्य में जातीय संघर्ष में हिन्दुत्व मिट जाएगा। अतः यह आवश्यक है कि संविधान परिवर्तन कर नाम के बाद जाति सूचक शब्द लगाने पर प्रतिबन्ध लगाया जाय।

महर्षि ने अपना कोई पंथ सम्प्रदाय या मजहब नहीं चलाया। वे लोगों को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ बनाना चाहते थे। वेदों के शाश्वत ज्ञान से सभी को सुखी समृद्ध, निरोगी देखना चाहते थे। उनका मानना था कि 'नास्ति वेदात परं शास्त्रम्' अर्थात वेद से बढ़कर कोई शास्त्र नहीं। इसीलिए उन्होंने कहा "वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना, सुनना सुनाना मानव मात्र का परम धर्म है" उन्होंने आवाहन किया वेदों की ओर वापिस चलो। इसी अभीष्ट उद्देश्य से वेद प्रचार संघ के रूप में आर्य समाज की स्थापना की जिसके मात्र दो नियमों 'संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात शारीरिक आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति करना' तथा प्रत्येक को अपनी उन्नति से सन्तुष्ट रहना नहीं चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए' से उनके ऋषित्व के दर्शन होते हैं।

ऋषि का दर्शन सत्य पर आधारित था। 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' के अनुरूप नारी का सम्मान चाहते थे। उन्होंने स्त्री शिक्षा, विधवा विवाह, सती प्रथा का विरोध आदि बातों को सर्वोच्चता दी। वे मूर्ति पूजा के पोषक थे। वे चाहते थे कि सभी पाषाण की मूर्ति को छोड़कर जीवित मूर्तियों यथा माता, पिता भाई-बहन अतिथि आदि की पूजा अर्थात सेवा सुश्रुषा, सत्कार करे। भाग्यवादी आस्था का परित्याग करे। 'अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम' को जीवन का आधार बनाए। भूत प्रेत तथा ज्योतिष जैसे पाखण्डों से दूर रहें।

आज हम चिन्तन करें। देश एवं मानव हित में विलम्ब से बहुत बड़ी क्षति होगी। हमारा पुनीत कर्तव्य है कि हम देश की सर्वतोमुखी उन्नति, एकता एवं अखण्डता के लिए ऋषिवर के दर्शन को जन-जन तक पहुंचायें। वोट की राजनीति का परित्याग करें। राष्ट्रीय भावना से प्रेरित हों तथा राष्ट्रीय भावना मानव मात्र में जाग्रत करें। यही महर्षि की स्मृति में सच्ची श्रद्धाञ्जली होगी।

सृष्टि विद्या के छः अवयव

क्या विद्या एक है या दो ? एक है। जो एक है तो व्याकरण, वैद्यक, ज्योतिष आदि का भिन्न-भिन्न विषय क्यों हैं ? जैसा एक विद्या में अनेक विद्या के अवयवों का एक दूसरे से भिन्न प्रतिपादन होता है वैसे ही विशिष्टविद्या के भिन्न-भिन्न छः अवयवों का छः शास्त्रों में प्रतिपादन करने से इनमें कुछ भी विरोध नहीं। जैसे घड़े के बनाने में कर्म, समय, मिट्टी, विचार, संयोग वियोगादि का पुरुषार्थ, प्रकृति के गुण और कुम्हार कारण है वैसे ही सृष्टि का जो कर्म कारण है उसकी व्याख्या मीमांसा में, समय की व्याख्या वैशेषिक में, उपादान कारण की व्याख्या न्याय में, पुरुषार्थ की व्याख्या योग में, तत्वों के अनुक्रम से परिगणन की व्याख्या सांख्य में और निमित्तकारण जो परमेश्वर है उसकी व्याख्या वेदान्त-शास्त्र में है। इसमें कुछ भी विरोध नहीं। जैसे वैद्यकशास्त्र में निदान, चिकित्सा, औषधिदान, और पथ्य के उपकरण भिन्न-भिन्न कथित हैं परन्तु सबका सिद्धान्त रोग की निवृत्ति है। वैसे ही सृष्टि के छः कारण हैं। इनमें से एक-एक कारण की व्याख्या एक-एक, शास्त्र-कार ने की है। इसलिये इनमें कुछ भी विरोध नहीं।

जो विद्या पढ़ने-पढ़ाने के विघ्न नहीं है उनको छोड़ देवें। जैसा कुसंग अर्थात् दुष्ट विषयी जनों का संग, दुष्टव्यसन जैसा मद्यादि सेवन और वेश्यागमनादि बाल्यावस्था में विवाह अर्थात् पच्चीस वर्षों से पूर्व पुरुष और सोलहवें वर्ष से पूर्व स्त्री का विवाह हो जाना, पूर्ण ब्रह्मचर्य न होना। राजा, माता, पिता और विद्वानों का प्रेम वेदादि शास्त्रों के प्रचार में न होना, अतिभोजन, अति जागरण करना, पढ़ने-पढ़ाने परीक्षा लेने वा देने में आलस्य वा कपट करना, सर्वोपरि विद्या का लाभ न समझना। बल, बुद्धि, पराक्रम, आरोग्य, राज्य, धन की वृद्धि न मानना। ईश्वर का ध्यान छोड़ अन्य पाषाणादि जड़ मूर्ति के दर्शन-पूजन में व्यर्थ काल खोना। माता, पिता, अतिथि और आचार्य, विद्वान इनको सत्यमूर्ति मानकर सेवा सत्संग करना, वर्णाश्रम के धर्म को छोड़ ऊर्ध्वपुंड्र, तिलक, कंठी, माला-धारण, एकादशी, त्रयोदशी आदि व्रत करना, काश्यादि तीर्थ और राम, कृष्ण, नारायण, शिव, भगवती, गणेशादि के नाम-स्मरण से पाप दूर होने का विश्वास, पाखंडियों के उपदेश से विद्या पढ़ने में अश्रद्धा का होना, विद्या धर्म योग परमेश्वर की उपासना के बिना मिथ्या पुराणनामक भागवतादि की कथादि से मुक्ति का मानना, लोभ से धनादि में प्रवृत्त होकर विद्या में प्रीति न रखना। इधर-उधर व्यर्थ घूमते रहना इत्यादि मिथ्या व्यवहारों में फंस के ब्रह्मचर्य और विद्या के लाभ से रहित होकर रोगी और मूर्ख बने रहते हैं।

आजकल के सम्प्रदायी और स्वार्थी ब्राह्मण आदि जो दूसरों को विद्या सत्संग से हटा और अपने जाल में फंसा के उनका तन, मन, धन नष्ट कर देते हैं और चाहते हैं कि जो क्षत्रियादि वर्ण पढ़कर विद्वान हो जायेंगे तो हमारे पाखण्डजाल से छूट और हमारे छल को जानकर हमारा अपमान करेंगे इत्यादि विघ्नों को राजा और प्रजा दूर करके अपने लड़कों और लड़कियों को विद्वान् करने के लिये तन, मन धन से प्रयत्न किया करें।

स्वामी दयानन्द सरस्वती
(सत्यार्थ प्रकाश)

एक और एक ग्यारह

रूपचन्द्र 'दीपक'

ओं सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्विनावधीतमस्तु। मा विद्विषावहै॥

यह तैत्तिरीय आरण्यक के अष्टम प्रपाठक के प्रथम अनुवाक का वचन है। इसमें 'सह' एवं 'नौ' पदों की आवृत्ति है, जिसका अर्थ है हम दोनों साथ-साथ। मनुष्य सामाजिक प्राणी होने के कारण जोड़े बनाकर कार्य करता है। उसके प्रमुख जोड़े हैं—पिता-पुत्र, गुरु-शिष्य, पति-पत्नी, स्वामी-सेवक, राजा-प्रजा, दुकानदार-ग्राहक, पड़ौसी-पड़ौसी, मित्र-मित्र आदि। जहां-जहां भी ऐसा कोई जोडा बने, वहीं यह मन्त्र शिक्षा के लिए उपस्थित है। इस प्रकार यह मन्त्र लगभग प्रत्येक क्षण हमें अच्छी शिक्षा एव प्रेरणा देता है। 'हम दोनों साथ-साथ' क्या करे? इसका उत्तर शेष पदों में है—

अवतु अर्थात् एक-दूसरे की रक्षा करें। पिता पुत्र की रक्षा करे। यह मात्र अन्न-वस्त्र देने से नही होती। इसके लिए पिता पुत्र को अच्छे संस्कार दे। उसके व्यवहार एवं स्वभार मे श्रेष्ठता लाए। उसका शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, वाचिक,आत्मिक एवं सामाजिक विकास करके उसे आर्य (श्रेष्ठ) बनाए। उसमें सुनागरिकता, देश-भक्ति, राष्ट्रप्रेम, बन्धुत्व आदि गुणों को विकसित करे। तभी कहा जा सकेगा कि पिता ने पुत्र की रक्षा की। इसी प्रकार पुत्र पिता की रक्षा करे। अनेक बार प्रौढ़ व्यक्ति यह कहता सुना जाता है कि मैं भी उग्रता कर सकता था किन्तु सन्तानवाला होने से धैर्य धारण कर रहा हूं। यहां पुत्र ने परोक्ष रूप में पिता की रक्षा की। वह प्रत्यक्षतः भी पिता की रक्षा करे। इसके लिए वेद का वचन है—"अनुव्रत; पितुः पुत्रः"(अथर्ववेद ३-३०-२)अर्थात् पुत्र पिताके व्रतके पीछे चले,वह उसके मान, वचन, उद्देश्य एवं व्यवस्था की रक्षा करे· दूसरे शब्दों में, वह पिता की संस्कृति की रक्षा करे। पिता की यह संस्कृति वैदिक संस्कृति ही है, क्योंकि पिता का पिता, उसका पिता, उसका भी पिता, इस पकार करते-करते हम वैदिक संस्कृति तक पहुंच जातेहैं। वैदिक संस्कृति में गुरु-शिष्य की जोड़ी भी महत्वपूर्णहै। अतः गुरु-शिष्य भी एक-दूसरे की रक्षा करें। गुरु शिष्य की रक्षा करता है—उसे विद्या, सुशिक्षा एवं सुशीलता से विद्वान् चरित्रवान् एवं महान बनाकर। शिष्य गुरु की रक्षा करता है—उसकी विद्या को धारण करके उसकी सांस्कृतिक मशाल को आगे पकड़ाकर। गुरु मन्त्र बोलता है—"ओं मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनुचित्तं ते अस्तु। मम वाचमेकमना जुषस्व बृहस्पतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम्॥" (पारस्कर गृह्य सूत्र २-९-१६) इससे वह अपने व्रत को शिष्य मे प्रविष्ट करना है और शिष्य उसे धारण करता है। इसी मन्त्र को कुछ भेद के साथ पति-पत्नी से कहता है—"ओं मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनुचित्तं ते अस्तु। मम वाचमेकमना जुषस्व प्रजापतिष्ट्वा नियुनक्त मह्यम्।" (पारस्कर गृह्यसूत्र १-८-८) इसमे पति-पत्नी के पारस्परिक समर्पण एवं सहयोग की शिक्षा है। इस सहयोग के द्वारा ही दोनों एक-दूसरे की रक्षा करते हैं। इसी प्रकार राजा-प्रजा, मित्र आदि भी एक-दूसरे की रक्षा करें। यह रक्षा वास्तव में शास्त्र के द्वारा नही अपितु विचार से होती है।

भुनक्तु अर्थात् साथ-साथ भोगे। इस मन्त्र को कुछ व्यक्ति भोजन के समय पढ़ते हैं। भोजन के समय पढ़ने का मन्त्र अग्रलिखित है—"ओम् अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः। प्रदातारं तारिष ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।" (यजुर्वेद ११-८३) "सह नौ भुनक्तु" मे भोजन का संकेत नहीं है। इसमें भली प्रकार भोग करने की शिक्षा है। मनुष्य अपनी इन्द्रियों से जो चेष्टायें करता है, वे एक का कर्म एवं दूसरे का भोग होती हैं। जैसे एक शब्द बोलना किसी का कर्म है तो उसे सुनना दूसरे का भोग है। इसी प्रकार अन्न, जल, वस्त्र, धन आदि भी भोग के पदार्थ हैं। इनके प्रयोग मे सुख एवं दुःख दोनों की सम्भावना होती है। मन्त्र शिक्षा देता है कि मनुष्य इनके प्रयोग से सुख की वृद्धि करें, दुःख की नहीं। हम सुख को मिलकर भोगे और दुःख को भी मिलकर बांट लें। मनुष्य अपने लिए आरोग्य चाहे, तो दूसरे के लिए भी आरोग्य ही चाहे। वह जैसे अपने लिए आयु, धन, सुख, सन्तान, यश आदि चाहता है, वैसे ही दूसरे के लिए भी चाहा करे। अपने लिए कुछ चाहना एवं दूसरे के लिए उल्टा चाहना दोष है। वैदिक संस्कृति की एक शिक्षा यह भी है कि "आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्" अर्थात् जो स्वयं को बुरा लगे, वह आचरण अन्यों के साथ कभी न करो। दूसरे शब्दों में, जैसा स्वयं को अच्छा लगता है, वैसा ही व्यवार दूसरों के साथ करो। यही "सह नौ भुनक्तु" की भावना है। इसके अनुरूप आचरण न करने से अत्यधिक समय, धन एवं शक्ति लगाने पर भी समस्यायें कम नहीं होतीं, जैसा कि आजकल हो रहा है। क्योंकि यही विपरीतता तो समस्याओं को जन्म देती है, यह उन्हें हल क्या करेगी। अतः हम जीवन की सही दिशा पकड़ें और उसी पर आगे बढ़ें। एक-दूसरे को सुख की अनुभूति करायें, दुःख का भोग न करायें।

वीर्यं करवावहै अर्थात् एक-दूसरे का बल-पराक्रम बढ़ायें। यह एक-दूसरे का अनुमोदन, समर्थन, सही प्रशंसा करने एवं निन्दा न करने से होता है। हम परस्पर कन्धे से कन्धा मिलाकर चलें। इस सम्बन्ध में एक यक्ष प्रश्न है कि एक और एक मिलकर कितने होते हैं? इसके तीन उत्तर हैं—जड़ पदार्थ एक और एक मिलकर दो होते हैं। दो मित्र मिलकर एक और एक ग्यारह होते हैं। दो शत्रु मिलकर एक और एक शून्य होते हैं। जब दो मनुष्यों का अहंकार परस्पर टकराता है तो दोनों एक दूसरे की काट करते हैं और उनका संयोग दोनों को ही शून्य बना देता है। यह व्यवहार आजकल सर्वत्र देखने में आ रहा है। राजनीतिक दलों को देखें, सामाजिक संस्थाओं को देखें, शिक्षण-प्रबन्धों को देखें, सरकारी विभागों को देखें अथवा जन-सामान्य के समूहो को देखें, सब एक-दूसरे को काटते दृष्टिगोचर होते हैं। यह कर्त्तव्य नहीं है। कर्त्तव्य है अहंकार भुलाकर परस्पर मिल जाना। जब दो मित्र ऐसे मिलते हैं तो दोनों की शक्ति कई गुणा बढ जाती है। राम एवं लक्ष्मण, राम एवं सुग्रीव तथा राम एवं हनुमान् ऐसे ही मिले थे। कृष्ण एवं अर्जुन ने मिलकर युद्ध जीता था. चाणक्य एव चन्द्रगुप्त ने इसी प्रकार मिलकर महान् साम्राज्य की स्थापना की थी। रामदास एवं शिवाजी ने भी तदनुसार चलकर विजय-यात्रा तय की थी। हम भी इसी प्रकार मिलकर चलें। एक-दूसरे का बल बढाने से परिणामतः सबका बल बढ़ेगा और राष्ट्र यथापूर्व समृद्ध बनेगा।

तेजस्विनौ अधीतमस्तु अर्थात् हम दोनों तेजस्वी बनकर पढ़ते-पढ़ाते रहें। यह बात अध्यापक एवं छात्र के लिए है। पठन-पाठन की जो व्यवस्था वैदिक ऋषियों ने अनुसन्धान करके बनायी थी, वही सर्वोत्तम थी। किन्तु कुतर्की विद्वानों ने उसकी काट कर दी एवं अत्यधिक दोषपूर्ण व्यवस्था हमारे सामने धर दी है। हम वर्तमान व्यवस्था को दोष देते रहते हैं और अपनाते भी रहते हैं। स्वयं को वैदिक व्यवस्था के योग्य नहीं बना पा रहेहैं और उसमें दोष निकालने की बुद्धिमानी समझ रहे हैं। ईशकृपा से तथा वर्तमान व्यवस्थाओं से कष्ट पाकर एवं थक-हारकर भी मनुष्य पुनः वैदिक व्यवस्था की ओर मुड़ेगा। तब अध्यापक एवं छात्र एक-दूसरे का तेज-वर्धन करते हुए पठन-पाठन करेंगे। इसके अतिरिक्त यह सूत्र सामान्य व्यवस्था के लिए भी है। मनुष्य की शिक्षा जीवन-भर चलती रहती है। वह अपने अनुभवों से तो सीखता ही है, दूसरों के अनुभवों से भी सीखता है। यह सीखना एवं सिखाना जीवन-भर चलता रहता है। यदि इससे वह अच्छे निष्कर्ष निकालता रहे तो भी अच्छा मनुष्य बन सकता है। परमात्मा करे मनुष्य कम से कम इतना तो कर ही ले।

(शेष, ११ पृष्ठ पर)

मजहब नहीं सिखाता आपस में वैर रखना

मजहब नही सिखाता आपस मे वैर रखना ।
हिन्दी हैं हम वतन है हिन्दुस्तान हमारा ॥

दिसम्बर को बाबरी मस्जिद के ४६० वर्ष पुराने ढाचे को गिराये जाने के बाद जो कुछ हुआ उस पर बहुत चर्चा हो रही है और मुसलमान भाईयो के आसू पोछने के लिए बहुत शोर मचाया जा रहा है। परन्तु यह सब क्यो हुआ ? इसकी गहराई से कोई जाने को तैयार नहीं। हिन्दुओ के दिलो मे बहुत दिनो से आग सुलग रही थी कि हिन्दू को जितना भी दबाओ दब जाता है। केवल मुसलमानो को प्रसन्न रखो। मुसलमान भी हर समय मजहब के नाम पर पिछले १०० वर्ष से रो रहा है और उसको कुछ न कुछ मिल ही जाता है। देश का ब टवारा हुआ। भारत से १५ प्रतिशत मुसलमान पाकिस्तान गये और २३ प्रतिशत भूमि उनको दी गयी। बटवारे के बाद मुसलमान जो भारत मे रह गये थे उनको प्रसन्न रखने के लिए वही बीमारी 'अल्पसंख्यक' जिन्दा रखी गयी और इसके परिणाम स्वरूप मुसलमान फिर मजहब के नाम पर रोने चिल्लाने लगा।

(१) कश्मीर मे हिन्दुओ के अनेक मन्दिर मुसलमानो ने गिरा दिये। हिन्दुओं को कश्मीर से निकलना पडा और हमारी सरकार यही सोचकर सोई रही कि हिन्दू कुछ नहीं करेगा तथा सब कुछ सहन कर लेगा।

(२) मुसलमानो के समाचार पत्र बराबर यही लिखते रहे कि कश्मीर में भारत की सेना वहा के मुसलमानो पर अत्याचार करती है परन्तु मुसलमानो को यह राय नहीं दी गई कि हम भारत मे १० करोड रह सकते। तो तुम ३६ लाख मुसलमान कश्मीर मे क्यो नही रह सकते ?

(३) कश्मीरी मुसलमानों ने 'अमरनाथ यात्रा' को श्रीनगर से होकर जाने को मना कर दिया। वह सेना के पहरे मे पहल गांव के रास्ते से गयी। यदि हिन्दू हज पर जाने वाले मुसलमानो को बम्बई से होकर जाने से रोक दें तो सारी दुनिया भर के मुसलमान चिल्ला उठेंगे।

(४) मुसलमान हर कदम पर देश मे परेशानी पैदा कर रहा है पाकिस्तान का प्रधानमन्त्री और करनल गद्दाफी की न तो दाढ़ी है और न ही सिर पर टोपी पहनते हैं। परन्तु एक क्रिश्चन स्कूल मे इन्हें टोपी पहनकर जाना अनिवार्य है क्योंकि उनकी पहचान समाप्त न हो जाए और कहते है कि सिख पगडी पहनते हैं क्या यही मिसाल है ? सिख भाई जन्म से केश रखते हैं और पगड़ी पहनते हैं ये लोग तो उनसे अपने आपको ख्वाहमुखा जोडते है। मुसलमानो के समाचार पत्रो मे भारत विरोधी और हिन्दू विरोधी लगातार प्रचार हो रहा है। जिसमे भोले भाले मुसलमान गुमराह हो रहे हैं और अखबार वाले अपनी बिक्री बढनी देख रहे हैं। कई लोगो का ऐसा भी कहना है कि इनको पाकिस्तान से रुपया मिल रहा है।

(५) इजराइल मे फिलीस्तीनी यदि एक यहूदी को मारते हैं, तो इजराइल तुरन्त दो फिलीस्तीनी समाप्त कर देता है और यह सब दुनिया भरके ५० इस्लामी देश मुह उठाए देख रहे है इनका गुस्सा तो केवल भारत पर ही है, एसा प्रतीत होता है।

(६) ईरान मे बहाई फिरके के लोगो को गोली मार मारकर समाप्त किया तो किसी को फिकर नही हुई अब बेचारों ने भारत मे शरण ली और दिल्ली मे अपना पूजा स्थान बनाया।

(७) भारत ने इजराइल से ४४ वर्षों के पश्चात अपने राजनैतिक सम्बन्ध जोड तो हिन्दुस्तान के मुसलमानो के पेट मे बडा दर्द हुआ।

(८) सोमालिया मे मुसलमान १७ वर्षो से आपस मे लड रहे हैं और भुखमरी इतनी कि वहा की जनता कराह रही है परन्तु ५० इस्लामी देश मुह उठाए न तो कोइ सहायता भेज रहे हैं और न कोई वहां जाने को तैयार है आखिर अमरीका की फौज वहा गई है और उन लोगो की अन्नादि से सेवा कर रही है।

(९) यूगोस्लाविया मे मुसलमान मक्खी की तरह मर रहा है परन्तु ५० इस्लामी देश तमाशा देख रहे हैं और उनकी हिम्मत नहीं कि कुछ कर सके इनका नजला तो सिर्फ भारत पर ही गिरता है।

(१०) मिस्र (EGYPT) का प्रधान न दाढी न मूछ यूरोपियन लिबास इजराइल से दोस्ती करे तो इन भारतीय मुसलमानो को कोई कष्ट नही होता।

(११) अफगानिस्तान से ४० हजार हिन्दू, सिख निकाल दिये गए इनके मन्दिर गुरुद्वारे अपवित्र कर दिये तो भारतीय मुसलमानो को कोई चिन्ता नहीं हुई और अब रूस से ६० हजार मुसलमान भागकर अफगानिस्तान पहुच गये है और आपस मे लड-लडकर यहा से लाखो और भागेंगे। मुसलमान को मुसलमान मारे तो क्या दोनो बहिश्त मे जाते हैं ?

(१२) बर्मा से मुसलमान भागकर बगला देश आए तो सारी दुनिया को चिन्ता हुइ परन्तु बगलादेशी गैर कानूनी तौर पर लाखो की तादाद मे भारत आए और भारत सरकार उन्हे वापिस भेजना चाह रही है तो भारत का मुसलमान परेशान हो रहा है और भारत को दोषी ठहरा रहा है।

(१३) बम्बई मे एक मुस्लिम स्कूल मे एक ड्रामे में बच्चो ने एक हिन्दू परिवार मे क्या होता है दिखाया तो स्कूल की प्रिंसिपल को हटा दिया गया— क्या यह मुसलमानो का सेक्यूलरिज्म था ?

(१४) भारतीय विद्या भवन और अनजुमे इस्लाम मे समझौता हुआ कि एक मैनेजमेंट इन्सटीटयूट खोली जाये बम्बई के मुसलमानो को यहा के उर्दू मुस्लिम अखबारों ने इतना भडकाया और गुडागर्दी हुई कि मजबूरन भारतीय विद्या भवन को वह प्लान कैन्सिल करना पडा क्या यह सैक्यूलरिज्म को तब भूल गये थे और अब अपने किये पर पछताने के बजाय पुलिस और सरकार को दोषी ठहरा रहे हैं।

यह कुछ बातें हैं और भी बहुत कुछ है यदि सरकार और मुसलमानो के नेताओ ने ठन्डे दिल से विचार नहीं किया तो यह आग बुझने वाली नही, हमेशा भड़कती रहेगी। मुसलमानो को भारत में रहना है भारतीय बनकर रहना होगा। पर खेद है कि इनको वन्देमातरम गीत गाने पर भी पेट मे बहुत दर्द होता है और यह सैक्यूलरिज्म का हामी इसलिए है कि इसकी सख्या ५० प्रतिशत से कम है। जहा ये ५० प्रतिशत से अधिक होती है। वहा इस्लामी राज्य की पुकार होगी। ये मलेशिया और इन्डोनेशिया की जीती जागती मिसालें हैं। और मुसलमान खुद अल्लाह को छोड़कर कबरो पर चादर फूल चढाता है और पूजा करता है और काफर शब्द पर हिन्गामा हुआ। मुसलमान एक्टर दिलीपकुमार, शबानाआजमी हिन्दी फिल्मो में हिन्दू रीति रिवाज से काम करते हैं, मूर्ति के आगे पूजा करते हैं तो ये काफिर नहीं हैं क्या ? सगीत इस्लाम मे वर्जित है फिर तो रफी और नौशाद काफिर ही हुए।

भोले भाले मुसलमानो से हम यही निवेदन करेगे कि वह होश मे आवें और अपने कुर्सी के भूख तथा कथित नेताओ से खबरदार रहें और भारत सरकार से भी निवेदन है कि वह वी पी सिंह और ज्योति बसु के जाल में न फसकर बुद्धिमत्ता से काम लें। भारतीय जनता पार्टी की सरकारो को गैर कानूनी तौर से हटाकर काग्रेस ने स्वय अपनी चिता तैयार की है। अगले चुनावो मे भारतीय जनता पार्टी ४ म नहीं ८ राज्यो मे हुकूमत करेगी यह हमारी भविष्यवाणी है।

हिन्दू मरे या मुसलमान अथवा सिख याद रखो कि खून हिन्दुस्तानी है— इन्सानी है। जो जायदाद नष्ट करते हो वह भी हिन्दुस्तान की है। क्या कुछ मुसलमान और हिन्दू या सिख कत्ल करने के बाद देश मे हमेशा के लिए शांति हो जायेगी ? जिस भगवान ईश्वर खुदा और वाहेगुरु के नाम पर यह सब कर रहे हो यदि वह सामने आकर खड हो जाये तो सब को फटकार दें और तुम्हारा खुदा और ईश्वर कहलाने मे इन्कार कर दें।

ओंकार नाथ आर्य, प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई द्वारा प्रसारित

संस्कार चन्द्रिका प्रकाशन में है

सभा द्वारा दी गयी विज्ञप्ति की अवधि दीपावली पर समाप्त हो गयी है। कृपया अब उसके लिये साठ रुपये भेजने का कष्ट न करें। अब उसकी कीमत १००) रुपये है। धन राशि भेजने वाले सज्जनो को डाक द्वारा संस्कार चन्द्रिका शीघ्र भिजवा दी जायेगी। आगे केवल १००) रुपये भेजने का कष्ट करें।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली२

सप्तपदी का महत्व (२)

श्री प० चन्द्रभानु पुरोहित सिद्धान्त भूषण

अप्राप्त को प्राप्त करने की इच्छा रखे, जो प्राप्त हो जाय उसकी यत्न-पूर्वक रक्षा करे, रक्षित धन की वृद्धि करे तथा बढे हुए धन को सुपात्रो मे दान कर दे।

शतपथ ३। ३। १। ८ मे आया है 'पशवो वै राय', इसलिए इनकी पुष्टि करनी चाहिये। वैदिक संस्कृति के अनुसार गृहस्थाश्रम मे पशु होने आवश्यक हैं। यजुर्वेद अ० ३। मन्त्र ४३ मे कहा गया है—'उपहूता इह गाव उपहूता अजावय०"। हमारे घरो मे गौवें, बकरिया तथा भेड इत्यादि एकत्रित किये गये हैं।

चौथे पग मे 'मयोभवाय' सुखी जीवन तथा ईश्वर भक्ति के लिए कहा गया है। धन, बल तथा ऐश्वर्य वृद्धि की सार्थकता तभी है जब कि पति-पत्नी का जीवन सुखमय हो। दोनो मे प्रेम हो, वे एक दूसरे से सन्तुष्ट हों।

सन्तुष्टो भार्यया भर्ता, भर्त्रा भार्या तथैव च।
यस्मिन्नेव कुले नित्य, कल्याण तत्र वै ध्रुवम ॥ मनु० ३। ६०

दोनो मे आपस मे ही प्रेम न हो अपितु प्रभु से भी प्रेम हो। दोनो आस्तिक हों, ईश्वर भक्त हो। सन्ध्या के अन्तिम मन्त्र—नमस्कार मन्त्र मे कहा गया है—

'नम, शम्भवाय च मयो भवाय च'। यजु० १६।४१

सब सुख स्वरूप तथा ससार के उत्तम सुखो को देने वाले प्रभु को नमस्कार हो।

पाचवें पग मे 'प्रजाभ्य' सतान के लिए कहा गया है। घर मे धन, धनादि सब हो परन्तु सन्तान न हो तब भी घर की शोभा नहीं है। बच्चो की किलकारिया घर के आगन को हर्ष व प्रसन्नता से निनादित कर देती हैं इसी लिए सप्तपदी के प्रत्येक पग पर तथा विवाह की पाणिग्रहणादि विधियो मे सन्तान प्राप्ति का बार-बार जिक्र आता है। सफल गृहस्थ का लक्षण बताया गया है—

वाणी रसवती यस्य भार्या पुत्रवती सती।
लक्ष्मीर्दानवती यस्य सफल तस्य जीवितम् ॥

जिसकी वाणी सरस हो, पत्नी पतिव्रता तथा पुत्रवती हो, धन का दानादि मे सदुपयोग होता हो, उस ही मनुष्य का जीवन सफल है। सप्तपदी मे सतान' का नम्बर पाचवा है। सन्तानोत्पति से पूर्व घर मे धन-धान्य हो, शरीर मे बल हो, ऐश्वर्य की वृद्धि तथा गौ आदि पशुओ की विद्यमानता हो, हृदय मे प्रेम हिलोरें भरता हो तथा प्रभु की मस्ती हो तब ही सन्तान का लालन पालन ठीक हो सकेगा और वह बलवान, सुन्दर प्रेम करन वाली तथा आस्तिक होगी।

छठे पग मे 'ऋतुभ्य ऋतुओ के लिए कहा गया है। ऋतु छ होती हैं तथा छठा ही पग रखा जाता है। किस ऋतु म कैसा आहार विहार करना यह जानना आवश्यक है ताकि स्वास्थ्य उत्तम और निरोगता रहे। डाक्टरों के क्लिनिको से बार-बार बिलबिलाना न पडे। आयुर्वेद म इसे ऋतुचर्या विद्या कहते हैं। सब ही ऋतुओ मे आनन्द-प्रसन्न रहना चाहिए हर मौसम की शिकायत न करते रहना चाहिए। सामवेद पूर्वार्चिक अध्याय ६ (आरण्य काण्ड) की चतुर्थी दशति का दूसरा मन्त्र (क्रमश मन्त्र स० ६१६) है—

वसन्त इन्नु रन्त्या ग्रीष्म इन्नु रन्त्य।
वर्षाण्यनु शरदो हेमन्त शिशिर इन्न रन्त्य ॥

बसन्त ऋतु रमणीक है तो ग्रीष्म ऋतु भी रमणीक है। तदन्तर वर्षा की धाराये रमणीक हैं तो शरद ऋतु, हेमन्त और शिशिर ऋतुए भी निश्चयपूर्वक रमणीक ही हैं

अन्तिम सातवे पग मे पत्नी को सखे कहकर सम्बोधन किया गया है, यह हेतु—गर्भ सम्बोधन हैं अर्थात सख्यता के हेतु सातवा पग चलने वाली बनो। पति पत्नि एक दूसरे के सखा हैं मित्र है। मित्र मित्र का आदर करता हैं उससे कोई बात छिपाता नहीं। वे एक दूसरे के विश्वास-पात्र बनते है। ये ही एक-दूसरे के सच्चे कामरेड भी हैं। अन्य कामरेड तो ऐसे भी हो सकते है जो काम की रेड ही मार दे।

इस प्रकार सप्तपदी के मन्त्रो मे बहुत सुन्दर शिक्षा दी गयी है। जिसका संक्षिप्त, दिग्दर्शन कराया गया है। सप्तपदी का महत्व यह भी है कि जहा पारिवारिक जीवन की सफलता के लिए ये सात बातें आवश्यक है वहा राष्ट्रीय उन्नति के भी ये सात सोपान हैं।

राष्ट्र मे सबसे प्रथम अन्न का प्रबन्ध होना चाहिए। हमारी सरकार को बहुत वर्षो पश्चात यह होश आई कि (अधिक अन्न उपजाओ) का आन्दोलन सबसे आवश्यक हैं। कल-कारखाने वालो को भी सबसे प्रथम भोजन की आवश्यकता है, ऋ० ७।३५।७ मे कहा है—'श न उरूचि भवतु स्वधाभि। हमारे देश की दिशाए अन्न से भरपूर हो, जिससे हमारा कल्याण हो।

दूसरी वस्तु बल सैन्य शक्ति होनी चाहिए। सेना के लिए भी पहले राशन की आवश्यकता है। भूखी फौज क्या लडेगी और क्या विजय प्राप्त करेगी। सेना ही देश की आन्तरिक तथा बाह्य सुरक्षा कर सकती है।

तीसरी वस्तु धन की वृद्धि तथा पशुओ की वृद्धि हो—सब प्रकार की समृद्धि हो। आर्थिक स्थिति दृढ हो। घाटे का बजट नही, बचत वाला बजट हो। देश मे कल कारखाने हो, अर्थ अनर्थ का कारण न बने इसके लिए उत्तम शिक्षा का प्रबन्ध हो।

चौथी वस्तु प्रजा का सुखी होना तथा ईश्वर भक्त होना है। ऋषि दयानन्द ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका मे लिखा है—

'जिस राज्य में मनुष्य अच्छी प्रकार ईश्वर को जानते हैं, वही देश सुख युक्त होता है।'

सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास मे ऋषि कहते हैं—

'जब तक मनुष्य धार्मिक रहते है तभी तक राज्य बढता रहता है और जब दुराचारी होते हैं तब राज्य नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है।'

पाचवी वस्तु राष्ट्र में उत्तम जन सख्या का, साहसी नवयुवको का होना आवश्यक है। वीर माताओं के महत्व को हम न भूलें।

छठी वस्तु जनता का स्वास्थ्य उत्तम रहे, प्रत्येक ऋतु मे सुखकारी भवन तथा स्थान हो इसके लिए राष्ट्र का स्वास्थ्य विभाग, लोक निर्माण, आवास, पर्यटन, परिवहन आदि विभाग जागरूक तथा कर्तव्य परायण हो।

सातवी और अन्तिम वस्तु है जनता मे परस्पर प्रेम और एकता हो। हम एक दूसरे को सखा समझें। अथर्ववेद १२।१।१८ मे कहा गया है 'मा नो द्विक्षत कश्चन' हममे से कोई द्वेष न करे। 'मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे' (यजु० ३६।१८) हम एक दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखें। देश के विभिन्न विचारधारा वाले व्यक्तियो से प्रभु आशा करते हैं—

सहृदय सामनस्यमविद्वेष कृणोमि व। (अथर्व० ३।३०।१)

मैं तुम लोगो को एक दूसरे से सहानुभूति रखने वाले, उत्तम विचारो से युक्त तथा द्वेष रहित करना चाहता हू।

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ (दिल्ली) शाखा थांदला जि० झाबुआ (म. प्र.) का रजत जयन्ती तथा स्व. पं० पृथ्वीराज शास्त्री की प्रथम पुण्य तिथि समारोह सम्पन्न

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा नव निर्मित कन्या आश्रम का उद्घाटन

(गतांक से आगे)

स्थानीय लोगों को सपत्नीक यजमान बनाकर यज्ञ मण्डप की शोभा को बढ़ाया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्यपाद स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती ने यज्ञ और अष्टांग योग के महत्व पर प्रकाश डालकर मनुष्यमात्र को यम नियम का पालन करने, श्रेष्ठ मानव बनने की प्रेरणा की। यज्ञ के पश्चात थांदला नगर के एस० डी० एम० श्री ब्रजेशकुमार मिश्रा ने ध्वजारोहण कर समारोह का विधिवत शुभारम्भ किया और अपने भाषण में महर्षि दयानन्द द्वारा राष्ट्र व जाति के उत्थान के कार्य की प्रशंसा करते हुए आश्वासन दिया कि वे अपने अधिकार के अनुरूप हर प्रकार से सहायता करेंगे। इस ध्वजारोहण समारोह की अध्यक्षता इंदौर के कर्मठ आर्य कार्यकर्ता श्री जगदीश प्रसाद वैदिक ने की।

इसी दिन दोपहर बाद एक महिला सम्मेलन श्रीमती प्रभा पाठक के संयोजकत्व में हुआ। इसकी अध्यक्षता श्रीमती कंचन दुबे ने की। सम्मेलन की मुख्य अतिथि श्रीमती प्रेमलता जी थी। सम्मेलन में विचार का विषय "नारी नरक का द्वार नहीं है" पर श्रीमती ईश्वर रानी व श्रीमती रजनी व्यास ने स्पष्ट किया कि बीते समय में नारी को शिक्षा ग्रहण करने व वेद विद्या पढ़ने का अधिकार नहीं था और वह हर प्रकार के अत्याचार की शिकार थी। महर्षि दयानन्द ने ही नारी जाति की जागृति का मार्ग प्रदर्शित किया। श्रीमती प्रेमलता जी ने कहा—नारी न तो पहले नरक का द्वार थी और न अब है। यह तो यवन काल में स्त्रियों को यवनो के अत्याचारो से बचाने के लिए बाहर निकलने से रोका गया था, जिसके परिणाम स्वरूप स्त्री जाति अशिक्षित रहकर अत्याचार सहन करती रही। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेद के आधार पर जाति को जाग्रत करते हुए कहा—'नार्यस्तु यत्र पूज्यन्ते तत्र रमन्ते देवा:" अर्थात जहां नारियों का सत्कार व सम्मान होता है वहां देवताओ का वास होता है। नारी जाति दुनियां के रहने तक महर्षि दयानन्द की ऋणी रहेगी। आज नारी जाति अपने आपको पहचान चुकी है और प्रगति के हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चलने में सक्षम है। अपने अध्यक्षीय भाषण में डा० कंचन दुबे ने बताया कि नारी अब जाग चुकी है और प्रगति के हर क्षेत्र में वह अपनी पहचान स्थापित कर रही है। नारी अब अन्धविश्वासों से ऊपर उठकर शिक्षा पाने के लिए अग्रसर है। उन्होंने संघ को अपना सहयोग देने का आश्वासन दिया। रात्रि के समय सब आश्रमो के वनवासी छात्रों को कम्बल व थांदला के वनवासी छात्रो को स्वेटर आर्यवीर दल के कार्यकर्ताओं द्वारा बांटे गये।

१३ जनवरी को गायत्री महायज्ञ के उपरान्त दो बजे श्री गौरीशंकर जी कौशल भू०पू० विधायक म०प्र० के नेतृत्व में एक शोभा यात्रा थांदला नगर के प्रमुख मार्गों से होती हुई थांदला आश्रम तक निकाली गई। इस शोभा यात्रा में वनवासी भाई बहिनों ने अपनी पारम्परिक वेश भूषा मे बड़ी भारी संख्या में भाग लिया और अपने-अपने लोक नृत्यों से जन-समूह का मन मोह लिया तथा अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्वावधान में चल रहे सभी आश्रमो व बालवाड़ियो के छात्र-छात्राओ ने भी इसमें उत्साह से भाग लिया। जगह-जगह पर नगरवासियों ने शोभा यात्रियो का यथोचित स्वागत किया। नगर वासियों के अनुरोध पर स्थान-स्थान पर आर्यवीर दल के सदस्यों—सर्वश्री राजसिंह जी, सुरेन्द्र जी आजाद, योगेश जी व हरीसिंह जी ने अपने ओजस्वी भाषणों से जन चेतना को जागृत किया और देश भक्ति तथा आर्य सिद्धांतों से परिपूर्ण ओजस्वी गीत भी गाए और श्री वेदरतन आर्य व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती चन्द्रवती जी ने महर्षि दयानन्द के उपकारों का गीत गाकर श्रोताओं को आल्हादित कर दिया।

उस क्षेत्र में माता जी के नाम से प्रसिद्ध श्रीमती प्रेमलता जी से भी नगर वासियो ने उद्बोधन कर उनसे प्रेरणा लेनी चाही। श्रीमती प्रेमलता जी ने अपनी वृद्धावस्था की ओर ध्यान दिलाते हुए कहा—मैं तब तक नहीं बोलूंगी जब तक थांदला नगर के वासी हाथ उठाकर उस क्षेत्र की उन्नति के लिए कार्य करने का आश्वासन नहीं देते। इस पर जनता ने हाथ उठाकर व्रत लिया कि उनकी अनुपस्थिति मे भी यह कार्य अनवरत धारा से चलता रहेगा। उन्होंने कहा कि वह दिल्ली से आर्यवीर दल के शेरों को साथ लाई है, जो कि वहां के निवासियों का समय-समय पर मार्ग दर्शन करते रहेंगे। उन्होंने अपने वक्तव्य मे भारत मां के अमर सेनानी वीर चन्द्र शेखर की जन्मस्थली व कार्य क्षेत्र भाभरा की याद दिलाते हुए लोगों को हर प्रकार से जागरूक रहने का आह्वान किया।

१४ जनवरी की प्रात: पूज्यपाद स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती-प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली अ० भा० दयानन्द सेवाश्रम संघ के महामन्त्री श्री वेदव्रत महता के साथ वहां पधारे और गायत्री महायज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर अपना आध्यात्मिक प्रवचन दिया। पूर्णाहुति सम्पन्न होने के पश्चात स्वामी जी ने अन्य गणमान्य महानुभावों के साथ विभिन्न आश्रमो से आये विद्यार्थियों की परेड की सलामी ली और रोचक व्यायाम प्रदर्शन देखा। उसके पश्चात श्री परमानन्द जी प्रधान और श्री रामकृष्ण जी महामन्त्री के अनुरोध पर थांदला आश्रम का निरीक्षण किया।

कई वर्षो से इस क्षेत्र मे वनवासी कन्याओं के लिए एक कन्या आश्रम की आवश्यकता अनुभव की गई थी जिसके लिए धन की अपील की गयी और पश्चिम विहार दिल्ली निवासी श्री बी० एल० चौधरी व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शकुन्तला चौधरी के सतत प्रयासो से इस संस्था के अधिकारियों की पहुंच लुधियाना निवासी दानवीर श्री हरिदत्त जी से हुई और उन्होंने एक लाख रुपए का सात्त्विक दान दिया और रजत जयन्ती से पूर्व ही आर्य वनवासी कन्या आश्रम के लिए भवन बनकर तैयार हो गया जिसका उद्घाटन रजत जयन्ती के इस शुभ समारोह के अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती के कर कमलों से सम्पन्न हुआ।

इसी दिन मध्यान्ह के समय एक सभा का आयोजन किया गया जिसमें नगर के गणमान्य व्यक्तियो को आमन्त्रित किया गया। यहां पर संन्यासी वर्ग विद्वत जन और विशेष अतिथियों का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया गया तथा वक्ताओं ने दयानन्द सेवाश्रम संघ के कार्यों की प्रशंसा करते हुए उस क्षेत्र में हो रहे कार्यों मे सहयोग देने का वचन दिया।

इसी अवसर पर आर्य भजनोपदेशक श्री हीरालाल जी व उनकी धर्मपत्नी ने मनमोहक भजन भी सुनाये।

स्व० पृथ्वीराज शास्त्री की पुण्य तिथि

सन १९९२ की १४ जनवरी को, मकरसंक्रान्ति के दिन अ०भा० दयानन्द सेवाश्रम संघ के महामन्त्री पं० पृथ्वीराज शास्त्री का देहावसान हुआ था। इस

(शेष पृष्ठ ११ पर)

पृथ्वीराज शास्त्री की प्रथम पुण्य तिथि

(पृष्ठ १० का शेष)

अवसर पर उनकी पुण्य तिथि पर विशिष्ट महानुभावो ने उनके द्वारा किए गये कार्यों और उपकारो का स्मरण करते हुए उनके प्रति अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए और उनके कार्य मे किसी भी प्रकार का व्यवधान न आने देने का आश्वासन दिया। वक्ताओ मे पू० स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती श्री गौरीशकर जी कौशल श्री राजसिंह, श्री परमानन्द जी व श्री रामकृष्ण जी बजाज प्रमुख थे। इसके पश्चात् ऋषिनगर के लिए सभा विसर्जित हुई।

इसी अवसर पर बेकल्दा गावसे आए एक सज्जन श्री दर्वासिंह जी राठौर ने इच्छा व्यक्त की कि उनके गाव मे भी इसी प्रकार गुरुकुल प्रणालीके आधार पर एक आश्रम व विद्यालय चलाया जाय जिसके लिए वे अपनी इक्कीस बीघा उपजाऊ भूमि दान देने के इच्छुक है। इस आग्रह को टाल पाना सभव न देख कर दल के सभी सदस्य बरवसिया काकनवाडी व काजरी डूगरी आश्रमो का निरीक्षण करते हुए बेकल्दा गाव पहुचे। सभी आश्रम वासियो ने अपनी अपनी समस्यायें सामने रखी। परन्तु काजरी डूगरी की समस्या पर गहनता से विचार किया जाना आवश्यक जान पडा। वहा पर आश्रम एक किराये के भवन मे चलाया जा रहा है। सघ की ओर से अपना भवन बन चुका है, उस पर छत पड़नी बाकी है। अर्थाभाव के कारण उसकी व्यवस्था अभी तक नही हो पाई है। इस कमी को दल के सदस्यो ने देखा और इस कार्य को पूरा करने के लिए श्रीमती प्रेमलता जी की प्रेरणा पर निम्न महानुभावो ने दान देकर सघ के इस कार्य को सुगम बनाने मे सराहनीय सहयोग दिया—

(१) श्री राजसिंह जी, दिल्ली	१०००)
(२) श्रीमती प्रेमलता जी "	१०००)
(३) श्रीमती ईश्वर रानी "	१०००)
(४) श्री वेद रतन जी आर्य	१०००)
(५) श्री गगाशरण जी	१०००)
(६) आर्य समाज रानीबाग दिल्ली	२०००)
(७) सरपच काजरी, डूगरी	१०००)
(८) प्रधान जी	१०००)
(९) धावला आश्रम	१०००)

स्थानीय व्यक्तियो ने भी अपना-अपना अश दान देकर इस आश्रम को सुचारू रूप से चलाने का सकल्प लिया। तदुपरान्त दल के सदस्य बेकल्दा गाव पहुचे और यथोचित स्वागत सत्कार के बाद राजपूत निवासियो ने वहा विद्यालय खोलने की माग की और वचन दिया कि वे अपने बच्चो को उसी विद्यालय मे पढ़ने के लिए भेजेगे और ईसाई मिशनरी स्कूलो मे नही भेजेगे। वे अपने बच्चो को भारतीय परम्परा मे ही ढालने के इच्छुक है। अत श्री राजसिंह ने वहा उपजाऊ भूमि पर यज्ञ द्वारा पूजन किया और अपनी और दल की ओर से श्रीमती प्रेमलता जी को आश्वस्त किया कि उनके द्वारा चलाया जा रहा अभियान रुकने नही देंगे।

यह बता देना भी आवश्यक है कि इसी क्षेत्र मे निम्न स्थानो पर ईसाई लोग अपना जाल बिछा रहे हैं। वनवासी क्षेत्र के लोगो को उनके हथकण्डो से बचाना आर्य समाज की सस्थाओ का कर्तव्य बन जाता है।

१—झापा देश २—डूगरी पात्र ३—पत्थकुई, ४—भगोर ५—मोहन कोट ६—गुढियापारा इटर कालेज ७—जीवन ज्योति अस्पताल मेवनगर।

अत आर्य जनता से अपील है कि सघ के कार्यो का मूल्याकन करके तन, मन धन से सहयोग करने का कष्ट करें।

—वेदव्रत महता
महामन्त्री, अ०भा० दयानन्द सेवाश्रम सघ दिल्ली

एक और एक ग्यारह

(पृष्ठ ७ का शेष)

मा विद्विषावहै अर्थात् हम परस्पर द्वेष न कर। वस्तुत मनुष्य-मनुष्य के विचार पृथक्-पृथक् होते है। उन्हे समान विचारो से सुख एव विपरीत विचारो से दुःख मिलता है। इस दु ख से ही द्वेष उपजता है। योगदर्शन के अनुसार सुखानुशयी राग (२ ७)।। दु खानुशयी द्वेष (२ ८)।।" अर्थात् सुख मिलने से उसे पुन प्राप्त करने की भावना राग तथा दु ख मिलने से उससे बचने की भावना अर्थात् द्वेष की प्राप्ति होती है। यह नियम तो स्वाभाविक है। किन्तु जिसे हम अपने से पृथक् समझते हैं, उसके प्रति अनिष्ट चिन्तन करना अनुचित है। उसकी हानि चाहना अथवा उसके लिए दु ख मृत्यु असफलता अपयश आदि की कामना करना अनार्यता है। उसके हेतु इन प्रतिकूलताओ के लिए यत्न करना तो पामरता ही है। किन्तु ससार मे ऐसा अत्यधिक हो रहा है और अन्न धन जल वायु स्वर्ण सब कुछ होते हुए भी मनुष्य दु ख के सागर मे डूबा हुआ है। मनुष्य तनिक सोचे कि जीव जीव पृथक् हैं। किन्ही दो जीवो मे स्थायी सम्बन्ध नही है। वे एक जन्म के लिए इस मित्रता अथवा शत्रुता के सम्बन्ध में हैं। अगले जन्म मे पता नही कहा-कहा होगे। जैसे डाल पर दो पत्ते साथ-साथ लगे हो, डाल से पृथक होकर पता नही कहा कहा होगे। इसी प्रकार दो जीव एक, दो, दस बीस या सौ जन्मो तक एक साथ हो सकते हैं। एक दिन यह सीमा अवश्य समाप्त हो जाती है और वे पृथक् हो जाते हैं। तो वर्तमान मित्रता-शत्रुता को स्थायी मानना भूल ही है। यह भूल बढकर त्रुटि, दोष दुष्कर्म एव पाप बन जाती है। सो हम साधना करके इससे बचे और परस्पर द्वेष न करें।

ईश्वर करे हम सब एक दूसरे की रक्षा कर। परस्पर मिलकर सुख-दु ख का भोग कर। एक और एक ग्यारह के भाव से एक-दूसरे का बल बढाये। पठन-पाठन करते हुए एक-दूसरे का तेज बढाय। कभी द्वेष न करें। जिससे ससार मे सुख, शान्ति, समृद्धि एव आनन्द की वृद्धि होती रहे। ओ३म् शान्ति शान्ति शान्ति।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी सरस्वती का जीवन चरित (२)

—डा० अशोक आर्य

रामां मण्डी को केन्द्र बना कर स्वाध्याय करने लगे तथा आस-पास की आर्य समाजो के उत्सवों में भी जाने लगे परन्तु मात्र श्रोता रूप में। सर्वप्रथम सिरसा आर्य समाज के वार्षिक उत्सव पर एक व्याख्यान दिया। इसके पश्चात् तो आपके व्याख्यान के बिना सिरसा आर्य समाज का उत्सव ही न होताथा।

वाक्शूर, कर्मवीर व जनमोहक स्वतन्त्रानन्द जिससे एक बार मिल लेते वह आजीवन आपका भक्त बन जाता। गांव कुपरावां (रामां मण्डी) में हिन्दी प्रचारार्थ एक पाठशाला भी आरम्भ की।

यह आर्य समाज का ही प्रभाव था कि ब्राह्मण परिवार से न होते हुए भी आप संन्यासी बने। इससे पूर्व ब्राह्मणेत्तर कुलोत्पन्न कोई संन्यासी न था। कुछ समय अनन्तर आपने लुधियाना को केन्द्र बना कर दाल बाजार में आर्य-समाज की स्थापना ६-९-१९२५ को की। हैदराबाद सत्याग्रह तथा अन्तिम विदेश यात्रा से लौटने पर इस समाज ने आपका अभिनन्दन किया। महाशय कृष्ण जी से भी यहीं सम्पर्क हुआ। यहां भी एक पाठशाला आरम्भ की। पूरे क्षेत्र में आप ही आर्य समाज के प्रमुख प्रेरणा स्रोत बन गए। यह आपके ही तप व त्याग का परिणाम था कि अंग्रेजी कोप दृष्टि के बाद भी धनपतराय प्लेटियर के सहयोग से पूरी मण्डी में एक ही रात में आर्य समाज मन्दिर का भवन खड़ा कर दिया।

आपने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को सक्रिय सहयोग आरम्भ किया। अब प्रचारार्थ दूर-दूर तक भ्रमण करने लगे। आप ही ने १९१२-१३ में ब्रह्मा में वेद सन्देश सुनाया। अन्य नेताओं को भी विदेश प्रचारार्थ प्रेरित किया। इसी वर्ष मारीशस गए। लगभग अढाई वर्ष वहां पर वेद सन्देश सुनाया। इसके पश्चात् १९२३ व १९४८ ई. में भी अफ्रीका के देशों में ऋषि-सन्देश की धूम मचाई। उनके इस प्रचार का भारत को दूसरे देशों से सांस्कृतिक व राजनैतिक सम्बन्ध स्थापित करने में भी भारी सहयोग प्राप्त हुआ। इससे भारतीयो में आत्म-गौरव भी बढ़ा। इस मध्य भी आप योगाभ्यास, ईश्वरोपासना व ध्यान के नियमों का पालन करते रहे।

१९२५ ई. में आयोजित महर्षि जन्म-शताब्दि पर आपका प्रेरणाप्रद उपदेश सुनकर लोग झूम उठे। सं. १९८२ को लाहौर मे उपदेशक विद्यालय के संस्थापक आचार्य बने। अपने दस वर्षीय आचार्यत्व काल मे आपने प्रबन्ध कुशलता की अमिट छाप छोड़ी। इसी कारण आर्य समाज को लग्नशील प्रचारक मिले। आचार्यत्व के पद पर रहते हुए आपके कन्धो पर वेद-प्रचार अधिष्ठाता का पद भार भी सौंपा गया। जिस योग्यता व अनुशासन के साथ ऋषि दयानन्द सरस्वती का नाद आपने दूरस्थ देहातो मे पहुचाया, यह अपने आप मे एक अन्यतम उदाहरण है। आपको भ्रमण के क्षेत्र मे भी अद्वितीय माना गया है। आप प्रचारार्थ दूर-दूर तक पैदल ही पहुच जाया करते थे। यदि रात्रि में कुछ देरी से पहुंचते तो किसी को कष्ट देने के स्थान पर भीषण सर्दी में भी बाहिर ही सो जाते थे, परन्तु किसी को जगाते नही थे। जब आपको लाहौर के शाही किले में कैद किया गया तो भी आपने सर्दी, गर्मी व बरसात की ऋतुएं बिना बिस्तर के ही बिताई परन्तु किसी आर्य कार्यकर्ता को विपत्ती में नहीं डाला। आप उपदेशकों की सुविधाओं का भी पूरा ध्यान रखते थे।

१९३७ ई. में आर्य नेताओं के विरोध की चिन्ता किये बिना दीनानगर में दयानन्द मठ की स्थापना की ताकि वृद्ध व रुग्ण साधु वहां विश्राम कर सकें व साधना कर प्रचार के लिए तैयार हो सकें परन्तु कालान्तर में यह मठ आर्य सामाजिक गतिविधियों का मुख्य केन्द्र बन गया। बाद में रोहतक में भी दयानन्द मठ स्थापित किया दोनो मठों में आज तक ऋषि का अटूट लंगर प्रत्येक अभ्यागत के लिये निरन्तर चल रहा है। दीनानगर में तो दोपहर का भोजन आज भी भिक्षा द्वारा ही आता है। जब भी किसी साधु ने 'मरने के लिए स्थान' अर्थात वृद्धावस्था में समय काटने की इच्छा व्यक्त की तो दयानन्द मठ सेवा के लिए तैयार मिला। दयानन्द मठ में संस्कृत विद्यालय व निशुल्क आयुर्वेदिक औषधालय भी आरम्भ किया गया, जो आज भी चल रहा है। औषधि निर्माण भी की जाती हैं। परन्तु लाभ के लिये नहीं। बाढ़ व अन्य महामारियों के समय भी इस मठ ने क्षेत्र की भरपूर सेवा की है। दयानन्द संन्यास वानप्रस्थ मण्डल व विरजानन्द वैदिक संस्थान के उपप्रधान के रूप में विपुल साहित्य दिया। स्वामी जी के नाम से १९२२ ई. में अमृतसर के कटड़ा शेरसिंह में जो पुस्तकालय स्थापित किया उसका उपलब्ध साहित्य आज इतिहास में विशेष महत्व रखता है। इस समय इसमें १५००० से भी अधिक अनुपलब्ध ग्रन्थों का विशाल संग्रह है। दयानन्द मठ दीनानगर में भी एक पुस्तकालय स्थापित किया गया, जो शोधार्थियों के लिए अति उपयोगी है।

स्वामी जी जिस क्षेत्र में भी गए वहीं अपनी धाक छोड़ी, इसी कारण लोग आपकी स्तुति करते हैं। परन्तु हैदराबाद के सत्याग्रह का संचालन जिस कर्मठता व योग्यता से आपने किया, उसके कारण आपकी धाक न केवल देश में अपितु विदेशों में भी गहरी पैठ गई व सर्वत्र आपकी योग्यता का गुणगान होने लगा। हैदराबाद की घटनाओ को आप बहुत पहले ही भांप गए थे तथा तभी से तैयारी आरम्भ कर दी थी। इसी प्रकार देश के बंटवारे में होने वाली मारकाट के लिए भी आप वर्षों पूर्व ही चेतावनी देने लगे थे। यद्यपि किसी भी हमले में आप छाती तान कर अड़ जाते थे परन्तु जब देवियों व निरीह बच्चो पर मुसलमानों ने अत्याचार करने का प्रयास किया तो आप भी लाठी उठाकर ललकारने लगे। इससे विधर्मियों के छक्के छूट गए। जिस प्रकार निजाम हैदराबाद ने आर्यों मे अपने गुप्तचर छोड़ रखे थे, उसी प्रकार आपने भी आर्यों को अपना जासूस बनाकर नवाब के महलों व छावनियों से अत्यन्त गोपनीय समाचार भी प्राप्त किए। हैदराबाद सत्याग्रह व शहीद भाई श्यामलाल जी की लाश प्राप्त करने की सफलता का यही तो राज था।

(क्रमशः)

भारत का सविधान
उद्देशिका
"हम भारत के लोग भारत को एक संपूर्ण
प्रभुत्व सपन्न समाजवादी पथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक
गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिको को "
सर्व धर्म समभाव
Yajurveda
सभी धर्मों के लिए समान आदर की भावना
भारतीय संस्कृति मे रची बसी है
यही भावना हमारे आध्यात्मिक चिंतन
का आधार रही है
हमारी वास्तविक शक्ति धर्मनिरपेक्षता है
और यही है हमारे संविधान की मूल भावना
आईये, धर्मनिरपेक्षता के मार्ग पर चलने
का एक बार फिर सकल्प ले
(Hadith)
(Luke 6 31)
धर्मनिरपेक्षता
हमारे गणतंत्र की शक्ति

स्वास्थ्य चर्चा—

गुणकारी लौंग

लौग के नाम से सभी भली भाति परिचित है। यह देखने मे जितनी छोटी है गुणो की दृष्टि स उसस कही अधिक बडी है। विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओ का आसानी से समाधान करके यह एक घरेलू डाक्टर का काम करती है।

सामान्यत लौग का प्रयोग मसाले के रूप मे होता है। यह पाचन शक्ति को बढाती है तथा कफ व पित्त को शान्त रखती है। इसके अन्य अनेक लाभ है जिनमे से कुछ की चर्चा नीचे की जा रही है।

आप भी अच्छी श्रणी की कुछ लौंग एक शीशी मे भरकर रख लें ताकि अचानक आवश्यकता पडने पर काम आ सके।

—गर्भावस्था क दौरान प्राय स्त्रियो को चक्कर आना जी मिचलाना व उल्टिया आने की शिकायत हो जाती है। ऐसी स्थिति मे लौंग व छोटी इलायची को पीसकर मिश्री या शहद के साथ चाटने से बहुत लाभ होता है।

—छोटी आयु मे बच्चो को अक्सर मिट्टी खाने की आदत पड जाती है। फलस्वरूप उनका पेट खराब रहने लगता है तथा दर्द हो जाता है। कभी कभी कीड भी हो जाते है। ऐसे बच्चो को नियमित लौग घिसकर चटाने से पेट की शिकायत कुछ ही दिनो मे दूर हो जाती है।

—गले मे खराश हो जाने पर चार पाच लौंग भूनकर शहद के साथ चाटने से सुधार हो जाता है। खासी श्वास व दमा मे भी यह प्रयोग राहत पहुचाता है। पान मे दो लौंग रखकर चबाने से भी गला साफ होता है।

—हिचकिया आने की अवस्था मे २ ३ लौंग चबाकर गम पानी मे लेनी चाहिये।

—यदि शरीर क किसी भाग पर कोई जहरीला कीडा जैसे ततैया (बर) मकडी आदि काट ले तो लौंग को पानी मे घिसकर प्रभावित स्थान पर लगाना चाहिये। पीडा शान्त हो जायेगी।

—थोडी सी लौग सेब क रस मे अच्छी तरह (६ ७ घण्टे) भिगोकर रखने के बाद छाया मे सुखा ल। चार पाच लौग नियमित सेवन करने से स्वास्थ्य सुधरता ह।

—चाय का स्वाद बढाने के लिए दो लौग पीसकर डाल दे। ऐसी चाय गले को भी साफ करगी।

—लौंग के तेल को दातो पर लगाने से बहुत से रोग ठीक हो जाते है यहा तक कि पायरिया मे भी लाभ पहुचता है। दात मे कीडा लगने या दद होने की अवस्था मे थोडी सी रूई को किसी सलाई या सीख मे लगाकर व लौंग के तेल मे भिगोकर प्रभावित दात पर लगाने से समस्या का समाधान होता है।

—दो-तीन लौंग मु ह मे रखकर चूसने से मुख की दुर्गन्ध दूर हो जाती है।

—रेखा सक्सेना १२७७/डी गली न० ४
पूर्वी रोहताश नगर शाहदरा दिल्ली ११००३२

भारत को 'दारुल हरब' मानने वाले राष्ट्रीय नहीं

(पृष्ठ ३ का शेष)

विरोधी जो-जो चीजें होगी, वह उनको ही अपनाता है। हमने भारत को 'मां' कहा, परन्तु वह उसे 'दारुल हरब' कहता है। हम गाय की पूजा करते हैं परन्तु वह उसको काटता है। भारत मे वह बकरीद कहकर त्यौहार मनाता है। 'बकर' का अर्थ अरबी मे गाय होता है। अर्थात जो गाय हमारे लिए पूजनीय है, वह इस त्योहार पर बलि की जाती है। यह हमारी श्रद्धा के विरुद्ध है।

कृत्रिम सस्कृति और परम्पराएं

अपने राजनीतिक इरादो को पूर्ण करने के लिए उन्होने कृत्रिम सस्कृति और परम्पराओ की नींव डाली है। वस्तुत वे वस्तुए जिन्हें वह पूज्य मानता है वे भारतीय वस्तुओ के विपरीत हैं, इस प्रकार वह प्रतिक्रियात्मक दृष्टिकोण अपनाता है। हम गगा को पवित्र मानते है, तो वह डायग्रस और यूफ्रेटिस को पवित्र मानता है। कोयल और कमल हमारे साहित्य वर्णन मे अद्वितीय स्थान प्राप्त किये हैं—इसके विपरीत वह बुलबुल और नरगिस को अपने साहित्य का आलम्बन बनाता है। हमारे यहा हिमालय पर्वत को श्रद्धा का स्थान मिला है, पर वह कोयकाफ पर्वत को श्रद्धा की दृष्टि से देखता है। जब आर्य समाज ने शुद्धि आन्दोलन चलाया, उस समय मुसलमानों ने एक गीत बनाया —

'मेरे मौला बुला ले मदीना मुझे।'

यह गीत आर्य समाज के विरुद्ध रचा गया था। इसलिए इसकी अन्तिम पक्ति इस प्रकार थी—

'यहा न जीने देंगे आर्य मुझे।'

इस तरह यहा का मुसलमान सकट के समय मदीना की याद करता है। पर यदि हिन्दू पर सकट आये तो वह कहा भागेगा? जब भारत के बाहर केनिया जजीबार, ब्रह्मा (म्यानमार) आदि देशो मे हिन्दुओ का उत्पीडन प्रारम्भ हुआ, तब वहा का हिन्दू यदि कहीं आने की सोचता था तो वह केवल भारत देश मे ही। इस तरह हिन्दू का स्वाभाविक प्रेम भारत की ओर है। किन्तु मुसलमान का स्वाभाविक लगाव मक्का व मदीना से होता है। इस प्रकार यहा का मुसलमान यहा के जन-जीवन से अलगाव की वृत्ति लेकर चलता है। सम्पूर्ण भारत पर प्रभुत्व स्थापित करने की लालसा सदैव उसके मन मे रहती है। इसके कारण हर भारतीय वस्तु से अपना सम्बन्ध काटकर उसने अपनी एक स्वत निर्मित सस्कृति और परम्परा को बनाया है। और इसी राजनीतिक आकाक्षा का जीता-जागता स्वरूप है पाकिस्तान। एक बार मेरी भेट एक मुसलमान से हुई। बातचीत करने पर उसने बताया कि उसके पूर्वज राजपूत थे। जब उसने यह बात कही तो मैने उससे कहा कि राजपूत की एक विशेषता है कि वह अपने अपमान का बदला लिए बिना खामोश नही रहता। तब तुम भी अपने अपमान का बदला क्यो नहीं लेते? ऐसा कहने पर वह कुछ बोला नही।

अत अपना यह विश्वास है कि मुसलमानो की राजनीतिक पराजय के अतिरिक्त दूसरे सभी प्रकार के मार्ग अपनाने मे एक भय भी है कि लोग उल्टे हमारे लिये ही हानिकारक सिद्ध होगे। कांग्रेस मे कुछ हिन्दू ऐसे हैं जो अपने को घर मे हिन्दू कहते हैं, पर बाहर कभी भी अपने को हिन्दू नही कहते। ऐसा क्यो होता है? यह न्यूनता का भाव हिन्दू मे पराजय के कारण आया है। इसके विपरीत मुसलमानो मे राजनीतिक प्रभुता की आकाक्षा के कारण वरिष्ठता का भाव आया है। इसे निकालना आवश्यक है।

सर्व साधारण सिद्धान्त है कि पराजय आत्मालोचन को प्रेरित करती है। अत पराभूत होने पर ही मुसलमान आत्मालोचन के लिए तत्पर होगा। जब वह आत्मालोचन करेगा तब सही बातें सामने आयेंगी। फिर वह सोचेगा कि हिन्दुओ से अलग रहने मे फायदा नही है। इस तरह वह वरिष्ठता का भाव त्यागकर यहा के समाज से, जो हिन्दू समाज है, समरस होगा। तब वह अखण्ड भारत मे भी विश्वास करेगा।

अब प्रश्न उठता है कि यह सारा कार्य कब होगा? कौन करेगा? तो उसका यही जवाब है कि जिनमे राष्ट्रीयता का भाव शाश्वत रहेगा वही यह

हिन्दुओं की यह परम्परा रही है कि वह किसी पन्थ को बिगाड़े बिना उसे अपने में आत्मसात् करता है। आज भी हमें इतना मजबूत होने की आवश्यकता है कि हम सभी को आत्मसात् कर सकें। हम राष्ट्रीय स्तर पर आक्रामक धर्म के स्तर पर सहिष्णु और सामाजिक स्तर पर आत्मसाती रहें, तभी राष्ट्रीय जीवन मे आई विकृतियों को दूर कर सकते है।

कार्य कर सकेंगे। इसलिए ऐसे लोगो का सगठन जितना शक्तिशाली होगा, राष्ट्रीय एकता का कार्य उतना ही अधिक सफल रहेगा। जब राष्ट्रीय लोगो की सगठित शक्ति कम होती है, तभी स्वतन्त्र राजनीतिक सत्ता प्रस्थापित करने की अलगाव वृत्ति जन्म लेती है।

हिन्दुओ की यह परम्परा रही है कि वह किसी पन्थ को बिगाडे बिना उसे अपने मे आत्मसात करता है। आज भी हमे इतना मजबूत होने की आवश्यकता है कि हम सभी को आत्मसात कर सकें। हम राष्ट्रीय स्तर पर आक्रामक, धर्म के स्तर पर सहिष्णु और सामाजिक स्तर पर आत्मसाती रहें, तभी राष्ट्रीय जीवन मे आई विकृतियो को दूर कर सकते हैं।

हम किसी व्यक्ति या समाज के शत्रु नही है, न ही किसी के उपासना पन्थ से हमारा विरोध है तथा न ही हम किसी पन्थ विशेष के शत्रु हैं। हम तो पन्थ विशेष द्वारा राजनीतिक प्रभुता स्थापित करने की आकाक्षा के शत्रु हैं।

इस आकाक्षा को समाप्त करने का जो कार्य छत्रपति शिवाजी महाराज ने किया था आज उसे पुन आगे बढाने की आवश्यकता है। तभी अखण्ड भारत का स्वप्न साकार हो सकेगा।

आर्य गुरुकुल ऐरवा कटरा की यज्ञशाला के निर्माणार्थ दान

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्यपाद स्वामी आनन्दबोध सरस्वती महाराज ने गुरुकुल की यज्ञशाला के निर्माण मे सहयोगार्थ ५०००) पाच हजार रुपये का सात्विक दान प्रदान किया है। गुरुकुल परिवार पूज्य स्वामीजी का हार्दिक आभार प्रकट करते हुए परमात्मा से उनकेउत्तम स्वास्थ्य व दीर्घायुष्य की कामना करता है।

—आचार्य राजदेव शर्मा
प्रधानाचार्य

आर्य वन में योग शिविर

आर्य वन विकास फार्म मे २४ मार्च से २ अप्रैल १९९३ तक दस दिवसीय योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया है। ३ ४ अप्रैल को उत्सव मनाया जायगा। शिविर मे क्रियात्मक योग प्रशिक्षण के साथ योगादि दर्शनो के चुने हुए सूत्रो का अध्यापन भी किया जायगा। शिविर शुल्क २५० रुपये रखा गया है। जो आर्थिक दृष्टि से असमर्थ होंगे उनको योग्य जानकर शुल्क मे छूट दी जा सकेगी। अपनी योग्यता, व्यवसाय आयु सहित आवेदन पत्र निम्न पते पर लिखकर स्वीकृति ले लेवें तथा मन्त्री आर्यवन के पास शुल्क जमा करवा देवें।

विशेष जानकारी के लिए निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें।

आचार्य, दर्शन योग महा विद्यालय,
आर्यवन विकास, रोजड, पो० सागपुर,
जि० साबरकाठा, गुजरात ३८३३०७।

धनजीभाई जी पटेल, (प्रधान, आर्यवन)

स्वामी सत्यपति, (शिविराध्यक्ष)

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०४६/९३ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१४-२-१९९३) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (C) ९३
R N 626/57 Licensed to post without prepayment License No U (C) 93 Post in N.D P.S.O.on 11-12-2-1993

सूचना

सार्वदेशिक साप्ताहिक के पाठकों को सूचित किया जाता है कि दिल्ली मे कर्फ्यू के कारण दिनांक ७-२-९३ का अंक प्रकाशित नहीं किया जा सका। अत १४-२-९३ का अंक संयुक्तांक रूप मे प्रकाशित किया जा रहा है।

—सम्पादक

लाला लाजपतराय राष्ट्रवादियों के प्रेरणास्रोत थे

दिनांक ३१-१-९३ को आर्य समाज मन्दिर, लल्लापुरा, वाराणसी मे अमर शहीद लाला लाजपतराय की १२८वी जयन्ती समारोह 'आर्य वीर पर्व' के रूप मे आर्य वीर दल, लल्लापुरा के तत्वावधान मे श्री अवधबिहारी खन्ना की अध्यक्षता मे आयोजित किया गया। समारोह का शुभारम्भ वैदिक राष्ट्रीय गीत से हुआ।

वक्ताओ मे डा० आनन्द प्रकाश, श्री राजेन्द्रसिंह, श्री दिनेश आब, श्री दीप नारायणलाल, श्री प्रमोद आर्य, श्री प्रकाश नारायण शास्त्री ने लाला लाजपतराय के व्यक्तित्व एवं कार्यों का स्मरण किया।

इस अवसर पर आर्य वीर दल के युवकों एवं बालकों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम योगासन तथा जूडो-कराटे का प्रदर्शन किया गया। श्री रविप्रकाश ने श्री लाला लाजपतराय पर एक सुन्दर गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री अवध बिहारी खन्ना तथा संचालन श्री विजय कुमार आर्य ने किया।

—विजय कुमार आर्य, प्रचार मन्त्री

वार्षिकोत्सव

—आर्य समाज मेस्टन रोड, कानपुर का ११३ वां वार्षिकोत्सव शिवरात्रि के पावन पर्व पर बृहस्पतिवार १८ से रविवार २१ फरवरी, १९९३ तक मनाया जा रहा है।

नगर कीर्तन, बृहस्पतिवार १८ फरवरी की सायंकाल ४ बजे से होगा इस अवसर पर श्रीयुत स्वामी सत्यानन्द जी सरस्वती पानीपत, प्रो० रत्नसिंह जी एम० ए०, श्रीयुत रामचन्द्र जी विकल समर्थ सदस्य नई दिल्ली, श्री कुंवर महीपालसिंह जी संगीत रत्न, प० देवीप्रसाद जी, डा० वेदपालसिंह जी, ठा० जलेश्वर मुनि जी, श्री डा० वीरेन्द्र बहादुरसिंह जी, श्रीयुत लक्ष्मीधर जी शर्मा आदि पधार रहे हैं। इस अवसर पर अनेकों सम्मेलनों का आयोजन भी किया जा रहा है।

— विजयपाल शास्त्री, मन्त्री

—आर्य समाज चन्दैना सहारनपुर का १५ वां वार्षिकोत्सव २६ से २८ फरवरी तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। २८ फरवरी को बच्चों द्वारा प्रस्तुत विशेष कार्यक्रम होगा।

—आर्य समाज बाहरी रिंग रोड विकासपुरी नई दिल्ली मे ११ से १४ फरवरी तक यजुर्वेद शतक पारायण महायज्ञ तथा वार्षिकोत्सव सम्पन्न होने जा रहा है। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य प्रेमभिक्षु जी होगे। १४ फरवरी को वार्षिकोत्सव सम्पन्न होगा। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान भजनोपदेशक तथा नेता पधार रहे हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री रमेशचन्द्र शर्मा करेंगे।

—गुरुकुल वैदिकाश्रम वेदव्यास का १२ वां वार्षिकोत्सव एवं वेदपारायण यज्ञ १९ से २१ फरवरी तक उल्लासपूर्ण वातावरण मे मनाया जा रहा है इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात ४ ३० से प्रभात फेरी निकाली जायेगी। समारोह मे आर्य जगत के ख्याति प्राप्त सन्यासी तथा महात्मा पधार रहे हैं।

—केन्द्रीय आर्य सभा अमृतसर के तत्वावधान मे १८ फरवरी को ऋषि बोधोत्सव अत्यन्त समारोहपूर्वक मनाया जा रहा है इस अवसर पर १४-२ ९३ को विशाल शोभा यात्रा का आयोजन भी किया गया है।

प० श्यामसुन्दर वाजपेयी वैद्य का निधन

अत्यन्त दुःख के साथ सूचित किया जाता है कि हरदोई के कर्मठ आर्य समाजी प० श्यामसुन्दर वाजपेयी वैद्य का ३० १२ ९२ को प्रात निधन हो गया। उनका एकादशा ८-१-९३ तथा तेरहवीं ११-१ ९३ को सम्पन्न हुयी। इस अवसर पर [illegible] के अनेको गणमान्य व्यक्तियों ने उन्हे श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

आर्य समाज के चुनाव

आर्यसमाज पखा रोड सी० ब्लाक जनकपुरी के वार्षिक निर्वाचन मे प्रधान डा० शिवकुमार शास्त्री मन्त्री श्री सत्यप्रकाश आर्य कोषाध्यक्ष श्री हरिकिशन लाल गुलाटी चुने गये।

पं० महेन्द्रपाल आर्य, आर्य समाज के प्रचार में अग्रसर

प० महेन्द्रपाल आर्य जो कि १९८३ मे इस्लाम धर्म छोड़कर स्वेच्छा से वैदिक धर्म मे सम्मिलित हुए हैं वह वेद कुरान और बाईबिल के अच्छे विद्वान हैं और आर्य समाज के अन्तर्गत प्रचारक के रूप मे भारत के विभिन्न स्थानो पर आर्यसमाज, महर्षि दयानन्द की मान्यताओ तथा वेद, कुरान और बाईबिल पर प्रभावशाली व्याख्यान देते हैं। आर्य समाजो को उनकी सेवाओ का अधिक से अधिक लाभ उठाना चाहिए। उनका पता निम्न प्रकार है—

प महेन्द्रपाल, के० ५७२ द्वारा—श्री ओम प्रकाश जी
किदवई नगर, कानपुर-२०८०११

विदेश प्रचार पर

प० गजानन्द शास्त्री वैदिक धर्म के प्रचारार्थ नीदरलैण्ड स्थित "वैदिक स्तेख्तिगे आर्य समाज तथा आर्य समाज नीदरलैण्ड के निमन्त्रण पर ५ फरवरी १९९३ को जारहे हैं। आपने आर्यसमाज ग्रीनपार्क मे पुरोहित के रूप में निरन्तर ७ वर्ष तक सेवा की है। गुरुकुल आमसेना व गौतम नगर मे शिक्षा प्राप्त की है। वैदिक धर्म के प्रचार मे वहा की जनता ने उन्हें काफी सराहा है। दोबारा निमन्त्रण पर वह पुन आ रहे हैं।

—प० एस० सुभवन, अम्सटरडम, नीदरलैण्ड

३५ वां ऋषिबोधोत्सव

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा ३५ वां ऋषिबोधोत्सव १८ से २० फरवरी तक भव्य समारोह के साथ मनाया जारहा है इस अवसर पर १३ फरवरी से यजुर्वेद पारायण महायज्ञ पं० सोमदेव जी शास्त्री के ब्रह्मत्व मे सम्पन्न होगा। समारोह मे अनेको सम्मेलनों के साथ १९ फरवरी को विशाल शोभा यात्रा का आयोजन भी किया गया है। इस अवसर पर आर्य जगत के ख्याति प्राप्त महात्मा साधु, विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

दारुल हरब और दारुल इस्लाम

(पृष्ठ १ का शेष)

मुद्दा अयोध्या का है, इसे सुलझाना होगा। स्वामीजी ने कहा कि कांग्रेस समेत विभिन्न पार्टिया वोटो की राजनीति कर रही है इसलिए यह अटका पड़ा है। उन्होने कहा कि आज जरूरत 'हम सब भारतीय हैं' नारा देने की है। अन्त मे स्वामी जी ने कहा कि मुसलमानो की दारुल हरब और दारुल इस्लाम की सोच देश की राष्ट्रीय धारा मे बाधक है।

पत्रकार अनिल नरेन्द्र ने कहा कि जब प्रधान मन्त्री मसले को हल नहीं करना चाहते तो कैसे हल हो। सिर्फ भाजपा इसके लिए जिम्मेदार नहीं है। श्री यशपाल जैन ने कहा कि सरकार तो वोट की राजनीति करना नहीं छोड़ेगी इसलिए जनता को इसे छुड़वाने के लिए मजबूर कर देना चाहिए।

सार्वदेशिक प्रेस दरयागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

महर्षि दयानन्द उवाच

● भिन्न भिन्न भाषा पृथक् पृथक शिक्षा अलग-अलग व्यवहार का विरोध छूटना अति दुष्कर है। बिना इसके छूटे परस्पर का पूरा उपकार और अभिप्राय सिद्ध होना कठिन है।

● इसी मूढता से इन लोगो ने चौका लगाते-लगाते विरोध करते कराते सब स्वतन्त्रता आनन्द धन राज्य, विद्या और पुरुषार्थ पर चौका लगाकर हाथ पर हाथ धरे बैठे है और इच्छा करते है कि कुछ पदार्थ मिल और पकाकर खावें परन्तु वैसा न होने पर जानो आर्यावर्त्त देश भर म चौका लगाके सर्वथा नष्ट कर दिया है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष : ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३१ अक २ दयानन्दाब्द १६९ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९३ फाल्गुन कृ० १५ स० २०४९ २१ फरवरी १९९३

कश्मीर में साजिश के तहत मंदिर पहले भी तोड़े गये थे और अब भी तोड़े गए

सेक्यूलरवादियों को स्वामी आनन्द बोध सरस्वती का करारा जबाव

दिल्ली ९ फरवरी। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आज सभा कार्यालय मे नव भारत टाइम्स के प्रतिनिधि श्री ललित मोहन बसल को कश्मीर की विषम परिस्थितियो की जानकारी देते हुए कहा कि अयोध्या मे विवादित ढाचा गिराए जाने के बाद कश्मीर मे ४२ हिन्दू मन्दिर क्षतिग्रस्त किये गये है। ये मन्दिर किसी दुर्घटना वश नही बल्कि एक सोची-समझी साजिश के तहत गिराए गए हैं। यह साजिश नई नही है बल्कि पिछले एक दशक से इस मुस्लिम बहुल क्षेत्र मे चुन-चुनकर हिन्दू मन्दिरो को गिराया जा रहा है। इस कार्य मे कश्मीर के कट्टरपथी मुस्लिम समुदाय का साथ पाकिस्तान मे प्रशिक्षित जगजू दे रहे है। अयोध्या प्रकरण से पूर्व भी कश्मीर घाटी मे बडी सख्या मे मन्दिरो को क्षतिग्रस्त किया गया था। इस ओर उन्होने स्वय तत्कालीन प्रधानमन्त्री राजीवगाधी का ध्यान आकृष्ट किया था।

स्वामी आनन्दबोध जी न अपनी पिछली कश्मीर यात्रा और हाल ही मे सैकडो कश्मीरी हिन्दू पडितो से हुई बातचीत के आधार पर कथित छदम धर्म-निरपेक्षवादियो को चुनौती देते हुए कहा कि अगर उन्हे अपने प्रमाणो पर इतना ही भरोसा है तो सरकार को चाहिए कि वह एक गैर-राजनैतिक प्रतिनिधि मण्डल कश्मीर भेजकर पूरी स्थिति का मूल्याकन कराये। पूर्व सासद रामगोपाल शालवाले सन्यास लेने के बाद इन दिनो अपना पूरा समय आर्य समाज के प्रचार कार्य मे दे रहे हैं। उन्होने दावा किया कि कश्मीर घाटी मे शकराचार्य मन्दिर और गद्रबल के खीरामानी आदि कुछेक मन्दिरो को छोडकर ऐसा कोई भी मन्दिर सुरक्षित नही बचा है, जिसे क्षतिग्रस्त अथवा अपवित्र नही किया गया हो। उनका कहना था कि हब्बा कदल का गणपतयार मन्दिर और फतेहकदल के शिव मन्दिरो के सही सलामत होने के जो चित्र कुछेक समाचार पत्रो मे छपे है, वे भ्रामक हैं। हमले मन्दिर के अगले हिस्से पर नही पार्श्व हिस्सो पर हुए हैं, जिनमे अनेक मूर्तिया क्षतिग्रस्त हुई हैं।

उन्होंने बताया कि गत ४ फरवरी को अमृतसर यात्रा के दौरान उनसे अनेक कश्मीरी हिन्दू पण्डित मिले थे। इनमे अमीरा कदल के कुछ व्यापारी भी थे, जिन्होंने अयोध्या की घटना के बाद हिन्दुओ पर अत्याचार और मन्दिरो को क्षतिग्रस्त किये जाने की घटनाओ का बिलखते हुए वृतान्त सुनाया था। २६ व्यापारी वेश बदलकर तभी जम्मू पहुचे थे।

सुरक्षा कारणो से इन व्यापारियो के नाम गोपनीय रखने का आग्रह करते हुए स्वामी जी न कहा कि हाल ही मे जिन मन्दिरो को क्षति पहुचाई गयी है, उनमे ज्यादातर कश्मीर घाटी के छोटे-छोटे उपनगरो, पहलगाव, अनन्तनाग कुलगाम दोरू और अशहल मे स्थित थ।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती न मार्च १९८६ मे एक हिन्दू प्रतिनिधि मडल के कश्मीर घाटी के दौरे का विवरण देते हुए बताया कि उस समय उनका उद्देश्य वहा हिन्दू अल्पसख्यको के साथ दगो के बाद की स्थिति का अध्ययन करना था। उनका कहना था कि काजीकुण्ड से बारामुला तक के १२० किलोमीटर क्षेत्र म २० फरवरी १९८६ को किये गये हमलो मे हिन्दू मन्दिरो को तोडा गया और हिन्दुओ को कश्मीर छोडने के लिए बाध्य किया गया। बिजबिहाडा शिवमन्दिर, लोक भवन गौतम नाग म भी अनेक मन्दिर क्षतिग्रस्त किये गये।

उनका कहना था कि इस सारे षडयन्त्र मे जमाते इस्लामी और जमाते तुलबा आदि मुस्लिम सगठनो का हाथ था। उन्होने दावा किया कि इन साम्प्रदायिक दगो मे पाकिस्तानी एजेंटो की भूमिका के प्रमाण सरकार को मिले थे।

इस प्रतिनिधि मण्डल ने बाद मे प्रधानमन्त्री को एक विस्तृत रिपोर्ट दी थी, परिणामस्वरूप सरकार न हिन्दुओ के मन्दिरो और मकानो व दुकानो की मरम्मत के लिए दस करोड रुपए दिये थे।

स्वामी जी ने बताया कि अल्पसख्यक हिन्दुओ पर १९८६ के सुनियोजित हमलो से पूर्व भी अनेक मन्दिरो को नष्ट किया गया है और वह समय-समय पर इसकी शिकायत सरकार से करते रहे हैं। कश्मीर घाटी मे आर्य समाज के छ शिक्षण सस्थान है। इनमे हजूरीबाग देवकी कन्या पाठशाला को क्षतिग्रस्त किए जाने के बाद उन्होने इसकी शिकायत तत्कालीन मुख्यमन्त्री फारूख अब्दुल्ला से की थी।

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

विदेश समाचार

नेपाल मे आर्यसमाज के बढ़ते कदम

इस शीर्षक के अन्तर्गत हम समय-समय पर विश्वभर की आर्य समाजो से प्राप्त जानकारी के आधार पर धार्मिक सामाजिक तथा अन्य क्षेत्रो मे आर्य समाज की गतिविधियो के विषय मे सामग्री प्रकाशित करते रहे है। उसी क्रम मे प्रस्तुत है नेपाल के अन्तर्गत स्थापित आर्य समाजो की कुछ गतिविधियोकी रिपोर्ट।

नेपाल आर्य समाज के केन्द्रीय कार्यालय के अध्यक्ष श्री गोकुल प्रसाद पोखरेल ने सूचना भेजी है कि—

नेपाल मे आर्य समाज के कार्यक्रमो का जनमुखी एव सेवामूलक बनाने पर विशेष जोर दिया जा रहा है। इसी क्रम म गत नौ जनवरी को पाशुपत क्षेत्र मे एक समारोह आयोजित कर ५ परिगणित जाति के कुमारो का उपनयन सस्कार किया गया। रुढिग्रस्त कट्टर सम्प्रदायवादी नेपाली समाज मे यह कार्य एक क्रान्तिकारी महत्व का रहा। उपनयन सस्कार समारोह मे आशीर्वाद देने के लिए नेपाली ससद के सभामुख श्री दमननाथ ढुगाना पधारे थे।

इसके अतिरिक्त गत मास से नेपाल तराई के अति पिछडे समुदाय मे आर्यसमाज की ओर से औराहा" नामक एक गाव को गोद लेकर पूर्ण साक्षर कराने हेतु कार्यक्रम प्रारम्भ हो चुका है। इन कार्यक्रमो के सम्बन्ध मे विस्तृत विवरण अलग से भेजे जायेगे।

नेपाल आर्य समाज के सयोजन और सहयोग से पाशुपत क्षेत्र मे एक मानसिक चिकित्सालय गत १२ वर्षो से श्री टेक बहादुरराय माझी द्वारा सचालित हो रहा है। चिकित्सालय मे रोगियो के आवास भोजन एव उपचार की नियमित व्यवस्था है। अभी नेपाल मे चिकित्सको के अधिक वेतनमुखी होने तथा सेवा की भावना से काम करने वालो का अभाव होने से कठिनाई का सामना करना पड रहाहै।

भारत के आर्य समुदाय मे यदि कोई सेवानिवृत्त चिकित्सक नेपाल मे आकर सेवा करना चाहे तो उनके आवास, भोजन की नि शुल्क व्यवस्था के साथ हो चिकित्सालय की ओर से कुछ पारिश्रमिक की भी व्यवस्था की जा सकती है।

दूसरी तरफ नेपाल के जिला हसनपुर गोलबाजार से श्री रामेश्वर सिंह 'रमाकर' ने स्थानीय आर्य समाज के तीन दिवसीय जिला सम्मेलन की रिपोर्ट भेजीहै जिसमे नेपालकेविभिन्न क्षेत्रो से कई आर्य बन्धु पधारे तथा प्रतिदिन यज्ञ के बाद सामाजिक कुरीतियो के निवारण तथा अन्य वैदिक विषयो पर प्रवचन होते थे और सायकाल तीनो दिन शास्त्रार्थ का कार्यक्रम अत्यन्त प्रभावशाली तरीके से सम्पन्न होता रहा। इसी जिला सम्मेलन के अन्तर्गत कई लोगो ने यज्ञोपवीत धारण किये तथा स्थानीय लोगो ने एक आर्य समाज भवन बनाने के लिये समर्थन की घोषणा की। —सम्पादक

आज के सन्दर्भ मे—

स्वामी दयानन्द सरस्वती के विचार

—जो मत मतान्तरो के परस्पर विरुद्ध झगडे है उनको मैं पसन्द नही करता, क्योकि मतवालो ने अपने मतो का प्रचार कर—मनुष्यो को फसा के परस्पर शत्रु बना दिये हैं। इस बात को काट सर्वसत्य का प्रचार कर सबको ऐक्यमत मे करा द्वेश छुडा, परस्पर मे दृढ प्रीतियुक्त कराके, सबको सुख लाभ पहुचाने के लिए मेरा प्रयत्न और अभिप्राय है।

—मै अपना मन्तव्य उसीको जानता हू कि जो तीनकाल मे सबको एकसा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना वा मत-मतान्तर बनाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नही है। किन्तु जो सत्य है उसको मनवाना और जो असत्य है, उसको छोडना और छुडवाना मुझको अभीष्ट है।

—यदि हम सब मनुष्य और विशेष विद्वज्जन ईर्ष्या-द्वेष छोडकर सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना-कराना चाहे तो हमारे लिए यह बात असाध्य नही है। यह निश्चय है कि इन मतवाले विद्वानो के विरोध ही ने सबको विरोध जाल मे फसा रखा है।

—विद्वानो के विरोध से अविद्वानो मे विरोध बढकर अनेक विध दुख की वृद्धि और सुख की हानि होती है। इस हानि ने, जो कि स्वार्थी मनुष्यो को प्रिय है, सब मनुष्यो को दुखसागर मे डुबा दिया है।

—जो बलवान होकर निर्बलो की रक्षा करता है, वही मनुष्य कहाता है। और जो स्वार्थवश होकर पर हानि मात्र करता है, वह जानो पशुओ का भी बडा भाई है।

—एक मनुष्य जाति मे बहकाकर विरुद्ध बुद्धि कराके एक को शत्रु बना, लडा मारना विद्वानो के स्वभाव से बाहर है।

आदित्यपाल सिंह आर्य
भोपाल

सच्चे शिव का उपासक

फागुन की शिव रात्रि को मूल ने उपवास किया।
शिव के दर्शनार्थ रात्रि मन्दिर मे निवास किया॥
अटल व्रत धारण किया अन्न का ना ग्रास किया।
फूल फल मेवादि चढा शिव का पूजन खास किया॥
ढोल ढप बजाये मन मे हर्ष व उल्लास किया।
शिव जी के जगाने हेतु पूरा ही प्रयास किया॥
चूहो ने निकल कर खुल्लम खुल्ला परदा फास किया।
चढावा चट करके मन्दिर गन्दा आस-पास किया॥
मूषक की घटना ने मूलशकर को निराश किया।
जिसके दर्शन हेतु सहन भूख और प्यास किया॥
पाषाण प्रतिमा का मन मे कोई न विश्वास किया।
त्याग कर टकारा सच्चे शकर को तलाश किया॥
धारण कर कठोर व्रत साथ योगाभ्यास किया।
महादेव दर्शन हेतु भ्रमण गिरि कैलाश किया॥
दयानन्द नाम पाया धारण फिर सन्यास किया।
विरजानन्द दण्डी ने मथुरा बुद्धि का विकास किया॥
वेद विद्या प्राप्त करके अविद्या का नाश किया।
पादरी, पाखण्डियो का होश कर हवास दिया॥
बोलती हुई बन्द आकर जिसने भी बकवास किया।
सत्यार्थ प्रकाश रचा अमर ग्रन्थ पास किया॥
अनवरत कार्यरत बिल्कुल ना अवकाश किया।
अजन्मा प्रभु ने सबके हृदय अन्दर वास किया॥
आर्य समाज बना अमर जग इतिहास किया।
बम्बई नगरी मे सबसे प्रथम शिला न्यास किया॥

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

सम्पादकीय

महर्षि दयानन्द और राजस्थान

ऐतिहासिक घटनाओं और प्राकृतिक कार्यों के कारण उदयपुर को बड़ा महत्त्व प्राप्त है। किन्तु आर्यसमाज की दृष्टि मे इसकी महत्ता और भ अधिक है क्यो कि स्वामी दयानन्द यहा छः मास से अधिक रहे थे अर्थात् ११ अगस्त सन् १८८२ ई० को वे यहा पहुंचे थे और पहली मार्च सन् १८८३ को उन्होंने उदयपुर छोड़ा था। इस काल मे स्वामी जी ने जो कार्य किया उसमें से कुछ इस प्रकार है।

१—सत्यार्थ प्रकाश, जिसका प्रचार लाखो की सख्या मे हुआ है यहां पर तैयार हुआ है।

२—वेद भाष्य का कार्य भी बहुत कुछ यही पर किया गया है।

३—वेदाङ्ग प्रकाश का कुछ अंश भी यही रचा गया है।

४—श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपना स्वीकार पत्र भी यहीं लिखा है।

मेरा विचार है कि यदि स्वामी जी महाराज उदयपुर में न ठहरे होते तो जो कुछ लिखित कार्य कर गये हैं उसका आधा भी न छोड़ जाते।

उदयपुर में ही बैठकर "गोरक्षा-विषयक" एक मेमोरियल तैयार किया था वह चाहते हैं कि महाराणा उदयपुर व महाराजा जयपुर आदि के हस्ताक्षरों से श्रीमती विक्टोरिया के पास भेजा जाय और भारत में गो हत्या बन्द हो।

हिन्दी समस्त देश की भाषा हो, उदयपुर से ही उपरोक्त विचार के समर्थन में मेमोरियल भेजे जायें। और सरकार के पास, बहुत से पहुंचे भी।

सन् १८८२ ई० में शिक्षा विभाग के कमीशन की जो रिपोर्ट है उसमें लखनऊ, फर्रुखाबाद, मुरादाबाद, गढ़मुक्तेश्वर, लाहौर आदि स्थानों के नामों का उल्लेख है यह सब वस्तुतः श्री स्वामी जी के ही लेखो का फल था।

श्री स्वामी जी उदयपुर के महाराणा सज्जनसिंह को पढ़ाया भी करते थे। साथ ही अनेक लोगो ने स्वामी जी के उपदेशों से लाभ भी उठाया था। महाराजा सज्जनसिंह व जनता स्वामी जी महाराज का अच्छा सम्मान करती थी। उदयपुर प्रवास में श्री स्वामी जी का सम्पूर्ण व्यय महाराणा की ओर से ही होता था।

जब महर्षि उदयपुर से प्रस्थान करने लगे—तो महाराणा ने २००० दो हजार रुपये भेंट मे दिये थे जो स्वामी जी महाराज ने परोपकारिणी सभा मे जमा कर दिये थे इस प्रकार परोपकारिणी सभा मे निधि की नीव पड़ी।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन से पता चलता है कि महाराणा ने ५ सौ रुपये फिरोजपुर अनाथालय हेतु व लड़कियों के पारितोषिक देने हेतु भी दिया। एक हजार रुपया वेद भाष्य के लिये दुशाला के साथ भेंट दिया था।

महाराणा ने स्वामी जी को जो मानपत्र दिया था वह महर्षिजी के जीवन चरित्र भाग दो में १९९० वि० पृ० ६८६ मे इस प्रकार छपा है।

स्वामी श्री सर्वोपकारार्थ कारुणिक परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री ५ श्रीमद्दयानन्द सरस्वती यतीवर्येषु इतः महाराणा सज्जनसिंहस्य नतिततयः समुल्लासन्तु इदन्तु, आपका अठे सात मास का निवास सुचित आनन्द मे रह्यो क्योंकि आपकी शिक्षा का प्रकार श्रेष्ठ उन्नति दायक हैं और आपका संयोग सूं ही न्याय धर्मादि शारीरिक कार्य में निस्सन्देह लाभ प्राप्त होवा, कि म्हां का सभ्य जना सहित दृढ़ आशा हुई कारण कि शिक्षा उपदेश वां का श्रेष्ठ पुरुषों का दृढ़ होवे है। जो स्वकीय आचरण भी प्रतिकूल नहीं राखे तो आपमें यथार्थ मिल्यो, अठम्हैं आपका वियोग का संयोग नहीं चावां हां परन्तु आपका शरीर अनेक पुरुषों के उपकारक है जी सूं अवरोध करणो अनुचित है।

तथापि पुनरागमन सूं आप म्हां का चित्त ने शीघ्र अनुमोदित करैगा। इत्यलम्। सम्वत् १९३९ फाल्गुणकृष्ण ५ भौमे।

हस्ताक्षर-महाराणा-सज्जन सिंहस्य—

उक्त बातों के कारण उदयपुर के विषय में बहुत कुछ जानने का इच्छुक था—अनेक लोगों से वहां का हाल पूंछा किन्तु तृप्ति न हुई।

दैवयोग से १ अक्टूबर सन् १९९८ ई० में उदयपुर जाने का अवसर मिला इस काल में बहुत कुछ जानकारी मिली।

नवलखा-बाग जिसमें स्थित नवलखा-महल में श्री स्वामी जी महाराज ठहरते थे और महाराणा सज्जनसिंह को पढ़ाते व उपदेश देते थे उस भवन में सरकारी कार्यालय था।

उस महल में यह अंकित होना चाहिये कि स्वामी जी यहां कब-कब पधारे कितने समय रहे और कब प्रस्थान किया।

महाराणा सज्जनसिंह जी की दैनिक दिनचर्या उदयपुर में सुरक्षित है—स्वामी जी महाराज से सम्बन्धित बातो को उद्धृत करवाकर स्वामी जी के जीवन चरित्र मे बढाना चाहिये।

स्वामी जी का राजस्थान से विशेष सम्बन्ध रहा है—परोपकारिणी सभा का कार्यालय तथा स्वामी जी का प्रयाण स्थल भी अजमेर ही है।

राजनैतिक दृष्टि से स्वामी दयानन्द ने राजाओ के ऊपर विशेष ध्यान दिया—वह जानते थे कि राजा गण शक्ति साधन सम्पन्न हैं यदि यह सम्हल गये तो विदेशी शक्तियों को भारत से बाहर निकालने मे कुछ भी समय नहीं लगेगा। अतः स्वामी जी का राज्यशक्ति की ओर विशेष ध्यान गया।

आर्य समाज के कार्यकलापों में जोधपुर-महल जहां ऋषिवर पधारे थे अलवर में १९७२ के अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर राजस्थान सरकार ने सार्वदेशिक सभा को दे दिया था और अब उदयपुर का नवलखा-महल भी आर्य समाज को प्रदान कर दिया है।

उपलब्धियों मे यह कदम महत्त्वपूर्ण है। स्वामी दयानन्द का जीवन दर्शन उनके जन्म दिन पर बोधरात्रि बनकर प्रेरणादायक बनें।

ऋषि दयानन्द को याद करो

भारत वीरों जगत गुरु, ऋषि दयानन्द को याद करो।
करो वेद प्रचार विश्व में, समय न अब बर्बाद करो।।

फाल्गुण की शिवरात आर्यों, आई नव सन्देश लिए।
जिसने बाल मूलशंकर, ऋषि दयानन्द जी बना दिए।।
ऋषिवर स्वामी दयानन्द ने, जीवन भर उपकार किए।
वेदामृत पिलाया जग को, स्वयं भयंकर जहर पिये।।

दयानन्द के वीर सैनिको, निर्भय हो, सिंह नाद करो।
करो वेद प्रचार विश्व में, समय न अब बर्बाद करो।।

आज जगत में वेद विरोधी, पाखण्डी हैं जोरों पर।
मानवता तो बिलख रही है, घूम रहे हैं दुष्ट निडर।।
मांसाहारी और शराबी, बढते जाते हैं पामर।
यवन और ईसाई पापी, मस्ती में है रहे विचर।।

कृष्ण बनो, लो चक्र सुदर्शन, मन में नहीं विषाद करो।।
करो वेद प्रचार विश्व में, समय न अब बर्बाद करो।।

याद रखो इस दुनिया में जो, भले काम कर जाता है।
अबला, दीन, अनाथों को जो अपने गले लगाता है।।
विघ्न और बाधाओं से जो, कभी नहीं दहलाता है।।
धन्य उसी का तो जीवन है, जग में आदर पाता है।।

स्वामी श्रद्धानन्द बनो तुम, वीरो मत प्रमाद करो।
करो वेद-प्रचार विश्व में, समय न अब बर्बाद करो।।

युवक-युवतियां बिगड़ गए हैं, गन्दे गाने गाते हैं।
गीता, रामायण, वेदों को, कल्पित ग्रन्थ बताते हैं।।
स्वास्थ्य-चरित्र दिया खो पगले, निर्बल हो दुख पाते हैं।
राम, लक्ष्मण से भ्राता, अब कहीं नजर ना आते हैं।।

अर्जुन, भीम, नकुल सी पैदा, फिर से तुम औलाद करो।
करो वेद प्रचार विश्व में, समय न अब बर्बाद करो।।

अगर भलाई चाहो तो तुम, नियम एक ये अपनाओ।
कथनी-करनी एक बनाओ, दुनिया में इज्जत पाओ।।
वेदों का स्वाध्याय करो, विद्वान अनूठे बन जाओ।
अपने प्यारे आर्यवर्त्त को, भूमण्डल पर चमकाओ।।

पाखण्डों के बन्धन तोड़ो, जन-जन को आजाद करो।
करो वेद प्रचार विश्व में, समय न अब बर्बाद करो।।

—पं० नन्दलाल निर्भय सिद्धांत शास्त्री भजनोपदेशक
ग्राम व पोस्ट बहीन, जिला फरीदाबाद (हरियाणा)

हम भी शिव बनें : कैसे ?

—पूर्व प्रिन्सीपल विमला श्रीवास्तव, भिलाई

आइये शिवरात्रि पर्व से प्रेरणा प्राप्त कर हम भी शिव बनें, परन्तु कैसे ? इसका उपाय निम्नलिखित है—

शिव का अर्थ है कल्याणकारी। 'शिव' ईश्वर का पर्यायवाची शब्द भी है क्योंकि संसार का सबसे अधिक कल्याणकारी यदि कोई है तो वह है इस संसार का रचयिता [पालन-पोषण कर्ता, रक्षाकर्त्ता संहारकर्त्ता सर्वशक्तिमान व सर्वव्यापक परमात्मा। इस कारण वेदों में उस परमशक्ति को 'शिव', 'शंकर' आदि नामों से सम्बोधित किया गया है। ईश्वर को 'शिव' नाम से सम्बोधित करते हुए नमस्कार मन्त्र उदाहरणीय है —

ओ३म नमः शम्भवाय च, मयोभवाय च,
नमः शंकराय च, मयस्कराय च,
नमः शिवाय च शिवतराय च।

कल्याणकारी परमात्मा का शिव रूप सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है। अग्नि, जल वायु पृथ्वी व आकाश ये पांच तत्व जिनसे सृष्टि का निर्माण हुआ है हर समय प्राणिमात्र का निरन्तर कल्याण कर रहे हैं।

सूर्य अग्नि का ही रूप है जिससे सदैव हमें प्रकाश, चेतना व प्रेरणा शक्ति प्राप्त होती है। पृथ्वी मां की भांति अपने मधुर फल फूलों व रोग निवारक औषधियों द्वारा निरन्तर प्रेमभाव से हमारा पालन पोषण करती है। वायु हमें केवल प्राण ही प्रदान नहीं करती अपितु हमें प्यार से चूमती हुई मां की तरह लोरी दे-देकर आनन्दित करती है। जल हमें निरन्तर प्राण प्रदान करके शीतलता व तृप्ति प्रदान करता है। आकाश के द्वारा शिवरूप परमात्मा हमें वाणि देकर परस्पर वार्त्तालाप व संगीत का आनन्द प्रदान करता है।

सारांश यह है कि यदि ये पांच तत्व न होते तो हम कभी भी सुखी व आनन्दित नहीं हो सकते थे परन्तु हमारा दुर्भाग्य है कि हमने ईश्वर की इस महान देन को कभी महत्व नहीं दिया और न ही उसके प्रति हम कभी कृतज्ञता प्रकट करते हैं। भक्त कवि गुरु नानक देव जी ने सत्य ही कहा है—

दात पियारी बिसरिया दातार
कोई न जाने जनम मरण विचार।

अर्थात दाता ने जो कुछ हमें दिया है उसकी देन तो हमें अत्यन्त प्रिय हो गयी परन्तु उसे देने वाला दाता हम भूल गए। किसी को अपने जन्म व मरण का भेद ही मालूम नहीं।

हमारे भारतीय चित्रकारों व मूर्तिकारों ने परमात्मा के इस शिव रूप को शिव के चित्र व मूर्ति के रूप में जितनी सुन्दरता के साथ चित्रित किया है वैसा चित्रांकन विश्व का कोई चित्रकार या मूर्तिकार आज तक नहीं कर सका।

भारत में ईश्वर के शिव रूप की वैदिक काल से स्तुति वंदना चली आ रही है इसका साक्षी है शिव की प्रतिमा या उसके चित्र उस ईश्वर के कल्याणकारी गुणों के प्रतीक है जो हमें शिव को पाने के लिए तथा कल्याणकारी बनने की मधुर शिक्षा व प्रेरणा प्रदान करते हैं

शिव की प्राप्ति पवित्र मन द्वारा आलस्य त्याग कर साधना करने से ही सम्भव हो सकती है परन्तु दुर्भाग्य से हम लोग धीरे धीरे इस सत्य साधना को भूल गए और केवल शिव के मूर्तिपूजक बनकर रह गए। मूर्ति से प्रेरणा लेने के स्थान पर हम केवल यन्त्रवत अर्घ्यादि चढाने व तिलक लगाकर चरणामृत पीने में ही अपनी पूजा की इतिश्री समझ बैठे। इस यन्त्रवत पूजा विधान से एक दिन सच्चे शिव के अनुरागी मूलशंकर जी जब सच्चे शिव के दर्शन नहीं कर सके तो उनकी अतृप्त आत्मा विद्रोह कर उठी और अपने पिता पितामह द्वारा मनाई जाने वाली २४ फरवरी १८३८ का शिवरात्रि उनके लिए बोध दिवस बन गई। अन्ततोगत्वा मूलशंकर जी सच्चे शिव की खोज करने के लिए घर से निकल पड़े और अपनी भक्ति, साधना व तपश्चर्या द्वारा उन्होंने एक दिन सच्चे शिव को खोज निकाला तथा उस कल्याणकारी ईश्वर के गुणों को धारण करके वह स्वयं भी शिवरूप हो गए। यदि हम भी चाहें तो हम भी शिवजी के चित्र को ध्यान में रखकर उसमें दर्शाए गए कल्याणकारक गुणों को अपने जीवन में धारण करके शिव बन सकते हैं। उदाहरणतया—

शिवजी के चित्र में बाघ के चर्मासन पर एक व्यक्ति को समाधि में लीन दिखाया गया है जिसकी जटा से गंगा प्रवाहित हो रही है। साथ ही दूज का चांद दिखाया गया है। माथे पर दो नेत्रों के बीच में तीसरा नेत्र है। गले में सांप लिपटे हैं। कण्ठ विष पीने के कारण नीला दिखाया गया है। शरीर पर भभूति रमाई हुई है। पास में त्रिशूल, डमरू व नंदी बैल है। इन सब चिन्हों के द्वारा चित्रकार ने बहुत गंभीर अर्थ को चित्रित किया है जो निम्नलिखित है—

(१) सिर से बहने वाली गंगा का अर्थ है, गंगा की तरह शीतल व पुनीत विचारधारा अर्थात काम, क्रोधादि विकारों से रहित शांत पवित्र व उज्जवल विचारधारा।

(२) दूज का चन्द्रमा—उत्तरोत्तर बढ़ने वाले, लोक रंजक शीतल ज्ञान रूपी प्रकाश का प्रतीक है।

(३) तीसरा नेत्र इससे तात्पर्य है अलौकिक ज्ञान जिसके द्वारा शिवजी ने कामदेव को भस्म कर दिया।

(४) शरीर पर भभूति—इसका अर्थ है शरीर नाशवान है प्राण निकल जाने के बाद यह शरीर राख हो जाएगा अतः इससे मोह करना उचित नहीं।

(५) बाघ चर्मासन—इससे अभिप्राय है काम वासना बाघ की तरह शक्तिशाली होती है इस पर विजय प्राप्त करनी चाहिए।

(६) डमरू—यह क्रांति शांति शक्ति व प्रेरणा का प्रतीक है।

(७) त्रिशूल—अर्थात त्रि (तीन) शूल। त्रिशूल तीन प्रकार के शूलों अर्थात शारीरिक, मानसिक व प्राकृतिक कष्टों का प्रतीक है। वेदमन्त्र द्वारा शांतिपाठ में हम तीन बार शांति शांति शांति का उच्चारण करते हैं इसके द्वारा हम प्रार्थना करते हैं कि हे परमात्मा हमारे इन तीन प्रकार के शूलों को दूर करें।

(८) नंदी बैल—यह कृषि का साधन तथा समृद्धि का प्रतीक है।

(९) गले में सर्प माल —यह लोगों के कष्टों को गले लगाने या दूर करने का प्रतीक है।

(१० नीलकण्ठ—यह समाज सेवा करते हुए कष्टों को पीने की ओर संकेत करता है।

तात्पर्य यह है कि शिवजी के चित्र में चित्रित शिव के उपरोक्त गुणों को धारण करने से हम भी शिव बन सकते हैं।

(१) शिव बनने के लिए हम सबसे पहले काम क्रोध लोभ आदि विकारों पर विजय प्राप्त करके अहिंसक बनने का अभ्यास करें।

क्रोध को शांत करने का एक ही उपाय है वह है हम अपने को सर्वशक्तिमान न्यायकारी व दयालु न मानकर ईश्वर को ही सर्वशक्तिमान न्यायकारी व दयालु मान कर चलें। इससे हमारा अहंकार नष्ट होगा और हमारे सिर से शीतल व पवित्र विचारों की गंगा प्रवाहित होने लगेगी। बिना शीतल व शुद्ध विचारों के हम दूसरों का कल्याण तो दूर रहा अपना कल्याण भी नहीं कर सकते।

(२) हम दूज के चन्द्रमा की भांति निरन्तर अपने ज्ञान के प्रकाश को बढ़ाने के लिए स्वाध्याय करें।

(३) हम अपने शरीर को नाशवान समझकर समाज के कष्ट रूपी सांपों को गले से लगाकर चलें अर्थात उनके कष्टों को दूर करने का प्रयत्न करें।

(४) बाघ के चर्मासन पर बैठकर अर्थात संयमी होकर ईश्वर का ध्यान व चिंतन करें। ईश्वर भक्ति से ही हम कल्याणकारी कार्य कर सकते हैं।

(५) समाज सेवा के कार्यों में मिलने वाले कष्टों या अपमान रूपी विष को पी जायें परन्तु उन्हें अपने गले तक ही रखें। उन्हें गले से नीचे उतारकर हृदय को न छूने दें। यदि यह विष एक बार गले से उतरकर हमारे हृदय तक पहुंच गया तो हममें क्रोध उत्पन्न हो जाएगा। तब हम समाज का कल्याण नहीं कर पायेंगे।

(६) हानिकारक रूढ़ियों को समय समय पर डमरू बजाकर अर्थात क्रांतिकारी विचारों द्वारा दूर करते रहें।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

पत्रकार खुशवन्त सिंह और आर्य समाज

—डा० भवानीलाल भारतीय

अंग्रेजी के लेखक और पत्रकार खुशवन्त सिंह प्राय हल्का फुल्का यदा कदा गम्भीर लेखन भी करते हैं। पत्रो के पाठक उन्हे राजनैतिक विषयो के स्तम्भ लेखक प्राय चुटकुले लिखने वाला तथा अंग्रेजी मे कथा साहित्य लिखने वाले के रूप मे भी मान्यता देते है। आकृति प्रकृति तथा वेशभूषा मे सिख होने पर भी वे सिख धर्म दर्शन अथवा कर्मकाण्ड के प्रति अधिक आस्था वान नहीं है। विदेशी शराब वे जमकर पीते हैं और अपनी इस पानप्रियता को छिपाते भी नही। उन्होने विगत मे भी हिन्दुओ और सिखो मे उत्पन्न दुराव तथा दोनो के एक दूसरे से दूर हटने के कारणो की अपने ढग से तलाश की है तथा उसे पुस्तको और लेखो मे प्रकट किया है।

जनसत्ता के ८ नवम्बर १९९२ के अक मे उनका लेख सिखो के मन का अधेरा उजाला प्रकाशित हुआ है। इसकी कटिंग मुझे नई दिल्ली के श्री वेदप्रकाश विद्यार्थी ने भेजी है और अनुरोध किया है कि इसमे आर्य समाज विषयक जो प्रसग खुशवन्तसिंह ने लिखे हैं उन पर मैं तथ्यपूर्ण विचार रक्खू। सिखो की मानसिकता तथा उनकी जीवन पद्धति पर पत्रकार महोदय ने जो कुछ लिखा है उस पर तो कुछ भी लिखना जरूरी नही है। प्रसगोपात्त उन्होने स्वामी दयानन्द के पजाब जाने तथा परवर्ती काल मे आर्यसमाज द्वारा हिन्दुओ और सिखो मे अलगाव पैदा करने के जो आरोप लगाए हैं वे निश्चय ही दुर्भावना पूर्ण मिथ्या तथा इतिहास विरुद्ध है। पहले मैं खुशवन्तसिंह के कथन को उनके शब्दो मे ही उद्धृत करूगा— सन १८७७ मे स्वामी दयानन्द सरस्वती सिख सगठन के निमन्त्रण पर पजाब गए और वहा कई शहरो मे उन्होने आर्य समाजो की स्थापना की। उन्होने सिख गुरुओ की बडी आलोचना की गुरु नानक को अनपढ और दम्भी कहा इससे सिखो मे नाराजगी पैदा होना स्वाभाविक ही था। सिखो को हिन्दू धर्म मे वापस लौटाने के आर्य समाज के प्रयत्नो को काटने के लिए सिखो ने भी जगह जगह सिंह सभाए सगठित की। लाभा के काहनसिंह ने आर्यसमाज के इस दावे का जवाब देने के लिए कि सिख हिन्दू हैं हम हिन्दू नही हैं शीर्षक से एक पुस्तिका लिखी और सिखो के घर घर पहुचाई। आर्य समाजियो और सिंह सभाओ ने मिलकर हिन्दुओ और सिखो के बीच की खाई को और गहरा कर दिया।

यह है हमारे पत्रकार महोदय का चिन्तन और तत्कालीन घटनाओ का विश्लेषण। अब हम खुशवन्तसिंह के उक्त विवेचन की तथ्यात्मक परख कर। यह सत्य है कि स्वामी दयानन्द का पजाब मे आगमन १८७७ मे हुआ किन्तु वे सिखो के निमन्त्रण पर वहा नही गए थे। पजाब मे वे सर्वप्रथम लुधियाना आए जहा आने का निमन्त्रण उन्हे कन्हैयालाल अलखधारी नामक एक क्रान्तिकारी विचारक ने दिया था। तत्पश्चात वे लाहौर आए। उर्दू पत्र कोहेनूर के स्वामी मुन्शी हरसुखराम भटनागर पजाब के कार्य निवृत्त मीर मुन्शी प० मनफूल तथा लाहौर ब्रह्मसमाज के कार्यकर्ताओ ने उन्हे लाहौर आने के लिए निमन्त्रित किया था। अत यह लिखना सत्यता से दूर है कि सिखो के निमन्त्रण पर वे पजाब आए। स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश मे गुरु नानक और अन्तिम गुरु गोविन्द सिंह के अतिरिक्त अन्य किसी सिख गुरु के बारे मे एक शब्द भी नही लिखा। अत यह लिखना भी गलत है कि उन्होने सिख गुरुओ की कडी आलोचना की। अब हम स्वामी दयानन्द की उन समीक्षात्मक टिप्पणियो को भी देखें जो उन्होने प्रथम और अन्तिम गुरु के बारे मे लिखी है।

सत्यार्थ प्रकाश के ११वें समुल्लास मे भारतवर्षीय मत मतान्तरो की आलोचना के प्रसग मे ही सिख मत की चर्चा आई है। यो निष्पक्ष होकर देखा जाए तो स्वामी जी ने सिखो के धार्मिक मन्तव्यो की प्रशसा ही अधिक की है। टीका रूप मे तो थोडा ही लिखा गया है। स्वामी जी ने गुरु नानक के विषय मे निम्न प्रशसा पूर्ण उद्गार व्यक्त किए। नानक जी का आशय अच्छा था। जिस समय वे पजाब मे गए उस समय पजाब सस्कृत विद्या से सर्वथा रहित मुसलमानो से पीडित था। उस समय उन्होने कुछ लोगो को बचाया। पुन गुरु गोविन्दसिंह के बारे मे महाराज लिखते हैं—गोविन्दसिंह जी शूरवीर हुए। पच ककार की रीति उन्होने अपनी बुद्धिमत्ता से उस समय के लिए की थी। इन सबने (अर्थात सिख गुरुओ) भोजन का बखेडा बहुत सा हटा दिया। जैसे इसको हटाया वैसे (ऋषि की कामना है कि) विषयासक्ति दुरभिमान को भी हटा कर वेद मत की उन्नति करें तो बहुत अच्छी बात है।'

यदि स्वामी जी ने गुरु नानक को अनपढ और दम्भी कहा तो यह प्रसग दूसरा है। ऋषि दयानन्द का समस्त धार्मिक चिन्तन और आन्दोलन आर्यों के सर्वमान्य वेदादि सत्य शास्त्रो से पुष्ट एव प्रमाणित होने वाला था। वे स्वय सस्कृत के महान पण्डित तथा आर्य शास्त्रो के पारगामी विद्वान थे। इस दृष्टि से उन्होने मध्यकालीन सन्त मत के उन सभी प्रवर्तको गुरुओ तथा सम्प्रदायाचार्यों की आलोचना की है जो शास्त्रो से अनभिज्ञ थे यदा कदा शास्त्रो की निंदा भी करते थे और गुरुडम को प्रकाश देने वाले उपदेश जन सामान्य विशेषत ग्रामीण अपठित जनो को देते थे। इसी श्रेणी मे आने वाले दादू कबीर आदि सभी सन्त स्वामी जी की आलोचना के पात्र बने हैं। गुरु नानक भी इसका अपवाद नही है यद्यपि वे उनके आशय के प्रशसक हैं।

अब आगे चलें। ऋषि दयानन्द के परलोक गमन के पश्चात आर्य समाज ने पजाब मे उन दलित और पिछडे वर्गों की शुद्धि का महाअभियान चलाया जो जन्मना चाहे हिन्दू या सिख ही थे किन्तु उच्च कुल वाले हिन्दू और सिख उन्हे अस्पृश्य तथा दलित मानते थे। हिन्दुओ मे तो ऐसी अछूत जातिया थी ही सिखो मे भी मजहबी गुलाबदासी रविदासी आदि थे जिनकी सामाजिक स्थिति हिन्दुओ मे गिने जाने वाले चमारो मेघो आदि से किंचित भी भिन्न नही थी। आर्यसमाज ने इन सभी दलित वर्ग के लोगो को सामाजिक समानता तथा धार्मिक अधिकार दिलाने के प्रयत्न किए इन सबका आरम्भ शुद्धि सस्कार के द्वारा ही होता था। जब लाखो लाख अस्पृश्य और दलित कहे जाने वाले

(शेष पृष्ठ ७ पर)

आत्मबोध का पर्व शिवरात्रि

डा० महेश विद्यालंकार

आर्य समाज के जन्म, निर्माण और इतिहास में शिवरात्रि की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इसी पर्व पर आर्य समाज के उदय का बीजांकुर हुआ था। शिवरात्रि के मंगल पावनपर्व पर ही पुण्यात्मा मूलशंकर को कण-कण में व्याप्त शंकर के वास्तविक मूल को जानने और पाने की प्रबल जिज्ञासा उठी थी। इसी दिन मूलशंकर की प्रसुप्त चेतना उद्बुद्ध हुई थी। जीवन में भयंकर झंझावात आया था। विचारों में ऐसा तूफान उठा कि सब कुछ तोड़ता, छोड़ता, मोड़ता, दुनियां से अकेला, अलग था खड़ा हुआ। बाद में वही पहचान दयानन्द बनी। वह देवपुरुष शिवरात्रि की रात जागने के बाद जीवन भर कभी नहीं सोया। उस महामानव के हृदय में सत्य और असत्य को, धर्म और अधर्म को, जड़ और चेतन को, शिव और अशिव को जानने की प्रबल इच्छा थी। सच्चे शिव को जानने की उसी बलवती इच्छा से हृदय में सत्य ज्ञान का बोध हुआ। जीवन में तप-त्याग तपस्या और संकल्प का सहारा लेकर घर से निकल पड़ा, अनेक कष्ट-बाधाएं-विरोध आए, पर वह महायोगी आगे ही बढ़ता गया। जिसने संसार के इतिहास में जीवन्त-चेतना अध्याय जोड़ा। उसी ऋषिवर की ज्ञान-स्मृति और प्रेरणा का पर्व है शिवरात्रि।

पर्व जीवन में प्रेरणा, चेतना, उत्साह, संकल्प श्रद्धा और नूतनता का सन्देश देने के लिए आते हैं। महापुरुषों के जीवन की प्राणवन्त घटनाएं संसार को प्रेरणा, उपदेश, सन्देश और आदर्श प्रदान करती हैं। शिवरात्रि आत्मबोध और आत्म चिन्तन का पर्व है। हमने जीवन में क्या पाया और क्या खोया है? हम किधर जा रहे हैं? हमारा लक्ष्य क्या है? कहीं हम ऐसे दुर्गुण, दुर्व्यसनों और कर्मों में लिप्त तो नहीं हो रहे हैं? जिनसे मानवता का पद कलंकित होता है? कहीं मेरे अन्तस में काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष, घृणा आदि शत्रु अन्दर ही अन्दर खोखला तो नहीं कर रहे हैं? कहीं मैं मात्र अपने लिए ही तो नहीं जी रहा हूं? मैं आत्म कल्याण के लिए क्या कुछ पूंजी एकत्र कर रहा हूं, या कि व्यर्थ में ही भोग-विलास तथा वासनाओं की पूर्ति में अमूल्य मानव जीवन व्यतीत किए जा रहा हूं? मैं संसार में किसलिए आया हूं? मेरा क्या कर्तव्य है? कहां जाना है? क्या लेकर जाना है? किसके पास जाना है?

यही है आत्मबोध, जीवन बोध, कर्त्तव्य बोध और दिशा बोध की धारा। भारतीय संस्कृति की मूल-चेतना में आत्मबोध का स्वर मुखर है। इसी कारण भोग के साथ योग, भौतिकता के साथ आध्यात्मिकता, शरीर के साथ आत्मा और प्रकृति के साथ परमात्मा को जानने का भाव जोड़ा गया। जिससे जीवन में समरसता बनी रहे। जीवन मूल-उद्देश्य से भटके नहीं। आज जीवन और जगत के प्रति दृष्टिकोण मात्र भोगवादी और प्रकृतिवादी हो रहा है। उसी का परिणाम है कि सर्वत्र अशान्ति, कलह, रोग, शोक, असन्तोष, मारकाट, लड़ाई-झगड़े आदि हो रहे हैं। ये बढ़ेंगे, घटेंगे नहीं? क्योंकि मानव मूल से तेजी से हट और कट रहा है।

इतिहास साक्षी है कि छोटी-छोटी बातों, घटनाओं और उपदेशों ने लोगो के जीवन बदल दिए। जीवन की दिशा ही बदल गई। जीवन का कायाकल्प हो गया। पतित जीवन से पवित्र जीवन बन गए, पापात्मा से पुण्यात्मा हो गए। भोगी विलासी, दुर्व्यसनी जीवन ने ऐसा कांटा बदला कि जीवन तपस्वी, त्यागी, परोपकारी और धर्मात्मा बन गया। नास्तिक से आस्तिक बन गए। एक वाक्य ने कीचड़ में फंसे हीरे को अपनी पहिचान करा दी। ये सब तब होता है जब अन्दर में ज्ञान विवेक और श्रद्धा की त्रिवेणी बह रही हो। हृदय सत्य धर्म को जानने के लिए लालायित हो। आत्मबोध जागा हुआ हो। आत्म चेतना की पकड़ गहरी, मजबूत और पक्की हो। संकल्प में तीव्रता, आतुरता तथा वेदना भरी हो। अन्दर से जागे हुए हों। आज हम सब अन्दर से सोते जा रहे हैं? बाहर से जाग रहे हैं! पर्व आते हैं। उत्सव, वेद कथाएं, जलसे, जलूस और सम्मेलन होते हैं और चले जाते हैं! किन्तु हमारे जीवन में कहीं भी आत्म चिन्तन, आत्म सुधार, आत्म कल्याण आदि का भाव नहीं जागता है? दुर्गुण, दुर्व्यसन तथा बुराईयों से छूटने की ललक, बैचेनी एवं वेदना नजर नहीं आती है। बाहर की दुनियां में खूब धूमधाम टीमटाम व प्रदर्शन हो रहे हैं। अन्दर की दुनियां सोई और खोई पड़ी है। आवश्यकता है अन्दर की ओर देखने की। अन्दर छिपे हुए सुख-शान्ति एवं आनन्द के स्रोत तक पहुंचने की। तभी जीवन यात्रा सार्थक बन सकेगी।

शिवरात्रि आत्म-ज्ञान का पर्व है। सत्य की खोज करने का पर्व है। आत्म चेतना को जाग्रत करने का उत्सव है। आत्मानुभूति को जाग्रत करने का अवसर है।

शिवरात्रि श्रेष्ठ संकल्पों और व्रतों को दुहराने का त्यौहार है। जीवन में कुछ करने और आगे बढ़ने की निरीक्षण वेला है। सच्चे शिव के साथ अपने को जोड़ने का पावन सन्देश लेकर आती है हर वर्ष शिवरात्रि। महर्षि के जीवन में शिवरात्रि की रात सत्य की खोज और जीवन परिवर्तन का कारण बनकर आई थी। इससे पूर्व जितनी शिवरात्रियां आई होंगी? आज भी आ रहीं हैं? कहीं कोई परिवर्तन और सत्यबोध नजर नहीं आ रहा है? उस महापुरुष ने संसार को असत्य से सत्य की ओर, अधर्म से धर्म की ओर, पाप से पुण्य की ओर, मृत्यु से अमरता की ओर आगे का मार्ग दिखाया। वे मनु के इस कथन को साकार करना चाहते थे—

> एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
> स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥

समग्र वसुधा के लोगो! भारत भूमि की शरण में आओ! यहां से जीवन और चरित्र के लिए उन्नत शिक्षा एवं आदर्श ग्रहण करो। इसी में तुम्हारा कल्याण सम्भव है।

आज आर्य समाज को आवश्यकता है—आत्मशुद्धि आत्म निरीक्षण और आत्म विश्लेषण की। मन, वचन और कर्म में आई हुई अपवित्रता, असहिष्णुता, अधार्मिकता तथा नास्तिकता आदि दुर्गुणों को दूर करने की। सभा-संगठनों संस्थाओं तथा समाज मन्दिरों में व्याप्त परस्पर ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, असहयोग, स्वार्थ, पदलोलुपता आदि बुराईयों को दूर करने की। ऋषि ने जो वेद प्रतिपादित विचारों की मशाल जलाई थी, उन विचारों के प्रचार-प्रसार की आज महती आवश्यकता है। आर्य समाज का चिन्तन विचार प्रधान है। यह संगठन संसार को विचार देता है किन्तु पीड़ा तो यह है कि आज हम स्वयं विचार, ज्ञान और कर्त्तव्य भावना शून्य होते जा रहे हैं। जिस उद्देश्य, भावना और कर्त्तव्य के लिए उस महापुरुष ने आर्य समाज बनाया था, वह हमारी आंखों से ओझल हो रहा है। हम औरों की तरह ईंट, पत्थर, भवन, पैसा, फिक्स डिपोजिट चुनाव पद अहंकार आदि में फंसते जा रहे हैं। मूल छूट रहा है। आज हम दयानन्द के नाम को कैश करने मे अपनी शान समझ रहे हैं? उस महात्यागी तपस्वी महामानव ने अपने नाम, पद, महत्व और स्वार्थ के लिए कभी कुछ नहीं किया। उन्हीं के अनुयायी आज किधर जा रहे हैं? यह अत्यन्त चिन्तनीय और विचारणीय है।

शिवरात्रि का पर्व हमें जगाने के लिए आता है। संसार जड़ पूजा में लिप्त, प्रमाद निद्रा मे सो रहा है आर्यो! तुम स्वयं जागो! दूसरों को ज्ञान विचारों से जगाओ। ऋषि ने हमारे हाथों में प्रभु की पवित्र वाणी वेद ज्ञान की धरोहर सौंपी है। इस वेद ज्ञान के प्रकाश को घर-घर तक पहुंचाना है। यह तभी होगा, जब हम यह संकल्प लेंगे—इदं दयानन्दाय इदं न मम्। यही ऋषि के ऋण से उऋण होने का सच्चा मार्ग है यही उनका तर्पण है। यही उनकी श्रद्धांजलि है। यही शिवरात्रि की प्रेरणा, भावना और सन्देश है कि उठो! जागो! अपने कर्त्तव्य का बोध करो। जड़ पूजा से चेतन पूजा की ओर बढ़ो। ऋषि ने जो हमें चिन्तन-विचार जीवन दर्शन, सत्य धर्म और कर्त्तव्य का बोध कराया, उसे बांटो, फैलाओ! आगे बढ़ाओ! संसार विचारों से दरिद्र हो रहा है! विचारों की शून्यता से लोग जीवन और जगत को नरक बना रहे हैं। उन्हें विचारों की संजीवनी बूटी दे दो! वे जी उठेंगे। यही दयानन्द हमसे चाहते थे। यही शिवरात्रि हमें कह रही है? आर्यो! अब तो कुछ सोचो समझो और करो। क्या कर रहे हो? अपने धर्म-कर्म और उद्देश्य को पहिचानो! तभी कुछ बात बनेगी। तभी शिवरात्रि का आना सार्थक होगा।

क्या करें, क्या न करें ?

— महर्षि दयानन्द सरस्वती

जो माता, पिता और आचार्य, सन्तान और शिष्यों का ताड़न करते हैं वे जानो अपनी सन्तान और शिष्यो को अपने हाथ से अमृत पिला रहे हैं और जो सन्तानों वा शिष्यों का लाडन करते हैं वे अपने सन्तानों और शिष्य को विष पिला के नष्ट-भ्रष्ट कर देते हैं। क्योंकि लाड़न से सन्तान और शिष्य दोषयुक्त तथा ताड़ना से गुणयुक्त होते हैं और सन्तान और शिष्य लोग भी ताडना से पसन्न और लाड़न से अप्रसन्न सदा रहा करें। परन्तु माता, पिता तथा अध्यापक लोग ईर्ष्या, द्वेष से ताड़न न करें किन्तु ऊपर से भयप्रदान और भीतर से कृपादृष्टि रखें।

जैसे अन्य शिक्षा की वैसी चोरी, जारी, आलस्य, प्रमाद, मादक द्रव्य, मिथ्याभाषण, हिंसा, क्रूरता, ईर्ष्या, द्वेष, मोह आदि दोषो के छोडने और सत्याचार के ग्रहण करने की शिक्षा करें। क्योंकि जिस पुरुष ने जिसके सामने एक बार चोरी, जारो, मिथ्याभाषणादि कर्म किया उसकी प्रतिष्ठा उसके सामने मृत्युपर्य्यन्त नही होती। जैसी हानि प्रतिज्ञा मिथ्या करने वाले की होती है वैसी अन्य किसी की नहीं। इससे जिसके साथ जैसी प्रतिज्ञा करनी उसके साथ वैसे ही पूरी करनी चाहिए अर्थात् जैसे किसी ने किसी से कहा कि 'मैं तुमको वा तुम मुझसे अमुक समय में मिलूंगा वा मिलना अथवा अमुक वस्तु समय में तुमको मैं दूंगा इसको वैसे ही पूरी करे नहीं तो उसकी प्रतीति कोई भी न करेगा। इसलिए सदा सत्यभाषण और सत्य-प्रतिज्ञायुक्त सबको होना चाहिए। किसी को अभिमान करना योग्य नहीं, क्योंकि 'अभिमान; श्रियं हन्ति' यह विदुरनीति का वचन है। जो अभिमान अर्थात् अहंकार है वह सब शोभा और लक्ष्मी का नाश कर देता है, इस वास्ते अभिमान करना न चाहिए। छल, कपट वा कृतघ्नता से अपना ही हृदय दुःखित होता है तो दूसरे की क्या कथा कहनी चाहिए। छल और कपट उसको कहते है जो भीतर और बाहर और दूसरे को मोह में डाल और दूसरे की हानि पर ध्यान न देकर स्वप्रयोजन सिद्ध करना। 'कृतघ्नता' उसको कहते हैं कि किसी के लिए हुए उपकार को न मानना। क्रोधादि दोष और कटुवचन को छोड शान्त और मधुर वचन ही बोले और बहुत बकवाद न करे। जितना बोलना चाहिए उससे न्यून वा अधिक न बोले। बड़ो को मान्य दे उनके सामने उठकर जा के उच्चासन पर बैठावे, प्रथम 'नमस्ते' करे। उनके सामने उत्तमासन पर न बैठे। सभा मे वैसे स्थान मे बैठे जैसी अपनी योग्यता हो दूसरा कोई न उठावे। विरोध किसी से न करे। सम्पन्न होकर गुणो का ग्रहण और दोषों का त्याग रखे। सज्जनों का सग और दुष्टों का त्याग, अपने माता, पिता और आचार्य की तन, मन और धनादि से उत्तम-उत्तम पदार्थों से प्रीति-पूर्वक सेवा करे।

यान्यस्माकम तानि त्वयोपास्यानि नो इतराणि ॥

इसका यह अभिप्राय है कि माता-पिता आचार्य अपने सन्तान और शिष्यों को सदा सत्य उपदेश करें और यह भी कहे कि जो-जो हमारे धर्मयुक्त कर्म है उन-उन का ग्रहण करो और जो-जो दुष्ट कर्म हों उनका त्याग कर दिया करो . जो-जो सत्य जाने उन उनका प्रकाश और प्रचार करे। किसी पाखण्डी दुष्टाचारी मनुष्य पर विश्वास न करे और जिस-जिस उत्तम कर्म के लिए माता, पिता और आचार्य आज्ञा देवे उस-उस का यथेष्ट पालन करो। जैसे माता, पिता ने धर्म, विद्या, अच्छे आचरण के श्लोक 'निघण्टु' 'निरुक्त' 'अष्टाध्यायी' अथवा अन्य सूत्र वा वेदमन्त्र कंठस्थ कराए हों उन-उन का पुनः अर्थ विद्यार्थियों को विदित करावें। जैसे प्रथम समुल्लास में परमेश्वर का व्याख्यान किया है उसी प्रकार मान के उसकी उपासना करें। जिस प्रकार आरोग्य, विद्या और बल प्राप्त हो उसी प्रकार भोजन छादन व्यवहार करें करावें अर्थात् जितनी क्षुधा हो उससे कुछ न्यून भोजन करे। मद्य मासादि के सेवन से अलग रहें। अज्ञात गम्भीर जल में प्रवेश न करें क्योंकि जलजन्तु वा किसी अन्य पदार्थ से दुःख और जो तैरना न जाने तो डूब ही जा सकता है।

'नाविज्ञाते जलाशये' यह मनु का वचन है। अविज्ञात जलाशय में प्रविष्ट होके स्नानादि न करें। (सत्यार्थ प्रकाश से)

पत्रकार खुशवन्त सिंह

(पृष्ठ ५ का शेष)

हिन्दू और सिख अपने आचार विचार को शुद्ध एवं पवित्र बनाकर आर्य समाज की शरण मे आने लगे तो सिख नेताओं का चिन्तित होना स्वाभाविक ही था। इसी परिप्रेक्ष्य में नाभा के काहन सिंह तथा अन्यो द्वारा लिखित उन पुस्तकों को देखा जाना चाहिए जो हिन्दुओं और सिखो मे अलगाव पैदा करने की दृष्टि से लिखी गई।

खुशवन्तसिंह के आक्षेपो का निराकरण तो हो गया किन्तु पाठकों की ज्ञान वृद्धि के लिए यह जानना भी आवश्यक है कि स्वामी जी के पंजाब गमन तथा उसके बाद के दो दशको तक सिखों का प्रबुद्ध वर्ग आर्य समाज की ओर आकृष्ट हुआ और उसने खुले आम आर्य समाज की सदस्यता ग्रहण की वैदिक धर्म के प्रचार मे रूचि ली तथा स्वयं को आर्य समाजी कहलाने मे गर्व का अनुभव किया। इसके लिए निम्न उदाहरण दृष्टव्य हैं—

(१) शहीद भगतसिंह के पिता सरदार किशनसिंह और दादा सरदार अर्जुनसिंह जन्मना सिख होकर भी कट्टर आर्य समाजी थे। द्रष्टव्य भगतसिंह की भतीजी कु० वीरेन्द्र सिधु (सरदार कुलतारसिंह की पुत्री) लिखित पुस्तक शहीद भगतसिंह और उनके मृत्युञ्जय पुरखे।

(२) भाई दित्तसिंह ने आर्य समाज की दीक्षा ली और उपदेशक बने। कालान्तर मे स्वार्थवश आर्य समाज से पृथक हो गये।

(३) भाई जवाहर सिंह—ज्ञानी दित्तसिंह के गुरू भाई और साथी थे। आर्यसमाजी बनने के पहले गुलाबदासिये (हरिजन सिख) थे। ये आर्य समाज लाहौर के मन्त्री रहे। स्वामी जी की सिफारिश पर इन्हें शाहपुरा के राजा ने अपने यहा उच्च पद पर रखा। कालान्तर मे हर मन्दिर अमृतसर के ग्रन्थी बनने के लोभ मे आकर आर्य समाज से किनाराकशी कर ली।

(४) बाबा छज्जूसिंह और बाबा अर्जुनसिंह सगे भाई थे इन्होंने अंग्रेजी मे उच्च कोटि का आर्य साहित्य लिखा है। दोनो भाईयो ने ऋषि के जीवन चरित्र लिखें। बाबा छज्जूसिंह आर्यपत्रिका के सम्पादक भी रहे। इन्होंने दशो गुरुओ का अंग्रेजी मे जीवन चरित लिखा। इन भाइयो के जीवन के बारे में बहुत यत्न करने पर भी हमें अधिक जानकारी नहीं मिली।

(५) स्वामी स्वतन्त्रानन्द जन्मना सिख थे। उनका नाम केहरसिंह था। इन्हें सिख मत की गहरी जानकारी थी।

(६ बाबा प्रद्युम्न सिंह आदि अमृतसर के अनेक धनाढ्य सिखों की आर्य-समाज के प्रति गहरी आस्था रही है।

यह सत्य है कि आगे चलकर सिखों का आर्यसमाज में आकर्षण कम हो गया, किन्तु उसके कुछ अन्य कारण थे। हमारा निवेदन तो इतना ही है कि सिखो और हिन्दुओं के बीच उत्पन्न पार्थक्य या अलगाववाद मे आर्य समाज को घसीटना उचित नहीं।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी सरस्वती का जीवन चरित (३)

—डा० अशोक आर्य

पजाब के हिन्दी सत्याग्रह का जिस योग्यता से आपने सचालन किया उसने केन्द्र सरकार को हिला कर रख दिया। आप दूसरो की धार्मिक भावनाओ का सम्मान करते थे परन्तु अपने धार्मिक विचारो को छोडने के लिए कभी तैयार न थे। इसी कारण लोहारू मे आप पर जानलेवा आक्रमण हुआ। सिर मे तीन इच गहरा घाव होते हुए भी पैदल चलकर स्टेशन पहुचे। घाव की सिलाई के समय क्लोरोफार्म तक नही सू घी। कुछ समय पश्चात फिर लोहारू में जा धमके परिणाम स्वरूप नवाब लोहारू को स्वामी जी के पावो मे सिर झुकाना पडा।

जब पजाब के मलेरकोटला के नवाब ने सनातनधर्मी मन्दिरो को ताले लगवा दिये तो आपके आने मात्र का समाचार सुनकर ही मन्दिर के ताले खोल दिये गए। भला हैदराबाद के विजेता के सामने नवाब क्या कर सकता था। यह घटना मई १९३५ ई की है। आपने लाहौर मे बूचडखाना की योजना को सिरे न चढने दिया। बाद मे इसे पठानकोट मे स्थापित करने का निर्णय हुआ। इस पर उनके एक भक्त मुसलमान ने दहाडते हुए लिखा कि अग्रेज सरकार को समझ लेना चाहिए कि टक्कर किस से है यह टक्कर उसी तेजस्वी प्रतापी सुधीर वीर आर्य नेता से है जो अभी २ हैदराबाद रियासत को पाठ पढाकर आया है। यह फकीर वही तेजस्वी पुरुष है जो पग आगे धर कर पीछे हटना नही जानता सरकार बुद्धिमता से कार्य ले नही तो पछताना पडेगा उन्होने यह भी कहा कि स्वामी जी के सकेत पर मुसलमान भी कट मरने को तैयार हैं। परिणाम स्वरूप अग्रेज सरकार को झुकना पडा व बूचडखाने का विचार छोडना पडा। हरयाणा की मण्डी सनालखा मे भी जब बूचडखाना खोलने की योजना बनी तो स्वामी जी के प्रताप से सरकार को यह योजना भी त्यागनी पडी।

स्वामी जी महाराज भारतीय स्वाधीनता सग्राम मे भी भरपूर योगदान देते रहे। जब भी कभी किसी वीर योद्धा की पुलिस को तलाश होती तो दयानन्द मठ दीनानगर ऐसे राष्ट्रीय पुरुष की रक्षा करने मे सब कुछ न्यौछावर कर देता था। अनुमान है कि १९१९ ई के आसपास आपने स्वाधीनता के लिए कार्य आरम्भ किया। इस समय के काग्रेस अधिवेशन मे भी भाग लेने का प्रमाण मिलता है।

१९३० की डाडी यात्रा के समय गाधी जी सहित काग्रेस के सभी नेता हिरासत मे ले लिए गए। ऐसे मे उपदेशक विद्यालय के आचार्य होते हुए भी काग्रेस आन्दोलन का सचालन अपने हाथ में सम्भाला परन्तु सरकार को अन्त तक पता न चल सका कि इस सत्याग्रह का सचालन कौन कर रहा है। सत्याग्रहियो पर अत्याचारो के विरोध मे गोलबाग मोरी द्वार लाहौर के सभापति के रूप मे आपने माग की कि हमारे सत्याग्रहियो के साथ वही व्यवहार किया जावे जो एक सरकार को दूसरी सरकार के बन्दी सैनिको से करना चाहिए उनके इन शब्दो से अग्रेजी सरकार की नीद हराम हो गई। आपको परिणाम स्वरूप बन्दी बना लिया गया। परन्तु योगी के हाथो मे हथकडी भी पूरी न आई। १९४२ के भारत छोडो आन्दोलन मे भी आपने सक्रिय भाग लिया इसी कारण आपको लाहौर के शाही किले में (जहा भयंकर कैदी रखे जाते हैं) कैद किया गया। इन्ही दिनो मे ही आपने निर्णय कर लिया कि शीघ्र ही भारत को स्वाधीनता के साथ ही देश के विभाजन व दगो का सामना करना पडेगा इस कारण आप आर्यों को तैयार रहने का उपदेश देने लगे। अनुशासन प्रिय ऐसे थे कि जब दीनानगर में नजरबन्द किया गया तो थानेदार के कहने पर भी उस स्थान से बाहर न निकले।

राष्ट्र भाषा हिन्दी के आप अनन्य सेवक थे। हिन्दी के लिये भाषण दिए, क्योकि मानते थे कि किसी दिन हिन्दी ही समस्त भारतीय राष्ट्रीयता की नीव होगी। अत हिन्दी प्रचार के लिए भरपूर योग दिया इस कारण पैप्सू साहित्य मे उनका नामोल्लेख भी मिलता है। हिन्दी के इतने भक्त थे कि सदा हिन्दी का प्रयोग करते थे। जब हिन्दी मे पता लिखा होने के कारण उपदेशको ने डाक देरी से मिलने की शिकायत की तो आपने कहा डाक देरी से मिलती है तो क्या है हम तो हिन्दी का प्रचार करना है। अत पता हिन्दी मे ही लिखेंगे। मारीशस मे हिन्दी की वर्तमान प्रगति का श्रेय भी आप ही को जाता है। हिन्दी प्रचारिणी सभा हैदराबाद की प्रगति का आधार भी आपके शिष्य प० नरेन्द्र जी ही थे। स्वय भी हिन्दी के सिद्धहस्त लेखक थे। पजाब के हिन्दी साहित्य सम्मेलन हिसार के आप सभापति थे। आपने प्रादेशिक भाषाओ को भी देवनागरी अपनाने की प्रेरणा दी।

स्वामी जी राष्ट्रीय एकता के सच्चे उपासक थे। उन्होने स्वतन्त्रानन्द लेख माला मे लिखा है जो लोग भाषाधार प्रात की माग कर रहे हैं वह देश के लिए हानिकारक हैं उन्नति के बाधक हैं राष्ट्रीय भावना के द्वेषी हैं। प्रत्येक भारतीय को उनका विरोध करना चाहिये ताकि देश का सगठन दृढ हो सके भारत को जब २ पराजित होना पडा तब प्रान्तीय भावो के कारण ही। अब भी यदि भाषा भाव प्रबल हो गया तो पुन वैसी अवस्था होने की सभावना हो सकती है। वह राज्य प्रबन्ध की दृष्टि से देश को दिशाओ के नाम से चार या पाच प्रान्तो मे बाटने के प्रबल समर्थक थे। परन्तु नेताओ द्वारा यह सुझाव न मानने का परिणाम आज देश के सामने हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्माण मे आपका अपूर्व योगदान रहा। अपने तप त्याग व कुशल नेतृत्व द्वारा इस सभा को व्यापक रूप प्रदान किया चाहे सभा मे रहे या बाहिर परन्तु सभा को सदैव उनका मार्गदर्शन मिलता रहा। आप पद लोलुप नही थे। परन्तु किसी के आग्रह के सामने सदैव झुक जाते थे। इसी कारण सभा के विभिन्न पदो को सुशोभित किया। १९३६ ई० मे आप सभा के उपप्रधान बने। पाच वर्ष इस पद पर कार्य किया। इसी काल मे हैदराबाद सत्याग्रह हुआ तथा लोहारू मे आप पर जान लेवा हमला हुआ। १९४५ ई० मे पुन उपप्रधान बने। इन्ही दिनो हैदराबाद सिंध मे सत्यार्थ प्रकाश आन्दोलन की योजना बना। परन्तु नवाब ने समय रहते सब माग स्वीकार कर ली। (क्रमश)

ऋषि बोध का महत्त्व

श्री बा० पूर्णचन्द्र एडवोकेट

महर्षि दयानन्द को बोध चौदह वर्ष की अवस्था मे शिवरात्रि को शिव-मन्दिर मे जागरण और पूजा करते समय एक घटना से हुआ था। महर्षि काठियावाड के अन्तर्गत मौरवी रियासत के एक गाव टकारा निवासी थे। उसी ग्राम के बाहर एक शिव-मन्दिर मे उनको बोध हुआ था। इस घटना को उन्होने स्वय इस प्रकार वर्णन किया है। जब मैं मन्दिर मे इस प्रकार अकेला जग रहा था तो एक घटना उपस्थित हुई। कई चूहे बाहर निकल कर महादेव की पिण्डी के ऊपर दौडने लगे और बीच-बीच मे महादेव पर जो घी चावल चढाये गए थे उन्हे भक्षण करने लगे। मै जागृत रह कर चूहो के इस कार्य को देखने लगा। देखते-देखते मेरे मन मे आया कि यह क्या है? जिस महादेव की शान्त पवित्र मूर्ति की कथा, जिस महादेव के प्रचण्ड पाशुपतास्त्र की कथा और जिस महादेव के विशाल वृषारोहण की कथा गत दिवस के वृत्तान्त मे सुनी थी क्या वह महादेव वास्तव मे यही है? इस प्रकार मैं चिन्ता से विचलित चित्त हो उठा। मैंने सोचा कि यदि यथार्थ मे यह वही प्रबल प्रतापी दुर्दान्त दैत्य-दलनकारी महादेव है तो यह अपने शरीर पर से इन थोडे से चूहो को क्यो विनाडित नही कर सकता?"

(१) महर्षि के अन्दर इस घटना से ईश्वर के स्वरूप को समझने के लिए और उसके विषय मे पूर्ण जानकारी प्राप्त करने के लिए एक प्रबल जिज्ञासा उत्पन्न हुई। यह घटना एक साधारण घटना है परन्तु जो बुद्धिमान और विचारक हैं उनको ऐसी ही साधारण घटनाओ से बड़ा बोध या प्रकाश प्राप्त होता है। इसके आधार पर बड़े-बड़े आविष्कार होते है और ससार के ज्ञान और विज्ञान की वृद्धि होती। स्टीवेंसन ने एक बर्तन मे पानी को उबलते हुए देखा और उस उबलते हुए पानी से जो बर्तन ढकना रखा हुआ था उसमे गति दिखाई दी। इस दृष्टि से स्टीवसन ने विचार और सोच के पश्चात् स्टीम इन्जन का आविष्कार किया जिसका चमत्कार आज सारे विश्व मे भली भाति प्रकट हो रहा है। इसी प्रकार न्यूटन ने वृक्ष से सेब को ऊपर न जाकर पृथ्वी पर गिरते देखकर आकर्षण के आविष्कार का प्रतिपादन किया। महर्षि ने जब उनको ईश्वर के जानने की इच्छा हुई तो अपनी जिज्ञासा का पूर्ण करने के लिए उन्होने पर्वतो पर नदियो के तट पर विचरण किया। अन्त मे गुरु विरजानन्द के चरणो मे बैठकर शिक्षा-दीक्षा प्राप्त की।

२) महर्षि आदर्श धर्म प्रचारक ओर समाज सुधारक थे। उनकी दृष्टि मे सबसे आवश्यक लक्ष्य व्यक्ति का निर्माण था। महर्षि ने आर्यसमाज की स्थापना १८७५ मे की थी और उसके छठे नियम मे ससार का उपकार करना मुख्य उद्देश्य बतलाया है। आर्यसमाज के १० नियमो को दृष्टि मे रखकर यह विदित होता है कि महर्षि का उद्देश्य यह था कि ईश्वर का स्वरूप सबको समझ मे आये। उन्होने पहले नियम मे सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उनका आदि-मूल ईश्वर को बताया है। वेद ईश्वरीय ज्ञान है और वेदो को पढने-पढाने व सुनने-सुनाने का परम धर्म बनाया है। आदि मूल ईश्वर के स्वरूप के समझने और उसके इन आदेशो के प्रचार से व्यक्ति का निर्माण हो सकता है और इस लिये ससार का उपकार करने के मुख्य उद्देश्य की पूर्ति का होना सम्भव है। महर्षि ने छठे नियम मे ससार के उपकार के लिए यह बताया है कि शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आत्मिक उन्नति से व्यक्तियो का पूर्ण रूप से निर्माण होता है और जब पूर्ण रूप से व्यक्तियो का निर्माण हो जाय तो उनके उद्योग से ससार का उपकार होना है।

(३) महर्षि की दृष्टि मे व्यक्तियो की उन्नति के लिए सबसे अधिक आवश्यक स्वाधीनता और स्वतन्त्रता है। वह यह जानते थे कि पराधीनता मे न सुख है और न शान्ति। स्वतन्त्रता के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति हर प्रकार की पराधीनता और दासता से मुक्त रहे। जब महर्षि ने कार्य आरम्भ किया उस समय कई प्रकार की दासता और पराधीनता प्रचलित थी। सबसे अधिक दुःखदायी राजनैनिक दासता थी। उसके साथ-साथ मानसिक दासता भी बडी कष्टदायक और हानिकारक थी। रूढिवाद वश परम्परा के नाम पर दासता थी उसके कारण भारत की प्रजा दुःखित थी। कई प्रकार के बन्धनो मे जकडी हुई प्रजा को मानसिक दासता के साथ दुर्व्यसनो की दासता भी कम भयकर न थी। अर्थ और काम के जगत मे कई प्रकार के दुर्व्यसन प्रचलित थे। इसलिए महर्षि ने तीनो प्रकार की दासताओ से मुक्त कराने के लिए पूर्ण प्रयास किया। भ्रष्टाचार, मिथ्याचार इत्यादि से सुरक्षित रखने के लिए उन्होने ओ३म् की पताका के साथ साथ पाखण्ड खण्डिनी पताका भी हरिद्वार मे कुम्भ के अवसर पर फहराई। उनकी धारणा थी कि बिना पाखण्डो के निराकरण के सत्य धर्म का प्रचार नही हो सकता। उन्होने सत्यार्थप्रकाश के साथ व्यवहार भानु नाम की पुस्तक भी प्रकाशित की। उस पुस्तक मे व्यवहार और व्यवसाय को मर्यादित करने के लिए बडी सुन्दर शिक्षा है।

इसी प्रकार मानसिक दासता से मुक्त करने के लिए धर्म मे श्रद्धा के साथ साथ तर्क का पूर्ण समावेश किया। सत्यार्थ प्रकाश एक ऐसी धर्म पुस्तक है जो प्रश्न और उसके उत्तर के रूप मे लिखी गई है। ऋषि ने आर्य समाज के नियमो मे सत्य को ग्रहण करने और असत्य को त्यागने मे सर्वदा उद्यत रहना बताया है। हम ऋषि की प्रणाली को इस प्रकार समझ सकते हैं कि धर्म के सबसे प्राचीन रूप को पुनः प्रचलित कराना चाहते थे। चारो वेदो को ही वह स्वतः प्रमाण मानते थे। प्राचीनता के नाम पर कभी-कभी असत्य बातो का भी समावेश होने लगता है। इसलिए प्राचीनता की जाच के लिए तर्क आवश्यक है। परन्तु प्राचीन धर्म को केवल तर्क से ही समझ लेना ही पर्याप्त नही। तर्क से सशोधित प्राचीन सशोधित धर्म जीवन का क्रियात्मक आधार होना चाहिए और जब तक धर्म जीवन का क्रियात्मक आधार न हो तब तक धर्मका केवल जानना पर्याप्त नही। महर्षि ने जवपूर्ण रूप से प्राचीन वैदिक धर्म को तकर आधार पर क्रियात्मक जीवन का आधार सिद्ध कर दिया तब उन्होने देश की दशा सुधारने की ओर ध्यान दिया। जब महर्षि ने कार्य आरम्भ किया था तो उस समय सारा भारत राजनैतिक दासता की बेडियो मे जकडा हुआ था। महर्षि को यह देखकर बडा वेदना होती था और उन्होने राजनैतिक दासता के निराकरण और स्वाधीनता प्राप्ति के लिए प्रबल रूप से प्रचार किया। महर्षि ने स्वराज्य शब्द का प्रयोग सबसे पहले सत्यार्थ प्रकाश मे किया है और उन्होने यह भी लिखा है कि स्वराज्य प्रत्येक व्यक्ति का जन्म सिद्ध अधिकार है। ऋषि की यह भी धारणा थी कि विदेशियो का राज्य कितना भी अच्छा हो वह अपने राज्य से अच्छा नही हो सकता। स्वाधीनता के लिए उन्होने यह भी आवश्यक समझा कि स्वाधीनता की इच्छा पूर्ति के साथ साथ व्यक्तियो के हृदय मे पूर्ण रूप से आत्म सयम हो। उन्होने लिखा है कि जिनके अन्दर मानसिक जगत् मे इन्द्रिय रूपी प्रजाओ पर अकुश नही वह स्वराज्य के अधिकारी नही। मनु के आधार पर यह शब्द स्वतन्त्रता की सुरक्षा के लिए अत्यन्त विचारणीय और अनुकरणीय है। यदि स्वराज्य और स्वाधीनता के साथ-साथ या दूसरे शब्दो मे शासन के अधिकारो के साथ-साथ अनुशासन की भावना भी मर्यादित हो तो स्वराज्य की सुरक्षा हो सकती है। महर्षि ने यह भी लिखा है कि महाभारत के समय तक सारा ससार भारतीयो और आर्यो के शासन में था।

(शेष पृष्ठ १० पर)

ऋषि बोध का महत्व

(पृष्ठ ९ का शेष)

उन्होने लिखा है कि चक्रवर्ती राज्य भारत का अब नही रहा और उन्होने बड दुख क साथ लिखा है कि परस्पर की फूट के कारण हमारे देश मे भी हमारा राज्य नही है। उन्होने सत्याथ प्रकाश के आठवें समुल्लास मे लिखा है कि महाभारत के समय जो यज्ञ हुआ था उसमे बहुत से देशो के दूत सम्मिलित हुए थे। इमसे विदित होता है कि सारे ससार मे आर्यो का राज्य था।

(४) महर्षि ने इस देश का नाम आ वित्त लिखा है। उन्होने लिख कर यह सिद्ध किया है कि तिब्बत मे सबसे पहले मानव सृष्टि हुई और वहा से आर्यों ने आकर इस देश को आबाद किया और इस देश का नाम आर्यावत पडा। उन्होने यह भो सिद्ध किया है कि आर्यों से पूर्व इस देश मे कोई आबादी नही थो और न इस देश का कोई नाम था। यदि महर्षि के इस कथन का प्रचार हो तो जो आज राष्ट मे आदिवासी के नाम से भ्रममूलक आन्दोलन चल रहा है और जिसके कारण राज्यो मे सकट है वह दूर हो सकता है। ऋषि दयानन्द ने राष्ट्र की सुरक्षा के लिए जातिवाद का प्रबल खण्डन किया आज उनके ही प्रचार का प्रभाव है कि भारत के विधान मे जन्म के आधार पर जातिवाद को मान्यता नही दी गयी। सम्प्रदायवाद को मर्यादित करने के लिए सारे भारत मे एकता की भावना लाने के लिए सब मतो को एक सूत्र म बाधने के लिए प्राचीन वैदिक धम से उनका सम्बन्ध सिद्ध किया है। उनकी मतो की समीक्षा भारत मे एकता लाने के लिए राष्ट्र को रक्षा क लिए थी। उसी समीक्षा को केवल खण्डन के रूप म समझ कर उसका महत्व हमारी दृष्टि से ओझल हो जाता है। प्रान्तवाद के लिए भो उन्होने पूण रूप से उस समय ही चेतावनी दे दी थो और इस दृष्टि मे उन्होने सारे ससार के उपकार को आर्य समाज का मुख्य उददेश्य बताया। प्रान्तवाद ही नहीं सम्प्रति तो देशवाद कलह और अशान्ति का कारण बना हुआ है। सच्चा देश भक्त वह है जो अपने देश का ही शुभ चिन्तक नही बल्कि सारे ससार को ध्यान मे रखताहै। भाषावाद के लिए भी उसो समय महर्षि ने पूर्ण व्यवस्था कर दी थी। गुजराती उनकी मातृभाषा थी और सस्कृत के धुरन्धर विद्वान थे फिर भी उन्होने हिन्दी भाषा मे अपना पूर्ण साहित्य प्रकाशित किय और इसी कारण हिन्दी को राष्ट्र भाषा का स्थान देश क सविधान मे प्राप्त हुआ है। महर्षि ने शास्त्र और शस्त्र दोना पर बल दिया है। राष्ट्र की सुरक्षा के लिए हर प्रकार के अस्त्र और शस्त्र होने आवश्यक बताये है। महर्षि के आदेशानुसार यदि हम सब मिलकर यत्न कर तो राष्ट की सुरक्षा हो सकती है। आर्यावित्त की जो सीमा महर्षि ने लिखी है उसके अनुसार समस्त भारत तक हमे दृष्टि रखनी चाहिए।

ऋषि दयानन्द स्वाधीनता और स्वराज्य के लिए प्रयत्नशील हुए। उनक प्रचार और उनके पश्चात अन्य नेताओ और नागरिको के प्रयत्न और बलिदान से जो भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई है उसकी सुरक्षा हम सबको कटिबद्ध होकर करनी चाहिए।

आय समाज राजनगर, गाजियाबाद

आयसमाज राजनगर गाजियाबाद के वष १९९३ हेतु नये पदाधिकारियो का निर्वाचन १७ १ ९३ को इस प्रकार हुआ —

श्री महावीरसिंह प्रधान श्री श्रद्धानन्द आर्य मन्त्री श्री जयन्तीप्रसाद गुप्ता कोषाध्यक्ष श्री प्यारेलाल खोसला पुस्तकाध्यक्ष चुने गए।

—श्रद्धानन्द मन्त्री

आय समाजों के कार्यक्रम

आय समाज सुल्तानपुर पटटी नैनीताल मे मकर सक्रान्ति का पर्व उत्साह पूवक मनाया गया।

आ गयी शिवरात्रि

आ गयी शिवरात्रि फिर हमको जगाने।
भूमि मण्डल पर तिमिर अब भी घना है,
सद्गुणो का तत्व अब भी अनमना है,
आवरण अज्ञान का अब भी बना है,
वेद-रवि की रश्मियो मे तुम चलो उसको हटाने।
आ गयी शिवरात्रि फिर, हमको जगाने॥
दनुजता के तत्व बढते है निरन्तर,
आज कलुषित हो रहा, निश्चय चिदम्बर,
स्वच्छ-निर्मल हो नही पाया जनान्तर,
आर्य पुत्रो! तुम बढो! अब मनुज को मानव बनाने।
आ गयी शिवरात्रि फिर, हमको जगाने॥
आज भी है हो रहा चहुं करुण क्रन्दन,
मूर्ति पूजा भी बना है, हो रहा पाखण्ड वन्दन,
अन्ध विश्वासों का होता नित्य ही पुनराभिनन्दन,
अमर पुत्रो! तुम बढ़ो! अब सत्य की गरिमा सजाने।
आ गयी शिवरात्रि फिर, हमको जगाने॥
आज के दिन ऋषि जगे थे, देश भारत को जगाया,
जागरण का शंख निर्भय, अवनि अम्बर में बजाया,
वेद का पथ पुन: हमको, पुण्य सा, अविचल दिखाया,
तुम बढ़ो! अब सत्य और शांति का साम्राज्य लाने।
आ गयी शिवरात्रि फिर, हमको जगाने॥

—राधेश्याम शर्मा

शोक समाचार

श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार : आर्य समाज के प्रखर विद्वान, गुरुकुल कांगड़ी के पुराने स्नातक श्री सुरेशचन्द्र वेदालकार का पिछले सप्ताह दिल का दौरा पड़ने से गोरखपुर में निधन हो गया है। वह डी.ए.वी. इण्टर कालेज गोरखपुर के प्राध्यापक और आर्य समाज के प्रखर वक्ता थे, वैदिक सिद्धान्तों पर उनके लेखो का आर्य समाज के क्षेत्र मे बड़ा महत्व था, वह सिद्धहस्त साहित्यकार और कई पुस्तको के लेखक थे। उनके निधन से आर्य समाज को गहरी क्षति पहुंची है। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

पं० रुद्रदत्त शास्त्री : गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के पुराने स्नातक, जाने माने महोपदेशक और शास्त्रार्थ महारथी प० रुद्रदत्त शास्त्री का लगभग ८५ वर्ष की आयु मे पिछले सप्ताह देहरादून में निधन हो गया है। वह वर्षों तक आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब और आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के महोपदेशक के रूप मे कार्य करते रहे थे। उनके निधन से आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति पहुंची है। संपूर्ण आर्य जगत दिवगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना करता है।

हम भी शिव बनें

(पृष्ठ ४ का शेष)

(७) समाज के तीन प्रकार के शूलो को अपने तन, मन, धन रूपी त्रिशूल द्वारा दूर करने के लिए सतत प्रयत्नशील रहे तथा असमर्थ रोगी व गरीब प्राणियो की सेवा करे उन्हें सुख पहुंचाने का प्रयत्न करें।

(८) हम अपने भौतिक नेत्रों के साथ-साथ ज्ञान के तीसरे नेत्र का भी प्रयोग करें। तदर्थ हम वेद अध्ययन आत्मचिंतन व महान व्यक्तियों के जीवन से अपने ज्ञान की निरन्तर वृद्धि करें ताकि जब भी कोई शत्रु हमारी ईश्वर भक्ति व समाज के कल्याणकारी कार्यों के बीच मे बाधक हो तो उसे हम ज्ञान द्वारा नष्ट कर सकें।

सारांश यह है कि शिवजी का चित्र शिवम् (कल्याणकारी) गुणों का चित्र है। इन गुणों को धारण करके समाज का कल्याण करते हुए हम भी शिव बन सकते हैं। इसके लिए स्वाध्याय, संकल्प, सेवा व साधना परम आवश्यक है।

आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई की जनता से अपील

प्यारे देशवासियों!

विगत दिनों देश में अनेकों निरपराध स्त्री-पुरुष, बालक-बालिकाओं की निर्मम हत्या कर दी गई। अनेकों महिलाएं बालक अनाथ व निराधार हो गये, धन्धे-व्यापार ठप्प व नष्ट हो गये। करोडो रुपयों की सम्पत्ति स्वाहा हो गई। क्या यह सब धर्म का आचरण था? नहीं! नही!! नही!!!

यह सब अधर्म अन्याय-अत्याचार था। धर्म निरपेक्षता के नारे से जनता "धर्म" से दूर, अधर्म मे प्रवृत्त होती जा रही है, हमारा संविधान धर्म-रहित नहीं है। वह पन्थ निरपेक्ष ही है क्योंकि मत-पन्थों की भरमार में "धर्म" ओझल होता जा रहा है। हम "धर्म" "परमधर्म" को समझें। "अहिंसा परमो धर्म."। सब प्राणियों से निःस्वार्थ प्रेम करो। अपने सुख दु:ख के समान दूसरों के सुख-दुख को समझो। किसी भी प्राणी की कभी भी हत्या न करो, न उसका धन छीनो, न उससे द्वेष करो, मित्रता का व्यवहार करो।

धर्म-पक्षपात रहित न्यायाचरण व सत्य भाषण व आचरण का नाम है। यही उन्नति का मार्ग है। महर्षि स्वामी दयानन्द जी एवं महात्मा गांधी जी के रामराज्य का यही आधार था।

आइये हम सब धर्म व परमधर्म से सदैव आचरण का संकल्प लें।

श्री ओंकारनाथ आर्य, प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा, बम्बई,
३०३ भिमानी स्ट्रीट, मुम्बई-१९

वेद कथा

आर्य समाज सुभाष गंज रुड़की, ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर १६ फरवरी से २१ फरवरी तक वेद कथा का आयोजन कर रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान डा० भवानी लाल भारतीय जी अपने अमृत वचनो से आपको लाभान्वित करेंगे। प्रतिदिन प्रात:काल यज्ञ तथा वेद प्रवचन तथा सायंकाल श्री पं० नरेश दत्त आर्य के मधुर भजन तथा भारतीय जी के वेद प्रवचनों का रसास्वादन करने हेतु अधिक सख्या में पधारें।

ऋषि बोधोत्सव का आयोजन

आर्य समाज सूरजमल विहार दिल्ली में ऋषिबोधोत्सव २१ फरवरी को बी १७१ केन्द्रीय पार्क में समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर प्रात:काल यज्ञ भजनोपदेश तथा बच्चो के कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। समारोह मे आर्य जगत के प्रतिष्ठित विद्वान श्री भूदेव जी साहित्याचार्य, स्वामी शिवानन्द जी सहित अनेको विद्वान महर्षि के जीवन पर प्रकाश डालेंगे। समारोह समाप्ति के उपरांत ऋषि लंगर की व्यवस्था की गई है।

वर चाहिए

जाट आर्य परिवार "सिनसिन वार" की दो कन्यायें ५' १" २३ वर्ष व ५' १/२" २१ वर्ष, की सुन्दर सुशील स्वस्थ एम. ए. बी. एड. व एम. ए. शोध छात्रायें दोनों गृह कार्य मे दक्ष के लिए सुयोग्य सुन्दर स्वस्थ एवं सजातीय आर्य वरो की आवश्यकता है। विवाह शीघ्र दहेज रहित। निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें।

—ब्रजपालसिंह आर्य
आदर्श जनता इण्टर कालेज
बसरामा, जिला फिरोजाबाद (उ. प्र.)

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी० एल० ११०४६/९२ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२१-२-१९९३) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U (C) ९३
R N 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U (C) 93 Post in N.D.P.S.O.on 18-19-2-1993

ऋषि पर्व

आर्य समाज मन्दिर १५ हनुमान रोड नई दिल्ली मे, महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव से ऋषि बोधोत्सव तक विशेष कार्यक्रम 'ऋषि पर्व' के रूप मे १६ से १९ फरवरी तक समारोह पूर्वक मनाया जायेगा। इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात यजुर्वेद परायण यज्ञ डा० कर्ण देव शास्त्री के ब्रह्मत्व मे सम्पन्न होगा। तथा रात्रि मे ७ से ९ बजे तक भजन तथा डा० महेश विद्यालकार ऋषि जीवन पर विशेष प्रवचन करेंगे।

नवीन आर्य समाज की स्थापना

ग्राम भोगली तहसील नगीना जनपद बिजनौर मे रविवार ३१ जनवरी १९९३ को नवीन आर्य समाज की स्थापना की गई। इस अवसर पर तीन दिन तक यज्ञ तथा सतसग का कार्यक्रम रखा गया। स्थानीय जनता ने महर्षि दयानन्द के प्रति आस्था प्रकट करते हुये समर्पित भाव से काय करने की प्रतिज्ञा की। यह कार्य योग मर्मज्ञ श्री रूपचन्द दीपक को प्रेरणा से सम्पन्न हो सका।

वेदबन्धु पं० अभिविनय भारती वानप्रस्थ-आश्रम में

वेदोद्धारिणी पत्रिका के प्रवर्तक सम्पादक वेदबन्धु अभिविनय भारती जी ने ३ २-९३ को चार वैदिक विद्वानो के सान्निध्य मे वानप्रस्थाश्रम मे प्रवेश किया। इस अवसर पर नगर के गणमान्य आर्यों ने बडे हर्षोल्लास के साथ भारती जी को आशीर्वाद एव योगदान प्रदान किया। इस तृतीयाश्रम मे प्रवेश के उपरात उनको "भिक्षु विवस्यपुत्र भारती" नाम दिया गया।

वार्षिकोत्सव

—वैदिक वानप्रस्थ योग आश्रम काजीखेडा मु० नगर का अष्टम वार्षिक उत्सव दिनाक १ से ३ मार्च तक हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। समारोह मे आर्य जगत के प्रसिद्ध सन्यासी महात्मा महोपदेशक एव भजनोपदेशक पधार रहे है अत विद्वानो के सारगर्भित उपदेश सुनने हेतु अधिक से अधिक सख्या मे पधारे।

—आर्य समाज आर्यसमगढ का ९९ वा वार्षिकोत्सव १८ से २१ फरवरी तक धूमधाम के साथ मनाया जायेगा। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे है। समारोह मे विभिन्न सम्मेलनो का आयोजन भी किया गया है। २० फरवरी को धनुष-विद्या का प्रदर्शन तथा ब्रह्मचारियो द्वारा शारीरिक व्यायाम तथा योगासन का प्रदर्शन होगा।

— दयानन्द पूर्व माध्यमिक विद्यालय केराकत जौनपुर का वार्षिकोत्सव बसत पचमी के दिन २६-१ ९३ को समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर प्रात काल यज्ञ खेलकूद एव अपरान्ह २ बजे से सास्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुये। श्री आयमुनि वानप्रस्थी की अध्यक्षता मे विशाल सभा सम्पन्न हुई जिस मे नगर के अनेको गणमान्य व्यक्तियों ने अपन विचार प्रस्तुत किये।

—आर्य समाज राजगढ अलवर का वार्षिकोत्सव २५ से २७ दिसम्बर तक धूम-धाम से मनाया गया। समारोह म आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वानो राष्ट्रीय राज नेताओ एव सुयोग्य भजनोपदेशको ने पधार कर जनमानस को लाभान्वित किया। इस अवसर पर जिला आर्य सम्मेलन आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री विद्यासागर जी शास्त्री की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ।

योग दर्पण अनुपम पुस्तक

लेखक—स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती

अष्टाग योग की सक्षिप्त सुललित व्याख्या, आर्ट पेपर पर चार रग की छपाई, शारीरिक एव मानसिक विकास के लिए अनेको नियमो का विवरण।

युवक-युवतियो के सर्वांगीण विकास के लिए अनुपम ग्रन्थ। मूल्य ६०) रुपये डाक व्यय सहित।

प्राप्ति स्थान —

योगिक शोध सस्थान, योगधाम, आर्यनगर
ज्वालापुर, हरिद्वार (उ प्र) २४९४०७

वर्तमान में आर्यसमाज की उपयोगिता तथा प्रासंगिकता

श्री गगानगर-स्थानीय महर्षि दयानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय में आयोजित विचार गोष्ठी मे प्रमुख वक्ता के रूप मे बोलते हुए पजाब विश्व विद्यालय की दयानन्द पीठ के सेवा निवृत्त अध्यक्ष डा० भवानीलाल भारतीय ने कहा कि उन्नीसवीं शताब्दी मे आर्य समाज की स्थापना कर महर्षि दयानन्द ने जिस सुधार आन्दोलन का सूत्रपात किया था उसकी उपयोगिता आज भी यथावत् है। धार्मिक क्षेत्र मे ऋषि ने मानवतावादी मूल्यो की स्थापना की समाज मे स्त्री और दलित वर्ग की अवस्था को सुधारा तथा देशवासियो में राष्ट्रीयता का भाव जागृत किया। गोष्ठी मे गवर्मेन्ट कालेज के प्रिंसीपल डा० एस. सी मिश्रा राजनीतिक विज्ञान के व्याख्याता डा० विद्यासागर तथा खालसा कालेज के प्राध्यापक श्री हरभजनसिंह ने भाग लिया। प्रो० अरोड़ा ने गोष्ठी का सचालन किया तथा गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के कुलपति आचार्य श्री गोरीशकर ने गोष्ठी की अध्यक्षता की। प्राचार्य डा० रणधीरसिंह पुनिया ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव

आर्यसमाज बागपत द्वारा महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव १६ फरवरी १९९३ को सार्वदेशिक सभा के आदेशानुसार सोल्लास मनाया गया। कार्यक्रम के अतर्गत प्रात प्रभातफेरी, यज्ञ तथा आर्य विद्वानो के प्रवचन, स्कूली छात्रो की भाषण प्रतियोगिता जिसका विषय 'देव दयानन्द की देन' आदि कार्यक्रम सम्पन्न हुए राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त मा० मुरारीलाल सिद्धान्त शास्त्री द्वारा लिखित साहित्य आर्य दर्पण 'सत्य दर्शन' तथा स्वामी दयानन्द के चित्र का आकर्षक कलैण्डर का नि शुल्क वितरण किया गया। —मा० सत्य प्रकाश गौड़

सार्वदेशिक प्र स दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

महर्षि दयानन्द उवाच

* मेरा विचार है कि कुछ पुरुष कला कौशल सीखने के लिए जमनी भज दिये जाव परन्तु यदि यही आर्यावित मे ऐसे सिखाने वाले पुरुष मिल जाव तो बाहर जमनी को आदमी भजने की कोई आवश्यकता नही।
* क्या बिना देश देशा नर द्वीप द्वीपान्तर मे राज्य व व्यापार किए स्वदेश की उन्नति कभी हो सकती है? जब स्वदेश हा म स्वदेशी लोग व्यवहार करते और परदेश मे व्यवहार व राज्य करें तो बिना दारिद्रय और दु ख के दूसरा कछ भी नही हो सकता

सम्पादक डा० सच्चिदानन्द शास्त्री | दूरभाष । ३२७४७७१ | वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३१ अंक ३] | दयानन्दाब्द १६६ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१ | फाल्गुन शु० ६ | सं० २०४६ | २८ फरवरी १९९१

गलत ऐतिहासिक तथ्यों को पुस्तकों से निकाला जायेगा : भजनलाल

हरियाणा सरकार द्वारा महर्षि दयानन्द के जन्म दिवस पर सरकारी अवकाश की घोषणा

महर्षि दयानन्द सरस्वती का बोधोत्सव समारोह पूर्वक सम्पन्न

नई दिल्ली १९ फरवरी। आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्वावधान मे दिल्ली की समस्त आर्य समाजो तथा शिक्षण संस्थाओ की ओर से फिरोजशाह कोटला मैदान मे आयोजित महर्षि दयानन्द सरस्वती के बोधोत्सव मे मुख्य अतिथि हरियाणा के मुख्यमन्त्री चौ० भजनलाल ने घोषणा की कि हरियाणा के स्कूली पाठयक्रम को

(शेष पृष्ठ २ पर)

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम मे स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे मनाया गया। मुख्य अतिथि थे केन्द्रीय कृषि राज्यमन्त्री श्री अरविन्द नेताम।

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

क्या हिन्दू होना अपराध है ?

—श्री वीरेन्द्र

भारत का इतिहास एक नया मोड़ लेने लगा है। हिन्दुओं के ही देश में हिन्दू होना एक अपराध समझा जाने लगा है। मुसलमान होना ईसाई होना, अपराध नहीं है—हिन्दू होना जुर्म है विश्व के समस्त बड़े देशों का कोई न कोई धर्म है। अमेरिका बरतानिया और फ्रांस जैसे देशों का धर्म ईसाई है। अमरीका का राष्ट्रपति और बरतानिया का ताजदार, वह पुरुष हो या औरत जब अपना पद सम्भालते हैं तो बाईबिल पर हाथ रखकर प्रतिज्ञा करते हैं कि वह देश के विधान के प्रति पूरी तरह पाबन्द रहेंगे इन्हें यह शपथ दिलाने वाला इनके देश का या तो कोई सबसे बड़ा पादरी होता है अथवा उस देश के उच्चतम न्यायालय का जज। यह वह देश है जो एलानिया कहते हैं कि वह ईसाई धर्म के पाबन्द हैं, जहां तक इस्लामी देशों का सम्बन्ध है वह भी खुलेआम कहते हैं कि वह इस्लाम के पाबन्द हैं। पाकिस्तान का नाम ही इस्लामी री पब्लिक आफ पाकिस्तान रखा गया है। जापान एशिया का सबसे अधिक सम्पन्न देश है यह भी अपने आपको एक विशेष धर्म से सम्बन्धित कहता है जो बौद्ध धर्म का एक और रूप है अतः यह माना जाता है कि संसार में कोई भी देश ऐसा नहीं जो किसी न किसी धर्म को न मानता हो जब तक सोवियत यूनियन कायम थी इसका आधार साम्यवाद था वहां धर्म के विरोध में जनता को उकसाया जाता था और कहा जाता था कि जिसे धर्म कहा जाता है वह अफीम का काम करता है अर्थात यह एक नशा होता है जो मनुष्य मात्र के प्रति हानिकारक होता है परन्तु अब जब सोवियत यूनियन समाप्त हो गयी है। जिस दिन इसके समाप्ति की घोषणा की गयी उस दिन सारे रूस के सभी गिरजा घरों मे घण्टे बजने लगे यानि कि दुनिया में सिर्फ एक देश था जहां धर्म या मजहब अपराध माना जाता था जिस दिन इस देश का राजनैतिक रूप बदला उस दिन से वहां धर्म की जय जयकार आरम्भ हो गयी। आज वहां न सोवियत यूनियन है और न ही साम्यवाद जो कभी कहा करता था कि धर्म जनता पर अफीम जैसा प्रभाव करता है अब संसार में यह स्वीकार कर लिया गया है कि धर्म ही एक अति आवश्यक चीज है जिससे मनुष्य मनुष्य को सही मार्ग दिखाता है और सही धर्म मनुष्य को मनुष्य से लड़ाता नहीं अपितु प्रेम से परस्पर समीप लाता है।

एक अंग्रेज साहित्यकार ने एक बार कहा था कि धर्म एक व्यक्ति की जिन्दगी में वह ही पार्ट अदा करता है जो विपक्षी दल एक राजनैतिक शासन में करता है केवल इस अन्तर के साथ कि एक राजनैतिकदल शासन में कभी वह स्वयं सरकार बना सकती है परन्तु धर्म एक ऐसा विरोधी पक्ष है कि कभी सरकार नहीं बनाता परन्तु यदि कभी कोई मनुष्य भूल करे तो धर्म शीघ्र ही उसे सावधान कर देता है यदि किसी समय भारत ससार का शिरोमणि देश समझा जाता था इसका एक कारण यह था कि वह एक धर्म प्रधान देश था हम इसके भूत काल की तरफ देखें तो वह बातें नुमायां तौर पर सामने आती हैं जिन्हें अन-देखा नहीं कर सकते जिससे पता चलता है कि भारत एक धर्म प्रधान देश है जो लोग आज सेक्यूलरिज्म या धर्म निरपेक्षता की दुहाई दे रहे हैं वह कभी सफल न होंगे। भारतीय जनता पार्टी पर आज इसके विरोधियों की तरफ से बड़ा दोष यह है कि वह धर्म की आड़ में अपनी राजनीति चलाने का यत्न कर रही है, वह भूल रहे हैं कि इस देश की परम्परा यही रही है कि पुराने धर्म ग्रन्थों चारों वेदो का प्रकाश भारत में ही हुआ था। कुरान शरीफ की जिन्दगी १५ सौ वर्ष के समीप है, बाईबल की कोई दो हजार वर्ष परन्तु चारों वेदों की उमर कोई १० हजार वर्ष कहता है, कोई २० हजार वर्ष, योरुप के बड़े-बड़े इतिहासकार और साहित्यकार कह चुके हैं कि विश्व के पुस्तकालय में सबसे पुराने धर्म ग्रन्थ हैं वह वेद हैं। शायद यही कारण है कि जितने महापुरुष इस देश में हुए हैं, किसी अन्य देश में नहीं हुए जिन ऋषियों ने चार वेद लिखे थे, वह कब हुए, इसका किसी को सही अन्दाजा नहीं, परन्तु इससे तो कोई इन-कार नहीं कर सकता कि उनसे पहले किसी अन्य देश में ऐसे ऋषि, मुनि या सन्त, महात्मा नहीं हुए जिन्होंने ऐसे ग्रन्थ लिखे हों जैसे कि यह चारों वेद हमारे देश में लिखे गए। संसार में इस समय दो और मजहब हैं जो फैले हुए हैं इस्लाम और ईसाइयत। इस्लाम के पैगम्बर हजरत मुहम्मद १५ सौ वर्ष पहले हुए थे और ईसाइयत के बानी यीसू मसीह को तो अभी दो हजार वर्ष भी नहीं हुए यह गिनती ऐसी है जिसे झुठलाया नहीं जा सकता। अन्त में यह सब एक ही परिणाम पर पहुंचते हैं कि हमारा धर्म, हम इसे वैदिक धर्म कहें, सनातन धर्म कहें या हिन्दू धर्म यह दुनिया में सबसे पुराना धर्म है। सैकड़ों नहीं, हजारों वर्ष पुराना। इसके अन्य भी पहलू हैं जिन्हें भविष्य में प्रकाशित करूंगा—

सन्देश

दिनांक ११ फरवरी, १९९३

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता है कि १६ फरवरी, १९९३ को आर्य समाज के प्रमुख प्रवर्तक स्वामी दयानन्द जी का जन्म दिवस पूरे देश में उत्साहपूर्वक मनाया जा रहा है। स्वामी जी ने आर्य समाज के माध्यम से जन-जागरण को एक निश्चित दिशा और गति प्रदान की।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने देशवासियों में राष्ट्रीयता, देश-प्रेम, स्वराज की महत्ता और स्वदेशी के भाव जिस भांति जागृत किए, वह आज भी अनु-करणीय है। स्वामी जी ने न केवल स्वराज शब्द का पहली बार प्रयोग किया है बल्कि निर्भीक भाव से घोषणा की कि भारत भारतवासियो का है। आज के बदलते परिवेश मे भी आवश्यकता इस बात की है कि हम राष्ट्रीय हितों को सर्वोपरि रखें और आतंकवाद व अलगाववादी शक्तियों का एकजुट होकर मुका-बला करें।

समारोह की सफलता के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

शिवराज वी. पाटिल

(अध्यक्ष, लोकसभा भारत)

महर्षि दयानन्द सरस्वती का बोधोत्सव

(पृष्ठ १ का शेष)

पुस्तकों मे से उन गलत ऐतिहासिक तथ्यों को निकाल दिया जायेगा जिनमें आर्य लोगों के बाहर से इस देश में आने का उल्लेख है।

उन्होने यह भी घोषणा की कि हरियाणा सरकार की ओर से महर्षि दयानन्द के जन्म दिवस पर छुट्टी की जायेगी। उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द ने अपने अर्न्तज्ञान के प्रताप से पूरे संसार को वेदों का प्रकाश दिया और मानव मात्र को एक दूसरे की सेवा की प्रेरणा दी। इतिहास उन्हें सदैव याद रखेगा।

हरियाणा के कृषि मन्त्री बच्चनसिंह ने कहा कि हरियाणा में कन्याओं की स्नातक स्तर तक शिक्षा निःशुल्क कर दी जायेगी। क्योंकि महर्षि दयानन्द ने ही सर्वप्रथम स्त्री शिक्षा की प्रेरणा दी थी। दक्षिण भारत के आर्य नेता और समारोह के अध्यक्ष पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने कहा कि राष्ट्र की आजादी के लिए आर्य समाज के योगदान के इतिहास को कभी भुलाया नहीं जा सकेगा। आज देश में कही खालिस्तान की माग उठ रही है, कहीं कश्मीर को पाकिस्तान में मिलाने के षडयन्त्र चल रहे हैं और देश के दक्षिण तथा अन्य कई भागों में नक्सलवाद आदि के कारण राष्ट्र की सुरक्षा, एकता और अखण्डता को गम्भीर खतरा पैदा हो गया है। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने देश की वर्तमान परिस्थितियों के लिए देशवासियों में एकता, संविधान के प्रति सच्ची निष्ठा तथा राजनेताओं और तुष्टीकरण की राजनीति को इसके लिए जिम्मे-दार बताया।

समारोह में एक प्रस्ताव पारित करते हुए सार्वदेशिक सभा से अपील की गई कि देश को वर्तमान विषम परिस्थितियों पर आर्य समाज का राष्ट्रीय सम्मेलन बुलाकर कोई ठोस निर्णय शीघ्र लें ताकि देश की और अधिक क्षति न होने दी जाए।

समारोह में विदुषी डा० रमा, प्रमुख व्याकरणाचार्या डा० प्रज्ञा देवी आदि कई विद्वानो ने अपने-अपने विचार प्रकट करते हुए महर्षि दयानन्द के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि व्यक्त की। समारोह का संचालन आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री डा० शिवकुमार शास्त्री ने किया।

आर्यसमाज के कारण ही वेद की विचारधारा जीवित है : अरविन्द नेताम

नई दिल्ली १६ फरवरी। आर्यसमाज ने देश के आदिवासी और वनवासी क्षेत्रो मे सामाजिक कार्यक्रम चलाकर इन क्षेत्रो के लोगो को राष्ट्रीय मुख्य धारा मे जोडने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। आर्य समाज के ही कारण विश्व की सबसे प्राचीन सस्कृति और वेद की विचारधारा आज भी जीवित है। यह बात केन्द्रीय कृषि राज्यमन्त्री अरविन्द नेताम ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के १६९व जन्म दिवस समारोह मे कही। आर्य केन्द्रीय सभा द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम मे श्री नेताम मुख्य अतिथि थे।

नई दिल्ली के ताल कटोरा इन्डोर स्टेडियम म आयोजित इस कार्यक्रम मे श्री नेताम ने कहा कि स्वामी दयानन्द ने समाज मे व्याप्त अनेक विकृतियो और दोषो को दूर करने मे अपना सारा जीवन लगा दिया। अहिन्दी भाषी होते हुए भी हिन्दी भाषी क्षेत्र उनकी कर्म-भूमि रहा। हिन्दी भाषा के माध्यम से ही उन्होने अपना सन्देश लोगो को दिया और राष्ट्रीय एकता को मजबूत किया। श्री नेताम ने युवको का आह्वान किया कि हमारी सस्कृति की सुरक्षा का दायित्व युवको के ही कधो पर है। उन्हे स्वामी दयानन्द से प्रेरणा लेनी चाहिए। यही स्वामी जी को सच्ची श्रद्धाजलि होगी।

समारोह का उद्घाटन करते हुए हरियाणा के खाद्य मन्त्री महेन्द्र प्रताप ने कहा कि समाज मे जब-जब दोष और विकृतिया उत्पन्न हो जाती हैं, तो उनका निवारण सन्तो और समाज सुधारको द्वारा होता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती इसी कोटि के पुरुष थे। उन्होने ही सर्व प्रथम स्वराज, स्वभाषा, स्वधर्म और स्वदेश का उद्घोष किया था।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि स्वामी दयानन्द ने मानव जाति के कल्याण के लिए वेद प्रतिपादित वैदिक सिद्धान्तो के आचरण पर विशेष बल दिया था। यदि महर्षि दयानन्द सन्त न होते तो आज आर्य जाति का अस्तित्व ही खतरें मे होता। इस अवसर पर सनातन धर्मी सन्यासी स्वामी सर्वज्ञमुनि, हरियाणा के विधायक पुरुषोत्तमलाल और डा० शिवकुमार शास्त्री ने भी महर्षि दयानन्द को अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की। उपराष्ट्रपति और लोक सभा अध्यक्ष ने भी सन्देश भेजकर स्वामी दयानन्द सरस्वती को अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। इस अवसर पर भारी सख्या मे आर्य नर-नारी, विद्यार्थी तथा ब्रह्मचारी उपस्थित थे। समारोह मे अनेक गणमान्य सन्यासी विद्वान तथा अधिकारी भी उपस्थित थे। समारोह का कुशल सचालन आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री डा० शिवकुमार शास्त्री ने किया।

उप-राष्ट्रपति सचिवालय नई दिल्ली

सन्देश

१२ फरवरी १९९३

उपराष्ट्रपति जी को यह जानकर बडी प्रसन्नता है कि सस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान, महान समाज सुधारक और आर्य समाज के सस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का १६ फरवरी १९९३ को नई दिल्ली के ताल कटोरा इन्डोर स्टेडियम मे १६९ वा जन्म दिवस समारोह आयोजित किया जा रहा है। वह आशा करते हैं कि उनका व्यक्तित्व और कृतित्व भावी पीढियो के लिए प्रकाश स्तम्भ का कार्य करता रहेगा।

उपराष्ट्रपति जी इस समारोह की पूर्ण सफलता की कामना करते हैं।

शम्भु नाथ वर्मा

शिव तो जागे किन्तु देश का शक्ति जागरण शेष है

शिव तो जागे किन्तु देश का शक्ति जागरण शेष है।
देव जुटे यत्नो से लेकिन असुर निवारण शेष है॥
सधे शक्ति कलौयुगे यह जनमन को विश्वास है।
पौरुष ही आधार शान्ति का इसका भी आभास है॥
सामूहिक आर्यत्व शक्ति का आयुध धारण शेष है॥
देव जुटे यत्नो से लेकिन

यमुना दूषित, गगा मैली रामजन्म-भू खिन्न है।
रघुकुल रीति भुलाई हमने भाई-भाई भिन्न है॥
गोरा शासन गया किन्तु दासत्व विदारण शेष है॥
देव जुटे यत्नो से लेकिन

नारी अब भी बेबस अबला, अर्जुन भ्रम मे ग्रस्त है।
हुए मुग्ध अभिमन्यु व्यूह मे, धर्म वोट मे मस्त है॥
द्रुपद सुता का चीर उतरता, सकट तारण शेष है॥
देव जुटे यत्नो से लेकिन

इस धरती की मातृशक्ति को फिर चेतन होना होगा।
दिव्यायुध आभूषित होकर असमजस खोना होगा॥
शखनाद हो चुका रुद्र का, जय उच्चारण शेष है॥
देव जुटे यत्नों से लेकिन

शिव तो जागे किन्तु देश का शक्ति जागरण शेष है।
देव जुटे यत्नो से लेकिन असुर निवारण शेष है॥

—पुरुषोत्तम अग्रवाल

शुद्धि सस्कार

आर्य समाज भावनगर द्वारा २६-१-९३ को प्रात स्वातन्त्र्य-उत्सव धूम-धाम से मनाया गया। उसके तुरन्त बाद मूल केरला के हाल मे बम्बई निवासी श्री स्टेलोन मुट्टु को शुद्ध करके नवीन नाम सजय कुमार आर्य रखा गया। ईसाई पन्थ अनुयायी श्री स्टेलोन मुट्टु ने अपने को सौभाग्यशाली अनुभव किया क्योकि उनका विवाह वैदिक विधि से हुआ। उनका विवाह मूल महाराष्ट्रीयन ब्राह्मण हाल भावनगर निवासिनी सुश्री वर्षा दिवे के साथ सम्पन्न हुआ। आर्य समाज के मत्री, उपमत्री, प्रधान तथा सभी सभासदो ने नवदपति को शुभाशीर्वाद दिया। पुरोहित श्री चिन्तामणि उप्रेती ने शुभ कामना की कि आपकी सन्तान राष्ट्र के लिए समर्पित भावना रखने वाली हो अर्थात राष्ट्र को शिवाजी जैसो की ही आवश्यकता है आप पूरा करेंगे।

प० चिन्तामणि उप्रेती

आर्य समाज का वर्तमान में महत्व

लेखक—पं० विनोद कुमार शास्त्री सिद्धान्ताचार्य बम्बई

> ## सन्देश
>
> दिनांक १६-२-९१
>
> आदरणीय स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी,
>
> मैं आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के १६१वें जन्म दिवस समारोह मे सम्मिलित होने के लिए बहुत उत्सुक था, किन्तु खेद है कि मैं अस्वस्थ होने के कारण इस पुनीत अवसर पर उपस्थित नहीं हो सकूंगा।
>
> मैं महर्षि दयानन्द जी के प्रति अपनी असीम श्रद्धा व्यक्त करते हुए समारोह के आयोजकों और इसमे सम्मिलित होने वाले सभी महानुभावो को अपनी शुभ कामनाएं भेजता हू और समागम की सफलता की कामना करता हू।
>
> ज्ञानी जैलसिंह
> भारत के पूर्व राष्ट्रपति

कुछ लोग तो अपने ही गमो के गीत गाते हैं,
होली हो या दिवाली, मातम मनाते हैं।
उन्ही की रागिनी पर झूमती है दुनिया,
जो जलती चिता पर बैठकर वीणा बजाते हैं॥

आर्य समाज के स्वर्णिम इतिहास के सन्दभ मे उपरोक्त पंक्तिया आज कितनी सटीक प्रतीत होती है। वास्तव मे ऐसे ही तो घर फूक कर तमाशा देखने वाले अलमस्त लोगो का टोला रहा है आर्य समाज। ऐसे ही तो थे इस संगठन के संस्थापक आनन्द कन्द आदित्य ब्रह्मचारी स्वामी दयानन्द। जिन्होने अपनी अल्हड जवानी को लुटा दिया इस भारत देश के पुर्नजागरण के लिए। खोये स्वाभिमान की पुन प्राप्ति कराने के लिए। किसी लेखक के ये शब्द आज के सन्दर्भ मे कितने सार्थक हैं कि "यदि राजनैतिक आजादी देश को महात्मा गाधी ने दिलाई तो वैचारिक स्वतन्त्रता का शखनाद करनेवाले स्वामी दयानन्द ही थे। सहस्रो वर्षों से बद्धमूल रूढियो से जरा जीर्ण स्वत्व क्षीण चिरम्लान मानसिकता वाले मानव समाज को नवल धवल उज्जल आलोक मे लाकर खड़ा करना उन्ही का कार्य था। नारीजाति की मुक्ति का द्वार स्वामी दयानन्द और आर्य समाज न ही खटखटा कर खोला था। सबको समान अधिकार दिला कर मानवता को जीने की राह बताई थी। क्योकि उनका ध्येय वाक्य था असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिगमय। मृत्यो मा अमृत गमय।' अर्थात अन्धकार से प्रकाश की ओर चलो और मृत्यु से अमरत्व की ओर बढ़ो। अस्तु हम किसी भी क्षेत्र में दृष्टि उठाकर देखें आर्य समाज का योगदान अविस्मरणीय रहा है। क्या समाज सुधार क्या शिक्षा प्रसार, क्या दलितोद्धार, सभी मे आर्य समाज की महती भूमिका रही है। राष्ट्ररक्षा और राष्ट्र के नव निर्माण मे भी आर्य समाज सर्वाग्रणी रहा है। स्वराज और स्वदेशी की बात करने वाले स्वामी दयानन्द जी पहले भारतीय थे, उन्ही से अगणित क्रान्ति वीरो को स्वतन्त्रता की बलि वेदी पर आत्मोत्सर्ग करने की उद्दाम उत्प्रेरणा मिली थी, उन्ही के पद चिन्हो पर चल कर प० रामप्रसाद बिस्मिल सरदार भगतसिंह जैसे सैकडो नवजवानो ने अपना गमगर्म, लहू स्वतन्त्रता की देवी के अर्चन के लिए बहाया तभी तो हिन्दी के सुप्रसिद्ध हास्य कवि काका हाथरसी ने सच ही कहा है।

यदि न देते साथ देश के आर्य समाजी।
गोरे न जाते छोड देश को राजी राजी॥

जाति रक्षा का कार्य भी आर्य समाज का अहम रहा है। जहा स्वामी दयानन्द और आर्य समाज ने इस आर्य जाति (हिन्दू) को हजारो वर्षों की कुम्भकर्णी प्रगाढ निद्रा से झकझोर कर जगाया था वही पर इसके अस्तित्व की रक्षा के लिए भी सघष का बिगुल बजाया था। चाहे हैदराबाद मे हिन्दुओ के अधिकार हनन करने का मामला हो या सिन्ध मे सत्यार्थ प्रकाश के प्रतिबन्ध का आर्य समाज ने डटकर लोहा लिया है। और अपने जातीय अधिकारो की प्राण पण से रक्षा की है। इतना ही नही आर्य समाज ने जहा अपने अछूत कहे जाने वाले भाईयो को गले लगाया वही पर साथ ही बिछुड़ कर विधर्मी बने बन्धुओ को भी शुद्धि का सुदर्शन चक्र चलाकर अपना लिया था यह कोई समान्य कार्य नही था उस जमाने मे जबकि अस्पृश्यता तथा कथित शूद्र का दर्शन भी द्विजोके लिए दुर्भाग्य पूर्ण कहा जाता था लेकिन आर्य जाति के सौभाग्य सूर्य के रूप मे आर्य समाज का उदय हुआ जिसने इसके सबल तमस्तोम को ध्वस्त करके रख दिया इस प्रकार आर्य समाज के स्वर्णिम अतीत को देख कर हमारा मस्तक गर्वोन्नत हो जाता है। लेकिन कोई भी जीवित जाति या सगठन केवल अतीत के गौरव गान से ही सन्तुष्ट नही रहा करती उसे तो राष्ट्र कवि मैथिली शरण गुप्त के निम्न लिखित शब्दो मे आत्मावलोकन कर अपना मूल्याकन करना चाहिए —

कौन थे क्या हो गये और क्या होंगे अभी।
आओ मिल कर के विचारे ये समस्यायें सभी॥

आज कल हम किस धरातल पर खडे हैं, यह जानना जरूरी है। आज भी आर्य समाज सर्वथा निष्क्रिय नहीं है। अपने अपने गांव या नगरों में स्थानीय आर्य समाजों की भूमिका है। दैनिक या साप्ताहिक यज्ञ सत्संग तथा संस्कार समारोह करा करके जन जन के लिए वैदिक विधि का मार्ग प्रशस्त करना आर्य समाज का नित्य नैमित्तिक कार्य है। उसका उद्देश्य ही यही है कि इस आत्म विस्मृत जाति को पुन इसके स्वत्व का भान हो, आर्य समाज का मान हो। आर्य समाज का ध्येय है।

आर्य हमारा नाम है वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है सत्य हमारा कर्म॥

देश के कोने कोने मे आर्य समाज की शिक्षण संस्थाओ का विस्तृत जाल फैला हुआ है। सैकडो की संख्या मे गुरुकुल महाविद्यालय आदि है जिनमे राष्ट्र भाषा हिन्दी के माध्यम से शिक्षा दी जाती है। जो कि वर्तमान मे प्रचलित दोषपूर्ण शिक्षा पद्धति का राष्ट्रीय विकल्प सिद्ध हो सकती है यदि भारतीय सरकार उसे अपना सके।

वर्तमान में प्रासंगिकता :—

आर्य समाज का भूत काल बडा सुहावना रहा है लेकिन आज नये युग की अपनी नयी नयी चुनौतिया है जिनको उसे स्वीकार करना पड़ेगा, और उनका भरपूर उत्तर देना होगा। राष्ट्र कवि के शब्दो मे कह सकते हैं —

उज्ज्वल अतीत था भविष्य भी महान है।
सुधर जाय अब वह जो कि वर्तमान है॥

आज बहुत से लोग प्राय इस तरह की बातें करते रहते हैं कि आर्यसमाज तो अब मर गया है? अब तो विज्ञान का युग है कौन धर्म कर्म की बातें सुनेंगा? अन्ध विश्वास और भेदभाव तो आज स्वय ही समाप्त होता जा रहा है। समाज मे स्वय नई चेतना आती जा रही है और फिर, अब तो हिन्दुओ मात्र के संगठित रहने भर की जरूरत है। खण्डन मण्डन का भी जमाना अब जा चुका है। आदि आदि बातें लोग करते पाये जाते हैं। हम समझते हैं कि इस तरह की बातें वे लोग करते हैं जो लोग या तो निराशावादी है या फिर वे लोग जो प्रतिक्रियावादी है। जो आर्य समाज को अच्छी तरह से जानते नहीं और जानते भी हैं तो ठीक से मानते नहीं। इसलिए ईर्ष्यावश इस प्रकार की ऊल जलूल बातें करते रहते हैं। जो लोग यह कहते हैं कि अब आर्य समाज की कोई प्रासंगिकता नही रह गई है, पहले हम उनका उत्तर देना चाहेंगे। हम उन लोगो से पूछना चाहते हैं क्या आज भी हमारे समाज में अन्धविश्वास नहीं है? क्या आज भी हमारे समाज मे भेदभाव की दीवारें नहीं खडी हैं? क्या आज हमारे समाज में सामाजिक कुरीतियां नहीं हैं। क्या आज हमारे सामने चरित्र (राष्ट्रीय) संकट नहीं है। क्या छल-कपट का व्यवहार नहीं है क्या आज एक से एक बढकर अनेकों संगठन बनकर नहीं उतर आये हैं? हम पूछते हैं क्या यह सच है कि नहीं यथार्थ में? और यदि यह है तो उनके निवारण को एक मात्र अमोघास्त्र आर्य समाज क्यो अप्रासंगिक हो गया है। क्या आज उसकी तलवार के पानी को जंग लगा है या उसके तेज की धार

(शेष पृष्ठ १० पर)

युवा वर्ग अपनी शक्ति पहचाने

भगवानदेव चैतन्य, एम.ए. साहित्यालंकार

किसी भी समाज या राष्ट्र की युवा शक्ति हो वास्तविक शक्ति होती है। जिस समाज की युवाशक्ति में जागरुकता नही वह समाज कभी भी अपनी उन्नति के रास्तों पर अग्रसर नही हो सकता है। इसके विपरीत जहां युवाओं में जागरूकता हो उसे समाज या राष्ट्र के लिए उन्नति के हजारों ही स्त्रोत प्रवाहित हो जाते हैं। जिस प्रकार एक समृद्ध और सम्पन्न परिवार को आगे आने वाली पीढ़ी चाहे तो अपनी योग्यता के आधार पर उस परिवार को और भी अधिक समृद्धि और सम्पन्नता की ओर ले जा सकती है और चाहे तो पतन की गहरी खाईयों को ओर। ठीक इसी प्रकार समाज या राष्ट्र के लिए भी युवा पीढी ही उन्नति या अवनति के द्वार खोल सकती है। इसी से युवा पीढ़ी की सार्थकता का हमे पता लगता है। आज हमारा समाज और राष्ट्र अलगाववाद और आतंकवाद की जिन अन्धेरी गलियों में भटक रहा है वह तभी पुन: सुख शान्ति और समृद्धि के राजपथ पर तभी आ सकता है जब युवा शक्ति अपनी शक्ति को पहचानकर आगे आयेगी। महाबली ब्रह्मचारी हनुमान की पहचान जब उनके असीम बल से कराई गई तो उन्होंने समुद्र लांघ कर लंका में प्रवेश करके सुरक्षित लंका वासियों को आश्चर्य चकित कर दिया था। हम तो यह मानकर चलते हैं कि आज के युवाओ में भी असीमित बल है मगर उन्हें उसकी पहचान कराने की आवश्यकता है। उसके साथ-साथ उसे शक्ति का सही दिशा में प्रयोग करवाने की भी जरूरत है।

आज भारत में ही नहीं समूचे विश्व में मानवता के खून से खेलने का एक सिलसिला सा ही चल पड़ा है। इस पर यदि समय रहते रोक नहीं लगाई गई तो एक बहुत बड़ा खतरा खड़ा हो जायेगा। इस विनाशकारी स्थिति से युवा वर्ग ही हमें बचा सकता है। आज संसार जिस बारूद के ढेर पर बैठा है उसके विनाशक परिणाम खाड़ी युद्ध के रूप में सामने आ चुके हैं। पता नहीं कब क्या हो जायेगा ऐसी अनिश्चय की स्थिति में हम लोग कब तक आंतकित होते रहेंगे? समय आ गया है अब युवा शक्ति को आगे आकर इस स्थिति से दुनियां को बचाना चाहिए। युवाओं को अपनी गरिमा की पहचान कर सही दिशा में सही कदम उठाने चाहिए। मगर देखने में आता है कि आज का युवा वर्ग अपने आपको पहचानना तो दूर रहा वह दो घड़ी खड़े होकर यह सोचने के लिए भी तैयार नहीं है कि उसके कन्धों पर आज कितना बड़ा दायित्व आ पड़ा है। वह खाओ पीओ मौज उडाओ की सस्कृति में भटक गया है। धर्म, कर्म, ईश्वरत्व और मानव मूल्यों के प्रति यह उदासीन सा है मगर इसके विपरीत क्षणिक सुखों के लिए वह अपना सर्वस्व दाव पर लगाने के लिए तैयार है। किसी भी बड़ व्यक्ति की अच्छी बात उसे तीर की तरह लगती है मगर अपने भटकाव से परिपूर्ण रास्तो मे वह आश्वस्त है। उसे यह मालूम नहीं कि यदि आज बिश्व की विनाशकारी प्रवृति को सही दिशा की ओर मोड़ा नही गया तो मानवता का अस्तित्व तक भी शेष नहीं रहेगा। कबूतर बिल्लो को आता देखकर आंखें बन्द करके अपने आपको सुरक्षित तो समझता है मगर उसका अन्त बड़ा भयावह है। ठीक ऐसा ही युवा पीढी के साथ होने की सम्भावना है यदि वक्त रहते हो उसने अपनी आंखें खोलकर वर्तमान चुनौतियों को स्वीकार कर इनका समाधान नहीं खोजा तो।

दोष युवाओं का भी इतना नहीं है। युवा वर्ग में एक जोश होता है और एक ऐसी ऊर्जा होती है जो अपने आप में असीमित शक्ति रखती है मगर उसे दिशा देने की आवश्यकता होती है। वह दिशा अन्ततः अपने आस-पास के परिवेश से ही तो प्राप्त की जा सकती है। मगर आज का युवा वर्ग देखता है कि चारों ओर झूठ और चालाकी का साम्राज्य है। हर व्यक्ति ने अपने चेहरों पर मुखौटे ओढ़ रखे हैं। झूठ आकाश पर उड़ रहा है और सत्य घुटनों के बल चलकर अपना दम तोड़ रहा है। धर्म और ईश्वर आदि बातें कुछ लोगों के लिए अपनी स्वार्थ सिद्धि के हथियार बन चुके हैं। इनकी आड़ में मानवता का दोहन किया जा रहा है और दूसरे की लाशों पर अपने महल खड़े किए जा रहे हैं। आज हमारे अगुआ ही राष्ट्र प्रेम और मानवता के पक्षधर नहीं रहे हैं। उनके लिए ये सब बातें केवल भाषणों तक ही सीमित गईहैं। अपनी संस्कृति, भाषा और वेशभूषा को अपनाने के लिए कोई भी तैयार नहीं है। जिस स्वतन्त्र भारत की कल्पना हमारे बीर शहीदों ने की थी उसका निर्माण तो दूर रहा, उस ओर एक कदम भी हम नही बढ़ा सके हैं। हमारे अगुआ ही भटक गए हैं। ऐसी स्थिति में युवा वर्ग यदि प्रेरणा ले भी तो किससे? जिस परिवार का अगुआ ही भ्रष्ट हो जाए तथा अपनी परम्पराओ को ताक पर रख दे तो वह आने वाली पीढ़ी से यह अपेक्षा कैसे कर सकता है कि वह परम्पराओं का रक्षक बनेगा? वोट और कुर्सी की राजनीति ने आज समाज के सभी क्षेत्रों को खोखला कर दिया है। आज के नेता जो भी नारा देते हैं, या कोई कदम उठाते हैं तो वे पहले अपने वोट की रणनीति को देखते हैं। राष्ट्रहित पीछे छूट गया है। प्रमुख हो गए हैं राजनैतिक समीकरण। इसीलिए आज तक राष्ट्रहित को बातें लागू नही हो सकी। इसी तुष्टिकरण की नीति के कारण राष्ट्र बिखर रहा है। मत, मजहब और सम्प्रदाय तथा क्षेत्रवाद परवान चढ़ गया है। आज जो लोग राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के नारे भर लगाते हैं वे तो सही हैं मगर जो वास्तव में राष्ट्रीय एकता और अखण्डता की आवाज उठाते हैं उन्हें देशद्रोही करार दिया जाता है। ऐसे में युवा वर्ग का भ्रमित हो जाना स्वाभाविक है। जब जगाने वाले ही सो रहे हों तो किया भी क्या जा सकता है? मगर युवाओं को एक बात याद रखनी चाहिए कि जिस शहर में मुर्गा बांग नहीं देता है प्रभात वहां भी होता है। जहां तथाकथित अगुआ ही भ्रमित हो जाएं वहां भी नए रास्ते खोजे जा सकते हैं। इतिहास मे उन्हीं लोगों के नाम अमर हैं जिन्होने स्वय नई राहों का निर्माण करके अपने आपको आगे बढ़ाया है। युवाओं के समक्ष अपना इतिहास और ज्ञान गरिमा का अक्षय भण्डार उपलब्ध है। इतिहास की भूलों से शिक्षा लेते हुए तथा अपनी प्राचीन संस्कृति की रोशनी से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ने की आवश्यकता है। आज के युवावर्ग को अपना मार्ग स्वय ही प्रशस्त करना होगा।

जहां कहीं भी नवनिर्माण का सृजन हुआ है, युवा हाथों से ही हुआ है। प्रगति की कोंपलें युवा स्पर्श से ही प्रस्फुटित हुई है। भारत माता की बेडिया शायद ही टूट पाती यदि युवावर्ग ने अपने प्राणों की आहुतिया न दी होती। अपने अस्तित्व को मिटाकर राष्ट्र की प्रभुसत्ता को अखण्ड रखने वाले वीरों का काफिला जब निकला तो भारत मां को स्वतन्त्र करके अंग्रेजों को यहां से भागना ही पडा। उन्होंने अपना मार्ग खोजा था। स्वयं को राष्ट्र को बलिवेदी पर आहुत करके वे लोग अमर हो गए हैं। वे आज भी युवा वर्ग के लिए एक लाइट-हाउस का कार्य कर सकते हैं। यह एक ध्रुव सत्य है कि युवा वर्ग के बलिदानों के कारण ही हम लोग स्वतन्त्रता का प्रभाव देख सके हैं। किसी भी कुरीति या कुनीति को ध्वस्त करने के लिए युवा वर्ग की सक्रियता परम आवश्यक है। दयानन्द और शंकराचार्य जैसे युबाओं ने धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए अपने आपको आहुत कर दिया। उनके समय में भी अनेक प्रलोभन थे मगर उन्हें ठुकरा कर उन्होने अपने जीवन मानवता की दुःखती रग पर मरहम लगाने के लिए आहुत कर दिए। युवा भावनाओं में इतनी शक्ति होती है कि वे असम्भव को सम्भव करके दिखा देते हैं।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी सरस्वती का जीवन चरित(४)

—डा० प्रशोक प्रार्य

बाबू घनश्यामदास जी गुप्त सभा के प्रधान थे। परन्तु कार्यालय का मुख्य कार्य आपके सबल कन्धों पर रहा। १९५४-५५ में आपको सार्वदेशिक सभा का कार्यकर्ता उपप्रधान चुना गया। गोरक्षा आन्दोलन का आपको इन्हीं दिनों सर्वाधिकारी भी चुना गया। आपके नेतृत्व में गढ़वाल की डोला-पालकी जनगणना, देशी रियासतों में क्रिमिनल ला अमेंण्डमेंट के अन्तर्गत अन्याय, धार्मिक एवं सांस्कृतिक संस्थानों के साथ साथ आर्य समाजो के रजिस्ट्रेशन, नगर कीर्तनों में आर्यों के धार्मिक एवं नागरिक अधिकारों आदि समस्याओं के समाधान आपकी नीतिमत्ता कर्मठता व दूर-दर्शिता के ही परिणाम हैं। हरिजनो को आर्य बना कर सवर्णों में मिलाना आपकी प्रमुख सफलता थी। रियासतों मे आर्यसमाज की रजिस्ट्रेशन की बाधा भी आपने हटवाई। राज्यों में गौ बध विशेष कानून बनवाना भी आपकी बुद्धिमत्ता का परिचायक है। कुमारी कल्याणीदेवी को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के धर्मविज्ञान महाविद्यालय में प्रवेश दिलाने में भी सफल हुए। जो काम मदनमोहन मालवीय व सर्वपल्ली डा० राधाकृष्णन् न कर सके वह आपने करवा दिया। इस प्रकार स्त्रियों को वेद पढ़ने का अधिकार मिला। १९५३ में आर्य महासम्मेलन हैदराबाद में आप विदेशी इसाई मिशनरियों की अराष्ट्रीय गतिविधियो के निरीक्षक व शुद्धि आन्दोलन के लिए भी सर्वाधिकारी चुने गए। आपने शुद्धि पर बल दिया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी आर्य परोपकारिणी सभा की स्थापना १८८३ ई. में हुई। स्वामी जी वर्षों तक इस सभा के सदस्य रहे। आप जिसे एक बार पढ़ लेते आजीवन उसी शब्दानुसार ज्यों का त्यों उद्धृत करने की क्षमता रखते थे। आपने भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा को भी सक्रिय योग दिया। १९५० ई. मे इसके कार्यकर्ता प्रधान बने व मृत्यु पर्यन्त ३ अप्रैल १९५५ तक इस पद पर रहे। इसी मध्य सहस्त्रो बिछुड़े भाइयों को शुद्ध किया व इसी निमित्त १९५४ मे रांची (बिहार) मे श्रद्धानन्द उपदेशक विद्यालय स्थापित किया। १९५३ में गोरक्षा व शुद्धि आन्दोलन का सर्वाधिकारी आपको बनाया गया। १९५४ में गुरदासपुर जिला आर्य मण्डल के संरक्षक बने। आपकी आर्य वीर दल संगठन में विशेष रुचि थी। पंजाब आर्य वीर दल ने अपना नेतृत्व आपको सौंप दिया। परन्तु १९४७ के पश्चात् इस क्षेत्र मे आपने ध्यान देना कम कर दिया। दयानन्द सरस्वती ने अनाथालय खोल कर अनाथो को पूर्ण संरक्षण दिया। लाहौर के रावी मार्ग पर भी एक अनाथालय था, आपको इसका प्रधान चुना गया। आपने अनाथों को अपना पुत्र बनाया तथा उन रहन सहन को आम व्यक्तियो के समान बनाया। अब यह बच्चे आत्म सम्मान के साथ रहने लगे।

१९५४ मे जब माधवाचार्य ने आर्या को शास्त्रार्थ का निमन्त्रण दिया तो रोहतक मे आर्य सम्मेलन किया। यहां से शास्त्रार्थ स्वीकार कर ललकार लगाई परन्तु फिर भी माधवाचार्य सामने न आया। इस सम्मेलन की अध्यक्षता स्वामी जी महाराज ने की।

आपने सैकड़ो लेखों के अतिरिक्त आर्य सिद्धांत व सिक्ख गुरु, वेद की इयत्ता, आर्य समाज के महाधन, विदेशयात्रा, महर्षि जीवन चरित्र, सत्यार्थ-प्रकाश का पंजाबी अनुवाद, आर्योपदेशक रत्नमाला व गोकरुणानिधि आदि लघु पुस्तकों का अनुवाद, चिनगारियां, वैदिक स्वर्ग, वैदिक स्त्रोत, स्थूलाक्षरी सत्यार्थ प्रकाश तथा अनेक डायरियों द्वारा विपुल साहित्य दिया। परन्तु आपका अधिकांश साहित्य आज भी अ[illegible] पड़ा है।

अन्तिम समय में गो-रक्षा आन्दोलन का संचालन करते हुए ऐसे अस्वस्थ हुए कि फिर ठीक न हुए। आप्रेशन होने पर पता चला कि कैंसर था, फिर भी साहस न छोड़ा, मृत्यु का आभास हो गया था।

३-४-५५ को आप्रेशन के समय आपने कहा 'मैं यह अनुभव कर रहा हूं कि शरीर की गर्मी घट रही है, इन्द्रियों मे थोड़ी-सी शक्ति है। न जाने डाक्टरो की औषधियां इस गर्मी को और कितनी देर रख सकेगी इसलिए इस शरीर का अन्त्येष्टि संस्कार यहीं कर देना···भस्म को मठ की पुष्प वाटिका में खाद के स्थान पर डाल देना।' इसके पश्चात [illegible] शरीर छोड़ दिया।

सय्यद मुजफ्फर अलीशाह ने इन शब्दो में श्रद्धांजलि दी 'आप आधुनिक युग में भारत की महानतम विभूतियो में से एक हैं। आपके उच्च चरित्र के कारण सब लोग जाति व साम्प्रदाय भेद के बिना आपके प्रशंसक व मानने वाले हैं।'

(समाप्त)

युवा वर्ग अपना शक्ति पहचाने

(पृष्ठ ५ का शेष)

आज चाहे समाज की हो, राष्ट्र की हो या विश्व की हो सभी समस्याओं का समाधान युवा वर्ग के हाथों ही होने वाला है। राष्ट्र का हित चाहने वाले प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है कि वह युवा वर्ग को राष्ट्र के नवनिर्माण की प्रेरणा दे और उनका मन वचन और कर्म से साथ दे। युवा वर्ग को यह मानकर चलना है कि इस धरती पर यदि स्वर्ग का निर्माण हो सकता है तो केवल मात्र उन्हीं के हाथों द्वारा हो सकता है। आज समाज, राष्ट्र और समूचा विश्व जिस बिखराव और टूटने की कगार पर पहुंच चुका है वहां से युवा सशक्त हाथ ही इसे वापस ला सकते है। युवा वर्ग ही है जो विस्फोटक और विनाशकारी हवाओ मे पुन: सरसता घोल सकता है। इसके लिए युवाओं को पहले स्वयं अपने आपको सार्वभौम वैदिक नियमों पर चलाना होगा जो देश काल और राष्ट्र की सीमाओं से ऊपर उठकर समूची मानवता का हित चाहने वाले हैं। जीओ और जीने दो की भावना हृदय में लेकर तथा चरैवेति चरैवेति का सकल्प लेकर युवाओं को महाबली वीरवर हनुमच्चरितान रह अपनी अपार शक्ति को पहचानने की आवश्यकता है। ●

सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत स्थिर निधियां (७)

महात्मा आय भिक्ष की दो लाख की वसीयत
१८ जून ८८ की अन्तरग बठक ने इसकी स्वीकृति दी

महात्मा आय भिक्षु आव वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर ने दो लाख रुपये की एक वसीयत सावदेशिक सभा के नाम की है। यह म री राशि उन्होने राष्ट्रीय बचत पत्रो के रूप मे अपने पास रखी हुई है। इसका स्वामित्व सावदेशिक सभा को देते हुए उनका कहना है कि इसका ब्याज वह और उनकी पत्नी अपने जीवन काल तक अपनी इच्छानुसार व्यय करते रहेगे किन्तु मूलधन से उनका कोई सम्ब ध नही रहेगा। उनके पश्चात सभा ब्र० अखिलानन्द स्मारक आर्य भिक्ष स्थिर निधि के अन्तगत इसका सचालन करेगी।

श्री ललित पुष्कर स्थिर निधि
३१ ८ ८८ की अन्तर ग ने स्वीकृति दी

यह निधि श्री पुष्करदेव जी वानप्रस्थ वेद सदन ७ चित्र गुप्ता माग आज पुर १ ३ हजार रुपये से स्थापित की है

श्री भगवत सरन रस्तोगी स्थिर निधि
५ २ ८९ की अन्तर ग द्वारा स्वीकृत

श्री भगवती सरन रस्तोगी अखिल फामस्यटीकल्स तानसेन रोड बदायू द्वारा पाच हजार रुपए से यह निधि स्थापित की गई है। अब इसे बढाकर १० ०००) कर दिया गया। इसका ब्याज प्राकृतिक विपत्तियो भूकम्प सूखा बाढ आदि से पीडित जनता की सेवा सहायता मे सभा द्वारा व्यय किया जाएगा।

इस वर्ष २२५०) गढवाल भूकम्प सहायता कर के लिए व्यय किए गए।

श्री ब्रह्मप्रकाश शास्त्री एव श्रीमती सरलादेवी शर्मा शुद्धि स्थिर निधि
५ २ ८९ की अन्तर ग द्वारा स्वीकृत

यह निधि श्री ब्रह्मप्रकाश शास्त्री विद्यावाचस्पति शास्त्री सदन ११ १२४ पश्चिम आजाद नगर दिल्ली ५१ द्वारा १० हजार रुपए से स्थापित की गई है। इस निधि का ब्याज सभा शुद्धि आदि कार्यों मे व्यय करेगी।

श्री प्रहलाद रामसरन स्थिर निधि
५ २ ८९ की अन्तर ग द्वारा स्वीकृत

यह निधि मारीशस निवासी श्री प्रहलाद रामसरन दयानन्द माग बोस मारीशस द्वारा एक हजार रुपए से स्थापित की गई है। १० वष तक निधि का ब्याज स्थिर निधि मे जमा होता रहेगा उसके पश्चात ब्याज के तीन चौथाई भाग से महर्षि दयानन्द का जीवन चरित छाप कर वितरित किया जाएगा। एक चौथाई जमा रहेगा। आवश्यकता पडने पर मारीशस के किसी विद्यार्थी की सहायता पर सस्थापक की अनुमति से व्यय किया जा सकेगा।

श्रीमती कलावती बहन जयन्ती लाल राजदव स्थिर निधि
५ २ १९८९ की अन्तर ग मे स्वीकृत

यह निधि श्री जयन्ती भाई राजदेव ४ गुजरात सोसाइटी वेद मन्दिर काकरिया रोड अहमदाबाद द्वारा १० हज र रुपए से स्थापित की गई है। इस निधि का ब्याज गुरुकुल आमसेना द्वारा चलाए जा रहे शुद्धि कार्यों पर व्यय किया जाएगा।

श्रीमती सत्यवती गुप्ता स्थिर निधि
५ २ ८९ की अन्तर ग द्वारा स्वीकृत

यह निधि श्रीमती सत्यवती गुप्ता ३ दयानन्द नगर गाजियाबाद द्वारा दस हजार रुपए से स्थापित की गई है। इस निधि का ब्याज सम्पूर्णदयाल दयानन्द वैदिक सन्यास आश्रम के कोष मे जमा होगा और उस राशि से सुयोग्य एव अनुसूचित जाति की बालिकाओ को छात्रवृत्ति दी जाएगी।

स्व० महात्मा जनादन भिक्षु स्मृति निधि
५ २ ८९ की अन्तरग बैठक ने स्वीकृति दी

महात्मा जनादन भिक्षु की स्मृति मे उनके पुत्र विचित्र देव शर्मा, उनकी पत्नी श्रीमती सुदर्शन चि० ऋ ष द्वितीय पुत्र श्री अमरनाथ व उनकी पत्नी श्रीमती स्नेहलता तथा चि० विभु द्वारा ११ हजार रुपए की स्थिर निधि सभा में स्थापित की गई है। इस निधि का ब्याज दयानन्द सन्यास आश्रम गाजियाबाद को दिया जाएगा।

श्रीमती सत्यवती एव फकीरचन्द अहलवालिया वेद प्रचार स्थिर निधि
२३ ७ १९८९ की अन्तर ग द्वारा स्वीकृत

पाच हजार रुपए की इस निधि का ब्याज सभा वेद प्रचार काय मे व्यय करेगी।

लाला पूणमासी प्रसाद आय भिक्ष स्थिर निधि
२३ ७ ८९ की अन्तर ग द्वारा स्वीकृत

५ हजार रुपए से महात्मा आय भिक्ष ज्वालापुर द्वारा स्थापित की गई। इस निधि का ब्याज अतिथियो तथा साधुओ पर व्यय किया जाएगा।

महाजन फाउण्डशन वेद प्रचार निधि
१४ १० ८९ की अन्तर ग द्वारा स्वीकृत

१५ हजार रुपए की यह निधि श्री जे० मित्रा ट्रस्टी महाजन फाउण्डशन १४१२ चिरजीव टावर ४३ नेहरू प्लेस नई दिल्ली १९ द्वारा स्थापित की गई। इस निधि का ब्याज वेद प्रचार अथवा वदिक साहित्य के प्रकाशन मे व्यय होगा।

श्री चमनलाल शर्मा नानकचन्द मथरा स्थिर निधि
१४ १० ८९ की अन्तर ग बठक मे स्वीकृत

१२ हजार रुपए के निधि कर्ता श्री चमनलाल शर्मा इन्होने छ हजार रु० के इन्दिरा विकास पत्र सभा को भेजे हैं पाच साल बाद यह राशि १२ हजार होने पर इसका ब्याज स वदेशिक सभा सहित पाच सस्थाओ मे बाटा जाएगा। श्री चमनलाल जी ने १९९० मे पुन ६ हजार के इदिरा विकास पत्र और १ हजार नकद जमा करके इस निधि को २५ हजार कर दिया है।

स्वास्थ्य चर्चा—

उच्च रक्त चाप, कारण एवं निवारण

डा० प्रणय शर्मा

अति रक्तचाप की उग्रतानुसार दो संज्ञा दी जाती हैं। पहला सुदम अति रक्तचाप दूसरा दुर्दम अति रक्तचाप। सुदम अति रक्तचाप मे बीमारी धीरे-धीरे होती है और अधिक नही बढती। सामान्यत एक ऊंचाई पर जाकर रुक जाती है। जैसे प्रकुञ्चन दाब, इसे सिसटोलिक चाप (Syrtolic Pressure) भी कहते है। एक सौ अस्सी १८० तक ही बढा और ११० तक अनुशिथिलन दाब (Diastolic Pressure) स्थिर रहता है और उसी के बीच रन करता है। दुदम रक्तचाप तेजी से बढने वाले अति रक्तचाप को कहते है। यह प्रकट होने से कुछ ही समय बाद २५० प्रकुञ्चन दाब(Diastolic Pressure) और १६० अनुशिथिलन दाब (Diastolic Prersure) तक चढ जाये तो कभी-कभी धमनी, वृक्क तथा मस्तिष्क की धमनियो को अपनी दुर्घटनाओ का लक्ष्य बनाता है। धमनियो का सकीर्णन क्रिया के द्वारा परिसरीय अवरोध होकर अतिरिक्त दाब का दौरा प्रारम्भ हो जाता है। इसी सकीर्णता वश नसे तन जाती हैं और रक्त के धक्के तेज होकर दिल और दिमाग को उत्तेजित कर देते हैं। मनोवैज्ञानिको का मत है कि मानसिक आवेग की अस्वाभाविकता बराबर बने रहने से रक्तचाप बढना प्रारम्भ हो जाता है। शहरी इलाके मे निवास करने वालो मे अनेको ऐसे व्यक्ति होते हैं जिनको मानसिक तनाव रहता है। शहरो मे रक्तचाप के रोगी अधिक होते हैं। क्योकि बाहरी और आन्तरिक बेचैनी से सुषुम्ना गुहा की अनुशायी तन्त्रिकाओ की सवेदना मस्तिष्क धमनियो को आक्रातकर उसके सक्रमणोसे रक्तचाप की वृद्धि स्वाभाविक हो जातीहै। वृद्ध रोगियोकी शिरायें काफी सख्या मे बन्द हो जाती हैं जिससे स्थानिक अरक्तता उत्पन्न होने के कारण वृद्धावस्था मे रक्तचाप बढ जाता है। अति रक्तचाप चाहे तन्त्रिकाजन्य हो, वृक्क विकार जन्य हो या हारमोन के असतुलन से उत्पन्न हो उससे पीडित सभी रोगियो मे लक्षण एक समान होते हैं। स्वाभाविक रूप मे भी वृद्धावस्था मे दोनो ही प्रकार का रक्तदाब बढ जाता है। अधिकतर ३० की आयु के बाद ही रक्त दाब की शुरूआत देखी जाती है। इस रोग के प्रमुख लक्षण सिर म दर्द नीद न आना, घबराहट चक्कर वमन आदि होते हैं। उग्र रक्तचाप रक्त वाहिनियो मे परिवर्तन होने से होता है जैसे क्रोध, होठ सूखना सिर मे चक्कर खा कर लेट जाना है। ऐसे रोगियो मे अस्पष्ट भय और चिन्ता का बोध होता है। रक्त वाहिनी मे अधिक दबाव होने के कारण दौरे आ जाना प्रारम्भ हो जाते है। इस प्रकार के अति रक्तचाप से मस्तिष्क की धमनिया बहुत जोर से सकुचित हो जाती है। ऐसे लक्षण वाले रोगी को मस्तिष्क विकृति से उत्पन्न अति रक्तचाप कहते है। धमनियो मे रक्त प्रवाह अधिक बढ जाने से शरीर के किसी भी अवयव की धमनिया फट सकती है और रक्तस्राव हो सकता है। रक्तचाप की अधिकता से हृदय मे शूल होने लगता है। कौरोनरी आर्टरी के सकीर्ण होने से दर्द होने लगता है। अति रक्तचाप मे हृदय का भार उच्च रक्तचाप के कारण बढ जाता है। हृदय का साधारण वजन २५० ग्राम से लेकर ३०० ग्राम तक होता है। किन्तु रक्तचाप की अधिकता से हृदय का भार क्रमश बढता जाना है। अनुमानत जब रक्त चाप २०० एम एम जी होता है तो सामान्य हृदय का वजन ५०० से ६०० ग्राम तक हो जाता है। इस प्रकार की अवस्था मे रोगी का दम घुटने-सा लगता है। सास लेने मे कठिनता होती है। इस रोग मे यकृत शोथ भी हो जाता है। यह रोग हृदय गति को रोककर किसी भी समय रोगी का अन्त कर सकता है।

चिकित्सा एव दिनचर्या

रोगी यदि ठीक ठाक हो तो उसे २ किलोमीटर सूर्योदय से पूर्व ताजी हवा मे प्रात टहलना चाहिए। टहलने की दूरी मरीज को क्षमतानुसार होनी चाहिए टहलते समय रोगी को यह ध्यान रखना चाहिए कि गति अधिक तेज न हो अन्यथा हृदय की धडकन बढ जाती है जिससे लाभ की जगह नुकसान की सम्भावना अधिक हो सकती है। प्राणायाम करना, ठडे पानी से स्नान करना, साप्ताहिक उपवास, सूर्य नमस्कार करना श्रेयस्कर होगा। सरसो या वृ० विष्णु तेल से शारीरिक नसो को दुहने वाली मालिश करवाना रात्रि मे पूर्ण विश्राम दिन मे तनाव रहित मनोरजक कार्य लाभकारक होते है। कच्ची सब्जी, सेव, नाशपाती छुहारे और खजूर का सेवन ठीक रहता है। नीबू का पानी, नीबू का अचार भी खाया जा सकता है बशर्ते उसमे नमक न हो हरी सब्जिया बिना तले बिना मसाला की खानी चाहिए। लहसुन, अदरक एव नीबू के मिश्रण से बनी चटनी खाने से पाचन क्रिया और मूत्र प्रणाली की विकृति कभी नही होगी। एक जावे का लहसुन दूध के साथ रोज ले। मूग की खिचडी, पुराने चावल का भात और गेहू की रोटी का सादा भोजन बिना घी और बिना डालडे का हितकर होगा। थोडा-थोडा भोजन लेनाचाहिए। एक ही बार मे अधिक लेना कब्ज उत्पन्न कर देता है। जिससे हृदय पर दबाव पडता है। भोजन मे हल्की हीग कच्ची प्याज, गाजर खीरा, टमाटर, मूली का सलाद बिना नमक या कम नमक का अच्छा रहता है। रक्तदाब कम रखने के लिए शरीरगत सोडियम की मात्रा कम करने के लिए नमक पूर्णतया छोड देना चाहिए।

गार्डेनल, डाईटाईड मिथालइडोपा, सिपलार, आदि एलोपैथ दवा इसका कारगर उपचार मानी जाती है। नागभस्म, सर्पगन्धावटी, सरपीना विकामिन, सनेरा, अबाना मोती पिष्टी, जवाहर मोहरा याकूती आदि सर्वोत्तम उपचार माना जाता है। अति रक्तचाप की बीमारी मे सर्पगन्धा सर्वोपरि औषध मानी गयी है।

विद्याभास्कर शास्त्रार्थ महारथी—

आचार्य पं० रुद्रदत्त जी शास्त्री दिवंगत

आर्यसमाज तथा महर्षि दयानन्द का प्रभाव जनजीवन मे व्यापक रूप से पड़ा। उसी के अनुसार पर्वतीय क्षेत्र गढ़वाल उत्तराचल पर भी शिक्षा का प्रभाव फैला और आज से एक सौ वर्ष पूर्व प० रुद्रदत्त जी शास्त्री के पिताजी ने शास्त्री जी की प्रारम्भिक शिक्षा अपने ग्राम मे कराकर अल्पायु में ही गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार मे प्रवेश कराया। यह वह समय था जब—

वीतराग तार्किक शिरोमणि स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज का वैभव आर्य जगत मे फैला हुआ था। श्री रुद्रदत्त जी शास्त्री गढवाल के नौटियाल ब्राह्मण कुल मे उत्पन्न हुए थे। पर्वतीय अचल मे आर्य शब्द का प्रयोग हरिजन नाम की जाति अछूतों मे होता था। उस समय ब्राह्मण कुलोत्पन्न आपके परिवार में बड़े साहस का परिचय दिया और रुद्रदत्त को गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर मे पढ़ने के लिए भेजा।

श्री रुद्रदत्त जी ने आचार्य शुद्धबोध तीर्थ का सान्निध्य पाया उस समय आचार्यों मे आचार्य श्री शुद्धबोध तीर्थ व्याकरण महाभाष्य के उच्चकोटि के उद्भट् विद्वान थे।

[illegible] की तर्क शैली पर जो भी विद्वान् गुरुकुल से बाहर आवे उन्होने ऋषि मिशन के प्रचार में चार चाद लगा दिए।

रुद्रदत्त जी ने १२ वर्ष महाविद्यालय की कुलभूमि मे रहकर त्याग तपस्या का जीवन बिताकर गुरुकुल की विद्याभास्कर उपाधि प्राप्त की। साथ ही वाराणसेय सस्कृत विश्वविद्यालय से शास्त्री परीक्षा उत्तीण की। स्नातक होने के पश्चात आप घर न जाकर पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा मे महोपदेशक नियुक्त होकर प्रचार कार्य करते रहे।

वहा से छोडकर कुछ वर्ष स्वतन्त्र रूप से प्रचार मे लगे रहे। उसके बाद आपने उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ के माध्यम से महोपदेशक बनकर कार्य किया। आपके व्याख्यानो मे जो ओज और तडप थी इसका जनता पर अच्छा असर पडता था।

वाल्मीकीय रामायण महाभारत की कथा बड रोचक ढग से करते थे। वेदो पर आध्यात्मिक प्रवचन एव सैद्धातिक दार्शनिक विचारो का विश्लेषण मनोहारी होता था। वैसे शास्त्रार्थ शैली मे आपने बहुत से शास्त्रार्थ भी किये थे किन्तु वृक्षो मे जीव विषय पर महाविद्यालय ज्वालापुर के उत्सव पर पक्ष मे आपने अपना दृष्टिकोण प० ओमप्रकाश शास्त्री विद्याभास्कर शास्त्रार्थ महारथी खतौली से हुआ था इससे पुरातन युग स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती और प० गणपति शर्मा का दृश्य स्मरण हो आया था।

आप गढ प्रदेश के घर को छोडकर देहरादून लक्ष्मण चौक पर मकान किराये पर लेकर रहते थे। आपकी धर्म परायण धर्म पत्नी जो आज वृद्धावस्था म जीवन बिता रही है विद्यालय म पठन कराकर जीवन मे सहयोगी बनकर साथ निभाया। आज शास्त्री जी उन्हे ही [illegible] छोडकर नही गए। हम सभी आर्य जगत के परिवार को भी छोडकर स्वर्ग धाम को सिधार गये। अन्त समय में कुछ वर्ष सार्वदेशिक सभा की ओर से आर्थिक सहयोग भी दिया [illegible] मात्र का ही कहना चाहिए। उनकी धर्म पत्नी स्कूल विमुक्त होकर देहरादून मे वृद्धावस्था से पूरित जीवन मे समय यापन कर रही है। आज शास्त्री जी का अभाव आर्य जगत को खलगा। व्याख्याता तो मिल जायेंगे पर शास्त्रार्थ महारथी नही मिलेंगे। कुछ चले गये कुछ जाने की तैयारी में हैं। आज हम शास्त्री जी की सेवाओ के प्रति श्रद्धावनत हैं—

उनकी आत्मा को सदगति मिले और पारिवारिकजनो को वियोग को सहन करने की शक्ति मिले।

आर्य समाज न्यू मिरजालगुडा मे शुद्धि संस्कार

दिनांक १०-१-९३ (शनिवार) को अजीम अहमद को आचार्य अरविन्द 'मनाचारी' के पौरोहित्य में शुद्धि सस्कार सम्पन्न हुआ। शुद्धि सस्कार के पश्चात अजीम अहमद का नाम आदर्श रखा गया। तत्पश्चात इनका दिनांक १-२-९३ को एम उमा से पणिग्रहण सम्पन्न हुआ, तदनन्तर आर्य समाज के सभी सदस्यों ने पुष्प एव अक्षत से वर-वधु को शुभाशीर्वाद दिया।

राजेन्द्र मंत्री

सावधान

आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री डा० शिवकुमार शास्त्री की हरे रंग की कपडे की एक फाइल १९-२-९३ को ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर कोटला फिरोजशाह मैदान मे किसी ने मञ्च से उठा ली है। उसमे आवश्यक कागजो के अतिरिक्त दो आर्य केन्द्रीय सभा की रसीदें जिनका रसीद बुक न० १०७ है भी हैं। जिस किसी सज्जन को मिले उसे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली के कार्यालय मे भिजवा दें। दानी महानुभावो से प्रार्थना है कि रसीद बुक न० १०७ पर किसी को दान राशि न दे। ऐसे व्यक्ति की सूचना हमे तुरन्त और अवश्य द।

पं० सुरेशचन्द्र वेदालंकार भी इस दुनिया से विदा

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार मे अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के चरणो मे बैठकर १४ वर्ष निरन्तर ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए शिक्षा प्राप्त की और वेदालकार की उपाधि से अलकृत होकर धराधाम पर उतरे।

यह वह क्रान्तिकारी युग था जिसमे अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी का देशव्यापी प्रभाव था चाहे राजनैतिक दृष्टि से काग्रेस हो या आर्य समाज का शुद्धि आन्दोलन।

महर्षि दयानन्द के शिक्षा क्षेत्र गुरुकुल कागडी की स्थापना श्रद्धानन्द ने अपने दो पुत्रो इन्द्र व हरिश्चन्द्र से प्रारम्भ की।

गुरुकुल ने जन आन्दोलन का काम किया और न जाने कितने सहाय और असहाय परिवारो ने अपने बच्चो को गुरुकुलो मे अध्ययनार्थ अर्पित कर दिया।

प० सुरेशचन्द्र वेदालकार भी एक ऐसे ही साधारण परिवार मे पैदा होकर गुरुकुल कागडी मे प्रवेश लेकर १४ वर्ष तक विद्याध्ययन कर पूर्ण स्नातक बने तथा वेदालकार की उपाधि प्राप्त की। इन गुरुकुलो की उपाधियो का कोई आर्थिक दृष्टि से लाभ न था किन्तु देश विदेश मे इन उपाधियो की जो मान्यता थी वह सर्वोच्च थी। माता पिता सभी को यह ज्ञान था कि इन कागजी प्रमाण पत्रो से कोई लाभ नही है परन्तु वाह री ! गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली वाह री आदर्श पद्धति तेरे ऊपर समाज ने कुर्बानी दी और अपने मासूम बच्चो को इन गुरुकुलो मे अर्पित किया।

सुरेशचन्द्र वेदालकार बनकर एम० ए० किया और आर्थिक दशा सुधारने हेतु गोरखपुर मे ही अध्यापन कार्य प्रारम्भ किया। अध्यापन कार्य के साथ—

आर्य समाज के मच पर समय निकालकर भाषणो से से [illegible] करना अपना उद्देश्य बनाया। इसी के साथ सिद्धान्त परक लेखमाला देकर प्रकाशन भी दिया।

सरल भाषण, भाषा सुगम साहित्य चर्चा—आर्य जनता को सुखकारी मनोहारि लगती थी। कालिज से विमुक्ति पाकर अब पूर्ण समय आर्य समाज की सेवा मे ही लगा रहे थे।

सादा जीवन, मधुर भाषी, मिलनसार व्यक्तित्व वाले मान्यवर सुरेशचन्द्र जी हम सभी को दुखिया बनाकर छोड गए हैं। इन्ही जैसा व्यक्तित्व श्री क्षितीश जी वेदालकार का असमय मे हम सबको वियोग करके जाना कितना खला था। आज प० सुरेशचन्द्र जी अकस्मात हमे छोडकर चले गये।

काल पर जय तो किसी ने नहीं प्राप्त की परन्तु काल की गति को पहचान कर एक अपनी रेखा ऐसी खीच गये जिसके आगे बढ़ना प्रत्येक के लिए दुर्लभ है। आप गये पर याद रहे हम भी आपके पीछे २ आ रहे हैं।

समय की चाल विचित्र है। ससार आपको स्मरण करेगा। आपके बनाए मित्र और उसके चरित्र को—आपको प्रभु सद्गति दे और हम सभी को आपके वियोग मे दुःख का भागीदार बनाए।

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्यसमाज का वर्तमान मे महत्व

(पृष्ठ ४ का शेष)

कुन्द हो गई नही ऐसा कुछ नही है। यदि ससार मे असत्य है तो सत्य उससे संघर्ष करेगा ही। यदि अन्धरे का साम्राज्य है तो देव दिवाकर को उसे छिन्न भिन्न करना ही पडेगा। रही दूसरी बात खण्डन मण्डन न करने की और जातीय सगठन की। जहा तक हिन्दुत्व की रक्षा का प्रश्न है उसमे आर्यसमाज कभी पीछे नही रहा है बल्कि अग्रणी रहा है। सगठन शक्ति का परिचय हमने अपने सनातनी या वैष्णव भाईयो के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर उस समय मे दिया है जब कि उन पर कोई बाहरी या विधर्मियो से सकट आया हो चाहे वह हैदराबाद हो या दिल्ली या पजाब अथवा अयोध्या हमन दूसरो की धधकती आग मे भी कूदकर दिखाया है बल्कि दूसरे भाई इस मामले मे अपनी सकीर्णता का परिचय हमसे घृणा करके देत हैं और हमे अकेला छोड देते है लेकिन घबराते तो वे है जो किसी के सहारे पर जीते हैं आर्य समाज ने तो सतत सघर्ष करना सीखा है उसकी तो यह मान्यता रही है कि—

बहादुर लोग कब किसी का आसरा अहसान लेते हैं।
उसी को कर गुजरते हैं जो मन मे ठान लेते है॥

तो हमे तो किसी से कोई गिल्ला नही कि हमारा उन्होने साथ नहीं दिया लेकिन हमने दूसरे भाईयो को कभी भी यह गिल्ला करने को मौका नहीं दिया। यह ठीक है कि हमारे आपसी सैद्धान्तिक मतभेद है—वे अपनी जगह हैं वे रहेगे। लेकिन औरो के लिए हम सब एक है—यही कहेंगे। और हमने तो कहा ही नही बल्कि करके दिखाया भी है। रही बात खण्डन मण्डन की वह तो हमारा जन्मसिद्ध अधिकार और कर्तव्य है। जब तक ढोग और पाखण्ड है आडम्बर और दिखाव और छलावा धर्म के रूप मे रहेगा। आर्य समाज चुप नही रहेगा। वह इससे लडता ही रहेगा।

हम ऐसे किसी भी सिद्धान्त विहीन सगठन के लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं है। जहा पर हमे समझौता करके अपने वेद प्रति पादित सत्य सनातन सिद्धान्तो की बलि चढानी पडे। हमसे बडा कोई भी हिन्दू हिमायती या रक्षक विश्व मे नही है। इस बात का साक्षी हमारा विगत काल का इतिहास है। आज हवा मे मुक्का घुमाकर चाहे जो तीस मार खा बन ले।

इसलिए रूढिग्रस्त अन्धविश्वासो से जकडे भेदभाव की दीवारो मे बन्धे भारतीय समाज को आज भी आर्य समाज और वेद के दिव्य आलोक की आवश्यकता है और आर्यसमाज केवल अपनी उन्नति को ही उन्नति नहीं मानता वह तो सभी की उन्नति चाहता है। फिर जिस सगठन का ध्येय वाक्य ही 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' हो वह कैसे मौन रहकर दानवता और अन्याय अधम का यह क्रूर अट्टाहस देख सकता है निर्झर की धारा मैदान मे आकर मद्धिम तो पड सकती है लेकिन रुक नहीं सकती। आर्यसमाज का यह आलोक दीप जलता ही रहेगा। इस आवाज के साथ कि—

उजाले की एक किरण अन्धेरे पर भारी होगी।
रात उनकी ही सही सुबह हमारी होगी॥

२ मुसलमान एव एक ईसाई युवती वैदिक धर्म में

स्थाई आदर्श विवाह एव शुद्धि मन्दिर भागीरथपुरा इन्दौर मे कु० अनिता इब्राहिम खान पठान का शुद्धि सस्कार करा कर हिन्दू नाम अनिता आर्य रखा गया है फिर उसका विवाह सस्कार हिन्दू युवक विजयसिंह जी के साथ कराया गया।

(२) कुमारी अजलीना विक्टर का शुद्धिकरण कर उसका हिन्दू नाम अंजली देवी आर्य रखा गया है उसका विवाह सस्कार हिन्दू युवक राजेन्द्रकुमार "बरडा के साथ कराया गया है।

(३) कु० फरीदा खान अब्दुलगनी खान का शुद्धिकरण कर हिन्दू नाम सजना देवी आर्य रखा गया उसका विवाह सस्कार वैदिक रीति के अनुसार हिन्दू युवक संजय ठाकुर के साथ सम्पन्न कराया गया है। शुद्धि सस्कार एवं विवाह संस्कार आर्य पुरोहित प० वेदप्रकाश शर्मा द्वारा सम्पन्न कराया गया। इसकी सारी व्यवस्था शकरसिंह द्वारा करायी गयी।

आदर्श विवाह एव शुद्धि मन्दिर
५२५, भागीरथपुरा इन्दौर म.प्र.

जीवन भर की कमाई— शहीद परिवार फण्ड में

शहीद परिवार फण्ड मे जिस अनुपम और अभूतपूर्व ढग से कुछ महानुभाव प्रेरणादायी ढग से योगदान देते रहते हैं वह निश्चित ही उल्लेखनीय भी होता है और अनुकरणीय भी होता है। वैसे हर देने वाले का सहयोग हमारी दृष्टि मे उतना ही महत्वपूर्ण और मूल्यवान है परन्तु जब कुछ लोग अपनी क्षमता से अधिक बढ़-चढकर और पूर्णत किसी यश या उल्लेख की इच्छा के बगैर योग दान देते हैं तो बरबस ही सिर झुक जाता है।

१८ जनवरी को श्री अनिल कुमार मलिक नाम के एक सज्जन हमारे कार्यालय मे आए और अपने चाचा श्री धर्मवीर मलिक की वसीयत के कागजात देते हुए बोले—मैं २८४२, माडल टाऊन, यमुनानगर का रहने वाला हू और मेरे चाचा श्री धर्मवीर मलिक ने, जिनका स्वर्गवास १९-१०-९२ को हो गया है अपनी वसीयत मे शहीद परिवार फड के लिए निम्नलिखित चीजें दी हैं —

(१) ८५०० रुपये ९० पैसे का ड्राफ्ट।

(२) अकरपर इडस्ट्रीज लिमिटेड, नई दिल्ली की ४ फिक्स्ड डिपाजिट रसीदें जो ५०,००० रुपए की है।

(३) १५००-१५०० शेयरो वाले दो शेयर सर्टीफिकेट। इनमे हर शेयर १० रुपये का है और कुल ३००० शेयरो की कीमत ३०,००० रुपये है।

(४) १५००० रुपए के मूल्य के १५०० शेयरो वाले यू०टी०आई० सर्टीफिकेट्स के मालिकाना अधिकारो के परिवर्तन का आवेदन पत्र।

(५) ४५०० रु० मूल्य के यू टी आई के २४ चैक। इनमें से हर चैक १८७ रुपए ५० पैसे का है।

(६) ५४३७ रु० ५० पैसे मूल्य के यू टी आई के ३० चैक। इनमे से हर चैक १८१ रु० २५ पैसे का है।

उपरोक्त कागजात के साथ साथ श्री अनिलकुमार मलिक ने श्री धर्मवीर मलिक की वसीयत की फोटो स्टेट कापी भी हमे दी।

श्री अनिल कुमार मलिक ने, जो न्यू बैंक आफ इडिया, जगाधरी में काम करते हैं, हमे यह भी बताया कि ८५०० रु० की जो राशि मेरे सेविंग्स खाते मे थी, वह भी मैं उनकी इच्छा का सम्मान करते हुए शहीद परिवार फड मे दे रहा हू। —(विजय)

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह संपन्न

आर्य समाज के महान नेता, गुरुकुल कागडी के संस्थापक अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस २५ दिसम्बर ९२ को देश की विभिन्न आर्य समाजो मे समारोह के साथ मनाया गया। विभिन्न स्थानो से इस प्रकार के समाचार बहुत बडी सख्या मे प्राप्त हुए हैं अत उनके कुछ नाम नीचे प्रकाशित किए जा रहे हैं—

आर्य समाज राजा मण्डी आगरा आर्य समाज सुल्तानपुर पट्टी नैनीताल, आर्य समाज शान्ति नगर सोनीपत आर्य समाज मण्डी बास मुरादाबाद, दयानन्द मठ चम्बरा आर्य समाज सै० २२ ए चण्डीगढ आर्य उप प्रतिनिधि सभा देहरादून, आर्य उप प्रतिनिधि सभा वाराणसी, आर्य समाज बागरमऊ उन्नाव आर्य समाज सान्ताक्रूज बम्बई, आर्य समाज हल्द्वानी माडर्न आर्यन्स सैन्ट्रल स्कूल कन्कड़बाग पटना।

जियालाल बी. एड. कालेज का सर्वोत्तम परीक्षा परिणाम

जियालाल बी एड कालेज अजमेर के १२० छात्र छात्राओ का दयानन्द विश्वविद्यालय द्वारा रोका हुआ परिणाम दिनाक २२ जनवरी, ९३ को घोषित कर दिया गया है उससे यह स्पष्ट होता है कि विश्वविद्यालय से सम्बन्धित अन्य बी एड कालेजो की तुलना मे जियालाल सस्थान का परीक्षा परिणाम सर्वोत्तम रहा है। जहा पास प्रतिशत, शत प्रतिशत रहा वही १२० म से ८८ परीक्षार्थी प्रेक्टिकल मे प्रथम श्रेणी मे उत्तीण हुए हैं और २० सैद्धातिक परीक्षा मे भी प्रथम श्रणी म आये हैं। कोई भी विद्यार्थी तृतीय श्रेणी मे नही आया है।

मन्त्री, आर्य समाज अजमेर

सार्वदेशिक पत्र के स्वामित्व आदि सम्बन्धी विवरण

फार्म ४ नियम ८

(प्रेस एण्ड रजिस्ट्रेशन आफ बुक ऐक्ट)

प्रकाशन का स्थान	महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली-२
प्रकाशन का समय	प्रति बृहस्पतिवार और शुक्रवार
मुद्रक का नाम	डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ३/५ आसफ अली रोड महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नई दिल्ली-२
सम्पादक	श्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	पूर्ववत
जो व्यक्ति पत्र के स्वामी हैं भागीदार या हिस्सेदार हैं सम्पूर्ण पूजी मे प्रतिशत से अधिक के हिस्सेदार है उनके नाम व पते।	सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा पत्र की स्वामिनी है।

मैं डा० सच्चिदानन्द शास्त्री इस लेख पत्र के द्वारा घोषणा करता हू कि उपर्युक्त विवरण जहा तक मेरा ज्ञान एव विश्वास है सही है।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
प्रकाशक व मुद्रक

आर्य युवक सभा लुधियाना द्वारा प्रचार कार्य

आर्य युवक सभा लुधियाना समय समय पर विभिन्न प्रकार के आयोजन करके जनता मे आर्य समाज के मन्तव्यो तथा वैदिक धर्म के प्रचार का महत्वपूर्ण कार्य कर रही है। गत दिनो स्त्री आर्य समाज दाल बाजार लुधियाना के सान्निध्य मे आर्य युवक सभा लुधियाना की ओर से सुभाषचन्द्र बोस की ९६ वी जयन्ती मनायी गई। १९ दिसम्बर को प० रामप्रसाद बिस्मिल को श्रद्धाजलि अर्पित की गई तथा गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। विभिन्न समारोहो मे स्वामी सुमनायति, आचार्य वेद प्रकाश शास्त्री, श्री रणवीर जी भाटिया, श्री रोशनलाल आर्य, स० अरिदमन सिंह श्री चन्द्रशेखर तलवाड सहित अनेको गणमान्य व्यक्तियो तथा विद्वानो ने अपने विचार प्रकट किए। ८ जनवरी को एक विशाल पारिवारिक सत्सग का आयोजन किया गया जिसमे अनेको श्रद्धालुओ ने भाग लिया।

परिवार परामर्श केन्द्र, आर्य समाज अकोला

अकोला—केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड दिल्ली द्वारा प्रमाणित 'परिवार परामर्श केन्द्र आर्य समाज अकोला मे दि० १ जनवरी १९९३ से प्रारम्भ किया गया ? इस केन्द्र का उद्देश्य अत्याचार के शिकार तथा शोषित महिलाओ एव बच्चो को सेवाए प्रदान करना, पारिवारिक तथा वैवाहिक मतभेद से सम्बद्ध मामलो मे परामर्श सेवाए देना महिलाओ तथा बच्चो में उनसे सम्बन्धित कानूनो के बारे मे चेतना जागृत करना और नि शुल्क कानूनी सहायता, चिकित्सा सुविधा तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण जैसी परामर्श सुविधाए प्रदान करना है ?

वेद प्रचार

मण्डीदीप आर्य समाज में वेद प्रचार कार्यक्रम के अन्तर्गत २६ जनवरी १९९३ को कार्यक्रम रखा गया यह मण्डीदीप आर्य समाज का प्रथम कार्यक्रम था इस कार्यक्रम मे श्री यज्ञेन्द्र जी आर्य होशगाबाद, श्री हरिश्चन्द्र जी विद्यावाचस्पति एव श्री गोविन्द जी आर्य भोपाल से पधारे। विद्वान वक्ताओ द्वारा वर्तमान देशव्यापी समस्याओ के सन्दर्भ मे आर्य समाज की आवश्यकता एव उपयोगिता के विषय पर सारगर्भित उपदेश हुए जिसे मण्डीदीप की जनता ने खूब सराहा इस कार्यक्रम मे समाज प्रधान श्री प्रमोदसिंह जी राजपूत का विशेष सहयोग रहा। —रमाशकर आर्य

दिल्ली पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० एस० ११०४२/९३ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२८-२-१९९३) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (C) ९३
R N 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U (C) 93 Post in N D P S O on 25-26-2-1993

सेवा आश्रम थान्दला के रजत जयन्ती समारोह के अवसर पर आर्य वीर दल का गठन

सेवा आश्रम थान्दला के रजत जयन्ती समारोह समापनोपरान्त श्री गौरीशंकर कौशल जी की अध्यक्षता में एवं बाबूलाल जी आनन्द सञ्चालक आर्य वीर दल म०प्र० एवं ब्र० राजसिंह आर्य महामन्त्री आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश, ब्र० सुरेन्द्रसिंह आजाद प्रधान शिक्षक दिल्ली प्रदेश एवम् हरीसिंह आर्य कार्यालय मन्त्री सार्वदेशिक आर्य वीर दल की प्रेरणा से झाबुआ जिले के नौजवानों की एक बैठक १४-१-९३ को साय ५ बजे की गयी जिसमे श्री राजसिंह जी श्री हरीसिंह जी श्री बाबूलाल जी ने सभी को आर्य वीर दल का महत्व बताया तथा ब्र० सुरेन्द्र जी ने वीर रस के एक गीत से सभी का उत्साह बढाया। तथा गौरीशंकर जी कौशल पूर्व प्रधान सञ्चालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल ने सभी को आर्य वीर दल का गौरवपूर्ण इतिहास बताया इससे प्रभावित होकर यहा पर सभी नौजवानो ने संकल्प किया कि हम इस क्षेत्र मे आर्य वीर दल का कार्य पूर्ण निष्ठा के साथ करेंगे और विधर्मियो को इस क्षेत्र से भगाने का कार्य करेंगे। इसमे प्रान्तीय सञ्चालक श्री बाबूलाल जी आनन्द द्वारा निम्न नियुक्तिया की गयी।

१—श्री सुशीलकुमार शर्मा (एडवोकेट) जिला सञ्चालक (झाबुआ म.प्र.)
२—श्री द्वारिका प्रसाद शर्मा उपसञ्चालक
३—श्री विश्वास जी सौनी मन्त्री
४—श्री राजेन्द्र प्रतापसिंह कोषाध्यक्ष

—हरीसिंह आर्य
कार्यालय मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य वीर दल

आर्य लेखक परिषद की ओर से विनम्र निवेदन

आर्य लेखक परिषद की ओर से हम सभी आर्य लेखको से सादर अनु[illegible] करते हैं कि आप सब लोग परिषद की सदस्यता ग्रहण करें। सदस्यता [illegible] छपकर तैयार हो चुका है। कृपया ११) रुपये प्रवेश शुल्क देकर प्रपत्र मगवा लें और उसे भर कर सदस्यता शुल्क के साथ परिषद कार्यालय मे प्रेषित कर दें। परिषद के सदस्य लेखको से निवेदन है कि वे अपने-अपने क्षेत्र के सभी आर्य लेखको से आग्रह परिषद का सदस्य बनने की प्रेरणा करें, जिससे शीघ्र ही हम एक महत्वपूर्ण शक्ति के रूप मे उभर सकें। वर्तमान में यह कार्य अत्यन्त आवश्यक है।

—वेदप्रिय शास्त्री, मन्त्री

वीर हकीकतराय बलिदान दिवस

आर्य युवक सभा लुधियाना की ओर से आर्य समाज, महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना के सानिध्य मे श्री रोशनलाल आर्य प्रधान आर्य युवक सभा पजाब के सयोजकत्व मे वीर हकीकतराय बलिदान दिवस मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता श्री रणवीर भाटिया उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने की। श्रद्धेय स्वामी सुमना यति, आचार्य वेद प्रकाश शास्त्री तथा अन्य विद्वानो ने वीर हकीकतराय को श्रद्धाजलि अर्पित की। समारोह का आरम्भ यज्ञ के साथ किया गया। तथा श्री प्रेम गुप्ता श्री सुनील मेहरा, श्री हरकेश मित्तल ने विशेष रूपसे भाग लिया। श्री रामस्वरूप, श्री करतारा[illegible] आर्य, महाशय ज्ञानचन्द आर्य ने भजनो द्वारा श्रद्धाजलि भेट की। श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य ने सपत्नीक यजमान पद को सुशोभित किया।

—रोशनलाल आर्य

बसन्त पचमी पर्व

आज दि० २८-१-९३ को स्थानीय आर्य समाज मन्दिर एव डी. ए वी स्कूल गुवहाटी के सयुक्त तत्वावधान मे बसन्त पचमी पर्व बडी धूमधाम से मनाया गया तथा इसी के साथ स्कूल का स्थापना दिवस भी मनाया गया। इस उत्सव पर प० भवानी प्रसाद द्वारा बच्चो के माध्यम से पर्व यज्ञ कराया तथा इस विशेष यज्ञ मे स्थानीय सदस्या एव अध्यापको ने भी भाग लिया। इसके बाद एक सभा हुई इसमे विशिष्ट अतिथि डा. एस आर बरुआ पूर्व उपकुलपति असम कृषि विश्व विद्यालय जोरहट श्री आर एन. सिंह चैयरमैन डी. ए वी. पूर्वांचल ट्रस्ट डा नारायणदास अध्यक्ष असम आर्य प्रतिनिधि सभा ने भाग लिया तथा सभा की अध्यक्षता रघुवीरसिंह ने की।

वेद प्रचार

मलारना चौक जिला सवाई माधोपुर (राजस्थान) मे वेद प्रचार का कार्यक्रम भरतपुर निवासी श्रीयुत नरदेव जी शास्त्री के द्वारा दि० २९-१-९३ को रात्रि ७ बजे से ११ बजे तक भयकर सर्दी मे मधुर भजनो के द्वारा खुले प्रागण मे सम्पन्न हुआ श्री महावीर जी आर्य आदर्श विद्या मन्दिर चौकी (सभा) के अथक प्रयासो से कार्यक्रम काफी सराहनीय रहा सभी ने प्रशसा की। एक आगामी कार्यक्रम और भी अच्छा वातावरण तैयार कर पूर्ण [illegible] बनाने का आश्वासन दिया।

—दामोदर प्रसाद आर्य, मलारना चौक
जिला सवाई माधोपुर

गणतन्त्र दिवस पर आर्य वीर दल बन्देना द्वारा भव्य शोभा यात्रा

२६ जनवरी १९९३ गणतन्त्र दिवस आर्य समाज बन्देना एव आर्य वीर दल [illegible] ने बडी धूमधाम से मनाया गया। जिसमे मुख्य आकर्षण आर्य [illegible] की विशाल शोभायात्रा निकाली गयी। जिसका नेतृत्व आर्य [illegible] के प्रधान श्री राजेश जी आर्य ने किया। आर्य वीरो के [illegible] प्रदर्शन ने शोभायात्रा की शोभा मे चार चाद लगाये इस प्रकार [illegible] स समारोह हर्षो[illegible] साथ सम्पन्न हुआ।

—हरिसिंह कार्यालय मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य वीर दल

शोक समाचार

बडे दुःख के साथ सूचित किया जा रहा है कि आर्य समाज के कर्मठ सक्रिय कार्यकर्त्ता तथा महर्षि दयानन्द धर्मार्थ होम्योपैथिक औषधालय के सस्थापक श्रद्धेय श्री उत्तमचन्द जी [illegible] का ८२ वर्ष की आयु मे रविवार (७-२-९३)प्रात ४-३० बजे हृदय गति रुक जाने से आकस्मिक निधन हो गया।

सायकाल मे श्याम [illegible] श्मशान घाट पर उनका अन्तिम सस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया जिसमे नगर के प्रतिष्ठित व्यक्तियो बुद्धिजीवियो ने भाग लिया। श्रद्धाजलि [illegible] दिवगत आत्मा की शान्ति एव सद्गति हेतु ईश्वर से प्रार्थना की गई।

आर्य प्रतिनिधि सभा आसाम की ओर से शिलोग की एक ईसाई लडकी जिसका नाम बी० स्वाबिन था उसकी शुद्धि की गई और उसका नाम रीता रखा गया और अमेरिका मे पढ रहे युवक श्री पलित कुमार कटोकी के साथ उसका विवाह सस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

आर्ष गुरुकुल विद्यार्थी परिषद् ऐरवा कटरा का वार्षिक महायज्ञ समारोह

आर्ष गुरुकुल ऐरवा कटरा (इटावा) के विद्यार्थी परिषद् का प्रथम वार्षिकोत्सव ऋषिबोधोत्सव के उपलक्ष मे बडे ही हर्षोल्लास के साथ एवं बडी धूमधाम से मनाया जा रहा है। जिसमे आर्यजगत के प्रकाण्ड विद्वान् व भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

अत. समस्त आर्यजनो को सूचित किया जाता है कि इस महोत्सव मे सपरिवार एव अपने इष्टमित्रो सहित पधारकर तथा धार्मिक प्रवचनों को सुनकर अपने जीवन को सफल बनायें।

ओमदेव पुरुषार्थी मंत्री विद्यार्थी परिषद

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

महर्षि दयानन्द उवाच

- देखो जब आर्यों का राज्य था, तब यह महोपकारक गाय आदि पशु नही मारे जाते थे। तभी आर्यवर्त्त व अन्य भूगोल देशो मे बडे आनन्द मे मनुष्य आदि प्राणी वर्तते थे, क्योकि दूध घी बैल आदि पशुओ की बहुताई होने से अन्न रस पुष्कल प्राप्त होते थे।
- जिस राज्य मे दण्ड सजा का ठीक-ठीक प्रयोग नहीं होता और राज्य के अधिकारी दण्ड देने मे स्वार्थ के लिए आनाकानी करते हैं उस देश की प्रजा सुखी कभी नही रह सकती। वहा चोर डाकू गुण्डे प्रजा को हर समय त्रसित करते रहते है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र   दूरभाष : ३२७४७७१   वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३१ अंक ४]   दयानन्दाब्द १६९   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९३   फाल्गुन शु० १४   सं० २०४९   ७ मार्च १९९३

आर्य समाज द्वारा महाराणा प्रताप की जयन्ती मनाने की घोषणा

राष्ट्रीय एकता और राष्ट्रीयता की भावना में संविधान के कुछ प्रावधान बाधक

सार्वदेशिक सभा के वार्षिक अधिवेशन मे महत्वपूर्ण निर्णय

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का वार्षिक अधिवेशन २८-२-९३ को सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे आर्य समाज दीवानहाल मे सम्पन्न हुआ। इससे पूर्व २७-२-९३ को सभा की कार्य समिति की बैठक और २६-२-९३ को धर्मार्य सभा को महत्वपूर्ण बैठके हुई।

सभा के साधारण अधिवेशन मे आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका से पधारे श्री सत्यदेव शानन का शानदार स्वागत किया गया।

अधिवेशन मे अयोध्या मे ६ दिसम्बर १९९२ की घटनाओ के बाद देश मे जो विषम परिस्थितिया पैदा हो गई है उन पर गम्भीरता से विचार हुआ और इस विषय मे महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किया गया।

इस अधिवेशन मे दक्षिण भारत से प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव, बम्बई से कैप्टन देवरत्न आर्य, गुजरात से मधुसूदनलाल पित्ती, श्री रतनप्रकाश गुप्ता, मध्य प्रदेश से श्री रमेशचन्द्र श्रीवास्तव, बगाल से श्री बटकृष्ण वर्मन, पजाब से श्री वीरेन्द्र, हरियाणा से प्रो० शेरसिंह, हिमाचल से प० विद्याधर, राजस्थान से श्री छोटूसिंह एडवोकेट, दिल्ली से बाबू सोमनाथ मरवाह एडवोकेट महाशय धर्मपाल, श्री सूर्यदेव, सार्वदेशिक न्याय सभा के प्रधान जस्टिस महावीरसिंह, उ०प्र० से डा० सच्चिदानन्द शास्त्री और श्री जयनारायण अरुण सहित प्रमुख महानुभाव सम्मिलित थे।

बैठक की अध्यक्षता करते हुए स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने अपने सम्बोधन मे कहा कि "हम ऐसे समय मे यह बैठक कर रहे हैं जिस समय देश एक समस्या से दूसरी समस्या की ओर जा रहा है। आर्य समाज को ऐसे हालातो मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए आगे आना होगा। अग्रेजो और प्रतिक्रियावादी देशी नरेशो के विरुद्ध सघर्ष में आर्य समाज ने प्रमुख भूमिका निभाई थी। देश की एकता और अखण्डता की रक्षा के लिए आर्य समाज को जनता की आकांक्षाओ के अनुरूप कार्य करना होगा।

अधिवेशन मे पारित महत्वपूर्ण प्रस्ताव निम्न प्रकार हैं—

प्रस्ताव सं०—१

आज देश जिस प्रकार से सकटमय परिस्थितियो से गुजर रहा है यह आर्य समाज के लिए गहरी चिन्ता का विषय है। इन बिगडती परिस्थितियो के बावजूद राजनीतिक दलो द्वारा चैतन्य हीनता और भी अधिक दयनीय है।

हम एक ऐसी अवस्था मे पहुच चुके हैं जहा अपने आपको दो बुराइयो के बीच मे फसा पाते हैं।

—राष्ट्रीय एकता की भावना का सर्वत्र अभाव।

—बाहरी शत्रु ताकतो द्वारा सहायता प्राप्त विघटनकारी प्रयास।

आर्य समाज का यह दृढ विश्वास है कि भारतीय सविधान के कुछ प्रावधान तथा हमारे देश के कुछ तत्वो (सवैधानिक अगो) की स्वय को राष्ट्र की मुख्य धारा से अलग रखने की इच्छा, दोनो ही राष्ट्रीयता के अभाव के लिये जिम्मेदार हैं।

आर्यसमाज यह महसूस करता है कि एक अन्तर्राष्ट्रीय षडयन्त्र के तहत ऐसा किया जा रहा है जिससे भारत को कमजोर करके इसे विभिन्न स्वतन्त्र राज्यो मे बाटा जा सके और यह सब उसी प्रेरणा से किया जा रहा है जिस प्रकार ब्रिटेन के नेताओ ने स्वतन्त्रता से पूर्व हमारे देश को धर्म के नाम पर बाटकर इस देश के दो टुकडे किए थे।

आर्य समाज का यह मत है कि 'हिन्दुत्व चेतना का उदय' केवल मात्र एक प्राकृतिक प्रतिक्रिया है उस व्यवहार की जो हमारे देश के आदर्शवादियो ने इस देश के बहुसख्यक लोगो के साथ किया है। यह तथाकथित आदर्शवादी यथार्थ से परे ऊचा हवा मे उडान भरते हुए ऐसा पिछले कई वर्षो से करते रहे है। (शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सार्वदेशिक सभा के महत्वपूर्ण निर्णय

(पृष्ठ १ का शेष)

भारत आज उन कट्टरवादी इस्लामिक देशों के बीच दबकर रह गया है जिनमें से एक इसके पूर्व में है, एक पश्चिम में है, इन के अतिरिक्त अन्य इस्लामिक देशों की एक विस्तृत शृंखला। इन इस्लामिक देशों के कुछ ऐसे संगठन जो गैर इस्लामिक राष्ट्रों को प्रत्येक क्रिया पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए तत्पर रहते हैं। इस प्रक्रिया में अन्य समस्त पंथिक समुदाय उनके लिए असहनीय हैं।

यही नहीं भारत में भी इस प्रकार के इस्लामिक कट्टरवादी संगठनों के समर्थक मौजूद हैं जो भारत को खण्ड-खण्ड करना चाहते हैं, जिसके पोछे इनका उद्देश्य या तो एक नये इस्लामिक देश की कल्पना है या पाकिस्तान को कुछ अतिरिक्त भूमि लाभ है। इन्हीं लोगों द्वारा कुछ हिन्दू मन्दिरों को तोड़े तथा अपवित्र किए जाने के उदाहरण हमारे सामने हैं।

"हिन्दुत्व चेतना का उदय" यदि आलोचनात्मक पहलू से भी देखा जाय तो भी यह एक प्राकृतिक प्रतिक्रिया ही है, उस व्यवहार के प्रति जो मुस्लिम कट्टरवादियों द्वारा प्रदर्शित किया जाता रहा, तथा सरकार की मुसलमानों के लिए तुष्टिकरण नीति जो सेक्यूलरिज्म के नाम पर अपनाई गई है।

सेक्यूलरिज्म (पंथ निरपेक्षता) का अभिप्राय भेदभाव कदापि नहीं है। यदि इसका अर्थ "सर्वधर्म सम्भाव" लिया जाता है तो समाज सुधार तथा समाज कल्याण के नाम पर केवल हिन्दू धर्म के कार्यों में ही हस्तक्षेप की संवैधानिक व्यवस्था क्यों? जब कि दूसरे अन्य पंथों में इससे भी अधिक सामाजिक बुराईयां विद्यमान हैं और जहां हस्तक्षेप सम्भव भी है।

आर्य समाज यह महसूस करता है कि यही उचित समय है जब समस्त राजनैतिक दलों के द्वारा अपनी राजनैतिक सोच से ऊपर उठते हुए समस्त राष्ट्र तथा इसके लोगों के विषय में बिना किसी भेदभाव के विचार किया जाये।

भारत की जनता बिना किसी जाति या पंथिक भेदभाव के भारतीय है, उन्हें एक मानकर चलने की नीति ही राष्ट्रीय एकता की भावना को मजबूत करेगी।

अतः आर्य समाज का यह सुझाव है कि सेक्यूलरिज्म से सम्बन्धित उन समस्त संवैधानिक प्रावधानों में यथोचित परिवर्तन किए जाएं जिससे किसी भी पंथ के हित में या अहित में किसी प्रकार का भी भेदभाव सम्भव न हो।

प्रस्ताव सं०—२

अयोध्या मे ढांचा गिराए जाने के बाद उत्पन्न परिस्थितियो और विशेष रूप से प्रधानमन्त्री द्वारा मस्जिद के पुनंनिर्माण की घोषणा से आर्य समाज, सरकार द्वारा इस विवाद को समाप्त करने के लिए किये जा रहे इन प्रयासों से सहमत नहीं है।

अब जबकि राष्ट्रपति द्वारा इस विवाद को सर्वोच्च न्यायालय की राय हेतु संविधान के अनुच्छेद १४३ के तहत माननीय न्यायाधीशों के सुपुर्द कर दिया गया है, इन परिस्थितियों में आर्यसमाज सरकार से यह मांग करता है कि सर्वोच्च न्यायालय की राय से पूर्व इस विवाद के निपटारे में किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप, सरकारी कार्यवाही द्वारा या बयानों द्वारा न किया जाए क्योंकि यह न्यायिक प्रक्रिया की अवमानना होगी।

आर्य समाजों की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का यह निश्चित मत है कि अयोध्या, जो कि मर्यादा पुरुषोत्तम राम की जन्म स्थली है, में मस्जिद निर्माण की बात अब नहीं की जानी चाहिए। वहां केवल राम मन्दिर का निर्माण होना चाहिए। इस मार्ग में आने वाली किसी भी प्रकार की अड़चनों को देश का राष्ट्रवादी तत्व कदापि स्वीकार नहीं करेगा।

आर्य समाज उन प्रबुद्ध मुसलमानों की राय का स्वागत करता है जिन्होंने उदारता पूर्वक राममन्दिर निर्माण के पक्ष में राय दी है और देश के अन्य समस्त समुदायों और संगठनों से अपील करता है कि वे भी एक निर्विवादित सत्य के समर्थन में आवाज उठावें।

इस विवाद के चलते देश मे सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक सुधार और कल्याणकारी कदम सफल नहीं हो सकते।

प्रस्ताव सं०—३

अधिवेशन मे सर्वसम्मति से यह भी निर्णय हुआ कि आर्य समाज द्वारा राष्ट्रीय प्रभुसत्ता और अखण्डता के महापुरुष महाराणा प्रताप की जयन्ती राष्ट्रीय स्तर पर समारोह पूर्वक मनाई जायेगी। इस निर्णय के क्रियान्वयन के लिए एक उपसमिति का गठन कर दिया गया है।

प्रस्ताव सं०—४

सार्वदेशिक सभा कि इस अधिवेशन में अयोध्या काण्ड के बाद हरियाणा में मेवात क्षत्र के हिन्दुओं पर मुस्लिमो द्वारा किए गये अत्याचारों, मन्दिरों की तोड फोड़ और सम्पत्तियों के नुकसान की कड़ी निन्दा की गई और एक प्रस्ताव द्वारा भारत सरकार और हरियाणा सरकार से मांग की गई कि मेवात क्षेत्र में असुरक्षित अल्पसंख्यक हिन्दुओ के सम्भावित पलायन को रोकने के लिए तुरन्त कड़ी कार्यवाही की जावे। ●

पंचम जनपदीय आर्य महासम्मेलन

आर्य उपप्रतिनिधि सभा गाजियाबाद का पंचम जनपदीय आर्य महासम्मेलन १४ से १६ मार्च १९९३ तक सूरजपुर ग्रेटर नौएडा में समारोहपूर्वक मनाया जा रहा है इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के अतिरिक्त आर्यजगतके उच्चकोटि के विद्वान, संन्यासी महोपदेशक तथा आर्य नेता पधार रहे हैं। इस महासम्मेलन में स्वास्थ्य रक्षा सम्मेलन, युवा व शिक्षा सम्मेलन, महिला तथा राष्ट्र रक्षा सम्मेलन एवं वेद सम्मेलन के माध्यम से विद्वानों तथा आर्य नेताओं द्वारा जनता जनार्दन का मार्ग निर्देशन किया जायेगा। अधिक से अधिक संख्या में पहुंच कर आयोजन को सफल बनायें।

विजयपाल शास्त्री, प्रधान | मायाप्रकाश, मन्त्री

केन्द्रीय सभा का गठन कलकत्ता महानगरी में

आर्य प्रतिनिधि सभा 'बंगाल' के अन्तर्गत 'आर्य केन्द्रीय सभा कलकत्ता का गठन गत २३ जनवरी ९३ को कलकत्ता एवं हावड़ा में स्थित सभी आर्य-समाजो के प्रतिनिधियो एवं आर्य बन्धुओं की आमसभा में किया गया।

केन्द्रीय सभा के गठन का मुख्य उद्देश्य-बिखरी हुई आर्यशक्ति को संगठित करके आर्य समाज के प्रचार प्रसार की दिशा में आर्यों को अपने कर्तव्य का बोध कराना और महर्षि के उद्घोष 'कृण्वन्तो-विश्वमार्यम्' समस्त विश्व को आर्य बनाओ के प्रति जागरूक होकर कार्य करने की प्रेरणा देना है। केन्द्रीय सभा के संचालनार्थ ४७ आर्य जनों की कार्य समिति का गठन किया गया है जिसमें प्राय: सभी विद्वानों एवं कर्मठ आर्य नेताओं का समागम है।

केन्द्रीय सभा को प्रधान स्वरूप पोद्दार परिवार के प्रेरणादायक श्री विश्वनाथ पोद्दार प्राप्त हुये हैं तथा मन्त्री के रूप में आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के महामन्त्री श्री आनन्द कुमार आर्य का चयन किया गया है। कोषाध्यक्ष के पद पर श्री सिद्धार्थ गुप्त को आसीन किया गया है।

हमें आशा एवं पूर्ण विश्वास है कि यह नवगठित आर्य केन्द्रीय सभा कलकत्ता महानगरी में अपने उद्देश्यो की पूर्ति में अवश्य सफलता प्राप्त करेगी और आर्य जगत में कलकत्ता का नाम प्रेरणा स्वरूप लिया जायेगा। आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के प्रधान रूप में मेरी शुभकामनायें सदैव केन्द्रीय सभा को प्राप्त होती रहेंगी।

—वटकृष्ण वर्मन, प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल

भारत में मुस्लिम देशों के धन का प्रवाह

—असरार खान

नई दिल्ली, ११ फरवरी। अयोध्या की घटनाओ के बाद देश के मुस्लिम समाज मे उठा विचार मथन का ज्वार अभी जारी है। हिन्दुओ और मुसलमानो के बीच फैल रहे अविश्वास और आशका के मोजूदा दौर मे जहा आम मुस्लिम हिन्दुओ के अतिवादी सगठनो और नेताओ के प्रति आशकित है वही आम मुसलमान नफरत के इस दौर के लिए मुसलमानो के स्वयभू रहनुमाओ को भी बराबर का जिम्मेदार मानने लगा है आम मुसलमानो मे अब यह बात गहरे पैठती जा रही है कि कौम की भलाई का ढिंढोरा पीटने वाले मुस्लिम नेताओ को न तो मुसलमानो की गरीबी बेरोजगारी या पिछडेपन की कोई फिकर है और न ही हिन्दू मुस्लिम सदभाव मे उनकी कोई दिलचस्पी है। उन्हे अपने राजनीतिक और आर्थिक स्वार्थों को साधने की फिक्र ज्यादा है।

अयोध्या जाकर नमाज अता करने की बात हो अथवा २६ जनवरी के बहिष्कार की आम मुसलमानो ने पिछले दिनो लगातार अपने स्वयभू नेताओ की राजनीतिक अपीलो के खिलाफ आवाज बुलन्द की है। अब उसकी दिलचस्पी पिछडती कौम के दिनोदिन समृद्ध होते नेताओ की आर्थिक दुकानदारी का खुलासा करने मे भी बढ गई है। जामा मस्जिद के शाही इमाम, सैय्यद शहाबुद्दीन असद मदनी और अहमद अली कासमी आदि नेताओ पर आज मुस्लिम समाज मे चन्दा खाने, विदेशो से पैसे लेने और सियासी पार्टियो से मुस्लिम वोटो की सौदेबाजी के आरोप लग रहे है।

गरीब मुसलमानो की भलाई और शिक्षा प्रसार के उद्देश्य से गठित प्रमुख मुस्लिम सगठन जमयित उल्माए हिन्द आरोपो के घेरे मे हैं। कांग्रेस के लिए मुस्लिम वोटो के इतजाम कर्ता मौलाना असद मदनी उसके कर्ताधर्ता हैं। लेकिन कुल मिलाकर यह सगठन उनका पारिवारिक सगठन बनकर रह गया है। आरोप है कि देवबन्द के नाम से इस सगठन ने एक फड चलाया हुआ है, जिसमे मुसलमानो से यह कहकर पैसा जमा कराया जाता है कि उन्हे सूदी व्यवस्था से बचाना है, लेकिन आरोप यह है कि यह पैसा बैंको मे जमा करके भारी सूद कमाया जा रहा है और इनका इस्तेमाल एफ डी आर एव यू टी आई के शेयर खरीदने तक मे हुआ है।

इस सगठन को विदेशो से भारी मात्रा मे मिलने वाले धन का भी ब्योरा दिलचस्प है। १९७० मे इसे कुवैत से २० हजार अमेरिकी डालर मिले, जिसे ब्रिटेन के एक बैंक मे जमा किया गया। १९७५ मे अरब से छह लाख रुपये मिले। १९७६ मे सऊदी अरब के शाह ने दो लाख रु० दिये। फरवरी १९७८ मे सयुक्त अरब अमीरात के अब्दुल तैफ राशिद ने २ लाख २५ हजार रुपये दिये। जुलाई १९७९ मे सऊदी अरब ने दो लाख से ज्यादा रु० दिये। जुलाई १९८० मे इराक के फाजिल गराबी ने सद्दाम हुसैन के आदेश पर १० लाख रुपये दिये। १९८२ मे सऊदी अरब ने १ ४३ लाख रुपये भेजे। यह क्रम १९८३ ८४ मे भी जारी रहा। १९८४ म सऊदी अरब के अब्दुल्ला उस्मान अल हुसीन ने १० हजार डालर की अतिरिक्त किस्त दी। जून १९८४ मे ही एक विदेश शोध सस्थान ने ३ हजार डालर दिये। इसके अलावा दस वर्षों मे अकेले इग्लैंड से करीब एक करोड रुपया जमा किया गया।

इसी तरह यह भी आरोप है कि देवबन्द के पास मौलाना असद मदनी ने एक शीतगृह खरीदा। देहरादून मे बगीचे खरीदे गये। शिमला गाजियाबाद मे कीमती जमीनें ली गयी। असम मे एक पेपर मिल भी है। कहा जाता है कि यह सब सम्पत्ति सस्था के नाम से खरीदी गयी, लेकिन इसका उपयोग व्यक्तिगत सम्पत्ति की तरह किया जा रहा है। इसके अलावा कुछ अन्य स्रोतो से भी श्री असद मदनी ने पैसा जमा किया है। ३ फरवरी १९८८ को पाच लाख रुपये, २७ मई १९८८ को १५ लाख रुपये, २८ जन १९८८ को दो लाख रुपये, २० नवम्बर १९८८ को ढाई लाख रुपया, १० अक्तूबर १९८७ को दस लाख रुपये, १३ नवम्बर १९८७ को ५ लाख रुपये और ४ जून १९८८ को ५ लाख रुपये जमा किये गये। जमयित उल्माए हिन्द और असद मदनी के बारे में यह कच्चा चिट्ठा किसी ऐरे गैरे आदमी ने नहीं, बल्कि शेख मुहम्मद दीन मो० यासीन, मलिक उस्मान, मो० शरीफ, इकबाल अहमद, अजीजुरहमान, शरीफुद्दीन, मुहम्मद हसन आदि प्रमुख उलेमाओ ने जारी किया है।

सैय्यद शहाबुद्दीन और उनके सगठन मुस्लिम मजलिस मुशावरात की चर्चा भी मुस्लिम समुदाय मे जोरो पर है। इसी सगठन के उत्तर प्रदेश इकाई के अध्यक्ष ने २६ जनवरी से अयोध्या मे मस्जिद निर्माण के लिए कार सेवा का ऐलान किया था। मुशावरात ने मई १९८६ मे मेरठ के दगा पीडितो के नाम पर धन जमा करके बाम्बे मर्कन्टाइल बैंक के खाता न० १८५५८ और

(शेष पृष्ठ ११ पर)

विश्व हिन्दू परिषद के संयुक्त मन्त्री

आचार्य गिरिराज किशोर द्वारा आर्यसमाज की सराहना

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने १-१२-९२ को एक विशेष पत्र विश्व हिन्दू परिषद के सयुक्त मन्त्री आचार्य गिरिराज किशोर को अयोध्या मे रामजन्मभूमि के विषय मे आर्यसमाज द्वारा दिये गये सहयोग के सम्बन्ध मे लिखते हुए यह शिकायत प्रकट की थी कि आर्य समाज के सहयोग की इस आन्दोलन मे कही पर न तो चर्चा की जाती है और न ही उसके प्रमुख व्यक्तियो के विचारो को प्रचारित किया जाता है। विदित हो कि आचार्य गिरिराज किशोर ने स्वामी जी से आर्य समाज सगठन द्वारा श्रीराम मन्दिर निर्माण के कार्यक्रम मे तन-मन-धन से सहयोग देने की अपील की थी। स्वामी जी ने सार्वदेशिक पत्र मे अपील प्रकाशित करवा दी थी और यह विश्वास दिलाया था कि आर्य समाज तथा इसका सगठन अयोध्या मे राम मन्दिर के निर्माण कार्य मे सदैव आप लोगो के साथ है और रहेगा।

इस सम्बन्ध मे आचार्य गिरिराज किशोर द्वारा स्वामी जी को १५-२-९३ को भेजा गया पत्र अविकल रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

१५ फरवरी १९९३

श्रद्धेय आर्य जगत भास्कर स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती

सादर जय सियाराम!

आपका १ दिसम्बर, १९९२ का पत्र यथासमय मिला। किन्तु अपरिहार्य कारणो से उत्तर देने मे विलम्ब हुआ एतदर्थ क्षमा प्रार्थी हू।

आर्यसमाज का हिन्दू समाज के उत्थान मे जो महान् योगदान है उसे सभी स्वीकार करते है और जहा तक श्रीराम जन्मभूमि का प्रश्न हैं वह तो आपका अपूर्व सहयोग हमे प्रारम्भ से ही मिल रहा है। आपको एव कुछ आर्यजनो की शिकायत यह है कि इस कार्य मे उनका नाम नही आ पाया। आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के प्रधान से सम्पर्क सम्भवत हम लोगो का नही हो पाया होगा अन्यथा सर्व देव अनुष्ठान के समय हम लोगो ने आभार व्यक्त किया था और आर्य समाज भी इसमे सहभागी है ऐसा सभी को बताया था। प्रतिबन्ध हटने के पश्चात एक बार आपसे भेंट करके पूरा विचार विमर्श करेंगे। हमे विश्वास है सदैव की भाति आपका सहयोग एव आशीर्वाद मिलता रहेगा। शेष क्षेम।

श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान,
नई दिल्ली-११० ००२

भवदीय
(आचार्य गिरिराज किशोर)
सयुक्त महामन्त्री

सैन्य फार्मों की मदद से एक और श्वेत क्रांति की तैयारी

रंजीत कुमार

सैन्य फार्मों की मदद से देश में एक और श्वेत क्रांति लाने की महत्वाकांक्षी परियोजना इन दिनों प्रगति पर है। सशस्त्र सेनाओं के सैन्य फार्मों का इस नयी श्वेत क्रांति में अद्भुत योगदान होगा।

यहां स्थित देश के अग्रणी सैन्य-फार्म के सहयोग से कृषि मन्त्रालय एक 'राष्ट्रीय गाय प्रजाति' तैयार करने की योजना संयुक्त रूप से चला रहा है। उम्मीद है यह यो जनाइस शताब्दी के अन्त तक पूरी हो जायेगी और तब अगली शताब्दी के आरम्भ से इस नयी प्रजाति का देश भर में फैलाव का कार्यक्रम शुरू किया जायेगा। फिलहाल यह योजना देश भर में स्थापित ४२ सैन्य फार्मों तक ही सीमित है। इस परियोजना को वित्तीय व वैज्ञानिक सहयोग भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आइ.सी.ए.आर.) की ओर से मिल रहा है।

सैन्य फार्म के उप महानिदेशक ब्रिगेडियर एस. एन. दत्ता ने मेरठ सैन्य फार्म के भ्रमण के दौरान बताया कि गाय की यह नयी प्रजाति औसतन प्रतिदिन बीस किलोग्राम दूध दे सकती है। देसी गायें औसतन तीन किल ग्राम प्रतिदिन दूध ही देती है। गाय की इस नयी प्रजाति का नाम 'फ्रीजवाल' रखा गया है। देश की सर्वश्रेष्ठ प्रजाति साहीवाल गायों और विदेशों से आयातित होल्सटीन-फ्रीजियन सांडो के संगम से बनी फ्रीजवाल प्रजाति है। मेरठ फार्म में उच्च गुणवत्ता वाले ७९ फ्रीजीयन सांड मौजूद हैं।

इन सांडो के वीर्य के जरिये साहीवाल गायों का कृत्रिम गर्भाधान करके फ्रीजवाल बछड़ा पैदा किया जाता है। फिर इनसे विकसित सांडों के वीर्य को ऐसे फ्रीजर में रखा जाता है जिसमें यह सौ साल से अधिक समय तक सुरक्षित रखा जा सके। इन फ्रीजरों में फ्रीजवाल प्रजाति के भ्रूण भी रखे जा रहे हैं। यह वीर्य और भ्रूण लाखों खुराक में बदलकर देश भर मे भेजे जा सकते हैं। इन भ्रूणो को किसी भी देसी गाय में कृत्रिम रूप से डाला जा सकता है। इस तरह ये साधारण देसी गायें भी फ्रीजवाल बच्चो को जन्म दे सकती हैं।

यह परियोजना १९८५ में शुरू की गयी थी। फ्रीजवाल गायों की तीन पीढ़ी अब तैयार हो चुकी है। हालांकि फ्रीजवाल प्रजाति की तीन पीढ़ियो से अब तक ७५० पशु पैदा हो चुके हैं, लेकिन ब्रिगेडियर एस. एन. दत्ता बताते हैं कि सातवीं पीढ़ी में ही फ्रीजवाल की ऐसी प्रजाति विकसित होगी जो पूर्णतः स्वदेशी होगी और यूरोपीय मूल की गायो की तरह दूध देते हुए भी भारतीय मौसम को बर्दाश्त कर सकती है। उल्लेखनीय है कि यूरोपीय मूल की गायों को भारत मे पालना काफी मुश्किल होता है। पर सातवीं पीढ़ी के बाद फ्रीजवाल की जो प्रजाति तैयार होगी वह भारतीय मौसम के अनुकूल अपने को ढाल चुकी होगी।

भारत मे एक ऐसी गाय प्रजाति विकसित करने की आवश्यकता लम्बे समय से महसूस की जा रही थी जो यूरोपीय गायो की तरह दूध भी दे और भारतीय माहौल भी देसी गायो की तरह बर्दाश्त कर ले। अर्थात इन गायों को अर्सी या पश्चिमी मूल की अन्य गायों की तरह अत्यधिक नफासत मे नहीं रखना पड़े।

फ्रीजवाल प्रजाति परियोजना का लक्ष्य है कि प्रत्येक गाय पूरे मौसम में न्यूनतम चार हजार किलोग्राम दूध दे। ये गायें औसतन साल मे तीन सौ दिन दूध देती हैं। और तब डेढ़ महीने के आराम के बाद इनका पुनः कृत्रिम गर्भाधान करवाया जाता है।

सशस्त्र सेनाओं के मिलिट्री फार्म ही ऐसे संगठित फार्म हैं जहां देश में कोई सौ साल पहले पहली बार संगठित डेयरी की परिकल्पना लागू हुई थी। आज देश भर मे स्थापित ४२ मिलिट्री फार्मों में साढ़े २३ हजार उत्तम श्रेणी के पशु हैं। मेरठ मिलिट्री फार्म में इन उत्तम श्रेणी के पशुओं के वीर्य को इकट्ठा करना या भ्रूण तैयार करने की ढांचागत सुविधाएं हैं, इसलिये सैन्य फार्मों की मदद से कुछ ही वर्षों में देश भर में गायों की नयी प्रजाति की आबादी काफी बढ़ायी जा सकती है।

मेरठ मिलिट्री फार्म के निदेशक कर्नल जे. एल. कौल ने इस संवाददाता को बताया कि देश भर के सैन्य फार्मों से सवा २८ करोड़ लीटर दूध वर्ष १९९१-९२ में उत्पादित किया गया। इन सैन्य फार्मों को करीब चार करोड़ रुपये का मुनाफा हुआ। इस दौरान दूध उत्पादन की लागत पांच रुपये ६३ पैसे पड़ी। सैन्य फार्मों मे गायो को अत्यधिक स्वच्छ माहौल में वैज्ञानिक तरीके से पाला-पोसा जाता है इसलिए यहां तैयार प्रजाति का देश में श्वेत-क्रांति लाने में व्यापक सदुपयोग किया जा सकता है।

ये सैन्य फार्म देश भर के सैनिकों की ४१ प्रतिशत दूध आवश्यकताएं पूरी करते हैं। लक्ष्य है कि यह ७० प्रतिशत तक कुछ वर्षों में हासिल कर लिया जाये।

ब्राह्मणवादी व्यवस्था के विरुद्ध लोग आगे आयें : लालू

पटना, १ फरवरी। मुख्यमन्त्री लालूप्रसाद ने नागरिकों, खासकर शिक्षकों आह्वान किया है कि वे ब्राह्मणवादी विचारों और अन्धविश्वास समूल नष्ट करने के लिए आगे आयें। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज से जुड़े लोग आगे आयें और पूरे देश में ब्राह्मणवादी व्यवस्था का भंडाफोड़ कर इसके खिलाफ अभियान चलायें।

मुख्यमन्त्री श्री प्रसाद आज यहां दयानन्द कन्या विद्यालय में आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती के १६६वें जन्म दिवस समारोह का उद्घाटन कर रहे थे। उन्होंने कहा कि आज ब्राह्मणवादी व्यवस्था फिर से सिर उठा रही है। ऐसी स्थिति में उठने, जगने और इससे मुकाबला करने की जरूरत है, अन्यथा देश बचने वाला नहीं।

मुख्यमन्त्री ने कहा कि गत छह दिसम्बर को अयोध्या की घटना से ऋषियों और महर्षियों की कुर्बानी बेकार चली गयी है। इस घटना के बाद जहां पूरा देश साम्प्रदायिकता की आग की चपेट में आ गया, वहीं देश विदेश में बिहार की प्रतिष्ठा बढ़ी है। बिहार का मान-सम्मान बढ़ा है।

उन्होंने कहा कि बिहार शुरु से ही मुल्क का अगुआ रहा है और आज इस पर फिर अगुआई की जिम्मेवारी आ पड़ी है। अगर आज हमने ऐसा नहीं किया तो कन्याकुमारी से कश्मीर तक का बगीचा नष्ट हो जायेगा। आज हम ऐसे चौराहे पर खड़े हैं, जहां यह तय करना है कि हमें कैसा भारत चाहिए।

समारोह में विधान पार्षद रामकृपाल यादव भी मौजूद थे। समारोह की अध्यक्षता करते हुए बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री भूपनारायण शास्त्री ने स्वामी दयानन्द सरस्वती के विचारों को जीवन में आत्मसात करने की आवश्यकता जतायी।

विद्यालय की प्राचार्या माधुरी मिश्रा ने विद्यालय की उपलब्धियों एवं समारोह के आयोजन के औचित्य की चर्चा की। इस अवसर पर छात्राओं ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

लेखराम के काम—पावन प्रखर ललाम

देवनारायण भारद्वाज, आजमगढ

वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज के प्रारम्भिक आधार स्तम्भो म पण्डित लखराम का नाम अग्रणी है जिन्होने ऋषि परम्परा मे अपन बलिदान से आर्य धर्म को जीवन प्रदान किया। उनका जन्म सैदपुर जिला झेलम मे चैत्र स० १९१५ वि०(१८५८ ई०)मे पिता प० तारासिंह के यहा हुआ था। उनका बलिदान भी लाहौर नगर म स४ १९५४ वि० या ६ मार्च १८९७ ई० को वेद धर्म की वेदी और ऋषि कर्म की गोदी मे हो गया था। पण्डित जी के जन्म मृत्यु का समय तो हम से दशाब्दियो दूर खिसक ही गया है वह पवित्र भूमि भी भारत के हाथ से दूर पाकिस्तान मे बदल गई है जहा यह सूर्य उदय और अस्त हुआ। आज वह भूमि भारत के मानचित्र मे भले न हो किन्तु पण्डित लेखराम के चरित्र का प्रकाश जागरुक आर्य समाज क रूप मे अखिल विश्व मे छाया हुआ है और छाया रहेगा।

पण्डित लेखराम के जीवन कार्यो का अवलोकन किया जाये तो प्रारम्भिक स्तर पर उनमे पावन प्रवाह मध्य मे प्रखर उत्साह एव अन्त मे लालित्यपूर्ण आकर्षण दिखाई देता है। जन्मजात सस्कारो ने उन्हे बाल्यकाल से ही मेधावी बना दिया था। ग्राम की पाठशाला मे ६ वर्ष के बालक लेखराम का शिक्षा विभाग का निरीक्षक उनकी कुशाग्र बुद्धिमत्ता से प्रभावित होकर पुरस्कृत करता है। पुलिस विभाग मे कार्यरत अपने चाचा गण्डाराम के साथ पेशावर मे रहने पर एक मौलवी उन्हे अरबी फारसी पढाते है। वे योग्य बालक को इस्लाम की ओर खीचने लगते हैं किन्तु ११ वर्ष के इस बालक द्वारा इस्लाम पर प्रकट की गई शकाओ का समाधान न कर सकने पर इनको आगे पढाने का साहस ही नही जुटा पाते हैं। लेखराम मिडिल की परीक्षा मे बैठते हैं। अनेक विषयो मे उत्तम अक प्राप्त करते है किन्तु इतिहास के प्रश्न पत्र की उत्तर पुस्तिका मे प्रचलित इतिहास पुस्तको की विसगतिया लिखकर उठ आते है। भले ही वे मिडिल उत्तीर्ण होने से रह गए किन्तु अपने तेजोमय कार्य कलापो मे वे स्वय इतिहास के माडल आदर्श बन गए।

चाचा गण्डाराम अपने भतीजे लेखराम को पेशावर मे पुलिस की सेवा मे नियुक्त करा देते है। पावन प्रेरणा का प्रवाह यहा भी पवन की भाति बहता रहता है। एक सिख सिपाही को नियमित पाठ करते देख इनके मन मे छिपा प्रभु भक्ति का अकुर फूट पडता है इनमे कृष्ण भक्ति का रग चढ जाता है। यह भक्ति भागवत से मुड कर गीता की ओर दौड पडती है। वे पावन अन्तर्विचार द्वारा काशी से एक गीता का नूतन भाष्य मगाते है। इसे पढते पढते कन्हैयालाल अलखधारी के पाखण्ड निवारक साहित्य का इन्हे सकेत मिलता है। यही सकेत उन्हे ऋषि दयानन्द के साहित्य सन्देश से मिलन करा देता है। एक माह का अवकाश ले ये मई १८८१ ई० मे अजमेर पहुचकर ऋषिराज से भेट करते है। मार्ग मध्य जयपुर मे किसी बगाली सज्जन ने लेखराम से प्रश्न किया था आकाश भी व्यापक है ब्रह्म भी दो व्यापक एक साथ कसे एकत्र रह सकते है। ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या का भ्रम तो ऋषि साहित्य ने पहले ही निवारण कर दिया था। ऋषि के साक्षात्कार ने त्रैतवाद के सिद्धान्त को मन मे दृढ कर दिया था। बगाली सज्जन का वही प्रश्न सबसे पहले ऋषि के सम्मुख रक्खा। उन्होने एक पत्थर उठाया और बारी बारी से पूछा—इसम अग्नि मिटटी जल आकाश वायु एव ईश्वर व्यापक है या नही ? लेखराम के हर बार हा कहने पर ऋषि ने बताया जो पदार्थ जिससे सूक्ष्म होता है वह अपने से स्थूल मे व्यापक होता है। ब्रह्म सभी पदार्थो से अति सूक्ष्म है इसलिए वह सर्व व्यापक है। इसी भेट मे बिछुड भाइयो को वैदिक धर्म मे पुन लाने की सहमति भी उन्होने ऋषिराज से प्राप्त कर ली।

लेखराम ने अपनी सन्तुष्टि के लिए पूछा कि जीव एव ब्रह्म की भिन्नता का कोई स्पष्ट वैदिक प्रमाण बताए। ऋषि ने बता दिया कि यजुर्वेद का ४०वा अध्याय यही उदघोष करता है। लेखराम ने ऋषि के दर्शन से सुख और प्रवचन से शान्ति प्राप्त की साथ ही स्मृति स्वरूप ऋषि के हाथ से एक अष्टाध्यायी की पुस्तक लेकर वे घर के लिए विदा हो लिए। आर्य सिद्धान्त पर दृढता इतनी बढ गई थी कि वे अपने एक पुलिस निरीक्षक से विवाद कर बैठ भले ही इसके लिए उन्होने पदावनति का जोखिम उठाया। राजकीय कार्य से दौरे पर तागे पर बैठकर गए। मार्ग मे अग्रज अधिकारी ने टोक दिया कि आपको नियमानुसार तागे पर यात्रा नही करनी चाहिए। इन्होने भी उसे दो टूक उत्तर दे दिया कि पैसा मैंने अपनी जेब से व्यय किया है और तागे पर यात्रा करके विभाग की प्रतिष्ठा ही बढाई है। अग्रज अधिकारी इनके उत्तर से निरुत्तर हो गया किन्तु बाद मे तागे पर न जाने का निर्देश भी उसने दे दिया। राज सेवाकाल मे ही उन्होने पेशावर व अन्यत्र कई आर्य समाज स्थापित कर दिए थे या स्थापना मे सक्रिय भूमिका निभाई थी। उन्होने धर्मोपदेशक नामक पत्र भी प्रकाशित किया था। पुलिस विभाग की दासता को अपने धर्मोद्धार अभियान मे बाधक समझकर सन १८८४ ई० मे उन्होने इससे त्याग पत्र दे दिया और दूने उत्साह से प्रचार का कार्य करने लगे।

कादिया के मिर्जा गुलाम अहमद के द्वारा एक हिन्दू विष्णुदास

(शेष पृष्ठ ६ पर)

लेखराम के काम

(पृष्ठ ५ का शेप)

को एक वर्ष में मुसलमान न मारे जाने पर, मर जाने का भय दिखाए जाने पर पण्डित लेखराम वहा पहुंचे और उसे सहारा दिया तथा आर्य समाज का सभासद बना लिया। मिर्जा जी के समस्त षड़यन्त्रों का भेदन करके हिन्दुओं की रक्षा की। पादरी खड्गसिंह के ईसाई समर्थक व्याख्यानों के खण्डन हेतु लेख लिख कर वितरित किए। अजमेर के अब्दुल रहमान को वैदिक धर्म में लाकर सोमदत्त बनाया और इनसे शास्त्रार्थों में भरपूर सहायता ली। चरैवेति-चरैवेति की भावना के अनुसार रात्रि-दिवस निरन्तर आर्य प्रचार मे लगकर विपक्षियों को परास्त किया। फिरोजपुर से आर्य गजट पत्र के सम्पादन से आर्य प्रचार को प्रखर बनाया। आर्य प्रतिनिधि सभा के स्थाई महोपदेशक एवं प्रचारक बनकर उसके प्रधान बाबू मुंशीराम जिज्ञासु (स्वा० श्रद्धानन्द) के साथ बढ़-चढ़कर कार्य किया।

पहले कृष्ण भक्ति के रंग में विवाह करने से मना कर दिया था, फिर ऋषि की उमंग में २५ वर्ष तक विवाह न करने की बात मन में घर कर गई थी। सम्बन्धियों के आग्रह पर ३१ वर्ष की आयु में ३६ वर्षीय युवती लक्ष्मी से विवाह किया, तो आर्य कीर्तिमान स्थापित कर दिया। जन्मगत जाति-पांति और पोंगा पंथी पौराणिक परम्पराओं को तोड़ दिया। विवाह के आकर्षण एवं सन्तान के मुख दर्शन भी लेखराम को धर्म पथ की दौड़ से रोक नहीं सके। लेखराम किसी प्रचार यात्रा से लौटकर सभा कार्यालय में आकर प्रधान मुंशीराम जी एवं मेहता जैमिनी से मिलते हैं। प्रधान जी उन्हें दो सन्देश सुना देते हैं। पहला मुस्तफाबाद में पांच हिन्दू मुसलमान बनने वाले हैं, दूसरा आपका पुत्र बीमार है। सन्देश के साथ-साथ अपना निर्देश भी प्रधान जी ने सुना दिया। आप पुत्र की देखभाल घर जाकर करें, मैं मुस्तफाबाद की व्यवस्था देख लूंगा। पण्डित जी ने कहा—नहीं, वहां तो मेरा ही जाना ठीक रहेगा। मुझे अपने एक पुत्र से जाति के पांच पुत्र अधिक प्यारे हैं। वे घर गए, वहां बस दो घण्टे रहकर मां और पत्नी को धैर्य बंधाया और चल पड़े धर्मोद्धार यात्रा पर। पीछे सवा वर्ष का पुत्र सुखदेव भी इस संसार से चल बसा।

घासीपुर जिला मुजफ्फर नगर के कई बड़े-बड़े चौधरियों के मुसलमान होने की बात सुनकर वहां पहुंचकर मौलवियों के बीच बैठ जाते हैं। यात्रा की व्यस्तता में बढी दाढी को देखकर मौलवी इन्हे अपना साथी समझकर इनसे पूछ बैठे— दाढी तो हुई ये मूंछे कैसे?' पण्डित लेखराम को अच्छा अवसर विवाद हेतु मिल गया। उन्होंने हंसते हुए उत्तर दिया—दाढ़ी तो बकरों के भी होती हैं—मूंछें सिंह की होती है। फिर क्या था पण्डितजी ने मौलवियो को शास्त्रार्थ के लिए ललकारा। इनके भाषण को सुनकर सभी चौधरी मन परिवर्तन से बचकर दृढ़ वैदिक धर्मी बन गए। लेखराम धर्म में आडम्बर को नही आचरण को प्राथमिकता देते थे। सभा-प्रधान म० मुंशीराम अपने बैठक के बाहर धोती कुर्ता पहन कर टहल रहे थे—तभी पाजामा प्रिय पण्डित जी वहां उनसे मिलने पहुच गए। उन्होंने कहा लाला मुंशीराम जी इस धोती ने ही हमारे देश का नाश किया है। उनका आशय उन धोतीधारी पोप-पाखण्डियों से था जो ऊपर से कुछ और भीतर से कुछ और होते है।

पण्डित लेखराम का ईश्वर के प्रति समर्पण भाव स्पष्ट करना अप्रासंगिक न होगा। प्रचार यात्रा में महात्मा मुंशीराम एवं पण्डित लेखराम शिकरम पर बैठकर साथ-साथ जा रहे थे। सन्ध्या समय मार्ग मे पण्डित जी शौचादि से निवृत होकर आये: जल पर्याप्त न होने के कारण वे खुलकर हाथ-मुंह नही धो पाये। शिकरम के ऊपरी भाग में जाकर मौन हो गए। नीचे बैठे महात्मा जी ने पण्डित जी को सम्बोधित अपनी पुकार का जब कोई उत्तर नहीं पाया, तो ऊपर झांककर देखा। पण्डित जी आख बन्द कर सन्ध्या में मग्न थे। उनका तर्क था कि स्नानादि शारीरिक कर्म हैं—इन्हें करना चाहिये पर इनके न हो सकने पर सन्ध्या नही छोड़ देना चाहिये। क्योंकि वह आत्मिक धर्म है। आध्यात्मिक शुद्धि का यह अर्थ नहीं कि भौतिक शुद्धि की उपेक्षा कर दी जाये। इसका एक उदाहरण देना अनुचित न होगा। जालन्धर में लाला देवराज के निवास पर पण्डित जी ठहरे थे - वहां एक गमले पर ओ३म् लिखा था, किन्तु गमला अवमानना की दशा मे रक्खा हुआ था। इस स्थिति को देखकर पण्डित जी ज्वराक्रान्त दशा मे भी उस निवास को छोड़ने के लिए उद्यत हो गए। उनका कहना था कि यदि गमले पर ओ३म् लिखा है तो उसे रखना भी उचित प्रकार से चाहिए। प्रभु के नाम का उचित सम्मान होना चाहिए।

पण्डित लेखराम के पावन-प्रखर समस्त कार्यों का निदर्शन-निष्कर्षण उनके द्वारा सम्पन्न अन्तिम एक महान् कार्य में सिमट कर उन्हें मन मोहक ललाम स्तर प्रदान कर देता है। वह महनीय कार्य है महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र का लेखन। इसके लिये उन्होने भारत के अधिकांश उन प्रमुख स्थलों का अनुसरण किया था, जहां ऋषि ने कभी भ्रमण किया था। ऋषि जीवन घटनाओं की छान-बीन तथा संकलन करके आर्य समाज के इतिहास का आधार निर्मित कर दिया था। उनका यह एक कार्य वैदिक धर्म की त्रिवेणी के संगम स्वरूप था। जिसकी एक गंग-धारा ऋषि जीवन घट थी, दूसरी यमुन धारा आर्य समाज प्रचार तट थी और तीसरी सारस्वत-धारा ऋषि पथ पर बलिदान हठ थी। आर्य समाज के बढते, लोग पण्डित जी के जीवन को मिटाने की योजना बनाने लगे। इन्ही तत्वों ने एक क्रूर भयानक नर पिशाच आततायी मुस्लिम युवक को हिन्दू बनने के बहाने पण्डित जी के पीछे लगा दिया। सप्ताह दो सप्ताह उसने उनके घर भोजन किया। एक दिन ६ मार्च १८९७ ई० को पण्डितजी दोपहर २ बजे मुल्तान से लाहौर लौटे। वह युवक उनके साथ हो लिया और घर बैठा रहा। पण्डित जी ऋषि जीवन चरित्र लिखने मे व्यस्त हो गए। थककर सन्ध्या काल को उठे और अगडाई ली, तभी उस राक्षस ने छुरा उनके पेट मे घुसेड दिया। अभी जीवन चरित्र मे ऋषि का अन्तिम वाक्य ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो। तूने अच्छी लीला की। लिखकर उठने वाले लेखराम ने अपने अन्तिम वाक्य आर्य समाज से लेख का काम बन्द न हो कहते हुए रात्रि में अपनी जीवन लीला पूर्ण कर दी। प्यारे अमर हुतात्मा पण्डित लेखराम के नाम मेरे पावन पुण्य प्रणाम।

उपभोक्तावादी संस्कृति के दुष्परिणाम

विषय की विवेचना मे जाने से पूर्व हम विचार करें कि उपभोक्तावाद क्या है ? इसका उद्गम स्थान क्या है ? हम दैनिक जीवन मे भौतिक वस्तुओं का, साधनो का तथा पशु आदि जीव धारियो का अपना जीवन स्वस्थ एवं बलिष्ठ बनाने के लिये प्रयोग करते है। उस बलिष्ठ और स्वस्थ शरीर से कठिन से कठिन कर्तव्य साधना कर परम लक्ष्य की प्राप्ति कर सकें। अत: जीव मानव प्राणधारी सृष्टि के प्रारम्भ से ही प्रमुख उपभोक्ता है। हमारे कर्म भी उपभोक्ता बनाने में एक अहं भूमिका निभाते है। संसार की प्रत्येक प्रकृतिजन्य वस्तु भोग्य सामग्री है तथा हर प्राणी उसका भोक्ता है। वस्तु को भोगने योग्य रूप प्रदान करने मे जो प्रयत्न किया जाता है वह प्राणी का कर्म है। जैसा कि व० द० सूत्र "सुख दुखानुभति प्रयत्नानि आत्मस्य गुण: ।"

जैसे ही सृष्टि का समारम्भ होता है वैसे ही भोक्तावादी संस्कृति का समारम्भ हो जाता है जिसके दो स्वरूप है। पहला बहुमुखी विकास के लिए त्याग भाव से उचित रूप मे उपभोग करना। दूसरा एकाकी विकास के लिए लिप्त भाव से सामग्री एवं साधनो का अधिग्रहण एवं संग्रह करना। इसमें पूर्व व्यवस्था "सर्व जनहिताय' पर आधारित है जबकि उत्तर व्यवस्था व्यक्ति परक एव संग्रह भावना पर आधारित है। एक सम्वेदना जनक है तो दूसरी निष्ठुरता जनक ! एक आह्लालाद जनक तो दूसरी अवसाद जनक !! प्राचीन आर्यावर्त में (भारत में) वेद संस्कृति विकसित हुई जो समस्त विश्व के लिए कल्याणकारी सिद्ध हुई। एक वेद की ऋचा द्वारा धन वैभव के उपभोग के विषय मे इंगित है।

"ईशावास्यमिदं सर्वम् यत्किंचित जगत्या जगत।
तेन त्यक्तेन भुन्जीथा मा ग्रध कस्यस्विद्धनम् ॥

उक्त वेद ऋचा में सम्पूर्ण दृष्टव्य जगत में ईश्वर व्यापक है। अत: सिद्ध हुआ कि प्रत्येक वस्तु की स्थिति, गति और स्वरूप परिवर्तन ईश्वर द्वारा ही नियन्त्रित है मानव द्वारा नहीं दूसरी पंक्ति में स्पष्ट किया है कि उस ईश्वर द्वारा प्रदत्त प्राकृतिक साधनो को आत्मोन्नति के लिए त्याग भाव से ही उपभोग करना श्रेयस्कर है। धन,धरा और धाम ये किसी के भी व्यक्तिगत नहीं है। इनकी सार्थकता मात्र उन्नति के लिए साधना रूप ही है।

जब तक विश्व के मानवों में वैदिक काल में इस प्रकार का भाव रहा। वह काल निश्चितरूप से आनन्द दायक काल रहा होगा। आवश्यकतानुसार मात्र स्वस्थ शरीर रखने हेतु उचित रूप में ही ग्रहण करना था अत: पूरा समाज समान रूप से विकसित था। उस समय मानव प्रकृति से भी उतना ही लेता था जितनी आवश्यकता थी अत: पर्यावरण की कोई समस्या नहीं थी सभी मानव एक दूसरे के प्रति भद्रभाव मे रहा करते थे। प्रजा एवं राज सत्ता मे एक उच्चकोटि का समन्वय कर्तव्य आधारित था।

लेकिन जब से मानव व्यक्तिगत परक एव दुराग्रही भावना से युक्त हुआ उसका भोक्ता स्वरूप जो पहिले सर्व जन हिताय था अब वह व्यक्ति मे केन्द्रित हो गया। इसी व्यक्ति हिताय भावना मे प्रेरित धृतराष्ट्र पुत्र दुर्योधन महाभारत युद्ध का कारण बना। जिसकी आहुति मे उच्चकोटि के वदिक विद्वान, राष्ट्रवेत्ता, योद्धा आदि समाप्त हो गये। शनै: शनै. वेद संस्कृति लुप्त हो गयी। मानव अवैदिक एवं उछृंखल आचरण की ओर उन्मुख हो गया।

इस युग के मानव ने भौतिकीय साधनो की खोज में चरमोत्कर्ष उन्नति की है विज्ञान द्वारा अनेक सुख सुविधा साधन खोज लिए हैं तो दूसरी ओर मानव ने अपनी प्रजाति को ही नष्ट करने के लिए अत्याधुनिक प्रक्षेपास्त्र, शतघ्नी, रासायिनिक शस्त्रो को भी विकसित कर लिया है। आज मानव की व्यक्ति परक, अहंवादी एवं संग्रह की भावना ने मानव समाज में विभाजन रेखा खीच दी है, साधन एवं सुविधाओ के संग्रह की दौड़ चल रही है इस दौड़ मे कोई भी कुचल जाय किंचित परवाह नहीं है। प्रकृति का दोहन करते करते हम उस दशा में पहुच गए हैं कि आज पर्यावरण की समस्या भयावह हो गयी है जो विश्व मानव के स्वास्थ्य के लिए खतरे की घण्टी है।

आज व्यक्ति परक उपभोक्तावादी संस्कृति विशुद्ध संग्रह एवं स्वार्थ भावना से प्रेरित विकसित हुई है जिसमें साधन प्रक्रिया की शुद्धता एवं सत्याचरण के लिए कोई स्थान नही। असत्य, अज्ञान तो सदैव दुख स्वरूप ही है। अतएव आज विश्व मानव अशान्त अवसाद से ग्रस्त हैं। युद्धों की विभीषिका, कुपोषण एवं दूषित पर्यावरण के कगार पर बेबस हो मृत्यु क भीषण झुलस अनुभव कर रहा है।

ऐसे संकटकाल में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सदा सुखदायिनी वेद संस्कृति को समाज पर पुन: स्थापित किया समाज की अज्ञानता, अन्धविश्वासों एवं कुरीतियों का खण्डन कर ईश्वरीय वेद ज्ञान को प्रकाशित किया। वेद संस्कृति को प्रवाहित रखने हेतु आर्य समाज की स्थापना की। आज आर्य-समाज सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में बहुमुखी विकास की ओर अग्रसर है। इस उपभोक्तावादी संस्कृति के दुष्परिणामो से केवल वैदिक संस्कृति ही मुक्ति दिला सकती है आज वह वैदिक प्रकाशपुन्ज अन्धेरे से मुक्त कराने हेतु उद्यत है। "असतो मां सद्गमय ! तमसो मा ज्योतिर्गमय !! मृत्योर्मामृतं गमयेति !!!"

—जगदीश प्रसाद मिश्र (विद्यावाचस्पति)
बी १४/३ अणु विहार कालोनी
पो० आ० नरोरा
जिला बुलन्द शहर (उ० प्र०) पिन २०२३८९

विश्व सुधार बनाम वेद प्रचार

आर्य पुरुषो, सुन लो तब तक होगा विश्व सुधार नहीं।
धरती के हर कोने मे हो, जब तक वेद प्रचार नहीं ॥टेक

बाट दिया टुकडों-टुकडो मे, मजहब की दीवारो ने।
खूब किया गुमराह विश्व को, धर्म के ठेकेदारो ने।
अन्धकार में झोंक दिया है, उनके गलत विचारो ने।
लाखों नही करोडों की, मति भंग की कुप्रचारो ने।
मजहब के पागलपन में, क्या बही रक्त की धारा नहीं ॥१॥

कोई कहता ईश्वर चौथे, नभ में सुनो निवास करे।
और दूसरा गगन सातवां, उसके लिए तलाश करे।
कोई राम कृष्ण मे ईश्वर, का झूठा प्रचार करे।
मन्दिर मस्जिद गिरजा मे, पाने का कोई प्रयास करे।
सर्वव्यापक अन्तर्यामी, क्या विश्व का पालनहार नही ॥२॥

कुछ कहे आत्मा प्रलय तक, लो पड़ी कब्र मे सड़ती है।
और रोजे कयामत अल्लाह के, दरबार मे पेशी पड़ती है।
कुछ कहें कि यमदूतों के संग, प्रभु को मुजरा करती है।
कुछ कहें मृत्यु के समय आत्मा, साथ जिस्म के मरती है।
अजर अमर अल्पज्ञ आत्मा, क्या योनि कर्मानुसार नहीं ॥३॥

उठो आर्यो, आज विश्व को, तुमने आर्य बनाना है।
झूठी मान्यनाओं से सबका, तुमनें पिंड छुड़ाना है।
सोए पड़े नींद गफलत की, उनको आज जगाना है।
भौतिकवाद की जगह अध्यात्मवाद का पाठ पढ़ाना है।
कुन्दनलाल कुटुम्ब तेरा, क्या यह सारा संसार नहीं ॥४॥

—कुन्दनलाल आर्य, ततारपुर खालसा

सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत स्थिर निधियां (८)

स्व० श्री रामलोक शर्मा (बाली) स्मृति वेद प्रचार निधि

१४-१०-८९ को अन्तरंग द्वारा स्वीकृत

१४ हजार रुपए की यह निधि श्रीमती इन्दु जायसवाल, ५४ लोरी प्लेस रिजावना कैनाडा द्वारा वेद प्रचारार्थ स्थापित की गयी है। इसका ब्याज सभा वेद प्रचार में व्यय करेगी।

डा० प्रभुदत्त उदयन स्थिर निधि

२५ मार्च १९९० को अन्तरंग ने इसकी स्वीकृति दी

११००) रुपए की यह निधि मारीशस निवासी द्वारा स्थापित की गयी हवन, यज्ञ आदि हेतु इसका ब्याज व्यय किया जाएगा।

श्री डी० आर० अडवा संस्कृत प्रचार निधि

२५-३-९० को अन्तरंग द्वारा स्वीकृत

५ हजार रुपए की इस निधि का ब्याज संस्कृत पढ़ने वाले विद्यार्थियों की सहायता अथवा संस्कृत की पुस्तकों के प्रकाशन पर सभा द्वारा व्यय किया जाएगा।

माता राजकुमारी आर्य भिक्षु स्थिर निधि

२५-३-१९९० को अन्तरंग में स्वीकृत

पांच हजार रुपए की निधि महात्मा आर्य भिक्षु जी द्वारा स्थापित की गई इस निधि का ब्याज अतिथि सत्कार पर व्यय किया जाएगा।

श्री रविन्दर कुमार गोयल धर्म रक्षा निधि

२५-३-९० को अन्तरंग में स्वीकृत

पांच हजार रुपए की यह निधि श्री रवीन्द्र कुमार गोयल २९ स्टेट बैंक कालौनी, जी०टी० रोड, दिल्ली ३५ ने स्थापित की है। इस निधि का ब्याज आदिवासी, पर्वतीय क्षेत्र के गरीब पिछड़े हुए लोगों की सहायता पर खर्च किया जाएगा।

स्व० श्री चोथ स्मृति निधि

२५-३-९० को अन्तरंग द्वारा स्वीकृत

तीन हजार रुपए की यह निधि श्री जगदीश सिंह आर्य, ग्राम पूजला, मगरा जि० जोधपुर द्वारा स्थापित की गई। इसका ब्याज शुद्धि कार्य व छोटे ट्रैक्टों के प्रकाशन अथवा गरीब छात्रों की सहायता पर व्यय किया जाएगा।

श्री डी० डी० पुरी छात्रवृत्ति स्मृति निधि

२५-३-९० को अन्तरंग बैठक में स्वीकृत

१२ हजार रुपए को यह निधि श्री वी० पी० पुरी चैयरमैन श्री डी० डी० पुरी चैरिटी ट्रस्ट १८ ९० कनाट सर्कस, नई दिल्ली द्वारा सभा में स्थापित की गई। ब्याज की राशि श्री डा० डी० पुरी नैरोबी) की स्मृति में प्रतिवर्ष योग्य छात्रों की छात्रवृत्ति में व्यय होगा।

श्रीमती कैलाश कुमारी खन्ना स्थिर निधि

२५ ३-९० को अन्तरंग द्वारा स्वीकृत

इस पांच हजार रुपए की निधिकर्ता, कैलाश कुमारी खन्ना, जाम नगर निधि का ब्याज गरीब विद्यार्थियों सन्यासियों और विधवाओं की सहायता में व्यय किया जाएगा।

अखिल भारतीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा द्वारा

एक लाख रुपए की तीन एफ० डी० रसीद सभा में जमा की हुई है।

श्री मोहनलाल मोहित मोरिशस स्थिर निधि

१३-१-६५ को अन्तरंग द्वारा स्वीकृत

प्रारम्भ में यह निधि ३ हजार रु० से स्थापित की गई थी। १९७५ में यह राशि बढ़ाकर ५० हजार रुपए हो गई थी परन्तु अब यह निधि श्री मोहित जी द्वारा समय समय पर वृद्धि किए जाते रहने से १०० ५०९-८ रुपए की हो गई है।

इस निधि का ब्याज आर्य विद्वानों द्वारा लिखित और सार्वदेशिक सभा द्वारा स्वीकृत ग्रन्थों के प्रकाशन में सभा द्वारा प्रयुक्त होगा। साथ ही मौरिशस के उन आर्य विद्यार्थियों को भी आवश्यकतानुसार सहायता दी जाएगी जो गुरुकुल व आर्य महाविद्यालय आदि में आर्य समाज की सेवार्थ उपदेशक का शिक्षण प्राप्त करते हो। इस वर्ष ब्याज राशि में से ५०००) श्री स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती को नकद दिए तथा २६०६-५० रुपए स्थिर निधि में जमा किए।

स्व० श्री सत्यपाल अग्रवाल पीड़ित सहायता स्थिर निधि

यह निधि स्व० श्री सत्यपाल अग्रवाल मो० बेगम सराय कला पो० अमरोहा द्वारा स्थापित की गई थी। इस समय यह निधि १२,९२७) की है। इस निधि का ब्याज पीड़ित लोगों की सेवा में सभा द्वारा व्यय किया जाएगा।

श्री करमचन्द बवेजा स्थिर निधि

यह निधि २ हजार रु० से श्री सुरेन्द्र बवेजा एम० १५ जगपुरा, नई दिल्ली की ओर से स्थापित की गई है। इसका ब्याज वेद प्रचार अथवा सभा जैसा उचित समझे व्यय किया जाएगा।

श्रीमती द्रोपदी देवी स्थिर निधि

यह निधि श्रीमती द्रोपदी देवी द्वारा श्री सुदर्शन कुमार कपूर ए० १ पारसदास गार्डन, शिमला द्वारा १० हजार रुपए के इन्दिरा विकास पत्रों द्वारा स्थापित की गयी है। विकास पत्र ५-३-१९९५ को भुगतान योग्य होंगे। उसके बाद ही निधि की शर्तों पर व्यवहार होगा। इस निधि का ब्याज वेद प्रचार तथा शुद्धि कार्य में लगाने की दानी महोदया की प्रार्थना है।

श्री भगवानदास धर्म प्रचार एवं छात्रवृत्ति सहायता स्थिर निधि

दस हजार रुपए से यह स्थिर निधि श्री भगवान दास द्वारा आर्य समाज पिम्परी, पूना ने स्थापित की है। इस निधि का आधा ब्याज धर्मप्रचार अथवा साहित्य प्रकाशन पर तथा आधा ब्याज निर्धन छात्रों की सहायता पर व्यय किया जाएगा।

१७ ९-१९९२ को अन्तरंग द्वारा स्वीकृत

स्व० श्री जगन्नाथ विग स्मृति स्थिर निधि

१७ २-९१ को अन्तरंग बैठक ने स्वीकृति दी

स्व० श्रीजगन्नाथ विग स्मृति स्थिर निधि १० हजार रु० की श्रीमती जगजीतवती विग १९ रोजगार्डन एन्कलेव लुधियाना ने अपने पति की स्मृति में स्थापित की है। इस निधि का ब्याज वृद्धों की सहायता में व्यय किया जाएगा।

श्रीमती इन्द्रावती मिसेज लाल स्थिर निधि

१७-२-९१ को अन्तरंग द्वारा स्वीकृत

श्रीमती इन्द्रावती मिसेज लाल स्थिरनिधि १२ हजार रुपए की स्थिरनिधि श्रीमती इन्द्रावती किराना मण्डी रामनगर गाजियाबाद ने स्थापित की है।

इस निधि का ब्याज ९ हजार रुपए का दयानन्द सन्यास आश्रम, गाजियाबाद में पढ़ने वाले किसी योग्य विद्यार्थी को अथवा गोपालन आदि पर तथा तीन हजार रुपए का ब्याज गुरुकुल हापुड़ रोड गाजियाबाद के लिए नगर आर्य समाज महिला गाजियाबाद के द्वारा दिया जाए। वहां यह राशि विद्यार्थियों के दूध पर व्यय की जावेगी।

स्व० श्रीमती पूनीदेवी धर्मपत्नी स्व चोथू जी स्थिर निधि

१७ २-१९९१ को अन्तरंग में स्वीकृत

स्व० श्रीमती पूनीदेवी धर्मपत्नी स्व० चोथू जी सांखला पूजला मगरा, जोधपुर की स्मृति में दो हजार रुपए की स्थिर निधि स्वीकार की गई। यह निधि श्री जगदीशसिंह आर्य पुत्र स्व० चोथू जी सांखला, जोधपुर ने स्थापित की है। निधि का ब्याज शुद्धि कार्य अथवा छोटे छोटे ट्रैक्ट छपवाने में व्यय किया जाएगा।

मास्टर मेहरचन्द मेहन होशियारपुर स्मृति स्थिर निधि

१५ १२ ८४ को अन्तरंग द्वारा स्वीकृत

(संस्थापक—श्री शांति स्वरूप मेहन)

प्रत्येक ५१००) की निधि के हिसाब से इसका ब्याज (क) टंकारा में किसी विद्यार्थी की विद्या पर (ख) मोहन आश्रम में दवाई हेतु, (ग) किसी गुरुकुल की योग्य एवं समाज प्रचार में लगनशील कन्या के अध्ययन पर सभा इन चार कामों में हिसाब से खर्च करे। (क्रमशः)

कुं० महोपाल सिंह जी आर्य बलिया (उ.प्र.)

आय समाज के मञ्च की शोभा यदि विद्वान महोपदेशको शास्त्राथ महारथियो यज्ञ के कर्मकाण्डी पडितो से रही है तो यह भी सत्य है कि इन विद्वानो के काय की पूर्ति, बिना भजनोपदेशको के अधूरी है। इसलिए आर्य समाज का प्रचार काय महोपदेशको और भजनोपदेशको के नाम पर दो कोटि म विभाजित किया गया है।

अब हम विद्वानो की कोटि गिनते हैं तो प० लेखराम जी स्वामी दशनानन्द जी स्वामी श्रद्धानन्द जी पडित रामचन्द्र देहलवी और नाना विद्वानो की मणिया थी और हैं—तो इन्ही के साथ इनकी पूर्ति हेतु—दादा बस्तीराम चौ० तेजसिंह कु० सुखलाल आय मुसाफिर प० प्रकाशचन्द्र कवि रत्न आदि सब। इन्ही के साथ सकडो शहरी व देहाती क्षत्र मे भजनो के द्वारा साहित्यिक व क्षत्रीय भाषाओ मे जो गीतो लोक गीतो मे ठोस प्रचार किया गया है उसका कोई मुकाबला नहीं हैं—

आज मैं जिस व्यक्ति के बारे मे लेखनी चला रहा हू वह और उनके कमठ उत्तर प्रदेश मे अपना महत्वपूण स्थान रखते हैं मेरा सकेत है श्री ठा० कु० महीपाल सिंह जी बलिया निवासी की ओर ?

आज स्थिति यह है कि पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार बगाल तक के उत्सव बिना कुवर साहब के नही हो सकते हैं। प्रचार शैली मे उत्साह भजनो मे प्रवाह भोजपुरी आदि भाषा मे उनके गीत प्रचार मे पसन्द किये जाते हैं।

कुवर महीपाल सिंह जी के पूज्य पिता स्व० ठा० गगासिंह जी अपने समय के प्रसिद्ध समाज सेवी प्रचारक एव क्रान्तिकारी बलिया एव पूर्वी क्षत्र मे व्यक्तित्व के धनी रहे हैं—उन्होने अपनी योजना के अनुसार चार पुत्र रत्न उत्पन्न किए और सस्कार ऐसे दिए हैं कि सभी आय समाज के क्षत्र मे अपना स्थान रखते है।

कुवर महीपाल सिंह जी के बड भ्राता प० विजयपाल शास्त्री आचाय एम ए पी एच डी होकर डी ए वी कालिज कानपुर म प्राध्यापक सस्कृत विभाग मे रहे और वहा से कायमुक्त होकर सारा समय आय समाज की सेवा मे दे रहे हैं

दूसरे वेदपाल जी भजनोपदेशक वाराणसी मे रहते हैं उ० प्र० सभा द्वारा फिर स्वतन्त्र होकर प्रचार काय मे व्यस्त है। तीसरे घर पर रहकर प्रचार प्रसार मे लगे हैं—

चतुथ व्यक्तित्व के धनी—सीध साढे ६ फुट जवान गोरा रग सफद खादी के वस्त्र मधुर हसमुख स्वभाव तेज तर्रार जोशीले वक्ता कु० महीपाल सिंह जी हैं जिनकी वाणी सरसता के साथ बरसती आग है। इसी कारण कई बार आप पर हमले भी किए गए और बडी मार भी खाई।

१९४६ मे काशी आ० स० की शोभा यात्रा मे लगडा हाफिज की मस्जिद से हमला किया गया उसमे आप सख्त घायल हुए। ओजस्वी वक्ता समय पर सही चोट करने के कारण सरकार की ओर से प्रचार मे प्रतिबन्ध भी लगाए गये हैं।

मैंने उन्हे जब ५० ५१ मे जैसा देखा था मुझे नैनी प्रयाग मे भी वैसे ही तदुरुस्त दिखाई पड। मैंने कहा कुवर साहब आप तो वैसे के वैसे ही है जैसा ४५ साल पहले देखा था हसकर बोले—भाई शास्त्रीजी जिन्दगी मे फाके मस्ती है स्वाभिमान के साथ जीवन बिताया है अगर जीवन मे कुछ कमिया आई हैं तो दोष मेरा रहा है और जो भी विशेषताए पा सका वह ऋषि दयानन्द की देन है और समय समय पर जिन विद्वानो का सम्पक पाया है उनकी कृपा का परिणाम है। हसकर जिया हू हसकर ही मरूगा। न रोना सीखा है और न रोना जाना है। यदि कही उनके स्वाभिमान को चोट पहुची है तो उत्सव छोडकर चला जाना स्वीकार है पैसा छोडना मन्जूर है पर स्वाभिमान पर चोट नही आने दी।

आर्य जनता मे जब चेतना भरने पर आपका उदघोष शिव ओम अम्बर के शब्दो मे—

आधिया लाओ लहू मे ज्वार को पैदा करो
कण्ठ मे क्रन्दन नही हुकार को पैदा करो।
फिर कुरुक्षत्री समर की भूमिका सजने लगी।
पाथ गाण्डीव मे टकार को पैदा करो ॥

क्रान्ति के गीतो की लहर देते हुए प्रात कालीन बेला में गीत गाया—

उमरिया बिताय गई प्रभु नहि चीन्हा ?

समय की लहर को पहचान कर जो प्रभावोत्पादक सरलतम और सिंह गर्जन युक्त वाणी का प्रसार किया करते हैं।

ऐसे है भाई कुवर महीपाल सिंह जी बलिया नरेश—मुझे ही नही बल्कि न जाने कितने मित्रो व बडो को तुम पर नाज है। आप इसी प्रकार ऋषि के मिशन मे जुझारू बनकर क्रियाशील रहें। इन शुभकामनाओ के साथ आपके जीवन की तरुणाई पर शतश बधाई—

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्य समाज के बढ़ते कदम

अम्बाला छावनी, आर्य समाज का मुख्य प्रचार केन्द्र

पिछले कई वर्षों से अम्बाला छावनी आर्यसमाज का मुख्य प्रचार केन्द्र रहा है। अम्बाला छावनी मे केवल दो आर्यसमाजें थी, आर्यसमाज कबाड़ी बाजार, आर्य समाज लालकुर्ती बाजार। पाकिस्तान बनने के पश्चात पुरुषार्थी भाईयो ने आर्य समाज कच्चा बाजार के नाम से तीसरी आर्य समाज बनाई थी। समय समय पर इन आर्य समाजो के मन्च से कई आय विद्वानो ने जनता को सम्बोधित किया है तथा इस नगर मे गौ रक्षा, राष्ट्रभाषा हिन्दी से सम्बन्धित अनेक सम्मेलन और सत्याग्रह भी हुए हैं। इस सन्दर्भ मे कुछ महानुभावो के नाम उल्लेखनीय है श्री रामगोपाल शालवाले, स्वर्गीय स्वामी रामेश्वरानन्दजी, स्वर्गीय स्वामी प्रकाश वीर शास्त्री भूतपूर्व ससद सदस्य, प्रो० शेरसिंह भूतपूर्व मन्त्री भारत सरकार, श्रीमती शान्नोदेवी एम एल सी, स्वर्गीय महात्मा आनन्द स्वामी जी, यशपाल जी वेद प्रचार अधिष्ठाता आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब, स्वर्गीय महाशय कृष्ण (प्रताप जालन्धर)।

रजमैन्ट बाजार के निवासी कृष्णलाल अग्रवाल (कपडे वाले) ने बहुत कठिन परिश्रम करके रजमैन्ट बाजार मे चौथी आर्य समाज की स्थापना की थी, परन्तु इस बाजार की धनाढ्य व्यापारिक जनता की वैदिक धर्म मे विशेष रुचि न होने के कारण आर्य समाज रजमैन्ट बाजार को अधिक सफलता प्राप्त नही हुई। यहा से केवल ५ मील दूर पर अम्बाला शहर के विशाल व्यापारिक नगर मे रेलवे रोड अम्बाला शहरके नाम से एक आर्यसमाज थी, समयके साथ अब दोनो नगरो मे और भी आर्य समाजें खुल गई हैं। मुझे स्मरण है कि एक समय हमारे सिक्ख भाइयो ने तोपखाना बाजार अम्बाला छावनी मे हिन्दुओ के एक मन्दिर को क्षति पहुचाई थी, उस समय भी आर्य समाज के कार्यकर्ताओ ने बडे जोश से स्थिति का मुकाबला किया था जब कि हमारे पौराणिक पोप चादर तान कर सो रहे थे।

दोनो पडोसी नगरो मे कई स्कूल तथा कालेज आर्य समाज के तथा डी ए वी के नाम से चल रहे हैं, जिनमे से आर्य गर्ल्ज कालेज (रजमैन्ट बाजार) को स्थापित करने का श्रेय रजमैन्ट बाजार व्यापारिक जनता को प्राप्त है, इसी कालेज मे मेरी पूज्या बहन डा० श्रीमती कमला गुप्ता एम ए (हिन्दी, सस्कृत) पी एच डी प्रिंसपल रह चुकी है। ख्याति प्राप्त भूगोल विशेषज्ञ आर्य विद्वान रायबहादुर सोहनलाल ने भी इसी नगर मे बी टी कालेज की स्थापना की है।

मैं बहुत वर्षों से सार्वदेशिक तथा आर्य जगत साप्ताहिक समाचार पत्रो मे अम्बाला की आर्य समाजो की कोई भी गतिविधि न देखकर बहुत चिन्तित था, परन्तु अब मैं रजमैन्ट बाजार की जनता को बधाई देता हू जिन्होने भागीरथ पुरुषार्थ करके अम्बाला छावनी मे केन्द्रीय आर्य सभा की स्थापना की है, आशा है कि एक बार फिर अम्बाला मे वेदो की मधुर ध्वनि गूजेगी।

मदनलाल गुप्ता
यू एस ए

आर्य समाज नैनी प्रयाग का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज नैनी, प्रयाग का त्रयोदशम् वार्षिकोत्सव बडे समारोह पूर्वक २७ २८ एव २९ जनवरी १९९३ बुधवार, बृहस्पतिवार और शुक्रवार को प्रात ७ से १० साय ७ से ११ बजे तक धर्मशाला नैनी बाजार मे मनाया गया। इस अवसर पर आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान और भजनोपदेशको ने अपने अमृतमय वचनो से श्रोताओ को लाभान्वित किया।

इस समारोह मे श्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, प्रसिद्ध भजनोपदेशक ठा० महिपालसिंहजी बलिया, श्री राधेमोहन जी इलाहाबाद, प० पुन्नूलाल जी आर्य, भजनोपदेशक इलाहाबाद ने भी भाग लिया।

भारत में मुस्लिम देशों के धन का प्रवाह

(पृष्ठ ३ का शेष)

२१ ५५१ मे कई लाख रुपये फिक्स डिपाजिट कराये। इन खातो मे सिर्फ १५ जून १९८७ से २८ दिसम्बर १९८७ तक ही ३२०३३५ रुपये जमा किये जा चुके थे। बाद मे दो बार पाच पाच हजार रुपया निकाला गया। आरोप यह है कि शहाबुद्दीन ने अपने निजी सचिव अहमद अली कासमी को इस रकम से व्यक्तिगत खर्च के लिए ५० हजार रुपये दे दिये। मजलिस के सम्मेलन मे सैयद शहाबुद्दीन के इस काम का बडा विरोध हुआ लेकिन उन्होने अभी तक इस बाबत मे कोई सफाई पेश नही की है। बाद मे कहा गया कि यह धन मेरठ नही बल्कि पूरे देश के दगापीडितो के लिए जमा किया गया है। लेकिन अभी तक बाटा नही गया। बाद मे जमाते इस्लामी के उपाध्यक्ष शफी मुनीस ने इस तरह धन सग्रह को ही गलत ठहराया।

प्रति [illegible] सगठन जमायते इस्लामी के पास मौजूद चल अचल सम्पत्ति का हिसाब लगाना ही मुश्किल है। दक्षिण भारत मे इस सगठन के पास खासी अचल सम्पत्ति है। दिल्ली मे अबुल फजल एन्क्लेव मे निर्माणाधीन जमायते इस्लामी का राष्ट्रीय परिसर ही कई एकड महगी जमीन मे स्थित है। आरोप है कि दक्षिण दिल्ली मे स्थित करोडो रुपये की इस जमीन की खरीद के लिए विदेशो से धन लिया गया। देश भर मे इस सगठन के ५२ नर्सरी स्कूल, ४१ स्कूल, १० कालेज, २०५ प्रौढ शिक्षा केन्द्र, १०८४ पुस्तकालय १० तकनीकी शिक्षा केन्द्र तथा छह छात्रावास है। इनके सचालन मे अनेक देशी-विदेशी सस्थाए पैसा देती हैं। आरोप है कि इतना बडा शिक्षा तन्त्र भी सिर्फ जमायते इस्लामी के सदस्यो के लिए ही लाभप्रद है। गैर जमायत परिवार के लोगो को लाखो रुपये चन्दा लेकर ही प्रवेश दिया जाता है। इन सस्थाओ मे शिक्षा भी इस्लामी दायरे तक ही सीमित है।

जमायते इस्लामी ने १९९२ मे अलफलाह इस्लामिक सोसायटी बनाकर विज्ञापन निकाला कि मुसलमान दीन के नाम पर खुले दिल से दान दे। बताया जाता है कि इस अपील पर विदेशो से खासा धन बटोरा गया। इसी तरह जमायत के कई क्षेत्रीय सगठन भी धन वसूली करते रहते है।

कुल मिलाकर मुस्लिम समाज मे अपने तथाकथित [illegible] माओ को लेकर जबरदस्त बहस मुबाहिसा चल रहा है। दिल्ली मे पिछले दिनो हुई मुस्लिम बुद्धिजीवियो की कान्फ्रेंस इसकी अभिव्यक्ति का एक उदाहरण है। सरकार और अन्य विश्वस्त सूत्रो से प्राप्त जानकारी के मुताबिक सऊदी अरब, लीबिया और ईरान मे भारतीय मुस्लिम नेताओ और सस्थाओ को मिल रही आर्थिक सहायता की सूची इस प्रकार हैं

(१) श्री अब्दुल अजीज, ट्रस्टी मदरसा एण्ड मस्जिद उल-रिजूल उलूम, माछीवाला, दिल्ली एक लाख रुपए (२) श्री अब्दुल हमीद रहमानी, ट्रस्टी इस्लामिक अरेबिक इस्टीट्यूट जकाबाई स्ट्रीट, बटाला हाउस, जाकिर नगर ओखला, नयी दिल्ली, चार लाख रुपये, (३) दारूल उलूम एहमदिया, लहरिया सराय, दरभगा (बिहार), छह लाख रुपए, (४) मौलाना अब्दुल हुसैनी, नदवी नदवा यूनिवर्सिटी, लखनऊ, पाच लाख रुपये, (५) दार ए उलूम, देवबन्द सहारनपुर, आठ लाख रुपये। (६) मौलाना मोहम्मद उमर, हैड आफ इस्लामी इन मदरसा सराजूल उलूम, भोन्देयार व माहवा गोण्डा उ० प्र०), पाच लाख रुपये। (७) मरकाजी दार ए उलूम, वाराणसी- एक लाख रु०। (८) मफताह उल उलूम, मैन आजमगढ (उ० प्र०) एक लाख रुपए। (९) मिया साहेब, ट्रस्टी आफ फाटक हबास खान मदरसा (अरेबिक), दिल्ली, चार लाख रुपये। (१०) मो० निजामुद्दीन मजाहरी, ट्रस्टी आफ मदरसा जामिया जकारिया पूर्णिया (बिहार) ७ लाख ४ हजार रु०। (११) श्री हुसैन अब्दुल्लाह जे डी टी इस्लामिक ओरफाज कमेटी, अमरीकी डालर ६३९२ ३३। (१२) द सैकेट्री, एन डब्ल्यू एफ हाई स्कूल इस, मुगेर (बिहार) ३ लाख रु०। (१३) श्री एम बी राथोड, मानव सचिव, हमारा मढ, गुजरात, १ लाख २० हजार। (१४) श्री मुस्लिम वेलफेयर सोसायटी, ऊटकमड (तमिलनाडु) एक लाख ३० हजार रु०। (१५) मदरसा इस्लामी मस्जिद, आई टी ओ नई दिल्ली, एक लाख रु०। (१६) एडवोकेट अहमद मानीपूर, अध्यक्ष-इदगाचल मस्जिद एड मदरसा कमेटी, कन्नानूर (केरल), ५ लाख ६ हजार। (१७) मो० अब्दुल कयूम, अध्यक्ष मदरसा अरेबिया, कुन्दूर (आ०प्र०), १ लाख रु०। (१८) मोहम्मद अब्दुल्लाह मोहम्मद अफजल [illegible] अरेबिक कालेज, [illegible], जिला-उ. एरकोट (तमिलनाडु) प्रति वर्ष—२ लाख १६ हजार। (१९) जामिया तुस्साल्हात, राहे पुर्तजा, सिविल लाइन रामपुर (उ० प्र०), १२ हजार रियाल। (२०) श्री सादिक इल रमजान रेक्टर-जामिया मिलिया सूर सागर, जोधपुर—१ लाख रु०। (२१) रफीक-उल-धानी आफ हार्ट एड डाइबेटिक क्लीनिक, ४ कुधवाना रोड, भोपाल, १ लाख रु०। (२२) जामियातुस सलाफियाह, वाराणसी, अमेरिकी डालर २० हजार। (२३) दारूल उल उलूम, देवबन्द, सहारनपुर, १ लाख १५ हजार रु०। (२४) मदरसा-ए-अनवारूल इस्लाम, तिरुपति (आ० प्र०) अमरीकी डालर २० हजार।

इसके अलावा श्री हक सईद अहमद अली उमेरी सयुक्त महासचिव दारूल इस्लाम कोमराबाद (तमिलनाडु), सैयद अलमुद्दीन जिला निजामाबाद (आ प्र) इस्लामिक इन्स्टीट्यूशन, मालेगाव (नासिक), मस्जिद ए-मीरा एसोसिएशन मछलीपटटनम (आ० प्र०), मोहम्मद असहाब जनरल सैक्रेटरी अनवारूल इस्लाम यतीमखाना एण्ड औबिक कालेज केरल, पी के अलवी मल्लापुरम (केरल) सहित साठ से अधिक व्यक्तियो और सगठनो को सऊदी अरब से नियमित सहायता मिल रही है।

विश्वस्त जानकारो के अनुसार १९८९ के ससदीय चुनाव मे लीबिया से एक प्रमुख राजनीतिक दल के ससदीय प्रत्याशियो को भारी धनराशि दी गई। इसके अलावा लीबिया से धन पाने वाले मुस्लिम नेताओ मे जामा मस्जिद दिल्ली के शाही इमाम सैयद अब्दुल्ला बुखारी और उनके बेटे नायब इमाम सैयद अहमद बुखारी के नाम सबसे प्रमुख है। नायब इमाम को उनके सगठन 'आदम सेना' की गतिविधियो के लिए अथाह धन मिल रहा है। इसके अतिरिक्त १९८९ मे दो लाख, १९९० मे तीन लाख, और १९९१ मे ढाई लाख रुपया उन्हें मिला है। बडे शाही इमाम को भी अक्टूबर १९९१ मे तीन लाख रुपया लीबिया से मिला था। आल इडिया मुस्लिम यूथ कान्वेंशन के जनरल सेक्रेटरी जावेद हबीबखान को भी लाखों रु० की सहायता लीबियासे मिल रही हैं। वल्ड इस्लामिक काल सोसायटी के पदाधिकारी डा० अली फरहत चुनाव के दौरान भारत आते हैं और राजनीतिक दलो तथा अन्य प्रत्याशियो को पैसा बाटते हैं।

लगभग दो दर्जन ऐसे नाम है जिन्हें ईरान से सहायता मिल रही है। इनमे राजनीतिक और धार्मिक नेताओ के अलावा उर्दू समाचार पत्रो से जुडे सम्पादको के भी नाम हैं। दिल्ली के शाही इमाम को ईरान की ओर से एक एम्बुलेंस गाडी जिसमे आपरेशन थिएटर भी है दी गई है। दिल्ली के सैफीन्तुन हिदायती ट्रस्ट प्रस्तावित इस्लामिक बैंक एड मार्केटिंग सोसायटी, लखनऊ के हैदर महदी कारगिल के मौलाना आबाद रेजा सहित अनेक लोगो को ईरान से मदद मिल रही है। और भी मुस्लिम देशो से हिन्दुस्तान के मुसलमानो के नाम से मुस्लिम नेता धन प्राप्त कर रहे हैं अधिकाश तथ्यो की पूरी जानकारी भारत सरकार के पास मौजूद है। लेकिन कोई जाच पडताल नही हो रही है कि यह धन क्यो लिया जा रहा है। क्या मुस्लिम कौम के तथाकथित रहनुमा इस धन सम्पत्ति का कुछ हिस्सा गरीब पिछडे और बेरोजगार मुसलमानो पर खर्च करेंगे। ●

आचार्यकुल कन्या महाविद्यालय का वार्षिकोत्सव

आचार्यकुल लोवा कला के ३२ वें सालाना जलसे पर आपको सादर आमन्त्रित किया जाता है। उत्सव १३, १४ मार्च १९९३ ई० शनिवार तथा रविवार को बडी धूम धाम से मनाया जावेगा। उत्सव मे बडे-बडे विद्वान सन्यासी, महात्मा तथा भजनीक पधारेंगे सभी सज्जन विद्वानो के सदुपदेशो से लाभ उठावे। तथा अपने जीवन को कृतार्थ करें।

—कु० शान्ति स्नातिका आचार्या

शोक समाचार

श्री नन्दगोपाल वधावन का गत ४ नवम्बर को मीरजापुर मे हृदयगति रूक जाने से निधन हो गया। श्रीवधावन जी कट्टर आर्य समाजी तथा अग्रेजी भाषा के महान ज्ञाता थे। उनकी इच्छा थी कि वे वेदो का अग्रेजी अनुवाद करें लेकिन उनकी यह इच्छा पूर्ण नही हो सकी। नगर के अनेको गणमान्य व्यक्ति उनकी शवयात्रा मे सम्मलित हुये।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी० एस० ११०४६/९३ सार्वदेशिक साप्ताहिक (७-३ १९९३) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U (C) ९३
R N 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U (C) 93 Post in N D P.S.O on 4-5-3/1993

वार्षिकोत्सव एवं यजुर्वेद पारायण महायज्ञ

धर्मप्रेमी बन्धुओ ! आपके प्रिय गुरुकुल पूठ का वार्षिक उत्सव १९, २०, २१ मार्च १९९३ को समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है । इस अवसर पर विभिन्न सम्मेलनो का आयोजन भी किया जा रहा है। समारोह मे देश के उच्चकोटि के विद्वान सन्यासी, नेता एव भजनोपदेशक पधार रहे हैं। आप ~व इष्ट मित्रों सहित पधार कर अनुगृहीत करें।

निवेदक —

सत्यानन्द आर्य (प्रधान) धर्मपाल आचार्य (संचालक)
यशपाल सुधांशु (उपप्रधान) डा० शिवकुमार शास्त्री (महामन्त्री)

गुरुकुल महाविद्यालय पूठ, जिला गाजियाबाद (उ० प्र०)

आर्य समाज की स्थापना

मेघ नगर जि० झाबुआ म० प्र० मे २१ १२-९२ को नवीन आर्य समाज की स्थापना की गई। इस अवसर पर मेघ नगर बड़े तालाब पर यज्ञ का कार्यक्रम रखा गया। जिसमे सहस्त्रों लोगो ने आहुतियां डाली तदुपरात निम्न अधिकारी निर्वाचित किये गये। अध्यक्ष श्री पं० आर्येन्द्र कुमार शास्त्री प्रधान, लक्ष्मणसिंह आर्य, महामन्त्री प० धर्मवीर योगाचार्य तथा वरसिंह आर्य कोषाध्यक्ष ।

आर्य समाजों के निर्वाचन

आर्य समाज मन्दिर केशवपुरम् दिल्ली—श्री मनवीरसिंह राणा प्रधान, श्री अशोक कुमार गर्ग मन्त्री, श्री श्रीराम कोषाध्यक्ष चुने गये ।

आर्य समाज जयपुरा विस्तार—चौ० निहालसिंह प्रधान, श्री महेन्द्र आर्य मन्त्री श्री मनोहरलाल वर्मा कोषाध्यक्ष चुने गये ।

आर्य समाज हरदेवेन्द्र नगर कानपुर—श्री सीताराम आर्य प्रधान, श्री रामजी आर्य मन्त्री, श्री सत्यनारायण प्रसाद कोषाध्यक्ष चुने गये ।

आर्य समाज औरैया—श्री रामनाथ आर्य प्रधान, डा० सर्वेश आर्य मन्त्री, श्री बाबूराम शुक्ल कोषाध्यक्ष चुने गये ।

आर्य समाज कबीरचौरा, वाराणसी—श्री रामराज आर्य प्रधान, श्री विजय नाथ आर्य मन्त्री, श्री कन्हैयालाल कोषाध्यक्ष चुने गये ।

आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव श्री ओमप्रकाश आर्य प्रधान, श्री ओमप्रकाश चुटानी मन्त्री, श्री श्याम सुन्दर आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये ।

आर्य समाज जामनगर—श्री कान्तिलाल अमेनाढ़ा प्रधान श्री धर्मवीर के खन्ना मन्त्री, श्री कान्तीलाल डी मेहता कोषाध्यक्ष चुने गये ।

आर्य समाज विन्दापुर—श्री जन्मेजय जी प्रधान श्री डी सी शर्मा मन्त्री श्री रामपाल शर्मा कोषाध्यक्ष चुने गये ।

वैदिक वाचनालय का भव्य उद्घाटन

आर्यसमाज राजनगर गाजियाबाद मे शुक्रवार दिनाक १६ फरवरी १९९३ को ऋषि बोधोत्सव के पुनीत अवसर पर विख्यात उद्योगपति, समाजसेवी एव वैदिक धर्मावलम्बी श्री वेदपाल कोढा के करकमलो द्वारा वैदिक पुस्तकालय एव वाचनालय का उद्घाटन हुआ। श्री कोढा ने आशा व्यक्त की कि आर्य-समाज बहुमुखी जनसेवा की अपनी गौरवमयी परम्परा को निरन्तर आगे बढ़ाता रहेगा। इस अवसर पर वैदिक विद्वान आचार्य छविकृष्ण शास्त्री का भी ओजस्वी व्याख्यान हुआ।

—ब्रह्मानन्द मन्त्री

सामवेद पारायण महायज्ञ एव सतसग

धनवन्तरि नगर शुक्ला कालोनी गंगापुर सिटी मे ८ जनवरी से १४ जनवरी तक सामवेद पारायण महायज्ञ एव सतसग समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रतिदिन ८ बजे से ११ बजे तक सामवेद पारायण महायज्ञ तथा वेद प्रवचन दोपहर २ बजे से ४ बजे तक यज्ञ तथा भजन प्रवचन और रात्रि ७-३० से ९ तक भजन तथा सामाजिक राष्ट्रीय चिन्तन पर विशेष प्रवचन हुये। इस अवसर पर अनेको सस्कार भी सम्पन्न कराये गये। समारोह म भारतवर्ष के अनेको ख्याति प्राप्त साधु सन्यासी तथा भजनोपदेशको ने अपने अमृत वचनो स श्रोताओ को अत्यन्त प्रभावित किया।

आर्य समाज का आना आवश्यक

सर्व प्रथम आर्य समाज के नियम हमे राजनीति सेवा करने की आज्ञा देते है। सब की उन्नति ससार का उपकार राजनीति मे जाकर शासन की शक्ति से अधिक किया जा सकता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश का षष्ठम समुल्लास निष्प्रयोजन नहीं बनाया था राजनीति का पाठ्यक्रम आर्य समाज के पास है और राजनीति अज्ञानी, अन्धविश्वासी, सम्प्रदायवादियो के हाथ सौंप दी है और इस तमाशे को आर्य समाज बैठा देख रहा है। ऐसा कैसे क्यो हो रहा है परेशानी का कारण है क्या आर्य समाज भी साम्प्रदायिकता का शिकार है उसकी आत्मा मे इतनी कमजोरी क्यो है चिन्तन का विषय है आर्य समाज के विद्वान मुझे अवगत कराने की कृपा करें क्योंकि मुझे गुरुवर विरजानन्द के जनपद मे मुख पद मिला है। शिक्षा के क्षेत्र मे राष्ट्रीय एकता के एक विचार की शिक्षा आवश्यक है वह एक स्वतन्त्र शिक्षा पालिका के द्वारा ही सम्भव है ऐसा कुछ भी न होकर गुरुओ पर नए नए परीक्षण हो रहे हैं ऐसे में बेबस इस देश का मनुष्य ललचायी आखो से आर्य समाज को देखता है परन्तु । आपके विचारो की शक्ति के आधार पर भौतिक विज्ञानी डा० जानहैगलिन अमेरिका जैसे देश में नेचुरल ला पार्टी बनाकर वेद विज्ञान आधार पर राजनीतिक यात्रा शुरू कर सकते हैं फिर आर्यावर्त के लोगो को भी अपने घर की कीमती विचारधारा पर ध्यान देकर आदेशानम् जब केतुरन्ने का कार्य करना चाहिए आशा है आर्य समाज के विद्वान प्रार्थना पर विचार कर कोई महत्वपूर्ण निर्णय लेंगे।

—चन्द्रभान 'अग्र', मन्त्री, मथुरा

शताब्दी समारोह

नगर आर्य समाज गगा प्रसाद रोड लखनऊ का शताब्दी समारोह १९ से २१ फरवरी तक समारोहपूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्यजगत के प्रकाड विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहें हैं। समारोह में अनेकों सम्मेलनो का आयोजन भी किया जा रहा है।

ग्रामीण महिला जन जागरूकता शिविर

गत दिनो महर्षि दयानन्द शिक्षण समिति के अन्तर्गत जावर मे ग्रामीण महिला जन जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। शिविर के समापन समारोह के अवसर पर गुरुसिंह सभा के अध्यक्ष श्री जयमलसिंह राठपाल ने कहा कि ग्राम व ग्रामीण महिलाओं के सहयोग से ही भारत आगे बढ़ेगा, गांव देश की उन्नति मे प्रथम कड़ी है। इस अवसर पर श्री मनोहरलाल जैन सहित अनेको व्यक्तियो ने ग्रामीण महिलाओं को सम्बोधित किया।

सूचना

आर्य वीर दल पूर्वी उत्तर प्रदेश की कार्यकारिणी एव समस्त जिला सचालको की एक आवश्यकीय बैठक १४ मार्च को दिन १० बजे से आर्यसमाज लल्लापुरा, वाराणसी मे होगी। वर्ष १९९२ का आय-व्यय एव नये वर्ष हेतु कार्यकारिणी की घोषणा भी की जायेगी। —राजेन्द्रसिंह, मन्त्री

शंकर प्रसाद आर्य का स्वर्गवास

श्री शंकर प्रसाद आर्य बसन्तपुर सीवान का ७-२ १९९३ को स्वर्गवास हो गया। श्री आर्य आर्यसमाज क कमठ कायकर्ता थे उनके निधन से आसपास के क्षेत्र शोक की लहर व्याप्त हो गई। उनको श्रद्धांजलि देने हेतु २२ फरवरी को हवन यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमे क्षेत्र के अनेकों व्यक्तियो ने यज्ञोपरांत उनको भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

महर्षि दयानन्द उवाच

● अन्य वे महाशय है जो अपने तन, मन और धन से संसार का अधिक उपकार सिद्ध करते हैं। निन्दनीय मनुष्य वे हैं जो अपनी अज्ञानता से स्वार्थवश होकर अपने तन, मन, धन से जगत् मे पर हानि करके बड़े लाभ का नाश करते हैं। सृष्टिक्रम से ठीक-ठीक यही निश्चय होता है कि परमेश्वर ने जो-जो वस्तुएं बनाई हैं वह पूर्ण उपकार लेने के लिए है, अल्प लाभ से महा हानि करने के अथ नही ?

● कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र   दूरभाष । ३२७४७७१   वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे

वर्ष ३१ अंक ८]   दयानन्दाब्द १६९   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९३   चैत्र कृ० ७   सं० २०४९   १४ मार्च १९९३

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा २४-३-९३ को

आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोह मनायें

समस्त आर्य जनों से सभा-प्रधान जी का निवेदन

आगामी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा सं० २०५० तदनुसार २४ मार्च १९९३ को समस्त आर्य जगत् द्वारा आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह पूर्वक मनाए जाने की प्रेरणा करते हुए सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती ने सभी आर्य जनों के प्रति शुभ कामनाये व्यक्त की है। इसी दिन सर्व प्रथम सन् १८७५ में युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने बम्बई मे आर्यसमाज की स्थापना की थी।

आर्य समाज की स्थापना का मुख्य उद्देश्य वेदप्रचार, कुरीति निवारण, अस्पृश्यता निवारण, मद्य-निषेध गौरक्षा, तथा चरित्र निर्माण के कार्य को योजनाबद्ध ढंग से आगे बढाना है।

अतः सभी आर्य समाजों को निर्देश दिया जाता है कि इस दिन—

१—प्रातःकाल प्रभात फेरी का आयोजन उत्साह पूर्वक किया जावे।

२—वेद प्रचार कार्यक्रमों को प्रमुखता दें। प्रातः यज्ञ के उपरान्त योग्य विद्वानों द्वारा वैदिक सिद्धान्तो पर प्रवचन कराये जाये।

३—यज्ञ के उपरान्त सार्वजनिक सभाओं का आयोजन करके आर्य समाज के कार्यों का सिंहावलोकन किया जाये तथा अन्य लोगों को आर्य समाज में आने की प्रेरणा की जाये।

४—इस दिन प्रत्येक आर्य परिवार अपने घरों में दीपमाला करें तथा ओ३म् ध्वज फहराये, आर्य समाज मन्दिरों में भी रोशनी की व्यवस्था और ओ३म् ध्वज फहराया जाये।

५—अपने क्षेत्र में भी आर्य समाजों की स्थापना की जाये।

६—प्रत्येक आर्य एवं आर्य सभासद आत्म निरीक्षण करके देखे कि उनके वैयक्तिक और सामाजिक आचरण मे आर्य समाज का गौरव बढा है या नहीं ? यदि कोई त्रुटि रही हो तो उसमें सुधार करके अपने को आर्य समाज के लिये अधिकाधिक उपयोगी बनाने का प्रयत्न करना चाहिये।

७—इस दिन समस्त आर्य समाजें सार्वदेशिक सभा की वेद प्रचार निधि के लिये अधिक से अधिक धन संग्रह करके सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२ के पते पर धनादेश या बैंक ड्राफ्ट द्वारा भिजवायें।

८—सामूहिक यज्ञ, सहभोजों का आयोजन करके छुआछूत उन्मूलन के कार्य को भी बल देना चाहिये।

९—महर्षि दयानन्द सरस्वती जिनका १६९वां जन्म दिवस १६ फरवरी १९९३ को मनाया गया था, उनके जीवन चरित्र और कार्यों के प्रति भी जन सभाओं द्वारा जनता में अधिकाधिक प्रचार किया जावे।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

ज्योति मिले और अमर हों

सत्रस्य ऋद्धिरस्यगन्म
ज्योतिरमृता अभूम।
दिवं पृथिव्या अध्यारुहाम-
अविदाम देवान् स्वर्ज्योतिः ॥
यजु० ८-५२ ॥

शब्दार्थ—(सत्रस्य) यज्ञ की, आत्मत्याग की, (ऋद्धिः) समृद्धि या सिद्धि, (असि) हो। (ज्योतिः) प्रकाश या तेज को, (अगन्म) हम प्राप्त हुए। (अमृताः अभूम) हम अमर हो गए।(पृथिव्याः) पृथिवी से, (दिवम्) द्युलोक को, (अधि आरुहाम) चढ़े, गए। (देवान्) देवों को,(अविदाम) प्राप्त किया। (स्वः ज्योतिः अविदाम) स्वर्गीय या दिव्य ज्योति को पाया।

अनुशीलन—इस मन्त्र में भी दिव्य ज्योति की कामना की गई है। ज्योति की प्राप्ति का साधन बताया गया है—आत्मत्याग। आत्मत्याग से ज्योति की प्राप्ति होती है। उसका फल यह है कि वह भौतिकता से ऊपर उठता है और अध्यात्मरूपी ज्योति को प्राप्त करता है।

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक :
डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म दिवस एवं बोधोत्सव समारोह पूर्वक सम्पन्न

आर्य समाज तात्याटोपे नगर भोपाल—मे महर्षि का १६९ वा जन्म-दिवस समारोह, सार्वदेशिक सभा के निर्देशानुसार १६ फरवरी को म० प्र० की राजधानी भोपाल मे समस्त आर्य समाजों तथा सस्थाओ के संयुक्त तत्वावधान मे आर्य समाज तात्या टोपे नगर भोपाल के प्रागण मे श्री लक्ष्मी नारायण शर्मा भू० पू० सहकारिता मन्त्री की अध्यक्षता मे हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर अनेको गणमान्य व्यक्तियो ने सभा को सम्बोधित किया। तथा विद्यालय के छात्र छात्राओं ने रगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किये।

आर्य केन्द्रीय मभा कलकत्ता—के तत्वावधान मे १९ फरवरी १९९१ को कलकत्ता के मध्य मे स्थित आकलैण्ड स्क्वायर पार्क मे विराट आयोजन के साथ भव्य रूप मे ऋषि बोधोत्सव हर्षोल्लास के साथ सहस्रो आर्य नर-नारियो की उपस्थिति मे मनाया गया। इस कार्यक्रम का विशेष आकर्षण पारिवारिक यज्ञ था ७६ यज्ञ कुण्डो पर एक यज्ञ सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता डा० हीरालाल चोपडा ने की तथा विशिष्ट अतिथि भू० पू० मन्त्री श्री यतिन चक्रवर्ती तथा मुख्य अतिथि श्री देवकीनन्दन पोद्दार बगाल सरकार थे। इस अवसर पर बच्चो की एक चित्र प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया।

दयानन्द कन्या विद्यालय पटना—मे महर्षि दयानन्द सरस्वती का १६९वा जन्मदिवस समारोह मुख्यमन्त्री श्री लालू प्रसाद यादव की उपस्थिति मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अनेको गणमान्य नागरिको ने स्वामी दयानन्द सरस्वती को महान समाज सुधारक, वर्णभेद, जातिभेद मिटाने वाला और वैदिक धर्म के पुनरुत्थान हेतु कठिन संघर्ष करने वाला बताया समारोह की अध्यक्षता बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री भूप नारायण शास्त्री ने की। मुख्यमन्त्री ने स्वामी दयानन्द सरस्वती की जीवनी पर एक स्मारिका का भी विमोचन किया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मोत्सव तथा बोधोत्सव देश के प्रत्येक स्थान मे समारोह पूर्वक मनाया गया। स्थानाभाव के कारण आर्य समाजो तथा सस्थाओ के नाम प्रकाशित किये जा रहे है। आर्य समाज सरदार पटेल माग खलासी लाइन सहारनपुर, आर्य समाज खण्डवा म० प्र०, आर्य समाज सुल्तानपुर पट्टी नैनीताल, सर्वदानन्द गुरुकुल महाविद्यालय साधु आश्रम आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय नर्मदापुरम होशगाबाद आर्य समाज बीसलपुर (उ० प्र०) आर्य पुत्री पाठशाला गिदडवाहा, आर्य समाज अमरोहा आर्य समाज रजपुरा बदायू, आर्य समाज सिविल लाइन्स अलीगढ, आर्य समाज बागपत मेरठ आर्य समाज फैजाबाद, आर्य समाज पुरानी गुदरी बेतिया बिहार आर्य समाज इन्दौर बुलन्दशहर आर्य समाज लहेरिया सराय, आर्य वीर दल तात्यटोपे नगर भोपाल, आर्य समाज मोरगा आर्य समाज माडल टाउन लुधियाना, आर्य समाज जामनगर, आर्य-समाज डालटन गज पलामू (बिहार) आर्य समाज देवबन्द, अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टकारा, आर्य समाज जौनपुर।

दयानन्द संस्थान का वार्षिकोत्सव एवं वेदभिक्षु जयन्ती

दयानन्द संस्थान और 'जनज्ञान' मासिक के सस्थापक महात्मा वेदभिक्षु की ६५वी जयन्ती और दयानन्द सस्थान का वार्षिकोत्सव १० से १४ मार्च तक वेदमन्दिर इब्राहीमपुर दिल्ली मे आयोजित किया गया है। इस समारोह के अन्तर्गत विभिन्न स्थानो पर भजन प्रवचन एव गोष्ठियो का आयोजन किया गया है। समारोह मे आर्य जगत के प्रतिष्ठित विद्वानो, सामाजिक कार्यकर्ताओ तथा भजनोपदेशको को आमन्त्रित किया गया है। १४ मार्च को प्रात १० बजे से २ बजे तक होने वाले आर्य सम्मेलन की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी करेगे। अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर कार्यक्रम को सफल बनायें।

पल-पल पीर बही है

इतने घाव हुए सीने मे, इतनी व्यथा सही है।
इन नयनो से पिघल-पिघल कर पल-पल पीर बही है॥
जब भी बोलो तब ही बोली बन्दूको की बोली।
हत्यारो ने खुल कर खेली रोज खून की होली॥
हया-शर्म का बेरहमो ने पीट दिया दीवाला।
बहन-बेटियो के सुहाग को तार-तार कर डाला॥
इतने ढाये जुल्म कि जिनकी सीमा नही रही है।
इन नयनो से पिघल-पिघल कर पल-पल पीर बही है॥
मा से बेटा, पत्नी से पति, पिता पुत्र से छीना।
किस्मत मे लिख दिया सभी के घूट जहर के पीना॥
जाने कब का द्रोह चुकाया, कब का बैर निकाला।
'कत्लगाह' मे इस धरती को परिवर्तित कर डाला॥
यह ही साजिश रही हमेशा बाकी कुछ मत छोडो।
इस समाज को इस प्रदेश को और देश को तोडो॥
बडे यत्न से आज सितम की कुछ दीवार ढही है।
इन नयनो से पिघल-पिघल कर पल-पल पीर बही है॥
उठो समर्थ जन शासक लोगो मिलकर फर्ज निभाओ।
जिनके घर-परिवार उजड गए उनको गले लगाओ॥
खतरा खत्म हो गया मन से ऐसा वहम निकालो।
आग दबी है बुझी नही है इस पर पानी डालो॥
सही वक्त पर सही कदम ही होता सदा सही है।
इन नयनो मे पिघल-पिघल कर पल-पल पीर बही॥

—विजय निर्बाध

ज्योति मिले और अमर हों

(पृष्ठ १ का शेष)

इस मन्त्र मे आत्म त्याग, स्वार्थभावना परित्याग या आत्म-बलिदान को सिद्धि बताया गया है। इससे ज्योति मिलती है और ज्योति से अमरत्व या मोक्ष की प्राप्ति होती है। मोक्ष या अमरता जीवन का सर्वोत्तम लक्ष्य है। इसके लिए सवप्रथम स्वार्थभावना का परित्याग करना अनिवार्य है। जहा स्वार्थभावना या स्वार्थवृत्ति है वहा किसी प्रकार की ऋद्धि सिद्धि की आशा ही नही की जा सकती है। सत्र या यज्ञ इसी स्वार्थभावना के परित्याग का सूचक है। यज्ञ मे पडी हुई सामग्री या घृत किसी व्यक्तिविशेष का न होकर सार्वजनिक हो जाता है। यह 'इद न मम' यज्ञ की भावना ही है। इसको ही आत्म-त्याग या आत्म-बलिदान की भावना कहते हैं। यह आत्म-त्याग की भावना मनुष्य को देवत्व की ओर ले जाती है। यह देवत्व दिव्य ज्योति का दर्शन कराता है। इसका ही मन्त्र मे वर्णन है कि पृथिवी से द्युलोक को गए। द्युलोक मे देवो के दर्शन हुए और वहा दिव्य ज्योति प्राप्त हुई। इस दिव्य ज्योति से ही अमरत्व प्राप्त होता है।

सहायक रजिस्ट्रार द्वारा–

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के विवाद का अदालती फैसला

श्री इन्द्रराज प्रधान मनमोहन तिवारी मन्त्री के चुनाव को मान्यता

(Court No, 2)

Special Appeal No, 2 (M/B) of 1993

Kailash Nath Singh and another ... Appellants

Versus

Assistant Registrar and others ... Respondents.

—

Hon'ble Brijesh Kumar, J

Hon'ble B. K. Singh, J,

This Special Appeal has been preferred against the Judgement passed by an Hon'ble Single Judge dated 18-12-1992 in writ petition No. 285/91.

The first contention raised on behalf of the appellants is that since the election was held/conducted by the Registrar himself under sub-section (2) of Section 25 of the Societies Registration Act, it will not be open for the Registrar to refer the dispute to the prescribed authority. We don't find any substance in this argument. This point has been dealt with by the learned Single Judge as well. If election is conducted by the Registrar or by any officer authorised by him, it does not mean that the members are shut out from raising any objection, if they have any, to the conduct of the election. In case any objection is raised by them, before the Registrar, we find no good reason to take any other view than one which has been taken by the learned Single Judge on the point.

So far next contention is concerned that some opportunity of hearing is required to be given by the Registrar before taking a decision to refer or not to refer the dispute, [we find that this point has also been elaborately dealt with by the learned Single Judge Order referring a dispute to the prescribed authority is not an order which can be said to have affected adversely any of the vested rights of the parties nor such an order records any finding which may prejudice a party in the proceeding before the prescribed authority. If a grievance is raised before the Registrar about the conduct or validity of election, he may refer the matter for adjudication before the prescribed authority in accordance with the provisions as contained under sub-section (1) of Section 25 of the Societies Registration Act. Such an order does nothing except referring the dispute for being tried before the prescribed authority. We, therefore, find no merit in this contention as well to read something in the provision requiring the Registrar to afford an opportunity of hearing to the parties.

We find no merit in the appeal It is accordingly dismissed.

Sd–Brijesh Kumar
Sd–B. K, Singh
24-2-1993

Copy of this order be supplied to the parties on payment of usual charges within a week.

Seal

Sd–Brijesh Kumar
Sd–B. K. Singh
24-2-1993

Sd–

Sd–
27-2-93

१७ जनवरी १९९३ को आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० का वार्षिक चुनाव डी०ए०वी० कालेज लखनऊ में सम्पन्न हुआ। इस चुनाव को सहायक रजि-स्ट्रार, रजिस्ट्रार फर्म्स सोसाइटी द्वारा मान्यता प्रदान की गई है। इस मान्यता से कैलाश नाथ सिंह यादव के समस्त खोखले दावे निरस्त हो गए हैं। सम्पूर्ण विवरण नीचे प्रकाशित किया जा रहा है – —सम्पादक

प्रेषक,

श्री एम० सी० पाण्डे,
सहायक रजिस्ट्रार
फर्म्स सोसाइटीज तथा चिट्स, उ० प्र० लखनऊ।

सेवा में,

श्री मनमोहन तिवारी,
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०
५, मीरा बाई मार्ग, लखनऊ।

क्रमांक—७२२४ (II)/१-७२ लखनऊ : दिनांक २४-२-१९९३

विषय :—आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० की प्रबन्ध समिति की सूची १९९३

महोदय,

आपके पत्र दिनांक १७-१-९३ के संदर्भ में आपको सूचित किया जाता है कि प्रश्नगत प्रकरण में कार्यालय द्वारा विधिक परामर्श प्राप्त किया गया। विधिक परामर्श के परिप्रेक्ष्य में मा० न्यायालय में लम्बित प्रकरण के निर्णय तक आर द्वारा प्रस्तुत चुनाव कार्यवाई दिनांक १७-१-९३ एवं सूची वर्ष १९९३ नियमानुसार फाईल की गई।

भवदीय
एम० सी० पाण्डे
सहायक रजिस्ट्रार

पत्राचार (सत्यार्थप्रकाश) प्रतियोगिता
प्रथम पुरस्कार-११००० रुपये

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन, राम-लीला मैदान नई दिल्ली की ओर से महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ-प्रकाश पर एक पत्राचार प्रतियोगिता प्रारम्भ की गईहै। इसमे १८ से ४० वर्ष की आयु के वे सभी प्रतियोगी भाग ले सकते हैं जो किसो भी मान्यता प्राप्त भारतीय या विदेशी विद्यालय/विश्वविद्यालय से १०+२परीक्षा उत्तीर्ण हों। प्रतियोगिता का माध्यम हिन्दी एवं अंग्रेजी रखा गया है। इच्छुक व्यक्ति २० रुपये प्रवेश शुल्क मनीआर्डर द्वारा भेजकर अपना रोल नं० निर्देश एवं प्रश्न-पत्र मंगवा सकते हैं। रोल नं० आदि मंगवाने की अन्तिम तिथि ३१ जुलाई १९९३ है और उत्तर पुस्तिकाएं पहुंचाने की अन्तिम तिथि ३१ अगस्त १९९३ है। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार क्रमशः ११०००) रुपये, ५०००) रुपये, और २०००) रुपये रखे गये हैं। सत्यार्थ प्रकाश विश्व की एक रोचक एवं सुप्रसिद्ध पुस्तक है और प्रायः सभी पुस्तकालयों, मुख्य पुस्तक विक्रेताओं और स्थानीय आर्य समाज कार्यालयों से प्राप्त की जा सकती है। पुस्तक न मिलने पर सभा से भी मंगवाई जा सकती है। डाक द्वारा मूल्य क्रमशः हिन्दी ३०) रुपये, अंग्रेजी ५) संस्कृत, उर्दू, कन्नड़, तमिल, जर्मन, चीनी, वर्मी एवम् फ्रांसीसी भाषाओं का मूल्य मात्र ४०) रुपये प्रति निर्धारित किया गया

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
सभा-प्रधान

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश के प्रधान पं० इन्द्रराज जी व मन्त्री मनमोहन तिवारी को रजिस्ट्रार फर्म्स-सोसाइटी द्वारा मान्यता

यह जनरल स्टाम्प पेपर आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०
जिला लखनऊ नं० ७२
सूची वर्ष १९९३ के साथ संलग्न है।

कार्यालय रजिस्ट्रार फर्म्स सोसायटी उत्तर प्रदेश लखनऊ (सील)

सत्य प्रतिलिपि
((हस्ताक्षर)
स० रजिस्ट्रार

सेवा मे,
रजिस्ट्रार,
फर्म्स सोसाइटीज एवं चिट्स
उत्तर प्रदेश लखनऊ
महोदय,

निवेदन है कि आपकी सेवा में १७-१-९३ को आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० का चुनाव सम्पन्न हुआ जिसके निर्वाचित अधिकारी एवं अन्तरंग सदस्यों की सूची वर्ष १९९३ आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित कर रहा हूं, जिसको अनुमोदित करने की कृपा करें।

नाम	पद	पता	व्यवसाय
१—श्री पं० इन्द्रराज	प्रधान	१२४५ गोहरीपुरा मेरठ	समाज सेवा
२—श्री सच्चिदानन्द शास्त्री	उप-प्रधान	सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा रामलीला मैदान नई दिल्ली	समाज सेवा
३—श्री जयनारायण अरुण	" "	प्रसाद कुंज सिविल लाइन बिजनौर	पत्रकार
४—श्रीमती आशारानी राय	" "	एफ-१ अर्मापुर कानपुर	सर्विस
५—श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य	" "	मु० कोट अमरोहा मुरादाबाद	व्यापार
६—श्री मनमोहन तिवारी	मन्त्री	६, पुराना गणेशगंज, लखनऊ	समाजसेवा
७—श्री वीरेन्द्रपाल शर्मा	उप-मन्त्री	१३९ सुनारे गली बुलन्दशहर	सर्विस
८—डा० विनय प्रताप	उप-मन्त्री	आर्य समाज बख्शीपुर, गोरखपुर	व्यापार
९—श्री ब्रजभूषणसिंह	उपमन्त्री	आ०स० जगतपुर मैनपुरी	समाज सेवा
१०—श्री विश्वम्भरदेव शास्त्री	" "	आ. स. देवबन्द सहारनपुर	,, ,,
११—श्री अरविन्द कुमार	कोषाध्यक्ष	आ.स. बुढाना मुजफ्फरनगर	,, ,,
१२—श्री बाकेलाल कसल	स.कोषाध्यक्ष	सुमित्रा सदन नैनीताल	,, ,,
१३—श्री देवकीनन्दन गुप्ता	पु. अध्यक्ष	३९-मालवीय नगर मुरादाबाद	व्यापार
१४—श्री वेदप्रकाश आर्य	स.पु.अध्यक्ष	आ० स० औरैया इटावा	व्यापार
१५—श्री डा.आर.ए सिंह	आय-व्यय निरीक्षक	डी.ए.वी. कालेज लखनऊ	सर्विस

प्रतिष्ठित सदस्य :—

१६—श्री चौ० माधवसिंह	विनोद निवास बड़ौत मेरठ	पेन्शनर
१७—श्री महेश्वर पाण्डेय	डी. ए. वी. परिसर लखनऊ	,,
१८—चौ० लक्ष्मीचन्द	दीवानहाल चान्दनी चौक दिल्ली	समाजसेवा

अन्तरंग सदस्य :—

१९—श्री धर्मपालसिंह आर्य	गाजियाबाद
२०—श्री डा० भानुप्रकाश आर्य	आ० स० सिविल लाईन्स बदायूं
२१—श्री राममोहन आर्य	आ० स० गज मुरादाबाद
२२—श्री मोहनलाल आर्य	आ० स० पीलीभीत
२३—श्री द्वारिकाप्रसाद आर्य	आ० स० बासी सिद्धार्थ नगर
२४—श्री गुरुदत्त शर्मा	आर्य समाज भोलेपुर फर्रुखाबाद
– श्री श्रीपालसिंह आर्य	आर्य समाज मऊ रानीपुर झांसी
२६—श्री उमेशचन्द्र स्नातक	छिबियापुर इटावा
२७—श्री बसन्तसिंह चौहान	आर्य समाज बहादराबाद हरिद्वार
२८—श्री जगदीश प्रसाद शर्मा	आर्य समाज चौक बुलन्दशहर
२९ श्री हरीशचन्द्र श्रीवास्तव	आर्य समाज गोविन्दबाग बलरामपुर गोण्डा
३०—श्री बह्मसिंह आर्य	आर्य समाज छपरौली मेरठ
३१—श्री कृष्ण कुमार आर्य	आर्य समाज सीतापुर
३२—श्री राजेन्द्रपालसिंह आर्य	ग्रा० मई, पो० खामखालमपुर अलीगढ़
३३—श्री श्रीकृष्ण जलाली	आर्य समाज जलाली अलीगढ़
३४ श्री ओ३म प्रकाश आर्य	आर्य भवन २०८-जी प्रेमनगर बरेली
३५—श्री वीरेन्द्रसिंह चौहान	सीतापुर
३६—श्री जयकृष्ण आर्य	आर्य समाज गाजीपुर
३७—श्री माताप्रसाद त्रिपाठी	आर्य समाज अमुनियाबाग फैजाबाद
३८—श्री सूबेदार आर्य	बेवर मैनपुरी
३९—श्री सुरेन्द्रसिंह राजपूत	बिजनौर
४०—श्री पूरनसिंह एडवोकेट	गढ़वाल
४१—श्री जयदेवसिंह आर्य	आर्य समाज रहमतगंज रामपुर
४२—श्री प्रेमचन्द्र आर्य	आर्य समाज खलीलाबाद बस्ती
४३—श्रीकृष्ण धर्मालंकार	रामगुलाम टोला देवरिया
४४—श्री गोविन्दराम एडवोकेट	आर्य समाज आजमगढ़
४५—श्री सुदर्शनसिंह	आर्य समाज सहसवार बलिया
४६—श्री सोहन जी पाण्डेय	आर्य समाज चौक इलाहाबाद
४७—श्री राजाराम शास्त्री	मियानगी सहारनपुर
४८—श्री चन्द्र कुमार ठाबड़ा	आर्य समाज कैन्टोनमेन्ट लखनऊ
४९—श्री डा० हर्षवर्धन	आर्य समाज जी. टी. रोड फतेहपुर
५०—श्री डा० ईश्वरचन्द गुप्ता	एफ-१ अर्मापुर स्टेट कानपुर

(शेष पृष्ठ १० पर)

प्रमाण-पत्र

दिनांक १७ जनवरी, ९३ को आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के लखनऊ में सम्पन्न वार्षिक चुनाव को मान्यता प्रदान की जाती है। आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० जिसका कार्यालय ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ है सार्वदेशिक सभा से सम्बद्ध है और इसके वर्तमान प्रधान श्री इन्द्रराज और मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी हैं। समूचे उ० प्र० मे आर्य समाजो तथा इनसे सम्बद्ध संस्थाओं पर उक्त दोनों अधिकारियों के आदेश ही लागू होंगे।

उ० प्र० मे आर्य समाज से भ्रष्टाचार के कारण निष्कासित श्री कैलाश नाथ सिंह यादव तथा उनके तथाकथित साथी जो प्रदेश की विभिन्न आर्य समाजो और सम्पत्तियो को अवैध रूप से हथियाने के प्रयत्नकर रहे हैं. उनका आर्य समाज के संगठन में कोई स्थान नहीं है। सार्वदेशिक सभा की मान्यता के बिना कोई भी व्यक्ति न तो किसी संस्था का वह अधिकारी माना जा सकता है और न ही उसके द्वारा निर्मित तथाकथित संस्था का संगठन में कोई महत्त्व हो सकता है।

अतः आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के अन्तर्गत सभी आर्य समाजों व उनसे सम्बद्ध संस्थाओ व शिक्षण संस्थाओ के मामले में केवल श्री इन्द्रराज और श्री मनमोहन तिवारी के आदेश और उनमें सभा द्वारा लिए गए निर्णय ही मान्य और वैध होंगे।

सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

भारतीय संस्कृति के आधार स्तम्भ

श्री ओंकार शास्त्री, गुरुकुल कुरुक्षेत्र, हरयाणा

"भारत" शब्द वस्तुतः "भा"+"रत"—"भा"=ज्ञान, प्रकाश और "रत"=लगा हुआ, संलग्न, इस प्रकार भारत का अर्थ होता है—ज्ञान में लगा हुआ।

"संस्कृति" शब्द "सम्" पूर्वक "कृ" धातु से "क्तिन्" प्रत्यय करके निष्पन्न होता है। जब "सम्" पूर्वक "कृ" का अर्थ आभूषण होता है, तभी सुट् का आगम होता है। संस्कृति का अर्थ हुआ सुधार।

संसार में तीन वस्तुओं का त्रिक दृष्टिगोचर होता है। उदाहरणार्थ—ईश्वर, जीव, प्रकृति। सत्त्व, रजस्, तमस्, आदि। इसी प्रकार प्रकृति संस्कृति और विकृति भी हैं। प्रत्येक पशु, पक्षी, मनुष्य तथा समस्त जड़ जगत् प्रकृति में ही उत्पन्न होता है। पशु, पक्षी प्रकृति में उत्पन्न होते हैं और कुछेक को छोड़ करके प्रकृति में ही मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं, परन्तु मनुष्य प्रकृति में उत्पन्न होकर भी यदि संस्कृत हुआ तो देवत्व को प्राप्त करता है और यदि विकृति में आ गया तो राक्षस, नर-पशु आदि उपाधियां प्राप्त करता है।

सम्पूर्ण जड़ जगत् मानव द्वारा संस्कृति या विकृति को प्राप्त होता है। उदाहरण के लिए—वृक्ष प्रकृति है और उससे बनने वाली वस्तुएं—जंगले, किवाड़, मेज, कुर्सी आदि उस वृक्ष का संस्कृतिरूप है तथा छिलके आदि ईंधन जो जलाने आदि के काम आता है, वह उस वृक्ष का विकृति रूप है। यदि मेज, कुर्सी आदि वस्तुओं पर रंग-रोगन कर दिया जाये तो वह संस्कृति की पराकाष्ठा कहलाती है। इससे वस्तु स्थायी, सुदृढ़ और सुन्दर बन जाती है।

भारतीय संस्कृति संसार की प्रथम संस्कृति है। यजुर्वेद में कहा गया है—"सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा" (यजु० ७/१४)। वस्तुतः भारतीय संस्कृति ही संस्कृति है। और विश्व में पाई जाने वाली अन्य संस्कृतियां इसी संस्कृति का विकृत रूप ही हैं। इसलिए इसको मानव संस्कृति, आदि संस्कृति और आर्य संस्कृति भी कहते हैं। अन्य सभ्यताएं तो हो सकती हैं, परन्तु संस्कृति नहीं। छान्दोग्योपनिषद् में आता है—धर्म के तीन स्तम्भ है—इज्या, अध्ययन और दान। यज्ञ के भी तीन आधार हैं—द्रव्य देवता और त्याग। "द्रव्य" उस पदार्थ को कहते हैं जिससे आहुति दी जाती है। देवता वह है जिसके लिए आहुति दी जाती है और त्याग वह है जो देवता को आहुति देकर "इदन्न मम" बोलता है।

इसी प्रकार भारतीय संस्कृति के तीन आधार हैं—इतिहास, दर्शन और परम्परा। इतिहास के विषय में महाभारतकार ने प्रथम ही लिखा है—

इतिहासप्रदीपेन मोहावरणघातिना।
लोकगर्भगृहं कृत्स्नं यथावत् सम्प्रकाशयेत्॥

इतिहासरूपी दीपक से मोह और आवरण दूर हो जाता है, संसाररूपी सम्पूर्ण घर जैसे का तैसा दिखाई देता है।

भारतीय संस्कृति भी इतिहास से नाता जोड़ती है। शिव, राम, कृष्ण, युधिष्ठिर, अर्जुन, विक्रमादित्य, छत्रपति शिवाजी, महाराणा, प्रताप आदि सम्पूर्ण भारत के सर्वमान्य पुरुष हैं। इसी प्रकार स्त्रियों में दमयन्ती, सीता, सावित्री, गान्धारी आदि का सब ही सम्मान करते हैं।

महामान्य वसिष्ठ, विश्वामित्र, बुद्ध, महावीर, शंकर, दयानन्द, नानक आदि के प्रति सभी श्रद्धा रखते हैं। यहां तक कि चतुर्थ वर्णाश्रमी भी महर्षि बाल्मीकि से अपना वंश मानते हैं।

हमारे साहित्यकारों ने सत्यवादी, हरिश्चन्द्र, दुष्यन्त, भरत, रघु, दिलीप, अग्निमित्र आदि के विषय को लेकर साहित्य रचना की है। विदेशों से आने वाले भी हमारे हृदय से इनके सम्मान को नहीं घटा सके। स्वामी रामतीर्थ और विवेकानन्द का विदेशों में धर्म प्रचार सभी भारतीयों के हृदय में नव जागरण उत्पन्न करता है। गुरु गोविन्दसिंह के पुत्रों का बलिदान जाति में नव-जीवन का संचार करता है। दुर्गावती, पद्मिनी, लक्ष्मीबाई के उदाहरण हमको प्रेरणा देते हैं। इस प्रकार से इतिहास भारतीय संस्कृति का प्रथम साधन सिद्ध होता है।

साम्प्रतम् हमको गलत इतिहास पढ़ाया जाता है, उसी का परिणाम है—पंजाब में उग्रवाद तथा हिन्दु-मुस्लिम साम्प्रदायिक संघर्ष।

यदि सिख भाईयों को वास्तविक सत्य इतिहास पढ़ाया जाता कि सिखधर्म का हिन्दुओं की रक्षा के लिए उद्भव हुआ है, तो आज जैसी भयंकर स्थिति उत्पन्न ही नहीं हो सकती थी।

इसी प्रकार मुसलमान भाईयों को इस सत्य इतिहास का पता चल जाये कि कुछ दहशतवादियों ने हमारे पूर्वजों को डरा-धमका कर अथवा कुछ प्रलोभन देकर उनके प्रिय निज धर्म से हटाकर बलात्कार से इस्लाम धर्म थोपा गया है, तो वे कदापि साम्प्रदायिक उन्माद में आकर संघर्ष पर उतारु नहीं हो सकते। अतः आवश्यक है आज सत्य इतिहास को पढ़ने और पढ़ाने में प्रयोग में लाया जावे, यही समय की मांग है।

दर्शन—भारतीय दर्शन आस्तिक-नास्तिक, द्वैत-अद्वैत, त्रैत के विचारों से भरा पड़ा है। हमारे विचारकों ने नेति-नेति कहकर आगे विचार-चिन्तन का द्वार खुला रखा है। महर्षि दयानन्द ने सभी दर्शनों का विरोध करने वालो को "अन्धों का हाथी देखना" का उदाहरण देकर सभी दर्शनों का समन्वय किया है। सभी आचार्यों ने आचरण की पवित्रता, सत्यभाषण, अहिंसा आदि पर बल दिया है और काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि को हेय माना है।

परम्परा—भारत में सभी प्रदेशों में बड़ों के आने पर खड़े होकर, सिर झुकाकर प्रणाम करना अच्छा माना जाता है। अतिथि सत्कार का महत्त्व भारत के प्रत्येक सम्प्रदाय में माना जाता है। शरणागत की रक्षा करना हमारी परम्परा का भूषण है। प्रतिज्ञा-पालन के लिए "रघुकुल रीति सदा चलि आई, प्राण जाय पर वचन न जाई" प्रसिद्ध है। स्त्रियों के शील की रक्षा करना हम सबका परम धर्म है। शिवाजी ने बीजापुर के एक अधिकारी मुल्ला अहमद की पुत्रवधू सम्मान सहित उसके घर पहुंचा दिया।

दान देकर धन का वितरण करना, संस्कारों और त्यौहारों प्रीतिभोज समाज को सुदृढ करते हैं। भोजन-वस्त्र मे सादगी से समाज सात्विक बनता है। पूज्य स्थानों पर जूते उतार कर जाना स्वच्छता और नम्रता का द्योतक है। गले लगाकर मिलना अधिक प्रेम को दर्शाना है। मृतको को जलाने की भारतीय प्रक्रिया अब सारे ससार के सभ्य राष्ट्रो में अपनाई जाने लगी है। हमारी परम्परायें लाखों वर्षो के अनुभव पर आधारित हैं। ये ही परम्पराएं हमारी संस्कृति का तीसरा आधार है।

आज सम्पूर्ण राष्ट्र की भिन्न-भिन्न शाखाओं को यही आधार संगठित किये हुये है। इन तीन तारों के टूटने से अनेक रंग के फूलों की माला टूट जायेगी। रोटी, कपडा और मकान से भी अधिक जातीय जीवन के लिये वैचारिक भोजन की आवश्यकता है।

वसन्त ऋतु में प्रतिवर्ष नई पत्तियां निकल आती हैं, परन्तु वृक्ष का तना पहले जैसा ही रहता है। हां, वह अधिक पुष्ट भी हो जाता है। नवीनता प्राचीनता को नष्ट करने के लिए नहीं, अपितु पुष्ट करने के लिए है। आजकल खालिस्तान, बोडोलैण्ड, झारखण्ड, स्वतन्त्र कश्मीर आदि नामों से प्राचीनता को नष्ट करके नवीनता का उद्घोष हो रहा है। यह राष्ट्र की मृत्यु के समान है। कायाकल्प के समान राष्ट्र को चिरजीवी बनाना सुधारों का लक्ष्य होना चाहिए। हमारी यही परम्परा है। समयानुसार सुधारों का विरोध हमने कभी नही किया, परन्तु मूल पर आघात असह्य है। हम तो आज यही अभिलाषा करते हैं कि हमारे यह तीनों आधार अधिक मजबूत हों, जो राष्ट्र को चिरंजीवी बनावें।

लो श्रद्धाञ्जलि आर्य पुरुष !

(पं० रामाशा 'आर्यपुत्र' की लेखनी से)

आर्य जगत् के यशस्वी लेखक श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार का निधन गत् ३० जनवरी १९९३ ई० को गोरखपुर स्थित उनकी पुत्री के निवास स्थान पर हो गया। अपने एक अभिन्न मित्र द्वारा यह सूचना पाते ही जहां गहरी वेदना हुई, वहीं उनके सानिध्य में बीते कुछ दुर्लभ क्षणों की स्मृतियां ताजी हो उठी। वैसे तो उनका परिचय आर्य पत्र-पत्रिकाओं के स्वाध्याय से वर्ष १९८६ ई० में ही प्राप्त कर लिया था परन्तु जब उक्त मित्र द्वारा यह पता चला कि अपने निकट के ही एक ग्राम हाटा, डाकघर नवीसी, जनपद-देवरिया के ही मूल निवासी हैं तो बड़ी ही प्रसन्नता हुई। श्री वेदालंकार जी की जीवन-यात्रा अपने पैतृक ग्राम से शुरू होकर, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थादि की परिक्रमाकर, गोरखपुर में स्थायित्व को उस समय प्राप्त हुई जब वे गोरखपुर स्थित दयानन्द एंग्लो वैदिक विद्यालय में अध्यापक नियुक्त हो गये। इस स्थल को कर्मभूमि बनाकर, सतत् आर्य सामाजिक प्रचार यात्राएं कर, महर्षि दयानन्द जी की वैदिक विचार-धारा का प्रचार-प्रसार करते हुए ही, ईश की ऐसी कृपा, कि अन्ततः उसी स्थल पर अपनी इस नश्वर काया को सदा-सदा के लिए छोड़कर, उस परमेश की परम सत्ता में विलीन हो गये। जिसे मैं गोरखपुर वासियों का सौभाग्य ही समझता हूं क्योंकि वे इधर अनेक वर्षों से स्वदेवी जी के साथ अपनी जन्मभूमि के दर्शनार्थ गांव आकर कई-कई माह प्रवास करने लगे थे।

एक बार श्री राजेन्द्र जी 'जिज्ञासु' अबोहर-पंजाब ने मेरे नाम प्रेषित एक पत्र में लिखा था कि 'प्रियवरं आर्यपुत्र' जी! अब पूर्वी उ० प्र० में मेरे दो आकर्षण हो गये, एक तो श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार व दूसरे आप! अतएव अब राजकीय सेवा से मुक्त हो उन क्षेत्रों की यात्राएं करूंगा तो आप दोनों मनीषियों के दर्शन करूंगा।" सो मैं तो लज्जित हुआ क्योंकि उस योग्यता का मैं अब भी अपने को नहीं मानता जैसा कि भैय्या श्री 'जिज्ञासु' जी ने मेरे प्रति व्यक्त किया था, हां! श्री पण्डित जी के प्रति यह उद्गार उनकी योग्यता के अनुरूप ही था, सो हृदय आह्लादित हुआ।

परमात्मा की महती कृपा से गतवर्षों में एकबार उनके पैतृक निवास स्थान पर, स्वमित्रों के साथ उनके साकार दर्शन का सौभाग्य मुझे भी प्राप्त हुआ था, और यह सुयोग इसलिए बन गया था कि उसी गांव के एक पौराणिक परिवार ने उन्हीं की प्रेरणा से स्वनिवास स्थान पर शान्ति यज्ञ का कार्यक्रम निश्चित किया था। उस परिवार में पहुंचने से पूर्व हम तीनो जन, सर्वप्रथम उनके आवास पर गये। लेखन कार्य छोड़कर श्री वेदालंकार दम्पती ने, अपनी अवस्था विशेष की शारीरिक दुर्बलताओं के बावजूद भी आतिथ्य में कोई कोर-कसर नही छोडी। 'विद्याददातिविनयं' की सूक्ति का सजीव स्वरूप प्रत्यक्ष देख, मुझे तो एक विशिष्ट आनन्द प्राप्त हो रहा था जबकि हम सब बार-बार यह आग्रह करते रहे कि 'आप आतिथ्य सम्बन्धी कोई भी कष्ट न उठाएं क्योंकि हम सब जलपानादि अभी-अभी करके ही चले आ रहे हैं।' स्वास्थ्य की प्रतिकूलता के बावजूद भी वे कुछ क्षणो के लिए ही सही, शान्ति यज्ञ मे यजमानों को आशीर्वाद देने पहुचे जबकि इसके पूर्व हम सब वहां पहुंचकर, श्री पण्डित जी के विशेष निवेदनों के बाद यज्ञ की प्रक्रिया सम्पन्न कराये। इसके बाद श्री वेदालंकार जी हम सबको अपने घर ले आये। उनका पैतृक आवास जो आज भी उनके पुरखों के वैभव की याद दिला रहा है, के सम्बन्ध में उन्होने बताया कि मेरी इच्छा इसमें एक पाठशाला व यज्ञशाला सहित आर्य समाज स्थापित करने की है साथ ही साथ वे यह भी चाहते थे कि मेरी जन्म धरा से नित्यप्रति ध्वनि विस्तारक यन्त्र के माध्यम से सुमधुर वेद की ऋचाएं प्रसारित व वैदिक धर्म प्रचारित हो परन्तु ये सारी इच्छाएं अधूरी छोड़कर ही वे यहा से चले गये। अपने आवास पर उन्होंने हम सबको स्वलिखित छपी अनेक पुस्तकें भी दीं। मैंने तो अपनी उन पुस्तको पर यादगार हेतु हस्ताक्षर भी करा लिया पश्चात पूंछ लिया कि इन पुस्तकों की कीमत कितनी है? (ऐसा इसलिए किया कि उन्होंने प्रथम ही, वार्तालाप के दौरान बताया था कि 'प्रकाशक बन्धुओ द्वारा मुझ तक मात्र इतनी ही उदारता बरती जा रही है कि मेरी स्वलिखित पुस्तकों के प्रकाशन के बाद आवश्यक प्रतियों के आदेश पर पचीस प्रतिशत छूट देकर शेष राशि की वी. पी. कर दी जाती

है जिसे आप सब, प्रकाशक बन्धुओ द्वारा लेखक को दिया गया प्रोत्साहन, या जैसा चाहें उचित शब्द दे सकते हैं, सो कुछ सोच विचारकर लौटाना उचित न समझते हुए, आर्थिक तंगी के दौर में भी उसे छुड़ा लेता हूं) उत्तर में उन्होंने तुरन्त कहा कि मैं जानता हूं 'आर्यपुत्र' जी कि आपकी आर्थिक स्थिति शून्य है, इसलिए ये पुस्तकें आशीर्वाद के रूप में उपहार ही समझी जाएं. साथ ही यह भी कहा कि भविष्य में आप तक उपलब्ध पुस्तकें भिजवाता रहूंगा। भाव-सम्प्रेषण में उनकी दीर्घ-कालीन अनुभव की झलक, स्पष्ट हो रही थी। जब हम सब उनका अभिवादन कर चलने को हुए, तो वे यह कहते हुए कि अभी भी तो आप सबको छोड़ने कम से कम दरवाजे तक तो चलते ही है और वे रुग्णावस्था में भी हम सबके साथ कुछ दूरी तक चलने के पश्चात ही लौटे थे। ऐसे सुयोग्य आर्य पुरुष का आशीर्वाद ले हम स्व-स्व स्थान लौट आए। बाद में मेरी उनकी मुलाकात नहीं हो पायी। अर्थाभाव के कारण, आन्तरिक इच्छा के बावजूद भी मैं उनसे गोरखपुर मिलने नहीं जा सका, अतएव दूसरी बार के साकार दर्शन से वंचित ही रहा फिर भी पत्राचार की यदा-कदा प्रक्रिया मे, मैंने कभी भी शिथिलता नहीं बरती।

श्री राजेन्द्र जी 'जिज्ञासु' के पत्र के बारे में जब मैंने उनसे चर्चा की तो उन्होंने बताया, कि उनसे मेरी मुलाकात, एक उत्सव पर हुई थी, जहां श्री 'जिज्ञासु' ने मेरे धारा प्रवाह मन्त्र-पाठ की प्रशंसा की थी। उन्होंने बताया कि मैंने श्री 'जिज्ञासु' की इस जिज्ञासा को कि आखिर इतना अच्छा अभ्यास कैसे है? को यह कहते हुए कि 'आखिर पूरे जीवन भर तो यही किया है', सहजता से शान्त किया था, सो परिचय हुआ। जब मैंने श्री 'जिज्ञासु' जी से स्वयं के द्वारा किये जा रहे पत्राचार की उन्हें जानकारी दी तो वे बड़े ही प्रसन्न हुए। उधर उनका अन्तिम प्रकाशित लेख संभवतः स्वामी समर्पणानन्द जी के सम्बन्ध में ही था जिसे आर्य पत्रों ने प्रमुखता से प्रकाशित किया। सम्भवतः कुछ ऐसे भी लेख हों जिसे उन्होने मृत्यु-पूर्व आर्यपत्रों को प्रकाशनार्थ प्रेषित किया हो, सो प्रकाश में आयेंगी ही, इसमें सन्देह नहीं।

अन्तिम कारुणिक दृश्य—जब मुझे यह पता चला कि पं० श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार के कर-कमलों में, उस समय भी साहित्य-सृजन करती लेखनी विद्यमान थी, जब उनके नश्वर शरीर से प्राण-पखेरु निकले थे, तो मेरे सजल नेत्रों से अश्रु प्रवाहित हुए बिना नहीं रह सके। लेखनी का इस ढंग से जीवन के अन्तिम क्षणों तक उनसे जुड़े रहना, उनके जीवन्त व्यक्तित्व का परिचय देता है। उनकी अन्तिम श्वांस तक आर्यजनों से कुछ अपेक्षाएं थीं जिसे मैं इस लेख में उद्घाटित करना उचित नहीं समझता क्योंकि यह अपने में एक अलग चिन्तनीय व विचारणीय विषय है। अतएव यहां पर मात्र इतनी ही बात लिखते व लेखनी की अजस्र धवल धार को अहर्निश प्रवाहित करने वाले, गुरुकुल कांगड़ी के सुयोग्य स्नातक व स्वामी श्रद्धानन्द जी की साधना के सजग प्रहरी इस श्रेष्ठ आर्य मनीषी के निधन पर मैं अपनी श्रद्धपूरित विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए लेखनी को विराम देता हूं।

भागलपुर देवरिया (उ० प्र०)

वेद में इन्द्र का स्वरूप

—डा० योगेन्द्र कुमार शास्त्री (जम्मू)

ईश्वर के अर्थ में इन्द्र शब्द

इन्द्र शब्द परमेश्वर के अर्थ में कई स्थानो पर प्रयुक्त हुआ है जैसे—

इन्द्रं मित्रं वरुणम् — ऋ० १ । १६४ । ४६
इन्द्र क्रतुं न आभार — ऋ० ७ । ३२ । २६
इन्द्रायाहि चित्रभानो — ऋ० १ । ३ । ४
न कि इन्द्र त्वावान् — सामवेद

इन्द्र शब्द का अर्थ परमात्मा करते हुए आचार्य सायण लिखते हैं—

"इदि परमैश्वर्ये इत्यस्य धातोरर्थानुमतात् इन्द्रः परमात्मा"। इन्द्र का अर्थ है परम ऐश्वर्य वान् परमात्मा। निरुक्त १० । ८ में इन्द्र का निर्वचन यह दिया है "इदं करणात्" सायण इस पर लिखते हैं 'इन्द्रो परमात्मा रूपेण इदं जगत्करोति' इन्द्र परमात्मा के रूप में इस जगत को बनाता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी ऋग्वेद के भाष्य में इन्द्र शब्द का अर्थ परमात्मा किया है।

जीवात्मा के अर्थ में इन्द्र शब्द

अहं इन्द्रो न पराजिग्ये इद्धनम्। न मृत्यवेऽवतस्थे कदाचन। (ऋग्वेद)

अर्थात मैं ऐश्वर्यवान इन्द्र (आत्मा) हू। पराजित न होना ही मेरा धन है। मैं मृत्यु के लिए कदापि नहीं रुका हुआ हूं। यहां इन्द्र शब्द जीवात्मा के लिए प्रयुक्त है। केनोपनिषद् में इन्द्र और यक्ष के अलंकारिक कथानक मे इन्द्र शब्द जीवात्मा के लिए आया है। वहां यह बतलाया है कि इन्द्र आत्मा ही यक्ष परमात्मा को जान सकता है अग्नि आदि जड़ तत्व उसे नहीं जान सकते।

'उलूकयातुम्' इस यजुर्वेद के मन्त्र में भी "दषदेवं प्रमाण रक्ष इन्द्र" हे इन्द्र आत्मा तू इन राक्षसी विचारों को मसलकर रख दे। यहां भी इन्द्र शब्द जीवात्मा के लिए आया है।

सूर्य के अर्थ में इन्द्र शब्द

वेदों में सूर्य के अर्थ में इन्द्र शब्द अनेकों स्थानों पर आया है। सूर्य के पास प्रकाश का ऐश्वर्य होने के कारण वह इन्द्र कहलाता है। वह स्वः लोक का द्यू लोक का राजा है, सौर मण्डल में जितने भी नक्षत्र हैं उनका वह राजा है इसलिए सूर्य को देवराज इन्द्र कहते हैं। सूर्य की किरणें ही अपसराएं हैं जो अपसरण करती हैं, नृत्य करती हुई सी सात रंगों से रञ्जित होकर चलती है। सूर्य की किरणें ही इन्द्र का वज्र है। वह वृत्रासुर रूपी अन्धकार राक्षस को अपने किरण रूपी वज्र से समाप्त करता है।

वैदिक सूर्य रूपी इन्द्र के वास्तविक स्वरूप को न समझकर इन्द्र के विषय में असम्भव गप्पें मारी गईं। देवासुर संग्राम मे देवताओ ने दधीचि की हड्डियों से हथियार बनाकर वृत्रासुर को मारा यह भी कोई ऐतिहासिक कथा नहीं है। उपदेशक दान की महिमा में या परोपकार के प्रकरण मे दधीचि की कथा को सुनाते हैं जो कि काल्पनिक कथा है। इसका वास्तविक स्वरूप वेद के इस मन्त्र में बतलाया गया है—

'इन्द्रो दधीचो अस्थभिर्वृत्राणि अप्रतिष्कुत. जघान नवतीर्नव।

(अप्रतिष्कुतः) अर्थात जिसकी शक्ति को रोका नहीं जा सकता ऐसे (इन्द्रः) इन्द्र ने सूर्य ने (अस्थभिः) अस्थिर (दधीचः) किरणों से (वृत्राणि) वृत्रों को बादल रूपी असुरों को निन्यानवें बार मारा। यहा पर वर्षा ऋतु के लगभग तीन महीनो में सूर्य, बादल और वर्षा के वैज्ञानिक स्वरूप का वर्णन किया हैं। अज्ञानियों ने (दधीचः) शब्द का अर्थ दधीचि और (अस्थभिः) का अर्थ अस्थियां लगाकर कहानी गढ़ डाली और इन्द्र का हथियार हड्डी का बना दिया। क्या हमारे देश की यही प्राचीन उन्नति थी। इसी प्रकार पौराणिको ने इन्द्र को देवों का राजा होते हुए भी उसे चरित्रहीन बना दिया। इन्द्र गोतम और अहिल्या की ऐतिहासिक कहानी गढ दी।

गौतम धोखे से समुद्र में नहाने चले गए। इन्द्र ने धोखे से गौतम की पत्नी अहिल्या का शील हरण किया। जब गोतम को धोखे का पता चला तो उन्होंने शाप दे दिया कि अहिल्या तू पत्थर बन जा। श्रीराम जब तुझे चरण लगायेंगे तब तेरा उद्धार होगा। कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा, भानुमति ने कुनबा जोड़ा वाली कहावत चरितार्थ कर दी पौराणिक कथावाचक तथा रामचरित मानस के पाठक इस कथा पर पूर्ण विश्वास करते हैं।

वस्तुतः वेद के अलकारिक वर्णन को विकृत रूप देने की प्रथा सी चल पड़ी थी कवि कालिदास ने तो वेद के पुरुरवा और उर्वशी के अलंकारिक प्रसंग को लेकर जिसमे कि पुरुरवा बादल और उर्वशी विद्युत का प्रसंग है उस अलंकारिक संवाद को लेकर 'विक्रमोर्वशीयम्' नामक काव्य ही लिख डाला। इससे वेद मे ऐतिहासिकता की भ्रान्ति पैदा हुई। वस्तुतः इन्द्र सूर्य का नाम है। गौतम चन्द्रमा का नाम है। अहिल्या (अहन् लीयते यस्या सा रात्रि अहिल्या। रात्रि का नाम अहिल्या है। उदित सूर्य (इन्द्र) रात्रि को नष्ट करता है उस समय चन्द्रमा क्षीण होकर समुद्र की तरफ अस्त होते हुए दिखाई देता है। सूर्योदय का सुन्दर वर्णन है।

वस्तुतः पौराणिको का चरित्र हीन देवराज इन्द्र आकाश पाताल में कहीं पर नहीं है। हां वैदिक इन्द्र (सूर्य) वेदो मे विद्यमान है वही देवराज है। श्रीराम के समय में ऐतिहासिक ऋषि गौतम होंगे उनकी पत्नी अहिल्या होगी। जो कि जीवित थी पत्थर नहीं थी। बाल्मीकि रामायण में उसे (ज्योतितप्रभाम्) चमकते हुए चेहरे वाली जीवित नारी बतलाया है। उस आश्रम में जाकर श्रीराम और लक्ष्मण ने उसके चरण छुए, ऐसा लिखा है। परन्तु महाकवि तुलसी दास ने पौराणिक कथा के आधार पर यह लिख दिया कि श्रीराम ने अपने पैर से उसका स्पर्श किया। नारी के पैर लगाकर श्री राम की किस मर्यादा की रक्षा तुलसी ने की है यह समझ के बाहर है और अमान्य है।

भारतीय लोकतन्त्र की अग्नि परीक्षा

दशरथ जैन, पूर्व मन्त्री म०प्र० प्रशासन

कहीं अयोध्या प्रकरण ने हमारी राष्ट्रीय एकता पर प्रहार कर मुस्लिम लीग के द्वि-राष्ट्रवाद के सिद्धान्त को पुष्ट तो नहीं किया? जो भी हो विश्व के मुसलमानों को यह कहने का मौका जरूर मिल गया कि कायदे आजम मुहम्मद अली जिन्ना बड़े ही दूरदर्शी थे और उन्होंने पाकिस्तान के निर्माण की शर्त पर भारत की आजादी स्वीकार करने में बड़ी ही बुद्धिमत्ता का परिचय दिया था। अयोध्या प्रकरण से ही पड़ोसी और दूरस्थ देशों में हिन्दुओं को कितनी क्षति पहुंची है और वहां उनका जीना किस प्रकार दूभर हो गया है? राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को भी कितनी क्षति पहुंची है? यदि एक मस्जिद को ध्वस्त करने में पाकिस्तान में लगभग ५५० और बांगलादेश में लगभग १२५ मन्दिर ध्वस्त होते हैं और उन देशों में मजहबी उन्माद के कारण अल्पसंख्यक हिन्दुओं को बड़ी संख्या में मौत के घाट उतारते हुए उनकी बहुमूल्य सम्पत्ति नष्ट कर उन्हें दर-दर का भिखारी बनाया जाता है तो यह सौदा हमारे लिए कितना मंहगा पड़ा है? यह भी विचारणीय है। भारत में ऐसी मस्जिदों की संख्या लगभग ३,००० बताई जाती है, जो मन्दिरों को ध्वस्त कर बनाई गई। यदि एक तथाकथित विवादित ढांचे को गिराने की देश को इतनी कीमत चुकानी पड़ी है, तो ३,००० मस्जिदों को गिराने की कितनी कीमत चुकानी पड़ेगी और इस कीमत को चुकाकर भी क्या हम भारत को विकसित देशों की श्रेणी में रख पायेंगे?

सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत स्थिर निधियां (९)

श्रीमती चनन देवी हंसराज सोनी ज्वालापुर स्थिर निधि
१६ १०-८२ की अन्तरंग द्वारा स्वीकृत

यह निधि प्रारम्भ में पांच हजार रु० से स्थापित की गई थी तथा आगे बढ़ाने की स्वीकृति भी दी थी। अब यह निधि ६८००) रुपए की है।

इस निधि के ब्याज से वृद्ध सन्यासी, बूढे उपदेशक एवं असहाय विद्यार्थियों की सहायता की जावे।

ब्याज राशि में से इस वर्ष रामजस भजनोपदेशक को १२००) तथा धर्मवीर भजनोपदेशक को १२००) दिए।

श्रीमती छाया अरोड़ा स्थिर निधि
३-५-१९८२ की अन्तरंग में स्वीकृत

यह निधि प्रारम्भ में ५०००) से स्थापित की गई थी बाद में ११००) रुपए की वृद्धि की गयी।

इस निधि के ब्याज की राशि आर्य अनाथालय बरेली को भेजी जाए।

इस वर्ष निधि के ब्याज में से २४४०) आर्य अनाथालय बरेली को भेजा गया।

चौधरी टोपनदास व श्रीमती रामदेवी सहायता स्थिर निधि
९-४-८३ की अन्तरंग द्वारा स्वीकृत

(संस्थापक—चौ० भगवान सिंह पुत्र और श्री विजय कुमार माला पौत्र)

यह निधि दस हजार रुपए से स्थापित की गई थी। इस निधि का ब्याज भूकम्प, बाढ़, सूखा पीडितों की सेवा सहायता एवं रक्षा कार्य पर व्यय किया जायेगा।

इस वर्ष निधि के ब्याज में से गढवाल भूकम्प सहायता कैम्प को ३५००) रु० दिये।

श्रीमती रामजीवाई श्री मूलचन्द भूटानी धर्मार्थ औषधालय स्थिर निधि एक लाख रुपये
१५-१२-८३ की अन्तरंग बैठक ने स्वीकृति दी

(संस्थापक—श्री गोविन्दराम भूटानी)

१—इस निधि का ब्याज ही व्यय होगा। मूल राशि नहीं।

२—इस निधि में वृद्धि करने का भी दानी को अधिकार होगा।

३—औषधालय ग्रेटर कैलाश में खोला जाएगा।

४—ब्याज श्री गोविन्द राम मन्त्री आर्य समाज ग्रेटर कैलाश द्वारा प्रमाणित औषधियों के बिलों के भुगतान में खर्च होता रहेगा।

श्री हरिकिशन लाल स्मृति गाजियाबाद स्थिर निधि १०० ००० रुपये
(संस्थापक—श्रीमती इन्द्रावती आर्या)

इस निधि के ५० ००० बैंक में फिक्सड डिपाजिट में जमा थे जो सात वर्ष में ब्याज द्वारा दूना होकर १,०६ ८३५) सभा को प्राप्त हो गए हैं। अब यह स्थिर निधि विधिवत बन गई है। इस निधि का ब्याज निम्न प्रकार खर्च होगा।

१०००) वार्षिक अनुदान उपदेशक विद्यालय टंकारा।

५००) वार्षिक अनाथालय पटौदी हाउस दरियागंज दिल्ली विकासार्थ की सहायतार्थ।

५००) आर्य अनाथालय फिरोजपुर की लडकियों की शादियों के लिए।

१०,०००) वेद प्रचार, आर्यवीर दल, दयानन्द सेवाश्रम संघ, मुख्यतः बांसवाडा, नागालैंड, आसाम, पर्वतीय क्षेत्रों में मीनाक्षीपुरम आदि के सेवार्थ, अथवा यदि कभी किसी पुस्तक के प्रकाशन में इस निधि के ब्याज का उपयोग आवश्यक हो तो पुस्तक में मेरे पतिदेव के साथ मेरा चित्र भी निधि के ब्याज से प्रकाशित करने के विवरण के साथ निधि का उल्लेख किया जाये।

प्रति वर्ष १७ सितम्बर को मेरे पूज्य पतिदेव हरिकिशन लाल जी की स्मृति में चित्र सहित संक्षिप्त जीवन परिचय भी निधि के उद्देश्य के उल्लेख सहित सार्वदेशिक साप्ताहिक में प्रकाशित किया जाए।

इस निधि के सचालन आदि पर सार्वदेशिक सभा का पूर्ण स्वत्व होगा।

जिस पत्र में इस निधि के विवरण का उल्लेख हो उसकी प्रतियां निम्न पते पर भेजी जाती रहे—

१—श्री दयाराम गोयल एडवोकेट (नोटरी) रमतेराम रोड गाजियाबाद।

२—श्री जयकिशन गुप्त, १९-४१ पंजाबी बाग, नई दिल्ली।

३—श्रीमती जयश्री दीवान, द्वारा बी० के० दीवान गुजरात रोड लश्कर ग्वालियर।

इस वर्ष निधि के ब्याज में से ५०१) प० ओंकार मित्र जी को तथा दस हजार रुपए तृतीय वनवासी आर्य महासम्मेलन हेतु व्यय किये गए।

स्व० श्री मावनमल खुराना शिक्षा स्मृति स्थिर निधि
२३-७-१९८९ की अन्तरंग द्वारा स्वीकृत

यह निधि २० हजार रु० से स्थापित की गयी। निधिकर्ता श्री सुधीर कुमार खुराना की माता श्रीमती शान्तिदेवी पत्नी स्व० सावनमल द्वारा पति की स्मृति में स्थापित ब्याज दो योग्य छात्रों को जो गुरुकुल एटा में शिक्षा प्राप्त कर रहे हों सभा की ओर से दिया जाएगा। इस वर्ष निधि के ब्याज में से गुरुकुल एटा को २५०० रुपए दिए।

जयनारायण गंगा बिशन लाहोटी चैरिटेबल स्थिर निधि
२३-७-८९ की अन्तरंग द्वारा स्वीकृत

यह निधि ब्रह्म प्रकाश लाहोटी सुजानगढ़ द्वारा पांच हजार रुपए से स्थापित की गई। इस निधि का ब्याज आर्य वीर दल अथवा संस्कृत विद्या के प्रचार प्रसार में सभा द्वारा व्यय किया जायेगा। पांच हजार रुपए की स्वीकृति के बाद इसे बढ़ाकर ११९०१ रुपये कर दिया गया है।

पुस्तक समीक्षा

संस्कृत में नया प्रकाशन:—

"देवर्षि दयानन्द चरितम्"

लेखक—आचार्य रविदत्त गौतम

सत्य सनातन वैदिक वाङ्मय के उद्धारक, महर्षि देव दयानन्द के सम सामयिक कृतित्व एव व्यक्तित्व पर आस्थामयी देववाणी के माध्यम मे आदर्श सस्मरण प्रस्तुत कर वैदिक सस्कृत साहित्य के अक्षय भडार को अभिवृद्धि प्रदान करने वाले आचार्य प्रवर श्री रविदत्त जी गौतम स्नेह एव श्रद्धा के पात्र हैं। सस्कृत भाषा मे "महर्षि देव दयानन्द का जीवन चरित्र" प्रवाहमयी प्रौढ कृति है। आर्य साहित्य के अध्येता इस रचना के माध्यम से लोकोपकार की प्रेरणा ग्रहण करेंगे, ऐसा मेरा सुविचारित मत है। आचार्य श्री से आशा है कि भविष्य मे भी आर्य समाज और ऋषि के मन्तव्यो को वाणी एव रचना के माध्यम से मुखरित करते रहेगे जिससे भावी पीढी अपने कर्त्तव्य को पहचानती हुई दिशा बोध ग्रहण कर सकेगी। शुभ कामनाओ के सन्दर्भ मे।

प्राप्ति स्थान

इन्दु प्रकाशन द्वारा ताज प्रेस, मायापुरी, नई दिल्ली

पृष्ठ सख्या १९८ मूल्य १५०) रुपये

—सम्पादक

विदेश समाचार

आर्य समाज लंदन मे संस्कृत दिवस

रविवार दिनाक ७ फरवरी ९३ को आर्य समाज लदन मे 'सस्कृत दिवस' बडे उत्साह और श्रद्धा के साथ सम्पन्न हुआ जिसमे सैकडो आर्य जनो ने भाग लेकर कार्यक्रम का लाभ उठाया।

सन्ध्या-यज्ञ के पश्चात् डा० तानाजी आचार्य का सस्कृत भाषा म प्रभावशाली स्वागत भाषण हुआ। सस्कृत भाषा की देवनागरी लिपि, व्याकरण की वैज्ञानिकता, विशाल साहित्य की प्राचीनता एव प्रामाणिकता आदि विषयो पर सक्षेप मे प्रकाश डालते हुए अपने स्वागत भाषण मे उन्होने प्रमुख अतिथि एव वक्ता डा० स्टीवन थामसन, इन्डोलाजी विभाग प्रमुख यूनिवरसीटी आफ लडन का परिचय दिया।

डा० थामसन ने अपने ४५ मिनट के मार्मिक व्याख्यान मे सस्कृत भाषा का सौन्दर्य, प्राचीनता, परिपूर्णता और साहित्य की परिपक्वता, इस विषय पर विस्तार से अपने विचार रखे। श्रोताओ के प्रश्नो के उत्तर देते हुए उन्होने कहा कि सस्कृत भाषा का प्रभाव ससार की सभी भाषाओ पर है सस्कृत भाषा एक प्राचीनतम नैसर्गिक भाषा है, सस्कृत भाषा की वर्णमाला उच्चारण पद्धति, अलकार आदि विशेष एव प्रशसनीय है।

"सस्कृत भाषा का विश्व की सभी भाषाओ से सम्बन्ध और उन पर सस्कृत का प्रभाव इस विषय पर बोलते हुए प्रो० एस०एन० भारद्वाज, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा यू० के० ने विश्व के विद्वानो के सस्कृत सम्बन्धी विचारो को प्रस्तुत करते हुए कहा सस्कृत भाषा ही विश्व के भाषाओ की जननी है। आर्यसमाज लदन के प्रधान श्री वीरेन्द्र वीर वर्मा ने सभी वक्ता, कार्यकर्ता एव श्रोताओ को धन्यवाद दिया तथा श्री राजेन्द्र कुमार चोपडा, मन्त्री आर्य समाज लदन ने कार्यक्रम का सचालन किया।

श्रोताओ ने कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशसा की। आरती शान्ति-पाठ और प्रीतिभोज के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

—श्री राजेन्द्रकुमार चोपडा
मन्त्री आर्य समाज लदन

स्वास्थ्य चर्चा—

सीने से उठने वाला दर्द जरूरी नहीं हृदय रोग हो

सीने से उठने वाला दर्द जरूरी नहीं कि हृदय रोग ही हो। सीने का दर्द अन्य कारणो से भी हो सकता है। ३३ प्रतिशत से अधिक सीने के दर्द हृदय से उत्पन्न नही होते। यह जानकारी यहा पेट के रोगो के विश्व सम्मेलन मे अमेरिका से आये डा० स्वेकलर तथा डा० रोथस्ती एव मूलचन्द अस्पताल के हृदय रोग विशेषज्ञ डा० के० एल० चोपडा ने दी।

हृदय रोग विशेषज्ञो के अनुसार यदि किसी व्यक्ति को यह बता दिया जाये कि उसका सीने का दर्द हृदय रोग नही है तो उसकी आधी तकलीफ तभी समाप्त हो जाती है। अमेरिका से आये डाक्टरों ने बताया कि उनके देश मे प्रति वर्ष लगभग छह लाख लोग सीने के दर्द की जाच के लिये आते हैं। इनमे दो लाख लोगो मे हृदय रोग नही पाया जाता।

सम्मेलन मे बताया गया कि हृदय का दर्द सीने के बीच से होकर बाये हाथ मे जाता है। सीने मे जलन के साथ अक्सर खाने की नली मे खाना खाते समय भी दर्द उठता है। भोजन नली मे दर्द के कारण व्यक्ति की नीद अचानक टूट जाती है।

डाक्टरो के अनुसार हृदय रोग मे अक्सर सीने के बीचो-बीच दर्द होता है तथा रोगी को दर्द की वजह से भारीपन महसूस होता है। उगली से सीना दबा कर बताया गया दर्द हृदय का दर्द नही होता, बल्कि यह दर्द मासपेशियो से उत्पन्न होता है। यह दर्द अधिकतर सीने के बायी ओर दूसरी पसली के निकट होता है।

हृदय रोग विशेषज्ञो ने लोगो को सलाह दी कि रात्रि का भोजन सोने से लगभग तीन घण्टा पहले करे। रात्रि भोजन के तुरन्त बाद सोना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

आचार्य विश्वश्रवा व्यास का निधन

वैदिक वाङ्मय के प्रसिद्ध विद्वान् तथा आर्य समाज के वरिष्ठ नेता महा-महोपाध्याय आचार्य विश्वश्रवा व्यास का ९० वर्ष की अवस्था मे २७ फरवरी १९९१ को रात्रि लगभग ३ बजे बरेली मे देहात हो गया।

आर्य जगत् में आचार्य जी महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य भक्त और सिद्धांतो की रक्षा मे हर किसी से सर्वदा टकराने और जूझने के लिए विख्यात रहे हैं। अपनी विलक्षण प्रतिभा, उग्रस्वभाव ओजस्वी भाषण और प्रभावी लेखन के लिए सदा स्मरणीय रहेंगे। वे अपनी ही धुन के धनी थे। व्याकरण एव साहित्य के एक अच्छे शिक्षक होते हुए भी वे सरल और भावुक हृदय व्यक्ति थे। उनका सरल एव सरस काव्य अनायास ही पाठको के हृदय को छू जाता है।

आचार्य जी ने आर्य समाज के सगठन मे विभिन्न पदो पर रहकर महर्षि दयानन्द सरस्वती के मिशन की महान सेवा की है। अन्तिम समय तक वे सक्रिय रहे। पिछले कई वर्षों से नेत्र ज्योति प्राय नष्ट हो जाने पर भी अपने साहस और दृढ इच्छा शक्ति से दयानन्द और आर्य समाज की धुन मे ही मस्त रहे। अपने घर और परिवार को कभी भी अपेक्षित समय नहीं दिया।

एक साधारण परिवार मे जन्म लेकर अभाव एव उपेक्षा के वातावरण में जाते हुए भी उन्होंने अपने अथक परिश्रम, अदम्य साहस और महान लगन से विभिन्न स्थानो पर विभिन्न गुरुओ से विद्याध्ययन करते हुए स्वय को एक उच्चकोटि के विद्वान के रूप में स्थापित किया। उन्होंने अनेक उत्तम ग्रन्थ लिखे जिनमे कुछ अप्रकाशित ही रह गये।

आचार्य जी की अन्त्येष्टि २८ फरवरी को बरेली स्थित श्मशान भूमि पर पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुई। सस्कार प० अशर्फीलाल आर्य तथा प० विद्याशकर अनलेश ने कराया। इस अवसर पर डा० ओमप्रकाश आर्य, सत्य स्वरूप एडवोकेट, डा० सतोष कृष्ण डा० प्रकाश, आचार्य प्राज्ञदेव डा० विश्वमित्र आदि अनेक विद्वान और आर्य समाज की विभिन्न सस्थाओ के प्रतिनिधि और कार्यकर्ता उपस्थित थे।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

(पृष्ठ ४ का शेष)

५१—श्री विजय बहादुरसिं		आर्य समाज बख्शीपुर गोरखपुर
५२—श्री डा० रमाकान्त चतुर्वेदी	३३० गुलरियागार्डा बाराबकी
५३—श्री देव शर्मा		हरदोई
५४—श्री सियाराम आर्य		आर्य समाज कुकरा टाउन लखीमपुर-खीरी

सच्चिदानन्द शास्त्री		मनमोहन तिवारी
वरिष्ठ उपप्रधान		सभा मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उ प्र
५ मीराबाई मार्ग लखन ऊ

ज्ञान और चिन्तन की अनूठी रचनाएं

१. वैदिक सन्ध्या से ब्रह्मयात्रा		२०)
२. संध्या यज्ञ और आर्य समाज का सांकेतिक परिचय	४)५०

लेखक—स्व० पडित पृथ्वीराज शास्त्री

उक्त दोनो पुस्तके आर्य समाज के वैदिक विद्वान और यज्ञ प्रेमी स्व० पृथ्वीराज शास्त्री की अमूल्य कृतिया हैं। दोनो पुस्तकें सभी आर्य समाजो, व यज्ञ प्रेमियो के लिए सग्रह करने योग्य है। बढ़िया कागज, सुन्दर छपाई है। विक्रेताओ को ३० प्रतिशत छूट पर उपलब्ध—

प्राप्ति स्थान—
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

डाक्टरों ने शाकाहार को अधिक प्रोटीनयुक्त बताया

ग्वालियर ५ जनवरी। दिनांक ३ जनवरी को रात्रि कालीन हिन्दी समाचार बुलेटिन मे शाकाहार विषय पर डाक्टरो के सम्मेलन की रिपोर्ट प्रसारित कर मांसाहार की अपेक्षा शाकाहार अधिक उत्तम व प्रोटीनयुक्त बताया तथा मांसाहार से होने वाली हानियां भी व्यक्त की जबकि महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा बताए अनुसार आर्य समाज अनेको वर्षों से शाकाहार पर ही बल देता आया है।

अत आर्य समाज चित्रगुप्त गज, लश्कर के उपप्रधान श्री प्रकाशचन्द अग्रवाल व मन्त्री श्री बाबूराम गुप्त ने डाक्टरो द्वारा शाकाहार को उचित बताए जाने पर भारी प्रसन्नता व्यक्त की है तथा प्रधान मन्त्री से माग की है कि वे मानव जाति के भविष्य को सुन्दर व सुदृढ बनाए जाने हेतु गाय, बकरी आदि पशुओ को काटने तथा बिक्री पर पूर्ण रूप से पाबन्दी लगायें एव शाकाहार का दूरदर्शन, रेडियो व समाचार पत्रो के माध्यम से अधिक से अधिक प्रचार प्रसार कर शाकाहारी भोजन करने पर ही बल दें, जिससे दूध, घी आदि की देश मे कमी न हो और मनुष्य दूध घी का सेवन कर अधिक बलशाली बन देश की शक्ति बनें। —बाबूराम गुप्त

मन्त्री, आर्यसमाज चित्रगुप्तगज, लश्कर, ग्वालियर

आर्य समाज द्वारा दंगा पीड़ितों को तिल के लड्डू और वस्त्र वितरित

भोपाल १५ जनवरी। मकर सक्रान्ति के शुभ अवसर पर स्थानीय चारो आर्य समाजो द्वारा सयुक्त रूप से उनके द्वारा पुनर्वास हेतु गोद ली गयी बस्ती बाफना कालोनी के शिव मन्दिर पर कल यहा यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमे आर्य समाज के पदाधिकारियो और कार्यकर्ताओ के अलावा बस्ती के सभी स्त्री, पुरुष और बच्चो ने भाग लिया। इस अवसर पर बस्ती के २०९ परिवारो के १०९२ लोगो मे आर्य समाज की ओर से एक क्विंटल तिल के लड्डू और विभिन्न आकार प्रकार के ऊनी और सूती वस्त्रो की ८ गठानें वितरित की गई। पुन एक बैठक आयोजित करके बस्ती के निवासियो की समस्याए सुनी गई और उनके निराकरण का हर सभव उपाय करने का वचन यहा के निवासियो को आर्य समाज द्वारा दिया गया।

—आदित्यपाल सिंह आर्य

आचार्य ब्र० आर्य नरेश की वेद-प्रचार यात्रा

प्रतिवर्ष की भाति इस वर्ष भी फरवरी १९९३ मे ओजस्वी वक्ता' उदगीथ साधना-स्थली (हिमाचल) के सस्थापक एव पूरे भारत मे वेद प्रचार करने वाले श्री आचार्य ब्र० आर्य नरेश जी की महाराष्ट्र एव गुजरात की वेद प्रचार यात्रा सफल रही।

कच्छ यात्रा के दौरान तीन दिन मे उनकी तेरह सभाए हुई जिनमे कई गण्यमान्य व्यक्तियो सहित सैकडो लोगो ने भाग लिया।

ब्र० आर्य नरेश की इस प्रचार यात्रा से वैदिक धर्म के प्रचार व आर्यसमाज के सगठन को काफी बल मिला है।

—वाचोनिधि आर्य, मन्त्री

होली के पवित्र पर्व के अवसर पर

आर्य समाज लारेन्स रोड अमृतसर मे प्राचीन परम्परा के अनुरूप इस वर्ष भी ७ मार्च से १४ मार्च तक आध्यात्मिक प्रवचनो का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर दयानन्द मठ चम्बा से पूज्यपाद स्वामी सुमेधानन्द जी पधार रहे हैं। प्रात हवन के उपरान्त (७-४५ से ८-३० तक, रविवार को ९-०० से ९-३५ तक) भजनोपदेशक प० हरीशचन्द्र एव आर्य माडल हाई स्कूल के विद्यार्थियो के द्वारा भजन होंगे। तदोपरान्त (८-३० से ९-१५ तक, रविवार को ९-३० से १० ३० तक) स्वामी जी महाराज के द्वारा आध्यात्मिक प्रवचन होंगे।

सार्वदेशिक सभा का प्रकाशन दयानन्द दिव्यदर्शन खोजपूर्ण ग्रन्थ

'दयानन्द दिव्य दर्शन सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित देखने को मिला। सुन्दर चित्र बढिया छपाई, उपयोगी सामग्री एव खोजपूर्ण तथ्य और सत्य जानकर अति प्रसन्नता हुई। स्वामी दयानन्द का वार्तालाप केशवचन्द्र सेन से कलकत्ता मे हुआ जो आखें खोल देने वाला है। हिन्दी का विरोध करने वाले यह नही जानते कि बहुत सख्या मे ग्रामीण अग्रेजी के माध्यम से नही, अपितु मातृ भाषा द्वारा ही शिक्षित किए जा सकते है। खेद है कि राष्ट्र मे स्वाध्यायशील व्यक्तियो की सख्या थोडी है। यह ग्रन्थ दहेज के साथ वधु को दिया जा सकता है।

—वीर भान वीर'

धर्मपाल आर्य दिवंगत

आर्य समाज नरवाना के भूतपूर्व प्रधान, आर्य वीर दल सयुक्त पजाब के मन्त्री अनेक आर्य शिक्षण सस्थाओ के कर्णधार श्री धर्मपाल आर्य का १७ फरवरी को दिल्ली मे हृदय गति रुक जाने से स्वर्गवास हो गया।

स्व० श्री धर्मपाल आर्य ने आर्य समाज द्वारा चलाये गये आन्दोलनो, मे कई कई मास की जेले काटी। उन्होने नरवाना के निकटवर्ती देहात मे आर्यसमाजो की स्थापना की तथा भारी सख्या मे लोगो को आर्य समाज मे लाने मे सफल हुए। वे एक अच्छे वक्ता तथा लेखक व कवि भी थे।

उनके निधन पर नरवाना की सभी शिक्षण सस्थाओ ने विद्यालय बन्दकर उन्हे श्रद्धाजलि दी।

—धर्मदेव विद्यार्थी

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०४९/९३   सार्वदेशिक साप्ताहिक   (१४-३-१९९३)   बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (C) ९३
R N. 626/57   Licensed to post without prepayment License No. U (C) 93 Post in N.D.P.S.O.on   11-12-3-1993

शोक समाचार

—आर्य समाज मुसाढ़ी नालन्दा विहार के एक सक्रिय एवं कर्मठ सदस्य श्री शिवबालक पंडित आर्य का ४५ वर्ष की अवस्था में दि० ३१-१२-९२ को उनके निवास पर निधन हो गया। अन्त्येष्टि के बाद तीन दिनों तक शांति यज्ञ का आयोजन किया गया।

—आर्य समाज सोलापुर के सक्रिय कार्यकर्ता श्री दशरथसा प्रभूसा बारसीद का दि० २४-१-९३ को निधन हुआ। वे ७५ वर्ष के थे। श्री दशरथसा स्वातन्त्र सेनानी थे। आर्य समाज के अनेकों आन्दोलनों में वे बढ़ चढ़ कर भाग लेते रहे हैं। आर्य समाज सोलपुर के प्रधान, मन्त्री व कोषाध्यक्ष इन पदों पर रहकर तन-मन-धन से सेवा की है।

ऐसे लगनशील, निष्ठावान व सच्चे कार्यकर्ता के देहावसान पर आर्यसमाज में आयोजित शोक सभा में उन्हें भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

—आर्य समाज पटेल नगर दिल्ली के श्री वासुदेव जी का निधन दिनांक २२-१-९३ को हो गया। वे आर्य समाज पटेल नगर दिल्ली के निष्ठावान, सदस्य थे। परम पिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

—जगन्नियन्ता परमात्मा की लीला के आधीन दिनांक २८-१-९३ बसंत पंचमी को आर्य समाज के स्तम्भ, आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद के प्रधान, दयानन्द शिक्षण संस्थान फरीदाबाद के संस्थापक एवं शिक्षा तथा आर्य जगत को समर्पित, मानवता के निःस्वार्थ सेवी तथा निष्काम कर्मयोगी श्री कन्हैयालाल मेहता का पार्थिव शरीर पंचतत्व में विलीन हो गया। इस उपलक्ष में शान्ति यज्ञ (श्रद्धांजलि सभा) रविवार दिनांक ७-२-९३ सायं ३ बजे से ५ बजे तक उन्हीं के द्वारा निर्मित दयानन्द महिला महाविद्यालय ग्रीनफील्ड एन. एच. ३ (बी. के. अस्पताल के पास) के प्रांगण में सम्पन्न हुई।

—श्रीमती शांति देवी धर्मपत्नी स्व० श्री दीवान सिंह मन्त्री (रामगढ़) का २० जनवरी १९९३ को हल्द्वानी में स्वर्गवास हो गया। ३१-१-९३ को उनके पैतृक स्थान 'देव सदन' ग्राम बिठौरिया (ऊंचा पुल) हल्द्वानी में दिवंगत आत्मा की शान्ति हेतु वृहद यज्ञ व शोकसभा का आयोजन सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अनेको व्यक्तियों ने उनको श्रद्धांजलि समर्पित की।

—गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के परिदृष्टा आचार्य प्रियव्रत विद्यामार्तण्ड की धर्मपत्नी श्रीमती यशोदा देवी के १७ जनवरी को देहावसान के उपलक्ष्य में २० जनवरी को यज्ञ भवन आर्य नगर पर आयोजित शांति यज्ञ और श्रद्धांजलि कार्यक्रम में भाव भीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कुलपति श्री सुभाष विद्यालंकार ने कहा कि स्व० माताजी के अपनत्वपूर्ण व्यवहार से कभी भी परिवार से अलग होने का आभास नहीं हुआ। वह ममता का साकार रूप थी। उनका शुभाशीष सदा गुरुकुल के साथ रहा। कुलपति जी ने कहा कि आचार्य प्रियव्रत जी के मार्ग दर्शक पाण्डित्य के पीछे माता यशोदा का ही हाथ रहा है। उन्होंने माता जी के स्नेह को अपने जीवन की अमूल्य निधि बताया।

इस अवसर पर अनेकों आर्य विद्वानों तथा अन्य सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों ने श्रद्धांजलि दी।

माता यशोदा अपने पीछे दो विवाहित पुत्र एवं दो विवाहित पुत्रियां फलते फूलते परिवार के साथ छोड़ गयीं।

—महेन्द्र कुमार, सहायक मुख्याधिष्ठाता

जन्मोत्सव सम्पन्न

दीनानगर में स्वामी स्वतन्त्रानन्द सरस्वती जी महाराज का जन्मोत्सव बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्वामी स्वतन्त्रानन्द कालेज दीनानगर आर्यसमाज मठ दीनानगर तथा दयानन्द मठ दीनानगर में भव्य समारोह हुए। तीनों समारोहों में आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु तथा डा० अशोक आर्य ने स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के जीवन पर विषद् प्रकाश डाला। दयानन्द मठ में स्कूलों के बच्चों ने स्वामी जी के जीवन पर भाषण, कविताएं, भजन प्रस्तुत किये। कालेज के समारोह की अध्यक्षता वीतराग स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने की। इस अवसर पर डा० अशोक आर्य लिखित पुस्तक "कर्मवीर स्वामी स्वतन्त्रानन्द सरस्वती जी का संक्षिप्त जीवन चरित" तथा प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु की नवीनतम कृति" धरती हो गई लहूलुहान का विमोचन स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने किया।

११० वर्ष बाद ऋषि दयानन्द की इच्छा पूर्ण हुई

मृत्यु से एक वर्ष पूर्व की गई, अपनी वसीयत में ऋषि ने अपने ग्रन्थों के भाष्य किये जाने की इच्छा व्यक्त की थी। तदनुसार पहली बार १९८२ में संस्कृत, हिन्दी तथा अंग्रेजी में अनेक कालजयी ग्रन्थों के लेखक तथा आर्यसमाज को सर्वात्मना समर्पित वैदिक विद्वान स्वामी विद्यानन्द सरस्वती ने इस महान कार्य को करने का संकल्प किया। उदयपुर के जिस महल में बैठ कर ऋषि ने अपने सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण एवं क्रान्तिकारी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रचना की थी, राजस्थान सरकार द्वारा उस महल को आर्य समाज को भेंट किये जाने के ऐतिहासिक अवसर पर २८ नवम्बर १९९२ को वीतराग स्वामी सर्वानन्द जी की अध्यक्षता में स्वामी विद्यानन्द जी द्वारा बड़े आकार (२०×३०/८) के दो हजार पृष्ठों में लिखे गये 'सत्यार्थ भास्कर' के प्रथम खण्ड का लोकार्पण समारोह सम्पन्न हो गया। सत्यार्थ प्रकाश के इस भाष्य में ऋषि के मन्तव्यों की विस्तृत व्याख्या तथा अतिरिक्त युक्तियों व प्रमाणों से उनकी पुष्टि की गई है। इसे पढ़ने पर सत्यार्थ प्रकाश सम्बन्धी प्रायः सभी शंकाओं का समाधान हो जाता है।

इससे पूर्व स्वामी विद्यानन्द जी द्वारा 'भूमिका भास्कर' नाम से वृहदाकार दो भागों में किया गया ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का भाष्य प्रकाशित हो चुका है। सत्यार्थ भास्कर के दोनों भागों का मूल्य क्रमशः चार सौ व तीन सौ रुपये हैं। किन्तु ३१ मार्च १९९३ तक मूल्य जमा कराने वालों को दोनों भाग केवल पांच सौ रुपये में मिलेंगे।

पूजनीय स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती द्वारा रचित अन्य ग्रन्थ 'भूमिका भास्कर' के दोनों भाग केवल तीन सौ रुपये में उपलब्ध हैं।

प्राप्ति स्थान :—

१—इन्टर नेशनल आर्यन फाउण्डेशन C/o कैप्टन देवरत्न आर्य ६०३ मिल्टन अपार्टमेन्ट्स, जुहूतारा, बम्बई-४००,०४९.
दूरभाष-निवास-६४६ २१ ८०, ६४६४१९ ३१

२—रामलाल कपूर ट्रस्ट बहालगढ़ सोनीपत

वेद प्रचार

आर्य समाज सुल्तानपुर पट्टी (नैनीताल) में लाला लाजपतराय जयन्ती, वीर हकीकत राय बलिदान दिवस एवं वसन्त पंचमी का पर्व संयुक्त रूप से २८ जनवरी ९३ को मनाया गया। इस अवसर पर विशेष यज्ञ हुआ और लाजपतराय व हकीकत राय और बसन्त पंचमी के बारे में बताया गया तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती का साहित्य आधे मूल्य पर विक्रय किया गया।

—श्री कृष्ण आर्य (नैनीताल)

आर्य वीर दल शिविर

आचार्य जगदीश जी ने सूचना दी कि जून १९९३ में दयानन्द मठ दीनानगर में आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर लगाया जायेगा। एतदर्थ तिथियों की घोषणा बाद में की जायेगी। आर्य समाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि वह अभी से ही शिविर के लिये आर्य वीरों को तैयार करना आरम्भ कर दें तथा इसकी सूचना आचार्य जगदीश जी को दयानन्द मठ दीनानगर के पते पर भेजें।

—डा० अशोक आर्य

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

महर्षि दयानन्द उवाच

● अन्य वे महाशय हैं जो अपने तन, मन और धन से संसार का अधिक उपकार सिद्ध करते हैं। निन्दनीय मनुष्य वे हैं जो अपनी अज्ञानता से स्वार्थवश होकर अपने तन, मन, धन से जगत् मे पर हानि करके बड़े लाभ का नाश करते हैं। सृष्टिक्रम से ठीक-ठीक यही निश्चय होता है कि परमेश्वर ने जो-जो वस्तुएं बनाई हैं वह पूर्ण उपकार लेने के लिए हैं, अल्प लाभ से महा हानि करने के अर्थ नहीं ?

● कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र | दूरभाष । ३२७४७७१ | वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे

वर्ष ३१ अंक ५] | दयानन्दाब्द १६९ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९३ | चैत्र कृ० ७ | सं० २०४९ | १४ मार्च १९९३

चैत्र शुक्लप्र तिपदा २४-३-९३ को

आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोह मनायें

समस्त आर्य जनों से सभा-प्रधान जी का निवेदन

ज्योति मिले और अमर हों

सत्रस्य ऋद्धिरस्यगन्म
ज्योतिरमृता अभूम।
दिवं पृथिव्या अध्यारुहाम-
अविदाम देवान् स्वर्ज्योतिः ।।
यजु० ८-५२ ।।

शब्दार्थ—(सत्रस्य) यज्ञ की, आत्मत्याग की, (ऋद्धिः) समृद्धि या सिद्धि, (असि) हो। ज्योतिः) प्रकाश या तेज को, (अगन्म) हम प्राप्त हुए। (अमृताः अभूम) हम अमर हो गए।(पृथिव्या) पृथिवी से, (दिवम्) द्युलोक को, (अधि) आरुहाम) चढ़े, गए । (देवान्) देवों को,(अविदाम) प्राप्त किया। (स्व. ज्योतिः अविदाम) स्वर्गीय या दिव्य ज्योति को पाया।

अनुशीलन—इस मन्त्र में भी दिव्य ज्योति की कामना की गई है। ज्योति की प्राप्ति का साधन बताया गया है—आत्मत्याग। आत्मत्याग से ज्योति की प्राप्ति होती है। उसका फल यह है कि वह भौतिकता से ऊपर उठता है और अध्यात्मरूपी ज्योति को प्राप्त करता है।

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक :

आगामी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा सं० २०५० तदनुसार २४ मार्च १९९३ को समस्त आर्य जगत् द्वारा आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह पूर्वक मनाए जाने की प्रेरणा करते हुए सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती ने सभी आर्य जनों के प्रति शुभ कामनाये व्यक्त की है। इसी दिन सर्व प्रथम सन् १८७५ में युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने बम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की थी।

आर्य समाज की स्थापना का मुख्य उद्देश्य वेदप्रचार, कुरीति निवारण, अस्पृश्यता निवारण, मद्य-निषेध गौरक्षा, तथा चरित्र निर्माण के कार्य को योजनाबद्ध ढंग से आगे बढ़ाना है।

अतः सभी आर्य समाजों को निर्देश दिया जाता है कि इस दिन—

१—प्रातःकाल प्रभात फेरी का आयोजन उत्साह पूर्वक किया जावे।

२—वेद प्रचार कार्यक्रमों को प्रमुखता दें। प्रातः यज्ञ के उपरान्त योग्य विद्वानों द्वारा वैदिक सिद्धान्तों पर प्रवचन कराये जायें।

३—यज्ञ के उपरान्त सार्वजनिक सभाओं का आयोजन करके आर्य समाज के कार्यों का सिंहावलोकन किया जाये तथा अन्य लोगों को आर्य समाज में आने की प्रेरणा की जाये।

४—इस दिन प्रत्येक आर्य परिवार अपने घरों में दीपमाला करें तथा ओ३म् ध्वज फहराये, आर्य समाज मन्दिरों में भी रोशनी की व्यवस्था और ओ३म् ध्वज फहराया जाये।

५—अपने क्षेत्र में भी आर्य समाजों की स्थापना की जाये।

६—प्रत्येक आर्य एवं आर्य सभासद आत्म निरीक्षण करके देखें कि उनके वैयक्तिक और सामाजिक आचरण मे आर्य समाज का गौरव बढा है या नहीं ? यदि कोई त्रुटि रही हो तो उसमें सुधार करके अपने को आर्य समाज के लिये अधिकाधिक उपयोगी बनाने का प्रयत्न करना चाहिये।

७—इस दिन समस्त आर्य समाजें सार्वदेशिक सभा की वेद प्रचार निधि के लिये अधिक से अधिक धन संग्रह करके सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२ के पते पर धनादेश या बैंक ड्राफ्ट द्वारा भिजवायें।

८—सामूहिक यज्ञ, सहभोजों का आयोजन करके छुआछूत उन्मूलन के कार्य को भी बल देना चाहिये।

९—महर्षि दयानन्द सरस्वती जिनका १६९वां जन्म दिवस १६ फरवरी १९९३ को मनाया गया था, उनके जीवन चरित्र और कार्यों के प्रति भी जन सभाओं द्वारा जनता में अधिकाधिक प्रचार किया जावे।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म दिवस एवं बोधोत्सव समारोह पूर्वक सम्पन्न

आर्य समाज तात्याटोपे नगर भोपाल—में महर्षि का १६९ वा जन्म-दिवस समारोह, सार्वदेशिक सभा के निर्देशानुसार १६ फरवरी को म० प्र० की राजधानी भोपाल मे समस्त आर्य समाजों तथा संस्थाओ के संयुक्त तत्वावधान में आर्य समाज तात्या टोपे नगर भोपाल के प्रांगण में श्री लक्ष्मी नारायण शर्मा भू० पू० सहकारिता मन्त्री की अध्यक्षता में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर अनेको गणमान्य व्यक्तियों ने सभा को सम्बोधित किया। तथा विद्यालय के छात्र छात्राओं ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किये।

आर्य केन्द्रीय सभा कलकत्ता—के तत्वावधान में १९ फरवरी १९९३ को कलकत्ता के मध्य मे स्थित आकलैण्ड स्क्वायर पार्क मे विराट आयोजन के साथ भव्य रूप में ऋषि बोधोत्सव हर्षोल्लास के साथ सहस्रों आर्य नर-नारियो की उपस्थिति में मनाया गया। इस कार्यक्रम का विशेष आकर्षण पारिवारिक यज्ञ था ७६ यज्ञ कुण्डो पर एक यज्ञ सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता डा० हीरालाल चोपड़ा ने की तथा विशिष्ट अतिथि भू० पू० मन्त्री श्री यतिन चक्रवर्ती तथा मुख्य अतिथि श्री देवकीनन्दन पोद्दार बंगाल सरकार थे। इस अवसर पर बच्चों की एक चित्र प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया।

दयानन्द कन्या विद्यालय पटना—में महर्षि दयानन्द सरस्वती का १६९वां जन्मदिवस समारोह मुख्यमन्त्री श्री लालू प्रसाद यादव की उपस्थिति मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अनेकों गणमान्य नागरिकों ने स्वामी दयानन्द सरस्वती को महान समाज सुधारक, वर्गभेद, जातिभेद मिटाने वाला और वैदिक धर्म के पुनरुत्थान हेतु कठिन संघर्ष करने वाला बताया समारोह की अध्यक्षता बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री भूप नारायण शास्त्री ने की। मुख्यमन्त्री ने स्वामी दयानन्द सरस्वती की जीवनी पर एक स्मारिका का भी विमोचन किया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मोत्सव तथा बोधोत्सव देश के प्रत्येक स्थान में समारोह पूर्वक मनाया गया। स्थानाभाव के कारण आर्य समाजो तथा संस्थाओ ने नाम प्रकाशित किये जा रहे हैं। आर्य समाज सरदार पटेल मार्ग खलासी लाइन सहारनपुर, आर्य समाज खण्डवा म० प्र०, आर्य समाज सुल्तानपुर पट्टी नैनीताल, सर्वदानन्द गुरुकुल महाविद्यालय साधु आश्रम, आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय नर्मदापुरम होशंगाबाद आर्य समाज बीसलपुर (उ० प्र० आर्य पुत्री पाठशाला गिदड़वाहा, आर्य समाज अमरोहा, आर्य समाज रजपुरा बदायूं, आर्य समाज सिविल लाइन्स अलीगढ़, आर्य समाज बागपत मेरठ, आर्य समाज फैजाबाद, आर्य समाज पुरानी गुदरी बेतिया बिहार, आर्य समाज इन्दौर बुलन्दशहर, आर्य समाज लहेरिया सराय, आर्य वीर दल, तात्यटोपे नगर भोपाल, आर्य समाज मोरगा, आर्य समाज माडल टाउन लुधियाना, आर्य समाज जामनगर, आर्य-समाज डालटन गंज पलामू (बिहार) आर्य समाज देवबन्द, अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टकारा, आर्य समाज जोनपुर।

दयानन्द संस्थान का वार्षिकोत्सव एवं वेदभिक्षु जयन्ती

दयानन्द संस्थान और 'जनज्ञान' मासिक के संस्थापक महात्मा वेदभिक्षु की ६५वी जयन्ती और दयानन्द संस्थान का वार्षिकोत्सव १० से १४ मार्च तक वेदमन्दिर इब्राहीमपुर दिल्ली में आयोजित किया गया है। इस समारोह के अन्तर्गत विभिन्न स्थानो पर भजन प्रवचन एवं गोष्ठियो का आयोजन किया गया है। समारोह मे आर्य जगत के प्रतिष्ठित विद्वानों, सामाजिक कार्यकर्ताओ तथा भजनोपदेशकों को आमन्त्रित किया गया है। १४ मार्च को प्रातः १० बजे से २ बजे तक होने वाले आर्य सम्मेलन की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी करेंगे। अधिक से अधिक संख्या मे पधार कर कार्यक्रम को सफल बनायें।

पल-पल पीर बही है

इतने घाव हुए सीने में, इतनी व्यथा सही है।
इन नयनों से पिघल-पिघल कर पल-पल पीर बही है॥
जब भी बोलो तब ही बोली बंदूकों की बोली।
हत्यारों ने खुल कर खेली रोज खून की होली॥
हया-शर्म का बेरहमों ने पीट दिया दीवाला।
बहन-बेटियों के सुहाग को तार-तार कर डाला॥
इतने ढाये जुल्म कि जिनकी सीमा नहीं रही है।
इन नयनों से पिघल-पिघल कर पल-पल पीर बही है॥
मां से बेटा, पत्नी से पति, पिता पुत्र से छीना।
किस्मत में लिख दिया सभी के घूंट जहर के पीना॥
जाने कब का द्रोह चुकाया, कब का बैर निकाला।
'कत्लगाह' में इस धरती को परिवर्तित कर डाला॥
यह ही साजिश रही हमेशा बाकी कुछ मत छोड़ो।
इस समाज कों, इस प्रदेश को और देश को तोड़ो॥
बड़े यत्न से आज सितम की कुछ दीवार ढही है।
इन नयनों से पिघल-पिघल कर पल-पल पीर बही है॥
उठो समर्थ जन, शासक लोगों मिलकर फर्ज निभाओ।
जिनके घर-परिवार उजड गए उनको गले लगाओ॥
खतरा खत्म हो गया मन से ऐसा बहम निकालो।
आग दबी है, बुझी नहीं है, इस पर पानी डालो॥
सही वक्त पर सही कदम ही होता सदा सही है।
इन नयनों मे पिघल-पिघल कर पल-पल पीर बही॥

—विजय निर्बाध

ज्योति मिले और अमर हों

(पृष्ठ १ का शेष)

इस मन्त्र मे आत्म-त्याग, स्वार्थ भावना परित्याग या आत्म-बलिदान को सिद्धि बताया गया है। इससे ज्योति मिलती है और ज्योति से अमरत्व या मोक्ष की प्राप्ति होती है। मोक्ष या अमरता जीवन का सर्वोत्तम लक्ष्य है। इसके लिए सर्वप्रथम स्वार्थभावना का परित्याग करना अनिवार्य है। जहां स्वार्थभावना या स्वार्थवृत्ति है, वहां किसी प्रकार की ऋद्धि सिद्धि की आशा ही नहीं की जा सकती है। सत्र या यज्ञ इसी स्वार्थभावना के परित्याग का सूचक है। यज्ञ मे पड़ी हुई सामग्री या घृत किसी व्यक्तिविशेष का न होकर सार्वजनिक हो जाता है। यह 'इदं न मम' यज्ञ की भावना ही है। इसको ही आत्म-त्याग या आत्म-बलिदान की भावना कहते है। यह आत्म-त्याग की भावना मनुष्य को देवत्व की ओर ले जाती है। यह देवत्व दिव्य ज्योति का दर्शन कराता है। इसका ही मन्त्र मे वर्णन है कि पृथिवी से द्युलोक को गए। द्युलोक मे देवो के दर्शन हुए और वहां दिव्य ज्योति प्राप्त हुई। इस दिव्य ज्योति से ही अमरत्व प्राप्त होता है।

सहायक रजिस्ट्रार द्वारा—

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के विवाद का अदालती फैसला

श्री इन्द्रराज प्रधान मनमोहन तिवारी मन्त्री के चुनाव को मान्यता

(Court No, 2)

Special Appeal No, 2 (M/B) of 1993

Kailash Nath Singh and another — Appellants

Versus

Assistant Registrar and others — Respondents

—

Hon'ble Brijesh Kumar, J
Hon'ble B K Singh, J

This Special Appeal has been preferred against the Judgement passed by an Hon ble Single Judge dated 18 12 1992 in writ petition No 285/91

The first contention raised on behalf of the appellants is that since the election was held/conducted by the Registrar himself under sub section (2) of Section 25 of the Societies Registration Act, it will not be open for the Registrar to refer the dispute to the prescribed authority We don't find any substance in this argument This point has been dealt with by the learned Single Judge as well If election is conducted by the Registrar or by any officer authorised by him, it does not mean that the members are shut out from raising any objection if they have any to the conduct of the election In case any objection is raised by them, before the Registrar, we find no good reason to take any other view than one which has been taken by the learned Single Judge on the point

So far next contention is concerned that some opportunity of hearing is required to be given by the Registrar before taking a decision to refer or not to refer the dispute we find that this point has also been elaborately dealt with by the learned Single Judge Order referring a dispute to the prescribed authority is not an order which can be said to have affected adversely any of the vested rights of the parties nor such an order records any finding which may prejudice a party in the proceeding before the prescribed authority If a grievance is raised before the Registrar about the conduct or validity of election, he may refer the matter for adjudication before the prescribed authority in accordance with the provisions as contained under sub section (1) of Section 25 of the Societies Registration Act Such an order does nothing except referring the dispute for being tried before the prescribed authority We, therefore, find no merit in this contention as well to read something in the provision requiring the Registrar to afford an opportunity of hearing to the parties

We find no merit in the appeal It is accordingly dismissed

Sd–Brijesh Kumar
Sd- B K, Singh
24-2-1993

Copy of this order be supplied to the parties on payment of usual charges within a week

Seal

Sd–Brijesh Kumar
Sd–B K Singh
24-2-1993

Sd–

Sd–
27-2-93

१७ जनवरी १९९३ को आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० का वार्षिक चुनाव डी०ए०वी० कालेज लखनऊ मे सम्पन्न हुआ। इस चुनाव को सहायक रजिस्ट्रार, रजिस्ट्रार फर्म्स सोसाइटी द्वारा माण्यता प्रदान की गई है। इस मान्यता से कैलाश नाथ सिंह यादव के समस्त खोखले दावे निरस्त हो गए हैं। सम्पूर्ण विवरण नीचे प्रकाशित किया जा रहा है— —सम्पादक

प्रेषक,
श्री एम० सी० पाण्डे
सहायक रजिस्ट्रार
फर्म्स सोसाइटीज तथा चिट्स उ० प्र० लखनऊ।

सेवा मे,
श्री मनमोहन तिवारी,
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०
५, मीरा बाई मार्ग, लखनऊ।

क्रमाक—७२२४ (II)/१-७२ लखनऊ दिनाक २४ २-१९९३

विषय —आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० की प्रबन्ध समिति की सूची १९९३

महोदय

आपके पत्र दिनाक १७-१-९३ के सदर्भ में आपको सूचित किया जाता है कि प्रश्नगत प्रकरण मे कार्यालय द्वारा विधिक परामर्श प्राप्त किया गया। विधिक परामर्श के परिप्रेक्ष्य मे मा० न्यायालय मे लम्बित प्रकरण के निर्णय तक श्र १ द्वारा प्रस्तुत चुनाव कार्यवाई दिनाक १७ १ ९३ एव सूची वर्ष १९९३ नियमानुसार फाईल की गई।

भवदीय
एम० सी० पाण्डे
सहायक रजिस्ट्रार

पत्राचार (सत्यार्थप्रकाश) प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार-११००० रुपये

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली की ओर से महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थप्रकाश पर एक पत्राचार प्रतियोगिता प्रारम्भ की गईहै। इसमे १८ से ४० वर्ष की आयु के वे सभी प्रतियोगी भाग ले सकते हैं जो किसी भी मान्यता प्राप्त भारतीय या विदेशी विद्यालय/विश्वविद्यालय से १०+२परीक्षा उत्तीर्ण हो। प्रतियोगिता का माध्यम हिन्दी एव अग्रेजी रखा गया है। इच्छुक व्यक्ति २ रुपये प्रवेश शुल्क मनीआर्डर द्वारा भेजकर अपना रोल न० निर्देश एव प्रश्न-पत्र मगवा सकते है। रोल न० आदि मगवाने की अन्तिम तिथि ३१ जुलाई १९९३ है और उत्तर पुस्तिकाए पहुचाने की अन्तिम तिथि ३१ अगस्त १९९३ है। प्रथम, द्वितीय एव तृतीय पुरस्कार क्रमश ११०००) रुपये ५०००) रुपये, और २०००) रुपये रखे गये हैं। सत्यार्थ प्रकाश विश्व की एक रोचक एव सुप्रसिद्ध पुस्तक है और प्राय सभी पुस्तकालयो, मुख्य पुस्तक विक्रेताओ और स्थानीय आर्य समाज कार्यालयो से प्राप्त की जा सकती है। पुस्तक न मिलने पर सभा से भी मगवाई जा सकती है। डाक द्वारा मूल्य क्रमश हिन्दी ३०) रुपये, अग्रेजी ५) सस्कृत, उर्दू, कन्नड, तमिल, जर्मन, चीनी, बर्मी एवम् फ्रासीसी भाषाओ का मूल्य मात्र ४०) रुपये प्रति निर्धारित किया गया है

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
सभा-प्रधान

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश के प्रधान पं० इन्द्रराज जी व मन्त्री मनमोहन तिवारी को रजिस्ट्रार फर्म्स-सोसाइटी द्वारा मान्यता

यह जनरल स्टाम्प पेपर आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०
जिला लखनऊ नं० ७२
सूची वर्ष १९९३ के साथ संलग्न है।

कार्यालय रजिस्ट्रार फर्म्स सोसायटी — सत्य प्रतिलिपि
उत्तर प्रदेश लखनऊ (सील) — ((हस्ताक्षर)
स० रजिस्ट्रार

सेवा में,
रजिस्ट्रार,
फर्म्स सोसाइटीज एवं चिट्स
उत्तर प्रदेश लखनऊ
महोदय,

निवेदन है कि आपकी सेवा में १७-१-९३ को आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० का चुनाव सम्पन्न हुआ जिसके निर्वाचित अधिकारी एवं अन्तरंग सदस्यों की सूची वर्ष १९९३ आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित कर रहा हू, जिसको अनुमोदित करने की कृपा करें।

नाम	पद	पता	व्यवसाय
१—श्री पं० इन्द्रराज	प्रधान	१२४५ गोहरीपुरा मेरठ	समाज सेवा
२—श्री सच्चिदानन्द शास्त्री	उप-प्रधान	सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा रामलीला मैदान नई दिल्ली	समाज सेवा
३—श्री जयनारायण अरुण	' "	प्रसाद कुंज सिविल लाइन बिजनौर	पत्रकार
४—श्रीमती आशारानी राय	' "	एफ-१ अर्मापुर कानपुर	सर्विस
५—श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य	' "	मु० कोट अमरोहा मुरादाबाद	व्यापार
६—श्री मनमोहन तिवारी	मन्त्री	९, पुरानागणेशगज, लखनऊ	समाजसेवा
७—श्री वीरेन्द्रपाल शर्मा	उप-मन्त्री	१३१ सुनारे गली बुलन्दशहर	सर्विस
८—डा० विनय प्रताप	उप-मन्त्री	आर्य समाज बख्शीपुर, गोरखपुर	व्यापार
९—श्री ब्रजभूषणसिंह	उपमन्त्री	आ०स० जगतपुर मैनपुरी	समाज सेवा
१०—श्री विश्वम्भरदेव शास्त्री	' "	आ. स. देवबन्द सहारनपुर	„ ,,
११—श्री अरविन्द कुमार	कोषाध्यक्ष	आ.स. बुढाना मुजफ्फरनगर	„ ,'
१२—श्री बाकेलाल कसल	स.कोषाध्यक्ष	सुमित्रा सदन नैनीताल	,, „
१३—श्री देवकीनन्दन गुप्ता	पु. अध्यक्ष	३९-मालवीय नगर मुरादाबाद	व्यापार
१४—श्री वेदप्रकाश आर्य	स पु अध्यक्ष	आ० स० औरैया इटावा	व्यापार
१५—श्री डा.आर.ए सिंह	आय-व्यय निरीक्षक	डी.ए.वी. कालेज लखनऊ	सर्विस

प्रतिष्ठित सदस्य :—

नाम	पता	व्यवसाय
१६—श्री चौ० माधवसिंह	विनोद निवास बड़ौत मेरठ	पेन्शनर
१७—श्री महेश्वर पाण्डेय	डी. ए. वी. परिसर लखनऊ	„
१८—चौ० लक्ष्मीचन्द	दीवानहाल चान्दनी चौक दिल्ली	समाजसेवा

अन्तरंग सदस्य :—

नाम	पता
१९—श्री धर्मपालसिंह आर्य	गाजियाबाद
२०—श्री डा० भानुप्रकाश आर्य	आ० स० सिविल लाईन्स बदायूं
२१—श्री राममोहन आर्य	आ० स० गज मुरादाबाद
२२—श्री मोहनलाल आर्य	आ० स० पीलीभीत
२३—श्री द्वारिकाप्रसाद आर्य	आ० स० बासी सिद्धार्थ नगर
२४—श्री गुरुदत्त शर्मा	आर्य समाज भोलेपुर फर्रुखाबाद
२५—श्री श्रीपालसिंह आर्य	आर्य समाज मऊ रानीपुर झांसी
२६—श्री उमेशचन्द्र स्नातक	छिबियापुर इटावा
२७—श्री बसन्तसिंह चौहान	आर्य समाज बहादराबाद हरिद्वार
२८—श्री जगदीश प्रसाद शर्मा	आर्य समाज चौक बुलन्दशहर
२९ श्री हरीशचन्द्र श्रीवास्तव	आर्य समाज गोविन्दबाग बलरामपुर गोण्डा
३०—श्री ब्रह्मसिंह आर्य	आर्य समाज छपरौली मेरठ
३१—श्री कृष्ण कुमार आर्य	आर्य समाज सीतापुर
३२ - श्री राजेन्द्रपालसिंह आर्य	ग्रा० मई, पो० खानआलमपुर अलीगढ
३३—श्री श्रीकृष्ण जलाली	आर्य समाज जलाली अलीगढ
३४ श्री ओ३म प्रकाश आर्य	आर्य भवन २०८-बी प्रेमनगर बरेली
३५—श्री वीरेन्द्रसिंह चौहान	सीतापुर
३६—श्री जयकृष्ण आर्य	आर्य समाज गाजीपुर
३७—श्री माताप्रसाद त्रिपाठी	आर्य समाज जमुनियाबाग फैजाबाद
३८—श्री सूबेदार आर्य	बेवर मैनपुरी
३९—श्री सुरेन्द्रसिंह राजपूत	बिजनौर
४०—श्री पूरनसिंह एडवोकेट	गढ़वाल
४१—श्री जयदेवसिंह आर्य	आर्य समाज रहमतगंज रामपुर
४२—श्री प्रेमचन्द्र आर्य	आर्य समाज खलीलाबाद बस्ती
४३—श्रीकृष्ण धर्मालकार	रामगुलाम टोला देवरिया
४४—श्री गोबिन्दराम एडवोकेट	आर्य समाज आजमगढ़
४५—श्री सुदर्शनसिंह	आर्य समाज सहसवार बलिया
४६—श्री सोहन जी पाण्डेय	आर्य समाज चौक इलाहाबाद
४७—श्री राजाराम शास्त्री	मियानगी सहारनपुर
४८—श्री चन्द्र कुमार छाबड़ा	आर्य समाज कैन्टोनमेन्ट लखनऊ
४९—श्री डा० हर्षवर्धन	आर्य समाज जी. टी. रोड फतेहपुर
५०—श्री डा० ईश्वरचन्द्र गुप्ता	एफ-१ अर्मापुर स्टेट कानपुर

(शेष पृष्ठ १० पर)

प्रमाण-पत्र

दिनांक १७ जनवरी, ९३ को आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के लखनऊ में सम्पन्न वार्षिक चुनाव को मान्यता प्रदान की जाती है। आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० जिसका कार्यालय ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ है सार्वदेशिक सभा से सम्बद्ध है और इसके वर्तमान प्रधान श्री इन्द्रराज और मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी हैं। समूचे उ० प्र० में आर्य समाजों तथा इनसे सम्बद्ध संस्थाओं पर उक्त दोनों अधिकारियों के आदेश ही लागू होंगे।

उ० प्र० में आर्य समाज से भ्रष्टाचार के कारण निष्कासित श्री कैलाश नाथ सिंह यादव तथा उनके तथाकथित साथी जो प्रदेश की विभिन्न आर्य समाजों और सम्पत्तियों को अवैध रूप से हथियाने के प्रयत्नकर रहे हैं. उनका आर्य समाज के संगठन में कोई स्थान नहीं है। सार्वदेशिक सभा की मान्यता के बिना कोई भी व्यक्ति न तो किसी संस्था का वह अधिकारी माना जा सकता है और न ही उसके द्वारा निर्मित तथाकथित संस्था का संगठन में कोई महत्व हो सकता है।

अत: आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के अन्तर्गत सभी आर्य समाजों व उनसे सम्बद्ध संस्थाओं व शिक्षण संस्थाओं के मामले में केवल श्री इन्द्रराज और श्री मनमोहन तिवारी के आदेश और उनमें सभा द्वारा लिए गए निर्णय ही मान्य और वैध होंगे।

सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

भारतीय संस्कृति के आधार स्तम्भ

श्री ओंकार शास्त्री, गुरुकुल कुरुक्षेत्र, हरयाणा

"भारत" शब्द वस्तुत "भा"+"रत"—"भा"=ज्ञान, प्रकाश और "रत"=लगा हुआ, सलग्न, इस प्रकार भारत का अर्थ होता है—ज्ञान मे लगा हुआ।

"सस्कृति" शब्द "सम्" पूर्वक "कृ" धातु से 'क्तिन्' प्रत्यय करके निष्पन्न होता है। जब "सम्" पूर्वक "कृ" का अर्थ आभूषण होता है, तभी सुट् का आगम होता है। सस्कृति का अर्थ हुआ सुधार।

ससार मे तीन वस्तुओ का त्रिक दृष्टिगोचर होता है। उदाहरणार्थ—ईश्वर, जीव, प्रकृति। सत्त्व, रजस्, तमस्, आदि। इसी प्रकार प्रकृति सस्कृति और विकृति भी हैं। प्रत्येक पशु, पक्षी, मनुष्य तथा समस्त जड जगत् प्रकृति मे ही उत्पन्न होता है। पशु, पक्षी प्रकृति मे उत्पन्न होते हैं और कुछेक को छोड करके प्रकृति मे ही मृत्यु को प्राप्त हो जाते है, परन्तु मनुष्य प्रकृति मे उत्पन्न होकर भी यदि सस्कृत हुआ तो देवत्व को प्राप्त करता है और यदि विकृति मे आ गया तो राक्षस, नर-पशु आदि उपाधिया प्राप्त करता है।

सम्पूर्ण जड जगत् मानव द्वारा सस्कृति या विकृति को प्राप्त होता है। उदाहरण के लिए—वृक्ष प्रकृति है और उससे बनने वाली वस्तुए—जगले, किवाड, मेज, कुर्सी आदि उस वृक्ष का सस्कृतिरूप है तथा छिलके आदि ईधन जो जलाने आदि के काम आता है, वह उस वृक्ष का विकृति रूप है। यदि मेज, कुर्सी आदि वस्तुओ पर रग-रोगन कर दिया जाये तो वह सस्कृति की पराकाष्ठा कहलाती है। इससे वस्तु स्थायी, सुदृढ और सुन्दर बन जाती है।

भारतीय सस्कृति ससार की प्रथम सस्कृति है। यजुर्वेद मे कहा गया है—"सा प्रथमा सस्कृतिर्विश्ववारा" (यजु० ७/१४)। वस्तुत भारतीय सस्कृति ही सस्कृति है। और विश्व मे पाई जाने वाली अन्य सस्कृतिया इसी सस्कृति का विकृत रूप ही है। इसलिए इसको मानव सस्कृति, आदि सस्कृति और आर्य संस्कृति भी कहते हैं। अन्य सभ्यताए तो हो सकती हैं, परन्तु सस्कृति नही। छान्दोग्योपनिषद् मे आता है—धर्म के तीन स्तम्भ हैं—इज्या, अध्ययन और दान। यज्ञ के भी तीन आधार हैं—द्रव्य देवता और त्याग। 'द्रव्य' उस पदार्थ को कहते है जिससे आहुति दी जाती है। देवता वह है जिसके लिए आहुति दी जाती है और त्याग वह है जो देवता को आहुति देकर "इदन्न मम" बोलता है।

इसी प्रकार भारतीय सस्कृति के तीन आधार है—इतिहास, दर्शन और परम्परा। इतिहास के विषय मे महाभारतकार ने प्रथम ही लिखा है—

इतिहासप्रदीपेन मोहावरणघातिना।
लोकगर्भगृह कृत्स्न यथावत् सम्प्रकाशयेत् ॥

इतिहासरूपी दीपक से मोह और आवरण दूर हो जाता है,ससाररूपी सम्पूर्ण घर जैसे का तैसा दिखाई देता है।

भारतीय सस्कृति भी इतिहास स नाता जोडती है। शिव, राम, कृष्ण, युधिष्ठिर, अर्जुन, विक्रमादित्य, छत्रपति शिवाजी, महाराणा, प्रताप आदि सम्पूर्ण भारत के सर्वमान्य पुरुष है। इसी प्रकार स्त्रियो मे दमयन्ती, सीता, सावित्री, गान्धारी आदि का सब ही सम्मान करते हैं।

महामान्य वसिष्ठ, विश्वामित्र, बुद्ध, महावीर, शकर, दयानन्द, नानक आदि के प्रति सभी श्रद्धा रखते है। यहा तक कि चतुर्थ वर्णाश्रमी भी महर्षि बाल्मीकि से अपना वश मानते है।

हमारे साहित्यकारो ने सत्यवादी, हरिश्चन्द्र, दुष्यन्त, भरत, रघु, दिलीप, अग्निमित्र आदि के विषय को लेकर साहित्य रचना की है। विदेशो से आने वाले भी हमारे हृदय से इनके सम्मान को नही घटा सके। स्वामी रामतीर्थ और विवेकानन्द का विदेशो मे धर्म प्रचार सभी भारतीयो के हृदय मे नव जागरण उत्पन्न करता है। गुरु गोविन्दसिंह के पुत्रो का बलिदान जाति मे नव-जीवन का सचार करता है। दुर्गावती, पद्मिनी, लक्ष्मीबाई के उदाहरण हमको प्रेरणा देते है। इस प्रकार मे इतिहास भारतीय सस्कृति का प्रथम साधन सिद्ध होता है।

साम्प्रतम् हमको गलत इतिहास पढाया जाता है, उसी का परिणाम है—पजाब मे उग्रवाद तथा हिन्दु-मुस्लिम साम्प्रदायिक सघर्ष।

यदि सिख भाईयो को वास्तविक सत्य इतिहास पढाया जाता कि सिखधर्म का हिन्दुओ की रक्षा के लिए उद्भव हुआ है, तो आज जैसी भयकर स्थिति उत्पन्न ही नही हो सकती थी।

इसी प्रकार मुसलमान भाईयो को इस सत्य इतिहास का पता चल जाये कि कुछ दहशतवादियो ने हमारे पूर्वजो को डरा-धमका कर अथवा कुछ प्रलोभन देकर उनके प्रिय निज धर्म से हटाकर बलात्कार से इस्लाम धर्म थोपा गया है, तो वे कदापि साम्प्रदायिक उन्माद मे आकर सघर्ष पर उतारु नही हो सकते। अत आवश्यक है आज सत्य इतिहास को पढने और पढाने मे प्रयोग मे लाया जावे, यही समय की माग है।

दर्शन—भारतीय दर्शन आस्तिक-नास्तिक, द्वैत-अद्वैत त्रैत के विचारो से भरा पडा है। हमारे विचारको ने नेति-नेति कहकर आगे विचार-चिन्तन का द्वार खुला रखा है। महर्षि दयानन्द ने सभी दर्शनो का विरोध करने वालो को "अन्धो का हाथी देखना" का उदाहरण देकर सभी दर्शनो का समन्वय किया है। सभी आचार्यों ने आचरण की पवित्रता, सत्यभाषण, अहिंसा आदि पर बल दिया है और काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहकार आदि को हेय माना है।

परम्परा—भारत मे सभी प्रदेशो मे बडो के आने पर खडे होकर, सिर झुकाकर प्रणाम करना अच्छा माना जाता है। अतिथि सत्कार का महत्त्व भारत के प्रत्येक सम्प्रदाय मे माना जाता है। शरणागत की रक्षा करना हमारी परम्परा का भूषण है। प्रतिज्ञा-पालन के लिए "रघुकुल रीति सदा चलि आई, प्राण जाय पर बचन न जाई" प्रसिद्ध है। स्त्रियो के शील की रक्षा करना हम सबका परम धर्म है। शिवाजी ने बीजापुर के एक अधिकारी मुल्ला अहमद की पुत्रवधू को सम्मान सहित उसके घर पहुचा दिया।

दान देकर धन का वितरण करना, सस्कारो और त्यौहारो पर प्रीतिभोज समाज को सुदृढ करते है। भोजन वस्त्र मे सादगी से समाज सात्विक बनता है। पूज्य स्थानो पर जूते उतार कर जाना स्वच्छता और नम्रता का द्योतक है। गले लगाकर मिलना अधिक प्रेम को दर्शाता है। मृतको को जलाने की भारतीय प्रक्रिया अब सारे ससार के सभ्य राष्ट्रो मे अपनाई जाने लगी है। हमारी परम्पराये लाखो वर्षो के अनुभव पर आधारित है। ये ही परम्पराए हमारी सस्कृति का तीसरा आधार है।

आज सम्पूर्ण राष्ट्र की भिन्न-भिन्न शाखाओ को यही आधार सगठित किये हुये है। इन तीन तारो के टूटने से अनेक रग के फूलो की माला टूट जायेगी। रोटी, कपडा और मकान से भी अधिक जातीय जीवन के लिये वैचारिक भोजन की आवश्यकता है।

वसन्त ऋतु मे प्रतिवर्ष नई पत्तिया निकल आती हैं, परन्तु वृक्ष का तना पहले जैसा ही रहता है। हा, वह अधिक पुष्ट भी हो जाता है। नवीनता प्राचीनता को नष्ट करने के लिए नही, अपितु पुष्ट करने के लिए है। आजकल खालिस्तान,बोडोलैण्ड,झारखण्ड,स्वतन्त्र कश्मीर आदि नामो से प्राचीनता को नष्ट करके नवीनता का उदघोष हो रहा है। यह राष्ट्र की मृत्यु के समान है। कायाकल्प के समान राष्ट्र को चिरजीवी बनाना सुधारो का लक्ष्य होना चाहिए। हमारी यही परम्परा है। समयानुसार सुधारो का विरोध हमने कभी नही किया, परन्तु मूल पर आघात असह्य है। हम तो आज यही अभिलाषा करते हैं कि हमारे यह तीनो आधार अधिक मजबूत हो, जो राष्ट्र को चिरजीवी बनावें।

लो श्रद्धाञ्जलि आर्य पुरुष !

(पं० रामाज्ञा 'आर्यपुत्र' की लेखनी से)

आर्य जगत् के यशस्वी लेखक श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार का निधन गत् ३० जनवरी १९९३ ई० को गोरखपुर स्थित उनकी पुत्री के निवास स्थान पर हो गया। अपने एक अभिन्न मित्र द्वारा यह सूचना पाते ही जहां गहरी वेदना हुई, वहीं उनके सानिध्य में बीते कुछ दुर्लभ क्षणों की स्मृतियां ताजी हो उठी। वैसे तो उनका परिचय आर्य पत्र-पत्रिकाओं के स्वाध्याय से वर्ष १९८६ ई० में ही प्राप्त कर लिया था परन्तु जब उक्त मित्र द्वारा यह पता चला कि अपने निकट के ही एक ग्राम हाटा, डाकघर नदौली, जनपद-देवरिया के ही मूल निवासी हैं तो बड़ी ही प्रसन्नता हुई। श्री वेदालंकार जी की जीवन-यात्रा अपने पैतृक ग्राम से शुरू होकर, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थादि की परिक्रमाकर, गोरखपुर में स्थायित्व को उस समय प्राप्त हुई जब वे गोरखपुर स्थित दयानन्द एंग्लो वैदिक विद्यालय में अध्यापक नियुक्त हो गये। इस स्थल को कर्मभूमि बनाकर, सतत् आर्य सामाजिक प्रचार यात्राएं कर, ऋषि दयानन्द जी की वैदिक विचार-धारा का प्रचार-प्रसार करते हुए ही, ईश की ऐसी कृपा, कि अन्ततः उसी स्थल पर अपनी इस नश्वर काया को सदा-सदा के लिए छोड़कर, उस परमेश की परम सत्ता में विलीन हो गये। जिसे मैं गोरखपुर वासियों का सौभाग्य ही समझता हूं क्योंकि वे इधर अनेक वर्षों से स्वदेवी जी के साथ अपनी जन्मभूमि के दर्शनार्थ गांव आकर कई-कई माह प्रवास करने लगे थे।

एक बार श्री राजेन्द्र जी 'जिज्ञासु' अबोहर-पंजाब ने मेरे नाम प्रेषित एक पत्र में लिखा था कि 'प्रियवरं आर्यपुत्र' जी ! अब पूर्वी उ० प्र० में मेरे दो आकर्षण हो गये, एक तो श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार व दूसरे आप ! अतएव जब राजकीय सेवा से मुक्त हो उन क्षेत्रों की यात्राएं करूंगा तो आप दोनों मनीषियों के दर्शन करूंगा।" सो मैं तो लज्जित हुआ क्योंकि उस योग्यता का मैं अब भी अपने को नहीं मानता जैसा कि भैय्या श्री 'जिज्ञासु' जी ने मेरे प्रति व्यक्त किया था, हां ! श्री पण्डित जी के प्रति यह उद्गार उनकी योग्यता के अनुरूप ही था, सो हृदय आह्लादित हुआ।

परमात्मा की महती कृपा से गत्वर्षों मे एकबार उनके पैतृक निवास स्थान पर, स्वमित्रो के साथ उनके साकार दर्शन का सौभाग्य मुझे भी प्राप्त हुआ था, और यह सुयोग इसलिए बन गया था कि उसी गाव के एक पौराणिक परिवार ने उन्हीं की प्रेरणा से स्वनिवास स्थान पर शान्ति यज्ञ का कार्यक्रम निश्चित किया था। उस परिवार मे पहुचने से पूर्व हम तीनो जन, सर्वप्रथम उनके आवास पर गये। लेखन कार्य छोडकर श्री वेदालंकार दम्पती ने, अपनी अवस्था विशेष की शारीरिक दुर्बलताओ के बावजूद भी आतिथ्य मे कोई कोर कसर नही छोड़ी। विद्याददातिविनय 'की सूक्ति का सजीव स्वरूप प्रत्यक्ष देख, मुझे तो एक विशिष्ट आनन्द प्राप्त हो रहा था जबकि हम सब बार-बार यह आग्रह करते रहे कि 'आप आतिथ्य सम्बन्धी कोई भी कष्ट न उठाएं क्योकि हम सब जलपानादि अभी-अभी करके ही चले आ रहे हैं।' स्वास्थ्य की प्रतिकूलता के बावजूद भी वे कुछ क्षणो के लिए ही सही, शान्ति यज्ञ मे यजमानो को आशीर्वाद देने पहुचे जबकि इसके पूर्व हम सब वहां पहुंचकर, श्री पण्डित जी के विशेष निवेदनो के बाद यज्ञ की प्रक्रिया सम्पन्न कराये। इसके बाद श्री वेदालकार जी हम सबको अपने घर ले आये। उनका पैतृक आवास जो आज भी उनके पुरखों के वैभव की याद दिला रहा है, के सम्बन्ध मे उन्होने बताया कि मेरी इच्छा इसमें एक पाठशाला व यज्ञशाला सहित आर्य समाज स्थापित करने की है साथ ही साथ वे यह भी चाहते थे कि मेरी जन्म धरा से नित्यप्रति ध्वनि विस्तारक यन्त्र के माध्यम से सुमधुर वेद की ऋचाएं प्रसारित व वैदिक धर्म प्रचारित हो परन्तु ये सारी इच्छाए अधूरी छोड़कर ही वे यहा से चले गये। अपने आवास पर उन्होने हम सबको स्वलिखित छपी अनेक पुस्तकें भी दी। मैंने तो अपनी उन पुस्तको पर यादगार हेतु हस्ताक्षर भी करा लिया पश्चात पूंछ लिया कि इन पुस्तको की कीमत कितनी है ? (ऐसा इसलिए किया कि उन्होने प्रथम ही, वार्तालाप के दौरान बताया था कि 'प्रकाशक बन्धुओ द्वारा मुझ तक मात्र इतनी ही उदारता बरती जा रही है कि मेरी स्वलिखित पुस्तकों के प्रकाशन के बाद आवश्यक प्रतियों के आदेश पर पचीस प्रतिशत छूट देकर शेष राशि की वी. पी. कर दी जाती है जिसे आप सब, प्रकाशक बन्धुओ द्वारा लेखक को दिया गया प्रोत्साहन, या जैसा चाहें उचित शब्द दे सकते हैं, सो कुछ सोच विचारकर लौटाना उचित न समझते हुए, आर्थिक तंगी के दौर में भी उसे छुड़ा लेता हूं) उत्तर में उन्होंने तुरन्त कहा कि मैं जानता हूं 'आर्यपुत्र' जी कि आपकी आर्थिक स्थिति शून्य है, इसलिए ये पुस्तकें आशीर्वाद के रूप में उपहार ही समझी जाएं. साथ ही यह भी कहा कि भविष्य में आप तक उपलब्ध पुस्तकें भिजवाता रहूंगा। भाव-सम्प्रेषण मे उनकी दीर्घ-कालीन अनुभव की झलक, स्पष्ट हो रही थी। जब हम सब उनका अभिवादन कर चलने को हुए, तो वे यह कहते हुए कि अभी भी तो आप सबको छोड़ने कम से कम दरवाजे तक तो चलते ही है और वे रुग्णावस्थां में भी हम सबके साथ कुछ दूरी तक चलने के पश्चात ही लौटे थे। ऐसे सुयोग्य आर्य पुरुष का आशीर्वाद ले हम स्व-स्व स्थान लौट आए। बाद में मेरी उनकी मुलाकात नहीं हो पायी। अर्थाभाव के कारण, आन्तरिक इच्छा के बावजूद भी मैं उनसे गोरखपुर मिलने नहीं जा सका, अतएव दूसरी बार के साकार दर्शन से वंचित ही रहा फिर भी पत्राचार की यदा-कदा प्रक्रिया मे, मैंने कभी भी शिथिलता नहीं बरती।

श्री राजेन्द्र जी 'जिज्ञासु' के पत्र के बारे में जब मैंने उनसे चर्चा की तो उन्होने बताया, कि उनसे मेरी मुलाकात, एक उत्सव पर हुई थी, जहा श्री 'जिज्ञासु' ने मेरे धारा प्रवाह मन्त्र-पाठ की प्रशंसा की थी। उन्होंने बताया कि मैंने श्री 'जिज्ञासु' की इस जिज्ञासा को कि आखिर इतना अच्छा अभ्यास कैसे है ? को यह कहते हुए कि 'आखिर पूरे जीवन भर तो यही किया है', सहजता से शान्त किया था, सो परिचय हुआ। जब मैंने श्री 'जिज्ञासु' जी से स्वयं के द्वारा किये जा रहे पत्राचार की उन्हें जानकारी दी तो वे बड़े ही प्रसन्न हुए। उधर उनका अन्तिम प्रकाशित लेख संभवतः स्वामी समर्पणानन्द जी के सम्बन्ध मे ही था जिसे आर्य पत्रो ने प्रमुखता से प्रकाशित किया। सम्भवतः कुछ ऐसे भी लेख हो जिसे उन्होंने मृत्यु-पूर्व आर्यपत्रों को प्रकाशनार्थ प्रेषित किया हो, सो प्रकाश में आयेंगी ही, इसमें सन्देह नहीं।

अन्तिम कारुणिक दृश्य—जब मुझे यह पता चला कि पं० श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार के कर-कमलो में, उस समय भी साहित्य सृजन करती लेखनी विद्यमान थी, जब उनके नश्वर शरीर से प्राण-पखेरू निकले थे, तो मेरे सजल नेत्रो से अश्रु प्रवाहित हुए बिना नहीं रह सके। लेखनी का इस ढंग से जीवन के अन्तिम क्षणों तक उनसे जुड़े रहना, उनके जीवन्त व्यक्तित्व का परिचय देता है। उनकी अन्तिम श्वांस तक आर्यजनों से कुछ अपेक्षाएं थीं जिसे मैं इस लेख में उद्घाटित करना उचित नहीं समझता क्योंकि वह अपने में एक अलग चिन्तनीय व विचारणीय विषय है। अतएव यहां पर मात्र इतनी ही बात लिखते व लेखनी की अजस्र धवल धार को अहर्निश प्रवाहित करने वाले, गुरुकुल कांगड़ी के सुयोग्य स्नातक व स्वामी श्रद्धानन्द जी की साधना के सजग प्रहरी इस श्रेष्ठ आर्य मनीषी के निधन पर मैं अपनी श्रद्धापूरित विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए लेखनी को विराम देता हूं।

मानसपुर देवरिया (उ० प्र०)

वेद में इन्द्र का स्वरूप

—डा० योगेन्द्र कुमार शास्त्री (जम्मू)

ईश्वर के अर्थ में इन्द्र शब्द

इन्द्र शब्द परमेश्वर के अर्थ में कई स्थानों पर प्रयुक्त हुआ है जैसे—

इन्द्रं मित्रं वरुणम् — ऋ० १ । १६४ । ४६
इन्द्र क्रतुं न आभार — ऋ० ७ । ३३ । २६
इन्द्रायाहि चित्रमानो — ऋ० १ । ३ । ४
न कि इन्द्र त्वावान् — सामवेद

इन्द्र शब्द का अर्थ परमात्मा करते हुए आचार्य सायण लिखते हैं—

"इदि परमैश्वर्ये इत्यस्य धातोरर्थानुगतात् इन्द्रः परमात्मा"। इन्द्र का अर्थ है परम ऐश्वर्य वान् परमात्मा। निरुक्त १०। ८ में इन्द्र का निर्वचन यह दिया है "इदं करणात्" सायण इस पर लिखते हैं 'इन्द्रो परमात्मा रूपेण इदं जमत्करोति' इन्द्र परमात्मा के रूप में इस जगत को बनाता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी ऋग्वेद के भाष्य में इन्द्र शब्द का अर्थ परमात्मा किया है।

जीवात्मा के अर्थ में इन्द्र शब्द

अहं इन्द्रो न पराजिग्ये इद्धनम्। न मृत्यवेऽवतस्थे कदाचन। (ऋग्वेद)

अर्थात मैं ऐश्वर्यवान इन्द्र (आत्मा) हू। पराजित न होना ही मेरा धन है। मैं मृत्यु के लिए कदापि नहीं रुका हुआ हू। यहां इन्द्र शब्द जीवात्मा के लिए प्रयुक्त है। केनोपनिषद् में इन्द्र और यक्ष के अलंकारिक कथानक में इन्द्र शब्द जीवात्मा के लिए आया है। वहा यह बतलाया है कि इन्द्र आत्मा ही यक्ष परमात्मा को जान सकता है अग्नि आदि जड़ तत्व उसे नहीं जान सकते।

'उलूकयातुम्' इस यजुर्वेद के मन्त्र में भी "दृषदेवं प्रमाण रक्ष इन्द्र" हे इन्द्र आत्मा तू इन राक्षसी विचारो को मसलकर रख दे। यहां भी इन्द्र शब्द जीवात्मा के लिए आया है।

सूर्य के अर्थ में इन्द्र शब्द

वेदो में सूर्य के अर्थ में इन्द्र शब्द अनेकों स्थानों पर आया है। सूर्य के पास प्रकाश का ऐश्वर्य होने के कारण वह इन्द्र कहलाता है। वह स्वः लोक का द्यू लोक का राजा है, सौर मण्डल में जितने भी नक्षत्र हैं उनका वह राजा है इसलिए सूर्य को देवराज इन्द्र कहते हैं। सूर्य की किरणें ही अपसराएं हैं जो अपसरण करती हैं, नृत्य करती हुई सी सात रंगो से रञ्जित होकर चलती हैं। सूर्य की किरणें ही इन्द्र का वज्र है। वह वृत्रासुर रूपी अन्धकार राक्षस को अपने किरण रूपी वज्र से समाप्त करता है।

वैदिक सूर्य रूपी इन्द्र के वास्तविक स्वरूप को न समझकर इन्द्र के विषय में असम्भव गप्पें मारी गई। देवासुर संग्राम मे देवताओ ने दधीचि की हड्डियों से हथियार बनाकर वृत्रासुर को मारा यह भी कोई ऐतिहासिक कथा नहीं है। उपदेशक दान की महिमा मे या परोपकार के प्रकरण मे दधीचि की कथा को सुनाते हैं जो कि काल्पनिक कथा है। इसका वास्तविक स्वरूप वेद के इस मन्त्र में बतलाया गया है—

'इन्द्रो दधीचो अस्थभिर्वृत्राणि अप्रतिष्कुत. जघान नवतीर्नव।

(अप्रतिष्कुतः) अर्थात जिसकी शक्ति को रोका नहीं जा सकता ऐसे (इन्द्रः) इन्द्र ने सूर्य ने (अस्थभिः) अस्थिर (दधीचः) किरणो से (वृत्राणि) वृत्रों को बादल रूपी असुरों को निन्यानवें बार मारा। यहा पर वर्षा ऋतु के लगभग तीन महीनों में सूर्य, बादल और वर्षा के वैज्ञानिक स्वरूप का वर्णन किया हैं। अज्ञानियों ने (दधीचः) शब्द का अर्थ दधीचि और (अस्थभिः) का अर्थ अस्थियां लगाकर कहानी गढ़ डाली और इन्द्र का हथियार हड्डी का बना दिया। क्या हमारे देश की यही प्राचीन उन्नति थी। इसी प्रकार पौराणिको ने इन्द्र को देवों का राजा होते हुए भी उसे चरित्रहीन बना दिया। इन्द्र गौतम और अहिल्या की ऐतिहासिक कहानी गढ़ दी।

गौतम धोखें से समुद्र में नहाने चले गए। इन्द्र ने धोखे से गौतम की पत्नी अहिल्या का शील हरण किया। जब गौतम को धोखे का पता चला तो उन्होने शाप दे दिया कि अहिल्या तू पत्थर बन जा। श्रीराम जब तुझे चरण लगायेंगे तब तेरा उद्धार होगा। कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा, भानुमति ने कुनबा जोड़ा वाली कहावत चरितार्थ कर दी पौराणिक कथावाचक तथा रामचरित मानस के पाठक इस कथा पर पूर्ण विश्वास करते हैं।

वस्तुत: वेद के अलकारिक वर्णन को विकृत रूप देने की प्रथा सी चल पड़ी थी कवि कालिदास ने तो वेद के पुरुरवा और उर्वशी के अलंकारिक प्रसग को लेकर जिसमें कि पुरुरवा बादल और उर्वशी विद्युत का प्रसंग है उस अलंकारिक संवाद को लेकर 'विक्रमोर्वशीयम्' नामक काव्य ही लिख डाला। इससे वेद मे ऐतिहासिकता की भ्रान्ति पैदा हुई। वस्तुतः इन्द्र सूर्य का नाम है। गौतम चन्द्रमा का नाम है। अहिल्या (अहन् लीयते यस्या सा रात्रि अहिल्या। रात्रि का नाम अहिल्या है। उदित सूर्य (इन्द्र) रात्रि को नष्ट करता है उस समय चन्द्रमा क्षीण होकर समुद्र की तरफ अस्त होते हुए दिखाई देता है। सूर्योदय का सुन्दर वर्णन है।

वस्तुत: पौराणिकों का चरित्र हीन देवराज इन्द्र आकाश पाताल में कहीं पर नहीं है। हा वैदिक इन्द्र (सूर्य) वेदों मे विद्यमान है वही देवराज है। श्रीराम के समय मे ऐतिहासिक ऋषि गौतम होगे उनकी पत्नी अहिल्या होगी। जो कि जीवित थी पत्थर नहीं थी। बाल्मीकि रामायण में उसे (ज्योतितप्रभाम्) चमकते हुए चेहरे वाली जीवित नारी बतलाया है। उस आश्रम में जाकर श्रीराम और लक्ष्मण ने उसके चरण छुए, ऐसा लिखा है। परन्तु महाकवि तुलसी दास ने पौराणिक कथा के आधार पर यह लिख दिया कि श्रीराम ने अपने पैर से उसका स्पर्श किया। नारी के पैर लगाकर श्री राम की किस मर्यादा की रक्षा तुलसी ने की है यह समझ के बाहर है और अमान्य है।

भारतीय लोकतन्त्र की अग्नि परीक्षा

वशरथ जैन, पूर्व मन्त्री म०प्र० प्रशासन

कहीं अयोध्या प्रकरण ने हमारी राष्ट्रीय एकता पर प्रहार कर मुस्लिम लीग के द्वि-राष्ट्रवाद के सिद्धान्त को पुष्ट तो नहीं किया? जो भी हो विश्व के मुसलमानों को यह कहने का मौका जरूर मिल गया कि कायदे आजम मुहम्मद अली जिन्ना बड़े ही दूरदर्शी थे और उन्होंने पाकिस्तान के निर्माण की शर्त पर भारत की आजादी स्वीकार करने में बड़ी ही बुद्धिमत्ता का परिचय दिया था। अयोध्या प्रकरण से ही पड़ोसी और दूरस्थ देशों में हिन्दुओं को कितनी क्षति पहुंची है और वहां उनका जीना किस प्रकार दूभर हो गया है? राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को भी कितनी क्षति पहुंची है? यदि एक मस्जिद को ध्वस्त करने में पाकिस्तान में लगभग ५५० और बांगलादेश में लगभग १२५ मन्दिर ध्वस्त होते हैं और उन देशों में मजहबी उन्माद के कारण अल्पसंख्यक हिन्दुओं को बड़ी संख्या में मौत के घाट उतारते हुए उनकी बहुमूल्य सम्पत्ति नष्ट कर उन्हें दर-दर का भिखारी बनाया जाता है तो यह सौदा हमारे लिए कितना मंहगा पड़ा है यह भी विचारणीय है। भारत में ऐसी मस्जिदों की संख्या लगभग ३,००० बताई जाती है, जो मन्दिरों को ध्वस्त कर बनाई गई। यदि एक तथाकथित विवादित ढांचे को गिराने की देश को इतनी कीमत चुकानी पड़ी है, तो ३,००० मस्जिदों को गिराने की कितनी कीमत चुकानी पड़ेगी और इस कीमत को चुकाकर भी क्या हम भारत को विकसित देशों की श्रेणी में रख पायेंगे?

सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत स्थिर निधियां (९)

श्रीमती चनन देवी हंसराज सोनी ज्वालापुर स्थिर निधि
१६ १० ८२ की अन्तरंग द्वारा स्वीकृत

यह निधि प्रारम्भ मे पांच हजार रु० से स्थापित की गई थी तथा आगे बढ़ाने की स्वीकृति भी दी थी। अब यह निधि ६८००) रुपए की है।

इस निधि के ब्याज से वृद्ध सन्यासी, बूढ़े उपदेशक एवं असहाय विद्यार्थियो की सहायता की जावे।

ब्याज राशि मे से इस वर्ष रामजस भजनोपदेशक को १२००) तथा धर्मवीर भजनोपदेशक को १२००) दिए।

श्रीमती छाया अरोड़ा स्थिर निधि
३ ५ १९८२ की अन्तरंग मे स्वीकृत

यह निधि प्रारम्भ मे ५०००) से स्थापित की गई थी बाद मे ११००) रुपए की वृद्धि की गयी।

इस निधि के ब्याज की राशि आर्य अनाथालय बरेली को भेजी जाए।

इस वर्ष निधि के ब्याज मे से २४४०) आर्य अनाथालय बरेली को भेजा गया।

चौधरी टोपन्दास व श्रीमती रामदेवी सहायता स्थिर निधि
६-४ ८३ की अन्तरंग द्वारा स्वीकृत

(संस्थापक—चौ० भगवान सिंह पुत्र और श्री विजय कुमार नाती पौत्र)

यह निधि दस हजार रुपए से स्थापित की गई थी। इस निधि का ब्याज भूकम्प, बाढ़, सूखा पीड़ितो की सेवा सहायता एवं रक्षा कार्य पर व्यय किया जायेगा।

इस वर्ष निधि के ब्याज मे से गढ़वाल भूकम्प सहायता कैम्प को ३५००) रु० दिये।

श्रीमती रामजीवाई श्री मूलचन्द भूटानी धर्मार्थ औषधालय
स्थिर निधि एक लाख रुपये
१५-१२-८३ की अन्तरंग बैठक ने स्वीकृति दी
(संस्थापक—श्री गोविन्दराम भूटानी)

१—इस निधि का ब्याज ही व्यय होगा। मूल राशि नही।

२—इस निधि मे वृद्धि करने का भी दानी को अधिकार होगा।

३—औषधालय ग्रेटर कैलाश मे खोला जाएगा।

४—ब्याज श्री गोविन्द राम मन्त्री आर्य समाज ग्रेटर कैलाश द्वारा प्रमाणित औषधियो के बिलो के भुगतान मे खर्च होता रहेगा।

श्री हरिकिशन लाल स्मृति गाजियाबाद
स्थिर निधि १०० ००० रुपये
(संस्थापक—श्रीमती इन्द्रावती आर्या)

इस निधि के ५० ००० बैंक मे फिक्सड डिपाजिट मे जमा थे जो सात वर्ष मे ब्याज द्वारा दूना होकर १ ०६ ८७५) सभा को प्राप्त हो गए हैं। अब यह स्थिर निधि विधिवत बन गई है। इस निधि का ब्याज निम्न प्रकार खर्च होगा।

१०००) वार्षिक अनुदान उपदेशक विद्यालय टंकारा।

५००) वार्षिक अनाथालय पटौदी हाउस दरियागंज दिल्ली विकलांगो की सहायतार्थ।

५००) आर्य अनाथालय फिरोजपुर की लड़कियो की शादियो के लिए।

१०,०००) वेद प्रचार, आर्यवीर दल, दयानन्द सेवाश्रम संघ, मुख्यत बांसवाड़ा, नागालैंड आसाम पर्वतीय क्षेत्रो मे मीनाक्षीपुरम आदि के सेवार्थ अथवा यदि कभी किसी पुस्तक के प्रकाशन मे इस निधि के ब्याज का उपयोग आवश्यक हो तो पुस्तक मे मेरे पतिदेव के साथ मेरा चित्र भी निधि के ब्याज से प्रकाशित करने के विवरण के साथ निधि का उल्लेख किया जाये।

प्रति वर्ष १७ सितम्बर को मेरे पूज्य पतिदेव हरिकिशन लाल जी की स्मृति मे चित्र सहित संक्षिप्त जीवन परिचय भी निधि के उद्देश्य के उल्लेख सहित सार्वदेशिक साप्ताहिक मे प्रकाशित किया जाए।

इस निधि के संचालन आदि पर सार्वदेशिक सभा का पूर्ण स्वत्व होगा।

जिस पत्र मे इस निधि के विवरण का उल्लेख हो उसकी प्रतियां निम्न पते पर भेजी जाती रहें —

१—श्री दयाराम गोयल एडवोकेट (नोटरी) रमतेराम रोड गाजियाबाद।

२—श्री जयकिशन गुप्त, १६-४६ पंजाबी बाग, नई दिल्ली।

३—श्रीमती जयश्री दीवान, द्वारा बी० के० दीवान गुजरात रोड लश्कर ग्वालियर।

इस वर्ष निधि के ब्याज मे से ५०१) प० ओंकार मित्र जी को तथा दस हजार रुपए तृतीय वनवासी आर्य महासम्मेलन हेतु व्यय किये गए।

स्व० श्री मावनमल खुराना शिक्षा स्मृति स्थिर निधि
२३ ७ १९८६ की अन्तरंग द्वारा स्वीकृत

यह निधि २० हजार रु० से स्थापित की गयी। निधिकर्ता श्री सुधीर कुमार खुराना की माता श्रीमती शान्तिदेवी पत्नी स्व० सावनमल द्वारा पति की स्मृति मे स्थापित ब्याज दो योग्य छात्रो को जो गुरुकुल एटा मे शिक्षा प्राप्त कर रहे हो सभा की ओर से दिया जाएगा। इस वर्ष निधि के ब्याज में से गुरुकुल एटा को २५०० रुपए दिए।

जयनारायण गंगा बिशन लाहोटी चैरिटेबल स्थिर निधि
२३-७ ८६ की अन्तरंग द्वारा स्वीकृत

यह निधि ब्रह्म प्रकाश लाहोटी सुजानगढ़ द्वारा पांच हजार रुपए से स्थापित की गई। इस निधि का ब्याज आर्य वीर दल अथवा संस्कृत विद्या के प्रचार प्रसार मे सभा द्वारा व्यय किया जायेगा। पांच हजार रुपए की स्वीकृति के बाद इसे बढ़ाकर १११०१ रुपये कर दिया गया है।

पुस्तक समीक्षा

संस्कृत में नया प्रकाशन:—

"देवर्षि दयानन्द चरितम्"

लेखक—आचार्य रविदत्त गौतम

सत्य सनातन वैदिक वाङ्मय के उद्धारक, महर्षि देव दयानन्द के सम सामयिक कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर आस्थामयी देववाणी के माध्यम से आदर्श संस्मरण प्रस्तुत कर वैदिक संस्कृत साहित्य के अक्षय भंडार को अभिवृद्धि प्रदान करने वाले आचार्य प्रवर श्री रविदत्त जी गौतम स्नेह एवं श्रद्धा के पात्र हैं। संस्कृत भाषा में "महर्षि देव दयानन्द का जीवन चरित्र" प्रवाहमयी प्रौढ़ कृति है। आर्य साहित्य के अध्येता इस रचना के माध्यम से लोकोपकार की प्रेरणा ग्रहण करेंगे, ऐसा मेरा सुविचारित मत है। आचार्य श्री से आशा है कि भविष्य में भी आर्य समाज और ऋषि के मन्तव्यों को वाणी एवं रचना के माध्यम से मुखरित करते रहेंगे जिससे भावी पीढ़ी अपने कर्त्तव्य को पहचानती हुई दिशा बोध ग्रहण कर सकेगी। शुभ कामनाओं के सन्दर्भ में।

प्राप्ति स्थान :

इन्दु प्रकाशन द्वारा ताज प्रेस, मायापुरी, नई दिल्ली

पृष्ठ संख्या १९८ मूल्य १५०) रुपये

—सम्पादक

विदेश समाचार

आर्य समाज लंदन में संस्कृत दिवस

रविवार दिनांक ७ फरवरी ९३ को आर्य समाज लंदन में 'संस्कृत दिवस' बड़े उत्साह और श्रद्धा के साथ सम्पन्न हुआ जिसमें सैकड़ों आर्य जनों ने भाग लेकर कार्यक्रम का लाभ उठाया।

सन्ध्या-यज्ञ के पश्चात् डा० तानाजी आचार्य का संस्कृत भाषा म प्रभावशाली स्वागत भाषण हुआ। संस्कृत भाषा की देवनागरी लिपि, व्याकरण की वैज्ञानिकता, विशाल साहित्य की प्राचीनता एवं प्रामाणिकता आदि विषयों पर संक्षेप में प्रकाश डालते हुए अपने स्वागत भाषण में उन्होंने प्रमुख अतिथि एवं वक्ता डा० स्टीवन थामसन, इन्डोलाजी विभाग प्रमुख यूनिवरसीटी आफ लंडन का परिचय दिया।

डा० थामसन ने अपने ४५ मिनट के मार्मिक व्याख्यान मे 'संस्कृत भाषा का सौन्दर्य, प्राचीनता, परिपूर्णता और साहित्य की परिपक्वता, इस विषय पर विस्तार से अपने विचार रखे। श्रोताओं के प्रश्नों के उत्तर देते हुए उन्होंने कहा कि संस्कृत भाषा का प्रभाव संसार की सभी भाषाओं पर है, संस्कृत भाषा एक प्राचीनतम नैसर्गिक भाषा है, संस्कृत भाषा की वर्णमाला उच्चारण पद्धति, अलंकार आदि विशेष एवं प्रशंसनीय है।

"संस्कृत भाषा का विश्व की सभी भाषाओ से सम्बन्ध और उन पर संस्कृत का प्रभाव इस विषय पर बोलते हुए प्रो० एस०एन० भारद्वाज, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा यू० के० ने विश्व के विद्वानों के सस्कृत सम्बन्धी विचारों को प्रस्तुत करते हुए कहा संस्कृत भाषा ही विश्व के भाषाओं की जननी है। आर्यसमाज लंदन के प्रधान श्री वीरेन्द्र वीर वर्मा ने सभी वक्ता, कार्यकर्ता एवं श्रोताओं को धन्यवाद दिया तथा श्री राजेन्द्र कुमार चोपड़ा, मन्त्री आर्य समाज लंदन ने कार्यक्रम का संचालन किया।

श्रोताओं ने कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा की। आरती शान्ति-पाठ और प्रीतिभोज के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

—श्री राजेन्द्रकुमार चोपड़ा
मन्त्री आर्य समाज लंदन

स्वास्थ्य चर्चा—

सीने से उठने वाला दर्द जरूरी नहीं हृदय रोग हो

सीने से उठने वाला दर्द जरूरी नहीं कि हृदय रोग ही हो। सीने का दर्द अन्य कारणों से भी हो सकता है। ३३ प्रतिशत से अधिक सीने के दर्द हृदय से उत्पन्न नहीं होते। यह जानकारी यहां पेट के रोगों के विश्व सम्मेलन में अमेरिका से आये डा० स्वेकलर तथा डा० रोथस्ती एवं मूलचन्द अस्पताल के हृदय रोग विशेषज्ञ डा० के० एल० चोपड़ा ने दी।

हृदय रोग विशेषज्ञो के अनुसार यदि किसी व्यक्ति को यह बता दिया जाये कि उसका सीने का दर्द हृदय रोग नहीं है तो उसकी आधी तकलीफ तभी समाप्त हो जाती है। अमेरिका से आये डाक्टरों ने बताया कि उनके देश में प्रति वर्ष लगभग छह लाख लोग सीने के दर्द की जांच के लिये आते हैं। इनमें दो लाख लोगों में हृदय रोग नहीं पाया जाता।

सम्मेलन में बताया गया कि हृदय का दर्द सीने के बीच से होकर बायें हाथ में जाता है। सीने में जलन के साथ अक्सर खाने की नली में खाना खाते समय भी दर्द उठता है। भोजन नली में दर्द के कारण व्यक्ति की नींद अचानक टूट जाती है।

डाक्टरों के अनुसार हृदय रोग में अक्सर सीने के बीचों-बीच दर्द होता है तथा रोगी को दर्द की वजह से भारीपन महसूस होता है। उंगली से सीना दबा कर बताया गया दर्द हृदय का दर्द नहीं होता, बल्कि यह दर्द मांसपेशियों से उत्पन्न होता है। यह दर्द अधिकतर सीने के बायीं ओर दूसरी पसली के निकट होता है।

हृदय रोग विशेषज्ञो ने लोगों को सलाह दी कि रात्रि का भोजन सोने से लगभग तीन घण्टा पहले करें। रात्रि भोजन के तुरन्त बाद सोना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

आचार्य विश्वश्रवा व्यास का निधन

वैदिक वाङमय के प्रसिद्ध विद्वान तथा आर्य समाज के वरिष्ठ नेता महा महोपाध्याय आचार्य विश्वश्रवा व्यास का ९० वर्ष की अवस्था मे २७ फरवरी १९९३ को रात्रि लगभग ३ बजे बरेली मे देहान्त हो गया।

आर्य जगत में आचार्य जी महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य भक्त और सिद्धांतो की रक्षा मे हर किसी से सवदा टकराने और जूझने के लिए विख्यात रहे हैं। अपनी विलक्षण प्रतिभा उग्रस्वभाव ओजस्वी भाषण और प्रभावी लेखन के लिए सदा स्मरणीय रहेंगे। वे अपनी ही धुन के धनी थे। व्याकरण एव साहित्य के एक अच्छे शिक्षक होते हुए भी वे सरल और भावुक हृदय व्यक्ति थे। उनका सरल एव सरस काव्य अनायास ही पाठको के हृदय को छू जाता है।

आचार्य जी ने आर्य समाज के सगठन मे विभिन्न पदो पर रहकर महर्षि दयानन्द सरस्वती के मिशन की महान सेवा की है। अन्तिम समय तक व सक्रिय रहे। पिछले कई वर्षों से नेत्र ज्योति प्राय नष्ट हो जाने पर भी अपने साहस और दृढ इच्छा शक्ति से दयानन्द और आर्य समाज की धुन मे ही मस्त रहे। अपने घर और परिवार को कभी भी अपेक्षित समय नही दिया।

एक साधारण परिवार मे जन्म लेकर अभाव एव उपेक्षा के वातावरण मे जीते हुए भी उन्होने अपने अथक परिश्रम अदम्य साहस और महान लगन से विभिन्न स्थानो पर विभिन्न गुरुओ से विद्याध्ययन करते हुए स्वय को एक उच्चकोटि के विद्वान के रूप मे स्थापित किया। उन्होने अनेक उत्तम ग्रन्थ लिखे जिनमे कुछ अप्रकाशित ही रह गये।

आचार्य जी की अन्त्येष्टि २८ फरवरी को बरेली स्थित श्मशान भूमि पर पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुई। संस्कार प० अशर्फीलाल आर्य तथा प० विद्याशंकर अनलेश ने कराया। इस अवसर पर डा० ओमप्रकाश आर्य सत्य स्वरूप एडवोकेट डा० सतोष कृष्ण डा० प्रकाश आचार्य प्राणदेव डा० विश्वमित्र आदि अनेक विद्वान और आर्य समाज की विभिन्न सस्थाओ के प्रतिनिधि और कार्यकर्ता उपस्थित थे।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

(पृष्ठ ४ का शेष)

५१—श्री विजय बहादुरसिंह   आर्य समाज बक्सीपुर गोरखपुर
५२—श्री डा० रमाकान्त चतुर्वेदी ३३० गुलरियागार्दा बाराबकी
५३—श्री देव शर्मा   हरदोई
५४—श्री सियाराम आर्य   आर्य समाज कुकरा टाउन लखीमपुर-खीरी

सच्चिदानन्द शास्त्री   मनमोहन तिवारी
वरिष्ठ उपप्रधान   सभा मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उ प्र
५ मीराबाई मार्ग लखनऊ

डाक्टरो ने शाकाहार को अधिक प्रोटीनयुक्त बताया

ग्वालियर ५ जनवरी। दिनाक ३ जनवरी को रात्रि कालीन हिन्दी समाचार बुलेटिन मे शाकाहार विषय पर डाक्टरो के सम्मेलन की रिपोट प्रसारित कर मांसाहार की अपेक्षा शाकाहार अधिक उत्तम व प्रोटीनयुक्त बताया तथा मासाहार से होने वाली हानिया भी व्यक्त की जबकि महर्षि दयान द सरस्वती द्वारा बताए अनुसार आय समाज अनेको वर्षो से शाकाहार पर ही बल देता आया है।

अत आय समाज चित्रगुप्त गज लश्कर के उपप्रधान श्री प्रकाशचन्द अग्रवाल व मन्त्री श्री बाबूराम गुप्त ने डाक्टरो द्वारा शाकाहार को उचित बताए जाने पर भारी प्रसन्नता व्यक्त की है तथा प्रधान मन्त्री से माग की है कि वे मानव जाति के भविष्य को सुन्दर व सुदढ बनाए जाने हेतु गाय बकरी आदि पशुओ को काटने तथा बिक्री पर पूण रूप से पाबन्दी लगाय एव शाकाहार का दूरदशन रेडियो व समाचार पत्रो के माध्यम से अधिक से अधिक प्रचार प्रसार कर शाकाहारी भोजन करने पर ही बल द जिससे दूध घी आदि की देश मे कमी न हो और मनुष्य दूध घी का सेवन कर अधिक बलशाली बन देश की शक्ति बनें।

—बाबूराम गुप्त
मन्त्री आयसमाज चित्रगुप्तगज लश्कर ग्वालियर

आर्य समाज द्वारा दगा पीडितो को तिल के लड्डू और वस्त्र वितरित

भोपाल १५ जनवरी। मकर सक्रान्ति के शुभ अवसर पर स्थानीय चारो आय समाजो द्वारा सयुक्त रूप से उनके द्वारा पुनर्वास हेतु गोद ली गयी बस्ती बाफना कालोनी के शिव मन्दिर पर कल यहा यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमे आय समाज के पदाधिकारियो और कायकर्ताओ के अलावा बस्ती के सभी स्त्री पुरुष और बच्चो ने भाग लिया। इस अवसर पर बस्ती के २०६ परिवारो के १०६२ लोगो मे आय समाज की ओर से एक क्विटल तिल के लड्डू और विभिन्न आकार प्रकार के ऊनी और सूती वस्त्रो की ८ गठान वितरित की गई। पुन एक बठक आयोजित करके बस्ती के निवासियो की समस्याए सुनी गई और उनके निराकरण का हर सभव उपाय करने का वचन यहा के निवासियो को आय समाज द्वारा दिया गया।

—आदित्यपाल सिंह आय

आचार्य ब्र० आर्य नरेश की वेद-प्रचार यात्रा

प्रतिवष की भाति इस वष भी फरवरी १९९३ मे ओजस्वी वक्ता उदगीथ साधना स्थली हिमाचल) के सस्थापक एव पूरे भारत मे वेद प्रचार करने वाले श्री आचाय ब्र० आय नरेश जी की महाराष्ट एव गुजरात की वेद प्रचार यात्रा सफल हुयी।

कच्छ यात्रा के दौरान तीन दिन मे उनकी तेरह सभाए हुई जिनम कई गण्यमा य व्यक्तियो सहित सकडो लोगो न भाग लय।

ब्र० आय नरेश की इस प्रचार यात्रा से वदिक धम के प्रचार व आय समाज के सगठन को काफी बल मिला है।

—वाचोनिधि आय मन्त्री

होली के पवित्र पर्व के अवसर पर

आय समाज लारे स रोड अमृतसर मे प्राचीन परम्परा के अनुरूप इस वष भी ७ मार्च से १४ माच तक आध्यात्मिक प्रवचनो का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर दयान द मठ चम्बा से पूज्यपाद स्वामी सुमेधानन्द जी पधार रहे हैं। प्रात हवन के उपरान्त (७ ४५ से ८ ३० तक रविवार को ९ ०० से ९ ३५ तक) भजनोपदेशक प० हरीशचन्द्र एव आय माडल हाई स्कूल के विद्यार्थियो के द्वारा भजन होगे। तदोपरा त (८ ३० से ९ १५ तक रविवार को ९ ३० से १० ३० तक) स्वामी जी महाराज के द्वारा आध्यात्मिक प्रवचन होगे।

सार्वदेशिक सभा का प्रकाशन दयानन्द दिव्यदर्शन खोजपूर्ण ग्रन्थ

दयानन्द दिव्य दशन सावदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित देखने को मिला। सुन्दर चित्र बढिया छपाई उपयोगी सामग्री एव खोजपूण तथ्य और सत्य जानकर अति प्रसन्नता हुई। स्वामी दयानन्द का वार्तालाप केशवचन्द्र सेन से कलकत्ता मे हुआ जो आखें खोल देने वाला है। हिन्दी का विरोध करने वाले यह नही जानते कि बहुत सख्या मे ग्रामीण अग्र जी क माध्यम से नही अपितु मातृ भाषा द्वारा ही शिक्षित किए जा सकते है। खद है कि राष्ट्र मे स्वाध्याय शील व्यक्तियो की सख्या थोडी है। यह ग्र थ दहेज के साथ वधु को दिया जा सकता है।

—वीर भान वोर

धमपाल आय दिवगत

आय समाज नरवाना के भूतपूव प्रधान आय वीर दल सयुक्त पजाब के मन्त्री अनेक अ य शिक्षण सस्थाओ के कणधार श्री धमपाल आय का १७ फरवरी को दिल्ली मे हृदय गति रुक जाने से स्वगवास हो गया।

स्व० श्री धमपाल आय ने आय समाज द्वारा चलाये गये आन्दोलनो मे कई कई मास की जेल काटी। उ होने नरवाना के निकटवर्ती देहात मे आय समाजो की स्थापना की तथा भारी सख्या मे लोगो को आय समाज मे लाने मे सफल हुए। वे एक अच्छ वक्ता तथा लेखक व कवि भी थे।

उनके निधन पर नरवाना की सभी शिक्षण सस्थाओ ने विद्यालय बन्दकर उन्हे श्रद्धाजलि दी।

—धर्मदेव विद्यार्थी

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०४९/९३ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१४-३-१९९३) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (C) ९३
R N. 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U (C) 93 Post in N.D.P.S.O.on 11-12-3-1993

शोक समाचार

—आर्य समाज मुसाढ़ी नालन्दा विहार के एक सक्रिय एवं कर्मठ सदस्य श्री शिवबालक पंडित आर्य का ४५ वर्ष की अवस्था में दि० ३१-१२-९२ को उनके निवास पर निधन हो गया। अन्त्येष्टि के बाद तीन दिनों तक शांति यज्ञ का आयोजन किया गया।

—आर्य समाज सोलापुर के सक्रिय कार्यकर्ता श्री दशरथसा प्रभूसा धार-सीद का दि० २४-१-९३ को निधन हुआ। वे ७५ वर्ष के थे। श्री दशरथसा स्वातन्त्र सेनानी थे। आर्य समाज के अनेकों आन्दोलनो में वे बढ़ चढ़ कर भाग लेते रहे हैं। आर्य समाज सोलपुर के प्रधान, मन्त्री व कोषाध्यक्ष इन पदों पर रहकर तन-मन-धन से सेवा की है।

ऐसे लगनशील, निष्ठावान व सच्चे कार्यकर्ता के देहावसान पर आर्यसमाज मे आयोजित शोक सभा में उन्हें भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

—आर्य समाज पटेल नगर दिल्ली के श्री वासुदेव जी का निधन दिनांक २२-१-९३ को हो गया। वे आर्य समाज पटेल नगर दिल्ली के निष्ठावान, सदस्य थे। परम पिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

—जगन्नियन्ता परमात्मा की लीला के आधीन दिनांक २८-१-९३ बसंत पंचमी को आर्य समाज के स्तम्भ, आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद के प्रधान, दयानन्द शिक्षा संस्थान फरीदाबाद के संस्थापक एवं शिक्षा तथा आर्य जगत को समर्पित, मानवता के नि:स्वार्थ सेवी तथा निष्काम कर्मयोगी श्री कन्हैया-लाल महता का पार्थिव शरीर पंचतत्व में विलीन हो गया। इस उपलक्ष में शान्ति यज्ञ (श्रद्धांजलि सभा) रविवार दिनांक ७-२-९३ सायं ३ बजे से ५ बजे तक उन्हीं के द्वारा निर्मित दयानन्द महिला महाविद्यालय ग्रीनफील्ड एन. एच. ३ (बी. के. अस्पताल के पास) के प्रांगण में सम्पन्न हुई।

—श्रीमती शांति देवी धर्मपत्नी स्व० श्री दीवान सिंह मन्त्री (रामगढ़) का २० जनवरी १९९३ को हल्द्वानी में स्वर्गवास हो गया। ३१-१-९३ को उनके पैतृक स्थान 'देव सदन' ग्राम बिठोरिया (ऊंचा पुल) हल्द्वानी में दिवंगत आत्मा की शान्ति हेतु वृहद यज्ञ व शोकसभा का आयोजन सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अनेकों व्यक्तियो ने उनको श्रद्धांजलि समर्पित की।

—गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के परिदृष्टा आचार्य प्रियव्रत विद्या-मार्तण्ड की धर्मपत्नी श्रीमती यशोदा देवी के १७ जनवरी को देहावसान के उपलक्ष्य मे २० जनवरी को यश भवन आर्य नगर पर आयोजित शांति यज्ञ और श्रद्धांजलि कार्यक्रम मे भाव भीनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कुलपति श्री सुभाष विद्यालंकार ने कहा कि स्व० माताजी के अपनत्वपूर्ण व्यवहार से कभी भी परिवार से अलग होने का आभास नही हुआ। वह ममता का साकार रूप थी। उनका शुभाशीष सदा गुरुकुल के साथ रहा। कुलपति जी ने कहा कि आचार्य प्रियव्रत जी के मार्ग दर्शक पाण्डित्य के पीछे माता यशोदा का ही हाथ रहा है। उन्होने माता जी के स्नेह को अपने जीवन की अमूल्य निधि बताया।

इस अवसर पर अनेको आर्य विद्वानो तथा अन्य सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों ने श्रद्धांजलि दी।

माता यशोदा अपने पीछे दो विवाहित पुत्र एवं दो विवाहित पुत्रियां फलते फूलते परिवार के साथ छोड़ गयीं।

—महेन्द्र कुमार, सहायक मुख्याधिष्ठाता

जन्मोत्सव सम्पन्न

दीनानगर में स्वामी स्वतन्त्रानन्द सरस्वती जी महाराज का जन्मोत्सव बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्वामी स्वतन्त्रानन्द कालेज दीनानगर आर्यसमाज मठ दीनानगर तथा दयानन्द मठ दीनानगर में भव्य समारोह हुए। तीनों समारोहों में आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु तथा डा० अशोक आर्य ने स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के जीवन पर विषद् प्रकाश डाला। दयानन्द मठ में स्कूलों के बच्चों ने स्वामी जी के जीवन पर भाषण, कविताएं, भजन प्रस्तुत किये। कालेज के समारोह की अध्यक्षता वीतराग स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने की। इस अवसर पर डा० अशोक आर्य लिखित पुस्तक "कर्मवीर स्वामी स्वतन्त्रानन्द सरस्वती जी का संक्षिप्त जीवन चरित" तथा प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु की नवीनतम कृति" धरती हो गई लहू लुहान का विमोचन स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने किया।

११० वर्ष बाद ऋषि दयानन्द की इच्छा पूर्ण हुई

मृत्यु से एक वर्ष पूर्व की गई, अपनी वसीयत में ऋषि ने अपने ग्रन्थों के भाष्य किये जाने की इच्छा व्यक्त की थी। तदनुसार पहली बार १९८२ में संस्कृत, हिन्दी तथा अंग्रेजी में अनेक कालजयी ग्रन्थों के लेखक तथा आर्य-समाज को सर्वात्मना समर्पित वैदिक विद्वान स्वामी विद्यानन्द सरस्वती ने इस महान कार्य को करने का संकल्प किया। उदयपुर के जिस महल में बैठ कर ऋषि ने अपने सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं क्रान्तिकारी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रचना की थी, राजस्थान सरकार द्वारा उस महल को आर्य समाज को भेंट किये जाने के ऐतिहासिक अवसर पर २८ नवम्बर १९९२ को वीतराग स्वामी सर्वानन्द जी की अध्यक्षता में स्वामी विद्यानन्द जी द्वारा बड़े आकार (२०×३०/८) के दो हजार पृष्ठों में लिखे गये 'सत्यार्थ भास्कर' के प्रथम खण्ड का लोकार्पण समारोह सम्पन्न हो गया। सत्यार्थ प्रकाश के इस भाष्य में ऋषि के मन्तव्यों की विस्तृत व्याख्या तथा अतिरिक्त युक्तियों व प्रमाणों से उनकी पुष्टि की गई है। इसे पढ़ने पर सत्यार्थ प्रकाश सम्बन्धी प्राय: सभी शंकाओं का समाधान हो जाता हैं।

इससे पूर्व स्वामी विद्यानन्द जी द्वारा 'भूमिका भास्कर' नाम से बृहदाकार दो भागों में किया गया ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का भाष्य प्रकाशित हो चुका है। सत्यार्थ भास्कर के दोनों भागों का मूल्य क्रमश: चार सौ व तीन सौ रुपये हैं। किन्तु ३१ मार्च १९९३ तक मूल्य जमा कराने वालों को दोनों भाग केवल पांच सौ रुपये में मिलेंगे।

पूजनीय स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती द्वारा रचित अन्य ग्रन्थ 'भूमिक भास्कर' के दोनों भ सौ रुपये मे उपलब्ध हैं।

प्राप्ति स्थान :—

१—इण्टर नेशनल आर्यन फाउण्डेशन C/o कैप्टन देवरत्न आर्य
६०३ मिल्टन अपार्टमेन्ट्स, जुहूतारा, बम्बई-४००,०९.
दूरभाष-निवास-६४६ २१ ८०, ६४६४१९ ३१

२—रामलाल कपूर ट्रस्ट बहालगढ़ सोनीपत

वेद प्रचार

आर्य समाज सुल्तानपुर पट्टी (नैनीताल) में लाला लाजपतराय जयन्ती, वीर हकीकत राय बलिदान दिवस एवं वसन्त पंचमी का पर्व संयुक्त रूप से २८ जनवरी ९३ को मनाया गया। इस अवसर पर विशेष यज्ञ हुआ और लाजपतराय व हकीकत राय और बसन्त पंचमी के बारे में बताया गया तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती का साहित्य आधे मूल्य पर विक्रय किया गया।

श्री कृष्ण आर्य (नैनीताल)

आर्य वीर दल शिविर

आचार्य जगदीश जी ने सूचना दी कि जून १९९३ में दयानन्द मठ दीनानगर में आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर लगाया जायेगा। एत-दर्थ तिथियों की घोषणा बाद में की जायेगी। आर्य समाजों के अधि-कारियों से निवेदन है कि वह अभी से ही शिविर के लिये आर्य वीरों को तैयार करना आरम्भ कर दें तथा इसकी सूचना आचार्य जगदीश जी को दयानन्द मठ दीनानगर के पते पर भेजें।

—डा० अशोक आर्य

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

महर्षि दयानन्द उवाच

यह आर्यावर्त्त ऐसा है जिसके सदृश भूगोल में दूसरा देश नहीं है। इसलिए इस भूमि का नाम "स्वर्ण-भूमि" है, क्योंकि यही सुवर्णादि रत्नों को उत्पन्न करती है। जितने भूगोल में देश हैं वे इसी देश की प्रशंसा करते हैं, और आशा रखते हैं कि जो पारसमणि पत्थर सुना जाता है, वह बातें झूठी हैं, परन्तु आर्यावर्त्त देश ही सच्चा पारसमणि है जिसके कि लोहे रूप दरिद्र विदेशी छूने के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं।

अपने ही देश के वस्त्र-वेश को अपनाने में शोभा है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र   दूरभाष : ३२७४७७१   वार्षिक मूल्य ५०) एक प्रति १ रु०

वर्ष ३१ अंक ६]   दयानन्दाब्द १६९   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९३   चैत्र कृ० १३   सं० २०४९   २१ मार्च १९९३

अयोध्या घटना के बाद पाकिस्तान में २४० और बंगला देश में ३०५ मन्दिर तोड़े गए

दोनों देशों में हिन्दुओं की दुकानों और घरों को जलाया गया

पाकिस्तान में ३३ हिन्दुओं की हत्या

अयोध्या घटना के बाद पाकिस्तान में २४० से अधिक मन्दिरों, दो गुरुद्वारों और एक गिरजाघर को नुकसान पहुंचाया गया। यह जानकारी देते हुए विदेश राज्यमन्त्री श्री सलमान खुर्शीद ने लोकसभा में कुछ सदस्यों के प्रश्न के उत्तर मे यह लिखित जानकारी दी।

उन्होंने यह भी बताया कि पाकिस्तान के विभिन्न नगरों में अल्पसंख्यक समुदाय के घरों और दुकानों को जलाया गया तथा इस समुदाय के ३३ सदस्यों की हत्या की गई। श्री खुर्शीद आलम ने यह भी बताया कि बंगला देश में ३०५ मन्दिरों को नुकसान पहुंचाया गया तथा अल्पसंख्यक समुदाय के १३०० घरों और २७० दुकानों को नष्ट किया गया है। उन्होंने यह भी बताया कि भारत सरकार ने बंगला देश सरकार को इन हिंसक घटनाओं के प्रति सावधान करते हुए वहा अल्पसख्यक लोगों में व्याप्त असुरक्षा की गहरी भावना से अवगत कराया है।

मुरली मनोहर जोशी के घर पर रोजा इफ्तार में कई राजनयिक भी आए

नई दिल्ली, १६ मार्च। भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष मुरली मनोहर जोशी के निवास पर हुए 'रोजा इफ्तार' मे कई जाने-माने चेहरे नजर आए। जब कि केन्द्र सरकार या कांग्रेस की तरफ से गृह राज्यमन्त्री पीएम सईद ही आए। 'रोजा इफ्तार' मे कई देशों के राजदूतों ने भी हिस्सा लिया। पूर्व प्रधानमन्त्री चन्द्रशेखर भी कुछ समय के लिए आए।

बाईस, रकाबगंज पर आयोजित 'रोजा इफ्तार' मे आने वाले लोगो का स्वागत करने के लिए बनाए गए गेट पर भाजपा अल्पसंख्यक कमेटी के महासचिव सिराज पिराचा खड़े थे। अन्दर लान में कुर्सी लगी थी। जहां श्री जोशी और पूर्व मुख्यमन्त्री कल्याणसिंह बैठे बातचीत कर रहे थे। लेकिन रोजा इफ्तार का समय आने से पहले कल्याणसिंह वहा से खिसक लिए। वहां मौजूद लोगों में न तो शहाबुद्दीन थे और न ही दूसरी जगहो पर मडराने वाले दूसरे मुस्लिम नेता। अलबत्ता, जहांगीराबाद से आए सज्जादा नशीन कुतबे आलम शाह बैठे नजर आए। हमदर्द विश्वविद्यालय के पूर्व वाइस चांसलर सैयद हामिल, डिप्टी इनकम टैक्स अफसर फिरोज खान भी वहां थे।

खास बात यह थी कि कई देशो के राजनयिकों ने भी रोजा इफ्तार में हिस्सा लिया। पाकिस्तान के उच्चायुक्त रियाज खोखर भी वहां मौजूद थे। कई लोगों से घिरे श्री खोखर को कुछ लोगों से यह कहते सुना गया कि भाजपा एक अहम भूमिका निभा सकती है। उन्होने कहा कि वे देखने आए थे कि यहा कैसा आयोजन है। बंगला देश दूतावास से फारुख सुबहान थे। रोजा इफ्तार मे लोगों का स्वागत कर रहे भाजपा नेता सिकन्दर बख्त ने बताया कि करीब दस देशों के राजनयिक आज आए।

कांग्रेस के पीएम सईद 'रोजा इफ्तार' के बाद वहां पहुंचे। भाजपा नेता मदनलाल खुराना और श्री जोशी के साथ उनकी काफी देर तक बातचीत हुई। बात-बात में श्री खुराना ने उनसे यह कह ही डाला कि आपकी सरकार ने तो चार जगह की सरकार को गड्डे मे डाल दिया पर इसका जवाब श्री सईद ने राजीव गाँधी के समय की कहानी सुनाकर दिया।

पूर्व प्रधानमन्त्री चन्द्रशेखर के आते ही खुले आसमान के नीचे लोगों की काफी भीड दिखाई दी। श्री जोशी के साथ चन्द्रशेखर चन्द लमहों के लिए बैठे। और बोले—सोचा आप लोग साजिश रच रहे होंगे कि क्यों नहीं आए इसलिए आ गए। लेकिन उन्होंने कुछ भी खाया नहीं जब कि नेताओं ने उनसे काफी आग्रह किया। आखिर में श्री चन्द्रशेखर उठ खड़े हुए और बोले—जोशी जी, अब तो चलें, हो गया न। यह कहते ही चारों तरफ से हंसी के फोंव्वारे छूट पड़े। श्री चन्द्रशेखर के साथ अरुण नेहरू भी थे।

(जनसत्ता से साभार)

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

शाकाहारी और मांसाहारी

सारा ससार दो वर्गो मे बटा हुआ है। गरीब और अमीर, गोरे और काले, सुशिक्षित और अनपढ, इसी प्रकार और भी कई श्रेणिया हैं जिनम सारी मनुष्य जाति बटी हुई है।

इस विभाजन का एक और रूप भी है। शाकाहारी और मासाहारी। इन दोनो के पक्ष मे और विपक्ष मे बात करने वाले आपको प्रत्येक देश मे और प्रत्येक जाति व सम्प्रदाय मे मिलेंगे। पाश्चात्य देशो मे मासाहारी बहुत और शाकाहारी कम मिलेंगे। इस्लामी देशो मे प्राय ९० प्रतिशत मासाहारी है। भारत ही एक ऐसा देश है। जहा शाकाहारी बहुत बडी सख्या मे मिलेंगे। हमारा धर्म और हमारी सस्कृति शाकाहारी अधिक है। सात वी शताब्दी मे इस्लामी सस्कृति ने हमारे देश मे पहली बार प्रवेश किया था। उसके साथ मासाहारी सस्कृति का प्रभाव हमारे देश मे बढता गया जो कसर रह गई थी वह अग्रेजी सत्ता के साथ पूरी हो गई। अग्रेज अपने साथ इसाईयत को भी लाए थ। प्रारम्भ म वह अपनी राज्य सत्ता को इसाईयत के प्रचार के लिए प्रयोग करना चाहते थे। इस प्रकार इस्लाम और ईसाईयत यह दोनो भारत की प्राचीन सस्कृति को समाप्त करने का प्रयास करन लगे। इसके साथ भारत मे शाकाहारियो की सख्या कम होने लगी और मासाहारियो की अधिक। आज मासाहारियो की सख्या शाकाहारियो से अधिक है। मुसलमान, ईसाई और सिख यह तो मास खाते ही हैं। हिन्दू भी बहुत अधिक सख्या मे खाने लग गए हैं। नये फैशन की हिन्दू महिलाए भी खाती हैं। उनमे कई शराब भी पी लेती हैं। कईयो मे यह रिवाज अधिक दिखाई देगा।

यह है आज की स्थिति का एक पक्ष। दूसरा यह है कि पाश्चात्य देशो मे जहा से मासाहार प्रारम्भ हुआ था और आज भी बहुत अधिक प्रचलित है। वहा शाकाहार के पक्ष मे एक नई लहर चल पडी है अमेरिका और योरुप मे यह धारणा प्रबल होती जाती है कि आज ससार मे कैंसर दिल की बीमारी, गुर्दे की बीमारी इस प्रकार की जो बीमारिया बढती जा रही हैं उन सबका कारण मासाहार है। अमेरिका के एक डाक्टर ने २७ हजार ऐसे बीमारो का पता किया जिन्हे या तो कैंसर है या दिल की बीमारी या गुर्दे की बीमारी। यह सब मासाहारी हैं। इस डाक्टर ने उन्हे कहा कि वह मास खाना छोड दे। इस पर उनमे से कई के स्वास्थ्य मे सुधार हो गया है।

पाश्चात्य देशो मे योग भी अधिक प्रचलित हो रहा है। कई स्थानो मे विशेषकर अमेरिका म योग आश्रम खुल रहे हैं जो योगाभ्यास सीखने जाते है। उन पर पहली शर्त यह लगाई जाती है—मास खाना बन्द करो शराब पीना बन्द करो सिगरेट पीना बन्द करो यह तीनो पाश्चात्य सभ्यता के आवश्यक अग समझे जाते है। अब इनके विरुद्ध एक अभियान प्रारम्भ किया जा रहा है। यूरोप और अमेरिका मे भारतीय जल पान वाले रेस्टोरेंट अधिक लोकप्रिय हो रहे हैं वह मास का व्यजन भी बनाते है। परन्तु जो अमेरिकी और योरुपी वहा आते है वह भारतीय भोजन अधिक पसन्द करते है।

हमारे देश की एक प्रसिद्ध नतकी सोनल मानसिंह का एक वक्तव्य प्रकाशित हुआ है। उसका कहना है कि वह यदि तीन घटे लगातार नाच सकती है तो उसका एक कारण यह भी है कि वह शाकाहारी है। योरुप मे मासाहारी अपने पक्ष मे शेर का उदाहरण दिया करते है कि वह मास खाता है। इसलिए बहुत शक्तिशाली है। उसके उत्तर मे हाथी और गैंडा यह दो पेश किये जा रहे हैं कि यह मासाहारी नही है। फिर भी बहुत शक्तिशाली है।

एक प्रश्न अब यह भी किया जा रहा है कि कैंसर, गुर्दा और दिल की बीमारिया क्यो बढ रही हैं। कुछ लोगो का कहना है कि जो नई खाद खेतो मे डाली जाती है। उसके कारण भी यह बीमारिया अधिक फैल रही हैं।

तात्पर्य यह है कि मासाहार जोकि पाश्चात्य देशो मे अधिक प्रचलित और लोकप्रिय है। उसके विरुद्ध वहा अब एक अभियान प्रारम्भकर दिया गया है। पिछले दिनो देहली म भी बड बडे डाक्टरो का एक सम्मेलन हुआ था। जिसमे कई विदेशो से भी सम्मिलित हुए थे। उन सबने सर्वसम्मति से यह घोषणा की थी कि मासाहार से बीमारिया बढती हैं। शाकाहार से न केवल कम होता है कई बीमारिया ठीक भी हो जाती हैं। जैसा कि मैंने ऊपर लिखा है। एक डाक्टर २७ हजार व्यक्तियो के स्वास्थ्य के विषय मे जानकारी प्राप्त करने के पश्चात इस परिणाम पर पहुचा है कि मनुष्य के स्वास्थ्य और दीर्घ आयु के लिए आवश्यक है कि वह शाकाहारी रहे। उसने यह भी लिखा है कि हमे यह भी देखना चाहिए कि जब हम सब्जिया पैदा करने लगते है तो उनमे किस प्रकार की खाद डालते हैं। जैसी खाद डाली जायेगी। वैसी ही सब्जी भी पैदा होगी।

तात्पर्य यह कि मासाहार और शाकाहार इन दोनो पर गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिए। यदि हमारे पूर्वजो का स्वास्थ्य आज की पीढी से अच्छा होता था। उनकी आयु भी अधिक होती थी तो उसका एक कारण यह भी होता था कि वह अपने स्वास्थ्य को ठीक रखने के लिए अपने भोजन का भी ध्यान रखते थे।

—वीरेन्द्र

संस्कार चन्द्रिका के लिए शुभ सूचना

सस्कार चन्द्रिका के लिए ग्राहको से निवेदन है कि पुस्तक अब तैयार है। शीघ्र ही आपके पास डाक द्वारा भेजी जाएगी। कृपा कर लेने का कष्ट करें।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सम्पादक

वैदिक साहित्य वितरण समारोह

आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर ९ अप्रल ९३ को दोपहर ३ बजे से ६ बजे तक पैराडाइज पब्लिक स्कूल सी ४७ किरण गार्डन नजफगढ रोड नई दिल्ली ५९ (फोन न० ५५९३०१०) मे सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री विक्रम कपूर की अध्यक्षता मे वैदिक साहित्य वितरण समारोह उल्लास पूर्ण वातावरण मे मनाया जा रहा है। इस समारोह का उद्घाटन डा० सच्चिदानन्द शास्त्री मन्त्री सार्व० सभा द्वारा सम्पन्न होगा तथा समारोह के प्रमुख अतिथि स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी प्रधान सार्व० सभा होगे। इस अवसर पर श्री तिलक राज चोपडा श्री रामस्वरूप सेठी, श्री चमन लाल ग्रोवर, श्री सूर्यदेव, डा० धर्मपाल, ब्र० राजसिंह स हत अनेको गणमान्य व्यक्ति पधार रहे हैं। कार्यक्रम के सरक्षक श्री व्यासदेव महता तथा श्री भगतराम आर्य। —सयोजक

प० अशोक कुमार

शुद्धि समाचार

श्री देवीदास आर्य द्वारा विधर्मी-पत्रकार, वकील अध्यापिका व इन्जीनियर ने वैदिक धर्म ग्रहण किया।

कानपुर आय समाज मन्दिर गोविन्द नगर मे श्री देवीदास आर्य के प्रयत्नो से चार शिक्षित विधर्मियो ने वैदिक धर्म को ग्रहण किया। जिनके विवाह भी हिन्दू युवको के साथ करायें गये।

१ ३०वर्षीय मुस्लिम पत्रकार (अब्दुल रहीम जो दिल्ली के एक अग्रेजी दैनिक के प्रतिनिधि हैं ने वैदिक धर्म को ग्रहण किया। श्री देवीदास आर्य ने उन्हे दीक्षा देते हुये सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया और उनका नाम अभिषेक आर्य रखा।

२ इसी प्रकार अग्रेजी माध्यम स्कूल की २५ वर्षीय ईसाई अध्यापिका कु सोनिया डेविड को हिन्दू धर्म ग्रहण कराने के बाद उनका नाम सोनिया देवी रखा गया। श्री आय ने इस युवती का विवाह श्री राजीव दुबे नामक एक सरकारी अधिकारी से कराया।

३ इसी प्रकार २४ वर्षीय मुस्लिम वकील युवती कु० जरीना ने वैदिक धर्म को अपनाया तत्पश्चात उनकी राय से श्री देवीदास आर्य ने श्री विश्वनाथ अवस्थी नामक ब्राह्मण युवक से विवाह कराया। जरीना का नाम जूही रखा गया।

४ तीसरी युवती २६ वर्षीय इन्जीनियर कु० हसीना ने इस्लाम मत को छोडकर श्री देवीदास आय से दीक्षा प्राप्त कर हिन्दू धम ग्रहण किया। इसका नाम नेहा रखा गया तथा उसका विवाह अनिलकुमार वर्मा से कराया गया।

मन्त्री
आर्य समाज गोविन्द नगर कानपुर

देव दयानन्द की दिव्य-देन

—ज्ञानी पिण्डीदास

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के प्रादुर्भाव से पूर्व चारों ओर घटा-टोप अन्धकार का दृढ़ साम्राज्य था, सांसारिक और पारमार्थिक अथवा इह-लौकिक विषयों पर किसी का ध्यान ही नहीं था। या यूं समझिये कि आध्यात्मिक सन्दर्भ में गाढ़ अज्ञान की प्रगाढ़ तमिस्रा चहुं ओर व्याप्त थी। असीम अज्ञान के कारण समूची मानव-सन्तति इतस्ततः भटकती फिरती थी। धर्म के वास्तविक कल्याणकारी स्वरूप को कोई जानता ही नहीं था। रूढ़िवाद की निकृष्टतम भावनाओं से आच्छादित ज्ञान-विज्ञान लुप्त-प्राय हो गये थे अर्थात् ईश्वरीय ज्ञान, प्राकृतिक-विज्ञान अथवा लोक-कल्याण का मार्ग किसी को भी सूझ नहीं पा रहा था। जातीय-निर्माण तथा राष्ट्रोत्थान को प्रायः विस्मृत किया जा चुका था और येन-केन प्रकारेण 'रोटी, कपड़ा, और मकान' की उपलब्धि ही मानव-प्राणी का अन्तिम ध्येय निर्धारित किया जा चुका था।

भारतवर्ष और विशेषतः आर्य (हिन्दू) जनता तो वेद-ज्ञान, शास्त्रचर्चा, आध्यात्मिक ऊहा-पोह तथा वैज्ञानिक सत्पथ से पूर्णतः भ्रष्ट हो चुकी थी। सदसद्विवेक के सीधे-सरल मार्ग से च्युत होकर पौराणिक मतवाद के गहरे-गर्त में ऐसी गर्क हुई थी कि इसके निस्तार उद्धार का कोई मार्ग किसी को भी सूझ नहीं पा रहा था। ऐकेश्वरवाद के वैदिक सिद्धांत का स्थान तेंतीस-कोटि देव-समूह ने छीन रखा था, अकाय, अव्रण, अनादि, अनन्त, अजन्मा, अद्वितीय, अजर, अमर, अभय सच्चिदानन्द प्रभु को मच्छ, कच्छ, वराह, नृसिंह आदि निकृष्ट योनियों में अवतार लेकर भटकते फिरने वाला बना दिया गया था, मर्यादा-पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम और योगीराज भगवान श्रीकृष्ण को अवतार घोषित करके उनका अनुसरण करना मानव-मात्र के लिए असम्भव समझा जाने लगा था, पत्थरों और विविध आकार-प्रकार के शिलाखण्डों को परमेश्वर समझकर उनकी पूजा-प्रतिष्ठा की जा रही थी, वेद के देदीप्यमान भुवन-भास्कार को पौराणिक-मतवाद ने ढांप रखा था, जिससे चारों ओर अन्धेरा छा गया था, वैष्णव शैव-शाक्त तथा गाणपत्य आदि सम्प्रदायों के दिग्गज विद्वान पण्डित प्रच्छन्न वाममार्गानुयायी बन चुके थे और वे लोग निम्न तन्त्र-त्रिलोक की विस्तृत-व्याख्या का रूप धारण कर चुके थे।

"स्त्री शूद्रौ नाधीयताम्" की मन-गढन्त रट लगाई जा रही थी, वर्णाश्रम की वैदिक-मर्यादा लुप्त हो चुकी थी—घृणित अत्याचारों और अमानुषिक दुर्व्यवहारों के द्वारा असंख्य आर्य ललनाओं को आचार-हीन मुल्लामुलण्डों और गृध्र-दृष्टि पापी-पादरियों की ललचाई नजरों का शिकार बनकर धर्मच्युत होने पर मजबूर किया जा रहा था। विविध मतवादों, परस्पर के कलह-क्लेशों, आपसी फूट और परस्पर के वैर-विरोध के फलस्वरूप काश्मीर से कन्याकुमारी और अटक से कटक तक समूच्चय भारत देश पर विदेशी-विधर्मी सत्ता का निष्कण्टक और निर्द्वन्द्व प्रभुत्व जम चुका था।

आत्मविश्वास आत्मावलम्बन, आत्मगौरव एवं आत्म निर्भरता अतीत की कहानियां समझी जाने लगी थीं। विधर्मी मुस्लिम-मौलवी और ईसाई पादरी, आर्य धर्म, आर्य सभ्यता, आर्य संस्कृति, आर्य मर्यादा, आर्य-रीति-नीति, आर्य परम्पराओं, आर्य इतिहास, आर्य वाङ्मय और आर्य पुरुषों की भर-पेट निन्दा और आलोचना-प्रत्यालोचना तथा नुक्ताचीनी करके अच्छी फसल काट रहे थे, परन्तु कोई भी माई का लाल अथवा समाज या संगठन उनका भयानक मुंह बन्द करने और विषैले नोकीले दांत खट्टे करने का साहस ही नहीं बटोर पा रहा था।

विभ्रम की ऐसी दुर्दशा के दिनों प्रायः आज सहस्र वर्षों की दीर्घ अवधि के अनन्तर महर्षि दयानन्द का आगमन हुआ। आप अपने सद्गुरु, भारतीय स्वतन्त्रता के अग्रदूत, प्रज्ञाचक्षु, आचार्य श्री स्वामी विरजानन्द सरस्वती के आदेश से प्रेरित होकर सत्य सनातन वैदिक धर्म-प्रचार, पाखण्ड-प्रपंच प्रहार, दलित-पतितोद्धार, स्वदेश-निस्तार एवं विद्या-विस्तार को लक्ष्य रखकर कार्य-क्षेत्र में अवतीर्ण हुए और स्वयं वेद-ज्ञान के अद्भुत आलोक से आलोकित होकर पौराणिक-पद्धति, मतवाद की भीषण-विभीषिका, प्रचण्ड पाखण्ड की झन्झावात, पशु-पक्षी-बलि की पतित प्रथा, वाममार्ग के कुत्सित कृत्यों, पत्थर-पूजा के विधि-विधानों अवतारवाद सदृश विनाशकारी सिद्धांतों, मानव-मानव में असमानता, अपूज्यों की पूजा और पूज्यों के तिरस्कार, बहु-देवतावाद, साकारवाद, एकदेशीय, वैकुण्ठ-गोलोकनिवासवाद, स्वर्ग-नरक-बहिश्त-दोजखवाद क्षीरसागर-अर्थ-असमानवाद तथा शफाअत-सिफारिशवाद आदि अगणित मिथ्यावादों झूठे-झमेलों, भौंडी-भ्रान्त-भावनाओं और ढिल-मिल ढकोसलों का घोर खण्डन किया।

"सब सत्य विद्या और जो पदार्थ, विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदिमूल परमेश्वर है" (नियम १) और "ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वव्यापक, सर्वेश्वर, अजर, अमर, अभय, नित्य, सर्वान्तर्यामी, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है" (नियम २) की शिक्षा देकर अनूठी आस्तिकता, भवन्निष्ठा और प्रभु-प्रेम की परम पराकाष्ठा का प्रचार-प्रसार और ईश्वर-स्वरूप सम्बन्धी समस्त प्रचारितभ्रान्त-भावनाओं का पूर्ण परिहार करके मुमुक्षु-महानुभावों के लिए मुक्ति का राजपथ खोल दिया। "वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है" (नियम ३) और "अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये" (नियम ४) के नियमों का प्रचार करके अपने, सद्विद्या के अन्तिम स्रोत तक पहुंचाकर मानवमात्र के लिए सत्शिक्षा का सरल-सीधा सत्पथ प्रशस्त कर दिया। 'सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये" (नियम ५) का उद्घोष करके मानव-मस्तिष्क में व्याप्त रूढ़िवाद मतवाद, व्यर्थ के बन्धनों की संकीर्णतामय सांकुलों को छिन्न-भिन्न करके हमें सान्त्वनाप्रद सुखद समीर में श्वास ले सकने के योग्य बनाया। 'सब काम धर्मानुसार अर्थात सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए" (नियम ६) का सदुपदेश देकर हमें सत्य-निष्ठा पर प्रत्येक स्थिति में डटे रहने की सुशिक्षा प्रदान की। "संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।" (नियम ७) की परिस्थापना करके तो मानो विश्व-बन्धुत्व का परम प्रशस्त लक्ष्य हमारे सामने उपस्थित कर दिया। "सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य बर्तना चाहिये" (नियम ८) के थोड़े से शब्दों में मानो सागर को गागर में बन्द करके समुच्चय संसार को सुखी, सन्तुष्ट, समृद्ध जीवन यापन करने का गौरवमय गुर समझा दिया। "प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिये किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए" (नियम ९) और "सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियमपालन में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें" (नियम १०) का शंखनाद करके व्यक्ति की स्वतन्त्रता और सामाजिक सुसंगठन के सूत्र का निर्माण कर दिया।

संक्षेपतः यह कि भगवान दयानन्द ने हमें सच्चिदानन्द जगदीश के वास्तविक स्वरूप और उसकी परम कल्याणी शाश्वत वाणी का ज्ञान कराया, आध्यात्मिक, सामाजिक, व्यावहारिक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय विषयों में पथ-प्रदर्शन किया, भौंडी-भ्रान्त भावनाओं का परिहार करके हमें वेद-प्रदर्शित अभ्युदय तथा निःश्रेयस का सरल-सीधा सत्पथ सुझाया, तिरस्कृत मातृशक्ति के उत्थान, सम्मान द्वारा राष्ट्र के निर्माण का गौरवमय मार्ग अवहेलित-पददलित, अपमानित मानव मात्र के पुनरुद्धार का आग्रहपूर्वक आदेश-निर्देश दिया, स्वदेश, स्वदेशी, स्वतन्त्रता, स्वाधीनता, आत्मगौरव और स्वावलम्बन का पाठ पढ़ाया मानव-समाज में उत्कृष्टता अथवा ऊंच-नीच की भेद-भावना की इतिश्री करके देश-काल प्रान्त-भाषा आदि की विघटनकारी दुर्लंघ्य दीवारों को मलिया-मेट करके प्राणी-प्रेम, विश्व-बन्धुत्व एवं सार्वजनिक सौहार्द का उच्च आदर्श हमारे समक्ष उपस्थित करके अपने दुर्लभ मानव-जीवन को सफल बनाने का ढंग हमारे हृदयपटल पर दृढ़तापूर्वक अंकित कर दिया। कहां तक वर्णन करें 'देव दयानन्द की दिव्य-देन अनन्त है, असीम है। इसीलिए कवि का निम्न कथन वास्तविकता का द्योतक है—

गिने न जाएं मुमकिन है बालू के जर्रे, समुन्दर के कतरे, फलक के सितारे।
मगर तेरे एहसान स्वामी दयानन्द न गिनती में आयें कभी हमसे सारे॥

धर्म का तत्व अर्थात् धर्म क्या है ?

श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक नजीबाबाद

प्राचीन ऋषियों का मत है "धर्मस्य तत्वं निहितं गुहायाम्" अर्थात् धर्म का तत्व गुहा (गहारयी) में छिपा है। अभिप्राय यह है कि धर्म क्या है ? यह अत्यन्त गूढ़ रहस्य है। धर्म की परिभाषा और उसकी व्याख्या सरल कार्य नहीं है। परन्तु आजकल जिसे देखो वही धर्माचार्य है, वही धर्म पर लम्बे-लम्बे भाषण कर रहा है।

धर्म के नाम पर बड़े-बड़े मत-मन्दिर, विशालकाय आश्रम, गुरुद्वारे, मस्जिद, गिरजे आदि खड़े मिलेंगे। प्रकाशकों की दुकानों और पुस्तकालयों में धर्म के बड़े-बड़े पोथे मिलेंगे तथा संसार में अनेक मत और पन्थ मिलेंगे और इन सबकी पृथक्-पृथक् धर्म की परिभाषायें मिलेंगी। जिज्ञासु के सामने प्रश्न आता है कि अन्ततोगत्वा धर्म क्या है ?

प्रत्येक दुकानदार जैसे अपनी दुकान के सामान को उत्तम और अन्य दुकानों की सामग्री को घटिया बताता है, चाहे उसकी दुकान की सामग्री सहस्र गुणा अच्छी हो और उनकी एकदम निकृष्ट। ठीक यही दशा धर्म के नाम पर प्रचलित मत-मतान्तरों की है।

हमारा उद्देश्य इन पंक्तियों में किसी मत विशेष की आलोचना करना नहीं है अपितु केवल धर्मकी वास्तविकता पर पहुंचने के लिये हम थोड़ी ऊहा-पोह करना चाहते हैं।

संसार मे धर्म के नाम पर अनेक विचार धारायें है अथवा यों कहिये कि विश्व में अनेक धार्मिक मत प्रचलित हैं। इन सभी मतो में सब कुछ समान नहीं है। सब कुछ समान हो, एक जैसा हो तो अनेकता रहती ही नहीं। मतभेद न हो तो तेरा-मेरा का यह प्रश्न ही नहीं रह जाता है। पृथक्-पृथक् रहते हुए भी कुछ बातें सब मतों मे ठीक है। कुछ बातें तो प्रत्येक मत मे ऐसी हैं कि जिनमें अच्छाई निहित है, बुराई नही, किन्तु उनकी वह अच्छाई भी इस अर्थ में बुराई बनी है कि वह अनेकता बनाये रखती है, मानव-मानव को एक नहीं होने देती अर्थात् समस्त मनुष्यो को एकता के सूत्र मे नही बंधने देती।

कुछ बाते प्रत्येक मत मे ऐसी हैं, जो संसार के अन्य सभी मतो के विरुद्ध हैं, परिणाम स्वरूप ससार का प्रत्येक मत अन्य सभी मतो के विरुद्ध है और सभी मतो के मानने वाले अन्य मतवादियो को अपना विरोधी ही नही अपितु शत्रु समझते है और इसी कारण ससार मे धर्म के नाम पर विभिन्न मत-वादियो के मध्य समय-समय पर झगड़े होते रहते है, जिनमें भीषण रक्तपात तक हो जाता है।

इन परिस्थितियों को देख कर कभी-कभी इतनी खिन्नता होती है कि मनुष्य धर्म के नाम से ही घृणा करने लग जाता है और साधारण बुद्धि के लोग धर्म के विरुद्ध हो जाते हैं। लोग सोचने लगते हैं कि जिससे मानव-मानव के रक्त का प्यासा हो जाय, जिससे मानव की मानवता का पशुकरण ही नहीं अपितु राक्षसीकरण होता है, ऐसे धर्म की संसार को क्या आवश्यकता है ? ऐसे धर्म से संसार का क्या लाभ ? क्यों न ऐसे धर्म को ही संसार से विदा कर दिया जाय ?

बात है भी ठीक, जो धर्म मानवता का अभिशाप हो—साधारण बुद्धि का ही सही—कोई भला व्यक्ति, कोई सत्पुरुष ऐसे धर्म को क्यों पसन्द करेगा ? ऐसी दशा मे यदि लोग धर्म को नशा अथवा अफीम कहने लग जायें तो आश्चर्य ही क्या है। परन्तु प्रश्न तो यह है कि क्या यह समस्या का वास्तविक निदान है ? और क्या यही इस रोग की वास्तविक चिकित्सा है ?

तथ्य यह है कि जब तक रोग का ठीक निदान नहीं होता, तब तक उसकी ठीक चिकित्सा भी नहीं हो सकती, ठीक चिकित्सा के लिये निदान का ठीक होना अत्यन्त आवश्यक है। रोगी को बचाने के लिये ठीक चिकित्सा होनी चाहिये और ठीक चिकित्सा के लिये ठीक निदान होना चाहिये।

मानव रोगी है। न केवल मानव अपितु सम्पूर्ण मानव समाज। रोग है धर्म का। चिकित्सक के पास जाता है रोगी और कहता है—वैद्य जी मैं बीमार हूं, मेरी चिकित्सा कीजिये। वैद्य जी पूछते हैं, बीमारी क्या है ? रोगी कहता है, धर्म की। वैद्य जी कहते हैं अच्छा तो आप नित्य प्रातः उठकर हनुमान मन्दिर मे जाकर फूल चढ़ाया करो और घर पर नित्य हनुमान का पाठ करो।

इसी प्रकार कोई शिव मन्दिर में फूल चढ़ाने और शिवस्तोत्र के पाठ की बात बताता है तो कोई दुर्गा पाठ की। कोई पांच समय काबे की ओर मुंह करके नमाज और वर्ष में एक मास रोजा रखने की औषधि लिख देता है तो कोई नित्य प्रति गिरजाघर की प्रार्थना में सम्मिलित होने की। कोई "अहिंसा परमोधर्मः" का सूत्र लिखकर नित्य जैन मन्दिर में दर्शनार्थ जाने की औषधि देता है तो कोई गुरुद्वारे का द्वार खटखटाने की।

रोगी, धर्म का रोगी उक्त स्थानों के चक्कर काटते-काटते और उक्त औषधि तन्त्र को रटते-रटते मृत्यु शय्या पर आ पहुंचता है, परन्तु अपने और अपनी विचारधारा की मान्यता वाले व्यक्तियों के अतिरिक्त अन्य सबको—चाहे वह आचरण में कितने ही पवित्र और नैतिक मूल्यों का पालन करने वाले हों—नीच, घृणास्पद, नरक गामी और यहां तक कि वध कर दिये जाने योग्य तक मानता रहता है।

"ऐसे ही कन्या घर रहे, ऐसे ही रहे विदेश" वाली लोकोक्ति चरितार्थ होती है। चाहे इस मत में रहे या उसमें—रहे मतवादी ही, धर्मात्मा नहीं बन सके। कारण स्पष्ट है कि जिन चिकित्सकों के पास गये, वह सब "नीम हकीम" अर्थात् अधूरे चिकित्सक थे। उन्हें निदान आता ही नहीं था, रोगी के रोग का क्या निदान करते ? वह तो बीमारियों को ही औषधि समझे बैठे थे। प्रत्येक चिकित्सक के पास से रोगी को पूर्व की अपेक्षा नयी औषधि दे दी जाती है, रोगी उसे सेवन करता है परन्तु रोग ज्यो का त्यों। कारण यही है कि औषधि नहीं अपितु नये रोग का तन्त्र रोगी के हाथ में आ जाता है। एक रोगसे मुक्त हुआ—दूसरे में जा फंसा। वह रोग-मुक्ति, रोग निवारण है, अथवा रोग परिवर्तन व रोग का नवीनीकरण।

हकीम और वैद्य यकसा हैं, अगर तशखीश अच्छी हो।
हमें सेहत से मतलब है, बनफशा हो या तुलसी हो॥

हमें-मनुष्यों के रोग की चिकित्सा की आवश्यकता है, रोग का नवीनी-करण नहीं चाहिए। हम चिकित्सा द्वारा रोग मुक्त होना चाहते हैं, किसी नये रोग से पीड़ित नही होना चाहते। चिकित्सा चाहे हमारी वैद्य करे या हकीम होम्योपैथ करे अथवा एलोपैथ और या चाहे नेचरोपैथ (प्राकृतिक चिकित्सक) हमे किसी विशेष चिकित्सा पद्धति से मोह नहीं। चाहे बनफशा हो या तुलसी, चिकित्सा भी चाहे किसी पद्धति से कर लो, परन्तु रोग को समूल नष्ट करो। 'न रहे बास न बजे बासुरी' न रोग रहे न छुआछूत और घृणा।

जब तक यह रोग (धर्म रोग) रहेगा, तब तक धार्मिक घृणा-द्वेष और ऊंच-नीच का भेदभाव बना रहेगा और जिस दिन यह रोग मिटा तो इसके लक्षण घृणा-द्वेष और ऊंच नीच के भेद भी बने न रहेंगे। यह लक्षण है रोग नहीं। रोग तो मन में है, विचारों मे निहित है। यदि मानव मन का मैल धुल जाए, यदि विचारो की शुद्धि हो जाए तो इन सभी तथाकथित रोगों परन्तु वास्तव में रोग के लक्षणो से छुटकारा मिल जाए।

(क्रमशः)

श्रीमद्दयानन्द अनाथालय से विवाह हेतु युवक आवेदन प्राप्त करें।

श्रीमद्दयानन्द अनाथालय, जमुना ब्रिज आगरा के मन्त्री कुंवर विजयपालसिंह चौहान एडवोकेट की सूचनानुसार अनाथालयमें पोषित आठ व्यस्क बालिकाओं से विवाह करने के इच्छुक शिक्षित, व्यवसा-यिक, कार्यरत अविवाहित युवक आश्रम कार्यालय से निर्धारित आवेदन प्रपत्र १५ मार्च तक प्राप्त करलें।

उन्होंने कहा है कि आवेदन प्रपत्र को पूर्ण करके वांछित प्रमाण-पत्रों सहित आश्रम कार्यालय मे ३१ मार्च सायं ५ बजे तक अवश्य जमा करा दें। इसके पश्चात् कोई भी आवेदन प्रपत्र स्वीकार नहीं किया जायेगा।

वर्तमान जीवन में आर्य समाज की उपयोगिता

—डा० महेश चन्द्र विद्यालंकार

आज विज्ञान का युग है। प्रत्येक क्षेत्र में विज्ञान उन्नति एवं प्रगति कर रहा है। मानव प्रकृति पर विजय के लिए सतत प्रयत्नशील है। विज्ञान ने मानव को शारीरिक सुख भोग-विलास के अनेक साधन दिए हैं। जिन्हें पाकर मनुष्य मानवीय मूल्यों से हट कर उन्मत्त हो रहा है। इतना सब कुछ होते हुए भी वर्तमान मानव जीवन अनेक द्वन्द्वों-पीड़ाओं, दु:खो संघर्षों, चिन्ताओं, विकारों और अभावों से भरा दृष्टिगोचर हो रहा है। प्रत्येक मनुष्य के जीवन में अतृप्ति, अभाव एवं चिन्ता के प्रश्न-चिन्ह लगे हुए है। कोई न कोई कमी और इच्छा उसे बेचैन किए रहती है। जीवन के चारों ओर कलह, अशांति, विद्रोह संघर्ष एवं द्वेष ही दिखाई देता है। इस वैज्ञानिक और भौतिकवादी जीवन में हम सच्ची सुख-शान्ति एवं आनन्द से दूर होते जा रहे है। इसका स्पष्ट कारण है कि हम मानवीय मूल्यों, आदर्शों तथा परम्पराओं से हट और कट रहे हैं। जीवन मे दानवता और पशुता बढ़ती जा रही है।

आर्यसमाज का चिन्तन, दर्शन, मूल्य तथा आदर्श हमें जीवन से जोड़ते हैं। जीवन को सुख-शान्ति और आनन्दमय बनाने का उपाय बताता है। आर्य समाज मत, मजहब, पन्थ, एवं सम्प्रदाय नहीं है। आर्यसमाज एक वैचारिक चिन्तन प्रक्रिया है। जीवन पद्धति है। विचारधारा और क्रान्ति है। एक सुधारक व्यवस्था है। इसके विचार चिन्तन व दर्शन, पूर्णता की ओर ले जाते हैं। जीवन-बोध कराते हैं। जीवन के उद्देश्य की ओर प्रेरित करते है। आर्य समाज मार्ग दर्शन व्यवस्था है। वेदों, महापुरुषों और भारतीय संस्कृति की रक्षक शक्ति है। जैसा कि स्वामी दयानन्द ने स्वयं कहा था, मैं कोई नया पन्थ, मत व सम्प्रदाय नहीं चलाना चाहता हूं। मैं तो ब्रह्मा से लेकर जैमिनि ऋषि तक की परम्परा को पुन: प्रकाशित, प्रचारित एवं प्रसारित करना चाहता हूं। महर्षि दयानन्द से पूर्व जो संसार में व्याप्त अज्ञान, अविद्या, जड़ता पाखण्ड, अनेकेश्वरवाद, जादू टोना, भूत-प्रेत, मूर्तिपूजा, धर्म के नाम बलि, कुरीतियां बुराईयां, आदि मानव समाज में फैली हुई थीं उन्हें देव दयानन्द जीवन भर पत्थर-गाली, जहर और अपमान पीकर दूर करते रहे। इसलिए उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना की। 'आर्य' शब्द का अर्थ है जिसमें ज्ञान, गति और प्राप्ति है। तीनों शब्द अपने मे सार्थक हैं।

वर्तमान मानव जीवन को आर्य-समाज का चिन्तन, मनन, दर्शन, मान्यताएं आदि सत्य और व्यावहारिक दिशा-बोध करा सकती है। क्योंकि अन्य विचारधाराओं की अपेक्षा इसका जीवन दर्शन व्यावहारिक, तार्किक, वैज्ञानिक एवं बुद्धिपरक है। किसी भी पक्ष मे अन्धविश्वास, अज्ञानता, रूढ़िवादिता धर्मान्धता आदि मान्य नहीं है। बिल्कुल स्वच्छ, स्पष्ट-सत्य सीधी-सरल मान्यताएं हैं। इसलिए आज के अधिक निकट हो सकती हैं। संक्षेप में आर्यसमाज आज के जीवन को निम्न विचार एवं चिन्तन देता है।

आर्यसमाज आस्तिक समाज है। इसकी मान्यता ईश्वर और वेद पर है। ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप सर्वाधार, सर्वव्यापक अजर, अमर, शुद्ध, बुद्ध, पवित्र, अजन्मा आदि गुणो से युक्त है। वह सृष्टि का कर्त्ताधर्ता संहर्ता त्रिकालदर्शी है। वर्तमान संसार में परमात्मा के बारे में बड़ी भ्रांत, पाखण्डपूर्ण व काल्पनिक बातें प्रचलित है। किसी का भगवान सोने-चांदी में रहता है तो किसी का भगवान गुफाओं मे, किसी का पुजारी के ताले मे, तो किसी का हवाई जहाज की सैर में। अजीब सा व्यापार चल रहा है। सबने दुकानें खोल रक्खी है। हर कोई दूसरों को मूर्ख बनाने मे लगा है। लोग रात-रात भर जागकर जागे हुए भगवान को जगा रहे हैं। कैसी विडम्बना है! आर्य समाज का मन्तव्य है कि भगवान अपने कार्यों से संसार में प्रकट हो रहा है। वह सर्वत्र विद्यमान है। उसकी सत्ता का प्रमाण सृष्टि का कण-कण दे रहा है। देखने के लिए ज्ञान-चक्षु चाहिएं। उसे अनुभव करो, वह अनुभव से ही जाना जा सकता है। उसका अहसास करो। उसकी रचना कारीगरी से पहिचानो। वेद प्रमाण है: -

न तस्य प्रतिमास्ति (यजु०) उस महान परमेश्वर की कोई मूर्ति-आकृति नहीं है।

वह प्रभु—कविर्मनीषी परिभू:......कवि है, मनीषी और स्वयं सामर्थ्यवान है। वह हमारे आपके प्रसाद का भूखा नही है। जिस परमात्मा ने सूर्य-चन्द्र तारे समग्र सृष्टि का निर्माण किया, उसकी हम मूर्ति बनाएं। यह उसका उपहास है। उसकी शक्ति को सीमित करना है। आर्य समाज तर्क और प्रमाण से वस्तु-सिद्धि पर बल देता है। अत: वह धार्मिक अन्धविश्वासों को नहीं मानता है। अवतारवाद, रूढ़िगत, कर्मकाण्ड, तन्त्र-मन्त्र कृत्रिम देवी-देवताओं आदि में विश्वास नही करता है। मुक्ति प्राप्ति में किसी बिचौलिए की आवश्यकता नहीं हैं। मनुष्य अपने पुरुषार्थ, सत्यज्ञान, शुद्धाचरण से मुक्ति प्राप्ति कर सकता है।

महर्षि ने वेदों की ओर लौटो का नारा दिया। हिन्दू जाति वेदो को भूलती जा रही थी। वेदो के बारे मे भ्रान्त धारणाएं फैली हुई थीं। वेदों को शंकासुर पाताल लोक ले गया है। एक विशेष वर्ग के अतिरिक्त न तो कोई उन्हें देख सकता था, न सुन सकता था। पढने की बात तो अलग रही। स्त्रियां, शूद्र और पतित वेदों और यज्ञों के पास नहीं जा सकते थे। वेदों के जो भाष्य किए गए वे अश्लील, काल्पनिक व भ्रान्त धारणाओं से भरे हुए थे। इससे वेदो की प्रतिष्ठा को बड़ा आघात पहुंचा।

आर्य समाज ने वेदो के द्वार सर्वसाधारण के लिए खोल दिए। जाति, वर्ग, नस्ल, रंग, मजहब, सम्प्रदाय आदि के आधार पर वेदो पर किसी का अधिकार नहीं है। वेद मानव-जाति की सम्पत्ति है। परमात्मा ने सृष्टि के आदि मे प्राणी-मात्र के कल्याण के लिए वेद का पवित्र ज्ञान ऋषियो को दिया। इसीलिए वेदों मे किसी जाति-वर्ग-देश आदि का नाम नहीं है। आज सभी को वेद पढ़ने का अधिकार है। सभी को यज्ञोपवीत धारण करने का हक है। आर्यसमाज की मान्यता है—"वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना आर्यों का परमधर्म है"। अत: मानव जीवन के लिए वेद प्रत्येक-क्षेत्र में मार्ग-दर्शक है। वेद प्रजीवन के प्रत्येक-क्षेत्र मे यही भावना, चेतना व सन्देश देते है कि मानव तू मानव बन जा।

वैदिक चिन्तन वर्तमान मानव को अपनी सास्कृतिक विरासत, आदर्श मर्यादाओं और गौरवपूर्ण इतिहास की ओर सचेत व प्रेरित करता है।

वैदिक-संस्कृति मानव-निर्माण में खान-पान रहन-सहन, विचार-चिन्तन, व्यावहारिक-स्वच्छता आदि पर विशेष बल देती है। जबकि अन्य विचार धाराएं इस ओर कोई विशेष महत्व एव बल नहीं देती हैं। वैदिक मान्यता है कि जैसा मनुष्य का भोजन होगा वैसे ही उसका मन, विचार, भावना एवं कर्म होंगे। आहार की शुद्धि से ही बुद्धि की पवित्रता व धार्मिकता स्थिर रह सकती है। हम दैनिक जीवन मे जैसा आहार लेते हैं उसका स्थूल भाग मल रूप मे बाहर निकल जाता है। उसके बाद रस रक्त, मांस, ओज, वीर्य आदि बनता है। उसके बाद जो सूक्ष्म रूप बनता है वह मन है। इसीलिए यह कथन सत्य है—जैसा अन्न वैसा मन। मन के दुष्प्रभावित बुरे विचार वाला होने पर शरीर भी पूरी तरह से प्रभावित होता है। अत: आर्यसमाज का मनन रहा है कि मनुष्य का भोजन रहन-सहन सरल, सात्विक, धार्मिक एवं पवित्र होना चाहिए, तभी मानव देवत्व की ओर बढ़ सकता है। आज के मानव-जीवन में अनेक प्रकार के बिकार, दूषित खान-पान विलासी रहन-सहन, आडम्बरपूर्ण जीवन चर्या, नास्तिकता, चरित्र हीनता आदि दुर्गुण बड़ी तेजी से आ रहे हैं। इन्हें किस तरह से दूर किया जा सकता है? इनसे छूटने के क्या उपाय हैं? इनसे क्या हानियां हो सकती हैं आदि समस्याओं का समाधान केवल वैदिक विचार धारा ही दे सकती है। अत: आज के जीवन में आर्य संस्कृति की महत्वपूर्ण भूमिका व उपयोगिता है। इसी से जीवन स्वस्तिकारी बन सकता है।

पुनर्जागरण की आवश्यकता

श्री जगप्रिय वेदालंकार "हिरण्यगर्भ"

एक स्वस्थ समाज का निर्माण करने के लिए यह नितान्त अपरिहार्य है कि जैसे भी हो जीवन के आधार 'मनुष्य' को दृढ़ से दृढ़त्तर बनाया जाय। जीवन का यही लक्ष्य हमें अपने सामने निरन्तर रखना होगा। कोई भी व्यक्ति या समाज ऐसा नहीं, जो सब समय अच्छी हालत में रह पाया हो। फिर भी मौलिक रूप में निजी कार्य कलाप और साधना में सच्चा तो रहा ही जा सकता है। साधक का यही लक्षण है। निश्चल शान्ति और एकांगी तन्मयता यह कोई बड़ा उद्देश्य नही स्वल्पकालिक मानसिक सन्तोष भले ही इससे प्राप्त हो जाय किन्तु वास्तविक उन्नति और प्रगति के लिए उसमें गतिशीलता आध्यात्मिकता का पुट तो देना ही पड़ेगा, तभी कुछ बात बनेगी काम का भ्रम मानव जाति के सबसे बड़े भ्रमों मे से एक है। अर्थात् यह सोचना कि मेरा या हमारा काम ही सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। हमारे अहंकारपूर्ण उद्देश्य ही सत्य हैं। अन्य सब द्वारा उन्हीं का अनुसरण किया जाना चाहिए। यह प्रगति सुपथ नहीं कहा जा सकता अपने को समय के अनुसार बदलने या रूपान्तरित करने में सदा ही तीन बड़ी बधाएं दीवार बनकर सामने आ खड़ी होती है।

१. श्रद्धा का अभाव २. अहंकार—अर्थात् मन का अपने स्वीकृत आदर्शों से चिमटे रहना प्राण का अपनी पसन्दगियो मे डूबे रहकर सच्चे समर्पण भाव से परे रहना तथा शरीर का अपनी आदतों से बन्धे रहना ३ चेतना में कोई तामसिक (भौतिक) प्रतिरोध।

समझ की छोटी सी भूल भी बड़े-बड़े भ्रम पैदा कर देती है। अनर्थों की परम्परा का कारण बन जाती है। मन का छोटा सा सन्देह भी चिरकाल से चले आ रहे प्रेम व विश्वास की जड़ उखाड़ फेंकता है। एक दुर्गुण सौ गुणों को ढ़क लेता है। एक दोष से भी मनुष्य का व्यक्तित्व खोटा हो जाता है। मामूली सी खांसी तपेदिक का विकराल रूप धर लेती है। निर्दोष हंसी बड़े उपद्रव का कारण बन जाती है।

जरा से धब्बे से चित्र की शोभा नष्ट हो जाती है। अत: उस छिद्र को देखो जिससे किसी सुपात्र की उपयोगिता कम या नष्ट होने का डर हो और उसके विशाल रूप धारण करने से पूर्व ही उसे पूरने में सतत् सचेष्ट बने रहो।

गम्भीरता से देखे तो मनुष्य जन्म से मरण पर्यन्त केवल अशान्ति का ही वरण किये रहता है। शान्ति के लिए वह जितना प्रयास करता है शान्ति उससे उतना ही दूर भागती जा रही है। वह नितान्त दिङ् विमूढ सा हो गया है। आखिर क्यों? इसी गुत्थी को सुलझाने के लिए महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वेद की ओर लौटने का मार्ग प्रशस्त किया और मञ्जिल तक पहुंचने के लिए उस आर्यसमाज की स्थापना की, जिसकी शक्ति वामन मे विराट, बिन्दु में सिन्धु और गागर में सागर जैसी है। पराई आग में जल कर दीन दुःखियों की दवा होना ही उसकी महत्ता है। आर्य समाज की इस आन्तरिक ऊर्जा के पुन: जागरण व एकीकरण की प्रक्रिया फिर से आरम्भ करने की आज नितान्त और अपरिहार्य आवश्यकता है। समाज के आभ्यन्तरीण समीकरणों मे भी नये सिरे से बदलाव लाने की अत्यन्त जरूरत है। तभी हम उसकी आन्दोलनकारी सहज छवि को फिर से निखार पायेंगे।

यह दुःखद विडम्बना ही है कि समाज का अन्धापन उत्तरोत्तर इतना बढ़ता चला जा रहा है कि वह सत्य और सार्थक परीक्षणों से भी कतराने लगा है। अन्ध-विश्वासों और अन्ध-परम्पराओं से मुक्त होने की जगह वह अब इनके अधीन होकर रहना पसन्द करने लगा है। परिणाम सबके सामने है।

समाजो मे अब पहला नजारा नही है।
वह उत्साह और प्रेम की धारा नहीं है॥
विश्वमार्य का वह नारा नहीं है।
शास्त्रार्थों में अब मन हमारा नहीं है॥

विश्व का आर्य-करण तो हर कोई चाहता है किन्तु अपना आर्यकरण कोई नहीं चाहता। ऐसी अवस्था में समाज के अन्दर अनाचार, अत्याचार, दुराचार और भ्रष्टाचार नहीं पनपेगा तो क्या पनपेगा? मानवीय मर्यादायें भंग न होंगी तो क्या होगा? सुष्ठु परम्पराओं का ध्वंस न होगा तो क्या होगा? भोग-विलास की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन क्यों न मिलेगा? धर्म की हानि और अधर्म में अनुरक्ति ही बढ़ेगी। बन्दी की पूजा और नेकी का तिरस्कार ही देखने में आयेगा। असत्य की सार्वजनिक प्रतिष्ठा तथा सत्य की उपेक्षा निश्चित रूप से होती ही रहेगी। सच्ची देशभक्ति और राष्ट्र भावना का अभाव ही समाजमें परिव्याप्त अकर्मण्यता, बेईमानी, मेहनत व पूर्ण मनोयोग से काम न करना आदि समस्त सामाजिक बुराइयों का मूल कारण है। संसार को हिला देने वाली शक्ति केवल बुद्धि ही नही है। अपितु प्रबल इच्छा शक्ति का होना कही ज्यादा महत्त्व रखता है। संसार हाथों से ही पकड़ा जा सकता है। खाली पुलावों से नहीं। आंख की बजाय आज हाथ अधिक महत्त्वपूर्ण है। मन के संकल्पों को अमली जामा पहनाने वाले हाथ ही होते हैं। अन्य कुछ नही 'कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः"।

सही समय पर सही मुद्दे की पहचान, सबल नेतृत्व, जन-संचार व प्रचार-माध्यमो का समर्थन व उपयोग आदि पहलुओं को हमें युग के अनुरूप दृष्टिकोण से अपनाना होगा। तभी हम अपने आर्यत्व को सम्यक् रूपेण उभार सकेंगे। तदर्थ प्रथमत एक दो बातों पर ही अपना ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है। अन्यथा बहुत से मुद्दों को एक साथ हाथ में लेने पर अभियान में अपेक्षित तेजस्विता व नैरन्तर्य कहा रह पाएगा। अधकचरे पश्चिमी विचारों के बल पर भारत की समस्याओं का हल नही खोजा जा सकता। उल्टा इससे समाज में आन्तरिक बिखराव, सन्देह शीलता, अनुशासन हीनता आदि ही प्रभावी होकर अपना दुष्प्रभाव दर्शाते रहेंगे। विभिन्न प्रकार के उत्पीड़न ही सर्वत्र दृष्टिगोचर होगे।

हमारा आचरण भी सुपुष्ट आदर्श का नमूना या दृष्टान्त बने तभी देव दयानन्द के प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि अर्पित हुई ऐसा कहा जा सकेगा। सुकोमल जिह्वा के समान विनम्र एवं सुशील सुधीजन अन्त तक अपना अस्तित्व बनाए रखते हैं। और दांतो के समान कठोर स्वभाव वाले व्यक्ति समय से पहले ही टूट-टूट जाते है। पाश्चात्य जीवन पद्धति व शिक्षा के व्यामोह मे पड़कर हम अपनी उदात्त संस्कृति का नही किन्तु घृणित विकृतिका विस्तार करने में ही सहयोगी बनेंगे। बरबादी का अर्थशास्त्र ही आधुनिक औद्योगिक प्रगति का मूल है। बुराई के प्रति आकर्षण मानव का सहज स्वभाव है। आत्मेन्द्रिय का संयमन उसका स्वधर्म है। स्वभाव और स्वधर्म में टकराव होने पर स्वधर्म की ओर झुकने की जरूरत पड़ती है। यही शिक्षा आर्य शिक्षणालयों में बच्चों को मिलनी चाहिए। दोषों के प्रति सहनशील न होने में ही कल्याण है। गुणों की चाह एवं पर दोष दर्शन से बेचैनी हो तभी कल्याण पथ प्रशस्त होगा। और प्रभु कृपा से ही यह सम्भव हो सकेगा। "सो जानिहिं जेहि देहिं जनाई"। सह-जीवन वेद का सर्वोत्तम सारतत्व है। इससे प्रसूत आचरण ही सदाचरण कहलाता है। इसी का दूसरा नाम यज्ञ है।

वेद का सन्देश मरने के बाद स्वर्ग पा लेना ही नहीं है। किन्तु स्वर्ग को यहीं इसी धरती पर उतार लाना या प्रतिष्ठित करना है। जगत जननी से यही प्रार्थना है कि विश्व-मानव [दिव्य जन] की यह दृष्टि हम सब में सुप्रतिष्ठित हो। ताकि हमारे सह-प्रयास से नये युग का श्रीगणेश होकर नया अतिमानव-समाज उभरे। पृथ्वी पर देव रमण करें। "विश्वे देवास:इह मादयन्ताम्।"

अपील

देश विदेश की सभी आर्यसमाजों एवं सदस्यों से सभा की ओर से विशेष अनुरोध

(क) वह अपने गांव अथवा नगर के बुद्धिजीवियो, डाक्टरों, इन्जीनियरों, वकीलों, जजों, अध्यापकों, कवियों, लेखकों, सम्पादकों, विधान सभा, राज्य सभा के सदस्यों, अन्य मत-मतान्तरों के महन्तों अनुयाइयों, पंडितों, अपनी कक्षाओं में प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने वाले विद्यार्थियों में प्रतिवर्ष कम से कम दो सौ प्रतियां 'सत्यार्थ प्रकाश' की सप्रेम वितरित करें, और सबके नाम पता, फोन आदि का रिकार्ड एक अलग रजिस्टर में रखें।

(ख) प्रत्येक आर्य समाज अपने गांव अथवा नगर मे स्थान-स्थान पर निम्नलिखित नारे लिखवायें। शारीरिक, आत्मिक, सामाजिक एवं राजनीतिक उन्नति के लिए—

महर्षि दयानन्द कृत 'सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें'

मिलें – समाज व व्यक्ति का पूरा नाम, पता, फोन नं०'

(इसके स्टीकर बनवाकर उपयुक्त स्थानों पर चिपकाए जाएं)

(ग) प्रत्येक समाज अपने-अपने स्थान पर वर्ष में कम से कम एक बार सत्यार्थ प्रकाश पर भाषण प्रतियोगिताएं एवं लिखित प्रतियोगिताएं करवायें और इसके लिये सभी स्कूल व कालेजों मे सूचना दी जाए।

(घ) आर्य समाज के विद्वानों का स्कूल कालेज व अन्य सभा, सोसायटियो एवं क्लबों आदि में प्रवचनो का प्रबन्ध किया जाए और विद्वानों से भी विनम्र अनुरोध किया जाए कि वह प्रातः सत्संग के पश्चात दिन भर खाली रहने की बजाए इस तरह के प्रवचनों के लिये व्यक्तिगत प्रयास भी करें। समाचार पत्रो में अपने लेख भेजें। प्रादेशिक सभाएं भी विद्वानों के लेखों को अपनी-अपनी आर्य पत्रिकाओं तक सीमित न रखकर समाचार पत्रों में भी छपवाने का भरसक प्रयास करें।

(ङ) प्रत्येक समाज पर्याप्त मात्रा में सत्यार्थ प्रकाश की हिन्दी, अंग्रेजी अथवा अन्य प्रादेशिक भाषाओं की प्रतिया मंगवाकर रखें और उन्हें अपने नगर के प्रमुख पुस्तक विक्रेताओं रेलवे तथा बस स्टेंड आदि के बुक स्टालों पर भी उपलब्ध करवाएं ताकि सार्वदेशिक सभा की ओर से चलाई जाने वाली 'पत्राचार सत्यार्थ प्रकाश प्रतियोगिता' में भाग लेने के इच्छुक प्रतियोगियों को सत्यार्थ प्रकाश की प्रति प्राप्त करने में कोई असुविधा न हो। प्रत्येक समाज एवं व्यक्ति इस पत्राचार प्रतियोगिता का पर्चे बांटकर अथवा विज्ञापन देकर यथा शक्ति खूब प्रचार करें।

प्रतिवर्ष सर्वोत्तम काम करने वाली संस्था अथवा व्यक्ति को सभा की ओर से आर्यसमाज स्थापना दिवस पर सम्मानित किया जायेगा।

निवेदक :

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

प्रधान

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन

रामलीला मैदान, नई दिल्ली-११०००२

दूरभाष : ३२७४७७१, ३२६०६८५

आर्य समाज

अपौरुषेय वेदों का जो है,
इस वसुधा पर बना प्रचारक।
सत्य सनातन धर्म सुवैदिक—
का जो बना पुनः उद्धारक।

ऋषिवर दयानन्द से ऋषि ने,
जिसे किया था नव संस्थापित।
वैदिक धर्म ध्वजा लहराया,
वैदिक पथ, कर प्रतिपादित।

स्वतन्त्रता का मन्त्र राष्ट्र को,
जिसने दिया प्रथम, उत्प्रेरक।
महिलाओं को, विधवाओं को,
दिला दिया फिर उनका हक।

सत्य-धर्म की प्रभा प्रभासित,
हुई पुनः नव ज्योतिर्मान।
जिसके कार्य कलापों से फिर—
आया भू पर नया विहान।

स्वर्ग सदृश फिर बने धरा यह,
यही हमारा है नारा।
आर्य बनें सब भूमि निवासी—
हमने जग को ललकारा।

शुचिता—समरसता-समृद्धि से—
पूर्ण बने यह जगती आज।
वेदों की आभा बिखराता—
बढ़ता भू पर आर्य समाज।।

—राधेश्याम आर्य, मुसाफिरखाना, सुलतानपुर

महर्षि दयानन्द ने कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष का बिगुल बजाया था

नई दिल्ली, १४ फरवरी। आर्य समाज बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी का वार्षिकोत्सव ११ से १४ फरवरी, १९९३ तक समाज मन्दिर में धूमधाम से मनाया गया।

११ फरवरी से आचार्य प्रेमभिक्षु के ब्रह्मत्व से प्रारम्भ हुये यजुर्वेद शतक पारायण महायज्ञ की १४ फरवरी को पूर्णाहुति के अवसर पर सैकड़ो आर्य नर-नारियो ने श्रद्धापूर्वक भाग लिया।

समाज सुधार के मन्त्रदाता विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुये दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल ने कहा कि १९ वीं शताब्दी के महानतम समाज सुधारक स्वामी दयानन्द ने जात-पांत, छुआ-छात, सती प्रथा, अनमेल विवाह, जन्मना वर्ण व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष का बिगुल बजाया था तथा विधवा विवाह को वेदानुकूल बताकर नारी शिक्षा पर बल दिया था। कार्यक्रम में डा० धर्मपाल ने श्रीमती सरोजनी सचदेव द्वारा सम्पादित एक स्मारिका का भी विमोचन किया।

डा० श्रीमती शशी प्रभा कुमार ने कहा कि नारी को सम्मान दिलाने वाले स्वामी दयानन्द ने हमें स्वराज्य, स्वसंस्कृति, स्वधर्म, स्वभाषा, स्वसाहित्य का मन्त्र दिया। इस अवसर पर आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के महामन्त्री डा० शिवकुमार शास्त्री, डा० महेशचन्द्र विद्यालंकार, पं० जैमिनी शास्त्री, आदि ने भी प्रेरक विचार प्रस्तुत किये।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री तिलकराज चोपड़ा ने सर्वश्री कुलभूषण कुमार, रामनाथ आहूजा, रविन्द्र आर्य, श्रीमती जनक चौधरी एवं श्रीमती सुशीला साहनी को सम्मान चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया। समाज मन्त्री श्री यशपाल सलूजा ने मंच संचालन किया तथा प्रधान श्री चन्द्रभान चौधरी ने धन्यवाद व्यक्त किया।

अन्ध श्रद्धा का एक उदाहरण—

एयरपोर्ट और दरगाह !

जिसे ९० प्रतिशत हिन्दू पूजते हैं।

दिल्ली में एक दरगाह ऐसी भी है जो सुरक्षा अधिकारियों की श्रद्धा का केन्द्र बनी हुई है। इष्टदेव की तरह पूजी जाने वाली यह दरगाह इन्दिरा गांधी अन्तरराष्ट्रीय एयरपोर्ट के भीतरी भाग में स्थित है। एयरपोर्ट एवं पुलिस के अधिकारियों का मानना है कि इसी दरगाह के आशीर्वाद पर एयरपोर्ट की सुरक्षा टिकी हुई है। यही वजह है कि एयरपोर्ट परिसर में अब तक पचास से अधिक भीषण दुर्घटनाएं हो चुकी हैं पर इनमें किसी की मृत्यु नहीं हुई। इसी मान्यता के कारण एयरपोर्ट सुरक्षा की परवाह किये बगैर हर गुरुवार को भक्तों को अन्दर दरगाह तक जाने दिया जाता है। साम्प्रदायिक सद्भाव का यह बेनजीर नमूना है क्योंकि यहां आने वाले भक्तों में अधिसंख्य हिन्दू हैं।

वैसे यह दरगाह एयरपोर्ट की सुरक्षा की दृष्टि से खतरनाक है इसे वहां से हटाने की हिम्मत किसी अधिकारी में नहीं है। कुछ साल पहले उसे हटाने की कई कोशिशें की गयी पर इसमें सफलता नहीं मिली। अधिकारियों का मानना है कि दरगाह के चमत्कार के कारण अधिकारी इस काम में सफल नहीं हो पाये। उसी से प्रभावित होकर अधिकारियों ने मजारों को दरगाह का रूप देकर इसे श्रद्धालुओं के लिए खोल दिया है। अब मजारों को वहां से हटाने का इरादा छोड़ दिया गया है और सुरक्षा अधिकारी भी मजार के आगे सिर झुका रहे हैं।

एयरपोर्ट के पुलिस उपायुक्त डा० आदित्य आर्य ने बताया कि एयरपोट परिसर में तीन मजारें हैं। दो मजारें तो एक साथ रनवे के पास हैं जब कि तीसरी मजार हेलीपेड (माइक १) पर है। हेलीपेड की मजार सुरक्षा की दृष्टि से खतरनाक समझी गयी और उसे हटाने का प्रयास भी हुआ, लेकिन हटा नहीं सके।

एयरपोर्ट के निकट स्थित गांव महिपालपुर के बुजुर्ग बताते है कि मध्यकालीन समय में काले खां और रोशन खां नामक दो सूफी सन्त हुआ करते थे। दोनों भाई थे। उनके पांच और भाई भी थे। सातों भाई उसी जगह रहते थे जहां आजकल इन्दिरा गांधी अन्तरराष्ट्रीय एयरपोर्ट है। काले खां और रोशन खां की मृत्यु के बाद यही उनकी मजारे बनीं १९८४ में।

एयरपोर्ट बनाने के लिए इस स्थान का चयन हुआ तो इन मजारो को वहां से हटाने की बात उठायी गयी। पुलिस उपायुक्त बताते हैं कि एयरपोर्ट के विस्तार के क्रम में मजार तोड़ने के लिए जो भी अधिकारी आगे आये, उनका नुकसान ही हुआ। बुलडोजर मंगाये जो मजार तक पहुंचते ही खराब हो गये। मजारें तोड़ने के काम में लगे कई अधिकारी एवं कर्मचारी दुर्घटना के शिकार हो गये। इससे अधिकारी घबरा गये। गांव वालों ने उन्हें मजार के साथ छेड़छाड़ नहीं करने की सलाह दी। तब अधिकारियों ने मजारें तोड़ने का इरादा छोड़कर उन्हें पक्का बनवाया और उन्हें घेर दिया। भक्तों के लिए बैठने की और पानी की व्यवस्था की गयी। इस दरगाह की देखभाल के लिए एयरपोर्ट अधिकारियों ने एक समिति बनाकर सप्ताह में दर्शकों के लिए खोल दिया।

सुरक्षा की दृष्टि से एयरपोर्ट परिसर में आम लोगों का प्रवेश वर्जित है। एयरपोर्ट के जिस भाग में (रनवे) मजारें हैं उधर तो पुलिस वालो का जाना भी वर्जित है। लेकिन हर गुरुवार को आस-पास के गांवों के भक्तगण मजारों पर फूल-प्रसाद चढ़ाने जाते हैं। भक्तों में करीब नब्बे प्रतिशत लोग हिन्दू हैं जिनके मन में इन मजारों के प्रति श्रद्धा भगवान से कम नहीं है। कई भक्तों से बातचीत करने पर ऐसा ही लगा। प्रत्येक गुरुवार को मजारों के दर्शन की व्यवस्था एयरपोर्ट अधिकारी ही करते हैं। दोपहर को एयरपोर्ट की बस बाहर खड़ी रहती है। भक्तगण इसी बस में सवार होकर अन्दर जाते हैं तथा मजारों पर फूल-प्रसाद चढ़ाकर मन्नत मांगते हैं।

कालेखां और रोशन खां की मजारे कुछ वृक्षों के नीचे हैं। विमान की सुरक्षा के लिए एयरपोर्ट परिसर में वृक्ष होना खतरनाक है लेकिन इन वृक्षों को हटाने के लिए कोई तैयार नहीं है। इन वृक्षों के अलावा दूर-दूर तक कही कोई वृक्ष नहीं है। कर्मचारियों का कहना है कि ये वृक्ष मजारों को छांव प्रदान करते हैं। मजार और वृक्ष के साथ छेड़छाड़ न हो इसके लिए एयरपोर्ट की ओर से एक सुरक्षाकर्मी हर समय वहां तैनात रहता है। मजार के प्रति एयरपोर्ट के अधिकारियों तथा पुलिसकर्मियों में जबरदस्त आस्था और विश्वास है।

सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत स्थिर निधियां (१०)

स्व० श्रीमती चन्द्रवती नई दिल्ली
स्थिर निधि ३,२५ ००० रु०
१५ १२ ८४ की अन्तर ग द्वारा स्वीकृत

सभा द्वारा स्व० श्रीमती चन्द्रवती की स्मृति मे यह निधि तीन लाख २५ हजार रु० की स्थापित की गई है। इस निधि का ब्याज आर्य कन्याओ की शिक्षादि की व्यवस्था पर खर्च किया जाएगा। निधि की यह राशि सभा ने पटेलनगर नई दिल्ली स्थित उनके मकान को बेचकर प्राप्त की थी।

इस वर्ष ब्याज राशि मे से कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून को १५०० रुपए, श्री दानसिंह जी के बच्चो को पुस्तको हेतु ५००) आर्य समाज गर्ल्स हा० से० स्कूल बावडी बाजार को ५ हजार रुपए गुरुकुल विराटनगर नेपाल को ५ हजार रुपए, गुरुकुल चोटीपुरा को ४८०० रुपए दिए गए हैं।

श्री सत्यनारायण गुलाबीदेवी लाहोटी चेरिटेबल ट्रस्ट १३४-४ महात्मा गांधी रोड, कलकत्ता वैदिक साहित्य प्रकाशन स्थिर निधि
४ १-९१ की अन्तर ग द्वारा स्वीकृत

यह निधि ५ हजार रुपए से स्थापित की गयी थी। इसका ब्याज वैदिक साहित्य प्रकाशन पर व्यय किया जाएगा।

स्व० मागेराम गर्ग स्मृति स्थिर निधि
४-८ ९१ की अन्तर ग मे स्वीकृत

यह निधि ५ हजार १ सौ रु० से स्थापित की गई निधिकर्ता श्री यशपाल जी आर्य ८६ चन्द्रलोक प्रीतमपुरा, दिल्ली ३४। यह निधि स्व० (पिता) श्री मागेराम गर्ग सालवन जिला करनाल की स्मृति मे स्थापित की गई है। इसके ब्याज से आर्य समाज के सिद्धात सम्बन्धी ट्रैक्टो का प्रकाशन किया जाएगा।

श्री नारायण दास खन्ना स्थिर निधि
४-८-९१ की अन्तर ग द्वारा स्वीकृत

यह निधि ८ हजार रु० से स्थापित की गई। निधिकर्ता श्री नारायणदास खन्ना सी० ५० ५८४ गणेश नगर नम्बर २, पटपड गज दिल्ली ५२। इस निधि का ब्याज होनहार विद्यार्थियो की छात्रवृत्ति पर व्यय होगा।

स्व० प० देवव्रत धर्मेन्दु एव स्व० श्रीमती जावित्री देवी स्थिर निधि
४ ८-९१ की अन्तरग बैठक ने स्वीकृति दी

यह निधि ढाई लाख रु० से स्थापित की गई। स्व० देवव्रत धर्मेन्दु जी के गाजियाबाद के मकान को ढाई लाख रुपए मे सभा ने बेचा था, उस राशि की यह निधि बनाई गई है। इस निधि का ब्याज गरीब छात्र छात्राओ और पीडितो की सहायता पर व्यय किया जाएगा।

प० छेदालाल शर्मा (वशिष्ठ) एव श्रीमती मथुरादेवी
छात्रवृत्ति स्थिर निधि
४-८-९१ की अन्तर ग द्वारा स्वीकृत

यह निधि २० हजार रुपए से स्थापित की गई। इसके निधिकर्ता श्री छेदालाल शर्मा, वेदभवन, आर्य नगर, गाजियाबाद (उ० प्र० । इस निधि का ब्याज छात्रवृत्ति, सस्कृत प्रचार, वेदविद्या के प्रचार आदि पर व्यय किया जाएगा।

स्व० इन्द्रावती भट्ट स्मृति स्थिर निधि
४-८-१९९१ की अन्तर ग द्वारा स्वीकृत

यह निधि ५-५ हजार करके १० हजार की स्थापित की गई इसके निधि-कर्त्ता श्री त्रिलोकी नाथ भट्ट सी० ९ पम्पोश एन्क्लेव, नई दिल्ली-४८। इस निधि का ब्याज रोगग्रस्त स्त्रियो के इलाज पर व्यय किया जाएगा।

श्री लालचन्द पहलवान एव सरस्वती देवी आर्य वीर दल स्थिर निधि
(२७-१०-९१ की अन्तरग द्वारा स्वीकृत)

यह निधि पाच हजार रुपए से स्थापित की। निधिकर्ता श्री मागेराम आर्य २९९, बाकनेर, दिल्ली-४० द्वारा अपने माता पिता के नाम पर स्थापित की गई। इसका ब्याज आर्य वीर दल के प्रचार प्रसार मे व्यय होगा।

लाला रखाराम अग्रवाल छात्रवृत्ति स्थिर निधि
(२७-१०-९१ की अन्तर ग द्वारा स्वीकृत)

यह निधि ११ हजार, १११ रु० से श्री मदन लाल गुप्त अलहमबर्रा, कलीफोर्निया द्वारा स्थापित की गई। निधि का ब्याज केवल अम्बाला छावनी निवासी निर्धन तथा योग्य छात्र-छात्राओ को सभा पुस्तकें, फीस, कापी अथवा छात्रवृत्ति के रूप मे देगी।

श्रीमती फूलमती दीक्षित पत्नी प० महादेव प्रसाद
दीक्षित (इटावा) स्मृति स्थिर निधि

२० हजार रुपए की यह निधि प० बटेश्वर दयाल शर्मा द्वारा स्थापित। इस निधि का ब्याज आर्य साहित्य प्रकाशन मे व्यय होगा। जब तक मूल राशि ४० हजार न हो जावे निधि का ब्याज व्यय नही होगा।

स्व० श्रीमती कृष्णाबाई परमार स्मृति निधि

यह निधि ४ हजार रुपए से स्थापित की गई। निधिकर्ता श्री प्रह्लादसिंह परमार ग्राम-पो० खाटपुर, शाजापुर (म० प्र०)। इस निधि का तीन चौथाई ब्याज बालक-बालिकाओ के पोषण या अनाथालय मे सहायतार्थ तथा एक चौथाई ब्याज से गुरुकुल होशगाबाद मे पढने वाले निर्धन एव होनहार बालको की छात्रवृत्ति आदि मे व्यय होगा।

वैदिक धर्म समाज कैलीफोर्निया
धर्मार्थ सहायता एव प्रचार निधि

यह निधि चालीस हजार रुपए से प० बालकृष्ण शर्मा सस्थापक वैदिक धर्म समाज, कैलीफोर्निया द्वारा १९९१ से सभा मे स्थापित की गई है। इस निधि मे निधिकर्ता अथवा वैदिक धर्म समाज द्वारा समय-समय पर वृद्धि भी की जायेगी। इस निधि की स्थापना का उद्देश्य मात्र यही है कि सार्व-देशिक सभा और वैदिक धर्म समाज के आपसी सम्बन्ध हमेशा बने रहें। सभा इसके ब्याज का जिस कार्य पर चाहे, उपयोग मे ला सकती है। वैदिक धर्म समाज इसे कभी भी वापस नही मागेगा।

(१५ ३-९२ की अन्तर ग द्वारा स्वीकृत) (समाप्त)
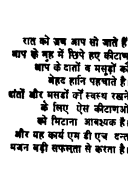
महर्षि जन्मदिवस एवं बोधोत्सव सम्पन्न

—आर्य केन्द्रीय सभा इलाहाबाद में महर्षि दयानन्द सरस्वती का १६९वा जन्म दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। कायक्रम का शुभारम्भ यज्ञ से किया गया। इस अवसर पर श्री राधेमोहन पं० मुन्नूलाल डा० बजरंगसिंह सहित अनेकों गणमान्य व्यक्तियो ने महर्षि के जीवन पर प्रकाश डाला। केन्द्रीय आर्य सभा के मन्त्री श्री सुरेशचन्द्र शास्त्री ने अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

—आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना में महर्षि दयानन्द जन्म दिवस तथा ऋषि बोधोत्सव का आठ दिवमीय कार्यक्रम १४ से २१ फरवरी तक धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर महायज्ञ का आयोजन श्री राजेश्वर शास्त्री के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। इस समारोह मे आर्य जगत् के प्रतिष्ठित विद्वानों तथा भजनोपदेशको ने महर्षि के बताये रास्ते पर चलने का आह्वान किया। आर्य सीनियर सैकेन्डरी स्कूल के बच्चो ने सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये।

—आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय नर्मदापुरम् में वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म दिवस समारोह १६ फरवरी को समारोह पूर्वक मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता गुरुकुल के आचार्य श्री जगद्देव नैष्ठिक ने की। इस अवसर पर गुरुकुल के अनेको विद्यार्थियो ने महर्षि के जीवन से सम्बन्धित गीत एव भाषणो से "जन-समूह को ऋषि के बताये मार्ग पर चलने का आह्वान किया।

—कन्या गुरुकुल महाविद्यालय नरेला दिल्ली में महर्षि का जन्मोत्सव एवं बोधोत्सव समारोह पूर्वक मनाया गया। कन्याओं ने वेद मन्त्र गायन संगीत एवं भाषणों द्वारा महर्षि का गुणगान किया अध्यापिकाओ ने ऋषि जीवन के अनेक प्रेरणा प्रसग प्रस्तुत किये।

—आर्य समाज मन्दिर दयानन्द पथ मेरठ में शताब्दी वर्ष के उपलक्ष में एवं ऋषि बोधोत्सव के पावन पर्व पर प्रवचन तथा विशाल शोभा यात्रा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने ऋषि के जीवन पर प्रकाश डालते हुये उनके मन्तव्यों का प्रचार करने की अपील की।

—आर्य युवक सभा नवांकोट अमृतसर में महर्षि का बोध उत्सव श्री बिनोदपाल प्रिंसिपल एस०एस० कालेज अमृतसर की अध्यक्षता में समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर स्कूल के बच्चों से समूहगान प्रतियोगिता कराई गई। समारोह मे मुख्यवक्ता श्री रोशनलाल आर्य ने महर्षि को आधुनिक भारत का निर्माता बताया।

होलिकोत्सव पर बृहद यज्ञ

आर्य समाज बागपत द्वारा होली पर आर्य विद्वान मा० मुरारीलाल आर्य सिद्धान्त शास्त्री के पौरोहित्य में बृहद यज्ञ किया गया। यज्ञ के यजमान समाज के मन्त्री सुभाष त्यागी एड० थे।

यज्ञोपरान्त मा० मुरारीलाल जी ने बताया कि होली ऋतु परिवर्तन का पावन पर्व है। इस समय नव बसन्त और नवसंस्येष्टि का आगमन होता है। यह मन मालिन्य मिटाने तथा भ्रातृभाव जगाने का पुनीत पर्व है। इस पर्व पर अपने मन को ईर्ष्या द्वेष से मुक्त करके भ्रातृभाव जगाने के लिए सत्सग करे तथा मिले। मद्यपान या अन्य किसी प्रकार की नशीली वस्तुओं का प्रयोग न करने का व्रत ले।

समारोह में समाज प्रधान श्री हरिहर 'स्नेह' ने ऋषि महिमा का गान किया। सभा को नरेन्द्रपाल एड०, रामपाल मेहरा, मा० पुरुषोत्तम शरण ने सम्बोधित किया। कार्यक्रम का सफल संचालन करते हुए मा० सत्यप्रकाश गौड ने बुराइयों को छोडने व सत्याचरण अपनाने का आह्वान किया।

सत्यप्रकाश गौड़

आर्यसमाज की गतिविधियां

चतुर्वेदशतक बृहद यज्ञ एव नि.शुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ जिला रोहतक मे २७ मार्च को चतुर्वेद शतक वृहद् यज्ञ महात्मा रामकिशोर जी वैद्य के ब्रह्मत्व मे प्रारम्भ होगा। इसी दिन नि शुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन वेणु नेत्र सस्थान नई दिल्ली के सहयोग से किया गया है। २८ मार्च को यज्ञ की पूर्णाहुति तथा आप्रेशन किये जायेगे। इस अवसर पर डा॰ ऊषा शर्मा एव प॰ सत्यपाल जी मधुर सहित अनेको विद्वानो तथा उपदेशको के विचारो से लाभान्वित हो।

वार्षिक महासम्मेलन एव यजुर्वेद पारायण महायज्ञ

आप लोगो को जानकर अति हर्ष होगा कि आपके प्रिय गुरुकुल महाविद्यालय पूठ (गाजियाबाद) उ॰ प्र॰ का वार्षिक सम्मेलन १९, २०, २१ मार्च १९९३ दिन शुक्र॰, शनि॰ रवि॰ को कुलभूमि मे उत्साह पूर्वक मनाया जा रहा है। आप लोगो से सानुरोध करबद्ध प्रार्थना है कि अपने इष्ट मित्रो सहित सपरिवार पधार कर उत्सव की शोभा बढाकर धर्म लाभ उठावें। इस अवसर पर आर्यजगत के महान सन्यासी, विद्वान, उपदेशक, भजनोपदेशक तथा नेतागण पधार रहे हैं।

—महामन्त्री

वर चाहिए

आर्य कन्या, उम्र २४ वर्ष, कद ५ फुट ३ इन्च, गृहकार्यों मे दक्ष, गुरुकुल स्नातिका, शास्त्री, एम॰ए॰, एम॰ फिल्, सम्प्रति पी॰ एच॰ डी॰ (सस्कृत) शोधरत तथा प्राध्यापिका हेतु शाकाहारी वर की आवश्यकता है।

उपरोक्त सम्बन्ध हेतु फोटो सहित शीघ्र पत्र-व्यवहार करे।

डो॰ वै॰ मागर
'सागर सदन' प्लाट न॰ ४२ रवीन्द्रनगर
हब्सीगुडा हैदराबाद, (आ॰ प्र॰ -५०० ००७
फोन ८५०२०५

ब्रिटेन मे मुसलमानों ने होली में बाधा डाली

नई दिल्ली ९ मार्च। ब्रिटेन के ब्रैड फोर्ड नगर मे हिन्दुओ के होली समारोह मे कुछ मुसलिम युवाओ ने व्यवधान डाला जब पुलिस से उन्हे रोकने का अनुरोध किया गया तो उन्होने होली समारोह पर ही रोक लगा दी। यह आरोप विश्व हिन्दू परिषद की ब्रिटेन शाखा ने अपने बयान मे लगाया है।

दिल्ली स्थित विश्व सवाद केन्द्र द्वारा जारी इस बयान मे कहा गया है कि होली की पूजा अर्चना के लिए सात मार्च को तकरीबन पाच सौ हिन्दू एकत्र हुए थे। इनमे बच्चे और महिलाए भी शामिल थी। कार्यक्रम चल रहा था कि २० असामाजिक तत्वो ने जो चाकू छुरी लिए हुए थे समारोह पर धावा बोल दिया। इन असामाजिक तत्वों ने हिन्दू विरोधी नारे भी लगाए। आयोजनकर्ताओ ने इन लोगा को समझाने की कोशिश भी की लेकिन वे नही माने। इस पर पुलिस को सूचित किया गया लेकिन पुलिस ने होली समारोह पर ही रोक लगा दी। उसने आयोजको से यह जानने की कोशिश नही की कि कौन समस्या खडी कर रहा है।

विश्व सवाद केन्द्र से प्राप्त बयान मे कहा गया है कि इस दौरान कारो के शीशे तोड डाले गए तथा होलिका दहन मे रुकावट डाली गई।

शोक समाचार

विद्याभास्कर प॰ मदनमोहन जी शास्त्री मन्त्री न्यास अजमेर दिवंगत

बडे दु ख के साथ जाना जायगा कि गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार के स्नातक एव न्यास (महर्षि दयानन्द स्मारक न्यास भिनाय कोठी) के मन्त्री प॰ मदनमोहन शास्त्री का देहावसान हो गया।

वह इञ्चलकरण मे एक यज्ञ-कर्म को सम्पन्न करा रहे थे तभी उनका आकस्मिक निधन होगया। श्री शास्त्रीजी आर्यसमाज के प्रचार कार्य व भिनाय कोठी न्यासमे पूरी रुचि लेतेथे। प्रभुसे प्रार्थनाहै कि उन्हे सदगतिदे और उनके वियोग मे परिवार को दु ख सहन करने की शक्ति प्रदान करे। —सभामन्त्री

—पिछले दिनो श्री माधो प्रसाद जी आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर का ९५ वर्ष की आयु मे निधन हो गया था, उसके तुरन्त बाद गत ३ मार्च ९३ को उनकी धर्म पत्नी श्रीमती विद्यावती जी ने भी ९० वर्ष की आयु मे भौतिक शरीर त्याग दिया है। वर्षों से इस दम्पति का सार्वदेशिक सभा से मधुर सम्पर्क रहा था और वेद प्रचार हेतु इन्होने सार्व॰ सभा मे एक लाख से अधिक राशि की स्थिर निधि स्थापित की हुई है। परमात्मा दिवगत आत्मा को सदगति और उनके परिजनो को इस वियोग को धैर्य पूवक सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

आवश्यकता है

एक स्वस्थ सुन्दर, कद ५ फुट, आयु २३ वर्ष ६ महीने एम॰ एस॰ सी॰ आर्य कन्या के लिये एक आर्य समाजी स्वस्थ सुशील योग्य युवक की जो किसी कालेज या गुरुकुल मे प्रवक्ता या अध्यापक हो। दहेज के इच्छुक पत्र व्यवहार न करे, जाति बन्धन नही। लडकी निजी अध्यापिका है।

रणजित मुनि, योगधाम, ज्वालापुर (हरिद्वार)

योग दर्पण अनुपम पुस्तक

लेखक—स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती

अष्टाग योग की सक्षिप्त सुललित व्याख्या, आर्ट पेपर पर चार रग की छपाई, शारीरिक एव मानसिक विकास के लिए अनेको नियमो का विवरण।

युवक युवतियो के सर्वागीण विकास के लिए अनुपम ग्रन्थ। मूल्य—९०) रुपये डाक व्यय सहित।

प्राप्ति स्थान —योगिक शोध सस्थान, योगधाम, आर्य नगर ज्वालापुर, हरिद्वार (उ॰ प्र॰) २४९४०७

पोस्टल रजिस्ट्रशन नं० डी० एल० ११०४९/९३ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२१ ३-१९९३) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (C) ९३
R N 626/57 Licensed to post without prepayment License No U (C) 93 Post : N D P S O on 18-19-3-1993

आर्ष गुरुकुल आट्टा डिकाडला का वार्षिकोत्सव

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि हर वर्ष की तरह इस बार भी आपके प्रिय गुरुकुल आटा-डिकाडला का २९ वा वार्षिक उत्सव १९ से २१ मार्च ९३ तक धूमधाम से मनाया जाएगा। इस शुभ अवसर पर आर्य जगत के जाने माने विद्वान सन्यासी, उपदेशक भजनोपदेशक व राजनेता और जिला धिकारी पधार रहे हैं। इस शुभ अवसर पर गोरक्षा सम्मेलन एव शराब बन्दी सम्मेलन विशेष रूप से होंगे। १५ मार्च सोमवार से ऋग्वेद से बृहद यज्ञ आरम्भ होगा जिनकी पूर्णाहुति २१ मार्च रविवार को होगी।

—महामन्त्री

१०१५०—पुस्तकालयाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी
विश्वविद्यालय हरिद्वार, जि हरिद्वार (उ प्र

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

द्वारा आयोजित

सत्यार्थ-प्रकाश पत्राचार प्रतियोगिता

—: पुरस्कार :—

प्रथम : ११ हजार द्वितीय : ५ हजार तृतीय : २ हजार

न्यूनतम योग्यता : १०+२ अथवा अनुरूप

आयु सीमा : १८ से ४० वर्ष तक

माध्यम : हिन्दी अथवा अंग्रेजी

उत्तर पुस्तिकायें रजिस्ट्रार को भेजने की अन्तिम तिथि ३१-८-१९९३

विषय : महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश

नोट —प्रवेश रोल न०, प्रश्न-पत्र तथा अन्य विवरण के लिए मात्र बीस रुपये नगद या मनीआर्डर द्वारा रजिस्ट्रार, परीक्षा विभाग सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नयी दिल्ली-२ को भेजें। पुस्तक अगर पुस्तकालयो, पुस्तक विक्रेताओ अथवा स्थानीय आर्य समाज कार्यालयो से न मिले तो तीस रुपये हिन्दी सस्करण के लिये और पैंसठ रुपये अग्रेजी सस्करण के लिये सभा को भेजकर मगवाई जा सकती है।

डा० ए. पी. आर्य
रजिस्ट्रार

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

महर्षि दयानन्द उवाच

- जितनी विद्या भूगोल मे फैली है वह सब आर्यावर्त्त देश से मिश्र वालो उनसे यूनानी उनसे रूस उनसे यूरोप देश मे उससे अमेरिका आदि देशो मे फैली है
कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है।
- सृष्टि से लेकर पाच सहस्र वर्षो से पूर्व समय पर्यन्त आर्यो का सार्वभौम चक्रवर्ती अर्थात भूगोल मे 'सर्वोपरि एकमात्र राज्य था। अन्य देश मे माण्डलिक अर्थात छोटे राजा रहते थे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष : ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३१ अंक ७] दयानन्दाब्द १६ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९३ चैत्र शु० ५ सं० २०५० २८ मार्च १९९३

देश द्रोहियों और समगलरों की राजनीतिज्ञों से मिली भगत

श्री के० नरेन्द्र द्वारा रहस्योद्घाटन

समगलर और समाज के शत्रु एक दिन भी नही चल सकते अगर पुलिस इनके साथ न हो और पुलिस तब तक ही इनका साथ देती है जब तक राजनैतिक लोग उसे इस बात की स्वीकृति देते हैं। यही कारण है कि इन समाज विरोधी तत्त्वो ने सियासतदानो से अपना सम्पर्क बना रखा है। ज्यो ज्यो बम्बई और कलकत्ता के बम धमाको की विस्तार पूर्वक सूचना मिलना शुरु होती है,त्यो-त्यो पता चलता है कि किस प्रकार इन समगलरो ने सियासतदानो को गाठ रखा है। यह समाज विरोधी इतने चालाक हैं कि यह केवल एक राजनैतिक पार्टी को ही अपनी कृपा का पात्र नही बनाते अपितु शासक पार्टी तथा भविष्य मे सत्ता मे आने वाली पार्टी के साथ भी साठ गाठ की कोशिश की जाती है। अब कलकत्ता से जो रिपोर्ट आ रही है वह सनसनी खेज बेशक न हो परन्तु चकित करने वाली हैं। जो धमाका पिछले सप्ताह हुआ वह सट्टे के खिलाडी मुहम्मद रशीद खान के घर मे हुआ था। बगाल के शासक मार्किस्ट सरकार के एक विशेष व्यक्ति ने 'टाइम्स आफ इण्डिया" के नामानिगार को इतराफ किया कि बगाल की मार्क्सिस्ट सरकार इस व्यक्ति को सुरक्षा प्रदान करती थी और यह प्रतिकार रूप मे सरकार को वोट दिलाता था। मध्य कलकत्ता मे रशीद का काफी प्रभाव था। मार्किस्ट इसे कांग्रेस के समर्थक समगलर मुहम्मद खान के विरोध मे प्रयोग करते थे।

दोनो का अपने-अपने इलाके मे प्रभाव था और मजेदार बात यह है कि इन दोनो के अतिरिक्त कोई बाहर का आकर अपना कदम जमाना तो इस पर बडा बुरा माना जाता है और इस व्यक्ति को पुलिस साम्प्रदायिक दगे भडकाने के आरोप मे गिरफ्तार कर लेतीहै। अनेक मार्क्सिस्ट यह आपत्ति करते है कि वर्षों तक रशीद इनके लिए धन जन और हर प्रकार के सामान का प्रबन्ध करता रहा है। यह लोग मानते है कि लगभग दो लाख जवान इनकी पार्टी के सदस्य हो गए थे जिनमे कई गुण्डे और बदमाश थे। समय बीतते-बीतते इन्होने कांग्रेस से भी सम्पर्क पैदा कर लिए और जैसे आवश्यकता

(शेष पृष्ठ २ पर)

मिर्जापुर में महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल का शिलान्यास

मिर्जापुर २१ मार्च। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आज मिर्जापुर मे महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल का शिलान्यास करते हुए विशाल जन समूह को बताया कि आर्यसमाज ने उस समय नारी शिक्षा पर बल दिया था जिस समय अग्रेजी राज्य मे कहा जाता था—'स्त्री शूद्रो न धीयताम्'। आर्य समाज ने सर्व प्रथम जालन्धर मे कन्या महाविद्यालय की स्थापना की थी और आज देश मे ही नही विश्व के अनेक देशो मे आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के नाम पर कन्याओ के लिए गुरुकुल विद्यालय और कालेज चल रहे हैं। आजादी के बाद शिक्षा के क्षेत्र मे आर्य समाज ने क्रान्तिकारी सफलता प्राप्त की है इसी का परिणाम है कि आज सरकार के बाद आर्यसमाज की शिक्षण सस्थाए देश भर मे दूसरे स्थान पर चल रही हैं। स्वामी जी ने कहा मिर्जापुर मे आर्य कन्या इण्टर कालेज मे जहा आज ४५०० बालिकाए शिक्षा प्राप्त कर रही हैं इसी का अग है।

स्वामी जी ने कहा बहन सन्तोष कुमारी कपूर के प्रयत्नो से आज महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल के लिए जो भूमि ३ लाख रुपये मे ली गई है, भविष्य मे यह विद्यालय शिक्षा क्षेत्र मे वट वृक्ष का रूप धारण करे यही मेरी कामना है। शिलान्यास से पूर्व सैकडो देवियो ने बृहद यज्ञ का आयोजन किया और सार्वजनिक सभा मे क्षेत्र के सैकडो लोगो ने भाग लिया।

सिर्फ हिन्दी ही सारे देश को एक रखने में समर्थ-थुगंन

नई दिल्ली २१ मार्च। केन्द्रीय शहरी विकास राज्य मन्त्री पीके थुगन ने कहा कि हिन्दी किसी एक प्रदेश की भाषा नहीं है। वह सभी राज्यो मे बोली और समझी जाती है। स्वतन्त्रता प्राप्ति से पहले भाषा का जो स्वरूप बना वह आज स्वतन्त्रता के बाद बदल गया है। उन्होने इस बात पर जोर दिया कि आज देश की जो स्थिति है उसमे भाषात्मक एकता और राष्ट्रीय सद्भाव पैदा करने के लिए हिन्दी बहुत जरूरी है। हिन्दी ही सारे देश को एक सूत्र मे बांधने मे समर्थ है। श्री थुगन ने यह बात अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ की ओर से आयोजित एक सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए कही। उन्होने बताया कि पूर्वांचल मे आज काफी संख्या मे लोग हिन्दी सीख रहे हैं। और वे भारतीय जनमानस के अधिक निकट आते जा रहे हैं। उन्होने इस बात पर खुशी जताई कि अरुणाचल मे मैट्रिक स्तर तक हिन्दी का अध्ययन आवश्यक हो गया है। यदि यही बात सारे राज्य मे लागू हो तो हिन्दी को बहुत बढ़ावा मिलेगा।

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्य समाज के मंच का राजनीतिक पार्टियों को उपयोग नहीं करने दिया जावे

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

गाजियाबाद १६ मार्च। आर्य समाज सूरज पुर (ग्रेटर नोएडा) में आयोजित गाजियाबाद जनपदीय आर्य महासम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि आर्यसमाज के मंच का राजनीतिक पार्टियों केद्वारा दुरुपयोग को रोकना होगा। तभी आर्य समाज अपने वास्तविक स्वरूप में जनता की सेवा कर सकेगा। उन्होंने कहा—भूतकाल में आर्य समाज ने देश-धर्म व जाति को बचाने के लिये बड़े-बड़े बलिदान दिये हैं, उसने जो-जो कार्य किए हैं वह स्वर्ण अक्षरों में लिखने योग्य हैं।

जनपदीय विशाल जनसमूह को सम्बोधित करते हुए स्वामी जी ने बताया कि अयोध्या काण्ड के बाद पाकिस्तान में ५५०, बंगलादेश में २२० और हरियाणा के मेवात क्षेत्र मे २४ मन्दिरों को मुसलमानों द्वारा ध्वस्त और अपवित्र किया गया है। हमने मेवात की भीषण त्रासदी को अपनी आंखों से देखा है और मुख्यमन्त्री भजनलाल से यथाशीघ्र मन्दिरों के पुनर्निर्माण की मांग की है। उन्होंने यह भी बताया कि दक्षिण भारत में १९८० के आसपास मीनाक्षी पुरम गांव के सब हरिजनों को मुसलमान बना दिया गया था, उन लोगों को पुनः अपने वैदिक धर्म में वापस लाने के लिए आर्य समाज के उच्च नेताओं ने ७ बार वहां का दौरा किया और राष्ट्रीय स्तर का आर्य महा सम्मेलन करके सब लोगों को पुनः वैदिक धर्म मे दीक्षित किया। इस कार्य का प्रभाव पूरे दक्षिण भारत मे व्यापक रूप से पड़ा है। आज दक्षिण भारत मे आर्य समाज और वैदिक धर्म का प्रचार जोरो पर चल रहा है। उसी प्रकार पिछड़े वर्गों की सेवा में आर्य समाज दयानन्द सेवाश्रमों के माध्यम से जोरदार कार्य कर रहा है। दयानन्द सेवाश्रम संघ विशेष रूप से उन क्षेत्रों में कार्य कर रहा है, जहां ईसाई मिशनरी सक्रिय होकर वर्षों से हिन्दू जाति का शोषण करके उन्हें बलात ईसाई बना रहे हैं। आर्य समाज द्वारा उनकी गतिविधियो पर रोक लगाने और जाति की रक्षा करने के लिए दयानन्द सेवाश्रम संघ की स्थापना आज से २५ वर्ष पूर्व की गई थी। इस समय संघ आसाम, नागालैंड, रांची, कालाहाण्डी झाबुआ बांसवाड़ा, सीतापुर, ललकिया तथा मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के अनेक ईसाई बहुल क्षेत्रो मे कार्यरत है।

राजनीतिज्ञों की मिली भगत

(पृष्ठ १ का शेष)

होती है वैसे ही पार्टियों की सहायता करती है। यह सहायता इस बात पर निर्भर करती है कि यह पार्टियां इन्हें उस काम के लिए क्या सहायता करती है। मिसाल के तौर पर रशीद रसमी तौर पर मार्किस्टो के साथ था अपितु कांग्रेस से भी अपने सम्बन्ध बना रखे थे। शासक दल के नेता यह मानते हैं कि इन समाज विरोधी तत्वों के सम्पर्क के कारण इन्हें जनता में बदनाम होना पड़ रहा है। इसलिए इन्हे पार्टी से निकाल देना चाहिए परन्तु इसके विपरीत कुछ लोग वोटो के लिए इन्हे निकालने का विरोध कर रहे हैं। अब सुनने मे आया है कि इस भयानक घटना के तुरन्त पश्चात सहायक कमिशनर पुलिस का किसी अन्य स्थान पर तबादला कर दिया है क्योंकि यह मट्टे बाजार के बादशाह कहलाने वाले शेख मुहम्मद रशीद के नजदीक समझा जाता था। रशीद की तमाम गलत हरकतों के बावजूद पुलिस इससे बड़ी नर्मी से पेश आती थी—क्योंकि इसकी ऊपर वालों तक पहुच थी और पुलिस वालो को इस बात का पता था कि यदि रशीद को पकड़ भी लें तो उसे ऊपर वाले छुड़वा लेंगे। सहायक कमिश्नर इस बात का उत्तर न दे सके कि रशीद पुलिस मुख्यालय के इतने समीप रहते हुए किस प्रकार अपना धन्धा कर रहा था। इसका कारण यही है कि समाज विरोधी तत्वो की उच्च अधिकारियो से मिली भगत है जिसका परिणाम था कि बदमाशों की चांदी बनी हुई थी। (प्रताप के सौजन्य से)

देश की एकता और हिन्दी

(पृष्ठ १ का शेष)

समारोह मे विजयेन्द्र स्नातक जी ने हिन्दी के प्रचार प्रसार और स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं के बारे मे विचार व्यक्त करते हुए कहा कि इन संस्थाओ ने हिन्दी के प्रचार प्रसार मे महत्वपूर्ण योगदान दिया है और आज भी उसी निष्ठा और लगन से इस कार्य मे जुटी हुई है। रामलाल पारीख ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे बताया कि स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओ ने अपने तपस्वी, निष्ठावान प्रचारको के माध्यम से देश के करीब ५ करोड़ से अधिक लोगो को हिन्दी सिखाई है। उन्होने बताया कि विश्वविद्यालयों मे इतने लोगों को हिन्दी सिखाने के लिए करोड़ो रुपए खर्च किए जाते है। लेकिन स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाए अपने सीमित साधनों के आधार पर यह कार्य कर रही है। हिन्दीतर भाषी विद्वानो और हिन्दी प्रेमियो ने हिन्दी को विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। संस्था संघ के सचिव एम. के. वेलायुधन नायर ने सभी उपस्थित महानुभावों का स्वागत किया। संस्था संघ कार्यालय सचिव ने समारोह का संचालन किया। (जनसत्ता से साभार)

योगधाम, आश्रम, आर्यनगर, ज्वालापुर (हरिद्वार) में

ध्यान-योग शिविर

आपको यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता होगी कि गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी योगधाम मे श्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती की अध्यक्षता मे ४ अप्रैल से ११ अप्रैल तक ध्यान-योग शिविर का आयोजन किया जा रहा है जिसमे प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान आदि अष्टांगयोग का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया जायेगा तथा यम, नियमादि का पालन कराया जायेगा। शिविरार्थी शारीरिक निर्बलता तथा मानसिक अशान्ति से छुटकारा पाने के लिए विविध यौगिक उपायो से लाभ प्राप्त करके आत्मदर्शन का मार्ग प्रशस्त कर सकेंगे। शिविर मे यथासमय अन्य विद्वानो के प्रवचन तथा भक्ति संगीत होंगे। ७ अप्रैल मध्याह्नोत्तर २ बजे से 'योग मे प्राणायाम का महत्व" विषय पर संगोष्ठी एवं ८ अप्रैल को साधिका सम्मेलन होगा। अतः योगाभिलाषी अपने इष्ट मित्रो सहित एव सपरिवार पधार कर प्रशिक्षण प्राप्त करें।

१—ऋतु अनुकूल बिस्तर, वेदो मे योगविद्या, योगदर्शन व्याख्या सहित, कापी, पेंसिल/पैन तथा साधना के लिए उपयुक्त आसन अवश्य लायें। भोजन तथा निवास व्यवस्था योगधाम मे होगी।

२ शिविरार्थियों को शिविर के अन्त तक आश्रम मे रहना तथा कार्यक्रमो मे भाग लेना आनवार्य है। खासी तथा श्वास के रोगी एवं छोटे बच्चे ध्यान की कक्षाओं मे सम्मिलित न हो सकेंगे।

—अखिल मुनि, संयोजक

उत्सव

—गुरुकुल विद्यालय कुण्डा का १४ वां वार्षिकोत्सव २८ फरवरी से २ मार्च तक कुल भूमि मे समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वानों तथा भजनोपदेशकों ने पधार कर श्रोताओ को महर्षि के मन्तव्यों से अवगत कराया। समारोह मे अनेको सम्मेलनो का आयोजन भी किया गया।

एक राजनैतिक ताकत बन गए हैं बांग्लादेशी शरणार्थी

–एक भयंकर खतरा–

—प्रद्युतानन्द मिश्र

कलकत्ता, १७ मार्च। भारत सरकार के विरोध के बावजूद बाग्लादेश सरकार या ससद ने अयोध्या की घटना के बाद बाग्लादेश मे हिन्दुओ और बौद्ध अल्पसख्यको की हत्याओ, अमानुषक अत्याचार तथा हजारो मन्दिरो को तोडने जैसी घटनाओ पर कोई खेद व्यक्त नही किया है जबकि बाग्लादेश ससद मे नृशसता की रोमाचक कहानी सुनायी गयी थी। बाग्लादेशी नागरिको का भारतीय सीमा मे अवैध प्रवेश आज राष्ट्रीय सुरक्षा, शाति व्यवस्था, जन सख्या सन्तुलन, आर्थिक ससाधनो और पर्यावरण के लिए गम्भीर खतरा बन चुका है। पूरे देश मे डेढ करोड (सरकारी आकडो के मुताबिक एक करोड से अधिक) घुसपैठियो के कारण असम, पश्चिम बगाल, बिहार, सिक्किम, त्रिपुरा के सीमान्त जिलो मे आबादी का अनुपात बदल गया है। हजारो गावो के मूल नागरिक अल्पमत मे हो गये हैं या गाव छोडकर भाग गये हैं।

पिछले दिसम्बर और जनवरी मे हुए दगो मे दिल्ली का सीलमपुर हो या उत्तर पूर्व बम्बई का बगनवाडी, जहा सुरक्षा बलो पर आधुनिक हथियारो से हमले किये गये, अथवा पश्चिम बगाल और असम के सीमावर्ती क्षेत्र सभी दगो के पीछे बाग्लादेशी घुसपैठियो का हाथ था। केन्द्र सरकार की कई गुप्तचर एजेंसिया यह पता लगा रही है कि साम्प्रदायिक हिंसा और तनाव के लिए जाने पहचाने क्षेत्रो के बजाय दगे अधिकाश उन क्षेत्रो मे क्यो शुरू हुए जहा बाग्लादेशी घुसपैठियो का अवैध कब्जा है।

अयोध्या की घटना के बाद असम तथा पश्चिम बगला सीमा पर बसे घुसपैठियो ने वहा के मूल नागरिको पर अवर्णनीय अत्याचार किये हैं। गम्भीर छानबीन का विषय यह भी है कि घुसपैठियो द्वारा किये गये दगो और हिंसा के परिणाम स्वरूप भारतीय मुस्लिम नागरिको की छवि प्रभावित हो रही है। केवल मजहब एक होने के कारण यहा का मुस्लिम समुदाय सन्देह और गुस्से का शिकार उसी तरह हो रहा है जिस तरह पजाब मे आतकवादी गतिविधियो और श्रीमती इन्दिरागाधी की हत्या के बाद थोडे समय के लिए पूरे देश मे सिखो पर शक किया गया था। इसका कारण यह भी हो सकता है कि जिन लोगो पर हजारो निर्दोष सिखो की हत्या के आरोप है उन्ही लोगो पर बाग्ला देशी घुसपैठियो को लाने, बसाने और राष्ट्रीय सुरक्षा की कीमत पर वोट बैंक बनाने का भी आरोप है।

आज का बाग्लादेश, जो कभी पूर्वी बाग्ला और १९७१ तक पूर्वी पाकिस्तान था, से भारतीय सीमा मे घुसपैठ का इतिहास बहुत पुराना है। १९४४ मे महात्मा गाधी और १९६२ मे पडित जवाहरलाल नेहरू ने ससद मे असम मे घुसपैठ की समस्या को स्वीकार किया था १९६२ म भारत सरकार के विदेश मन्त्रालय ने विदेशी घुसपैठ को लेकर जो पुस्तिका छापी थी उसमे यह माना गया था कि पूर्वी पाकिस्तान से भारी सख्या म मुस्लिम जमीन और काम की तलाश मे असम, पश्चिम बगाल तथा त्रिपुरा म प्रवेश कर रहे हैं। स्वीकार करने के बाद भी केन्द्र सरकार ने घुसपैठ रोकने की कोशिश नही की और असम की काग्रेस सरकारो ने इसे खुलकर प्रोत्साहित किया।

यह तथ्य अब उजागर है कि ब्रिटिश सरकार और भारतीय मुस्लिम लीग की साजिश मे सयुक्त बगाल का विभाजन किया गया था और बढती जन सख्या, जमीन तथा प्राकृतिक ससाधनो को देखत हुए बाग्लादेश एक आत्म निर्भर आर्थिक इकाई बना रहेगा इसमे सन्देह है। बाग्लादेशी जनसख्या विस्फोट के हमले से सबसे गम्भीर क्षति असम और पश्चिम बगाल मे हुई है। लगभग ३४०० किलोमीटर सीमा रेखा त्रिपुरा मेघालय, असम और पश्चिम बगाल की बाग्लादेश से मिली है। समस्या की गम्भीरता को इस तथ्य से समझा जा सकता है कि १९७१ से १९७९ के बीच केवल असम मे ३५ लाख बाग्लादेशी घुसपैठिये और २० लाख से अधिक पूरी सुविधाओ के साथ मतदाता सूची मे शामिल हो चुके हैं। गत वर्ष ससद मे दी गयी सूचना के अनुसार अकेले असम मे ७० लाख मे अधिक बाग्लादेशी बसे हैं। मुख्यमन्त्री हितेश्वर सैकिया ने अप्रैल १९९२ मे विधान सभा म यह माना कि १९८७ के बाद २० लाख घुसपैठिये असम मे आये हैं। आल असम स्टूडेंट्स यूनियन (आसू) के ऐतिहासिक आन्दोलन पर १५ अगस्त १९८५ को राजीवगाधी ने असम समझौते पर हस्ताक्षर करके वचन दिया था कि २५ मार्च १९७१ के बाद आये घुसपैठियो की पहचान करके उन्हें वापस भेजा जाएगा। यह पहला कदम था। असम गण परिषद की सरकार घुसपैठियो की समस्या हल करने के लिये प्रतिबद्ध थी लेकिन घुसपैठियो की पहचान कानून १९८३ (आई एम डी टी) एक मुख्य बाधा थी। उसमे सशोधन के बिना राज्य सरकार कोई कदम नही उठा सकती थी और दूसरी ओर श्री गाधी ने जी एम बनातवाला को आश्वस्त किया था कि कोई ऐसा सशोधन नही किया जायगा जिससे अल्पसख्यको के हितो को क्षति हो। उस समय की केन्द्र सरकार, जिसमे पी० चिदम्बरम गृह राज्य मन्त्री थे और श्री हसराज भारद्वाज जो आज भी मन्त्री हैं, ने कानून मे कितना प्रभावी सशोधन किया था यह आज भी छानबीन का विषय है। असम समझौते की असामयिक मृत्यु हो गई और आज स्थिति यह है कि १२० विधान सभा क्षेत्रो मे घुसपैठियो की भूमिका निर्णायक बन गयी है राज्य सरकार स्वय इनकी कृपा पर निर्भर है। पुराना कानून भारत छोडो के अन्तर्गत पुलिस कार्यवाही बन्द हो गयी है। घुसपैठियो ने बाग्लादेशी मुहाजिर सघ सस्था बनायी है और पश्चिम बगाल तथा असम के मुस्लिम बहुल इलाको को मिलाकर 'होमलैण्ड' की माग उठने लगी है।

पश्चिम बगाल की २२०३ किलोमीटर लगी सीमा मे १६० रास्तो से घुसपैठ हो रही हैं। मुख्यमन्त्री ज्योति बसु के अनुसार इस राज्य मे बाग्लादेशी *नागरिको की कुल सख्या लगभग ५० लाख है जिनमे १८ लाख हिन्दू है। दूसरे सूत्रो के अनुसार यह सख्या ७०लाख हो गयी है जनगणना के आकडो के* अनुसार प बगाल से कूच बिहार, जलपाईगडी पश्चिम दिनाजपुर, नादिया, मालदा दार्जिलिंग मुर्शिदाबाद और २४ परगना जिलो म जनसख्या वृद्धि राज्य के अन्य जिलो के औसत से कही अधिक है। भारत सरकार और पश्चिम बगाल सरकार के पास जो आकडे मौजूद हैं उनके अनुसार भी कलकत्ता और उपनगरो मे १५ लाख बाग्लादेशी घुसपैठये है। इसी प्रकार मुर्शिदाबाद मे १० लाख उत्तर और दक्षिण २४ परगना मे १२ लाख, मालदा मे १० लाख तथा नादिया जिले मे सात लाख से अधिक बसे हुए है। डेढ वर्ष पूर्व बाग्ला देशी घुसपैठियो ने कलकत्ता की सडको पर प्रदर्शन किया और कलकत्ता प्रेस क्लब के लान पर सवाददाता सम्मेलन करके राज्य सरकार से नागरिक अधिकार तथा दूसरी सुविधाओ की माग की थी। कलकत्ता से प्रकाशित अग्रेजी और बगला समाचार पत्रो ने घुसपैठ की समस्या को लगातार उठाया है। दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशिया अध्ययन केन्द्र तथा सीमान्त शाति एव सुरक्षा समिति ने भी तथ्यो के सकलन और समस्या की गम्भीरता को उजागर करने का सराहनीय काम किया है। राज्य सरकार का दावा है कि पिछले पाच वर्षों मे लगभग तीन लाख घुसपैठयो की पहचान कर उन्हे वापस भेजने की कार्यवाही की गई है। सत्यता यह है कि पश्चिम बगाल के २९४ विधान सभा क्षेत्रो मे से ६० क्षेत्रो पर मुस्लिम वोट बैंक का बहुमत हो चुका है। १०० अन्य क्षेत्रो का सन्तुलन भी बिगडने वाला है। ●

आर्यसमाजों के निर्वाचन

—आर्यसमाज फोर्ट बम्बई श्री रामरिछपाल अग्रवाल प्रधान श्री डी बी शेट्टी मन्त्री श्री कार्तिक जी० पड्या कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना, श्री सुभाष चन्द्र गुप्ता प्रधान, श्री विजय सरीन मन्त्री, श्री ओमप्रकाश गुप्ता कोषाध्यक्ष।

—आर्य उप प्रतिनिधि सभा पीलीभीत श्री कृष्ण कुमार जी शास्त्री प्रधान श्री मोहनलाल आर्य मन्त्री, श्री विश्रामसिंह कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज मोतिहारी, डा० ईश्वर चन्द्र सिह प्रधान, श्री मुन्नीलाल सिंह मन्त्री, श्री चन्द्रबली प्रसाद कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज बिलासपुर, श्री कृष्ण बलदेव जी आर्य प्रधान श्री राम नारायण आर्य मन्त्री, श्री साहिबराम आर्य कोषाध्यक्ष।

क्या सच, क्या झूठ ? बी. जे. पी. नेता स्पष्टीकरण करें ?

रामलला को बीस करोड़ में बेचने की तैयारी ?

अयोध्या मे विवादित स्थल पर श्री रामलला व अन्य भगवानो की जो मूर्तिया रखी हुई थी उनको लेकर आज एक जबर्दस्त विवाद छिड गया है। कुछ लागो का कहना है कि विवादित राम जन्मभूमि परिसर मे सन् १९४९ से स्थापित तथा पूजे जा रहे श्री रामलला तथा उनके साथ की अन्य बहुमूल्य मूर्तिया गायब कर दी गयी है और इस समय वहा नकली मूर्तिया रखकर उन्हे रामलल्ला बताकर रामभक्तो को दर्शन कराये जा रहे हैं। सन् १९७२ से १९९२ वष तक श्री राम जन्मभूमि मे रामलला का पूजन-अर्चन करने वाले महन्त लालदास ने ७ फरवरी को अयोध्या मे एक पत्रकार सम्मेलन मे गायब हुई मूर्तियो का विवरण देते हुए बताया कि इसमे चार मूर्तिया श्री राम लला सहित चारो भाइयो की ९ सालिगराम, अष्ट धातु की, ९ मूर्तिया मू गे पत्थर की बनी, ३ गणेश जी की मूर्तिया, दो सोने के राम पचायत सिक्के जिन पर पूरा राम परिवार अकित था यहा विराजमान थी। इनमे से केवल कसौटी की एक मूर्ति इस समय रामकथा कुज मे मौजूद है। अन्य मूर्तियो का कोई अता पता नही है। इसके अलावा जन्मभूमि के बाहर राम चबूतरे पर अष्ट धातु की लगभग एक दजन मूर्तिया चादी की कौशल्या मूर्ति जिसमे भगवान रामलल्ला कौशल्या जी की गोद मे थे, जावन्त की कसौटी की मूर्ति दाहिना वृति शख, श्री नारायण की दो मूर्तिया, हनुमान की दो मूर्तिया तथा भरत की एक मूर्ति मे से भरत की मूर्ति के अलावा शेष सब लापता है। श्री लाल दास ने बताया कि इनमे से अष्ट धातु चादी सोने तथा कसौटी की मूर्तिया बहुमूल्य होने के बावजूद फिर बनाई जा सकती हैं लेकिन गणेश जी की तीन मूर्तिया जो मू गे पत्थर पर थी अत्यन्त दुर्लभ हैं और इस दृष्टि से अत्यन्त मूल्यवान भी हैं। इसी प्रकार दाहिना वृति शख भी दुर्लभ की श्रेणी म आता है और इसका भी मूल्य आका नही जा सकता।

महन्त लालदास का कहना है कि गत ६ दिसम्बर को ढाचा ढहाये जाने से पहले उनकी सूचना के मुताबिक यह मूर्तिया प्रात ही वहा से हटकर मानस भवन ट्रस्ट के कमरा नम्बर ४२ मे रखी गयी थी, उसके बाद वे कहा गयी उसकी उन्हें जानकारी नही है। लेकिन उनको सन्देह है कि अयोध्या के ही कुछ लोगो ने षड्यन्त्र करके इन बहुमूल्य मूर्तियो को अवसर का लाभ उठाकर गायब कर दिया है या बेच दिया है। अब अयोध्या के एक महन्त भास्कर दास ने आरोप लगाया है कि इन चोटी की मूर्तियो को विश्व मार्केट मे बीस करोड रुपये मे बेचने की कोशिश की जा रही है। यह आरोप किन्ही अज्ञात लोगो के खिलाफ नही है कम से कम तीन सन्दिग्ध अभियुक्तो के नाम उन्होने लिखित पढत मे दे दिए हैं। ये तीनो अयोध्या मे विश्व हिन्दू परिषद के प्रमुख कार्यकर्ता है। इनके नाम हैं धम दास विद्या सागर और सुभाष दास पुलिस पूरे मामले को दबाने के मूड म लगती है। दो महीने पहले महन्त भास्कर दास ने सी आर पी सी की धारा १९० के तहत लिखित शिकायत चीफ जूडीशियल मजिस्ट्रेट फैजाबाद की अदालत मे दर्ज करवाई थी। दो महीने के बाद अब मजिस्ट्रेट साहब ने केस को दूसरी निचली अदालत म भेज दिया है।

महन्त भास्कर दास का कहना है कि धार्मिक और कानूनी दोनो दृष्टि से श्री राम जन्मभूमि निर्मोही अखाडे मे निहित है। वही इसकी लडाई कई सौ बरस से लड रहा है। महन्त भास्कर दास खुद लगभग ६० वर्षों से अयोध्या मे राम जी की सेवा कर रहे हैं। नामजद मुकदमे के प्रार्थना पत्र मे उन्होने कहा है कि मूर्तिया और उनके अन्य कीमती सामानो की चोरी के सम्बन्ध म गत २१ दिसम्बर को रपट थाना श्रीराम जन्मभूमि मे लिखाई गई है किन्तु पुलिस ने उसकी कोई जाच नही की। उनका कहना है कि गत छह दिसम्बर को जब कार सेवको ने इमारत गिराई तो उस परिसर मे स्थित राम चबूतरा चरणचिह्न छठी पूजन स्थल तथा पच मुक्तेश्वर गणेश जी आदि मन्दिरो को भी ध्वस्त कर डाला। इन सभी का इन्तजाम निर्मोही अखाडा देखता रहा है। अपनी बात के समर्थन मे वह कहते है कि छह दिसम्बर को जब ढाचा ध्वस्त किया जा रहा था तो विराजमान रामलला के परिधान के बडे-बडे टीन बक्से, छत्र चादी का सिंहासन आदि कारसेवको द्वारा ले जाते हुए फोटो पत्रकारो ने खीचे थे। उच्च न्यायालय मे पहले से चल रहे मुकदमे के सम्बन्ध मे वीडियो रिकार्डिंग हुई थी। वी पी सिंह सरकार के जमाने मे जब भूमि अधिग्रहण के बाद कमिश्नर ने कब्जा लिया था उस समय परिसर के एक-एक सामान की सूची बनाई गई थी। जो लोग पहले और अब दोनो समय की मूर्तिया देख चुके हैं उनके हिसाब से पहले मूर्तिया बैठी थीं अब खडी है। महन्त लाल दास तो यह भी कहते हैं कि यह वर्तमान मूर्ति आदर्श कला केन्द्र नाम की एक दुकान से खरीदी गई है। वह प्रशासन को यह बताने के लिए भी तैयार है कि पुरानी मूर्तिया कहा रखी है। यह भी कहा जा रहा है कि कारसेवको ने कुछ मूर्तिया छह दिसम्बर को श्री एल के आडवाणी और अन्य भाजपा नेताओ को विजय के प्रतीक के रूप मे सौंप दी थी। जिला प्रशासन ने अभी तक अपने को लगभग तटस्थ बना रखा है। जिला मजिस्ट्रेट विजय शकर पाडेय कहते हैं कि आठ दिसम्बर की सुबह जब से प्रशासन ने वहा अपने नियन्त्रण मे परिसर लिया है कोई चीज गायब नही हुई। जिला प्रशासन ने मलबे मे बिखरी पडी कुछ टूटी मूर्तिया और अन्य सामान रामकथा कुज परिसर मे सीलबन्द करके रखवाया है, पर उनकी सूची मे यह मूर्तिया नहीं है जिनके गायब होने की चर्चा है।

अयोध्या हर हिन्दू के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। राम लल्ला की मूर्तिया हर हिन्दू की भावना से जुडती है। हम केन्द्र सरकार से माग करते है कि वह इस विषय मे या तो सी बी आई से जाच कराए या फिर इस पर भी श्वेत पत्र जारी करें यदि महन्त लाल दास व भास्कर दास झूठ बोल रहे हैं। अगर ऐसा है तो इन पर सख्त कार्रवाई हो। अन्यथा हर हिन्दू की भावनाओ से खिलवाड करने वालो को कटघरे मे खडा किया जाए। तीन सवाल महत्वपूर्ण है—पहला क्या छह दिसम्बर को असली मूर्तिया हटाई गई है और उनके स्थान पर डुप्लीकेट मूर्तिया रखी गई है। दूसरा अगर असल मूर्तिया हटाई गई है तो वह किसके कब्जे मे हैं और क्या हैं ? तीसरा क्या उनको २० करोड रुपये मे बेचने की कोशिश की जा रही है ? हर हिन्दू इन सवालो का जवाब चाहता है। अगर असल मूर्तिया ही वहा से हटा ली गई हैं तो वह स्थान फिर मन्दिर कैसे कहा जा सकता है जब मूर्तिया ही हट गई तो झगडा किस बात का।

—अनिल नरेन्द्र

महन्त लालदास आत्मदाह करेंगे

नई दिल्ली, ११ मार्च। राम जन्मभूमि के मुख्य पुजारी महन्त लालदास ने धमकी दी है कि कथित रूप से गायब अयोध्या के रामलला की मूर्तिया अगर दो महीने के अन्दर वापस नही आती है तो, वह आगामी १८ मई को आत्मदाह कर लेंगे।

ज्ञात रहे विगत ७ फरवरी को महन्त लालदास ने एक पत्रकार सम्मेलन में यह आरोप लगाया था कि ६ दिसम्बर को ढाचा गिराये जाने के अवसर पर यह दुर्लभ मूर्तिया गायब कर दी गयी थी।

इसी के साथ महन्त भास्कर दास ने यह आरोप लगाया था कि इन दुर्लभ पवित्र मूर्तियो को विश्व हिन्दू परिषद वाले बीस करोड मे बेचने की साजिश रच रहे हैं। इस सन्दर्भ मे उन्होने एक शिकायत अयोध्या के चीफ ज्यूडीशियल मजिस्ट्रेट को दर्ज भी कराई थी।

वीर अर्जुन ने इस सन्दर्भ मे सम्पादकीय भी लिखा था, जिसके आधार पर सासद एस एस. अहलूवालिया एव सुरेश पचौरी ने विशेष उल्लेख के दौरान राज्यसभा मे प्रश्न भी किया था।

जिस पर गृहमन्त्री शकरराव चह्वाण ने रामलला की मूर्तियो के बारे मे तथ्य की छानबीन का आश्वासन दिया था। —वीर अर्जुन से साभार

चित्र मे—श्री विमल वधावन जी तथा आर्यकन्या सदन, आर्य बाल गृह पटौदी हाउस दरियागज के बच्चो से बात करते हुए प्रसिद्ध अभिनेत्री श्रीमती शर्मिला टैगोर, साथ मे इन सस्थाओ के अधिष्ठाता श्री एच एस रघुवशी।

सर्वधर्म सदभाव मे आर्यजनों का सहयोग

विगत दिनो सार्वभौम सदभाव हुतु ५० राष्ट्रो के धार्मिक एव सामाजिक सगठनो के प्रमुख नेताओ ने अशोका होटल नई दिल्ली के सभागार मे आयोजित विचार गोष्ठी मे भाग लिया जिसमे भारत की ओर से नई दिल्ली काग्रेस की अध्यक्षा सुप्रसिद्ध समाज सेवी श्रीमती मोहिनी गिरि जी के मार्ग दर्शन मे सम्पूर्ण सफलता की चरम सीमा तक पहुचा।

उदघाटन केन्द्रीय शहरी विकास मन्त्री श्रीमती शीला कौल के कर कमलो द्वारा होकर केन्द्रीय मन्त्री जी श्री अर्जुन सिंह सहित देश विदेश के अनेक प्रख्यात धर्म गुरुओ के सारगर्भित विचारो से एक सप्ताह परिपूर्ण रहा।

समापन समारोह लाल किले पर दिल्ली के उपराज्यपाल श्री पी के दव द्वारा रैली के रूप मे हुआ जिसका नतृत्व प्रसिद्ध अभिनेत्री शर्मिला टैगोर ने किया।

अन्त मे सभी लोगो ने राष्ट्रपिता महात्मा गाधी की समाधि राजघाट पर जाकर सवधम पाथना और भजनो के द्वारा पूज्य बापू को श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

गायत्री मन्त्र तथा शान्ति पाठ गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारियो द्वारा कराया गया।

—कुमार सिंह रघुवशी
१४८८, पटोदी हाउस दरियागज नई दिल्ली २

आर्य प्रतिनिधि सभा फीजी

आर्य प्रतिनिधि सभा फीजी को दो योग्य वैदिक प्रचारको की जरूरत है, जिसके लिये अर्जियो की माग की जा रही है। प्रचारको को फीजी देश मे जाकर ठोस रूप से वेद प्रचार करना होगा।

उम्र लगभग चालीस वष, विवाहित हो तथा नरमक भजनीक और हो सके तो पति-पत्नी दोनो प्रचारक हो।

उचित वेतन दिया जायेगा, आने जाने का खच तथा रहने का प्रबन्ध किया जायेगा।

अपना पूरा विवरण, अनुभव तथा-प्रमाण पत्र, निम्न पते पर भज।

महामन्त्री, आय प्रतिनिधि सभा, फीजी
पा०ओ० बौक्स ४,४५
सामाबूला, सुवा फीजी

कानपुर मे तीन शिक्षित युवतियों ने हिन्दू धर्म अपनाया

कानपुर। आय समाज गोविन्द नगर मे समाज के प्रधान और केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने तीन विभिन्न मतावलम्बी शिक्षित युवतियो को हिन्दू धर्म की दीक्षा दी—इनमे से एक ईसाई थी तथा दो यवन मत मानने वाली थी—शुद्धि समारोह के उपरान्त तीन अति उच्च शिक्षा प्राप्त हिन्दू युवको से उनका विवाह करा दिया गया। शुद्धि सस्कार से पूर्व मुस्लिम युवतियो ने विचार प्रगट करते हुए कहा हिन्दू धम मे पत्नी को जीवन भर पति के साथ रहने के सकल्प को बह बहुत पसन्द करती है श्री देवीदास आर्य ने बताया कि इन तीनो शुद्ध हुई युवतियो के नाम सोनिया देवी जूही और तीसरी का नाम नेहा रखा गया।

(प्रताप के सौजन्य से ४-३-९३)

आवश्यकता है

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री मुनीश्वरानन्द भवन, नयाटोला, पटना-४ के अधीन वैदिक धर्म प्रचारार्थ वैदिक सिद्धातो के मर्मज्ञ, गुरुकुलो के स्नातक, सस्कृतज्ञ तथा व्याख्यान कला मे दक्ष ५ विद्वान उपदेशको सगीत तथा सिद्धान्तो के प्रवीण ५ आर्य भजनोपदेशको तथा ढोलक या तबला म अच्छा जानकारी रखने वाले ५ ढोलकियो की आवश्यकता है।

अन्य प्रान्तीय सभाओ की अपेक्षा योग्यता अनुसार वैदिक विद्वानो को दो से तीन हजार भजनोपदेशको को डेढ से दो हजार तथा ढोलकियो को एक हजार की मासिक दक्षिणा दी जायेगी। भोजन तथा आवास की सुविधा नि शुल्क है। इनको प्रचारार्थ सुदूर गावो तथा वन पर्वतो के बीच वार्षिकोत्सवो, सस्कारो तथा यज्ञो मे जाना पडेगा। सभा प्रधान के नाम से १३-४-९३ तक पूर्ण विवरण के साथ आवेदन पत्र भेज।

भूवनारायण शास्त्री प्रधान
बिहार राज्य आय प्रतिनिधि सभा,
नया टोला पटना ४

पुस्तक समीक्षा

आदर्श गृहस्थ जीवन

ले० आचार्य भद्रसेन

वैदिक प्रकाशन पहाड़ीधीरज

७११५ गली पहाड़ वाली दिल्ली

मूल्य ३० रुपये

सभी आश्रमो मे गृहस्थ आश्रम को सर्वोत्तम माना गया है यदि गृहस्थ जीवन सफल है तो जीवन का तत्व इसी मे है।

गृहस्थ एव धर्माणा सर्वेषामेव मूल मुत्तमम ॥

प्रात काल से सम्पूण जीवन की पद्धति इस प्रकार से हो जिसमे चिन्तन का समय तो हो—पर चिन्ता से मुक्त हो तभी सुखमय जीवन का आनन्द है। गृहस्थ जीवन मे

अथ का आना नित्य निरोगी काया प्रिय पत्नी हो वह भी प्रिय बोलने वाली हो साथ ही सन्तान आज्ञाकारी और विद्या धन देने वाली हो।

वह गृहस्थ सौभाग्यशाली है जिनके जीवन मे यह सब लक्षण विद्यमान हो। वही आदश गृहस्थ कहलाता है।

पुस्तक की उपयोग्गिता इसलिये और बढ गई है कि स्वास्थ्य की दृष्टि से कुछ जीवनीय उपचार औषधि भी दिये हैं। जिनसे जीवन सुखमय बन सकेगा।

विद्वान की उपयोगिता तभी है जब उसका लाभ ससार उठा सकें।

पुस्तक प्रकाशन मे प० राजपाल शास्त्री का योगदान भी हम सभी को सहयोगी बनेगा। अत लेखक प्रकाशक दोनो ध यवादी है

आर्य जनता इससे लाभान्वित हो—तभी पुस्तक की साथकता सिद्ध होगी।

—सम्पादक

वार्षिकोत्सव

—आर्य समाज मन्दिर सैक्टर २२ चण्डीगढ का वेद सप्ताह एव ३० वा वार्षिकोत्सव ९ माच से १५ माच तक समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात तथा साय भजन प्रवचन हुआ। समारोह मे राष्ट्र रक्षा सम्मेलन वेद गोष्ठी आय महिला सम्मेलन सहित अनेको कार्यक्रमो का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अनेको विद्वान तथा भजनोपदेशक पधारे।

—कन्या गुरुकुल महाविद्यालय नरेला का सतीसवा वार्षिक महोत्सव १३ से १४ माच ९३ तक धूम धाम से मनाया गया। इस अवसर पर अनेको विद्वान तथा भजनोपदेशक पधारे।

—नथपुर एटा का द्वितीय वार्षिकोत्सव २२ से २५ जनवरी तक समारोह पूवक मनाया गया। इस अवसर पर प महेन्द्रपाल जी आय म० पूरनसिंह जी अलीगढ प० कमलदेव जी सविता सहित अनेको विद्वानो तथा भजनोपदेशको ने जनता जनादन का माग दशन किया।

—आय समाज खडा अफगान सहारनपुर का तेरहवा वार्षिकोत्सव ४ से ६ माच तक समारोह पूवक मनाया गया। इस अवसर पर प० देवदत्त जी वाली प० ओमप्रकाश जी श्री स ययाल जी सरल सहित अनेको विद्वानो ने समारोह की शोभा बढाई।

आवश्यकता

४० वष की आयु से ऊपर एक महिला एव एक पुरुष की आवश्यकता है। काय क्रमश भोजन बनाने व सरक्षण हेतु। सभी सुविधाय एव उचित वेतन। शीघ्र सम्पर्क कर।

प्रबन्धक आर्य बाल सरक्षण गृह
१००८ रामबाग रोड निकट आजाद मार्किट चौक
दिल्ली-६

निर्वाचन

—आर्य समाज बिहारा श्री दयाराम जी आर्य प्रधान श्री किशनदास जी मन्त्री श्री दुर्गाप्रसाद गुप्त कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज मुजफ्फरपुर श्री पन्ना लाल आर्य प्रधान श्री हरिहर प्रसाद साहू मन्त्री श्री रामकृष्ण बिजराजका कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज द्वारा श्री लक्ष्मण जी आहूजा प्रधान श्री दिनेश कुमार त्यागी मन्त्री श्री छीतरलाल जी नामदेव कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज सिमरौली सेठ माता प्रसाद प्रधान डा० नन्दलाल जी मन्त्री सेठ विजयकुमार कोषाध्यक्ष।

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज हापुड का ८४वा वार्षिकोत्सव १ अप्रल से ४ अप्रल तक समारोह पूवक मनाया जायेगा। सम्मेलन मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती सहित आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान स यासी उपदेशक एव सगीतज्ञ पधार रहे हैं इस अवसर पर मातृभाषा सम्मेलन वेद महिला तथा पाखण्ड खण्डन सम्मेलन सहित अनेको अन्य सम्मेलनो का आयोजन किया गया है। अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर कायक्रम को सफल बनाये।

—आर्य समाज माडल टाउन लुधियाना का ४४वा वार्षिक उत्सव २४ से २८ मार्च तक समारोह पूवक मनाया जा रहा है इस अवसर पर आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान स यासी महात्मा तथा भजनीक पधार रहे हैं। समारोह मे २४ से २७ मार्च तक प्रात काल विशालयज्ञ स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती के ब्रह्मत्व मे सम्पन्न होगा २१ मार्च को महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया है।

—आर्य समाज जौनपुर का ६३वा वार्षिकोत्सव ६ से १२ अप्रल तक टाउन हाल के मदान मे समारोह पूवक मनाया ज रहा है। इस अवसर पर आर्यजगत के उच्चकोटि के विद्वान शास्त्राथ महारथी तथा भजनीक पधार रहे हैं। इस अवसर पर महिला सम्मेलन सहित अनेको सम्मेलन तथा शका समाधान का विशेष आयोजन किया गया है।

आ० स० बुद्धिजीवी सम्मेलन

आर्य समाज बुद्धिजीवी सम्मेलन के सयोजक डा० प्रशान्त वेदालकार ने बताया कि सम्मेलन ने यह निश्चय किया है कि प्रतिवर्ष आर्य समाज स्थापना पर्व के अवसर पर आर्यसमाज का सगठन विषय पर एक चर्चा आयोजित की जाया करे इस चर्चा मे आर्यसमाज के सगठन मे रत विद्वान कायकर्ता व नेताओ के अतिरिक्त हितैषी विद्वान भी भाग ल।

इस वर्ष यह चर्चा २८ मार्च १९९३ रविवार को प्रात १० बजे से साय ५ बजे तक पं० इन्द्र विद्या मार्तण्ड सूरज पर्वत ईस्ट ऑफ कैलाश नई दिल्ली मे होगी। स सगोष्ठी के स्वागताध्यक्ष श्री धीरेन्द्रप्रताप चौधरी हैं।

प्रशान्त वेदालकार सयोजक

पोस्टल रजिस्ट्रशन नं० डी० एल० ११०४६/६३ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२८ ३ १९९३) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (C) ९३
R N 26/37 Licensed to post without prepayment License No U (C) 93 Post in N D P S O on 25 26-3-1993

वैदिक धर्म प्रचार

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा मीरजापुर व सोनभद्र ने २० फरवरी से ८ मार्च तक विभिन्न क्षेत्रो मे वेद प्रचार का कार्यक्रम रखा तथा विभिन्न आर्य समाजो के वार्षिकोत्सव सम्पन्न कराये। आर्यसमाज श्रुतिहार कौशना कदवा सिलौडो खुन्दमा रानीपुर परिहरा तथा दीक्षितपुर मे विभिन्न दिवसो मे प्रात यज्ञ भजन तथा उपदेश एव सायकाल को भजन तथा उपदेश के कार्यक्रमो से जनता को लाभान्वित किया गया। इस अवसर पर आर्य जगत के विद्वानो तथा भजनोपदेशकों के विद्वतापूर्ण उपदेशो तथा भजनो की श्रोताओ ने मुक्त कण्ठ से सराहना की। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

द्वारा आयोजित

सत्यार्थ-प्रकाश पत्राचार प्रतियोगिता

—: पुरस्कार :—

प्रथम : ११ हजार द्वितीय : ५ हजार तृतीय: २ हजार

न्यूनतम योग्यता : १०+२ अथवा अनुरूप

आयु सीमा : १८ से ४० वर्ष तक

माध्यम : हिन्दी अथवा अंग्रेजी

उत्तर पुस्तिकायें रजिस्ट्रार को भेजने की अन्तिम तिथि ३१-८-१९९३

विषय : महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश

नोट —प्रवेश, रोल न०, प्रश्न-पत्र तथा अन्य विवरण के लिए मात्र बीस रुपये नगद या मनीआर्डर द्वारा रजिस्ट्रार, परीक्षा विभाग सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नयी दिल्ली-२ को भेजे। पुस्तक अगर पुस्तकालयो, पुस्तक विक्रेताओ अथवा स्थानीय आर्य समाज कार्यालयो से न मिले तो तीस रुपये हिन्दी संस्करण के लिये और पैसठ रुपये अंग्रेजी संस्करण के लिये सभा को भेजकर मगवाई जा सकती है।

डा० ए. बी. आर्य
रजिस्ट्रार

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

महर्षि दयानन्द उवाच

- सृष्टि से लेकर महाभारत पर्यन्त चक्रवर्ती सार्वभौम राजा आर्य कुल में ही हुए थे। अब इनके सन्तानों का अभाग्योदय होने से राज्य भ्रष्ट होकर विदेशियों के पादाक्रांत हो रहे हैं।
- अपने ही देश के वस्त्र-वेश को अपनाने में शोभा है।
- यदि लोग हमारी अंगुलियों को बत्तियां बनाकर जला डाले तो भी कोई चिन्ता नहीं। मैं वहां जाकर अवश्य सत्योपदेश करूंगा।
- जब तक एक मत, एक हानि लाभ, एक सुख-दुःख परस्पर न मानें तब तक उन्नति होना कठिन है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष : ३१०७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३१ अंक ८] दयानन्दाब्द १६९ सृष्टि सम्वत् १९६०८५३०९४ चैत्र शु० १२ सं० २०५० ४ अप्रैल १९९३

रामनवमी पर्व सम्पूर्ण आर्य जगत् द्वारा उत्साह पूर्वक सम्पन्न

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के आदर्शों के प्रति अटूट श्रद्धा व्यक्त

चैत्र शुक्ल नवमी तदनुसार १ अप्रैल १९९३ को सम्पूर्ण आर्य जगत द्वारा मर्यादा पुरुषोत्तम राम का जन्म दिन उत्साह पूर्वक बड़ी श्रद्धा के साथ मनाया गया। इस पर्व पर विभिन्न आर्य समाजों द्वारा भगवान राम के आदर्श स्वरूप की व्याख्या, गोष्ठियों तथा साप्ताहिक सत्संगों में उच्च कोटि के विद्वानों द्वारा की गई।

यद्यपि आज करोड़ों राम भक्त मर्यादा पुरुषोत्तम राम को भगवान का अवतार मानते हैं परन्तु आर्य समाज अवतारवाद में विश्वास नहीं रखता, हमारे लिए यदि श्रीराम पूजनीय हैं तो केवल इसलिए कि वह मर्यादा पुरुषोत्तम थे या आदर्श पुरुष थे। हम यदि अपने इतिहास को देखें तो स्पष्ट रूप से हमें पता चलता है कि हमारी सारी संस्कृति भगवान राम और भगवान कृष्ण के इर्द-गिर्द घूमती है। जब हम उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम कहते हैं तो वह भी इसलिए कि उन्होंने जो कुछ किया था एक मर्यादा के अन्दर रहकर ही किया था। उनका सबसे बड़ा त्याग अपने पिता के कहने पर अपने राज्य को छोड़ देना था। यदि वह अपने पिता जी की आज्ञा का पालन न करते तो उनका कोई कुछ बिगाड नहीं सकता था। सम्भवतः उनके पिता जी भी यही चाहते थे कि श्री राम उनकी बात मानने से इन्कार कर दें। उन्होने जो कुछ किया था वह अपनी पत्नी कैकेयी के विवश करने पर किया था। उनको तीन रानियां थी। इसलिए महाराज दशरथ ने अपनी एक पत्नी के विवश करने पर अपने बेटे राम को वनवास का आदेश तो दे दिया परन्तु स्वयं इतने दुःखी हुए कि बेटे के वियोग में ही अपने प्राण त्याग दिए। यदि भगवान राम अपने पिता की बात न भी मानते तो उनका कोई कुछ बिगाड न सकता था परन्तु उन्होने पिता को वचन दिया था कि उन्हे जो आदेश दिया जाएगा वह उसका पालन करेंगे और यही उन्होंने किया। जब दूसरे लोग उनसे कहते कि वह वनवास में जाने के लिए इन्कार कर दे तो उनका एक ही उत्तर हुआ करता था कि—

> रघुकुल रीति सदा चली आई।
> प्राण जाए पर वचन न जाई॥

जब हम कहते हैं कि श्रीराम ईश्वर का अवतार नहीं थे परन्तु एक आदर्श पुरुष थे तो उसका अभिप्राय भी यही है कि जो गुण एक साधारण व्यक्ति में नहीं होते वह उनमे थे। यदि हम यह मान लें कि वह ईश्वर का ही अवतार थे तो उनमें वह विशेषता नहीं रहती जो एक आदर्श पुरुष होने मे हो सकती है। हम जब उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम या आदर्श पुरुष के रूप में जनता के सामने प्रस्तुत करते हैं तो केवल इसलिए कि साधारण व्यक्ति भी यह समझ सके कि एक मानव में भी अच्छे से अच्छे और बड़े से बडे गुण हो सकते हैं। जैसे कि भगवान राम में थे। अपनी प्रजा के कहने पर जब उन्होंने अपनी पत्नी भगवती सीता का परित्याग किया था तो उन्हें भी किसी राजमहल में नहीं भेजा था। महर्षि बाल्मीकि के आश्रम में भेजा ताकि उनकी शरण में रहकर वह अपना बाकी का जीवन अच्छी तरह व्यतीत कर सके। आज हमारे बाल्मीकि भाई अपने आपको हरिजन, दलित या अछूत कहते है। भगवान राम ने तो महर्षि बाल्मीकि को अछूत नही कहा था। वह तो उन्हें एक महापुरुष समझते थे और अपनी पत्नी को उनके आश्रम मे सुरक्षित समझते थे, इसलिए उन्होने उसे अपना बाकी का जीवन व्यतीत करने के लिए वहा भेजा था।

जब भगवान राम ने लंका पर विजय प्राप्त की, वह चाहते तो लंका को अपने साम्राज्य मे मिला सकते थे और अयोध्या के साथ लंका पर भी राज कर सकते थे। परन्तु उन्होने रावण के पश्चात उसके भाई विभीषण को लंका का राज्य सौंप दिया और स्वयं वहां से आ गए। उनके जीवन की एक और घटना भी आती है जिससे पता चलता है कि वह कितने महान थे। जिन दिनों वह जंगल में घूमा करते थे तो एक दिन भिलनी नाम की एक महिला की कुटिया में चले गए और पूछा कि वह कौन है? जब उसने बताया कि वह छोटी जाति की एक महिला है जिसका कोई और सहारा नही है तो भगवान राम उसे आश्वासन देने के लिए वहीं बैठ गए और उसके

(शेष पृष्ठ २ पर)

सार्वदेशिक सभा की ओर से नव वर्ष की मंगल कामना

नव वर्ष यानि संवत् २०५० का आगमन चैत्र शुक्ल प्रतिपदा २४ मार्च १९९३ को हुआ। इसी दिन ऋषि प्रवर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने संसार को वेदों का ज्ञान देने और मानव मात्र की सेवा का संकल्प लेकर सर्वप्रथम आर्य समाज की स्थापना की थी।

सार्वदेशिक सभा नव वर्ष तथा आर्य समाज स्थापना दिवस के पावन पर्व पर सभी आर्य जनों एवं पाठकों के प्रति शुभकामना प्रकट करते हुए पूरी मानव जाति के कल्याण की कामना करती है।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती — सभा-प्रधान
डा० सच्चिदानन्द शास्त्री — सभा-मन्त्री

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सम्पादकीय

आर्यों ! ऋषि दयानन्द के ध्येय पर ध्यान दो ?

आर्य समाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द ने संसार में वैदिक धर्म संस्कृति सभ्यता का प्रचार-प्रसार करने एवं मनुष्यमात्र को उस संस्कृति की छत्र-छाया में लाने के लिए आर्य समाज की स्थापना की थी। इस ध्येय की पूर्ति का साधन, ऋषि दयानन्द ने वेद-प्रचार को प्रमुख माना था। वेद प्रचार के लिए उन्होंने अपने जीवन का एक एक क्षण अर्पण किया था। इसी ध्येय के लिए वे जिए और इसी ध्येय के लिए अपने प्राणों की आहुति दी।

इस वेद प्रचार रूपी साधन को काम में लाने के लिए वह अपनी वसीयत को विशेष रूप में लिखकर हिदायत छोड़ गए कि प्रचार द्वारा वैदिक संस्कृति को सारे विश्व में प्रसारित करो।

आर्य समाज ने सौ वर्ष से ऊपर वेद प्रचार के लिए सतत प्रयत्न किया है। यह प्रयत्न निराशा जनक तो नहीं कहा जा सकता है परन्तु आर्यों में आशा से भी अपर्याप्त कार्य दिखाई देता है। बहुत से महानुभाव जो आर्य समाज के पूर्ण हितैषी हैं और इसकी उन्नति में स्वयं प्रयत्नशील हैं ' वे समयानुसार यह अनुभव करते हैं कि आर्य समाज अपने ध्येय-लक्ष्य की ओर कितना आगे बढ़ रहा हैं, सन्देह पैदा करता है। जिन बातों को उसने वेद प्रचार का साधन बनाया था वह इस समय साधन के स्थान में साध्य बन रही हैं। जब साधन स्वयं साध्य का स्थान ले लेते हैं तब ध्येय का ध्यान नहीं रहता है। इस समय यह आवाज आर्य समाज मे जोरो से उठ रही है।

शिक्षा के क्षेत्र मे गुरुकुलो कालेजो, विद्यालयों पर आर्यसमाज की आर्थिक तथा नैतिक और दिमागी शक्ति भरपूर लग रही हैं। परन्तु इन संस्थाओं से आर्य समाज के ध्येय की पूर्ति में जो लाभ मिलना चाहिए था वह मिल नहीं सका। केवल नौकरी करने का ध्येय तो मिला। परन्तु न आर्य समाजी बने न उपदेशक ही।

आर्य समाज की सदस्यता बढ़ी, आर्य समाज के भवन भी बढ़े और स्कूल कालिज पहले से अधिक बने। गुरुकुलों की संख्या जो बनी थी पूर्व के त्यागी, तपस्वी महापुरुषो के पुरुषार्थ से, वह इस समय प्राणवान तो है निष्प्राण तो नही। उनमे कुछ अपनी स्थिति से सन्तुष्ट तो नहीं है पर ऋषि के नाम पर जीवित है और कुछ गुरुकुल कालिज बना दिए गये। क्योंकि पढ़ने वाले संस्कृतानुरागी ही न मिल सके तो गुरुकुल को कालिज बना दिये कुछ नयी पीढ़ी के युवा वर्ग में उत्साह जागा उन्होने कुछ नये गुरुकुलों की स्थापना की है और वह सफलता की ओर है। हां हमने अपने लड़के लड़किया तो कालिजों को भेंट किए परन्तु कुछ साधारण जन मिले जिन्होने अपने लड़को-लड़कियो को गुरुकुलो मे पढने हेतु भेजा। वह ऐसा क्यों कर सके इसकी चर्चा न कर उन्हें साधुवाद देता हू और जो आर्य समाज के संचालन मे हैं उन्होने अपनी भावी पीढ़ी को ऋषि मिशन की ज्वाला मे तपने नहीं दिया वह भी धन्यवादी हैं।

हम निराशावादी नहीं है, हम जानते हैं कि कभी-कभी साधन साध्य का स्थान ले लेते है। उस समय हमें अपने ध्येय पर दृष्टिपात अवश्य करना चाहिए। ध्येय का ध्यान करके हमें साधनों में संशोधन करना चाहिए। यदि संशोधन सम्भव न हो तो उनसे पृथक हटकर ध्येय की प्राप्ति हेतु जीवन लगाएं। साधनो के मोह में पड़कर उसे व्यर्थ गवा नहीं सकते।

आर्य समाज को इसी दृष्टि से अपने भविष्य पर विचार करना चाहिए। वेद प्रचार की शैली, जो इस समय प्रचलित है उसमें लगन, श्रद्धा, त्याग की अत्यन्त कमी है उस ओर भी ध्यान देना चाहिए।

ध्येय पर जो दृष्टि हमे एक व्यक्ति पर लगानी चाहिए वही बात संस्थाओं और उनके सञ्चालकों पर उन्नति का अन्दाज लगाने के लिए भी आवश्यक है। संस्थाओं का भी ध्येय होता है उसी ध्येय के सहारे वह जीवित रहती हैं और भविष्य की उन्नति का अन्दाजा भी लगाती हैं।

आर्य समाज रूपी संस्था को जब ऋषि दयानन्द ने स्थापित किया था तब उन्होने इसका ध्येय भी निश्चित कर दिया था उस ध्येय को जानो, समझो और आगे बढ़ो।

जो व्यक्ति जीवन की दौड़ में अपने ध्येय (लक्ष्य) को भूलकर अनावश्यक कृत्यों मे फंस जाता है वह ध्येय से चलकर उन्नति का अन्दाजा नहीं लगा सकता है।

वेद प्रचार के लिए विद्वानो को पैदा करना जिसे स्वामी जी ने ध्येय बनाया था उस ओर से हमारा ध्यान पृथक् होता जा रहा है।

सन्तोष इसलिए करना पड़ता है कि आर्य समाज में आशा का संचार भरने हेतु कुछ तत्व अपने ध्येय को पाने में दृढ़ संकल्प लेकर चल भी रहे हैं जैसे—साहित्य का प्रकाशन, लेखन बढा है कम नहीं है। प्रचारक पुरोहित भी हैं जो निष्ठावान है इसमे आर्य समाज में एक गति तो हैं पर इसे प्रगति नहीं कहा जा सकता है। आर्य समाज स्थापना दिवस पर हम सभी मिलकर विचार करें और भविष्य को समृद्धशाली बनाने हेतु ऋषि के मिशन को आगे बढ़ाने पर विचार करें।

आन्ध्र प्रदेश के मुख्यमन्त्री द्वारा स्थापना दिवस पर पदयात्रा

हैदराबाद, २४ मार्च। आर्य समाज स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर दक्षिण भारत के हैदराबाद शहर में आन्ध्र प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा एक भव्य शोभा यात्रा का आयोजन किया गया। इस शोभा यात्रा का नेतृत्व आर्य नेता पंडित वन्देमातरम् रामचन्द्र राव कर रहे थे। लगभग १० किलोमीटर लम्बी इस शोभा-यात्रा में आन्ध्र प्रदेश के मुख्य मन्त्री श्री विजय भास्कर रेड्डी शामिल हुए। आर्य समाज सिकन्दराबाद से चलकर शहर के मुख्य स्थानों तथा सिकन्दराबाद रेलवे स्टेशन होती हुई यह यात्रा आर्य समाज भवन पर ही समाप्त हुई, बाद में वहीं पर एक विशाल सम्मेलन का भी आयोजन किया गया जहां श्री वन्देमातरम, मुख्यमन्त्री श्री भास्कर रेड्डी, सभा के प्रधान श्री कान्तिकुमार कोरटकर आदि नेताओं ने महर्षि दयानन्द तथा आर्य समाज के मन्तव्यों पर विचार व्यक्त किए।

दक्षिण भारत के अन्य शहरों से भी आर्य समाज स्थापना दिवस धूमधाम से मनाये जाने के समाचार प्राप्त हुए है।

रामनवमी का पर्व

(पृष्ठ १ का शेष)

हाथ से लेकर बेर खाते रहे। कहां भगवान राम और कहां वह साधारण भिलनी, परन्तु इससे हम अनुमान लगा सकते हैं कि वह कितने उच्च कोटि के व्यक्ति थे। इसीलिए उन्हें आदर्श पुरुष या मर्यादा पुरुषोत्तम कहा जाता है। जब हम उन्हें भगवान के रूप में प्रस्तुत करते है तो उनका वह महत्त्व कम हो जाता है जो एक महापुरुष के रूप में हमारे सामने आता है। भगवान तो सब कुछ कर सकते हैं। परन्तु जब कोई मानव उसे करने लगे जो साधारण व्यक्ति न कर सके तो फिर वह पूजनीय हो जाता है यही कारण है कि हम भगवान राम को मर्यादा पुरुषोत्तम कहते हैं। ■

वार्षिकोत्सव

—आर्य समाज सिलीगुड़ी का २१ वां वार्षिकोत्सव २६ से २८ फरवरी तक गांधी मदान मंगतूराम रोड खालपाड़ा सिलीगुड़ी में समारोहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, महिला सम्मेलन, वेद सम्मेलन एवं युवा सम्मेलन सहित निबन्ध प्रतियोगिता एवं अन्य कार्यक्रम समारोह पूर्वक सम्पन्न हुये। समारोह में आर्य जगत के प्रतिष्ठित विद्वानों या भजनोपदेशको ने श्रोताओं का मार्ग दर्शन किया।

आर्यसमाज का ११८वां स्थापना दिवस ससमारोह सम्पन्न

डा० भवानीलाल भारतीय लालमन आर्य वैदिक विद्वान पुरस्कार से सम्मानित

दिल्ली २४ मार्च। केन्द्रीय आर्य सभा दिल्ली के तत्वावधान में आर्य समाज स्थापना दिवस नई दिल्ली के हिमाचल भवन सभागार में सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि महर्षि दयानन्द अकेले ऐसे महा मानव थे जिन्होंने विषम परिस्थितियो में भी वेद प्रतिपादित सिद्धान्तों को नही छोड़ा। यही उनकी शक्ति थी जिसके बल पर उन्होंने सर्व प्रथम बम्बई में आर्य समाज की स्थापना की थी। यदि स्वामी दयानन्द ४ साल और जीवित रहते तो वह अंग्रेजी राज्य में ही गौहत्या बन्द करा देते। स्वामी जी ने बताया मीनाक्षीपुरम् सम्मेलन के बाद दक्षिण भारत मे कई दर्जन आर्य समाजों की स्थापना हो चुकी है। आर्य समाज ही एक ऐसा सगठन है जो ११७ साल पूरे करने के साथ नई चमक लेकर आगे बढ़ रहा है।

इस अवसर पर आर्य समाज के प्रकाण्ड विद्वान और साहित्यकार डा० भवानीलाल भारतीय को लालमन आर्य वैदिक विद्वान पुरस्कार से सम्मानित किया गया। डा० भारतीय ने कहा यह मेरा सम्मान नहीं बल्कि आर्य समाज की विद्वत परम्परा का सम्मान है। क्योंकि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती विद्वत परम्परा के ही महामानव थे। आज जब कि आर्य समाज की समकालीन संस्थाएं लुप्त प्राय हो चुकी हैं परन्तु आर्य समाज का सगठन विश्व व्यापी बनता जा रहा है। आर्य समाज की स्थापना स्वामी दयानन्द ने प्रतिक्रियात्मक रूप में नहीं की थी अपितु मानव समाज की सेवा ही उसका मुख्य लक्ष्य था। मुख्य अतिथि श्री रामचन्द्र विकल संसद सदस्य, ने कहा आर्य समाज में आजादी के पूर्व की तरह राजनैतिक लहर पैदा करनी चाहिए। क्योंकि बिना धर्म के राजनीति नहीं चल सकती।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का निर्वाचन १७-१-९३ को सम्पन्न हुआ था

उत्तरप्रदेश रजिस्ट्रार द्वारा मान्यता प्रदान

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० द्वारा समस्त उ०प्र० की आर्य समाजो को सूचित किया जाता है कि १७, १८ अप्रैल को कोई आर्य प्रतिनिधि सभा का अधिवेशन नहीं हो रहा है। सभा प्रधान पं० इन्द्रराज जी व सभा-मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ही निर्वाचित हैं।

प्रदेशीय आर्य समाजें धोखे मे न आएं। सार्वदेशिक सभा दिल्ली तथा रजिस्ट्रार उ० प्र० द्वारा मान्यता प्राप्त आ० प्र० नि० सभा ही वैधानिक है।

श्री कैलाश नाथ सिंह यादव, धर्मेन्द्र सिंह आर्य, आर्य समाज से निष्कासित है। आर्य समाज के अधिकारी गण ध्यान रखें, धोखे मे न आयें।

—बृजभूषण सिंह, उप-प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा (उ०प्र०)

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान प्रो० उत्तमचन्द शरर ने महर्षि दयानन्द के प्रति भावभीनी श्रद्धांजलि देते हुए कहा—आर्य समाज दयानन्द की यादगार, श्रद्धानन्द के दिल की टीस और देश की धड़कन है। हम सबको पहले आर्य समाज को समझना चाहिए। वेद को समझने के लिए महर्षि दयानन्द के दृष्टिकोण को समझने की आवश्यकता है है क्योंकि आर्य समाज तार्किक और बुद्धिवादी संगठन है।

इस अवसर पर आचार्य धर्मवीर की दो पुस्तकों का विमोचन स्वामी आनन्दबोध जी द्वारा किया गया। इस अवसर पर अनेक विद्वान और आर्य समाज के नेता मंच पर उपस्थित थे। समारोह का संचालन आर्य केन्द्रीय सभा के मन्त्री डा० शिवकुमार शास्त्री ने किया।

श्रीराम का पावन चरित्र

आज से लाखो वर्ष पहले मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का जन्म चैत्र शुक्ल नवमी को अयोध्या के महाराजा दशरथ के यहां हुआ था। इसलिए उनके जन्म दिवस को रामनवमी कहकर मनाते हैं। राम नवमी हमें मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के आदर्श की प्रेरणा देती हैं।

उनका मर्यादामय समस्त जीवन बचपन से लेकर जीवन पर्यन्त तक उनके जीवन के किसी भी भाग पर दृष्टिपात करते हैं। तो उनके जीवन में कही भी मर्यादा का उल्लघन नहीं मिलता। चाहे उनका विद्यार्थी जीवन हो चाहे गृहस्थ जीवन, सर्वत्र नियमित आदर्श जीवन मिलने से ही उनके नाम के साथ मर्यादा पुरुषोत्तम नाम जुडा।

एक बार महर्षि बाल्मीकि जी ने नारदजी से पूछा कि इस भूगोल में कौन ऐसा महापुरुष है। कि जो सत्यवादी, जितेन्द्रिय, धर्मज्ञ, सच्चरित्र तथा अकुतोभय आदि गुणो से सम्पन्न हों। तब नारद जी ने बताया कि "इक्ष्वाकुवंश में महाराजा दशरथ के पुत्र श्रीराम हैं। जो कि आपके बताये सभी दिव्य गुणों से सम्पन्न है। महर्षि बाल्मीकि ने अपने महाकाव्य से रामायण लिखनी प्रारम्भ की जिसमें श्रीराम के आदर्श जीवन को अंकित किया। संसार में जितने भी पितृ भक्त हुए हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम उनमे अग्रणीय है। वे एक आदर्श पितृ भक्त पुत्र थे। श्रीराम प्रतिदिन प्रात. सायं अपने माता-पिता के सादर चरण छू कर प्रणाम करते थे। जैसे—

स प्राञ्जलिरप्रेत्य प्रणतः पितुरन्ति के।
नाम स्वं श्रावयन रामो व वन्दे चरणौ पितृ ।।(बा०रा०)

अर्थात् जब राजा दशरथ ने राज्यभिषेक के लिए सुमन्त के द्वारा बुलवाया था। तब श्रीराम ने करबद्ध होकर अपने पिता श्री के चरण स्पर्श करते हुए प्रणाम किया था। आज लाखों वर्षों बाद भी मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का जीवन, जन-जन को प्रेरणा व मार्ग दर्शन करता रहा है। लेकिन श्रीराम भक्तों ने उनके चित्र को अपनाया है। चरित्र को नहीं। यदि हम उनके चरित्र को अपना कर उनके गुणों को स्वयं में ढालेगे तभी हम श्रीराम के प्रेरक जीवन चरित्र से कुछ सीख सकेगे। भारत के घर-घर में राम नवमी मनाई जाती है। किन्तु उनके गुणों पर ध्यान नहीं देते। हमें उनके मर्यादामय जीवन से शिक्षा लेनी चाहिए। तभी हम राम भक्त कहलायेंगे। जैसे:—

सोई सेवक प्रियतम मम साई।
मम अनुशासन माने जाई।।

अर्थात् श्रीराम का सच्चा भक्त वही है। जो उनके मर्यादामय जीवन पर चले और अपने मन में दृढ़ सकल्प करें। तभी राम नवमी मनाना सार्थक होगा। और

यावत स्थास्यन्ति गिरयः सरिताश्च महितले।
तावत् रामायण कथा लोकेषु प्रचरिष्यिति ।।

—अशोककुमार आर्य
नन्दनगरी, दिल्ली

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम

—उत्तम चन्द्र 'शरर'

राम नवमी भारत के उस महापुरुष की स्मृति को पुनः ताजा कर पाई है, जो अपने वेदानुकूल आचरण से पुरुषोत्तम की पदवी को प्राप्त कर पाये। सत्य तो यह है कि वेद प्रतिपादित रेखाओं में जीवन का रंग भरकर संसार के सम्मुख श्रीराम ने अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया है श्री राम हर दृष्टि से पुरुषोत्तम है। महाकवि तुलसीदास ने उनकी अनुपम विशेषताओं को देख कर उन्हें नर से नारायण बना दिया। कवि की भावनाओं का आवेग यदि इससे आगे जाने की क्षमता रखता तो वे वहां तक भी पहुंचते। मैं श्री राम की अनुपम महत्ता के सम्मुख नमन करता हुआ भी उन्हें नर मानने के लिए विवश हूं क्योंकि यदि उन्हें नारायण मान लूं तो उनके सारे गुण अपनी महत्ता को खो देते हैं। एक मनुष्य यदि अकेला हो कर भी एक शक्तिशाली सम्राट को परास्त करे तो यह उसकी महत्ता है। भगवान यदि किसी सम्राट को धराशायी कर दें तो कौन-सी बात हो गई। वह तो क्षण भर मे संसार को धूलि धूसरित कर सकता है ?

श्री राम की सबसे बड़ी विशेषता है उनका शील ! वे पितृभक्त हैं, अपने पिता के आदेश को सुनकर वे राज्य को ठोकर मार सकते हैं और १४ वर्ष के बनवास को स्वीकार कर लेते हैं। परन्तु राम की महत्ता कुछ और भी है, वे केवल वनवास को स्वीकार ही नहीं करते, प्रसन्नवदन स्वीकार करते हैं। बाल्मीकि के शब्दों में—

"आहूतस्याभिषेकाय, विसृजस्य वनाय च।
न मया लक्षितः तस्य स्वल्पमपि आकार विभ्रमः।।

राम केवल पिता की आज्ञा का पालन ही नहीं करते, बनवास का आदेश सुनाने वाली कैकेयी का भी पूरा सम्मान करते हैं। जब कैकेयी, चित्रकूट पर्वत पर उन्हें वापस लौटने को कहती है और अपने कृत्य पर पश्चाताप करती कहती है—

युग-युग तक चलती रहे कठोर कहानी,
रघुकुल मे भी थी एक अभागी रानी।

तब विह्वल होकर राम कहते हैं कि माता ! तेरे उपकारो को तो मैं भूल नहीं सकता। पूछने पर कवि के शब्दों में कहते हैं 'सौ बार धन्य वह एक लाल की माई, जिस जननी ने दिया है भरत-सा भाई।' श्री राम का भ्रातृ-प्रेम भी अनुपम है। भरत के अनुनय विनय पर भी राज्य को स्वीकार नहीं करते और अन्त मे १४ वर्ष तक न राम राज्य करते हैं और न भरत, अपितु राम के खड़ाऊं राज्य करते हैं। विश्व-भर में इस अनुपम भ्रातृ-प्रेम की मिसाल नहीं मिल सकती।

राम का पत्नीव्रत धर्म भी अनुपम है। कहते हैं, सीता हरण के पश्चात रावण ने एक बार कुम्भकरण से पूछा कि सीता किसी प्रकार रावण को स्वीकार कर ले, ऐसा उपाय बताया जाये। कुम्भकरण ने कहा कि यह तो सरल मार्ग है। सीता श्री राम को चाहती है और तुम बहुरूपिये हो, राम का रूप बनाओ और सीता के पास जाओ मार्ग प्रशस्त है, रावण ने उत्तर दिया कि मेरी समस्या यह है कि जब-जब भी मैं राम का रूप बनाता हू "माता-सी दीखत नार पराई" यह राम का चरित्र है जिसकी शत्रु भी प्रशंसा करता है। लक्ष्मण का किष्कन्धा पर्वत पर कहा यह श्लोक तो तत्कालीन संस्कृति की महत्ता का द्योतक है जब उसने आभूषणो को देखकर कहा—

"केयूरे नैव जानामि नैव जानामि कुण्डले,
नूपरे तू अहं जानामि नित्यं पादाभिवन्दनात्"

किस-किस रूप को देखें, मेरा राम शत्रु से भी शील का व्यवहार करने मे पीछे नहीं। उनका कथन है "मरणान्तानि वैराणि" रावण के जीवन में भी सन्धि का पूरा प्रयास करते हैं और रावण की मृत्यु के पश्चात भी सम्मान-पूर्वक उसका संस्कार करते हैं।

श्री राम केवल माता पिता तथा भाइयों के लिए आदर और स्नेह के भाजन नहीं, वे प्रजावत्सल भी हैं। अपनी प्रजा के सुख के लिए अपना सर्वस्व लगा सकते हैं। यही कारण है कि राष्ट्रपिता गांधी जी भी स्वराज्य को रामराज्य के रूप में देखना चाहते थे। गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है—

'जासु राज प्रजा दुखियारी,
सो राजा नरक अधिकारी।"

रामनवमी के पावन पर्व पर हम आत्म-निरीक्षण करें, राजा भी तथा प्रजा भी, श्री राम का अनुकरण करें और एक बार पुनः रामराज्य लाकर न केवल गांधी जी के स्वप्न को पूरा करें अपितु भारत को जगत गुरु बनन का गौरव प्रदान कर सकें।

आर्य समाज अशोक विहार-३ के भवन का आधार शिला स्थापन श्री वन्देमातरम्‌जी करेंगे

नई दिल्ली। आर्य समाज मन्दिर अशोक विहार-३ के भवन का आधार शिला स्थापन समारोह आगामी ११ अप्रैल को आयोजित किया जायेगा और आर्य समाज के लौह पुरुष, वयोवृद्ध स्वतन्त्रता सेनानी तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव इस भवन की आधारशिला रखेंगे। यह समारोह वरिष्ठ आर्य नेता श्री राजसिंह जी भल्ला की अध्यक्षता में होगा। अशोक विहार क्षेत्र के प्रमुख सनातन धर्मी नेता श्री कृष्णलाल जी भिखा इस समारोह में विशिष्ट अतिथि होंगे। समारोह के उपरान्त श्री नवीन सब्बरवाल परिवार की ओर से ऋषि लंगर का आयोजन किया जायेगा। दिल्ली के अन्य प्रमुख विद्वानों और विदुषियों के प्रवचन सुनने के लिए समस्त आर्य जन सादर आमन्त्रित हैं।

ओम प्रकाश अरोड़ा	प्रेम सब्बरवाल
मन्त्री	मन्त्रिणी स्त्री आर्य समाज

मुख्यमन्त्री भजनलाल को अमरीका से श्री मदनलाल गुप्त की बधाई

माननीय चौ० भजनलाल जी,
मुख्यमन्त्री, हरियाणा चंडीगढ़ (भारत)

आदरणीय महोदय,

सम्मान पूर्वक नमस्ते !

हरि हर दोनो का प्यारा है, हरियाणे का देश,
हमारा हरियाणे का देस।
विश्व युद्ध मे सभी जानते जर्मन हो या गोरे,
दस बारह से निपट अकेले लड़े हरियाणे के छोरे।
झूम झूम कर नाचे गावें, रह रह करे ठिठोली,
मिसरी जैसी मीठी लागे, उसकी बांगर बोली।

नई दिल्ली मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा मनाए गए महर्षि दयानन्द के बोध दिवस समारोह में पधार कर आपने हरियाणा प्रांत के गौरव को बढ़ाया है। महर्षि दयानन्द के जन्म दिवस पर हरियाणा मे अवकाश की घोषणा भी आप जैसा देशभक्त ही कर सकता है। स्कूल मे बच्चो को पाठ्यक्रम मे आर्यो के विषय मे सही जानकारी देने का आपका निर्णय भी सराहनीय है। हम अपने पूर्वजो आर्य पुत्र राम, कृष्ण, दयानन्द के बताये हुए वेद मार्ग पर चलकर ही भारत मे रामराज्य ला सकते हैं। इस पुण्य कार्य के लिए मैं वैदिक धर्म समाज लास एंजलस की ओर से आपको बधाई देता हूं और आपके स्वस्थ जीवन तथा दीर्घायु की प्रार्थना करता हू। भवदीय

मदन लाल गुप्ता (हरियाणा निवासी)
पुरोहित, वैदिक धर्म समाज
309 1/2 N Atlantic Blvd.
ALHAMBRA CA 91801, U S.A

स्वप्न और आत्मज्ञान

—रामकुमार शास्त्री

"स्वप्+नक्=स्वप्न, अर्थात् शरीर के द्वारा शयन और आत्मा-द्वारा भ्रमण करना 'स्वप्न' है। अथवा स्वप्न देखना स्वय को देखने के समान हैं। और इसी 'स्वप्न दर्शन' के द्वारा हम सरलतापूर्वक स्वय को समझ सकते हैं और सत्य का दर्शन कर सकते हैं।'

किन्तु, हम स्वप्न (सपना) क्यो देखते हैं ? इस विषय में अभी तक कोई पूर्ण एव ठोस उत्तर नही मिल सके हैं। कोई कहता हैं कि—'जो हम दिनचर्या सोचते हैं विचारते हैं, मनन करते हैं, अथवा जिनकी हमे चाह रहती है, वही सारी की सारी भावनाए हम स्वप्न मे देखा करते हैं।" परन्तु यह कोई आवश्यक नहीं कि जो कुछ हम अपनी दिनचर्या मे सोचें विचारें, वही सबका प्रारूप स्वप्न मे देखा करें। कदाचित् तो ऐसा भी होता है कि—"जिस विषय मे ना कभी हमने सोचा है, विचारा है और ना ही कही देखा है, सुना है पुनरपि हम अनजानी चीजो को स्वप्न मे देख लिया करते है। "ऐसा क्यू ?

एक बार राजा जनक ने स्वप्न मे देखा कि— हमारे राज्य पर किसी अन्य राजा ने आक्रमण कर, हमारे राज्य और हमारी सेना को अपने अधीन [illegible] —'जनक ! मैं तुम्हे आज सीमा से बाहर चले जाओ।" राजा जनक ने वैसा ही किया। बेचारे भूखे-प्यासे चले जा रहे हैं। कई दिनो के पश्चात राज्य की सीमा से बाहर हो गये। अब कहने लगे कि—"भाई ! बड़े जोरो की भूख लगी है। कही कुछ मिलेगा ?' कहा—हा थोडी दूर पर सदावर्त बटता है। गरीबो मे खिचडी बाटी जाती है। वहा जाइये, कुछ मिल जाएगा। जब वहा पहुचे तो देखते हैं कि खिचडी बट चुकी है। ये कहने लगे कि महाराज ! जोरो की भूख लगी है, कुछ दीजिए खाने के लिए। उत्तर मिला, 'अब तो कुछ नही है।' उन्होने कहा कि कुछ भी दीजिए। उन सबको दया आई और कहा कि—"अच्छा, जिस बर्तन मे खिचडी बनी थी, उसमे कुछ खुरचने होगी। कहिए तो वो ही ला दे।" इन्होने कहा कि वह मेरे लिए अमृततुल्य हैं। अवश्य ही दीजिये कुछ। एक सेवक गया और बर्तन मे से खुरचन ले आया। राजा जनक ने हथेली फैला दी और उस पर खुरचन दे दी। खुरचन दे जैसे हटा कि एक चील ! पक्षी ने झपट्टा मारा और इनकी हथेली उलट गई। राजा जनक चीख उठे।"

जहा तक स्वप्न की बात है। इनके चीखने से इनकी अपनी निद्रा तो टूट ही गई अन्य सभी दास दासियो सहित रानी की भी निद्रा भग हो गई।

राजा जनक भी सबो की ओर नेत्र घुमाकर देखने लगे। तत्पश्चात् इनके मुख से निकला—'यह सत्य या वह सत्य ? अब सुनने वाले सभी विस्मित हो रहे थे। अनेक शकाए उठने लगी।

एक दिन अष्टावक्र जी पहुचे। उन्हे भी यह बात मालूम हो गई। उन्होने राजा से मिलने की इच्छा प्रकट की। राजा ने अष्टावक्र जी महाराज को देखते ही वह प्रश्न पूछ डाला—'महाराज ! यह सत्य या वह सत्य ?" अष्टावक्र जी योगज्ञान द्वारा सारे रहस्य जान गये और जनक से पूछने लगे कि—'जब आप भूख-प्यास से व्याकुल कई दिन चलकर राज्य सीमा से बाहर हुए, 'उस समय आपका यह राजभवन, राजवेश, रानी, मन्त्री, सेवक आदि थे ? राजा ने कहा—महाराज ! उस समय तो विपत्ति का मारा एकमात्र 'मैं' था।"

पुन अष्टावक्र जी ने पूछा—"निद्रा भग हो जाने पर आपका वह कगाल-वेष, वह भूख-प्यास, वह खुरचन तथा चील पक्षी आदि थे ? जनक ने कहा—महाराज ! वे सब कुछ बिल्कुल नही थे।' तब अष्टावक्र जी ने कहा—राजन् ! जो किसी काल मे रहे और किसी काल मे नहीं रहे, वह सत्य नही है। जनक ने पूछा—तब सत्य क्या है। अष्टावक्र जी बोले, "आप तो वहा थे ? राजा ने कहा—हा, 'मैं' तो था" और निद्राभग हो जाने पर ?" नींद टूट जाने पर अब भी हू।"

तब अष्टावक्र जी ने कहा, "राजन् ! जो जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति सभी अवस्थाओ मे विद्यमान रहे—वह सत्य' है।"

देखिये, अष्टावक्र जी ने कितनी सरलतापूर्वक स्वप्न द्वारा "स्वात्मज्ञान का बोध कराया था।"

तो हा, "यह जो स्वप्न दर्शन होता है यह कौन देखता है ?" जबकि हम उस समय अपने आरामदायक बिछावन पर होते हैं। हमारा शरीर स्थूल होकर बिछावन पर पडा रहता है। उस समय हमारे कान भी स्थूल रहते हैं। जानने की बात तो यह है कि उस समय हमारी आखें भी बन्द रहती हैं, तो भला हम स्वप्न मे सारी वस्तुओ को कैसे देख, सुन लेते हैं ? हमारी सभी इन्द्रिया तो बिछावन पर पडी हैं, फिर हम सुदूर तक कैसे चले जाते हैं और पुन पल मे कैसे चले आते हैं ?

इन सबका उत्तर जानने के लिए प्रथम यह जानना अत्यावश्यक है कि—'हम शरीर' नही आत्मा' है—जो अमर है।' शरीर तो हमारा निवास स्थान है। अत प्राय आत्मा अज्ञान के कारण अपने शत्रु काम क्रोध, मद, लोभ, मोह आदि की सेवाओ मे अहर्निश व्यस्त रहता है अर्थात् स्वय को नहीं जानने के कारण शरीर की वासना (स्वार्थ) के पीछे अहर्निश परेशान रहता है। जब शरीर विश्राम मे होता है, तभी बेचैन आत्मा को भ्रमण करने का अवसर मिलता है और तभी वह शरीर को विश्राम करते छोड, भ्रमण करने को चला जाता है। तभी हम 'आत्मा' स्वसूक्ष्म-दृष्टि से सारी चीजो को

कदाचित् जब हम (तन के वशीभूत आत्मा) किसी वस्तु को देखकर भयभीत हो जाते हैं (जो कि अस्वाभाविक है) तो शीघ्र अपने तन मे आ जाते हैं। यही कारण है कि कदाचित लोग 'स्वप्न-दर्शन' के समय चीख उठते हैं और पूछने पर भय का कारण भी बता देते हैं।

लोग कहते हैं कि 'हमने' स्वप्न मे ये देखा आदि आदि। किन्तु जब भी

(शेष पृष्ठ ८ पर)

कीर्तिशेष आचार्य विश्वश्रवा

डा० भवानीलाल भारतीय

सम्पूर्ण आर्य जगत् और वैदिक विद्वत् वर्ग में यह समाचार अत्यन्त दुःख के साथ सुना जायगा कि गत २८ फरवरी को वेदो के प्रख्यात विद्वान्, ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त, आर्ष प्रज्ञा के धनी तथा आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रति महती निष्ठा रखने वाले आचार्य विश्वश्रवा का बरेली में परिपक्व आयु मे निधन हो गया। आचार्य जी का जन्म बरेली के मीरगंज मोहल्ले में मुन्शी तोताराम के यहां हुआ था। उनका पूर्वनाम रामलाल था किन्तु आर्य जगत में वे आचार्य विश्वश्रवा के नाम से ही प्रसिद्ध हुए। उनका संस्कृत अध्ययन स्वनगर बरेली तथा बाद में काशी तथा लाहौर में हुआ। ओरियण्टल कालेज लाहौर में उन्होने म० म० शिवदत्त दाधिमथ से महाभाष्य पर्यन्त व्याकरण पढ़ा। वहीं के पं० परमेश्वरानन्द शास्त्री उनके वेदाङ्ग गुरु थे तथा निरुक्त का विशद अध्ययन उन्होंने पं० भीमसेन शर्मा (आगरा) से किया। काशी मे अध्ययन समाप्त करके लाहौर चले गये। यहा के विख्यात ओरियण्टल कालेज के प्राचार्य प्रा० वूलनर से उन्होंने भाषाशास्त्र, लिपि विज्ञान तथा पाठालोचन विज्ञान का विशद अध्ययन किया और वैदिक शोध कार्य को पं० [illegible] मधुसूदन ओझा तथा म० म० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी जैसे पण्डितों के समीप रह कर ज्ञानोपार्जन करने का भी उन्हें अवसर मिला। वे डी. ए. वी. कालेज लाहौर के शोध विभाग तथा विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान से भी सम्बद्ध रहे।

मैंने आचार्य जी के भाषण आज से पचास वर्ष पूर्व तब सुने थे जब मैं आठवीं नवी श्रेणी का विद्यार्थी था और जोधपुर की आर्य समाज के वार्षिकोत्सवो में नियमित रूप से उपदेश श्रवणार्थ जाता था। नगर आर्य-समाज जोधपुर का उत्सव दीपावली पर होता और सरदारपुरा की आर्यसमाज होलो पर अपना वार्षिकोत्सव आयोजित करती। इन दोनो कार्यक्रमों में आचार्य जी वर्षों तक निमन्त्रित होकर जाते और प्रायः विनोद में कहते कि देखो, जोधपुर वालों का कितना अत्याचार है कि होली और दिवाली जैसे त्योहारो पर भी वे मुझे घर पर नहीं रहने देते। आचार्य जी की व्याख्यान शैली अत्यन्त आकर्षक, रोचक तथा बोधप्रद होती थी। वे प्रायः किसी वेद मन्त्र को आधार बना कर अपना व्याख्यान आरम्भ करते और कहते ऋग्वेद में एक मन्त्र आता है—इड़ा सरस्वती मही तिस्नोदेवीर्मयोभुवः। और इसके पश्चात वे वेदवर्णित मातृभूमि, मातृभाषा तथा मातृ सस्कृति रूपी तीन देवियों की रोचक व्याख्या आरम्भ कर देते। मैंने उस छात्रावस्था मे ही आचार्य जी को पत्र लिखा और जिज्ञासा की कि आर्य विद्वान 'ज्ञ' को हिन्दी वालो के प्रचलित उच्चारण की शैली पर 'ग्य' क्यो नहीं बोलते और उसे 'ग्यं' क्यो बोलते हैं। आचार्य जी ने मेरे इस बाल सुलभ प्रश्नो का समुचित उत्तर दिया था। वर्षों बाद जब आर्य पत्रों मे अनेक विषयो पर मेरी और आचार्य जी की मनोरजक नोक-झोंक होती तो वे स्नेह भरे लहजे मे अपने लेख मे लिखते—"मै उन दिनो का पण्डित हू जब भारतीय जी बच्चे ही थे और दरी पर बैठ कर मेरा व्याख्यान सुना करते थे।" उनके इस कथन मे तथागत सचाई तो थी ही।

आचार्य विश्वश्रवा यद्यपि अनेक शास्त्रो मे नैपुण्य प्राप्त विद्वान थे किन्तु लेखन कार्य मे वे अधिककृत कार्यता नहीं दिखा सके। यदि वे अन्य वाद-विवादो मे न पड़ कर मात्र साहित्य प्रणयन को ही अधिक समय देते तो वे आर्य साहित्य को समृद्ध कर जाते। १९५१ मे उनका ग्रन्थ यज्ञ पद्धति मीमासा प्रकाशित हुआ जिसमें उन्होने वैदिक यज्ञ पद्धति का विस्तार से निरूपण किया है तथा अनेक शंकास्पद स्थलों का युक्तिपूर्ण समाधान किया है। १९६१ में जब दिल्ली में नवम आर्य महासम्मेलन राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री (तब स्वामी ध्रुवानन्द) की अध्यक्षता मे मनाया गया तब आचार्य जी धर्मार्य सभा के मन्त्री थे। उनका इस बात पर बड़ा जोर रहता था कि आर्यों की सन्ध्या और यज्ञ विधियो मे एकरूपता प्रायः समाप्त हो गई है। भिन्न-भिन्न स्थानो पर आर्य कर्मकाण्डों के अनुष्ठान मे भिन्नता और विविधरूपता दिखाई पड़ती है। यह स्थिति आज भी ज्यों की त्यों है। आचार्य जी ने इसी विडम्बना को ध्यान में रख कर धर्मार्य सभा द्वारा 'यज्ञ पद्धति' की अधिकृत प्रणाली का निर्धारण किया और उक्त सम्मेलन के अवसर पर आयोजित बृहद् यज्ञ में उसकी घोषणा की। तब से सार्वदेशिक सभा का प्रयास रहा है कि आर्यों की सन्ध्या और यज्ञ विधि में सर्वथा एकरूपता रहनी चाहिए और धर्मार्य सभा द्वारा निर्दिष्ट पद्धति का ही संसार भर के आर्यों द्वारा अनुसरण किया जाना चाहिए। मैंने प्रायः देखा है कि अन्य उपदेशक और विद्वान समाजो मे यज्ञादि के अवसर पर मनमानी कार्यविधियो को होता देख कर भी मौन रह जाते है वहां आचार्य जी अपना कर्त्तव्य मान कर आर्यो को इन पद्धतियो मे एकरूपता बरतने के लिये कठोरतापूर्वक निर्देश देते थे।

आचार्य जी की अनन्य ऋषि निष्ठा श्लाघनीय तथा अनुकरणीय थी। कभी-कभी तो दयानन्द के प्रति यह प्रामाण्य बुद्धि अतिवादिता की सीमा तक पहुंच जाती थी तब वे व्याख्यानो में प्रायः घोषित कर देते थे कि स्वामी दयानन्द के ग्रन्थो में पंक्ति या वाक्य तो क्या, एक शब्द, एक अक्षर अथवा या लिपिकर्त्ता की भूल को भी स्वीकार करने के लिये तैयार नहीं होते। वर्षो तक उनका स्व० पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु तथा उनके सुयोग्य शिष्य म० म० युधिष्ठिर जी मीमांसक से अनेक सैद्धान्तिक विषयों पर वाद-विवाद चलता रहा, जो यदा-कदा कटुता की सीमा तक भी पहुच जाता था। तथापि पं० जिज्ञासु जी की मृत्यु के पश्चात उन्होंने यह अनुभव कर लिया कि आर्य विद्वानो का यह मतभेद सामान्य जनो में बुद्धिभेद ही पैदा करेगा, जो कथमपि आर्य समाज के लिये हितकर नहीं है। परिणामतः उन्होने पं० मीमांसक जी से पुनः मधुर सम्बन्ध बनाये और वे यदा कदा घोषित करते थे कि साम्प्रतिक काल में ऋषि के मन्तव्यों को समझने में दो ही समर्थ विद्वान हैं—वे स्वयं तथा पं० युधिष्ठिर जी तृतीयो वा न वा।

आचार्य विश्वश्रवा ने दयानन्द साहित्य का विषद तथा सूक्ष्मेक्षिका से अध्ययन किया था फलतः वे स्वामी दयानन्द के मन्तव्यों और सिद्धान्तो को विश्वसनीय ढंग से व्याख्यान करने की अनुपम योग्यता रखते थे। उनका विचार था कि वेदों पर पृथक और स्वतन्त्र वेदभाष्य लिखने की अपेक्षा स्वामीकृत वेदभाष्य की पुष्टि मे ही कोई विशद टीका या भाष्य उसी प्रकार लिखा जाना चाहिए जिस प्रकार आचार्य शंकर के ब्रह्मसूत्र भाष्य पर आनन्द गिरि की टीका तथा वाचस्पति मिश्र की भामती टीका जैसे पाण्डित्य पूर्ण ग्रन्थ लिखे गये है। उन्होने स्वयं स्वामी दयानन्द के ऋग्वेद भाष्य पर अन्वितार्थ प्रदीप नामक महाभाष्य सस्कृत तथा हिन्दी में लिखना आरम्भ किया था। इसका मुद्रण कार्य यद्यपि कई वर्ष पूर्व वे वैदिक यन्त्रालय अजमेर में आरम्भ करा चुके थे किन्तु अपनी सामाजिक व्यस्तताओ के कारण महाभाष्य लेखन का यह कार्य ऋग्वेद के आदि मन्त्र 'अग्निमीड़े पुरोहितम् की विस्तृत व्याख्या से आगे नही बढ़ा। काश आचार्य जी अन्य कार्यों से विराम लेकर एकमात्र उसी कार्य मे जुट जाते तो वे ऋषि दयानद के वेद भाष्य को तो विद्वज्जन स्वीकार्य करा ही देते, स्वयं को भी अमर कर जाते।

आचार्य विश्वश्रवा प्रायः आर्य पत्रो में जो लेख लिखते थे वे अत्यन्त मौलिक, नूतन ऊहा सम्पन्न तथा आर्यजनो को उद्वेलित, विचलित तथा तत् तत् समस्याओं पर गम्भीरता पूर्वक सोचने के लिये विवश कर देते थे। उनकी दृष्टि मे ऋषि दयानन्द के जीवन को लिखना तथा ऋषि के पत्र व्यवहार की छानबीन करना अत्यन्त अनुपयोगी कार्य थे। जब मेरे ऋषि दयानन्द के जीवन के अनेक ज्ञात अज्ञात पहलुओं को लेकर शोधपूर्ण लेख छपते तो आचार्य जी कभी कभी तरंग मे आकर लिख बैठते इन शोधकर्ताओं को चाहिए कि ऋषि के माता पिता आदि के नामों आदि का अनुसंधान करने के पहले वे अपने घर वालों का ही अनुसंधान करें। इस पर जब मैंने लिखा कि शोधकर्म में तो सभी तथ्यों की खोज की जाती है। यदि देवेन्द्रनाथ

(शेष पृष्ठ ८ पर)

सन १८५७ की क्रान्ति की—

अमर वीरांगना—रानी अवन्ती बाई लोधी

—डा० जयसिंह सरोज, काशीपुर (नैनीताल)

भारतीय सस्कृति की देन है कि यहा मातृ शक्ति हमेशा आदरणीय सम्मा-ननीय तथा परम पूज्या रही है। भारतीय नारी जहा वीर प्रसूता के रूप मे सुविख्यात रही है वही अपनी योग्यता वीरता तथा रण क्षत्रीय कौशल मे अदभुत आभा दिखाकर अग्रणी रहने के इतिहास की स्वय ही रचना कर रही है। भारतीय इतिहास मे इसकी स्वर्णाक्षरो मे अकित वीरता की गाथायें इसके स्वय प्रमाणित साक्ष्य हैं। ऐसी ही सतवन्ती आय समाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती की प्रेरणा से अनुप्राणित राष्ट्रीय गौरव क्रान्ति की बिगुल वादक देश हित आत्मोत्सग करने वाली सन १८५७ की प्रथम क्राति की बलिदानी थी—वीरागना रानी अवन्ती बाई लोधी।

कौन देशवासी ऐसा होगा जिसे अद्वितीय हुतात्मा पर गव न हो नि सन्देह बलिदानी किसी जाति वग विशेष की परिधि मे नही आते वे तो राष्ट्र की जीवित आत्मा होते हैं जो निज रक्त से बलिदान का इतिहास सृजित कर [illegible] जाते हैं। ऐसी ही [illegible] तप, शौर्य, रण कौशल, देशप्रेम की अनन्य पुजारिन, प्रेरणा प्रदायिनी स्वाभि-मानी ऐसी नारी के यशोगान मे लेखनी के प्रति कजूसी न बरतते। कविवर मदन श्रवण कुमार त्रिपाठी, योगेन्द्र त्रिपाठी प० द्वारिका प्रसाद मिश्र, यम्मन सिंह सरस सुविख्यात उपन्यासकार वृन्दावन लाल वर्मा विष्णु दयाल वर्मा रमेल, सी०वाई० बिल्स आर० आर० रेडमेन, विनसेन्ट तथा वाडिगटन ने इस रानी के यशोगान गाकर जो श्रद्धासुमन अर्पित किये हैं उनके प्रति भारतीय जन ऋणी एव आभारी है।

रामगढ की रानी' के नाम से सुविख्यात रानी अवन्ती बाई का जन्म मन खडी जनपद सिवनी (मध्य प्रदेश) के जागीरदार राव जुझार सिंह लोधी राजपूत के यहा १६ अगस्त सन १८३१ के दिन हुआ था। बचपन से ही पिता की यह लाडली बेटी निर्भीक, साहसी एव स्वाभिमानी प्रकृति की थी। वह गौरवर्ण सुन्दर एव बलिष्ठ थी। अश्वारोहण तथा शिकार इनको अतिप्रिय थे। इनका निशान अचूक था। शेर का शिकार ढाल तलवार से ही करती थी। कुशाग्र बुद्धि, विवेक तथा युक्ति युक्त बातो के सम्मुख इनके पिताश्री नतमस्तक हो जाते थे और उनकी अन्तर्रात्मा से शब्द मुखरित होते थे कि बेटी निश्चय ही तुम एक दिन भारतीय इतिहास की अमिट धरोहर बनोगी भारतीयो को तुम पर गर्व होगा।

पिताश्री ने बेटी की इच्छानुसार उसे धनुर्वेद शस्त्रमयी शास्त्रो की शिक्षा दिलाई। कतव्य एव वीरता से परिपूरित गीता महाभारत आदि के अध्ययनकी व्यवस्था की। बेटी की सुन्दरता योग्यता एव अलौकिक व्यक्तित्व का यशो गान चतुर्दिक फैल गया। गुणानुरूप वर मिलने पर अपन बेटी का पाणिग्रहण सस्कार रामगढ के नृपात श्री लक्ष्मणसिंह के पुत्र युवराज विक्रमादित्य सिंह के साथ कर दिया। रानी के दो पुत्र थे। शेरसिंह और अमान सिंह। बडा पुत्र शेरसिंह मात्र ८ वष का था कि राजा विक्रमादित्य सिंह का रूझान वैराग्य की ओर हो गया रानी ने स्वय ही राज्य सचालन करने का निश्चय किया परन्तु डलहौजी ने मनगढन्त आरोप लगाकर नियन्त्रक बैठा दिया तथा राजा को पेन्शन देने की व्यवस्था कर दी।

महर्षि दयानन्द सरस्वती से विमर्शोपरान्त चन्देरी के किले मे मांडला के राजा श कर शाह के सयोजकत्व मे एक गुप्त बैठक का आयोजन हुआ। रानी भी उसमे सम्मिलित हुई। महर्षि के कतव्य पालन राज धम सम्बन्धी व्याख्यान स्वराज्य, स्वदेशी स्वतन्त्रता सम्बन्धी सारगर्भित मार्मिक क्रान्तिकारी उपदेशो से प्रभावित हो ऋषि की अनुगामी बन गयी और स्व की पुर्नस्थापना हेतु प्राण आहुति तक देने का सकल्प ले लिया। उधर क्रान्ति की मश ल प्रज्ज्वलित करने के लिए साहित्य प्रकाशन वितरण क्रान्तिकारी प्रतीक चूडियो का घर घर वितरण, साधु सन्तो द्वारा प्रचार प्रसार का कार्य द्रुतगति से प्रवाहित होने लगा। क्रान्तिदूत के पता चलने पर श कर शाह तथा उनके पुत्र रघुनाथ शाह को वाडिगटन ने तोप से बाधकर बडी निर्दयता एव बबरता से उडा दिया। यह समाचार जब रानी को मिला तो उनमे प्रतिरोध की भावना जाग्रत हो गयी।

राजा विक्रमादित्य सिंह रुग्ण हो गए। चिकित्सा आदि से कोई लाभ नही पहुचा और स्वग सिधार गये। रानी पति वियोग को विधि की विडम्बना स्वीकारते हुए वज धातु की भाति विचलित न हुई। पति की प्रज्वलित चिता पर शपथ ली कि आपकी इच्छाओ को पूण करने के लिए सतपुरा पहाडियो से फिरगी विदेशियो को निकालकर उनके रक्त से आपका तपंण करू गी।

देशवासियो की दुर्दशा दीनहीनता के प्रति वह चिन्तित एव व्यथित रहने लगी। उनका मानना था कि समाज मे व्याप्त पारस्परिक कलह आपसी फूट जातिवाद ऊच नीच गरीब अमीर का भेदभाव अशिक्षा आपसी सामजस्य एव एकत्व मे बाधक है। मानव मानव के मध्य भेद नही होना चाहिए, अस्पृश्यता शब्द उनके शब्दकोष मे न था। परिवार जन एव प्रजाजन न्यायिक [illegible] एक सा बर्ताव किया जाता था।

मोह ममता तथा राज्य सुख का परित्याग कर नमदा सम्भाग मे घूम घूम कर रानी ने क्रान्ति की ज्योति देशवासियो के आन्तरिक भवन मे प्रज्वलित की। कृषक मजदूर सभी को घर घर ग्राम ग्राम मे यौद्धेय कौशल मे प्रशिक्षित किया। लोगो को देशहित मे सभी भेदभावो को तिलान्जलि देकर सगठित होकर सघष करने का आह्वन किया। अग्रेजो की कूट नीति फूट डालो और राज्य करो' के प्रति जनता को सचेत एव जाग्रत किया। उन्होने युवाओ मे दासत्व मे जीना नरक है जो मनुष्य अपनी शक्ति पर भरोसा कर जीता है वह यश कीर्ति ही अर्जित नही करता बल्कि शरीर त्याग कर अमरता के साथ शान्ति एव सदगति को प्राप्त करता है क्षत्रिय का जीवन ससार मे युद्ध निमित्त होता है युद्ध मे विजय हो या वीरगति प्राप्त हो उसे स्वर्ग मिलता है, अपनी सस्कृति की रक्षाथ प्राण त्याग करना क्षत्रिय धर्म है की भावना का सचार किया।

(क्रमश)

स्वप्न और आत्मज्ञान

(पृष्ठ ५ का शेष)

स्वयं को आत्मा' नहीं, 'शरीर' मात्र ही मानते हैं और इसी की वासना के पीछे लगे रहते हैं। यह हम मानवों का दुर्भाग्य है। यदि लोग 'शरीर' को ही 'हम' मानते हैं, तो शरीर की आंखों से स्वप्न क्यों नहीं देख लेते ?

उदाहरणार्थ तो आत्मा का उदाहरण एकमात्र परमात्मा ही है। पुनरपि हमने लोगों को समझाने के लिए सांसारिक वस्तु के साथ उदाहृत किया है, जो उपयुक्त होता है। यथा बिजली की दो तारें, एक ठण्डी तथा दूसरी 'गरम' से बल्ब जलता है। उसी प्रकार 'शरीर' भी दो तत्वों से कार्य करता है और गरमी—जो शरीर को आहार द्वारा मिलती है। यहां ध्यान देने की बात यह है कि, "जब हम 'आत्मा' स्वप्न के समय भ्रमण करने चले जाते हैं, तो लोग मरते क्यूं नहीं ? उनमें तो उस समय रक्त-संचार होते ही रहता है।"

अब आप भी बता सकते हैं कि—"ठण्डी तार के पृथक् हो जाने पर [बल्ब अवश्य बुझ जाता है पर, क्या उसमें से बिजली भी चली जाती] है ?" नहीं, क्योंकि उसमें तो 'गरमी' की तार है ही। उसी प्रकार 'स्वप्न-दर्शन' (आत्म-भ्रमण) के समय 'शरीर' कार्य करना अवश्य छोड़ देता है, पर 'शरीर' में तो 'गरमी' है ही। हां यह हो सकता है कि अचानक शरीर से 'गरमी' चली जाये तो कुछ [illegible] (सम्भवत: यही कारण है कि सहसा शरीर से गरमी निकल जाने पर चिकित्सक (डाक्टर) शीघ्र गर्मी की सुई देकर प्राण को लौटा लेते हैं। यदि गरमी देने में विलम्ब हो जाए, तो 'आत्मा' सदा के लिये शरीर को छोड़कर चला जाता है, जिसे मृत्यु हो जाना कहते हैं।)

आज प्राय: सभी आत्माएं अज्ञानवश 'शरीर' के वश मे रहते हैं। शरीर को, इन्द्रियों को आत्मा के वश में होना स्वाभाविक है। तभी तो 'आत्म विस्मृति' को दु:ख का मूल कारण माना गया है।

शरीर-इन्द्रियां जिस वासना की ओर जाती हैं, 'तन के वशीभूत' आत्मा भी उसी का अनुचर बन जाता है। तात्पर्य यह है कि—"शरीर जिस-जिस वस्तु की चाह लिये बेचन रहता है, अनुचर आत्मा भी प्राय: वसे ही स्वप्नो को सृजन करता रहता है। युवा काल में ऐसी ही कुछ चाह-वासना के कारण 'वीर्य-स्खलन' हो जाता है, जिसे 'स्वप्नदोष' कहते हैं। तभी तो जो कौमार्यव्रत का पालन करते हैं, वे बुरी चाह-वासना का चिन्तन नहीं करते। अत: 'स्वप्न-दोष' नहीं होता।

लोग कहते हैं कि गम्भीर निद्रा में स्वप्न नहीं आते। ऐसा क्यूं ? क्योंकि उस समय आत्मा सारे दिन शरीर की उलझनों में फंसे रहने के कारण, उस समय विश्राम में रहता है और गम्भीर निद्रा उसी को आती है, जो शारीरिक-श्रम मानसिक श्रम की अपेक्षा अधिक किया करते हैं तथा जो मानसिक कार्य अधिक किया करते हैं, उन्हें प्राय: गहरी नींद नहीं आती, एवं गम्भीर निद्रा-भाव के कारण वे अर्थात् उनके आत्मा अधिक भ्रमण किया करते हैं। एतदर्थ ऐसे लोग अधिक स्वप्न देखा करते हैं।

अत: जिनके आत्मा 'शरीर के वश में नहीं, 'प्रत्युत् शरीर को ही (इन्द्रियों को ही) अपने वश में रखते हैं, (जो स्वाभाविक है) और जो ऐसे पवित्रात्मा को महात्मा धारण करते है, उनका कर्म भी सत्य, शिव और महान होने के कारण, ऐसे महात्मा पुरुष बहुत कम स्वप्न देखा करते हैं, क्योंकि आत्मा अपनी इच्छानुसार 'शरीर से' कार्य करवाता है और सदा प्रसन्न रहता है, जिससे कार्य का उत्तम होना स्वाभाविक है। अत: ऐसे ज्ञानी आत्मा शरीर के विश्राम करने पर वह स्वयं भी विश्राम करता है। कदाचित् भ्रमण करता भी है तो, मात्र "सत्यदर्शन" के लिये। अर्थात् ऐसे महात्माओं के 'स्वप्न' प्राय: सत्य ही हुआ करते हैं।

(पृष्ठ ६ का शेष)

मुखोपाध्याय जैसे ऋषि चरित के अन्वेषक स्वामी जी के जन्मदाता पिता करसन जी तिवारी के नाम का पता नहीं लगाते तो हम महाराज ने पुण्य-श्लोक जनक के बारे में इच्छित जानकारी कैसे प्राप्त करते ? तथापि स्वयं आचार्य जी भी स्वामी दयानन्द के जीवन के ज्ञात अज्ञात तथ्यों पर स्वव्याख्यानों में रोचक प्रकाश डालते थे और ऋषि के योग गुरुओ (ज्वालानन्द पुरी, शिवानन्द गिरि, भवानी गिरि) तथा विद्या गुरुओ (स्वामी विरजानन्द, कृष्ण शास्त्री आदि) का साधिकार उल्लेख करते थे। एक ऐसे ही हमारे पारस्परिक वाद-विवाद में आचार्य जी ने स्वीकार किया कि ऋषि दयानन्द के जीवन के सम्बन्ध में भारतीय जी की जानकारी अत्यन्त प्रामाणिक, प्रौढ़ तथा तलस्पर्शी है। मेरे लिये तो आचार्य जी द्वारा प्रदत्त यह प्रशंसा पत्र अभिनन्दनीय ही था।

विगत वर्षों में आचार्य जी के साथ विभिन्न स्थानो में अनेक बार रहने, विचार विमर्श करने तथा उनके द्वारा प्रस्तुत की जाने वाली अनेक योजनाओं को क्रियान्वित करने के पचासों अवसर आये। १९९१ के अप्रैल मास में जब वे गुरुकुल कांगड़ी के उत्सव पर वेद सम्मेलन की अध्यक्षता के लिये आये तो मुझ से उनका पर्याप्त समय तक विचार विमर्श चलता रहा। उनके मस्तिष्क मे अनेक प्रकार की योजनायें थीं। वे निरुक्त विषयक अपनी जानकारी को किसी योग्य शिष्य को दे जाना चाहते थे। लेखन के विषय में भी उनके कई कार्यक्रम थे जो वृद्धावस्था, नेत्र ज्योति के क्षीण होने तथा शारीरिक क्षीणता के कारण पूर्ण नहीं हो सके। अब तो आचार्य विश्वश्रवा कीर्ति शेष ही रह गये हैं।

महात्मा वेदभिक्षु हिन्दुत्व के अनन्य रक्षक थे

नई दिल्ली, १४ मार्च। यहां आर्य समाज मन्दिर (मन्दिर मार्ग) मे आयोजित एक समारोह मे आर्य समाज के शीर्षस्थ विद्वान पत्रकार तथा वेदो के नितान्त प्रचारक महात्मा वेदभिक्षु जी को हार्दिक श्रद्धाजलि अर्पित की गई।

भाजपा के वरिष्ठ नेता केदारनाथ साहनी ने कहा कि आज जबकि देश मे हिन्दू विरोधी राष्ट्रद्रोही तत्व सक्रिय हैं महात्मा वेद भिक्षु जैसे निर्भीक पत्रकार की नितान्त आवश्यकता है जो इनका भाडा फोड कर सके। उन्होने कहा कि आज एक विवादित ढाचे को तोड दिये जाने पर पूरे देश के कथित बुद्धिजीवी शोर मचा रहे है। जबकि कश्मीर म सकडो मन्दिर तोडे जाने पर किसी का मु ह नही खुला। मैंने स्वय श्रीनगर घाटी मे जाकर ऐसे अनेक ध्वस्त मन्दिरो को देखा था। आज झूठा प्रचार किया जा रहा है कि कोई मन्दिर नहीं तोडा गया

श्री साहनी ने बम्बई के नरसहार के लिए मुस्लिम उग्रवादियो को जिम्मेवार ठहराया। आर्य सन्यासी महात्मा आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि महात्मा वेद भिक्षु ने हिन्दुत्व की रक्षा के लिए जो काय किया उसे भुलाया नहीं जा सकता।

स्वामी वेद भिक्षु जी के अनन्य सहयोगी प्रो० रतनसिंह जी ने उनके गाजियाबाद के अनेक सस्मरण सुनाते हुए कहा कि उन्होने वेदो को घर-घर पहुचाने का सकल्प लिया जिसे पूरा कर दिखाया। वे तथा राकेश रानी दोनो ऋषि दयानन्द के सच्चे भक्त हैं। वयोवृद्ध पत्रकार सत्यपाल शास्त्री श्री रामनाथ सहगल, वरिष्ठ पत्रकार बनारसी सिंह, हिन्दू महासभा के नेता प० इन्द्रसेन शर्मा, उद्योगपति रमेशचन्द्र चोपडा ने भी महात्मा वेदभिक्षु को श्रद्धाजलि अर्पित की।

जन ज्ञान की सम्पादक श्रीमती राकेश रानी की सभी ने प्रशसा की कि वे निर्भीकता पूर्वक अपने पतिदेव के अधूरे काम को पूरा करने के लिए सघर्षरत है।

आर्य समाज लन्दन द्वारा आर्य पर्व समारोह पूर्वक आयोजित किए गए

आर्य समाज लन्दन द्वारा वन्देमातरम भवन मे शिवरात्रि पर्व (महर्षि बोधोत्सव) और सीताष्टमी पर्व उत्साह पूवक मनाये गये। इनके अतिरिक्त सस्कृत दिवस का भी आयोजन किया गया। इस अवसर पर आय प्रतिनिधि सभा इगलैण्ड के प्रधान श्री सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज ने कहा कि सस्कृत केवल यूरोप की भाषाओ के साथ ही जुडी हुई नही है अपितु यह ससार की समस्त भाषाओ की जननी है। उन्होने सस्कृत भाषा के साथ जुडे हुए पाश्चात्य जगत के अनेक विद्वानो की चर्चा करते हुए उनके योगदान की सराहना की।

युवक सास्कृतिक कार्यक्रम मे श्री भारद्वाज जी ने वीर हकीकतराय के बलिदान पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर यह भी बताया गया कि आय समाज की मासिक आय पत्रिका दिसम्बर ९२ और जनवरी ९३ मे प्रकाशित नही हो सकी क्योकि अयोध्या मे राममन्दिर के पुर्ननिर्माण के मामले को लकर यहा आयसमाज मन्दिर मे तोडफोड और आगजनी के कारण भारी क्षति पहुची थी। यह भी निर्णय हुआ कि १८ अप्रैल १९९३ को गायत्री यज्ञ होगा और उसी दिन आर्यसमाज स्थापना दिवस का कार्यक्रम धूमधाम से मनाया जायेगा।

—मन्त्री आय समाज लन्दन

वैवाहिक आवश्यकता

क्षत्रिय कुलोत्पन्न २७ वर्षीया गृह कार्यों, सिलाई कढाई भोजन बनाने आदि में दक्ष, स्वभाव से गम्भीर विचारशील, एम ए अर्थशास्त्र, बी एड, वकालत की परीक्षा दे रही, अध्यापन कायरत गोर वर्ण सुन्दर मुखाकृति पाच फिट तीन इच लम्बी कन्या के लिए निव्यसनी आर्य वर की आवश्यकता है। शिक्षा क्षेत्र मे कार्यरत युवक को वरीयता दी जाएगी। जन्मजाति का बन्धन नहीं है। दहेज के इच्छुक महानुभाव पत्र-व्यवहार करने का कष्ट न करें।

व्यवस्थापक—वैदिक सस्थान, नजीबाबाद
जनपद-बिजनौर, (उ० प्र०)-२४६७६३

डा० शिवकुमार शास्त्री—एक परिचय

डा० शिवकुमार शास्त्री का पैतृक गाव दिल्ली के सन्निकट अकबरपुर बारोटा, जिला सोनीपत (हरियाणा) मे है। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा इसी गाव मे हुई। तत्पश्चात गुरुकुल घरोण्डा दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार और गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के प्रतिष्ठित स्नातक बने। मेरठ विश्वविद्यालय से एम ए करने के बाद दिल्ली म अध्यापन काय प्रारम्भ किया। इस समय दिल्ली प्रशासन के शिक्षा निदेशालय मे सेवारत है।

श्री शास्त्री आर्य समाज के प्रखर वक्ता अद्वितीय लेखक एव अनेक सस्थाओ के अधिकारी हैं। समाजसेवा एव दानशीलता इन्हे पैतृक विरासत मे मिली है। स्वभाव के बड मधुर सादगी के पुञ्ज सच्चरित्र और ईमानदार हैं बडे विनम्र मिलनसार और विनोदी है। इस समय दिल्ली मे इनका अपना आवास है—जे-१८६ विकासपुरी नई दिल्ली ११००१८।

वार्षिकोत्सव

—आय समाज इगलास का वार्षिकोत्सव २८ से ३० जनवरी तक श्री चन्द्रपाल आर्य की अध्यक्षता मे समारोह पूवक मनाया गया। इस अवसर पर आय जगत मे ख्याति प्राप्त महात्मा तथा विद्वानो ने पधार कर समारोह को सफल बनाया।

११० वर्ष बाद ऋषि दयानन्द की इच्छा पूर्ण हुई

मृत्यु से एक वष पूव की गई अपनी वसीयत मे ऋषि ने अपने ग्रन्थो के भाष्य किय जाने की इच्छा व्यक्त की थी। तदनुसार पहली बार १९८२ में सस्कृत हिन्दी तथा अग्रेजी मे अनेक कालजयी ग्रन्थो के लेखक तथा आर्य समाज को सर्वात्मना समर्पित वैदिक विद्वान स्वामी विद्यानन्द सरस्वती ने इस महान काय को करन का सकल्प किया। उदयपुर के जिस महल मे बैठकर ऋषि ने अपने सर्वाधिक महत्वपूण एव क्रान्तिकारी ग्रन्थ सत्याथ प्रकाश की रचना की थी राजस्थान सरकार द्वारा उस महल को आय समाज को भेंट किय जान के एतिहासिक अवसर पर २८ नवम्बर १९९२ को वीतराग स्वामी सर्वानन्द जी की अध्यक्षता मे स्वामी विद्यानन्द जी द्वारा बड आकार (२०×३०×८) के दो हजार पृष्ठो मे लिख सत्यार्थ भास्कर के प्रथम खण्ड का लोकार्पण समारोह सम्पन्न हो गया। सत्यार्थ प्रकाश के इस भाष्य मे ऋषि क मन्तव्यो की विस्तृत व्याख्या तथा अतिरिक्त युक्तियो व प्रमाणो से उनकी पुष्टि की गई है। इसे पढने पर सत्यार्थ प्रकाश सम्बन्धी प्राय सभी शकाओ का समाधान हो जाता है।

इससे पूर्व स्वामी विद्यानन्द जी द्वारा भूमिका भास्कर' नाम से बृहदाकार दो भागो मे किया गया ऋग्वेद भाष्य भूमिका का भाष्य प्रकाशित हो चुका है।

(१) सत्यार्थ भास्कर के दोनो भागो का मूल्य क्रमश चार सौ व तीन सौ रुपये है। किन्तु ३१ मार्च १९९३ तक मूल्य जमा कराने वालो को दोनो भाग केवल पाच सौ रुपये मे मिलेंगे।

(२) पूजनीय स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती द्वारा रचित अन्य ग्रन्थ भूमिका भास्कर के दोनो भाग केवल तीनसौ रुपये मे उपलब्ध है।

प्राप्ति स्थान (१) इन्टरनेशनल आर्यन फाउन्डेशन
C/o कैप्टन देवरत्न आय ६०३ मिल्टन अपाटमेन्ट्स,
जुहूतारा, बम्बई ४०००४९
(२) रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ सोनीपत
दूरभाष-निवास--६४६२१८०, ६४६११३१

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के तत्वावधान मे—

शराबबन्दी आन्दोलन ने जोर पकड़ा

हरियाणा राज्य की स्थापना के समय राज्य मे १३ लाख लीटर शराब की खपत होती थी वह बढते बढते ९२ ९३ मे १६ करोड लीटर हो गई है। यानि पिछले २७ वर्ष मे हरियाणा मे शराब का उद्योग प्रगति पर है जबकि अन्य सब उद्योग पीछे रह गए हैं। सरकार ने राजस्व की प्राप्ति के लिए शराब को गावो के विकास के साथ जोड दिया है और लगभग एक हजार गांवो मे शराब के ठेके खोल दिए हैं।

शराब के दुष्परिणामो को झेलत झेलते गावो मे भीषण प्रतिरोध पैदा हो गय। है। जनता के समर्थन के साथ आय समाज ने शराब बन्दी आदोलन को व्यापक रूप दे दिया है और इसका सचालन हो रहा है आय प्रतिनिधि सभा हरियाणा के द्वारा। प्रतिनिधि सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी कई बार स्वय आन्दोलन कारियो का नेतृत्व कर चुके हैं। आर्य समाज के इस राज्य व्यापी आन्दोलन से राज्य मे जैसे शराब पीने वालो की शामत ही आ गयी है। गावो मे शराब पीने वालो का सामाजिक बहिष्कार हो रहा है। शराब के ठेको के साथ घाघरी, चूडिया और जूते चप्पलो की माला टाग, धरना दे रहे ग्रामीण युवा किसान और महिलाए 'जगह-जगह--शराब हटाओ--हरियाणा बचाओ' के नारे लगा रहे है।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्र डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने अन्य प्रान्तीय सभाओ और आर्य समाजो से भी अनुरोध किया है कि वह भी अपने अपने राज्यो मे शराब बन्दी के लिए आदोलन चलाकर इसे राष्ट्व्यापी आदोलन का रूप द।

शुभसम्वत्सर

आशा वितान फल साधक दुरित दुर्गुण बाधक।
सौख्य वीणा वादक भवतु शुभसम्वत्सर॥
हर्षोल्लास प्रदायक जीवननौकाया नायक।
उत्तम गुण गण गायक भवतु शुभ सम्वत्सर॥
मानोन्नति प्रसारक विघ्नबाधानिवारक।
शान्ति सन्देश प्रचारक भवतु शुभसम्वत्सर॥
धर्मराष्ट्र सरक्षक धर्मद्वेषिणा भक्षक।
ऐश्वय समृद्धि वधक भवतु शुभसम्वत्सर॥
अपराधाना नियामक योगक्षेम विधायक।
राष्ट्रभक्तोलासक भवतु शुभ सम्वत्सर॥

—डा० रविदत्त शर्मा आचार्य
आयसमाज नया कविनगर गाजियाबाद

निर्वाचन

—आर्य समाज इगलास अलीगढ, श्री चन्द्रपाल गुप्त प्रधान, रामप्रसाद आर्य मन्त्री, श्री रामस्वरूप सिंह, कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज धुर्वा श्री रमेश चन्द्र नाथ प्रधान श्री गोपीमण्डल मन्त्री, श्री स्वदेश कुमार कोषाध्यक्ष।

—आय समाज मल्हार ग ज इदौर श्री गणपति वर्मा प्रधान श्री नरेन्द्र-कुमार आय मन्त्री श्री सोमदेव वर्मा कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज अटाजपुर भीलवाडा, श्री जगदीश प्रसाद जी भंवर प्रधान श्री महेन्द्र कुमार आर्य मन्त्री श्री श्यामलाल जी पन्निया कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज श्रृगार नगर लखनऊ श्री रूप चन्द्र दीपक प्रधान, श्री अमृतलाल गुप्त मन्त्री, श्रीमती रश्मि भारद्वाज कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज अमहरा सोनो जि० जमुई बिहार, ड० मटुकधारी प्र० आर्य प्रधान, श्री शकर प्रसाद आर्य मन्त्री श्री प्रेमानन्द आर्य कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज मानपुर, श्री धीरेन्द्र कुमार आर्य प्रधान, श्री प्यारचन्द कुमार मोहन मन्त्री, श्री ज्ञानप्रकाश आर्य कोषाध्यक्ष।

गुरुकुल ज्वालापुर का ८६वां वार्षिक महोत्सव

हरिद्वार। अखिल भारत [illegible] संस्था गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर क[illegible] १० से ११ अप्रैल ९३ तक बड़ी धूम-धाम से [illegible]

संस्था के प्राचार्य डा० हरिगो[illegible] कि इस वर्ष महोत्सव में वेद, आर्य, शिक्षा, राष्ट्र-र[illegible] सम्मेलनों का विशेष आयोजन किया गया है।

इस अवसर पर देश के विशेष मूर्धन्य विद्वान्, आर्य संन्यासी, महोपदेशक, भजनोपदेशक एवं केन्द्र और प्रदेश के राजनेता पधार रहे हैं।

वार्षिक महोत्सव में गुरुकुलीय छात्रों का विशेष व्यायाम प्रदर्शन भी होगा जिसमें डम्बल, लेजियम, मुग्दर, कार रोकना, जंजीर तोड़ना आदि का चित्ताकर्षक प्रदर्शन किया जायेगा। इसका संयोजन गुरुकुल के प्राचीन स्नातक, आधुनिक भीम, गुरुकुल कण्वाश्रम के संस्थापक ब्र० विश्वपाल जयन्त करेंगे।

श्री प्रीतमचन्द्र विज का दुःखद देहावसान

दिल्ली २३ मार्च।

आर्य समाज के अनन्य प्रेमी एवं योगाभ्यासी श्री प्रीतमचन्द्र विज का २३ मार्च को उनके निवास कृष्णनगर में देहावसान हो गया। श्री लाला प्रीतमचन्द्र जी श्री स्वामी योगेश्वरानन्द जी के अग्रिम शिष्यों में से थे। वे वर्षों से स्वामी जी के साथ ऋषिकेश, हरिद्वार, उत्तरकाशी आदि स्थानों पर योगाभ्यास के लिए जाते थे। वे आर्य समाज के सभी कार्यक्रमों में अपना सहयोग देते थे। उनके निधन से आर्य माज की जो महान क्षति हुई है उसे पूरा नहीं किया जा सकता। आज दिनांक २६ मार्च शाम ३ बजे आर्य समाज कृष्णनगर में उनकी याद में एक शोक सभा हुई जिसमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने बताया कि श्री प्रीतमचन्द्र जी आर्य समाज के अनन्य भक्त थे उन्होने कहा कि जब मैं पहली बार कृष्णनगर में आया तो सबसे पहले मेरी भेंट उनसे ही हुई थी उनसे मिलकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। वे सदैव आर्य समाज का प्रचार प्रसार करतेरहे। उनके जीवन के संक्षिप्त संस्मरणों पर प्रकाश डालते हुए स्वामी जी ने कृष्णनगर के अन्य अनेकों प्रशंसकों के साथ श्री विज को श्रद्धांजलि अर्पित की।

निर्वाचन

—आर्य समाज विज्ञान नगर कोटा, श्री गिरधारी लाल छावड़ा प्रधान, श्री जे० एस० दुबे० मन्त्री, श्री महेन्द्र कुमार रस्तोगी कोषाध्यक्ष।

वैदिक साहित्य वितरण समारोह

आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर ९ अप्रैल ९३ को दोपहर ३ बजे से ६ बजे तक पैराडाइज पब्लिक स्कूल सी० ४७ किरन गार्डन नजफगढ़ रोड नई दिल्ली ५९ (फोन न० ५५९३०१०)में सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री विक्रम कपूर की अध्यक्षता में वैदिक साहित्य वितरण समारोह उल्लासपूर्ण वातावरण में मनाया जा रहा है। इस समारोह का उद्घाटन डा० सच्चिदानन्द शास्त्री मन्त्री सार्व० सभा द्वारा सम्पन्न होगा तथा समारोह के प्रमुख अतिथि स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी प्रधान सार्व० सभा होंगे। इस अवसर पर श्री तिलक राज चोपड़ा, श्री रामस्वरूप सेठी, श्री चमनलाल ग्रोवर, श्री सूर्यदेव, डा० धर्मपाल, ब्र० राजसिंह सहित अनेको गणमान्य व्यक्ति पधार रहे हैं। कार्यक्रम के संरक्षक श्री व्यास देव मेहता तथा श्री मंगतराम आर्य। संयोजक

—पं० अशोक कुमार

विषैली वायु और धूम (धुवें) से बचाव

वायु और धुवें में यदि विष का प्रकोप या प्रवेश हो जावे, उस समय पक्षी तड़प-२ कर पृथ्वी पर गिरने लगे और मनुष्यों को खांसी जुकाम, सिर पीड़ा, नेत्र रोग जैसे दीखना बन्द और स्वास कष्ट हो तो तुरन्त निम्न उपचार प्रारम्भ करने से यह सब दोष शान्त होगे।

वायु की शुद्धि के घटक :

लाख, हलदी, अतीस, बड़ी हरड़, नागर मोथा, रेणु का बीज, इलायची बड़ी, पत्रज, दालचीनी, लोग तज, कूट प्रियगु, नीम पत्र, वायविड़ङ्ग, गिलोय, आक (मदार) के फूल, शीशम देव दारु, कपूर, जायफल, जावित्री, धूपकाष्ट, बालछड़, तगर (मुश्कवाला)। —'विष चिकित्सा विज्ञान से'

सबको कूटकर सामग्री बना लें सब औषधियां समभाग लें और शुद्ध गौ घृत मिलाकर थोड़ी तर कर लें और प्रयोग में लावें इसमें कोयलों की अग्नि या गोहे की बिना धुवें की अग्नि पर डाल कर सुगन्धित धुंआ भी किया जा सकता है और अग्निहोत्र भी।

संकलन तथा प्रकाशक

डा० ओम प्रकाश शर्मा

सब्जी मन्डी, नानौता जिला सहारनपुर (उ०प्र०)

आवश्यकता है

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री मुनीश्वरानन्द भवन, नयाटोला, पटना-४ के अधीन वैदिक धर्म प्रचारार्थ वैदिक सिद्धांतों के मर्मज्ञ, गुरुकुलों के स्नातकों, संस्कृतज्ञों तथा व्याख्यान कला में दक्ष ५ विद्वान, उपदेशकों, संगीत तथा सिद्धान्तों के प्रवीण ५ आर्य भजनोपदेशकों तथा ढोलक या तबला मे अच्छी जानकारी रखने वाले ५ ढोलकियों की आवश्यकता है।

अन्य प्रान्तीय सभाओं की अपेक्षा योग्यता अनुसार वैदिक विद्वानों को दो से तीन हजार, भजनोपदेशकों को डेढ़ से दो हजार तथा ढोलकियों को एक हजार की मासिक दक्षिणा दी जायेगी। भोजन तथा आवास की सुविधा निःशुल्क है। इनको प्रचारार्थ सुदूर गांवों तथा वन पर्वतों के बीच, वार्षिकोत्सवों, संस्कारों तथा यज्ञों में जाना पड़ेगा। सभा प्रधान के नाम से १३-४-९३ तक पूर्ण विवरण के साथ आवेदन पत्र भेजे।

भूपनारायण शास्त्री प्रधान
बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा,
नया -टोला, पटना४

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० एस० ११०४९/९३ सार्वदेशिक साप्ताहिक (४-४ १९९३) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (C) ९३
R N 626/57 Licensed to post without prepayment License No U (C) 93 Post in N D P S O on 1 2-4-1993

नवीन आर्य समाज की स्थापना

प० आर्येन्द्र कुमार वैदिक स० शास्त्री प्रचारक हृष वधन के० एण्ड मि० लिमिटेड अन्तर वेलिया झाबुआ के प्रयास द्वारा ग्राम बरखेडा पो० कल्याण पुरा जि० झाबुअ म सवसम्मति से आर्य समाज की स्थापना की गई। श्रीमती मनीषा वैदिक शिक्षिका महर्षि दयानन्द सेवाश्रम अन्तर वेलिया व महर्षि दयानन्द बालवाडो अन्तर वेलिया के छात्र भी उपस्थित थे। ग्राम बखेडा के प्रमुख कायकर्त्ता श्री कृष्णसिंह वामनिया ने अपनी निजी भूमि मे से १ बीघे भूमि का दान आय समाज बरखेडा को दिया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

द्वारा आयोजित

सत्यार्थ-प्रकाश पत्राचार प्रतियोगिता

-: पुरस्कार :-

प्रथम : ११ हजार द्वितीय : ५ हजार तृतीय: २ हजार

न्यूनतम योग्यता : १०+२ अथवा अनुरूप

आयु सीमा : १८ से ४० वर्ष तक

माध्यम : हिन्दी अथवा अंग्रेजी

उत्तर पुस्तिकायें रजिस्ट्रार को भेजने की अन्तिम तिथि ३१-८-१९९३

विषय :

महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश

नोट। —प्रवेश, रोल न० प्रश्न-पत्र तथा अन्य विवरण के लिए मात्र बीस रुपये नगद या मनीआर्डर द्वारा रजिस्ट्रार, परीक्षा विभाग सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नयी दिल्ली-२ को भेजे। पुस्तक अगर पुस्तकालयो पुस्तक विक्रेताओ अथवा स्थानीय आर्य समाज कार्यालयो से न मिले तो तीस रुपये हिन्दी सस्करण के लिये और पैंसठ रुपये अग्रेजी सस्करण के लिये सभा का भेजकर मगवाई जा सकती हैं।

(२) सभी आर्य समाजो एव व्यक्तियो से अनुरोध है कि इस तरह के हैंडबिल ४-५ हजार छपवाकर आर्यजनो, स्थानीय स्कूल कालेजो के अध्यापको और विद्यार्थियो मे वितरित कर प्रचार बढाने मे सहयोग दें।

डा० ए. बी. आर्य
रजिस्ट्रार

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

महर्षि दयानन्द उवाच

- यदि आर्यसमाज मे किसी का आपस मे झगडा हो तो उनको योग्य है कि उसको आपस मे समझ ले या आर्य समाज की न्याय सभा द्वारा उसका न्याय करा ले।
- जब तक नौकरी करने और कराने वाला 'आर्य समाजस्थ न मिले, तब तक और की नौकरी न करे और न किसी और को नौकर रखें। वे परस्पर स्वामी-सेवक भाव से यथावत् वर्त।

सम्पादक—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री दूरभाष । ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पसे
वर्ष ३१ अंक १०] दयानन्दाब्द १६९ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९३ वैशाख कृ० १२ सं० २०५० १८ अप्रैल १९९३

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय में महर्षि के जीवन और उनकी शिक्षाओं के शोध एवं अध्ययन की व्यवस्था की जाये

राजस्थान के राज्यपाल डा० एम. चेन्नारेड्डी को सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का विशेष-पत्र

महामहिम, डा० एम० चेन्नारेड्डी जी
राज्यपाल—राजस्थान सरकार
राज निवास, जयपुर

सेवा मे सादर नमस्ते।

आशा है प्रभु कृपा से सर्वथा आनन्दपूर्वक होगे।

मुझे पता चला है कि आपने १० मार्च १९९३ को अजमेर मे महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय के पुस्तकालय भवन का शिलान्यास करते हुए यह घोषणा की थी कि आप राजस्थान के सारे विश्वविद्यालयो मे एकरूपता लाने के लिए एक नया अधिनियम बनाने का विचार कर रहे हैं।

इस सम्बन्ध मे मेरा आपसे विशेष रूप से निवेदन है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती महान समाज सुधारक थे। सम्पूर्ण मानव समाज मे वेद प्रतिपादित वैदिक सिद्धातो को अपनाने के कार्य मे उन्होन अपना जीवन लगा दिया था। राजस्थान से तो उनका विशेष रूप से सम्बन्ध रहा है। उनकी सेवाओ की स्मृति मे ही गत वर्ष अजमेर विश्वविद्यालय का नाम बदलकर महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय' रखा गया था।

इसलिए आपसे निवेदन है कि नवीन सशोधित अधिनियम मे ऋषि दयानन्द के जीवन और शिक्षा सम्बन्धी शोध और अध्ययन के लिए उसी प्रकार का प्रावधान किया जावे, जिस प्रकार उच्चतम न्यायालय ने सन् १९७१ के अपने निर्णय मे गुरुनानक विश्वविद्यालय के नामकरण का औचित्य स्वीकार करते हुए यह कहकर उनकी प्रशसा की थी कि वह एक ही ईश्वर मे विश्वास करने वाले ऐसे सुधारक थे जिन्होने मूर्तिपूजा, जात-पात और पडे-पुरोहितवाद का जोरदार खण्डन किया था। इसी प्रकार यह तीनो विशषताये महर्षि दयानन्द सरस्वती के सम्बन्ध मे भी सर्वविदित हैं। उच्चतम न्यायालय ने अपने निर्णय मे यह भी स्पष्ट कर दिया था कि ऐसे महापुरुष के नाम पर स्थापित विश्वविद्यालय मे उनके जीवन और शिक्षाओ के अध्ययन का प्रावधान सर्वथा उचित और लाभप्रद है।

अत हमारा आपसे निवेदन है कि आप उच्चतम न्यायालय के निर्णय के अनुसार नवीन अधिनियम बनाते समय महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय मे उनके जीवन और शिक्षाओ के शोध व अध्ययन का विशेष रूप से प्रावधान करने की कृपा कीजिएगा।

मुझे यह भी पता चला है कि आपने राजस्थान के सभी सरकारी कार्यालयो कालेजो विद्यालयो और महत्वपूर्ण सरकारी सस्थानो में धूम्रपान पर पूर्ण रूप से प्रतिबन्ध लगाने का निर्णय लिया है। आपके इस महत्वपूर्ण कदम के लिए समूचे आर्यसमाज की ओर से आपको हार्दिक धन्यवाद देता हू। शुभकामनाओ सहित,

भवदीय

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती (प्रधान)

भुसलाना (सफीदों) मे आर्य वैदिक पब्लिक विद्यालय का शिलान्यास स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा सम्पन्न

सफीदो ११ अप्रैल। आज हरियाणा प्रदेश के कृषि राज्यमन्त्री श्री वचनसिंह आर्य के ग्राम भुसलाना मे सजे हुये विशाल मण्डप मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आर्य वैदिक पब्लिक विद्यालय का शिलान्यास किया। इस अवसर पर हजारो की सख्या मे आर्य युवक एव आस-पास के क्षेत्र के ग्रामीणो ने भाग लिया। श्री वचनसिंह आर्य के ईमानदारी और त्यागपूर्ण ढग से काम करने से क्षेत्र की जनता मे उनका अत्यधिक सम्मान है। भवन निर्माण के कार्य के लिये बिना कोई अपील किये ही लाखो रुपये की राशि एकत्रित हो गयी। इस अवसर पर बोलते हुये श्री

(शेष पृष्ठ २ पर)

सुभाषितम्

मनसि वचसि काये, पुण्यपीयूषपूर्णाः,
त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः।
परगुणपरमाणून् पर्वतीकृत्यनित्यं,
निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः॥

(नीतिशतक)

भावार्थ—जिनके मन, वचन तथा शरीरिक कर्मों में पुण्यरूपी अमृत भरा हुआ है, जो अपने परोपकारमय कर्मों से तीनों लोकों के प्राणियों को तृप्त करते रहते हैं और जो दूसरों के छोटे-छोटे गुणों को भी पर्वततुल्य समझकर कहते रहते हैं तथा जो अपने आप में ही सन्तुष्ट रहते है, ऐसे सत्पुरुष कितने हैं?

महर्षिमाल्यार्पणम् तथा शतपर्णा पुस्तकों का लोकार्पण समारोह

लेखक—आचार्य धर्मवीर कुमार शास्त्री एम० ए० साहित्याचार्य

विद्वान लेखक की दोनो कृतियों का विमोचन आर्य समाज स्थापना दिवस पर सार्वदेशिक सभा के मान्य प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के कर-कमलो द्वारा सम्पन्न हुआ।

लेखक-संस्कृत-साहित्य और दर्शन साहित्य के प्रकाण्ड विद्वान् हैं। प्रतिभा पूर्ण विद्वान् श्री आचार्य जी जन्मजात हिन्दी साहित्य के कवि है।

विशेषतायें गिनाई जाये तो इतना कहना ही पर्याप्त है कि धर्मवीर शास्त्री ने सम्पूर्ण परीक्षाएं गुरुमुख से न पढ़कर स्वमेव ग्रन्थ लाभ कर परीक्षायें उत्तीर्ण की है।

सुललित संस्कृत पदावलि अर्थ गाम्भीर्य शब्दो का रचनाविन्यास उनकी विशेषता है।

'महर्षि माल्यार्पणम्' उनकी प्रतिभा का नमूना है और 'शतपर्णा' हिन्दी साहित्य का जीता जागता भावपूर्ण काव्य में पुस्तक है।

डा० शिवकुमार शास्त्री ने आपकी पुस्तको का विमोचन कराकर आर्य जगत में छिपे हुए विद्वान की प्रतिभा का दिग्दर्शन आर्य समाज के क्षेत्र में प्रकट कर किया।

श्री शास्त्री जी का विद्यार्थी जीवन गुरुकुल ज्वालापुर महाविद्यालय हरिद्वार मे बीता। अध्यापन कार्य जसपुर नैनीताल तथा दिल्ली मे व्यतीत कर अध्यापन से अवकाश लिया। परन्तु बधाई के पात्र है—

श्री बा० दरबारी लाल जी जिन्होने धर्म शिक्षा व संस्कृत को पढ़ाने हेतु मन्दिर मार्ग डी०ए०वी० मे उनकी सेवायें उपलब्ध की हैं।

विद्वान लेखक प्रशसा श्लाघा से दूर मौन चिन्तक व साधक होकर लेखन का कार्य करते हैं।

विद्वान की प्रतिभा मे वृद्धि हो और उनकी रचनाओं का स्वाद-जनता-जनार्दन तक पहुचे।

सम्पादक की शुभकामनायें उन्हें दीर्घजीवी तथा यशस्वी बनावें।

—सम्पादक

योग दर्पण अनुपम पुस्तक

लेखक—स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती

अष्टाग योग की संक्षिप्त सुललित व्याख्या, आर्ट पेपर पर चार रंग की छपाई, शारीरिक एवं मानसिक विकास के लिए अनेको नियमों का विवरण।

युवक-युवतियो के सर्वांगीण विकास के लिए अनुपम ग्रन्थ। मूल्य—६०) रुपये डाक व्यय सहित।

प्राप्ति स्थान:—योगिक शोध संस्थान, योगधाम, आर्य नगर ज्वालापुर, हरिद्वार (उ० प्र०) २४९४०७

शाहपुर जट्ट गांव में यजुर्वेदीय मन्त्रों से शान्ति यज्ञ

दिनांक २८-३-९३ (रविवार) को प्रातः १० से १.३० बजे तक शाहपुर जट्ट गांव मे यजुर्वेद मन्त्रों के उच्चारण से शांति महायज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर गुरुकुल गौतम नगर के आचार्य हरिदत्त और ध्यानयोगी श्रीनिवास पाठक वशिष्ठ के सानिध्य में गुरुकुल गौतमनगर के ब्रह्मचारियों ने वेद पाठ किया।

स्मरणीय है कि इस गांव में २-३ नवयुवकों की असामयिक मृत्यु हो जाने से शोकाकुल अभिभावकों एवं ग्रामवासियों को सान्त्वना दिलाने के लिए इस शान्ति महायज्ञ का आयोजन किया गया था। यज्ञोपरान्त आचार्य विद्यानन्द जी ने एक घण्टे तक अपनी ओजस्वी वाणी से यज्ञ की महिमा पर प्रकाश डालते हुए भाषण दिया।

यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् ८ हजार नर-नारियों एवं बच्चों ने शुद्ध घी से निर्मित लंगर में श्रद्धा पूर्वक भोजन किया। इस महायज्ञ से क्षेत्र की जनता में धार्मिक भावनाओं का उदय होना स्वाभाविक है।

सूचना

सभी प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के अधिकारियों की सूचनार्थ है कि जब भी प्रान्तीय आर्य वीर दल की बैठकें होती हैं, उन बैठकों में अवश्य भाग लें। आर्य वीर दल संगठन के अधिकारियों की ओर से इस प्रकार की शिकायतें आती हैं कि दल की बैठकों में प्रान्तीय सभाओं के पदाधिकारीगण आमन्त्रित किए जाने के बाद भी उपस्थित नहीं होते हैं, जिस कारण दल और प्रान्तीय सभाओं में तालमेल और आपसी सामंजस्य का अभाव हो जाता है और आर्य वीर दल के कार्य प्रवाह में रुकावट आती है। अतः आर्य वीर दल की नियमावली के अनुसार आर्य वीर दल के लिए प्रान्तीय सभाओं के पदेन अधिकारी दल की बैठको मे अवश्य भाग लेवें।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

आर्य पब्लिक विद्यालय का शिलान्यास

(पृष्ठ १ का शेष)

वचनसिंह जी ने घोषणा की कि इस विद्यालय में संस्कृत अनिवार्य रूप से पढ़ायी जायेगी और महर्षि दयानन्द सरस्वती के सिद्धान्तों के अनुरूप ही इसमे शिक्षा प्रदान की जायेगी।

इस अवसर पर विशाल जन-समूह को सम्बोधित करते हुये पूज्य स्वामी जी ने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र मे आर्य समाज सरकार के बाद दूसरी बड़ी शक्ति के रूप में कार्य कर रहा है। उन्होंने कहा कि त्याग और बलिदान के रास्ते पर चलकर सब कुछ प्राप्त किया जा सकता हैं। उन्होंने श्री वचनसिंह के कार्यों की प्रशंसा करते हुये आशा व्यक्त की कि उनके प्रयत्नों से आज की युवा शक्ति आर्यसमाज के संगठन को मजबूत बनाने में सहायक सिद्ध होगी।

आर्य विरक्त आश्रम ज्वालापुर का वार्षिकोत्सव

आर्य विरक्त (वानप्रस्थ सन्यास) आश्रम ज्वालापुर हरिद्वार का ६१वां वार्षिकोत्सव १५ से १८ अप्रैल तक हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा हैं। इस अवसर पर ११ से १८ अप्रैल तक विशाल सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया है।]

भारतीय भाषाओं के लिए सत्याग्रह कर रहे युवकों की गिरफ्तारी भारतीय भाषाओं का अपमान

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

दिल्ली ६ अप्रैल। संघ लोक सेवा आयोग कार्यालय के बाहर वर्षों से भारतीय भाषाओं के लिए सत्याग्रह कर रहे युवाओं की गिरफ्तारी का कड़ा विरोध करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने उन्हे तुरन्त रिहा करने की जोरदार माग की। उन्होने कहा आजादी के ४६ वर्ष बाद भी हमारी युवा शक्ति को भारतीय भाषाओ के लिए सघर्ष करना पड रहा है, यह सविधान और भारतीय भाषाओ का अपमान है। यह बडे आश्चर्य की बात है कि भारतीय भाषाओ मे उच्चतर परीक्षाओ की माग को अपनी ही सरकार निर्दयता पूर्वक ठुकरा कर राष्ट्र की युवा शक्ति को हतोत्साहित ही नही कर रही है, अपितु देश की प्रगति और इसकी सास्कृतिक सम्पदा को भी कुचल रही है। हमारी भाषाए और हमारी सस्कृति इस देश की आत्मा है, इसलिए सरकार को देश के अन्दर २-३ प्रतिशत लोगो की अग्रेजी भाषा की अनिवार्यता को दृढता पूर्वक समाप्त करके अपनी भाषाओ को परीक्षाओ मे उचित स्थान देकर देश को आत्म निर्भर और शक्तिशाली बनाने के लिए कार्य करना चाहिए। क्योकि राष्ट्रीयता की मूल पहचान किसी देश की भाषा और सस्कृति ही होती है। आज जबकि हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाए देश की व्यवहार और कामकाज की भाषाए होनी चाहिए, वहा अग्रेजी को थोपना भारतीय सविधान के मौलिक अधिकारो का भी सर्वथा उल्लघन है। आर्य समाज इस नीति का कड़ा विरोध करता है।

स्वामी जी ने कहा आर्य समाज गत २-३ वर्षों से भारतीय भाषाओ के विकास और नागरी लिपि को समस्त भारतीय भाषाओ की सम्पर्क लिपि बनाने के लिये भारतीय भाषा सम्मेलनो का आयोजन कर रहा है। अब तक हैदराबाद दिल्ली और पटना मे यह सम्मेलन सम्पन्न हो चुके हैं। इनमे केन्द्रीय मन्त्री श्री अर्जुनसिंह, लोकसभा अध्यक्ष श्री शिवराज पाटिल और बिहार के मुख्यमन्त्री श्री लालू प्रसाद यादव सहित अनेक नेताओ ने सम्मिलित होकर आर्य समाज के इस प्रयास का समर्थन किया है।

स्वामी जी ने कहा यदि सरकार ने विभिन्न क्षेत्रो मे जहा केवल अग्रेजी मे परीक्षाए ली जाती हैं वहां और अधिक समय तक हिन्दी अथवा अन्य भारतीय भाषाओ को परीक्षाओ का माध्यम बनने से रोके रखा तो देश का युवा वर्ग राष्ट्रीय धारा से अलग-थलग हो जाएगा। जिससे देश की एकता और प्रगति पर गम्भीर दुष्प्रभाव पड सकता है।

देश को सबसे बड़ा खतरा इससे

कुछ समय पहले प्रख्यात पत्रकार श्री खुशवन्त सिंह ने बढती हुई आबादी पर अकुश लगाने की बात लिखी थी और यह सुझाव दिया था कि अपनी बर्बादी से पहले ही हमे परिवार नियोजन को अनिवार्य बना देना चाहिए। उन्होने यह भी लिखा था कि साक्षरता और जीवन स्तर मे वृद्धि से अपने आप जन्म दर मे कमी आ जाने की बात गलत सिद्ध हुई है। हमे अपने-आपको अब अधिक मूर्ख नही बनाना चाहिए और परिवार नियोजन को अब अनिवार्य बना देना चाहिए। सजय गाधी सही थे और उनके आलोचक गलत थे। उनकी एक मात्र गलती यही थी कि उन्होने ससद द्वारा वैधानिकता प्राप्त किए बिना इसके लिए गलत रास्ता अख्तियार किया। उन्होने जहा सरकार से इस समस्या पर गम्भीरता पूर्वक ध्यान देने और निपटने का आग्रह किया है वहा टाइम्स आफ इडिया, आनन्द बाजार पत्रिका, इडियन एक्सप्रेस मलयालम मनोरमा हिन्दू, हिन्दुस्तान टाइम्स और हिन्द समाचार पत्र समूह आदि से परिवार नियोजन को एक मिशन के रूप मे लेने की बात कही है।

यह बात उन्होने पहली बार नही कही बल्कि बार बार कही है। वैसे श्री खुशवन्त सिंह पर यह दोष लगता रहा है कि वह श्री सजय गाधी के बहुत प्रशसक हैं और उन्होने इस बात को कभी नकारा भी नही। श्री सजय गाधी के मामले मे लोगो को बडी शिकायत यह रही है कि उन्होने परिवार नियोजन के लिए एक गलत लाइन अपनाई, जबरी नसबन्दियां की गई और ऐसे भी केस हुए जहा बूढो और अविवाहित युवको तक के आप्रेशन कर दिए गये। बहरहाल श्री खुशवन्त सिंह का इस मामले मे कहना यह है कि श्री सजय गाधी ही वह व्यक्ति थे जिन्होने इस ओर ध्यान दिया और यही इस समस्या से निपटने का तरीका था, इसलिए मैं उनका प्रशसक हू। उनका मानना है कि देश की दरपेश हर समस्या की जड बढ़ती हुई आबादी है।

अगर हम इस तथ्य की गहराई तक जाए और चीर फाड करके वास्तविकता को समझने की कोशिश करे तो इस बात के बावजूद कि जोर-जबरदस्ती की जो राह श्री सजय गाधी ने परिवार नियोजन के लिए अपनाई, वह ठीक नहीं थी लेकिन यह बात निश्चित ही गलत नही है कि बढ़ती हुई आबादी ही हमारी समस्याओ की जड है। भारत को पिछले साल अनाज का आयात करना पडा हालाकि विदेशी मुद्रा की देश के पास बहुत कमी है। इतना ही नहीजितने लोगो को रोजगार एक पचवर्षीय योजना में दिये जातेहैं उससे कहीं अधिक आबादी बढ जाती है। नतीजा स्वाभाविक रूप से यह है कि वर्ष-प्रतिवर्ष देश मे बेरोजगारी की सख्या बढती चली जा रही है। जब ये लोग साधन सम्पन्न लोगो को देखते हैं तो इनमे निराशा भी पैदा होती है और विद्रोह की भावना भी, फलस्वरूप कुछ लोग चोरी, डकैती और अन्य अपराधो का रास्ता पकड लेते हैं।

स्वाधीनता से पहले सयुक्त भारत की आबादी ४० करोड थी मगर आज विभाजित भारत मे ८८ करोड के आकडे को पार कर गई है—नतीजा यह है कि लोगो के लिए मकानो की कमी दिन-प्रतिदिन बढती चली जा रही है, सडके परिवहन के लिए छोटी पड गई हैं और आए दिन दुर्घटनाएं उन पर होती रहती है, रेलो, बसो और दुकानो पर भीड बढती ही चली जा रही है और अच्छे स्कूलो मे बच्चो को बगैर सिफारिश और पैसे के दाखिले तक मिलने मुश्किल हो गये हैं। इसी तरह अस्पतालो मे रोगियो के लिये न तो पूरी तरह दवाए सुलभ हैं और न बिस्तर। साराश हर क्षेत्र मे कमी ही कमी का सामना लोगो को करना पड रहा है और कुछ भी सभाले सभल नही रहा है। सरकार जितना कुछ नियोजित करती है बढती हुई आबादी उसे उतना ही अनियोजित कर देती है।

ऐसी हालत मे यह देखना जरूरी है कि ससार के समृद्ध देशो की स्थिति आबादी के मोर्चे पर क्या है? जहा तक फ्रास का सम्बन्ध है, उसकी जन्म दर तो 'माइनस' (नफी) मे जा रही है जबकि बरतानिया, अमरीका, जर्मनी और जापान जैसे देशों मे जन्म दर मे वृद्धि नाममात्र की ही है।

भारत मे बढती हुई आबादी को रोकने का एक यत्न एमरजेंसी के दौर मे श्री सजय गाधी ने किया। उससे पहले भी गर्भ निरोधको का प्रचार किया गया, परिवार नियोजन को प्रोत्साहित करने के लिए कुछ पैसा आदि भी आप्रेशन करवाने वालो को दिया जाता रहा और अब भी यह सब कुछ दिया जा रहा है। इसके अलावा यह भी कहा गया कि शिक्षा के बढने से लोगो मे जागृति आएगी और वे स्वय ही इस ओर ध्यान देंगे मगर कुछ सम्पन्न घरो मे तो आबादी का फर्क अवश्य आया है लेकिन वैसे यह समस्या वही की वहीं खडी है बल्कि इसका 'कद' पहले से भी कुछ ऊंचा ही हुआ है।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

जामा मस्जिद के शाही इमाम को मथुरा की अदालत में पेश न करने पर दिल्ली-पुलिस की खिंचाई

मथुरा, ६ अप्रैल (देशभक्त) मथुरा सदर के न्यायिक मजिस्ट्रेट सुरेन्द्रपाल गोयल ने जामा मस्जिद के शाही इमाम अब्दुल्ला बुखारी को गिरफ्तार कर अदालत में पेश न करने पर दिल्ली पुलिस के आचरण पर प्रतिकूल टिप्पणी की है। आदेश में अभियुक्त को हर हालत में २३ अप्रैल को न्यायालय में हाजिर करने को कहा गया है। उधर वादी अधिवक्ता रामकृष्ण चतुर्वेदी ने मुल्जिम को गिरफ्तार करने वाले को ५० हजार रुपये का इनाम देने की भी घोषणा की है।

अधिवक्ता रामकृष्ण चतुर्वेदी उर्फ गोरे बाबू बनाम शाही इमाम अब्दुल्ला बुखारी सम्बन्धित वाद में विद्वान मजिस्ट्रेट ने अभियुक्त के बीमार होने पर उसे एम्बुलेंस में डाक्टर के साथ न्यायालय में पेश करने के भी आदेश दिए हैं।

विद्वान मजिस्ट्रेट ने अपने आदेश में दिल्ली पुलिस को लताड़ते हुए यहां तक कहा है कि एक ओर पुलिस का काम मुल्जिम को पकड़ना होता है, दूसरी ओर वह जानबूझ कर उसे नहीं पकड़ रही है। इसका मतलब है कि पुलिस को जो ड्यूटी दी गई है वह उसे करने में असमर्थ है जो कि एक शर्म की बात है।

विद्वान न्यायाधीश ने अपने आदेश में लिखा है कि अभियुक्त को मेरे पूर्व विद्वान अधिकारी के २७ अप्रैल, १९८७ के आदेश के तहत धारा १५३बी, २९५ए, ५०८, २९८ तथा १०८ भा. द. स. में अदालत में तलब किया गया था। यही नहीं ५ दिसम्बर, ८१ के आदेश में बिना जमानती वारंट और ८२-८३ सी. आर. पी. सी. की कार्रवाई करने को कहा गया था और कहा गया था कि अभियुक्त झूठी डाक्टरी रिपोर्ट बनवा कर यह कह रहा है कि उसे हाऊस रेस्ट चाहिए और वह चलने-फिरने में असमर्थ है। १५ जुलाई, १९८७ को दिल्ली के पुलिस आयुक्त को एक पत्र लिखा गया था कि मुल्जिम पर अदालती आदेशों की तामील कराई जाए और न्यायालय में पेश किया जाए परन्तु उसे फिर भी पेश नही किया गया। इसके बाद २४ दिसम्बर, ८७ को इसके सम्बन्ध में पुलिस आयुक्त दिल्ली को पत्र लिखा गया और २५ फरवरी, ८८ को डी. सी. पी. दिल्ली पुलिस कंवलजीत दयाल ने लिखा कि शाही इमाम अब्दुल्ला बुखारी अजमेर गए हैं तथा वह २८ फरवरी, ८८ तक वापस आ जाएंगे इसलिए सम्मन वापस किया जाता है।

विद्वान न्यायाधीश ने पुलिस के आचरण पर यह भी टिप्पणी की कि पांच साल से ज्यादा समय बीत जाने के बावजूद अभियुक्त पर न तो सम्मन, वारंट की तामील ही की गई और न पुलिस आयुक्त दिल्ली को २१ मार्च, ८८ को भेजे पत्र पर ही कोई कारंवाई की गई।

उच्च स्तर के भी पुलिस अधिकारी किस प्रकार न्यायालय को गुमराह करते हैं इसका सबूत विद्वान न्यायाधीश के आदेश में दिया गया घटनाक्रम है।

विद्वान न्यायाधीश ने दिल्ली पुलिस को लताड़ लगाते हुए अपने आदेश में बड़ा ही तार्किक विवेचन करते हुए लिखा है कि अभियुक्त अब्दुल्ला बुखारी पर बिना जमानती वारंट तथा कुर्की की कार्रवाई जानबूझ कर नहीं कर रही है क्योंकि पुलिस द्वारा हर बार लिखा गया है कि या तो मुल्जिम नहीं मिल पा रहा है या वह कहीं बाहर गया हुआ है अथवा वह बीमार पड़ा हुआ है। आदेश मे आश्चर्य इस बात पर प्रकट किया गया है कि उक्त तीनो बातें एक साथ कैसे हो सकती है।

विद्वान मजिस्ट्रेट ने अपने आदेश में पुलिस आयुक्त दिल्ली को आदेशित किया है कि वह मुल्जिम के विरुद्ध बिना जमानती वारंट की तामील तुरन्त कराये तथा उसके विरुद्ध कुर्की की कार्रवाई करें और उसका पासपोर्ट जब्त करें।

स्मरण रहे कि अधिवक्ता रामकृष्ण चतुर्वेदी ने जामा मस्जिद दिल्ली के शाही इमाम अब्दुल्ला बुखारी के नाम अप्रैल, ८७ में एक वाद मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट मथुरा की अदालत में दायर किया था जिसमें आरोप लगाया गया था कि ३० मार्च, ८७ को अभियुक्त ने मुसलमानों की रैली में जो भाषण दिया था तथा जिसका प्रमुख समाचार पत्रों में प्रकाशन भी हुआ वह न केवल आपत्तिजनक है बल्कि उसमें मुस्लिम समुदाय में भारत सरकार और न्यायालयों के प्रति घृणा पैदा होगी और इससे देश की शांति व्यवस्था को खतरा पैदा हो गया है।

बम्बई के विस्फोटों का सूत्रधार मेमन परिवार

बम्बई में विस्फोटों की श्रृंखला के सूत्रधार के तौर पर उभरा मेमन परिवार माहिम (बम्बई) में मुस्लिम बहुल बस्ती में रहता है। भरे पूरे मेमन परिवार के मुखिया हैं अब्दुल रज्जाक, अबूल भाई मोमीन। वृद्ध अब्दुल रज्जाक के पांच बेटे हैं। मेमन बन्धुओं मे शक की सुई ने जिन दो भाईयों की ओर संकेत किये है वे हैं याकूब और इब्राहिम। अपराध की दुनिया और पुलिस की फाईलों मे इब्राहीम उर्फ मुश्ताक मेमन को टाईगर के नाम से भी जाना जाता है।

ज्ञातव्य है कि १२ मार्च को बम्बई में हुए अभूत पूर्व बम विस्फोटों के लिए मेमन परिवार को जिम्मेदार माना जा रहा है। याकूब मेमन और इस्माईल उर्फ टाईगर मेमन ने प्रमुख रूप से इस षड़यन्त्र मे सूत्रधार की भूमिका निभाई है। यह मेमन बन्धु बम विस्फोटो के एक दिन पहले ही भारत छोड़कर दुबई चले गये थे। और वहा से पाकिस्तान की छत्र छाया मे पहुचे। भारत से दुबई और दुबई से पाकिस्तान की यात्रा व्यवस्था का काम किया, दुबई स्थित एक पाकिस्तानी कम्पनी ने।

विस्फोटको से लैस स्कूटर की चाबी मेमन परिवार के घर मे मिली इससे जाच दलो का ध्यान मेमन परिवार की ओर हुआ। मेमन परिवार के तीन भाई ट्रासपोर्ट का धन्धा करते हैं। स्वयं याकूब मेमन ने अपने कैरियर की शुरूआत बंक मे ब ीर खजाची की थी।

उसका एन० जे० रोड पर सम्राट बिल्डिंग मे चार्टड एकाउन्टेंट का दफ्तर भी है जिसे जनवरी के दंगों में दंगाईयो ने फूंक दिया था। पिछले ५-७ सालो मे मेमन परिवार ने दौलत और ताकत एक साथ अर्जित की। बम्बई के कई क्षेत्रो मे दुकानें तथा मकान खरीदे। और याकूब और इब्राहिम नशीले पदार्थों की तस्करी के धन्धे मे जुड़ गये तथा बम्बई के एक बड़े हिस्से में तस्कर सम्राट व माफिया डान दाऊद इब्राहिम के निजाम की देखभाल का जिम्मा मेमन बन्धुओ के कन्धो पर आ गया।

इब्राहिम उर्फ मुश्ताक उर्फ टाईगर ने नवें दशक में अपराधों की दुनिया मे कदम रखा और १९८४ मे एक पुलिस अफसर मधुकर झेन्डे ने उसे नागपारा मे कस्टम अधिकारी पर हमले के आरोप मे पकड़ा था। १९८६ में उसने पुलिस टुकड़ी पर भी गोलिया दागी थी। अजीज पाकेटमार की दिन दहाड़े हत्या ने उसे अंडरवर्ल्ड की नजरों में चढ़ा दिया। इस प्रकार अपराध के क्षेत्र मे उसके बढते कदम दुबई में डेरा डाले डान दाऊद इब्राहिम तक पहुंच गये। मेमन बन्धुओ के पाक तस्करो व आतंकवादियों से भी सम्पर्क बताये जाते हैं। और पेशावर के मोहम्मद डोसा और छोटा शकीर से भी रिश्ते हैं। राजनैतिक क्षेत्र मे मुस्लिम लीग विधायक बशीर पटेल से भी घनिष्ठ सम्बन्ध बताये गये हैं। कस्टम अधिकारियों और पुलिस विभाग में भी उसकी गहरी पकड़ है।

उल्लेखनीय तथ्य यह है कि माहिम में मेमन परिवार की रिहायशी इमारत अलहुसैन पुलिस थाने के बिल्कुल बगल में है।

शृंखलाबद्ध विस्फोटो और उसमे वाहनों के इस्तेमाल से यह निश्चित है कि यह पूर्णतः एक सुनियोजित षड़यन्त्र है और इसमें कई सफेद पोश लोग

(शेष पृष्ठ ६ पर)

संसार की एकता का आधार वेद

श्री रामनाथ वेदालंकार एम. ए. (गुरुकुल कांगड़ी)

आर्य समाज संसार के मनुष्यों के मध्य खड़ी भेद-भाव की समस्त दीवारों को समाप्त करने का दृढ़ संकल्प लेकर चल रहा है। प्रस्तुत लेख में विद्वान लेखक ने इसी उदात्त संकल्प की पुष्टि वेद द्वारा की है। काश ! कि संसार इस मार्ग पर चल पाता। —सम्पादक

कहते हैं एक नगर था, जिसमें सब लोग बड़े प्रेम से रहा करते थे। कोई किसी की उन्नति से ईर्ष्या नहीं करता था कोई किसी से कलह नहीं करता था। ऐसा भाई चारा था कि देखने वाले चकित होते थे। पर शनै शनै लोगो में द्वेष के भाव अंकुरित होनेलगे और एकदिनवह नगर फूट विद्वेष और कलह का अखाड़ा बन गया। अन्त में सब नगरवासी जब आपसी झगड़ों से बहुत तंग हो गये, तब उन्होंने परस्पर मिलकर निश्चय किया कि भविष्य में हम फिर प्रेमभाव से रहेंगे। ऐसा ही हुआ और वह नगर स्वर्ग सा सलोना बन गया। यह तो हुआ एक दृष्टान्त, पर वस्तुत आज इस भूमि की भी ऐसी ही अवस्था हो चुकी है। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र की उन्नति को सह नहीं सकता। प्रत्येक देश दूसरे देश से भयभीत है कि कहीं आक्रमण न कर दे। सब अन्दर ही अन्दर अपनी सैन्य शक्ति को बढ़ा रहे हैं। सर्वत्र बेचैनी है, हाहाकार है हिंसा पिशाची का नृत्य है युद्ध है, गोलाबारी है, भय है, असन्तोष है। इस अवस्था से तंग आकर ही आज शान्ति परिषदों व सुरक्षा परिषदों के आयोजन होते हैं। अत आज सर्वत्र वेदों की एकता भ्रातृभाव व शान्ति के सन्देश के प्रचार की आवश्यकता है।

सबसे पहले एकता की भावना के लिए ऋग्वेद के संज्ञान सूक्त (मण्डल १०, सूक्त १९१) की ओर हमारा ध्यान जाता है। इसके एक एक शब्द में एकता के भाव भरे हैं—

> स समिद् युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ।
> इडस्पदे समिध्यसे स नो वसून्याभर ।१।

हे सुखों की वर्षा करने वाली ऐक्य भावना की अग्नि तेरे अन्दर बड़ी सामर्थ्य है। तू सबको मिला देने वाली है। अब आज हम तुझे भूतल में प्रदीप्त करते हैं, तू हमें ऐश्वर्य प्रदान कर।

> सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
> देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते ।२।

सब राष्ट्र और सब देशवासी मिल कर चलो मिल कर बोलो, तुम्हारे मन एक हो जायें। जैसे श्रेष्ठ देव मिलकर अपने अपने भाग को पूर्ण करते हैं, वैसे हो तुम भी करो।

> समानो मन्त्र समिति समानी, समानं मन सह चित्त मेषाम्
> समानं मन्त्रमभिमन्त्रये व समानेन वो हविषा जुहोमि ।३।

तुम्हारा मन्त्र एक हो समिति एक हो मन एक हो, चित्त एक हो। तुम्हारे अन्दर मैं एकता के मन्त्र को फूंकता हूं। एकता की हवि से मैं तुम्हे आहुत करता हूं।

> समानी व आकूति समाना हृदयानि व।
> समानमस्तु वो मनो यथा व सुसहासति ।४।

तुम्हारा संकल्प एक हो, तुम्हारे हृदय एक हो तुम्हारा मन एक हो जिससे तुम्हारे अन्दर पूर्ण एकता का भाव उत्पन्न हो जाये।

संज्ञान सूक्त की भावना से अपने मनो को अनुप्राणित करने के पश्चात अब हम वेदो के अन्य प्रसंगो को लेते हैं। वेद सर्व भूतमैत्री का सन्देश देता हुआ कहता है—

दृते दृंह मा, मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्। मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षा महे ॥

(यजुर्वेद ३६/१८)

सब व्यक्ति मुझे मित्र की दृष्टि से देखें मैं भी सब व्यक्तियों को मित्र की दृष्टि से देखूं एवं हम सभी राष्ट्रों के लोग परस्पर मित्र दृष्टि रखें। हे दृढ़ता के देव प्रभो ! इस मैत्री भाव में तू हमें दृढ़ता प्रदान कर।

> अनमित्रं नो अधराद् अनमित्रं न उत्तरात्।
> इन्द्रानमित्रं न पश्चाद् अनमित्रं, पुरस्कृधि ॥ अथर्व ६ ४० ३-

'दक्षिण दिशा में हमारा कोई शत्रु न हो, उत्तर दिशा में हमारा कोई शत्रु न हो, पश्चिम दिशा में हमारा कोई शत्रु न हो, पूर्व दिशा में हमारा कोई शत्रु न हो।'

> सहृदयं सांमनस्यम् अविद्वेषं कृणोमि व।
> अन्यो अन्यमभिहर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या ॥ अथर्व० ३ ३० १

'हे मनुष्यो तुम्हारे अन्दर सहृदयता सौमनस्य और अविद्वेष के भाव मैं उत्पन्न करता हूं। तुम एक दूसरे पर ऐसी प्रीति रखो, जैसी गौ अपने नवजात बछड़े के प्रति रखती है।'

वेद की दृष्टि में कोई मनुष्य किसी भी राष्ट्र का वासी हो उसे सारी भूमि को ही अपनी माता समझना होता है।

> माता भूमि पुत्रो अहं पृथिव्या अथर्व० १२ १ १२
> "भूमि मेरी माता है, और मैं उसका पुत्र हूं।'
> नमो मात्रे पृथिव्यै नमो मात्रे पृथिव्यै। यजु० ९ २२

'माता पृथिवी को नमस्कार हो माता पृथिवी को नमस्कार हो।' धरती पर सुख-शान्ति कैसे रह सकती है, इसके उपाय बताते हुए अथर्व वेद के पृथिवीसूक्त में कहा है—

"सत्यं बृहद् ऋतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञ पृथ्वीं धारयन्ति '

अर्थात सत्य ज्ञान, सदाचरण (ऋत), व्रत ग्रहण (दीक्षा), आस्तिकता (ब्रह्म) और यज्ञ भावना ये गुण हो तभी यह धरती धृत रह सकती है। इन पृथिवी धारक गुणो में एक गुण यज्ञ-भावना है। यज्ञ-भावना का अभिप्राय है पारस्परिक सहयोग की भावना। जैसे शरीर के एक अंग का दूसरे अंग के साथ सहयोग रहता है तभी शरीर चलता है, वैसे ही पृथिवी पर एक राष्ट्र का दूसरे राष्ट्र के साथ और एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति के साथ सहयोग रहना चाहिए।

भूमि की किसी भी दिशा में हम चले जायें वहां हमारा अपमान न हो, धक्के न मिलें, किन्तु प्यार-भरा आतिथ्य और स्वागत हो ऐसी प्रीति की भावना राष्ट्रों में होनी चाहिए।

> मा न पश्चान्मा पुरस्तान्नुदिष्ठा मोत्तरादधरादुत।
> स्वस्ति भूमे नो भव, मा विदन् परिपन्थिनो,
> वरीयो यावया वधम्। अथर्व० १२ १ ३२

'हे भूमि न पश्चिम में न पूर्व में, न उत्तर में न दक्षिण में तू हमें धक्का दे। तू हमारे लिए मंगलमयी हो। शत्रु होकर कोई हमारे पास न आए। विशाल मारकाट को तू दूर रख।'

भूमि पर विभिन्न भाषाओं को बोलने वाले और विभिन्न धर्मों को मानने वाले भी लोगो को आपस में एक घर के समान भ्रातृभाव से रहना चाहिए। यह वेद का सन्देश है। पृथिवी सूक्त में इस भूमि के लिए कहा गया है

(क्रमश)

सुख, शान्ति और आनन्द

ओमवाचार्य वाचस्पति

सुख, शान्ति और आनन्द इन तीनो मे से सबसे महत्त्वपूर्ण तो आनन्द है जो मनुष्य जीवन का उद्देश्य होता है। परन्तु इससे पूर्व शारीरिक सुख व मानसिक शान्ति भी साधन रूप मे आवश्यक है। इन तीनो मे से सर्वप्रथम है सुख।

सुख—सुख शरीर के लिए होता है और बिना अर्थ के शारीरिक सुख हो नहीं सकता। क्योकि शरीर के लिए जिन-जिन उपभोग पदार्थों की आवश्यकता होती है उनके बिना सुख नहीं मिल सकता है—

यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वय स्याम पतयो रयीणाम्।

ऋ० १०। १२। १२१। १०

(यत्कामा) जिस-जिस पदार्थ की कामना वाले होकर हम लोग भक्ति करें (ते) आपका (जुहुम) आश्रय लेवें और वाञ्छा करें (तत्) उस-उसकी कामना (न) हमारी (अस्तु) सिद्ध होवे, जिससे (वयम्) हम लोग (रयीणाम्) धनैश्वर्यों के (पतय) स्वामी होवें। विवाह सस्कार की सप्तपदी विधि मे भी कहा गया है कि रायस्पोषाय त्रिपदी भव। शुद्ध साधनो से हम खूब धनोपार्जन करें। हम बिना धन के निर्धन, दीन होकर कभी सुखी रह ही नही सकते। इसीलिए तो हम परमपिता परमात्मा से नित्य प्रति सध्या के माध्यम से प्रार्थना किया करते हैं कि हे प्रभो! अदीना स्याम शरद शतम्—हम अदीन होकर सौ वर्षों तक जीवें। वेद मे जगह जगह पर धन की माग की गयी है। क्योकि भौतिक शरीर के लिए भौतिक साधन अनिवार्य हैं। अत बिना अर्थ के सुख नहीं मिलता लेकिन याद रहे कि—

धन खूब कमा सुख चैन मना पर ऐसा कोई अपराध न कर।
अपना घरबार बनाने को औरो का घर बरबाद न कर॥

अब है शान्ति—शान्ति मन के लिए होती है मन की इच्छाओ (कामनाओ) की पूर्ति न होने से व्यक्ति के मन मे अशान्ति हो जाती है, बेचैनी हो जाती है। भगवान श्री कृष्ण ने गीता मे कहा है कि—

काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भव—रजोगुण से उत्पन्न हुआ यह काम ही क्रोध है और क्रोध का ही दूसरा नाम अशान्ति है। कहने का तात्पर्य यह है कि काम की पूर्ति न होने से क्रोध उत्पन्न होता है। इसलिए 'सन्तोषामृत-तृप्तानाम्' जब हम सन्तोष रूपी अमृत से तृप्त होकर अपनी आकाक्षाओ, कामनाओ पर (सन्तुष्टि) सन्तोष कर लेते है तब सभी धन शान्ति रूपी धन के सामने धूमिल हो जाते है। कहा गया है कि—

गोधन गजधन वाजिधन, और रतनधन खान।
जब आवे सन्तोष धन सब धन धूलि समान॥

अब अन्तिम है आनन्द आनन्द आत्मा के लिए होता है, और आनन्द केवल परमात्मा मे है तथा परमात्मा केवल आत्मा का विषय है न कि इन्द्रियो का। अत हम परमात्मा क सान्निध्य मे जाकर ही आनन्द प्राप्त कर सकते हैं क्योकि जो जिस वस्तु को देने मे समर्थ हो और उससे वह वस्तु मागी जाय तो तभी मिल सकती है। वह परमपिता परमात्मा ही एक आनन्दस्वरूप है जिसके पास आनन्द का भण्डार है। अत हम उस प्रभु के चरणो मे समर्पित होकर उस प्रभु के गुणो को अपने मे धारण करें। आनन्द आन्तरिक है जो अवर्णनीय है, किन्तु फिर भी समझाने के लिए कहना पड़ता है। वास्तव मे आनन्द एक वह ऊची स्थिति है जिसको प्राप्त करने के बाद सासारिक वस्तुओ की जिज्ञासा समाप्त हो जाती है इसलिए तो हम परमात्मा से प्रार्थना किया करते हैं कि हे प्रभो! मृत्योर्मा अमृत गमयेति—हमे मृत्यु रूपी दु ख से हटाकर अमृत रूपी मोक्ष की ओर ले चलिये। हम नित्य प्रति योगाभ्यास के माध्यम से परमानन्द की प्राप्ति करें। परम+आनन्द जिससे बढ़कर आगे आनन्द की सीमा न हो, अर्थात् जिसको प्राप्त कर जीवात्मा की आकाक्षायें समाप्त हो जाती हैं उसे परमानन्द कहते हैं। इसलिए यह कहते हुए कि—

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविण त्वमेव, त्वमेव सर्व मम देव-देव॥

अर्थात् आप ही हमारे माता, पिता बन्धु सखा, विद्या, धन तथा सर्वस्व उपास्य देव हैं अपने आपको अर्पण कर दें। तभी हम सुख शाति से जीवन व्यतीत कर सकते हैं। प्रभु हमे शक्ति व सामर्थ्य दे जिससे कि सबके शरीर के लिए सुख, मन के लिए शाति और आत्मा के लिए आनन्द की प्राप्ति हो सके।

—पुरोहित आर्य समाज झासी

श्री सत्यदेव शानन का संन्यास आश्रम में प्रवेश

दिनाक १४-३-९३ को दक्षिण अफ्रीका स्थित डरबन निवासी सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री सत्यदेव शानन सन्यास दीक्षा ग्रहण कर श्री सत्यदेव परिव्राट् नाम से प्रसिद्ध हुए। गुरुकुल प्रभात आश्रम (मेरठ) की भव्य यज्ञशाला मे हुए इस सन्यास दीक्षा समारोह मे गुरुकुल प्रभात आश्रम के कुलपति श्री स्वामी विवेकानन्द जी महाराज एव समर्पण शोध सस्थान (साहिबाबाद) के अध्यक्ष श्री स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती ने नवदीक्षित सन्यासी को आशीर्वाद दिया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती ने समयाभाव होते हुए भी दर्शन देकर दीक्षेच्छु श्री शानन जी का उत्साह वर्धन किया था।

कार्यक्रम के अन्त मे जहा सम्माननीय आचार्य द्वय द्वारा सन्यास के महत्त्व पर प्रकाश डाला गया वही गुरुकुल के ब्रह्मचारियो द्वारा भक्तिमय शास्त्रीय सगीत एव ओजपूर्ण राष्ट्र आराधन गीत प्रस्तुत किये गए तथा नवदीक्षित सत्यदेव परिव्राट् ने अपने जीवन मे हुई इस क्रान्ति के कथन से मेरठ एव अन्य सुदूरस्थलो से पधारे अनेक श्रद्धालु सम्भ्रान्त जनो मे नवचेतना एव नवस्फूर्ति का सचार किया।

सन्यास दीक्षा समारोह की अध्यक्षता पूज्यपाद श्री स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती द्वारा की गई।

द्वारा व्यवस्थापक
प्रभात आश्रम भोला मेरठ

सादगी, सेवा और त्याग का योग महात्मा हंसराज

—डा० महेश विद्यालंकार

देवात्मा दयानन्द के असामयिक निधन के पश्चात आर्य समाज लाहौर में ऋषि की स्मृति को अजर, अमर बनाए रखने की सोच के लिए सभा एकत्र हुई। उस सभा ने ऋषि के इस अमर सन्देश से प्रेरणा लेकर "अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए" उनकी पुण्य स्मृति में डी० ए० वी० संस्था का सूत्रपात किया। सत्य है कि डी० ए० वी० संस्था ऋषि दयानन्द की श्रद्धांजलि है। इस कार्य को सुन्दर व्यवस्थित एवं सुचारु रूप से चलाने के लिए सबल कन्धा देने वालों में स्वनाम धन्य महात्मा हंसराज का नाम बड़े आदर सम्मान एवं श्रद्धा से लिया जाता है। यहीं से हंसराज जी के जीवन की कहानी आरम्भ होती है। उनके त्याग और सेवा के सुप्त भाव जाग उठें। ऋषि की स्मृति को अमर बनाने के लिए जीवन दान का संकल्प ले लिया, जबकि घर-परिवार उनसे धन-सम्पत्ति, सुख-साधनो की अपेक्षा कर रहा था।

वे स्कूल के प्रथम अवैतनिक मुख्याध्यापक बनें। उनकी देखरेख मे स्कूल बड़ी तेजी से उन्नति के शिखर पर पहुंच गया। कुछ समय के पश्चात कालेज की स्थापना की गई। महात्मा जी उसके प्रधानाचार्य नियुक्त हुए। अपनी लग्न, परिश्रम, ईमानदारी, सादगी, सरलता, मितव्ययिता और ऋषि भक्ति से उन्होंने डी० ए० वी० कालेज को विशाल वटवृक्ष के रूप में परिवर्तित कर दिया। इस उन्नति, प्रगति के पीछे जो महात्मा हंसराज जी की तप-त्याग-तपस्या, साधना एवं योगदान रहा हैं उसी प्रेरक उज्जवल पक्ष को, दो शब्दों में लिखने का प्रयास कर रहा हूं। जिससे आज के जीवन-जगत के सन्दर्भ में हम कुछ भाव-भावना, प्रेरणा, चेतना सन्देश और उपदेश ले सकें? कुछ मूल्य आदर्श एवं परम्पराएं आने वाली पीढ़ी के लिए छोड़ सकें। तभी जन्म-दिन, जलसे, जलूस व श्रद्धांजलि सार्थक होगी।

महात्मा हंसराज जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व चुम्बकीय था। सादा जीवन और उच्च-विचारो वाले, दुबले पतले, खद्दर पहनने वाले, सिर पर पगड़ी धारण करने वाले, तप-त्याग तपस्या एवं सेवा के कारण महात्मा कहलाए। उनका जीवन बड़ा सरल एवं सात्विक था। सादा जीवन बड़ी मितव्ययिता से व्यतीत करते हुए, बड़े भाई द्वारा मासिक चालीस रुपए की सहायता से पारिवारिक जीवन-यात्रा सन्तोष से चलाते रहे।

आर्य समाज के विचारो के प्रचार प्रसार का, सेवा और परोपकार का उन्होने जो आजीवन व्रत निभाया, वह आज के अधिकारियो, व्यवस्थापको एव संचालकों के लिए प्रकाश स्तम्भ का कार्य कर सकता है? आज उनके उत्तराधियों में आर्यत्व के गुण-कर्म एवं स्वभाव क्षीण हो रहे हैं? आर्य समाजी चिन्तन धारा कमजोर हो रही है। वेद प्रचार की भावना घट रही है? सादगी सरलता और मितव्ययिता का स्थान आडम्बर प्रदर्शन ले रहे है? जो महात्मा हंसराज जी सभा व संगठन की कलम से व्यक्तिगत पत्र तक नहीं लिखते थे, इतना ऊंचा आदर्श जिन्होंने दिया हो। जो सारा जीवन किराए के मकान में व्यतीत कर गए हों? जिन्होंने अपने और परिवार के सुख आराम के लिए कभी सोचा ही न हो। वे चाहते तो शान शौकत, ऐशो-आराम की जिन्दगी जी सकते थे। किन्तु वह महापुरुष तो फकीरी में फटे पैबन्द लगे कम्बल को ओढ़कर ही सन्तुष्ट बना रहा। वे कालेज के प्रिन्सीपल पद का, प्रादेशिक सभा के प्रधान पद का, होस्टल का वार्डन पद संभालते हुए विद्यार्थियों को धर्म शिक्षा स्वयं पढ़ाते थे। विद्यार्थियों के धार्मिक जीवन का पूरा ध्यान रखते थे। उनका जीवन बोलता था। उनके क्रियात्मक जीवन से प्रभावित होकर बहुत से नौजवानों में आजीवन सेवा का भाव जाग उठा। वे जिधर चले, उधर ही जनता और सफलता उमड़ पड़ी। उन्होने संस्था के लिए लाखो रुपए एकत्र किए जनता ने श्रद्धा भावना से उनकी झोली भर दी, क्योकि जनता को विश्वास था मेरा धन उचित एवं श्रेष्ठ कार्य मे लगेगा। उन्होने संसार को विद्या का अपूर्व दान दिया। उनके जीवन की सफलता के पीछे सादगी और निर्लोभता मिलती है। वे तड़क-भड़क, वेष-भूषा और सुख विलास के साधनों को सुख शान्ति का आधार नहीं मानते थे। उनकी दृष्टि में आत्म सन्तोष ही सुख का मूलाधार है। ऐसे थे सन्तपुरुष हंसराज जी।

महात्मा जी को आर्य समाज के प्रचार प्रसार एवं प्रभावका सदा ध्यान रहता था। वे स्वयं सिद्ध कुशल वक्ता एवं प्रचारक थे। जीवन के उत्तरार्द्ध में पद-मुक्त होकर उनका एक ही कार्य और उद्देश्य आर्य समाज की विचारधारा को आगे बढ़ाना बन गया था। वे वैदिक सिद्धान्तो के, और वेद की शिक्षाओं के प्रबल समर्थक एवं प्रचारक थे। अपने समय में उन्होने वैदिक विचारधारा का सभी सभा और संगठनों में प्रचार और प्रसार किया। अन्तिम अवस्था में एक खुशहाल चन्द (जो बाद को आनन्द स्वामी) हुए उन्हें अपने मन की पीड़ा कही—डी० ए० वी० प्रबन्ध समिति में आर्य समाजी लोग कम हो रहे हैं? वेद प्रचार की भावना घट रही है? आर्य समाज के काम मे शिथिलता आ रही है।

महात्मा हंसराज जी आधुनिक विषयों की शिक्षा के भी पक्षधर थे। उन्होंने साइंस, गणित, इतिहास, अंग्रेजी आदि आधुनिक विषयों को भी अपने शिक्षणालयो में स्थान दिया। वे आधुनिक ज्ञान प्राप्त करने के पक्षपाती तो थे, अंग्रेजी पढ़ना बुरा नहीं मानते थे, किन्तु उन्हें अंग्रेजियत का प्रभाव और आधुनिक सभ्यता का रहन-सहन, खान-पान, नाच गाना, वेषभूषा आदि स्वीकार्य नहीं था। वे भारतीयता के प्रबल समर्थक थे। उनका ध्येय और प्रयास रहता था कि जो विद्यार्थी हमारी शिक्षण संस्थाओ से निकले, उस पर हमारी संस्था की छाप हो, उसकी अलग पहिचान हो, वह जहां भी जाए उसके रहन-सहन, बोल चाल व खान पान में कुछ अलग विशेषता झलकती हो। उस पर वैदिक विचारों का प्रभाव हो। वह सच्चे अर्थ में मानव एवं श्रेष्ठ नागरिक बने। यही भावधारा उस महापुरुष के जीवन में अश्रान्त प्रकाशित रही है। इसीलिए वे महनीय है। वन्दनीय हैं। स्मरणीय हैं। प्रशंसनीय हैं, अनुकरणीय हैं।

आज आवश्यकता है आर्य समाज को सिंहावलोकन करने की। क्या खोया, क्या पाया, क्या थे, क्या हो गए?, चलना किधर था? चल किधर पड़े? मात्रा की दृष्टि से बढ़ रहे हैं? गुणवत्ता की दृष्टि से घट रहे हैं। यही कुछ सोच-विचार एवं आत्म-चिन्तन के लिए आते हैं महापुरुषो के जन्म दिन, बलिदान दिवस और स्मृति दिवस। हम जन्म दिवस भी मनाते है। चित्र भी टांगते है? उनकी जय-जयकार भी बोलते हैं? जलसे-जलूस व लंगर भी करते हैं? किन्तु उनके बताये पथ पर नही चलते हैं। यही मूल मे भूल हो रही है। इतनी उम्र और समय गुजर गया क्रियात्मक दृष्टि से हम वही के वहीं खड़े हैं।

यदि उस महापुरुष के जन्म दिवस पर हमारे हृदयो में सेवा, त्याग परोपकार सादगी व आत्म बोध का भाव जग जाय? कुछ उनके जीवन की छाया और छाप हमारे मनो मे प्रवेश कर जाए? कुछ जग-जीवन के लिये कुछ करने का व्रत व संकल्प ले सकें। उनके दर्शाये आदर्शों व विचारो की थोड़ी सी झलक सभा एवं संस्थाओ मे ले आएं तो सच्चे अर्थ मे शायद कुछ श्रद्धाजलि देने के हकदार बन जाये? नही तो हर साल मेले लगेंगे, मेले बिछुड़ेंगे? राग-रंग होगा? किन्तु उस तपस्वी त्यागी महात्मा की आत्मा सन्तुष्ट न हो सकेगी? उनकी आत्मा तो तभी सन्तुष्ट होगी, जब हम उनके पदचिन्हो पर चलेंगे? अन्त मे उस गृहस्थ महात्मा को अनेकशः नमन, स्मरण एवं श्रद्धांजलि।

सदियो तक इतिहास न समझ सकेगा।
तुम मानव थे या मानवता के महाकाव्य॥

नया कैसट

सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान मे सम्पन्न हुए अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की कैसट बनकर आ गई हैं। इसमें आर्य समाज के विषय मे—स्व० पं० राजगुरु शर्मा, पूर्व प्रधान मन्त्री स्व० राजीव गाधी और श्री चन्द्रशेखर, स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, श्री वीरेन्द्र जी, पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव और प्रो० शेरसिंह की आवाजो मे ऐतिहासिक भाषणो का संग्रह है। मूल्य प्रति कैसट २५ रु०। प्राप्ति स्थान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली।

साहित्य समीक्षा

वेदों में उषा

लेखक—श्री सोहनलाल अग्रवाल

वेद सदन, धमापुर, जबलपुर (म० प्र०)

लेखक ने चारो वेदो के उषा विषयक प्रकरणो का संग्रह इस पुस्तक मे बड़े परिश्रम से किया है। वेदो और उपनिषदो मे ऋषियो ने उषा को सिर' कहा है। अत मनुष्य को समय की सार्थकता का सदुपयोग करना चाहिए।

पुस्तक बढ़िया कागज पर सुन्दर ढग से छापी गई है। सभी आर्य जनो और वेद प्रेमियो के लिए पुस्तक पठनीय एव संग्रहणीय है। इस सकलन के लेखक बधाई और धन्यवाद के पात्र हैं।

—सम्पादक

निर्वाचन

—आर्य समाज शमसाबाद—श्री शिवचरनलाल जी प्रधान, श्री सत्यदेव जी गुप्ता मन्त्री, श्री रामसहाय जी कोषाध्यक्ष चुने गये।

—अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ नई दिल्ली—श्री प्रो० शेरसिंह प्रधान, श्री सत्यानन्द आर्य मन्त्री, श्री के एल भाटिया कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज देगल मण्डी—श्री प्रणवमुनि जी वानप्रस्थ प्रधान, श्री रामचन्द्र जी मन्त्री श्री प्रेमचन्द्र जी कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज बहजोई—आनन्दप्रकाश आर्य प्रधान, श्री नरेशचन्द्र आर्य मन्त्री श्री पुष्पेन्द्र कुमार आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज नगला महीउद्दीनपुर खुर्जा—श्री रिसालसिंह प्रधान, श्री राजीवीरसिंह मन्त्री, श्री बलबीरसिंह कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज आदर्श नगर अजमेर—श्री नरेन्द्रदेव शर्मा प्रधान श्री रामलाल शर्मा मन्त्री, श्री रामप्रताप तिवारी कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज बगही—श्री तेजवलीसिंह प्रधान, श्री श्रवण कुमारसिंह आर्य मन्त्री श्री नगेन्द्रसिंह कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज सीहोर—श्री ओमप्रकाश आर्य प्रधान, श्री राजवीर आर्य मन्त्री श्री रामभरोसे आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज धूर्वा—श्री रमेशचन्द्र नाग प्रधान, श्री गोपीप्रसाद मण्डल मन्त्री श्री सुरेश कुमार कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज मुगावली श्री रामवचन तिवारी प्रधान, श्री जयदेवजी चौरसिया मन्त्री, श्री मोहनलाल आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज लाजपत नगर नई दिल्ली—श्री बलदेव कृष्ण पिपलानी प्रधान श्री सोमनाथ कपूर मन्त्री, श्री शादीलाल गेरा कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज बगहा मीरजापुर श्री ज्वाला प्रसादसिंह प्रधान श्री हरिशंकरसिंह मन्त्री श्री सरोज कुमारसिंह कोषाध्यक्ष चुने गए।

—हाड़ौती क्षेत्रीय आर्य उपप्रतिनिधि सभा—श्री राजेन्द्र कुमार आर्य प्रधान, श्री कवरलाल सुमन मन्त्री, श्री रघुवीर जी कोषाध्यक्ष चुने गये।

—वैदिक प्रचार मण्डल अम्बाला छावनी—श्री वेद प्रकाश आर्य प्रधान, श्री कृष्ण कुमार मन्त्री श्री वेदमित्र हापड वाले कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज सावली आदि पचपुरी—श्री चन्द्रमणि प्रधान, श्री वासुदेव विमल मन्त्री, श्री बालमसिंह कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज माडल टाउन सवाई माधोपुर—श्री प्रभाशकर आर्य प्रधान श्री रामजीलाल आर्य मन्त्री, श्री हरिनारायण गुप्त कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज काशीपुर नैनीताल – श्री सत्यदेव जी गुप्त प्रधान, श्री शान्ति प्रसाद गोयल मन्त्री, श्री त्रिलोक चन्द्र जी आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये.

—आर्य समाज मुरैना – श्री फतह नारायण हुजेला प्रधान, श्री दर्शनलाल अग्रवाल मन्त्री, श्री रामचन्द्र जी आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज पीपाड नगर जोधपुर—श्री वृजबल्लभ जी प्रधान, श्री विजय कुमार जी आर्य मन्त्री, श्री जगदीशचन्द्र जी आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज नागदा ज०—श्री वैद्य रामसेवक पाण्डेय प्रधान श्री मोहनलाल सोनी मन्त्री, श्री कृष्ण मुरारी चतुर्वेदी कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य उपप्रतिनिधि सभा हरिद्वार—श्री सत्यप्रकाश गुप्त प्रधान, श्री देवराज मन्त्री, श्री सत्यपालसिंह चौहान कोषाध्यक्ष चुने गये।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार का वार्षिकोत्सव

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार का ९१वां वार्षिकोत्सव ८ अप्रैल बृहस्पतिवार से १४ अप्रैल बुधवार तक हर्ष, उल्लास और उत्साह के वातावरण मे मनाया गया।

उत्सव मे प्रमुखत आर्य सम्मेलन, वेद सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन एव व्यायाम सम्मेलन आदि आयोजित किये गये।

समारोह मे मार्ग दर्शन हेतु आमन्त्रित गौरव स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, प्रो० शेरसिंह जी, कुलाधिपति, श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब, प० सूर्यदेव जी प्रधान आर्य विद्या सभा, डा० धर्मपाल जी महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली प० प्रकाशवीर जी विद्यालकार मन्त्री आर्य विद्या सभा डा प्रशात वेदालकार प० मदनमोहन विद्यालकार, भिक्षु दिवस्य पुत्र भारती आर्य भिक्षु, ओमप्रकाश जी वर्मा तेजपालसिंह आर्य, श्यामसिंह हितकर, श्रीमती आशारानी जी ने अपने विचारो से श्रोताओ को लाभान्वित किया। —महेन्द्र कुमार

सहायक मुख्याधिष्ठाता

तपोवन (देहरादून) का ग्रीष्मोत्सव

देहरादून, १६ मार्च। वैदिक साधन आश्रम, तपोवन (देहरादून) मे प्रतिवर्ष अप्रैल मे होने वाला ग्रीष्मोत्सव तथा अक्तूबर मे होने वाला शरदोत्सव अब प्रभूत लोकप्रियता प्राप्त कर चुके है। इन अवसरो पर होने वाले वृहद यज्ञो की पूर्णाहुति वाले दिन तो दूर के स्थानो से आगत श्रद्धालुओ का मेला सा हो जाया करता है। इक्के दुक्के आने वाले यात्रियो के अतिरिक्त दिल्ली आदि नगरो से यात्री-समूह बड़ी सख्या मे विशेष बसो से भी आते हैं।

इस वर्ष का ग्रीष्मोत्सव २१ अप्रैल से आरम्भ होकर २५ अप्रैल को सम्पन्न होगा। योग-साधना-शिविर का निर्देशन श्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी करेंगे और यज्ञ के ब्रह्मा होगे आचार्य अर्जुनदेव जी। प्रवचनकर्ताओ में आचार्य चन्द्रदेव जी, गुरुकुल कागड़ी विश्व विद्यालय के आचार्य रामप्रसाद वेदालकार व डा० महेश विद्यालकार जी के नाम विशेष रूप से उल्लेख्य है।

महोत्सव की तैयारियो मे आश्रम के कार्यकर्ता श्रद्धा तथा उत्साह से जुटे हैं। —देवदत्त बाली

संस्कार चन्द्रिका

संस्कार चन्द्रिका प्रकाशित हो चुकी है जिन महानुभावो ने इसके लिए अग्रिम राशि सभा मे भेजी हुई है वह सुविधा की दृष्टि से इसे सार्वदेशिक सभा से प्राप्त कर सकते हैं। इससे समय व डाक व्यय की बचत होगी। दिल्ली से बाहर के व्यक्तियो को पुस्तक वी पी द्वारा भेजी जा रही है कृपया उसे लेने का कष्ट करें।

—डा० सच्चिदान द शास्त्री

देश को सबसे बड़ा खतरा

(पृष्ठ ३ का शेष)

राष्ट्रीय विकास परिषद ने उच्चाधिकार प्राप्त जो जन सख्या समिति बनाई थी अब उसने अपनी रिपोट मे सरकार से कहा है कि—

— जिन लोगो के दो से अधिक बच्चे हो उ हे जन वितरण प्रणाली की सुविधाओ से वचित कर दिया जाए और उनके लिये ऋण लेने तथा जमीनो और मकानो की अलाटमैंट को भी मुश्किल बना दिया जाए।

— धर्म को भी परिवार नियोजन के प्रचार के लिये इस्तेमाल किया जाये और धार्मिक नेताओ को भी इस कायक्रम मे प्रचार के लिये शामिल किया जाए।

— दो बच्चो के नियम का पालन न करने वाले परिवारो के लिये कुछ पाबदिया लगाने के मामले पर भी सरकार को गम्भीरता से विचार करना चाहिए।

— जिन सरकारी कमचारियो के दो बच्चे हैं उन्हे सरकारी आवास के आबटन मे अधिमान दिया जाए।

— जिस सरकारी कर्मचारी के दो के बाद तीसरा बच्चा हो उसकी पाच साल के लिये तरक्की रोक दी जाए और चौथा बच्चा होने पर उसे बर्खास्त कर दिया जाए।

— मकान बनाने और गाडी खरीदने के लिये कम ब्याज पर ऋण आबादी के प्रति जागरूक कमचारियो को ही दिया जाए। अवकाश यात्रा सुविधाए और चिकित्सा सुविधाए कवल दो बच्चो को ही दी जाए।

— दो से अधिक बच्चे वाले व्यक्ति या बाल विवाह कानून का उल्लघन करने वाले व्यक्ति को किसी भी सरकारी या अद्ध सरकारी सस्थान या पब्लिक सैक्टर मे नौकरी न दी जाए।

— परिवार नियोजन की आवश्यकता की अनुभूति कराने के लिये विशेष साहित्य के प्रकाशन और वितरण की व्यवस्था की जाए।

इस समिति ने जो केरल के मुख्यमत्री श्री के करुणाकरण के नेतत्व मे बनाई गई थी इस सम्बन्ध मे ११० पष्ठो पर आधारित एक विस्तत रिपोट सरकार को दी है जिसमे उपरोक्त सुझावो के अतिरिक्त कुछ और सुझाव भी दिए हैं।

हो सकता है कि कुछ लोगो को इनमे से कुछ सुझाव या सारे सुझाव ठीक न लगे मगर अनुभव ने यह अवश्य सिद्ध कर दिया है कि इस बात को निश्चित बनाते हुए कि कही कोई जुल्म और ज्यादती न हो आबादी पर अकुश लगाने के लिये कुछ कठोर पग अवश्य उठाए जाने की आवश्यकता है।

श्री सुखवन्त सिंह ने मीडिया से इस दायि व को मिशन के रूप मे लेने की बात कही है हम तो पहले ही समय समय पर बढती हुई आबादी के खतरो का जिक्र अपने लेखो मे करते रहते है।

यह बात कदापि नही भूली जानी चाहिये कि अगर जल्दी ही इस समस्या से निपटने के लिये कुछ नहीं किया गया तो आने वाली शताब्दी मे पहुचते पहुचते स्थिति को सभालना बेहद मुश्किल हो जायेगा। अकेले सरकार की ही नही मीडिया की धार्मिक और सामाजिक नेताओ की तथा जनता की भी इस मामले मे बराबर की जिम्मेदारी है अत अपनी अपनी जगह अपने अपने ढग से सभी को खाने वाले मुह और कमाने वाले हाथो के बीच अनुपात को कायम रखने का प्रयत्न करना चाहिए—इसी मे देश का हित है।

—विजय

श्री सरदार चन्द्रजी द्वारा दस सहस्त्र का सात्विक दान

शत वर्षीय महाशय सरदार च द्र जी ने ऋषिबोधोत्सव पर १०,०००/ (दस हजार रु) मात्र अपनी पवित्र आय मे से आर्य समाज भवन मे पेयजल व्यवस्था एव वेद प्रचार हेतु दान मे दिए। सलग्न चित्र मे महाशय सरदार च द्र जी दस हजार का चक भट कर रहे हैं जिसे डा० नरे द्र गुप्ता मन्त्री समाज के लिए स्वीकार कर रहे है। साथ मे श्री सुरे द्र कुमार प्रधान एव धर्मवीर जी वत्रा उपमन्त्री खड हैं समारोह की अध्यक्षता श्री वी एन शर्मा जी ने की जो पीछे आसनारूढ हैं। श्री दयान द जी विदेह सामने बठे है।

पुनश्च

डी ए वी कालेज प्रब ध कतृ समिति का त्रिवार्षिक चुनाव १४ ३ ९३ को हुआ। इसमे अम्बाला नगर व अम्बाला छावनी के प्रतिनिधियो ने भाग लिया। सव सम्मति से निम्न सदस्य वष १९९३ ९४ ९५ के लिए चुने गए।

१—श्री भीम कुमार मुटरेजा २—श्री देसराज चवन
३—श्री राजे द्र नाथ ४—श्री सुरेन्द्र कुमार
५—श्री यश प्रकाश गुप्ता

नरे द्र गुप्त म त्री
आर्य समाज रेलवे रोड अम्बाला नगर १३४००३

बम्बई के विस्फोट

(पृष्ठ ४ का शेष

लिप्त है तथा इस पर बड पमाने पर धन खच किया गया है। यदि माहिम की पुलिस ईमानदारी और मुस्तैदी से काम करती तो भारत की आर्थिक राजधानी ब बई श खलाबद्ध बम विस्फोटो के भयकर हादसो मे बच जाती। हालाकि पुलिस को सुराग विस्फोटो के तत्काल बाद मलने शुरू हो गये थे परन्तु इसे पुलिस बल की अक्षमता कहे या शिथिलता अथवा दुष्चक्र त त्र म खोट कि पकड गये व्यक्तियो से उदघाटित तथ्यो की पुलिस ने पर्याप्त पडताल नही की। इसी क्रम की सबसे अहम घटना माहिम मे मेमन ब धुओ के आवास के बाहर ११ माच को प्रात १४ १५ मारुति गाडिया देखी गई और उनसे सामान भी उतारा गया। लेकिन पडोस मे स्थित थाने के अधिकारियो ने इस तरफ से आख मूद ली। घटनाए यह दर्शाने को पर्याप्त हैं कि मेमन ब धुओ का अ डरवल्ड से घनिष्ठ सम्ब ध है और इनके बार बार देश के बाहर जाने पर पुलिस ने गौर क्यो नहीं किया ?

महात्मा हंसराज जन्म दिवस

नई दिल्ली। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एव डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति दिल्ली की समस्त आर्यसमाजो एव शिक्षण सस्थाओ के सयुक्त तत्वावधान मे डी ए वी आन्दोलन के सस्थापक महात्मा हंसराज जन्म दिवस समारोह रविवार १८ अप्रैल १९९३ को प्रात ९ बजे से दोपहर १ ३० बजे तक तालकटोरा इनडोर स्टेडियम, नजदीक बिरला मन्दिर, नई दिल्ली मे समारोह पूवक मनाया जा रहा है। जिसके मुख्य अतिथि लोकसभा अध्यक्ष श्री शिवराज पाटिल, अध्यक्ष डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के सगठन सचिव होगे इनके अतिरिक्त भारत के पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह व भारत के विदेश राज्य मन्त्री श्री आर एल भाटिया विशिष्ट अतिथि होगे। इस समारोह मे आर्य जगत के अनेको विद्वान तथा गणमान्य व्यक्ति पधारकर महात्मा हंसराज जी के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करेंगे।

मेरी दिल्ली तथा दिल्ली के आस-पास की समस्त जनता से प्रार्थना है कि वे अभी से उपरोक्त कार्यक्रम की तिथि अंकित कर लेवें और समारोह मे सम्मिलित होने के लिए कार्यक्रम बना लेवे। प्रात ९ बजे से १० बजे तक यज्ञ होगा एव प्रात १० बजे से दोपहर १ ३० बजे तक सार्वजनिक सभा होगी। मुझे पूरी आशा है कि आप इस समारोह मे अवश्य पधारेंगे।

—रामनाथ सहगल, मन्त्री

आर्यसमाज बागपत का वार्षिकोत्सव

—आर्य समाज बागपत मेरठ का वार्षिकोत्सव १७ से १९ अप्रैल तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती सहित अनेको विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे है। समारोह मे अनेको सम्मेलनो का आयोजन भी किया गया है। अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर समारोह को सफल बनायें।

—आर्य समाज भीकमपुर जैनी बदायू का तेरहवा वार्षिकोत्सव १५ से १७ मई तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है इस अवसर पर आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान, सन्यासी, भजनोपदेशक पधार रहे हैं। समारोह की सफलता तथा वैदिक मन्तव्यो के ज्ञान के लिये अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर लाभ उठायें।

वार्षिकोत्सव

—आर्यसमाज मन्दिर जहानाबाद का ६३वा वार्षिकोत्सव ९से ११ अप्रैल तक आर्य समाज मन्दिर, जहानाबाद मे समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्यजगत के ख्याति प्राप्त विद्वानो तथा भजनोपदेशको के अमृतमय वचनो से श्रोताओ ने लाभ उठाया। प्रतिदिन होने वाले प्रात काल के विशेष यज्ञ मे लोग भारी सख्या मे पधारें।

—आर्यसमाज हरजेन्द्र नगर कानपुर—आर्यसमाज हरजेन्द्र नगर कानपुर का वार्षिकोत्सव १४ से १६ मई तक समारोहपूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्यजगत के उच्चकोटि के विद्वान व भजनोपदेशक पधार रहे है।

डा० भवानीलाल भारतीय सम्मानित

आर्य समाज स्थापना दिवस के शुभावसर पर आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली की ओर से डा० भवानी लाल भारतीय को एक शाल और कुछ तुच्छ राशि भेंट कर उन्हें सम्मानित किया गया। आर्य केन्द्रीय सभा अपनी परम्परानुसार प्रतिवर्ष एक विद्वान विशेष का सम्मान करती है।

म० धर्मपाल जी अध्यक्ष व डा० शिवकुमार जी शास्त्री का यह प्रयास स्तुत्य एवं सराहनीय है।

जहां लेखक विद्वान वक्ता प्रो० डा० भवानी लाल की श्री वृद्धि हो वहीं केन्द्रीय आर्य सभा अपने कार्य मे गतिशील होकर भविष्य में इसी प्रकार विद्वानो को सम्मान देने में अभिवृद्धि करें। —सम्पादक

सार्वदेशिक आर्यवीर दल का राष्ट्रीय शिविर

६ मे २० जून १९९३ तक

स्थान—गुरुकुल झज्जर, रोहतक(हरयाणा)। सार्वदेशिक आर्यवीर दल का राष्ट्रीय शिविर ६ से २० जून तक गुरुकुल झज्जर में डा० देवव्रत आचार्य प्रधान सञ्चालक की अध्यक्षता में लग रहा है जिसमें आर्य वीर दल की प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण आर्यवीरों को ही प्रवेश दिया जाएगा। शाखा नायक, उप-व्यायाम शिक्षक, व्यायाम शिक्षक और आचार्य श्रेणी का प्रशिक्षण दिया जाएगा।

प्रवेश शुल्क—५० रुपए, पञ्जीकरण शुल्क १० रु०, परीक्षा शुल्क ५ रु०, कुल ६५ रुपए।

सामान - खाकी हाफ पैन्ट, सफेद शर्ट, ब्राउन जूते, सफेद मौजे, सैन्डो बनियान, लंगोट काला कच्छा, लाठी, नोट बुक, थाली, लोटा, बिस्तर, तेल साबुन इत्यादि।

मार्ग—दिल्ली से झज्जर बस द्वारा, झज्जर रेवाड़ी रोड़ पर गुरुकुल ४ किलोमीटर दूर स्थित है।

शिविरार्थी—अपने शाखा नायक, अधिकारी या स्थानीय आर्य समाज के अधिकारियो का संस्तुति पत्र साथ लाये।

प्रबन्धक शिविर	संयोजक शिविर
विजयपाल आर्य	सत्यवीर आर्य
प्रधानाध्यापक, गुरुकुल झज्जर	संचालक आर्यवीर दल, राज०

शिव-पार्वती संवाद का लोकार्पण

—आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली की ओर से हिमाचल भवन नई दिल्ली में आयोजित आर्यसमाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य मे वेद प्रचारक मण्डल की नव प्रकाशित पुस्तक "शिव-पार्वती सम्वाद" का विमोचन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। पुस्तक के लेखक आचार्य हरिदेव महोपदेशक है।

सार्वदेशिक के ग्राहकों से

१—सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहकों से निवेदन है कि वे अपना वार्षिक शुल्क यथाशीघ्र भिजवाये।

२—वार्षिक शुल्क भेजते समय अथवा पत्र-व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या का उल्लेख अवश्य करें तथा अपना पूरा पता साफ शब्दों में लिखें।

३—कुछ सदस्यों ने काफी समय से अपना वार्षिक शुल्क नहीं भेजा है ऐसे सदस्यों को कई बार स्मरण पत्र भी भेजे गये हैं परन्तु उनका शुल्क प्राप्त नही हो सका है। अत: सार्वदेशिक का सम्पूर्ण शुल्क अविलम्ब भेजने का कष्ट करें अन्यथा विवश होकर सार्वदेशिक भेजना बन्द करना पड़ेगा, जो हम नहीं चाहते।

४—बार-बार वार्षिक शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिये, एक बार ३००/- भेजकर सार्वदेशिक के आजीवन सदस्य बनें।

५—अन्य व्यक्तियों को भी सार्वदेशिक का ग्राहक बनाकर सहयोग करें। —सम्पादक

कालाहाण्डी पुन: अकाल की चपेट में

जैसा कि आपको पता होगा कि आशा के विपरीत इस वर्ष भी वर्षा के अभाव में कालाहाण्डी जिले में अकाल की स्थिति बन गई है। वैसे तो यह उड़ीसा का सबसे सूखा जिला है इस जिले में भी नयापारा तहसील की स्थिति खराब रहती है, अनेक ग्रामों में परिस्थिति अति दयनीय है, कालाहाण्डी (उड़ीसा) एवं सरगुजा (म०प्र०) दोनों जिलों में हमें लोगों की सहायता करनी है अन्यथा विदेशी मिशनरी पुन: इसका लाभ उठाकर हमारे बन्धुओं को हमसे काटने का यत्न करेगी। पुनर्मिलन (शुद्धि) का जो रास्ता बना है वह राष्ट्रीय एकता का कार्य पुन: रुक जायेगा।

अत: सभी मानवता प्रेमी दयालु सज्जनों से प्रार्थना है कि हमें इस कार्य में अधिक से अधिक सहयोग दें। उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा ने शासकीय अधिकारियों से अभाव ग्रस्त ग्रामों की सूची मांगी है। तदनुसार शीघ्र ही सहायता प्रारम्भ करने को व्यवस्था कर रहे हैं। चैक ड्राफ्ट स्टेट बैंक या सैन्ट्ल बैंक खरियार रोड के उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम से भेजें।

जो आयकर छूट का लाभ लेना चाहते हैं वे गुरुकुल आश्रम आममेना के नाम से भेजें।

धर्मानन्द सरस्वती प्रधान
उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा, गुरुकुल आश्रम आमसेना

मुस्लिम परिवार की शुद्धि

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, बुलन्दशहर के तत्वावधान मे मेंहदीपुर निवासी श्री महावीर खां ने अपने दो पुत्रों साबू व हकीकत के साथ पवित्र भोला महादेव परिसर में यज्ञवेदी पर प्रसन्नतापूर्वक यज्ञोपवीत धारण कर वैदिक (हिन्दू) धर्म में प्रवेश किया। प्रेरणा व सहयोग श्री पं० शिवचरण लाल आर्य मुसाफिर श्री छेदालाल कौशिक एवं श्री दीपचन्द शर्मा का रहा। परावर्तन संस्कार आचार्य धर्मेन्द्र शास्त्री ने सम्पन्न कराया। अब श्री महावीरखां, महावीरसिंह, साबू चि० श्यामसिंह तथा हकीकत श्री हरिपालसिंह बन गये हैं।

हजारों की संख्या में उपस्थित जन समुदाय ने करतलध्वनि, पुष्पवर्षा तथा जयघोषों के साथ इस परिवार का स्वागत किया।

—महेन्द्रपालसिंह

प्रवेश सूचना

दिल्ली नगरी से लगभग ३५ किलोमीटर दूर प्रकृति के सुरम्य वातावरण में दिल्ली से कंझावला कुतुबगढ़ रोड़ पर गांव टटेसर में छात्रो के सर्वांगीण विकास हेतु अपने बच्चो को अनुभवी प्रशिक्षित अध्यापकों के निरीक्षण में, भारतीय सभ्यता संस्कृति की भावना भरने हेतु कक्षा षष्ठ (पास पंचम) सप्तम अष्टम, नवम कक्षाओं में प्रवेश १-४-९३ से प्रारम्भ है। आवासीय व्यवस्था है। शीघ्र ही प्रवेश दिलवायें। पत्राचार हेतु—

प्रधान / मन्त्री
आर्य गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-८१

वैदिक प्रोफेसर की आवश्यकता

दयानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अजमेर में राज्य सरकार तथा विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत दयानन्द शोधपीठ के लिए प्रोफेसर तथा अध्यक्ष पद के लिए एक सुयोग्य, दस वर्ष के स्नातकोत्तर अध्यापन के अनुभवी, आर्य विद्वान की आवश्यकता है। जो संस्कृत में एम०ए० कम से कम द्वितीय श्रेणी तथा पी०एच०डी० हो और ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों के प्रति पूर्ण जानकारी एवं निष्ठा रखते हों। वेतन शृंखला ४५००-७३०० में प्रारम्भिक वेतन रु० ७४०५/- देय होगा। आयु ५५ वर्ष से कम हो। आवेदन पूर्ण विवरण सहित प्रो० दत्तात्रेय आर्य, निदेशक, दयानन्द महाविद्यालय, अजमेर के नाम शीघ्र प्रस्तुत करें।

पुस्तक समीक्षा

आदर्श गार्हस्थ्य जीवन

लेखक – श्री भद्रसेन जी
मूल्य—३० रुपए
वैदिक प्रकाशन, ७११५ पहाड़ी धीरज, दिल्ली

सभी आश्रमो मे 'गृहस्थ-आश्रम' को सर्वोपरि माना है। प्रत्येक व्यक्ति को जो अपने गृहस्थ जीवन को सुखमय व सफल बनाना चाहता है। उस प्रबुद्ध वर्ग और बुद्धिजीवि तत्व को चाहिए कि वह इस प्रकार की पुस्तको का स्वाध्याय करे।

गृहस्थ-धर्म को समझकर अपने जीवन को उत्तम स्वस्थ बनाए। आज चारित्र्य बल बुद्धि तथा सदाचार को नष्ट करने वाली पाश्चात्य शिक्षा के दूषित वातावारण मे हमारे गृहस्थ जीवन मे जीने वाले परिवारो को कैसे जीवन निर्माण कर बिताना चाहिए।

इस पुस्तक की उपयोगिता यही है—जीवन निर्माण और जीवन मे जीने की कला- पुरुषार्थमय जीवन से जीवन का स्तर ऊचा कर अपने व्यक्तित्व से घर परिवार-समाज का निर्माण। इसमे काम शास्त्र का ज्ञान, फिर अर्थ प्रधान जीवन मे धन का सदुपयोग। अर्थ, काम दोनो से गृहस्थ की गाड़ी धर्म के अनुसार चले, तभी गृहस्थ जीवन का आनन्द है।

लेखक की कृति और प्रकाशक का पुरुषार्थ तभी सफल है जब इससे लाभान्वित गृहस्थ धर्म का भविष्य उज्ज्वल हो।—सम्पादक

वार्षिक यज्ञ एवं निःशुल्क नेत्र शिविर सम्पन्न

दयानन्द मठ चण्डरा, तह० इन्दौरा जिला कागड़ा हि० प्र० मे १४ से २१ मार्च तक यजुर्वेद पारायण महा यज्ञ का विराट आयोजन किया गया। प्रात. तथा साय दोनो समय होने वाले इस यज्ञ मे दूर-दूर से आए सैकड़ो व्यक्तियो ने भाग लिया। पूर्णाहुति के अवसर पर स्वामी सर्वानन्द जी महाराज सहित अनेको गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। इससे पूर्व १५ मार्च से आखो के नि शुल्क शिविर का प्रारम्भ हुआ जिसमे सैकड़ो रोगियो ने लाभ प्राप्त किया। तथा २१ नेत्र रोगियो के आप्रेशन किए गए।

शोक समाचार

अत्यन्त दुख के साथ सूचित किया जाता है कि मेरे पूज्य पिताजी श्री रामचन्द्र शर्मा का भारत मे हृदयगति रुक जाने से १० जनवरी ९३ को स्वर्ग वास हो गया है। वे ७६ वर्ष के थे। श्री रामचन्द्र शर्मा एक कट्टर आर्य समाजी थे तथा आर्य समाज के प्रचार तथा प्रसार मे उन्होने अपना जीवन लगा दिया। दिवगत आत्मा की शान्ति के लिए २२ जनवरी को हिन्दू टेम्पल नाटिघम् इगलैंड मे एक शाति यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमे अनेको प्रतिष्ठित लोगो ने श्री शर्मा को श्रद्धाजलि अर्पित की।

—सोमदत्त शर्मा, मिनिस्टर हिन्दू टेम्पल

डा० आनन्द प्रकाश को मातृ शोक

सार्वदेशिक सभा के पूर्व उपमन्त्री डा० आनन्द प्रकाश की पूज्या माता जी का निधन ३० मार्च को हो गया है। उनका शान्ति यज्ञ ५ अप्रैल को बनारस मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्रद्धाजलि देने हेतु नगर के अनेको गणमान्य व्यक्ति तथा सस्थाओ के प्रतिनिधि उपस्थित थे। एक शोक सन्देश मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान तथा मन्त्री जी ने परमपिता परमात्मा से दिवगत आत्मा की शान्ति तथा पारिवारिक जनो को धैर्य प्रदान करने की कामना की।

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ मे प्रवेश आरम्भ

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ सराय ख्वाजा निकट सूरज कुण्ड व बदरपुर बार्डर से एक किलोमीटर अरावली पवत पर स्थापित में चौथी से दसवी तक प्रवेश आरम्भ है। गत वर्ष का परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत, अध्यापक अनुभवी तथा ट्रेण्ड आनव य आवास की व्यवस्था तथा शिक्षा नि शुल्क। प्रवेश हेतु शीघ्र सम्पर्क करें। फोन २७५३६८

—आचार्य, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ
डा० नई दिल्ली ४४ (फरीदाबाद)

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

—आर्य समाज आदर्श नगर का वार्षिकोत्सव २५ से २८ मार्च तक समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आचार्य वैद्य कुन्दन लाल जी के ब्रह्मत्व मे विशाल यज्ञ का आयोजन भी किया गया। समारोह में श्री महेन्द्र पाल आर्य सहित अनेको विद्वानो तथा भजनोपदेशको ने वचनामृत से श्रोताओ को लाभान्वित किया।

—आर्यसमाज गोसपुरा न०१ का सातवा वार्षिकोत्सव २२ से २४ मार्च तक मनोरजनालय प्रागण बिरला नगर मे उत्साहपूर्वक तीन दिन विविध कार्यक्रमो के साथ सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वानों तथा भजनोपदेशको के विद्वतापूर्ण विचारो से विशाल जन समूह ने लाभ उठाया। इस अवसर पर वृहत्तर ग्वालियर की समस्त आर्य समाजो के सदस्यों का एक अपूर्व सम्मेलन भी आयोजित किया गया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित

सत्यार्थप्रकाश प्रचार-प्रसार प्रतियोगिता

—: पुरस्कार :—

प्रथम : ११ हजार द्वितीय : ५ हजार

तृतीय : २ हजार

न्यूनतम योग्यता : १०+२ अथवा अनुरूप

आयु सीमा : १८ से ४० वर्ष तक

माध्यम : हिन्दी अथवा अंग्रेजी

उत्तर पुस्तिकायें रजिस्ट्रार के भेजने की अन्तिम तिथि ३१-८-१९९३

विषय :

महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश

नोट —प्रवेश, रोल न०, प्रश्न-पत्र तथा अन्य विवरण के लिए देश मे मात्र बीस रुपये और विदेश मे दो डालर नगद या मनीआर्डर द्वारा रजिस्ट्रार, परीक्षा विभाग सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नयी दिल्ली-२ को भेजे। पुस्तक अगर पुस्तकालयो, पुस्तक विक्रेताओ अथवा स्थानीय आर्य समाज कार्यालयो से न मिले तो तीस रुपये हिन्दी सस्करण के लिये और पैसठ रुपये अंग्रेजी सस्करण के लिये सभा को भेजकर मगवाई जा सकती हैं।

(२) सभी आर्य समाजो एव व्यक्तियो से अनुरोध है कि इस तरह के हैंडबिल ४-५ हजार छपवाकर आर्यजनो, स्थानीय स्कूल कालेजो के अध्यापको और विद्यार्थियो मे वितरित कर प्रचारबढाने मे सहयोग द।

डा० एच०बी० आर्य — रजिस्ट्रार
स्वामी आनन्दबोध सरस्वती — प्रधान

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन दिल्ली-२ से प्रकाशित।

महर्षि दयानन्द उवाच

- मुख्य सेनापति, मुख्य राज्याधिकारी, मुख्य न्यायाधीश और प्रधान ये चार सब विद्याओ मे पूर्ण विद्वान होने चाहिए । इन चारो अधिकारो पर सम्पूर्ण वेद शास्त्रों मे प्रवीण विद्या वाले धर्मात्मा, जितेन्द्रिय, सुशील जनो को स्थापित करना चाहिए ।
- स्वराज्य, स्वदेश मे उत्पन्न हुए, वेदादि शास्त्रो के जानने वाले, शूरवीर जिनका लक्ष्य एव विचार निष्फल न हो और कुलीन, अच्छे प्रकार सुपरीक्षित, सात या आठ उत्तम, धार्मिक, चतुर सचिव अर्थात् मन्त्री नियुक्त करे ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र   दूरभाष : ३२७४७७१   वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३१ अंक ११]   दयानन्दाब्द १६९   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९३   वैशाख शु० ३   सं० २०५०   २५ अप्रैल १९९३

हरियाणा प्रदेश से गोवंश की निकासी अविलम्ब बन्द की जाये

मुख्यमन्त्री चौ० भजनलाल को स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का विशेष पत्र

माननीय चौ० भजनलाल जी
मुख्यमन्त्री हरियाणा सरकार
चण्डीगढ़,

सादर नमस्ते ।

आशा है ईश कृपा से सर्वथा आनन्द पूर्वक होगे ।

निवेदन है कि हरियाणा सरकार ने गोवश की हरियाणा से बम्बई और कलकत्ता के लिए निकासी बन्द की हुई है और पिछले तीन-चार वर्षों से इस आदेश का पालन भी होता रहा है । किन्तु अब कुछ दिनो से राजस्थानी बजारे हरियाणा के ग्रामो मे घूम-घूमकर बम्बई और कलकत्ता भेजने के लिए गऊओ को एकत्र कर रहे है । मुझे यह भी पता चला है कि यह बजारे राजस्थान के रास्ते से गऊओ को पाकिस्तान मे भी भेजते हैं । इससे हरियाणा एव उसमे बाहर की जनता मे बडा क्षोभ है ।

कृपया सिरसा, डब्बावली, ऐलनाबाद, आदि बाडर के नगरो मे इस प्रकार की जो तस्करी बडे पैमाने पर हो रही है, इसे रुकवाने का कार्य आप अपने हाथ मे लेकर सम्बन्धित थानो को उचित आदेश जारी करने की कृपा करें और इन राजस्थानी बजारो को तत्काल हरियाणा से बाहर निकालने का आदेश भी जारी करे जिससे इस प्रकार की तस्करी को तत्काल रोका जा सकेगा । आशा है आप इस सम्बन्ध मे उचित आदेश जारी कर अनुगृहीत करेगे ।

शुभ कामनाओ सहित,

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान

पटियाला मे प्रस्तावित मांस के कारखाने का विरोध

पता चला है कि पजाब सरकार ने पटियाला मे भैस के कट्टे का मास बनाने का कारखाना स्थापित करने का निर्णय लिया है । पजाब की आर्य जनता ने इस कारखाने का जोरदार विरोध किया है । सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने पजाब के मुख्यमन्त्री सरदार बेअन्तसिंह को विशेष पत्र लिखकर उनसे माग की है कि पटियाला मे भैस के कट्टे के मांस का कारखाना लगाने के निर्णय का बडी सख्या मे लोगो द्वारा विरोध हो रहा है अत आपकी सरकार ऐसा कोई कदम न उठाये जिससे एक नई समस्या का जन्म हो और खुशहाली की ओर अग्रसर पजाब की जनता को फिर किसी समस्या से जूझना पडे । अत. पटियाला मे प्रस्तावित कारखाने की योजना को अविलम्ब रद्द करने की घोषणा करे ।

आर्यसमाज तिमारपुर दिल्ली में नवनिर्मित भव्य यज्ञशाला का उद्घाटन

दिल्ली १९ अप्रैल । यज्ञ एक ऐसा श्रेष्ठतम कर्म है जो न केवल, वायु, जल, ध्वनि आदि का प्रदूषण दूर करता है, बल्कि त्याग और परोपकार का भी सन्देश देता है । यह विचार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आज आर्य समाज तिमारपुर की नवनिर्मित भव्य यज्ञशाला का उद्घाटन करते हुए व्यक्त किए । उन्होने यह भी कहा कि हमे यज्ञ की भावना से जीवन जीना चाहिए और वेद मार्ग पर चलकर समस्त विश्व मे भाईचारे और शान्ति की स्थापना के लिए निरन्तर कार्य करते रहना है । कार्यक्रम की अध्यक्षता दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल ने की ।

२५ अप्रैल को आर्य समाज तिमारपुर मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव जी की अध्यक्षता मे एक राष्ट्र रक्षा सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है जिसमे केन्द्रीय भूतल एव परिवहन मन्त्री श्री जगदीश टाइटलर एव अन्य आर्य नेता राष्ट्रीय अखण्डता को सुदृढ करने के लिए प्रेरक उद्बोधन देगे ।

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

विदेश समाचार

आर्य समाज नैरोबी ने आर्य समाज का ११८ वां स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया

२७ मार्च, १९९३, शनिवार को आर्य समाज नैरोबी एव आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे आर्य समाज का ११८ वा स्थापना दिवस अत्यन्त हर्ष एव उल्लास के साथ मनाया गया, जिसमे सैकडो आर्य नर-नारियो ने भाग लिया।

कार्यक्रम का आरम्भ हवन-यज्ञ से आरम्भ हुआ, जिसमे आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान धर्म प्रकाश जी आहलूवालिया एव आर्य समाज के प्रधान विजय जी घई मुख्य यजमान थे, यज्ञ के पश्चात उपदेशक महाविद्यालय टकारा के स्नातक प० रामकृष्ण शर्मा ने प्रवचन दिया, जिसमे उन्होने आर्य समाज की स्थापना का महत्व एव उद्देश्य बताया।

इसके पश्चात शेष कार्यक्रम महर्षि दयानन्द भवन में हुआ, कार्यक्रम का आरम्भ वैदिक प्रार्थना से हुआ तत्पश्चात प० रामकृष्ण शर्मा ने आर्य समाज के दस नियमो पर आधारित भजन गाया, तत्पश्चात रगारग कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए।

इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पूर्वी अफ्रीका ने कुछ विशेष व्यक्तियो को उनकी समाज सेवा के लिए सम्मानित किया और उपाधिया भेट की जो निम्नलिखित हैं।

श्री बलदेव जी कपिला आर्यरत्न नैरोबी, श्री आर्यमुनि शर्मा आर्यरत्न मोम्बासा श्री मोहिन्दरपाल चड्ढा आर्यरत्न नैरोबी, श्री पी एस सैनी आर्यभूषण नैरोबी, श्रीमती शान्ति देवी शर्मा आर्य भूषण नैरोबी, श्रीमती लाजवन्ती प्रिंजा आर्य भूषण मोम्बासा, श्री जयदेव शर्मा आर्यश्री नैरोबी, श्रीमती सरस्वती सूद आर्य श्री नकुरु, श्रीमती कौशल्या कोहली आर्यश्री किसुमु श्री धर्मपाल बालिया आर्यवीर नकुरु।

उपाधि वितरण के पश्चात आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रकाशन मे प्रकाशित एक नयी पुस्तक का विमोचन किया गया, यह पुस्तक दैनिक हवन-सध्या की पुस्तक है, जिसको रोमन लिपि मे अर्थ सहित लिखा गया है, इस पुस्तक को विद्यार्थी परिवार ने अपने पिता श्री गिरधारी लाल जी विद्यार्थी एव स्वर्गीया माता श्रीमती शान्तिदेवी विद्यार्थी की स्मृति मे प्रकाशित करवाया है।

२८ मार्च, १९९३, रविवार को स्थापना दिवस की दूसरी कडी मनायी गई, हवन यज्ञ के पश्चात आर्यस्त्री समाज की बहनो ने प० रामकृष्ण शर्मा के साथ मिलकर ऋषि से सम्बन्धित दो भजनो को गाया, तत्पश्चात आर्य गर्ल्ज स्कूल की छात्राओ एव आर्य ब्वाय स्कूल के छात्रो ने मिलकर महर्षि दयानन्द के समाज सुधारो पर आधारिक एक नाटक प्रस्तुत किया, जिसको प० रामकृष्ण शर्मा ने तैयार करवाया था। —मन्त्री, आर्य समाज नैरोबी

सुभाषितानि—

प्रिया न्याय्यावृत्तिर्मलिनमसुभङ्गेऽप्यसुकर,
असन्तो नाभ्यर्थ्या सुहृदपि न याच्य कृशधन।
विपद्युच्चै स्थेय पदमनुविधेय च महता,
सता केनोद्दिष्ट विषममसिधाराव्रतमिदम्॥
(नीतिशतक)

भावार्थ—सत्पुरुषो के ये स्वाभाविक कर्म होते हैं—धर्मानुकूल प्रिय जीविका करना, प्राणान्त की सम्भावना होने पर भी धर्म विरुद्ध मलिन कार्य, दुर्जनो से कभी प्रार्थना निर्धन मित्रो से भी याचना न करना, आपात्काल मे भी अपने आदर्शों पर स्थिर रहना और महापुरुषो के बताये मार्ग पर ही निरन्तर चलते रहना। इन तलवार की धार के समान तीव्र व्रतो पर चलने के लिये सत्पुरुषो को किसने आदेश दिया है? अर्थात किसी ने नही। पुनरपि वे अपने स्वभाववश इन व्रतो का पालन करते रहते हैं।

दिव्य युग लाओ

जिसके कारण विश्व हमारा गाता रहा सदा गाना।
अपने इस पवित्र भारत मे वही दिव्य युग है लाना॥
परम कृपालु पिता ने जब ही यहा पर सृष्टि रचाई थी।
इसे सुखी रखने की तब ही यह पद्धति अपनाई थी।
ऋषियो के पावन अन्तस् मे श्रुति की ज्योति जगाई थी।
इसी ज्योति का आश्रय लेकर सबने उन्नति पाई थी।
इसीलिए यहा सुख समृद्धि का तना रहा ताना-बाना॥ अपने -
सबको आर्य बनाने का उपदेश दिया प्रभु ने प्यारा।
सर्वश्रेष्ठ व्यवहार यहा था मान रहा है जग सारा॥
'सर्वे भवन्तु सुखिन' का यहा ही उदभूत हुआ नारा।
बना स्वार्थ के लिए न कोई कभी किसी का हत्यारा॥
अच्छा माना गया सदा यहा धर्म मार्ग का अपनाना॥ अपने
कभी किसी भी परदेशी का हुआ यहा अपमान नही।
किस जिज्ञासु विदेशी को भी मिला यहा पर ज्ञान नहीं।
किस सुपात्र को मिला अपेक्षित इस भारत मे दान नही।
जाति धर्म निरपेक्ष गुणो का हुआ यहा कब गान नहीं।
सदा विश्व बन्धुत्व भाव ही हमने सर्वोत्तम माना॥ अपने -
पर अब तो स्थिति विचित्र है पाया जाता पार नही।
पूर्व समय की भाति वेद अब जीवन का आधार नही।
इसीलिए तो रहा परस्पर पहिले जैसा प्यार नही।
देश द्रोहियो की भारत मे कहा कहा भरमार नही।
इस स्थिति मे कसे सम्भव है पहिला गौरव पाना॥ अपने
घुसपैठिये यहा जितने है उन सबकी पहिचान करो।
तुच्छ स्वार्थ के लिए कभी भी मत उनका सम्मान करो।
राम कृष्ण की इस धरती का सब मिलकर उत्थान करो।
देशद्रोह आतकवाद का अब सत्वर अवसान करो।
शीघ्र सजगता आवश्यक है पड़े न पीछे पछताना॥ अपने०

रचियता—आचार्य रामकिशोर शर्मा
प्राचार्य, श्री राधाकृष्ण सस्कृत महाविद्यालय, खुरजा (उ०प्र०)

आर्य वीर दल चेतना शिविर

महाराष्ट्र तथा दक्षिण भारत मे आर्य समाज एव आर्य वीर दल के कार्य को प्रेरणा प्राप्त हो और इस क्षेत्र मे स्थान स्थान पर आर्य वीर दल का विस्तार हो इस उद्देश्य से आर्य समाज पिंपरी मे ग्रीष्मकालीन आर्य वीर दल चेतना शिविर का आयोजन किया गया है।

७ मई से १६ मई १९९३ तक पुणे (महाराष्ट्र) मे लगने वाले इस शिविर मे सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक डा० देवव्रतजी आचार्य मार्ग दर्शन करेंगे, यह प्रथम एव द्वितीय श्रेणी का शिविर रहेगा। १४ वर्ष से अधिक आयु वाले युवक इस शिविर मे सम्मिलित हो सकेंगे। प्रवेश शुल्क केवल रु. ५०/- प्रतिछात्र रहेगा। कृपया शीघ्र प्रवेश शुल्क तथा आवेदन पत्र अपने आर्य समाज के द्वारा भेजकर स्थान आरक्षित करें।

मन्त्री आर्य समाज पिंपरी, पुणे ४११०१७।
दूरभाष (०२१२) ८७४०७।

महाराणा प्रताप की ५००वीं जयन्ती के समारोह का शुभारम्भ २४ मई को लालकिला मैदान में

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के गत २८-२-९३ के बृहद साधारण अधिवेशन मे सर्व सम्मति से यह निर्णय हुआ था कि महान देशभक्त महाराणा प्रताप की पाच सौ वीं जयन्ती सार्वदेशिक सभा के तत्त्वावधान में पूरे पांच वर्ष तक विभिन्न समारोहों के साथ मनायी जावे।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आज जन्म शताब्दी समारोह के कार्यक्रम की घोषणा करते हुए बताया कि महाराणा प्रताप का ४९६ वा जन्मोत्सव २४ मई १९९३ को दिल्ली के लाल किला मैदान मे राष्ट्रभृत यज्ञ के साथ प्रारम्भ होगा। उसी दिन नई दिल्ली के तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम में जन्म शताब्दी के प्रथम चरण का समारोह आयोजित किया जाएगा। देश के विभिन्न नगरों तथा ग्रामो मे भी महाराणा का ४९६ वां जन्म दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा। इसके बाद दूसरे चरण मे देश के विभिन्न भागों में शताब्दी समारोह के कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे और अन्तिम समारोह १९९७ मे चित्तौड़ (राज०) मे राष्ट्रीय स्तर पर मनाया जायेगा।

स्वामी जी ने बताया कि समारोह में महाराणा प्रताप का भाला चेतक की काठी और जर्रा बख्तर प्राप्त करके जनता को इसका दर्शन कराया जाएगा। इस कार्य के लिए स्वामी जी २० अप्रैल को ४ दिन के दौरे पर उदयपुर जा रहे हैं और वहां महाराणा उदयपुर और भामाशाह के वंशजों से महाराणा प्रताप जन्म शताब्दी समारोह को रोचक और सफल बनाने के लिए बातचीत करेंगे।

स्वामी जी ने कहा कि दिल्ली में महाराणा प्रताप जन्म शताब्दी के प्रथम चरण के समारोह की तैयारियां जोर शोर से प्रारम्भ हो गई है।

आर्य समाज आंदोलन का प्रभाव

—ललित कुमार

ब्रह्म समाज के बाद, देश मे उदित होने वाला दूसरा महत्वपूर्ण राष्ट्रीय आंदोलन आर्य समाज था इसका प्रादुर्भाव देश के इतिहास की एक गंभीर वेला मे हुआ - ऐसी वेला मे जबकि अराष्ट्रवादी शक्तियां, जो अंग्रेजी शिक्षा के फलस्वरूप उत्पन्न हुई थीं, देश में अनियंत्रित ढंग से गतिशील थीं, जबकि अंग्रेजी शिक्षा पाए हुए नवयुवक, जो पाश्चात्य संस्कृति की बाह्य चमक-दमक से अत्यधिक प्रभावित थे, अपनी स्वदेशी संस्कृति से बिल्कुल विमुख हो चुके थे। प्राचीन शिक्षा पतनोन्मुख हो गईथी। पुरानी प्रथाओ को त्याग दिया गया था और प्राचीन धर्म को एक अनावश्यक अंधविश्वास मानकर उपेक्षित किया जा रहा था। पाश्चात्य वस्तु को पूज्य समझा जाने लगा था और उसे तेजी से अपनाया जाने लगा था।

भारतीय संस्कृति की इस पतनोन्मुख तथा निराशापूर्ण स्थिति में, आर्य समाज का, एक मुक्तिदायक शक्ति के रूप मे, जिसने भारतीयों को उनकी प्राचीन सस्कृति की कीर्तिपूर्ण परपराओ की ओर पुन. आकर्षित किया, प्रादुर्भाव हुआ। यद्यपि, ब्रह्म समाज की भांति यह भी प्रधानत. एक सामाजिक तथा धार्मिक आंदोलन था जो हिन्दू धर्म से सम्बन्धित था, किन्तु इसका स्वर निश्चय ही आक्रामक था और इसकी विचारधारा वास्तव मे राष्ट्रीय थी। प्राचीन हिन्दू संस्कृति और धर्म मे अडिग निष्ठा रखने क कारण, यह विदेशी धर्मो अर्थात् इस्लाम और ईसाई धर्म के साथ समझौता करने के लिये तैयार नही था। आर्य समाज की सुधार नीति भी भिन्न थी। ब्रह्म समाज की भाति इसने पश्चिम के आदर्शों से प्रेरणा नहीं ली, बल्कि देश की आर्य संस्कृति और धर्म मे, जिसके प्रतीक वेद थे, अपनी दृढ़ आस्था बनाए रखी। इस आंदोलन ने देशवासियो में नवीन आशा और विश्वास का संचार किया—न केवल शिक्षित वर्गो मे बल्कि जनसाधारण मे भी और इस भाति भारतीय राष्ट्रीयता को, जो विदेशी सस्कृति की बाहरी चमक के नीचे दबी हुई थी, नवजीवन प्रदान किया।

स्वामी दयानंद द्वारा १० अप्रैल १८७५ मे स्थापित आर्यसमाज का उद्देश्य दोहरा था। प्रथम, हिन्दू धर्म को इस्लाम और ईसाई धर्म के आक्रमण से बचाना, विशेषत: पहले से, और दूसरे वैदिक काल के मूल हिन्दू धर्म को पुनर्जीवित करके पौराणिक युग के विकृत हिन्दू धर्म मे सुधार करना।

समानता और धार्मिक कट्टरता की भावना को लेकर आर्यसमाज ने भारत के धार्मिक, सामाजिक, शैक्षिक और राजनीतिक क्षेत्र में जो कार्य किया उसकी तुलना किसी भी अन्य धार्मिक सुधार आदोलन से नही की जा सकती। उन्नीसवीं सदी के अन्य सभी सामाजिक और धार्मिक आदोलनो की तुलना में आर्यसमाज का काम अधिक सफल और स्थायी हुआ। आज भी भारत के गांव और शहरों मे आर्यसमाज और उसकी शिक्षा संस्थाए हैं।

धार्मिक क्षेत्र में आर्यसमाज ने मूर्ति पूजा, कर्मकांड, बलि-प्रथा, स्वर्ग और नरक की कल्पना और भाग्य में विश्वास आदि का विरोध किया। उसने वेदों की श्रेष्ठता का दावा किया और उसी आधार पर उसने मन्त्र-पाठ, हवन, यज्ञ, कर्म आदि पर बल दिया। आर्यसमाज ने हिन्दू धर्म को सरल बनाया और उसकी श्रेष्ठता में विश्वास उत्पन्न किया। वेदो की व्याख्या उसने इस प्रकार की कि जिससे वेद अनेक वैज्ञानिक, सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक सिद्धांतो के भी स्रोत माने जा सकते है।

सामाजिक क्षेत्र मे आर्यसमाज का कार्य बहुत सफल रहा। उसने बाल विवाह, बहु विवाह पर्दा प्रथा, जाति प्रथा आदि सभी हिन्दू सामाजिक कुरीतियो का विरोध किया। उसने स्त्रियो की शिक्षा, जाति-समानता और अछूतों के उद्धार का निरतर प्रयत्न किया। आर्य समाज की समानता की मूल भावना ने इस कार्य में आर्य समाज को बहुत सफलता दी। खान पान, अंतर्जातीय विवाह और पारस्परिक सम्पर्क आर्य समाज के जीवन की दिनचर्या बन गया। परन्तु इससे भी अधिक महत्वपूर्ण कार्य आर्य समाज ने शुद्धि आन्दोलन को आरम्भ करके किया। जो भी व्यक्ति ईसाई या इस्लाम धर्म को छोड़कर हिन्दू धर्म को स्वीकार करना चाहता था, आर्यसमाज ने उसकी शुद्धि करके उसे हिन्दू धर्म मे सम्मिलित करना आरम्भ किया। शुद्धि आदोलन का महत्व इस बात से स्पष्ट है कि आर्यसमाज ने लाखो व्यक्तियो को हिन्दू धर्म में सम्मिलित करने में सफलता पाई। ईसाई धर्म के प्रचार का प्रभाव अधिकांश निर्धन, अशिक्षित और भारत की पिछड़ी हुई या अस्पृश्य जातियो पर पड़ा था और ऐसे हिन्दू बहुत बड़ी संख्या मे ईसाई बन गए थे। एक बार ईसाई बनने के पश्चात् वे इच्छा होने पर भी हिन्दू धर्म मे वापस नहीं आ सकते थे। इस प्रकार हिन्दू धर्म निरतर अपने सदस्यो को केवल उनकी नादानी, भोलेपन या निर्धनता के कारण खोता जा रहा था। आर्यसमाज ने शुद्धि आदोलन को आरम्भ करके ऐसे व्यक्तियो के लिए हिन्दू धर्म का दरवाजा खोल दिया और इस प्रकार हिन्दू धर्म को दुर्बल होने से बचाया।

शिक्षा के क्षेत्र में आर्यसमाज का कार्य प्रशंसनीय है। समाज ने भारत के कोने-कोने में मुख्यतया उत्तरी भारत में जितनी शिक्षा संस्थाओ की स्थापना की है, उतनी किसी अन्य समाज ने नही की है। गुरुकुल, कन्या गुरुकुल और डी. ए. वी. कालेजों की स्थापना जगह-जगह पर की गई है। गुरुकुलो में संस्कृत भाषा और वेदो की शिक्षा पर बल दिया जाता है और शिक्षा का आधार प्राय: वही रखने का प्रयत्न किया जाता है जिसका उदाहरण हमें प्राचीन समय के शिक्षा आश्रमों में प्राप्त होता है। परंतु इसके अतिरिक्त अंग्रेजी, विज्ञान और आधुनिक समय के सभी विषयो का ज्ञान डी. ए. वी. कालेजों में कराया जाता है। ये शिक्षा सस्थाए न केवल हिन्दू धर्म और संस्कृति

(शेष पृष्ठ ४ पर)

राम मन्दिर के दरवाजों, खिड़कियों पर संगमरमर

सुप्रीमकोर्ट का केन्द्र को नोटिस

नई दिल्ली, १५ अप्रैल। उच्चतम न्यायालय ने अयोध्या मे विवादित स्थल पर निर्मित अस्थाई मन्दिर मे किए जा रहे परिवर्तनो के खिलाफ दायर आवेदन पर आज नोटिस जारी किए।

मुख्य न्यायाधीश न्याय मूर्ति एम एन वेंकटचलैया और न्यायमूर्ति एस मोहन की दो सदस्यीय ख डपीठ ने मोहम्मद असलम उर्फ भूरे के आवेदन पर केन्द्र सरकार और उत्तर प्रदेश सरकार को नोटिस जारी किये। इस आवेदन पर ३० अप्रैल को सुनवाई होगी।

आवेदन मे कहा गया है कि सात जनवरी के बाद से इस अस्थाई मन्दिर मे किये जा रहे सुधार तथा परिवर्तनो से राष्ट्रपति के अध्यादेश का उल्लघन हो रहा है। इस अध्यादेश मे कहा गया था कि अयोध्या मे सात जनवरी की स्थिति के अनुरूप की यथास्थिति बनाए रखी जाएगी।

इस आवेदन मे कहा गया है कि राम जन्म भूमि बाबरी मस्जिद विवादित स्थल पर बनाए गए इस अस्थाई मन्दिर के चारो ओर लोहे की मोटी सीखचे लगाने के साथ ही दरवाजे और खिडकियो मे सगमरमर लगाया जा रहा है।

आवेदन के अनुसार तीन अप्रैल को दूरदर्शन पर प्रसारित कार्यक्रम परख' मे यह अस्थाई मन्दिर मे किये जा रहे सुधार दिखाए गये थे।

आवेदन मे कहा गया है कि विवादित स्थल केन्द्र सरकार के नियन्त्रण मे है। आवेदन के अनुसार केन्द्र तथा उत्तर प्रदेश सरकार इस तरह के परिवर्तनो की अनुमति देकर मन्दिर मे बैठे लोगो से साठ-गाठ कर रही है।

मोहम्मद असलम के वकील एम एम कश्यप ने मुख्य न्यायाधीश के समक्ष इस आवेदन का उल्लेख करते हुए अनुरोध किया कि इस पर शीघ्र सुनवाई कराई जाए। इसके बाद ही न्यायालय ने इस आवेदन पर नोटिस जारी करने का आदेश दिया।

उच्चतम न्यायालय अयोध्या विवाद पर राष्ट्रपति द्वारा मागी गई राय के खिलाफ आपत्तियो पर सुनवाई के लिए २० अप्रैल को तारीख निर्धारित करेगा।

आर्यसमाज आंदोलन का प्रभाव

(पृष्ठ ३ का शेष)

तथा समाज के सिद्धातो के प्रचार मे ही सहायक सिद्ध हुई हैं बल्कि ज्ञान के विस्तार मे भी इनका बहुत बडा योगदान है। विभिन्न डी ए वी कालेजो और स्कूलो मे अब आधुनिकतम शिक्षा की व्यवस्था की जाती है और इस प्रकार आर्यसमाज काफी बडे अशो मे भारतीय समाज की एक बड़ी आवश्यकता की पूर्ति करता है।

राजनीतिक जागृति मे समाज का महत्वपूर्ण योगदान है। धार्मिक सस्थाओ मे आयसमाज का पहला स्थान है जिसने राजनीतिक जागृति की ओर स्पष्ट कदम उठाया। तिलक, लाला लाजपत राय, गोखले और विपिन चद्र पाल जैसे व्यक्ति आर्यसमाज के विचारो प्रभावित थे। निस्सदेह आर्यसमाज ने ऐसे कटटर व्यक्तियो के निर्माण मे सहयाग दिया था जो कटटर हिन्दू धर्म की भावना को लेकर भारतीय राष्टीयता के समर्थक बने। काग्रेस मे उग्रवाद की भावना के आरम्भ होने का एक कारण हिन्दू धम की भावना थी इसमे सन्देह नही कि आयसमाज ने, उस भावना के निर्माण मे सहयोग प्रदान किया था। अपने राष्ट्रीय आदोलन के समय म हमे अनेक ऐसे व्यक्ति प्राप्त होत है जो राजनीतिक आदोलन मे भाग लेने थे और आर्यसमाज के भी सदस्य थे। डा मजूमदार लिखत है कि आयसमाज आरभ से ही उग्रवादी सप्रदाय था। उसका मुख्य स्रोत तीव्र राष्ट्रीयता था। आर्यसमाज के सस्थापक स्वामी दयानन्द ने ही सवप्रथम स्वराज्य शब्द का उपयोग किया था और सर्वप्रथम उन्होने ही हिंदी भाषा को राष्ट्र-भाषा स्वीकार किया था। उन्होने ही सबसे पहल विदशी वस्तुओ का बहिष्कार करने तथा स्वदेशी वस्तुओ का प्रयोग करने का सुझाव दिया था। ये सभी कार्य हमारे राष्ट्रीय आदोलन का मुख्य अग बने। इस प्रकार आयसमाज ने न केवल हमारी राजनीतिक जागृति के लिए हमे योग्य व्यक्ति ही प्रदान किए बल्कि विचारो और सिद्धातो की एकता तथा आत्मविश्वास की भावना भी प्रदान की।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि आर्यसमाज ने भारत को धर्म, समाज शिक्षा और राजनीतिक चेतना के क्षेत्र मे बहुत कुछ प्रदान किया है। इसी कारण जबकि ब्रह्म समाज आदोलन प्राय समाप्त हो गया है रामकृष्ण मिशन का प्रभाव मुख्यतया शिक्षित और समाज के उदार वर्ग पर है, आय समाज अभी तक न केवल एक जीवित आदोलन है बल्कि हमारे समाज के छोटे से छोटे और निम्न से निम्न वग तक उसकी पहुच है और एक सीमित दायरे मे वह अब भी एक जन आदोलन स्वीकार किया जा सकता है।

यदि भाजपा अड़ंगा न डालती तो मन्दिर ४ वर्ष पहले ही बन गया होता : बूटा सिंह

जयपुर, १५ अप्रैल। पूर्व केन्द्रीय गृह मन्त्री बूटा सिंह ने कहा है कि भाजपा यदि अयोध्या के राम मन्दिर निर्माण कार्य में राजनीतिक अड़गे न लगाती तो यह मन्दिर ४ साल पहले ही बन कर तैयार हो गया होता। उन्होने कहा कि जब वह गृहमन्त्री थे तो उस समय न्यायालय ने राममन्दिर का केवल शिलान्यास ही करने के आदेश दिये थे। यदि न्यायालय अयोध्या मे राममन्दिर निर्माण करने के निर्देश देता तो तत्कालीन प्रधानमन्त्री राजीव गाधी के कार्यकाल मे ही भव्य राम मन्दिर बन जाता तथा मन्दिर मस्जिद का विवाद भी समाप्त हो जाता। श्री सिंह जालौर जिले के रानीवाडा कस्बे में काग्रेस पार्टी द्वारा आयोजित किसान सम्मेलन को सम्बोधित कर रहे थे।

उन्होने कहा कि मेरे कार्यकाल मे किया गया शिलान्यास सभी पक्षो को विश्वास मे लेकर शहाबुद्दीन एव विश्व हिन्दू परिषद के नेताओ तथा साधु-सन्तो की मौजूदगी मे किया गया था। उन्होने कहा कि भाजपा को चाहिए कि वह सुप्रीम कोर्ट के आदेश का इन्तजार करे और राममन्दिर के मुद्दे को अपनी राजनीति का मोहरा न बनाए।

क्या चाहते हैं विघटन या राष्ट्रीय एकता

कैप्टिन देवरत्न आर्य

धर्म और राजनीति को लेकर आज अनेक प्रकार की चर्चाएं देश में हो रही हैं। सत्तातन्त्र की प्राप्ति की होड़ में अनेक राजनैतिक दलो की जोरदार मांग हो रही है कि धर्म को राजनीति से दूर रखना चाहिये। इस का उपयोग राजनैतिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये नहीं होना चाहिये। सभी धर्मों को विकसित होने का समान रूप से अवसर मिलना चाहिये' 'सर्वधर्मसमभाव" भारत की विशेषता है। राष्ट्रीय एकता के लिये यह आवश्यक है अन्यथा धर्म के नाम पर देश के टुकड़े हो जायेंगे आदि - अंग्रेजी के Religion शब्द का अर्थ "धर्म" करके हमारे देश के शासन को "धर्म निरपेक्ष" राज्य घोषित किया है। वस्तुतः "रिलीजन" शब्द का अर्थ "धर्म" नहीं अपितु मत या सम्प्रदाय होता है। धर्म का अर्थ तो "वह व्यवस्था या नियम है जिससे प्रजा (जन सामान्य) सुरक्षित रहती है" (धर्मो धारयते प्रजा) जिस व्यवस्था के अभाव में कोई भी प्राणी सुरक्षित नहीं रह सकता है। इसलिये कहा है कि धर्म नष्ट हो गया तो हम सब नष्ट हो जायेंगे और धर्म सुरक्षित रहेगा तो हम सब सुरक्षित रहेंगे, इसलिये धर्म को सुरक्षित रखना चाहिये धर्म एव हतो हन्ति, धर्मो रक्षति रक्षितः) अर्थात् सत्य — न्याय — दया — परोपकार—सहिष्णुता — अहिंसा, चोरी न करना, सदाचारादि यह सब नैतिक गुण धर्म के अविभाज्य अंग हैं। इन्हीं के द्वारा आज समाज और राष्ट्र सुरक्षित है। सभी मनुष्य एक दूसरे से इन्ही गुणो की आकांक्षा रखते हैं कोई भी राष्ट्रीय व्यक्ति नही चाहता कि मेरी कोई हिंसा करे, या मेरे सामान की चोरी करे, मेरे साथ कोई धोखेबाजी करे, इसलिये वह भी दूसरो के साथ ऐसा व्यवहार न करे यह धर्म का पालन है। ऐसे धर्म को राजनीति से कभी दूर नही रखा जा सकता है। जब ये गुण राजनीति से पृथक् कर दिये जाते हैं तब राजनीति गुण्डागर्दी बन जाती है, भ्रष्टाचार – दुराचार—अत्याचार इसके आभूषण बन जाते हैं ये सब राजनीति में होता है यह कहकर इनकी अनिवार्यता पर राजनीति की रोटिया सेकने वाले अपनी मोहर लगाते रहते हैं।

कोई भी मत-मजहब-सम्प्रदाय राजनीति पर हावी न हो यहां तक तो ठीक है किन्तु अपने सम्प्रदाय के विकास के नाम पर विदेशो से अपार धन प्राप्त करके यहां के बहुसंख्यक समुदाय हिन्दुओ के अशिक्षित एवं पिछड़े वर्ग के लोगों को धर्म परिवर्तन करने में उस धन का उपयोग करे, परिवार नियोजन के कार्यक्रम को यह हमारे धर्म के खिलाफ है यह कहकर "स्वीकार न करें' और देश की बढ़ती हुई जनसंख्या मे चार-चार विवाह करके अनेकानेक सन्तान उत्पन्न करके उनको अशिक्षित और बेरोजगार के रूप में छोड़ दें, क्या यह सब राजनीति पर धर्म हावी नही है। राजनीति से धर्म दूर रखनेवाले सत्ता लोलुप नेताओं ने कभी यह ध्यान दिया है कि यदि इसी प्रकार एक अल्प संख्यक वर्ग की धन के बल पर धर्म परिवर्तन के द्वारा और परिवार नियोजन को न अपनाकर अनेक विवाह और अनेक सन्तान पैदा करके जनसंख्या वृद्धि करके, अपने सुदृढ़ 'वोट बैंक" की घुड़की देकर राष्ट्र मे जो चाहे वह नहीं करवा रहे हैं। क्या इन लोगो को खुश करने के लिये अकबर की शताब्दी समारोह मनाने की घोषणा सरकारी तन्त्र नही कर रहा है। देश की आजादी के लिये घास की रोटी खा खा कर अपने प्राणो की बलि देने वाले महाराणा प्रताप की जयन्ती मनाने की घोषणा करने में क्यो लज्जा आती है। यदि राजनीति से धर्म को दूर रखना है तो क्या कारण है कि संविधान की धारा में हिन्दुओं मे व्याप्त बुराइयों को दूर करने का विधान कर दिया है जबकि मुसलमानों में बहुविवाह तलाकादि कुप्रथाओ को दूर करने का क्यो उल्लेख नही किया। क्या सामाजिक सब बुराइयां हिन्दुओ मे ही है, मुसलमानो मे कुछ भी नहीं है। यदि मुसलमानों मे भी सामाजिक बुराइया है तो उनको दूर करने के लिये संविधान में उल्लेख करने के लिये क्यो घबराते हो? इसलिये कि वोट नहीं मिलेंगे। हिन्दुओं में जाति के नाम पर आरक्षण के नाम पर फूट डालकर राजनीति करने वाले निश्चिन्त हैं कि यहा का अस्सी प्रतिशत हिन्दू "वोट" के नाम पर कभी इकट्ठा नहीं हो सकता इसलिये इसकी कभी परवाह नहीं की जाती है।

आरक्षण के नाम पर हिन्दुओ में सवर्णों और हरिजनो के बीच फूट डाली जा रही है। ताकि सभी हिन्दू अपने हितों की रक्षा के लिये कभी एकत्रित न हो जायें। यथार्थता यह है कि दलितोद्धार के कार्यक्रम को आर्य समाज ने व्यवहारिक रूप से अपनाया इनको शिक्षित करके हर क्षेत्र में योग्यता और क्षमता के आधार पर आगे बढ़ाया, जिससे यह वर्ग भी हर क्षेत्र में उन्नति के शिखर पर पहुंच जाय। किन्तु सत्ता तन्त्र के लोभी व्यक्तियों ने इसे अलग वर्ग घोषित किया, आरक्षण का प्रलोभन दिया जिससे आरक्षण के लोभ में, ये सवर्ण हिन्दुओं को अपना विरोधी मानने लगे और सवर्णों और हरिजनो में फूट पड़ गयी, दोनो एक दूसरे से अपने को अलग मानने लगे।]

"फूट डालो और राज्य करो' की नीति ब्रिटिश शासको ने अपनायी थी जिसके फलस्वरूप कुछ अदूरदृष्टी और स्वार्थी और महत्वाकांक्षी मुस्लिम व्यक्तियों को प्रोत्साहित करके उनसे मुस्लिम हितों की मागें प्रस्तुत करवा कर उनको स्वीकार करके, राष्ट्रीय धारा से कुछ मुसलमानो को पृथक् किया। जिसके कारण मुस्लिम लीग की स्थापना हुई और पंजाब, सिन्ध पूर्वी बंगाल में १९३५ में मुस्लिमो की सरकार बनी जिसकी परिणति देश के दो टुकड़े हुए।

"संघे शक्तिः कलौ युगे" संगठन में बहुत बड़ी शक्ति होती है। संगठित किये हुए घास के तिनको की रस्सी बनाकर उससे शक्तिशाली हाथी को बाध लिया जाता है जबकि घास के एक तिनके को व्यक्ति फूंक मारकर उड़ा देता है। देश का अल्पसंख्यक वर्ग मुसलमान वोट के नाम पर संगठित रहता है, इसलिये अपने वोट बैंक के लालच में राजनीतिक पार्टियां और उनके नेता उनकी चाटुकारिता करते हैं, उनके अपराधो पर पर्दा डालने की कोशिश करते हैं और उनको अधिक से अधिक सुविधाएं और अधिकार दिलाने की होड़ में लगे रहते है।

देश की अखण्डता और राष्ट्रीय एकता के लिये "धर्मनिरपेक्ष" राज्य की वकालत करने वालो को सावधान हो जाना चाहिये कि अपने निहित स्वार्थों के कारण तुष्टीकरण करना बन्द करें। शासन की व्यवस्था हिन्दू-मुस्लिम ईसाई सभी पर समान रूप से लागू हो, यही यथार्थ धर्म निरपेक्षता है। राष्ट्र सर्वोपरि है इसलिये राष्ट्र को सुरक्षित रखने वाले कानून सभी धर्मों (सम्प्रदायो) के ऊपर है। यदि बढ़ती जनसंख्या से राष्ट्र मे [अनेक समस्यायें पैदा हो रही है तो इसे मुसलमानों को भी अपनाना होगा कुरान और शरीयत के नाम पर इसका विरोध करने का कोई अधिकार नहीं है। यदि हिन्दुओ मे बहु विवाह प्रथा नही है तो मुसलमानो मे भी राष्ट्र हित की दृष्टि से यह प्रथा नहीं चलेगी। समान नागरिक संहिता बने जो धर्म निरपेक्ष का पर्याय है। यही होना था, किन्तु वोटो की राजनीति के कारण नहीं अपनाया जा रहा है। राष्ट्र मे अस्थिरता कायम करने के लिये विदेशियों के द्वारा यहा के मुसलमानो को हथियार के रूप मे अपनाया जा रहा है। यह बम्बई के विस्फोट काण्ड से स्पष्ट हो चुका है। फिर अपनी सत्ता के लालची राष्ट्र विरोधियो का साथ देने वालो के साथ कठोरता से पेश होने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहे है। भारत का मुसलमान भारतीय बनकर ही रह सकता है। पाकिस्तान का गुणगान करने वाला, पाकिस्तान स्थापना दिवस के मनाने मे सम्मिलित न होने का विरोध करने वाला मुसलमान आज निर्भय विचरण करता है। दुःसाहस के साथ बोलता है, वह जानता है कि धर्म निरपेक्षता हमारे लिये नहीं हैं। हम सत्ता तन्त्र को जैसा चाहे परिवर्तित कर देंगे आदि।

देश की वर्तमान परिस्थितियों में हिन्दू भी कम दोषी नही है। जिसका इस देश की मिट्टी से शरीर बना, अपने मल मूत्र से भारत मा की गोद को गन्दा करता रहता है, फिर इसकी अखण्डता के लिये अपने आपको संगठित होने का प्रयास नही करता है। एक विवादास्पद ढाचे के गिराये जाने से विश्व के मुसलमानो में खलबली मच गयी कि इस्लाम खतरे में है, अनेक, मुस्लिम राष्ट्रों ने भारत के मुसलमानों के सहयोग मे वक्तव्य दिये, लेख लिखे भारत सरकार पर दबाव डाला। किन्तु कश्मीर में टूटने वाले मन्दिरो के बारे में किसी भी देश की जनता या शासन ने आवाज नही उठायी। इतना ही नहीं धर्मनिरपेक्षता का ढोल पीटने वाली भारत सरकार को बार बार आगाह करने पर भी इसके कान मे जूं नहीं रेंगी। एक भी सत्ता मे बैठे हिन्दू राजनेता ने अफसोस भी जाहिर नहीं किया। क्योंकि ये जानते हैं कि आप सगठित नही हैं इसका इनकी सत्ता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ने वाला है। आज कश्मीर से

(शेष पृष्ठ ६ पर)

संसार की एकता का आधार वेद (२)

श्री रामनाथ वेदालंकार एम.ए. (गुरुकुल कांगड़ी)

जन बिभ्रती बहुधा विवाचस, नानाधर्माण पृथिवी यथौकसम्
सहस्र धारा द्रविणस्य मे दुहा, ध्रुव धेनुरनपस्फुरन्ती ॥
अथर्व० १२ १ ४५

'यह भूमि भिन्न-भिन्न भाषा बोलने वाले, भिन्न भिन्न धर्मों को मानने वाले लोगों को घर के समान अपने अन्दर धारण करे। स्थिर खड़ी रहने वाली, न बिदकने वाली गौ जैसे दूध की धाराए प्रदान करती है वैसे ही यह अपने अन्दर विद्यमान ऐश्वर्य की सहस्रों धाराए प्रदान करती रहे।'

आज प्रत्येक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को नीचा दिखाना चाहता है। शस्त्रास्त्रो की होड लग रही है, ऐसे-ऐसे सहारक अणु गोलो का अविष्कार हुआ है कि एक ही गोले से देश के देश विध्वस्त हो जाय। परन्तु वेद को यह स्थिति वाछनीय नही है। वेद कहता है—

यामिषु गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे।
शिवा गिरित्र ता कुरु मा हिंसी पुरुष जगत् ॥ यजुर्वेद १६ ३

हे रुद्र! हे शक्तिधर! तुझे तो गिरिशन्त और गिरित्र अर्थात् लोक-रक्षक होना चाहिए-' गिरिषु पर्वतवदुन्नतेषु राष्ट्रेषु कल्याण तनोनीति गिरिशन्त गिरीन् राष्ट्राणि त्रायते इति गिरित्र ' तूने अपनी शक्ति के मद मे आकर फेंकने के लिए जो-इषु जो एटम शक्ति हाथ मे पकडी हुई है उसे शिव बना उसका ससार के हित के लिए उपयोग कर। उससे तु निरीह पुरुषो का और जगत् का सहार मत कर।

प्रमुञ्च धन्वनस्त्वम् उभयोरात्न्योर्ज्याम्।
याश्च ते हस्त इषव परा ता भगवो वप ॥ यजु० १६।९

'तूने जो धनुष की दोनो कोटियो पर डोरी चढाई हुई है, उसे खोल दे और जो चलाने के लिए हाथ मे बाण पकडे हुए हैं, उन्हे दूर रख दे, अर्थात् जो युद्ध की तैयारी कर ली है उससे उपरत हो जा।"

वेद के धनुष और इषु शब्द केवल तीर कमान को ही सूचित नही करते ये अपने अन्दर व्यापक अर्थ को लिए हुए हैं। धनुष का अर्थ है अस्त्र को गति देने वाला, उसे फेंकने वाला या छोडने वाला और इषु का अर्थ है जिसे गति दी जाती है, जिसे फेंका या छोडा जाता है, वह अस्त्र है। एव तोप धनुष है, तोप का गोला इषु है। बन्दूक धनुष है, बन्दूक की गोली इषु है। अणुबम को छोडने का साधन धनुष है, अणुबम इषु है। आज बडे-बडे वैज्ञानिक लोग एक से एक बढकर सहारक शस्त्रास्त्रो के अविष्कार मे लगे हुए हैं। वे ही वैज्ञानिक अपनी शक्ति को लोकहित के कार्यों की ओर मोड दे तो कितना उपकार हो? आज सब देशो का अपना करोडो रुपया सैन्य-शक्ति के विकास मे लगाना पड रहा है, वही धन यदि जनहित के रचनात्मक कार्यों मे लगता तो कितना लाभ होता।

आज परस्पर विद्वेष की भावना से भरे हुए राष्ट्रो को एक दूसरे के प्रति भ्रातृभाव का हाथ बढाते हुए वेद के शब्दो मे कहना चाहिए

इदमुच्छ्रेयोऽवसानमागा शिवे मे द्यावापृथिवी अभूताम्।
असपत्ना प्रदिशो मे भवन्तु न वै त्वा द्विष्मो अभय नो अस्तु ॥
अथर्व० १९ १४ १

"आओ, आज हम परस्पर गले मिल लें। अब तक जो कुछ ईर्ष्या, द्वेष, कलह विध्वस हमने किया उसकी परम्परा को समाप्त कर दें। अब तक भूमि पर, आकाश मे, समुद्र मे कही भी जाते हुए हमारे मनो मे एक भय और सन्देह विद्यमान रहता था कि यहा शत्रु की सुरगे न बिछी हो। कही शत्रु के हवाई जहाज हमे न गिरा दे, कही शत्रु की पनडुब्बिया हमारे जलपोत को विनष्ट न कर दे पर आज से इस प्रकार की आशकाओ का हम अवसान कर दें। अपने मनो से द्वेष और भय को निकाल दे। द्यावा पृथिवी हमारे लिए उद्वेजक न रह कर कल्याण कर हो जाये।"

आज देश-देश मे उस वैदिक-भावना के प्रचार की आवश्यकता है। हमारा देश भारत प्रारम्भ से ही सब देशो के साथ मैत्री का इच्छुक रहा है। आज भी उसकी यही नीति है। परन्तु वेद के शान्ति और एकता के सदेश को उसने गलत नही समझा है। यदि चीन या अन्य कोई देश शत्रु बनकर उस पर आक्रमण करेगा तो वेद ही उसे शत्रु दमन की प्रेरणा भी देता है। वह शत्रु का पूरी शक्ति से मुकाबला करेगा।

"सर्वं आशा मम मित्र भवन्तु। अथर्व १९।१५.६
सब दिशाए हमारी मित्र हो जायें।'
यस्त्वा पृतन्यादधर सो अस्तु, अथर्व० १९ ४६ ५

"जो तुझ पर सैन्य आक्रमण करे, उसे तू पददलित कर दे' वेद की ये दोनो शिक्षाए साथ-साथ हैं। तो भी हमारा आदर्श है, विश्व शान्ति, प्रेम सहृदयता, सौमनस्य, एकता तथा जगत् का कल्याण और हम उसके लिए प्रयत्नशील हैं।

क्या चाहते हैं विघटन या राष्ट्रीय एकता

(पृष्ठ ५ का शेष)

हिन्दू पलायन करके दिल्ली मे शरणार्थी बनकर रह रहा है, और अन्य प्रान्त का हिन्दू वहा की जमीन नही खरीद सकता वहा का नागरिक बनकर नही रह सकता। इस प्रकार मुस्लिम आबादी वहा बढती जा रही है और पाकिस्तान अन्तर्राष्ट्रीय मच पर कश्मीरियो के आत्म निर्णय [मतदान द्वारा] की माग बार बार उठा रहा है वह जानता है कि मुसलमान जनसख्या अधिक हो गयी है और मतदान निश्चित ही पाकिस्तान मे सम्मिलित होने के पक्ष मे आयेगा। आओ मै अन्धे, स्वार्थी नेता इस ओर ध्यान नही दे रहे हैं। और देश का बहु-सख्यक हिन्दू वर्ग सगठित नही हो रहा है आपसी फूट मे बटा हुआ है और बाटने मे लगे हुए हैं तथाकथित हिन्दू बुद्धिजीवी राजनेता, अभिनेता, लेखक और पत्रकार। यदि इकटठे न हुए तो फिर वही हाल होगा जो १९४७ में हुआ। इसलिये फूट डालने से बाज आओ और सगठित हो जाओ इसी में देश और हम सब का हित है।

—उप प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

धर्म बनाम मत-मतान्तर

—डा० ए० बी० आर्य

जब तक विश्व में भिन्न-भिन्न मत मतांतरों का विरुद्धाभास नहीं छूटेगा तब तक शांति की आशा रखना व्यर्थ है। अस्थायी शांति शीत-युद्ध के समान पृथ्वी-लोक के विनाश की सूचक है। हम कितना ही कहते रहें कि धर्म के नाम पर राजनीति न हो परन्तु वास्तविकता यह है कि जिस देश अथवा समाज ने अपनी जड़े धर्म में से खो दी है वह शीघ्र ही सूख जाएगा। बहुत ही दुःख की बात है कि बड़े-बड़े धार्मिक नेता, राजनीतिक नेता धर्म का वास्तविक रूप लोगों के सामने न रखकर मात्र भिन्न-भिन्न मत-मतान्तरो को ही धर्म मानते है और उनको एक ही ईश्वर की ओर ले जाने वाले मार्ग भी बताते हैं परिणाम हमारे सामने है समस्त विश्व में अशान्ति, अराजकता और अधर्म का ही बोल बाला है। इस समय विश्व में लगभग एक हजार मत मतान्तर है और इन मत-मतांतरो के परिवारो में जन्में बच्चे भी उसी को श्रेष्ठ मानते हैं। चाहे वे दूसरे मत के मानने वालो की निन्दा न भी करते हो, समय-समय पर सभी हिंसा, असहनशीलता आदि से एक दूसरे के प्रति घोर घृणा का परिचय भी उजागर करते रहते है, धर्म और ईश्वर का वास्तविक स्वरूप समझने के लिए थोड़ा विस्तार मे जाना आवश्यक है, निःसन्देह धर्म जन्म से न होकर एक अर्जन है, उपलब्धि है, वैज्ञानिक है :

इस तथ्य से कोई भी विवेकशील व्यक्ति असहमत नहीं होगा कि किसी भी वस्तु की रचना करने के लिए तीन कारणों की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए मान लीजिए हम एक आभूषण का निर्माण करना चाहते है तो इसके लिए सोना चाहिए तो सोना आभूषण का उपादान कारण है। अब सोने से अपने आप तो आभूषण बन नही सकता सुनार बनाएगा तो बनेगा वरन् नहीं बनेगा, तो सुनार आभूषण का निमित्त कारण है। इन दोनों कारणों के होते हुए भी, समय, स्थान ज्ञान व कुछ औजारो, अग्नि आदि की भी परम आवश्यकता है अतः आभूषण की रचना में समय, स्थान, औजार आदि सहायक के रूप में काम करते है अतः इन्हे साधारण कारण कहा जाता है। इसी प्रकार अन्य वस्तुओ की रचना सम्बन्धी भी जान लीजिए। इन तीनों मे से अगर एक भी कारण नहीं होगा तो किसी भी वस्तु की रचना असम्भव है। ठीक इसी प्रकार सृष्टि उत्पत्ति के लिए भी तीन कारणो की आवश्यकता है। जिस प्रकार आभूषण के लिए सोना चाहिए इसी प्रकार सृष्टि रचना के लिए इलैक्ट्रोन, प्रोटोन, न्यूट्रान परमाणु रूपी सामान चाहिए अतः यह सब उपादान कारण का काम करते है। जिस प्रकार आभूषण के लिए सुनार चाहिए, सृष्टि रचना के लिए परमेश्वर चाहिए। अत परमेश्वर सृष्टि का निमित्त कारण है। अतः जैसे आभूषण के लिए समय, स्थान, ज्ञान आदि चाहिए उसी प्रकार सृष्टि रचना के लिए काल, आकाश, विशेष प्रकार का ज्ञान आदि साधारण कारण है। सृष्टि उत्पत्ति विषय मे वैमैतिक कारण वास्तव मे दो है—परमात्मा, जो प्रारम्भ मे जड़-चेतन जगत का निर्माण करता है उसे मुख्य वैमैतिक्य कारण कहा गया है। आत्माएं जो मनुष्य शरीर पाकर सृष्टि का आगे विस्तार करती है गौण निमित्त कारण है। अगर हम इस वैज्ञानिक सिद्धात को समझ लें तो धर्म का क, ख, ग समझ में आ सकता है। एक छोटी से छोटी वस्तु के निर्माण से लेकर सूर्य, चांद, सितारो आदि के निर्माण की कहानी इन तीन कारणो पर खड़ी है इसको त्रैतवाद का सिद्धांत कहा जा सकता है। बड़े दुर्भाग्य की बात है इस सिद्धांत के विपरीत आज दुनिया एकत्व अथवा अद्वैत मत को मानने लगी है इसका अर्थ वे यही लगाते है कि एक ईश्वर ही सृष्टि का निर्माता है, ऐसा कहना ऐसे ही होगा जैसे कोई कहे कि सुनार बिना सोने के अथवा बिना समय, स्थान ज्ञान आदि के ही आभूषण बना सकता है। ईश्वर सर्वशक्तिमान का अर्थ प्रायः लोग लगाने लगे हैं कि वह आत्माओ को भी बना सकता हैं, परमाणुओ को भी बना सकता है। जैसे सर्वशक्तिमान का यह अर्थ नही लिया जा सकता कि ईश्वर अपने जैसा दूसरा ईश्वर बना सकता है उसी प्रकार सर्वशक्तिमान का यह भी अर्थ अनुचित है कि वह आत्माओ और परमाणुओ को भी बना सकता है। वास्तव में जैसे आधुनिक, वैज्ञानिक भी मानता है कि परमाणु अनादि है अर्थात् उसका कोई आदि अन्त नहीं ठीक उसी प्रकार परमेश्वर और आत्माएं भी अनादि हैं।

अगर हर उपर्युक्त तथ्य को तनिक बुद्धि पर जोर देकर अच्छी तरह ग्रहण कर लें तो आगे बढ़ा जा सकता है। अब इन तीनों के गुणो को पृथक्-पृथक् समझ लेना होगा। परमेश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप (सत्+चित+आनन्द अर्थात् सत्य, चेतन और आनन्द युक्त), निराकर, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वेन्तर्यामी, अजर, अमर अभय, नित्य, पवित्र व सृष्टिकर्ता है। ऐसे ही ईश्वर की उपासना करना अर्थात् यथा सम्भव उस अनुसार, न्यायकारी, दयालु पवित्र बनकर, आसन लगाकर उसके इस स्वरूप का ध्यान करना ही वास्तविकता में पूजा है और इस पूजा के लिए किसी मन्दिर, मस्जिद, गिरजा, गुरुद्वारे आदि की कदापि आवश्यकता नहीं वरन् इन नामो ने, इन ही नारों ने इस पृथ्वी पर शान्ति व धर्म के नाम पर अशान्ति व अधर्म का ही प्रचार किया है। इस तरह की पूजा की शिक्षा का प्रचार जब तक विश्व की सरकारें एवं सज्जन व विवेकशील लोग आम जनता में इलैक्ट्रोनिक आदि माध्यमो से नहीं करेंगे शान्ति के सब प्रयास बार-बार असफल होते रहेंगे, न्याय व धर्म का गला घुटता रहेगा और इन ही दीवारों की गिनती शनैः शनैः कम होने की अपेक्षा बढ़ती रहेगी और वह दिन दूर नहीं जब इसी कारण पृथ्वी पर मौजूद उदजन बम एक दूसरे की दीवारो को तोड़ने के लिए, एक दूसरे के मत वालों को सबक सिखाने के लिए प्रयोग किए जाएंगे और पृथ्वी मानव-विहीन होकर रह जाएगी। इस सृष्टि को बने लगभग एक अरब छियानवें करोड़ वर्ष हो चुके हैं (ऐसा वैज्ञानिक भी मानने लगे हैं क्योंकि कार्बन को हीरे में परिवर्तित होने के लिए इतना ही समय लगता है। और महाभारत के युद्ध को हुए लगभग पांच हजार वर्ष हुए है सृष्टि के आदि से लेकर महाभारत के युद्ध तक हमारा देश इस तरह की वैज्ञानिक वैदिक विचारधारा का पूरे विश्व में प्रचारक रहा है और इस देश को सर्वोपरि, शिक्षा व विज्ञान का प्रसारक माना जाता रहा है इस देश में युधिष्ठर आदि चक्रवर्ती राजा पूरी पृथ्वी पर शासन करते रहे हैं। जैसे चोरी झूठ आदि कुकर्म करने पर परमेश्वर निराकार होते हुए भीतर से भय, शका, लज्जा उत्पन्न करता है उसी प्रकार सृष्टि के आदि में परमेश्वर प्रेरणा द्वारा ही वेदमन्त्रो का उच्चारण आदि सृष्टि के मनुष्यों से करवाता है उनका अर्थ भी बताताहैं और इस प्रकार सूत्र रूप में सब प्रकार की सत्य विद्याओं को प्रकट करता है। पुस्तक रूप मे तो वेद बहुत बाद में आए। हमारे पूर्वज मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी, योगीराज श्रीकृष्ण जी, कैलाश पर्वत के महाराजा शिवजी, आदि सभी वेद-मन्त्रों का मनन करते और उनमें प्रकट शिक्षाओं के अनुसार जीवन व्यतीत करते और राज्य चलाते थे जिसके कारण एक प्रकाश स्तम्भ की भांति पूरी दुनिया को हमारा देश ज्ञान का प्रकाश देता रहा। पर महाभारत के युद्ध के बाद देश में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली समाप्त हो गई, वेदों का पठन, पाठन बन्द हो गया। बस कुछेक लोग संस्कार आदि करवाने पर इन वेद मन्त्रों का उच्चारण करते हैं, वे भी उनका अर्थ समझे बिना ही। शनैः शनैः वेदमन्त्रो के अर्थों का अनर्थ होने लगा।

(क्रमशः)

संस्कार चन्द्रिका

संस्कार चन्द्रिका प्रकाशित हो चुकी है जिन महानुभावों ने इसके लिए अग्रिम राशि सभा में भेजी हुई है, वह सुविधा की दृष्टि से इसे सार्वदेशिक सभा से प्राप्त कर सकते हैं। इससे समय व डाक व्यय की बचत होगी। दिल्ली से बाहर के व्यक्तियों को पुस्तक वी. पी. द्वारा भेजी जा रही है कृपया उसे लेने का कष्ट करें।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

स्वास्थ्य चर्चा—

गम्भीर रोग की सूचक हो सकती है : सूजन

शरीर में असामान्य पानी (द्रव) संग्रहीत होने के कारण सूजन आ जाती है। यह स्थिति एक स्वतन्त्र रोग न होकर कई रोगों के लक्षण की तरह प्रकट होती है। किन्तु यह बात बहुत ध्यान देने लायक है क्योंकि यह लक्षण साधारण न होकर गम्भीर रोगों का संकेतक है। दरअसल शरीर में आई सूजन खास चेतावनी है जिसे नजरअन्दाज करना मरीज के लिए खतरनाक सिद्ध हो सकती है। यही कारण है कि प्रत्येक रोगी के सामान्य चिकित्सकीय परीक्षण में शारीरिक सूजन की जांच करना मुख्यतः शामिल है।

सूजन होती क्यों है—शरीर की असंख्य कोशिकाओं के मध्य स्थान होता है। इस स्थान में सामान्यतः सीमित द्रव भरा होता है। जब यह द्रव असामान्य रूप से इकट्ठा हो जाए तो सूजन के रूप में बाहरी लक्षण प्रकट होता है। सूक्ष्म रक्त-वाहिनियों में से रक्त-तरल निकलकर अन्तरकोशीय स्थानों में आताहै। जब रक्त-तरल (प्लाज्मा) का यह प्रवाह असामान्य मात्रा में होने लगता है तब सूजन आती है। यह सूजन त्वचा पर स्पष्टतः दिखने लगती है। त्वचा दबाकर सूजन का अनुमान लगाया जा सकता है।

शारीरिक सूजन से रोग निदान—रोग निदान की यह प्रथा प्राचीन है। तकनीक, उपकरण, विधियां विकसित न होने के कारण निदान की इस परम्परा का विकास हुआ। आधुनिक विकसित पद्धतियों के प्रचलित होने के उपरान्त भी इन परम्पराओं को आज भी विश्वसनीय एवं व्यवहारिक माना जाता है। भारत में, सारे शरीर में विस्तारित सूजन का मुख्य कारण खून की कमी अल्परक्तता या एनीमिया) है। खून की कमी में प्रोटीन का रक्त-स्तर गिर जाता है अतः सूक्ष्म रक्त-वाहिनियों के रक्त-तरल का बहाव ऊतकीय स्थानों में अधिक होने लगता है। गर्भवती महिलाओं में यह शिकायत आम है। पैरों में उतरी सूजन को गर्भावस्था के दौरान खतरे की घण्टी कहा गया है '

—सुबह-सुबह चेहरे, खासकर पलकों पर आई सूजन को गुर्दे की खराबी का संकेत माना जाता है। यह सूजन पैरों पर बाद में आती है। यदि उच्च रक्तचाप एवं मूत्र-परीक्षण में लाल रक्त-कण बहुतायत में है तो इसे ग्लोमेरुलोनेफ्राइटिस (गुर्दे का संक्रमण रोग) मानते हैं। यदि मूत्र परीक्षण में प्रोटीन की मात्रा हो तो इसे नेफ्रोटिक सिन्ड्रोम की सूजन कहते हैं।

—यकृत रोग मे पहले सूजन पेट पर फिर पैरों पर आती है।

—हृदय रोग की सूजन निचले रहने वाले अंगों पर उतरती है।

थायरोइड की कमी मे पूरे शरीर पर गड्ढा न पड़ने वाली सूजन होती है। इसे मिक्सीडिमा कहते है।

—जब व्यक्ति लगातार खड़े रहकर कामकाज करता है तो पैर की नसों मे अवरोध आने से सूजन उतर सकती है।

—हाथीपांव की सूजन परजीवी रोग है। फाइलेरिया परजीवी लसिका-नलो मे बहाव रोक देता है।

—किसी कीड़े (मधुमक्खी, ततैया, बिच्छू अन्य जहरीले कीड़े) के काटने से सूजन आना अनिसंवेदनशीलता के कारण होता है।

शारीरिक सूजन हो तो क्या करें—शारीरिक सूजन होने पर पहला काम यह करें कि उपर्युक्त निदानों मे से किसी एक निश्चय पर पहुंचें। डाक्टर से सम्पर्क कर अन्तिम निदान का प्रयास करें। वांछित मल, मूत्र, रक्त अथवा अन्य परीक्षण करायें।

—निदान सुनिश्चित होने पर गुर्दा, हृदय, यकृत, थायरोड, खून की कमी, फाइलेरिया या एलर्जी सम्बन्धी रोग की पड़ताल हो सकती है। सूजन के निदान के बाद रोग का निदान होना भी उतना ही जरूरी है।

—प्रत्येक प्रकार की सूजन एवं पृथक्-पृथक् रोग का उपचार अलग-अलग तरह से होता है। सूजन होने पर किसी सामान्य इलाज लेने की भूल न करें।

—पेशाब ज्यादा आने के लिए कुछ दवायें दुकानों पर मिलती हैं। नीम-हकीम, अप्रशिक्षित मित्र-सम्बन्धी के कहने पर ये दवायें स्वतः कभी न लें। दरअसल इन दवाओं का सेवन डाक्टरी परामर्श पर ही करना चाहिए।

—रोग के सुनिश्चित एवं अन्तिम निदान के बाद डाक्टरी परामर्श के अनुसार इलाज लें और परहेज करें।

—डा० जगवीरसिंह

पुस्तक समीक्षा

महामति राजर्षि चाणक्य नीति तथा महामति राजर्षि चाणक्य

लेखक—महेन्द्रकुमार शास्त्री

प्रकाशक—आर्य प्रकाशन ८१४ कूण्डेवालान, दिल्ली-६

आर्य जगत् के विद्वान लेखक की पुस्तकें क्रमशः महामति राजर्षि चाणक्य नीति तथा महामति राजर्षि चाणक्य मूलरूप में एक ही पुस्तक है जिसे प्रकाशकीय समझदारी ने दो भागों में बांट दिया है।

लेखक की पहली पुस्तक चाणक्य के अर्थशास्त्र का लोक संस्करण कहा जाना उचित होगा। लगभग १८३ पृष्ठों की यह पुस्तक सत्रह अध्यायों में बांटी गई है और इन अध्यायों में राजर्षि चाणक्य की नीति को हिन्दी में स्पष्ट किया गया है। यह पुस्तक चाणक्य की नीतियों का अनुवाद है, जिसमें भावों का सरलीकरण कर दिया गया है। चाणक्य के जीवन की कहानी को अलग करके लेखक ने अपनी दूसरी पुस्तक महामति राजर्षि चाणक्य तैयार की है।

उक्त दोनों ही पुस्तकें क्योंकि समाज के ऐतिहासिक युगपुरुष चाणक्य से रिश्ता रखती है अतः समाजोपयोगी तो स्वतः ही बन जाती है किन्तु विद्वान् लेखक ने कहीं-कहीं अपनी मौलिक प्रतिभा से इन्हें संग्रहणीय भी बना दिया है।

चाणक्य को जानने की जिज्ञासा रखने वालों के लिए उक्त दोनों पुस्तकें पठनीय ही कही जायेंगी।

महामति राजर्षि चाणक्य नीति मूल्य १६ रुपये
महामति राजर्षि चाणक्य मूल्य ३ रुपये

—सम्पादक

सार्वदेशिक के ग्राहकों से

१—सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहकों से निवेदन है कि वे अपना वार्षिक शुल्क यथाशीघ्र भिजवायें।

२—वार्षिक शुल्क भेजते समय अथवा पत्र-व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या का उल्लेख अवश्य करें तथा अपना पूरा पता साफ शब्दों में लिखें।

३—कुछ सदस्यों ने काफी समय से अपना वार्षिक शुल्क नहीं भेजा है ऐसे सदस्यों को कई बार स्मरण पत्र भी भेजे गये हैं परन्तु उनका शुल्क प्राप्त नहीं हो सका है। अतः सार्वदेशिक का सम्पूर्ण शुल्क अविलम्ब भेजने का कष्ट करें अन्यथा विवश होकर सार्वदेशिक भेजना बन्द करना पड़ेगा, जो हम नहीं चाहते।

४—बार-बार वार्षिक शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिये, एक बार ३००/- भेजकर सार्वदेशिक के आजीवन सदस्य बनें।

५—अन्य व्यक्तियों को भी सार्वदेशिक का ग्राहक बनाकर सहयोग करें।

—सम्पादक

वृद्धों के साथ दुर्व्यवहार पाप है

डा० तिलक जी खन्ना, अमेरिका

अनेक परिवारों में घर के वृद्ध सदस्यों के साथ परिवार के अन्य सदस्य अशोभनीय व्यवहार करते हैं तथा मानसिक एवं शारीरिक रूप से प्रताड़ना देते हैं इस सम्बन्ध में डा० तिलक खन्ना ने अमेरिका से अपने विचार निम्न प्रकार प्रकट किये हैं। —सम्पादक

(क) शारीरिक दुर्व्यवहार : वृद्धों से

१—मार-पीट करना : वृद्धों के उपर।
२—चांटे मारना या थप्पड़ लगाना।
३—वृद्धों को धक्के मारना या धक्केलना।
४—जबरदस्ती से कमरे में बन्द रखना।
५—जबरदस्ती से बिस्तरे पर लेटाएं रखना।
६—जबर-दस्ती से कुर्सी पर बिठाए रखना।

जो लोग शारीरिक मार-पीट अपने वृद्धों पर करते हैं व कमरों या घर में बन्द करके रखते हैं। वो पाप करते हैं व कानून को तोड़ते हैं—उनका अपराध व जुर्म कानूनी दण्डनीय है।

(ख) पेन्शन व रुपए-पैसों को चुरा लेना।

१—पेन्शन को वृद्धों से चुरा लेना।
२—रुपए-पैसों को चुरा लेना।
३—जेवर चुराना।
४—डरा-धमका कर उनकी पूंजी छीन लेना।
५—धोखे बाजी से हस्ताक्षर करवा कर जमीन, मकान इत्यादि छीनना।

ये भी अपराध दण्डनीय हैं।

(ग) देख-भाल न करना व सुध न लेना

१—वृद्धों को छोड़कर उनकी बेपरवाही या देख भाल न करना।
२—उनका इलाज न करवाना।
३—उनकी सेवा न करना।

(घ) मानसिक दृष्टि से दुर्व्यवहार

१—अपमान-जनक व्यवहार।
२—वृद्धों से कड़वा बोल कर डराना व धमकाना।
३—कटुता से पेश आना व अनादर करना।
४—वृद्धों को गाली-गलौज देना व उनकी बेइज्जती करना।
५—वृद्धों को डराना व धमकाना।
६—वृद्धों से बच्चों की तरह व्यवहार करना अथवा उनको बच्चा समझना।
७—उनकी तीव्र आलोचना करना व द्वेष-भाव रखना।

ये दुर्व्यवहार पाप व अपराध है।

(ङ) दुर्व्यवहार के चिह्न व पहचान कैसे ? वृद्ध दुर्व्यवहार के शिकार

१—उदासीनता, निराशा व चिन्ता-जनक वृद्ध।
२—डरे हुए, सहमे हुए व दुःखी व हीनता।
३—शरीर पर नीले व चोटों के निशान।
४—शरीर की कमजोरी व सूखापन : भोजन के न मिलने पर।
५—शरीर में बदबू व गन्दा कमरा।
६—पेशाब से भरा बिस्तर व शरीर व चमड़ी पर लगाव के घाव।
७—दवाई से सुलाए रखना।

यदि ये वस्तुएं गायब हैं : आंखों का चश्मा नकली दांत, कानों में सुनने की मशीन या निजी चीजें गायब हैं तो यह वृद्धों पर जुल्म है—ये सभी पाप व अपराध हैं।

वृद्ध अवस्था सभी को आनी है। वृद्ध अवस्था में शरीर कमजोर हो जाता है व बीमार हो सकता है। हमें पुरानी नाराजगियों व शिकायतों को छोड़कर वृद्धों की दयाभाव से सेवा करनी चाहिए।

सबसे बड़े घर के वृद्ध देवता है। यदि उनकी सेवा न की—चाहे कितनी मूर्तियों के आगे माथा टेका हो—व्यर्थ है। जीवित माता-पिता व घर के वृद्ध व वृद्ध लोगों की सेवा ही श्रेष्ठ भक्ति है। वो ही सच्चे देवता है।

वृद्ध मां बाप ने चाहे कितनी भी गलतियां की हों—उन पर दया करो।

९९ पार्क स्ट्रीट, न्यूटन मैसाचुसेटस
यू० एस० ए०

जेठमलानी रंजीत सिंह की पैरवी करेंगे

नई दिल्ली। प्रसिद्ध अधिवक्ता राम जेठमलानी निरंकारी प्रमुख बाबा गुरुबचनसिंह के हत्यारे रंजीतसिंह की सजा के खिलाफ उच्चतम न्यायालय मे पैरवी करेगे।

दहेज के बजाय हवालात

नई दिल्ली, १५ अप्रैल। दहेज के लोभी वर पक्ष के लोगों को आज उस समय हवालात में जाना पड़ा, जब उन्होंने कन्या पक्ष से भारी रकम की मांग की।

यह घटना रानीबाग क्षेत्र की है। रानी बाग निवासी किरण की शादी थी। बारात बुद्ध बिहार से आयी थी। फेरों के समय वर पक्ष ने कन्या पक्ष से दो लाख रुपये और एक स्कूटर की मांग की। लेकिन कन्या पक्ष ने उनकी यह मांग मानने से इन्कार कर दिया। इस पर दोनों पक्षों में तकरार हो गयी।

वर पक्ष की मांग एवं जिद से तंग आकर किरण के पिता ओम प्रकाश ने पुलिस बुला ली। ए.एस.आई. राजेन्द्रसिंह खत्री ने मौके पर पहुंचकर दूल्हे राजेन्द्र व उसके पिता परसराम को गिरफ्तार कर लिया। ओम प्रकाश ने मंडप में ही एक लड़के को तलाश कर अपनी बेटी किरण की उसी मुहूर्त में शादी कर दी।

भाजपा सांसद साक्षी गिरफ्तार

नई दिल्ली, १५ अप्रैल । केन्द्रीय जाच ब्यूरो ने अयोध्या मे राम जन्म भूमि-बाबरी मस्जिद ढाचा गिराने की घटना के सिलसिले मे भाजपा सासद स्वामी सच्चिदानन्द साक्षी को आज गिरफ्तार कर लिया है ।

जाच ब्यूरो के सूत्रो ने यहा बताया कि मथुरा के सासद स्वामी सच्चिदानन्द साक्षी को आज तडके गिरफ्तार किया गया । इसके साथ ही पिछले एक सप्ताह के भीतर इस सिलसिले मे गिरफ्तार व्यक्तियो की सख्या बढकर छह हो गई है ।

जाच ब्यूरो ने आठ अप्रैल को चार राज्यो मे २४ स्थाना पर एक साथ छापे मारकर बडी सख्या मे महत्वपूर्ण दस्तावेज जब्त किये थे । ब्यूरो ने उस समय भाजपा सासद बृज भूषण शरण सिह सहित पाच व्यक्तियो को गिरफ्तार किया था ।

जाच ब्यूरो के अधिकारियो ने आठ अप्रैल को स्वामी सच्चिदानन्द के सरकारी आवास पर भी छापा मारा था । इसी आवास मे विश्व हिन्दू परिषद का प्रचार कार्यालय 'विश्व सवाद केन्द्र' भी स्थित हैं ।

इस बीच भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष बलराज मिश्र ने श्री साक्षी की गिरफ्तारी की निंदा की । उन्होने कहा कि यह काम सरकार की भाजपा विरोधी दमनात्मक नीति का एक और प्रमाण है ।

हिन्दी प्रेमियों से 'अपराध कर्मियों' जैसे सलूक की कड़ी निन्दा

नई दिल्ली, १५ अप्रैल । कांग्रेस (इ) नेता एव भूतपूर्व केन्द्रीय मन्त्री बुद्धप्रिय मौर्य ने सघ लोक सेवा आयोग के कार्यालय के समक्ष भारतीय भाषाओ, विशेषकर हिन्दी को परीक्षाओ का माध्यम बनाने की माग को लेकर धरना देने वालो के साथ 'अपराध कर्मियो' जैसा बर्ताव करने की कारंवाई की कडी आलोचना की ।

श्री मौर्य कल रात गाजियाबाद मे एक जनसभा को सम्बोधित कर रहे थे । श्री मौर्य ने बाद मे एक सवाददाता भेट के दौरान यहा कहा कि धरना देने वालो की मागो पर सहानुभूति पूर्वक सरकार को विचार करना चाहिये ।

उन्होने इस बात पर क्षोभ व्यक्त किया कि पिछले दिनो सघ लोक सेवा आयोग के कार्यालय के समक्ष धरना देने वालो के साथ पुलिस ने दुर्व्यवहार किया और उन्हे गिरफ्तार कर जेल भेज दिया । श्री मौर्य ने माग की कि सरकार भारतीय भाषाओ को परीक्षा माध्यम के रूप मे स्वीकार करे ।

आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोह पूर्वक सम्पन्न

आर्य समाज स्थापना दिवस तथा नवसवत्सर शुभारम्भ महोत्सव २४ मार्च को समारोह पूर्वक मनाये जाने के समाचार देश तथा विदेश से भारी सख्या मे प्राप्त हो रहे हैं । चैत्र शुदी प्रतिपदा सम्वत १९३२ विक्रमी को सर्वप्रथम बम्बई मे जगतोद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने वैदिक धर्म, सस्कृति के पुनरुद्धार प्रचार प्रसार, हिन्दू धर्म गोवश के रक्षार्थ तथा मद्य निषेध तथा राष्ट्र मे नूतन जागृति लाने हेतु आर्य समाज रूपी कल्पतरू रोपित किया था । इस अवसर पर आर्य समाज के कार्यो का सिहावलोकन तथा अन्य व्यक्तियो को आर्य समाज मे आने की प्रेरणा की गई । स्थानाभाव के कारण आर्य समाजो के नाम ही प्रकाशित किए जा रहे हैं ।

आर्य समाज बम्बई (काकडवाडी वी पी रोड) आर्य समाज लहेरिया सराय आर्य समाज खण्डवा, नगर आर्य समाज सहावग ज गोरखपुर, आर्य समाज छोटा बरहटा आर्य समाज मेघनगर झाबुआ, कर्नाटक आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य समाज बबराला, आर्य समाज मन्दिर नेमदार ग ज नवादा, आर्य समाज सुल्तानपुर पट्टी, आर्य समाज गोविन्द बाग बलराम पुर, गुरुकुल महाविद्यालय वैद्यनाथ धाम गुरुकुल कागडी हरिद्वार, आर्य समाज दयानन्द चौक आर्य समाज शिवग ज आर्य समाज आबूरोड आर्य समाज इन्दौर बुलन्दशहर, आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना, आर्य समाज टीला लोनी, आर्य वीर दल बिन्दकी आर्य समाज मन्दिर सुल्तानपुर लोधी, आर्य समाज बागपत, आर्य समाज जोनपुर, आर्य समाज मठपारा दुर्ग, दयानन्द कन्या विद्यालय मीठापुर पटना, दयानन्द विद्यालय मीठापुर पटना ।

आर्य जगत् के समाचार

आर्य वीरांगना दल का राष्ट्रीय शिविर

२७ मई से ५ जून, १९९३

स्थान—कन्या गुरुकुल नरेला, दिल्ली ४०

सार्वदेशिक आर्य वीर दल द्वारा दिनांक २७ मई से ५ जून १९९३ तक आर्य वीरांगना शिविर का आयोजन किया जायेगा। शिविराध्यक्ष डा० देवव्रत आचार्य प्रधान संचालक होंगे। इस शिविर में आसन प्राणायाम, आत्मरक्षा तथा वैदिक सिद्धान्तों आदि का प्रशिक्षण दिया जायेगा। शिविर का प्रवेश शुल्क ५० रुपये। योग्यता १० वीं श्रेणी उत्तीर्ण।

आवश्यक सामान—सफेद गणवेश, सलवार, जम्फर, केसरिया चुन्नी, ब्राऊन जूते, सफेद मोजे, डायरी, ऋतु अनुकूल बिस्तर, भोजन के बर्तन, लोटा, थाली, लाठी तथा अन्य दैनिक कार्यों में आने वाला सामान।

शिविर में पूर्ण अनुशासन का पालन करना अनिवार्य होगा।

शिविर का उद्देश्य—आर्य वीर दल के लिये योग्य व्यायाम शिक्षिकाओं को तैयार करना है।

कन्या गुरुकुल नरेला सुन्दर स्थान पर स्थित है। आवास एवं सुरक्षा का पूर्ण प्रबन्ध है।

—निवेदक—

वैद्य कर्मवीर आर्य, मन्त्री, कन्या गुरुकुल नरेला

कुमारी डा० अन्नपूर्णा, संयोजिका शिविर

आर्यवीर दल शिविर का आयोजन

श्रीमती परोपकारिणी सभा द्वारा सचालित दयानन्द व्यायामशाला के अन्तर्गत ग्रीष्मावकाश में दि. १६ मई से २५ मईतक दस दिवसीय शिविर का ऋषि उद्यान, पुष्कर रोड, अजमेर में आयोजन किया गया है।

इच्छुक आर्यवीर सयोजक से सम्पर्क करें। अपना नाम पंजीकृत करा लें।

(ओमप्रकाश कंवर)
संयोजक, आर्यवीर दल शिविर
दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर

नवीन आर्य समाज की स्थापना

२१-३-९३ को बैतूल शहर के सिविल लाइन क्षेत्र में नगर के प्रतिष्ठित व्यक्तियो की एक बैठक श्री अखिलेश चन्द्र शर्मा के घर पर सम्पन्न हुयी। बैठक मे आर्य समाज सिविल लाइन बैतूल की स्थापना की गयी। समाज की गतिविधियो के सचालन हेतु एक समिति का गठन किया गया जिसमे १३ सदस्यो का सर्वसम्मति से मनोनयन हुआ तथा श्री अखिलेश चन्द्र शर्मा को प्रधान श्री सतीश कुमार बारंगे मंत्री तथा श्री प्रकाश चन्द्र मदरेले को कोषाध्यक्ष नियुक्त किया गया।

आर्यसमाज बांकनेर दिल्ली का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज बाकनेर दिल्ली का ४२वा वार्षिकोत्सव ३ से ४ अप्रैल तक हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इस समारोह मे मुख्य अतिथि कै० भगवान सिंह पूर्व भारतीय राजदूत फीजी ने आर्य समाज बाकनेर के प्रशंसनीय सामाजिक कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इस अवसर पर द्रोणाचार्य पद्मश्री गुरु हनुमान सहित अनेकों विद्वानो तथा भजनोपदेशको ने पधारकर समारोह को सफल बनाया। कार्यक्रमान्तरगत विभिन्न प्रतियोगिताओ का सफल आयोजन भी किया गया तथा सफल प्रतियोगियों को सम्मानित किया गया।

शोक समाचार

आर्य जगत के सुप्रसिद्ध कर्मकांडी विद्वान श्री पं० मदनमोहन जी शास्त्री महर्षि दयानन्द निर्वाण स्मारक न्यास के मंत्री एवं वेद मार्ग पत्रिका अजमेर के सम्पादक का ता. ५-३-९३ को आकस्मिक निधन हो जाने पर आर्य समाज मठपारा की महासभा हार्दिक शोक प्रकट करती है। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह अपनी सुव्यवस्था में दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शान्ति प्रदान करे और परिवारजनो, इष्ट मित्रो न्यास परिवार के सदस्यों को धैर्य धारण की शक्ति दे।

—प्रधान, आर्य समाज, मठपारा दुर्ग, (म. प्र.)

वैदिक साहित्य वितरण समारोह

नई दिल्ली ६ अप्रैल। ग्राम प्रचार समिति के तत्वावधान में पैराडाइज पब्लिक स्कूल के प्रांगण में आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री विक्रम कपूर की अध्यक्षता मे समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर श्री अभिनव भारती के ब्रह्मत्व में एक विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया।

समारोह में मुख्य अतिथि डा. धर्मपाल, स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती तथा अनेकों गणमान्य व्यक्तियो ने पधार कर श्रोताओं का मार्ग दर्शन किया। इस अवसर पर श्री विक्रम कपूर ने आर्य समाज की श्रेष्ठ सेवाओं के लिये डा० धर्मपाल को शाल उढ़ाकर सम्मानित किया। स्वामी स्वरूपानन्द जी ने श्रीमती सुशीला महाजन तथा धर्मपालजी ने श्री भगत राम आर्य को सम्मानित किया। समारोह में दयानन्द विश्व दर्शन तथा वैदिक सिद्धान्त पुस्तक का निःशुल्क वितरण किया गया। कार्यक्रम के संयोजक पं० अशोक कुमार के परिश्रम तथा निष्ठापूर्ण कार्यों की चर्चा करते हुये डा० धर्मपाल ने उनको शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया।

ईसाई युवक का वैदिक धर्म में प्रवेश

दिनांक ३१-३-९३ दिन बुधवार को प्रात: १०-३० बजे आर्य समाज न्यू-मिरजालगुड़ा मलकाजगिरि हैदराबाद-४७, में श्री एस. विक्टर सुपुत्र श्री सेवेरियार बोलाराम निवासी का आचार्य अरविन्द मयाचारी के पौरोहित्य में शुद्धि संस्कार सुसम्पन्न हुआ तत्पश्चात इनका नाम विक्रम कनोजिया रखा गया अन्त मे आर्य समाज के सदस्यो ने श्री विक्रम को परिवार सहित आशीर्वाद एवम् शुभ कामनाएं दीं।

—रामचन्द्र आर्य, मन्त्री

रामनौमी सोत्साह सम्पन्न

आर्यसमाज महर्षि दयानन्दबाजार(दालबाजार)लुधियाना में रामनौमी का पर्व आचार्य राजेश्वर शास्त्री के ब्रह्मत्व में विशेष यज्ञ से प्रारम्भ हुआ। इस अवसर पर आर्य समाज के अधिकारियों ने श्रीराम के जीवन से प्रेरणा लेकर उनके बताये मार्ग पर चलने की अपील की। कार्यक्रम में पं० बनारसीदास जी ने अपने मधुर भजनों से श्रोताओं को मुग्ध कर दिया।

पोस्टल रजिस्टर्ड नं० डी० एल० ११०४६/९३ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२५-४-१९९३) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (C) ९३
R.N 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U (C) 93 Post in N.D.P.S.O.on 22-23-4-1993

बाजपुर (नैनीताल) मे आर्य समाज की स्थापना

आर्य उप-प्रतिनिधि सभा जनपद नैनीताल की कार्यकारिणी तथा क्षेत्रीय आर्य जनो की एक बैठक दिनांक ४-४-१९९३ को श्री चन्द्र किशोर जी विश्नोई,की अध्यक्षता मे श्री ओम प्रकाश गोयल, बाजपुर के निवास स्थान पर हुई। बैठक का सचालन डा० जयसिंह सरोज मन्त्री, आर्य उप-प्रतिनिधि सभा, नैनीताल ने किया। विचार विमर्श के पश्चात सर्वसम्मति से आर्यसमाज, बाजपुर का गठन निम्न प्रकार हुआ।

सरक्षक—श्री चौ० फतहसिंह
प्रधान—ठा० रूलियासिंह
उप-प्रधान—श्री इन्द्रसिंह, श्री गिरवरसिंह, श्री प्रेम प्रीतसिंह
मन्त्री—डा० ऋषिपालसिंह
उप-मन्त्री—श्री भगवन्तसिंह शिशोदिया व श्री अजय नरेश
कोषाध्यक्ष—श्री ओम प्रकाश जी गोयल
पुस्तकाध्यक्ष/पुरोहित—प० जयप्रकाश आर्य
अन्तरग सदस्य—१२ प्रतिनिधि

नाम परिवर्तन

सुल्तानपुरी निवासी श्री रामजन्मसिंह जी ने अपने यहा विशेष यज्ञोपरान्त अपना नाम बदल कर विश्वमित्र आर्य घोषित किया है। कृपया अब इन्हे विश्वमित्र के नाम से ही सम्बोधित किया करें।

इनका पता बी० ३ म० न० १४५ सुल्तानपुरी दिल्ली है।

द्वारा हरिसिंह आर्य
कार्यालय मन्त्री सार्वदेशिक आर्य वीर दल

श्री रोशनलाल गुप्त की पत्नी का निधन

आर्यसमाज सरोजिनी नगर के उपप्रधान एव रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल के प्रबन्धक श्री रोशनलाल गुप्त की धर्मपत्नी श्रीमती कौशल्यादेवी का एक अप्रैल ९३ को देहावसान हो गया। उसी दिन निगमबोध घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से उनका अन्तिम सस्कार किया गया।

श्रीमती कौशल्यादेवी स्त्री आर्य समाज सरोजिनीनगर की सक्रिय कार्यकर्ता थी अपने सरल मधुर एव हसमुख स्वभाव के कारण समाज मे उनका एक विशिष्ट स्थान था। ४ अप्रैल को आर्य समाज निर्माण विहार मे शान्ति यज्ञ एव रस्म पगडी सम्पन्न हुयी। विभिन्न सस्थाओ को पन्द्रह हजार रुपये की राशि दान स्वरूप प्रदान की गयी।

प्रवेश-सूचना

—युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज की जन्म एव बोध भूमि टकारा मे गत ३५ वर्षों से श्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट द्वारा उपदेशक महाविद्यालय का सञ्चालन हो रहा है। इस विद्यालय का पाठ्यक्रम चार वर्षों का है। जिसमे छात्रो को महर्षि दयानन्द कृत ग्रन्थो का व अग्रेजी तथा आर्य भाषा का अध्ययन कराया जाता है। अत प्रवेश के इच्छुक १६ से २५ वर्ष की आयु के तथा मैट्रिक परीक्षा अथवा तत्समकक्ष सस्कृत परीक्षा (अग्रेजी विषय के साथ) उत्तीर्ण छात्रो द्वारा आवेदन पत्र ३१ मई तक इस कार्यालय मे प्राप्त होने चाहिए। इस विद्यालयमे शिक्षा, भोजन, आच्छादन, लेखन सामग्री, पाठ्य पुस्तकें, वस्त्र आदि की नि शुल्क व्यवस्था है।

विशेष जानकारी हेतु निम्नाकित पते पर पत्र व्यवहार करें।

आचार्य
श्री महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टकारा
जि० राजकोट (सौराष्ट्र) पिन-३६३६५०

प्रवेश आरम्भ

आर्य बाल सरक्षण गृह के प्रबन्धक श्री अखिलेश भारती के अनुसार सरक्षण गृह मे आठवर्ष से अधिक आयु के असहाय बच्चो का प्रवेश प्रारम्भ है।

बच्चे के माता/पिता अथवा पिता का मृत्यु प्रमाण पत्र एव निकटतम आर्यसमाज के मानद् अधिकारी का अनुमोदितपत्र के साथ, शीघ्र सम्पर्क करे। अन्तिम तिथि १०-५-९३

—कृष्ण गोपाल शास्त्री अधिष्ठाता
आर्य बाल सरक्षण गृह
८९७८ नया मोहल्ला निकट आजाद मार्किट चौक दिल्ली ६

डाक्टर मुस्लिम युवती ने वैदिक धर्म अपनाया

आर्य समाज गोविन्द नगर कानपुर मे समाज के प्रधान तथा श्री देवीदास आर्य ने एक २३ वर्षीय मुस्लिम डाक्टर युवती कु० मसाआ हुसन को उसकी इच्छानुसार वैदिक धर्म की दीक्षा प्रदान की तथा उनका नाम गायत्री रखा। शुद्धि सस्कार के बाद गायत्री का विवाह एक सिख युवक डा० दिलप्रीतसिंह के साथ वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न कराया गया।

अथर्ववेद पारायण महायज्ञ

आर्य समाज मैनपुरी के भूतपूर्व प्रधान श्री ठा० महावीरसिंह जी के निवास स्थान पर २४ से ३० मार्च तक आचार्य राजदेव शर्मा के ब्रह्मत्व मे अथर्ववेद पारायण यज्ञ का विशाल कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। आर्ष गुरुकुल ऐरवा कटरा (इटावा) के ब्रह्मचारियो के सस्वर वेदपाठ से समस्त वातावरण वेदमय हो गया। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वानो तथा भजनोपदेशको के उपदेशो की श्रोताओ ने अत्यन्त सराहना की।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित

सत्यार्थप्रकाश पत्राचार प्रतियोगिता

—: पुरस्कार :—

प्रथम : ११ हजार द्वितीय : ५ हजार

तृतीय : २ हजार

न्यूनतम योग्यता : १०+२ अथवा अनुरूप

आयु सीमा : १८ से ४० वर्ष तक

माध्यम : हिन्दी अथवा अंग्रेजी

उत्तर पुस्तिकायें रजिस्ट्रार को भेजने की
अन्तिम तिथि ३१-८-१९९३

विषय :

महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश

नोट —प्रवेश, रोल न० प्रश्न-पत्र तथा अन्य विवरण के लिए देश मे मात्र बीस रुपये और विदेश मे दो डालर नगद या मनी-आर्डर द्वारा रजिस्ट्रार, परीक्षा विभाग सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नयी दिल्ली-२ को भेजे। पुस्तक अगर पुस्तकालयो, पुस्तक विक्रेताओ अथवा स्थानीय आर्य समाज कार्यालयो से न मिले तो तीस रुपये हिन्दी,सस्करण के लिये और पैसठ रुपये अग्रेजी सस्करण के लिये सभा को भेजकर मगवाई जा सकती हैं।

(२, सभी आर्य समाजो एव व्यक्तियो से अनुरोध है कि इस तरह के हैंडबिल ४-५ हजार छपवाकर आर्यजनो, स्थानीय स्कूल कालेजो के अध्यापको और विद्यार्थियो मे वितरित कर प्रचारबढाने मे सहयोग द।

डा० ए०बी० आय — रजिस्ट्रार
स्वामी आनन्दबोध सरस्वती — प्रधान

सार्वदेशिक प्रेस दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम

महर्षि दयानन्द उवाच

- एक धर्म, एक भाषा और एक लक्ष्य बनाये बिना भारत का पूर्णहित और जातीय उन्नति का होना दुष्कर है सब उन्नतियो का केन्द्र स्थान ऐक्य है। जहा भाषा, भाव और भावना मे एकता आ जाय, वहा सागर मे नदियो की भाति सारे सुख एक-एक करके प्रवेश करने लगते है।
- सज्जनों की रीति है कि अपने व पराये के दोषो को दोष और गुणो को गुण जानकर गुणो को ग्रहण और दोषो का त्याग करे।

सम्पादक—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री | दूरभाष। ३२७४७७१ | वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे

वर्ष ३१ अंक १२] | दयानन्दाब्द १६९ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९३ | वैशाख शु० ११ | सं० २०५० | २ मई १९९३

विमान अपहर्ता मुहम्मद यूसुफ ने अपाहिज बनकर सुरक्षा घेरे को चकमा दिया

विमान के सभी यात्री सकुशल बचे : सुरक्षा कमाण्डो ने अपहर्ता को गोली मारी

दो दिन पूर्व इण्डियन एयरलाइन्स के विमान का अपहरण करने वाले कश्मीरी युवक मुहम्मद यूसुफ शाह को राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड के कमाण्डो ने मार तो दिया पर जब यही युवक १० घण्टे पहले इंदिरा गाधी हवाई अड्डे पर मैटल डिटेक्टर के सामने आया तो कोई भी सुरक्षा कर्मचारी उसके इरादो को भाप नही पाया था। दोनो टागो पर प्लास्टर चढाए और हाथो मे बैसाखिया पकडे यह युवक १४० यात्रियो की जान को खतरे मे डाल सकता है इसका अन्दाज लगाने मे सुरक्षा इन्तजाम नाकाम रहा। यह पहला मौका है कि जब कोई अपहर्ता इस तरह से प्लास्टर का बहाना बनाकर सुरक्षा कर्मचारियो को चकमा दे गया। यह अपहर्ताओ का नया हथकण्डा है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार विमान अपहरण कर्ता मुहम्मद यूसुफ शाह को दो अफगानी नागरिको ने व्हील चेयर पर बैठाकर सुरक्षा घेरे से पार कराया। इन दोनो अफगानी नागरिको के पास भी अमृतसर तक का टिकट था। परन्तु वे दोनो विमान मे सवार नही हुए। उन्होने यूसुफ को सुरक्षा जाच से निकालकर विमान तक छोडा था और फिर वापस आ गए। इसके बाद उन्होने अपने टिकट रद्द कराये और पैसा वापस लेकर चलते बने। दिल्ली पुलिस इन दोनो अफगानी यात्रियो की तलाश मे लगी हुई है। हवाई अड्डे के उच्च सुरक्षा सूत्रो के अनुसार—मैटल डिटेक्टर ने जब बीच-बीच मे चेतावनी दी तो उन्हे शका हुई थी। जब उससे प्लास्टर के बारे मे पूछा गया तो उसने तुरन्त जवाब दिया कि "बहुत जबरदस्त एक्सीडेण्ट हुआ था" और डाक्टर ने दोनो टूटी हुई टागो मे धातु की छडे फिट कर रखी है। सुरक्षा कर्मचारी ने इस जवाब से सन्तुष्ट होकर उसे आगे जाने दिया। विमान के अन्दर जाकर उसने आगे की सीट ली ताकि वह आसानी से अपनी टागो को फैला सके परन्तु उसने ज्यादा समय तक टागे सीधी नही रखी। विमान जैसे ही अमृतसर पार करके बनिहाल के पास पहुचा तो उसने पिस्तौल निकाल ली और प्लास्टर को उखाडकर एक कोने मे फेंक दिया। विमान मे पहुचने से पूर्व वह कई चेक पोस्टो से गुजरा था। वह पूरे रास्ते हसता रहा और किसी को उस पर शक नही हुआ।

सुरक्षा कमाण्डो ने आखिरकार उसे मार गिराने मे सफलता प्राप्त कर ही ली, यदि ऐसा न हो पाता तो विमान के साथ-साथ विमान के सभी यात्रियो को भी जान से हाथ धोने पडते। सुरक्षा कमाण्डो ने जिस साहस और चतुराई से अपना काम कर दिखाया, उसकी जितनी प्रशसा की जाय कम है।

महाराणा महेन्द्रसिंह जी महाराणा प्रताप जयन्ती समारोह के वृहद् यज्ञ में प्रथमाहुति देंगे

सभा-प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती उदयपुर और चित्तौड़ के ऐतिहासिक स्थलों के निरीक्षण के बाद दिल्ली वापस

दिल्ली २६ अप्रैल। महान राष्ट्रीय नेता और हिन्दू जाति के संरक्षक महाराणा प्रताप का जयन्ती समारोह आर्य जगत् की ओर से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे २४ मई १९९३ को दिल्ली के लालकिला मैदान मे वृहद् यज्ञ के साथ आयोजित किया जा रहा है। इसके लिए तैयारिया बराबर चल रही हैं। दिल्ली

(शेष पृष्ठ २ पर)

पुस्तक समीक्षा

आर्य समाज के दस नियमों की व्याख्या

लेखक—पं० विश्वबन्धु

मूल्य—तीन रुपए।

प्रकाशक-आर्य प्रकाशन, ८१४ कूण्डेवालान, अजमेरी गेट, दिल्ली।

पंडित विश्वबन्धु शास्त्री की पुस्तक आर्य समाज के दस नियमों की व्याख्या मात्र ३१ पृष्ठों की होने के बावजूद गागर में सागर भरे हुए हैं। बिना किसी पूर्व भूमिका अथवा लेखकीय वक्तव्य के लेखक ने महर्षि दयानन्द द्वारा प्रदत्त आर्य समाज के इन मूलभूत नियमों को अपने चिन्तन की सीमाओं में अधिग्रहित किया है।

पुस्तक में आर्य समाज के प्रथम नियम की व्याख्या करते हुए जहां लेखक पदार्थ विद्या को पारिभाषित करता है वहीं शब्द और अर्थ के अन्तर को स्पष्ट करते हुए यह भी दर्शाता है कि परमात्मा ने 'पद' प्रथम दिये या अर्थ। इसी नियम की व्याख्या में लेखक यह भी सफलता पूर्वक बताता है कि क्या आदि-मूल शब्द अद्वैतवाद का समर्थक है ?

लेखक ने आर्यसमाज के दूसरे नियम में ईश्वर व उसके सच्चिदानन्द स्वरूप को अधिभाषित किया है।

तीसरे नियम की व्याख्या में लेखक वेद को गौरव ग्रन्थ बताते हुए उसकी मन्त्र रचनाओं पर प्रकाश डालता है तो पाचवे नियम की व्याख्या करते हुए वह धर्म और सत्य के चयन की आवश्यकता को परिमार्जित करता है।

इस पुस्तक में लेखक ने आर्य समाज के दसों नियमो की सारगर्भित व्याख्या की है जिससे पुस्तक लघु आकार की होने के बावजूद पठनीय व संग्रहणीय बन गई है। —सम्पादक

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर का ८६वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

हरिद्वार। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के १० एवं ११ अप्रैल को सम्पन्न हुए वार्षिकोत्सव के सम्बन्ध में बताते हुए संस्था के प्राचार्य डा० हरिगोपाल शास्त्री ने बताया कि इस अवसर पर आर्य, वेद, राष्ट्ररक्षा एवं गुरुकुलीय शिक्षा सम्मेलनका सफल आयोजन रहा जिसमे विशेष व्यायाम प्रदर्शनभी गुरुकुल के ब्रह्मचारियो द्वारा किया गया। इस अवसर पर ४० वीं वाहिनी पी०ए०सी० के सेनानायक श्री बी०बी० दास मुख्य अतिथि के रूप मे सपत्नीक पधारे। उन्होने छात्रो द्वारा दिखाए गए व्यायाम प्रदर्शन की भूरि-भूरि प्रशंसा की और छात्रों का उन्साहवर्धन किया।

इस अवसर पर आर्य जगत से प्रतिष्ठित विद्वानों ने पधारकर समारोह को सफल बनाया।

— डा० हरिगोपाल शास्त्री, प्राचार्य

सार्वदेशिक आर्यवीर दल का कार्यकर्ता एवं योग शिविर

दिनांक २२ जून से ४ जुलाई, १९९३

स्थान—उदगीथ साधना स्थली, (हिमांचल)

हिमालय पर्वत श्रेणी के सुरम्य सुन्दर स्थान, डोहर त० राजगढ़ जि० सिरमौर हिमाचल मे ब्र० आर्य नरेश द्वारा संस्थापित उदगीथ साधना स्थली में दिनांक २२ जून से ४ जुलाई १९९३ तक आर्य वीर दल के कार्यकर्ताओ का शारीरिक एवं बौद्धिक प्रशिक्षण शिविर डा० देवव्रत आचार्य के मार्गदर्शन मे लग रहा है। प्रवेश शुल्क ५० रु०, मार्ग व्यय दिल्ली से उद्गीथ साधना स्थली आना जाना २५० रुपए।

इसी अवसर पर योगसाधना शिविर २२ से २७ जून तक ब्र० आर्य नरेश के मार्ग दर्शन मे लगाया जाएगा!

—ब्र० राजसिंह आर्य
संयोजक आर्य वीर दल कार्यकर्ता शिविर

मानव की बात करते हैं

राम की न श्याम की रहमान की भी बात नहीं,
मानव हैं हम तो मानव की बात करते हैं।
यही प्रश्न मन-पटल पर कौंधता है बार-बार,
हम मानव परस्पर क्यों मानव से लड़ते हैं।
है मानव, पशु-पक्षी, कृमि-कीट, जड़ सभी का ही,
रूप-रंग भिन्न-भिन्न पर आत्मा तो एक है।
चौरासी लक्ष योनियों में सर्वश्रेष्ठ मानव,
कि उसे मिला हुआ बुद्धि-बल औ' सद्विवेक है।
इस जगत् में सभी का है जीवन जब नश्वर ही,
तब अपने - पराये की बात क्यों उभरती है।
हो रही है मानवता लुप्त धीरे - धीरे ही,
सकल मही में अब क्यों दानवता विचरती है।

—पं० विष्णु शास्त्री 'सरल'
जी०आई०सी० रोड, चम्पावत (पिथौरागढ़)

महाराणा प्रताप जयन्ती

(पृष्ठ १ का शेष)

के प्रमुख आर्य जनों की एक बैठक में आज स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने यह जानकारी दी कि २४ मई के प्रथम कार्यक्रम मे महाराणा प्रताप के उत्तराधिकारी "महाराणा महेन्द्रसिंह जी दिल्ली पधार कर वृहद् यज्ञ मे अपनी प्रथमाहुति देंगे। उनके साथ भामाशाह के प्रतीक दानवीर श्री हनुमान प्रसाद जी चौधरी भी आवेंगे और उनका भी सम्मान किया जायेगा।

स्वामी जी ने २० अप्रैल को उदयपुर के लिए प्रस्थान किया था। महाराणा प्रताप जयन्तीके सिलसिले में उन्होंने समोरबाग में महाराणा महेन्द्रसिंह मेवाड़ से मुलाकात की और उन्हें २४ मई के आयोजन में दिल्ली पधारने का निमन्त्रण दिया। महाराणा जी ने इस निमन्त्रण को प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार कर लिया।

स्वामी जी ने उदयपुर के म्यूजियम में महाराणा प्रताप से सम्बन्धित ऐतिहासिक वस्तुओं को देखा। उन्होंने चित्तौड़ किले में उस पवित्र स्थल को भी देखा जहां महारानी पद्मनी ने जौहर लिया था और उस यज्ञ कुण्ड को भी देखा जहां मेवाड़ की १४,००० देवियों ने राजपूती आन के लिए जलती आग में कूदकर अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया था। स्वामी जी उस स्थल को भी देखने गये जहां से अलाउद्दीन खिलजी ने महारानी पद्मनी के अक्स को देखा था। स्वामी जी ने चित्तौड़ मे गुरुकुल और आर्ष पद्मनी कन्या गुरुकुल को भी देखा। उदयपुर मे स्वामी जी ने नवलखा महल का भी निरीक्षण किया। स्वामी जी ने वहां अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि एक न्यास का गठन करके वहां पर वेद-वेदांग विद्यालय का संचालन किया जाना चाहिए।

उदयपुर मे आयोजित पत्रकार सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए स्वामी जी ने कहा—महान शूरवीर और देश भक्त महाराणा प्रताप की जयन्ती के पाचवी शताब्दी के अवसर पर आर्य समाज की ओर से देश के विभिन्न शहरो और नगरों में प्रतिवर्ष जयन्ती समारोहों का आयोजन किया जायेगा। प्रथम समारोह दिल्ली में २४ मई ९३ को सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में किया जायेगा और जन्म शताब्दी का अन्तिम समारोह चितौड़ मे होगा।

सत्य के रास्ते पर चलना ही सच्ची उपासना

–स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

बागपत, १८ अप्रैल । सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि सत्य के रास्ते पर चलना ही परमात्मा की सच्ची उपासना है।

स्वामी जी यहां पुराने कस्बे मे आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव के दूसरे दिन मुख्य वक्ता के रूप में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि सत्य हमेशा विजयी होता है। सत्य को कहने की हिम्मत होनी चाहिए। स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि यह शरीर नश्वर है हमें यहां से जाना ही होगा। इसलिये जरूरी है कि हम आडम्बर से बचते हुए सत्य को अपने जीवन में उतारें।

विभिन्न मत मतांतरों तथा गुरुडम की आलोचना करते हुए स्वामी जी ने कहा कि वेदों के अध्ययन पर बल देने से ही सारे भूमण्डल पर शांति स्थापित हो सकती है। उन्होंने वेदो की महिमा का वर्णन करते हुए कहा कि स्वामी दयानन्द ने सौ वर्ष पहले जो कुछ कहा था, उसे आज संसार मे हर मजहब का विद्वान सही मानता है। उन्होने कहा कि स्वामी दयानन्द ने देश की आजादी के लिए अंग्रेजों को ललकारा तथा महिलाओं के उत्थान व समाज में फैली कुरीतियों को दूर करने के लिए संघर्ष किया।

स्वामी आनन्दबोध जी ने कहा कि आर्यसमाज व स्वामी दयानन्द के बताये रास्ते पर चलकर ही देश का कल्याण संभव है। अपने प्रवचन में ही राजनीति पर बोलते हुए उन्होने कहा कि देश में फली अव्यवस्था के लिए मुख्य रूप से नेता ही जिम्मेवार है। उन्होंने कहा कि आजादी से पूर्व महात्मा गांधी ने कहा था कि पाकिस्तान उनकी लाश पर बनेगा। इसके बावजूद पाकिस्तान बना और महात्मा गांधी ने उसे ५५ करोड़ रुपये भी दिला दिये, जबकि भारत को पाकिस्तान से जो तीन अरब रुपये लेने थे, उसे छोड़ दिया गया।

उन्होंने कहा कि जो पाखण्ड मन्दिरों में होता था उसे अब नेता करते हैं। स्वामी जी ने कहा था कि वी. पी. सिंह जब प्रधानमन्त्री थे तो उन्होंने मुफ्ती मोहम्मद सईद को गृहमन्त्री बनाकर भारत की बागडोर उनके हाथ में सौंप दी। सईद ने झूठमूठ अपनी बेटी के अपहरण के बहाने पांच दुर्दान्त आतंकवादियों को छुड़वा दिया। तभी से कश्मीर के हालात काबू से बाहर हो गये हैं।

उन्होंने कहा कि आज कश्मीर के खुशहाल हिन्दू दर-दर की ठोकरें खा रहे हैं। इस स्थिति के लिए भाजपा को भी बख्शा नहीं जा सकता, क्योंकि तब इसके ८८ सांसद थे, जो वी. पी. सिंह को समर्थन दे रहे थे। स्वामी आनन्दबोध जी ने कहा कि यदि भाजपा की सत्तामे भागेदारी थी तो आडवाणी को गृहमन्त्री बनवाती और तब कश्मीर के हालात इतने बेकाबू नहीं होते।

उन्होंने कहा कि आज की परिस्थितियो में आर्य समाज की भूमिका काफी महत्वपूर्ण हो गयी है। हमें सोच-समझकर आगे कदम बढ़ाना होगा। हमारी जिम्मेदारी है कि हम देश को तोड़ने व अमन-चैन खत्म करने वाली ताकतों को बेनकाब करें। इससे पूर्व प्रातःकालीन सत्र में यज्ञ किया गया तथा ज्वालापुर के सत्यानन्द व धर्मपाल सिंह शास्त्री ने स्वामी दयानन्द की शिक्षा व मान्यताओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। इस अवसर पर प्रसिद्ध भजनोपदेशक नरदेव आर्य ने मनोहारी भजन प्रस्तुत किये।

इस समारोह की अध्यक्षता मास्टर मुरारीलाल आर्य तथा संचालन सत्यप्रकाश गौड़ ने किया। इस दौरान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का स्वागत करने वालों में भाजपा के जिला उपाध्यक्ष जगवीरसिंह एडवोकेट, नगर अध्यक्ष नरेन्द्रपाल शर्मा, आर्य समाज के मन्त्री सुभाष चन्द्र त्यागी एडवोकेट, हरदेव सिंह, रामकिशन सेहरावत व मानसिंह समेत अन्य गणमान्य नागरिक शामिल थे।

देदीप्यमान नक्षत्र पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी

आर्य समाज के देदीप्यमान नक्षत्र पं० गुरुदत्त विद्यार्थी का जन्म २६ अप्रैल, १८६४ को मुलतान के एक धर्मपरायण परिवार मे लाला रामकृष्ण के घर हुआ था। उनके बचपन का नाम मूला था। उनके सरदाना कुल गुरू ने उनका नाम बैरागी रखा परन्तु बाद मे वे गुरुदत्त के नाम से विख्यात हुये।

विलक्षण प्रतिभा के धनी मुनिवर पं० गुरुदत्त विद्यार्थी एक मेधावी छात्र थे। सन १८८० को हुई मैट्रिक की परीक्षा मे उन्होने सारे पंजाब में पंचम स्थान प्राप्त किया। एफ. ए. की परीक्षा मे वे प्रथम स्थान पर रहे। लाला-लाजपतराय, हंसराज आदि उनके सहपाठी थे। एम. एस. सी. की परीक्षा में तो पूरे विश्वविद्यालय मे सर्वाधिक अंक प्राप्त करके उन्होने एक नया कीर्तिमान स्थापित किया था।

अद्‌भुत तर्कशक्ति सम्पन्न पं० गुरुदत्त विद्यार्थी प्रत्येक बात को तर्क के तराजू पर तोलते थे। पं० रैमलदास व लाला चेतनदास की प्रेरणा से सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने के बाद वे आर्यसमाज की ओर आकृष्ट हुये और २० जून १८८० को आर्य समाज के विधिवत् सदस्य बन गए।

जब महर्षि दयानन्द की बीमारी का समाचार लाहौर पहुचा तो पंजाब प्रतिनिधि सभा की ओर से पं० गुरुदत्त विद्यार्थी एवं लाला जीवनदास दो युवकों को प्रतिनिधि के रूप मे अजमेर भेजा गया। वे ९ अक्तूबर, १८८३ को अजमेर पहुचे। पं० गुरुदत्त तब तक घोर नास्तिक थे परन्तु जब उन्होंने ऋषि की मृत्यु का अद्‌भुत दृश्य देखा तो पंडित जी के हृदय में ईश्वर के प्रति अगाध विश्वास ने जन्म लिया और उनके जीवन की दिशा ही बदल गई। अन्तिम समय में ऋषि के पास केवल पं० जी ही थे और 'हे प्रभो तेरी इच्छा पूर्ण हो' कहते हुए ऋषि ने नश्वर शरीर त्यागा था।

लाहौर पहुंचने पर पंडित जी ने ऋषि दयानन्द की मृत्यु के बाद मे एक मर्मस्पर्शी व्याख्यान दिया और ऋषि की स्मृति में एक महाविद्यालय खोलने का प्रस्ताव रखा।

१ जून, १८८६ को स्थापित प्रथम डी०ए०वी० स्कूल के संस्थापकों व कर्णधारो में पंडित जी का नाम उल्लेखनीय है। पंडित जी ने स्थान-स्थान पर व्याख्यानों द्वारा धन संग्रह से अपूर्व योगदान दिया।

शिक्षा समाप्ति के बाद पंडित जी को अतिरिक्त सहायक आयुक्त (अक्स्ट्रा असिस्टेंट कमिश्नर) का सम्मानजनक पद मिल रहा था परन्तु उन्होने शिक्षक का व्यवसाय अपनाया। वे सरकारी कालेज मे विज्ञान के प्राध्यापक के रूप में नियुक्त हो कार्य करने लगे और आर्य समाज की भी सेवा समर्पित भाव से करते रहे।

पं० गुरुदत्त ने सत्यार्थ प्रकाश का १८ बार स्वाध्याय किया था और हर बार उन्हें उससे नवीन प्रकाश व ज्ञान मिलता रहा। बार-बार अनुरोध करने पर भी उन्होंने ऋषि की जीवनी न लिखने का यह कारण बताया कि अभी तो वे देव दयानन्द के जीवन चरित्र को अपने जीवन मे ढालने का प्रयास कर रहे हैं। ऐसे आदर्श मनीषी थे पं० गुरुदत्त विद्यार्थी।

पं० जी की स्मरण शक्ति गजब की थी। उर्दू, फारसी, हिन्दी, संस्कृत, पंजाबी, अंग्रेजी, मुल्तानी आदि भाषाओं पर उनका अधिकार था। वे एक अच्छे आशु कवि भी थे।

प्रबुद्ध पत्रकार पं० गुरुदत्त ने एक उच्चस्तर की वैदिक मैगजीन का भी प्रकाशन व सम्पादन किया। पंडित जी की विद्वत्ता का अनुमान इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि उनके द्वारा तैयार 'टर्मिनोलोजी आफ वेदाज' नामक कोष आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में भी सम्मिलित किया गया था। आपने कुछ उपनिषदों का भी अंग्रेजी में अनुवाद किया।

पंडित जी स्वयं को एक विद्यार्थी ही मानते थे परन्तु उनके पांडित्य के कारण उन्हें पंडित जी कहकर सम्बोधित किया जाता था। पं० जी ओजस्वी वक्ता थे। वेद प्रचार के लिए घूम-घूमकर व्याख्यान देने, अष्टाध्यायी की कक्षायें लेने, डी०ए०वी० के लिए अथक काम करने आदि से उन्हें क्षय रोग हो गया और १९ मार्च १८९० को उन्होने नश्वर देह त्याग दी। लाहौर में

(शेष पृष्ठ ९ पर)

आधुनिक वैज्ञानिक युग में वेद की प्रासंगिकता

—आचार्य डा० विशुद्धानन्द शास्त्री

संसार का प्रत्येक आस्तिक अपनी एक धार्मिक पुस्तक को ईश्वरीय ज्ञान मानता है, यथा वेद, जन्दावस्ता, बाइबिल, कुरआन आदि को। परन्तु यहां विचारणीय यह है कि उक्त पुस्तके एक से समान विचार विश्वास, आस्थायें मान्यतायें रखती हैं, तो इस तर्क-प्रधान वैज्ञानिक युग मे, जहां पर प्रत्येक वस्तु परीक्षण के अनन्तर ग्राह्य होती है। वही पुस्तक सम्मान्य होगी जो तर्क-परीक्षाओ पर खरी उतरे।

हम विचार करते हैं तो उस पुस्तक को सार्वभौम, सर्वकालोपयोगी परस्पर विरुद्ध उक्तियो से रहित, सृष्टि-क्रम के नियमो के अनुकूल होना चाहिये तथा भूगोल, खगोल सर्वहितकारी अध्यात्म विद्या, मनुष्य की आभ्युदयिक उन्नति के लिए कला कौशल, विज्ञान, ज्योतिष आदि विद्याओ का मूल-निधान भी होना चाहिये।

इस कसौटी पर वैदिक संहितायें खरी उतरती है, वेद मे ईश्वर स्वरूप, जीव और प्रकृति के सूक्ष्म तत्वात्मक स्वरूप का विवेचन विशदरूपेण प्राप्त है। जीव और प्रकृति क्या है ? आदि दार्शनिक प्रश्नो का समाधान करने वाला उक्त कुरआन आदि ग्रन्थो मे अन्य कोई ग्रन्थ नहीं वे सब इनके उत्तर मे मौन हैं ? सैमेटिक सम्प्रदायो के इन ग्रन्थो मे ईश्वर मानवीय शक्ल-सूरत स्वभाव व सामान्य आचरण वाला निर्मित किया गया है।

सृष्टि परमात्मा ने क्यो और कैसे रची है ? इसका सही तर्क-संगत समाधान केवल वेदो म है उसका सृष्टि, स्थिति, सहारकारक स्वरूप यही पर उपलब्ध है। वेद किसी एक जाति वर्ग देश विशेष के लिये न होकर समस्त विश्व के लिये एक समान विधान विश्व भर के प्राणियो पर 'मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे' के उदात्त आदर्श को लेकर सृष्टि के आदि से ऋषि-हृदयो मे प्रकाशित हुआ।

अतएव इस युग के महान् क्रान्तिदर्शी ऋषि दयानन्द सरस्वती ने विश्व-भर के लिये यह अप्रतिम, उद्घोष दिया कि 'वेद सब सत्य विद्याओ की पुस्तक है' यह उद्घोष अभिनव होते हुये भी प्राचीनतम तथ्य है। वेद का गहन अध्ययन करने वालो को यह तथ्य पदे पदे दृष्ट होता है। वेद एक धर्म पुस्तक है परन्तु यह शब्द प्रचलित सकीर्ण अर्थ मे प्रयुक्त न होकर मानव की आन्तरिक (आत्मिक) और बाह्य (सामाजिक) अभ्युन्नति के मूल प्रेरक अर्थ मे है। सृष्टि नियमो के विरुद्ध मन-गढन्त बातो और चमत्कारो की आस्था से परे है। धर्म और विज्ञान, वेद प्रतिपादित दृष्टि से परस्पर पूरक होकर आगे बढते हैं। जो विज्ञान धर्म से विहीन हो जाता है, वह अन्धा है और पाशविकता को प्रोत्साहित कर विश्व मे विनाश के बीजो का वपन करता है। ऐसे ही विज्ञान से विहीन धर्म अन्धविश्वास को पनपाकर मानव को पतन के अन्ध कूप मे गिरा देता है। फलत धर्म और विज्ञान मे समन्वय और सगति व सहचारिता होने पर ही सर्व भूतहिते रता' की भावना पुष्पित और पल्लवित हो सकती है।

कतिपय प्रगतिवादी लोग धम का वैज्ञानिकीकरण करने की बात करते हैं इससे उनका अभिप्राय होता है कि कहीं धर्म भविष्य मे दकियानूसी भावना का जन्मदाता न बन जाव। वे इस तथ्य की अपेक्षा कर बैठते हैं कि वस्तुत विज्ञान का धार्मिकीकरण होना परमावश्यक है, वैदिक ऋचाओ मे जिस जिस विज्ञान का सूत्र मिलता है व सभी मानव की चतुर्मुखी समुन्नति के मार्ग को प्रशस्त करने वाले हैं।

चाहे वे दिव्य लोक के सूर्य, चन्द्र, तारा, नक्षत्र, इन्द्र, वरुण आदि पदार्थों के प्रसग हो या वे पार्थिक अग्नि, जल, वायु आदि पदार्थों के सम्मिश्रण या अनुसधानो पर तैयार किये गये पदार्थ विद्या आदि से सम्बद्ध हो।

वेद तो वस्तुत —

'प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तुपायो न बुध्यते।
एव विदन्ति वेदेन तस्मात् वेदस्य वेदना।''
''भूत भव्य भविष्यञ्च सर्व वेदात प्रसिद्ध यति।'
(मनु० १२/९७)

वेद मे किन किन विज्ञानो के मूल प्राप्य हैं, यह बताने मे तो एक बृहत्काय ग्रन्थ बन सकता है। वेद मन्त्रो के देवता तथा मन्त्रो को आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधि भौतिक इन त्रिविध अर्थो मे पल्लवित किया जाये तो ज्ञान और विज्ञान विषय मे अपरिगणनीय सूची सामने आ जाती है। वस्तुत वेद मानवीय समुन्नति के सर्वाङ्गीण विकास, सामाजिक, पारिवारिक कर्त्तव्याकर्तव्य कर्मों का निर्देशक महाकोश है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा, कि वेद का इस शताब्दी मे जितना प्रचार प्रगट हुआ उतना इससे पूर्व २००० वर्षों मे नहीं हुआ। वेद मे सृष्टि की उत्पत्ति से पूर्व का रहस्य विज्ञान तथा रचना की गतिशीलता की प्रक्रिया से आविर्भाव की स्थिति तक पहुचने का बहुत सुन्दर वर्णन नासदीय सूक्त के ''नासदासीन्नोसदासीत्तदानी नासीद्रजो नो व्योमा परोयत्'' न मृत्यु रासीदमृत न तर्हि आदि मन्त्रो मे पञ्च महाभूतो तथा तन्मात्राओ का सूक्ष्म उन्मेष, शारीरिक-विज्ञान, मनोविज्ञान प्राण-विज्ञान, आत्म-विज्ञान आदि सभी वदो मे विशदरूपेण है। महाभारत की यह उक्ति तत्वत वेदो पर सुघटित है कि—'यदिहाऽस्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित्' जो वेद मे है वही इस विशाल ब्रह्माण्ड मे है और जो वेद मे नहीं है, वह भ्रमज्ञानात्मक है या कही नही है।

कदाचित आधुनिक लोग आधुनिक विज्ञान का अविष्कृत या परिष्कृत स्वरूप वेद मे खोजने लगे, तो असम्भव है। मानवीय मस्तिष्क के लिये तो विकास के अवकाश का द्वार तभी तक खुला हुआ है, जब तक उसे नाम्ना तत् तद्वस्तु तो ज्ञात है और उन वस्तुओ के मिश्रण से प्राप्त परिणाम के भी उसे सकेत मिल रहे हैं, तो उन वस्तुओ का अनुपातिक मिश्रण, रचना प्रक्रिया परीक्षण ही तो अनुसन्धान का क्षेत्र रह जाता है। जिसके लिये जीवात्मा प्रभु प्रदत्त अपनी स्वतन्त्र बौद्धिक व आत्मिक शक्ति का प्रयोग करे।

रथ, चक्र, यान, विमान पारद, विद्युत इत्यादि नामो से सृष्टि के आदि मानव ने इन शब्दो के विविध क्षेत्र और भावो मे अनेकानेक अर्थ परिलक्षित किये। तदर्थ उन्होने 'नासाध्य तपसा किञ्चित् को आदर्श मानकर घोर तप किया।

आज भी कतिपय रूढिवादी, जिन्होने वेद को पूजा के सर्वोच्च आसन पर तो अधिष्ठित कर रक्खा है, पर उनकी श्रद्धा मे वेद केवल पूजा पाठ तक और कर्मकाण्ड यज्ञ तक ही सीमित रहेगा। उनमे से एक ''दि वैदिक एज'' नामक ग्रन्थ जो १९५१ ईसवी मे प्रकाशित हुआ, इसके विद्वान् लेखको के व्यामोह का दर्शन कीजिये, वे लिखते है—अर्थात ऋग्वेद न तो ऐतिहासिक ग्रन्थ है और न वीर काव्य है अपितु यह पूजक परिवारो के उन स्तोत्रो का सग्रह है, जिनको वे बहुत श्रद्धा से अपने देवताओ के लिये किये गये यज्ञ मे गाते थे। अतएव इसमे ऐतिहासिक सामग्री अतिन्यून है।

भला, जब ससार की रचना के आदि मे ईश्वरीय ज्ञान के रूप मे वेद प्राप्त हुआ तो इसमे इतिहास के होने का प्रश्न ही क्या ? उक्त मत उन भारतीय व पाश्चात्य विद्वानो का है जो वेद की रचना ईसा से कुछ सहस्र वर्ष पूर्व ही मानते हैं। पाश्चात्यो के उच्छिष्ट भोजी श्री लोकमान्य तिलक ईसा से ८००० वर्ष पूर्व ही वेदो की स्थिति मानते हैं। सायणाचार्य लिखित चारो वेदो की भूमिका के सम्पादक काशी के प्रसिद्ध विद्वान श्री पण्डित बलदेव उपाध्याय साहित्याचार्य वेदो मे विज्ञान होने की बात पर देखिये क्या लिखते हैं—

'कैश्चित् समाजविशेषानुरागिभि वेदाना विशीयतेऽध्ययन सह परिश्रमेण परन्तु मन्त्रोच्चारण कुर्वन्त सत कदर्थन्ति। 'अपरञ्चामी वेदेषु नवीनानामपि आधुनिकै पाश्चात्यविज्ञान वेदिभि प्राकाश्य नीतानामाविष्काराणा धूमयान, वायुयान तदिच्छकटस्वनग्राहादीना नैव कल्पिता सम्भवनामपि तु वास्तविकी सत्ता वेदे मन्यन्ते। सर्वेषामाविष्कृतानामाविष्करिष्यमाणाना च विज्ञानत नानाकारो वेद एवति तेषामभिमत मतमेवालोक्यते। परन्तु एषोऽपि सिद्धान्तो नैव विद्वज्जनमनोरम, अर्थात् समाजविशेष (आर्यसमाज) से प्रेम रखने वाले लोग भी वेद पढते हैं परन्तु उनका उच्चारण ठीक नहीं, और वे वेदो मे रेल, विमान बिजली से चलने वाली गाडी तार आदि की कल्पित नहीं, अपितु वास्तविक सत्ता को मानते हैं, यह सिद्धान्त विद्वानो को पसन्द नहीं।''

(क्रमश)

सार्वदेशिक धर्मार्य सभा के महत्त्वपूर्ण निर्णय

डा० भवानीलाल भारतीय धर्माधिकारी, धर्मार्य सभा

सार्वदेशिक धर्मार्य सभा की एक महत्त्वपूर्ण बैठक दिनांक २६ फरवरी १९९३ को आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली मे धर्माधिकारी डा० भारतीय की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इसमें निम्न महानुभाव उपस्थित थे—सर्वश्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, पं. राजवीर शास्त्री, पं. अभिविनय भारती, डा० प्रशांत वेदालंकार डा० महेश विद्यालंकार, डा० प्रेमचन्द श्रीधर, पं० नेत्रपाल शास्त्री और रत्नाकर रत्न वर्मा।

ईश प्रार्थना के पश्चात् जब बैठक आरम्भ हुई तो धर्माधिकारी ने विचारणीय विषयो मे सर्वप्रथम संध्योपासना तथा यज्ञ विधि में एकरूपता का प्रश्न विचारार्थ प्रस्तुत किया। अध्यक्ष की ओर से बताया गया कि लगभग तीन दशक पूर्व धर्मार्य सभा के तत्कालीन मन्त्री आचार्य विश्वश्रवा ने पर्याप्त परिश्रम के पश्चात सध्या एवं यज्ञ विधि का निर्धारण किया था। ये दोनो विधियां समय समय पर सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित भी की जाती रही हे। संध्या की जो विधि सभा ने निर्धारित की है, उसका प्रथम बार प्रकाशन १९५६ में सार्वदेशिक सभा के तत्कालीन मन्त्री श्री रामगोपाल शालवाले द्वारा किया गया था। इसके प्राक्कथन मे धर्मार्य सभा के तत्कालीन मन्त्री आचार्य विश्वश्रवा ने स्पष्ट किया था कि सभा के निर्णय के अनुसार स्वामी दयानन्द कृत पञ्च महायज्ञ विधि को ही पञ्च यज्ञ विधान मे प्रमुखता दी जानी चाहिए।

तत्पश्चात् संध्योपासना के विभिन्न अगो पर पृथकशः विचार करते हुए निम्न बातो को स्पष्ट किया गया—

(१) अघमर्षण, मनसा परिक्रमा तथा उपस्थान की क्रियायें प्रथक् प्रकरण है जिनमे क्रमशः तीन छः तथा चार मन्त्रो का संग्रह श्री महाराज ने किया है। ऋषि की परिपाटी है कि प्रत्येक प्रकरण के प्रथम मंत्र के आरम्भ में ही ओ३म् का उच्चारण होना अभीष्ट है। इसी नियम के अनुसार ऋषि ने भी प्रत्येक प्रकरण के आरम्भ मे एक बार ही ओ३म् का उच्चारण करना बताया है। अतः प्रत्येक मन्त्र के आरम्भ मे ओ३म् बोलने का आग्रह करना निरर्थक तथा मात्र बितण्डावाद है। इसमे पाप अथवा पुण्य जैसी कोई बात नही है। जहा तक प्रणव के जप का आध्यात्मिक पक्ष है, कोई भी प्रणवोपासक साधक यथेच्छ ओम् का जप करे किन्तु कर्मकाण्ड में क्रिया तथा तद्विषयक आर्ष नियमों को ही सर्वोपरि माना जाता है। अतः यज्ञ विधि मे भी ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना के आठ मन्त्रों के आरम्भ में एक ही बार ओ३म् का उच्चारण कर्त्तव्य है।

(२) जब सत्सगो या सामूहिक उपासनाओ मे संध्या का प्रसंग आये तो प्राणायाम् के 'ओम् भूः आदि मन्त्रो का मात्र उच्चारण ही पर्याप्त है। प्राणायाम एक व्यक्तिगत क्रिया है अतः समूह से यह अपेक्षा नही की जा सकती कि सभी उपस्थित व्यक्ति एक ही अवधि तक प्राणायाम को क्रियात्मक रूप मे, एक साथ कर पायेंगे। संस्कार विधि मे उपस्थान मन्त्रो का क्रम कुछ भिन्नता लिये है। वहा यह क्रम इस प्रकार है—चित्रं देवाना, उदुत्यं जातवेदसं, उद्वयं तथा तच्चक्षुर्देवहित। इन चार विधि मन्त्रो के पहले जातवेदसे सुनवाम (ऋ. १।९९।१) मंत्र भी संख्या १ डाल कर पढ़ा! इस सम्बन्ध मे विचार करने के पश्चात् निश्चय हुआ कि उपस्थान के मंत्रों का वही क्रम धर्मार्य सभा को अभीष्ट है जो पञ्च महाविधि का है और वर्तमान मे आर्य जगत् में प्रचलित है। पं. अभिविनय भारथी ने इस मन्तव्य से अपनी असहमति जताई और कहा कि वे सस्कार विधि के क्रम को ही मान्यता देते है, तदनुसार करते भी है तथा 'जातिवेदसे' मन्त्र को भी उपस्थान विधि का प्रथम मन्त्र मानते हैं। इस पर धर्माधिकारी डा. भारतीत ने स्पष्ट किया कि आचार्य विश्वश्रवा इस विषय पर बहुत पहले विचार कर चुके थे। उन्होने संस्कार विधि की मूल प्रति को देख कर स्पष्ट किया था कि 'जातवेदसे' प्रमाण भाग का मन्त्र है न कि विधि भाग का।

(३) संध्या पर विचार के अनन्तर यज्ञ विधि पर विस्तार से विचार आरम्भ हुआ। सार्वदेशिक सभा द्वारा १९६१ में मान्य यज्ञ पद्धति की एक एक विधि पर चर्चा होने के पश्चात् उसे निरपवाद रूप से स्वीकार किया गया। साथ ही कतिपय विशेष बातों की ओर आर्य जनता का ध्यान दिलाना आवश्यक समझा गया —

(१) यज्ञारम्भ के पूर्व प्रार्थना मन्त्र सार्थ पढ़े जाने चाहिए। यथासम्भव महाराज की आज्ञा की अनुपालना करते हुए इन मन्त्रों का अर्थ सहित पाठ एक ही विद्वान् वा बुद्धिमान् पुरुष करे, अन्य उपस्थित स्थिर चित्त होकर उसे सुने और विचारें।

(२) विशिष्ट यज्ञो तथा संस्कारों मे ऋत्विक् वरण तथा संकल्प पाठ अवश्य किया जाये।

(३) स्वस्तिवाचन और शान्तिकरण के मन्त्रो को पढ़ते समय यह ध्यान रक्खें कि ऋग्वेद के मन्त्र द्रुत गति से, यजुर्वेद के मन्त्र मध्यम गति से तथा सामवेद के मन्त्र विलम्बित गति से बोले जायें। अथर्व मंत्र पुनः द्रुत गति से बोले जायें। मन्त्रों के शुद्ध उच्चारण पर ध्यान देना अत्यावश्यक है।

स्वस्तिवाचन के १५वें मंत्र के सुहवं हुवामहे ऽ होमुचं मे ऽ इस चिह्न को 'अ' के रूप में उच्चरित नहीं करना है। इसी प्रकार यज्ञ में दी जाने वाली अष्टाज्याहुतियो के प्रथम मन्त्र 'त्वं नो अग्ने' में प्रयुक्त वह्नितमः को प्रायः वहितमः पढ़ा या बोला जाता है। इसी प्रकार यत्र तत्र मन्त्रों मे आये उकार का उच्चारण न करना, भुवः को भवः बोलना आदि भी उच्चारण के दोष हैं जिन्हें प्रयत्नपूर्वक सुधारा जाना चाहिए। आर्य समाजों के पुरोहित मासिक बैठकें आयोजित करें और मन्त्रोच्चारण को सुधरवावें।

(४) ध्यान रहे 'शान्तिकरण' शुद्ध है न कि शान्ति प्रकरण।

(५) अग्न्याधान उसी विधि से करें जिसका निर्देश संस्कार विधि के सामान्य प्रकरण में है। प्रथम घृत का दीपक जलाना, तत्पश्चात् कपूर से ही अग्न्याधान हो। मन्त्र पूरा बोलने के पश्चात् ही क्रिया होनी चाहिए। उदाहरणतः ओ भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव' इस मन्त्र को पूरा बोलने के पश्चात् ही अग्नि को वेदी मे स्थापित करें। 'ओं देव सवितः' इस मन्त्र को पूरा बोलने के बाद ही वेदी के चारो ओर जल छिड़कें। मन्त्रान्ते. कर्मादि मान्निपात्योऽभिध्यानात् (कात्यायन श्रौत) इस आदेश को स्मरण रक्खा जावे।

(६) यदि घृत तथा शाकल्प के बच जाने पर अतिरिक्त आहुतियां देनी हो तो महाराज के आदेशानुसार विश्वानि देव अथवा गायत्री मन्त्र से ही आहुतियां देवें। मनमानी रीति चलाकर आब्रह्मन् ब्राह्मणों, स्तुतामया वरदा वेदमाता अथवा त्र्यम्बकं यजामहे (इसे महामृत्युञ्जय की संज्ञा भी मनमाने ढंग से दी गई है) आदि मन्त्रो से अवशिष्ट आहुतिया देना ऋषि सम्मत नहीं है। किन्तु किसी विशिष्ट प्रयोजन से किये जाने वाले यज्ञ में आचार्य द्वारा चयनित मन्त्रों का प्रयोग किया जा सकता है।

(७) स्विष्टकृत् आहुतिघृत अथवा भात की ही देनी है। मनमाने ढंग से बाजार से लाई मिठाई, डालडा के बने पकवान, शक्कर गुड़, मखाने आदि का प्रयोग स्विष्टकृत् मे कदापि न करे।

(८) पूर्णाहुति का मंत्र एक ही है ओसर्वं वै पूर्णं स्वाहा। इससे भिन्न जो लोग 'पूर्णादर्विपराणत' (यजुर्वेद ३ ४९) अथवा 'ओ पूर्णमदः पूर्णमिदं' इस उपनिषदो के शान्ति पाठ से पूर्णाहुति का आरम्भ करने हैं वे ऋषि आज्ञा के उल्लघन के महान् दोषी हैं। पूर्णमदः पूर्णमिद तो ईश बृहदारण्यक, श्वेताश्वतर जाल आदि उपनिषदो के आरम्भ एव अन्त मे कुछ भाष्यकारो ने स्वऊहा से शान्तिपाठ के रूप में लिखा है। यह श्लोक न तो ऋषियो की रचना है और न मूल उपनिषद् का ही अंश है।

(९) बृहद् यज्ञ तथा संस्कार की समाप्ति पर महावाम देव्य गान के 'कयानश्चित्र आदि सामवेद के तीन मन्त्रो का गायन अथवा पाठ मात्र भी अवश्य करना चाहिए।

(क्रमशः)

वेद सम्मेलन

आर्य समाज रावतभाटा (कोटा) राज० मे २७ से २९ मार्च तक २१वां वार्षिकोत्सव वेद सम्मेलन के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन श्री के. पी. ओझा ने किया। समारोह मे डा० भवानीलाल भारतीय के अतिरिक्त अनेकों विद्वानों ने जनसमूह को सम्बोधित किया। अन्तिम दिन "आधुनिक सन्दर्भ में वेदो की उपयोगिता" विषय पर एक गोष्ठी का भी आयोजन किया गया।

धर्म बनाम मत-मतान्तर (२)

—डा० ए० बी० आर्य

उदाहरण के लिए जैसे अंग्रेजी भाषा में अंकल का अर्थ चाचा,मामा,ताया आदि निकलते हैं इसी प्रकार संस्कृत मे अश्व का अर्थ घोडा भी है, इन्द्रिया भी है और गो का अर्थ गाय भी है और इन्द्रिया भी हैं। वेद मे कुछेक मन्त्रो द्वारा परमेश्वर ने एक राजा को कर्तव्यो पर प्रकाश डालते हुए आज्ञा दी है कि राजा अश्वमेध व गोमेध यज्ञ करे अर्थात् वह अपनी इन्द्रियो को वश मे रखे, भोग विलास आदि मे न पडा करे तभी वह प्रजा के सामने एक आदर्श स्थापित करते हुए भली प्रकार राज्य कर सकेगा। परन्तु दुर्भाग्य से कुछेक अज्ञानी व तथाकथित पण्डितो ने इसका अर्थ यह लिया कि राजा घोडे अथवा गाय की बलि देकर यज्ञ करे। बहुत काल तक यह अनर्थ, यह पाप वेदो के नाम पर होता रहा, लगभग आज से तीन हजार वर्ष पूर्व महात्मा बुद्ध का जन्म हुआ उन्होने यह सब पाप देखकर तर्क किया कि अगर घोडे व गाय को काट के हवन यज्ञ करने से घोडा व गाय स्वर्ग को जाते है तो वे तथाकथित पण्डित लोग अपने मा बाप को काट के यज्ञ मे डाले तो वे भी स्वर्ग मे चले जाए। संस्कृत भाषासे यदि बुद्ध परिचित होते तो वे स्वय इसका वास्तविक अर्थ लोगो के सामने रखते। इसके विपरीत तथाकथित पण्डितो के यह कहने पर कि यह सबतो वेदो मे लिखा है बुद्ध ने वेदो को गलत कह डाला। परिणामस्वरूप जब राजा अशोक द्वारा बुद्ध की शिक्षाओ का सरकारी खर्च पर देश विदेश मे प्रचार हुआ और अनुयायियो की सख्या मे वृद्धि हुई तो पूरे देश में वैदिक विचारधारा का खण्डन होने लगा, वेद व वैदिक साहित्य के पुस्तकालयो को अग्नि की भेट किया जाने लगा और बुद्ध की बडी-बडी प्रतिमाओ को मन्दिरो मे स्थापित कर पूजा होने लगी। यह पाषाण पूजा अथवा मूर्ति पूजा का सूत्र-पात था। तथाकथित पण्डितो ने जब देखा कि लोग बुद्ध मन्दिरो मे आकर्षित हो रहे हैं, उसकी मूर्तियो की पूजा की जा रही है तो उन्होने भी हजारो लाखो वष पूर्व हुए मर्यादा पुरुषोत्तम राम व योगी राज श्री कृष्ण जी की काल्पनिक मूर्तियो को मन्दिरो मे स्थापित कर पूजना प्रारम्भ कर दिया और लोगो को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए अपने मन्दिरो मे घण्टे घडियाल बजाने आरम्भ कर दिये। बुद्ध व जैन मत के अनुयायी अपने मन्दिरो मे सकन्ध नामक पुस्तको की कथा करते थे तो इन तथाकथित पण्डितो ने भी पुराण नामक पुस्तके लिखकर उनकी कथा अपने मन्दिरो मे करने लगे। उस समय क्योकि यह तथाकथित पण्डित विद्याविहीन थे इन्होने १८ पुराण आदि जो रचे उनमे ऐसी अवैज्ञानिक और बुद्धिविहीन कहानियो का सामवेश किया कि जिसे आज की पीढी पढकर धर्म से दूर होती जा रही हैं और जब हम विदेशो मे फैले मत-मतान्तरो की त्रुटियो की ओर ध्यान दिलाते हैं तो वे हमारा ध्यान पुराणो मे लिखी काल्पनिक और असम्भव बातो की ओर दिलाते है कहा तो एक शुद्ध वैज्ञानिक वेद की विचार धारा और कहा विद्याविहीन पण्डितो द्वारा रचित पुराणो की विचारधारा। सब जानते है कि महर्षि व्यास जी आज से पाच हजार वर्ष पूर्व महाभारत काल मे हुए थे और पुराणो की रचना महाभारत के युद्ध के लगभग २५०० सौ वर्ष बाद हुई। परन्तु तथाकथित पण्डितो ने इन पुराणो के रचियता व्यास जी को लिख डाला ताकि आने वाली पीढिया यह समझकर कि पुराण तो वेदो के विद्वान महर्षि व्यास जी द्वारा कृत है इनकी निन्दा न करे। जब तक विश्व हिन्दू परिषद के नेता व अन्य धार्मिक सस्थाए लोगो को पुन वेदो की ही ओर लौट जाने को नही कहेगी तब तक हम आर्य लोगो का इसी प्रकार दुर्दशा होती रहेगी। देश का बहुसख्यक हिन्दू आज असहाय होकर रह गया है। हिन्दू स्वय को आर्य कहना आरम्भ करे, मूर्ति पूजा जो वेद विरुद्ध है उसका अन्य कुरीतियो की तरह त्याग करे, तो उनका भगवान सर्वव्यापक, निराकर होने के कारण इस देश के कोने कोने में क्या, पूरे ब्रह्माण्ड मे सदैव से ही विद्यमान है। पूरा ब्रह्माण्ड ही उसका मन्दिर है, कौन गिरा सकेगा उसे? परन्तु वोटो की राजनीति देश के कर्णधारो को सच बोलने का साहस नही जुटा पाती। इसके विपरीत धर्म के नाम पर अन्ध-विश्वासो व पाखण्डो को फैलने की खुली छूट को ही धर्मनिरपेक्षता का नाम दिया जा रहा है। क्या अन्धविश्वासो व पाखण्डो को प्रोत्साहन देना जनता को गुमराह करना नही है? इस जुर्म के करने वाले स्वय शान्त है और न जनता को शान्त कर पा रहे हैं और न ही राज्य कर पा रहे हैं। बार-बार चुनाव परन्तु परिणाम वही का वही किसी को कोई चिन्ता नही कि झगडे की जड पर प्रहार किया जाए। मात्र बाहरी लिपा-पोती व दमन चक्र से तूफान से पहले की सी शान्ति इस देश मे छाई रहती है। सरकार व नेता मत-मतान्तरो के इतिहास को जनता के सामने रखे और एक विशुद्ध धर्म का प्रचार करे तो कुछ भला इस देश व विश्व का हो सकता है।

आज से लगभग २३०० वर्ष पूर्व दक्षिण का एक नवयुवक जो वेदो का विद्वान था और शकराचार्य नाम था—वह विचारता है कि पूरे देश मे करोडो वर्ष से चला आ रहा वैदिक मत अलोप हो चुका है उसके स्थान पर कई मत-मतान्तर विशेषकर बौद्ध धर्म देश विदेश में पूरी तरह छा जा चुका है, अज्ञा-नतावश परमपिता परमेश्वर की वेदवाणी का भी तिरस्कार कर दिया गया है और मैं अकेला हू और पूरा विश्व एक ओर मैं क्या करू? बहुत सोच विचार के बाद वह उज्जैन के राजा सुधन्वा के पास जाकर अपनी पूरी बात कहता है तो वह जैन साधुओ से शकराचार्य का शास्त्रार्थ करवाता है। इति-हास गवाह है शकराचार्य की जीत हुई और राजा सुधन्वा ने मित्र राजाओ को पत्र लिखकर सब मन्दिरो व मूर्तियो को तोडने का आदेश दिया। बहुत अनुयायियो ने बुद्ध व जैन की प्रतिमाओ को उस समय जमीन मे गहरे गढडे खोद दबाया जो आजकल भी खुदाई पर निकल आती है भक्तजन कहते हैं कि मूर्ति प्रकट हो गई। शकराचार्य ने मन्दिरो को पाठशालाओ मे परिवर्तित करने का परामर्श दिया। और उनमे वेदो का पठन-पाठन के प्रबन्ध की भी इच्छा प्रकट की। परन्तु एक जैन साधु शकराचार्य का शिष्य बनकर उन्हे विष देकर छोटी आयु मे ही दुनिया से विदाकर उसके समस्त स्वप्नो को मिटा देता है। दूसरी ओर शकराचार्य के अनुयायियो ने भी अलग मत बना लिया और अद्वैतवाद के जाल मे फस गये। इस घटना के पश्चात देश मे बहुत कोलाहल हुआ। राजा भोज ने उस समय धर्म निरपेक्षता का सुझाव दिया कि कोई भी परस्पर न झगडे जिसका जैसे मन करे वैसे ही आस्था रखे। बस फिर क्या था सबने अपने मत का खूब प्रचार किया। परिणाम आज हमारे सामने है धर्म के नाम पर खुले आम अन्धविश्वास व पाखण्डों के प्रचार का ही बोल-बाला है सब ओर आज से लगभग १५० वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द जी ने भी समस्त विश्व को जागृत करने का प्रयास किया विशेषकर आर्य जाति को परन्तु उन्हे भी विष देकर वापिस भेज दिया गया। भला एक सन्यासी को मूर्ति पूजा आदि की कुरीतियो के विरुद्ध आवाज उठाने मे क्या स्वार्थ हो सकता था? आज हम थोडा विचारना होगा और साहस बटोर कर मानना होगा कि हम आर्य है वद हमारी धर्म पुस्तक है ओ३म् ही हमारा इष्ट देव है और मूर्ति पूजा एव पुराण हमारी धरोहर नही है। सर्वन्तर्यामी, सर्वव्यापक, एव निराकार परमात्मा हम सबको सद्बुद्धि व साहस प्रदान करे ताकि इस देश का खोया गौरवशाली इतिहास पुन लौट सके। अगर हम तथाकथित धर्मस्थलो के निर्माण की जिद छोड ध्यान के केन्द्र खोले और सत्य को अपना कर आगे बढे तो हमारे नेतागण अपने उद्देश्य मे अधिक कारगर ढग से सफल हो सकेगे।

एक नारी–स्थितियां अनेक

भगवान देव "चैतन्य"

आज जब कभी भी पुरुष के साथ नारी की क्षमता की बात पढ़ने व सुनने को मिलती है तो मुझे बहुत ही आश्चर्य होता है। वास्तव में इस प्रकार की तुलनाओं से आपस में जो प्रेम, सौहार्द और सेवाका वातावरण बना होता है उसमें प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में एक कटुता सी आ जाती है। आज अधिकतर गृहस्थियों की यही स्थिति है जहा प्रत्येक कार्य को एक स्त्री या पुरुष के अहंकार की भूमिका या स्थिति को लेकर आंका जाता है। इसलिए टकराव का होना स्वाभाविक है। आज नारी समता की बात करती है मगर वह यह भूल गई है कि वास्तव मे वह तो पुरुष से बहुत महान है। वेदादि सत्य शास्त्रो में नारी की महानता को देखा जा सकता है। वहा नारी को ब्रह्मा की संज्ञा दी है मगर जिन गुणों और गरिमाओ को मध्य ये नजर रख कर उसे इतना महान पद दिया गया था। आज उन गुणों का अभाव सा हो गया है। नारी भी पुरुष के साथ-साथ गुणों के आधार पर अपनी स्थिति से नीचे गिरी है इसीलिए उसे पुरुष के साथ समता स्थापित करने के लिए नारा देकर बाजार में आना पड़ा है। इसके विपरीत यदि अपने गुणो को वह पुन: धारण कर ले तो स्वत: ही वह पुरुष से आज भी महान बहुत महान है। नारी क्यो और कैसे इस स्थिति पर पहुंची कि उसे पुरुष के बराबर होने के लिए भी संघर्ष और होड़ की पंक्ति में खड़ा होना पड़ा इसे हम अतीत के परिप्रेक्ष्य मे इस प्रकार देख सकते हैं।

जैसा कि ऊपर बताया गया कि वैदिक काल में नारी अपनी गरिमा के उच्चशिखर पर थी। उनका मान सम्मान होता था। उसे समाज में बहुत ऊंचा स्थान प्राप्त था। यही नहीं वे वेद मन्त्रो की द्रष्टा थी। भारती, मदालसा, लोपामुद्रा आदि अनेक नारियां ज्ञान गरिमा की प्रत्यक्ष उदाहरण रही हैं। उस काल में नारियां जैसा चाहती थीं अपनी सन्तानो को बनाने की सामर्थ्य रखती थीं। विद्वत समाज मे उनके लिए विशेष स्थान था। कालान्तर में विशेष रूप से महाभारत काल तथा उसके तुरन्त बाद का काल जहां हमारी सामाजिक, राजनैतिक और पारिवारिक पतन का काल था वहीं पर नारी की भी पतन की गहराईयों की ओर मुड़ गई थी। सामाजिक परिस्थितियो ने इस प्रकार से मोड़ लिया कि नारी पुरुष के न केवल पूर्णरूप से आश्रित हो गई बल्कि वह उसके हाथो का खिलौना मात्र बनकर रह गई। मुसलमानों के आने के बाद तो नारी केवल और केवल मात्र भोग की सामग्री ही समझी जाने लगी। तत्कालीन सन्तों और कवियो का दृष्टिकोण भी नारी के अनुकूल नहीं रहा और उन्होने भी नारी को इस स्थिति से ऊपर उठाने के स्थान पर उसे तिरस्कृत ही किया। कबीर ने नारी के बारे मे बहुत सी ऐसी बातें लिखी हैं जो न केवल अविश्वसनीय हैं बल्कि बहुत ही आपत्तिजनक भी है। उन्होने नारी को माया, विकार और अत्यधिक तिरस्कार करने योग्य घोषित किया। उन्हें नारी का और कोई रूप दिखाई ही नही दिया। उनकी दृष्टि मे नारी एक ऐसी बीमारी है जिसकी छाया मात्र से ही भुजंग मर जाता है। यही नहीं वे तो कहते हैं:—

नारी तो हम भी करी किया नहीं विचार।
जब जाना परिहरि नारी बड़ा विकार॥

यही नहीं कवि का काव्य अनेक ऐसी ही भावनाओं से परिपूर्ण है जो नारी के समूचे व्यक्तित्व का मूल्यांकन न करके एकांकी पक्ष को ही देखता है। कई और कवियो ने भी नारी के प्रति इसी प्रकार के विचार प्रकट किए हैं। यहां तक कि महाकवि तुलसी भी कह उठते हैं:—

ढोल गवार शूद्र पशु नारी।
ये सब ताड़न के अधिकारी॥

यही नही उन्होंने तो अपने रामचरित्र मे ऐसे ऐसे फतवे दिए है कि नारी के सुधार की भी कोई संभावनाएं नहीं हैं।

राजपूत काल मे नारियो की ओर भी अधिक दयनीय दशा हो गई। यह ठीक है कि उस काल में कुछ एक ऐसी वीरांगनाएं हुई हैं जो अपनी बहादुरी और जिन्दादिली के लिए एक इतिहास बन गई हैं मगर जहा तक समूची नारी जाति का सम्बन्ध था उसकी बहुत ही अधिक दयनीय स्थिति थी। यहा तक कि बेटी के जन्म तक को भी बहुत ही बुरी दृष्टि से देखा जाता था। बल्कि कई बार तो स्वयं अपने हाथो से उन्हें पैदा होते ही मार दिया जाता था।

नारी के पतन का यह सिलसिला रुका नही बल्कि और भी अधिक गहराता गया और वर्तमान काल तक पहुंचते पहुंचते नारी की स्थिति केवल यह रह गई कि:—

अबला नारी तेरी बस यही कहानी।
आंचल में है दूध और आखो में पानी॥

भारतीय नव जागरण काल ने जहा स्वतन्त्रता और सामाजिक उन्नति के नए द्वार खोले वहीं नारी के भाग्य के सदियो से बन्द बड़े द्वार भी मानो खुल पड़े। इस काल मे कुछेक ऐसे महापुरुष हुए जिन्होने न केवल स्वतन्त्रता के दरवाजे खटखटाए बल्कि समाज सुधार के चतुर्दिक प्रयास प्रारम्भ किए। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी इस समाज सुधारको में सबसे प्रमुख रहे क्योंकि उनका कार्यक्षेत्र बहुआयामी था। जहा तक नारी जागरण की बात है उसके दरवाजो को सतीप्रथा रोकने के रूप मे श्री राजा राममोहनराय ने खटखटाया तो जरूर था मगर इस दिशा मे भी दयानन्द जी ने ही ठोस कार्य किया क्योंकि उन्होने इस समस्या के मूल मे जाकर इसका समाधान निकाला। शिक्षा के अभाव में ही नारी अब तक पिसती चली आ रही थी।

इसलिए दयानन्द ने सबसे पहले नारी के शिक्षित होने पर ही बल दिया। इसके लिए हालांकि उनका समाज के तथाकथित ठेकेदारो ने बहुत ही बड़ा विरोध किया मगर उन्होने शिक्षा का प्रचार प्रसार करके नारी की चतुर्दिक उन्नति के दरवाजे खोल दिए। उन्होंने मनु महाराज के शब्दो मे इस बात

(शेष पृष्ठ १० पर)

सर्वं खल्विदं ब्रह्म

—डा० धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री (जम्मू)

अद्वैतवादी इस छान्दोग्योपनिषद (३।१४।१) के सर्व खल्विद ब्रह्म। तज्जलानिति शान्त उपासीत। वाक्य से अद्वैत सिद्ध करते है तथा इसे सगुण ब्रह्म की उपासना का प्रकरण मानते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस वाक्य से अद्वैत का खण्डन किया है। उन्होने मञ्चा क्रोशन्ति ।। मचान पुकारते है इस वाक्य का उदाहरण देकर कहा है कि जसे इस वाक्य मे मचान जड होने से कभी नही पुकार सकते अत अर्थ लेते हैं कि मञ्च के ऊपर स्थित मनुष्य पकारते हैं इसी प्रकार सब कुछ यह निश्चय से ब्रह्म है इसका अर्थ भी यह करना चाहिए कि सब कुछ ब्रह्म मे स्थित है।

तज्जलान का अर्थ अद्वैतवादी भी यह करने है—तत–ज ल अन तत–ल उसी मे लीन हो जाता हैं। तत अन उसी मे चेष्टा करता है स्थित रहता है। तीना कालो मे जगत ब्रह्म से पृथक नही आत्म रूप से अवशिष्ट यह सम्पूर्ण जगत ब्रह्म ही है।

यहा तक तो अद्वैतवादी व्याख्याकारो मे और त्रैतवादी आचार्य महर्षि दयानन्द की मान्यता मे कोई भेद नही है कि ब्रह्म से ही जगत उत्पन्न होता है। उसी मे लीन हो जाता है और उसी मे स्थित होकर चेष्टा करता है।

भेद यहा उपस्थित होता है जब यह वाक्य कहा जाता है कि आत्म रूप से अवशिष्ट यह सम्पूर्ण जगत ब्रह्म ही है।

यहा अद्वैतवादी ब्रह्म और प्रकृति इन दो तत्वो को तो स्वीकार करता है परन्तु जीवात्मा नामक तीसरे नित्य तत्व को स्वीकार नही करता है। जबकि इस वाक्य मे जीवात्मा का स्पष्ट सकेत है। देखिए अन शब्द प्राणी जगत के लिए आया है। चेष्टा वही करेगा जो चेतन होगा। ब्रह्म मे प्राणी चेष्टा करते हैं। ऐसा कहने से स्पष्ट है कि ब्रह्म पृथक है जो सष्टि का कर्ता धर्ता और सहर्ता है और चेष्टा करने वाली जीवात्माए अलग हैं। इसी वाक्य मे उपासीत शब्द आया है। जिसका अर्थ है उपासना करे। उपासना कौन करे और किसकी करे स्पष्ट है शान्त होकर जीवात्मा उस ब्रह्म की उपासना करे जो सृष्टि का कर्ता धर्ता और सहर्ता है।

अद्वैतवादी उपास्य और उपासक दोनो को एक चेतन सत्ता मानकर भ्रम मे पड हुए है। एक चेतन तत्व मे उपास्य उपासक भाव सम्भव ही नही है दो चेतन तत्व मानने पर ही यह सम्भव है कि उपास्य आनन्द स्वरूप ब्रह्म है और उस ब्रह्म के आनन्द को चाहने वाले जीवात्मा उपासक है।

इस वाक्य मे स्पष्ट त्रैतवाद सिद्ध हो रहा है। महर्षि ने ब्रह्म और जीवात्मा के परस्पर सम्बन्ध के विषत मे लिखा है कि ब्रह्म अमृत पिता है तो जीवात्मा अमृत पुत्र है। ब्रह्म व्यापक है तो जीवात्मा व्याप्य है अर्थात ब्रह्म जीवात्मा मे व्यापक है। ब्रह्म उपास्य है तो जीवात्मा उपासक है।

आईये अब हम दूसरे प्रकार से इस वाक्य की व्याख्या कर। उपनिषद की भाषा मे ब्रह्म शब्द महान अर्थ मे आया है। प्रश्न उठता है कि क्या क्या महान है? उत्तर मे उपनिषद कहती हैं—

ब्रह्म यद्योकार प्रश्न ५।२ मनो ब्रह्म तैत्तिरीय भृगुवल्ली ४ तपोब्रह्म ति वही आकाशो ब्रह्म छान्दोग्य० ३।१४ आदित्यो ब्रह्म वही ३।१९ प्राणो ब्रह्म वही ४।५ वाच ब्रह्म ति वही ७।१ चित्त ब्रह्म ति वही ७।५।३ अन्न ब्रह्म नि वही ७।९।२ अन्नो ब्रह्म वही ७।१०।२ वाग व ब्रह्म ति बृहदा० ४।१।२ चक्षुर्वै ब्रह्म वही ४।१।४ हृदय व ब्रह्म ति वही ४।४।५ विद्युत ब्रह्म ति वही ५।७।१।

ये सभी त व ब्रह्म अर्थात महान है। इन सब ब्रह्म अर्थात महान तत्वो को श्वेताश्वतरोपनिषद मे तीन भागो मे विभाजित करके कहा है—

भोक्ता भोग्य प्रेरितार च मत्वा सर्व प्रोक्त त्रिविध ब्रह्ममेतत।

भोक्ता जीवात्मा भोग्य प्रकृति और इन दोनो का प्रेरक परमात्मा ये तीनो ही ब्रह्म अर्थात महान हैं।

अब हम सर्व खल्विद ब्रह्म का अर्थ कर कि इदम यह सवम सम्पूर्ण जगत खलु निश्चय से ब्रह्म महान है। हा इसमे (तत) उस परमात्मा से यह सष्टि (ज) उत्पन्न हुई है (ल) उसी मे प्रलयकाल मे लीन हो जाती है (अन) उसी मे सब प्राणी चेष्टा करते है। उसी पर ब्रह्म की शान्त भाव से जीवात्मा तू उपासना कर।

वेद मे इस समस्या का हल इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है—

यो भूत च भव्य च सर्व यश्चाधितिष्ठति।
स्वर्यस्य च केवल तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नम ।। अथर्व० १०।८।१

अर्थात जो भूतकाल और भविष्यत काल के जगत को अपने भीतर रखकर स्थित है जो केवल (वही) आनन्द स्वरूप है। उस ज्येष्ठ ब्रह्म के लिए नमस्कार है

यहा ज्येष्ठ ब्रह्म शब्द साभिप्राय प्रयुक्त है। ब्रह्म अर्थात महान तत्व तो सष्टि मे अनेक है परन्तु वह परमात्मा ज्येष्ठ ब्रह्म है उससे बडा कोई नही है। उसी को नमस्कार करना चाहिए

भाव यह निकला कि इस सष्टि मे सभी तत्व महान है परन्तु सबसे महान परमात्मा है। हम उसी की उपासना करनी चाहिए। उसी को नमस्कार करना चाहिए।

ज्येष्ठ ब्रह्म तभी कहा जा सकता है जब उससे न्यून महान तत्व भी स्वीकार किये जायगे। जीवात्मा भी महान है प्रकृति भी महान है परन्तु परमात्मा इन दोनो से भी महान है। सर्व खल्विद ब्रह्म मे इस वाक्य से त्रैतवाद सिद्ध है अद्वैतवाद सिद्ध नही होता।

आर्य नेता का निधन

आर्य समाज आर्यमगढ के कर्मठ कार्यकर्ता एव पूर्वप्रधान तथा वर्तमान मे भवन निर्माण समिति के सयोजक श्री रामप्रसाद आर्य निवासी पुरानी कोतवाली आर्यमगढ का निधन दिनाक १०।४।९३ दिन शनिवार को सायकाल वाराणसी मे हो गया। दाह सस्कार ११।४।९३ दिन रविवार को आर्यमगढ मे सम्पन्न हुआ।

दिनाक ११।४।९३ को आर्य समाज के साप्ताहिक अधिवेशन मे शोक व्यक्त किया गया तथा परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना की गयी कि दिवगत आत्मा को चिरशान्ति व शोक सतप्त परिवार को इस असह्य कष्ट को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—राजीव कुमार आर्य

सावधान

स्वास्थ्य का शत्रु है धूम्रपान ।
इसे बन्द करो बनो नेक इन्सान ॥

धूम्रपान करना दुर्भाग्य और मनहूसता की निशानी है। धूम्रपान करना अपने पांव पर कुल्हाड़ी मारना है। धूम्रपान से जहा धन का नाश होता है वहा शरीर की नस नाडिया दुर्बल होती है। वायुमंडल दूषित होता है। बल बुद्धि के घट जाने से काम करने की क्षमता नही रहती। जरा सा परिश्रम करने पर थकान आ जाती है। धूम्रपान से शरीर मे निम्नलिखित हानिया होती हैं —

(१) सर्वप्रथम होटो को खराब करता है।

(२) मुह मे दुर्गन्ध पैदा करता है।

(३) अन्दर जाकर फफडो मे कार्बन जमने के कारण खासी दमा टीबी और कसर जैसे भयकर रोग हो जाते हैं।

(४) फेफड़ों की खराबी के कारण हृदय पर कुप्रभाव पडता है। हाड अटेक होने का भय रहता है।

(५) लाल खून को काला कर देता है और एनिमिया (रक्त अल्पता) जैसे रोग हो जाते हैं। चेहरे की सुन्दरता भी नष्ट हो जाती है।

(६) लीवर (जिगर) के पाचक रस को शुष्क (खुश्क) करता है जिसके कारण क्रिया बिगड जाती है और भोजन हजम करना कठिन हो जाता है। पेट म गैस पैदा होने लगती है।

(७) शरीर के कफ को जाम करता है जिसके कारण नस नाडियो मे खिचाव होने लगता है। मानसिक सन्तुलन नही रहता। शरीर पर झुरिया पडने लगती है।

(८) कानो मे सुनने की शक्ति को क्षीण करके बहरापन आने लगता है।

(९) आखो की रोशनी को कम करके अन्धा बनाता है।

(१०) गुर्दों पर भी धूम्रपान का कुप्रभाव पडता है।

(११) धूम्रपान की हानियो को विस्तार से लिखा जाये तो एक मोटी पुस्तक बन जाती है। यहा साराश मे इतना ही बताते है कि तम्बाकू मे निकोटिन नाम का जो भयकर शक्तिशाली विष है उसे इन्जेक्शन द्वारा यदि रक्त सचार मे प्रवेश कर दिया जावे तो मृत्यु हो जाती है। आप स्वस्थ रह कर खुशी से जीना चाहते हो तो आज से अभी से धूम्रपान छोड दो।

धन्यवाद! देवराज आर्य मित्र वैद्य विशारद
आर्य आश्रम अ दश नगर डी ब्लाक
मलेरना रोड बल्लबगढ (१२१००४)

पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी

(पृष्ठ ३ का शेष)

शमशान भूमि मे एक विशाल जन-समूह की उपस्थिति मे वैदिक रीति से उनकी अन्त्येष्टि की गई।

पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी आर्य समाज के प्रकाश स्तम्भ हैं। २६ अप्रैल को उनकी जयन्ती के अवसर पर प्रतिवर्ष सभाओ गोष्ठियो व कार्यक्रमो द्वारा उनके गौरवशाली व्यक्तित्व व कृतित्व का स्मरण कर उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए। इस तिथि के आस पास आर्य समाज के रविवारीय सतसग, दैनिक यज्ञ, उत्सवो आदि मे भी पंडित जी पर विशेष व्याख्यान कराये जाने चाहिए। वे जातिया मिट जाती है जो देश व धर्म पर बलिदान होने वाले अपने शहीदो को भूल जाती है। अत प० गुरुदत्त जी का पुण्य स्मरण कर, उनसे प्रेरणा लें और अधिक सक्रिय होकर सच्चे मन से हमे आर्य समाज की सेवा करते रहना चाहिए।

अद्भुत मनीषी को कोटि-कोटि नमन!

—विमल कान्त शर्मा

पुस्तक समीक्षा

श्रीमद्भागवत् याथार्थ्यम्

लेखक—श्री राजन स्वामी
विरजानन्द आश्रम रतनपुरी जि० मुजफ्फर नगर (उ० प्र०)
मूल्य २० रुपये

प्रस्तुत पुस्तक श्रीमद भागवत की समीक्षा मे लिखी गयी अनुपम रचना है। श्रीमद भागवत के सम्बन्ध मे जो भ्रान्तिया फैली हुयी हैं उनका निराकरण बडी योग्यता और विद्वता से इस ग्रन्थ मे किया गया है।

आर्य सिद्धान्तो मे रुचि रखने वाले महानुभाव इसे अवश्य पढ़ें इस पुस्तक से श्रीमद भागवत का यथार्थ स्वरूप सामने आ जाता है।

—सम्पादक

आर्य समाजो के निर्वाचन

—आर्य समाज सुल्तानपुर, श्री बाबूलाल जी आर्य प्रधान श्री राम चन्द्र सिंह आर्य मंत्री श्रीराम चन्द्र मिश्र कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज चम्शोली श्री हरि ओम जी आर्य प्रधान, श्री राम कुमार शर्मा मन्त्री श्री ज्ञानप्रकाश आर्य कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज बसव कल्याण, श्री रामानन्द जी लाड प्रधान श्री माणिक राव लाड मन्त्री श्री दिलीप कुमार महेन्द्र कर कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज लखीमपुर खीरी श्री सुशील कुमार जी प्रधान श्री आनन्द स्वरूप जी मन्त्री श्री रामजनम बरनवाल कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज महावीर नगर नई दिल्ली श्री खमचन्द्र चावला प्रधान श्री भीमसैन मन्त्री श्री बिशनदास कोषाध्यक्ष।

स्थापना शताब्दी समारोह

आर्य समाज लखीमपुर खीरी का स्थापना शताब्दी समारोह १९ से २२ नवम्बर ९३ तक समारोहपूर्वक मनाया जायेगा। इसमे राष्ट्रीय स्तर के अनेको विद्वान तथा नेता पधारेंगे। इस अवसर पर भव्य यज्ञ के अतिरिक्त अनेको सम्मेलनो का आयोजन भी किया जायेगा।

एक नारी-स्थितियां अनेक

(पृष्ठ ७ का शेष)

की घोषणा की कि 'यत्र नारयस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।' अर्थात जहा नारियो का आदर सम्मान होता है वहा पर देवता गण निवास करते हैं और जहा इनका तिरस्कार होता है वहा से सभी सुख नष्ट हो जाते हैं। उस काल मे जब नारी का प्रत्येक क्षेत्र मे घोर विरोध हो रहा था इस प्रकार की घोषणा करना अप्रत्याशित ही था मगर महर्षि दयानन्द और उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज अपनी समग्र शक्ति से नारी के उत्थान मे लग गया। पहले जिन लोगो ने विरोध किया था वे भी राह पर आ गए और नारी के लिए शिक्षा का क्षेत्र खुल गया। आज नारी बडे से बडे पद को शोभायमान कर रही है तथा उसका प्रत्येक स्थान पर आदर और सम्मान है मगर नारी आज भी यदि पतित है या पद दलित है तो इसकी वह स्वय भी कुछ हद तक कारण है क्योकि वह आज नारी की प्राचीन ज्ञान गरिमा से बहुत ही नीचे उतर गई है। वह पाश्चात्य रग मे रग कर अपने महान होने का दिखावा भर कर रही है। यदि वह वास्तव मे नारी के गुणो को ग्रहण करके अपनी गरिमा को स्थापित करने का प्रयास करे तो वह आज भी न केवल पुरुष के बराबर है वल्कि पुरुष से कही उच्च स्थान पर है।

नारी को अपनी गरिमा स्थापित करने के लिए न तो नारो की आवश्यकता है और न ही क्लबो और पार्टियो मे नग्न होकर कैबरे और ब्रेक डास करने की। वह आज भी यदि महान बन सकती है तो केवल और केवल मात्र अपने गुणो के आधार पर ही। इसी ओर आज नारी को सबसे अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। उसे इस बात को भी नही भूलना चाहिए कि उसका मुख्य कार्यक्षेत्र चौराहे नही बल्कि घर ही है।

१९०/एस ३ सुन्दर नगर
(हि० प्र०)

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का जन्मोत्सव सम्पन्न

हाडोती आर्य उप प्रतिनिधि सभा कोटा के तत्वावधान मे आर्य समाज तलवण्डी मे कोटा क्षेत्र की आर्य समाजो द्वारा सामूहिक रूप से मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम चन्द्र जी का जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर अनेको विद्वानो ने श्रीराम के पावन चरित्र का बखान करते हुये कहा कि श्रीराम को ईश्वर नहीं महापुरुष मानना चाहिये।

—महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास जोधपुर मे रामनवमी का पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर महायज्ञ का आयोजन किया गया। श्री श्रीचाऊ लाल जी आसेरी ने यज्ञ के कार्य का सम्पादन किया। पडित धर्मेन्द्र जी स्नातक ने भगवान राम के जीवन की विशेषताओ पर प्रकाश डालते हुये उनके गुणो के अनुकरण करने पर बल दिया।

वेद सप्ताह

आर्य समाज नया नगल जि० रोपड मे २४ मार्च से १ अप्रैल तक विशेष वेद प्रचार सप्ताह समारोह पूवक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर विशाल गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया। प्रतिदिन प्रात काल का कार्यक्रम आर्य समाज मन्दिर तथा सायकाल का कार्यक्रम पारिवारिक सतसग के रूप मे विभिन्न व्यक्तियो के घरो मे सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम के प्रमुख प्रवक्ता आचार्य सत्यप्रिय शास्त्री के वेद सम्बन्धी व्याख्यानो को श्रोताओ ने अत्यधिक पसन्द किया। समारोह मे अनेको अन्य विद्वानो ने अपने विचार रखे।

महिला जागृति शिविर सम्पन्न

अकोला। दयानन्द आर्य विद्यालय मे २२ मार्च से ३० मार्च तक ग्रामीण महिलाओ के लिये जन जागृति शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर मे 'स्त्रियो की विभिन्न समस्यायें एव उसे दूर करने का प्रयास' विषय पर अनेको गणमान्य अतिथियो ने अपने विचार प्रकट किये। शिविर का सचालन कु० आर्य प्रभा काले सचटिका ने किया।

बात अच्छी है

'सरल' चुप होके ही जीलें तो समझो बात अच्छी है,
जगत के आंसू ही पीलें तो समझो बात अच्छी है। 'सरल'
किसी की हां मे हां करने कहीं आना नहीं अच्छा,
सुनें जो दिल में ही सीलें तो समझो बात अच्छी है।'सरल'
भला हो या बुरा कुछ भी उसे हम दिल में ही रक्खें,
नसीहत अपने से ही लें तो समझो बात अच्छी है। 'सरल'
कहां क्या हो रहा है उसको समझें दूर ही रहकर
नजर से हम न हों ढीले तो समझो बात अच्छी है। 'सरल'
सताने लूटने में ही लगे हैं आज के मानव
न फेंके कीच में ढेले तो समझो बात अच्छी है। 'सरल'
परस्पर एक हो जायें करें उपकार ही सबका
सदा हम सत्य ही बोलें तो समझो बात अच्छी है। 'सरल'
रचयिता—रञ्जनलाल श्रीवास्तव (कोषाध्यक्ष) 'सरल'
आर्य समाज स्टेशन रोड बिन्दकी जनपद-फतेहपुर

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज सिलीगुड़ी— का वार्षिकोत्सव २६ से २८ फरवरी तक समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर राष्ट्र रक्षा, महिला, वेद तथा युवा सम्मेलनो का आयोजन सफलता पूर्वक किया गया। समारोह में प्रो० उमाकान्त उपाध्याय, स्वामी ब्रह्मदत्त जी, पं० पीताम्बर शर्मा तथा श्री गुलाब सिंह राघव सहित अनेकों विद्वानों ने अपने ओजस्वी भाषणों तथा भजनोपदेशों से जन समूह को लाभान्वित किया। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

—वानप्रस्थाश्रम आर्य समाज परली वैजनाथ जि० बीड़—का द्वितीय वार्षिकोत्सव २४ मार्च को सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वानों तथा भजनोपदेशको ने पधार कर समारोह को सफल बनाया। श्रोताओं ने कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

—आर्य समाज सीतापुर ने अपना ६३ वा वार्षिकोत्सव २६ से २८ फरवरी तक समारोह पूर्वक मनाया। इस अवसर पर पं० जयप्रकाश जी श्री भूपेन्द्र नाथ पाल पं० इन्द्रदेव सहित अनेको विद्वानो ने अपने विचार व्यक्त किये तथा श्रोताओं को वैदिक मन्तव्यों का ज्ञान कराया। समारोह अत्यन्त सफल रहा।

—आर्य समाज चन्दैसा का १५वां वार्षिकोत्सव २६ से २८ फरवरी तक विशेष उमंग तथा धूमधाम से सम्पन्न हुआ। समारोह का उदघाटन श्री महिपाल जी एड० ने सप्रेम ध्वज फहराकर किया। कन्या गुरुकुल हाथरस की कन्याओ द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम का जनसमूह पर अच्छा प्रभाव पड़ा। २८ फरवरी को आर्यवीरों द्वारा व्यायाम प्रदर्शन किया गया जिसकी जनसमूह ने अत्यन्त सराहना की।

—आर्य समाज सैक्टर २२ए चण्डीगढ़ का ३० वां वार्षिकोत्सव १३ से १५ मार्च तक बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर ९-३-९३ से वेद कथा का भी आयोजन किया गया। "पुनर्जन्म का वैज्ञानिक आधार", वेद गोष्ठी, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन तथा आर्य महिला सम्मेलनो सहित अनेको कार्यक्रम सम्पन्न हुये।

—आर्य गुरुकुल विद्यार्थी परिषद का वार्षिक सम्मेलन अत्यन्त उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में गुरुकुल के विद्यार्थियो द्वारा अनेको मनोहारी कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। इस अवसर पर श्रेष्ठ छात्रो को कुलपति श्री स्वामी देवानन्द जी द्वारा पुस्तकें एवं चादर आदि से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में आर्य जगत के अनेकों विद्वानों एवं भजनोपदेशको ने भाग लिया।

आर्य उप प्रतिनिधि सभा दातागंज बदायूं का प्रथम वार्षिकोत्सव २३ से २५ मई १९९३ तक जू० हा० स्कूल दातागंज के प्रांगण में समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रतिष्ठित विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। समारोह के अन्तर्गत प्रथम दिवस विशाल शोभा यात्रा तथा विशेष सम्मेलनों के अतिरिक्त शिवदत्त ब्रह्मचारी द्वारा शक्ति प्रदर्शन का कार्यक्रम भी सम्पन्न होगा।

—आर्य समाज सरदार पटेल मार्ग खलासी लाइन सहारनपुर का ३९ वा वार्षिकोत्सव १६ से १८ मई तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत के ख्याति प्राप्त महात्मा सन्यासी तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

श्रीमद् वाल्मीकीय रामायण कथा का आयोजन

दिल्ली। स्थानीय लक्ष्मी नगर स्थित उमा पुस्तकालय एवं वाचनालय के तत्वावधान में गत दिनों चार दिवसीय श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण कथा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री भूदेव साहित्याचार्य तथा पं. तुलसी राम जी शर्मा ने श्रीराम के जीवन से प्रेरणा लेकर उनके गुणों को अपने जीवन में आत्मसात करने की अपील की। आर्य समाज आनन्द विहार के सक्रिय कार्यकर्ता श्री रवीन्द्र मेहता तथा आर्य समाज शकरपुर के प्रचार मन्त्री श्री वेद प्रकाश आर्य छर्रा वाले के सहयोग से उक्त कार्यक्रम श्री ब्रह्मदेव जी सक्सैना निदेशक उमा पुस्तकालय एवं वाचनालय के संयोजकत्व में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

राष्ट्रभृत यज्ञ का समापन

संभाजीनगर (औरंगाबाद) आर्य समाज का ५३ वां वार्षिकोत्सव दिनांक २८ मार्च से १ अप्रैल तक सम्पन्न हुआ, जिसमें यजुर्वेद पारायण यज्ञ एवम् राष्ट्रभृत यज्ञ भी सम्पन्न हुआ। इस यज्ञ का प्रारम्भ प्रसिद्ध उद्योगपति श्री जितमल जी बगड़िया की अध्यक्षता में व पू. आचार्य श्री सुभाषचन्द्रजी शास्त्री आचार्य गुरुकुल रामलिंग एडशी के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्यामलालजी आर्य के सुमधुर भजन तथा आचार्य सुभाष जी के प्रवचनों से श्रोताओं ने लाभ उठाया। समारोह के अन्तिम दिन सभी मत सम्प्रदायो के आचार्यों का स्वागत किया गया।

आर्य समाज मोती बाग का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज मोतीबाग नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव एवं स्थापना दिवस १० से ११ अप्रैल तक धूमधाम से मनाया गया इस अवसर पर आर्य जगत के प्रतिष्ठित विद्वानो तथा भजनोपदेशकों ने अपने प्रवचनो से श्रोताओ को लाभान्वित किया। कार्यक्रम में डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल बसंत विहार के बच्चों ने मनोहारी गीत प्रस्तुत किये। समारोह मे लगभग २० व्यक्तियों को आर्य समाज की सेवाओ के लिए सम्मानित किया गया जिनमे वृद्ध, युवा व महिलायें थीं। ऋषि लंगर के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

आबू रोड में आर्य समाज का गठन

आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर नगर आर्य समाज आबू रोड की स्थापना बड़ी उमंग व उत्साह से की गयी। इस कार्य मे डा० एम. एल. आर्य ने सराहनीय योगदान प्रदान किया। इस अवसर पर नगर में प्रभातफेरी निकाली गयी तथा शाम को ध्वजारोहण तथा भजन प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया। क्षेत्रीय जनता ने आर्य समाज के प्रचार तथा प्रसार में तन मन धन से सहयोग देने का आश्वासन दिया।

अलीगढ़ के ग्रामों में वेद प्रचार

आर्यवीर दल अलीगढ़ के सौजन्य से श्री रामौतार जी आर्य एवं सोमदेव जी द्वारा नगर के ग्रामीण क्षेत्रो में आर्य वीर दल के प्रशिक्षण शिविर लगाकर वेद प्रचार का कार्य किया जा रहा है। ग्रामीणो में इस कार्यक्रम का अच्छा प्रभाव पड़ रहा है। बहुत से युवको ने मांस, शराब, बीड़ी आदि न पीने की शपथ ग्रहण करके यज्ञोपवीत धारण किये हैं। जिला सचालक श्री रघुराज सिंह आर्य अथक परिश्रम करके इस कार्य को सम्पन्न करा रहे हैं।

आर्य समाज जामनगर में शुद्धि कार्य

आर्य समाज जामनगर के अधिकारियों ने क्रमशः २१ मार्च तथा १ अप्रैल को दो मुस्लिम महिलाओं को शुद्ध कर वैदिक धर्म मे दीक्षित किया। इस अवसर पर आर्य समाज के अधिकारी गण तथा अनेको गणमान्य नागरिको ने महिलाओ के उज्जवल भविष्य की कामना की।

प्रवेश

सर्व आर्य सज्जनो को सूचित किया जाता है कि आपके बच्चो के उज्ज्वल भविष्य हेतु आर्ष गुरुकुल आचार्यकुल ऋतस्थली मे प्रवेश प्रारम्भ है। कम से कम कक्षा ५ उत्तीर्ण स्वस्थ, मेधावी, अनुशासन प्रिय विद्यार्थी ही प्रवेश ले सकेंगे। अपनी समस्याओं एवं आवश्यक जानकारी हेतु शीघ्र सम्पर्क करें। बाहर से आने वाले सज्जन आर्य समाज नई मण्डी (निकट रेलवे स्टेशन) मे रात्रि विश्राम करके आचार्य कुल आ सकते हैं। सचालक

आचार्यकुल ऋतस्थली पचेन्डा खुर्द
पत्रालय-मेघाखेड़ी, मुजफ्फरनगर-२५१००१ (उ. प्र.)

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०४६/९३   सार्वदेशिक साप्ताहिक   (२५ १९९३)   बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (C) ९३
R N 626/57   Licensed to post without prepayment License No U (C) 93 Post in N D P S O on   29-30 4-1993

छत्तीसगढ़ क्षेत्र मे आर्य वीर दल का गठन

अत्यन्त प्रसन्नता के साथ सूचित किया जाता है कि २४ ३ ९३ को आर्यसमाज स्थापना दिवस के अवसर पर स्वामी परमानन्द सरस्वती जी की अध्यक्षता मे दयानन्द वैदिक मिशन रायगढ (म०प्र०) मे एक विशाल सभा आयोजित की गयी जिसमे वर्तमान परिस्थितियो को देखते हुए छत्तीसगढ मे आर्य वीर दल के प्रचार हेतु एव ऋषि दयानन्द के पावन सन्देशो के प्रचारार्थ छत्तीसगढ आर्य वीर दल का गठन किया गया जिसमे निम्न पदाधिकारी नियुक्त किये गये।

(१) श्री ओममुनि वानप्रस्थ कोरबा (म० प्र०) सरक्षक (२) श्री ब्र० मोहनकुमार नैष्ठिक रायगढ सचालक (३ श्री वेदव्रत आचार्य महामन्त्री (४) श्री नारायण वेदालकार पुसौर (कोषाध्यक्ष) (५) श्री ब्र० कपिलदेव आचार्य एव जनक राम आचार्य (व्यायाम शिक्षक)

हरिसिंह आर्य

आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया

आर्य समाज रिहाड़ी कोटली कालोनी जम्मू मे २३ से २४ मार्च ९३ तक नगर की सभी आर्य समाजो के सहयोग से आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर प० विद्याभानु शास्त्री के ब्रह्मत्व मे सामवेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रतिष्ठित विद्वानो ने अपने प्रवचनो से अमृत वर्षा कर जनता को लाभान्वित किया।

—आर्य समाज देवबन्द के प्रागण मे आर्य वीर दल एव आर्य समाज विद्यालय की ओर से आर्य समाज स्थापना दिवस एव नव सम्वतसर के कार्यक्रम समारोह पूर्वक मनाये गये। यज्ञोपरान्त ओ३म् ध्वजा रोहण कर सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया तथा विद्यालय के छात्र छात्राओ ने संस्कृत मे स्वागत गान करके अपने भाषण तथा गीतो के माध्यम से जनता को मुग्ध कर दिया।

चुनाव सूचना

आर्य समाज मद्रास का वार्षिक निर्वाचन सर्व सम्मति से ११ ४ ९३ को निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ—

प्रधान—श्रीमती विजय लक्ष्मी मोगा मत्री—श्री भूपेन्द्र पाल जग्गी कोषाध्यक्ष—श्री देवराज अग्रवाल।

इससे सम्बद्ध समाजो के मन्त्री भी निम्न प्रकार चुने गए—

१ सैन्ट्रल समाज—श्री वसन्तराव २ माउण्ट रोड—श्री सुधीर आहूजा ३ टिल्लीकेन—के श्रीनिवासन।

मुस्लिम युवती की शुद्धि एव वैदिक विधि से विवाह सम्पन्न

विधूना इटावा ११ अप्रैल ९३ को श्री अवनीश कुमारसिंह जी कुशवाह सुपुत्र श्री सोवरनसिंह जी कुशवाह लिपिक आदर्श इन्टर कालेज (विधूना) इटावा का विवाह विधूना के वरिष्ठ पत्रकार श्री मसी अहमद की पुत्री रायजादा बानो के साथ शुद्धि के उपरान्त वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ। शुद्धि के उपरान्त रायजादा बानो का नाम परिवर्तित कर अनीता रखा गया। कार्यक्रम के अन्त मे नवदम्पतियो की ओरसे सकल एकत्रित जनो को भोजनादि कराया गया। यह सारा कार्यक्रम जिला आर्योप सभा मे आर्य समाज विधूना व आर्य गुरुकुल ऐरवा कटरा (इटावा) द्वारा सम्पन्न हुआ।

—आचार्य राजदेव शर्मा
प्राचार्य आर्य गुरुकुल ऐरवा कटरा (इटावा)

वार्षिकोत्सव

—आर्य समाज नेहता का ७ वा वार्षिकोत्सव ७ से ९ मई तक हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है इस अवसर पर आर्य समाज के प्रकाण्ड विद्वान तथा राजनैतिक नेता पधार कर श्रोताओं को लाभान्वित करेंगे।

—आर्य समाज महावीर गज लखनऊ का २०वा वार्षिकोत्सव ९ से ११ मई तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। समारोह मे आर्य समाज के प्रख्यात उपदेशक तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। इस अवसर पर कई अन्य कार्यक्रम भी सम्पन्न होगे।

शोक समाचार

—आर्य समाज तेराजाकेट जिला फर्रुखाबाद के मन्त्री डा० वीरेन्द्र कुमार आर्य के ज्येष्ठ भ्राता प्रो० रवीन्द्र कुमार पाण्डेय डी० ए० वी० कालेज कानपुर का आकस्मिक निधन दिनांक २९ मार्च ९३ को हृदयगति रुक जाने से उनके परमट कानपुर स्थित निवास पर होगया। अन्त्येष्टि सस्कार दिनाक ३० मार्च ९३ को भैरव घाट पर श्री डा० विजयपाल शास्त्री व श्री रामनारायण शास्त्री ने वैदिक रीति से सम्पन्न कराया। प्रो० पाण्डेय की आयु इस समय ६० वर्ष थी।

आर्य समाज तेराजकेट ने अपनी विशेष बैठक मे शोक प्रस्ताव पारित कर दिवगत आत्मा की सदगति के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की एव शोक सतप्त परिवार के धैर्य के लिए भगवान से प्रार्थना की।

—गुरुदत्त द्विवेदी प्रधान

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवनदिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो

महर्षि दयानन्द उवाच

- विद्वानों के बीच यह नियम होना चाहिए कि 'अपने-अपने ज्ञान और विद्या के अनुसार सत्य का मंडन और असत्य का खण्डन कोमल वाणी के साथ करें जिससे सब लोग प्रीति से मिलकर सत्य का प्रकाश करें।
- बहुधा संसार में यह उल्टी रीति है कि लोग उत्तम कार्य को कर चुके और करते हुए देखकर प्रसन्न नहीं होते जैसे कि निषिद्ध व हानि को देखकर होते है।
- अपने ही देश के वस्त्र-वेश को अपनाने में शोभा है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र   दूरभाष । ३२७४७७१   वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७१ ?-
वर्ष ३१ अंक १३]   दयानन्दाब्द १६९   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९३   वैशाख कृ० ३   सं० २०५०   ९ मई १९९३

मथुरा में आर्य समाज मन्दिर गिराने की योजना का कड़ा विरोध

सभा-प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की जिला प्रशासन को कड़ी चेतावनी

दिल्ली १ मई। जिला प्रशासन मथुरा द्वारा सौन्दर्य करण योजना के अन्तर्गत १०० वर्ष पुराने धार्मिक स्थल आर्य समाज मन्दिर तिलक द्वार को गिराये जाने की योजना पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती (पूर्व सासद) ने जिला प्रशासन को कडी चेतावनी देते हुए कहा कि जन भावनाओं से अनभिज्ञ अधिकारियों ने यदि किसी भी तरह का कोई ऐसा कार्य किया जिससे मन्दिर को क्षति पहुंचेगी तो उसका देशव्यापी विरोध होगा। स्वामी जी ने कहा इस योजना से आर्यसमाज के क्षेत्र में प्रतिरोध की भावनाएं तीव्रता से बढ रही है। यदि इस योजना को स्थगित न किया गया तो आर्य समाज मथुरा अपने धार्मिक अधिकारों की रक्षा के लिए पूरी तरह संघर्ष करेगा और देश भर के आर्य समाजों की संगठन शक्ति उसके साथ रहेगी।

स्वामी जी ने प्रधानमन्त्री श्री पी० वी० नरसिंह राव, मानव संसाधन मन्त्री श्री अर्जुनसिंह, तथा कृषि मन्त्री डा० बलराम जाखड़ से समय रहते इस अन्याय को हस्तक्षेप करके रोकने की अपील की। प्रधानमन्त्री को लिखे पत्र मे स्वामी जी ने कहा कि देश में पहले से ही अनेक समस्यायें खड़ी है, इसलिए प्रशासन को उन्हें हल करने की बजाय नई समस्याये पैदा करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने समूचे आर्य जगत को आश्वस्त करते हुए कहा कि आर्य समाज द्वारा बड़े से बडा बलिदान देकर भी अपने धार्मिक अधिकारों की रक्षा की जायेगी। अफसरसाही के किसी भी अनुचित कदम को सहन नही किया जायेगा। स्वामी जी स्थिति का जायजा लेने के लिए शीघ्र ही मथुरा जा रहे हैं।

महाराणा प्रताप जयन्ती की जोरदार तैयारियां

महाराणा प्रताप जयन्ती के प्रथम समारोह का शुभारम्भ आगामी २३ मई ९३ को प्रात: ७-३० बजे वृहद् राष्ट्र रक्षा यज्ञ के रूप मे दिल्ली के लालकिला मैदान में किया जायेगा। इस वृहद यज्ञ के ब्रह्मा अयोध्या गुरुकुल के कुलपति श्री स्वामी तत्वबोध नन्द जी महाराज होगे।

इस अवसर पर महाराणा प्रताप के वंशज महाराणा महेन्द्रसिंह मेवाड़ प्रथमाहुति देंगे, उनके साथ भामाशाह के प्रतीक राजस्थान के प्रमुख आर्य श्रेष्ठी श्री हनुमान प्रसाद चौधरी और उन भीलो के प्रमुख जिन्होंने महाराणा प्रताप की हल्दी घाटी में तिलक करके सहायता की थी वह भी इस वृहद यज्ञ मे पधारेंगे। इसके अतिरिक्त २४ मई को यज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर केन्द्रीय कृषि मन्त्री डा० बलराम जाखड़ और हरियाणा के कृषि राज्यमन्त्री चौ० बच्चनसिह आर्य भी पधारेंगे।

यह यज्ञ दो दिन तक चलेगा जिसमें आर्य समाज के चोटी के सन्यासी, विद्वान और गुरुकुलों के ब्रह्मचारी बड़ी संख्या मे भाग लेगे। दिल्ली और उसके आस-पास की समस्त राष्ट्रवादी जनता बड़ी भारी संख्या में समारोह मे पहुंचने की तैयारियां कर रही है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने देश की आर्य जनता से अपील करते हुए कहा कि वह अधिक से अधिक संख्या में समारोह में उपस्थित होकर "वृहद राष्ट्र रक्षा यज्ञ" को हर प्रकार से सफल बनाने में सहयोग करें।

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्य वीरों सैं कुछ बातें

ग्रीष्म अवकाश पास है इसी के साथ आर्य वीर दल के सभी श्रेणियों के प्रशिक्षण शिविरों का सिलसिला आरम्भ हो जाता है। ऊपर से सूर्य की तपन और नीचे मैदान में आर्य वीरों के नव संकल्प लिए कठोर परिश्रम से शिविरों में निराला ही रंग होता है आओ हम भी सभी आर्य वीर मित्रों को लेकर अनूठे रंग मे रंगने का प्रयास करें, आर्य वीर दल के माध्यम से ऐसे नवयुवकों को प्रेरणा दें, जो दिशाहीन होकर दर-दर की ठोकरें खा रहे है, राष्ट्र को क्षति पहुंचाने में लगे हुए हैं जिन्हें या तो किसी ने बरगला दिया है या विधर्मियो ने अपने मोह पाश में फंसाकर वैदिक पथ से विचलित कर दिया है। आज आवश्यकता है ऐसे युवकों का मार्ग दर्शन करने की जो ऋषि-राष्ट्र की वैदिक परम्पराओं से कतरा रहा है, बहकावे में आकर लकड़हारे की तरह स्वयं को नष्ट करने पर तुला हुआ है। कम्युनिस्टों की तर्ज पर मेरे देश का नोजवान कामरेड बनकर देश में बन्द और हड़तालों का आयोजन कर रहा है साम्यवाद की अंधी आंधी ने जहां राष्ट्र की अर्थ व्यवस्था को ठेस पहुंचाने में सहयोग दिया हैं वहां युवकों को नास्तिक बनाकर राष्ट्र विरोधी गतिविधियों में लगाया है—इसका सीधा सा कारण हमारी अपनी कमी है, धर्म के कथित ठेकेदारों ने जिस तरह से आडम्बरवाद और गुरुडमवाद के तीरों से स्वार्थपूर्ति के लिए हमारी सांस्कृतिक विरासत को तहस नहस किया है उसका वर्णन थोड़े समय मे नहीं किया जा सकता यहां यह स्पष्ट करना आवश्यक होगा हिन्द चमन के अपने आपको रखवाले मानने वाले आज भी अपनी एकता यात्राओं में भैंसा की बलि देते हो तो क्या इस प्रकार की सोच रखने वालों से राष्ट्र-संस्कृति को बल मिल पाएगा ?

आज एक तरफ तो पाठ्य पुस्तको में यह सुधार करके कि आर्य कहीं बाहर से नहीं आये, आर्य यही आर्यावर्त (भारत वर्ष) के मूल निवासी थे, आदि, अपनी वैदिक मान्यताओं को उबारने का प्रयास किया जा रहा है और दूसरी तरफ उपरोक्त यात्राओ की सफलता के लिए निरीह पशुओ की हत्या ?

युवा साथियो ऐसी विकृत सोच को नौजवान ही उखाड़कर फेंक सकते हैं। दोस्तो अपने युवापन को पहचानों आन्दोलन में भाग लो, और वह आन्दोलन है युवको का एकमात्र संगठन—आर्य वीर दल, जो आपके खिसकते हुए स्वास्थ्य को संवार रहा है, जो सनातन संस्कृति की रक्षा हित जी जान से जुटा हुआ है, सेवा ही जिसका धर्म है—इन सभी लक्ष्यों को पूरा करने के लिए प्रतिवर्ष आर्य वीर दल भारत की भावी आशाओं के लिए सघन प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन करता है—यह धारा विगत साठ वर्षो से बह रही है जो युवाओं के आंगन से होकर गुजरती है। कविवर 'मनीषी' के शब्दों में आर्य वीर दल हमें उठने का आह्वान कर रहा हैं—

उठो आर्य वीर धीर बनके समीर आज,
बिगड़ा है आज काम देश को संवार दो।
लेखराम, हंसराज वीर श्रद्धानन्द चले,
चलो उसी राह पर कांटों को बुहार दो।
देव दयानन्द के न स्वप्न टूट जाये कहीं,
रंग नहीं, देके खून चित्र को निखार दो।
झुको नहीं, टूट जाओ बनाओ विश्व आर्य,
एक बार मिलकर सारे ओर से पुकार दो।

करो कुछ काम तुम ऐसा, जले जो दीप कुटिया में,
चले अभियान कुछ ऐसा, खुशी हो भारत की बगिया में।
बगिया भी केवल युवकों की, संस्कृति, शक्ति और सेवा,
आर्य वीरों एक हो जाओ, तीनों पुष्पो की डलिया में।

—आर्य वीर मदन राठी
[प्रशिक्षक सा० आर्य वीर दल

शुभाषितानि

वयमिह परितुष्टा वल्कलैस्त्वं दुकूलैः,
सम इह परितोषो निर्विशेषो विशेषः ।
स तु भवति दरिद्रो यस्य तृष्णा विशाला,
मनसि च परितुष्टे कोऽर्थवान् को दरिद्रः ॥

(वैराग्य)

भावार्थ—कोई साधु कहता है—हे सांसारिक ऐश्वर्यों में मस्त मनुष्य ! हम तपस्वी वृक्षों की छालो को धारण करके और तुम रेशमी वस्त्रों से संतुष्ट हो। हम दोनों के सन्तोष मे तो कोई अन्तर नहीं है। परन्तु याद रखो दरिद्र वह होता है जिसकी इच्छाए अधिक बढ़ी हुई हैं। मन के सन्तुष्ट होने पर कौन धनवान् है और कौन दरिद्र ?

सब कुछ तू ही तू हैं

—श्री छत्रसिंह जी

ऐ मेरे रब, ऐ मेरे प्रभु, सब कुछ तू ही तू है।
बन्दा तो कुछ भी नही, खाली मे बू ही बू है ॥
जिस पर तेरी कृपा है, दुनिया तो उसी की है।
जिसने तुझे पाया, भक्ति भी उसी की है ॥
ढूंढा बहुत पर तू, दुनिया को मिल न सका।
मिला तो क्षण भर भी, मन से तू हिल न सका ॥
आनन्द मे तेरे, गम भी सारे भुलाये हैं।
तेरे मिलन की खुशी में, भक्तों ने तेरे गीत गाये हैं ॥
जब तू मिल ही गया, तो बाकी बचा भी क्या है।
सब तेरा ही तो रूप है, तूने दुनियां को रचा भी क्या है ॥
सब तुझे चाहते हैं, पर चाहना भी न आया किसी को।
प्रेम करते हैं पर, अपना बनाना भी न आया किसी को ॥
जब तेरा पता बताता हू, तो पूछते हैं तू क्या करता है।
तू कर्ता है, भर्ता है, हर्ता है और क्या नहीं करता है ॥
पेन अपने को देते रहे, जीवन भर समझ न पाये।
जब वह चला गया तो फिर आंसू बहाये ॥
अहम् भाव छोड़ कर, अपनों की सेवा कर ले।
वरना फिर पछतायेगा, दुखों से झोली भर ले ॥

अध्यापक गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार

समस्त आर्य समाजों के नाम आवश्यक परिपत्र

श्री प्रधान जी/मन्त्री जी

सप्रेम नमस्ते !

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि महान देशभक्त, मातृभूमि के रक्षक और आर्य संस्कृति के पोषक मेवाड़ केसरी महाराणा प्रताप की जयन्ती मनाने का सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दिल्ली के लालकिला मैदान में २३ और २४ मई १९९३ से बृहद यज्ञ के साथ शुभारम्भ किया जा रहा है। महाराणा प्रताप के शौर्य, देश भक्ति एवं बलिदानों के अनूठ उदाहरणों से आर्य जाति श्रद्धानत होकर उन्हें आदर के साथ स्मरण करती है। आज की विषम परिस्थितियों में उस राष्ट्र शिरोमणि महापुरुष के जीवन मूल्यों से देशवासियों का मार्ग दर्शन करने और अपने पूर्वजों के शौर्य और राष्ट्रभक्ति की प्रेरणा प्रदान करने की बड़ी आवश्यकता है इसीलिए आर्य समाज ने उस राष्ट्र नायक और आर्य जाति के कुलदीपक महाराणा प्रताप की जयन्ती का शुभारम्भ करने का निर्णय लिया है।

२३ मई १९९३ को प्रथम दिन का कार्यक्रम प्रातः ७.३० बजे बृहद यज्ञ के साथ प्रारम्भ होगा, जिसमें महाराणा प्रताप के वंशज और मेवाड़ के वर्तमान महाराणा महेन्द्र सिंह मेवाड़ अपने हाथो से प्रथम आहुति अर्पित करेंगे। उनके साथ उदयपुर के सेठ हनुमान प्रसाद चौधरी (जिन्हें भामाशाह का प्रतीक माना जाता है) तथा भील जाति के वंशज जिनके पूर्वजों ने महाराणा प्रताप का अपने हाथों से तिलक किया था भी इस अवसर पर उपस्थित रहेंगे। २४ मई को पूर्णाहुति का कार्यक्रम सम्पन्न होगा।

मैं पिछले सप्ताह स्वयं उदयपुर और चित्तौड़ गया था वहां महाराणा महेन्द्रसिंह "मेवाड़" तथा अन्य कई महानुभावो से भी मिला था। मैंने चित्तौड़ का ऐतिहासिक किला तथा रानी पद्मिनी के जौहर स्थल को भी देखा। सम्पूर्ण राजस्थान में आर्य समाज द्वारा राष्ट्र नायक महाराणा प्रताप की जयन्ती मनाने के कार्यक्रम से बहुत बड़ा उत्साह दिखाई दे रहा है।

अतः आपसे निवेदन है कि आर्य समाज के इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए अधिक से अधिक संख्या में भाग लेने के लिए २३ और २४ मई के लिए अभी से व्यवस्था बना लें और हमे यह भी सूचित करें कि आपके यहां से कम से कम कितने भाई बहन कार्यक्रम में पहुंच रहे हैं।

इस बृहद् कार्यक्रम के लिए धन की भी आवश्यकता है, आपसे प्रार्थना है, कि अपनी समाज/संस्था अथवा अपने साधनों से जो भी सहयोग राशि अर्पित कर सकें उसे यथाशीघ्र सार्वदेशिक सभा को भिजवाने की कृपा करें। दोनों दिन के कार्यक्रमो में ऋषि लंगर की भी व्यवस्था की जा रही है। आप सबका तन, मन और धन का सहयोग अत्यन्त आवश्यक है।

शुभकामनाओं सहित,

भवदीय

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

प्रधान

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के नाम केन्द्रीय मन्त्री श्री अर्जुनसिंह जी का पत्र

मानव संसाधन विकास मन्त्री
भारत
नई दिल्ली-११०००१
२३ अप्रैल १९९३

आदरणीय स्वामी आनन्दबोध जी,

आपका दिनांक ८-४-१९९३ का पत्र प्राप्त हुआ, धन्यवाद ! महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्म दिवस को शासकीय प्रतिबन्धित अवकाश में सम्मिलित किए जाने का अनुरोध माननीय प्रधान मन्त्री, श्री पी०वी० नरसिंह राव को मैंने आपके सुझाव पर किया था। प्रधानमन्त्री जी ने मेरे निवेदन को स्वीकार किया और समस्त आर्य जगत की भावना का सम्मान करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्म दिवस को शासकीय अवकाश के रूप में स्वीकृति प्रदान की है।

आपने अपने पत्र के माध्यम से धन्यवाद प्रेषित किया है वास्तव में धन्यवाद और बधाई का श्रेय आपको ही जाता है। आप जैसे सिद्धांत प्रिय स्वामी के सानिध्य में समस्त आर्य जगत और मानवता को सही दिशा दर्शन मिले, यही मेरी मंगल कामना है।

आपका
अर्जुन सिंह

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती,
प्रधान,
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
महर्षि दयानन्द भवन,
रामलीला मैदान,
नई दिल्ली-११०००२

सार्वदेशिक के ग्राहकों से

१—सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहकों से निवेदन है कि वे अपना वार्षिक शुल्क यथाशीघ्र भिजवाये।

२—वार्षिक शुल्क भेजते समय अथवा पत्र-व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या का उल्लेख अवश्य करे तथा अपना पूरा पता साफ शब्दों में लिखें।

३—कुछ सदस्यों ने काफी समय से अपना वार्षिक शुल्क नहीं भेजा है ऐसे सदस्यों को कई बार स्मरण पत्र भी भेजे गये हैं परन्तु उनका शुल्क प्राप्त नहीं हो सका है। अतः सार्वदेशिक का सम्पूर्ण शुल्क अविलम्ब भेजने का कष्ट करें अन्यथा विवश होकर सार्वदेशिक भेजना बन्द करना पड़ेगा, जो हम नहीं चाहते।

४—बार-बार वार्षिक शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिये, एक बार ३००/- भेजकर सार्वदेशिक के आजीवन सदस्य बनें।

५—अन्य व्यक्तियों को भी सार्वदेशिक का ग्राहक बनाकर सहयोग करें।

—सम्पादक

मां-बाप को भूलना नहीं

भले ही हर बात भूल जाइए, मां-बाप को भूलना नहीं,
अनगिनत हैं उपकार इनके, यह कभी भूलना नहीं।
धरती के सभी देवताओ को पूजा, तभी आपकी सूरत देखी,
इन पवित्र व्यक्तियो के दिल, कठोर बनकर तोड़ना नहीं।
अपने मुंह का कौर निकाल, तुम्हें खिलाकर बड़ा किया,
इन अमृत देने वालों के सामने, जहर कभी उगलना नही।
खूब लाड़ प्यार किया तुमसे, तुम्हारी हर जिद पूरी की,
ऐसे प्यार करने वालो से, प्यार करना कभी भूलना नहीं।
चाहे लाखो कमाते हो, लेकिन मां-बाप खुश न रहें, तो
लाख नही पर खाक है, यह मानना भूलना नही।
भीगी जगह मे खुद सो कर, सुख में सुलाया तुम्हें,
ऐसी अनमोल आंखों को, भूल से कभी भिगोना नहीं।
फूल बिछाए प्यार से, जिन्होने तुम्हारी राहो पर,
ऐसी चाहना करने वालों की राहो के, काटे कभी बनना नहीं।
दौलत से हर चीज मिलेगी, लेकिन मां बाप मिलते नही,
इनके पवित्र चरणों के प्रति, सम्मान कभी भूलना नहीं।
संतान से सेवा चाहें तो, सन्तान बनकर सेवा करें,
जैसी करनी वैसी भरनी, यह न्याय कभी भूलना नहीं।

—श्री भोलानाथ चैरिटेबल ट्रस्ट, बम्बई

क्या उपराष्ट्रपति का चुनाव अवैध ठहरेगा

—रोहन सिंह

नई दिल्ली २९ अप्रैल। उपराष्ट्रपति के. आर. नारायणन के पद का फैसला अगले सप्ताह होगा और यदि यह फैसला उनके खिलाफ जाता है तो देश के इतिहास में यह एक अभूतपूर्व घटना होगी कि चुने गए उपराष्ट्रपति को अपने पद से हटना होगा।

ज्ञातव्य है कि श्री नारायणन के खिलाफ चुनाव लड़े एक मात्र प्रत्याशी काका जोगिन्दर सिंह धरतीपकड़ ने उनके चुनाव को अदालत में चुनौती दी थी। इस मामले की सुनवाई न्यायमूर्ति जे. एस. वर्मा की अध्यक्षता में एक पांच सदस्यीय न्यायाधीशों की संविधान पीठ कर रही है।

काका जोगिंदर सिंह ने श्री नारायणन के चुनाव को चुनौती देते हुए उनके नामांकन पत्रो मे दो गलतियां बताई हैं। श्री नारायणन का नाम केरल के संसदीय क्षेत्र ओट्टापलम की मतदाता सूची में है लेकिन नामांकन पत्रो के साथ पलाई विधानसभा क्षेत्र की मतदाता सूची लगाई गई है जो इस संसदीय क्षेत्र में नही आता। नामांकन पत्रो के साथ निर्वाचन अधिकारी जिलाधीश का प्रमाण पत्र ही लगाया गया है।

दूसरी गलती पिता माता या पति का कानूनी तौर पर प्रमाण पत्र नामांकन पत्रो के साथ लगाया जाता है लेकिन यह न होकर संरक्षक का नाम ही दिया गया है। उपराष्ट्रपति पद के चुनाव के लिए नामांकन पत्रों के साथ मतदाता सूची में नाम शामिल होने की प्रमाणित प्रति जमा करना कानूनी तौर पर आवश्यक होती है जो नहीं की गई है। गत २६ अप्रैल को संविधान पीठ ने ३० अप्रैल तक प्रतिवादियों के जवाब मांगे हैं और अगली सुनवाई ७ मई को निश्चित की है।

बताया जाता है कि श्री नारायणन के वकील ने कानून मन्त्री से राय मांगी है। यदि दस्तावेजों के आधार पर उपराष्ट्रपति का चुनाव अवैध ठहराया गया तो एक मात्र मत पाने वाले काका जोगिंदर सिंह उपराष्ट्रपति हो जाएंगे। लेकिन यह उनकी याचिका पर निर्भर करता है कि उन्होने सिर्फ चुनाव को अवैध ठहराने की याचिका दी है या अवैध होने के बाद स्वयं को उपराष्ट्रपति पद का दावेदार होने की याचिका दी है।

आर्यरत्न श्री मोहन लाल मोहित, प्रधान आर्य सभा मौरिशस अभिनन्दन ग्रन्थ का विमोचन

रविवार १८ अप्रैल १९९३ को तालकटोरा स्टेडियम, नई दिल्ली में महात्मा हंसराज दिवस पर आयोजित विशाल महासभा के शुभ अवसर पर आर्य सभा मौरीशस के वयोवृद्ध प्रधान, आर्यरत्न श्री मोहन लाल मोहित अभिनन्दन ग्रन्थ का विमोचन माननीय श्री शिवराज पाटिल अध्यक्ष लोक सभा के करकमलो से हुआ।

इस शुभ अवसर पर बहुत संख्या में आर्य समाज और डी. ए. वी. प्रबन्ध समिति के अग्रिणी नेता उपस्थित थे। तथा श्री ज्ञानी जैल सिंह भूतपूर्व राष्ट्रपति, श्री रामचन्द्र विकल पूर्व सांसद एवं श्री विजय कुमार मल्होत्रा ने महासभा की शोभा बढ़ाई।

इस भव्य कार्यक्रम में श्री आनन्द प्रिय, नीवूर भारत में मौरीशस के उच्चायुक्त ने विशेष अतिथि के रूप में भाग लिया। उन्होने कहा कि श्री मोहित जी के नेतृत्व में आर्य समाज ने मोरीशस में भारतीय संस्कृति का ही प्रसार नहीं किया अपितु उस देश की सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक प्रगति में बहुत बड़ा योगदान दिया। मौरीशस के लोगों को श्री मोहित जी पर गर्व है।

हाजियों के ५ करोड़ की हेराफेरी, चेयरमैन निकाला गया

—वीर अर्जुन समाचार सेवा—

सेंट्रल हज कमेटी बम्बई की एक हंगामी मीटिंग में चेयरमैन सलामत उल्लाह को अपने पद से हटा दिया गया है। उन पर लगभग पांच करोड़ रुपये का गपला करने का आरोप है। उनकी जगह बम्बई के ही काजी अब्दुल खालिद को चेयरमैन बनाया गया है।

बम्बई से प्राप्त समाचारो के अनुसार श्री सलामत उल्लाह ने मक्का में हाजियों के ठहरने का इन्तजाम एक निजी एजेंसी के द्वारा कराया था जिसके लिए लगभग पांच करोड़ रुपये पेशगी अदा किये। जबकि यह काम सरकारी स्तर पर होता है निजी स्तर पर नहीं। इस पर साउदी सरकार ने यह इन्तजाम रद्द कर दिया।

इधर जब इतनी बड़ी रकम पानी मे चली गई तो यह रकम गरीब हाजियों के सर मढ़ दी गई, जिस पर कई हाजियो को अपनी धार्मिक यात्रा रद्द करनी पड़ी।

इस बात को लेकर बम्बई में सेंट्रल हज कमेटी की आपातकालीन बैठक हुई और सलामत उल्लाह को उनकी कथित धांधलियो के कारण हटा दिया गया।

आधुनिक वैज्ञानिक युग में वेद की प्रासंगिकता (२)

—आचार्य डा० विशुद्धानन्द शास्त्री

सत्य है महाराज ! यदि विद्वानों को यह सिद्धान्त पसन्द ही होता, तो वेदों का ह्रास ही क्यों होता ? वाम मार्ग कैसे फैलता ? चार्वाक आदि नास्तिक मत क्यों चलते ? और क्यों कर मुट्ठी भर विधर्मियों द्वारा बहुसंख्यक हिन्दू पादाक्रान्त और परास्त होता ? आपके विद्वानों को गोमेध में गो-वध नरमेध में नरबलि और भूत-प्रेत डाकिनी, शाकिनी, जादू टोने सूझे।

सनातनी श्री पं० सत्यव्रत सामश्रमी, पण्डित प्रवर मधुसूदन झा सदृश पौराणिक भी आज वेदों में अनेक सूक्ष्म विज्ञान, कला शिल्प-कौशल महर्षि के प्रतिपाद्यों को मानने लगे। ये विशुद्ध विज्ञान और वाष्प विज्ञानों को वेदों में स्वीकार करते हैं। वेदों में भौतिक विज्ञान के अस्तित्व को नकारने वाले इन मन्त्रों के विषद् वर्णन को तनिक ध्यान से पढ़ें—

बिना घोड़े के चलने वाला रथ—

अनश्वो जातो अनभीशुरुक्थ्या रथस्त्रिचक्रः परिवर्तते रजः।
महत्तद्वो देव्यस्य प्रवाचन द्यामृभवः पृथिवीं यच्च पुष्यथ।

ऋ० ४/३६/१

अर्थात् बिना घोड़ों का तीन पहियों वाला रथ जो अन्तरिक्ष मे उड़ सके, हे ज्ञानियो ! वह प्रशंसायोग्य है। यही अर्थ झा महोदय मानते हैं।

बिजली से चलने वाला रथ—

आ विद्युन्मद्भिर्मरुतः स्वर्कै रथेभिर्यात। ऋ० १/८८/१

यहां बिजली के रथ (इलेक्ट्रिक कार) का वर्णन विद्यमान है, पण्डित झा महोदय ने एक सूर्य-यन्त्र की चर्चा की है, बिजली से प्रयुक्त अस्त्रों की चर्चा भी इन्होंने की है। समरांगण सूत्रधार 'शुक्रनीति, कौटिल्यार्थशास्त्र से इन तात्कालिक वैज्ञानिक अस्त्रो का पता चलता हैं, आर्य जाति के प्रमाद, आलस्य और इन भ्रान्त विचारों के कारण अनेक विद्याओं और विज्ञानों का विलोप हो गया। सौभ नामक विमान श्रीकृष्ण जी के समय मे था, जिस पर चढ़कर राजा साल्व ने द्वारिका पर आक्रमण किया था।

अथर्ववेद के निम्नांकित मन्त्र में आकाश मार्ग से व्यापार करने का निर्देशक वर्णन स्पष्ट ही मिलता है—

ये पन्थानो बहवो देवयाना, अन्तरा द्यावापृथिवी
ते मा जुषतां पयसा घृतेन, यथा क्रीत्वा धनमाहराणि।

(१) इस उक्त पृष्ठ भूमि की प्रतिष्ठापना पर इस वैज्ञानिक युग में वेद की प्रासंगिकता क्या है ? इस प्रश्न का विशदीकृत आशय यह है कि इस वैज्ञानिक युग मे अर्थात जब कोई बुद्धि बाह्य रूढ़िवादिता के समादर करने का कोई अवसर नहीं रहता, तब वेदों का उपयोग है ?

(२) अथवा इस वैज्ञानिक युग में जबकि विश्व भर के राष्ट्रों की आविष्कारो को लेकर दौड़ या प्रतिस्पर्धा प्रगति के पथ पर हो रही है, तब वेद सम्मत यज्ञ, देवपूजा, आचार, संयम, सद्भावना-प्रसाद, मानवीयता या सांस्कृतिकता का प्रसार, दैवी भावों का प्रजागरण करने में क्या औचित्य है ?

(३) अथवा जो वेद या वैदिक सन्देश अतीत के गर्भ की धरोहर मात्र रह गये उनको पुन: लाने का सपना देखना एक मृगमरीचिका मात्र है।

(४) अथवा इस प्रगतिशील युग में जबकि सारा विश्व कम्प्यूटर के युग में प्रवेश करने को कटिबद्ध है, विश्व की भाषा के रूप में अंग्रेजी भाषा तमाम विश्व पर छायी जा रही है, ऐसे परीक्षाकाल में मृतभाषा संस्कृत के वेदमन्त्रों से ही दुनियां को जगाने का संकल्प लेना या प्रयास करना बालू से तेल निकालने की भांति निष्फल है।

यह एक ज्वलन्त प्रश्न है, जो उक्त रूपों में आधुनिक सुधारकों, राष्ट्र निर्माताओं तथा जन साधारण के मस्तिष्क में अनवरत उठता है। अतः हम इस पर विशद् रूप से प्रकाश डालना चाहेंगे।

(१) इस बुद्धिवादी युग मे "बुद्धिपूर्वा वाक्यकृतिर्वेदे" अर्थात् वेदों की सम्पूर्ण रचना बुद्धिपूर्वक है।

इसीलिये तो महाराज मनु ने कहा था—

"देवपितृमनुष्याणाम् वेदश्चक्षुः सनातनम:"

अर्थात् देव, पितृ पूर्वज ज्ञानियों और मनुष्यों का सदा रहने वाला वेद ही नेत्र है।

कतिपय बुद्धिवादी यह भी कहते है कि अब हमारे पास बुद्धि है, तो शास्त्र की कोई आवश्यकता नहीं, सब काम बुद्धि से विचार कर कर लिया जायेगा। इस पर हमारा कथन है, कि बुद्धि सबकी एक-सी नहीं होती, अत: उन्हें अपने से अधिक बुद्धिमान के ऊपर निर्भर रहना होगा, और उस सर्वोच्च बुद्धिमान को किसी का आश्रय खोजने की सम्भावना से नकारा नही जा सकता, क्योंकि बुद्धिमत्ता एक ही व्यक्ति के ठेके में तो है ही नहीं। अतः उसे भी परमुखापेक्षी होना पड़ेगा। जैसे छोटा वकील बड़े वकील का मतापेक्षी हो जाता है और उन सब बुद्धियों के प्रकाश का केन्द्र आत्मा है, पर प्रश्न यह है कि अन्तरात्मा जब तक तप से विशुद्ध न हो, तो इसमें से आवाज भी मलिन, या पूर्वाग्रह व संस्कारों से लिप्त ही आयेगी। जब आत्मा परमात्मा से मिलकर ज्ञान की प्राप्ति कर लेता है, तो वही ज्ञान निर्मल और निर्भ्रान्त होगा, जिसमें भूत, भविष्यत् और युग युगान्तर के परिणाम प्रत्यक्ष हो जाते है। समस्त विश्व हस्तामलकवत् होता है। यही वह स्थिति होती है, जिसे कहा गया है—

'उघरहिं विमल विलोचन ही के।
मिटहिं दोष भव-दुख रजनी के।

इस स्थिति को प्राप्त वे ऋषि थे, जिनकी अन्तरात्मा मे वेदज्ञान का आविर्भाव हुआ, अत: वे निर्भ्रान्त सद्धारा हैं, और पथ-प्रदर्शक हैं। तभी तो गीता में कहा है:—

तस्मात् शास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ।
ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्मकर्तुं मिहार्हसि ॥

(२) रही बात वेदों के उपदेश, यज्ञ, देवपूजा, आचार, संयम, सद्भावों के प्रसार की। इस वैज्ञानिक युग में मेरे विचार से विश्व की प्रतिस्पर्धात्मिक ईर्ष्या, द्वेष और विनाश के कगार पर पहुंचने वाले वैज्ञानिक आविष्कारों की दुर्दान्त, दाही लपटों से मानव का त्राण करना और भी वाञ्छनीय हो गया है। आज का अशान्त और तनावग्रस्त मनुष्य अपनी ही छाया से भयभीत हो रहा है, उसे सुख, शान्ति और चैन की घड़ियां बिताने को शत्रुता की भट्टी से झुलसते मानव के मानस को चैन चाहिए, वह वैदिक सन्देश 'मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।'

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग् भवेत् ॥

की छाया मे ही मिल सकेगा।

महर्षि ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के दशम समुल्लास मे लिखा है— उस समय सब भूगोल मे वेदोक्त एक मत था। उसमे सब की निष्ठा थी और सभी एक दूसरे का सुख-दुख हानि-लाभ, आपस मे अपने समान समझते थे तभी भूलोक मे सुख था, अब तो बहुत से मतवाले होने से बहुत सा दु.ख और विरोध बढ़ा है।'

(३) वैदिक सन्देश आज भी प्राचीनतम होते हुए भी अभी नवीन हैं। उसे अतीत काल को लौटाने की बात न तो मृगमरीचिका है और न पागलपन पं० नेहरू ने एक बार कहा था, कि कुछ हिन्दु वेदो की ओर लौटने की बात कहते हैं, कुछ मुसलमान एवम् इस्लामी धार्मिक राज्य की स्थापना का स्वप्न देख रहे हैं, ये कल्पनाएं मूर्खतापूर्ण हैं, क्योंकि भूतकाल कभी लौटाया नहीं जा सकता।

परन्तु आज की वस्तुस्थिति ने नेहरू जी के कथन पर पानी फेर दिया, उन्हीं की आंखो के सामने इस्लामी धार्मिक राज्य पाकिस्तान स्थापित हो गया, जिसने जन्म लेते ही सहस्त्रों का सतीत्व नष्ट किया और लाखों का नरसंहार। मि० जिन्ना का स्वप्न यथार्थ हुआ है। पं० नेहरू जैसे नेताओं के ये कायरतापूर्ण इन्जेक्शन हिन्दुओं पर अवश्य कारगर हुए और उनमें हतोत्साहिता, निराशा भर गई, पर आज आर्य समाजी और सनातनी भाइयों को विचार करना है जिन्हें वेद शास्त्रों पर आस्था है। चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य और शिवाजी महाराज के इतिहास ने उस दूर के स्वर्णिम अतीत को फिर से वर्तमान बना दिया था। गुप्तकाल में वैदिक यज्ञ संस्कृत साहित्य और आर्यों की विजय का भास्कर-प्रकाश पुनरपि चतुर्दिक् भासमान होने लगा था। (क्रमश:)

स्वास्थ्य चर्चा-

पेट के कीड़े

—डाक्टर बी. डी. अग्रवाल

हमारे देश मे ही नही बल्कि विश्व के विकसित देशो मे भी पेट रोगो का एक बहुत बडा कारण विभिन्न प्रकार के कीड़े हैं जो रोगी की आत मे रहकर भोज्य पदार्थ और खून चूसकर मौजमस्ती करते हुये अपनी सख्या मे वृद्धि भी करते रहते हैं।

पेट दर्द के अलावा ये कीडे खून की कमी, खासी पीलिया मिर्गी का दौरा जैसे लक्षण भी उत्पन्न कर देते हैं। कुछ रोगियो का लिवर तथा तिल्ली भी आकार मे बहुत बढ़ जाते हैं तो कुछ रोगियो के पूरे शरीर पर सूजन आ जाती है। कुछरोगियो के शरीर पर खुजली हो जाती है तथा त्वचा पर लाल चकत्ते भी पड जाते हैं। पेट फूल जाता है पेट मे जोर से दर्द उठने के साथ उल्टिया भी होने लगती है।

बालक ही नही बडे भी प्रभावित—आमतौर पर लोगो की यह धारणा रहती है कि पेट में कीड़े केवल बच्चो मे ही रहते हैं लेकिन मैंने शोधकार्य के फलस्वरूप वयस्क व्यक्तियो को भी पेट के कीडो से प्रभावित होते देखा है। रोगियो को इन कीडो से मुक्ति दिलाने के लिये दिन प्रतिदिन शोधकार्यो के फलस्वरूप नई नई ऐसी औषधियो का आविष्कार किया जा रहा है जो कारगर होने के साथ साथ रोगी पर विपरीत प्रभाव न डालें।

कीडो से मिरगी का दौरा भी—मिरगी के दौरे पड़ने के कारणो मे सिर मे चोट लगना (हैड इन्जरी), मस्तिष्क में टी बी की गाठ या ट्यूबरकुलोमा तथा ब्रेन ट्यूमर मुख्य है जबकि बहुत से रोगियो मे बिना किसी कारण के ही दौरे पडते रहते हैं। जनवरी मे नई दिल्ली मे सम्पन्न हुये फिजीशियन्स के सम्मेलन मे दिल्ली के डाक्टर बसल ने कई रोगियो के मस्तिष्क सी टी स्कैन की स्टडी करने के बाद जानकारी दी कि पेट का टीनिया सोलियम नामक टेपवर्म कीड़े का लारवा रक्तवाहिनी द्वारा मस्तिष्क में पहुचकर सिस्ट के रूप मे विकसित होकर मिरगी के दौरे के लिये बहुत से रोगियो में जिम्मेदार होता है। ऐसे कुछ रोगी मैंने भी कानपुर मेडिकल कालेज अस्पताल मे देखे हैं जिनमे एक नई दवा प्राजीक्वेंटल बहुत उपयोगी पायी गई।

परामर्श के लिये आने वाले रोगियो मे पेट के निम्नलिखित प्रकार के कीडे प्रमुखता से देख जाते हैं—

थ्रेड वर्म—नामक कीडा पतला सफेद छोटा होता है जो बड़ी आत मे रहता है। मादा थ्रेड वर्म गुदा के आसपास की त्वचा पर अण्डे देती है, जिसे खुजाने पर ये अण्डे रोगी की अगुली तथा नाखूनो पर लग जाते हैं। खाना खाने पर हाथ न धोने पर अथवा नाखून मुह मे देने से ये अण्डे आत मे पहुचकर बार बार अपनी सख्या बढाते रहते हैं।

गुदामार्ग तथा इसके आसपास खुजली, स्वभाव का चिड़चिड़ापन, नीद न आना, सोते सोते पेशाब कर देना, बच्चेदानी के मुह पर खुजली या इससे गदा पानी आना अथवा मूत्रमार्ग मे सक्रमण इन कीडो के मुख्य लक्षण है। मुख्य दवायें पायरेंटल मेबेडाजोल एव एलबेडाजोल है लेकिन इन्हें चिकित्सक के परामर्श से ही लें।

राउड वर्म—या एस्केरिस नामक लगभग आठ इच लम्बा यह गोल कीड़ा हल्का गुलाबी या सफेद रग का होता है जो रोगी की आत के ऊपरी भाग मे रहता है। ये रोगी के भोज्य पदार्थ को हजम करके उसे कमजोर बनाते रहते हैं।

पेट दर्द, दस्ती, वजन कम होते जाना, बच्चो की बाढ़ ठीक से न होना, आतो मे रुकावट, खासी सास फूलना, खासी मे खून आना, पीलिया, लिवर मे फोडा या एब्सिस बन जाना एव इसोसिनोफिलिया इन कीडो के मुख्य लक्षण है। थ्रेड वर्म के उपचार मे कारगर दवायें यहा भी उपयोगी है।

हुक वर्म यह कीडा लगभग आधा इच लम्बा सफेद रग का होता है जो मुख्यत गावो के रोगियो मे देखने को मिलता है। हुक वर्म अपने दातो द्वारा रोगी की छोटी आत के ऊपरी भाग (ड्योडिनम) की दीवाल से चिपककर रक्त चूसता रहता है।

हुक वर्म द्वारा होने वाली बीमारी का मुख्य लक्षण एनिमिया या खून की कमी है जिसके कारण रोगी कमजोरी और थकावट महसूस करता है। खून की अत्यधिक कमी हो जाने से पूरे शरीर पर सूजन, दिल का धड़कन, सास फूलना जैसे लक्षण प्राय मिलते हैं। कुछ रोगी पेट के मध्य ऊपरी भाग मे दर्द की भी शिकायत करते हैं जिससे पेप्टिक अल्सर होने का भ्रम हो सकता है।

इस रोग के उपचार के लिये उपरोक्त औषधियो के अतिरिक्त बीफीनियम लवण भी उपयोगी है। शरीर मे रक्त बढाने वाली दवा (आयरन दवा) तथा प्रोटीन भी बहुत आवश्यक होती है। कभी-कभी रोगी को स्वस्थ व्यक्ति का खून चढाने की भी आवश्यकता होती है। खून की शरीर मे बहुत कमी होवे पर रोगी को आराम कराना बहुत जरूरी है। जहा तक सम्भव हो मिट्टी मे नगे पैर न चले।

अन्य कीडे—फीते के आकार के लम्बे टेपवर्म हैं जो मुख्यत मासाहारी व्यक्तियो मे मिलते हैं। मुख्य दवा निकलोसिमाइड है जिसे डाक्टर की सलाह से ही लें।

शोक समाचार

—श्रीमती सुशीलादेवी आर्या धर्मपत्नी श्री सूबेदार व्यकटेश जी प्रान्तीय सञ्चालक आन्ध्र प्रदेश सिकन्द्राबाद निवासी का निधन हृदय गति रुक जाने के कारण ३ २ ९३ को हो गया है। वे बहुत ही भद्र महिला थी। इन्होंने आन्ध्र प्रान्त मे ही नहीं अपितु पूरे भारतवर्ष मे श्री व्यकटेश जी का साथ वैदिक प्रचारार्थ कन्धे से कन्धा मिलाकर किया। तथा अपने जीवन काल मे बडे २ सम्मेलनो मे भाग लिया इनका जीवन काल स्मरणीय रहेगा। मैं ईश्वर से इनकी आत्मा की सदगति एव इनके परिवारको यह दारुण दुख सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करता हू।

—हरिसिंह आर्य कार्यालय मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य वीर दल

सार्वदेशिक धर्मार्य सभा के महत्वपूर्ण निर्णय (२)

डा० भवानी लाल भारतीय, धर्माधिकारी-धर्मार्य सभा

यज्ञ की समाप्ति पर क्या कर्तव्य है इस चर्चा के चलने पर धर्माधिकारी की ओर से बताया गया कि यज्ञ रूप प्रभो को प्रार्थना का भजन स्व० प० लोकनाथ जी तर्क वाचस्पति का बनाया है। लोगो ने इसमे भी मनमाने परिवर्तन प्रक्षेप आदि कर दिए हैं। पौराणिको को शास्त्रो मे प्रक्षेप करने का दोषी मानने वाले आर्य समाजियो ने अपने ही कवियो की काव्यकृतियो को मनमाने ढग से बदल डाला। तभी तो यज्ञ रूप प्रभो की जगह पूजनीय प्रभो' तथा हाथ जोड झुकाय मस्तक के स्थान पर प्रेम रस मे तृप्त होकर आदि परिवर्तन सर्वथा अवाछनीय तथा अनधिकृत ही है। इस भजन को हम उसी रूप मे बोलें जैसा कवि ने लिखा है।

(१०) यज्ञान्त मे पुरोहित को तत्काल दक्षिणा दें, उसे लटकायें नहीं।

आर्य समाज मन्दिरो मे विवाह सस्कार कराते समय सावधानी बरतें

दिल्ली के श्री सत्यदेव गुप्त तथा कतिपय अन्यो ने सभा का ध्यान आर्य समाज मन्दिरो मे कराए जाने वाले उन सरलीकृत विवाहो की ओर दिलाया जिनमे (१) माता पिता की इच्छा तथा आज्ञा के प्रतिकूल मात्र लडके और लडकी की रजामन्दी के आधार पर विवाह करा दिए जाते हैं। (२) प्रेम विवाहो को प्रोत्साहन दिया जाता है (३) यदा कदा वर और कन्या की वय गुण तथा पूर्व इतिहास आदि की सर्वथा उपेक्षा कर उनके दिखाए जन्म तिथि के प्रमाण पत्रो को ही सत्य मान कर विवाह करा दिए जाते हैं (४) इन विवाहो को कराने मे आर्य समाज की दृष्टि मात्र द्रव्य की राशि पर ही रहती है। फलत आगे चलकर इस प्रकार के गन्धर्व विवाहो से अनेक जटिलतायें एव कठिनाइया उत्पन्न होती हैं—पुरोहितो अथवा अधिकारियो को कचहरी मे तलब किया जाता है अनमेल विवाहो के दुष्परिणाम होने पर आर्य समाजो की बदनामी होती है उन्हे समाज के लोग मात्र विवाह कराने वाली सोसाइटी ही मान बैठते हैं आदि समस्याओ पर विस्तार से विचार होने के पश्चात निश्चय हुआ कि मात्र धन के प्रलोभनो मे ऐसे विवाह न कराए जावें। माता पिता की विवाह में स्वीकृति आवश्यक मानी जाए। यदा कदा इसके अपवाद भी हो सकते हैं किन्तु वे तभी होगे जब यह पाया जाएगा कि माता पिता अन्याय पूर्वक तथा लडके लडकी की इच्छा के विरुद्ध उन्हे दाम्पत्य बन्धन मे बाधना चाहते हैं। पर्याप्त विचार के पश्चात निश्चय किया गया कि आर्य समाजो के अधिकारी इन सरलीकृत विवाहो को प्रोत्साहन न दें तथा प्रत्येक विवाह प्रसग को विवेक तथा गुणावगुण पूर्वक ही करने कराने की व्यवस्था करें।

एक अन्य महत्वपूर्ण चर्चा

पजाब तथा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालयो मे दयानन्द शोध पीठ के प्रोफेसर तथा अध्यक्ष पद पर पर्याप्त समय बीत जाने पर भी किसी उपयुक्त व्यक्ति को नियुक्त न करने का प्रश्न आसन की ओर से उठाया गया। बताया गया कि पजाब विश्व विद्यालय की दयानन्द पीठ का अध्यक्ष पद डा० भारतीय के अवकाश ग्रहण करने के पश्चात से ही खाली पडा है और विश्व विद्यालय के अधिकारी इस पर नियुक्ति करने मे शिथिलता एव प्रमाद दिखा रहे हैं। यही स्थिति कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की भी है जहा डा० कपिल देव शास्त्री के सेवा निवृत्त होने (अब दिवगत) के पाच वर्ष पश्चात भी उक्त पद को नहीं भरा गया है। परिणाम यह है कि महर्षि दयानन्द निर्दिष्ट वेदाध्ययन तथा वैदिक शोध कार्य की अपूरणीय क्षति हो रही है। सम्प्रति इन पीठो का कार्यभार अस्थायी तौर पर उन लोगो को सौंप दिया है जिनकी दयानन्दीय विचारधारा मे न तो निष्ठा है और न वे इस कार्य को आगे बढ़ाने मे ही रुचि रखते हैं। सम्पूर्ण विषय पर विचार करने के पश्चात निश्चय हुआ कि—

आर्य धर्मार्य सभा (सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वारा निर्मित एव सचालित) की यह साधारण सभा अत्यन्त दु ख और क्षोभ प्रकट करते हुए इस निष्कर्ष पर पहुची है कि पजाब तथा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालयो के अधिकारी वहा स्थापित दयानन्द शोधपीठो के प्रोफेसर एव अध्यक्ष पद पर किसी उपयुक्त दयानन्द की विचारधारा के प्रति आस्था रखने वाले वैदिक विद्वान की नियुक्ति मे अनावश्यक रूप से विलम्ब कर रहे हैं। पजाब विश्वविद्यालय के दयानन्द पीठ विभाग के विगत प्रोफेसर तथा अध्यक्ष डा० भवानीलाल भारतीय के कार्यमुक्त होने के पश्चात भी इस पद पर किसी की नियुक्ति का न होना इस तथ्य का सूचक है कि स्वामी दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट वैदिक अध्ययन तथा उनकी उन्नत एव प्रगतिशील चिन्ता धारा को आगे न बढ़ने देने की यह एक सोची समझी चाल है। इस सभा के अधिकारी तथा सभासद विश्वविद्यालयो के कुलाधिपति भारत के मानव स साधन विकास मन्त्री तथा पजाब एव कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालयो के कुलपतियो से निवेदन एव पुरजोर अपील करते हैं कि वे इन शोधपीठो पर तत्काल नियुक्ति करें। यह नियुक्ति ऐसे व्यक्ति की हो जो सस्कृतज्ञ तो हो ही महर्षि दयानन्द के वैदिक अनुशीलन का अधिकृत ज्ञाता भी हो। ऐसा होने से ही इन शोधपीठो की उपयोगिता रहेगी तथा वैदिक अध्ययन एव शोध को गति मिल सकेगी। यदि विश्वविद्यालय के अधिकारी चाहे तो यह सभा उन्हे एतद विषयक समुचित परामर्श भी देने के लिये तैयार है।

उक्त प्रस्ताव को सर्व सम्मति से स्वीकार करने के पश्चात धर्मार्य सभा ने सार्वदेशिक सभा प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओ तथा भारत एव इतर देशों की सम्पूर्ण आर्य समाज इकाइयो से अनुरोध किया कि वे अपने अपने अधिवेशनो मे उक्त प्रस्ताव को अक्षरश पारित कर उसकी प्रतिया निम्न महानुभावो को भेजें—(१) पजाब और कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलाधिपति जो क्रमश भारत के उपराष्ट्रपति तथा हरियाणा के राज्यपाल होते हैं (२) भारत के केन्द्रीय मानव ससाधन विकास मन्त्री श्री अर्जुनसिंह (३) पजाब विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो टी एन कपूर तथा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति डा सर्वदानन्द आर्य।

सत्यार्थप्रकाश का नया विवादास्पद सस्करण

स्वामी आनन्दबोध जी ने धर्माधिकारी की विशेष अनुमति से परोपकारिणी सभा द्वारा प्रकाशित सत्यार्थप्रकाश के ३७ वें सस्करण के प्रकाशन

(शेष पृष्ठ ८ पर)

पुस्तक समीक्षा

उपनिषदें और प्रश्नोपनिषद्

लेखक—सुरेशचन्द्र वेदालंकार, मूल्य रु० ६.००
आर्य प्रकाशन ८१४ कुण्डेवालान अजमेरी गेट दिल्ली

इस पुस्तक के लेखक श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार आर्य समाज के बहुचर्चित लेखक हैं और उनकी कई पुस्तकें जैसे दुर्गुण दूर भगाइये, मनुष्य बनो, तथा गृहस्थ जीवन काफी चर्चित रही है।

भागवतकथा, उपनिषदें और प्रश्नोपनिषद् मे लेखक ने १६ दिन के सत्संग का आधार बनाकर वेदान्त के गूढ़ रहस्य खोले है। आर्य संस्कृति का इन्हें मूल कारण बताते हुए लेखक ने कई गहन प्रश्नों को सहज रूप से विवेचित करने में सफलता प्राप्त की है। जैसे—यह संसार कैसे बना? कौन इसका कर्ता है? आत्मा और परमात्मा का क्या पारस्परिक सम्बन्ध है? जीवात्मा के पुनर्जन्म का क्या कारण है? मोक्ष प्राप्ति कैसे सम्भव है?

लेखक ने उक्त प्रश्नों के उत्तर में अपनी ही नहीं बल्कि देश-विदेश में कई विद्वानों की राय को भी शामिल किया है। मेक्समूलर, शोपनहावर व पाल डासन आदि इसमें मुख्य हैं। पुस्तक के एक हिस्से में लेखक ने छह ब्रह्मचारियों का भी चित्रण किया है। यही नहीं, उन्होंने छह ब्रह्मज्ञान जिज्ञासुओं का भी एक दूसरे हिस्से में उल्लेख किया है। श्री वेदालंकार की यह पुस्तक कुल मिलाकर वेदान्त की हैंडबुक कही जा सकती है जिसे कम पढ़े-लिखे लोग भी आसानी से समझ सकते हैं।

—सम्पादक

ग्रीष्म अवकाश में सार्वदेशिक आर्य वीर दल से स्वीकृत १९९३ के

शिविरों की सूची

१. राष्ट्रीय आर्य वीरों का शिविर—६ से २० जून तक (गुरुकुल झज्जर रोहतक हर०), २. राष्ट्रीय वीरांगनाओं का शिविर—२७ मई से ५ जून तक (कन्या गुरुकुल नरेला दिल्ली), ३. प्रान्तीय शिविर दिल्ली प्रदेश—२७ मई से ६ जून तक (स्थान अभी निश्चित नहीं है), ४. राजस्थान प्रान्त—२१ से ३० मई (अखराना अलवर राज०), ५. मध्य प्रदेश—२० से ३० मई (आर्य गुरुकुल होशंगाबाद म. प्र.), ६. महाराष्ट्र प्रदेश—७ से १६ मई (आर्यसमाज पिम्परी पुणे महा.), ७. हिमाचल प्रदेश I— २ से ९ मई (आर्य समाज कुल्लू हि. प्र.), II.—जौलाई के प्रथम सप्ताह मे (नगरोटा जिला कांगड़ा हि. प्र.)।

८. उत्तर प्रदेश—१.— २० से ३० मई (आर्य समाज खलीलाबाद जि. बस्ती उ. प्र.), २—३१ मई से ६ जून (डी. ए. वी. वाराणसी पूर्वी उ. प्र.) ३.—२० से ३० मई (आर्य इन्टर कालिज तेड़ा मेरठ उ. प्र.), ४.—२७ मई से ६ जून (डी. ए. वी. इन्टर कालिज टटीरी मेरठ उ. प्र.), ५.—२० से ३० मई (आर्य समाज बिजनौर उ. प्र.), ६.—२१ से २८ जून (गुरुकुल पुष्पावती पूठ गाजियाबाद उ. प्र.), ७.—१ से ७ जून (आर्य समाज स्टेशन रोड मुरादाबाद उ. प्र.), ८.—२० से ३० मई (मुण्डा खेड़ा जिला रामपुर उ. प्र.), ९.—तिथियां निश्चित नहीं है (आर्य समाज खरड़ मु० नगर उ. प्र.),

१०.— ,, (आर्य हाई स्कूल बजेड़ा मु० नगर उ. प्र.),

११.— ,, (इस्सोपुर टील मु० नगर उ. प्र.)।

९.—हरियाणा प्रान्त—२३ से ३० मई (फरीदाबाद), रोहतक, जीन्द, पानीपत करनाल, नरवाना, हिसार, गुड़गांव भिवानी, इन शिविरों की तिथियां अभी निश्चित नहीं की गयी है। आगे सूचना प्रेषित की जायेगी।

१०.—हिमाचल प्रदेश में कार्यकर्त्ता शिविर—२० जून से ५ जौलाई (उद्गीथ साधना स्थली जिला सिरमौर हि. प्र.)।

हरिसिंह आर्य, कार्यालय मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य वीर दल

धर्मार्य सभा के निर्णय

(पृष्ठ ७ का शेष)

से उत्पन्न विवाद का प्रश्न उठाया। बताया गया कि (१) पं० युधिष्ठिर मीमांसक तथा डा० रामनाथ वेदालंकार आदि विद्वानों ने इस संस्करण के सम्पादन मे की गई अनेक त्रुटियों एवं स्खलनों की ओर आर्य जनता का ध्यान आकर्षित किया है। (२) आर्य पत्रों तथा जनसत्ता आदि इतर पत्रों में भी सत्यार्थ प्रकाश के इस संस्करण के औचित्य को लेकर अनेक शंकायें उपस्थित की गई हैं। (३) यह संस्करण सत्यार्थ प्रकाश के अब तक प्रचलित तथा प्रकाशित पाठों के विपरीत पाठ तो देता ही है, अनेक ग्राम्य तथा अश्लील शब्दों के प्रयोग के कारण यह संस्करण विष सम्पृक्तान्नवत् दूषित हो गया है। (४) तथापि विषय की गुरुता को अनुभव कर निश्चय किया गया कि इस संस्करण की बिक्री तब तक स्थगित रक्खी जावे जब तक कि सत्यार्थ प्रकाश के विशेषज्ञ विद्वानों की समिति मिल बैठकर इस पर सांगोपांग विचार नहीं कर लेती। डा० रामनाथ वेदालंकार ने इस संस्करण के बहुलांश का पूर्व प्रकाशित संस्करणों से मिलान करने के पश्चात विचार व्यक्त किया है कि इस ग्रन्थ की रफ कापी का अनर्गल रूप से प्रयोग करना उचित नहीं है। द्वितीय संस्करण जो प्रेस कापी के आधार पर मुद्रित हुआ है, वह ऋषि के जीवन काल में भी तृतीयांश पर्यन्त छप गया था। अतः उसके पाठ को लेकर उसके लिपिकर्ता लेखक को दोषी ठहराना तथा इस संस्करण के सम्पादकीय में ऋषि दयानन्द के परम विश्वसनीय तथा ईमानदार कर्मचारी मुंशी समर्थदान के प्रति टिप्पणी करना अनुचित है।

निश्चय हुआ कि सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी परोपकारिणी सभा से इस सम्बन्ध में उचित पत्राचार करें तथा ग्रन्थ की बिक्री पर तदर्थ रोक लगायें। धर्मार्य सभा की यह बैठक भोजनावकाश के पश्चात भी चलती रही। तत्पश्चात अध्यक्ष के प्रति आभार व्यक्त किया गया और शान्तिपाठ के अनन्तर सभा समाप्त हुई।

पुनश्च–धर्माधिकारी ने जो प्रायः देश की अनेक आर्यसमाजों में प्रचारार्थ जाते हैं, यह अनुभव किया है कि यत्र तत्र आर्य समाजों में आर्य समाज के दस नियम और उद्देश्य सूचना पट्टों, दीवारों आदि पर अंकित कराए जाते हैं। इसमें अधिकारियो के प्रमाद से अथवा नासमझी से तीसरे नियम को अशुद्ध रूप में अंकित कराया जाता है। 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है' इस वाक्यांश में प्रयुक्त 'का' के स्थान पर प्रायः 'की' कर दिया जाता है, यह समझ कर कि शायद ऋषि दयानन्द को हिन्दी नहीं आती थी और वे वेदों को 'सत्य विद्याओं का पुस्तक' गलती से लिख बैठे। इस सम्बन्ध में विश्व भर की आर्य समाजों को ताकीद की जाती है कि वे इन नियमों को उसके मूल रूप में ही लिखायें और 'का' के स्थान पर 'की' का स्वेच्छाचार से प्रयोग हरगिज न करें। इस विज्ञप्ति के पश्चात आर्य समाजों के अधिकारीगण अपने-अपने मन्दिरों के सूचनापटों तथा पोस्टरों को देखें और यदि उसमें 'का पुस्तक' के स्थान पर 'की पुस्तक' दिखाई पड़े तो उसे तुरन्त सुधारलें।

धर्माधिकारी का वर्तमान पता है—

—डा० भवानी लाल भारतीय
रत्नाकर, ८/४२३, नन्दन वन
जोधपुर-३२४००८ राजस्थान

वार्षिकोत्सव एवं वेदारम्भ संस्कार समारोह

आर्य गुरुकुल महाविद्यालय आबूपर्वत का चतुर्थ वार्षिकोत्सव एवं वेदारम्भ संस्कार समारोह २९ से ३१ मई तक हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर नये विद्यार्थियों को प्रवेश दिया जायेगा। समारोह में उच्चकोटि के सन्यासी महात्मा विद्वान भजनोपदेशक एवं राजनेता पधार रहे हैं। दस से बारह वर्ष की आयु के कक्षा पांच पास विद्यार्थी ही गुरुकुल में प्रवेश पा सकेंगे।

अभिवादन का प्रतीक: नमस्ते

आर्य समाज के प्रवंसक महर्षि दयानन्द जी ने आर्य जाति को धार्मिक तथा सामाजिक दृष्टि से बांधने के लिए वेद और वेदांगों का सहारा लिया। उन्होंने निर्देश किया कि आपस में मिलने पर हम एक-दूसरे को नमस्ते कहें। अभिवादन का यही ढंग आदिकाल में सर्वत्र चलता था। सभी लोग इसे अपनाने में गौरव मानते थे। वेद शास्त्रों में सर्वत्र इसी का प्रयोग है। महर्षि ब्रह्मा से लेकर महर्षि जैमिनि पर्यन्त अभिवादन में सर्वत्र नमस्ते का ही प्रयोग होता था।

नमस्ते संस्कृत भाषा का शब्द है। इसीलिए एक-दूसरे का सम्मान करने की दृष्टि से इसी का प्रयोग होता था। इस पर आपत्ति करने का किसी ने साहस ही नहीं किया। इसके जन्म काल से आज तक इसके विरुद्ध किसी ने कोई शब्द नहीं कहा। छोटा अपने से बड़ों का आदर इसी शब्द से करता आया है। इसी शब्द को महर्षि दयानन्द ने अपनाने की अपील की थी।

नमस्कार या नमस्कारम् का शब्द भी प्रयोग होता था, परन्तु इन शब्दों का लोग भगवान के पूजन में प्रयोग करते थे। आपस में इसका प्रयोग नहीं करते थे।

नमस्ते शब्द का प्रयोग करने का आदेश महर्षि दयानन्द ने क्यों दिया क्योंकि उस समय राम-राम, जय सीता राम, जय कृष्ण आदि अनेकों प्रकार से आर्य लोग अभिवादन करते थे। ये शब्द हमारे पुतनकाल की देन थे, जिन्हें दयानन्द जी ने अवैदिक समझ कर छोड़ दिया। महर्षि का एकमात्र लक्ष्य आर्य जाति को इसके प्राचीन धर्म तथा सामाजिक परम्पराओं प र लाना था।

नमस्ते शब्द के दो भाग हैं—नम: ते। संस्कृत के विद्वान जानते हैं कि 'ते' शब्द का अर्थ है 'तुम्हारे लिए' या आदर में आपके लिये। इस प्रकार नमस्ते का अर्थ हुआ कि हम आप के लिए नमन करते हैं। नम: सत्कार, श्रद्धा के साथ किसी के सम्मुख झुकना आदि के अर्थ में आता है। नमस्ते का अर्थ हुआ कि हम एक दूसरे का आदर करने के लिए झुकते हैं।

आर्य लोग अपने अभिवादन के समय अपने दोनों हाथ जोड़कर हृदय के पास लाते हैं और अपना सिर झुकाकर नमस्ते शब्द का उच्चारण करते हैं। इसका स्पष्ट अर्थ है कि व्यक्ति अपने हृदय, मस्तिष्क तथा हाथों की शक्ति से आगन्तुक का आदर करता है। कहने का तात्पर्य यह कि नमस्ते कहने वाला अपनी सम्पूर्ण शक्ति से आप के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करता है।

सन १९३३ में जब शिकांगो (अमरीका) मे सर्वधर्म सम्मेलन हुआ तो उसमें सबसे पहले यही निर्णय किया गया कि सम्मेलन में भाग लेने वाले आपस में अभिवादन के लिए किस शब्द का प्रयोग करें। आर्य समाज की ओर से वेदों के विद्वान पं० अयोध्या प्रसाद जी ने नमस्ते को प्रस्तुत किया उनकी बात सुनकर सभी लोगो ने इसे स्वीकार किया।

—मीरायती

आर्य वानप्रस्थाश्रम, ज्वालापुर हरिद्वार

वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज घनेटा जिला हमीरपुर में २० अप्रैल से २६ अप्रैल १९९३ तक धूमधाम से वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया। दयानन्द मठ दीनानगर से स्वामी सगुनानन्द जी ने इस अवसर पर अपने प्रवचन किए।

स्वामी जी ने इस बात पर बल दिया कि मनुष्य को दान अवश्य करना चाहिए लेकिन अपनी नेक कमाई में से। इस अवसर पर प्रतिदिन सुबह यज्ञ भी होता रहा। —योगप्रकाश नन्दा, प्रचार मन्त्री

आर्य पुरोहित सभा

महर्षि दयानन्द भवन, C-२/१२, सफदरजंग विकास क्षेत्र, नई-दिल्ली—११००१६, की संचालन समिति दिल्ली तथा दिल्ली से बाहर के भी समस्त आर्य समाजियों तथा आर्य पुरोहितों को दिनांक ६ जून १९९३ दोपहर २.३० बजे विचार विमर्श के लिये आमन्त्रित करती है। इस सभा में आजकल आर्य समाज के प्रचार कार्य में आये हुए गतिरोध पर विचार किया जायेगा।

श्रीमती यशोदा राणा, संगठन-सचिव

विदेश समाचार

वैदिक धर्म समाज (ब्रोम सेन्टर) में रामनवमी का पर्व ४ अप्रैल रविवार को बड़ी धूम धाम से मनाया गया। सुन्दरता पूर्ण ढंग से सजाये गये हाल में कार्यक्रम प्रात: १०-३० पर यज्ञ से प्रारम्भ हुआ। भगवान राम की स्तुति की गई तथा भजन गाये गये। एक बार भारत में फिर राम राज्य स्थापित हो प्रभु से ऐसी प्रार्थना की गई। वैदिक धर्म समाज के अध्यक्ष श्री बालकृष्ण शर्मा जी ने अपने भाषण में भगवान राम के जीवन पर प्रकाश डालते हुये हर परिवार में भाई के साथ भाई को प्रेम से मिलकर रहने का उपदेश दिया। भगवान राम शान्ति के प्रतीक थे तथा अपने सेवकों से भी प्यार करते थे इसी कारण आज राम राज्य की चर्चा भारत के सभी राजनैतिक दल करते हैं।

International Primetime Network—T. V. के श्री मुनीश जी गुप्ता ने मुख्य अतिथि के रूप में उत्सव की शोभा को बढ़ाया। इन्हीं के द्वारा दूर दर्शन के माध्यम् से अमरीका तथा कैनेडा में प्रति सप्ताह महाभारत दिखाई जा रही है। इसी कारण यहां की हिन्दू जनता में वैदिक धर्म के प्रति काफी जागृति पैदा हुई है।

दर्शकों में भारतीयों के अतिरिक्त ५०% स्थायी नागरिक भी कार्य क्रम को देखते हैं। यहां पर जन्मे भारतीय बच्चों के लिये भी यह कार्यक्रम आकर्षक बन गया है क्योंकि इसे अंग्रेजी में थोड़ा समझाया व बताया जाता है। वैदिक समाजकी ओर से प्रचारार्थ बहुत सारा वैदिक साहित्य तथा भगवान राम के चित्र वाला वेद मन्त्रों से छपा कैलंडर बांटा गया तथा देश-विदेश में डाक द्वारा टिकट लगा कर नि:शुल्क भेजे जा रहे हैं। ऐसा प्रचार कार्य इस समाज की ओर से पूरे वर्ष चलता रहता है। यजमान परिवार ने बड़ी श्रद्धा भाव से ऋषि लंगर से सेवा की। —मदनलाल गुप्ता

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के तत्वावधान में आर्य समाज स्थापना दिवस

२५-४-९३ रविवार को दक्षिणदिल्ली वेद प्रचार मण्डल के तत्वावधान में प्रधान श्री हरबंस लाल कोहली की अध्यक्षता में प्रात: ८ बजे से १-३० बजे तक आर्य समाज स्थापना दिवस बड़ी श्रद्धा व उत्साह के साथ मनाया गया। यह उत्सव आर्य समाज मस्जिद मोठ (विक्रमपुरी) गांव में धूमधाम से मनाया गया। उत्सव का विषय था "स्वतन्त्रता संग्राम में आर्य समाज का योगदान"।

इस उत्सव में स्वामी आचार्य सत्यानन्दजी (गुरुकुल केशरपुरा राजस्थान), स्वामी सरोत्रा नन्द (कन्या गुरुकुल नरेला), श्री राजेश्वर जी (विश्व हिन्दू परिषद), डा० शिव कुमार शास्त्री (महामन्त्री आर्य समाज केन्द्रीय सभा), श्रीमती सुशीला त्यागी, श्री फूल सिंह व तुलसीराम भजनोपदेशक पधारे। इसके अतिरिक्त डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल मस्जिद मोठ के छोटे छोटे बच्चों ने महर्षि दयानन्द की जीवनी पर सुन्दर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये जिसको उपस्थित जनसमूह ने बहुत सराहा।

इस उत्सव में सर्वश्री रामकृष्ण, कृष्णलाल सूरी व चौ० भद्रसेन का सम्मान भी किया गया ये महानुभाव ८० वर्ष से ९५ वर्ष की आयु तक के थे। इनको दोशालें भी भेंट किये गये।

उत्सव पाण्डाल लोगो से खचाखच भरा था उत्सव की समाप्ती पर ऋषि लंगर का बहुत उत्तम प्रबन्ध था। —रामशरणदास आर्य, महामन्त्री

वार्षिक सम्मेलन सम्पन्न

प्राचीन तीर्थ गुरुकुल महाविद्यालय पूठ (पुष्पावती) बहादुरगढ़ गाजियाबाद उ० प्र० का वार्षिक सम्मेलन १९-२०-२१ मार्च १९९३ को कुल भूमि में समारोह पूर्वक मनाया गया। जिसमें देश के विभिन्न प्रान्तों से हजारो आर्य पुरुषों ने भाग लिया।

इसका उद्घाटन आचार्य यशपाल सुधांशु जी की अध्यक्षता में श्री सत्यानन्द आर्य दिल्ली ने ध्वजारोहण के साथ किया। इसका संयोजन डा० श्री शिव कुमार शास्त्री महामन्त्री ने किया।

यज्ञ की पूर्णाहुति पर स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने अपना आशीर्वाद दिया। स्वामी मुनीश्वरानन्द जी का उपदेश प्रभावशाली रहा। ब्रह्मचारियों का आकर्षक व्यायाम प्रदर्शन क्षेत्र के लिये आश्चर्यजनक रहा। लोगों में बड़ा उत्साह था।

आर्य समाज राइट टाउन जबलपुर मध्यप्रदेश द्वारा शुद्धियां सम्पन्न

आर्य समाज के प्रधान आचार्य रामलाल जी आर्य की अध्यक्षता में निम्न अनुसार शुद्धिया सम्पन्न हुई तथा समारोहपूर्वक विवाह संस्कार भी सम्पन्न हुए। वैदिक साहित्य बांटा गया तथा आर्यसमाज की सदस्यता प्रदान की गई। सभी ने वैदिक धर्म की दीक्षा ली।

१ सुमनलाल २९ वर्ष ईसाई नया नाम पीयूषलाल आर्य इसाई मोहल्ला दमोह। विवाह जिनसे हुआ कु० अनीता संगोटे बी. ए. २० वर्ष सिविल लाइन दमोह।

२. मो० इस्तयाक २७ वर्ष इस्लाम नया नाम महेन्द्र आर्य शिवाजी वार्ड नरसिंहपुर। कु० विमला शर्मा नरसिंहपुर कंदेली २३ वर्ष एम. ए. से विवाह सम्पन्न हुआ।

३. नदीम जावेद कुरेशी ३१ वर्ष इस्लाम एम. ए. नया नाम नरेन्द्र आर्य नरोजाबाद जि० शहडोल। कु० मन्जू सक्सेना २७ वर्ष एम. एस. सी. व्याख्याता बिरसिंहपुर से विवाह सम्पन्न हुआ।

४. शाकिर अली २६ वर्ष बी. एस. सी. केशियर बैंक आफ बड़ोदा मेन रोड शहडोल इस्लाम नया नाम शेखर आर्य कु० सुरेखा २४ वर्ष एम.एस. सी. निवासी, बरोली शहडोल से विवाह सम्पन्न हुआ।

५. क्रिस्टोफर डेविड २२ वर्ष कम्प्यूटर प्रोग्रामर रोमन निवासी १३११, बंगाली क्लब रान्झी नया नाम विजय आर्य विवाह कु० सुधा रानी, आर्य डोडानी २० वर्ष निवासी १३७० बंगाली कालोनी रान्झी, जबलपुर।

६ शाहिना परवीन २१ वर्ष इस्लाम निवासी अकलतरा स्टेशन रोड, बिलासपुर नया नाम मन्जुला विवाह हुआ रामदीन यादव, २८ वर्ष एकाउन्टेंट अकलतरा जिला बिलासपुर के साथ।

७. कु० अनीता मसीहा ३१ वर्ष एम. ए. प्रोटेस्टेंट ईसाई नया नाम अमृता आर्य निवासी विक्रिया वार्ड मण्डला विवाह हुआ श्री रवि कुमार ठाकुर एम. ए. एल. एल. बी. एडव्होकेट निवासी विक्रिया वार्ड मण्डला के साथ।

८. फ्रान्सिस डिसूजा २९ वर्ष एम. काम निवासी १११, इन्द्रपुरी भोपाल विक्रय प्रतिनिधि नया नाम पंकज आर्य विवाह हुआ कु० शशि राय एम. ए., एल. एल. बी. एडव्होकेट "हाई कोर्ट" निवासी १११ नेपियर टाउन, जबलपुर के साथ।

समारोह मे नगर के प्रतिष्ठित विधायको प्रोफेसरो एवं प्रसिद्ध समाज सेवियो ने नव दम्पत्तियो को आशीर्वाद के साथ इन दहेज रहित अन्तर जातीय विवाहित जोड़ो को भेंट तथा सत्यार्थ प्रकाश, कर्तव्य दर्पण तथा ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका, सन्ध्या पद्धति, आर्य समाज क्या है? आदि वैदिक साहित्य के सेट हर दम्पत्ति को देकर उनका सम्मान किया।

वेद प्रचार व प्रीतिभोज हेतु ८०००) रु० दान प्राप्त हुआ।

राजेन्द्रनाथ दुबे	आर्य समाज	आचार्य रामलाल आर्य प्रधान
एडव्होकेट	२८९ सतना बिल्डिंग, गोलबाजार	आर्य समाज राइट टाउन
मन्त्री	राइट टाउन-२, (म० प्र०)	जबलपुर मध्य प्रदेश

शोक समाचार

—हवेली खड़गपुर (मुंगेर, बिहार) आर्य समाज के मन्त्री श्री महादेव प्रसाद आर्य को मातृ शोक। २६ फरवरी ९३ को इनकी माता श्रीमती पूर्णदेवी आर्या का ११२ (एक सौ बारह) वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। महर्षि दयानन्द शिशु विद्यालय एव आर्य समाज के सदस्यो ने दिवगत आत्मा की शान्ति के लिए श्रद्धाजलि अर्पित की।

—परमानन्द प्रसाद आर्य

कर्म मार्ग : एक विश्लेषण

—डा० वेदप्रकाश उपाध्याय, एम. ए, पंजाब विश्व विद्यालय, चण्डीगढ़

भारतीय आस्तिक दर्शनों में न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदान्त ये छः दर्शन आते हैं, इनमें पृथक-पृथक दार्शनिक सिद्धांतों का विश्लेषण एवं निरूपण हुआ है। मीमांसा दर्शन में कर्म के सिद्धांत पर बल दिया गया है। प्रत्येक प्राणी को अपने द्वारा किये गये कर्मों का फल भोगना पड़ता है। कर्म तीन प्रकार के हैं—संचित, क्रियमाण और प्रारब्ध। ब्रह्म ज्ञान में तत्व ज्ञान की अग्नि से दग्ध हो जाने वाले कर्मों में संचित और क्रियमाण कर्म आते हैं, जबकि प्रारब्ध कर्मों को ज्ञानाग्नि से नहीं जलाया जा सकता। प्रारब्ध कर्मों का फल अवश्य ही भोगना पड़ता है। प्रारब्ध कर्म संस्कार के रूप या कर्त्ता के साथ संयुक्त हो जाते हैं और ऐसे कर्मों का फल भोगने के लिए शरीर की प्राप्ति होती हैं। प्रारब्ध कर्मों के फल के भोग से किसी व्यक्ति को तभी छुटकारा हो सकता है, जबकि उसका उपभोग कर लिया जाए। कर्म सिद्धांत के महत्व को मीमांसा दर्शन में सर्वातिशायी स्थान दिया गया है। यदि कोई व्यक्ति ईश्वर की सत्ता भी स्वीकार नहीं करता, किन्तु अपने कर्त्तव्य कर्मों के पालन में तत्पर रहता है, तो न्याय प्रिय ईश्वर ऐसे व्यक्ति का अकल्याण नहीं करता, क्योंकि वह ईश्वरीय विधान कर्म सिद्धांत का अनुसरण करता है और इस प्रकार ईश्वरीय विधान का पालन करता हुआ एक प्रकार से ईश्वर की सत्ता का प्रतिषेध भी नहीं करता।

ईश्वर है अथवा नहीं है, इस प्रकार के विचार बहुत ही प्राचीन काल से चले आ रहे हैं। ऋग्वेद में 'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति' (वह सत् एक है, जिसका विद्वानों ने अनेक प्रकार से वर्णन किया है) कहकर ईश्वर की सत्ता स्थापित की गई हैं। वेद आगम प्रमाण की श्रेणी में आते हैं, जिन्हें स्वतः प्रमाण भी माना जाता है, इस प्रकार आप्त प्रमाण ईश्वर की सत्ता सिद्ध करता है। न्यायदर्शन में अनेक प्रमाणों के आधार पर प्रमेय की सिद्धि व्यवस्था दी गयी है। उदयनाचार्य ने न्यायकुमाञ्जलिकारिका में अनेक प्रमाणो को प्रस्तुत करके ईश्वर सिद्धि की है।

योगदर्शन में साधना का मार्ग प्रदर्शित किया गया है, जो कर्म मार्ग का पोषक है। यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि इन आठ अंगों के अभ्यास से अष्ठांग योग की साधना होती है। संप्रज्ञात या असंप्रज्ञात समाधि की प्राप्ति की सम्भावना है। पतञ्जलि ने चित्त की वृत्तियों के निरोध को योग नाम से व्यवहृत किया है। योग दर्शन को सांख्य दर्शन का पूरक कहा जा सकता है।

सांख्य दर्शन का ज्ञान प्रकृति, पुरुष आदि तत्व के विश्लेषण से सम्बन्धित है। सांख्यदर्शन का कर्म मार्ग कुछ विलक्षण है। इस दर्शन के अनुसार कर्म प्रकृति द्वारा किया जाता है और फल पुरुष के द्वारा भोगा जाता है। प्रकृति जड़ है तथा पुरुष चेतन है। पुरुष और प्रकृति के संयोग होने के बाद प्रकृति में क्रियाशीलता है और यह संयोग सृष्टि का भी हेतु है। जब प्रकृति-पुरुष विवेकज्ञान से किसी व्यक्ति को ज्ञान की प्राप्ति होती है तो प्रकृति पुरुष को बन्धन से मुक्त कर देती है और पुरुष को मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है।

न्याय वैशेषिक और मीमांसा-वेदांत के अनुसार कर्म को करने वाला व्यक्ति ही फल को भोगता है। जड़ प्रकृति तो कुछ नहीं कर सकती। कर्तव्य के लिए चैतन्य आवश्यक है।

कर्म सिद्धांत के अनुसार बिना किसी कामना के कर्म करना श्रेयस्कर है। भक्ति हो या तप, यज्ञ हो या पूजा सर्वत्र आसक्ति का त्याग आवश्यक है और उक्त कर्म के बदले मे किसी विशिष्ट फल की कामना नहीं रखनी चाहिए। यदि कोई प्रतिदिन अनिवार्य दैनिक धार्मिक अनुष्ठानों को करते हुए अहर्निश उसके बदले में कुल विशिष्ट फल पाने की याचना करता रहता है, तो यह एक व्यापार के अतिरिक्त कुछ नहीं।

बिना किसी कामना के करने योग्य कृत्यों का सम्पादन करने वाला व्यक्ति परमसुख को प्राप्त करता है और ऐसे व्यक्ति को यथा समय प्राप्तव्य भी प्राप्त होता रहता है तथा वह दुःखी भी नहीं होता।

सूक्ति सुधा

'परोपकारी बनो। वृक्ष अपने सिर पर सर्दी, वर्षा और गरमी सह लेता है किन्तु अपनी छाया में आने वालों को इन सभी कष्टों से बचाता है।'
—कालिदास

'भय से बढ़कर कोई भयानक चीज नहीं है।'

'सौन्दर्य ग्रीष्मकालीन फल है जो कुछ देर में खराब हो जाते है और टिकाऊ नहीं होते।'
—बेकन

'एक नेक दिल विश्व के समस्त मस्तिष्को से अच्छा है।'

'शिष्टता हृदय का वह गुण होता है जो बाग के टूटे फटे दरवाजो को न देखकर उसके फूलो को देखता है।'
—लार्ड लेटिन

'सभी उच्च विचार बेकार है यदि वे व्यवहार में नहीं आते मनुष्य के कार्यो में प्रकट नहीं होते, और उनके जीवन का विकास नहीं करते।'—बोवर

'आदमी सीखना चाहे तो उसकी हर भूल उसे बहुत कुछ सिखा सकती है।'
—लोकदिया

'वह सेना कदापि सफल नही हो पाती जिसमें सारे ही सेनापति होने का दम भरते हो।'
—हिटलर

आर्यवीर दल द्वारा शिवाजी जयन्ती मनाई गई

भोपाल। आर्य वीर दल तत्याटोपे नगर द्वारा दिनांक २४-४-९३ को आर्य वीर दल श्री मुकेश भार्गव के निवास पर हिन्दू (आर्य) स्वराज्य के संस्थापक, गोमाता भारतमाता तथा भारतीय संस्कृति के सजग प्रहरी छत्रपति शिवाजी महाराज की जयन्ती 'वीर दिवस' के रूप में मनाई गई। आर्य वीरों द्वारा गाये गये वीर रस के गीतों तथा विद्वानों के विचारों के उपरान्त शान्ति पाठ के साथ सभा सम्पन्न हुई।

आर्य समाज जौनपुर का ९३ वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज जौनपुर का ९३ वां वार्षिकोत्सव दिनांक ९ अप्रैल से १२ अप्रैल तक मनाया गया जिसमें श्री पं. सूर्यबली जी पाण्डेय, श्री पं. महेन्द्रपाल जी श्री पं० सत्यमित्र जी शास्त्री शास्त्रार्थ महारथी, श्री पं० अशरफीलाल जी शास्त्री, श्री ठा० महिपालसिंह जी, श्री पं० पारसनाथ जी शास्त्री, श्रीमती सरस्वतीदेवी चतुर्वेदी ने भाग लिया। दिनांक ११ अप्रैल को ८ बजे रात्रि में टाउनहाल के मैदान में ही श्री पं० सत्यमित्र जी शास्त्री का अभिनन्दन किया गया। दिनांक १२ अप्रैल को आर्य समाज मन्दिर में महिला सम्मेलन सम्पन्न हुआ, जिसमें श्रीमती सरस्वतीदेवी आचार्या के व्याख्यान हुए।

—तारानाथ

पोस्टल रजिस्टर्ड नं० डी० एल० ११०४५/९३ सार्वदेशिक साप्ताहिक (९-५-१९९३) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (C) ९३
R N 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U (C) 93 Post in N D P S O.on 6-7-5-1993

आदर्श विवाह सम्पन्न

—श्रीमता उर्मिलादेवी मुख्याध्यापिका कन्या विद्यालय ग्राम डहीना (जि० रिवाडी) धर्मपत्नी श्रीयुत डा० महावीरसिंह यादव के सुपुत्र डा० रोहित M B B S M D का शुभ विवाह २५-४-९३ को वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ।

—कुमारी डाक्टर यशी एम बी बी एस सुपुत्री स्व० श्री छिदासिंह यादव के साथ धूम धाम से सम्पन्न हुआ। इस आदर्श विवाह का सारा व्यय वर पक्ष ने स्वय उठाया, कोई दहेज नही लिया केवल टीका व भात मे एक-एक रुपया लिया। इस शुभ अवसर पर जिले के सरपच राव श्योपालसिंह तथा डहीना के विद्वत जन तथा अन्य अनेक माता बहिनें बड़ी सख्या मे उपस्थित थी। सबने इस आदर्श विवाह की मुक्त कठ से प्रशसा करते हुए—नवदम्पति को अपना आशीर्वाद दिया।

—इन्द्रमुनि शर्मा भू० पू० थानेदार

आर्य समाज बैंकाक (थाइलैंड) का निर्वाचन

आर्य समाज बैंकाक का वार्षिक निर्वाचन १९९२-९३ के लिये सम्पन्न किया गया। पदाधिकारी निम्न प्रकार से है।

श्री प्रसिद्ध नारायण तिवारी प्रधान, श्री वीर बहादुर चन्द जी उपप्रधान, श्री लालबहादुरसिंह जी सचिव, श्री वेदप्रकाश जी मौर्य उपसचिव, श्री यशवन्त सिंह जी पुस्तकाध्यक्ष, श्री रमेश शाही जी कोषाध्यक्ष, गोरखनाथ पाण्डेय निरीक्षक।

स्वामी दयानन्द के सन्देश को गाव-गांव पहुचाना है

खण्डवा। गत २३ तारीख को आर्य समाज खण्डवा की ओर से ग्राम जावर मे एक यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर खण्डवा आर्य समाज के उपप्रधान श्री कैलाशचन्द्र पालीवाल ने कहा कि आज देश आतकवाद, बमविस्फोट, खून खराबे जिस दौर से गुजर रहा है। ऐसे समय पर ऋषि दयानन्द का सन्देश भटके हुए मानवो को नई रोशनी प्रदान कर सकता है इसी लिए गाव-गाव मे हवन करना और प्रचार करने का कार्य आर्य समाज खण्डवा न लिया है।

इस अवसर श्री बाबूलाल चौधरी, ग्राम पचायत के सरपच श्री मंयालाल गुप्ता ने भी सम्बोधित किया। शान्ति पाठ के पश्चात् कार्यक्रम समाप्त हुआ।

पुस्तकालयाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगडी
विश्वविद्यालय हरिद्वार, जि हरिद्वार (उ प्र

ग्रामीण महिला जन जागृति शिविर

खण्डवा। गत २३ ता० को श्री महर्षि दयानन्द शिक्षण समिति की ओर से ग्रामीण महिला जन जागृति शिविर के अन्तर्गत सभा का आयोजन हुआ, जिसमे ग्रामीण महिलाओ को लघु एव कुटीर उद्योग किस प्रकार स्थापित किए जायें इसकी जानकारी सुश्री कोकिला खण्डेलवाल ने दी। इस अवसर पर श्री कैलाशचन्द पालीवाल, श्री बाबूलाल चौधरी, कु० रेखा गुप्ता सन्तोष यादव, श्रीमती पदमा राठौर ने भी सम्बोधित किया।

नि:शुल्क सेवायें उपलब्ध हैं

समस्त सस्कारो, धार्मिक अनुष्ठानो को वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न कराने एव आर्य समाज के प्रचार प्रसार हेतु श्री श्याम प्रकाश शास्त्री एम ए (अर्थशास्त्र, हिन्दी) एल एल बी, विद्यावाचस्पति की सेवायें नि:शुल्क रूप से उपलब्ध है। श्री शास्त्री प्रत्येक शनिवार एव रविवार को पूर्णत अवकाश मे रहते हैं जरूरतमन्द व्यक्ति श्री श्यामप्रकाश शास्त्री से उनके स्थाई निवास-डी ६४, गोविन्द नगर, कानपुर-६ से पत्राचार सम्पर्क कर सकते हैं। श्री शास्त्री का कार्यालय फोन नम्बर २१९१७१ है।

—श्याम प्रकाश शास्त्री

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर में प्रवेश आरम्भ

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर जिला जालन्धर (गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार से स्थाई मान्यता प्राप्त) मे नये छात्रो का प्रवेश १५ जून १९९३ से आरम्भ हो रहा है। सरकारी स्कूलो मे पढाये जानेवाले हिन्दी, गणित, अग्रेजी विज्ञान समाज शास्त्र आदि सभी विषयो के साथ सस्कृत तथा धर्मशिक्षा भी अनिवार्य रूप से पढाई जाती है।

नि शुल्क शिक्षा, हिन्दी माध्यम, योग्यपरिश्रमी अध्यापक, स्वच्छ वातावरण, सात्विक भोजन, दूध व आवास की बिना किसी मासिक शुल्क के समुचित व्यवस्था शुद्ध दूध की उपलब्धि के लिए गुरुकुल की अपनी गऊशाला इस गुरुकुल की अपनी विशेषताए है।

प्रवेश के लिए छात्र का हिन्दी माध्यम से कम से कम कक्षा छ तथा प्राक्शास्त्री, शास्त्री (पजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ पचवर्षीय पाठ्यक्रम) मे प्रवेश के लिए कम से कम कक्षा १० उत्तीर्ण होना आवश्यक है। शास्त्री श्रेणी मे आर्योपदेशक का पाठ्यक्रम अनिवार्य है। गुरुकुल शिक्षा पद्धति पर आस्था रखने वाले सज्जन मिलें अथवा पत्राचार करें।

—श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल, करतारपुर

अनुभवी चिकित्सक की आवश्यकता

सार्वदेशिक दयान द सन्यासी वानप्रस्थ मण्डल ज्वालापुर को अपने आश्रम मे चिकित्सालय चलाने हेतु एक अनुभवी चिकित्सक एलोपैथिक, आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक की आवश्यकता है। रिटायर्ड महानुभाव जो हरिद्वार मे रह कर सेवा सतसग का लाभ उठाना चाहते हो अपनी शर्तों सहित पत्र-व्यवहार करें।

पता —
—चन्द्र प्रकाश स्वामी
मन्त्री—वेद मन्दिर
निकट तहसील ज्वालापुर,
जिला हरिद्वार-२४९४०७
दूरभाष ४२५८४०

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन दिल्ली-२ से प्रकाशित।

महर्षि दयानन्द उवाच

- मनुष्य ब्रह्मचर्य आदि उत्तम नियमो से त्रिगुण, चतुर्गुण आयु कर सकता है अर्थात् चार सौ वर्ष तक भी सुखपूर्वक जी सकता है।
- जब तक तुम लोग जीते रहो तब तक सदा सत्य कर्म मे ही पुरुषार्थ करते रहो।
- हम तो यही मानते हैं कि सत्य भाषण अहिंसा, दया आदि शुभ गुण सब मतो मे अच्छे हैं बाकी वाद-विवाद ईर्ष्या द्वेष मिथ्याभाषणादि कर्म सब मतो मे बुरे हैं। यदि तुमको सत्य मत ग्रहण की इच्छा हो तो वैदिक मत को ग्रहण करो।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र　दूरभाष। ३२७४७७१　वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३१ अंक १४]　दयानन्दाब्द १६९　सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९४　वैशाख कृ० १२　सं० २०५०　१६ मई १९९३

महाराणा प्रताप जयन्ती समारोह की दिल्ली में जोरदार तैयारियां

डा० बलराम जाखड़ तथा महाराणा महेन्द्रसिंह 'मेवाड़' वृहद् यज्ञ में प्रथम आहुति देंगे

दो दिवसीय कार्यक्रम को सफल बनाने की अपील

दिल्ली ११ मई। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे दिल्ली की समस्त आर्य समाजो द्वारा २३ २४ मई १९९३ को दिल्ली के लालकिला मैदान मे मनाये जा रहे महाराणा प्रताप जयन्ती समारोह की जोरदार तैयारिया चल रही हैं। २३ मई को प्रात राष्ट्र रक्षा वृहद् यज्ञ प्रारम्भ होगा। इसमे प्रथम आहुति देंगे महाराणा प्रताप के वशज महाराणा महेन्द्रसिह मेवाड और केन्द्रीय कृषि मन्त्री डा० बलराम जाखड। इस अवसर पर भामाशाह के प्रतीक सेठ हनुमान प्रसाद चौधरी, भीलो के कुछ प्रतिनिधि और महाराणा प्रताप शोध सस्थान के निदेशक डा० हुकमसिंह भाटी भी उपस्थित रहेगे।

महाराणा प्रताप जयन्ती समारोह के इस शुभारम्भ कार्यक्रम के बाद देश के विभिन्न नगरों मे शौर्य स्वतन्त्रता व एकता के प्रतीक के रूप मे महाराणा प्रताप जयन्ती समारोहो का सिलसिला जारी रहेगा।

सभा-प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने समस्त राष्ट्रवादी जनता से अपील की है कि भारी सख्या मे मातृ भूमि के उस सपूत की जयन्ती मे भाग लेकर यश लाभ प्राप्त कर और समारोह को हर प्रकार से सफल बनाय।

सार्वदेशिक सभा द्वारा महाराणा प्रताप जैसे राष्ट्रीय शूरवीर की जयन्ती मनाये जाने के निश्चय का देश भर म जोरदार स्वागत हुआ है। सार्वदेशिक सभा को बडी सख्या मे बधाई पत्र मिल रहे हैं। जिनमे स्पष्ट रूप से लिखा है कि देश की वर्तमान परिस्थितियो तथा तुष्टीकरण की राजनीति का मोह भग करने के लिए राष्ट्र वीर महाराणा प्रताप की पहली बार जयन्ती मनाने का निश्चय करके आर्य समाज ने राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के लिए प्रशसनीय कदम उठाया है। प्रधानमन्त्री श्री पी वी नरसिंहाराव ने सभा-प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को भेज सन्देशमे स्पष्टरूप से कहा कि महाराणा प्रताप ने मुगल साम्राज्य की शक्ति को चुनौती दी थी वह मातृभूमि की रक्षा के लिए बहादुरी से लडे थे उस वीर पुरुष ने हथियार डालने और आत्मसमर्पण करने की बजाय मृत्यु का वरण किया था इसी से वह शौर्य व स्वतन्त्रता के प्रतीक बन गए हैं।

महाराणा प्रताप जयन्ती समारोह पर प्रधानमन्त्री श्री पी.वी. नरसिंह राव का सन्देश

महाराणा प्रताप शताब्दियो से एक ऐसे शूरवीर योद्धा के रूप मे भारतीय लोक साहित्य के एक अग रहे हैं जिन्होने मुगल साम्राज्य की शक्ति को चुनौती दी थी तथा जो अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए बहादुरी से लडे थे। वे शौर्य एव स्वतन्त्रता के एक प्रतीक बन गए हैं। वे एक ऐसे वीर पुरुष थे जिन्होने हथियार डालने से इनकार कर दिया था तथा जिन्होने आत्म समर्पण की अपेक्षा मृत्यु का वरण किया।

मुझे यह जानकर खुशी है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा २४ मई १९९३ को महाराणा प्रताप की पाचवी जन्म शताब्दी के सिलसिले मे उनकी ४९६वी जयन्ती आयोजित की जा रही है। मैं इस सुखद अवसर पर सभी को अपनी शुभकामनाए भजता हू।

नई दिल्ली　　(पी० वी० नरसिंह राव)
२७ अप्रैल १९९३　　प्रधान-मन्त्री

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश का ग्रीष्म कालीन विशाल व्यायाम एवं ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर

स्थान : गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ (फरीदाबाद)

दिनांक : २८ मई से ६ जून तक

ब्रह्मचारी आचार्य आर्य नरेश जी (हिमाचल) की अध्यक्षता में होगा।

यदि आप चाहते हैं कि आर्य समाज व देश का भविष्य सुदृढ़ हो, युवा शक्ति चरित्रवान तथा महान क्रान्तिकारी हो तो आप अपने युवकों को इस शिविर में अवश्य भेजें—

शिविर उद्घाटन २८ मई को प्रातः १० बजे होगा

उद्बोधन : पूज्यपाद स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

अध्यक्ष : आचार्य हरिदेव जी (गुरुकुल गौतम नगर)

मुख्य अतिथि : श्री चमन लाल ग्रोवर (ग्रोवर संस)

उद्घाटनकर्ता : श्री निष्ठाकर आर्य जी, फरीदाबाद

ध्वजारोहण : श्री ला० युग किशोर जी अग्रवाल

समापन समारोह ६ जून रविवार प्रातः ६ बजे से होगा

अध्यक्षता : स्वामी आनन्दबोध सरस्वती (प्रधान सा० आ० प्र० सभा)

प्रमुख वक्ता : प्रो० शेरसिंह जी, स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती जी, डा० देवव्रत आचार्य (प्र० संचालक आर्यवीर दल), श्री बाल-दिवाकर हंस जी, आचार्य आर्य नरेश जी आदि होंगे।

विशेष—शिविरार्थियों द्वारा योग आसन, लाठी, जूडो कराटे, मलखम्ब, आदि अनेक व्यायामों का अद्भुत प्रदर्शन होगा।

शिविर शुल्क—१० रुपए होगा

वेशभूषा—खाकी निक्कर, सफेद कमीज, ब्राउन पलीट, सफेद जुराब, लाठी।

आवश्यक सामान—थाली, कटोरी, गिलास, लोटा, टार्च, साधारण बिस्तर आदि, आभूषणों का पहनना निषेध है।

शिविरार्थी २७ मई की रात्रि गुरुकुल अवश्य पहुंचें

२७ मई दोपहर ३ बजे बस अड्डे से फरीदाबाद की बस से सम्मिलित होकर प्रस्थान भी होगा। दिल्ली से फरीदाबाद की ओर आने वाली बसों में बदरपुर के बाद सराय ख्वाजा उतरकर गुरुकुल पैदल जाया जा सकता है।

ऋषि लंगर

समापन समारोह मे दर्शकों, एवं अतिथियों हेतु शुद्ध देसी घी के भोजन का प्रबन्ध होगा।

अपील

सभी आर्य समाजो, दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि इस विशाल कार्य में अत्यधिक धन व्यय होगा इसकी सफलता हेतु क्रास, चैक ड्राफ्ट, आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश के नाम व नगद सहयोग दें अथवा चीनी, आटा, दाल, चावल, दूध आदि के रूप में भी सहयोग दे सकते हैं।

सभी आर्य समाजों से प्रार्थना है कि ६ जून को अपनी अपनी आर्यसमाजों से एक बस बैनर झण्डे लगाकर गुरुकुल पहुंचे इस प्रकार का युवकों का मेला देखते ही बनता है तथा वहां से पिकनिक का कार्यक्रम बनाकर सूरजकुण्ड व बड़खल लेक भी जाया जा सकता है।

निवेदक :

डा.सत्यप्रकाशशर्मा (सञ्चालक)   प्रियतमदास रसवन्त (अधिष्ठाता)   ब्र.राजसिंह आर्य (मन्त्री)

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश

का०—आर्य समाज मिन्टो रोड, नई दिल्ली

श्री योगेन्द्र नारायण जी द्वारा स्व० पं० भृगुदत्त तिवारी भवन का उद्घाटन

लखनऊ, १२ अप्रैल। श्री योगेन्द्र नारायण जी ने आर्य समाज लखनऊ (गणेशगंज) द्वारा संचालित दयानन्द सेवा संस्थान मोतीनगर द्वारा निर्मित स्व० पं० भृगुदत्त तिवारी भवन के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में विशाल जनसमूह के समक्ष अपने उदगारप्रकट करते हुए आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी को महान समाज सुधारक बताते हुए कहा है कि दयानन्द सेवा संस्थान इस भवन के माध्यम से समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति करेगा। आज वास्तव में आवश्यकता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन के कुछ क्षण समाज सेवा को दे, विश्व को अपने एक परिवार के रूप में स्वीकार करें।

उन्होंने आगे कहा कि जीवन का एक उद्देश्य होता है वह अपने तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए दूसरो के कल्याण तक उसे विकसित करना चाहिए।

इससे पूर्व दीप प्रज्वलित कर मुख्य अतिथि ने समारोह का शुभारम्भ व भवन का उदघाटन किया। शिक्षण संस्थाओं के प्रधानाचार्यों ने माल्यार्पण कर मुख्य अतिथि का अभिनन्दन किया।

तत्पश्चात श्री मनमोहन तिवारी ने मुख्य अतिथि की प्रशासनिक सेवाओं की प्रशंसा करते हुए दयानन्द सेवा संस्थान व भवन की विस्तृत रूपरेखा पर प्रकाश डाला।

श्रीमती पुष्पा तिवारी ने सबसे अधिक कूपन बेचने वाली छात्रा कु० ऋचा श्रीवास्तव व छात्र श्री विशाल विरले को बाला नरम रखने वाला डिफिन मुख्य अतिथि से प्रदान कराया। प्रथम पुरस्कार के रूप में छात्र श्री विशाल विरले को हीरो रेंजर साईकिल, द्वितीय पुरस्कार, कु० ऋचा श्रीवास्तव को सान्त्वना पुरस्कार छात्र राजीव अरोड़ा को मिल्टन का कैसेट्रोल प्रदान किया गया।

अन्त में समारोह के अध्यक्ष श्री विष्णु कुमार अवस्थी ने सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

—मनमोहन तिवारी, मन्त्री/प्रबन्धक

शोक समाचार

प्रो० शेरसिंह जी की माता का देहावसान

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह की माताजी श्रीमती पातो देवी का उनके निवास स्थान रोहतक (हरि०) में २ मई को निधन हो गया। वे अपने पीछे चार पुत्र और दो पुत्रियां छोड़ गई हैं। वे इस समय ८६ वर्ष की थीं। श्रीमती पातो देवी आर्य समाज की सक्रिय कार्यकर्ता थीं। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने उनके निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए कहा कि श्रीमती पातो देवी अपने जीवन में आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में तत्पर रहीं तथा सदैव उसके संगठन को दृढ़ बनाने का कार्य करती रहीं। स्वामी जी ने परमात्मा से प्रार्थना की कि वह उनकी आत्मा को सदगति प्रदान करें और उनके पारिवारिक जनों को उनके पद चिन्हों पर चलने की शक्ति दें।

शोक सभा

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति एवं पूर्व राज्यमन्त्री भारत सरकार, प्रो० शेरसिंह जी की पूज्य माता जी के दुखद निधन पर आयोजित शोकसभा में भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए पूज्यमाता जी की आर्य समाज के माध्यम से भारी कल्याण भूमिका को सदैव स्मरण किये जाते रहने की बात कही गई।

महेन्द्र कुमार, मुख्याधिष्ठाता

सम्पादकीय

तू आगे बढ़ के देख

आत्म-शक्ति और विश्वास एक ऐसी पौरुष है जिसके आगे बढ़ने की कोई सीमा नहीं ? मगर सावधान ! जरूरत से अधिक आत्म विश्वास भी आपको हानि पहुंचा सकता है।

आपके व्यक्तित्व में यदि आत्म विश्वास का सन्तुलन नहीं है तो आप हर पग पर दुःसाहस करने लगेंगे। तब आप अपने आपको हानि पहुचा देंगे।

जैसा कि प्रसिद्ध मानस शास्त्री डा० एन. क्वेन ने कहा है कि 'आत्म विश्वास की कमी से जीवन की सार्थकता ही समाप्त हो जाती है। मगर इस शक्ति को आवश्यकता से अधिक भी बढ़ाना नहीं चाहिए।

डा० क्वेन ने आत्म विश्वास को आगे बढ़ाने के कुछ उपाय सुझाए हैं--

अपनी महत्वपूर्ण योजनाओं को पहचानिये ?

दुर्बलतायें कहां और किसके पास नहीं होतीं हैं अपनी विशेषताओं को पहचानिए और उन्हें स्नेह से अपनाइए। जरूरत हो तो उन खूबियों को नोट कीजिए। यदि वह सूची लम्बी हो जाए, तो भी कोई बात नहीं। अपने आपको पहचानिए कि मैं एक अच्छा मित्र हू, मैं ईमानदार हूं, मेहनती हूं, विश्वास करने योग्य हूं। बिना चिन्ता किए कि मेरी खूबी छोटी है या बड़ी, प्रत्येक विशेषता आपके व्यक्तित्व के निर्माण में महान योगदान दे सकती है।

अपने व्यक्तित्व को पहचानने के उपरान्त इनके उपयोग करने से मत चूकिए। फिर देखिए लोग आपकी दुर्बलताओं का ध्यान न करके विशेषताओ की ही चर्चा करेंगे। उन्हें सुन आप सदा विनम्र बने रहेंगे।

अपनी मंजिल का चुनाव करें ?

आगे बढ़ने के स्थान बहुत हैं पर उनका चयन सावधानी से करें। जिस भी मंजिल को चुने, पूर्ण पुरुषार्थ के साथ उस तक पहुंचे अवश्य ! महत्वाकांक्षी होना बुरा नहीं पर सीमा रेखा के साथ। तब आत्मविश्वास आपका बढ़ेगा। मंजिल न मिलने पर हीन भावना के शिकार भी हो सकते है।

ऊंचे सपने अच्छी बात है लेकिन शक्ति से हीन कोरी कल्पना में उड़ना बुरी बात होगी। ऊंचे पुलाव न पकाकर अपनी विवेक शक्ति का सहारा ले तो मानव चन्द्रमा पर भी जा सकता है।

अपनी योग्यता पारिवारिक पार्श्वभूमि, आर्थिक क्षमताओं को तोलते हुए सही मार्ग का अनुसरण करें। मार्ग प्रशस्त होगा, सफलता चरण चूमेगी और आत्मविश्वास में वृद्धि होगी।

असफलताओं से शिक्षा

महान व्यक्ति के व्यक्तित्व में सफलता के साथ असफलता के दर्शन भी होते हैं यही शिक्षा दर्शन है ! असफलता का सामना करना हैं उसे हटाकर ही सफलता पानी है।

असफलताओं से सदा ही शिक्षा ग्रहण करें। असफलतायें ही शिक्षक बन-कर ज्ञान का सम्वर्धन करती हैं। बशर्ते असफलता को गम्भीरता से लिया जाय। उसका विश्लेषण कर अपने को समझा जाए। अपनी असफलताओं पर आंखें बन्द न की जायें उन्हें अपने पर हावी न होने दे। किन्तु उन्हें विस्मृत भी न होने दें। सीखने का ही दूसरा नाम है आत्म विश्वास की कमाई।

सफल व्यक्तित्व की उपासना

एक बार आप अपने घर परिवार के परिजनों का सही चयन न कर सके हो परन्तु मित्रों का चयन करने में सावधानी ठीक बर्ते। जो जीवन मे उन्नति के पथ पर अग्रसर होते रहे हों। दुर्बल तो स्वयं तो मरेगा ही, पर शक्ति वाले को भी निष्प्राण बना देगा। अतः सफल व्यक्तित्व ही पर-पुरुष में महानता के गुण भरता है। जो आप में आत्म विश्वास स्वयमेव बढ़ायेगा।

वे सोचते कैसे हैं, संकट काल में कैसे निर्णय लेते हैं। उठते बैठते कैसे हैं। इसी से सीखने के सही भाव पैदा होंगे। अन्धविश्वास करना भी बुरा है बुरी बातों को अन्तस में मत आने दो, लेकिन अच्छाइयां जैसे भी मिले उन्हें ग्रहण करें।

अपने कार्य पर गर्व ?

आप जो भी कार्य करें उसे गर्व और गौरव के साथ करें। सभी का अपना-अपना स्थान है। आत्म विश्वास की हीनता ही घरों में घुस गई। आत्म विश्वास ही पुन. जैसा काम करती है गृहणियों में नौकरों के समान काम करने के समान हीन भावना समा गई है। गृहणियो को सावधान किया जाय कि जितना काम नौकर करेंगे उससे कितना रुपया व्यय होगा और काम भी ठीक नहीं होगा। गृहिणी के द्वारा किया गया कार्य उनमें आत्म-विश्वास भी पैदा होगा।

प्रशंसा पाने के लिए

अपनी प्रशंसा किसे बुरी लगेगी, हर व्यक्ति अपनी प्रशंसा सुनना चाहता है। प्रशंसा को सुनकर व्यक्ति का आत्मविश्वास अनेक गुना बढ़ जाता है। काम करने वाले अच्छे व्यक्ति मिलेंगे, पर उनके कार्य की प्रशंसा न हो तो दब्बू प्रवृत्ति के स्वभाव वाले हो जायेंगे। रहस्य केवल इतना है जो व्यक्ति दूसरे की प्रशंसा नहीं करता उसकी प्रशंसा दूसरे भी नहीं करते हैं। दूसरो की सच्ची प्रशंसा करने से न हिचकिए। झूठी प्रशंसा भी न करें। क्योंकि उसी का नाम चापलूसी है। प्रशंसा से जहां उसका आत्म विश्वास जागेगा वहीं पर आप में भी सही विश्वास की भावना पनपेगी। साथ ही दिनो दिन प्रशंसा के योग्य कार्य और करते चले जायेंगे।

सामान्य ज्ञान

किसी विशेष क्षेत्र का विशेष ज्ञान भी अपने को होना ही चाहिए। फिर जो आपके व्यवसाय के साथ सम्बन्धित हो यदि अन्य जनरल जानकारी कर ली जाय तो कोई हानि भी नहीं। गृह नक्षत्र व निहारिकाओं से लेकर समुद्र तल तक की जानकारी सामान्य रूप से हममें उपलब्ध हो सके तो इससे समाज के हर वर्ग में सफलता पूर्वक उठने-बैठने में गर्व व प्रसन्नता अनुभव करोगे।

आत्म विश्वास यदि आपका बढ़ा हुआ है तो अजनबियों में भी आप निश्चिन्त होकर मेल मिलाप पैदा कर लेंगे। बाजार मे, यात्राओं में, सभा-समारोहो मे कहीं भी आप में अपना नैतिक साहस होना चाहिए। जिसमें पराया व्यक्तित्व अपने व्यक्तित्व में परिवर्तित कर मित्रता में बदल जाय। इससे भी अपने आत्म विश्वास की वृद्धि होती है। सामाजिक जीवन में वही व्यक्ति सफलता प्राप्त करते हैं जो मैत्री भाव बनाकर आगे बढ़ते हैं।

निराशावादियों से दूर

आत्म विश्वासी बनने के लिए आपको आशावादी बनना होगा। आशा-वादी बनने के लिए निराश व्यक्तियों से दूर रहना होगा। ऐसे व्यक्तियो का साथ आपके आत्म विश्वास के लिए जहर जैसा है। निराश व्यक्तियो से दूर रहने का मतलब यह नहीं कि आप उनसे डर रहे हैं। निराशा पूर्ण जीवन में अवसर आने पर उनसे भिड़ सकें। लेकिन याद रहे कि निराश व्यक्तियो के साथ भिड़ने के लिए व्यर्थ का समय भी आप के पास नही है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जब वेद प्रचार में उतरे तो आत्मविश्वास में कमी थी जिधर जाते प्रचार का प्रभाव नही पड़ रहा था। हिमालय में आत्म चेतना जगाने के लिए तीन वर्ष तक साधना की।

इसके बाद स्वामी जी आत्म विश्वास के साथ जिधर को चले, वेदों का डंका बजता ही चला गया।

आज हम ऋषि-महर्षियो का नाम तो लेते है पर उन जैसी क्षमता व आत्म विश्वास नहीं है।

अपनी असफलताओं से भी कुछ सीखा नहीं। साथ ही अपनी महत्ताओं को जानकर भी उन्हें स्मरण भी नहीं किया। कोरे गीत गाने से भी क्या। यदि उन पर चलने का प्रयास नही किया।

मंजिल दूर नहीं है यदि मार्ग अवरुद्ध कण्टकाकीर्ण है तो समीप मंजिल भी अति दूर है।

समय के साथ समझकर चलना व्यक्तित्व के निखार के लिए परमावश्यक है और व्यक्तित्व के निखारने पर आत्मविश्वास अवश्य निखरता है।

तात्पर्य यह है कि आत्मविश्वासी बनने के लिए किसी विश्वविद्यालय से उपाधि प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं है। केवल आत्मविश्वास के साथ विचारपूर्वक आगे बढ़ने की जरूरत है।

आर्य विदेशी नहीं, भारत की सभ्यता के अंग थे

—रजन कुमार सिंह

आर्य जाति कहीं बाहर से नही आयी बल्कि यह मूल भारतीय सभ्यता एव संस्कृति का हिस्सा थी। यह मानना है अमेरिकी मानव वैज्ञानिक और पुरातत्ववेत्ता डाक्टर जे० मार्क केनोयर का। विस्कांसिन विश्वविद्यालय के मानव विज्ञान विभाग से जुड़े डा० केनोयर फिलहाल हड़प्पा मे प्राचीन स्थलो की खुदाई मे लगे हुए है।

डा० केनोयर का स्पष्ट मत है कि भारोपीय (इंडोयूरोपियन) तथा भारतीय आर्य (इंडोआयन) की परिकल्पनाओ के पीछे यूरोपीय विद्वानो का उद्देश्य अपनी श्रेष्ठता प्रतिपादित करना था और इसके लिए उन्हे स्थितिया भी अनुकूल मिली क्योकि तत्कालीन भारतीय मानस हीन भावना से इतना अधिक ग्रस्त था कि वह स्वय को पश्चिम से किसी न किसी रूप मे जोडकर ही आत्म गौरव महसूस करने लगा था।

दरअसल इस शताब्दी के तीसरे दशक मे भारतीय अन्वेषणकर्ता श्री डी आर साहनी और आर डी बनर्जी द्वारा क्रमश हड़प्पा और मोहन जोदडो की खोज से पहले तक पश्चिमी विद्वान यही कहते आये थे कि बाहर से आये आर्यों ने भारत को सभ्यता से परिचित कराया।

हालाकि हड़प्पा और खासकर मोहन जोदडो की खोज से पश्चिमी विद्वानो का यह दावा ध्वस्त हो गया फिर भी यही समझा जाता रहा कि आर्य बाहर से आये और उन्होने सिन्धु घाटी के मूल निवासियो को दक्षिण एव पूर्व की ओर खदेड दिया। इसके साथ ही एक अन्य अवधारणा ने जन्म लिया कि आर्य [illegible]र थे और हड़प्पावासी द्रविड उनके सामने टिक नही पाये क्योकि आर्यों के [illegible]ास अश्वो की गति और लोहे की शक्ति थी। जबकि हड़प्पा के लोग अब [illegible]क इनसे अपरिचित थे।

डा० केनोयर इस पूरी अवधारणा को खारिज करते हुए कहते है कि [illegible]ड़प्पा सभ्यता से जुडे विभिन्न स्थलो पर 3100 वर्ष से भी अधिक पुराने [illegible]ोहे मिले हैं जबकि बलूचिस्तान मे सबसे पुराना लोहा लगभग पौने तीन [illegible]ार साल पहले का ही पाया गया है। इसी तरह सिन्धु घाटी मे अश्वो के [illegible]वशेष प्राप्त हुए हैं जो इस तथ्य को झुठलाते हैं कि हड़प्पावासी अश्वो से [illegible]रचित नही थे।

डा० केनोयर का मानना है कि अनेक धर्मों और जातियो के लोग हड़प्पा एक साथ रहते थे। आर्य शब्द की अर्थ व्यजना की मदद लेते हुए वे कहते इन लोगो मे जो सुसभ्य और सुसस्कृत थे वही आर्य कहे गये और जो [illegible] और पिछड़ हुए थे वे अनार्य।

[illegible]सिन्धु घाटी सभ्यता की महत्ता को रेखांकित करते हुए वे कहते है [illegible]क [illegible]चीन नगर सभ्यताओ मे यह एकमात्र है जहा राजकाज के लिए सैन्य शक्ति [illegible] सहारा नही लिया गया। मिस्र से लेकर सुमेर तक की प्राचीन सभ्यताओ [illegible] ऐसे अनेक अवशेष मिले हैं जिनमे राजा अथवा उसके दूत मारते पीटते [illegible]ए [illegible]पाये गये हैं जबकि ऐसा कोई भी चित्र सिंधु घाटी के किसी भी अवशेष नही पाया गया।

वैसे डा० केनोयर का मानना है कि प्राचीन भारतीय सभ्यता केवल सिंधु [illegible]ी मे ही नही पनपी बल्कि सिन्धु घाटी सभ्यता के समानांतर एक अन्य [illegible]यता घाघरा हाकड़ा घाटी मे भी पनपी। ज्ञातव्य है कि सरस्वती इसी [illegible]धरा की शाखा थी। उन्होने दावा किया कि हरियाणा स्थित राखीगढी तथा [illegible]कस्तान के गनवेरीवाला आदि क्षत्रो मे हुए अन्वेषण कार्यों मे इस तथ्य की [illegible]ट हुई है जबकि इन क्षत्रो मे अभी बहुत काम किया जाना शेष है।

बहरहाल डा० केनोयर के अनुसार प्रागैतिहासिक भारत मे राजनीति [illegible] धर्म अलग अलग नहीं थे। उनका मत है कि हड़प्पा मोहन जोदडो आदि [illegible]शासक अपने रिश्तेदारो के साथ राज काज चलाते थे। यह शासन धर्म के [illegible]र होता और धर्म से ही नियन्त्रित होता। शासक परिवार की जनसख्या [illegible]बढ जाती उनमे से कुछ पचास साठ आम जनो की टोली के साथ कही [illegible] जा बसते और वहा अपनी नयी शासन व्यवस्था स्थापित करते। डा० [illegible]यर के शब्दो मे शासक वर्ग धर्म से एकताबद्ध और सम्बन्ध से विभाजित

हड़प्पा के साहिवाल जिले मे किये जा रहे अन्वेषण कार्यों की जानकारी देते हुए वे बताते है कि यहा के कुछ कब्रगाहो से प्राप्त प्रागैतिहासिक अवशेषो से पता चलता है कि हड़प्पाकाल की महिलाओ को पुरुषो से श्रेष्ठ नही भी तो उनके बराबर का दर्जा तो अवश्य प्राप्त था। अस्थियो के अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि ये महिलाए कद काठी मे पुरुषो से किसी तरह कम नही थी। डा० केनोयर बताते हैं कि अस्थियो के टूटे होने पर कभी तो यह तय कर पाना कठिन हो गया कि यह पुरुष की अस्थिया हैं अथवा महिला की।

सबसे दिलचस्प बात जो सामने आयी वह यह कि किसी एक कब्रगाह से प्राप्त महिलाओं की हड्डियो मे जहा आनुवंशिक समानता मिलती हैं वहीं पुरुषो की हड्डयो मे ऐसा कुछ नही मिलता। इससे स्पष्ट है कि हड़प्पा युग मे विवाह के बाद पुरुष ही अपनी पत्नी के घर जाकर रहते थे।

एक अन्य बात जो प्राचीन भारतीय सभ्यता और विश्व की अन्य समका लीन सभ्यताओ से पृथक करती है वह है—अन्य सभ्यताओ में जहा किसी व्यक्ति की मृत्यु के बाद उसके स्वर्णाभूषणो आदि को उसके शव के साथ ही दफना दिया जाता था वही हड़प्पा मे स्वर्णाभूषणो को एक पीढ़ी अपनी अगली पीढी के लिए विरासत मे छोड जाती। आभूषणो को मन्दिरो मे दान करने अथवा व्यापार मे लगाने की प्रथा भी थी। डा० केनोयर के अनुसार ऐसा इसलिए कहा जा सकता है क्योकि अस्थि अवशेषो के साथ कही भी स्वर्ण आदि नही मिले हैं।

अपने अन्वेषण कार्य के बारे मे वे बताते हैं कि हड़प्पा पुरातत्व अनुसंधान परियोजना नामक यह कार्य पाकिस्तान के पुरातत्व विभाग के सहयोग से चलाया जा रहा है। अमेरिकी पुरातत्ववेत्ता डा० केनोयर के अलावा न्यूयार्क विश्वविद्यालय की प्रो० रीटा राईट शामिल है। वे इस परियोजना पर 1986 से ही काम कर रहे हैं और उम्मीद है कि उनका यह कार्य अगले पाच छह सालो तक चलेगा।

(7-3-91 नवभारत से साभार)

प्राकृतिक जीवन का आधार है शाकाहार

लेखक—राम निवास लखोटिया

यह सर्वविदित है कि सारे विश्व में एक से एक भयकर और नये रोग उत्पन्न हो रहे हैं और बढ़ रहे हैं जिससे अनगिनत व्यक्ति असाध्य बीमारियों से आक्रांत होकर काल के ग्रास हो रहे हैं। यदि कुछ व्यक्ति जीवित भी रह जाते हैं तो वे जीवित ही मरे के समान जीवन यापन कर रहे हैं। और, इसके साथ ही साथ बढ़ रही है संख्या अस्पतालों की व डाक्टरों की। अब प्रश्न यह उठता है कि इसका मूल कारण क्या है। इस स्थिति की गहराई में जाने से संसार के महान चिकित्सकों और वैज्ञानिकों ने अब यह पता लगा लिया है कि इसका मूल कारण है हमारी जीवन पद्धति का अप्राकृतिक होना। उसी का नतीजा हुआ है कि अधिकांश लोग अप्राकृतिक भोजन करने लगे हैं। यदि हमें पुनः स्वास्थ्य लाभ करना है तो हमें अपने जीवन को प्राकृतिक जीवन के अनुरूप ढालना होगा जिससे हमें जीवन जीने का आनन्द भी प्राप्त होगा और सुख तथा स्वास्थ्य-लाभ भी और पैसे की बचत भी। पाश्चात्य देशों के वैज्ञानिकों ने अब इस बात को स्वीकार कर लिया है कि अच्छे स्वास्थ्य का आधार यदि कोई जीवन पद्धति हो सकती है तो वह केवल "शाकाहार" जीवन पद्धति ही हो सकती है न कि मासाहारी जीवन पद्धति।

शाकाहार के विपरीत मांसाहार जीवन पद्धति का आधार है हिंसा। और, हिंसा भारत का और संसार के विभिन्न धर्मों का कभी भी आधार नहीं रहा। यदि हम भारत के सांस्कृतिक इतिहास की ओर दृष्टिपात करें तो यह स्पष्ट प्रतीत होगा कि हमारी जीवन पद्धति का एवं संस्कृति का आधार रहा है हमारा आध्यात्मिक जीवन। आध्यात्मिक जीवन का आधार है योग। और, योग मे विशेषकर राजयोग मे पतंजली ऋषि के अष्टांग योग में जो योग के आठ अंग बताये हैं उनमें यम और नियम प्रमुख हैं। और, यमों में सबसे प्रथम यम जो वह है 'अहिंसा' अर्थात् जीवदया और अकारण किसी भी जीव को कष्ट नहीं पहुंचाना और उसकी हत्या नहीं करना, उसे मारना या मारकर खाने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। इसलिये यदि हमे प्राकृतिक जीवन यापन करना है एवं स्वास्थ्य लाभ करना है तो हमें अहिंसा को अपनाना पड़ेगा और अहिंसा को अपनाने का अर्थ हुआ "शाकाहार जीवन' पद्धति।

शाकाहार ही प्राकृतिक भोजन

यदि मनुष्य शरीर की रचना की ओर ध्यान दे तो हमे यह स्पष्ट प्रतीत होगा कि ईश्वर ने मनुष्य के शरीर की रचना शाकाहारी के रूप मे की है। जैसे मांसाहारी जानवरो की शरीर रचना यदि हम देखें तो हमें पता लगेगा कि उनके लम्बे-लम्बे नुकीले दांत होते हैं जिनसे उन्हें मांस खाने में और कच्चे मांस को फाड़ने में आसानी रहती है। इसके विपरीत गाय, बैल, बन्दर, घोड़े आदि के चपटे दांत होते हैं जिससे वे शाकाहारी भोजन को आसानी से चबा सकते हैं। ठीक इसी प्रकार मासाहारी जानवरो की जीभ खरदरी होती है जिससे उन्हें हड्डी में से गोश्त को निकालने मे तकलीफ नहीं होती। मांसाहारी जानवरों की आंतें उनके शरीर के अनुपात मे लगभग दुगनी होती हैं ताकि वे शीघ्र ही अपने शरीर से गन्दगी को बाहर कर सकें। इसके विपरीत शाकाहारी जानवरों की आंतें उनके शरीर के अनुपात में ६ से ७ गुनी अधिक लम्बी होती हैं। अब मानव शरीर की रचना पर हम ध्यान दें तो पता लगेगा कि मनुष्य के भी चबाने वाले दांत ठीक उसी प्रकार से चपटे हैं जैसे कि शाकाहारी जानवरों के होते हैं। इसी प्रकार हमारी आंतें भी शरीर की लम्बाई के अनुपात में शाकाहारी जानवरो की भांति ६ से ७ गुनी लम्बी होती है। इससे यह सिद्ध होता है कि ईश्वर ने मानव शरीर की रचना शाकाहारी प्राणी के रूप में ही की है। इसलिए शाकाहार ही मनुष्य का प्राकृतिक आहार है।

स्वास्थ्य एवं पोषण

अक्सर मांसाहारी व्यक्ति और कुछ भ्रमित डाक्टर भी यह कहने में नहीं हिचकते कि मांसाहार में प्रोटीन आदि अधिक मिलता है इसलिए स्वास्थ्य के लिये मांसाहार अच्छा है। इसी कारण कई शाकाहारी भ्रमित हो जाते हैं। लेकिन असली बात यह है कि यह केवल भ्रम है। जैसा कि विश्वभर के डाक्टरों ने यह साबित कर दिया है कि शाकाहारी भोजन ही उत्तम स्वास्थ्य के लिये सर्वश्रेष्ठ है। फल-फूल, हरी सब्जी, विभिन्न प्रकार की दालें, बीज, एवं दूध से बने पदार्थों आदि से मिलकर बना हुआ सन्तुलित आहार भोजन में कोई जहरीले तत्व पैदा नहीं करता। उसका प्रमुख कारण यह है कि जब कोई जानवर मारा जाता है तो वह मृत पदार्थ बनता है। लेकिन यह बात सब्जी के साथ लागू नहीं होती। यदि किसी सब्जी को आधा भी काट दिया जाये और उसका आधा भाग जमीन में गाड़ दिया जाये तो वह पुनः सब्जी या पेड़ के रूप में उग जायेगी। यह इसलिये सभव है क्योंकि वह एक जीवित पदार्थ है। यही बात एक भेड़, मेमने या मुर्गे के लिये नहीं कही जा सकती। अन्य विशिष्ट स्त्रोतों से यह पता चला है कि जब किसी जानवर को मारा जाता है तब वह इतना भयभीत हो जाता है कि भय से उत्पन्न जहरीले तत्व उसके सारे शरीर में फैल जाते हैं और जहरीले तत्व मास के रूप मे उन व्यक्तियो के शरीर में पहुंचते हैं जो उन्हें खाते हैं। हमारा शरीर उन जहरीले तत्वो को पूर्णतया निकालने में सामर्थ्यवान नहीं है। नतीजा यह होता है कि उच्च रक्तचाप, दिल व गुर्दे आदि की बीमारी मांसाहारियों को जल्दी आक्रांत करती है। इसलिये यह नितांत आवश्यक है कि स्वास्थ्य की दृष्टि से हम पूर्णतया शाकाहारी रहें। अब आइये उन तथाकथित आंकड़ो को भी जाचें जो मासाहार के पक्ष में दिये जाते हैं। जैसे प्रोटीन की ही बात लीजिए। अक्सर यह दलील दी जाती है कि अण्डे एवं मास में प्रोटीन, जो शरीर के लिये आवश्यक तत्व है, अधिक मात्रा में पाया जाता है। किन्तु यह बात कितनी गलत है इस बात से साबित होती है कि सरकारी आकड़ों के अनुसार ही १०० ग्राम अण्डों में जहां १३ ग्राम प्रोटीन होगा वहीं पनीर में २४ ग्राम और मूंगफली में ३१ ग्राम और दूध से बने हुए पदार्थों में तो इससे भी अधिक प्रोटीन होता है। अब केलोरी की बात लीजिए। जहा १०० ग्राम अण्डों में १०० केलोरी व मुर्गे के गोस्त में १६५ केलोरी प्राप्त होती है वहीं दालों की इसी मात्रा मे ३३० केलोरी, मूंगफली मे ४५० केलोरी और मक्खन निकले दूध एवं पनीर मे ३४८ केलोरी प्राप्त होती है। फिर अण्डो की बजाय दालें आदि सस्ती भी हैं। अब कोलेस्ट्राल की बात लीजिए। १०० ग्राम अण्डों मे कोलस्ट्रोल की मात्रा ५५० मि. ग्रा. है और मुर्गी के गोस्त में ६० है। तो वही कोलस्ट्रोल सभी प्रकार के फलों, सब्जियो, मूंगफली आदि मे ग्न्य है। शाकाहारी भोजन स्वास्थ्य के लिये लाभप्रद है या नहीं यह बात हम कुछ शाकाहारी जानवरो के उदाहरण देकर साबित कर सकते हैं जसे गेंडा हाथी, घोड़ा, ऊंट आदि। उसका उत्तर है हा और वे शाकाहारी है।

शाकाहारी होटल के खाने से सावधानी

पंचतारा होटल की सभ्यता हमारे देश में अपना एक विशिष्ट स्थान ले चुकी है। आज के बदलते परिवेश में यह तो संभव नहीं कि हम होटल में जाकर भोजन न करें। लेकिन हां हम शाकाहारी यदि कुछ बातो का ध्यान रखें तो भूल से होने वाले मांसाहार से बच सकते हैं। जैसे रशियन सलाद को ही लीजिए। अक्सर उसमें अण्डे का कुछ सफेद या पीला भाग जिसे "मियोनिज" कहते हैं मिलाया जाता है। इसी प्रकार अधिकांश केक और पेस्ट्रीज में अण्डे का मिश्रण होता है। इसलिये शाकाहारियो को चाहिये कि वे इस प्रकार के भोजन को ग्रहण करने से पहले पूरी तरह से तहकीकात कर लें व उनसे सावधान रहें। यहां तक कि सूप के बारे मे भी पूर्ण रूप से तहकीकात कर के ही सूप लेना चाहिये क्योंकि अधिकाश सूप में अण्डे या हड्डी की मिलावट होती है।

विश्व बुद्धिवादी शाकाहारी

कई बार शाकाहारी परिवारों के नवयुवक इसलिये मांसाहारी बन जाते कि वे समझते हैं कि मांसारी होना बुद्धिवादी होने की निशानी है। लेकिन यह कितना गलत है यह इससे मालूम होगा कि संसार के महान बुद्धिवादी शाकाहारी थे। जैसे, लियोनार्दो दविन्ची, अरस्तु, प्लेटो, शेक्सपियर, पी. एल. हक्सले, आइनस्टीन, जार्ज बरनार्डशा, एच. सी. वेल्स, मिसेज एनी बेसेंट, जुलियन हक्सले, लियो टालस्टाय, शैली, रूसो, इमरसन आदि बुद्धिवादी शुद्ध शाकाहारी थे।

अतएव हमारा यह कर्तव्य है कि प्राकृतिक जीवन पद्धति या प्राकृतिक चिकित्सा में विश्वास रखने वाले सभी व्यक्ति शुद्ध शाकाहारी बने रहें। और, शाकाहारी बनने के लिये उन्हें धूम्रपान एवं नशीली वस्तुओं का भी त्याग करना चाहिए।

आधुनिक वैज्ञानिक युग में वेद की प्रासंगिकता (३)

—आचार्य डा० विशुद्धानन्द शास्त्री

आज भूतकाल का अशोक चक्र, 'सत्यमेव जयते' की मुद्रा वापस लौट आये, मत्स्य मालव सौराष्ट्र ये भूतकाल के नाम लौट आये। आर्य भट्ट और रोहिणी खगोल यान के रूप मे लौट आये हुए अतीत के समुज्ज्वल प्रतीक हैं। समुद्री बेडे पर 'शन्नो वरुण' ये वैदिक मन्त्र उल्लिखित हो रहे हैं। डाक के टिकटो पर प्राचीन देवी देवता और महापुरुषो के चित्र लौट आये।

सब कुछ लौट सकता है केवल उसके लिये सुदृढ सकल्प शक्ति और विचार शक्ति होनी चाहिए। हृदयो मे अतीत के प्रति अटूट और अबाध श्रद्धा चाहिए। हमारे नेताओ के मन और मस्तिष्को ने वेद के विषय मे कुछ भी नही जाना। न इनके कभी सस्कार रहे। इसलिये वेद की ओर लौटना इन्हें खलता है और इस वैज्ञानिक कम्प्यूटर युग वेद के महान सार्वभौम सिद्धातो की अप्रासगिकता प्रतीत होती है। यदि ससार वेदो की ओर न लौटा तो यह अशान्ति, छल कपट प्रपच की गन्दगी का महादानव शीघ्र ही इस रही सही मानवीयता को अपनी जठराग्नि का भोजन बना लेगा। कालमार्क्स और लेनिनवाद का साम्यवाद और कोरा गाधीवाद, रोटी कपडा और मकान की पूर्ति के पागल नारो से ईर्ष्या, द्वेष, वैमनस्य, ऊच, नीचता के भावो की नरकाग्नि को बुझाकर इस धरा पर स्वर्ग नही लाया जा सकेगा। स्वार्थ और विलासिता परमार्थ और सयम का पाठ देने वाली इस वैदिकी शिक्षा को दिये बिना दूर नही किये जा सकते—

ईशावास्यमिद सर्वं यत् किञ्च जगत्या जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद् धनम्॥

इन भावो को हृदय मे बिठाकर आचरण मे लाना होगा कि अन्याय से किसी का धन मत मार। ईश्वर ससार का नियन्ता है।

सहृदय साम्मनस्यमविद्वेष कृणोमि व।
अन्योऽन्यमभिहर्यत वत्स जातमिवाघ्न्या। अथर्व।

कि हे मनुष्यो! तुमको सहृदय, विचारो का सामजस्य करने वाले एक दूसरे के विचारो सहिष्णुता के साथ विचार करने वाला हितैषी होना चाहिए। परस्पर ऐसा हित करो जैसे गौ अपने बछडे से करती है।

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सम्भ्रातरो वावृधु सौभगाय।
युवा पिता स्वपा रुद्र एषा सुदुघा पृश्नि सुदिनामरुद्भ्य।
ऋग्वेद ॥ ५। ६०। ५॥

सभी मनुष्य भाई समान हैं। कोई छुटाई, बडाई नही सब मिलकर सौभाग्य के लिए बढ़ें। ईश्वर सबका मित्र है और समानी प्रपा सह वोऽन्नभाग समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि।

सब मनुष्यो का भोजन, खान-पान, जीवन-साधन समान हो, नियम कानून एक से हो। सब एक नेतृत्व मे चलें। जैसे पहिये की नाभि में अरे लगे रहते हैं। ऐसे सुन्दर वैदिक जीवनादर्श है जिनकी आज महती आवश्यकता और प्रासगिकता है।

(४) अब कतिपय विचारको के इस मन्तव्य पर लगे हाथो विचार किया जा रहा है कि 'मृत भाषा सस्कृत" मे लिखे वेदो के पुन प्रसार का कोई औचित्य नही।

ऐसे चिन्तको से हम पूछना चाहते हैं कि अब देश मे स्थापित पुरातत्व विभाग भूगर्भ की खुदाई करके मोहन जोदडो जैसे नगरो से प्राप्त अवशेषो से जो जड हैं, विश्व के लिए कुछ ऐतिहासिक व सास्कृतिक तत्व प्रस्तुत करना चाहता है, मिश्र के मुर्दों के पिरामिडो से उस समय के सास्कृतिक सन्देशो को प्राप्त करने मे जुटा हुआ है और इन भाषा, देश सभ्यता और सस्कृतियो के खण्डहरो मे प्राप्त अवशेषो की तलाश मे लगाये समय, धन और शक्ति, श्रम को अपव्यय नही समझता। तो निर्विवाद रूप से विश्वभाषाओ की जननी, विश्वभर के आदि ज्ञान वेद के गरिमामय वाङ्मय को अपने आचल मे समेटे, अभिनव-कल्पना और काव्य, गद्य साहित्य को अपने अग मे सुरक्षित प्रश्रय देने वाली सस्कृत भाषा मृत कैसे कही जा सकती है?

जिसके मन्त्र वैज्ञानिक बुद्धि की पराकोटि, ऋषि की बुद्धि कसौटी पर परखे हुए हैं। उन वेदो के विषय में भी यदि कदाचित पाश्चात्य दासता-विभूत होने के कारण भारतीय मानस पाश्चात्यो की ही सम्मति से प्रेरणा लेने का अभ्यस्त हो गया है, तो इसके निरसन मे कतिपय विद्वानो की सम्मति प्रस्तुत करते है—

प्रसिद्ध जर्मन विद्वान श्लेगल अपने वैदिक साहित्य के प्रथम सस्करण मे लिखता है—'वेद ससार मे सबसे प्राचीन ग्रन्थ है और उनका समय निश्चित नही किया जा सकता। इनकी भाषा भारतीयो के लिए भी उतनी ही कठिन है जितनी विदेशियो के लिए।' दूसरा जर्मन विद्वान वेबर स्पष्ट कहता है—'वे उस तिथि के बने हुए हैं, जहा तक पहुचने के लिए हमारे पास उपयुक्त साधन नही हैं। वर्तमान प्रमाण राशि हम लोगो को उस समय के उन्नत शिखर पर पहुचने मे असमर्थ हैं।

स्वर्गीय पण्डित सत्यव्रत सामश्रमी ने अपनी 'त्रयी चतुष्टय' की भूमिका मे लिखा है कि वेदो मे फोटोग्राफी, फोनोग्राफी गैस लाइट टेलीग्राम, टेलीफोन प्रभृति विज्ञानो का स्पष्ट वर्णन है।

जन्दावस्ता, बाइबिल, कुरआन् उनके निर्माताओ के अनुभव और जीवन-गाथाओ के सकलनमात्र हैं अनित्य इतिहास हैं। परन्तु वेद 'तस्मै नूनमभिद्यवे वाचा रूपनित्यया'। 'वृष्णे मोदस्व सुष्टुतिम्' अर्थात् तू ज्ञानवान् सर्वज्ञान निधान प्रभु की नित्यवाणी वेद से उत्तम प्रार्थना या उपदेश कर।

वेद के विषय मे—प्रो० हीरेन महोदय लिखते हैं—

जिस प्रकार वेद देदीप्यमान हैं, इस प्रकार अन्य कोई ग्रन्थ नही बन सकता। वे मनुष्य मात्र की उन्नति और प्रगति के लिए दिव्य प्रकाशन स्तम्भ का काम देते हैं।

(हिस्टोरिकल रिसर्चिज वाल्यूम ११, पी १२७)

वदिक धर्म केवल एक ईश्वर का प्रतिपादन करता है। यह एक पूर्णतया वैज्ञानिक धर्म है। यहा धर्म और विज्ञान हाथ मे हाथ डालकर चलते हैं। वेदो के धार्मिक सिद्धात विज्ञान और दर्शन पर आधारित हैं। (दी सुपीरियरिटी आफ वैदिक रिलीजन) श्री डब्ल्यू० डी० ब्राउन

अमरीकन महिला व्हीलर विलौक्स के विचार भी इस विषय मे देखिये—

हमने प्राचीन धर्म के विषय मे पढा और सुना है। यह उन महान वेदो की भूमि है जो अद्भुत ग्रन्थ हैं। इनमे न केवल जीवनोपयोगी धर्म तत्वो का वर्णन है, अपितु उन तथ्यो का भी प्रतिपादन है जिन्हें विज्ञान ने सत्य सिद्ध किया है।

अत यह निर्विवाद तथ्य है कि वेद सब सत्य विद्याओ की पुस्तक है', इसीलिए महर्षि ने कहा —'वेद का पढना-पढाना सब आर्यों का परम धर्म है।

हमने प्रमाण तर्क और युक्तियुक्त विवेचन के आधार पर इस वैज्ञानिक युग मे वेदो की न केवल प्रासगिकता ही सिद्ध की है अपितु वेद शिक्षा का प्रचार और प्रसार करना मानवता के सरक्षण के लिए परम अनिवार्य है। यह भी सिद्ध किया है।

मधु विद्या, अमृतमयी, सजीवनी विद्या, आकर्षण विद्या सूर्य चन्द्र ग्रहण विज्ञान, सृष्टि विद्या, स्वास्थ्य विज्ञान, दर्शन, मातृभूमि भक्ति, तप, विश्व-प्रेम, ब्रह्म विद्या आदि समस्त भौतिक जीवनाधारो पर वेद मे अपार सामग्री सन्निहित है। अत विश्व के साहित्य मे एकमात्र वेद ही ऐसी पुस्तक है, जिस पर मानवमात्र की भावनात्मक एकता हो सकती है, क्योकि वेद उस समय का है जब न अन्य देश बसा था न अन्य भाषा थी, न जाति बनी थी। मानवमात्र एक था।

गम्भीर चिन्तक विनोबा जी ने भी एक बात कही थी— अध्यात्म मे सबसे प्राचीन का महत्व है, विज्ञान मे सबसे अर्वाचीन का अतएव कभी भी प्राचीनतम साहित्य वेद की प्रासगिकता प्रलयान्त भी समाप्त नही हो सकती। क्योकि विज्ञान केवल मस्तिष्क की अनुसन्धानात्मक, रचनात्मक या ध्वसात्मक प्रवृत्ति का परिणाम है। जबकि वेद हृदय और मन के अनुरागात्मक पक्ष का विकास और आत्मिक समुन्नति का आधार है। कदाचित् विज्ञान सामाजिक विकास मे पिता के समान पोषक हो, परन्तु वेद माता के अतुल प्रेम की गरिमा के पालने मे सर्वतोमुखी उन्नति का आश्रय है।

इसीलिए आचार्य शकर ने भी कहा 'माता पितृसहस्रेभ्यो हितैषी वेद।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

क्या वेदों में जनक पुत्री सीता का उल्लेख है ?

—डा० भवानीलाल भारतीय

राजस्थान पत्रिका के १९ जुलाई १९९२ के अक मे डा० उर्मिला देवी शर्मा का एक लेख "जगज्जननी सीता का स्वरूप" प्रकाशित हुआ है। विदुषी लेखिका ने यह दिखाने का असफल प्रयास किया है कि वेदो मे रामायणकालीन जनक पुत्री सीता की चर्चा है। इस लेख का प्रथम वाक्य ही अत्यन्त भ्रामक है, जो इस प्रकार है—"यदि हमे जगज्जननी सीता के स्वरूप को सर्वागीण रूप मे समझना है तो वेदो के पृष्ठ पलटना अनिवार्य है।" हमारा निवेदन है कि सीता के बारे मे जानने के लिये तो वाल्मीकीय रामायण के पृष्ठो को पलटना चाहिये न कि वेदो के पृष्ठ। कोई भी प्राचीन या अर्वाचीन, पाश्चात्य अथवा पौरस्त्य, सनातनधर्मी या आर्यसमाजी वेदज्ञ यह नही मानता कि वेदो मे त्रेताकालीन राम सीता आदि की चर्चा है। जिन वेदो को सभी शास्त्रकारो ने परमात्मा का अनादि ज्ञान कहा, जो ईश्वर के निश्वसित होने के कारण परम प्रमाण माने गये, मीमासको ने जिन्हें अपौरुषेय कहा, तथा वेदान्तियो ने ब्रह्म को जिनका कारण बताया, उन वेदो मे अवरकालीन पात्रो की चर्चा होना कथमपि सम्भव नही है। जो ऐतिहासिक दृष्टि से वेदो तथा रामायण के रचना काल का विचार करते हैं, उनकी भी यही सम्मति है कि वेदो का रचना काल रामायण का पूर्ववर्ती है। स्वय रामायण मे राम को वेदशास्त्रो का ज्ञाता कहा गया है। पुन. यह कहने मे क्या तुक है कि सीता का उल्लेख वेद सहिताओ मे मिलता है।

'रामायण महाकाव्य सर्ववेदेषु सम्मतम्' का अर्थ तो इतना ही है कि रामायण ग्रन्थ मे उल्लिखित शिक्षायें तथा उपदेश वेद सम्मत है तथा रामादि पात्रो के चरित्र और आदर्श भी वेदानुकूल है। इसीलिये लोक मे प्रचलित है—रामादिवत वर्तितव्यम् न रावणादिवत्। अर्थात् हमारा आचरण राम के तुल्य हो न कि रावण के समान। इस वाक्य का यह अर्थ लेना कि रामायण की कथा मूल वेद मे है, घोड़े के आगे गाडी जोतने के समान है।

स्वय लेखिका ने ऋग्वेद के उस मन्त्र को उद्धृत किया है जिसमे 'सीता' शब्द का तो प्रयोग हुआ है किन्तु इस शब्द का राम की पत्नी से दूर का भी सम्बन्ध नही है। ऋग्वेद के चतुर्थ मण्डल का यह सत्तावनवा सूक्त है जिसमे कृषिकर्म की चर्चा है। यह कृषि विज्ञान का दिग्दर्शक सूक्त है। प्रथम मन्त्र मे क्षेत्रपति (खेत के स्वामी किसान) का वर्णन है। तृतीय मन्त्र मे हल, बैल आदि का उल्लेख है। छठे मन्त्र मे जिस सीता का वर्णन है वह हल की फाल का प्रतीक है। स्वय लेखिका ने माना है कि सारे ऋग्वेद मे इन दो मन्त्रो (मण्डल ४ सूक्त ५७ मन्त्र ६, ७) मे ही 'सीता' शब्द आया है। वह यह भी स्वीकार करती हैं कि इन ऋचाओ का देवता (सब्जेक्ट मेटर) 'क्षेत्रपति' अर्थात् किसान है, अत भाष्यकारो ने सीता का अर्थ एक ऐसी रेखा बताया है जो जमीन की जुताई करते समय हल की फाल के अन्दर धसने से स्वत बन जाती है। 'इस सत्य अर्थ को स्वीकार करके भी लेखिका का पूर्वाग्रह उसे बराबर इस बात के लिये विवश करता है कि वह वेदो मे रामपत्नी सीता की तलाश करे। इसलिये वह यह लिख बैठती है कि यहा सीता तथा जानकी (जनक की पुत्री) मे अभेद है। निवेदन है कि भाष्यकार सायण ने भी इस सूक्त को कृषि कर्म परक माना, किन्तु माधवाचार्य तथा कालूराम आदि दुराग्रही पौराणिको ने वेदो के उपर्युक्त तथा तत्सदृश अन्य मन्त्रो से राम, सीता, दशरथ, रावण आदि अर्वाक्कालीन पात्रो का अर्थ निकालने का दुराग्रह किया।

आगे के विवेचन मे लेखिका ने रामायण के उन श्लोको को उद्धत किया है जिनमे जनक के मुख से कहलाया गया है कि खेत जोतते समय मैंने सीता नाम की .स प्रशसित पुत्री को प्राप्त किया। इसी कथा के आधार पर सस्कृत वाङमय मे अन्यत्र सीता को भूमिजा पृथिवी पुत्री जैसे नामो से सम्बोधित किया गया है। निवेदन है कि वर्तमान उपलब्ध रामायण मे सीता को 'अयोनिजा तथा 'भूमिजा कहना या लिखना यही सिद्ध करता है कि इस ग्रन्थ मे परवर्ती काल मे अनेक प्रक्षेप हुए हैं तथा नाना किवदन्तिया प्रक्षिप्त कर दी गई है। सत्य तो यह है कि वेद मे 'सीता शब्द का प्रयोग जिस कृषि कर्म प्रसग मे हुआ है, उसे ही लक्ष्य मे रख कर क्षेपककार ने जनक द्वारा हल जोतते समय सीता की प्राप्ति की कथा गढ डाली। यह प्रयास वैसा ही है जैसा कि वेद के विष्णुपरक मत्र— इद 'विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम्'(१।२२।१७) को देखकर पुराणकारो ने विष्णु का वामन अवतार तथा उसके द्वारा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को तीन डगो मे नाप लेने की कथा का उपबृहन किया।

आगे लेखिका ने जो पद्म, भविष्य तथा ब्रह्म पुराण वर्णित सीता विषयक कथाओ की चर्चा की है, वह सर्वथा प्रासगिक है। उनसे भी सीता का वेदोक्त होना सिद्ध नही होता। वस्तुत जब कोई लेखक किसी मन्तव्य विशेष का अत्यन्त आग्रही हो जाता है तो वह सत्य असत्य, न्याय्य तथा उसके विपरीत, औचित्य-अनौचित्य मे भेद नही करता। लेखिका की भी यही दशा है। उसने तो कालिदास के कुमार सम्भव की इस पक्ति के साथ भी अन्याय किया है जिसमे सीता और इन्द्र का अर्थ कृषि कर्म प्रसग मे ही घटित होता है। यहा श्लेष की अनावश्यक कल्पना कर वह लिखती है कि इस पक्ति मे कालिदास का भी यही आशय था कि जैसे राक्षसो द्वारा सताई गई प्रतिबधिता सीता को रावण के चगुल से राम ने छुडाया आदि। निवेदन है कि कवियो की मनोरम कल्पना युक्त काव्य रचनाओ का हम लक्षणा आदि का सहारा लेकर इस प्रकार का कपोल कल्पित अर्थ करने लगे तब तो बिहारी के शृगार रस से चुहचुहाते दोहो का भी भक्ति और शान्तरसपरक अर्थ करने मे क्या अनौचित्य है।

इसी प्रकार शतपथ ब्राह्मण मे (४, ५, ७, ६) आये सीता शब्द को भी त्रेताकालीन सीता के साथ जोडना क्लिष्ट कल्पना तथा वाग्विलास ही है। लेखिका ने स्वीकार किया है कि वेद मे 'जानकी' शब्द नही है किन्तु जनक शब्द है। यह तो एक सामान्य बात है कि 'जनक' का अर्थ पिता होता है। मिथिला देशीय राजाओ के लिये जनक शब्द का प्रयोग परवर्ती है। वेदो की संहिताओ मे मिथिला के किसी राजा की कोई चर्चा नहीं है। ब्राह्मण तथा उपनिषदो मे निश्चय ही ऐतिहासिक उपस्थान है, अत. उनमे 'जन को ह वैदेही बहुदक्षिणेन यज्ञेनेजे" आदि वाक्य विदेह राज जनक के लिये आये हैं। मिथिला के सभी राजा 'जनक' पद वाची थे। उसी प्रकार जिस प्रकार इग्लैण्ड के शासक जार्ज जेम्स, एडवर्ड आदि नामो से प्रसिद्ध है। इनमे ही रामकालीन तथा सीता के पिता सीरध्वज जनक थे।

लेखिका का यह कथन तो और भी हास्यास्पद है, जब वह लिखती हैं कि कौशिक सूत्र मे सीता पूजन की जो विधि है और उसमे सीता (खेत मे खिची रेखा) के चारो ओर जो परिधि बनाई जाती है वह लक्ष्मण द्वारा खीची रेखा ही है। कल्पसूत्रो के विधि विधान वेद और ब्राह्मण ग्रन्थो के विधि वाक्यो पर आश्रित हैं न कि रामायण जैसे ऐतिहासिक ग्रन्थ पर। वेदोक्त इन्द्र को राम का वाचक तथा वेदोक्त वायु को हनुमान का प्रतीक कहना नितान्त हास्यास्पद ही नही वेदो जैसे आर्य जाति के सर्वस्व तथा ईश्वर के अनादि निधन ज्ञान का मखौल करना है। दिवगत स्वामी गगेश्वरानन्द जी ने भी वैदिक देवताओ के ऐसे ही पुराण प्रसिद्ध देवताओ के वाचक अर्थ किये थे और वेद मन्त्रो में राम, हनुमान कृष्ण राधा आदि का उल्लेख बताया था। इन्द्र अहिल्या के ब्राह्मण वर्णित कथानक का रहस्य स्वामी दयानन्द ने स्वरचित ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका मे बताया है। शतपथ ब्राह्मण मे इन्द्र सूर्य का वाचक तथा अहिल्या रात्रि का प्रतीक है। अत इस उपस्थान के आधार पर परवर्ती पौराणिको ने इन्द्र के अहल्या के साथ जार कर्म करने आदि के अश्लील प्रसग जिस प्रकार कल्पित किये वे सर्वथा निन्दनीय ही कहे जायेंगे। अन्तत लेखिका ने अथर्ववेद के अयोध्या का वर्णन करने वाले जिस मन्त्र अष्टचक्रा नवद्वारा देवाना पूरयोध्या को उद्धृत किया क्या वह यह बताने के लिये पर्याप्त नहीं है कि वेदो मे जिस अयोध्या का वर्णन है वह न तो त्रेताकालीन राम की राजधानी है और न आज के फैजाबाद जिले का नगर। वह तो आठचक्रो वाले और नव द्वारो वाले मानव शरीर का ही प्रतीक है।

रामायण पर कार्य करने वाले जर्मन विद्वान जैकोबी के मत को यदि स्वीकार करें तब तो हमारा सारा इतिहास ही रूपक (Attegory) हो जायेगा। तब न राम रहेगा और न सीता। न पाण्डव बचेंगे न कृष्ण। ये सभी ऐतिहासिक पात्र अलकार य रूपक ही रह जायेंगे। क्या हम यूरोपीय विद्वान के उच्छिष्ट भोजी बन कर अपने ऐतिहासिक पुरुषो को कल्पनालोक मे विलीन कर दें। पाश्चात्यो के ऐसे ही दुस्साहस पूर्ण प्रयासो पर टिप्पणी करते हुए कृष्णचरित के महान् व्याख्याकार बकिमचन्द्र चटर्जी ने लिखा था —

(शेष पृष्ठ ९ पर)

धर्म क्या है ?

—स्व० स्वामी समर्पणानन्द जी

सूर्य उदय हुआ है या नहीं, यह बात कह कर बतानी नहीं पड़ती। प्रकाश और गर्मी स्वयं इस बात का परिचय देते हैं कि सूर्योदय हो गया। इसी प्रकार यदि कोई मनुष्य धर्मात्मा हो तो उसका परिचय यह कहकर नहीं दिया जा सकता कि वह मनुष्य धर्मात्मा है, क्योंकि उसने सौ बार नाम का जाप किया है, हजार बार गायत्री जपी है, एवं वह नित्य धर्म पुस्तक का पाठ करता है। कोई मनुष्य सचमुच धर्मात्मा है या नहीं इसका पता इस बात से लगता है कि उसके चारों ओर रहने वालों पर उसके व्यवहार से कोई सुखदायक प्रभाव पड़ता है या नहीं। अपने चारो ओर की अवस्थाओं में परिवर्तन धर्मात्मारूपी सूर्य की धूप है। बस, यदि हम यह जानना चाहें कि हम धर्मात्मा हैं या नहीं, तो हम अपने इस जाप और पूजा पाठ से नहीं नाप सकते। लैम्प में प्रकाश है या नहीं, इसे हम इस बात से नहीं नाप सकते कि उसमें पूरा तेल भरा है या नहीं। लैम्प के प्रकाश का माप केवल इस बात से हो सकता है कि उसके चारो ओर का अन्धकार दूर हुआ है या नहीं। सूर्य बिना तेल-बत्ती के प्रकाशमान है। एवं बुझा हुआ दीपक तेल बत्ती के होते हुए भी प्रकाशहीन है। इसी प्रकार कई मनुष्य पूजा-पाठ के बिना भी धर्मात्मा हैं, वे सूर्यवत हैं और कई मनुष्य पूजा पाठ करते रहने पर भी धर्महीन हैं। वे पाखण्डी है। परन्तु साधारण मनुष्यों मे लैम्प के समान प्रकाश उत्पन्न करने के लिए पूजा-पाठ रूपी तेल बत्ती की आवश्यकता रहती है। जो मनुष्य साधारण होते हुए भी पूजा-पाठ से तथा सत्सग से हीन हैं उसका दिया भी बुझा रहता है। यह बात दूसरी है कि उनके दिये बुझने का कारण पाखण्ड का धुंआ नहीं, अभिमान की आंधी है। दिया धुंए से बुझे चाहे आंधी से—इससे उनके प्रकाशहीन होने में कुछ अन्तर नहीं आता। जिस मुहल्ले में तुम रहते हो यदि उसकी नालियां दुर्गन्धयुक्त हैं और चारो ओर कीचड़ सड़ रहा है, मच्छरो की बस्तियां बस रही हैं, लोग मैले-कुचैले अनपढ़, रोगों के मारे और निर्धनता के सताये हैं, और तुम इन अवस्थाओं में परिवर्तन करने के लिए कुछ नहीं कर रहे हो तो मत समझो तुम धर्मात्मा हो। चाहे तुम कितनी लम्बी समाधि भी लगाते हो, जितना भजन-कीर्तन करते हो, कितने घण्टे-घड़ियाल बजाते हो, और कितनी सामग्री फूंक देते हो, तो भी धर्मात्मा नहीं हो। यदि तुम्हारे मन्दिर की आरती ने, तुम्हारी लम्बी सन्ध्याओं ने और तुम्हारी पांच नमाजों ने तुम्हारी आखों को गरीबों का दुःख देखने के लिए, तुम्हारे कानो को उनकी दर्द भरी आहें सुनने के लिये और तुम्हारे हाथों को उनके कष्ट-निवारण के लिए विवश नहीं किया तो तुम आंखे रखते भी अन्धे हो, कान रखते भी बहरे हो, हाथ रखते भी लूले हो। संसार मे आज तक जितने भी महात्मा धर्म का प्रचार करते आए, वह इस ही समवेदना की भावना का प्रकाश तुम्हारे दीए बत्ती मे जलाते आये है। पादरी लोग जब कहते हैं कि मसीह ने अन्धों को आंखें दी, बहरों को कान दिये, लुले लंगड़ो को हाथ-पैर दिये, तो वह उस महात्मा के कारनामों को ठीक रूप में पेश नहीं करते। संसार के सभी महात्माओं ने अन्धों को आंखें दी, बहरों को कान दिये, लूले-लंगड़ों को हाथ-पैर दिये। पर इस जमाने संसार ने काम, क्रोध, मोह, लोभ, आलस्य, प्रमाद आदि के घोर विष से अपने आपको अन्धा, बहरा, लूला, लंगड़ा बना डाला।

जिस समय महात्मा पुरुषों की प्रेरणा से जागृत हुई समवेदना की भावना हमें अपने चारों ओर फैली हुई बिगड़ी अवस्था का परिवर्तन करके इस धरती को साफ सुथरी और आनन्द भरी बनाने के लिए कटिबद्ध करती हैं। उस समय हमारी खोई हुई आंखें वापिस मिल जाती है, हमारे बहरे कान सुनने लगते हैं, और हमारे कटे हाथ-पैर फिर हरे हो जाते हैं। बस, जहां यह अपने चारो ओर की अवस्था को सुखमय दशा में परिवर्तन करने की प्रबल भावना जीती है, वही धर्म है। यही धर्म का स्वरूप है।

वैज्ञानिक युग में वेद

(पृष्ठ ६ का शेष)

महर्षि दयानन्द की दृष्टि में वेद जीवनाधार हैं, तत्वज्ञान का मूलाधार वेद हैं तथा वर्णाश्रम धर्म के मूल प्रवर्त्तक वेद हैं।

महान हर्ष की बात है वेदानुसन्धान परिषद' की स्थापना भारत सरकार ने की है, उसी के साथ महाशोक का विषय है कि नई शिक्षा नीति से संस्कृत का समूलोन्मूलन भी कर दिया गया। फिर मौलिक संस्कृत शब्दों की व्युत्पत्ति के अभाव में यह अनुसन्धान कैसे सक्षम होगा ? इस प्रकार इस अनुसन्धान परिषद पर यह एक प्रश्नवाचक चिन्ह लग गया। एतदर्थ भारत ही नहीं अपितु विश्वमात्र के मानव की आत्मा को शान्ति और अमित—चिरस्थायी सुख का सन्देश सुनाने के लिए संस्कृत को समुज्जीवित रखना होगा।

विदेश समाचार

आर्य समाज सत्य सनातन वैदिक प्रकाश, ऐमस्टरडेम, नीदरलैण्ड में वेद प्रचार

(१) महर्षि दयानन्द जन्म दिवस समारोह १७ फरवरी १९९३ को स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म दिवस व बोधरात्रि बड़े धूमधाम के साथ मनाया गया। इस अवसर पर बृहद यज्ञ पं० बंसराज छोटकन जी के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। स्वामी जी के जन्म व चरित्र सम्बन्धित (भजन) व ओजस्वी गान श्रीमती रुक्मिणी शुभ धन व श्रीमती जगरानी सीताराम के माध्यम से हुआ।

जगदीश व दीपक गजाधर, उम्र १० व १२ वर्ष ने कथा सुनाकर हिन्दी भाषा के प्रति अनुरक्ति पैदा की।

महर्षि के जीवन चरित्र और उनकी देन के विषय में आर्य समाज ग्रीन पार्क, नई दिल्ली के पुरोहित आचार्य गजानन्द शास्त्री ने मधुर शैली से प्रवचन किया।

(२) होलिकोत्सव पर बृहद यज्ञ—

७ मार्च १९९३ को पं० त्रिवेणी महादेव जी के द्वारा बृहद् यज्ञ सम्पन्न हुआ। इस यज्ञ में विशेष मन्त्रों से "होलक" की आहुति प्रदान की गई।

होली के विशेष संगीत स्त्री समाज की ओर से श्रीमती रुक्मिणी शुभधन, श्रीमती जगरानी सीताराम व श्रीमती वैदेही महेश के द्वारा गाया गया।

होलिकोत्सव की प्राचीन काल से चली आ रही महत्ता पर वैदिक रीति से आचार्य गजानन्द शास्त्री ने विशेष प्रकाश डाला। जिससे जनता ने विशेष जानकारी प्राप्त कर आत्म गौरव महसूस किया।

१९, २० व २१ मार्च को वेद प्रचार सप्ताह—

आर्य समाज सत्य सनातन वैदिक प्रकाश, ऐमस्टरडेम, नीदरलैण्ड का वेद प्रचार सप्ताह बड़े ही धूम-धाम के साथ सम्पन्न हुआ। जिसमें निम्नलिखित कार्यक्रम थे—

(क) १९ मार्च को पं० सुन्दर प्रसाद शुभधन जी ने मधुर शैली से मन्त्रोच्चारण कर, यज्ञ की ब्रह्मा पद पर सुशोभित हो वेद प्रचार सप्ताह का उद्घाटन किया।

२० मार्च को श्रीमती वैदेही महेश ने मधुर व सस्वर वेद मन्त्र का उच्चारण कर यज्ञ की ब्रह्मा पद को सुशोभित किया। २१ मार्च को पं० रामराज जी ने वेद मन्त्र का उच्चारण कर यज्ञ की पूर्णाहुति कराई।

(ख) स्त्री समाज की ओर से श्रीमती रुक्मिणी शुभधन श्रीमती जगरानी सीताराम श्रीमती विद्यावती शर्मा, श्रीमती वैदेही महेश एवं पं० कुबेर जी ने पृथक्-पृथक् मधुर स्वर से भजन गाकर जनता को मन्त्रमुग्ध कर दिया।

(ग) बालकों के विशेष कार्यक्रम में जगदीश, उम्र १२ वर्ष एवं दीपक गजाधर उम्र १० वर्ष ने कथा के माध्यम से बच्चों में उत्साह बढ़ाया।

(घ) वेद प्रचार सप्ताह के लिये विशेष विषयों पर प्रवचन का आयोजन किया गया। जिसको आर्य समाज ग्रीन पार्क, नई दिल्ली-१६, भारत के पुरोहित आचार्य गजानन्द शास्त्री ने मधुर शैली से प्रवचन कर जनता का मन मोह लिया। प्रवचन का विषय निम्न रहा—

१—ईशोपनिषद् के माध्यम से सम्भूति और असम्भूति की महत्ता।

२—महर्षि पतञ्जलि के अनुसार योग के मार्ग के यम की परिभाषा।

३—मानव जीवन से आत्मतत्व अनुभूति।

इस प्रकार आर्य समाज के समस्त अधिकारी आर्य समाज एवं वेद के प्रचार प्रसार करने के लिए, हमेशा ही प्रयत्नशील रहते हैं।

तीनों दिन अर्थात १९, २० व २१ मार्च को भोजन का प्रबन्ध स्त्रीसमाज (सत्य सनातन वैदिक प्रकाश) द्वारा किया गया था।

—पण्डित एस. शुभधन

जनक पुत्री सीता

(पृष्ठ ७ का शेष)

"मैं यह जानता हू कि संस्कृत साहित्य या शास्त्रो मे रूपक हो या नहीं, पर उन्हे रूपक बना कर उड़ा देना बहुत लोग पसन्द करते हैं। राम के नाम में रम धातु और सीता के नाम में सि धातु है, इसलिये रामायण कृषि कार्य का रूपक है। जर्मनी के विद्वान इसी तरह के दो चार धातुओं का सहारा लेकर ऋग्वेद के सब सूक्तो को सूर्य और मेघो का रूपक मानते है।'

इस लेख के आगे का विवेचन मात्र वाणी विलास ही है, जहाँ कहीं पर लेखिका ए० बी० कीथ का प्रमाण देकर हनुमान को वृष्टिकारक वायु का देवता मानती है। पुराणों में तो हनुमान को वायु पुत्र कहा ही गया है। अन्यत्र वह वेद को इतिहास का पोषक कहती है और निरुक्त का वाक्य उद्धृत कर वेदो को आख्यान संयुक्त बताती है। किन्तु विचारणीय यह है कि क्या वैदिक आख्यान अनित्य लौकिक इतिहास है या नित्य प्राकृतिक घटनाओं का वर्णन करने मे प्रयुक्त नित्य इतिहास। आर्यसमाज के स्वामी ब्रह्ममुनि, वैद्यनाथ शास्त्री, चमूपति आदि विद्वानो ने इस विषय पर विस्तार से लिखा है। निष्कर्ष हम डा० उर्मिला के इस कथन से अपनी असहमति व्यक्त करते हैं कि इतिहास की वैदिक स्त्रोतस्विता को मानना अनिवार्य है। इतिहास तो एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। हमारे प्रत्यक्ष देखें कल के गांधी और नेहरू आज इतिहास के पुरुष बन गये, यदि त्रेता के राम और सीता का स्त्रोत वेद है तो क्या गांधी और नेहरू का भी वैदिक उद्गम हम तलाशेंगे।

उत्तरीय अमेरिका में आर्य समाज स्थापना दिवस सम्पन्न

रविवार ११ अप्रैल १९९३ को उत्तरीय अमेरिका आर्य समाज संस्थान (The arya samaj foundation of north america) के तत्वावधान में १७०९, वर्च रोड, मैक्लीन (वर्जीनिया) स्थित डा० इन्द्र के. भट्ट के निवास स्थान पर आर्य समाज स्थापना दिवस २॥ से ५ बजे सायं तक बड़े हर्षोल्लास के वातावरण में मनाया गया। जिसमें दूर दूर नगरों से पधारे तथा सौ के लगभग धर्मप्रेमी पुरुष महिलाओं तथा बच्चों ने भाग लिया।

विशेष यज्ञ के उपरान्त संस्थान की अध्यक्षा श्रीमती उषा सैनी, स्नातिका (जो अमेरिकन विश्वविद्यालय वाशिंगटन में संस्कृत हिन्दी विभाग की भी अध्यक्षा हैं) ने वर्ष १८७५ में बम्बई में महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा आर्य-समाज की स्थापना तथा उसके मुख्य उद्देश्य, उसकी उपलब्धियां, वेदों की सार्वभूमिकता, वैदिकयज्ञ में भिन्न भिन्न आहुतियों का अभिप्राय तथा उन मन्त्रों का सरल अर्थ आदि गम्भीर विषयों की अत्यन्त सुन्दर ढंग से व्याख्या की।

समारोह में उपस्थित चार बालकों तथा बालिकाओं ने अपने संक्षिप्त भाषणों में गत ११८ वर्षों में सोई हुई हिन्दू जाति को पुनर्जाग्रत करने, वेद विद्या के प्रचार प्रसार, स्त्री शिक्षा, छुआ छूत उन्मूलन, सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध निरन्तर अभियान चलाने आदि राष्ट्रहितकारी कार्यों में आर्य समाज के अभूतपूर्व योगदान पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम के अन्त में संस्थान के वरिष्ट सदस्य श्री धीर कुन्दरा ने प्रचलित मान्यताओं तथा वैदिक धर्म के सर्वोच्च सिद्धान्तों की तुलनात्मक समीक्षा प्रस्तुत करते हुये सिद्ध किया कि संसार भर में केवल वेद ही एक सच्चा ईश्वरीय ज्ञान है जो वास्तव में एकीश्वरवाद, मानव के सच्चे परस्पर भ्रातृभाव तथा सद्गुण, सद्विचार तथा सदाचरण धारण करने की प्रेरणा देता है।

कार्यक्रम शांतिपाठ तथा प्रसाद वितरण के साथ ठीक ५॥ बजे सम्पन्न हुआ।

संयोजक, सम्वाददाता :

—त्रिलोकीनाथ भट्ट

वधु की आवश्यकता

अनमोल रत्न ब्रह्मचर्य

ब्र० ओमदेव आर्य गुरुकुल
ऐरवा कटरा (इटावा)

ब्रह्मचर्य शब्द बड़े उत्तम विचारो से ओत-प्रोत है। वास्तव में ब्रह्मचर्य शब्द मे दो ही शब्द है। एक ब्रह्म दूसरा चर्य दोनो का अर्थ बहुत ही सुन्दर है। ब्रह्म का अर्थ ईश्वर, वेद, वीर्य चर्य का अर्थ चिन्तन, अध्ययन, रक्षण तो सामूहिक अर्थ बना ईश्वर चिन्तन वेदाध्ययन, वीर्य रक्षण। इन सब में वीर्य रक्षण ही सर्वोत्कृष्ट हैं। तथा इसके उपरान्त ही ईश्वर चिन्तन तथा वेदाध्ययन सम्भव है क्योकि यदि हमारी इन्द्रिया सासारिक विषय वासनाओ की ओर भागेगी तो हमारी वेदादि सत्शास्त्रो का पढ़ना निरर्थक हो जायेगा। वीर्य को सच्चे अर्थों मे धारण कर ही हम महापुरुष बन सकते हैं। वीर्य से भ्रष्ट पुरुष कभी महापुरुष तथा महात्मा नही बन सकता। अतैव हमे अपना यदि वास्तविक कल्याण करना है। तथा मानव जीवन के लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त करना है तो ब्रह्मचर्य का पालन मनसा, वाचा, कर्मणा करना होगा। यदि हम सच्चे अर्थों मे ब्रह्मचारी नहीं है। तो उन्नति पथ को नहीं प्राप्त कर सकते। ब्रह्मचर्य के सम्बन्ध मे महाभारत मे एक प्रसग आता है। पितामह भीष्म युधिष्ठिर से कहते हैं कि —

ब्रह्मचर्यस्य च गुण शृणुत्वम् वसुधाधिप ।
आजन्ममरणाद्यस्तु ब्रह्मचारी भवेदिह ॥१॥
न तस्य किञ्चिदप्राप्यमिति विद्धिनराधिप ।
बह्व कोटयस्तवृषीणाम् च ब्रह्म लोके वसन्त्युत ॥२॥
सत्येरतानाम् सतत दान्तानामूर्ध्वरेत साम ।
ब्रह्मचर्यं दहेद्राजन् सर्वं पापान्युपासितम् ॥३॥

हे राजन ! तू ब्रह्मचर्य के गुन सुन जो मनुष्य जन्म से लेकर मरण पर्यन्त ब्रह्मचारी होता है। उसको कोई शुभ गुण अप्राप्त नहीं रहता बहुत करोड़ ऋषि इस ब्रह्मचर्य के प्रताप से ब्रह्म लोक मे वास करते हैं। जो निरन्तर सत्य मे रमण करते हैं। तथा इन्द्रियो को विषयो से हटाकर उर्ध्वरेता हो गये है वे ब्रह्मचर्य के प्रबल प्रताप से सब पापो को दग्ध कर देते हैं। ब्रह्मचर्य महिमा महान है। अथर्ववेद मे तो एक सूक्त मे इसी की महिमा भरी पड़ी है। एक स्थान पर कहा गया है कि ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघनत् अर्थात् ब्रह्मचारी मृत्यु को जीत लेता है। क्योकि एक कवि कहता है।

बीमारी और मौत हमेशा कमजोरो को खाती है। जिसके तन ताकत होगी वह पास न उसके आती है बन्धुओ ! यदि हम बल हीन है। या रोगी हो तथा विषय रूपी बादलो ने यदि घेरा हो तो हम प्रयत्नपूर्वक ब्रह्मचर्य का पालन करके पुन शक्ति प्राप्त कर सकते है। इसके लिए हमे नित्य प्रति साय प्राय उस परमेश्वर की मन से सन्ध्या वन्दन आदि करना होगा। क्योकि बिना सन्ध्या वन्दन के बुद्धि सत मार्ग की ओर प्रेरित नहीं हो सकेगी और हमको साय प्रात अपना आत्म निरीक्षण करना होगा कि हमने कितनी मा बहिनो को कुदृष्टि से देखा तथा हम ब्रह्मचर्य के पालन मे कितने सफल हुए इस प्रकार निरन्तर प्रयत्न रत रहन से हमारा आत्मिक कल्याण होगा जिन्होने ब्रह्मचर्य का पालन किया उनका आत्मिक कल्याण हो गया। ब्रह्मचर्य के विषय मे शकर कहते हैं—

न तपस्पतमित्याहु ब्रह्मचर्यं तपोत्तमम ।
उर्ध्वरेता भवेद्यस्त स देवो न तु मानुष ॥

अर्थात् जो लोग ससार मे तप की अनेक प्रकार व्याख्याए करते हैं। वास्तव मे ब्रह्मचर्य ही सर्वोत्तम तप है। जो ब्रह्मचर्य का पालन करके उर्ध्वरेता बन गये हैं। मनुष्य नही बल्कि साक्षात् देव हैं।

संस्कृत कम्प्यूटर भाषा बनेगी : पाणिनि व्याकरण के हर सूत्र का साफ्टवेयर तैयार

नई दिल्ली ७ मई (वार्ता) कम्प्यूटर के रूप मे संस्कृत के इस्तेमाल के सिलसिले में इलैक्ट्रानिकी विभाग ने पाणिनि व्याकरण के हर सूत्र का पूरा साफ्टवेयर विकसित कर लिया है। विभाग का दावा है कि इस साफ्टवेयर के सहारे संस्कृत का हर शब्द, रूप तथा धातु रूप 'तैयार' किया जा सकता है। इसके लिये सम्पूर्ण पैकेज विकसित कर लिए गए हैं।

विभिन्न विश्वविद्यालयो और संस्थानो मे संस्कृत तथा अन्य भारतीय भाषाओ का साफ्टवेयर तैयार करने के प्रयास चल रहे हैं। संस्कृत कम्प्यूटर कार्यक्रम मुख्यत पुणे स्थित इलैक्ट्रानिकी विभाग के संस्थान सी डेक द्वारा तैयार किए गए हैं।

पिछले तीन वर्ष के दौरान संस्कृत से सम्बन्धित परियोजनाओ के लिए सरकार ने ५८ १२ लाख रुपए की राशि उपलब्ध कराई।

संस्कृत कम्प्यूटर परियोजनाओ के तहत अब तक हुई उपलब्धियो मे संस्कृत भाषा के मूल पाठ का पूरा विकास शामिल है। इसमे आठ लाख से भी अधिक अधिकारी शब्दो का पाठ रखा गया है।

इलैक्ट्रानिकी विभाग के अनुसार शब्द भेद के सम्बन्ध म संस्कृत वाक्यो का विश्लेषण करने के लिए पद परिचय भी विकसित कर लिया गया है और लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली मे भी पूर्व के विद्यार्थियो के लिए कम्प्यूटर शिक्षण को एक विषय के रूप मे शामिल किया गया है।

उल्लेखनीय है कि अमरीकी कम्प्यूटर वैज्ञानिको ने १९८५ में अपने अनुसंधान के बाद यह दावा किया था कि संस्कृत सर्वश्रेष्ठ कम्प्यूटर भाषा सिद्ध हो सकती है क्योंकि यह नियमो पर आधारित भाषा है।

इलक्ट्रानिकी विभाग ने १९८६ में पाणिनि व्याकरण के अभिकलनात्मक प्रतिपादन तथा मशीनी अनुवाद के लिए संस्कृत भाषा पर काम शुरू किया था जिसके प्रारम्भिक परिणाम बहुत उत्साहवर्धक रहे हैं।

पुणे के आधुनिक कम्प्यूटर विकास केन्द्र ने अपने अध्ययन के दौरान धातुओ से आरम्भ होने वाले संस्कृत शब्दो तथा वाक्यो को सुव्यवस्थित ढग से तैयार करने वाक्यो तथा शब्दो का विश्लेषण करने और उनकी पहचान पर विशेष ध्यान दिया।

भाषा संसाधन के कार्यकलापो को बेहतर बनाने तथा सचालित करने की दृष्टि से इलैक्ट्रानिकी विभाग ने भाषा संस्थानो तथा कम्प्यूटर क्षेत्र मे विशेषज्ञता रखने वाले संगठनो को भारतीय भाषा प्रौद्योगिकीय विकास कार्यक्रम के जरिए एक मंच दिया है।

संस्कृत मे सूचना संसाधन से सम्बन्धित चार बड़ी परियोजना शुरू की गई हैं जिन्हें अलग-अलग संस्थान चला रहे हैं। वाराणसी के सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय को संस्कृत के मूल पाठ का विकास करने और संस्कृत शास्त्र मे सूचना संसाधन व रचना का पता लगाने की जिम्मेदारी सौंपी गई है।

मन्त्रालय के अनुसार जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय इस परियोजना मे विद्यापीठ को मदद दे रहा है।

इस विद्यापीठ, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ तिरुपति और गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार मे भाषाविदो तथा कम्प्यूटर वैज्ञानिकों को संस्कृत व्याकरण, न्याय, मीमांसा तथा निरुक्त से परिचित कराने के लिए पाठ्य सामग्री तैयार की जा रही है।

कर्नाटक मे मेलकोट की संस्कृत अनुसधान अकादमी मे कम्प्यूटर पर आधारित अनुसधान मे संस्कृत के उपयोग पर अध्ययन किया जा रहा है।

मन्त्रालय के अनुसार यूरोपीय समुदाय के देशो को कम्प्यूटर साफ्टवेयर के निर्यात पर जोर देने के लिए भारत और यूरोपीय समुदाय मे साफ्टवेयर सेवा सहायता और शिक्षा केन्द्र स्थापित करने का एक समझौता हुआ है।

यह केन्द्र बंगलूर मे स्थापित किया जायगा। इसका उद्देश्य देश मे सूचना प्रौद्योगिकी मे सुधार लाना तथा इसके सामरिक महत्व के प्रति जागरूकता बढ़ना भी होगा।

इलैक्ट्रानिकी विभाग के अनुसार उड़ीसा की राजधानी भुवनेश्वर मे साफ्टवेयर प्रौद्योगिकी पार्क बनाया जा रहा है जिसमे ६४ किलोबाइट प्रति सैकण्ड की क्षमता का एक भूकेन्द्र स्थापित करने का निर्णय लिया गया है।

श्री वीरेन्द्र जी 'पंजाब' की धर्मपत्नि दिवंगत

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्रजी की धर्मपत्नी श्रीमती राज लक्ष्मी देवी का गत सप्ताह उनके निवास स्थान जालन्धर मे निधन हो गया। उनके निधन से आर्य समाज की गहरी क्षति हुई है। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने उनके निधन पर दुःख प्रकट करते हुए कहा कि वे एक सुयोग्य गृहिणी थीं। उन्होने अपने जीवन मे सदैव आर्य समाज के आदर्शों का पालन किया। स्वामी जी ने परमात्मा से प्रार्थना करते हुए कहाकि वह उनकी आत्मा को सदगति प्रदान करे और वीरेन्द्रजी तथा उनके पारिवारिक जनो को इस महान वियोग को सहन करने की शक्ति दें।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०४६/६१ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१६-५-१९९३) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (C) ९३
R N. 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U (C) 93 Post in N.D.P.S.O.on 13 14-5-1993

स्कूलों में नमाज के लिए छुट्टी देने के निर्णय पर हंगामा

नई दिल्ली, ५ मई। केरल के स्कूलों में शुक्रवार को नमाज पढ़ने के लिए छुट्टी रखने की खबरों पर लोकसभा में आज काफी देर तक हंगामा होता रहा और भारतीय जनता पार्टी तथा केरल के सांसदों के बीच झड़पें भी हुईं।

भा. ज. पा. के सदस्यों ने केरल सरकार के इस निर्णय को वहां होने वाले लोकसभा उपचुनाव के अवसर पर मतदाताओं को प्रभावित करने वाला और मुस्लिम तुष्टीकरण का एक और सबूत बताया, वहां केरल के सांसदों ने इसे बहुत सामान्य और अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा करने वाला कदम बताया।

यह मामला भारतीय जनता पार्टी के श्री राम नाईक ने शून्यकाल के दौरान उठाया और कहा कि ओट्टपालम क्षेत्र से लोकसभा के उपचुनाव के दौरान मतदाताओं को प्रभावित करने के लिए केरल सरकार ने सभी स्कूलों में शुक्रवार को नमाज पढ़ने के लिए छुट्टी रखने की घोषणा की है।

उन्होंने कहा कि केरल सरकार के निर्णय के अनुसार सभी मुस्लिम स्कूलों में शुक्रवार को अनिवार्य रूप से छुट्टी रहेगी व अन्य स्कूलों में उस दिन दोपहर को नमाज की छुट्टी रखी जाएगी। श्री नायक ने कहा कि केरल सरकार का यह फैसला अल्पसंख्यकों के तुष्टीकरण का एक और उदाहरण है और इससे धर्मनिरपेक्षता को आघात लगा है।

पूर्व प्रधानमन्त्री श्री चन्द्रशेखर ने भी इन खबरों पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि अगर यह सही है तो यह धर्मनिरपेक्षता नहीं, सरकार की अवसरवादिता है और इसे किसी भी हालत में ठीक नहीं कहा जा सकता। उन्होंने कहा कि अगर इस आदेश पर अमल हुआ तो पूरे देश में इसकी प्रतिक्रिया होगी।

सदन में इस पर कुछ देर तक हंगामा होता रहा और भा. ज. पा. व कांग्रेस के सदस्यों के बीच कटाक्ष व छींटाकशी भी होती रही।

मणिपुर में साम्प्रदायिक हिंसा में २०० लोगों के मरने की खबरों पर भी लोकसभा में आज चिन्ता व्यक्त की गई। भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने तो यहां तक कहा कि मणिपुर की राज्य सरकार स्थिति पर नियन्त्रण कर पाने में असफल रही है इसलिये वहां राष्ट्रपति शासन लागू किया जाए।

मणिपुर के हालात का मामला जनता दल के श्री शहाबुद्दीन ने उठाया और कहा कि वहां अन्य जिलों में भी हिंसा फैल गई है।

(हिन्दुस्तान ६-५-९३)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित

सत्यार्थप्रकाश पत्राचार प्रतियोगिता

—: पुरस्कार :—

प्रथम : ११ हजार द्वितीय : ५ हजार

तृतीय : २ हजार

न्यूनतम योग्यता : १०+२ अथवा अनुरूप

आयु सीमा : १८ से ४० वर्ष तक

माध्यम : हिन्दी अथवा अंग्रेजी

उत्तर पुस्तिकायें रजिस्ट्रार को भेजने की अन्तिम तिथि ३१-८-१९९३

विषय :

महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश

नोट :—प्रवेश, रोल नं०, प्रश्न-पत्र तथा अन्य विवरण के लिए देश में मात्र बीस रुपये और विदेश में दो डालर नगद या मनीआर्डर द्वारा रजिस्ट्रार, परीक्षा विभाग सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नयी दिल्ली-२ को भेजें। पुस्तक अगर पुस्तकालयों, पुस्तक विक्रेताओं अथवा स्थानीय आर्य समाज कार्यालयों से न मिलें तो तीस रुपये हिन्दी संस्करण के लिये और पैंसठ रुपये अंग्रेजी संस्करण के लिये सभा को भेजकर मंगवाई जा सकती हैं।

(२) सभी आर्य समाजों एवं व्यक्तियों से अनुरोध है कि इस तरह के हैंडबिल ४-५ हजार छपवाकर आर्यजनों, स्थानीय स्कूल कालेजों के अध्यापकों और विद्यार्थियों में वितरित कर प्रचारबढ़ाने में सहयोग दें।

डा० ए०बी० आर्य
रजिस्ट्रार

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान

श्री मदन गोपाल खोसला जी के निधन पर शोक सभा

आज देश की अवस्था को देखकर मन को बड़ा दुःख होता है और इस अवस्था को सही दिशा केवल आर्य समाज ही दिखा सकता है इसलिए आर्य बन्धुओं उठो और सारे हिन्दू समाज को एकत्रित कर उनकी कुरीतियों को दूर कर के सही मानों में राम राज्य की स्थापना करें। यह उद्गार आर्य जगत के नेता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान माननीय श्री स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती ने सोमवार ३-५-९३ को एक विशाल शोक सभा में अपने अध्यक्षीय भाषण में कहे, यह सभा म० कृष्ण हाल जोर बाग (नई दिल्ली में जोर बाग समाज के प्रधान श्री मदन गोपाल जी खोसला के निधन पर आर्य समाज, सनातन धर्म सभा, वैदिक संस्थान तथा गुरुकुल गौतम नगर तथा जोरबाग ऐसोसिएशन की ओर से संयुक्त रूप में शोक सभा का आयोजन किया गया था। पूज्य स्वामी जी की अध्यक्षता में भिन्न-भिन्न संस्थाओं की ओर से उनके प्रमुख अधिकारियों ने दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धाञ्जली दी, इनमें श्रीमती ऊषा शास्त्री, आचार्य हरिदेव, श्री रत्नप्रकाश गुप्त, प्राणनाथ, राजशरण दास, भूपसिंह आदि प्रमुख नेताओं ने खोसला जी के जीवन की प्रमुख घटनाओं पर प्रकाश डाला आर्य समाज द्वारा संचालित "दयानन्द घाट" निजामुद्दीन में खोसला जी के योगदान की प्रशंसा की अन्त: में सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध जी ने अपने सारगर्भित, मार्मिक शब्दों में महाराणा प्रताप की वीरता को जतलाते हुए बताया कि समय और परिस्थितियों के बदलने से यहां के वीर पुरुष भी अपनी शक्ति और सामर्थ्य से अपना योगदान देकर महान बन जाते हैं उनमें से हमारे खोसला जी भी एक है और वह सदैव आर्य समाज के सेवा क्षेत्र में अपना स्थान स्थापित कर गए हैं मुझे उनमें सेवा की वृत्ति आर्य समाज की शताब्दी समारोह में देखने को मिली यह वीर पुरुष दिन रात एक करके घर के कार्यों की परवाह न कर समारोह को सफल बनाने में लगे रहे ऐसी हस्तियों की आर्य समाज को आवश्यकता है मैं उनके परिवार जनों से अनुरोध करूंगा कि वह उस ज्योति को बुझने न दें अन्त में विजय कुमार बत्रा मन्त्री आर्य समाज जोरबाग ने सबका धन्यवाद किया विशेष रुप से पूज्य स्वामी जी का जो लगभग दो घन्टे शोक सभा में विराजमान रहे।

प्रचार मन्त्री, आर्य समाज जोरबाग

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन दिल्ली-२ से प्रकाशित।

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

महाराणा प्रताप जयन्ती अंक

सम्पादक

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष । ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे

वर्ष ३१ अंक १५] दयानन्दाब्द १६९ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९४ ज्येष्ठ शु० २ सं० २०५० २३ मई १९९३

स्वाभिमानी प्रताप

खाऊं न परतन्त्रता की स्वर्ण की न थालियो मे ।
भले है स्वतन्त्रता के दोना - पात ढाक के ॥
मुझ पर हो लगोटी फटी-रानी पर हो धोती फटी ।
बच्चे तरसे रोटी - रोटी शीश न झुकाऊंगा ॥

महाराणा प्रताप की दृढ़ता, अकबर की कूटनीति और आज की राजनैतिक परिस्थितियां

महाभारत युद्ध में कौरवों और पांडवो की आपसी कलह के कारण भारत की जो हानि हुई उसका शब्दों द्वारा वर्णन करना बहुत कठिन है। रामायण का सुनहरी समय जब अयोध्या के ताज को एक तरफ से राम ठोकर मारते थे और दूसरी ओर से भरत। राजसिंहासन के इस त्याग के कारण मर्यादा पुरुषोत्तम राम का नाम ८ लाख वर्ष से जन-जन की जीभा पर नाच रहा है। महाभारत काल में भाई-भाई की आपसी शत्रुता के कारण ही १८ अक्षहिणी सेना मारी गई और बड़े-बड़े योद्धा, महारथी तथा महापुरुष भी इस युद्ध में समाप्त हुए, तभी से भारत में गिरावट शुरू हुई। जहां महाभारत काल तक आर्यों का स्वतन्त्र चक्रवर्ती राज्य था और वैदिक धर्म का चारो ओर प्रचार था वहीं महाभारत के बाद जो गिरावट आनी शुरू हुई उसके कारण वैदिक धर्म का ह्रास होते होते वाम मार्ग तक पहुंच गया। उस समय चन्द्रगुप्त जैसे अनेक राजाओं ने भारत की रक्षा की और विदेशियों को बाहर निकालने का काम किया। समय ने फिर पलटा खाया और १८ वर्षीय युवक मोहम्मद बिन कासिम ने विदेशी आक्रान्ता के रूप में सिन्ध के राज्य दाहर पर आक्रमण किया, यह विदेशियों का भारत पर पहला आक्रमण था। उसके पश्चात दर्रा खैबर से तुर्कों, पठानों, मुगलों और तातारियो ने भारत पर आक्रमण किए। उस समय भारत में अनेक राजा अपनी छोटी-छोटी रियासते लेकर राज्य करते थे। एक-एक करके भारतीय राजा हारते गए और इस्लामी परचम दिल्ली पर लहराने लगा। सम्राट अकबर ने अपनी बुद्धि-मत्ता से भारत के उत्तर और दक्षिण में अपना कब्जा जमा लिया। ऐसी विषम परिस्थिति में केवल एक ही महापुरुष थे जिन्होंने विदेशी दासता और धर्म की रक्षा के सामने अपना मस्तक नहीं झुकाया, वे थे मातृभूमि के रक्षक महाराणा प्रताप।

महाराणा प्रताप के साथ अनेक शूरवीरों एवं वीरागनाओ ने अपने शौर्य एवं वीरता का परिचय दिया। जिनमे प्रमुख रूप से पन्नाधाय का नाम आता है जिन्होने अपने बेटे का बलिदान देकर उदयसिंह की रक्षा की थी, यदि उन्होने ऐसा न किया होता तो राणा प्रताप जैसा वीर शायद इस धरा पर न होता। महाराणा प्रताप ने इस धरा के निर्माण के लिए जो बलिदानी कदम उठाये उनका वर्णन स्वर्णाक्षरो में किया जा सकता है। हल्दी घाटी की लड़ाई महाराणा प्रताप के शौर्य, पराक्रम और वीरता का जीता जागता प्रमाण है। महाराणा की वीरता ने मुगल साम्राज्य के छक्के छुड़ा दिये। मेवाड़ के इति-हास में जहां पन्नाधाय के अनुपम त्याग की चर्चा होती है वहां महारानी पद-मिनी, रानी करुणावती आदि देवियों का जौहर भी संसार के इतिहास में अपना प्रमुख स्थान रखता है। देश और धर्म की रक्षा के लिए इन बलिदानी वरांगनाओं ने जो कौशल दिखाया इसकी मिसाल संसार के इतिहास में नहीं मिलती। आराम, सुख और आनन्द का जीवन हर व्यक्ति जीना चाहता है किन्तु देश और धर्म की रक्षा के लिए जलते यज्ञ कुण्ड में कूदकर अपने आपको भस्म करने की मिसाल संसार के इतिहास में नही है।

अकबर की कूटनीतिक चालों से भयभीत होकर अनेक राजपूतों ने अपनी कन्यायें मुगलों को देकर सुख और आनन्द का जीवन जीना प्रारम्भ कर दिया था। ऐसी स्थिति में महाराणा प्रताप ने अकबर की इस चनौती को स्वीकार किया जिसके कारण उन्हें अनेक प्रकार के कष्टों को सहन करना पड़ा। उन्होंने राजमहल के स्थान पर जंगल में रहना स्वीकार किया दाने-दाने के लिए उनका परिवार तरसता रहा, लेकिन महाराणा प्रताप ने मुगल साम्राज्य के सामने अपना मस्तक नहीं झुकाया। यह आर्य धर्म का गौरव था जिसको महाराणा प्रताप ने स्थापित किया।

महाराणा प्रताप का जन्म विक्रमी संवत् १५९७ ज्येष्ठ सुदी तीन रविवार, तदनुसार (९ मई सन् १५४० ई०) को सूर्योदय से ४७ घड़ी १३ पल गये हुआ था। जिस समय उनके पिता उदयसिंह की मृत्यु हुई उस समय महाराणा प्रताप की आयु ३२ वर्ष की थी महाराणा प्रताप के जन्मदिन को आगामी २४ मई १९९३ को ४५३ वर्ष होते हैं। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने २८-२-९३ के ऐतिहासिक अधिवेशन में महाराणा प्रताप की जयन्ती आने वाले उनके ५०० वें जन्मदिन तक आर्य समाज की ओर से देश के विभिन्न भागो में आयोजित करने का निर्णय लिया है। जिसका प्रथम समारोह दिल्ली के लालकिला मैदान में २३ मई १९९३ को आयोजित किया जा रहा है। प्रधानमन्त्री श्री पी० वी० नरसिंह राव जी ने इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के इस निर्णय का स्वागत करते हुए अपने सन्देश में लिखा है कि महाराणा प्रताप एक ऐसे शूरवीर योद्धा थे जिन्होंने मुगल साम्राज्य की शक्ति को चुनौती दी थी और अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए आत्म समर्पण की अपेक्षा मृत्यु का वरण किया और मुगल साम्राज्य के सामने कभी मस्तक नहीं झुकाया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का मेवाड़ के साथ बड़ा अच्छा सम्बन्ध था, उन्होंने ८ वर्ष तक लगातार मेवाड़ के विभिन्न राज्यो में घूम-घूमकर राजपूतों में राणाप्रताप की तरह उस समय के अंग्रेजी साम्राज्यके विरुद्ध राजाओं को तैयार करनेका संकल्प किया था। यद्यपि महर्षि दयानन्द सरस्वती की मृत्यु का कारण भी अंग्रेजो के खिलाफ आवाज उठाने पर जोधपुर नरेश और उनके मन्त्री फैजउल्लाखां के षडयन्त्रों से उनको जहर दिया गया जिससे उनका अन्त हुआ। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने उदयपुर में सत्यार्थ प्रकाश लिखते समय उसमें लिखा कि महाराणा जी का उदयपुर।

आज के सन्दर्भ में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने जो उचित कदम उठाकर देश की जनता को राजनीतिक षडयन्त्रों से बचाने के लिए महाराणा प्रताप के जयन्ती समारोहों का देश के विभिन्न स्थानों पर उनके ५०० वें जन्मदिन तक आयोजित करने का जो निर्णय लिया है, उससे राष्ट्रवासियों में जीवन जागृति की ज्योति जलेगी, जिससे एक हजार वर्ष बाद देश को मिली स्वतन्त्रता की रक्षा की जा सकेगी।

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

नई दिल्ली-११०००२

महाराणा प्रताप जयन्ती समारोह पर प्रधानमन्त्री श्री पी.वी. नरसिंह राव का सन्देश

महाराणा प्रताप शताब्दियों से एक ऐसे शूरवीर योद्धा के रूप में भारतीय लोक साहित्य के एक अंग रहे है जिन्होंने मुगल साम्राज्य की शक्ति को चुनौती दी थी तथा जो अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए बहादुरी से लड़े थे। वे शौर्य एवं स्वतन्त्रता के एक प्रतीक बन गए हैं। वे एक ऐसे वीर पुरुष थे जिन्होंने हथियार डालने से इनकार कर दिया था तथा जिन्होंने आत्म-समर्पण की अपेक्षा मृत्यु का वरण किया।

मुझे यह जानकर खुशी है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा २४ मई १९९३ को महाराणा प्रताप की पांचवीं जन्म शताब्दी के सिलसिले में उनकी ४९६वीं जयन्ती आयोजित की जा रही है। मैं इस सुखद अवसर पर सभी को अपनी शुभकामनाए भेजता हू।

नई दिल्ली (पी० वी० नरसिंह राव)
२७ अप्रैल, १९९३ प्रधान-मन्त्री

सम्पादकीय

चित्तौड़ गढ़

उत्कृष्ट मनुष्य ही उत्कृष्ट शासक बन सकता है। जिसमे मनुष्यता का अभाव है, वह सेना और शस्त्र की सहायता से विजय तो प्राप्त कर सकता है, परन्तु राज्य की बुनियाद को पाताल तक नही पहुचा सकता। साम्राज्य की जो बुनियाद प्रजा के हृदयो मे चुनी जाती है, वह मजबूत और स्थिर होती है। बल के प्रयोग से राज्य की स्थापना की जाती है, और सहानुभूति, हितकामना और प्रेम के प्रयोग से उसे दृढ किया जाता है। जो राजा बलहीन है वह सीमाप्राप्त की रेखा से आगे नहीं बढ सकता, और जो सहानुभूति से शून्य है, वह समय की रेखा को पार नही कर सकता। अकबर ने मुगल-राज्य को बल से बढ़ाया, और सहानुभूति से स्थिर किया। बल और सहानुभूति यह दोनो मनुष्यता के चिन्ह हैं। जिसमे बल नही, वह नपुसक है, और जिसमे सहानुभूति नही, वह राक्षस है। साम्राज्यो की स्थापना और स्थिरता मनुष्यो से हो सकती है, नपुसको और राक्षसो से नहीं। अकबर की सफलता का रहस्य उसकी मनुष्यता मे तलाश किया जा सकता है। वह आधमखा को माफ कर सकता था, तो समय पड़ने पर उसे किले की दीवार पर से गिरवा भी सकता था, उसने बैरम को मार-मारकर शिवालक की तलहैटियो मे खदेड़ दिया, तो नम्र होने पर क्षमा भी कर दिया। यही अकबर की नीति का सूत्र था।

अकबर के जिन गुणो ने उसे क्रियात्मक राजनीति मे आदरणीय बनाया है, उसमे से मुख्य उसका हिन्दू प्रजा के साथ उत्तम व्यवहार था। अकबर मुसलमान था परन्तु उसके अन्तरग से अन्तरग मित्रो की सूची को पढ़िये, तो वह हिन्दू नामो से पूर्ण मिलेगी।

यह देखकर पहला विचार यही उत्पन्न होगा कि केवल नीति और सहानुभूति के प्रयोग से उसने हिन्दुओ को काबू मे किया, जिससे उसका साम्राज्य फैला, और मजबूत हुआ, परन्तु जब हम इतिहास के पृष्ठो को पलटते है, तब हमे दूसरा ही किस्सा सुनाई देता है। अकबर ने हिन्दुओ के साथ जो लडाई लडी, उसके सामने कई अशो मे शेष सब लड़ाइया मात हो जाती हैं। अकबर ने हिन्दू शरीर के अन्य सब अगो को छोड़, उसके हृदय पर आघात किया।

मुगल बादशाह अकबर और चित्तौड़ के उस समय के राणा उदयसिंह के जीवन समानताओ और विषमताओ के बहुत ही बढ़िया नमूने हैं। घटनाओ के क्रम मे एक से, परन्तु परिणाम मे भिन्न दो ऐसे,समकालिक जीवनो का मिलना कठिन है। उदयसिंह प्रसिद्ध महाराणा सागा के सबसे छोटे पुत्र थे। उस नरकेसरी की मृत्यु के पीछे थोडे से ही वर्षो मे मेवाड को अनेक आपत्तियो का सामना करना पडा। उदयसिंह के पुत्र राणा प्रताप सिंह प्राय कहा करते थे कि यदि दादा महाराणा सागा के पीछे मैं गद्दी पर बैठता तो मेवाड का सर्वनाश न होता।' सग्रामसिंह की मृत्यु १५३० मे हुई और प्रतापसिंह १५७२ मे सिंहासनारूढ़ हुए। बीच के ४२ वर्ष अजेय चित्तौड़ गढ के इतिहास मे पराजय और अपमान के वर्ष हैं। सांगा जी का उत्तराधिकारी रत्नसिंह बहादुर था, परन्तु क्रोधी था। वह केवल पाच वर्ष तक राज्य करके बूदी के राव सूरजमल के साथ द्वन्द युद्ध मे मारा गया। रत्नसिंह के पीछे विक्रमादित्य गद्दी पर बैठा। वह राणा सागा का पुत्र होने का और भी कम अधिकारी था। वह क्रोधी था, आचारभ्रष्ट था, विवेकहीन था। राजपूत सरदार राजा का आदर करना जानते थे, परन्तु दुराचारी द्वारा अपमान को नहीं सह सकते थे। विक्रमादित्य वीरता से शून्य क्रूर था और उदारता से शून्य दुराचारी था। परिणामत. सारे सरदार उससे बिगड़ गये। राजपूताने के हृदय की उस निर्बलता के समाचार चारो ओर फैल गये। महत्वाकांक्षियो के मुह मे पानी आने लगा। गुजरात का बादशाह बहादुरशाह मालवे के बादशाह को साथ लेकर चित्तौड़ गढ़ पर चढ़ आया। युद्ध के आरम्भ मे ही विक्रमादित्य परास्त हो गया, और युद्ध क्षेत्र दूसरो के हाथ मे चला गया। कायर विक्रमादित्य चित्तौड़ की रक्षा का बोझ दूसरो पर डालकर नपुसको की भाति अलग बैठ गया, परन्तु राजपूतो ने अपने झण्डे को सहज ही मे नीचा नही होने दिया। राजपूत शेरो की तरह लड़, और राजपूतनिया शेर माताओ की तरह आन पर मर मिटी। इस दूसरे साके का वृत्तान्त राजपूतो के इतिहास मे स्वर्णीय अक्षरो मे लिखा जाने योग्य है। परन्तु उसके सुनाने का यह स्थान नहीं है। वीर गाथा सुनाने का आनन्द प्राप्त करने और उस निष्फल परन्तु ससार की वीरता के इतिहास मे अमिट अक्षरो से लिखने योग्य जीवन सग्राम का सगीत गाकर श्रेय उपलब्ध करने के लिए हृदय मे जो गुदगुदी पैदा हो रही है, उसे रोककर लेखक को इतना लिख कर ही सन्तोष करना पड़ता है कि प्रतापगढ के सरदार बाघसिंह, चूडावत राव दुर्गादास और अन्य वीरो की अपूर्व वीरता और राठौर कुल की यशस्विनी राजमाता जवाहर बाई की ओजभरी ललकार भी बहादुर शाह के योरपियन तोपखाने और अनगिनत सैन्यो का सामना न कर सकी। ३२ हजार राजपूत चित्तौड़-गढ की रक्षा के निमित्त बलिदान हुए, १२ सहस्र राजपूतनिया सतीत्व की रक्षा के लिए अग्निदेव के अर्पण हुई। चित्तौड गढ पर बहादुरशाह का झण्डा फहराने लगा।

परन्तु बहादुरशाह देर तक विजय का आनन्द भोग न सका। उसे समाचार मिला कि हुमायू बगाल की ओर से बढता आ रहा है। चित्तौड़ को छोड़ वह मालवे की ओर रवाना हुआ। बरबाद चित्तौड़ गढ को खाली पाकर विक्रमादित्य फिर राजगद्दी पर आ विराजा, परन्तु राणा की आब उड चुकी थी। जो गद्दी की मान रक्षा न कर सके, वह उस पर बैठने योग्य भी नही हो सकता। राजपूत सरदारो ने राणा सागा के भाई पृथ्वीराज के खवासपुत्र बनबीर को आमन्त्रित करके बुला लिया। विक्रमादित्य के पक्ष मे एक भी शब्द या एक भी हथियार नहीं उठा। दुराचारी कायरो की प्राय यही गति होती है।

राजपूत सरदारो ने बनबीर को इस आशय से राजगद्दी पर बिठाया था कि वह राणा सागा के छोटे पुत्र उदयसिंह का, जो उस समय पन्ना नाम की धाय की गोद मे पल रहा था, सरक्षक बनकर राज्य करे, और जब उदयसिंह बालिग हो, तब उसे राज्य सौंप दे। राज्यलक्ष्मी का निर्विघ्न पाणिग्रहण करने के लिए असली उम्मीदवार को मार्ग से हटा देने का सकल्प किया। आधी रात के समय नगी तलवार हाथ मे लेकर बनबीर उस घर मे पहुचा, जहा पलग पर बालक उदयसिंह सो रहा था। पन्ना को पहले से ही पापी के पाप सकल्प की खबर लग चुकी थी। उसने अपने कर्तव्य का भी निश्चय कर लिया था। उस स्वामिभक्त धाय ने वह काम किया जो मानवो से तो नहीं हो सकता। उसने स्वामि प्रेम पर पुत्र को कुर्बान कर दिया, उसने अपने औरस पुत्र की बलि चढाकर चित्तौड़ के न्याय सिद्ध राजा की प्राण रक्षा कर ली। उदयसिंह को तो एक टोकरी मे डालकर दूसरी जगह भेज दिया और उसके पलग पर अपने दिल के टुकडे को डाल दिया। स्वार्थ के पुतले ने मकान मे आकर पन्ना से पूछा कि उदय सिंह कहा सो रहा है। पन्ना बोल न सकी, उसने केवल हाथ से पलग की ओर इशारा कर दिया। बनबीर ने आगे बढकर एक ही हाथ मे पन्ना के लाल का काम तमाम कर दिया। पन्ना ने उस राक्षसी कृत्य को अपनी आखो से देखा,पर इस डर से कि कही भेद न खुल जाय उसने उस चीख को भी रोक लिया, जो दुखी हृदय का आखिरी सन्तोष है। पन्ना राजपूत इतिहास मे अपना नाम अमर कर गयी। जब तक ससार मे राणा प्रताप का यशोगान होता है, तब तक उसके पिता उदयसिंह पर अपने पुत्र को न्योछावर कर देने वाली पन्ना की कीर्ति भी गाई जायेगी।

उदयसिंह को बनबीर की तलवार से बचाकर कुम्भलमेर मे आशाशाह नाम के वैश्य के घर पहुचाया गया, जहा उसका प्रेमपूर्वक लालन पालन हुआ। ७ वर्ष तक चित्तौड़ का भावी महाराणा एक वैश्य के पुत्र की भाति पला, परन्तु आग की चिनगारी देर तक राख के नीचे छुपी न रही। खबर चारो ओर फैल गई। उधर उग्र बनबीर यह समझ कर कि मार्ग निष्कटक हो गया, और भी अधिक उग्र हो उठा था। उसने अपने कठोर व्यवहार से राजपूत सरदारो को बिगाड़ लिया था। असली महाराणा के जीवित रहने का समाचार पाकर प्यासे चातको को पानी की फुहार मिली। राज्य के मुखिया सरदार कुम्भलमेर से उदयसिंह को लिवा लाये और बनबीर को कह दिया कि अब आप अपने घर को तशरीफ ले जाइए। १२ वर्ष की आयु में उदयसिंह राजगद्दी पर बैठा।

जिस वर्ष उदयसिंह का राजतिलक हुआ, उसी वर्ष अकबर का जन्म हुआ। उस समय अभागा हुमायू शहर से शहर, गाव से गांव मे मारा फिरता था।

(शेष पृष्ठ १६ पर)

शौर्य का पुण्य प्रतीक महाराणा प्रताप

विजय प्रकाश शर्मा, सार्वदेशिक सभा दिल्ली

उदयसिंह की मृत्यु के बाद १५७२ ई० में प्रतापसिंह गद्दी पर बैठे। उस समय मेवाड़ का राज्य हर तरह खोखला हो रहा था। खजाने में पैसे का, सेना में सिपाहियों का, और दिलों में उत्साह का अभाव था। चित्तौड़ के अनमोल वीरों के हृदय निराशा के पाले से कुम्हला चुके थे। प्रताप ने सिंहासनारूढ़ होकर चारों ओर दृष्टि उठाई, तो उसे बाप्पा रावल की कीर्ति के खण्डहर मात्र दिखाई दिये। वीर का हृदय उस विनाश के हाथ को देखकर मुरझाया नहीं, प्रत्युत उसने दृढ़ संकल्प किया कि वह अपनी मां के दूध की लाज रखेगा और चित्तौड़ की गगनचुम्बिनी चोटी पर राजपूती ध्वजा को फिर से गाड़कर दम लेगा। कार्य बड़ा भारी था। एक ओर अकबर जैसा शक्तिशाली सम्राट जिसके बढ़ते हुए छत्र के सामने वीर राजा भी सिर झुका रहे थे, सारे हिन्दुस्तान का खजाना, जिसमें करोड़ों रुपये थे, अनगिनत सिपाही, जो मुगल बादशाह की आवाज पर उमड़ पड़ते थे, और दूसरी ओर राजधानी से विहीन राज्य, ऊजड़ इलाका, खाली खजाना, और मुट्ठीभर सिपाही। ऐसी दशा में वही वीर लड़ने की ठान सकता था, जिसकी आत्मा प्रबल हो, जो भय किस चिड़िया का नाम है, यह न जानता हो, जिसके लिए सांसारिक विघ्न कोई सत्ता न रखते हों और जिसका धैर्य अटूट हो। भाग्यवश महाराणा सांगा के नाती में यह गुण विद्यमान थे। प्रताप ने मां के दूध की शपथ खाकर प्रण किया कि वह मेवाड़ को स्वाधीन करायेगा और सिसोदिया वंश की लाज रखेगा। वीर की ओर वीर खिंचते हैं। बहादुर सेनापति को पाकर गुफाओं मे सोये हुए राजपूत शेर भी जाग उठे, और मेवाड़पति के झण्डे के नीचे इकट्ठा होने लगे।

राजपूताने के इतिहास-लेखक कर्नल टाडने अकबर और प्रताप के संघर्ष के सम्बन्ध में लिखा है कि अदम्य साहस, अटूट धैर्य, मान की रक्षा का भाव, सहिष्णुता, और वह स्वामिभक्ति जिसकी बराबरी दुनिया में नहीं है, बढ़ी हुई महत्त्वाकांक्षा, चमकदार गुण, अनन्त साधन और मजहबी जोश के साथ टक्कर खा रहे थे, परन्तु उनमें से कोई भी उस अजेय आत्मा (प्रताप) का, सामना नहीं कर सकता था। अकबर के इतिहास-लेखक विनसैण्ट स्मिथ ने लिखा है कि अकबर के इतिहास-लेखक जिस चमत्कारी गुणों या अनन्त साधनों की सहायता से वह अपनी बढ़ी हुई महत्त्वाकांक्षा पूर्ण कर सका, उनसे ऐसे चौंधिया जाते हैं कि उन बहादुर शत्रुओ के लिए उनके पास सहानुभूति का एक शब्द भी नहीं रहता जिनकी बरबादी पर अकबर का महल खड़ा हुआ था। वह पुरुष और स्त्रियां भी स्मरण के योग्य हैं। शायद वह पराजित स्त्री-पुरुष विजेता की अपेक्षा अधिक महान थे।

प्रताप का पहला कार्य राज्य की सुव्यवस्था करना था। उस समय कुम्भलमेर का किला राजधानी का कार्य दे रहा था। राणा ने उसे सुरक्षित करने के लिए कई प्रकार के प्रयत्न किये। अन्य दुर्गों का भी जीर्णोद्धार किया गया। राज्य के कारखाने को यथासम्भव मांजा गया। मेवाड़ के जो प्रान्त राणा के हाथ से निकल चुके थे, उन्हें शत्रु के लिए भी निकम्मा बना देने की चेष्टा की गई। इस चेष्टा में प्रताप को बहुत कुछ सफलता प्राप्त हुई।

परन्तु बहुत देर तक यह पैंतरेबाजी जारी न रह सकी। राजा मानसिंह की नासमझी ने संघर्ष का अवसर शीघ्र ही उपस्थित कर दिया। राजा मानसिंह अकबर के लिए शोलापुर को जीतकर हिन्दुस्तान को वापिस आते हुए कमलमीर के किले मे राणा प्रताप से मिलने के लिए ठहरा। राणा ने स्वेच्छा से आये हुए मेहमान का विधिवत सत्कार किया, परन्तु भोजन के समय स्वयं उपस्थित न होकर राजकुंवर को भेज दिया।

राजा मानसिंह ताड़ गये कि राणा ऐसे आदमी के साथ भोजन नहीं करना चाहते, जिसके परिवार ने मुसलमानों के घर में डोला भेजकर राजपूती शान पर बट्टा लगाया हो। वह शर्माने की जगह क्रोधित होकर उठ खड़ा हुआ। और क्रोध से अंगार बना हुआ मानसिंह वहां से चला गया, तथा इस प्रकार हल्दीघाटी की प्रसिद्ध लड़ाई का सूत्रपात हुआ।

यद्यपि इस युद्ध मे मुगलो को सफलता प्राप्त हुई, परन्तु उन पर राजपूतों की वीरता का त्रास बैठ गया, फिर भी मेवाड़ की युद्ध-शक्ति इस लड़ाई में बहुत कुछ कम हो गई। राणा ने उसे बहुत संभालने का यत्न किया, परन्तु शीघ्र सफलता न हुई। किले के पीछे किला हाथसे निकलता गया, यहां तक कि बड़े-बड़े सभी दुर्ग मुगलों के हाथ में चले गये। राणा को महलों और किलों से अकेला आकर पहाड़ों और जंगलों का निवासी बनना पड़ा। आओ और राजपूताने के गायकों और भाटों के मुंह से उस अभागी के पुत्र की वीर कथाओं का श्रवण करो।

जिस समय भारत के ताजधारी वीर दिल्ली के बाजारों में अपनी बहू-

(शेष पृष्ठ १६ पर)

चित्तौड़ के अनमोल वीरों के हृदय निराशा के पाले से कुम्हला चुके थे। प्रताप ने सिंहासनारूढ़ होकर चारों ओर दृष्टि उठाई, तो उसे बाप्पा रावल की कीर्ति के खण्डहर मात्र दिखाई दिये। वीर का हृदय उस विनाश के हाथों को देखकर मुरझाया नहीं, प्रत्युत उसने दृढ़ संकल्प किया कि वह अपनी मां के दूध की लाज रखेगा, और चित्तौड़ की गगनचुम्बिनी चोटी पर राजपूती ध्वजा को फिर से गाड़कर दम लेगा।

ऐसी दशा में वही वीर लड़ने की ठान सकता था, जिसकी आत्मा प्रबल हो, जो भय किस चिड़िया का नाम है, यह न जानता हो, जिसके लिए सांसारिक विघ्न कोई सत्ता न रखते हों और जिसका धैर्य अटूट हो। भाग्यवश महाराणा सांगा के नाती में यह गुण विद्यमान थे।

महाराणा प्रताप जयन्ती

आज पांच सौ वर्ष बाद फिर जगी जयन्ती ज्वाला है।
वीर प्रतापी राणा जी का यश का हुआ उजाला है॥
राजस्थानी धन्य भूमि वह धन्य वहां की माटी है।
धन्य वहां का शौर्य-सृजन है वीर व्रती परिपाटी है॥
स्वाभिमान के संरक्षण का वीरों ने व्रत पाला है॥१॥
बाप्पा रावल सांगा ने या उदयसिंह ने वाला था।
स्वाभिमान का दीप उसी में रक्त वीर ने डाला था॥
अमर दीप की किरणों से वह प्रकटा पुञ्ज निराला है॥२॥
मानसिंह से मान गवां कर सिंह अनेकों घूम रहे।
पराधीनता मदिरा के दुर्दम्य नशे में झूम रहे॥
किन्तु एक ही महावीर जो फौलादीव्रत ढाला है॥३॥
जननी जन्म भूमि को त्यागा वन-वन में जो घूमा था।
राजकीय सुविधाएं त्यागी असुविधाओं को चूमा था॥
शिर न झुकाने के 'असिव्रत को जिसने सदा सम्भाला है॥४॥
जिसने ही स्वातन्त्र्य समर को सचमुच नयी जवानी थी।
या सलीम का हाथी जाने जिसकी तीक्ष्ण निशानी थी॥
आज विश्व में अमर हो गया वह प्रताप का भाला है॥५॥
देख जयन्ती ज्वालाओं को वीरों में अभिमान जगे।
मातृभूमि के लिए शौर्य मय श्रद्धा का आह्वान जगे॥
"प्रणव-काव्य की कड़ियां देवें उत्साही जयमाला है॥६॥

—कविवर "प्रणव" शास्त्री एम० ए०
शास्त्री सदन रामनगर, आगरा-६

चावण्ड का गौरवशाली अतीत

—अरविन्द जैन—

महाराणा प्रताप की जीवनयात्रा सोमवार २४ मई, १५४० (वि. सं. १५९७, ज्येष्ठ शुक्ला ३) को कुम्भलमेर से प्रारम्भ हुई। उसके जीवन काल के ५७ वर्ष वास्तव में देश प्रेम, त्याग, सुख-दुःख और जय-पराजय का एक अविस्मरणीय इतिहास है।

महाराणा प्रताप वीर योद्धा और कुशल प्रशासक होने के साथ-साथ स्थापत्य कला के प्रेमी और साहित्य-कारों के संरक्षक भी थे। चावण्ड गांव से आधा मील की दूरी पर पहाड़ी पर प्रताप के महलों के खंडित अवशेष आज भी विद्यमान है :

दिन बुधवार, दिनांक १९ जनवरी, १५९७ [वि. सं. १६५३, माघ शुक्ला ११], स्थान चावण्ड के राजमहल। जीवन पर्यन्त अपने राष्ट्र की स्वतन्त्रता की ज्योति प्रज्वलित करने वाले तथा अपने वंश के गौरव को बनाये रखने वाले महाराणा प्रताप मृत्यु शैय्या पर लेटे थे। पीड़ा के साथ-साथ चिन्ता के भाव उनके चेहरे पर छाये थे। पास बठे सामन्तों ने चिन्ता का कारण पूछा तो प्रताप ने बताया कि मेरी मृत्यु के पश्चात क्या अमरसिंह मेवाड़ की रक्षा कर पायेगा ? यह सुनकर सभी सामन्तों के साथ अमरसिंह ने स्वतन्त्रता के संघर्ष को जारी रखने का व्रत लिया। इससे प्रताप को बड़ी शान्ति मिली। थोड़ी ही देर पश्चात उन्होने अपना नश्वर शरीर त्याग दिया। इसी के साथ अन्त हो गया एक सुयोग्य और चमत्कारी व्यक्तित्व का तथा मेवाड़ के एक गौरवशाली युग का।

महाराणा प्रताप की जीवन यात्रा सोमवार २४ मई, १५४० [वि. सं. १५९७, ज्येष्ठ शुक्ला ३] को कुम्भलमेर से प्रारम्भ हुई। उनके जीवनकाल के ५७ वर्ष वास्तव मे देश प्रेम, त्याग, सुख-दुःख और जय-पराजय का एक अविस्मरणीय इतिहास है। २८ फरवरी १५७२ ई० को अपने पिता राणा उदयसिंह की मृत्यु के पश्चात महाराणा प्रताप को कांटों की सेज की भांति मेवाड़ की गद्दी प्राप्त हुई। १५६८ में अकबर को चित्तौड़ विजय से शासन व जनता में जो निराशा और निरुत्साह व्याप्त था, वह प्रताप के असीम उत्साह, अदम्य साहस और अडिग धैर्य के कारण दूर हो गया। प्रताप ने अपने देश की आजादी और सिसोदिया वंश की मान मर्यादा बनाये रखने के लिए मेवाड़ की जनता को एकता के सूत्र में बांध दिया।

इसी बीच अकबर की निगाहें मेवाड़ की ओर लगी रहीं। १५७३ में महाराणा प्रताप के पास भेजे मुगलों की अधीनता स्वीकार कर लेने के प्रस्तावों की विफलता के बाद अन्ततः १८ जून १५७६ को इतिहास प्रसिद्ध हल्दी घाटी का युद्ध प्रारम्भ हो गया। राणा प्रताप और उसकी सेना के अतुलनीय साहस व अद्वितीय वीरता के बावजूद अपनी परम्परागत युद्ध शैली के कारण इस युद्ध में उन्हें पराजित होना पड़ा। फिर भी प्रताप की यशकीर्ति वैसी ही बनी रही और अकबर की राणा प्रताप को अधीन करने की चिर-अभिलाषा कभी पूरी नहीं हो पाई।

लेकिन इस पराजय के साथ ही महाराणा प्रताप के जीवन का संकटकाल प्रारम्भ हुआ जो सन १५८६ तक चलता रहा। रघुवीर सिंह ने अपनी पुस्तक में इस दस वर्षीय 'विखो' [संकटकाल] का विस्तृत एवं सजीव चित्रण किया है। गोगुन्दा के अपने अधिकार क्षेत्र से निकल जाने के बाद प्रताप ने कुम्भलमेर को अपना शासन केन्द्र बनाया परन्तु यहां भी अकबर के सेनापति के आक्रमण से पीड़ित होकर उन्हें ईडर राज्य के चूलिया ग्राम मे शरण लेनी पड़ी। १५७८-७९ में प्रताप ने गोगुन्दा के उत्तर पश्चिम मे ढोलाण नामक गांव में अपना डेरा जमाया और १५८२ में कुम्भलमेर मे पुन. अधिकार होने तक वे यहीं रहे। यहीं से चावण्ड ग्राम प्रताप के जीवन-मार्ग में आया जो उनके अन्तिम समय तक उनकी कार्यस्थली बना रहा।

उदयपुर से ऋषभदेव जाने वाली सड़क पर टीडी से आगे परसाद गांव आता है। इसी गांव से ६ मील दूर अरावली पहाड़ियो के पठारी भाग में बसा है—वर्तमान चावण्ड गांव। यहां से ८ मील की दूरी पर है आवरमाता, जो कि राणा कुम्भा के समय अत्यधिक आबाद था। बस्ती से दक्षिण की ऊंची पहाड़ियों पर जाती हुई पगडंडी पर पर गुफा आती है जिसमें कभी प्रताप रहे थे, ऐसी जनश्रुति है। आवरमाता की पहाड़ियों में भी अकबर और प्रताप की अनेक मुठभेड़ें हुई थी।

चावण्ड जिस पहाड़ी इलाके मे बसा हुआ था वह 'छप्पन' का इलाका कहलाता था। उस समय चावण्ड का राठौर भोमिया अत्यन्त प्रबल था और उसने सारे क्षेत्र मे आतंक मचा रखा था। सन १५७८ में महाराणा प्रताप ने लूणा राठौर को वहां से खदेड़ कर चावण्ड को अपना निवास स्थान बना लिया।

इसके बाद १७ सितम्बर १५८५ को अकबर ने प्रताप को बन्दी बनाने के लिए संभवतः अपना अन्तिम प्रयास किया परन्तु महाराणा प्रताप बचकर पहाड़ियों में चले गये। बाद में १५८६ ई. में प्रताप ने प्रत्याक्रमण कर मांडलगढ़ और चित्तौड़ के अतिरिक्त समस्त मेवाड़ पर पुनः विजय प्राप्त कर ली और औपचारिक रूप से चावण्ड को अपनी नई राजधानी घोषित कर दिया। चावण्ड के आस पास समतल स्थान को घेरे हुए दुर्गम ऊंची पर्वत श्रृंखलाओं को देखकर तथा सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण पाकर प्रताप इसे अपनी राजधानी बनाने का निर्णय संभवतः १५८२ के अन्त में ही ले चुके थे। चावण्ड को राजधानी बनाने के पीछे एक बड़ा उद्देश्य यह भी था कि यह क्षेत्र मेवाड़ के अनेक मित्र राज्यों उदयपुर, गोगुन्दा, मालवा, गुजरात, सिरोही आदि से घिरा था। १५८३ से लेकर मुगलों के साथ संधि होने तक [१० फरवरी १६१५] चावण्ड मेवाड़ की राजधानी बना रहा। इस प्रकार महाराणा प्रताप का शेष जीवनकाल यहीं व्यतीत हुआ और महाराणा अमरसिंह ने अपने राजतिलक के बाद अपने शासन के प्रारम्भिक लगभग १९ वर्ष यहीं निकाले।

सन १५८५ से १५९७ तक के १२ वर्ष प्रताप के जीवन के सुखद शांतिपूर्ण रहे। महाराणा ने इस अवधि में सभी दृष्टियों से मेवाड़ के विकास का प्रयत्न किया। इन १२ वर्षों में प्रताप ने यह प्रमाणित कर दिया कि वे युद्ध और शान्ति दोनों ही कालों के सुयोग्य नेता है। विद्वानो का यह मानना हैं कि यदि प्रताप को युद्ध से अवकाश न मिलता तो संभवतः उनके व्यक्तित्व के रचनात्मक पक्ष का परिचय विश्व को न मिलता।

महाराणा प्रताप वीर योद्धा और कुशल प्रशासक होने के साथ-साथ स्थापत्य कला के प्रेमी और साहित्यकारों के संरक्षक भी थे। चावण्ड गांव से आधा मील की दूरी पर पहाड़ी पर प्रताप के महलों के खंडित अवशेष आज भी विद्यमान हैं। यद्यपि ये मात्र ५-६ फीट ऊंची दीवारो के रूप में ही है लेकिन इनसे भी महाराणा की स्थापत्य शैली की झलक मिल जाती है। आर. पी. भटनागर के अनुसार संभव है कि महाराणा प्रताप ने यह महल नहीं बनाए हों बल्कि राठौर के काल में बने महलों का पुनर्निर्माण और विस्तार किया हो। उनके अनुसार ये महल मूल रूप से कुल तीन मंजिले रहे होंगे। लगभग ६०-६५ वर्ष पहले तक इन महलों के अनेक अंश विद्यमान थे जो समुचित रख-रखाव के अभाव में अब खण्डहरों में बदल गये हैं। इन खंडहरों में कमरे, चौपाल, घुड़साल, चबूतरे आदि है। इन महलों के पास ही सामन्तों के भवनों, भामाशाह की हवेली, सैनिकों की बस्ती तथा सीधे और चौड़े मार्ग होने के भी प्रमाण मिलते हैं। राजप्रासादों से प्रताप के अन्तिम समय के कठोर और कष्ट प्रद जीवन का भी स्पष्ट आभास होता है। डा० गोपीनाथ शर्मा के अनुसार इन खण्डहरों के पास चामुण्डा माता का जो मन्दिर है वह भी प्रताप द्वारा ही संभवतः सैनिको को युद्ध की प्रेरणा देने के लिए निर्मित किया गया था। जबकि भटनागर का यह मानना है कि चूंकि चामुण्डा माता राठौड़ों की कुलदेवी हैं अत. इस मन्दिर का निर्माण प्रताप के चावण्ड आने से पहले ही हो गया था।

(शेष पृष्ठ १३ पर)

प्रताप व शक्ति का मिलन

—हरिकृष्ण प्रेमी

यहां प्रस्तुत है काल्पनिक दृश्य हिन्दू कुल सूर्य महाराणा प्रताप और उनके बिछुड़े भाई शक्तिसिंह के मिलन का। यह मिलन भी इतिहास की एक प्रेरक गाथा है।

(स्थान—हल्दी घाटी के निकट एक वन में खुला स्थान। समय संध्या। महाराणा प्रताप रक्त-रंजित वस्त्रों में क्षत-विक्षत स्थिति में एकाकी बैठे हैं। उन्होंने अपना मस्तक अपने दोनों घुटनों पर रख छोड़ा है। इसी समय शक्तिसिंह प्रवेश करता है।)

शक्तिसिंह—ओ मेवाड़ के महाराणा!

प्रताप—(सिर उठाकर शक्तिसिंह को देखते हुए) तो तुम आ गए, शक्तिसिंह, मुझसे प्रतिशोध लेने। उठाओ अपनी तलवार काट डालो मेरा मस्तक। काट डालो यह मस्तक जो पराजय के कलंक से अपवित्र हो चुका है।

शक्तिसिंह—शक्तिसिंह कसाई नहीं योद्धा है। आप में इस समय शस्त्र पकड़ने की शक्ति होती तो कदाचित आज भी मैं आपको द्वन्द्व-युद्ध की चुनौती देता, किन्तु आज परिस्थिति भिन्न है।

प्रताप—हां, परिस्थिति भिन्न है। आज मेवाड़ भी घायल है और प्रताप भी। उस दिन मेवाड़ के नवनिर्वाचित महाराणा ने तुम्हें मेवाड़ से निर्वासित किया था और आज तुमने विदेशियों के सहयोग से मेवाड़ के हृदय को बेंध डाला है। मेवाड़ के वक्षस्थल पर तुमने हिंसा का पैशाचिक नृत्य किया है और पराजित, आहत तथा व्यथित प्रताप का उपहास करने आए हो। आज तुम्हारे आनन्द की कोई सीमा नहीं है। तुम अट्टाहस क्यों नहीं करते? अपने अट्टाहस से दिशाओं को गुंजा दो।

शक्तिसिंह—दादाभाई!

प्रताप—(उठकर खड़े होते हुए) चुप रहो, शक्तिसिंह! इस पवित्र सम्बन्ध को उच्चारित कर भाई के नाते को कलंकित न करो। भूल जाओ कि प्रताप तुम्हारा भाई है—भूल जाओ कि मेवाड़ में तुम्हारा कोई सम्बन्ध है, भूल जाओ कि मेवाड़ की धूल में खेलकर, तुम यहां का अन्न-जल खाकर इतने बड़े हुए हो तुमने दैत्य के समान शक्ति पाई है, एक मेवाड़ी मां का दूध पीकर आज तुम अकबर के हो। कुछ दिन तुमने उसका नमक खाया इसलिए मेवाड़ को पद-मर्दित करना तुम्हारा कर्तव्य है। दया न करो इस मूर्ख विद्रोही पर जो भारत सम्राट् होने का दावा करने वाले अकबर के आगे मस्तक झुकाने को तैयार नहीं है। काटते क्यों नहीं मेरा मस्तक? तुम मेरा वध नहीं करना चाहते? तब किसलिए आए हो यहां?

शक्तिसिंह—आपकी रक्षा करने के लिए।

प्रताप—मेरी रक्षा करने के लिए? आश्चर्य, विषधर भी अमृत उगलने का दावा करता है।

शक्तिसिंह—अमृत और विष सहोदर हैं—एक ही कोख से जन्मे हैं सिन्धु की कोख से। विष देने वाला अमृत भी दे सकता है। मुझे जैसे ही ज्ञात हुआ कि आपको अधिक घायल जानकर स्वामिभक्त चेतक रणभूमि से ले उड़ा है, वैसे ही मैं आपकी खोज में चल पड़ा।

प्रताप—खोज में चल पड़े, प्रतिशोध लेने? तुमसे तो अच्छा था मेरे भाई के समान मेरा अश्व चेतक। वह भी घायल था फिर भी उसने अपने घावों की चिन्ता नहीं की और भागता ही रहा, जब तक उसकी सांसों ने साथ दिया। आज वह बेचारा—उधर देखो, वृक्ष के नीचे मृत पड़ा है। मुझे अपनी पराजय का इतना दुःख नहीं जितना चेतक की मृत्यु का।

शक्तिसिंह—चेतक की मृत्यु का दुःख तो मुझे भी है।

प्रताप—लेकिन आज प्रताप के प्राणों का अन्त हो जाता तो तुम्हें दुःख न होता।

शक्तिसिंह—ऐसा न कहो, दादा भाई! आपके प्राणों की चिन्ता ही तो मुझे यहां खींच लाई है। जब मैंने देखा कि दो मुगल अश्वारोही आपका पीछा कर रहे हैं तो मुझसे रहा नहीं गया। मैं भी अश्व पर सवार हो उनके पीछे लग गया और दोनों को मृत्यु के घाट उतार कर आपके सामने उपस्थित हो गया हूं।

प्रताप—क्योंकि तुम चाहते थे कि तुम्हारा शिकार दूसरे के हाथ न लगे।

(शक्तिसिंह की आंखों में आंसू आ जाते हैं।)

प्रताप—भैया, तुम रो रहे हो? वीर पुरुष रोता नहीं है। अपने प्रियतम व्यक्ति की मृत्यु पर भी उसकी आंखों में अश्रु नहीं छलकते। वीर पुरुष के वक्ष में हृदय के स्थान पर लौह-खण्ड होता है।

शक्तिसिंह—कुछ परिस्थितियां ऐसी होती हैं जो वज्र हृदय को भी द्रवित कर देती हैं। पांडवों पर कौरवों ने निरन्तर अमानुषिक अत्याचार किए थे, तब कुरुक्षेत्र की समरभूमि में जब अर्जुन ने अपने गुरुजनों और स्वजनों को विपक्ष में युद्ध के लिए आते देखा तो वह ममता से अभिभूत हो गया था।

प्रताप—किन्तु कौरवों के हृदय में तो इस प्रकार की ममता-मोह का उदय नहीं हुआ। कुछ मनुष्य ऐसे होते हैं जिनकी कोमल भावनाएं मर जाती हैं।

शक्तिसिंह—मरती नहीं हैं, दादाभाई, सुन्न हो जाती हैं। वे समय के उपचार से नव चेतना भी पा सकती हैं। आपका वह शक्तिसिंह मर गया जिसने एक दिन आप पर तलवार उठाई थी। मेरा अहं ही आपका शत्रु था। वास्तव मे देखा जावे तो आपका नहीं मेरा शत्रु था। उसने मुझे मार डाला था। दादाभाई आपने मुझे जीवित किया है।

प्रताप: मैंने? तुम क्या कह रहे हो? मैंने तो तुम पर दया भी नहीं की और यदि मैं इस समय तलवार चलाने की क्षमता रखता तो सम्भवतः तुम्हारा मस्तक काटने में संकोच नहीं करता।

शक्तिसिंह—क्योंकि आपने शक्तिसिंह के दो ही रूप देखे हैं। एक वह जिसने आप पर तलवार का प्रहार किया था और एक वह जिसने मेवाड़ पर प्रहार किया है, किन्तु शक्तिसिंह के हृदय के किसी कोने में मनुष्य भी जी रहा था, इसे कदाचित आप नहीं जानते और मैं भी नहीं जानता था, किन्तु जब आपको अपने प्राणों की चिन्ता न करते हुए अपने देश का मान रखने के लिए महाकाल का अवतार बने शत्रु-दल का संहार करते देखा तो मेरा मस्तक आपके चरणों में अनायास ही झुक गया। मैंने सोचा इसी मेवाड़ में तो मैंने भी जन्म लिया है, मैं महाराणा बनने की तो साध रखता हूं। क्या यही मेरी मनुष्यता है? उसके बाद जब ज्ञात हुआ कि झाला मन्नाजी ने राजमुकुट अपने मस्तक पर रखकर शत्रु का ध्यान आपकी ओर से हटाकर अपनी तरफ कर लिया और उन्होने संग्राम करते हुए वीरगति पाई, तब मेरी आत्मा पुकार उठी—हाय, उनकी जगह मैं क्यों नहीं हुआ? मेरे मस्तक पर देश-द्रोह के अमिट कलंक का टीका लगना था सो लग गया। इस मस्तक को मैं ऊपर उठाकर कैसे चल सकूंगा?

(शेष पृष्ठ १२ पर)

राजस्थानी (डिंगल) काव्य में महाराणा प्रताप

डा० भवानीलाल भारतीय

राजस्थान की वीर प्रसविनी धरती ने अपनी रत्न गर्भा कुक्षि से जिन अनेक वीरो, स्वाभिमानी देश भक्तो तथा स्वदेश हित के लिये सर्वस्व समर्पित कर देने वाले महापुरुषो को जन्म दिया है उनमे प्रताप अन्यतम हैं। मध्य-कालीन भारतीय इतिहास की वीरत्रयी(प्रताप, शिवाजी तथा गुरु गोविन्दसिंह) मे महाराणा प्रताप का स्थान काल की दृष्टि से तो प्रथम है ही त्याग एव बलिदान की दृष्टि से भी वे समस्त देश मे आदर के पात्र रहे हैं। आने वाली पीढिया उनके देश हित तथा स्वातन्त्र्य प्रेम के उदाहरण से निरतर प्रेरणा लेती रहेगी। अग्रेजी के विख्यात लेखक कार्लायल ने अपनी पुस्तक हीरोज एड हीरो वरशिप म मनुष्य हृदय की इसी उदात्त भावना का विवेचन किया है जिसके वशवर्ती होकर हम अपने पूर्वज महापुरुषो को उनके लोकोत्तर गुणो के कारण स्मरण करते हैं। इतिहास भी हमे ऐसे ही सर्वस्व त्यागी महापुरुषो के जीवन एव कृतित्व का अध्ययन करने की प्रेरणा देता है। जिनसे जन-साधारण भी अपने जीवन तथा चरित्र को लोकोत्तर बनाने मे समर्थ होता है। हमारे स्वाधीनता सग्राम के नायको ने मध्यकालीन स्वाधीनचेता इन्ही नायको से स्फूर्ति तथा प्रेरणा ग्रहण की थी। लोक मान्य तिलक ने महाराष्ट्र मे शिवाजी उत्सव प्रारम्भ किये। लाला लाजपतराय ने शिवाजी का जीवन चरित्र लिखा और इन्ही भारतीय देश भक्तो के समकक्ष इटली के स्वतन्त्रता पुजारी टेरेंस मैक्सविनी तथा मैरी बाल्डी के जीवन चरित्र लिखकर देश के युवा वर्ग को आजादी के लिये कर्त्तव्यारूढ होने के लिये कहा। अग्रेजी शासको ने इन जीवनचरितो पर प्रतिबन्ध लगा दिया। अमर शहीद गणेश-शकर विद्यार्थी ने आजादी के लिए निर्जन अरण्यो मे भटकने वाले त्याग वीर महाराणा प्रताप को ही आदर्श बनाकर अपने पत्र का नामकरण भी 'प्रताप' से ही किया, जिसके सम्पादकीय विभाग मे कुछ काल तक हुतात्मा भगतसिंह ने भी कार्य किया था।

महाराणा प्रताप की देश भक्ति और उनका स्वातन्त्र्य प्रेम हिन्दी के कवियो और लेखको के लिए सदा से ही प्रेरणा का केन्द्र बिन्दु रहा है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के फुफेरे भाई बाबू राधाकृष्णदास ने प्रताप को नायक बनाकर नाटक लिखा तो द्विवेदी कालीन लेखक प० जगन्नाथ प्रसाद मिलिन्द ने प्रतापी प्रताप की रचना की। वतमान युग के भूषण कहलाने वाले प० श्यामनारायण पाण्डेय ने हल्दीघाटी महाकाव्य लिखकर उस महापुरुष को अमर श्रद्धासुमन अर्पित किये तो प० सोहनलाल द्विवेदी ने अपने भैरवी नामक काव्य सग्रह मे राणाप्रताप शीर्षक से जो कविता लिखी वह हिन्दी पाठको के कण्ठ का हार बन गई।

राजस्थानी कवियो ने तो महाराणा के जीवन काल मे ही स्वातन्त्र्य सग्राम के इस महारथी वीर के क्रिया कलाप को सश्रद्ध भाव से देखा था तथा अपने भाव कुसुमो को उसके लिए अर्पित किया था। डिंगल काव्य निर्माताओ ने प्रताप की यश प्रशस्ति का गान अनेक रूपो और शैलियो मे किया है। यहा कुछ ऐसे ही काव्य के नमूने प्रस्तुत किये जा रहे हैं। जिससे महाराणा के स्वजाति प्रेम तथा स्वधर्म के प्रति निष्ठा सकेत मिलते हैं। निम्न दोहो मे महाराणा के इसी तेज बल और प्रताप का चित्रण है।

कवि की कामना—

> माई एडा पूत जण जेडा राणा प्रताप।
> अकबर सूतो ओझकै जाण सिराणै साप।।

हे माता, तू महाराणा प्रताप के समान वीर पुत्रो को जन्म दे। सम्राट् अकबर तो सोता हुआ भी ऐसे चौक पडता है मानो उसके सिरहाने कोई साप बैठा है।

महाराणा ने हल्दीघाटी के युद्ध के बाद अपने परिवार सहित जगलो मे ही अवशिष्ट जीवन को बिताया—

> घर बाकी दिन पाधरा, मरदन मूकै माण।
> घणा नरिदा घेरियो, रहे गिरदा राण।।

उसकी भूमि अत्यन्त विकट है, उसके दिन फिर भी अनुकूल हैं। वह वीर प्रताप अपने मान को नहीं छोडता। वह राणा अनेक राजाओ से घिरा हुआ पहाडो मे रहता है।

कवि को इस बात पर गर्व है कि जहा अन्य राजा अकबर के तेज के आगे नतमस्तक होकर उसके सामने से निकल गये वहा राणा प्रताप तो उसके समक्ष आया ही नही—

> आइयो अकबरियाह, तजे तुहालो तुरकडा।
> नम नम नीसरियाह राण बिनासह राजवी।।

इन्ही महाराणा प्रताप ने जब अपने राजकुमारो और राजकुमारियो को घास मिली गेहू की रोटी खाते देखा और बन-बन भटकने पर भी मेवाड को स्वाधीन करने की कोई सुगम राह दिखाई नही पडी तो मानव सुलभ दुर्बलता के कारण एक बार तो उन्होने दिल्ली के सम्राट को सधि पत्र भेज दिया। उन दिनो वे हल्दीघाटी के युद्ध मे अपार जन धन की क्षति उठाकर अरावली की सघन उपत्यकाओ मे अज्ञातवास कर रहे थे। अपनी सन्तान की क्षुधा वेदना को सहन करना पाषाण हृदय पुरुष के लिए भी कठिन हो जाता है, फिर वत्सल पिता की ममता रखने वाले महाराणा के लिये भला यह कैसे सह्य होता कि वे अपनी कन्या की भूख से पीडित न होते। यदि ऐसे विकट क्षण मे भी उनका हृदय पाषाण तुल्य कठोर ही बना रहता तो वे मनुष्य कोटि मे रहते ही क्यो ?

जब महाराणा का यह सधि पत्र अकबर को मिला तो उसका आश्चर्या-न्वित होना स्वाभाविक ही था। किन्तु स्वय राणा की भतीजी किरण मई के पति तथा बीकानेर नरेश के अनुज महाराज पृथ्वीराज (प्रिथीराज राठौड) का माथा ठनका उसने इस आगत सधि पत्र को जाली बता कर सम्राट् के मन मे भी सशय पैदा कर दिया और स्वय ही उसकी वास्तविकता का पता लगाने का जिम्मा लेकर महाराणा को अपना विख्यात काव्यमय पत्र लिखा। पत्र के अन्त मे उन्होने महाराणा से निवेदन किया कि यदि वे इस पत्र का प्रतिवाद कर देते हैं तब तो वे अकबर की सभा मे अपनी मूछो पर ताव देकर कहेंगे कि मेवाड का राणा अपराजेय है, वह किसी भी स्थिति मे दिल्ली की अधीनता स्वीकार नही करेगा, किन्तु यदि दुर्भाग्यवश इस सधिपत्र को आप सत्यापित कर देते हैं तब तो मेरे लिए अपने शरीर पर खुद ही तलवार का प्रहार कर मर जाने के सिवाय और क्या रास्ता बच रहेगा। भगवान् एकलिंग के दीवान (प्रतिनिधि) बनकर मेवाड की धरा का शासन करने वाले महा-राणा से कवि इन बातो मे से एक को लिख देने का अनुरोध इस सोरठे मे करता है—

> पटकू मूछा पाण कै पटकू निज तन करद।
> लिख दीजै दीवाण इण दो महली बात इक।।

अब कवि के शब्दो मे महाराणा का उत्तर भी सुनें—

> तुरक कहासी मुख पतो, इण मुख सू इकलिंग।
> ऊगै जाही ऊगसी प्राची बीच पतग।।

हे राठौड, प्रतापसिंह अकबर को तुर्क ही कहेगा, सम्राट् नहीं। मेरे मुख से तो एकलिंग महादेव की जयकार ही निकलेगी।

सूर्य तो पूर्व से ही उदय होगा, पश्चिम से कदापि नहीं। पुन अपने भतीजी जवाई राठौड प्रिथीराज को आश्वस्त करते हुए कहा '—

> खुसी हूत पीथल कमध, पटको मूछा पाण।
> पछटण है जेतेपतो, कलमा सिर कैवाण।।

हे राठौड, तुम खुशी खुशी अपनी मूछो पर ताव देओ। शत्रुओ के सिर पर तलवार का प्रहार करने के लिए अभी तक प्रताप जीवित है।

आढा गोत्र के चारण दुरसा ने महाराणा की प्रशसा मे छिहत्तर सोरठो के प्रसिद्ध काव्य विरुद-छिहुतरी की रचना की थी। उदय पुर की प्रताप सभा ने वि०स० १९६४ मे उसे करणीदान दधवाडिया की टीका के साथ प्रकाशित कराया। राजस्थानी के प्रसिद्ध विद्वान् प्रो० नरोत्तम-दास स्वामी ने 'राजस्थान रा दूहा' नामक अपने ग्रन्थ मे इस काव्य के अनेक दोहो को सटिप्पण उद्धृत किया था। महाराणा का स्वराज्य सग्राम केवल अपने मेवाड राज्य को स्वाधीन करने का एकाकी प्रयास ही नहीं था, अपितु

यह समग्र हिन्दू समाज को जागृत करने का एक राष्ट्रीय अनुष्ठान था। इसी अभिप्राय को कवि दुरसा ने इन छन्दो में मुखरित किया है —

अकबर घोर अ धार ऊ घाणा हिन्दू अवर।
जागै जगदातार पोहरै राण प्रताप सी ॥

अकबर घोर अ धकार के तुल्य है। उसने स्वाधीन क्षत्रिय राजाओ को पराजित कर पराधीनता की काली निशा में सुला दिया। सभी देशवासी इस कालरात्रि मे निद्रा के वशीभूत हो गये हैं। ऐसे विकट समय मे जगत् को स्वाधीनता के मन्त्र का दान करने वाला महाराणा प्रताप प्रहरी की भाति सजग खडा है।

अकबर समद अथाह तिह डूबा हिन्दू तुरक।
मेवाडो तिण माह पोयण फूल प्रताप सी ॥

अकबर गहन गम्भीर सागर के तुल्य है जिसमे हिन्दू और मुसलमान सभी डूब गये। किन्तु इस समुद्र मे मेवाड का राणा प्रताप कमल के फूल की भाति ऊपर ही ऊपर तैर रहा है।

जब कि अकबर ने सारे राजाओ को अपने वश मे कर उनके घोडो पर दाग लगवा दिये, किन्तु बिना दागे हुए घोडे का सवार तो महाराणा अकेला ही है —

अकबरिये इक बार दागल की सारी दुनी।
अणदागल असवार, रहियो राण प्रताप सी ॥

अब कवि ने अकबर को सावधान करते हुए कहा कि हे बादशाह तू इस बात का गर्व मत करना कि सारे हिन्दू तेरे सेवक बन गये हैं। क्या तुमने एकलिंग के दीवान महाराणा को अपने दरबार के कटघरे के आगे झुक कर, लटके करते हुए सलाम करते देखा है?

अकबर गरब न आण, हिन्दू सह चाकर हुआ।
दीठो कोई दिवाण, करतो लटका कटहडे।

कवि ने उन क्षत्रिय राजाओ की भी भर्त्सना की जिन्होने अपनी राजकुमारिया मुगलो को ब्याही। इससे आर्यकुल लज्जित ही हुआ। आर्य मर्यादा के रक्षक तो महाराणा ही हैं —

सौपे हिन्दू लाज, सगपण रोपै तुरक सू।
आरज कुल की आज, पूजी राण प्रताप सी ॥

सम्राट् की अधीनता को स्वीकार करने वाले अन्य राजा तो मात्र पत्थर ही हैं जिन्हें अकबर ने एकत्र कर रखा है। राणा रूपी पारस मणि भला उसके हाथ कैसे आती —

अकबर पथर अनेक के भूपत भेला किया।
हाथ न लागो हेक पारस राणा प्रताप सी ॥

महाराणा ने तो स्वतन्त्रता संग्राम मे स्वय की आहुति देकर अपने पूर्वज राणा सांगा की परम्परा का ही पालन किया है जो विदेशी आक्रान्ता बाबर से भिडा था—

सागो धरम सहाय बाबर सू भिडियो विहस।
अकबर कदमा आय, पडे न राण प्रताप सी ॥

कवि ने महाराणा को 'हिन्दू पति' की संज्ञा दी जिसने हिन्दुओ की मर्यादा रखी स्वय विपत्ति और सन्ताप सहकर भी जो अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ रहे—

हिन्दूपति परताप पत राखी हिन्दुवाण री।
सहै विपत सन्ताप सत्य सपथ करि आपणी ॥

निश्चय ही महाराणा प्रताप को लेकर लिखा गया यह वीर काव्य डिंगल कविता का शिरोभूषण है। वीर भावनाओ की इतनी साकार अभिव्यक्ति अन्यत्र कहा है? ससार मे जब तक स्वदेश भक्ति और वीरभावो का सम्मान रहेगा, तब तक यह काव्य भी अमर रहेगा।

जब महाराणा १६५३ वि० मे स्वर्गवासी हुए और उनके निधन का समाचार अकबर के दरबार मे पहुचा तो वीर भावो का सम्मान करने वाले सम्राट ने दीर्घ निश्वास लेकर महाराणा को मौन श्रद्धाजलि अर्पित की ऐसा करते समय उसके नेत्र अश्रुपूरित हो गये। इसी मार्मिक प्रसग की व्यञ्जना मे कवि दुरसा आढा ने निम्न छप्पय लिखा —

अस लेगो अणदाग पाग लेगो अणनामी।
गो आडा गवडाय जिको वहतो धुर वामी ॥
नवरोजे नह गयो न गो आतसा नवल्ली।
न गो झरोखा हेठ जठे दुनियाण दहल्ली ॥
गुहिलोत राण जीती गयो दसण मन्द रसणा डसी।
नीसास मूक भरियानयण तो मृत साह प्रताप सी ॥

अर्थात् हे महाराणा तुमने अपने अश्व को कभी शाही मुद्रा से नहीं दगवाया। अपनी पगडी बादशाह के सामने नही झुकाई। सम्राट का विरोध कर तुमने चारणो से अपनी प्रशस्ति का खूब गान करवाया। सम्राट् अकबर के द्वारा आयोजित दासता के प्रतीक नैरोज के मेले मे तुम कभी नहीं गये और सारी दुनिया लालकिले के जिस शाही झरोखे के नीचे खडे होकर बादशाह का दर्शन करती थी वहा भी तुम कभी नही गये। इस प्रकार हे स्वतन्त्रता के पुजारी, गुहिलोत वश (बाप्पा रावल का वश) मे जन्मे महाराणा, अन्त में तुम्हारी ही विजय हुई। तुम्हारी मृत्यु का समाचार सुनकर अकबर ने अपनी जीभ को दातो तले दबा लिया और नि श्वास लेते हुए गद्गद् कण्ठ सजल नेत्रो से तुम्हे मौन श्रद्धाजलि अर्पित की। कवि ने यह छप्पय भी अकबर के दरबार मे ही पढकर सुनाया था। अन्य दर बारियो का अनुमान था कि सम्राट शायद अपने चिर वैरी महाराणा का गुणगान करने वाले कवि से अप्रसन्न होगा, किन्तु उदारचेता सम्राट तो गुण ग्राहक था। उसने अपने ही मनोभावो को व्यक्त करने वाले कवि के इस छन्द को सुनकर प्रसन्नता ही प्रकट की। मेवाड और राजस्थान के इतिहासकारो ने महाराणा प्रताप की वीरगाथाओ को प्रामाणिक रूप से अपने ग्रन्थो मे निबद्ध किया है। कर्नल जेम्स टाड, कविराजा श्यामलदास, महामहोपाध्याय गौरी शकर हीराचन्द ओझा, जगदीशसिंह गहलोत आदि के इतिहास ग्रन्थ इस विषय की अधिकृत सामग्री प्रस्तुत करते हैं।
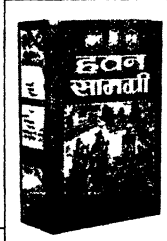
८/४२३ नन्दन वन, जोधपुर-३४२००८

महाराणा प्रताप की रानी

(इतिहास का एक विद्यार्थी)

सन १५७६ ई० मे हल्दीघाटी का विकट युद्ध हुआ। मानसिंह ने अपमान का बदला चुका लिया। यदि राणा चाहते तो अपने भाले की नोक से बाबर के घर का चिराग गुल कर देते। शाहजादा सलीम के हाथी पर चेतक अपने अगले चरण रख चुका था। राजपूतो न बडी वीरता दिखाई, मान का अभिमान विजयी हुआ। राणा के स्वामीभक्त सरदार माना ने उनकी जान बचाई। अकबर के शत्रु को प्रश्रय देना आसान काम नही था और फिर इतनी शक्ति और गौरव ही किसमे रह गया था जो मेवाड के सिसोदिया परिवार को आश्रय देता। महाराणा की प्रियतमा ने कहा—'प्राणाधार, पहाडिया और जगल ही हमारा राज्य है, भील ही हमारी प्रजा है, उदयपुर, कुम्भलनेर आदि के राजमहलो से भी अधिक सुख हमे जगलो मे मिलेगा। स्वाधीनता के सैनिको के लिए जगल ही मगल का स्थान है।' राणा चल पडे। उनके पीछे-पीछे कुमार अमरसिंह, उनकी प्यारी राजकुमारी और मेवाड की महारानी थी। राणा ने सारे साधन नष्ट कर दिये, जिससे मुगल उन सामरिक वस्तुओ का उपयोग कर मेवाड की 'स्वाधीनता को जर्जर न कर सके। स्वाधीनता का व्रत बहुत ही कठोर होता है। राणा मेवाड की पवित्र भूमि से विदा ले रहे थे। सामने निर्जन मैदान था। विदेशी आक्रमण ने राजस्थान को मरुस्थान बना दिया था। रानी ने कहा, 'आर्य पुत्र, इसी तरह महाराज राम ने भी तो विधर्मियो और राक्षसो के दमन के लिए चौदह साल तक वनवास किया था।' महाराणा ने रानी की ओर देखा, उनकी आखो मे आनन्द और विषाद जल बन कर उमड आया। बाप्पा रावल के वशधर ने कहा, प्रिये, सीता भी तो साथ थी।

वीर दम्पति ने स्वाधीनता का कठिन व्रत लेकर अपनी माता का दूध सफल कर दिया। उन्होने पच्चीस साल तक शक्तिशाली साम्राज्य का सामना किया। मुगलो की छावनियो पर छापा मारना, मुगल सैनिको की आखो से बात ही बात मे ओझल हो जाना, रानी और राजकुमार के लिए भोजन सामग्री एव फल फूल का प्रबन्ध करना, एक स्थान से दूसरे स्थान पर जगलो मे मारे-मारे फिरना ही उनका काम था। उनका दृढ निश्चय था कि बाप्पा रावल का वशज कभी यवनो और विधर्मियो के सामने मस्तक नही झुकायेगा और न उनसे रोटी बेटी का सम्बन्ध करेगा। महाराणा प्रताप और उनकी राजरानी का वीरतापूर्ण इतिहास मेवाड के कण-कण मे विद्यमान है। राजरानी कभी नहीं चाहती थी कि जिस राणा सागा का आतक हिमालय से रामेश्वर तक छाया हुआ था, उनकी वीर सन्तान कभी यवनो की दासता स्वीकार करे। राजमहल मे पराधीन रहकर दीया बाती करना रानी को असह्य था। वह तो अपने पति के साथ जगल मे सुख अनुभव करती थी। रानी कहा करती थी कि 'दु ख आयेंगे चले जायेंगे, लेकिन मर्यादा तथा धर्म के साथ गौरव और कीर्ति तो अमिट ही रहेगे।"

रानी को बडी-बडी विपत्तियो और असुविधाओ का सामना करना पडा। कई बार तो उसने भोजन तैयार कर पति और कुमार के सामने पत्तल और दोने रक्खे ही थे कि दुश्मन के सैनिको के आ जाने की आशका से उन्हे छोड देना पडा। उपवास पर उपवास होते थे, पर स्वाधीनता की मस्ती तो कुछ और ही थी। एक बार रानी ने घास की रोटी तैयार की। रोटो मे आधे-आधे टुकडे का हिस्सा लगता था। राणा की कन्या रोटी खाने वाली ही थी कि जगली बिलार ने छीन ली। राजमहल मे रहने वाली, फूलो की सेज पर सोने वाली सन्तान निर्जन वन स्थली मे घास की आधी रोटी भी न पा सकी। साध्वी रानी ने लडकी की चीख अनसुनी कर दी। वह नही चाहती थी कि इन छोटी छोटी बातो से पति की चिन्ता बढाई जाय। लेकिन यह छोटी बात न थी। राजकुमारी घास की रोटी भी न खाने पाये, क्या यही स्वाधीनता व्रत था ? क्या इसी लिए राणा ने मेवाड की पवित्र भूमि से विदा लेने का निश्चय किया था ? वह नरसिंह देख रहा था, जिस पत्थर से कलेजे पर साम्राज्य का फौलादी पजा आघात न कर सका, जिस पर पराधीनता की काली लकीर मान का फूफा अकबर न खीच सका, वह इस दु ख के वज्राघात से चूर चूर हो गया। राणा ने देखा आसमान काला पड गया, जमीन थरथर कापने लगी, राणा का धैर्य विचलित हो उठा।

वीरहृदया रानी ने अपने प्रियतम की मानसिक स्थिति जान ली। फिर भी उसे विश्वास था कि हिमालय भले ही झुक जाए, सात महासागर भले ही सूख जाय, लेकिन राणा जिनकी नसो मे पदमनी का खून बह रहा है, जिनके अग अग मे राणा सागा की वीरता भरी है, कभी विचलित नही होगे। प्रताप ने कहा—'प्राणेश्वरी, अब तुम लोगो का दु ख ये आखें न देखेगी। मैंने अच्छी तरह विचार कर देख लिया है कि अकबर से सन्धि कर लेने मे ही हित है।'

रानी ने पति की ओर देखा। उसने कहा प्राणेश्वर, क्या इसी दिन को देखने के लिए हम लोगो ने स्वाधीनता व्रत लिया था ? जिस समय आपका सन्धिपत्र शाही दरबार मे पहुचेगा, आपकी वीरता और साहस की स्तुति करने वाला अकबर क्या कहेगा ? शाही जनानखाने मे अपने उद्धार की आशा लगाकर बैठी रहने वाली राजपूतनियो की क्या दशा होगी ? आपने इस पर विचार कर लिया। जिस समय बेरम का स्वाभिमानी पुत्र रहीम खानखाना सुनेगा कि आप ने सन्धि की बात चीत चलाई है तो उसकी वाणी अकबर के सामने किस तरह खुलेगी ? रहीम नवाब तो आपकी वीरता के गीत गाया करता है। वह तो बाबर के वशज से कहता है कि दुनिया की तमाम वस्तुए अस्थिर हैं, सम्पत्ति और राज्य नष्ट हो जायेंगे, लेकिन वीर का नाम अमर रहता है। 'प्रताप' ने सब कुछ त्याग दिया लेकिन उसने किसी के सामने कभी मस्तक नही झुकाया, उसने अपने कुल की मानमर्यादा अक्षुण्ण रक्खी। क्या आपको स्मरण नही है कि हल्दीघाटी की युद्ध समाप्ति पर शक्तिसिंह ने अपनी जान की बाजी लगा कर भी, हो, नीला घोडा रा असवार' कहकर आपको पुकारा था। यदि वह जानते थे कि मेवाड का सूर्य विपत्तियो के बादलो मे छिप जाएगा स्वाधीनता पर ग्रहण लग जायगा, तो कभी आपकी सहायता न करते। शाहजादा सलीम उन्हें ताना मारेगा।"

प्रताप ने कहा, 'राजरानी जगल मे रहकर तुम राजरानी नही बन सकती अगर उसकी पत्नी और राजकन्या सुख की रोटी नही खा सकते। प्रताप नही देख सकता कि उसके असहाय और अनाथ बच्चो पर जगल के सिंह और भेडिए हमला करे। राज परिवार के लिए राजमहल ही उचित निवास स्थान है।

रानी का गला भर आया, राजपूतनी की देह मे आग लग गई। चेहरा तमतमा उठा। उस वीर क्षत्राणि ने कहा, 'मेवाड के राज महलो मे आग लगे यदि वे दुष्ट यवनो की पराधीनता की बेडी मे जकड जाने के साधन है। इस राजस्व का नाश हो जो दासता म बाधकर मेवे मिष्ठान्न और दूध मलाई खिलाकर जाति गौरव नष्ट कर दे। कौन कहता है कि जगल के भेडिए और सिंह राणा की सन्तान पर आक्रमण करेंगे ? उन्होने तो आप जैसे नरसिंह की आधीनता उसी दिन स्वीकार कर ली जिस दिन आपने पदार्पण किया। धर्म तथा मर्यादा के पुजारियो के लिए घास की रोटी भी मीठी है। उन्हे पकवान नही चाहिए। क्या आप ने अभी तक नही समझा कि आपके इस निश्चय ने सती पदमनी, पन्ना धाय, राजरानी मीरा और महाराणा सागा की आत्माओ मे कितनी हलचल पैदा कर दी होगी। वे चिन्तित हो उठे होगे कि ऐसा न हो, कि कही मेवाड का गौरव डूब जाय। क्या आपने मानसिंह से नही कहा था कि जिस राजपूत ने तुर्कों और विधर्मियो से रोटी बेटी का सम्बन्ध किया है, उसके साथ भोजन करने मे या उसका स्वागत सत्कार करने मे मेवाड का अधिपति अपना अपमान समझता है। राणा को निश्चय से डिगाना आसान बात नही थी। जिसे आसफ खा की विशाल सेना मेवाड की धर्मोपली मे न विचलित कर सकी, उसकी प्रतिज्ञा खिलवाड थोडे ही थी।" रानी ने पति की इच्छा पूर्ति मे अपना सुख समझा। आर्य नारी पति को प्रसन्न रखने के लिए बडी से बडी विपत्तियो का सामना कर सकती है। रानी साध्वी और पतिव्रता थी। पति जो कुछ भी करता है उसके लिए हितकर होता है।

सन्धि-पत्र भेजा गया। बीकानेर के राजा के भाई महाराज पृथ्वीराज ने पत्र पर सन्देह प्रकट किया। उसने भरे दरबार मे कहा कि सिसोदिया कुल अपनी स्वाधीनता कभी इस तरह नीलामी पर नही चढा सकता। उसने राणा को एक लम्बा चौडा पत्र लिखा। राणा का विचार बदल गया और थोडे ही दिनो मे उसने अपने राज्य का अधिकाश भाग अकबर से छीन लिया।

आर्य नारियो ने पति के सुख दु ख मे साथ साथ रहकर सदा हाथ बटाया है। महारानी सच्चे अर्थ मे राणा की सहधर्मिणी थी। उसने अर्धांगिनी का कर्तव्य पालन किया।

महाराणा प्रताप जयन्ती

डा० योगेन्द्र कुमार (जम्मू)

महाराणा प्रताप हमारे देश के प्रेरणा स्रोत है। उनकी वीरता की एक घटना का सक्षिप्त विवरण दे रहा हू। यह घटना जुलाई सन् १५५६ की है। हल्दी घाटी का मैदान श्री बल्लभाचार्य सम्प्रदाय के प्रसिद्ध मन्दिर नाथ द्वारा के पास ही है जहा पर यह युद्ध हुआ है उस स्थान को आज रक्त तलैया के नाम से पुकारा जाता है क्योकि उस दिन के युद्ध में रक्त का कीचड बन गया था। उस दिन प्रताप अपने प्यारे घोडे चेतक पर सवार हुआ। राजसी छत्र और सूर्य का निशान उसके साथ था। महाराणा प्रताप की सेना में केवल २२ हजार राजपूत थे परन्तु वे असली और बाके राजपूत थे। इनमे थोडे से हमेशा के वफादार भील भी सम्मिलित हो गये। किन्तु अकबरी सेना के सामने यह सेना बहुत कम थी। कई लाख का दल एक ओर और २२ हजार एक ओर। इस पर भी भील मैदान की लडाई के अभ्यस्त नही थे। पहाडो से प्रहार करना ही उन्होने सीखा था। पहले दो दिन तक तो हल्दी घाटी के पहाड पर कब्जा करने के लिए युद्ध होता रहा। मुसलमान सेना पहाड पर कब्जा करने मे असफल हुई वह महाराणा का सेना को मैदान मे उतारने के लिए पीछे हट गई। महाराणा प्रताप का इच्छा थी कि देश द्रोही मानसिंह कही मिल जाय तो उसे अपनी तलवार के जौहर दिखाये। जब महाराणा निडरता से तलवार चलाते हुए मैदान में लड रहे थे तो उन्हे सुनहरे हौदे वाला हाथी दिखाई दिया। इस हाथी पर शहजादा सलीम बैठा हुआ था बस फिर क्या था सिंह के समान गरज कर उसका ओर महाराणा झपट पडा। उसके साथी राजपूतो ने भी उसका साथ दिया प्रताप का घोडा चेतक हाथी के सम्मुख जा पहुचा। घोडे ने दोनो आगे के पैर ऊपर उठाये महाराणा प्रताप ने भाले से प्रहार किया महावत मारा गया। सलीम यदि फौलादी हौदे के भीतर न छुपा होता तो प्रताप की तलवार ने उसका काम तमाम कर दिया होता युद्ध प्रतिक्षण भयानक होता गया दिल्ली की सेना सलीम को बचाने के लिए हाथी के आसपास आ गई। मेवाड के शूरवीर प्रताप के आसपास थे प्रताप के शरीर मे तीन घाव भाले के, तीन घाव तलवार के और एक घाव गोला का लग चुका था। घोडा चेतक की एक टाग लहूलुहान हो चुकी थी। सलीम के हाथी ने अपनी सूड मे बधी हुई तलवार से चेतक की टाग मे प्रहार कर दिया था।

सलीम का हाथी घबडाकर भाग निकला। सलीम भी सकुशल निकल गया। इधर मुसलमानी सेना प्रताप पर टूट पडी। प्रताप शत्रु सेना से घिर गया। चेतक घायल होकर थक चुका था। सरदार झाला जो प्रताप के पास ही लड रहा था। उसने सूर्यमुखी निशान हठपूवक अपने हाथ मे ले लिया। शत्रुओ ने उसे ही प्रताप समझ लिया। शत्रुओ का जोर उसकी तरफ हो गया। प्रताप आज युद्ध में लडते लडते ही बलिदान हो जाना चाहते थे। परन्तु साथियो ने उसके घोडे की लगाम पकड ली और जबर-दस्ती रणक्षेत्र से बाहर खीच ले गये।

झाला नरेश बराबर शत्रुओ से लडता रहा। मरते-मरते अपने हाथ से, पाव से, तलवार से अनेक शत्रुओ का नाश किया अन्त में उस अकेले सूरमा का यमनो ने मिलकर इस प्रकार वध किया जैसे घायल सिंह पर भेडियो का दल लिपट जाता है उसके १५० साथी भी वीरता से लडते हुए शहीद हुए। सरदार तोवर इस युद्ध में काम आया। उसका पुत्र, उसके नातेदार और प्रताप के ५०० प्यारे सम्बन्धी सब रणक्षेत्र मे जूझ मरे। २२ हजार राजपूतो मे से केवल ८ हजार जीवित बचे। रणक्षेत्र से दूर बिना किसी साथी के घायल प्रताप घायल घोडे पर अपनी छावनी की तरफ जा रहा था जिसमे कुछ विश्राम मिल सके।

प्रताप मन ही मन पछताता था मैं क्यों न आज मेवाड के काम आ गया। इससे अच्छा दिन मरने का अब कौन सा आयेगा। फिर उसने सोचा नही मेरा बेटा अमरसिंह किसी काम का नही है, मेरा कुछ दिनो के लिए जीवित रहना नितान्त आवश्यक है ताकि मेवाड राज्य को हानि न पहुच सके।

राणा के पीछे दो शत्रु सैनिक पीछा करते हुए चले आ रहे थे। एक सवार उन दोनों के पीछे चला आ रहा था। आज भाई को आपत्ति में देख कर भाई का रक्त उबल पडा था। शक्तिसिंह ने दूर से दो सैनिकों को प्रताप का पीछा करते हुए देख लिया था। उससे न रहा गया वह भी उधर ही चल दिया। प्रताप के घायल चेतक ने एक बरसाती नाले को कूद कर पार किया। मुसलमान सैनिको के घोडे नाले के इस पार ही अड गए। शक्तिसिंह ने वहा पहुचकर सबसे पहले तो दोनो सैनिको को समाप्त किया और उसके बाद भाई के समीप जाने का निश्चय किया। प्रताप ने देखा कि शक्तिसिंह मेरी तरफ बढा आ रहा है—सम्भव है यह मुझसे पिछला बदला ले। प्रताप का प्यारा चेतक अपने प्राण छोड चुका था। आज उसी स्थान पर चेतक का स्मारक हल्दी घाटी मे बना हुआ है। उधर शक्तिसिंह ने भाई के पास जाकर अपने-अपने हथियार एक तरफ रख दिये और दौडकर भाई के चरणो मे गिरकर आसू बहाने लगा। उधर प्रताप की आखो मे भी आसू आ गये। यह दोनो भाईयो का अपूर्व मिलन था। दो भाईयो का रक्त मिलकर फिर एक चट्टान का रूप धारण कर रहा था।

शक्तिसिंह ने कहा भाई देर मत करो आपकी मेवाड को अभी बहुत आवश्यकता है। मेरा घोडा लो और यहा से चले जाओ। मैं बहुत शीघ्र ही आपसे आकर मिलूगा। जिन दिनो प्रताप उदयपुर की झील के निकट बास की भोपडी मे रहना था उस समय शक्तिसिंह ने सोचा कि भाई को खाली हाथ नही मिलना चाहिए। उसने मार्ग में भैसरूर का किला मुसल-मानो मे जीतकर प्रताप को भेट मे अर्पित किया। प्रताप ने यह किला शक्तिसिंह एव उसकी सन्तान को जागीर मे प्रदान किया।

हल्दी घाटी मे वीरता से प्राण देने के कारण झाला सरदार की सन्तान को राणा की पदवी दी गई। इस जाति का सरदार राणा की बाई ओर चलता था और राजसी मोहर उसके हाथ मे रहती थी।

हल्दी घाटी के युद्ध के पश्चात् सलीम ने सोच लिया कि अब महाराणा मे सिर उठाने की शक्ति नही रही है। परन्तु प्रताप ने साहस नहीं छोडा और न ही अकबर की आधीनता स्वीकार की। मेवाड के किले एक-एक करके मानसिंह और शाही सेना के हाथ आ गये। दिल्ली सेना ने कोमल-मेर के किले को घर लिया जिसमे प्रताप अपने बहादुर सैनिको के साथ रह रहे थे। कुछ देश द्रोहियो के विश्वास घात के कारण प्रताप को वह किला भी छोडना पडा। जगलो मे प्रताप को रहना पडा अब तो जहा प्रताप था वही पर उसकी राजगद्दी थी। मेवाड की जनता उसका वैसा ही सम्मान करती थी जैसा कि पहले महलो मे रहने पर करती थी।

प्रताप अपने देश की आजादी के लिये जगलो मे परिवार सहित कष्ट झेलता रहा। उसकी पत्नी भी बहुत बहादुर पत्नीव्रत धर्म को निभाने वाली थी। नारी मे पुरुष से छ गुना साहस अधिक होता है इस सिद्धान्त को उसने सफल कर दिया था। प्रताप को समय समय पर उत्साहित करना उसका काम था। श्याम नारायण पाडेय ने हल्दीघाटी काव्य लिखने हुए लिखा है कि जब प्रताप अपने भूखे बच्चों की दुर्दशा पर कुछ विचलित हुआ तो प्रताप की पत्नी ने वीरता के साथ कहा —

> थक गया समर से यदि तू रक्षा का भार मुझे दे।
> मैं चण्डी सी बन जाऊ अपनी तलवार मुझे दे।।

प्रताप ने एक ही वर्ष के भीतर सम्पूर्ण मेवाड पर अधिकार कर लिया केवल चित्तौड, अजमेर तथा एक और जागीर अकबर के अधिकार में रही। उधर मानसिंह को भी ललकारा उसे भी देशद्रोही होने की सजा दी। आम्बेर के किले पर भी आक्रमण किया गया। सारा जीवन प्रताप ने लडाई मे बिताया। झोपडो मे रहने की प्रतिज्ञा की, पत्तलो पर भोजन किया। परन्तु उसने अकबर को आधीनता स्वीकार नही की, शान से जिया और शान से मरा। मरते समय उसके मुख से "आह" का शब्द निकला यह शब्द सुनकर चन्दावत सरदार ने पूछा आपको किस बात का दुख है जिसके कारण आपकी आत्मा शान्ति से नहीं निकल पा रही है। प्रताप ने आखे खोल दी और कहा 'मैं शायद अभी न मरू, मैं चाहता हू आप सब लोग प्रतिज्ञा करे कि मेवाड के साथ आप प्रेम रखेंगे और हमारा देश तुर्कों के अधिकार मे नही आयेगा। आप प्रण करे इससे मुझे आराम

(शेष पृष्ठ ११ पर)

हल्दी घाटी का वीर नायक

'लीले घोड़े रा असवार' महाराणाप्रताप

डा० भवानीलाल भारतीय, जोधपुर

हल्दीघाटी का इतिहास प्रसिद्ध युद्ध स्वातन्त्र्य प्रेमी महाराणा प्रताप और अकबर के पुत्र सलीम के बीच हुआ। आमेर के राजा मानसिंह के उकसाने से अकबर ने सलीम के नेतृत्व में मुगल सेना को मेवाड़ का दमन करने हेतु भेजा था। उस समय महाराणा अपने देशभक्त राजपूत एवं भील सैनिकों के साथ स्वदेश रक्षा के लिये सर्वस्व बलिदान हेतु रण क्षेत्र में अवतरित हुये। महाराणा का प्रिय घोड़ा चेतक जिसे 'नीले घोड़े' की संज्ञादी गई है, एक बार तो सलीम के हाथी के मस्तक तक पहुंचा तथा महाराणा के तीखे भाले ने महावत के मस्तक का उच्छेद कर दिया, सलीम भी मारा जाता किन्तु वह हौदे की ओट में छिप गया।

इसी महायुद्ध में जब एकाकी महाराणा अनेक मुगल सैनिकों से घिर गये तो झाला मानसिंह नामक उनके एक वफादार सामन्त ने स्वयं महाराणा के छत्र चंवर, मुकुटादि स्वशरीर पर धारण कर प्रताप को वहां से विदा किया। वह अकेला राजभक्त सामन्त सकड़ों मुगल सैनिकों से लड़ता हुआ मर गया। झाला मानसिंह का त्याग और बलिदान देश के इतिहास में अमर हो गया। जब महाराणा की सेना प्रायः समाप्त हो गई तो अपने सामन्तों का परामर्श स्वीकार कर महाराणा चेतक पर सवार हो अरण्य पथ की ओर चलने लगे। यह जानकर कि प्रताप युद्ध स्थल से जा रहे हैं दो मुगल सेनापतियों ने उनका पीछा किया। महाराणा का घोड़ा चेतक तीव्रगति से पर्वत उपत्यकाओं को लांघता अपने गन्तव्य स्थान की ओर बढ़ रहा था। मुगल भी उनका पीछा कर रहे थे। यह दृश्य महाराणा के अनुज शक्तिसिंह ने देखा, जो अपने बड़े भाई का पक्ष छोड़ कर मुगल सम्राट का सहयोगी बन चुका था। परन्तु इस कारुणिक दृश्य ने शक्तिसिंह के हृदय में भ्रातृप्रेम को जागृत किया और वह अनायास ही मुगल सैनिकों से अपने प्यारे और पूज्य भाई महाराणा को बचाने का संकल्प कर बैठा। उसने मुगलों का पीछा किया, उन्हें अपनी तलवार से मार कर समाप्त किया, पुनः बड़े आदर सम्मान से अपने अग्रज को पुकारा 'ओ लीले घोड़े रा असवार रुको।'

महाराणा ने पीछे देखा। शक्तिसिंह निकट आये। एक नाले को पार करते हुये आज्ञाकारी अश्व चेतक को घातक चोट लगी। राणा का प्यारा घोड़ा चेतक धराशायी हुआ। जिस महाराणा ने कड़ी से कड़ी विपत्ति में भी दुःख और करुणा का अनुभव नहीं किया उसी राणा के नेत्र आज इस घोड़े के बलिदानको देखकर अश्रुपूरित हो गये। महाराणा चेतक की मृत्युके पश्चात् शक्तिसिंह का घोड़ा लेकर अरावली की गहन उपत्यकाओं में चले गये। वहां रहकर ही उन्होंने दानवीर भामाशाह प्रदत्त धन से अपनी सेनाको पुनः संगठित किया और मेवाड़ मुगल सत्ता से मुक्त कराया। आज भी हल्दीघाटी की पीली मिट्टी महाराणा के यश, त्याग और बलिदान की साक्षी है। वहां चेतक की स्मृति में निर्मित एक छोटा चबूतरा तथा शिव मन्दिर इस बात का साक्षी है कि स्वामिभक्ति में तो पशु भी कभी-कभी मानव से आगे बढ़ जाता है।

बीकानेर नरेश के छोटे भाई, डिंगल के अद्वितीय कवि राठौड़ पृथ्वीराज (पृथीराज) का विवाह महाराणा की भतीजी किरणमई से हुआ था। महाकवि पृथ्वीराज ने महाराणा की प्रशस्ति में जो सोरठे लिखे हैं, उनमें से निम्न द्रष्टव्य हैं:—

> माई एहड़ा पूत जण जेहड़ा राण प्रताप।
> अकबर 'सूतो ओझकै' जाण सिराणै सांप॥

भावार्थ—हे माता, ऐसे पुत्र को जन्म दे जैसे राणा प्रताप है, जिसको अकबर सिरहाने सांप समझ कर सोता हुआ चौंक उठता है।

> अकबर समद अथाह सूरापण भरियो सजल।
> मेवाड़ो तिण मांय पायण फूल प्रताप सा॥

भावार्थ—अकबर अथाह समुद्र है, जिसमें वीरतारूपी जल भरा हुआ है, परन्तु मेवाड़ का राणा प्रताप उसमें कमल के फूल के समान है।

महाराणा का जन्म जेष्ठ शु. ३ स. १५९७ वि. तथा निधन माघ शु. ११ सं. १६५३ को हुआ था। उनके देहान्त का समाचार जब सम्राट अकबर को मिला तो वीरों की सच्ची परख रखने वाले सम्राट की आखों में आंसू भर आये, वह दीर्घ निःश्वास लेकर अधोमुखी हो गया।

उस समय अपने वीर शत्रु के प्रति भी आदर भावना प्रदर्शित करने वाले गुण ग्राहक सम्राट के इस आचरण को देखकर चारण कवि दुरसा जी आढ़ा ने निम्न छप्पय के द्वारा मुगल सम्राट के भावों को व्यक्त किया तथा स्वर्गीय महाराणा को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की —

> छप्पय—असलेगो अणदाग पाघ लेगो अणनामी।
> गो आड़ा गवड़ाय जिको बहतो धुर वामी॥
> नवरोजे नह गयो, न गो आतसा नवल्ली।
> न गो झरोखे हेठ, जेठ दुनियाण दहल्ली॥
> गहलोत राण जीती गयो, दसण मूंद रसना डसी।
> नीसास मूक भरिया नयण तो मृत साह प्रताप सी॥

अर्थात्—हे गुहिलात राणा प्रतापसिंह, तेरी मृत्यु का समाचार सुनकर बादशाह ने दांतों के बीच जीभ दबाई और निश्वास के साथ आंसू टपकाये, क्योंकि तूने अपने घोड़े को शाही चिह्न से चिह्नित नहीं होने दिया, उस पर दाग नहीं लगने दिया, अपनी पगड़ी दूसरे के आगे नहीं झुकाई तू अपने यश के गीत गवा गया, तू अपने राज्य के धुरे को बांये कन्धे से चलाता रहा, बादशाह द्वारा आयोजित नौरोज के मेले में नहीं आया, न शाही डेरों मे गया, कभी शाही झरोखे के नीचे खड़ा नहीं हुआ। उस प्रकार तू सच्चे अर्थों में जीत गया।

चारण कवि को सम्राट ने पुरस्कृत किया और कहा कि तू ही मेरे भावो को ठीक-ठीक समझ सका है। हल्दीघाटी की युद्धकथा को हिन्दी के महान कवि श्याम नारायण पाण्डेय ने अपने महाकाव्य में अमर कर दिया है।

महाराणा प्रताप जयन्ती

(पृष्ठ १० का शेष)

मिलेगा। अमरसिंह जो मेरा पुत्र है वह झोंपड़ी में नहीं रह सकेगा फिर महल बनेंगे। जिसके लिये हमने इतना रक्त बहाया है वह व्यर्थ चला जावेगा। सब सरदारों ने तलवारें लेकर सौगन्ध खाई कि हम कभी पराधीनता को स्वीकार नहीं करेंगे। जब तक चित्तौड पर अधिकार नहीं कर लेंगे तब तक हममें से कोई भी अपना घर नहीं बनायेगा। हम अमरसिंह को उसके कर्तव्य की प्रेरणा देते रहेंगे। इस प्रकार के शब्द सुनकर प्रताप ने शान्ति से अपने प्राण त्यागे।

धन्य है ऐसा वीर, स्वाभिमानी देश भक्त जो आज भी हमारा प्रेरणा स्रोत बना हुआ है। उसकी जयन्ती पर हम सब प्रतिज्ञा करें कि हम भी अपने देश के लिये तन, मन, धन न्योछावर करते रहेंगे। सार्वदेशिक सभा के प्रधान मान्यवर श्री आनन्दबोध सरस्वती जी ने प्रताप की जयन्ती मनाने का निर्णय लेकर देश के स्वाभिमान को जगाने का प्रशंनीय कार्य किया है। सभी इस कार्य में उत्साह से जुट जावें।

राष्ट्रीय कवि मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों में—

> जिसको न अपने देश तथा निज जाति का अभिमान है।
> वह नर नहीं, नर पशु निरा और मृतक समान है॥

प्रणवीर प्रताप

स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

बाप्पा रावल के कुल की अक्षुण्ण कीर्ति की उज्ज्वल पताका, राजपूती गौरव एवं शौर्य का पुण्य प्रतीक, महाराणा सांगा का पौत्र, मेवाड़-मुकुट मणि प्रताप जब विक्रम संवत् १६८८ फाल्गुन शुक्ला १५ (१ मार्च सन १५७३) को सिंहासनारूढ हुआ तब अधिकांश राजपूत नरेश परम कूटनीतिज्ञ सम्राट अकबर के दरबार में सिर झुका चुके थे। अनेकों ने अपनी कन्याएं देकर बादशाह से सम्बन्ध जोड़ लिया था। धार्मिक स्तर पर भी अकबर अपने 'दीने इलाही' के द्वारा घुसपैठ करने का प्रयास कर रहा था। उस युग में भारतीय राष्ट्र की अस्मिता की उज्ज्वल ध्वजा को गर्वपूर्वक उठाने वाला एक ही अमर सेनानीथा—महाराणा प्रताप। अकबर का शक्तिसागर अरावली के इस शिखर से व्यर्थ ही टकराता रहा—वह नहीं झुका, नहीं झुका। अकबर के प्रधान सेनापति रहीम (अब्दुल रहीम खानखाना) ने महाराणा के साहस और शौर्य से अभिभूत होकर भविष्यवाणी की थी—

ध्रम रहसी, रहसी धरा, खिस जासे खुरसाण।
अमर विसंभर ऊपरे रखियो नहचो राणा॥

'धर्म रहेगा और पृथिवी भी रहेगी (पर) मुगल साम्राज्य एक दिन नष्ट हो जायगा। अतः हे राणा! विश्वम्भर भगवान के भरोसे अपने निश्चय को अटल रखना।' और महाराणा का वह निश्चय लोक विश्रुत है:—

तुरक कहासी मुख पतो इण तन सूं इकलिंग।
ऊगै वहांई ऊगसी प्राची बीच पतंग॥

'भगवान एकलिंग की शपथ है, प्रताप के इस मुख से अकबर तुर्क ही कहलायेगा, शरीर रहते मैं उसकी अधीनता स्वीकार करके उसे बादशाह अकबर नहीं कहूंगा। सूर्य जब उगेगा तो वह पूरब में ही उगेगा। सूर्य के पश्चिम में उगने के समान प्रताप के मुख से अकबर के लिए बादशाह निकलना असंभव है।

प्रताप—शौर्य की मूर्ति प्रताप एकाकी थे। अपनी प्रजा के साथ एकाकी उन्होंने धर्म और स्वाधीनता के लिए जो ज्योतिर्मय बलिदान किया, वह भारत में ही नहीं, विश्व में अधर्म और परतन्त्रता के विरुद्ध संघर्ष करनेवाले मानधनी, गौरवशील मानवों के लिए सदा मशाल सिद्ध होगा। महाराणा और उनके स्वामिभक्त चेतक के लिए शतशः प्रणाम।

अकबर के उद्योग में राष्ट्रीयता के दर्शन करने वालों को इतिहासकार अबुलफजल बदायूनी के ये शब्द स्मरण कर लेने चाहिएं—"किसी की ओर से सैनिक क्यों न मरे, वे हिन्दू ही थे और प्रत्येक स्थिति में विजय इसलाम की होगी।' यह कूटनीति थी अकबर की और महाराणा इसके सामने अपना राष्ट्रगौरव लेकर अडिग भाव से उठे थे। हिन्दुत्व और राष्ट्रीयता पर्यायवाची है, इसलिए अकबर के विरुद्ध महाराणा का संघर्ष एक सामान्य बादशाह के विरुद्ध न होकर एक विदेशी आक्रमणकारी से अपनी मातृभूमि की स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए था। उसके लिए उन्होंने प्रतिज्ञा की:—

मूंछ न तौलों ऐंठिहौं, हौं प्रताप मुजहीन।
कर पायौ जौलों न मैं, गढ़ चित्तौड़ स्वाधीन॥
महल नाहि पग धारिहौं, रहिहौं कुटी छवाय:
हो प्रताप जौलौ न ध्वज दई फेरि फहराय॥

और चित्तौड़ छोड़कर महाराणा वनवासी हो गये। महाराणी, राजकुमारी और राजकुमार घास की रोटियों और निर्झर के जल पर जीवन व्यतीत करने को विवश हुए। अरावली की गुफाएं आवास बनीं और शिलाएं शय्या। चित्तौड़ को छोड़ कर महाराणा ने अपने समस्त दुर्गों पर अधिकार कर लिया कहतेहैं कि महाराणा ने अकबर के पास एक सन्धिपत्र भेजाथा। पर इतिहासकार इसे सत्य नहीं मानते। यह अबुलफजल की गढ़ी गई कहानी भर है।

रहीम की भविष्यवाणी के अनुसार मुगल साम्राज्य का अन्त हो गया। पर करोड़ों भारतीयों के हृदय पर महाराणा का शासन आज भी बना हुआ है। महाराणा के साथ ही भीलों का अपने देश और नरेश के लिए वह अमर बलिदान, राजपूत वीरों और वीरांगनाओं की तेजस्विता इतिहास और वीरकाव्य का उपजीव्य है। अरावली के कण-कण में महाराणा का जीवन चरित्र अंकित है। शताब्दियों तक वह पराधीनों और उत्पीड़ितों के लिए प्रेरणा और साहस का स्रोत बना रहेगा। चित्तौड़ की उस पवित्र भूमि में युगों तक स्वधर्म एवं स्वराज्य का अमर सन्देश झंकृत होता रहेगा:—

माई एहड़ा पूत जण, जेहड़ा राण प्रताप।
अकबर सूतो ओधके, जाण सिराणै सांप॥

प्रताप व शक्ति का मिलन

(पृष्ठ ६ का शेष)

प्रताप—अनेक देश-द्रोही ऊंचा मस्तक कर चलते हैं। उस दिन मानसिंह ऊंचा मस्तक किए ही हमारे पास आए थे और मेवाड़ की बची खुची स्वाधीनता का नाश करने की धमकी देकर ऊंचा मस्तक किए हुए चले भी गए।

शक्तिसिंह—उनकी वह जाने और भगवान जानता होगा मैं तो अपनी बात जानता हूं। मैं तो अब किसी से आंखें भी नहीं मिला सकता। पश्चाताप की ज्वाला में जीवन भर जलते रहकर जीवित रहना मुझे स्वीकार नहीं है। दादाभाई! यह लो मेरी तलवार। इतनी शक्ति तो आपके हाथों में है कि प्रतिशोध न करने वाले का मस्तक काट सकें।

(शक्तिसिंह अपनी तलवार को चरणों मे रखता है और अपना मस्तक झुकाता है प्रताप शक्तिसिंह को उठाकर गले लगा लेता है। दोनों की आंखों में आंसू आ जाते हैं। इन्दु और भामाशाह का प्रवेश)

इन्दु—धन्य हैं आज की संध्या जो मेवाड़ के आकाश को ही नहीं पृथ्वी अवनि को भी रक्तवर्ण कर दोनों का मिलन करा रही है।

भामाशाह—बन्धु विग्रह ही भारत का सबसे बड़ा अभिशाप है और बन्धु-मिलन ही वह वरदान है जिससे भारत विश्व-विजयी बन सकता है।

(शक्तिसिंह इन्दु को देखता है।

शक्तिसिंह—तुम यहां?

इन्दु—और नहीं तो मेरे लिए अन्य स्थान कहां है? मेवाड़ से आपका अटूट सम्बन्ध है आपको जाना पड़ा था लेकिन आप लौट आए। मेरा भी आप से अटूट सम्बन्ध है, किन्तु समय ने हमें विलग कर दिया था किन्तु आज मिलाया है।

शक्तिसिंह—(साश्चर्य) अरे इन्दु!

इन्दु—आपके चरणों की रज पाने के लिए ही तो मुझे यह नाटक करना पड़ा।

(इन्दु शक्तिसिंह के चरण छूती है।)

(पटाक्षेप)

चावण्ड का गौरवशाली अतीत

(पृष्ठ ५ का शेष)

महाराणा प्रताप के सरक्षण मे चावण्ड मे व्यापार क्षेत्र मे अच्छी प्रगति हुई। चावण्ड के चारो ओर की भूमि उपजाऊ होने के कारण कृषि उत्पादन मे वृद्धि हुई और मालवा व गुजरात मे माल आने जाने के कारण यह क्षेत्र व्यापारिक दृष्टि से भी अत्यन्त समृद्ध हो गया।

महाराणा के जीवन काल मे चावण्ड मे साहित्य का भी अच्छा विकास हुआ। पडित ओझा ने तो स्वय प्रताप को एक अच्छा कवि माना है यद्यपि ऐतिहासिक दृष्टि से इसकी पुष्टि नही होती। उनकी यह मान्यता सभवत बीकानेर के पृथ्वीराज राठौर और राणा प्रताप के मध्य हुए काव्यमय पत्र व्यवहार के कारण है।

प्रताप के समय यहा चित्रकला के क्षेत्र में इतना अधिक काम हुआ कि उस समय की एक विशेष शैली को चावण्ड चित्र शैली के नाम से ख्याति मिली। वास्तव मे मेवाडी चित्रकला की प्रारम्भिक शैली का प्रादुर्भाव यही से हुआ था। ये चित्र आज भी विभिन्न सग्रहालयो मे कला प्रेमियो का मन मोह रहे हैं। यह माना जाता है कि चावण्ड से राजधानी हट जाने के पश्चात भी १८वी सदी तक यह ग्राम कला और साहित्य सृजन का एक प्रमुख केन्द्र बना रहा।

अमरसिंह के ग्रन्थ 'अमरसार' के अनुसार प्रताप ने अपने इस शाति काल में सम्पूर्ण राज्य मे सुख शाति की स्थापना कर दी थी। इन सब उपलब्धियो के साथ-साथ प्रताप निरन्तर अनेक युद्धो से मिले घावो के कारण निर्बल होते चले गये। 'वीर विनोद' (भाग-२, पृष्ठ १५९) मे एक जनश्रुति का उल्लेख है जिसके अनुसार चावण्ड के लोगो का यह मानना है कि जब प्रताप एक वीर आवरमाला के जगलो में शेर के शिकार पर गये तो वहा धनुष की प्रत्यचा खींचते समय उनके पेट की आत चढ गई जो उनकी मृत्यु का कारण बनी। लगभग सभी इतिहासकार महाराणा प्रताप की मृत्यु के इस कारण से सहमत हैं लेकिन 'वीर विनोद' (भाग-२, पृष्ठ १६४) के अनुसार अब्दुल फजल का ये मानना है कि राणा को उनके पुत्र अमर सिंह ने विष दिया था। कर्नल टाड ने अपनी पुस्तक मे लिखा है कि प्रताप की मृत्यु पिछोला झील के किनारे एक झोपडी मे हुई थी, परन्तु यह सत्य नही है। महाराणा प्रताप का देहावसान चावण्ड मे अपने राजमहलो मे ही हुआ था।

चावण्ड से लगभग ४ कि मी दूर बाण्डोली गाव के पास बहने वाले एक तालाब के किनारे प्रताप का दाह सस्कार किया गया था। उस समय श्वेत पाषाण की आठ खम्भो वाली एक छतरी वहा बनाई गई थी, परन्तु यह छतरी तालाब के जल मे डूब गई। तब वहा महाराणा भोपालसिंह ने एक ऊचे चबूतरे पर वर्तमान नई छतरी का निर्माण करवाया (आर पी भटनागर—महाराणा प्रताप स्मारक समिति स्मारिका १९८९)।

> **प्रताप के समय यहां चित्रकला के क्षेत्र में इतना अधिक काम हुआ कि उस समय की एक विशेष शैली को 'चावण्ड चित्र शैली' के नाम से ख्याति मिली। वास्तव में मेवाड़ी चित्रकला की प्रारम्भिक शैली का प्रादुर्भाव यहीं से हुआ था। ये चित्र आज भी विभिन्न संग्रहालयों में कला प्रेमियों का मन मोह रहे है। यह माना जाता है कि चावण्ड से राजधानी हट जाने के पश्चात भी १८ वीं सदी तक यह ग्राम कला और साहित्य सृजन का एक प्रमुख केन्द्र बना रहा।**

चावण्ड के महलो के खडहरो के पास ही एक अन्य पहाडी पर महाराणा प्रताप स्मारक का निर्माण प्रताप स्मारक समिति ने लगभग ८ लाख रु० की लागत से करवाया इसमे प्रताप की एक सुन्दर प्रतिमा के नीचे की ओर भील राजा भामाशाह, मन्ना व रहीम खा की मूर्तिया बनी हुई हैं।

महाराणा प्रताप के ये सभी ऐतिहासिक स्मारक और भग्नावशेष समुचित रख रखाव के अभाव मे धीरे-धीरे नष्ट होते जा रहे हैं। अब महाराणा प्रताप की अमर कीर्ति के प्रतीक ये स्मारक आने वाले अनेक युगो तक मानव समाज को उच्च चरित्र, त्याग शौर्य व आत्मोत्सर्ग का आदर करने की प्रेरणा देते रहते हैं। अकबर के दरबारी कवि दुरसा आढा ने ठीक ही लिखा है—

'अकबर जासी आप, दिल्ली पासी दूसरा।
पुन रासी परताप, सुजस न जासी सूरमा॥

अर्थात 'एक दिन अकबर चला जायेगा, दिल्ली पर दूसरो का राज हो जाएगा, परन्तु हे शूरवीर पुण्यराशि प्रताप, तुम्हारा सुयश कभी नहीं जायेगा।

प्रतीक्षा' २०-शास्त्री नगर मुख्य, भीलवाडा (राज)

आर्य वीर दल एवं आर्य कुमार सभाओं को सुदृढ़ बनाओ

आर्य वीर दल और आर्य समाज का सम्बन्ध

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत एक युवको का सैनिक सगठन है जिसका अपना अनुशासन है। आर्य समाज के अधिकारियो का कर्तव्य है कि वह आर्य वीर दल को सक्षम बनाने के लिए तन मन धन से पूर्ण सहयोग करें।

आर्य समाज ने अपने जन्म दिन से ही देश धर्म जाति की रक्षा तथा सेवा का भार अपने कन्धो पर लिया है। इस सम्बन्ध मे आर्य वीरो ने समय समय पर जो सेवायें की हैं वह चिरस्मरणीय रहेगी।

भूतकाल मे—

(१) आसाम का भूकम्प हो या गढवाल का भूकम्प, वर्तमान मे।

गुजरात की बाढ़पीड़ितो की सहायता। सदा आर्यवीरो ने युद्ध स्तर पर मोर्चा लेकर सफलता प्राप्त की और यश पाया है।

आर्यसमाज ने सदा ही यह अनुभव किया है किएक सुसगठित क्षात्र बल के बिना वह निर्विघ्न अपने कर्तव्य का पालन नही कर सकती। समाज सुधार का अप्रिय कार्य हाथ मे लेने के कारण देश की अन्य सस्थाये भी अपना सहयोग देने में असमर्थ हैं। प्रत्येक आर्य समाज मे आर्यवीरो का एक दल हो, व्यायाम से शरीर का गठन और सन्ध्या हवन से ज्ञान की वृद्धि करे। अत आर्य वीरो का एक सशक्त सगठन आर्य समाज द्वारा अनिवार्य रूप से स्थापित किया जाय।

आर्य समाज एक ऐसी सुसगठित सस्था है जिसमे बडो सख्या मे आर्य वीरो की सेना बने। इस ओर उपेक्षा न करके विशेष ध्यान दिया जाय। जिसके लिए प्रत्येक आर्य इच्छुक है।

आने वाला समय पुन आपकी आवश्यकता को अनुभव करेगा। देश सन् ४७ से पूर्व की ओर जा रहा है ऐसे समय मे सदा ही आर्य वीरो ने मोर्चा सम्भाला है। क्षात्र शक्ति के बिना आर्य समाज ही क्या कोई भी सस्था देश मे रक्षा व सेवा का कार्य नही कर सकती है। युवको के लिए व्यायाम शालायें योग प्रशिक्षण केन्द्र और ज्ञान वर्धन हेतु पुस्तक उपलब्ध कराई जायें। एक योजना के साथ युवको को तैयार करें।

उद्देश्य

आय युवको के निम्न उद्देश्य प्रमुख हैं—

(१) आर्य जाति मे क्षात्र धर्म का प्रचार करना एव आत्म रक्षा की योग्यता उत्पन्न करना।

(२) पीडित जनता मे सेवा भाव का प्रचार करना।

(३) आर्य धर्म, सभ्यता तथा आर्य सस्कृति की समस्त उचित उपायो से रक्षा करना।

कार्यक्रम

निम्न उद्देश्यो की पूर्ति के लिए निश्चित कार्यक्रम है।

नित्य प्रात सन्ध्या, यज्ञ-व्यायाम करना शारीरिक आत्मिक उन्नति के लिए पाठ्य पुस्तको का स्वाध्याय करना। व्यायाम के साथ नित्य बौद्धिक शिक्षण दिया जाय।

प्रतिवर्ष आर्य वीर दल इस ओर प्रयत्नशील हैं और अपने शिविरो का आयोजन कर नवयुवको मे नया जोश देकर राष्ट्र का भावी पहरेदार बनाते है।

आइए हम आर्य जन इस भावी पीढ़ी को भोग विलास से दूर रखकर राम-कृष्ण का अनुयायी बनायें।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री, सम्पादक

हे आर्यजनो दिल्ली चलिये।
श्री प्रताप जयन्ती मनाने को।

आर्य शिरोमणी वीर प्रताप की गौरव गाथा गाने को।
चौबिस मई को दिल्ली मे होगा इसका उद्घाटन॥
आवेंगे इसमे बडे हर्ष से देश-विदेश से आर्य जन॥
वीर प्रताप के प्रति श्रद्धा व सगठन शक्ति दिखाने को॥ हे आर्यजनो!

सार्वदेशिक आर्य सभा की ओर से है यह आयोजन।
उसके प्रधान की ओर से आर्यो है तुमको उद्बोधन॥
दलबल के साथ यत्न करो इस अवसर पर दिल्ली आने को॥ हे आर्यजनों

वैदिक सम्पदा सस्कृति की रक्षा का व्रत करने धारण।
भारत माता की अखण्डता के मन्त्र का उच्चारण॥
विघटनकारी तत्वो से देश को मुक्त कराने को॥ हे आर्यजनो!

जिस वेद धर्म की रक्षा हित ऋषि दयानन्द ने प्राण दिये।
स्वामी श्रद्धानन्द लेखराम ने भी अपने बलिदान दिये॥
इन गौरवमय बलिदानो की आर्यो लज्ज बचाने को॥ हे आर्यजनो!

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का हमने जो लगाया था नारा।
सोचो उसके अनुसार बने क्या स्वय और यह जग सारा॥
इसके विरुद्ध हो रहे यत्न अब मुस्लिम विश्व बनाने को॥ हे आर्यजनो!

भारत की सभ्यता सस्कृति की हो रही नाश की तैयारी।
इस हेतु अनेको नेतागण की राजनीति भी है जारी॥
ये सत्ता व वोट हेतु हैं देश का हित बिसराने को॥ हे आर्यजनो!

हे आर्यजना अब शीघ्र बढो! यह षडयन्त्र मिटाने को।
स्वधर्म स्वदेश की रक्षा हित अपना सर्वस्व लुटाने को॥
हटने यह तन पाया है यह ही कर्त्तव्य निभाने को॥ हे आर्यजनो!

धर्म देश हित इससे बढकर और कोई बलिदान नही।
इससे बढकर त्याग और कर्तव्य कोई महान् नही॥
'सिद्धान्त भास्कर इससे बडा सम्मान न कोई पाने को॥
हे आर्यजनो!

—भगवतीप्रसाद सिद्धान्त भास्कर
प्रधान नगर आर्य समाज, जयपुर

स्वतन्त्रता का पुजारी महाराणा प्रताप

—श्री महेशचन्द्र माथुर, एम. ए.

राजस्थान का इतिहास वीरता पूर्ण गौरव-गाथाओं का अक्षय भण्डार है राजस्थान की रज का कण-कण बलिदानी रक्त से सिंचित स्वाभिमान व त्याग की आभा से दीप्त है। राजस्थान में मेवाड़ और मेवाड़ में भी महाराणा प्रताप की वीरता, त्याग एवं देशभक्ति संसार में अतुलनीय है।

ज्येष्ठ शुक्ला (तृतीय) रविवार वि. स. १५९६ को महाराणा उदयसिंह की पटरानी जयवन्ता बाई के गर्भ से प्रताप का जन्म हुआ। यही प्रताप बड़े होकर, मेवाड़ के सूर्य कहलाए, स्वतन्त्रता के पुजारी कहलाए।

महाराणा उदयसिंह ने अपनी मृत्यु से पहले अपनी भटियाणी (भाटी वंश की) महारानी के पुत्र राजकुमार जगमाल को उत्तराधिकारी मनोनीत किया था। यह ज्येष्ठ पुत्र राजकुमार प्रतापसिंह के साथ घोर अन्याय था और ऐसे समय जबकि मेवाड़ पर आपत्ति के बादल मंडरा रहे थे। अकबर जैसा प्रबल शत्रु मौके की ताक में था। सिसोदिया वंश का गौरव चित्तौड़ हाथ से निकल चुका था। मेवाड़ की दशा भी अच्छी नहीं थी। ऐसे में सलूम्बर नरेश ने सामन्तों के सामने एक ही प्रश्न किया कि क्या ऐसी परिस्थिति में मेवाड़ का शासन राजकुमार जगमाल के निर्बल हाथों में देना उचित होगा? देश-भक्त वीर सरदारों के निर्णय के सामने राजकुमार जगमाल को अपने से ज्येष्ठ प्रताप को मेवाड़ का शासक बनाना स्वीकार करना पड़ा। राजकुमार जगमाल के छोटे होते हुए भी राज्य का उत्तराधिकारी घोषित किया जाना और प्रताप द्वारा चुप व शांत रहना प्रताप की विशाल हृदयता व ऊंचे व्यक्तित्व को ही दर्शाता है। प्रताप ने मेवाड़ राज्य के हित के लिए अपने व्यक्तिगत स्वार्थों का बलिदान करने में संकोच नहीं किया।

राणा प्रताप के लिए मेवाड़ का राज्यमुकुट कंटीले कांटों से भी तीक्ष्ण सिद्ध हुआ। अकबर अपने राज्य की सीमा तीव्र गति से बढ़ाए जा रहा था जो राजपूत राजा कुछ समय पूर्व मेवाड़ के महाराणा को अपना नेता मानते थे वे ही अकबर की दासता स्वीकार करने वालों की कतार में लग गये। जो राजपूत मेवाड़ की रक्षा के लिए कई बार रणक्षेत्र में अपना शौर्य प्रकट कर चुके थे, वे ही आज मेवाड़ के राजघराने के राजकुमारो ने भी अकबर की सेवा स्वीकार कर ली। ऐसी विपरीत परिस्थिति में कोई भी साधारण राजा अपने पूर्वजों की आन और बान को ताक मे रखकर दूसरे राजाओं का अनु-सरण कर लेता पर राणा प्रताप विपरीत परिस्थितियो से विचलित होने वाले नही थे। वे तो विरले ही थे। अपने राज्य की शान व स्वतन्त्रता बनाये रखने के लिए उन्होने अकबर को चुनौती दे डाली।

गुजरात विजय के बाद अकबर ने मानसिंह के नेतृत्व मे अपनी सेना मेवाड़ की ओर भेजी। राणा प्रताप ने मानसिंह का भी यथोचित आदर सत्कार किया। मानसिंह ने प्रताप को बादशाह की अधीनता स्वीकार करने को कहा और बहुत समझाया भी, लेकिन राणा प्रताप का उत्तर था "कुंवर जी, जो लाभ और ऐश्वर्य आपको उनकी दासता मे दृष्टिगोचर होता है वह मेवाड़ के पहाड़ो में रहने वाले मुझ जैसे व्यक्ति के समक्ष मे आ सकने वाली बात नहीं है। क्या बादशाह के सामने भूमि तक नतमस्तक होने का नाम ऐश्वर्य है? क्या शाही दरबार में हाथ बांधे खड़ा रहना ऐश्वर्य है? और क्या अपनी कुल मर्यादा को मिट्टी में मिलाकर अपनी पुत्रियों और भगिनियों को शाही हरम मे भेज देना ऐश्वर्य है? राणा प्रताप को बात सुन मानसिंह समझ गए और उन्होने दिल्ली लौटने की इच्छा की। पर जाने से पहले महाराणा ने उनकी दावत का प्रबन्ध किया। परन्तु महाराणा उसमें सम्मिलित नही हुए। मान-सिंह ने इसे अपना अपमान समझा। मानसिंह ने अकबर को सभी समाचार दिये। अकबर क्रुद्ध हुआ। अब अकबर और महाराणा प्रताप के बीच युद्ध अवश्यंभावी हो गया।

युद्ध के एक दिन पूर्व मानसिंह अपने अंगरक्षकों के साथ शिकार के लिए जंगल में निकल चले। महाराणा के गुप्तचरों ने उसकी सूचना राणा प्रताप को दे दी। कुछ सरदारों की इच्छा थी कि उस सुअवसर को हाथ से जाने नहीं देना चाहिए। मानसिंह पर आक्रमण करके उसके मेवाड़ को पराधीन बनाने के स्वप्न को कभी पूरा नहीं होने देना चाहिए। महाराणा का उत्तर था—शत्रु को छल और धोखे से मारना सच्चे क्षत्रियो का काम नहीं है। राणाप्रताप ने अपनी वीरता के अनुरूप ही यह उत्तर दिया। यह राणाप्रताप के उज्ज्वल चरित्र का सुन्दर उदाहरण है।

अकबर ने मेवाड़ की स्वतन्त्रता के अपहरण करने के प्रयास में कई सेना-पतियों को सेना लेकर मेवाड़ की ओर भेजा जिसमें मानसिंह तथा शाबाज खां थे। स्वयं अकबर भी सेना लेकर मेवाड़ को आधीन करने का प्रयास करते रहे। अन्त में थककर अकबर ने मेवाड़ की ओर रुख नहीं किया। आज जाति व धर्म का भयंकर विष भारत के वातावरण में फैला हुआ हैं। इस कारण हम अपने अतीत इतिहास को भी उसी दृष्टि से देखने लगे हैं। कई लोगो की यह धारणा है कि राणा प्रताप मुसलमानो के शत्रु थे। अगर वे मुसलमानों के शत्रु होते तो हल्दी घाटी के युद्ध में हकीम खां सूर को एक सेनापति का नेतृत्व नहीं सौंपते। राणा प्रताप तो अपने राज्य की स्वतन्त्रता के लिए लड़े। मेवाड़ को स्वतन्त्र रखूंगा और किसी राजा के सामने अपना सिर नहीं झुकाऊंगा, यही उनका प्रण था।

सम्राट् अकबर जो अपने समय का प्रबल शासक समझा जाता था, जिसके सामने सभी छोटे बड़े राजा नत मस्तक हो चुके थे उसी प्रबल सम्राट् की शक्ति के सामने राणा प्रताप मुट्ठी भर सेना को लेकर एक दो मास नहीं, वर्षों तक युद्ध करते रहे किन्तु पराधीनता स्वीकार नहीं की।

माघ शुक्ला ११ विक्रम संवत १६५३ के दिन मेवाड़ का यह सूर्य अस्त हो गया। जो मनुष्य अपने देश की स्वतन्त्रता के लिए वर्षों तक युद्ध करता रहा हो, पर्वतों और वनों में भटकता रहा हो, मृत्यु के समय भी जिसे मातृ-भूमि की स्वतन्त्रता का ही ध्यान रहा हो, वह स्वतन्त्रता का अवतार नहीं तो और क्या है? जिस प्रतिकूल परिस्थिति में राणाप्रताप को मेवाड़ की स्वतन्त्रता के लिए युद्ध करना पड़ा वह संसार के इतिहास में अनोखा उदाहरण है।

सरदार सदन, हनुमान चौक जोधपुर

महाराणा प्रताप जयन्ती समारोह के लिए दानदाताओं की घोषणा राशि

क्र.	नाम	राशि
१.	श्री ओम प्रकाश जी गोयल (कोषाध्यक्ष)	११०००)
२.	प्रान्तीय आर्य महिला सभा	११०००)
३.	आर्य समाज दीवानहाल,	११०००)
४.	आर्य समाज करोल बाग,	५०००)
५.	स्त्री आर्य समाज करोल बाग,	६०००)
६.	आर्य समाज राजौरी गार्डन	५०००)
७.	आर्य समाज चूना मण्डी, पहाड़गंज, नई दिल्ली,	२१००)
८.	श्री ओ० पी० बत्रा जी, नौएडा,	२१००)
९.	आर्य समाज सरूप्रावा	५१००)
१०.	श्री अग्रवाल साहब माडल टाउन	५०००)
११.	श्री रोशनलाल गुप्त, स्कूल समाज	५१००)
१२.	श्री सुखपाल जी गुप्त, आर्य बुक डिपो, करोल बाग,	११००)
१३.	श्री कोहली साहब, रामकृष्ण पुरम	११००)
१४.	आर्य समाज अम्बिका बिहार	११००)
१५.	आर्य समाज चोड़ा इन्क्लेव	११००)
१६.	आर्य समाज मालवीय नगर	११००)
१७.	आर्य समाज तिलक नगर	११००)
१८.	पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी (प्रधान सार्व० सभा)	२१००)
१९.	आर्य समाज अशोक विहार, फेज-१	११००)
२०.	श्री सुरेन्द्र हिन्दी,	११००)
२१.	श्री सत्यपाल भाटिया	११००)
२२.	आर्य समाज, पश्चिम विहार, दिल्ली,	२१००)
२३.	श्रीमती सरला मलहोत्रा १५०६ भाई वाला-२७ करोल बाग नई दिल्ली	५००)
	योग	८३०००)

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०४१/९१ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२३ म-१९९३) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस U (C) ९३
R N 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U (C) 93 Post in N.D P.S.O. 1 5 1993

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान सम्माननीय श्री वीरेन्द्र जी की धर्मपत्नी का देहावसान

बड़े दुःख के साथ यह सुना जायेगा कि पंजाब के आर्य समाज के आधार स्तम्भ महाशय कृष्ण के परिवार का एक सदस्य अर्थात् श्री वीरेन्द्र जी प्रधान पंजाब सभा की धर्मपत्नि श्रीमती राजलक्ष्मी देवी का जालन्धर मे निधन हो गया। उनके निधन से आर्य समाज का एक पृष्ठ ही बन्द हो गया है। श्रीमती राजलक्ष्मी देवी के निधन से महाशय कृष्ण परिवार के इतिहास की एक कड़ी हम से बिछुड़ गईहै।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी ने उनके निधन पर दुःख प्रकट करते हुये कहा कि वे एक आदर्श महिला एवं सुयोग्य गृहणी थी। उनके निधन से जहा उनके परिवार की क्षति हुई है वहा आर्य जगत् की भी महान् क्षति हुई है। स्वामी जी ने परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की कि उनकी आत्मा को सद्गति मिले तथा उनके परिवार को महान् वियोग सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

चित्तौड़ गढ़

(पृष्ठ ३ का शेष)

अकबर का जन्म एक हिन्दू छत्र के नीचे हुआ था। उसका बचपन हुमायू के दुर्भाग्य और भागदौड़ मे ही व्यतीत हुआ। वह भी एक प्रकार से चित्तौड़ से दूर कुम्भलमेर मे ही पला था, क्योंकि हुमायू दिल्ली और आगरे को दूर से ही तरसती हुई आखो से देख रहा था। जब उस अभागे परन्तु उदार-हृदय का भाग्य चक्र फिरा और वह दिल्ली का अधीश्वर बना, तभी फिर भाग्य की सीढ़ी पर उसका पाव फिसल गया, और उदयसिंह जैसा प्रतिद्वन्द्वी १३ वर्ष की अवस्था मे दिल्ली के सिंहासन पर आरूढ हुआ। बस यही उदयसिंह और अकबर के जीवन की समानतायें समाप्त होती हैं। एकसत्तात्मक राज्य मे राजा के गुण अवगुण, देश और जाति को किस प्रकार बना या बिगाड़ सकते हैं यह देखना हो, तो इन दोनो बाल राजाओ के जीवनो का अनुशीलन करे। एक ने शून्य को साम्राज्य के रूप मे परिणत कर दिया, और दूसरे ने सदियो की राजपूती शान को मिट्टी मे मिला दिया।

शौर्य का पुण्य प्रतीक

(पृष्ठ ४ का शेष)

बेटियो की इज्जत को बेच रहे थे जिस समय राजपूतान के कुलीन छत्रपति अपनी कुलमर्यादा को अकबर की भेंट चढ़ा रहे थे, जिस समय भारत का सौभाग्य सूर्य काले-काले बादलो से आच्छादित हो रहा था, और अकबर की गति अनिवार्य प्रतीत होती थी खाली खजाने और मुटठीभर सिपाहियो का स्वामी प्रतापसिंह बाप्पा रावल के नाम सिसोदिया के राज्य-छत्र और कुल मर्यादा की ध्वजा को हाथ मे लिये कटीले जगलो और भीषण घाटियो मे अपने परिवार और थोड़े से साथियो को घसीटता फिरता था। पाच पाच समय बिना खाये निकल जाते थे पूरी रात सोना नहीं मिलता था गुफाओ मे छुप कर प्राण रक्षा करनी पड़ती थी परन्तु दिल मे यही सकल्प था कि क्षत्राणी के दूध का मान न घटे समरसिंह के कुल की ध्वजा नीची न हो और हिन्दू धर्म की शान पर धब्बा न लगे। प्रतापसिंह! तुम सच्चे राजपूत थे उस समय के शेष राजपूत राजपूतानी की कोख को लजाने के लिए ही पैदा हुए थे। तुमने मनुष्य जाति के सामने वीरता आत्म-सम्मान और धैर्य का ऐसा दृष्टान्त रखा है कि यदि मुर्दा जातिया उसका थोड़ासा भी अनुकरण करें तो उनका बेड़ा पार हो सकता है। शत्रु को भी तुम्हारे गुणो का गान करना पड़ेगा।

राणा की भाग्य नदी कुछ समय के लिए सर्वथा सूखती हुई प्रतीत होने लगी और शत्रु जीतते गये, परन्तु सद्गुणो की विजय, शस्त्र की विजय से कहीं ऊची होती है। जो धर्म पर जमा रहता है, उसे आशातीत स्थानो से सहायता मिल जाती है। प्रतापसिंह को भी ऐसी सहायता मिली। जब परिवार की विपत्ति को देखकर राणा का जी घबड़ा उठा, तो अकबर-दरबार के कवि राठौर राजकुमार पृथ्वीराज ने उसे एक काव्यमयी चिट्ठी लिखी जिसने टूटा हुआ साहस बढ़ा दिया। जब खजाने के बिलकुल खाली हो जाने से सेना का सचालन मुश्किल देखकर राणा ने निश्चय किया कि राज्य की आशा छोड़ स्वाधीनता की रक्षा के लिए पहाड़ी गुफाओ या जगलों का रास्ता लिया जाय, उस समय वश के प्राचीन खजाची भामाशाह ने बाप दादो की सब कमाई स्वामी के चरणो मे रख दी। इस प्रकार दैवी इच्छा से सहायता पाकर प्रतापसिंह ने फिर सेनाओं को इकट्ठा किया, और किले जीतने आरम्भ किये। थोड़े ही समय मे उदयपुर का बड़ा भाग राणा के हाथ मे आ गया। किलो मे जो मुसलमान छावनिया पड़ी हुई थीं, वह या तो काट डाली गईं, या पीठ दिखाकर भाग गई। अजमेर, चित्तौड़ और मडलगढ़ के किलो को छोड़कर शेष समस्त मेवाड़ धीरे-धीरे, राणा के हाथो में आ गया।

अन्तिम दिनो मे अकबर ने प्रतापसिंह की बढ़ी हुई शक्ति को रोकने का कोई यत्न नहीं किया। यह सुनकर भी कि बहुत से किले राजपूत सरदार के हाथ पड़ गये हैं न कोई सेना भेजी और न छावनियों को ही मजबूत किया। कई इतिहास लेखको का विचार है कि अकबर के हृदय में प्रतापसिंह की वीरता के लिए आदर और दुर्भाग्य के लिए दया का भाव उत्पन्न हो गया था, इस कारण उसने छेड़छाड़ करने का विचार छोड़ दिया। यह भी लिखा गया है कि जो राजपूत सरदार अकबर की गाड़ी के साथ अपने भाग्यो को बांध चुके थे वह भी अन्तरात्मा मे राणा की वीरता का आदर करते थे, उसे राजपूताने की नाक समझते थे, और अकबर से सिफारिशें करते थे, जिससे मुगल बादशाह का रोष ठण्डा होता रहे। जिस ढाल को मानसिंह, महाबतखा और आसफखा मिलकर न तोड़ सके, उसे छोटी मोटी शक्ति कैसे तोड़ सकती थी।

उदयपुर की रियासत का अधिकाश राणा के हाथ मे आ गया, परन्तु राणा को सन्तोष नही था, सन्तोष होता भी कैसे जब कि मेवाड़ का हृदय – चित्तौड़-गढ़—शत्रु के कब्जे मे था। महाराणा प्रताप ने प्रण किया था कि जब तक चित्तौड़ गढ़ को स्वाधीन न कर लेंगे तब तक खाट पर न सोयेंगे सोने चादी के बर्तनो मे भोजन न करेंगे और फौज की शहनाई आगे न बजकर पीछे बजा करेगी। चित्तौड़-गढ़ की चिन्ता राणा के शरीर को खा रही थी। मानसिक चिन्ताओ और शारीरिक कष्टो ने राणा के मजबूत शरीर को थका दिया था। परिणाम यह हुआ कि जवानी के यौवन मे स्वतन्त्रता के पुजारी 'पत्तो' (प्रतापसिंह) को मृत्यु शय्या पर लेटना पड़ा। जो जीवन का विचार था, वह मृत्युकाल की भावना हुई। प्राण छोड़ते हुए राणा ने अपने सरदारो से यह शपथ ले ली कि वह न स्वय मेवाड़ का स्वाधीन कराने के कार्य को भुलायेंगे, और न राजकुमार अमरसिंह को कर्तव्य से विमुख होने देंगे। इस प्रकार मातृ-भूमि और कुल मर्यादा का चिन्तन करते हुए राजस्थान के वन केसरी प्रतापसिंह ने प्राण विसर्जन किया। आज प्रतापसिंह नहीं है परन्तु उनकी वीरता का विमल यश राजपूताने के ही नहीं भारत के ही नहीं, प्रत्युत ससार के मुख को उज्ज्वल करता हुआ विद्यमान है।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म् सार्वदेशिक साप्ताहिक

महर्षि दयानन्द उवाच

- किसी को अभिमान न करना चाहिए । छल, कपट वा कृतघ्नता से अपना ही हृदय दुःखित होता है, तो दूसरे की क्या कथा कहनी चाहिए ।
- परमेश्वर के नामों का अर्थ जान कर परमेश्वर के गुण, कर्म स्वभाव के अनुकूल अपने गुण, कर्म और स्वभाव करते जाना ही परमेश्वर का नाम स्मरण है ।
- जो मनुष्य जगत् का जितना उपकार करेगा, उसको उतना ही ईश्वर की व्यवस्था से सुख प्राप्त होगा ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष । ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य १०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३१ अंक १७] दयानन्दाब्द १६९ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९४ आषाढ कृ० २ सं० २०५० ६ जून १९९३

यज्ञों के नाम पर पशु बलि नहीं होने दी जायेगी

आर्य समाज द्वारा कड़ी चेतावनी

दिल्ली २९ मई । अयोध्या में होने वाला सोमयज्ञ इस समय देश में चर्चा का विषय बना हुआ है । कहा जाता है कि काशी के पौराणिक पण्डितों ने यह व्यवस्था दी है कि बलि के बिना यज्ञ सम्पन्न नहीं हो सकता है । इस विषय में कई राजनैतिक नेताओं के वक्तव्य भी समाचार पत्रों में छप रहे हैं ।

इस प्रस्तावित सोमयज्ञ के आयोजन पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द-बोध सरस्वती ने कहा है कि वैदिक यज्ञ हिंसा रहित होते हैं । यज्ञानुष्ठान से जनता में मानसिक शान्ति और दूषित पर्यावरण की शुद्धि के अतिरिक्त समय पर अच्छी वर्षा होने आदि अनेक प्रकार के लाभ होते हैं । परन्तु कुछ स्वार्थी पण्डित जो धर्म के मर्म को नहीं जानते हैं, वैदिक यज्ञों में पशुबलि का समर्थन करते हैं ।

स्वामी जी ने चेतावनी देते हुए यह स्पष्ट किया कि यदि भविष्य में अयोध्या में अथवा अन्य किसी स्थान पर किसी भी राजनैतिक पार्टी द्वारा यज्ञों में पशुबलि दी गई तो आर्य समाज पूरी ताकत से इस धर्म विरोधी पाखण्डवाद का कड़ा विरोध करेगा । श्री सुब्रह्मण्यम् स्वामी के इस कथन पर कि भारतीय जनता पार्टी के नेता श्री मुरली मनोहर जोशी ने कन्या कुमारी से रथ यात्रा प्रारम्भ करते

(शेष पृष्ठ २ पर)

महाराणा प्रताप जयन्ती समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि महाराणा महेन्द्रसिंह जन सभा को सम्बोधित करते हुए । पीछे बैठे हुए प्रथम पंक्ति में दायें से बाएं आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान सूर्यदेव, केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल चौ० लक्ष्मीचन्द, सभा-मन्त्री डा०सच्चिदानन्द शास्त्री, हरियाणा के कृषि राज्यमन्त्री श्री बच्चनसिंह आर्य, लाला इन्द्रनारायण हरियाणा के मुख्यमन्त्री चौ० भजनलाल, सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती हरियाणा के संसद सदस्य धर्मपाल मलिक, और श्री रामजीलाल आर्य और अन्त में सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष श्री ओमप्रकाश गोयल बैठे हुए हैं ।

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सोमयज्ञ में पशु बलि रोकने हेतु स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती की उत्तरप्रदेश के राज्यपाल श्री मोतीलाल बोरा से अपील

मान्यवर,
महामहिम श्री मोतीलाल जी बोरा
राज्यपाल उत्तर प्रदेश
राजनिवास, लखनऊ

सेवा मे सादर नमस्ते !

उत्तर प्रदेश मे राज्यपाल का पद भार सभालने पर सम्पूर्ण आर्य जगत की ओर से हार्दिक बधाई और शुभकामनाये। परमात्मा आपको इस दायित्व पूर्ण पद के निर्वाह मे हर प्रकार से सफलता प्रदान करे, यही कामना है।

मुझे पता चला है कि अयोध्या मे सोम यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है जिसकी चर्चा पूरे देश मे है अनेक राजनैतिक नेताओ के वक्तव्य भी इस विषय मे समाचार पत्रो मे देखने को मिल रहे हैं।

कुछ पडितो का यह सुझाव है कि बलि के बिना यज्ञ सफल नहीं होगा यह बहुत आश्चर्यजनक और पाप कर्म को बढ़ाने वाला है। आर्यसमाज यज्ञो मे पशुबलि का कड़ा विरोध करता है। वैदिक यज्ञो मे बलि का कोई विधान नही है। कुछ स्वार्थी पडित जो धर्म के मर्म को नही जानते हैं यज्ञो मे बलि प्रथा का समर्थन करके देश व समाज को हर प्रकार से कमजोर करने का प्रयत्न कर रहे हैं। आर्य समाज हमेशा से ही यज्ञो का समर्थक रहा है और प्रत्येक आर्य समाजी प्रतिदिन यज्ञानुष्ठान करने के उपरान्त ही अपने दैनिक कार्यों मे लगता है।

भगवान राम की जन्म स्थली, अयोध्या मे यदि सोमयज्ञ मे बलि का प्रावधान किया गया तो आर्य समाज पूरी शक्ति के साथ इसके विरुद्ध देश व्यापी सघर्ष करने के लिए वाध्य होगा।

हमे पूरा विश्वास है कि आप जैसे योग्य प्रशासक के होते हुए अयोध्या मे यज्ञ मे बलि के नाम पर कोई ऐसा कार्य नही होगा जिससे हिन्दू जाति और राष्ट्र का सिर शर्म से न झुकने पावे। आशा है आप दृढ़ता से यज्ञ मे बलि प्रथा को रोकने मे सफल होगे।

धन्यवाद सहित

भवदीय

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान

महाराणा प्रताप की ४५३ वी जयन्ती समारोह के अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती महाराणा महेन्द्रसिंह मेवाड़ का केन्द्रीय कृषि मन्त्री डा० बलराम जाखड़ से परिचय कराते हुए। बगल मे आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी भी बैठे हैं।

यज्ञ मे पशु बलि नहीं

(पृष्ठ १ का शेष)

समय जो यज्ञ किया था उसमे भैसे की बलि दी गई थी। स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि वे इस विषय म डा० मुरलीमनोहर जोशी से पत्र लिखकर वस्तुस्थिति की जानकारी मागेगे। उन्होने यह भी कहा यदि इस प्रकार का कोई कुकृत्य वहा किया गया था तो वह सर्वथा धर्म विरुद्ध और गलत था, आय समाज उसका भी विरोध करता है।

स्वामी जी ने देश भर की समस्त आर्य समाजो को निर्देश दिया है कि यदि अयोध्या मे सोम यज्ञ के अवसर पर पशुबलि का प्रावधान होना है तो भारी सख्या मे वहा पहुचकर मूक पशुओ पर होने वाले इस अन्याय को रोके। उन्होने उत्तरप्रदेश के राज्यपाल श्री मोतीलाल बोरा को भी विशेष पत्र लिखकर धर्म के नाम पर इस महा अधार्मिक पाखण्ड को रोकने की अपील की।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा मन्त्री

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा आर्यसमाज सुजानगढ़ चैरिटेबल ट्रस्ट के सेवा कार्यो की प्रशंसा

सुजानगढ २५ मई। सुजानगढ के लाहोटी परिवार की ओर से आर्य समाज के तत्वावधान मे श्री ब्रह्मप्रकाश लाहोटी जी के निवास पर गायत्री पुरश्चरण महायज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर विशेष रूप से आमन्त्रित सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने लाहोटी परिवार को अपना आशीर्वाद देते हुए कहा—इस परिवार ने आर्य समाज सुजानगढ चैरिटेबल ट्रस्ट के माध्यम से पीडित मानव की निष्काम भाव से सेवा का जो कार्य हाथ मे ले रखा है, उसकी जितनी प्रशसा की जाय कम है। १९८१ मे स्थापित इस ट्रस्ट की ओर से इस समय तक ११ होमियोपैथ अस्पतालो के द्वारा प्रतिवर्ष लगभग ३ लाख रोगियो की सेवा की जा रही है इसके अतिरिक्त अन्य समाज सेवी सस्थाओ को भी लाहोटी परिवार से सहयोग मिलता रहता है।

इस अवसर पर स्वामी जी को ११ हजार रुपए की राशि 'आर्य समाज सुजानगढ़ चैरिटेबल ट्रस्ट वेद प्रचार स्थिर निधि की सार्वदेशिक सभा मे स्थापना के लिए भेंट की गई और दूसरी पाच हजार रुपए की राशि सभा मे स्थापित जय नारायण गगा बिशन लाहोटी चैरिटेबल ट्रस्ट स्थिर निधि मे वृद्धि करके उसे १६ हजार करने के लिए दी गई। इस निधि का ब्याज आर्य वीर दल के कार्य तथा सस्कृत विद्या के प्रचार प्रसार पर सभा द्वारा व्यय किया जाता है।

यज्ञ प० वेदपाल शास्त्री जी के ब्रह्मत्व मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री बालदिवाकर हस, प० प्रेमचन्द श्रीधर और आर्यसमाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री ओमप्रकाश वर्मा भी उपस्थित थे। ट्रस्ट की ओर से एक सुन्दर स्मारिका भी प्रकाशित की गई थी। पूर्णाहुति के अवसर पर दिल्ली, कलकत्ता अहमदाबाद आदि सभी नगरो से लाहोटी परिवार के सभी सदस्यो ने उपस्थित होकर अपनी आहुतियां अर्पित की। क्षेत्र के हजारो लोगो ने यज्ञ मे भाग लिया। इसके उपरान्त श्री ब्रह्म प्रकाश लाहोटी जी की ओर से आयोजित प्रीतिभोज मे हजारो लोगो ने भोजन किया।

प्रणवीर महाराणा प्रताप के जयन्ती समारोह पर लाल किला मैदान दिल्ली मे २३ मई ९३ को समारोह के मुख्य अतिथि महाराणा महेन्द्रसिंह का स्वागत करते हुए स्वामी आनन्दबोध सरस्वती। महाराणा जी स्वामी जी को अभिवादन करते हुए। बीच मे बैठे हुए राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती और प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री रामनाथ सहगल और पीछे चेतक पर सवार महाराणा प्रताप का चित्र।

वीर सावरकर—संक्षिप्त परिचय

श्री विनायक दामोदर सावरकर वर्तमान काल के महान क्रान्तिकारियो मे से एक थे। उन्होने अपना सारा जीवन भारत माता की सेवा मे समर्पित कर दिया। वह महान स्वतन्त्रता सेनानी थे।

उनका जन्म २८ मई, १८८३ को जिला नासिक के भगूर नामक ग्राम म हुआ। वह शिवाजी, राणा प्रताप और सदा शिव राव भाऊ की जीवनियो से अत्यन्त प्रभावित हुए। उन्होने १९०१ मे मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। उसी वर्ष उनका विवाह हुआ। फिर उन्होने पूना के एक कालेज मे प्रवेश लिया। वे वहा लोकमान्य बाल ग गाधर तिलक क सम्पर्क मे आए। उन्होने अनेक कविताओ व गीतो की रचना की, जिससे युवाओ को भारत माता के लिये सर्वस्व अर्पण करने की प्रेरणा मिली। अग्रेजी सरकार ने उनकी पुस्तको पर प्रतिबन्ध लगा दिया।

१९०५ में अग्रेजी शासन ने बगाल का विभाजन कर दिया। सारे देश में क्रान्ति की ज्वाला भडक उठी। युवा सावरकर ने भी इसम भाग लिया। उन्होंने पूना मे विदेशी कपडो की होली जलाई। उन्हे कालेज से निकाल दिया गया। उन्होने भारत की स्वतन्त्रता प्राप्ति हेतु एक गुप्त सगठन 'अभिनव भारत' की स्थापना की।

उन्होने बम्बई विश्वविद्यालय म स्नातक (बी ए) परीक्षा उत्तीर्ण की। अगले वर्ष वे इग्लैंड मे विधिशास्त्र का अध्ययन करने गये भारत की स्वतन्त्रता के लिये उन्होने वहा आन्दोलन किया। वहा के भारतीय छात्रो ने इसमे भाग लिया। वे वहा बमो का निर्माण करके भारत मे पहुचाते।

१ जुलाई १९०९ को एक पजाबी युवक मदनलाल ढींगरा ने कर्जन वेली का वध किया और उसी वर्ष सावरकर के एक साथी ने जैकसन का पूना मे वध किया। अग्रेजी सरकार का विश्वास था कि उनका वध सावरकर की प्रेरणा से हुआ। इसलिए उन्हें इग्लैंड मे गिरफ्तार कर लिया गया। उनके बडे भाई श्री गणेश सावरकर को जैकसन की हत्या का दोषी करार दिया गया और उन्हें बीस वर्ष की सजा सुनाई गई। सावरकर ने विधि (LAW) की परीक्षा तो उत्तीर्ण की पर उन्हें अंग्रेजी सरकार से सघर्ष करने के कारण उपाधि न प्रदान की गई। उन पर मुकदमा चलाने के लिये भारत मे भेजने का निर्णय लिया गया। एक समुद्री जहाज भारत की ओर रवाना हुआ। रास्ते मे ही वीर सावरकर गहरे समुद्र मे चुपचाप कूद गये और तैर कर फ्रास के तट पर पहुच गये। फ्रांसीसी सरकार ने उन्हें अंग्रेजी सरकार के हवाले कर दिया।

भारत मे उन्हे अनेक घटनाओ मे दोषी करार कर दिया गया। १४ दिसम्बर, १९१० को उन्हे ५० वर्ष की जेल की सजा सुनाई गई। उन्हें अण्डमान द्वीप मे 'कालापानी' की सजा हुई। अण्डमान द्वीप मे उनसे क्रूर व्यवहार किया गया। उनका स्वास्थ्य बिगड गया। १९२० मे तो ऐसी स्थिति थी कि भारतीयो ने उनकी जीर्ण अवस्था के कारण उन्हे रिहा करने की माग की। उन्हे रिहा करके भारत की जेल मे बन्दी बनाया गया। २६ वर्ष की कठोर जेल यात्रा के पश्चात उन्हे १९३७ मे रिहा किया गया।

वीर सावरकर से काग्रेस मे शामिल होने का आग्रह किया गया। परन्तु उन्होने स्वीकार नही किया क्योकि वह हिन्दुत्व के लिये कार्य करना चाहते थे। वह हिन्दू महासभा मे शामिल हुए और सात वर्ष तक इसके अध्यक्ष भी रहे। उन्होने भारत की स्वतन्त्रता के लिये सघर्ष जारी रखा। इन ७ वर्षो मे कठोर परिश्रम के कारण उनका स्वास्थ्य बिगड गया। अत चिकित्सको की सलाह पर वह सक्रिय गतिविधियो से दूर रहे।

जब वह रोगग्रस्त अवस्था मे थे तो भारत स्वतन्त्र हुआ। परन्तु देश का भारत और पाकिस्तान के रूप मे विभाजन हुआ। इससे वीर सावरकर बहुत दुखी हुए। परन्तु उन्हे सन्तोष हुआ कि अन्त मे भारत स्वतन्त्र हुआ। २६ फरवरी १९६६ को अपनी लोकलीला पूरी करने के पश्चात वह सदा के लिये हमारे से बिछुडकर परमगति को प्राप्त हुए। भारतीयो ने अपना एक महान देशभक्त व क्रातिकारी खो दिया।

धूम्रपान से प्रतिवर्ष ३० लाख मौतें

जिनीवा २८ मई (रायटर) विश्व स्वास्थ्य सगठन की एक रिपोर्ट के अनुसार धूम्रपान के कारण प्रतिवर्ष तीस लाख व्यक्तियो की मृत्यु होती है और यह सख्या दिन ब दिन बढती जा रही है।

सगठन ने आगामी सोमवार को 'धूम्रपान निषेध दिवस' मनाने की अपील की है। इससे सम्बन्धित एक रिपोर्ट मे कल सगठन ने कहा कि धूम्रपान से मरने वालो की वर्तमान सख्या १९५० के मुकाबले तीन गुना से भी अधिक है।

सगठन न डाक्टरो और नर्सों से अपील की कि वे धूम्रपान छोडकर आदर्श प्रस्तुत करें। साथ ही सरकारो को चाहिए कि अस्पतालो और स्वास्थ्य केन्द्रो को 'धूम्रपान वर्जित' क्षेत्र बनाएं।

तलाक, तलाक और तलाक कहने से अब तलाक नहीं!

नई दिल्ली २८ मई (भाषा) मुस्लिम मौलवियो और मुफ्तियो के शीर्ष सगठन जमीयत अहले हदीस ने एक तारीखी फतवे मे यह ऐलान किया है कि तीन दफा तलाक कह कर बीबी को तलाक देने की व्यवस्था गैर कानूनी है चुनाचे इसे अमल मे नही लाया जा सकता।

जमीयत के तीन मुफ्तियो द्वारा दिए इस फतवे स मुस्लिम समाज में प्रचलित यह प्रथा अब बेमानी हो जाएगी कि कोई मर्द फकत तीन बार तलाक कह कर ही अपनी बीबी से अपना नाता तोड ले। इस फतवे मे कहा है कि अब कोई शोहर अगर तीन बार तलाक कहे भी तो शरियत के मुताबिक इसे तलाक नही माना जाएगा और इमस मर्द और उसकी बीबी के हक और जिम्मेदारियो पर कतई कोई असर नही पडेगा।

आजाद भारत के इतिहास में यह पहला मौका है जब मुफ्तियो ने ऐसा फैसला सुना कर मुस्लिम परिवारो मे प्रचलित एक ऐसी प्रथा का खात्मा कर दिया है जिसके चलते बेशुमार औरतो की जिन्दगी नरक में तबदील होती रही।

शेख अताउर्रहमान पटनी, शेख अबदुर्रहमान और शेख जमील अहमद मदनी नामक तीन मुफ्तियो द्वारा गत सप्ताह सुनाए गए इस फतवे को कानूनी हल्को में मील का पत्थर माना गया है जिससे मुस्लिम औरतो के हक और अधिकारो की हिफाजत सम्भव होगी। यह तीनो मुफ्ती जमीयत अहले हदीस की मजलिस तहकीक इल्मी से वाबस्ता है।

जमीयत अहले हदीस मुस्लिम धार्मिक विद्वानो और अदीबो का गैर राजनीतिक सगठन है। मुल्क के सभी राज्यो मे इसकी शाखाए हैं और इसका अस्तित्व पिछली दो शताब्दियो से कायम रहा है।

जमीयत का यह तारीखी फैसला दिल्ली से प्रकाशित होने वाले इसके साप्ताहिक पत्र 'जरीदा तर्जुमान' मे छपा है। यह फतवा पश्चिमी उत्तर प्रदेश के निवासी एक आदमी के मामले मे दिया गया है जिसने गुस्से मे आकर अपनी बीबी को तीन बार तलाक कह दिया लेकिन जब गुस्सा ठडा पडा तो अपने किए पर अफसोस जाहिर किया। उसकी बीबी भी उसके सग ही रहने की ख्वाहिशमद थी।

इन मुफ्तियों ने कुरान पाक, हदीस और सुन्ना का हवाला देते हुए फैसला दिया कि अगर कोई शोहर एक साथ ही तीन दफा तलाक कहे तो भी इसे कानूनन एक ही दफा तलाक कहा माना जाएगा और शरीयत के मुताबिक इसे बदला भी जा सकता है। फतवे मे कहा गया कि उच्चारित दो अन्य तलाक गैर कानूनी माने जाएगे और ऐसा करना कुरान और सुन्ना की खिल्ली उडाने के बराबर माना जाएगा।

मुफ्तियों ने कहा ऐसे तलाक का कानूनी पहलू सिर्फ इतना ही होगा कि शोहर और बीबी हमबिस्तरी नही करेंगे लेकिन अगरचे शोहर फिर अपनी बीबी के साथ हमबिस्तरी करने लगे तो तलाक खुद-ब खुद अमल के बाहर हो जाएगा और इस जोडे को सग सग जिन्दगी बसर करने का अधिकार प्राप्त होगा।

जमीयत अहले हदीस धार्मिक और सामाजिक क्षेत्रो मे रचनात्मक कार्य करती है तथा वह किसी राजनीतिक दल से सम्बद्ध नही है। जमीयत के अनेक वरिष्ठ पदाधिकारी अखिल भारतीय मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड के भी सदस्य हैं। इनमे देवबन्द सस्थान से भी जुडे वरिष्ठ नेता शामिल हैं। मुस्लिम औरतों के अधिकारो की रक्षा करने के अलावा यह फतवा ऐसे मियां बीबी को भी राहत पहुचाएगा जिनकी शादिया बाज वक्त गलती से तीन दफा तलाक, तलाक, तलाक कहने से टूट जाती हैं। कभी मजाक के लहजे मे तो कभी नशे के आलम मे या कभी किसी के दबाव में आकर या फिर कभी गुस्से और तैश की हालत मे मर्द तीन बार तलाक कह बैठते हैं और जन्म भर के रिश्ते-नाते यकायक टूट जाते हैं।

इस्लामी कानून के विभिन्न स्कूलो मे सिर्फ हनफी विचारधारा को मानने वाले जो भारत के सुन्नी मुसलमानो के बहुसख्यक वर्ग पर लागू होता है, तीन बार तलाक कहने को शोहर और बीबी को एक-दूसरे से अलग करने के लिए समुचित मानते हैं। इस प्रथा को खत्म करने की अभी तक कोई सार्थक कोशिश तक नहीं की गई थी और यह पहला मौका है जब मुअज्जिज मुफ्तियो ने इस ओर ध्यान दिया है।

तीन बार तलाक कह कर तलाक को शरियत मे तलाक-ए-बिद्दत' यानि तलाक लेने का एक विकृत तरीका कहा गया है, शोहर और बीबी को अलग करने के मुतल्लिक पारम्परिक इस्लामी कानूनी प्रावधानो की चन्द विकृतियो के चलते यह हनफी कानून का एक अहम हिस्सा बन गया और यह रवायत चल पडी। काबिले-गौर है कि भारत के शिया मुसलमान जो इसना अशरी कानून को मानते हैं, तीन बार तलाक कह कर तलाक लेने को गैर कानूनी मानते हैं और इसकी बजाय दो गवाहो के सामने तलाक देने को वैध मानते हैं।

शरियत के मुताबिक, कोई भी शोहर एक-एक महीने के अन्तराल पर 'तलाक' कह कर ही अपनी बीबी का दामन छोड सकता है और इस तरह तीन महीने की इस मियाद में अलाहिदा होकर रहने की ख्वाहिश को दुरुस्त करने के उस काफी मौके मिलते हैं। मिया बीबी का मनमुटाव इस दौरान दूर हो सकता है और उनके बीच प्यार और उन्सियत का रिश्ता फिर से कायम हो सकता है।

हनफी कानून की पेशबन्दियो से सचालित हो रहे मुस्लिम आबादी वाले तमाम मुल्को ने जहा तीन बार तलाक कह कर तलाक लेने की प्रथा को समाप्त कर दिया है इसमें पाकिस्तान का भी शुमार है हिन्दुस्तान में यह बदस्तूर कायम है और इस पर अमल होता आया है। जमीयत के एक प्रवक्ता ने बताया कि यही वजह है कि हमे तवारीख और रवायत की इस विकृति को खत्म करने के लिए यह फतवा देने पर मजबूर होना पडा। यकीनन, यह फतवा उन बेकस मुसलमान औरतों की स्याह जिन्दगी मे रोशनी की किरन लाएगा जो तलाक की दहशत में जीती रही और सिसक कर मरती रही।

(पजाब केसरी २९ मई)

वर की आवश्यकता

२१ वर्षीय सुन्दर सुशील कद ५'-३" ब्राह्मण (गोत्र भारद्वाज) एम. ए (संस्कृत) बी. एड कन्या हेतु वर चाहिए। वरीयता अध्यापक, भारत सरकार, बैंक में काम करने वाले सज्जन को दी जावेगी। कन्या आर्य समाज के अधिकारी की है।

— हरपालसिंह शर्मा, मुख्तारआम
सार्व० आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

पश्य देवस्य काव्यम्

—डा० महेश विद्यालंकार

यह सारा संसार प्रभु का सुन्दर काव्य है। इस काव्य के माध्यम से रचयिता का सहज ही बोध किया जा सकता है। सभी धर्मग्रन्थ, वेद, उपनिषद, दर्शन, ऋषि, मुनि, योगी, सन्त विद्वान आदि पुकार पुकार कर कह रहे हैं वह प्रभु सर्वत्र जड़ चेतन में ओत प्रोत है। उसको अनुभव करने के लिए ज्ञान-चक्षु खोलने की आवश्यकता है। वह सृष्टि विधाता अपने कर्मों से सर्वत्र प्रकट हो रहा है। यह सारी रचना अपने निर्माता की ओर संकेत कर रही है। इस सृष्टि के निर्माण और व्यवस्था में कोई अज्ञात चेतन शक्ति निरन्तर क्रियाशील है। प्रभु ने सृष्टि रचना करके अपना कर्म अल्पज्ञ जीव के सामने रख दिया। किन्तु हम फूल में, फूल के बनाने वाले को नहीं देख पा रहे हैं? शरीर में शरीर के, चलाने वाले को नहीं अनुभव कर पा रहे हैं।

उस जगन्नियन्ता शिल्पी की संसार में कैसी कैसी विचित्र, अद्भुत एवं चमत्कारिक नियम और व्यवस्थाएं चल रही हैं कि मानव बुद्धि हैरत में है। स्वतः ही दिन रात हो रहे हैं। ऋतुएं बदल रही हैं। वृक्षों पर नए पत्ते आ रहे हैं, पुराने झड़ रहे हैं। जड़-चेतन सभी परिवर्तन के चक्र में घूम रहे हैं। वैज्ञानिक कह रहे हैं कि संसार का सबसे बड़ा आश्चर्य और चमत्कार है कि पेट रूपी फैक्ट्री में सब कुछ स्वाभाविक हो रहा है। रोटी रक्त बन रही है। रोटी विचार बन रही है,रोटी वासना बनती है, अपने आप सब कुछ रूपान्तरण हो रहा है। शरीर की बनावट, हड्डियों की बनावट व जोड़, खून की नालियां, भोजन पचाने के औजार, हृदय में रुधिर शुद्धि की प्रक्रिया आदि में प्रभु-सत्ता के प्रमाण मिलते है।

सृष्टि का परिवर्तन ईश्वर इच्छा पर निर्भर है। उसी सार्वभौम चेतना के आधीन सूर्य, चन्द्र, ग्रह-उपग्रह आदि नियम से उदय और अस्त हो रहे है। ये सारा ब्रह्माण्ड बिना किसी सहारे के चल रहा है। खेल में गेंद गोल से बाहर हो जाती है, किन्तु आकाश में इतने असंख्य तारागण हैं, कभी परस्पर टकराते नजर नहीं आते हैं। सन्ध्या का प्रत्येक मन्त्र विस्तृत व्यापक परमेश्वर का मानचित्र प्रस्तुत करता है। पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण, ऊपर-नीचे सभी ओर उस सुन्दरतम की महफिल सजी है। उसी का चारो ओर नजारा नजर आता है।

ओ३म् उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥

पशु-पक्षी, कीट आदि अपनी जीवन-यात्रा को चलाने के लिए स्वयं समर्थ है। उनके जीवन उत्पत्ति व रहन-सहन का प्रकार विचित्र एवं आश्चर्य जनक है। पशु पक्षी, जलचर, नभचर कीट आदि की रंग-बिरंगी साज सज्जा, खान-पान को देखकर किसी सूत्रधार का बोध हो जाना स्वाभाविक है। मधुमक्खियां पुष्पों में से मधु किस कारीगरी से खींचती हैं कि कोई वैज्ञानिक यह सिद्ध नहीं कर सकता है कि इस फूल का मधु निकाल लिया गया है। दूसरे का नहीं? किस प्रकार मधुमक्खी शहद के छिद्रों को बुद्धिमत्ता से मोम के द्वारा बन्द कर देती है? किसी रेखागणित के विद्वान से पूछो कितना जटिल एवं असंभव कार्य है। इसीलिए इस सत्य को उच्च स्वर से कहा—

पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णं मुदच्यते

ब्रह्म पूर्ण है। पूर्ण ब्रह्म से प्रकट यह जगत भी पूर्ण है। पूर्ण से ही पूर्ण बनता है। संसार की विलक्षण रचना, जगत में उत्पन्न प्रत्येक पदार्थ से प्रकट हो रही है। वृक्षों, वनस्पतियों और औषधियों पर दृष्टि जाती है तो गणना लघु हो जाती है। कैसे विचित्र ढंग से नीबू में खट्टापन, ईख में मिठास, मिर्च मे कड़वाहट, प्रत्येक पौधा भूमि से स्वाद ले रहा है। वेद परमात्मा की अद्भुत व्यवस्था को देखकर कह रहा है—

याथातथ्योऽर्थान व्यदधात। जो जहां जिसको जब चाहिए स्वतः ही पहुंच रहा है। मनुष्य शरीर की आन्तरिक रचना इतनी परस्पर सम्बद्ध, इतनी सुन्दर नियमित है कि जिसे देखकर वैज्ञानिक एवं ज्ञानी चकित हैं। शरीर में क्या क्या कमाल हो रहे हैं? इसके अन्दर प्रभु ने एक सुन्दर डिस्पेन्सरी बना दी है, जो निरन्तर स्वच्छता और निरोगता का ध्यान रखती है। शरीर अपनी टूट-फूट तथा रख-रखाव की व्यवस्था स्वयं कर रहा है। किसी को पता नहीं है कि अन्दर क्या बन रहा है? यह शिल्पी आंखों की काली पुतली के लिए कहां से मसाला लाता है? दांतों के लिए कहां से कठोर वज्र एकत्र करता है? कानों के लिए इतनी कोमल बारीक मशीन कहां से बनवाता है? जिह्वा पर कौन सा स्वाद का केमीकल लगवाता है? हृदय के पम्प में कौन से मेक की मशीनरी फिट करता है, जो निरन्तर चल रहा है। हाथों, पैरों के जोड़ों में कौन सी क्वालिटी की ग्रीस देता है, जो निरन्तर गतिशील हो रहे हैं?

जब फूल-पौधों की ओर नजर जाती है तो चित्र-विचित्र रंग-बिरंगी छटा सारे अपने निर्माता उस महान कलाकार की ओर संकेत कर रहे हैं। कैसी अनूठी कारीगरी से रंग-रूप साज-सज्जा, मधु-सुगन्ध, कटाई, छठाई आदि की व्यवस्था की है। प्रत्येक फूल की सुगन्ध अलग है। यह पुष्प-जगत हंस हंसकर झूम-झूमकर कह रहा है प्रभु को मुझमें देखो। वह हमारे माध्यम से हंस रहा है।

बहुरंगी वनस्पति जगत में इतना वैविध्य एवं नानात्व है कि मानव की बुद्धि सीमित हो जाती है। प्रभु का सौन्दर्य-दर्शन मानव चिन्तन से बहुत परे है।

किसी कवि ने सुन्दर कहा है—

हर रंग में जलवा है तेरी कुदरत का।
जिस फूल को सूंघता हूं बू तेरी है॥
समाया है जबसे नजरों में तू मेरी।
जिधर देखता हूं, उधर तू ही तू है॥

परमात्मा ने सृष्टि युक्ति युक्त बनाई। आंख ठीक नाक के ऊपर रखी यदि नाक के नीचे रहती तो बड़ा कष्ट होता। नाक का सारा मल आंखों में आता रहता। आंखें नीचे होतीं, तो देख न पाती। नाक और मुख के बीच बहुत अन्तर हो जाता। मुख से खाने वाले पदार्थ को गन्ध-दुर्गन्ध का बोध न हो पाता। प्रत्येक वस्तु को परमात्मा ने यथा स्थान बनाया है।

प्रभु आनन्द स्वरूप है। उनके आनन्द की अनुभूति आत्मा में होती है। इस अनुभूति तक पहुंचने के लिए सूर्य, चन्द्र, तारे, पृथिवी, पहाड़ नदियां वनस्पति जगत आदि संकेत कर रहे हैं। मानव प्राणी जगत की कर्मव्यवस्था को, चित्र विचित्र सृष्टि को चल रहे नियमित नियम-व्यवस्था को देख नहीं पा रहा है? यही उसकी त्रासदी एवं विडम्बना हैं। आज मानव बहिर्जगत व शरीर के लिये सब कुछ सुख-भोग के साधन जुटा रहा है। अन्तर्जगत् सूना, खोखला तथा नीरस होता जा रहा है। इसलिए मानव सब कुछ पाकर भी अतृप्त असन्तुष्ट, अभाव एवं चिन्ता की ओर बढ़ रहा है। विज्ञान व भौतिक साधन मन बुद्धि चित्त और आत्मा के लिए कुछ नहीं दे पा रहे हैं? इसी कारण सर्वत्र भटकन है। अतृप्ति बढ़ती जा रही है। सहज स्वाभाविक, प्रसन्नता, प्रेम, शान्ति एवं आनन्द छूटता जा रहा है। मानव मशीन बनकर दौड़ा जा रहा है।

वेद शास्त्र, धर्मग्रन्थ सन्त, ऋषि-मुनि आदि पुकार पुकार कर कह रहे है—मानव! यदि तू अपना कल्याण और सुख शान्ति चाहता है तो प्रभु की ओर लौट। उस नियामक की रचना, व्यवस्था, नियम परिवर्तन, सृष्टि विज्ञान आदि का चिन्तन मनन कर। अपने ज्ञान-चक्षुओं को खोलकर देख—वह सर्वत्र विद्यमान है। उनका सर्वत्र साम्राज्य है। जिसे तू बाहर खोज रहा है वह तेरे अन्तर् में है। मात्र अज्ञान के पर्दे को हटाना है। उठो! जागो! उस सुन्दरतम देव की रचना को पढ़ो। गुन गुनाओ। जो निरन्तर सर्वत्र अनन्त सुखों के भण्डार को मुक्त हस्त से बांट रहा है। प्रभु के पात्र बनकर सुख-शान्ति व प्रसन्नता स्वयं प्राप्त करो और दूसरों को प्राप्त कराओ। यही प्रभु का अमर सन्देश है।

राष्ट्रोन्नति के सात आधार स्तम्भ

सत्य बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः धारयन्ति ।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु ॥
(अथर्ववेद १२-१-१)

शब्दार्थ—(सत्यं) सच्चाई (वृहत्) बड़प्पन (ऋतं) औचित्य (उग्रं) उग्रता अर्थात् क्षात्र शक्ति (दीक्षा) ध्येय की साधना में जुटना (तपः) सृजन की उत्साह भरी उमंग (ब्रह्म) ज्ञान, ब्रह्म-शक्ति (यज्ञः) सामूहिक कार्य सिद्धि के लिये निज स्वार्थों का बलिदान (पृथिवी) भूमि या राष्ट्र को (धारयन्ति) धारण करते हैं। (सा) वह (भूतस्य) जो हो चुका है (भव्यस्य) जो होने वाला है उसकी (पत्नि) स्वमिनी (नः) हमारे लिये (उरूं लोकं) विस्तृत स्थान (कृणोतु) करे।

१. सत्य—अटल सच्चाई 'सत्येनोत्तभिता भूमिः" भूमि सत्य के ही सहारे टिकी है। "नहि सत्यात्परों धर्मः" सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं। मन्त्र में सत्य के साथ बृहत् विशेषण इसलिये दिया गया है कि हमारे जीवन मे कोई भी क्षण ऐसा नहीं आना चाहिये जब हम सत्य से जरा भी परे हटें। सत्याचरण हमारे जीवन का एक अग ही बन जाना चाहिये। तभी हमारी महत्वाकांक्षाएं और उच्च विचार का आधार शांत, गम्भीर, सहानुभूतिपूर्ण, कष्टसहिष्णुवृत्ति और सूक्ष्मबुद्धि हो जायेगा। शरीर, मन और बुद्धि में एक विशेष प्रकार की चमक और शक्ति उत्पन्न हो जायेगी। अतः हमें सदैव सच्ची भावना से ही व्यवहार करना चाहिये।

२. ऋत—ऋत शब्द सत्य ज्ञान का बोधक होता हुआ जगत् के सत्य नियमों का भी बोधक है और जगत् में चल रहे सत्य नियमों के सही बोध पर ही हमारे ज्ञान की सत्यता अवलम्बित है। हम औचित्य और न्यायपूर्वक व्यवहार और नियम पालन करते रहें। जब व्यक्ति उतावले होकर अपने बनाये हुए नियमों को स्वयं तोड़ते हैं तो अराजकता फैलती है। जब उन्मत्त व्यक्ति न्याय-अन्याय, उचित-अनुचित, धर्म-अधर्म का विचार नहीं करता तो दैवी शक्ति ऋत के व्रत के अनुसार चल कर उसकी आपा-धापी को रोक देती हैं। अतः हमे भौतिक और आध्यात्मिक विद्याओं का सत्य ज्ञान और तदनुसार आचरण करने के लिये सदैव तत्पर रहना चाहिये।

३. उग्र—तेजस्विता। उग्र शब्द क्षात्र तेज का वाचक है। राष्ट्र के लोगो में उग्रता अर्थात् बल और तेज रहना चाहिये। जब कभी जीवन में ऐसा समय आये कि चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार हो, जीत हार मे परिणत होने लगे, उस स्थिति में "मन्युरसि मन्युं मयि धेहि" की प्रार्थना के साथ तेजस्विता अपनानी चाहिए। राष्ट्र में उग्रता के स्वामी क्षत्रिय लोगों की संख्या बहुत बड़ी होनी चाहिये, जो सदैव राष्ट्र मे सन्नद्ध रहें।

४—दीक्षा—दृढ़ सकल्प। राष्ट्र के लोग विघ्नों से घबरा कर अपने कार्यों को बीच में ही अधूरा न छोड़े। किसी कष्ट और विपत्ति से विचलित न हों और न ही किसी लोभ और लालच से डगमगाएं। जिस प्रकार यजमान दृढ़ निश्चय, श्रद्धा और पवित्रता की भावना से यज्ञ में दीक्षित होता है, उसी प्रकार राष्ट्रवासियों को सब कार्य करने चाहियें।

एक व्यक्ति सत्य प्रेमी है, महत्वाकांक्षी और ऋत का अनुसरण करने वाला भी है, किन्तु उसके सकल्प में यदि बल नहीं तो वह जीवन में सफल नहीं हो सकता। अतः हम प्रत्येक कार्य को सोच-विचार करके प्रारम्भ करे और जब तक उसे पूर्ण न कर लें तब तक विश्राम करने का विचार भी मन में न लाएं।

५. तप—तपस्या। जीवन ने सहिष्णुता और सरलता को तप कहते हैं। कार्य सिद्धि मे पूर्व अनेक विघ्न बाधा करते हैं। एक कहावत है—"श्रेयासि बहु विघ्नानि" भले कामों में बहुत रुकावटें आती हैं। जो लोग ठाठ-बाठ और विलास प्रिय होते हैं, वे कष्ट आने पर घबरा जाते हैं और कर्त्तव्य च्युत हो जाते हैं। अतः हमें कष्टों से न घबरा कर भूख-प्यास, सुख-दुःख सहते हुए भी लक्ष्य सिद्धि की ओर बढ़ते रहना चाहिये।

६. ब्रह्म—ज्ञान। ब्रह्म ब्राह्मण को भी कहते हैं। हमारे राष्ट्र में अधिकाधिक ज्ञान अर्जित करने वाले, त्यागी, तपस्वी, संयमी, परोपकारी और आत्मजयी ब्राह्मण होने चाहियें, जो अपनी विद्या और ज्ञान की ज्योति सर्वसाधारण लोगों में फैलाते रहें। ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्रं विरक्षति" ब्रह्मचर्य और तप से राजा-राष्ट्र की रक्षा करता है। हमें यथार्थ सत्य ज्ञान प्राप्त करके तपस्वी और संयमी जीवन व्यतीत करना चाहिये।

७. यज्ञ—देवपूजा, संगतिकरण और दान ही यज्ञ है। सरल शब्दों में, पीड़ितों के दुःख दूर करना ही यज्ञ कहलाता है निज स्वार्थ त्याग कर पीड़ितों के घावों पर मरहम लगाना, परहितचिंतन एवं लोकोपकारक कार्य यज्ञ में ही सन्निविष्ट हैं। राष्ट्र के लोगों को, विशेष कर नेताओं को, अपना जीवन यज्ञमय बनाना चाहिये।

राष्ट्र के कल्याण की भावना से परस्पर मिल कर काम करना चाहिये। राष्ट्र हित के लिये उन्हें वैयक्तिक सुख यदि छोड़ना भी पड़े तो वे उसके लिये भी सहर्ष उद्यत रहें। राष्ट्र के लोगों में यज्ञ की भावना सदैव स्थिर रहनी चाहिये।

जिस राष्ट्र के लोगों में यह सात महाशक्तियां विद्यमान रहेंगी, जिन नेताओ और प्रशासकों मे ये सातों गुण उनके जीवनो को अलंकृत करते रहेगे, वह राष्ट्र सदा उन्नतिशील रहेगा। उसकी महिमा, गौरव और श्रीवृद्धि निरन्तर बढ़ती रहेगी। राष्ट्र के मूलाधार ये सातों गुण राष्ट्र की सात महाशक्तियां हैं।

इतिहास साक्षी है कि देवताओं और धर्मात्माओं ने पापियों को सदैव पराजित किया है। रावण के ऊपर राम, कंस के ऊपर कृष्ण और दुर्योधन के ऊपर युधिष्ठिर की विजय इसके स्पष्ट प्रमाण है। जिस व्यक्ति में उपर्युक्त गुण हैं, वह देश में तो क्या परदेश में भी पूज्य होता है।

सारांश—राष्ट्र रक्षा के आधार-स्तम्भ सातों गुणों को जनता और प्रशासक दोनों धारण करें। यज्ञीय भावना का हृदय में, वाणी मे और कर्म में आचरण होना चाहिये।

"सत्य, बृहत्, ऋत, ब्रह्म, उग्रता, दीक्षा, यज्ञ और तप बल,
धारण करते रहते हैं जिस विस्तृत पृथिवी को प्रतिपल ॥
भूत भविष्य सभी का रक्षण करने वाली विख्याता,
लोक हमारे करे सदा अति विस्तृत वह पृथिवी माता।"

भारतीय भाषाओं की उपेक्षा का कारण—अंग्रेजी

प्रो. चन्द्र प्रकाश आर्य

भारत १९४७ में स्वतन्त्र हुआ और १९५० मे इसका सविधान बना। सविधान में हिन्दी को राष्ट्रभाषा अथवा राजभाषा का स्थान दिया गया था। तब से आज तक हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के प्रयास जारी हैं किन्तु इसमें अभी तक सफल नहीं हो पाये हैं। स्वय भारत सरकार ने १९६५ के बाद भी अनिश्चितकाल तक अग्रेजी को जारी रखने का कानूनी सशोधन करके देश पर अग्रेजी का शिकजा मजबूत कर दिया है। परिणामत आज हम अग्रेजी के बिना रह नहीं सकते। उसके कारण हिन्दी तथा भारतीय भाषायें उपेक्षित हो गयी हैं।

आज हिन्दी हिन्दी-दिवस समारोहों की मोहताज हो गयी है। प्रशासन तथा राजकाज मे अग्रेजी का ही बोलबाला है। न्यायालयो मे अग्रेजी की ही तूती बोलती है। सरकारी तथा गैर सरकारी कार्यालयो मे अग्रेजी की ही जय-जयकार है। हिन्दी को हम कही भी स्थापित नहीं कर पाये हैं। इसीलिए आज देश में अग्रेजी हटाओ, देश बचाओ अथवा अग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करो—की माग हो रही है। राष्ट्रीय हिन्दी परिषद मेरठ हो अथवा हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली हो अथवा आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, सभी अग्रेजी हटाने के पक्ष मे है। आखिर क्यो ? इसलिए कि अग्रेजी के कारण हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषायें पिछड़ गयी हैं।

कालेज, विश्वविद्यालय तकनीकी/प्रौद्योगिकी सस्थान अथवा वैज्ञानिक सस्थान, मेडिकल कालेज हो अथवा इन्जीनियरिंग, सब जगह अग्रेजी का एकाधिकार है। पब्लिक स्कूलो, कान्वेंट स्कूलो तथा केन्द्रीय विद्यालयो मे अग्रेजी की ही प्रधानता है। अग्रेजी नौकरी एव प्रतिष्ठा प्राप्त करने का एकमात्र साधन बनी हुई है। देश की अखिल भारतीय सेवाओ के नियन्त्रक सघ लोक सेवा आयोग की परीक्षाओ पर अग्रेजी जानने वालो का ही एकाधिकार है। १९७९ की सिविल सेवा परीक्षाओ मे ८६ प्रतिशत उम्मीदवार अग्रेजी माध्यम वाले थे। केवल १४ प्रतिशत प्रत्याशी हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओ मे उत्तर देने वाले थे। १९८० तथा १९८१ में भी यही स्थिति रही। १९८२ मे ८५ प्रतिशत उम्मीदवारो ने अग्रेजी मे उत्तर दिया। यही स्थिति अब भी जारी है। इससे पूर्व तो अग्रेजी का ही एकमात्र अधिकार था। १९७८ तक तो भारतीय भाषाओ को माध्यम बनाने की बात ही चल रही थी। इस दृष्टि से सघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) द्वारा अपनी स्थापना की स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष्य मे प्रकाशित 'गोल्डन जुबली सोवेनिर १९२६-७६' मे इडियन लेंग्वेजिज एण्ड मीडिया इन दि सिविल एग्जाम्स पठनीय है। एक अध्ययन के अनुसार १९४७ से १९६३ तक भारतीय प्रशासनिक सेवाओ में चुने गये ५६ से ५८ प्रतिशत उम्मीदवार दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता तथा मद्रास के (सेंट स्टीफन/प्रेजिडेंसी कालेज जैसे) अग्रेजी माध्यम वाले बडे कालेजो से थे। एक अन्य रपट के अनुसार १९४७ से १९५६ तक की अवधि में चुने गये २५ प्रतिशत उम्मीदवार बडे बडे पब्लिक स्कूलो से थे। इस प्रकार देश की अखिल भारतीय सेवाओ पर अग्रेजी जानने वाले लोग ही कब्जा किये हुए हैं जबकि इनकी कुल सख्या दो से पाच प्रतिशत है। हिन्दी तथा भारतीय भाषाओ को जानने वाले देश के ९५ से ९८ प्रतिशत लोगो का इसमे कोई हिस्सा नहीं।

स्वय शिक्षा के क्षेत्र मे अग्रेजी के कारण छात्रो की भारी क्षति हुई है। प्रति वर्ष लाखो छात्र अंग्रेजी मे फेल होते है पूरे देश के यदि आकड़े इकट्ठे किये जायें तो यह सख्या कई करोड मे हो जायेगी। हरियाणा का उदाहरण ध्यान देने योग्य है। हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड की १९८१ तथा १९८२ की दसवीं परीक्षा की पास प्रतिशत तालिका के अनुसार अग्रेजी मे फेल होने वाले छात्रो की सख्या सर्वाधिक थी। १९९२ मे हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड की दसवीं अग्रेजी विषय मे कुल १९१९९१ छात्रो ने परीक्षा दी। उनमे से बोर्ड के गजट के अनुसार कुल १३१७६३ छात्र पास हुए जबकि ६०२२८ छात्र अंग्रेजी मे फेल हुए। लगभग एक तिहाई छात्र अग्रेजी मे अनुत्तीर्ण हैं। यदि नकल न होती तो यह सख्या कहीं अधिक होती। जैसे कि १९८९ मे जब बोर्ड द्वारा नकल को रोका गया था उस वर्ष दसवीं में प्राइवेट छात्रो का अंग्रेजी में पास प्रतिशत २८ २८ था तथा स्कूल के छात्रो का अग्रेजी का परिणाम ५२ प्रतिशत था। दसवी के बाद हरियाणा शिक्षा बोर्ड की मार्च १९९२ की बारहवी (१०+२) परीक्षा का परिणाम चौंका देने वाला है। कुल १०३८८५ छात्रो ने अग्रेजी की परीक्षा दी जिसमे केवल ३७८५८ पास हुए अर्थात लगभग दो तिहाई छात्र फेल हैं। कुल परिणाम ३६ ४४ प्रतिशत रहा।

स्नातक स्तर पर भी छात्रो की स्थिति अग्रेजी मे अच्छी नही है। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की अप्रैल १९९० तथा १९९१ की बी ए/बी एससी प्रथम वर्ष अग्रेजी का परिणाम क्रमश ५५ प्रतिशत तथा ५५ प्रतिशत रहा। विश्वविद्यालय के गजट के अनुसार इसी दौरान बी ए/बी एससी द्वितीय वर्ष की अग्रेजी परीक्षा का परिणाम क्रमश ५२ तथा ५१ प्रतिशत रहा। इसी अवधि मे कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की बी ए/बी एससी तृतीय वर्ष की अग्रेजी का परिणाम क्रमश ६९ प्रतिशत तथा ५६ प्रतिशत रहा। जबकि इसी अवधि मे हिन्दी अनिवार्य का परिणाम ८४ से ९६ प्रतिशत रहा।

(क्रमश)

> **आज हिन्दी हिन्दी-दिवस समारोहों की मोहताज हो गयी है। प्रशासन तथा राजकाज में अंग्रेजी का ही बोलबाला है। न्यायालयों में अंग्रेजी की ही तूती बोलती है। सरकारी तथा गैर सरकारी कार्यालयो मे अंग्रेजी की ही जय-जयकार है। हिन्दी को हम कहीं भी स्थापित नहीं कर पाये है। इसीलिए आज देश मे अंग्रेजी हटाओ, देश बचाओ अथवा अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करो—की माग हो रही है।**
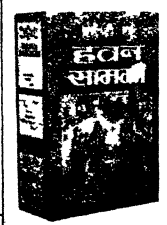
वैदिक समाज में पारिवारिक आदर्श

—श्रीमती देवी शास्त्री एम. ए., वेदाचार्य

व्यक्ति और समाज के बीच पारिवारिक जीवन का महत्व बहुत अधिक है। व्यक्ति का परिवार ही सामाजिक जीवन की शिक्षा का प्रथम क्रियात्मक क्षेत्र है। व्यक्तियो से परिवार और परिवारो से समाज का निर्माण होता है। अतः समाज के उच्च निर्माण के लिए व्यक्ति और परिवार के निर्माण की आवश्यकता होती है। परिवार मे किसको कैसे बर्तना चाहिए, इसकी मर्यादा वेद ने बताई है।

अनुव्रतः पितुः पुत्रो माता भवतु संमनाः।
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शन्तिवाम् ॥

परिवार मे माता, पिता, भाई बहिन, पुत्र-पुत्री आदि सम्बन्ध से जीवन-यापन करना होता है प्रत्येक व्यक्ति परिवार में अनेक सम्बन्धों से युक्त होता है, वह किसी का पुत्र है तो किसी का पिता भी है वह किसी का भाई है तो मामा भी है किसी का वह पति है तो किसी का दामाद भी है।

पिता के साथ पुत्र का व्यवहार

(१) अनुव्रतः पितुः पुत्रः

पुत्र का कर्तव्य है कि वह अपने पिता के अनुकूल आचरण करने वाला हो उसके बताए मार्ग पर दृढ़तापूर्वक श्रद्धा एवं प्रेम से निशंक होकर चले क्योंकि "अज्ञो भवति वै बालः पिता भवति मन्त्रदः" बालक अल्प ज्ञान वाला होता हैं उसे सत्यज्ञान का देने वाला पिता ही होता है। अतः पिता की बात पुत्र को माननी चाहिए।

माता के साथ पुत्र का व्यवहार

(२) माता भवतु संमनाः॥

माता के साथ पुत्र समान मन वाला हो वह माता के प्रतिकूल कार्य करने वाला न हो। माता की इच्छा के विरुद्ध कार्य करने वाला न बने। माता की इच्छा ही बालक की इच्छा रहे। इस प्रकार बालक का विकास माता पिता द्वारा अच्छी प्रकार हो सकता है।

पति पत्नी का व्यवहार

(१) जाया पत्ये मधुमती वाचं वदतु शन्ति वाम्।

वेद ने कहा है कि पत्नी पति की प्रसन्नता के लिए उसके साथ मधुमती वाचं वदतु माधुर्ययुक्त वाणी का प्रयोग करें, जिससे पति सदा प्रसन्न रहे और वह भी पत्नी के साथ मधुरवाणी का प्रयोग करे। इस प्रकार मन्त्र मे पुत्र और पिता का एवं माता और पुत्र के साथ और माता पिता का सम्बन्ध कैसा होना चाहिए। पति पत्नी का व्यवहार कैसा होना चाहिए इस सम्बन्ध मे एक और मन्त्र में भी महत्व पूर्ण व्यवहार का उल्लेख है।

समञ्जन्तु विश्वे देवा समापो हृदयानि नौ।
सं मातरिश्वा संधाता समुदेष्ट्री दधातु नौ ॥

हे समाज के प्रतिष्ठित जनों! हम दोनों जो आज पति-पत्नी के भाव से विवाह सूत्र से आबद्ध हुए हैं हम दोनों के हृदय एवं मन जल के समान एक हों जिस प्रकार दो जल (उष्ण और ठन्डा) एकत्र कर देने पर उन्हें पृथक नहीं किया जा सकता उनमे पृथक गुण नहीं प्रतीत होते दोनों का ताप भी समान हो जाता है। तदनुसार पति-पत्नी के हृदय भी एक समान होने चाहिए। दोनों का हृदय व मन में किसी प्रकार का किसी तरह का भेद, संदेह आदि नही होना चाहिए।

वायु के समान एकत्व स्थिति

इसी प्रकार दूसरा उदाहरण—सं मातरिश्वा का भी पति पत्नी देते हैं अर्थात जिस प्रकार दो वायु परस्पर मिल जाते हैं और एक रूप हो जाते हैं, उसी प्रकार दो प्राण एकरूप हो जाते हैं।

वधु का गृह में व्यवहार

पत्नी जिस घर में प्रवेश करती है वहां उसके पति के माता-पिता आदि के साथ क्या व्यवहार रहे इसके लिए वेद का उपदेश है—

स्योना भव श्वसुरेभ्यः स्योना पत्ये गृहेभ्य।
स्योनास्यै सर्वस्यै विशे स्योना पुष्टायैषां भव ॥

हे वधू! तू श्वसुरादि के लिये सुखदायी हो, तू पति के लिये सुखदायिनी हो तो जो अन्य सम्बन्धी है तथा जो सन्तानादि है उन सबके लिए समान यथोचित प्रेमपूर्ण व्यवहार करने वाली हो।

वधू का गृह में अधिकार

वधू का अपने पति गृह में क्या अधिकार हो इस बारे में वेद आदेश देता है—

सम्राज्ञी श्वसुरे भव, सम्राज्ञी श्वश्र्वां भव।
ननान्दरि सम्राज्ञी भव, सम्राज्ञी अधि देवृषु ॥

हे वधू! तू अपने श्वसुर आदि बड़ों के प्रति सम्यक प्रकाशमान चक्रवर्ती राजा की रानी के समान सबके साथ उत्तम व्यवहार एवं गृहं पर सुशासन करने वाली हो।

परिवार मे जो सास आदि वृद्ध एवं पूजनीया स्त्रियां हैं उनमे प्रीतियुक्त होके उनकी आज्ञा मे प्रीति पूर्वक सम्यक व्यवहार करने वाली हो, जो तेरे कुल मे ननद आदि समान वय वाली जो स्त्रियां हैं उनके साथ सदा प्रीतियुत व्यवहार करने वाली हो तथा जो तेरे कुल मे जो देवर और बड़े जो जेठ आदि हैं उनके साथ भी प्रीतियुक्त पक्षपातरहित सम्मान पूर्वक व्यवहार करना चाहिए। (क्रमशः)

आर्य शिक्षण शिविर, हैदराबाद (आ. प्र.) मे—

महाराणा प्रताप जयन्ती तथा प्रथम भारतीय स्वाधीनता संग्राम (१८५७) दिवस समारोह सम्पन्न

हैदराबाद १६ मई १९९३,

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आन्ध्र प्रदेश सकाय द्वारा गठित आर्य शिक्षण शिविर मे १० मई १९९३ को प्रथम भारतीय स्वतन्त्रता सग्राम (१८५७) दिवस तथा १६ मई १९९३ को महाराणा प्रताप जयन्ती समारोह का आयोजन किया गया।

१० मई १९९३ को राज्य सरकार के शिक्षा मन्त्री डा० ओ० वी० रगाराव ने उपस्थित जन समूह को सम्बोधित किया। स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने समारोह की अध्यक्षता की। श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव तथा अन्य वक्ताओ ने महाराणा प्रताप तथा मगल-पांडे झासी की रानी लक्ष्मीबाई, नाना साहब, तात्या टोपे आदि प्रथम स्वतन्त्रता सग्राम के वीरो के जीवन पर प्रकाश डाला।

१६ मई १९९३ के समारोह मे आन्ध्र प्रदेश सरकार के पचायत राज्य मन्त्री श्री समर सिम्हा रेड्डी ने अपना भाषण दिया जिसकी अध्यक्षता श्री कान्तिकुमार कोरटकर ने की।

दोनो समारोहो मे शिविर के सचालक श्री के नरसिंह रेड्डी ने अतिथियो का स्वागत किया। शिविर का शुभारम्भ प्रतिदिन प्रात काल ५ ३० बजे यज्ञ, आसन प्राणायाम द्वारा होता था। तदनन्तर कश्मीर से आये पण्डित नेत्रपाल शास्त्री के आध्यात्मिक-विद्या पर प्रवचन होते थे।

शिविर के समापन पर १९ तथा २० मई १९९३ को आन्ध्र प्रदेश के राज्यपाल श्री कृष्णकात जी ने प्रशिक्षार्थियो से भेंट की।

—के० नरसिंह रेड्डी
मन्त्री, आन्ध्र प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद

वेद वेदांग पुरस्कार से सम्मानित—

स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

डा० ज्वलन्तकुमार शास्त्री, अमेठी-२२७४०५

आर्य जगत् के लब्धप्रतिष्ठ परिव्राजक मूर्द्धन्य विद्वान् स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती की विद्वत्ता तथा लेखन कार्य से आर्य जगत् भली भाति सुपरिचित है। आर्य समाज के सुप्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान् सैकडो ग्रन्थो के लेखक, सस्कृत, हिन्दी, अग्रजी उर्दू इन ४ भाषाओ मे अव्याहतगति से लिखने वाले स्व० प० गगाप्रसाद उपाध्याय के ज्येष्ठ पुत्र होने का गौरव स्वामी जी को प्राप्त है। स्वामी जी का जन्म जन्माष्टमी के पावन पर्व पर १९०५ ई० मे आर्य समाज मन्दिर बिजनौर मे हुआ। स्वामी जी विनोदपूर्वक कहा करते हैं कि मैं जन्मत आर्य समाजी हू, मेरा जन्म आर्यसमाज मन्दिर मे हुआ है। मेरे जन्म के समय मेरे पिता ब्राह्मण वर्ण को प्राप्त थे।

स्वामी जी प्रयाग विश्वविद्यालय मे लगभग ४१ वर्षों तक अध्यापन तथा शोध कार्यों के निर्देशक रहे। इससे पूर्व डी० एस० सी० तक की सर्वोच्च उपाधि भी इसी विश्वविद्यालय से प्राप्त की थी। भारत मे रसायन विज्ञान, ज्यामिति, अकगणित, बीजगणित, आयुर्वेद तथा पदार्थ विज्ञान का प्राचीन इतिहास प्रामाणिक रूप मे आपने अपने ग्रन्थो मे प्रस्तुत किया है। प्राचीन भारत मे रसायन का विकास, वैज्ञानिक विकास की भारतीय परम्परा आदि शुल्वसूत्राज, प्राचीन मुद्राओ से सम्बन्धित आपके अनेक ग्रन्थ हैं। अग्निहोत्र, स्वामी दयानन्द के दर्शन, उपनिषदों की व्याख्या इस विषय पर स्वामी जी के प्रामाणिक ग्रन्थ अग्रेजी भाषा मे है। अभी-अभी ११ उपनिषदो की अग्रेजी व्याख्या लिखकर गोविन्दराम हासानन्द को प्रकाशनार्थ दी है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद का अग्रेजी मे आधुनिक शैली मे प्रस्तुतीकरण, शास्त्रीय लम्बी भूमिका, अनुक्रमणिका सहित विस्तृत परिश्रम साध्य कार्य स्वामी जी ने सम्पन्न किया है। उनके लेखन तथा प्रचार कार्य का विवरण यहा सक्षेप मे भी प्रस्तुत करना सम्भव नही है। इस वर्ष वेद-वेदाग पुरस्कार से स्वामी जी को सम्मानित करके आर्य समाज सान्ताक्रुज ने श्लाघनीय कार्य किया है। इसके लिए आर्यसमाज सान्ताक्रुज तथा इसके सयोजक कैप्टेन देवरत्न आर्य समस्त आर्य जनता की ओर से धन्यवाद और प्रशसा के पात्र हैं। समस्त आर्य समाजो को सूचित करते हुए मैं यह लेख समाप्त कर रहा हू कि सम्प्रति स्वामी जी स्वस्थ तो हैं परन्तु लेखन तथा प्रचार कार्य में एव कही यातायात गमनादि मे सर्वथा असमर्थ है। उनकी सेवा अत्यन्त ही मनोयोग से उनके शिष्य प० दीनानाथ शास्त्री अपने घर पर कर रहे हैं। उनका पता है—

द्वारा—प० दीनानाथ शास्त्री, एच०ए० एल, मु शीगज
अमेठी-२२७४१२ (उ० प्र०)

आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की विशेष अपील

दिल्ली की सभी आर्य समाजो के मन्त्री व प्रधानो से अपील है कि आर्य वीर दल दिल्ली के २८ मई से ६ जून रविवार १९९३ तक होने वाले शिविर के लिए जो कि गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में हो रहा है इस युवा निर्माण के कार्य मे अधिक से अधिक तन, मन, धन से सहयोग करें, नकद या क्रास चैक तथा ड्राफ्ट आर्य वीर दल दिल्ली के नाम शिविर स्थल पर देकर रसीद प्राप्त कर लें अथवा आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, सार्वदेशिक सभा में आर्य वीर दल के कार्यालय पर पहुचा दें।

विशेष—६ जून रविवार प्रात ९ बजे शिविर समापन समारोह मे सभी आर्य समाज अपनी-अपनी आर्य समाजों से बस या टेम्पो पर झण्डे, बैनर लगा कर अधिक से अधिक संख्या में पहुच कर आर्य वीरों का मनोबल बढ़ावे तथा समारोह की शोभा बढ़ावे, समारोह में पूर्ण ऋषि लगर की व्यवस्था की गयी है।

— डा० धर्मपाल सभा मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य वीर दल शिविरावली वर्ष १९९३

	दिनाक　　स्थान	शिक्षक
१	२ से ९ मई १९९३—आर्य समाज कुल्लु हिमाचल प्रदेश	—श्री हरिसिंह आर्य
२	१४—२३ मई १९९३—लोनावला द्वारा आर्य समाज पिम्परी पुणे (महाराष्ट्र)	—डा० देवव्रत आचार्य श्री वेंकटेश हासिंगे, श्री अरुण मदन सुरे।
३	२०—३० मई १९९३—गुरुकुल होशंगाबाद (म० प्र०)	—मदनपाल राठी ब्र० अरुण कुमार आर्य, श्री धनकराम, कपिलदेव जी।
४	२०—३० मई १९९३—आर्य समाज खलीलाबाद जिला बस्ती (पूर्वी उ० प्र०)	—श्री हरिसिंह आर्य श्री अमेदमुनि जी।
५	२१—३० मई १९९३—जखराना (अलवर) राजस्थान	—श्री सत्यवीर आर्य नन्दकिशोर जी, सीताराम जी, प्यारेलाल आर्य।
६	२०—३० मई १९९३—दयानन्द महिला महाविद्यालय फरीदाबाद (हर)	—श्री कृष्णपाल जी, ओमप्रकाश जी आर्य, सदीप राठी, सदीप आर्य।
७	२७ मई से ६ जून ९३—प्रान्त दिल्ली	—ब्र० सुरेन्द्र आजाद, प्रतुल जी जगवीर, दिनेश आर्य, पवन कपूर।
८	२७ मई से ५ जून ९३—कन्या गुरुकुल, नरेला दिल्ली ४०	—डा० देवव्रत आचार्य सुनीति जी सविता जी।
९	३० मई से ६ जून ९३—आर्य धनवन्तरी विद्यालय रोहतक (हरियाणा)	अनिल आर्य बलदीप आर्य यशदेव शिवकृष्ण आर्य।
१०	२४ मई से ३ मई ९३—हरिबाबा इण्टर कालेज गबा बदायू	—श्री राजेश आर्य अजबसिंह आर्य।
११	१६ मई से २७ मई ९३—ऋषि उद्यान पुष्कर रोड अजमेर (राज०)	—श्री यतीन्द्र शास्त्री एवं सहयोगी।
१२	२० मई से ३० मई ९३—मुण्डा खेड़ा जिला रामपुर (उ० प्र०)	
१३	३० मई से ५ जून ९३—डी०ए०वी०सीनियर सै०स्कूल करनाल (हर)	—अनिल आर्य अर्जुनसिंह आर्य राजेश आर्य, अजबसिंह आर्य।
	आर्य समाज रामनगर जीन्द (हर)	—सुरेश आर्य धर्मवीर आर्य सुभाष आर्य राजवीरजी, कृष्ण आर्य, रामकरण आर्य
१४	१८ जून से २७ जून ९३—डी० ए० वी० कालेज वाराणसी (उ०प्र०)	—मदनपाल राठी।
१५	२७ मई से ६ जून ९३ प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र बवाना रोड, दिल्ली १०	—डा० धर्मवीर आर्य।
१६	२८ मई से ५ जून ९३—किसान इण्टर कालेज खरड मुजफ्फरनगर उ प्र	—हरपालसिंह आर्य।
१७	६ जून से २० जून ९३—राष्ट्रीय शिविर गुरुकुल झज्जर (रोहतक)	—डा० देवव्रत आचार्य सत्यवीर आर्य मा० समरसिंह, ओमप्रकाश आर्य। अर्जुनसिंह सुरेश आर्य अजीतसिंह हरिसिंह आर्य, मदनपाल राठी आर्य।
१८	१ जून से ९ जून ९३—आर्य समाज स्टेशन रोड मुरादाबाद (उ० प्र०)	—मदनपाल राठी।
१९	२१ जून से २८ जून ९३—गुरुकुल महाविद्यालय पुष्पावती, पूठ (गाजि०	
२०	२० मई से ३० मई ९३—आर्य समाज बिजनौर-८ (उ० प्र०)	
२१	२२ जून ४ जुलाई ९३—कार्यकर्ता शिविर उद्‌गीथ स्थली राजगढ जिला सिमौर (हिमाचल प्रदेश)	—डा० देवव्रत आचार्य

मदनपाल राठी आर्य वरिष्ठ प्रशिक्षक
सार्वदेशिक आर्य वीर दल

जयपुर में कन्याओं का उपनयन संस्कार सम्पन्न

समस्त राजस्थान मे जब आखा तीज पर अबोध बालक बालिकाओ को गोद मे बैठा कर विवाह पढ़वा रहे थे तब वहा की राजधानी मे प्राचीन वैदिक परम्परा के अनुपालन मे एक वैदिक श्रेष्ठ परिवार की कन्याओ के यज्ञोपवीत सस्कार मे राजस्थान के पूर्व मन्त्री एव लोक शिक्षक (पाक्षिक) जयपुर के सम्पादक पण्डित युगल किशोर चतुर्वेदी (९० वर्ष) की दो पौत्रियो आयुष्मती स्मृति तथा श्रुति तथा एक पौत्र चि० सौरभ का उपनयन सस्कार पूर्ण वैदिक विधि से दिल्ली के सुप्रसिद्ध विद्वान आचार्य रविदत्त गौतम शास्त्री द्वारा पण्डित ब्रह्मदत्त स्नातक, प० इन्द्र देव शर्मा तथा स्वामी सोमानन्द सरस्वती के सहयोग से सम्पन्न हुआ। इस प्रकार उनके वेदाध्ययन का मार्ग प्रशस्त हुआ।

इस अवसर पर प्रियवदाजी के मन्दिर का विशाल सभा मण्डप महिलाओं तथा पुरुषो से खचाखच भरा हुआ था। उपवीत धारण करने वाले तीनो बच्चो को आचार्य ने यज्ञोपवीत धारण कराया। फिर अपने सारगर्भित भाषण मे यज्ञोपवीत का महत्व समझाया और उसके पालन करने से सम्बन्धित कर्तव्याकर्तव्य का बोध कराया।

इसके अनन्तर स्वामी सोमानन्द सरस्वती तथा वैद्य मदनलाल शर्मा आयुर्वेदाचार्य ने वैदिक सस्कारो विशेषत यज्ञोपवीत सस्कार की प्रासगिता पर विस्तार से प्रकाश डाला।

उपनयन सस्कार के अवसर पर बाहर से आये अनेक विद्वानो प्रशंसको तथा हितैषियो के आशीर्वाद और सन्देश प्राप्त हुए।

ब्रह्मदत्त स्नातक,
भारतीय सूचना सेवा (रिटा०)

६० परिवारो के २०० ईसाई वैदिक धर्म में

ग्राम खैरियालि मधुपुर (सम्बलपुर) उड़ीसा के साठ परिवारो के २०० से अधिक ईसाईयो ने पू स्वामी धर्मानन्दजी प्रधान, उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा की प्रेरणा पर ३ मई को वैदिक धर्म ग्रहण किया। समारोह उल्लासमय वातावरण मे श्री स्वामी परमानन्दजी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री स्वामी व्रतानन्दजी उपाचार्य गुरुकुल आमसेना, श्री विशुद्धानन्द जी, ब्र गणनाथजी आदि विद्वानो ने आशीर्वाद दिया। कार्यक्रम का सचालन सभा मन्त्री श्री प विशिकेशन शास्त्री ने किया। इस कार्य मे श्री रुकमणि देवता का योगदान सराहनीय रहा।

विशिकेशन शास्त्री, सभा मन्त्री

शोक समाचार

श्री दीपनारायण लाल श्रीवास्तव का २०-४ ९३ मगलवार को काशी से प्रयाग जाते समय चौरी चौरा एक्सप्रेस ट्रेन से प्रात ५ बजे निधन हो गया। श्री दीपनारायण जी आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता तथा आर्य वीर दल के अधिकारी रह चुके हैं व कई वर्षों तक आय जिला सभा में मन्त्री भी रहे। उनका अन्तिम सस्कार २८ ४ ९३ को पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ। आर्योप प्रतिनिधि सभा वाराणसी के आर्य बन्धुओ ने दिवगत आत्मा की सदगति तथा परिवारजनो को धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना की।

—आय स्त्री समाज शाहजहापुर की वरिष्ठ सदस्या श्रीमती सूरजमुखी देवी धर्म पत्नि श्री प० ब्रह्मदत्त जी का १५ ५-९३ को निधन हो गया। वे ८० वष की थी। आप अपने पीछे भरा पूरा घर परिवार छोड गई हैं। १६-५-९३ को पारित एक प्रस्ताव मे जिले के समस्त आर्यजनो ने दिवगत आत्मा की शान्ति एव शोकाकुल परिवार को धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना की।

नि:शुल्क योग एवं संस्कृत प्रशिक्षण शिविर

(६ जून, रविवार से १३ जून रविवार १९९३ तक)

आत्मशुद्धि आश्रम मे गत वर्षो की भान्ति ६ जून से १३ जून तक योग एव सस्कृत प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविर मध्य ध्यान, प्राणायाम, आसनादि योग की विधियो के साथ सस्कृत मे वार्तालाप करना, सस्कृत अध्ययन की सरल विधियां समझाना एव मन्त्रो श्लोको का शुद्ध उच्चारण और संस्कारो का प्रशिक्षण दिया जायगा।

श्री धर्मदेव जी खुराना अनाज से लदा एक ट्रक व ७०००)०० नकद गुरुकुल आमसेना (जनपद कालाहाण्डी) के आचार्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती को अकाल ग्रस्त पीड़ितो की सहायतार्थ भेंट करते हुए। साथ मे आर्य समाज रानीबाग के अधिकारी व उनके सहयोगी खडे है।

(सहयोग—आर्य समाज रानीबाग, शकूरबस्ती दिल्ली)

आर्य समाज रानीबाग, दिल्ली द्वारा—

उड़ीसा के सूखा पीड़ितों की सहायतार्थ एक ट्रक अन्न कालाहाण्डी भेजा गया

आर्यसमाज रानीबाग, शकूरबस्ती, दिल्ली जनसेवा कार्यों मे अपना अलग ही स्थान रखता है। उड़ीसा के कालाहाण्डी जनपद मे अकाल की सूचना मिलते ही इस आर्य समाज के कर्मठ सदस्यो ने अनाज व धन एकत्रित करना आरम्भ कर दिया और दिनाक १४ ५-९३ को १२० बोरी गेहू और चावल से लदा एक ट्रक व ७०००) रु० नकद श्री स्वामी धर्मानन्द जी को सौंप दिया। अनाज आदि एकत्र करने मे गाव चौरा माजरा त० घरौंडा (जि० करनाल) हरियाना के खुराना परिवार के वंश्री धर्मदेव जी, ज्ञानचन्द जी, नन्दलाल जी और इस परिवार के छोटे बडे सभी सदस्यो ने तन मन व धन से सहयोग दिया और आस पास के गावो से भी सहयोग प्राप्त किया।

प्रभु से प्रार्थना है कि इन सभी सहयोग कर्ताओ का सुखो व सम्पन्न करते हुए दीर्घायु प्रदान करे और यह सब जीवन पर्यन्त देश और जाति के लिये कल्याणकारी कार्य करते रहे।

देशवासी महाराणा प्रताप से प्रेरणा लें

कानपुर। आर्य समाज गोविन्द नगर के तत्वावधान मे महाराणा प्रताप की जयन्ती के अवसर पर एक आम सभा एव केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य की अध्यक्षता मे आयोजित की गई। सभा मे वक्ताओ ने महाराणा प्रताप के शौर्य, साहस, देशभक्ति की भूरि भूरि प्रशसा की और देशवासियो से अपील की गई कि वह महाराणा प्रताप से प्रेरणा लेकर विदेशी भाषा, विदेशी कम्पनियो तथा विदेशी विचार धारा का साहस के साथ मुकाबला करें।

आर्य समाज, गोविन्द नगर कानपुर

रजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०२४/९३ सार्वदेशिक साप्ताहिक (६-६-१९९३) बिना डिलीवरी शुल्क अग्रिम भुगतान के भेजने का लाइसेंस नं० U (G) ९३
H. 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U (G) 93 Post in N.D.P.S.O.on 3-4-6-1993

मुस्लिम परिवार ने हिन्दू धर्म अपनाया

शिकारपुर २१ मई। जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, बुलन्दशहर के तत्वावधान में आर्य समाज के मन्त्री श्री विजयपाल सिंह ने एक मुस्लिम परिवार को वैदिक (हिन्दू) धर्म में दीक्षित किया। जिला सभा के अधिकारी गण इस अवसर पर उपस्थित थे।

स्वेच्छा से वैदिक धर्म में प्रवेश करने वाले बन्नूखां ने अत्यन्त प्रसन्न मुद्रा में यज्ञ वेदी पर यज्ञोपवीत धारण कर अपना नाम सत्यवीर सिंह तोमर स्वीकार किया। साथ ही पत्नी मुन्नी बेगम का नाम रजनी देवी, समीना व अन्जुमन का सीमा कुमारी व अन्जु तथा सलीम व अलीबख्श का सत्येन्द्र सिंह व अरविन्द सिंह स्वीकार किया। तत्पश्चात आर्य समाज की ओर से प्रीतिभोज हुआ।

श्री सत्यवीर सिंह तोमर ने कहा कि हमें अत्यन्त प्रसन्नता एव गर्व है कि अपने पूर्वजो की भूल का प्रायश्चित करके आज हम अपने ही परिवार में सम्मिलित हुए हैं। परिवार के आवास, शिक्षा एवं व्यवसाय का उत्तरदायित्व आर्य समाज शिकारपुर ने अपने ऊपर लिया। —धर्मेन्द्र शास्त्री

प्रथम कक्षा से अष्टम कक्षा तक प्रवेश

विशेषताएं:—गंगातट, सुरम्य वातावरण, विशाल परिसर केन्द्रीय विद्यालय पर आधारित पाठ्यक्रम, छात्रों का सर्वांगीण विकास।

१५) रु० मनिआर्डर द्वारा भेजकर प्रवेश नियमावली एवं फार्म प्राप्त करें। प्रवेश १ जुलाई ९३ से प्रारम्भ। —महेन्द्र कुमार मुख्याधिष्ठाता

गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार (उ. प्र. २४९४०४)

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित

सत्यार्थप्रकाश पत्राचार प्रतियोगिता

—: पुरस्कार :—

प्रथम : ११ हजार द्वितीय : ५ हजार

तृतीय : २ हजार

न्यूनतम योग्यता : १०+२ अथवा अनुरूप

आयु सीमा : १८ से ४० वर्ष तक

माध्यम : हिन्दी अथवा अंग्रेजी

उत्तर पुस्तिकायें रजिस्ट्रार को भेजने की

अन्तिम तिथि ३१-८-१९९३

विषय :

महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश

नोट :—प्रवेश, रोल न०, प्रश्न-पत्र तथा अन्य विवरण के लिए देश में मात्र बीस रुपये और विदेश में दो डालर नगद या मनीआर्डर द्वारा रजिस्ट्रार, परीक्षा विभाग सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नयी दिल्ली-२ को भेजें। पुस्तक अगर पुस्तकालयों, पुस्तक विक्रेताओं अथवा स्थानीय आर्य समाज कार्यालयों से न मिलें तो तीस रुपये हिन्दी संस्करण के लिये और पैंसठ रुपये अंग्रेजी सस्करण के लिये सभा को भेजकर मंगवाई जा सकती हैं।

(२) सभी आर्य समाजो एवं व्यक्तियों से अनुरोध है कि इस तरह के हैंडबिल ४-५ हजार छपवाकर आर्यजनों, स्थानीय स्कूल कालेजो के अध्यापकों और विद्यार्थियों मे वितरित कर प्रचारबढ़ाने में सहयोग द।

डा० एस०बी० आर्य — रजिस्ट्रार

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती — प्रधान

श्री निःशुल्क गुरुकुल महाविद्यालय ... जुलाई से हो रहा है। हिन्दी, संस्कृत विज्ञान गणित के साथ ... नन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से व्याकरणाचार्य की मान्यता प्राप्त है, निःशुल्क शिक्षा, सात्विक भोजन, स्वच्छवातावरण में अध्ययन अध्यापन की उत्तम व्यवस्था है। गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति पर आस्था रखने वाले महानुभाव १ जुलाई से ३१ जुलाई तक प्रवेश दिलावें, पत्राचार द्वारा भी सम्पर्क करें।

—सत्यबोधानन्द कुलपति

श्री नि.शुल्क गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या, जिला फैजाबाद

वार्षिकोत्सव

—आ० स० मन्दिर गुढ़ाखास खातोन का द्वितीय वार्षिकोत्सव ३ से ५ जून तक समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वानों तथा भजनोपदेशकों ने अपने ओजस्वी उपदेशों से श्रोताओं का ज्ञानवर्धन किया। अन्तिम दिवस पाच ... धर्मपाल जी का शक्ति प्रदर्शन हुआ, इनके आश्चर्यजनक करतबो को देखकर जन समूह मुग्ध हो गया। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

—चौक आर्य समाज आरा का द्वितीय वार्षिकोत्सव ८ से १२ अप्रैल तक धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर प्रसिद्ध वैदिक विद्वान स्वामी ओमानन्द सरस्वती के अतिरिक्त अनेकों विद्वानों तथा भजनोपदेशकों ने अपने अमृत वचनों से जनता को लाभान्वित किया।

—आर्य समाज रानी की सराय का ५० वां वार्षिकोत्सव ३ से ५ अप्रैल तक समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ इस अवसर पर डा. सत्यकाम आर्य पं. सत्यमित्र आपकी तथा त्रिगुणी नारायण जी सहित अनेकों विद्वानों ने पधार कर जनता को सम्बोधित किया। समारोह मे महिला सम्मेलन शंका समाधान तथा सामूहिक यज्ञोपवीत के विशेष कार्यक्रम सम्पन्न हुये।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

महर्षि दयानन्द उवाच

- गाय के दूध, घी से जितनी बुद्धि-वृद्धि से लाभ होते हैं, उतने भैंस के दूध से नहीं। इससे मुख्योपकारक, आर्यों ने गाय को गिना है।
- मित्र, मित्र के साथ सत्य व्यवहारों के लिए आत्मा के समान प्रीति से बर्तें, परन्तु अधर्म के लिए नहीं।
- पड़ौसी के साथ ऐसा बर्ताव करें कि जैसा अपने शरीर के लिए करते हैं।
- जिस देश में यथायोग्य ब्रह्मचर्य, विद्या और वेदोक्त धर्म का प्रचार होता है वही देश सौभाग्यवान् है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र   दूरभाष : ३२७४७७१   वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३१ अंक १-]   दयानन्दाब्द १६९   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९४   आषाढ़ कृ० ९   सं० २०५०   १३ जून १९९३

पाकिस्तान में धार्मिक अल्पसंख्यक असुरक्षित

संयुक्त राष्ट्र के मानवाधिकार आयोग की रिपोर्ट

पाकिस्तान में धार्मिक अल्पसंख्यकों की असुरक्षा बढ रही है। शरीयत (इस्लामी कानून) अधिनियम १९९१ के तहत धार्मिक अल्पसंख्यकों को कठोर सजाएं दी जा रही हैं। न केवल ईसाई, हिन्दू, बल्कि अहमदी मुसलमान भी इसके शिकार हो रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र के मानवाधिकार आयोग ने अपनी विस्तृत रिपोर्ट में यह उल्लेख किया है। यह रिपोर्ट मानव अधिकारो पर सयुक्त राष्ट्र के अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन के अवसर पर तैयार की गयी है। यह सम्मेलन १४ से २५ जून तक विएना में हो रहा है। पर्यावरण और विकास पर पृथ्वी सम्मेलन के बाद दूसरा सबसे बड़ा अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन होने वाला है।

मानवाधिकार आयोग की रिपोर्ट मे पाकिस्तान में मानव अधिकारों के उल्लंघन पर विस्तृत अध्याय है। रिपोर्ट का एकमात्र मुद्दा पाकिस्तान में धार्मिक अल्पसंख्यकों के मानव अधिकारों का उल्लंघन है और उदाहरण के तौर पर केवल अहमदी मुसलमानों और ईसाइयों की चर्चा है।

रिपोर्ट के अनुसार २९ जुलाई १९९१ को शरीयत अधिनियम के तहत पाकिस्तान दंड संहिता की धारा २९५ सी मे गम्भीर संशोधन किया गया। इससे पैगम्बर मोहम्मद की किसी प्रकार की अवमानना करने वालों के लिए मृत्यु दंड की सजा का प्रावधान किया गया। पहले इस कथित अपराध के लिए आजीवन कारावास की सजा आखिरी थी।

रिपोर्ट बताती है कि १९९१ से ही इस इस्लामी कानून पर सख्ती से अमल होने लगा। गैर मुसलमान धार्मिक अल्पसंख्यकों को इसका निशाना बनाया गया। धार्मिक अल्पसंख्यकों को व्यक्तिगत दुश्मनी या पेशेवर प्रतिद्वन्द्विता के कारण भी बड़े पैमाने पर इस कानून में फंसाया गया। इससे पाकिस्तान में धार्मिक अल्पसंख्यकों को असुरक्षा और डर मे भयंकर वृद्धि हुई है।

यहां तक कि कुछ समय बाद शरीयत कानून १९९१ और पाकिस्तान दंड संहिता २९५ सी पर अमल के खिलाफ लिखने या बोलने वालों के लिए भी मृत्युदण्ड की सजा का प्रावधान कर दिया गया।

रिपोर्ट के अनुसार पाकिस्तान मे ३० से ४० फीसदी अहमदी हैं। पाकिस्तान के संविधान में १९७४में एक संशोधन के जरिये अहमदियों को गैर मुसलमान अल्पसंख्यक करार किया गया है। १९५३ और १९७४ में अहमदियों के खिलाफ भयंकर खून-खराबे हुए हैं।

अहमदी समुदाय अपने को मुसलमान मानता है, जब कि १९८४ में पाकिस्तान दण्ड संहिता में एक महत्वपूर्ण संशोधन के जरिये अहमदियों को अपने को मुसलमान कहने या मुस्लिम धार्मिक प्रतीक अपनाने पर पाबन्दी लगा दी गई है। इसके लिए तीन साल की जेल और अन्य जुर्माने का प्रावधान है।

रिपोर्ट बताती है कि अहमदियों को अस्सलाम-ओ-वालेकुम या इंसाअल्ला कहने, बिसमिल्ला लिखने, कुरान पढ़ने, जनाजा निकालने या कलिका लिखने, जैसे अपराधों के लिए सजा दी गई है। अहमदी मुसलमानों के मस्जिद ध्वस्त किये गये हैं, उनके घर जलाये गये हैं। अहमदी बच्चों को मुस्लिम शिक्षा देने के अरोप में उनके अभिभावकों को जेल भेजा गया है।

संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार आयोग के विशेष प्रतिनिधि के जरिये दर्ज की गयी धार्मिक अल्पसंख्यकों पर अत्याचार की इन घटनाओं में एक अब्दुर शकूर है। उसे तीन साल की जेल और ५००० रुपये जुर्माने की सजा भुगतनी पड़ रही है, क्योकि उसने कुरान की आयतें वाली एक अंगूठी पहन रखी थी।

एक बूढ़े किसान राणा कदमतुल्ला को एक निजी घर में नमाज पढ़ने के अपराध में गिरफ्तार किया गया है। उसके साथ ५० से ज्यादा अन्य अहमदी भी इसी आरोप में गिरफ्तार हुए हैं। इन लोगों पर सार्वजनिक शान्ति व्यवस्था भंग करने और दंगा-फसाद भड़काने के आरोप भी लगाये गये हैं।

२९ अगस्त १९९१ को बहावलनगर के जिला मजिस्ट्रेट ने आदेश दिया है कि अहमदी मुबासर अहमद कदानी के शव को मुस्लिम कब्रगाह से निकाल बाहर किया जाये। लाहौर के कई नर्सिंग और सरकारी प्राथमिक स्कूलों में प्रवेश के विज्ञापनों मे अहमदी बच्चो का आवेदन वर्जित बताया गया है।

३ अप्रैल १९९२ को कोटरी में अहमदी मुसलमानों के घर पर हमला हुआ है। महिलाओं और बच्चों को धमकाया गया है। इसी दिन कोटरी और सिन्ध मे सैकड़ों अहमदियों के घरों पर छापा मारा गया है और २० अहमदियों पर पाकिस्तान दंड संहिता की धारा २९५ सी के तहत मुकदमा दर्ज किया गया है।

रिपोर्ट में कई उदाहरणों के साथ बताया गयाहै कि पाकिस्तान में धार्मिक अल्पसंख्यकों को जबरिया धर्मान्तरण का सामना करना पड़

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

पाकिस्तान में अत्याचार

(पृष्ठ १ का शेष)

रहा है। कई मामलो मे घरेलू नौकरो को मुसलमान बनाया गया है। एक वकृग र मे काम करने वाले नौ वर्षीय लडके का उसके मुसलमान मालिक ने जबरन धर्मपरिवर्तन कराया है।

आयोग के विशेष प्रतिनिधि के हवाले स बताया गया है कि कई शहरो सरकारी कार्यालयो डाकघरो बैको आदि मे अधिकारियो ने सभी कर्मचारियो के लिए ऐसा पहचान पत्र पहनना अनिवार्य कर दिया है जिसमे उनके धम का उल्लेख जरूरी है।

४५ वर्षीय नैमत अहमेर ईसाई थे। वे लाहौर,के,नजदीक फैसलाबाद मे एक स्कूल मे शिक्षक थे। ६ जनवरी १९९२ को उनकी हत्या कर दी गयी। उन्हे फारूरत अहमद नामक एक लडके ने पत्थरो से मार-मार कर खत्म कर दिया। नैमत अहमेर पर आरोप था कि उन्होने पैगम्बर मोहम्मद की अवमानना करने वाला एक पर्चा लिखा है। नैमत अहमेर की हत्या करने वाले लडके के खिलाफ कोई कारंवाई नही हुई। रिपोर्ट मे बताया गया है कि यद्यपि कई साक्ष्यो और प्रमाणो से यही पता चलताहै कि नैमत ने पैगम्बरकी अवमानना करने वाली कोई कारंवाई नही की थी और कोई पर्चा भी नही लिखा था, पर नैमत की हत्या के मामले की सुनवाई कही नही है यहा तक कि जब नेमत ने अपने जान-माल की रक्षा की माग की थी तब भी उनकी सुनवाई नही हुई थी।

रिपोर्ट के अनुसार पाकिस्तान मे धार्मिक अल्पसख्यको के खिलाफ मुसलमान कठमुल्लाओ के 'फतवे' की प्रवृत्ति भी बढ रही है। फतवे के शिकार लोगो पर हमले बढ रहे है।

धार्मिक अल्पसख्यको की सूची जारी की जा रही है और उनके घर-परिवार पर हमले की आशकाए हैं। एक धार्मिक अल्पसख्यक पर तो एक पुलिस थाने के अन्दर गु डो ने चाकुओ से हमला किया है।

कपूर ब्रादर्स द्वारा वनवासी क्षेत्र मे ३५ हजार रुपये की लागत से आश्रम मे एक कमरा बनाने का संकल्प

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ की मन्त्री माता प्रेमलता जी की माता श्रीमती बीरा बाई पत्नी स्व० मुरलीधर (मुल्तान निवासी) का दिनाक १ जून ९३ को अपने पुत्रो के निवास जे० १३३ रिजर्व बक कालोनी, पश्चिम बिहार, नई दिल्ली मे निधन हो गया है।

माता बीराबाई के निधन से दयानन्द सेवाश्रम सघ को हार्दिक दु ख पहुचा है। परमात्मा से दिवगत आत्माकी सद्गति के लिए प्रार्थना करते हुए दयानन्द सेवाश्रम सघ के महामन्त्री श्री वेदव्रत महता ने शोक सतप्त परिवार के प्रति हार्दिक सवेदना प्रकट की।

अखिल भारतीय दयानन्द सेवा सघ के कार्यों को बल देने के लिए इस अवसर पर माता बीराबाई के पुत्रो (कपूर बन्धुओ) ने वनवासी क्षेत्र मे उनकी स्मृति मे ३५ हजार रुपये की लागत से आश्रम के लिए एक कमरा बनाकर देने का पुनीत सकल्प किया है। सघ उनके इस सहयोग के प्रति आभारी है।

—आ० भा० द० से० सघ

परिमण्डलीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर वाराणसी मे २१ से ३० जून तक

सहर्ष सूचित किया जाता है वाराणसी डी० ए० वी० कालेज मे आर्य वीर दल का प्रशिक्षण शिविर दिनाक २१ से ३० जून तक लग रहा है सार्वदेशिक में छपे पूर्व सूचना की तिथि की यह परिवर्तित तिथि है। सभी शिविरार्थी अपने नाम १५ जून तक आ० वी० द० पूर्वी उ० प्र० के कार्यालय आर्य समाज मन्दिर, लल्लापुरा वाराणसी मे अवश्य भेज देवे।

—प्रमोद आर्य उपसचालक
आर्य वीर दल, वाराणसी परिमण्डल

महाराणा प्रताप जयन्ती समारोह के अवसर पर दायें से बाए भामाशाह के प्रतीक सेठ हनुमान प्रसाद महाराणा महेन्द्रसिंह मेवाड केन्द्रीय कृषि-मन्त्री डा० बलराम जाखड और प्रो० शेरसिंह जी।

भामाशाह के प्रतीक—सेठ हनुमान प्रसाद चौधरी द्वारा २५ हजार रुपये का दान

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे आयोजित महाराणा प्रताप जयन्ती समारोह का आयोजन २३ २४ मई १९९३ को दिल्ली के लालकिला मैदान में सम्पन्न हुआ था। इस अवसर पर सेठ हनुमान प्रसाद जी चौधरी भी महाराणा महेन्द्रसिंह जी के साथ पधारे हुए थे। महाराणा प्रताप के जयन्ती समारोह से प्रसन्न होकर सेठ जी ने सार्वदेशिक सभा को २५,०००) रुपये की राशि भेंट करके अपने को भामाशाह का प्रतीक सिद्ध किया है। परमात्मा से प्रार्थना है कि उन्हें दीर्घ जीवन और उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करे।

सम्पादकीय

सोम-यज्ञ के आयोजन पर विद्वान् विचार करें ?

आज दिनांक ४-६-९३ के अंक पंजाब केसरी मे सोम-यज्ञ पर विशेष विवरण छपा है जिसका शीर्षक है "सोमयज्ञ" आयोजन मे थोड़ी सी भी त्रुटि से यजमान और ब्राह्मण दोनो का अनिष्ट' यही सोमयज्ञ का उद्देश्य केवल अमरत्व प्राप्ति है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जहां अपने वेद भाष्य के अन्तर्गत यज्ञ शब्द का अर्थ साधारण दैनिक अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध पर्यन्त श्रोतकर्म किया है वहीं यज्ञ शब्द से अनेक प्रकार के शुभ कर्मों का भी ग्रहण करते है। वैदिक साहित्य एवं शतपथ ऐतरेय आदि ब्राह्मण ग्रन्थों में यज्ञ शब्द बड़े व्यापक अर्थों मे प्रयुक्त हुआ है उन अर्थो में श्रेष्ठ कर्मों का अन्तर्भाव हो जाता है।

शतपथ ब्राह्मण से लिए गए, कात्यायन श्रौत सूत्रस्य अथ सोम याग निरूपणम् अग्निष्टोमः' के अनुसार सद्गृहस्थ को अधिकार है जिसके यहां पचाग्नि हो जो सम्पूर्ण श्रद्धा से सम्पूर्ण कर्मकाण्ड कराने की क्षमता रखता हो वह यज्ञ करे।

आज यज्ञ के कर्मकाण्ड के ज्ञाता विद्वानो का अभाव है जिसे देखो वह अपनी मनमानी करता है। इस सोमयज्ञ के विद्वानो मे भी भारी मतभेद है। यह ठीक है किसी भी क्रिया को विधि विधान से न करने पर स्वर्ग की प्राप्ति नहीं होती है। यजु० अ० ७।३५ में सोम शब्द का अर्थ करते हुए लिखा है कि "सकल गुणैश्वर्य कल्याण कर्माध्यनाध्यापनाख्यं यज्ञम्" अर्थात सकल गुण ऐश्वर्य देने वाले पठन-पाठन रूप यज्ञ को सुमज्ञ कहा है।

"यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म" शत० १।७।१।८।११ श्रेष्ठतम कर्म अभ्युदय का साधन माना है इस यज्ञ के करने वाले को साधक कहा है और उन साधकों का पृथक विधान है सोम किसी मादक द्रव्य का नाम नहीं है सोम एक ऐसी दुर्लभ वल्लरी हैं जो हिमालयादि स्थानों पर मिल सकती है। जो एक विलक्षण लता है। आजकल यह लता उपलब्ध न होने के कारण तृण व कुश से यज्ञ सम्पन्न कराने का विधान किया है। इसका प्रभाव इतना नहीं होता है।

सोमयज्ञ के करने का विधान ५ दिन का बताया गया है और उसमें भी ४ चतुर्थ दिवस महत्वपूर्ण बताया है। लेखक ने लिखा है—विद्वानों की खोज भी अदभुत है कि इस चतुर्थ दिवस ऐसे बकरे की बलि का विधान है।

जिसके कान पानी पीते समय पानी को छुएं। इस बकरे का वध नहीं किया जाता बल्कि उसे भारी मात्रा मे चने खिलाकर प्यास लगने व अधिक मात्रा में पानी पिलाने पर उसका पेट फूल जाएगा और उसकी मृत्यु हो जायगी अथवा उसका सांस बन्द कर दिया जाता हैं।

इस बकरे की जिह्वा, दाहिना पग, गुर्दा इत्यादि ११ अंग निकालकर उन्हें पकाया जाता है। उस भाग को तीन भागो मे बांटकर जुहू, उपभृत और इलापात्री नामक बर्तनो मे रखा जाता है। जुहू और उपभृत से यज्ञ किया जाता है।

आगे लेखक लिखता है कि इलापात्री वाला मास यजमान और ऋत्विक पांच, खाते हैं इलापात्री मे ही देवताओ का आह्वान किया जाता है फिर लिखा हैं कि—

मृत बकरे के शरीर को भूमि में दबा दिया जाता है क्योंकि इस यज्ञ में अहिंसा होती हैं और मांस भक्षण का विधान है परिणामत. ब्राह्मण और विद्वान इस यज्ञ को करने में परहेज करते हैं। आगे लिखा है यजु. ऋक्. साम. वेद मे भी वर्णन है, परन्तु कोई भी स्थल या मन्त्र का दिग्दर्शन नहीं कराया है। इसके ज्ञाता हो को यज्ञ कराने का अधिकारी बताया है अन्यथा यज्ञ अनिष्टकारी हो सकता है।

यज्ञ को 'अध्वर' भी कहा है जिसका अर्थ है हिंसा रहित यज्ञ कर्म, यजु० अ० १८ में यज्ञ का अर्थ—

यज्ञेन विद्यैश्वर्योन्नति करणेन।
यज्ञेन सर्व रस वर्धकेन कर्मणा।
यज्ञेन पशु पालन विधिना। यज्ञेन पशु शिक्षाख्येन ॥

इस प्रकार अ० १८ मन्त्र, ९।२६।२७।६२ में यज्ञ उस साधन को कहते हैं जिससे विद्या और ऐश्वर्य की उन्नति हो। यज्ञ उस कर्म को कहते हैं जो सब रसो को और पदार्थों को बढ़ावें। जिस विधि से पशुपालन हो और पशु शिक्षा हो उसे भी यज्ञ कहते है।

गीता मे यज्ञ का बड़ा विस्तार कहा है नाम भी भिन्न-भिन्न दिए हैं यथा द्रव्य यज्ञ, तपो यज्ञ, योग यज्ञ, स्वाध्याय यज्ञ, ज्ञान यज्ञ, मनु ने पंच यज्ञों को कहा है।

यज्ञ शब्द का धात्वर्थ—कात्यायन श्रौत सूत्र में २३ पर ध्यान दे तो द्रव्यं देवता त्यागः स्पष्ट भाव है।

(१) द्रव्यम्—शाकल्यादि पौष्टिक पदार्थ रोगनाशक मधुर यज्ञिया द्रव्य।

(२) देवता—वेद मन्त्रो में विषय अर्थ का प्रतिपादन हो वही देवता कहा है।

(३) त्याग—यजमान ऋत्विजो द्वारा स्वाहाकार पूर्वक आहुतियों का देना त्याग है।

अतः तीन शब्दो का परिमार्जित अर्थ हुआ अग्नि-वायु-आदित्यादि व्यावहारिक भौतिक देवो के निमित्त स्थाली पाक--पुरोडाश को शुद्ध कर सस्वर पाठ कर सुदीप्त अग्नि में आहुति देना भी यज्ञ कहाता है इसी को श्रेष्ठतम कर्म कहा है। इसे चतुर्विध कर्म भी कहा है—

१—अप्रशस्तम्—लोक विरुद्ध, वध-बन्धन, चौर्यादिकर्म। किसी का वध करना, मारना, वश में करना दुराचार-मिथ्या, छल-कपट, मनसा-वाचा, कर्मणा किसी का अशुभ चिन्तन करना सब कर्म अप्रशस्त हैं निन्दित व त्याज्य है।

२—प्रशस्त—माता-पिता आचार्य, परिवार, मित्र, सखा आदि जो पूज्य है उनकी प्रतिष्ठा मान आदि करना प्रशस्त कर्म है यह सर्वथा कर्तव्य हैं।

३—श्रेष्ठ—सर्वजन हिताय सर्व लोकोपकारक सब की कल्याण की भावना से शुभ कार्य का निर्माण करना श्रेष्ठ कर्म है। सदा ही करने चाहिए। कुआ, प्याऊ, धर्मशाला, चिकित्सा आदि निर्माण कराना।

४—श्रेष्ठतम्—यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म' शतपथ १।७।१।८।११ में यज्ञ को श्रेष्ठतम कर्म कहा है। यज्ञ से शरीर, आत्मा मन और समाज की सदा ही उन्नति होती है। यह यज्ञ सर्वांगीण, सर्वतोमुखी आत्म अभ्युदय का साधन बताया है। श्रेष्ठतमाय कर्मणे आप्यायध्वम्' यजु० १।११ सबको श्रेष्ठतम कर्म करने के लिए प्रेरित किया है।

अब बताइए इस सोम यज्ञ में पशु बलि की क्या उपयोगिता है। जब हिंसा होगी तो प्राणी को कष्ट भी होगा—फिर सर्वतोमुखी कल्याण कारक कैसे यज्ञ कहा जाएगा। इस लिए विद्वान लोग चिन्तन करे कि क्या इस सोमयज्ञ में पशुबलि का विनियोग है यदि है तो औचित्य क्या है।

उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते: देवान् यज्ञेन बोधय।

हे वेद के रक्षक विद्वान् पुरुषो उठो! जागरुक हो जाओ। कर्त्तव्य का बोध करो--शुभाचरण से विद्वानो को चेतना दो।

एक समय था जब यज्ञो में पूजा-भगवदभक्ति मे पशुबलि दी जाती थी उस समय भगवान बुद्ध और भगवान महावीर के प्रादुर्भाव से अहिंसा परमो-धर्मः के जयघोष ने मानव मन को बदला था। अभी भी धर्म-ईश्वर के नाम पर रूढ़िवाद अत्याचार बढ़ रहा है। विधर्मियो को कैसे समझायें कि हिंसा धर्म नहीं अधर्म है। जबकि घर में हो मग पड़ी हैं।

पिछले दिनों श्री मुरली मनोहर जोशी की पदयात्रा के समय जो पूजन विधि की गई उसमें भी पशुबलि दी गयी। बड़ी चर्चा रही, पर इस बुराई को जो धर्म ही मान रहे हैं तो सुनता कौन है?

अब पुनः सोमयज्ञ के नाम से पशुबलि के बिना यज्ञ ही अधूरा है और वाराणसी के विद्वानों ने इस अधूरे हिंसा रहित यज्ञ को कराने से इन्कार कर दिया। बड़ी ले दे मची हैं। हां एक बात तो सामने आई कि आज भी पढ़े लिखे मूर्खों की कमी नहीं है।

विधर्मियों में कुर्बानी यदि गाय की की जाती है तो आप उसे कैसे रोक

(शेष पृष्ठ १० पर)

आन्ध्रप्रदेश में आर्य नेताओं के लिए प्रशिक्षण शिविर आयोजित

गत १० मई से २० मई तक आन्ध्रप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आर्य नेताओं के प्रशिक्षण हेतु एक शिविर का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने किया। इस अवसर पर प्रधानमन्त्री के सुपुत्र, आ० प्र० के शिक्षा मन्त्री श्री पी. वी. रंगाराव मुख्य अतिथि थे। इस समारोह की अध्यक्षता सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री पं० वन्देमातरम् रामचन्द्र राव ने की। सार्व० न्याय सभा के संयोजक श्री विमल वधावन एडवोकेट ने भी आर्य कार्यकर्ताओं को सम्बोधित किया। इस शिविर में पूरे आं० प्र० से चुने हुए आर्य समाजों के अधिकारियो ने भाग लिया। प्रतिदिन प्रातः ५.३० से दिन चर्या प्रारम्भ होकर रात्रि ८.३० तक प्रशिक्षार्थियो के लिए व्यस्त कार्यक्रम रखे गए।

प्रातःकाल आसन प्राणायाम और सन्ध्या आदि के उपरान्त शारीरिक प्रशिक्षण स्वामी लक्ष्मी नारायण योगी द्वारा दिया जाता था। प्रथम दिवस पर समस्त प्रशिक्षार्थियो को यज्ञोपवीत धारण कराए गए। प्रातः आठ बजे यज्ञोपरान्त उपदेश तथा आध्यात्मिक विद्या पर विशेष प्रवचन श्री नेत्रपाल जी शास्त्री द्वारा दिए जाते थे। शास्त्री जी पूरे दस दिन तक इस कार्यक्रम में आर्य नेताओं का मार्ग दर्शन करते रहे। दोपहर के भोजन के बाद प्रशिक्षार्थियो के साथ भारतीय संविधान, सामयिक राजनैतिक तथा सामाजिक विषयों और आर्य समाजो के संगठनात्मक पहलुओं पर विचार कियाजाता था। इन गोष्ठियों में मुख्यत. श्री वन्देमातरम् जी विभिन्न विषयो पर आर्य समाज के दृष्टिकोण को स्पष्ट करते थे। जिन विषयों पर चर्चा हुई उनमें भारतीय संविधान के विभिन्न पहलुओं के अतिरिक्त देश की अखण्डता और देश के वीर महापुरुषो का योगदान आदि शामिल थे। राजनीतिक पार्टियों द्वारा धर्म के नाम पर चलाए जा रहे तरह तरह के पाखण्ड पूर्ण आन्दोलनो पर भी वैदिक दृष्टि से खुली चर्चा हुई। आर्य समाजों में अनुशासन के विषय पर प्रान्तीय आर्यवीर दल सचालक श्री सैनिक वेंकटेशम् ने आर्य नेताओं का मार्ग दर्शन किया।

इस शिविर के पश्चात लगभग ५० आर्य नेता आं० प्र० में वैदिक प्रचार प्रसार को एक नई दिशा देने के लिए लक्ष्यबद्ध होकर कार्य करेंगे। ऐसा विश्वास है।

इस सम्पूर्ण शिविर के अध्यक्ष श्री के० नरसिम्हा रेड्डी थे और उनके सहयोग हेतु गठित विभिन्न समितियों के माध्यम से सर्वश्री क्रान्ति कुमार कोरटकर, ओमप्रकाश आर्य, पवन, श्री निवास पत्थारी, भानुलाल जी, वेद प्रकाश गुलाज, दशरथ, विद्याराम देव, मनोहर रेड्डी तथा श्री प्रकाश आदि महानुभावों ने पूर्ण सहयोग किया।

कार्या० सचिव, आं०प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा

पातञ्जल योग महाविद्यालय का शुभारम्भ

आर्य पुरुषो को यह जानकर हर्ष होगा कि युवा दार्शनिक विद्वान आचार्य अर्जुनदेव जी वर्णी के द्वारा ३ जुलाई १९९१ से पातञ्जल योग महाविद्यालय का शुभारम्भ किया जा रहा है। यहां पर तीन वर्ष पर्यन्त आर्ष शैली से योग सांख्य, न्याय वैशेषिक व वेदान्त दर्शनो के अध्यापन के साथ साथ अन्य ऋषि प्रणीत ग्रन्थों को पढ़ाया तथा क्रियात्मक योग प्रशिक्षण भी दिया जायेगा। प्रारम्भ में छात्र संख्या लगभग दस होगी। योग्यता स्नातक अथवा इसके समकक्ष होनी चाहिए। प्रवेशार्थी निम्न पते पर सम्पर्क करे। आचार्य अर्जुनदेव वर्णी, ३१ यू. बी. जवाहरनगर दिल्ली-७।

महात्मा हंसराज प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र की स्थापना

आर्य समाज बस्ती शेख जालन्धर की ओर से प्रौढ़ पुरुषो तथा महिलाओ के लिए महात्मा हंसराज प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र की स्थापना की घोषणा आर्य समाज के लोक सेवी प्रधान प० रामकृष्ण एड० की ओर से की गई है। यहां पर अधिक आयु के स्त्री पुरुष शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे। इससे पूर्व आर्य समाज की ओर से एक विद्यालय तथा निःशुल्क सिलाई स्कूल का संचालन आर्य समाज मन्दिर में किया जा चुका है।

संस्कृत के लिए पुनः आन्दोलन

विश्व ब्राह्मण महासंघ के अध्यक्ष पं० विमल भारद्वाज के अनुसार त्रिभाषा सूत्र में संस्कृत पर आगामी १२ जुलाई को दिल्ली में डा० विद्यानिवास मिश्र की अध्यक्षता में एक विशाल संस्कृत महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है जिसमें भारत के शीर्ष विद्वान भाग लेंगे। उक्त सम्मेलन के द्वारा संस्कृत शिक्षा को अनिवार्य बनाये जाने की माग की जायेगी और यदि सरकार ने कोई सुनवाई नही की तो संघर्ष की घोषणा की जायेगी।

ममता शर्मा, सचिव

महर्षि दयानन्द स्मृति शिला लेख—एक महत्वपूर्ण योजना

—प्रो० डा० भवानीलालभारतीय

यह एक इतिहास सिद्ध तथ्य है कि आर्य समाज के प्रवर्त्तक ऋषि दयानन्द ने सम्पूर्ण भारत को धार्मिक, राष्ट्रीय तथा सामाजिक एकता के सुदृढ़ सूत्र मे बाधने का दिव्य स्वप्न देखा था। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए अपने अत्यल्प कार्यकाल मे उन्होने देश का व्यापक भ्रमण किया और जन समाज को वेद की शिक्षाओ को अपनाने की प्रेरणा दी। उन्नीसवीं शताब्दी के इतिहास पुरुषो मे दयानन्द मूर्धा स्थानीय हैं। उन्होंने स्वधर्म, स्वराज्य और स्वभाषा को अपनाने के लिए देशवासियो को सन्नद्ध किया।

लगभग पचास वर्ष पहले स्वामी दयानन्द के जीवन विषयक अनेक पहलुओं पर शोध करने वाले प्रो० महेश प्रसाद मौलवी आलिम फाजिल (प्राध्यापक अरबी व फारसी, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय) ने आर्य जनता से अपील की थी कि जिन-जिन स्थानो, (ग्रामों, कस्बों, नगरों) को ऋषि ने अपने चरण निक्षेप से पवित्र किया है, वहां ऐसे शिलालेखो की स्थापना की जानी चाहिए जिन पर उस स्थान पर महर्षि के आगमन और प्रत्यागमन की तिथियां तो अंकित रहे हीं, साथ ही उनके बहुमूल्य उपदेशो को भी अंकित कराया जाए। यहा यह भी उल्लेखनीय है कि आर्य समाज के महान नेता तथा अद्वितीय वक्ता स्व० पं० प्रकाशवीर शास्त्री ने भी इस योजना को क्रियान्वित करने के लिए कैप्टन इन्द्र वर्मा चोहान को प्रेरित ही नहीं किया, नैनीताल के समीपवर्ती एक दो स्थानो पर ऐसे भव्य स्मारकों की स्थापना भी की गई। आवश्यकता इस बात की है कि हम देश व्यापी योजना को शीघ्र ही क्रियान्वित किया जाए और इसको सर्वोपरि प्राथमिकता दी जावे। इस सम्बन्ध मे मेरे निम्न सुझाव हैं।

(१) दयानन्द स्मारक शिलालेखो की स्थापना के लिए जो एक अखिल भारतीय स्तर की समिति गठित की गई है, इसमें विभिन्न राज्यो के कुछ और प्रमुख आर्य नेता, विद्वान कार्यकर्ता तथा धनीमानी सज्जन सदस्य रूप में रहें।

(२) ऋषि द्वारा पवित्रीकृत स्थानों पर स्थापित किए जाने वाले शिलालेखों के आकार प्रकार, साज सज्जा आदि का निर्णय विशेषज्ञ वस्तुकारों से परामर्श करने के पश्चात किया जाए।

(३) इन शिला लेखो पर लिखे जाने वाले विवरण को तैयार करने का दायित्व ऋषि जीवनी के मर्मज्ञ विद्वानों को सौंपा जाए। मैं इसके लिए अपनी सेवायें देने के लिए तैयार हूं।

(४) प्रत्येक स्थान पर लगाए जाने वाले शिलालेख को तैयार कराने तथा उसे उपयुक्त स्थान पर लगाये जाने के अवसर पर किए जाने वाले समारोह का जिम्मा उस स्थान की आर्य समाज या जिला उपसभा स्वीकार करे।

(शेष पृष्ठ १० पर)

इमाम साहब और उनके सुपुत्र देश के कानून से ऊपर हैं

इस देश का कायदा-कानून सभी के लिए समान नहीं है। कुछ लोग अपने आपको भारत के हर कायदे-कानून से ऊपर समझते हैं। उन्हें चाहे किसी भी अदालत का नोटिस आये, चाहे सरकार उन पर कोई भी केस करे, वह स्वयं घर में बैठे ही अपने केस का फैसला कर लेते है। इस श्रेणी में दिल्ली जामा मस्जिद के इमाम अब्दुल्ला बुखारी और उनके सुपुत्र नायब इमाम अहमद बुखारी आते हैं।

कुछ दिन पहले मथुरा की एक अदालत ने नायब इमाम सैयद अहमद बुखारी के नाम गैर जमानती वारंट जारी किये थे। अदालत में पेश होकर अपनी सफाई पेश करने की जगह जामा मस्जिद के इमाम सैयद अब्दुल्ला बुखारी ऐलान करते है कि नायब इमाम और उनके बेटे अहमद बुखारी अदालत के सम्मन पर अदालत मे पेश नहीं होगे। उन्होने उल्टा सरकार को चुनौती दे डाली कि सरकार मे अगर दम है तो वह इमाम को गिरफ्तार कर ले, लेकिन इसके साथ ही देश भर मे उनके परिणाम भुगतने को भी तैयार रहे। जुमे की नमाज से पहले इमाम साहब फरमाते है कि अगर किसी पागल की दरख्वास्त पर कोई पागल अदालत इमाम को सम्मन जारी करे तो इमाम अदालतो के चक्कर हरगिज नही लगायेंगे। २५ मई को पटना के प्रथम श्रेणी के न्यायिक मजिस्ट्रेट आरपी मिश्र ने जामा मस्जिद के इमाम सैयद अब्दुल्ला बुखारी के खिलाफ गिरफ्तारी का गैर जमानती वारट जारी किया। इमाम साहब और उनके साहबजादे दोनो के खिलाफ दिल्ली में गत आठ सितम्बर को भड़काऊ भाषण देने की एक शिकायत न्यायालय मे दर्ज की गयी थी। शिकायत पटना उच्च न्यायालय के एक वकील ने दर्ज की थी, जिसमें दिल्ली की जामा मस्जिद में दिये गये शाही इमाम के भाषण का उद्देश्य शाति भंग करना और नफरत पैदा करना बताया गया था। पटना के अदालती सम्मन पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए नायब इमाम ने स्पष्ट कहा कि न तो वह और न ही उनके पिता पटना अदालत के सामने पेश होगे। सुनवाई की अगली तारीख दस जून है। सैयद अहमद बुखारी ने अपनी तरफ से फैसला सुनाते हुए कहा कि बाबरी मस्जिद के टूटने पर दिया गया कोई भी भाषण एक अपराध नहीं। नायब इमाम ने कहा कि उन्होने अपने भाषण में मस्जिद के तोड़े जाने के लिए प्रधानमन्त्री पीवी नरसिंहराव और कांग्रेस को जिम्मेदार ठहराया था। उन्होने कहा कि इस घटना पर नरसिंहराव सरकार का मूकदर्शक बने रहना न केवल कानून का उल्लंघन है बल्कि यह संविधान के भी खिलाफ है जिसमें अल्पसंख्यको के जीवन, सम्पत्ति और धार्मिक स्थलो की सुरक्षा की गारंटी दी गयी है। वैसे यह पहली बार नहीं जब इमाम साहब ने अदालतों की खुली तोहीन की है।

इमाम साहब क्या देश के संविधान, कानून से ऊपर हैं? जो सफाई इमाम साहब या नायब इमाम दिल्ली में बैठे पेश कर रहे हैं, क्या यह सफाई अदालतों में पेश नही की जा सकती। फिर यह कहना कि किसी पागल की अर्जी पर अगर कोई पागल अदालत सम्मन जारी करे तो इमाम अदालतो के चक्कर हरगिज नहीं लगाएंगे, सीधी-सीधी अदालत की तोहीन है। क्या खूब सेवा कर रहे हैं इमाम साहब संविधान और अदालतो की। सबसे दुखद पहलू यह है कि नरसिंहराव की सरकार में इतना दम भी नहीं कि वह इमाम साहब और नायब इमाम को हथकड़ी लगा सके। इमाम साहब का धमकी देना कि सरकार मे अगर दम है तो मुझे गिरफ्तार करे और फिर उसके परिणाम भुगते, गीदड़ भभकी के अलावा कुछ नहीं। इमाम साहब का कितना प्रभाव क्षेत्र है, हम सब जानते हैं। इन्हीं नायब ने २६ जनवरी को गणतंत्र दिवस की बायकाट काल दी थी और मुश्किल से जामा मस्जिद में सौ आदमी इकट्ठे नही हो सके। यही नायब इमाम अयोध्या मार्च पर गये थे। इन्हें लखनऊ मे पकड़ लिया गया और चुपचाप इमाम साहब अगली गाड़ी से दिल्ली आ गये। बड़े इमाम साहब को गाजियाबाद मे रोक दिया गया और इमाम साहब कुछ न बोल सके। न तो उनके समर्थन मे कोई प्रदर्शन हुआ और न ही प्रोटेस्ट। हकीकत यह है कि यह नेता अपनी विश्वसनीयता खो चुके हैं। यह धार्मिक नेता न रहकर राजनेता बन चुके हैं जो राजनीतिक भाषण देकर अपनी रोटी सेंकते हैं ऐसे नेताओं की हिन्दुओं मे भी कमी नहीं। बाला साहब ठाकरे भी इसी श्रेणी में आते हैं। पर उन पर भी हाथ डालने की इस सरकार की हिम्मत नहीं। रहा सवाल इमामो से क्या सलूक होता है, तो गत दिनो बंगला देश जो स्वयं एक इस्लामिक देश है, ने पाबना शहर की एक मस्जिद के इमाम को एक महिला से मस्जिद के अन्दर इश्क फरमाने के जुर्म मे न सिर्फ साठ कोड़े ही लगाए बल्कि इस नाजायज सम्बन्ध को शादी का रूप भी दे दिया। कहने का तात्पर्य केवल इतना है कि जब तक कोई धार्मिक नेता या उलेमा धार्मिक कार्यों में जुटा रहता है तब तक उसकी स्थिति और होती है, लेकिन जब वह एक राजनेता या साधारण व्यक्ति की तरह बर्ताव करता है तो उससे भी वही सलूक होना चाहिए जो इस देश के किसी अन्य व्यक्ति से होता है। न्यायालयो की यूं तोहीन करवाने से बेहतर है कि यह सरकार चुल्लू भर पानी में डूब मरे।

—अनिल नरेन्द्र

मुस्लिम चार शादियों को चुनौती

उच्चतम न्यायालय मे श्रीमती नफीस हुसैन ने एक याचिका दायर की है जिसमें मुसलमानों में तलाक और चार शादियो के लिये प्राप्त विशेषाधिकार को चुनौती दी गई है।

याचिका मे मांग की गई है कि मुस्लिम निजी कानून (मुस्लिम पर्सनल ला) या शरियत को लागू करने वाले अधिनियम १९३७ के अनुच्छेद दो को अदालत या तो वैधानिक घोषित करे या गैरकानूनी।

श्रीमती नफीसा हुसैन द्वारा दायर याचिका मे कहा गया है कि मुस्लिम विवाह कानून १९३९ के तहत मुस्लिम औरतो के साथ तलाक और एक ही शादी करने के मामले में भेदभाव बरता गया है। मुसलमानो मे पुरुष केवल 'तलाक' का शब्द बोलकर विवाह समाप्त कर लेता है जबकि पत्नी को इस तरह की सुविधा प्राप्त नहीं है। पति को एक समय मे चार विवाह करने की छूट है जबकि पत्नी एक समय मे केवल एक ही विवाह कर सकती है। याचिका के अनुसार संविधान के अनुच्छेद १५ के तहत स्त्री पुरुष के आधार पर देश के नागरिकों के कानूनी अधिकारो मे भेदभाव नही बरता जा सकता है।

याचिका में कहा गया गया है कि भारत मे गैर मुस्लिम औरतों को पर्याप्त कारणो के बिना तलाक नहीं दिया जा सकता है जबकि मुस्लिम महिलाओं को ऐसा कोई संरक्षण प्राप्त नहीं है।

गैर मुस्लिम महिलाएं एक से अधिक विवाह करने पर अपने पति को कानून से सजा दिलवा सकती है लेकिन मुस्लिम पति शरियत के कानून के तहत संरक्षण प्राप्त करके इस प्रावधान से बच जाते हैं।

श्रीमती हुसैन की याचिका के अनुसार संविधान के अनुच्छेद २१ मे स्वाभिमान और सम्मान के साथ जीने का हक देश के हर नागरिक को दिया गया है लेकिन मुसलमान पति को एक से ज्यादा शादी करने का अधिकार मिलने से और कभी भी तलाक देने के अधिकार से मुस्लिम महिलाओं का स्वाभिमान से जीने का अधिकार छिन गया है। साप्ताहिक वीर अर्जुन, १३ मई १९९३

मानसा मण्डी में यज्ञ एवं सहभोज

२३-५-९३ दिन रविवार को श्री निरंजनलाल जी आर्य मानसा मण्डी ने अपने पोते के जन्मदिन के उपलक्ष मे अपने परिवार मे श्री ओमप्रकाश जी वानप्रस्थी आर्य वानप्रस्थ आश्रम भटिण्डा द्वारा हवन यज्ञ कराया इस शुभ अवसर पर १०१) एक सौ एक रुपया आर्य वानप्रस्थ आश्रम भटिण्डा को श्री निरंजनलाल जी आर्य ने दान दिया लगभग चार सौ भाई बहनो ने मिलकर सहभोज किया और प्रिय प्रदीप आर्य को पुष्पो द्वारा आशीर्वाद दिया। श्री ओम प्रकाश जी वानप्रस्थी ने १६ संस्कारों पर अपना सुन्दर प्रवचन दिया।

—ओमप्रकाश वानप्रस्थी

वैदिक समाज में पारिवारिक आदर्श (२)

—श्रीमती वेदो शास्त्री एम. ए. वेदाचार्य

इस मन्त्र में वधु को सम्राज्ञी कहा गया है सम्राज्ञी का अर्थ है अच्छी तरह निष्पक्ष, जिसके साथ जैसा व्यवहार प्रदर्शित करना चाहिए वैसा ही व्यवहार करने वाली वधु। अर्थात वह अपने पितृ गृह मे जिस प्रकार अपने माता-पिता, भाई-बहिन से बर्तती थी उसी प्रकार अब वर के गृह में वर के माता पिता, भाई बहिन आदि के साथ तत्सम्मान प्रेमपूर्ण व्यवहार का प्रकाश बिना पक्षपात के करने वाली होने से सम्राज्ञी पद से विभूषित की गई है।

"वर्तमान स्थिति।

आज के समाज ने स्त्री को समान अधिकार देकर इसे परिवार की सम्राज्ञी पद से हटाकर कल कारखानो, कोर्टों और आफिस नोकर और मजदूर बनाकर घर के साम्राज्य से हटाकर सड़क पर भटकने वाली और अर्थ की दासी बना दिया है।

वेद में स्त्रियों की समान स्थिति

यही पत्नी मेरी पोषण योग्य हो अर्थात पत्नीके पोषण का पूर्ण उत्तरदायित्व पति पर है। पति का कर्त्तव्य नहीं है कि वह पत्नी को अर्थ उत्पादन की साधिका बनाये जो व्यक्ति स्त्रियों के द्वारा द्रव्योपार्जन करवाता है और उससे अपना निर्वाह करता है वेद ऐसे व्यक्ति को दण्डनीय मानता हैं।

वर्तमान में स्त्रियों के प्रति भाव

आज के समाज ने स्त्रियो को अपने भोग का क्षेत्र बना लिया है वह शिक्षा दीक्षा से उसे ऐसा बना देना चाहता है कि वह गृहणी न बनकर बाह्य क्षेत्र की ही बन जाए उसका मन एक केन्द्र बिन्दु से हटकर चारो ओर उन्मत्त होकर भ्रमर की तरह इतस्ततः घूमता रहे। उसे पति नहीं चाहिए अपितु उसे आनन्द का एवं वासना पूर्ति का साथी चाहिए। वैदिक सभ्यता ने पाठ पढ़ाया था—

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:

जिस समाज में जाति या देश में नारियो को उच्च सम्मान प्राप्त होगा वहां की प्रजा हड़ताल, उपद्रव, अशान्ति उत्पन्न करने वाली न होकर "देव-प्रजा" होगी।

परिवार मे भाई-बहिनों का व्यवहार

भाई का भाई के साथ भाई का बहिन के साथ कैसा सम्बन्ध होना चाहिए। या परिवार वाले सम्बन्धियों के साथ कैसा व्यवहार होना चाहिए इसके बारे में वेद उपदेश करता है—

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसार मुत स्वसा।
सम्यञ्च: सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया॥

भाई से भाई कभी द्वेष, ईर्ष्या, घृणा क्रोध, विपरीत भाव, विरोध आचरण, करने वाला न हो आपस मे प्रेम भाव से प्रीति युक्त होके बरते। बहिन बहिन से कभी द्वेष, ईर्ष्या, घृणा, क्रोध वैमनस्य न करे अपितु आपस में सदा प्रेम पूर्वक ही बर्तने वाली हो।

इसी प्रकार भाई और बहिन का भी परस्पर द्वेष, घृणा रहित और प्रीति से युक्त व्यवहार होना चाहिए।

सम्पूर्ण परिवार का व्यवहार

सम्पूर्ण परिवार का व्यवहार भी प्रेममय हो इस बारे मे वेद उपदेश करता है—

सहृदयं सामनस्यमविद्वेषं कृणोमि व:।
अन्यो अन्यमि हर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या॥

जो परिवार मे सबसे बड़ा होता है उसका आदेश पालन सबको करना चाहिए यह वेद की भावना है। संसार के परिवारों में छोटा बड़ा काल भेद से रहता है। परन्तु इन सबमे किसको सबसे बड़ा माने इसके लिए विचार करने पर ज्ञात होता है कि सब परिवारो का पूजनीय परमात्मा ही है। वही सबसे बड़ा है। अत: वह "सदाबध: सखा अनादिकाल से बड़ा हमारा सखा हमें आज्ञा देता है कि हे गृहस्थी मैं (ईश्वर) तुमको आज्ञा देता हूं वैसा ही प्रचलन करो जिससे तुमको अक्षय सुख हो जैसे तुम अपने लिए सुख की इच्छा करते हो और उसके लिए प्रयत्न करते हो उसी प्रकार से समान हृदय, प्रेम भावना तुम्हारी माता, पिता, सन्तान, स्त्री पुरुष, भृत्य मित्र और पड़ोसी के प्रति हो और उनके दु:खो को अपना दु:ख समान हृदय का बनकर ही मान सकोगे यदि तुम्हारे माता पिता, सन्तान, मित्र और पड़ोसी दुखित हैं और तुम्हारी उनके प्रति सहृदयता नही है अपितु विपरीत भाव है तो तुम उनके दुख दूर करने के लिए उनकी सेवा नहीं कर सके इसलिए तुम्हें समान हृदय वाला चाहिए। यह परमात्मा की आज्ञा है। उसके पालन करने में ही कल्याण है। और इसके विपरीत आचरण में अपराध है। ऐसा अनुभव करना चाहिए।

सतपुली में आर्य महासम्मेलन

तीन दिवसीय आर्य महासम्मेलन दिनांक ११ से १३ जून १९९३ को गढ़वाल की सुरम्य घाटी सतपुली मे होने जा रहा है, जिसमें गढ़वाल के लिए एक पृथक जिला आर्यप्रतिनिधि सभा की स्थापना की जाएगी। सम्मेलन में आर्य सन्यासी विद्वानो तथा भजनोपदेशकों को आमन्त्रित किया गया है।

विदित हो कि गढ़वाल में अनेक सामाजिक तथा मद्यपान जैसी बुराइयों भयंकर रूप से बढ़ रही है। इन सामाजिक तथा अराष्ट्रीय तत्वो के विरुद्ध आर्य समाज ही एकमात्र संस्था है, जो सदैव से टक्कर लेती रही है। अतएव समस्त आर्य बन्धुओ को सम्मेलन मे पधारने का आमन्त्रण देते हुए निवेदन करते हैं कि तन, मन, धन से सहयोग देकर आयोजन को सफल बनाने की कृपा करें।

भारतीय भाषाओं की उपेक्षा का कारण–अंग्रेजी [२]

प्रो. चन्द्र प्रकाश आर्य

यह स्थिति हरियाणा मे अंग्रेजी शिक्षा की है जबकि कालेजो मे ११वी तथा १२वी मे अंग्रेजी (कोर) के लिए प्रति सप्ताह नौ पीरियड दिये जाते हैं जबकि (कोर) के लिए तीन से चार पीरियड दिये जाते हैं। इसी प्रकार बी ए कक्षाओ मे भी अंग्रेजी विषय को प्रति सप्ताह आठ से नौ पीरियड दिये जाते हैं जबकि हिन्दी को ३ से ४ पीरियड दिये जाते हैं। अंग्रेजी के पीरियड भी अधिक है, विद्यार्थी ट्यूशन भी अंग्रेजी मे अधिक करते हैं नकल भी अंग्रेजी मे अधिक होती है फिर भी परिणाम निराशाजनक है। कितनी हानि हो रही है छात्रो की ? राष्ट्र की युवा शक्ति का व्यर्थ अपव्यय हो रहा है।

हरियाणा की ही बात नही, देश के अन्य भागो मे भी अंग्रेजी अध्ययन की यही दुर्दशा है। केरल देश का सर्वाधिक शिक्षित प्रदेश है। वहा के स्कूलो मे अंग्रेजी अध्ययन के दुष्परिणाम चौंका देने वाले है। फैक्टर्स रिलेटिंग टू अन्डर अचीवमेंट इन इंग्लिश इन द स्कूल्ज आफ केरल' मे मर्सी अब्राहम के अनुसार अंग्रेजी के कारण देश की बौद्धिक एव मानवीय क्षमता का भारी अपव्यय हुआ। बगाल, जो कभी अंग्रेजो का गढ था वहा भी स्कूली छात्र अंग्रेजी नही समझते। 'इंग्लिश एजुकेशन इन इंडिया एस्पेशियली इन द कान्टेक्स्ट आफ बगाल' मे के के चटर्जी के अनुसार कलकत्ता जैसे महानगर मे भी अंग्रेजी जानने का अर्थ कुछ शब्दो तक सीमित है। कारण स्पष्ट है, अंग्रेजी यहा की भाषा नही है। 'यूजिज आफ इंग्लिश' मे इकबाल अन्सारी के अनुसार अंग्रेजी का पठन-पाठन उद्देश्यविहीन है यह देश की परम्पराओ मे जुडा हुआ नहीं है। इसका अध्ययन इसके पढने वालो की व्यवहार की भाषा के साथ जुडा हुआ नही है।

अंग्रेजी हमारे साहित्य की भी भाषा नही है। यह पिछले २०० वर्षों से देश मे निरन्तर जारी है। कितने साहित्यकार हमने अंग्रेजी मे पैदा किये है ? आर के नारायण तथा मुल्कराज आनन्द (पुरानो मे) तथा (नयो मे) देसनी तथा अरुण जोशी जैसे चार पाच नाम ही मिलेगे और उनकी भी अंग्रेजी साहित्य मे कितनी मान्यता है ? यह सोचने की बात है। मौलिक साहित्य अपनी ही भाषाओ मे राष्ट्रभाषा तथा भारतीय भाषाओ मे लिखा जाता है। अंग्रेजी या विदेशी भाषा मे नही लिखा जा सकता।

विज्ञान के क्षेत्र मे भी अंग्रेजी के कारण हम कोई मौलिक योगदान नही कर पाये हैं। सी वी रमन के बाद कितने नोवल पुरस्कार हमने विज्ञान के क्षेत्र मे प्राप्त किये हैं ? ८७ करोड की आबादी वाले राष्ट्र के लिए क्या यह चिन्ता का विषय नही है ?

मौलिक अनुसधान अपनी भाषाओ तथा राष्ट्रभाषा मे होता है, किसी बाहर की भाषा मे नही। रूस मे वैज्ञानिक अनुसधान वहा की भाषाओ मे होता है अंग्रेजी मे उसका अनुवाद उपलब्ध कराया जाता है। चीन, जापान मे वैज्ञानिक अनुसधान अंग्रेजी मे नही होता, वहा की भाषाओ मे होता है। किन्तु हम अंग्रेजी से चिपके हुए हैं। वैज्ञानिक शोध की हमारी अपनी कोई भाषा नही है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद द्वारा मार्च १९९१ मे रोहतक विश्वविद्यालय मे राष्ट्रीय विज्ञान शोधगोष्ठी का आयोजन किया गया। मार्च १९९२ मे भी हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा इलाहाबाद मे इसी प्रकार की विज्ञान कान्फ्रेंस का आयोजन किया गया। इसमे भाग लेने वाले शोध वैज्ञानिको की धारणा थी कि विज्ञान के क्षेत्र मे मौलिक चिन्तन एव उसका प्रभावी सम्प्रेषण स्वभाषा अथवा निजभाषा मे ही सम्भव है। और इसी अंग्रेजी के कारण विज्ञान देश की जनता तक नहीं पहुच पाया है। यदि विज्ञान की भाषा हिन्दी तथा भारतीय भाषायें होती तो आज हमारी यह दुर्दशा न होती। मौलिक विज्ञान के क्षेत्रो मे भी हमारा नाम होता। एक उदाहरण 'विज्ञान प्रगति' का है। यह हिन्दी मे विज्ञान की लोकप्रिय मासिक पत्रिका है, इसके पाठको की सख्या कई लाख है। इसका प्रकाशन वैज्ञानिक एव औद्योगिक अनुसधान परिषद, (सीएसआईआर) द्वारा होता है। दूसरी ओर साइस रिपोर्टर अंग्रेजी मे है, इसका भी प्रकाशन वही से होता है किंतु इसके पाठको की सख्या अत्यन्त सीमित है।

अत यदि हम चाहते है कि साहित्य और विज्ञान के क्षेत्रो मे कोई मौलिक योगदान करें तो हमे हिन्दी तथा भारतीय भाषाओ को अपनाना होगा और अंग्रेजी की बैशाखी छोडनी होगी। यदि हम चाहते हैं कि अखिल भारतीयसेवाओ मे सघलोक सेवा आयोग की नोकरियो मे देश की ९५ से ९८ प्रतिशत जनता की साझेदारी हो तो हमे अंग्रेजी का वर्चस्व खत्म करना होगा। यदि हम चाहते हैं कि अंग्रेजी के कारण देश के लाखो युवाओ का भविष्य अन्धकारमय न हो तो अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करनी होगी। यदि हम चाहते हैं कि हिन्दी तथा भारतीय भाषाए आगे आए तो अंग्रेजी का दामन छोडना होगा।

स्वास्थ्य चर्चा—

स्वस्थ रहने का राज

राजनीति से जुड़ा एक चिर परिचित नाम है- रामचन्द्र विकल। लेकिन रामचन्द्र विकल राजनीति से अधिक योग से जुड़े हैं। यही कारण है ७४ वर्ष की वय पार करने के बाद भी उन्हें कभी यह नहीं कहते सुना जा सकता कि वह किसी बीमारी से पीड़ित है।

रामचन्द्र विकल इन्दिरा गांधी के समय में, कृषिमन्त्री रहे और राजीव गांधी के समय में सांसद आजकल अखिल भारतीय किसान कांग्रेस के अध्यक्ष हैं। प्रस्तुत है स्वास्थ्य सम्बन्धी एक बातचीत।

— नियमित जीवन चर्या में क्या क्या शामिल है?

छोटी छोटी बातें हैं जिन्हें अपना कर आदमी सदा स्वस्थ रह सकता है। इसके ५३ सूत्र हैं। जिसमें सुबह के कुल्ले मंजन से लेकर दिन भर के खान-पान तथा सोने तक के लिए कुछ नियमित आहार-विहार हैं। मैं आगे पूरा बताऊंगा कि आहार-विहार के नियम क्या क्या हैं।

—गठिया हृदयरोग, गैस स्पाण्डलाइटिस, मधुमेह, मोटापा आदि का क्या प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा इलाज सम्भव है?

योग साधना प्रत्येक बीमारी का हल है। मैंने आत्महत्या तक के मामले प्राकृतिक चिकित्सा यानी योग से हल किये हैं।

—कृपया कुछ बीमारियों की अलग अलग चिकित्सा बतायें कि कौन कौन सी योग पद्धति किस रोग में लाभकारी है।

मैंने अपने अनुभवों से देखा है और उसकी शत-प्रतिशत सफलता के परिणाम देखे है कटिचक्र आसन, प्राणायाम तथा वज्रासन हार्ट अटैक के रोगो में प्रभावी है। इन रोगियों को हाथ ऊपर नीचे करने वाले आसन करने चाहिए। इससे कभी हार्ट अटैक नहीं होता।

मधुमेह की बीमारी पैतृक, चिन्तित व्यक्ति और कम मेहनत तथा अधिक खाने वाले लोगों में होती है। इसकी चिकित्सा के लिए अश्वासन, अर्द्धमत्स्यासन, सर्पआसन, उल्ट्रआसन ताड़आसन, नौकासन, धनुआसन पवन मुक्तासन, कटिचक्र प्रतिदिन करने चाहिए।

सुबह शाम टहलना जरूरी है इससे शक्कर सामान्य अवस्था में बनी रहती है।

खाने में कच्चा करेला अकुरित अनाज जामुन लोहे वाली सब्जियां जैसे पालक चौलाई आदि लाभकारी हैं।

—स्पाडलाइटिस की बीमारी में कौन कौन से आसन अपनायें?

इसमे उल्ट्रआसन गर्दन पीछे मोड़ने वाले आसन करें। नाई वाली कुर्सी में गर्दन पीछे लटकाये यह श्रेष्ठ आसन है। इसके साथ ही सर्पआसन तथा धनुआसन करें इससे गर्दन पर लगी बेल्ट तक हट जाती है।

—पेट की बीमारियों तथा गैस के लिए कौन सा आसन लाभप्रद है?

पेट की सभी बीमारियों में वज्रासन पवनमुक्तासन, बालासन अर्द्ध-अश्वासन, रामबाण है। इससे पेट की फालतू गैस निकल जाती है। खाने के बाद १० १५ मिनट तक वज्रासन में बैठना चाहिए तथा हल्के भोजन का सेवन करना चाहिए। गठिया हार्ट अटैक पाचन सम्बन्धी रोग मधुमेह व अन्य पुरानी बीमारियों में प्राकृतिक चिकित्सा ही काम करती है।

लेकिन पूर्णत स्वस्थ रहने के लिए निम्नांकित आहार विहार तथा दैनिक दिनचर्या अपनाना जरूरी है इन सूत्रों को अपनाकर आंखों का चश्मा तक हट सकता है तथा व्यक्ति स्फूर्त शरीर रहता है—

स्वस्थ और दीर्घायु रहने के सूत्र

प्रतिदिन व्यायाम करना चाहिए।

सुबह उठकर रात को तांबे के लोटे में रखा पानी पीना चाहिए। पानी कागासन में बैठकर पियें।

सूर्योदय से पहले शौच तथा स्नान करना चाहिए।

तकिये का प्रयोग न करें तख्त पर कम्बल बिछाकर सोना चाहिए।

अनाज से बनी चीज दिन में दो बार ही प्रयोग करें।

भोजन करने के बाद दोनों घुटने मोड़कर वज्रासन में बैठना चाहिए।

भोजन के पश्चात मूत्र त्याग करना चाहिए इसमें गुर्दे की सफाई होती है।

दिन में कम से कम ८ लीटर पानी पीना चाहिए इससे रक्तचाप नियंत्रित रहता है।

४० की उम्र के बाद नमक, चीनी, चावल का प्रयोग कम करना फायदेमद रहता है।

खुली हवा में सोना यथासम्भव नंगे बदन रहना तथा छाछ पीना स्वास्थ्य के लिए उत्तम है।

तैरना, खुलकर हसना स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद है।

खीरा, नींबू पनीर शहद, अदरक, कच्चे अनाज का प्रयोग करने वाले सदा स्वस्थ रहते हैं।

गाजर खाने से आखो की बिनाई मजबूत होती है।

भोजन और नींद के बीच कम से कम ३ घण्टे का अन्तर रखना चाहिए।

पेशाब करते वक्त या शौच के समय मसूड़े दबाकर रखने से दांत मजबूत होते हैं।

रात्रि में बाई करवट सोना लाभप्रद होता है।

ठंडे पानी में स्नान करना चाहिए।

रीढ़ की हड्डी वाले व्यायाम मधुमेह की बीमारी में लाभप्रद हैं।

स्नान शौच खाना सोना आदि का समय निश्चित होना चाहिए।

प्रातः कुल्ला करते समय मुह में पानी भरकर आखो पर ठंडे पानी से छींटे मारने चाहिए। इससे आंखो की रोशनी कमजोर नहीं होती तथा चश्मे वालो का चश्मा हट जाता है। बशर्ते की मोतियाबिन्द न हो।

तालू की सफाई प्रतिदिन अगूठे से करनी चाहिए।

सुबह उठकर थोड़ा सा खड़ाऊ पहनकर चलना चाहिए।

प्रातः उठने के बाद अपने दोनो हाथों से पैर के अगूठे छूने चाहिए।

ईर्ष्या, क्रोध स्वास्थ्य को नष्ट करता है इससे बचना चाहिए।
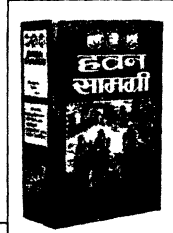
जर्मनी के इस फैसले से सबक लें

जर्मनी की पार्लियामेंट ने २७ मई को १३ घण्टे तक चली लम्बी और गर्मागर्म बहस के बाद विदेशियों को अपने यहां शरण लेने के अधिकार को समाप्त करके लाखों शरणार्थियो के लिए देश का दरवाजा बन्द कर दिया है। इस अधिकार को समाप्त किये जाने के पक्ष मे ५२१ और विरोध में केवल १३२ मत पड़े।

इस सम्बन्ध में यह बात उल्लेखनीय है कि जब पार्लियामेंट मे बहस चल रही थी, उस समय बाहर बड़ी संख्या मे लोगो की भीड़ जमा थी, लगभग दस हजार वामपंथी कार्यकर्ताओ ने पार्लियामेंट के बाहर मानव श्रृंखला बना रखी थी और बिल के विरोध मे पुलिस पर पत्थर, बोतलें और पटाखे फेंके जा रहे थे। इसके बावजूद पार्लियामेंट ने इस बिल को स्वीकृति दे दी, जिसके अन्तर्गत देश की सीमाओं पर एकत्रित अधिकतर शरणार्थियो को वापस जाना पड़ेगा। इसके अलावा समुद्री या वायु मार्ग से आने वाले उन शरणार्थियो को भी वापस जाना पड़ेगा, जो किसी तानाशाह शक्ति या युद्ध ग्रस्त देश से न आए हो।

इस सन्दर्भ में विशेष रूप से ध्यान दिये जाने योग्य बात यह है कि पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी के एक हो जाने के बाद से जर्मनी के नेता महसूस कर रहे थे कि इस एकीकरण के कारण वित्तीय और सामाजिक बोझ में दबा हुआ उनका देश अब शरणार्थियों का खुले दिल से स्वागत नहीं कर सकता। वैसे विश्व युद्ध के बाद से अब तक जर्मनी ने हमेशा ही शरणार्थियो का स्वागत किया है। १९८९ के वर्ष के बाद से ही बीस लाख से भी अधिक शरणार्थी जर्मनी में आए हैं। इससे सरकार पर प्रतिवर्ष लाखो डालर का खर्चा बढ़ा है। इतना ही नहीं, जर्मनी की जनता मे भी इन शरणार्थियों की वजह से भारी रोष व्याप्त रहा है और पिछले १६ महीनो मे नवनाजियो ने विदेशियों पर तीन हजार से भी अधिक बार हमले किये।

शरणार्थियों के लिए जर्मनी के दरवाजे बन्द किये जाने पर यह बिल अब ऊपरी सदन में स्वीकृति के लिए पेश किया जायेगा और वहां से स्वीकृति मिल जाने के बाद एक जुलाई से कानून के रूप मे लागू हो जाएगा।

हम समझते हैं कि अपने देश की आर्थिक और सामाजिक स्थिति का सन्तुलन बनाये रखने के लिये जो फैसला जर्मनी को पार्लियामेंट ने किया है, वह न केवल उचित ही है बल्कि भारत जैसे देश के लिये अनुकरणीय भी है, जहां बंगलादेश और बर्मा से हर साल शरणार्थी भारी सख्या मे आ रहे है। इन शरणार्थियो की वजह से जो प्रतिकूल प्रभाव हमारी आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था पर पड़ रहा है और जिस ढग से देश के लोगो को तरह-तरह की कठिनाइयां इनकी वजह से झेलनी पड रही है, वे किसी से भी छिपी नहीं हुई हैं। असम में तो बंगलादेशी शरणार्थी इतनी भारी संख्या मे आ घुसे है कि वहां के लोगो को आन्दोलन ही उन्हें वहां से निकलवाने के लिये चलाना पड़ा मगर परनाला जहां पहले बह रहा था, वहीं आज भी बह रहा है। इतना ही नहीं देश को राजधानी दिल्ली तक मे लाखो बगलादेशी आज डेरा डाले बैठे हैं।

सोचने वाली बात इस मामले मे यह है कि जब जर्मनी जैसा सम्पन्न देश शरणार्थियों का भार वहन नहीं कर सकता तो भारत जैसा देश, जो अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ही विश्व बैंक और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोषसे ऋणके जुटाने लिए प्रयत्नशील रहता है, कैसे इस बोझ को बर्दाश्त कर सकता है? इसके बावजूद विडम्बना यह है कि जो पार्टियां इन शरणार्थियों को यहां आने से रोकने या उन्हें वापस भेजे जाने की बात करती है, उन पर साम्प्रदायिकता का आरोप लगा दिया जाता है और सत्ता के भूखे राजनीतिज्ञ वोटों की राजनीति मे देश की अर्थव्यवस्था को चौपट कर डालने पर तुले बैठे हैं।

काश! जर्मनी की पार्लियामेंट का यह फैसला ही इस देश के कर्णधारों की आंखें खोल सके और वह देश में बाहर से भारी संख्या मे आ रहे और बैठे हुए शरणार्थियों को रोकने और वापस भेजने के लिये कोई प्रभावपूर्ण कदम उठा सके। —विजय

विदेश समाचार

लंदन में आर्य समाज स्थापना दिवस

१८ अप्रैल १९९३ को आर्य समाज लंडन में आर्य समाज का स्थापना दिवस बहुत आनन्द और उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर गायत्री महायज्ञ का विशाल आयोजन किया गया था। जिसमे सैंकड़ो श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर यज्ञ से लाभ उठाया। इंग्लैण्ड मे स्थित भारतीय जन समुदाय मे भारतीय संस्कृति, यज्ञ, वेद और आध्यात्मिक गहन तत्वज्ञान और मानव जीवन के सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया को समझने-समझाने मे इस यज्ञ से बहुत बड़ी सहायता हो रही है। इन दिनो इंग्लैंड मे यज्ञ की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है।

इस विशाल कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए वेद पाठ की महिलाओ ने जिसमें श्रीमती सावित्री छाबड़ा, कैलाश भसीन, उषा भसीन, सन्तोष ढाण्डा, वेदी मनरो, निर्मला भारद्वाज, प्रेम दुःखिया, शकुन्तला कोछड़, यश वेदी, सुमन चोपड़ा आदि ने उल्लेखनीय कार्य किया है।

गायत्री महायज्ञ को सुचारू रूप से चलाने मे ब्रह्मा का कार्य प्रो. एस. एन. भारद्वाज, डा. ताताजी आचार्य, पं सहदेव मलहोत्रा, डा. श्रुतिशील शर्मा और प. विनयकुमार जी ने किया और यजमान परिवारो को आशीर्वाद दिया।

श्री वीरेन्द्रवीर वर्मा, प्रधान, आर्य समाज लंडन, श्री युद्धवीर सिंह पुरी, श्री सुरेन्द्र कुमार वेदी, पल्लाना, रवि खोसला, राजेन्द्र ओबराय, प्रियव्रत चोपड़ा, प्रभाकर शर्मा एवं धर्मपाल भसीन आदि कार्यकर्ताओ ने विशेष परिश्रम कर आर्य समाज स्थापना दिवस को सफल बनाया।

सभी श्रद्धालु कार्यकर्ताओ के अमूल्य सहयोग के लिए आर्य समाज लंडन की ओर से हार्दिक धन्यवाद।

ऋषिलंगर का सम्पूर्ण व्यय भार श्री सोफट परिवार ने किया। ईश्वर ऐसे दाताओं की विशेष रक्षा करे। एतदर्थ इस परिवार का बहुत धन्यवाद।

(राजेन्द्र कुमार चोपड़ा)
मन्त्री आर्य समाज लन्डन

आर्य समाज लंडन का वार्षिक चुनाव

रविवार दिनाक ९ मई १९९३ के साप्ताहिक सत्संग में वार्षिक चुनाव शान्तिपूर्वक वातावरण मे सम्पन्न हुए, जिसमे निम्न उम्मीदवार बहुमत से चुने गये—

प्रधान	—	प्रो. सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज
उपप्रधान	—	श्री जगदीशराय शर्मा
		श्री प्रियव्रत चोपड़ा
मन्त्री	—	श्री राजेन्द्र कुमार चोपड़ा
उपमन्त्री	—	श्री प्रभाकर शर्मा
		श्रीमती कैलाश भसीन
ग्रन्थपाल	—	श्रीमती सुदर्शना कौशल
लोक सपर्क अधिकारी	—	श्री सत्पाल बत्रा

कार्यकारिणी सदस्य— श्री वीरेन्द्रवीर वर्मा, श्री सुभाष वर्मा, श्री एम. डी. पल्लाना, श्री युद्धवीर सिंह पुरी, श्री अरुण कहेर, श्री रवि खोसला।

आर्य महासम्मेलन, शिकागो (अमेरिका)

आर्य प्रतिनिधि सभा, अमेरिका के तत्वावधान में तृतीय आर्य महासम्मेलन दिनांक १०-११ जुलाई १९९३ को शिकागो में आयोजित किया जा रहा है।

इस सम्मेलन मे भारत, अफ्रीका, इंगलैंड, दक्षिण अफ्रीका, कनाडा तथा विश्व के अन्य देशो के प्रतिनिधि भाग लेंगे। तथा वैदिक धर्म के प्रचार एवं प्रसार के लिये विभिन्न कार्यक्रमो पर विचार करेंगे।

विस्तृत जानकारी के लिये संयोजक से निम्न पते पर पत्र व्यवहार करे।

संयोजक, आर्य महासम्मेलन शिकागो
११०६, स्टोडार्ड ऐवेन्यू (Stoddard Ave)
व्हीटन (Wheaton) इलिनोइस (Illinois) अमेरिका (USA)

सोमयज्ञ का आयोजन

(पृष्ठ ३ का शेष)

सकोगे। क्योकि हम स्वय इस पवित्र यज्ञ की पवित्रता से दूर होकर हिंसामय यज्ञ को करने हेतु कृत सकल्प है।

तो मैं विद्वानो से आग्रह पूर्वक निवेदन करता हू कि वह बतायें ब्राह्मण ग्रन्थ गृह्य सूत्र धर्म सूत्रो मे क्या विधान है और उसकी मान्यता क्या है ?

जिससे सोम यज्ञ के कर्ता जान सके कि यज्ञ कर्म को विधि पूर्वक करने मे किन किन यज्ञो का विधान है। आज आपको म० बुद्ध की अहिंसा, स्वामी दयानन्द के तर्क की कसौटी से कसकर इन रूढ़िवादी पाखण्डियो को विवेक शील बनाना है तो—उत्तिष्ठत जागृत प्राप्य वरान्निबोधत।

दयानन्द स्मृति शिला लेख

(पृष्ठ ४ का शेष)

(५) इस ऐतिहासिक कार्य मे सभी नागरिको का सहयोग लिया जाये।

(६) शिला लेखो के आकार प्रकार आदि मे एकरूपता रहे। उदाहरणार्थ जैनधर्म के तीर्थंकर भगवान महावीर के २५०० वें जन्म वर्ष मे भारत के नगरो और कस्बो मे महावीर उद्यान स्थापित किये गये और उनमे जैन धर्म की प्रमुख बातो का उल्लेख शिलालेखो पर किया गया।

यह लेख समस्त आर्य पुरुषो के विचारार्थ लिखा गया है। आप अपनी प्रतिक्रिया तथा सुझावो को कैप्टन इन्द्र वर्मा चौहान अथवा मुझे सूचित करें ताकि भावी कार्य योजना को अन्तिम रूप दिया जा सके।

पत्र व्यवहार का पता—(१) इन्द्र वर्मा चौहान, नन्दभवन, रामनगर (नैनीताल)। (२) डा० भवानी लाल भारतीय ८ ४२३, नन्दनवन, जोधपुर-३४२००८।

प्रसार कर्ता—इन्द्र वर्मा चौहान
महामन्त्री, म० द० शिलालेख समिति

वार्षिकोत्सव

—आर्य समाज कृष्ण नगर दिल्ली का ४१ वा वार्षिकोत्सव १७ से २३ मई तक समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर सामवेद पारायण महायज्ञ श्री वेदप्रकाश श्रोत्रिय जी के ब्रह्मत्व मे सम्पन्न हुआ। अनेको कार्यक्रमो के अतिरिक्त महिला सम्मेलन का आयोजन श्रीमती ईश्वर देवी जी की अध्यक्षता मे किया गया जिसमे अनेको विदुषी महिलाओ के विद्वता पूर्ण प्रवचनो की श्रोताओ ने भरपूर सराहना की। समारोह मे अनेको नेताओ तथा विद्वानो ने भाग लिया।

सूचना

प्रधान, आल इण्डिया दयानन्द साल्वेशन मिशन, ऊना रोड होशियारपुर स्कूलो तथा कालिजो के निर्धन बेसहारा तथा योग्य विद्यार्थियोको छात्रवृत्तिया प्रदान करने के लिए १५ जून १९९३ तक प्रार्थना-पत्र आमन्त्रित करते हैं। यह प्रार्थना पत्र अपनी सस्था के उच्च अधिकारी से प्रमाणित करवाकर भेजने चाहिए।

—हरदयालसिंह प्रधान

शोक समाचार

अत्यन्त दु ख के साथ लिख रहा हू कि मेरे भतीजे सुनील, कुमार का निधन हरदोई अस्पताल मे हो गया उसकी १८ वर्ष की आयु थी। ऐसी दुखद परिस्थिति मे १६ से १८ मई आ० स० कुठिला का उत्सव सर्वसम्मति से स्थगित कर दिया गया है। पत्रो और पर्चो द्वारा सूचना भी हो चुकी है। अब प्रत्येक को पत्र द्वारा सूचना देना भी सम्भव नही है। अत सार्वदेशिक साप्ताहिक मे उत्सव स्थगित होने की सूचना प्रकाशित की जा रही है।

ब्रह्मानन्द आर्य वानप्रस्थ ग्राम कुठिला
पो बेहटा गोकुल जि हरदोई (उ० प्र०)

आर्य समाज रानीबाग (दिल्ली) में

वनवासी बच्चों का क्रान्तिकारी प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आर्य समाज रानी बाग दिल्ली में गत वर्षों की भाति वनवासी क्षेत्रों से आए हुए बच्चों का १५ मई से ३० मई तक प्रशिक्षण शिविर का क्रान्तिकारी आयोजन सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस शिविर मे ३७ बच्चों ने रायगढ़ (उड़ीसा), थादला (म० प्र०) कुशलगढ़ (राज०) तथा गोहाटी (आसाम) आदि अनेक क्षेत्रो से आकर भाग लिया।

शिविर प्रातः ५ बजे से संध्या और यज्ञ से प्रारम्भ होता था। ७ बजे व्यायाम की कक्षायें लगती थीं। उसके बाद ९ बजे से १२ बजे तक संध्या और हवन के मन्त्र पढ़ाए जाते थे। सायंकाल ४ बजे से ७ बजे तक आर्य समाज का परिचय तथा महापुरुषो के जीवन की कहानियां तथा नैतिक शिक्षा दी जाती थी। सुबह यज्ञ के विषय में श्रीमती प्रेमलता जी सरल भाषा में आधा घण्टा प्रतिदिन विस्तार से समझाती थी। और उनसे दक्षिणा रूप में अंजलि में जल देकर संकल्प करवाती थी और सबको अपनी झोली फैलाकर सब प्रकार के अवगुणो को यथा—शराब तथा धूम्रपान त्यागने का व्रत दिलवाती थी और युवकों से यह संकल्प करवाती थी कि अपने गाव में जाकर इन दुर्गुणो से छुटकारे के लिए जनता का मार्ग प्रशस्त करें।

इस बार शिविर में ६ युवतियों ने भी भाग लिया। उन्होने शिविर में यह भी बताया कि उनके गांव में कोई विधर्मी नही है और न वह वहां किसी को विधर्मी बनने देंगे। वनवासी क्षेत्र का एक युवक जो रानी बाग में ही रहता है उसकी अपनी ही दो बहिनें भी इस शिविर में आई थी। इस युवक की जागृति से वनवासी बच्चो मे वैदिक धर्म के प्रति उत्साह देखने योग्य है।

शिविर में क्या खोया क्या पाया ? विषयक लेख लिखकर बच्चों ने सभी प्रकार के दुर्गुणों को छोड़ने का संकल्प किया। ऐसा नहीं है कि संकल्प लेकर बच्चे इसे पूरा न करते हो। यहां से जाकर वह गांव वालों से सब पता करते रहते हैं और प्रत्येक बच्चा शिविर में किये गये संकल्प को पूरी निष्ठा से पूरा करता है। हमारे पास वनवासी क्षेत्रों से अनेक गांव वासियो के पत्र प्रशंसा में आते रहते हैं कि आप लोग उनके बच्चों को नैतिक शिक्षा देकर उनका जीवन सुधार रहे हैं और शिक्षा में बालवाड़ियो के माध्यम से समाजोत्थान का सराहनीय कार्य कर रहे है।

रानी बाग शिविर मे आए हुए बच्चों के सामने श्रीमती प्रेमलता जी ने भूत भगाओ यज्ञ भी करवाया। क्योकि वनवासी क्षेत्रो के ये बच्चे भूत-प्रेत और डाकिनी आदि बातों से काफी प्रभावित थे। सबको इस बात का विश्वास करवाया कि यह सब बातें भ्रम की हैं। सभी बच्चो ने सकल्प किया कि अपने गांव में जाकर वह लोगो में इस सत्य का प्रचार करेंगे और इन अंधविश्वासों व मान्यताओं का पूर्ण रूप से उन्मूलन करेंगे।

अन्त में रानीबाग आर्य समाज और रानीबाग तथा सैनिक बिहार के निवासियों का दयानन्द सेवाश्रम संघ अत्यन्त आभारी है जिन्होने तन, मन और धन से बच्चो की सेवा तथा भोजनादि की व्यवस्था की। हमारी कर्मठ बहन श्रीमती चांदरानी जी अरोड़ा ने प्रान्तीय महिला सभा की कर्मठ बहिनों को साथ लेकर बच्चों को आशीर्वाद दिया। कई नई बालवाड़ियां उन्हीं के सहयोग से खोली गई हैं। आर्य समाज अशोक विहार भी इस कार्य मे पीछे नहीं रहा। इस समाज ने शिविर के आयोजन मे पूर्ण सहयोग किया है। समस्त सहयोग के लिए हम सभी भाइयों और बहिनो का हार्दिक आभार प्रकट करते हैं। बहिन प्रेमलता जी का धन्यवाद न करू तो अत्यन्त धृष्टता होगी जो कार्य स्व० पृथ्वीराज शास्त्री जी द्वारा चलाया जा रहा था, उसी प्रकार आज भी श्रीमती प्रेमलता जी द्वारा शिविर सचालन का कार्य तथा संघ के सब कार्य योग्यता पूर्वक संचालित हो रहे।

वन कन्या आश्रम थांदला के लिए पानी की व्यवस्था नहीं थी, बहिन चांदरानी जी की प्रेरणा से श्रीमती सुशीला खन्ना ने ५ हजार रुपए और आर्यवीर दल के ब्र० राजसिंह आर्य ने जब वह थांदला गए थे तो ११,०००) रु० दिए थे। आश्रम वालों का विचार है कि एक ही बार मे ट्यूबवैल लगाकर पानी की व्यवस्था करके जो भूमि कृषि के लिए है वहा ५२ बच्चों के लिए सब्जी आदि लगाई जावे। इस बार वहां के व्यवस्थापक भाई परमानन्द जी ने सोयाबीन की खेती लगा रखी है। भाई राजसिंह आर्य बहिन सुशीला खन्ना का भी हार्दिक धन्यवाद करती हूं। जो भाई बहिन इस पुनीत कार्य के लिए दान देना चाहते हों वह कृपया अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान, नई दिल्ली से सम्पर्क करें।

वैसे तो यह शिविर ६ जून को समाप्त होना था लेकिन कुछ बच्चो के पेपर आदि होने थे अतः इसे ३० मई को समाप्त करना पड़ा।

—ईश्वर रानी महता पत्नी श्री वेदव्रत महता
उपमन्त्री—अ० भा० द० सेवाश्रम संघ, दिल्ली

काली स्थान पर भैंसों की बलि बन्द करायी

श्री युगल किशोर आर्य प्रचारक पो० अंगहरा भाया सोनो जिला जमुई बिहार ने सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को पत्र लिखकर सूचित किया है कि अगहरा आर्य समाज से कुछ दूरी पर काली स्थान (पौराणिक मत में) पर भैंसों की बलि बहुत वर्षों से हो रही थी—आर्य समाज के चार सदस्यों ने अपने प्रभाव व प्रशासन का सहयोग लेकर भैंसों की बलि होना बन्द करा दिया है।

सेठ रामकिशन गुप्त का निधन

उत्तर प्रदेश आर्यवीर दल के सर संचालक डा० बालकृष्ण आर्य विकल के बड़े भाई सेठ रामकिशन गुप्ता का २५ मई दिन मंगलवार को प्रातः ८ बजे निधन हो गया वह अपने पीछे पत्नी तथा दो पुत्र पांच पुत्रियां छोड़ गए। वह इस समय ६४ वर्ष के थे। हम सभी उ०प्र० आर्यवीर दल समिति की ओर से परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को सदगति प्रदान करें और उनके पारिवारिक जनों को उनके पदचिन्हों पर चलने की शक्ति दें।

—आर्य प्रकाश आर्य

२ अध्यापकों की आवश्यकता

गुरुकुल आर्य नगर (हिसार) हरयाणा में एक ऐसे संस्कृत अध्यापक की आवश्यकता है जो गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की विद्याधिकारी एवं शास्त्री कक्षाओं को अधिकार के साथ पढ़ाने में समर्थ हो। इसके अतिरिक्त एक विज्ञान के अध्यापक की भी आवश्यकता है, जो नवमी एवं दसमी कक्षाओं को विज्ञान एवं दसमी कक्षाओं को विज्ञान एवं गणित पढ़ा सके।

वेतनादि का निर्णय मिलने पर ही किया जायेगा। प्रार्थी महानुभाव निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें अथवा मिलें। —आचार्य

गुरुकुल आर्य नगर
पो०—आर्य नगर, जिला हिसार-१२५००१

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०२४/९३ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१३ ६-१९९३) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (C) ९३
R.N. 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U (C) 93 Post in N.D.P.S.O.on 10-11-6-1993

स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी परमानन्द भाईजी का निधन

बुरहानपुर। स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी सामाजिक कार्यकर्ता एवं शिक्षक श्री परमानन्द भाई का २६ मई को निधन हो गया।

७९ वर्षीय श्री परमानन्द भाई ने १९३७ में हैदराबाद में आर्य समाज द्वारा संचालित सत्याग्रह आंदोलन में भाग लिया था। वे गत ५० वर्षों से राष्ट्रीय भाषा के प्रचार-प्रसार में संलग्न थे। अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा (महाराष्ट्र) तथा अखिल भारतीय राष्ट्रीय प्रचार समिति (भोपाल) द्वारा उनका समय-समय पर सम्मान भी किया गया। भाईजी गत ३ दशकों से भारतीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय से जुड़े थे। आपका अंतिम संस्कार नागझिरी घाट पर किया गया।

भाई परमानन्द जी के निधन पर शोक संवेदना व्यक्त करने वालों में उनके अनन्य सहयोगी लक्ष्मीदास मास्टर एवं भारतीय उच्चतर मा० विद्यालय के सभी शिक्षक प्रमुख है। नगर के गणमान्य लोगों ने भाई जी की अंतिम यात्रा में सम्मिलित होकर उनके प्रति अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये।

महेश-ज्योति मिलन

गत १५ तारीख को स्व० श्री मोतीलाल जी सोमानी के आत्मज, वरिष्ठ पत्रकार स्व० श्री रमेशचन्द सोमानी के लघु भ्राता महेश का श्री गजाननचन्द झवर की आत्मजा ज्योति के साथ आर्य समाज मन्दिर में वैदिक पद्धति से विवाह हुआ। इस अवसर पर वरिष्ठ पत्रकार श्री कैलाशचन्द झवर, श्री लक्ष्मीनारायण भार्गव सहित अनेकों गणमान्य व्यक्तियों ने वर-वधू को आशीष देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। इस विवाहको सम्पन्न कराने में माहेश्वरी (चाकड़) महिला समाज की सराहनीय भूमिका रही।

—लक्ष्मीनारायण भार्गव, मन्त्री
आर्य समाज, खण्डवा

आर्य समाज पुष्पनगर (आर्यमगढ़) का इक्कीसवां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज पुष्पनगर का उत्सव दिनांक १२ से १४ मई १९९३ तक श्री शंकर जी इन्टर कालेज के प्रांगड़ में स्थित वेद मन्दिर में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर पं० सूर्यबली पाण्डेय जौनपुर का वेदोपदेश तथा पं० युगुलकिशोर आर्य हरदोई का मधुर भजन एवं धनुर्विद्या का प्रदर्शन सराहनीय रहा। डा० विधानचन्द्र एवं श्री हरिश्चन्द आर्य का भजनोपदेश हुआ। पं० जीतनारायण शास्त्री भू० पू० उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा उ. प्र. द्वारा बृहद यज्ञ का संचालन हुआ। प्रतिदिन माध्यान्ह में महिला सम्मेलन भी हुआ।

—विद्याधर मन्त्री
आर्य समाज पुष्पनगर आजमगढ़

बस्ती शहर में आर्य समाज की धूम मची

आर्य समाज नई बाजार बस्ती का २२ वां वार्षिकोत्सव दिनांक १३-४-९३ से दिनांक १६-४-९३ तक बड़े ही धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ।

इस समारोह में आमन्त्रित विद्वानों में श्री महावीर जी मुमुक्ष मुरादाबाद के प्रवचनों से हमारे शहर की जनता काफी लाभान्वित हुई उन्होंने आध्यात्मिक विषयों का विश्लेषण करते हुए जनता को एक गम्भीर विषय को बड़ा ही सहज करते हुए लोगों का ध्यान आकर्षित किया। इस अवसर पर श्री त्रियुगी नारायण पाठक, पं० महेन्द्रपाल आर्य सहित अनेको विद्वानो ने अपने विचारों से जनता को लाभान्वित किया।

आर्य वीर दल का शिविर

३० मई से ८ जून, १९९३ ई.

मुजफ्फर नगर मण्डल का शिविर स्थानीय डी. ए. वी. इन्टर कालेज बुढ़ाना में लगाया जा रहा है। इस शिविर में आर्य वीरों को आसन, प्राणायाम जूडो, कराटे तथा आत्मरक्षा के साधनों का समुचित प्रशिक्षण दिया जायेगा। सन्ध्या, यज्ञ, वैदिक सिद्धान्तो का व्यावहारिक प्रशिक्षण आचार्य फूलसिंह जी एवं अन्य विद्वानों द्वारा दिया जायेगा. दीक्षान्त समारोह ८ जून को सायंकाल ३ बजे से प्रारम्भ होगा।

ऋषिपाल वर्मा, मण्डलपति-मुजफ्फर नगर

२४ वां वार्षिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न

आर्य समाज हरजेन्द्र नगर कानपुर का २४ वां वार्षिकोत्सव दि० १४, १५ व १६ मई १९९३ दिन शुक्रवार, शनिवार एवं रविवार को सोल्लास सम्पन्न हो गया। इस महोत्सव में आर्य जगत के उच्चकोटि के संन्यासी, विद्वान, उपदेशक भजनोपदेशक स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती आचार्य रामप्रसाद जी, पं० महेन्द्रपाल आर्य, डा० स्वामी सूर्यपुरी वेदालंकार, कुंवर महिपालसिंह, श्रीमती मनोरमा देवी, श्री अलेश्वर मुनि, डा० हरपालसिंह, श्री रामसुभाया बजाज आदि विद्वान पधारे हुए थे। विद्वानो ने अपने उपदेश एवं भजन के माध्यम से स्वामी दयानन्द के जीवन पर, सत्यार्थ प्रकाश पर आर्य समाज के कार्यों पर अन्ध विश्वास एवं कुरीतियों एवं वर्तमान समय में आर्य समाज की आवश्यकताओं पर विशुद्ध रूप से प्रकाश डाला। क्षेत्रीय जनता पर इसका बहुत अधिक प्रभाव पड़ा है।

—रामजी आर्य मन्त्री

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

महर्षि दयानन्द उवाच

- वेदादि शास्त्रों को पढ़ना-पढ़ाना, परोपकार, धर्मानुष्ठान, योगाभ्यास, निर्वैर, निष्कपट, सत्यभाषण, माता-पिता की सेवा, परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना उपासना, शान्ति, जितेन्द्रियता, सुशीलता, धर्मयुक्त पुरुषार्थ ज्ञान-विज्ञान आदि शुभ कर्म दुःखों से तरने वाले होने से तीर्थ हैं।
- जब मनुष्य प्राणायाम करता है तब प्रतिक्षण उत्तरोत्तर काल में अशुद्धि का नाश और ज्ञान का प्रकाश होता है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र   दूरभाष : ३२७४७७१   वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३१ अंक १६]   दयानन्दाब्द १६९   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९४   आषाढ़ कृ० १५   सं० २०५०   २० जून १९९३

महाराणा प्रताप की तुलना अकबर से न की जाये

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का राजस्थान के राज्यपाल जी को विशेष-पत्र

महामहिम राज्यपाल जी
राजस्थान सरकार,

सादर नमस्ते !

आशा है ईश्वर कृपा से आप स्वस्थ एवं सानन्द होंगे। इस पत्र के द्वारा मैं आपका ध्यान दिनांक १४ जून के समाचार पत्रों में छपे इस समाचार की ओर दिलाना चाहता हूं जिसमें राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की एक तीन सदस्यीय समिति की सिफारिश के हवाले से यह कहा गया है कि महाराणा प्रताप को महान के रूपमें मान्यता नहीं दी जा सकती। इस समिति का कहना है, क्योंकि महाराणा प्रताप ने कूटनीति का सहारा नहीं लिया इसलिए वह महान कहलाने के अधिकारी नहीं हैं। इसके विपरीत समिति ने अकबर को महान माना है।

इस सम्बन्ध में हमारा निवेदन है कि जब मुगलों ने साम, दाम, दण्ड,भेद का सहारा लेकर समस्त सामन्तों, राज्यों और रजवाड़ों को अपने आधीन कर लिया था और इस देश की संस्कृति को धर्मान्तरण के द्वारा नष्ट करने की कोशिश की जा रही थी, ऐसे समय में राजस्थान के वीर योद्धा सूर्यवंशी महाराणा प्रतापसिंह ही एक मात्र ऐसे राजा थे जिन्होंने मुगल शासकों के समक्ष समर्पण नहीं किया और जीवन की अन्तिम श्वास तक देश के गौरव की रक्षा हेतु डटे रहे। दूसरी तरफ अकबर जो एक चतुर कूटनीतिज्ञ था उसने हिन्दू राजाओं की कन्याओं से विवाह करके उनके राज्यों को अपने आधीन कर लिया था, और मीना बाजार के माध्यम से वह बड़े घरों की बहू-बेटियों को धोखा देकर स्वयं जनाने भेष में वहां जाकर उनको पतित किया करता था।

> **महाराणा प्रताप जयन्ती पर—**
>
> **सार्वदेशिक सभा का नया प्रकाशन**
>
> **मुगल साम्राज्य का क्षय और उसके कारण**
>
> प्रथम भाग
>
> लेखक—**पंडित इन्द्र विद्यावाचस्पति**
>
> मूल्य २० रुपये
>
> पृष्ठ संख्या—२७२
>
> साईज—२३×३६/१६
>
> **अकबर से औरंगजेब तक मुगल साम्राज्य का रक्त रंजित इतिहास**

आगरे के समीप हिन्दू सामन्तो द्वारा कुछ कर न दिये जाने के दण्ड स्वरूप हजारों आदमियों को मरवाकर उनके सिरों पर अकबराबाद की स्थापना अकबर ने कराई, क्या इस प्रकार के शासक को महान कहकर महान शब्द का उपहास नहीं किया जा रहा है ?

इतिहास मे कई ऐसे उदाहरण भी हैं जिनसे यह स्पष्ट होता है कि उसने इस्लाम को भी कूटनीति का शिकार बनाया और दीन-ए-इलाही नाम से एक अलग मजहब की स्थापना करके स्वयं इस्लाम का खलीफा बनना चाहता था। क्या महानता की यही कसौटी है?

महाराणा प्रताप ने किसी को धोखा नहीं दिया और अनेक प्रकार के कष्टों को सहन करते हुए मातृभूमि तथा अपने धर्म की रक्षा की। इसके अतिरिक्त उनके जीवन की एक उज्ज्वल घटना है कि एक मुस्लिम कन्या को उनके समक्ष बन्दी बनाकर लाये जाने पर महाराणा ने सम्मान सहित उसको उसके माता-पिता के पास भेज दिया। क्या यह महानता का चिह्न नहीं है, क्या इससे बडी कोई और महानता हो सकती है ?

अतः आप से निवेदन है कि इन परिस्थितियों में आप तत्काल हस्तक्षेप करे और बोर्ड को इस प्रकार के गलत फैसलों पर पुनः विचार करने के लिए बाधित करें। हमें आशा है कि आप इस सम्बन्ध मे उचित आदेश जारी करेंगे।

सधन्यवाद !

भवदीय
(स्वामी आनन्दबोध सरस्वती)
प्रधान

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

तलाक के विषय में—

गलत प्रथा चलती रही और मुफ्ती देखते रहे

एक साथ तीन तलाक अल्लाह का कानून नहीं : —महरुद्दीन खां

एक साथ कही गयी तीन तलाक को पूर्ण तलाक माना जाये या न माना जाए, इस बारे में सही जानकारी आम मुसलमान तक पहुंचाने का प्रयास मुफ्ती लोग नहीं करते। न ही यह बताते हैं कि ऐसी तलाक वैध है तो क्यों। और अवैध है तो क्यों ? तीन तलाक के बारे में कुरान का क्या आदेश है। अगर उस आदेश को बदला गया तो किन परिस्थितियों में बदला गया। यह बदलाव स्थायी था या अस्थायी यह भी बताने का प्रयास व्यापक रूप से नहीं किया जाता।

इस बारे में जो एक नया तथ्य सामने आया है वह यह कि सन १९७३ में जब तलाक के बारे में अखबारों में काफी कुछ छपा था तथा एक साथ कही गयी तीन तलाक की आलोचना अखबारों में होने लगी थी तो विभिन्न विचार धाराओं के मुफ्तियों को यह सोचने को मजबूर होना पड़ा था कि इस समस्या पर मिल बैठकर विचार किया जाए तथा एक साथ तीन तलाक कहने की कुप्रथा पर रोक लगाने के उपाय किये जायें।

१९७३ में एक साथ तीन तलाक विषय पर अहमदाबाद में एक सेमिनार आयोजित हुआ था सेमिनार की अध्यक्षता अतीकुर्रहमान उस्मानी ने की थी। इस सेमिनार में मौलाना मुख्तार अहमद नदवी (प्रधान जामिया मोहम्मदिया मालेगांव) शम्स पीर जादा (नाजिम इदारा दावत उल कुरआन बम्बई), स्व० मौलान सैयद अहमद अकबराबादी, पूर्व (अध्यक्ष दीनयात विभाग मुस्लिम यूनीवर्सिटी अलीगढ़), मौलाना अब्दुर्रहमान मुबारकपुरी, मौलाना महफूजुर्रहमान कासमी (मदरसा बैतुल उलूम मालेगांव) और मौलाना मोहम्मद रईस नदवी (जामिया सल्फिया, मरकजी दारुल उलूम बनारस) आदि उस समय के प्रख्यात मुफ्तियों एवं उलेमाओं के साथ जमाते इस्लामी आदि मुस्लिम संगठनों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था।

इस सेमिनार में इन सभी विद्वानों ने अपने शोधपत्रों में कुरान व हदीस के हवाले से एक साथ तीन तलाक कहने की प्रथा को गलत करार दिया था तथा ऐसी तीन तलाकों को एक तलाक माना था। इन विद्वानों ने बताया था कि इस्लाम में रोजा, नमाज, हज, नमाजे जनाजा और कुर्बानी सबका समय निर्धारित किया है उसी प्रकार तलाक का भी समय निर्धारित है कि जब पत्नी मासिक स्नान कर ले तो उसे एक तलाक कहा जाये। जिस प्रकार समय से पहले न हज किया जा सकता है और न कुर्बानी आदि, उसी प्रकार समय से पहले तलाक नहीं कहा जा सकता। जिस प्रकार एक समय में सारी नमाज पढ़ने से एक ही नमाज होती है। उसी प्रकार एक समय मे तीन या अधिक तलाक कहने से एक ही तलाक होती है। इन मुफ्तियों ने माना था कि तलाक एक फैल (कर्म) है कौल (बात) नही जिसे कहकर पूरा कर लिया जाये।

इसी सेमिनार में उन मुफ्तियों को, जो एक साथ कही तीन तलाकों को पूर्ण तलाक मानते हैं, भी यह लाइन दी गयी थी कि अगर तीन तलाक कहने वाला अपना इरादा एक का बताये तो एक ही तलाक मानी जाये। कुल मिलाकर इस सेमिनार का निष्कर्ष था कि एक साथ कही गयी तीन तलाक पूर्ण तलाक नहीं है। ऐसा करने वाला अगर चाहे तो इद्दत (तीन मास) की अवधि में अपनी पत्नी को पुन: अपना सकता है।

मगर खेद का विषय यह रहा है कि इस महत्वपूर्ण सेमिनार के निष्कर्षों को लेकर मुफ्ती साहेबान कभी मुस्लिम अवाम के सामने नहीं आये। सेमिनार के बाद सब अपनी-अपनी संस्थाओं में जा बैठे और अपनी-अपनी इच्छानुसार फतवे जारी करते रहे।

सेमिनार के बाद सेमिनार में प्रस्तुत शोध पत्र एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुए मगर इस पुस्तक का संस्करण भी हजार-ग्यारह सौ तक ही सीमित रहा जो बहुत खोजने पर भी नहीं मिलता। बाद में १९८६ में मौलान मुहम्मद सुलेमान मेरठी ने इस सेमिनार के महत्वपूर्ण शोधपत्रों को 'एक मजलिस की तीन तलाक' शीर्षक से प्रकाशित किया। यह संस्करण भी ग्यारह सौ तक ही सीमित रहा।

इससे यह स्पष्ट होता है कि देश के अधिकांश मुफ्ती १९७३ में एक साथ कही गयी तीन तलाक को एक मानने पर सहमत हो चुके थे तथा तभी से इस आशय के फतवे भी दिये जाते रहे हैं मगर इस सबका न तो व्यापक प्रचार किया गया और न ही सरकार से आग्रह किया गया कि वह अदालतों को बताये कि एक साथ कही गयी तीन तलाक पूर्ण तलाक नहीं होगी। यही कारण है कि अदालतों में आज भी एक साथ कही गयी तीन तलाकों को पूर्ण तलाक माना जाता है। अपवाद स्वरूप गुवाहाटी उच्च न्यायालय ने हाल ही में इसके विरुद्ध फैसला देते हुए बताया है कि कोई मुसलमान अपनी पत्नी को सनक में तीन तलाक नहीं दे सकता। तलाक से पूर्व कुरान के अनुसार समझौता वार्ता जरूरी है और इस समझौता वार्ता का प्रमाण भी अदालत के सामने प्रस्तुत किया जाना जरूरी है। उच्च न्यायालय का मानना है कि तलाक कुरान में निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार ही होना चाहिए।

अब एक साथ कही गयी तीन तलाक को एक तलाक मानने वाले फतवे का प्रचार होने के बाद मुस्लिम उलेमाओं और बुद्धिजीवियों को सोचना है कि इस मामले में सुधार कैसे किया जाये तथा इस कुप्रथा को कैसे रोका जाये।

एक साथ दी गयी तीन तलाक को पूर्ण तलाक मानने वाले मुफ्ती और दूसरे मौलवी लोगों में यह भ्रम फैलाते हैं कि अल्लाह का ऐसा ही कानून है, मगर वास्तविकता यह है कि यह अल्लाह का कानून नहीं है। कुरआन अल्लाह की दी हुई किताब मानी जाती है तथा इसमें जो आदेश-निर्देश हैं वह भी अल्लाह की ओर से दिये माने जाते हैं। कुरआन मे तलाक की प्रक्रिया यह है कि पहले समझौता वार्ता की जाये। यदि बात न बने तो एक तलाक दी जाये। इसके बाद एक मास खामोश रहा जाये। फिर दूसरी तलाक दी जाये। तीसरी तलाक के लिए कुरआन में मनाही है। अगर तीसरी तलाक दे दी तो पत्नी से तब तक नहीं मिला जा सकता, जब तक उसका दूसरा पति उसे स्वेच्छा से तलाक न दे या उसकी मृत्यु न हो। कुरआन के इन्हीं आदेशों के तहत जमीयत अहले हदीस फतवा जारी करती है।

कुरआन के इस आदेश की पुष्टि कई हदीसों से भी होती है एक हदीस के अनुसार हजरत रुकाना अपनी पत्नी को तीन तलाक कह कर बहुत दुखी थे। पैगम्बर हजरत मोहम्मद स. अ. ने उनसे पूछा किस तरह तलाक दी ? उन्होंने कहा मैंने एक ही बार मे तीन तलाकें दी हैं। यह जानकर पैगम्बर ने फरमाया वह सब एक ही तलाक हैं आप चाहें तो अपनी पत्नी को अपना सकते हैं। इस पर हजरत रुकाना ने अपनी पत्नी को अपना लिया। हजरत अब्दुल्ला बिन अब्बास रजि. का फतवा है यानि अगर कोई व्यक्ति एक साथ तीन तलाक कहे, तो यह एक तलाक होगी। इमाम तहावी ने इस हदीस पर बहस करते हुए लिखा है। यानि कुछ लोगों का खयाल यह है कि जब पति अपनी पत्नी को एक साथ तीन तलाकें दें तो वह एक ही मानी जायेगी।

महमूद बिन लबैद कहते हैं कि हजरत मोहम्मद स. अ. को सूचित किया गया कि एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी को एक साथ तीन तलाकें दे दी हैं। यह सुन कर वह बहुत दुखी हुए और फरमाया : क्या अल्लाह की किताब से खेला जा रहा है जबकि अभी मैं तुम्हारे बीच मौजूद हूं। एक व्यक्ति आपको दुखी देख खड़ा होकर बोला या रसूल अल्लाह मैं उसे कत्ल न कर दूं।

इस प्रकार कुरआन के आदेश की पुष्टि करती हुई ढेरों हदीस मौजूद हैं। फिर सवाल पैदा होता है कि कुरआन के आदेशों में संशोधन किसने और क्यों किया ? इस बारे में इस्लाम का इतिहास बताता है कि पैगम्बर स. अ. और उनके बाद खलीफा अबू बक्र रजि. के दौर में तथा इनके बाद खलीफा हजरत उमर रजि. के दौर के दो वर्षों तक तीन तलाकें एक ही मानी जाती थीं। बाद में हजरत उमर रजि. ने इसमे संशोधन कर दिया।

इस संशोधन की परिस्थिति यह थी कि उस समय युद्ध के बाद ईरान आदि देशो से बहुत सी युवतियां अरब आ गई थीं। अरब के लोग उन पर फिदा होने लगे थे, मगर उन युवतियो की शर्त थी कि वे पहले अपनी पत्नी

(शेष पृष्ठ ११ पर)

राष्ट्रपति भवन मे तीन दिवसीय संस्कृत सम्मेलन—

संस्कृत कंप्यूटर के लिये सर्वाधिक उपयुक्त भाषा है.

राष्ट्रपति ने संस्कृत को भारतीय भाषाओं की गंगा बताया

नई दिल्ली १० जून। राष्ट्रपति शकर दयाल शर्मा ने आज बच्चो को वैकल्पिक भाषा क रूप मे संस्कृत सिखाने की आवश्यकता पर जोर दिय। औ कहा कि इस भाषा म वे तत्व सुरक्षित है जो किसी व्यक्ति म सस्कार डालने का काम करते है।

राष्ट्रपति ने त्रिदिवसीय अखिल भारतीय संस्कृत सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए कहा कि बच्चो को सस्कृत सिखाने के लिए विशेषकर गर्मियो की छुट्टियो म कक्षाए लगाई जानी चाहिए और इसे पढाने की शुरूआत कठिन व्याकरण से नही होनी चाहिए।

उन्होने कहा कि संस्कृत भाषा के लिए दूरदशन जैसे प्रभावशाली माध्यम का भी उपयोग होना चाहिए। उन्होने कहा कि संस्कृत मे ज्ञान विज्ञान और चिन्तन का अपार भडार है जिसे लोगो तक पहुचाने के लिए इस भाषा का प्रचार प्रसार किया जाना चाहिए

राष्ट्रपति ने कहा कि संस्कृत भारत की भाषाओ की जननी है और दक्षिण भारत की भाषाओ मे भी संस्कृत के बहुत से शब्द मिलते हैं।

उन्होने कहा कि संस्कृत वह केन्द्रीय भाषा है जिसके माध्यम से देश की अन्य भाषाओ को सीखा जा सकता है। बापू ने तो संस्कृत को गगा नदी की तरह माना था जिससे कि हमारे देश की अन्य भाषाए जीवन और शक्ति प्राप्त करती है।

उन्होने कहा कि बापू ने २३ मार्च १९४० के हरिजन मे लिखा था कि प्रत्येक राष्ट्रवादी को संस्कृत भाषा पढनी चाहिए क्योकि इससे प्रान्तीय भाषाओ का अध्ययन सरल हो जाता है। यह वह भाषा है जिसमे हमारे पूर्वजो ने सोचा और लिखा।

राष्ट्रपति ने कहा कि देश के प्रथम प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरू ने भी संस्कृत को देश के पूर्वजो की सबसे बडी सबसे मजबूत सबसे ताकतवर और सबसे कीमती धरोहर माना था।

डा० शर्मा ने कहा कि पश्चिमी देशो म आज भी संस्कृत के प्रति गहन श्रद्धा का भाव है और वे इसे कम्प्यूटर के लिए सर्वाधिक उपयुक्त भाषा मानते है।

उन्होने कहा कि कुछ पश्चिमी देशो ने तो संस्कृत को अपने यहा के पाठ्यक्रमो म शामिल किया और अमेरिका ब्रिटेन जमन फ्रास जैसे विज्ञान की दृष्टि से विकसित देश खुले मन से संस्कृत के महत्व को स्वीकार करते हैं और उस पर अनेक तरह के शोध काय कर रहे है।

राष्ट्रपति ने कहा कि इन बातो म तनिक भी सन्देह नही है कि हमारे चिन्तन का सर्वोत्तम निधियाँ संस्कृत भाषा म सुरक्षित है। इतिहास और समाजशास्त्री हमारा राष्ट्रीयता की व्याख्या आज जिस रूप मे कर लेकिन उसकी मूल अवधारणाय संस्कृत साहित्य मे पहले से ही विद्यमान थी।

उन्होने कहा कि पूरे विश्व को एक कुटुम्ब मानना सम्पूर्ण मनुष्य जाति को एक जाति मानना और सबसे सुख की कामना जैसे विचार संस्कृत भाषा की ही देन है। इन्ह ही वर्तमान शब्दावली मे राष्ट्रीयता धर्मनिरपेक्षता और मानव अधिकार कहा जाता है।

राष्ट्रपति ने कहा कि मै संस्कृत भाषा को मानव जाति का अत्यन्त प्राचीन सार्वभौमिक तथा गूढ चिन्तन के भार को वहन करने वाली अनुपम भाषा मानता हू। आज से सहस्त्रो साल पहले यह भाषा अपनी पूर्ण अभिव्यक्ति क्षमता भ षागत सौन्दर्य समृद्ध राष्ट्र भडार और ध्वनिगत लालित्य के साथ हमारे सामने थी।

उन्होने कहा कि इस भाषा के पास ऐसी शक्ति है कि इसमे जहा एक ओर कविताए और नाटक लिखे गए वही दूसरी ओर चिकित्सा शास्त्र, औषध विज्ञान, ज्योतिष शास्त्र आध्यात्मिक चिन्तन, नीति शास्त्र व्याकरण शास्त्र, तथा राजनीतिक विज्ञान जैसे विषयो का प्रणयन हुआ है।

उन्होने कहा कि इसलिए सर विलियम जोस जब रायल एशियाटिक सोसायटी आफ बगाल को सम्बोधित करते हुए इस भाषा को यूनानी भाषा से अधिक परिपूर्ण लातिन से अधिक समृद्ध तथा इन दोनो से उत्कृष्ट और संस्कृत भाषा कहते हुए इसकी सरचना पर आश्चर्य व्यक्त करते है तो इस भाषा की इसी अभिव्यक्ति की क्षमता की ओर सकेत करते है। पश्चिमी विद्वान ब्लूमफील्ड संस्कृत भाषा को व्याकरणिक स्वरूप देने वाली पुस्तक पाणिनी की 'अष्टाध्यायी' को मानव मस्तिष्क की सर्वोत्तम देन कहते हैं।

श्री पं० वटेश्वरदयाल दीक्षित यशस्वी हों!

२० हजार रुपये का सात्विक दान और?

प्रत्येक व्यक्ति की इच्छा होती है कि वह कोई विशेष महत्वपूर्ण कार्य करे और यशस्वी बनें।

मान्यवर भाई प० वटेश्वरदयाल जी दीक्षित ने अपनी स्वर्गीया माता श्रीमती फूलमती जी के नाम पर बीस हजार रुपये का सात्विक दान सार्वदेशिक सभा को प्रदान किया था। जिसके ब्याज से उनकी इच्छानुसार व्यय किया जायेगा।

पूज्य पण्डित वटेश्वरदयालजी की मन की भावना उदभूद हुई और २० हजार (बीस हजार) रुपया अपने स्वर्गीय पिता प० महादेव प्रसाद जी दीक्षित के नाम से अन्य राशि सार्वदेशिक सभा की स्थिर निधि मे दान रूप मे प्रदान की है शर्त पूर्व की भाँति ही राशि की दो गुणी हो जाने पर ब्याज पुस्तक प्रकाशन पर व्यय किया जाय।

पण्डित वटेश्वरदयाल जी ने स्वर्गीया पूजनीया माता जी एव स्व पूजनीय पिता जी के नाम सच्चा श्राद्ध किया है जो चिरस्मरणीय रहेगा।

प० वटेश्वरदयाल जी ने पच्चास हजार की राशि आर्य समाज दीवानहाल को भी दान रूप मे प्रदान की हैं।

वह माता पिता धन्य थे—जिन्होने प० वटेश्वरदयाल जैसा पुत्र रत्न उत्पन्न किया। जिनकी भावनायें सदा ही उदात्त हैं और ब्राह्मण परिवार की परम्पराओं का जिन्होने सदा ही निर्वहन किया है।

पण्डित जी स्वभाव से गम्भीर उदार दानी व्यक्ति हैं। सीधे सादे व्यक्ति परोपकारमय जीवन जीने मे सदा विश्वास रखते हैं।

आपका मन्तव्य है कि दान (देशे काले च पात्रे च तद्दान सात्विक विदु) पात्रता को देखकर अर्थात बन्जर भूमि मे बीज न बखेरे किन्तु उर्वरा पैदावार भूमि मे बीज डाले, जिससे अथ लाभ हो। इस भावना से ही आपने अपनी गाढी कमाई को अच्छे काम हेतु प्रदान किया है।

स्वर्गीय माता पिता जी का नाम तो यशस्वी रहेगा ही उनके नाम के साथ प० वटेश्वर दयाल जी सदा स्मरणीय रहेंगे। मेरी कामना है 'स्वस्त्यस्तु ते कुशलमस्तु चिरायुरस्तु'।

— सम्पादक

स्वाध्यायान्मा प्रमदः !

—पं० श्री युधिष्ठिर जी मीमांसक

समावर्तन के समय स्नातक को आचार्य जो उपदेश देता है, उसमें एक वचन है—'स्वाध्यायान्मा प्रमदः' अर्थात स्वाध्याय से प्रमाद मत कर ! स्वाध्याय शब्द सु+आ+अध्याय तथा स्व (स्य)+अध्याय, इस तरह दो प्रकार से निष्पन्न होता है । इन दोनों का अर्थ निम्न प्रकार है—

(१) अच्छा अध्ययन अर्थात वेदादि सच्छास्त्रों का अध्ययन ।

(२) अपना अध्ययन अर्थात् आत्मा तथा शरीर आदि के तत्वज्ञान के प्रयत्न ।

ये 'स्वाध्याय' शब्द के यौगिक अर्थ हैं । किन्तु जहां-जहां स्वाध्याय के लिये शास्त्रकारो ने स्वाध्यायोऽध्येतव्यः आदेश दिया है, वहां-वहां केवल यौगिक अर्थ अभिप्रेत नहीं है । 'पंकज' आदि शब्दों की तरह वहां विशेषार्थ में नियत है । 'शतपथ' के अथातः स्वाध्यायः प्रशंसा' नामक ब्राह्मण तथा मीमांसकों के मीमांसानुसार 'स्वाध्याय' पद केवल वेदाध्ययन के लिये ही प्रयुक्त होता है । अतः 'स्वाध्यायान्मा प्रमद.' वाक्य का यह विशिष्ट अर्थ हुआ कि वेदाध्ययन में प्रमाद मत कर' । इसी प्रकार 'स्वाध्यायप्रवचनाभ्या न प्रमदितव्यम् का अर्थ होगा वेद के अध्ययन और अध्यापन में प्रमाद मत कर ।'

यहा यह ध्यान मे रखना चाहिए कि ये दोनों आदेश गृहस्थ धर्म मे प्रवेश करने वाले स्नातक के लिये हैं । तात्पर्य यह है कि प्रत्येक गृहस्थी को वेद के अध्ययन और अध्यापन का आदेश दिया जा रहा है । भगवान मनु गृहस्थ-धर्म प्रकरण में लिखते हैं—

नित्यं शास्त्राण्यवेक्षेत निगमांश्चैव वैदिकान् ।

अर्थात् नित्यप्रति वेद और सत्य शास्त्रों का अवलोकन करना चाहिये ।

तैत्तिरीयोपनिषद् में एक स्थान में लिखा है—

तपश्च स्वाध्यायप्रवचने च, दमश्च स्वाध्यायप्रवचने च ''प्रजनश्च स्वाध्यायप्रवचने च, प्रजातिश्च स्वाध्यायप्रवचने च ।

अर्थात तप, दम, शम, अग्निहोत्र आदि तथा धर्मपूर्वक सन्तानादि की उत्पत्ति करते हुए भी स्वाध्याय और प्रवचन करते रहना चाहिये । स्वाध्याय अर्थात् स्वयं अध्ययन और प्रवचन अर्थात् दूसरों को पढ़ाना । इन वाक्यों का तात्पर्य यही है कि वेद का पढ़ना-पढ़ाना प्रत्येक अवस्था में अवश्य करना चाहिए । इसीलिये स्वाध्याय और प्रवचन वाक्य में पढ़े गये हैं । इनसे यह भी प्रतीत होता है कि वेद का पढ़ना व पढ़ाना प्रतिदिन का आवश्यक कर्म हैं ।

स्वाध्याय योग का एक अंग हैं । महर्षि पतंजलि ने स्वाध्याय को नियमो के अन्तर्गत स्वीकार किया है, और स्वाध्याय का फल (योग २।४४) बतलाया है —'स्वाध्यायादिष्ट देवता सम्प्रयोगः' अर्थात स्वाध्याय से इष्टदेव परमात्मा की प्राप्ति होती है । महर्षि वेदव्यास ने योगसूत्र (१-२८) की व्याख्या मे लिखा है—

स्वाध्यायाद् योगमासीत् योगात् स्वाध्यायमामनेत ।
स्वाध्याय-योग-सम्पत्त्या परमात्मा प्रकाशते ॥

स्वाध्याय (योग) से चित्त-वृत्तियों के निरोध की प्राप्ति कर (योग) से चित्त-शक्तियों का निरोध करके (स्वाध्याय) वेद का अध्ययन करें । स्वाध्याय और योग की सम्मिलित शक्ति में आत्मा में भगवान स्वयं प्रकाशित हो जाते हैं । यह है स्वाध्याय का महान फल ।

महर्षि याज्ञवल्क्य 'शतपथ' (११-५-१-४) के 'स्वाध्याय-प्रकरण' में लिखते हैं—

यदि ह वाऽभ्यक्तोऽलंकृतः सुखे शयने शयानः स्वाध्यायमधीते आ हैव नखाग्रेभ्यस्तपस्तप्यते य एव विद्वान स्वाध्यायमधीते ।

अर्थात् जो पुरुष अच्छी तरह अलंकृत होकर अच्छे पलंग पर लेटा हुआ स्वाध्याय करता है, तो मानो वह चोटी से लेकर एड़ी पर्यन्त तपस्या कर रहा है । इसलिए स्वाध्याय करना चाहिए ।

कई सज्जन कहते है कि वेद के स्वाध्याय में मन नहीं लगता है । यह रूखा विषय है, सरस नहीं है । यह कहना बहुत अंश में ठीक है, किन्तु इसमें भी दोष हमारा ही है । सरसता प्रत्येक पुरुष की अपनी रुचि पर निर्भर होती है । बहुत लोग गणित को शुष्क विषय कहते हैं । किन्तु जो उसके वक्ता हैं, उन्हें वह विषय इतना प्रिय होता है कि उसमें वे अपनी सुध-बुध भी भूल जाते हैं । इससे प्रतीत होता है कि जिस पुरुष की जिस विषय में रुचि है, वह उसके लिए सरस है, अन्य के लिए वह रूक्ष । इस रूक्षता को हटाने का एकमात्र साधन है—निरन्तर अध्ययन । जो पुरुष दो चार दिन पढ़कर आनन्द उठाना चाहते हैं, उन्हें कभी भी लाभ नहीं हो सकता । उनके लिए निरन्तर स्वाध्याय की आवश्यकता है । अतएव प्राचीन महर्षियों ने स्वाध्याय को दैनिक कार्य मानकर नैत्यिक पंचमहायज्ञों के अन्तर्गत स्थान दिया है और इसीलिए इसे संसार का सबसे महान 'तप' कहा है । मनु जी कहते हैं —

यथा यथा हि पुरुषः शास्त्रं समधिगच्छति ।
तथा तथा विजानाति विज्ञानं चास्य रोचते ॥

पुरुष जैसे जैसे अपना शास्त्राध्ययन बढ़ाता है, वैसे-वैसे उसका ज्ञान बढ़ता जाता है और उसमे रुचि पैदा होती जाती है तत्काल नहीं ।

महर्षि दयानन्द ने प्रत्येक आर्य के लिए दस आदेश दिये हैं, जिनका अभिप्राय सदा तदनुसार कर्म करना होता है । एक सामान्य नियम है—

यन्मनसा ध्यायति तद्वाचा वदति, यद् वाचा वदति तत्कर्मणा करोति, यत्कर्मणा करोति तदभिसम्पद्यते ।

"पुरुष जिस बात को अपने मन से मानता है उसे वाणी द्वारा प्रकट करता है, और उसे जैसे वाणी द्वारा प्रकट करता है, वह वैसा ही बन जाता है ।"

अब हमारे सामने प्रश्न आता है कि जिन नियमों को हम आर्यसमाज का सदस्य बनते समय स्वीकार करते हैं, क्या हमारी स्वीकृति हृदय से होती है या दिखावटी ? इसकी कसौटी हमारे नियम ही हो सकते हैं । यदि हमारे कर्म उन नियमो के अनुसार हैं, तो मानना होगा कि हम उन नियमो को हृदय से मानते हैं । अन्यथा यही कहा जाएगा कि सदस्य बनने के लिए दिखावटी स्वीकारी है । महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के दस नियम मे तीसरा नियम लिखा है :—

"वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है । वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है ।

ऋषि ने वेदों का पढ़ना अर्थात स्वाध्याय, पढ़ाना अर्थात् प्रवचन, ये दोनों बातें संगृहीत करते हुए 'सुनना और सुनाना' पद विशेष रूप से रखे हैं । यदि ये पद न रखे होते तो कोई पुरुष यह कह सकता था कि हमें पढ़ना नहीं आता, किन्तु यहां तो समस्या पहले से ही हल कर दी गई है । जो पढ़ नहीं सकता वह सुने, जो समर्थ हो, उसका भी कर्तव्य है कि वह सुनाये । इस नियम में 'धर्म' शब्द कर्तव्य का वाचक है ।

अब प्रश्न उठता है कि क्या आर्य समाज के सदस्य इस नियम को हृदय से मान रहे हैं ? स्पष्टतया कहा जा सकता है कि नहीं ! आर्यसमाज के सदस्यों में स्वाध्याय की रुचि ही नहीं है ।

आज अनेक व्यक्तियों को कहते सुना जाता है कि आजकल समाज में पूर्व जैसा उत्साह नहीं रहा । बात सोलह आने सत्य है । पर किसी ने इस बीमारी का निदान भी किया है ? इस बीमारी का कारण है वेद के स्वाध्याय का अभाव । वेद आर्यों का धार्मिक अर्थात कर्तव्य-बोधक ग्रन्थ है । वह आर्य जाति की संस्कृति का आदिस्रोत है, केन्द्र है । जब हम इस स्रोत या केन्द्र से विमुख हो जाते हैं, तभी हममें शिथिलता उत्पन्न होती है । मुसलमानों में अपने मत के प्रति कितना उत्साह है । उसका प्रमुख कारण कुरान का प्रतिदिन स्वाध्याय है । हिन्दुओ मे इतनी हीनता और कुरीतियां क्यों उत्पन्न हुई । इसका उत्तर भी यही है कि उन्होने अपने मूलभूत वेदों को छोड़कर साम्प्रदायिक ग्रन्थों और पुराणों को ही अपनाना प्रारम्भ कर दिया । आर्य समाज के प्रारम्भिक आर्यो में जो महान उत्साह था उसका कारण धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन ही था । स्व० पं० श्री क्षेमकरण दास जी को कौन नहीं जानता ? आपने राजकीय नौकरी से ५५ वर्ष की अवस्था के पश्चात मुक्त होकर संस्कृत भाषा का अध्ययन प्रारम्भ किया और बड़ौदा राज्य की तीन वेदों की राजकीय परीक्षाएं उत्तीर्ण की । तत्पश्चात उस अथर्ववेद का भाष्य रचा, जिस पर सायण का भी पूर्ण भाष्य उपलब्ध नहीं होता । अब भी कोई कह सकता

(शेष पृष्ठ ११ पर)

अयोध्या विवाद : हिन्दू संगठन और आर्य समाज

—सन्तोष 'कृष्ण'

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रस्तुत समग्र-क्रान्ति की रूपरेखा से प्रभावित होकर कार्य क्षेत्र में उतरने वाले कुछ लोग अनेक हिन्दू संगठनो और आर्य समाज से सम्बद्ध जनो को एक ही मंच पर लाने का सरल चित्त से प्रयास करते रहे हैं। आज भी कर रहे हैं। ऐसे सभी लोग राष्ट्र की दयनीय स्थिति से चिन्तित है। समाज के बिखराव और विखण्डन से दुःखी हैं। राष्ट्रीय जीवन में आती जा रही गिरावट तथा भारत के शत्रु-राष्ट्रो के षड्यन्त्रो से बहुत विचलित है। समस्याओ की भयावहता जब भी विकराल रूप लेती है, तब यही लगता है कि आर्य समाज को हिन्दू संगठनो के और हिन्दू संगठनो को आर्य समाज के साथ मिलकर कार्य करना चाहिए।

गांधी, कांग्रेस और आर्यसमाज

ऐसे ही जब महात्मा गांधी ने कांग्रेस का नेतृत्व संभाला तब भी कुछ लोगो को लगा था कि आर्य समाज को कांग्रेस के साथ मिलकर स्वाधीनता की लड़ाई लड़नी चाहिए। परिणामत: आर्य समाज की समस्त शक्ति कांग्रेस को मिली और कांग्रेस ने वही किया जिसके लिए उसकी स्थापना हुई थी। आर्य समाज के भावुक लोग यह भूल गये कि ह्यूम ने कांग्रेस की स्थापना भारत की उन्नति के लिए नहीं प्रत्युत आर्य समाज के बढ़ते प्रभाव को रोकने तथा महर्षि दयानन्द द्वारा समारम्भित महाक्रान्ति की प्रक्रिया को अवरुद्ध करने के लिए की थी। तत्कालीन ब्रिटिश शासक यह नही चाहते थे कि इस देश मे सामाजिक, राजनीतिक और बौद्धिक चेतना जगे। यदि इस दिशा में कोई प्रयास हो भी तो उस पर उनका या उनके द्वारा निर्मित लोगो का ही वर्चस्व रहे ताकि उसे अपने लक्ष्य तक पहुंचने से पूर्व ही समाप्त कर दिया जाए या फिर उसे बीच में ही भटका दिया जाए। महात्मा गांधी तो स्वयं ही उस जाल मे फसते गये जिसके सारे सूत्र ब्रिटिश कूटनीतिज्ञो के हाथ मे थे। अपनी अतिसरलता और मानवीय स्वभाव की दुर्बलताओ, विवशताओ और विशेषताओं के प्रति अपनी भावुक-दृष्टि के कारण गांधी जी उन कुटिल चालो को समझ ही नही सकते थे जो उन दिनों भारत मे चल रही थी।

कुटिलता प्राय. सरलता पर भारी पड़ जाती है। तेजी से घूमने कूटनीतिक घटना-चक्र और निरन्तर उलझती परिस्थितियो के दबाव मे आर्यसमाज का तत्कालीन नेतृत्व भी महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रारम्भ किये गये 'सम्पूर्ण स्वाधीनता अभियान' के दर्शन और कार्यक्रम से भटक गया। जब होश आया तब बहुत देर हो चुकी थी। महात्मागांधी को भी अन्त में निराशा और असफलता मिली। ब्रिटिश कूटनीति तथा अपने अनुयाइयों की कृत्रिमता को न समझ पाने या सबकुछ समझकर भी उनके मोह से मुक्त न हो पाने के कारण उनकी सारी सदाशयता और सत्य निष्ठा पर प्रश्न-चिन्ह लग गए। उनका तप और त्याग व्यर्थ गया। इस पूरे घटना-क्रम में केवल बापू ही नहीं छले गये अपितु उनके सच्चे अनुयायी और समस्त देश भी छला गया। देखा जाय तो बापू के वास्तविक अनुयायी तो आर्य समाजी ही थे। शेष ने तो उनका उपयोग भर किया है। आज भी कर रहे है। यदि गांधी ने कांग्रेस से न जुड़कर आर्य समाज के साथ काम किया होता या आर्य समाज ही इधर उधर न भटक कर अपने मार्ग पर बढ़ता से चला होता तो आज का भारत कुछ और ही होता।

आर्य समाज का उपयोग

जहां तक प्रश्न हिन्दू संगठनों का है, तो वे सभी आर्य समाज के उत्तरवर्ती संगठन हैं। इनमें से कुछ तो आर्यसमाज के दर्शन, लक्ष्य और कार्यक्रम से असहमत हैं, जबकि कुछ उसको समझते ही नहीं हैं। कुछ घोर विरोधी भी हैं। कुछ हिन्दू संगठन इस्लाम, ईसाइयत और आर्य समाज की प्रतिक्रिया में खड़े हुए हैं। एक महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि कोई भी हिन्दू संगठन न तो आर्य समाज के साथ सहयोग करना चाहता है और न ही आर्य समाज से सहयोग लेना चाहता है। हां! वे केवल एक काम करते हैं, वह है—अपने स्वार्थों की पूर्ति में आर्य समाज का अपने ढंग से सफल उपयोग।

कांग्रेस ने भी यही किया था। उसने भी आर्य समाज का अपने ही स्वार्थ में उपयोग किया, उसके कार्यक्रमों में साथ कभी नहीं दिया। गांधी जी ने भी नहीं। सारी उम्र आर्यसमाज के मंच से कांग्रेस का प्रचार करने वाले कुंवर सुखलाल तक को हैदराबाद सत्याग्रह के सम्बन्ध में लिखना पड़ा—

हमारी हिमायत न कर प्यारे गांधी।
मगर यह तो कह दे बुरा हो रहा है॥

उस सत्याग्रह में न कांग्रेस ने साथ दिया, न गांधी जी ने अब एक और प्रसग देखिए—

नमस्ते छोड़ो जय श्रीराम बोलो

वर्ष १९९० के नवम्बर मास में उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ जाने का सुयोग बना। आर्य समाज गणेश गंज पर विश्व हिन्दू परिषद का विशाल प्रचार-पट बैनर टंगा था। लिखा था--"नमस्ते छोड़ो--जय श्रीराम बोलो"।

बैनर पढ़कर मुझे हंसी आ गई। पूरा प्रदेश राम जन्म भूमि मुक्ति अभियान से प्रभावित था। कोई पक्ष में तो कोई विपक्ष मे अपने-अपने तर्क दे रहा था। हर घर में, हर गली में, बसों में--गाड़ियों में, विद्यालयो में—कार्यालयों में, पत्रों और पत्रिकाओं में एक ही चर्चा थी—अयोध्या के राम मन्दिर की चर्चा भित्ति लेखन में पट राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघकी विभिन्न शाखाओं के कार्यकर्ताओं ने क्या ग्राम--क्या नगर, सभी जगह दीवारों पर नाना प्रकार के नारे लिख दिये थे। विथिकाओं में प्रचार-पट टग रहे थे। तत्कालीन सरकार और संघ परिवार मे भयंकर टकराव था। उत्तेजक भाषणों और भड़काऊ नारों ने समाज का वातावरण विषाक्त कर दिया था। भारत माता को डायन कहा जा रहा था। एक उन्माद था चारों ओर! 'भारत मे यदि रहना है—जय श्रीराम कहना है। जो नहीं है राम का—वो है हराम का! बच्चा बच्चा राम का जन्मभूमि के काम का! रामलला हम आयेंगे--मन्दिर वहीं बनायेंगे।' जैसे नारे गूंज रहे थे। हमारे संघी भाई जो पहले किसी आर्य समाजी से मिलने पर बड़े जोर से "नमस्कार" बोलते थे, अब 'जय श्रीराम कहने लगे थे।

आर्य समाज के प्रारम्भिक दिनो में हमारे प्रिय पौराणिक भाइयों ने एक गीत बनाया था—

'नमस्ते' नाश कर देगी, फिरोगे दो दो दाने को।
मिलेगा जन्म घोड़े का, पड़ेगी घास खाने को॥

उस समय भी हमारे मित्रों को 'दाने' की चिन्ता थी, आज भी है। सत्य और यथार्थ से कुछ लेना देना नही। फिर भी अभिवादन अर्थ में 'नमस्ते' अपनी सार्थकता के कारण लोकप्रिय हुआ। परन्तु संघ की शाखाओं और बैठको में 'नमस्कार' को योजनाबद्ध ढंग से चलाया गया ताकि आर्य समाज से भिन्न हिन्दू समाज की एकता को प्रदर्शित किया जा सके।

(क्रमश:)

अंधेरे महाद्वीप में वेद की ज्योति का उषाकाल

पंडित रेस्टन चार्ल्स एनकोहू घाना निवासी अफ्रिकन नवयुवक सन १९८५ मे डरबन मे प० नरदेव वेदालंकार के द्वारा वैदिक प्रशिक्षण लेकर और प्रथम अफ्रिकन वैदिक पुरोहित की दीक्षा लेकर अपने शहर आकरा मे वापस पहुचे। वहा उन्होने कुछ अफ्रिकन नवयुवको को वैदिक धर्म मे दीक्षित किया तथा राजधानी आकरा मे आर्य वैदिक मिशन घाना की स्थापना की। इस अधकारपूर्ण महाद्वीप मे इस तरह वैदिक सूर्य की प्रथम किरण प्रकाशित हुयी और शीघ्र ही वहा वैदिक उषाकाल का अभ्युदय हो गया।

घाना अफ्रिका महाद्वीप के पश्चिमी तट पर स्थित देश है। आज से दो सौ वर्ष पूर्व क्रिश्चियन मिशनरियो ने यहा पहुचकर वहा की मूल प्रजा को अपने धम और सस्कृति से हटाकर जिसस क्राइस्ट का अनुयायी बनाया। इसी तरह इस्लाम भी वहा धीमे धीमे अपना प्रभाव जमाने लगा।

इस विकट परिस्थिति मे युवक एनकोहू ने अपने कार्य का प्रारम्भ किया। वहा के नवयुवको मे वैदिक सिद्धात प्रिय होने लगे। उन्हे प्रथम बार ज्ञात हुआ कि इन दो धर्मों के अतिरिक्त दूसरा भी कोई पृथक धर्म है। एक अकेला युवक विपरीत परिस्थितियो मे अपने सिद्धातो पर दृढ रहकर क्या कुछ कर सकता है इसकी यह एक अदभुत कथा है।

तर्क पूर्ण और विज्ञान के अनुकूल वैदिक सिद्धान्तो ने वहा के युवको को प्रभावित किया और वे आय वैदिक मिशन के द्वारा घानियन प्रजा मे आर्य समाज का प्रचार करने लगे।

आज यहा मिशन की निम्नलिखित छ प्रवृत्तिया चालू हो गयी हैं।

साप्ताहिक सत्सग और यज्ञ

वैदिक यज्ञ पद्धति ने यहा की प्रजा को विशेष आकर्षित किया है। साप्ताहिक सत्सग मे अच्छी सख्या मे लोग उपस्थित होते हैं। वे यज्ञ मे आहुति देने मे गर्व का अनुभव करते हैं। मन्त्रो का शुद्ध उच्चारण सीखने को वे उत्सुक है। सत्सग मे स्वामी दयानन्द और आय समाज के कार्यों पर प्रवचन होते हैं। पुनजन्म, कर्म फल तथा अन्य वैदिक सिद्धातो को लोग ध्यान से सुनते ही नही उन पर बहस और चर्चा की जाती है और उनका शका समाधान किया जाता है।

वैदिक सस्कारों का प्रचलन

वैदिक सस्कारो के प्रति भी प्रजा की रुचि जाग उठी हैं। नामकरण अन्नप्राशन, मुडन सस्कार आदि वहा लोकप्रिय हो रहे हैं। कोई कोई युवक वैदिक विवाह सस्कार भी कराने लगे है। अन्त्येष्टि सस्कार का प्रचलन चालू हो गया है मृत शव को मिटटी मे गाडने वाले भी शव मे वैदिक प्रार्थना करवाने लगे हैं। मृत देह को अग्नि दाह देने के मूल्य को वे समझने लगे हैं।

वहा आय समाज मे दीक्षित भाई बहिन अपनी घाना की परम्परा को और सस्कृति को छोडना पसन्द नही करते। अत ये अपने भारतीय नाम न रखकर घाना के नाम ही रखते हैं। इसी प्रकार विवाह आदि के समय धोती कुर्ता या साडी को न अपना कर वहा की वेशभूषा को ही धारण करते है। बहुत से युवक निरामिष भोजी बन रहे हैं फिर भी भोजन समय के रिवाज घाना की प्रथा के अनुकूल होते हैं। इस तरह वे अपने ही देश मे एक नया विदेशी वग नही पैदा करना चाहते हैं।

धार्मिक परीक्षाएं

घाना के विद्यार्थी और युवक वेद निकेतन, आर्य प्रतिनिधि सभा सा.उप अफ्रिका द्वारा सचालित धर्म प्रथमा तथा धर्म प्रवेश मे प्रतिवष सम्मिलित होने लगे हैं। अब इस वष व मैट्रिक कक्षा की तीसरी धर्म प्रकाश परीक्षा मे भी सम्मिलित होरहे है। परीक्षा प्रश्न पत्र और परिणाम डरबन से भेजा जाता है। वहा के युवक इन परीक्षाओ के प्रमाण पत्र पाकर गौरव का अनुभव करते हैं।

समाज सेवा

आर्य समाज का समाज सेवा का छठा तथा नौवा नियम यहा की प्रजा को विशेष पसन्द है। सेवा काय को ये धार्मिक कर्तव्य समझने लगे हैं। मिशन ने अपना एक केन्द्र स्थापित करने का निणय लिया है। जिसके साथ सेवा आश्रम (अनाथाश्रम और वृद्धाश्रम) भी सयुक्त होगा। आजकल इस मिशन के युवक अनाथो और गरीबो के गृह पर जाकर उन्हें अन्न, वस्त्र और दवाई आदि प्रदान करते हैं तथा उन्हे व्यसनो से मुक्त करके सन्मार्ग के पथ पर ले आते हैं।

आर्य समाज का प्रचार

पाच वर्ष तक आर्य वैदिक मिशन ने घाना की राजधानी आकरा मे प्रचार कार्य को सुदृढ बनाया। जनता मे वैदिक साहित्य निशुल्क बाटा जाता है। चर्चा सभा और वाद विवाद सभाओ का आयोजन होता है। वहा वैदिक धर्म पर दो शास्त्रार्थ हो चुके हैं। जिनमे वैदिक धम तर्क युक्त और विज्ञान सम्मत प्रमाणित हुआ है। जिसमे पढ लिखे युवको का विशेष ध्यान गया है।

सन १९८२ से मिशन का काय आकरा से बाहर के अन्य प्रान्तो मे ले जाने का निश्चय हुआ वहा की जनता इस प्रचार कार्य से प्रभावित हुई। आज वहा के अन्य चारो प्रान्तो के शहरो मे आर्य समाज की एक एक शाखा चालू हो गई है

पडोसी देशो मे प्रचार कार्य का शुभारम्भ

घाना मे मिशन को सफलता मिलने से आर्य युवको का उत्साह बढा और उन्होने अपने पडोसी राष्ट्र नाइजीरिया मे प्रचार की योजना बनाइ। नाइ-जीरिया अफ्रिका महाद्वीप का सबसे घनी आबादी वाला देश है। जिसकी जन सख्या ८ करोड ५० लाख है। यहा की बस्ती का ७० प्रतिशत इस्लाम का और शेष ईसाइयत का अनुयायी है। इस प्रतिकूलता मे वैदिक सिद्धान्तो के प्रचार की कठिनता और प्रतिकूलता स्वय समझ मे आने वाली बात है। फिर भी इन नवदीक्षित अफ्रिकन आर्य नवयुवको ने १९८३ के प्रारम्भ मे नाइजि-रिया की राजधानी लागोस मे आर्य समाज की स्थापना मे सफलता पायी है। अब यहा पर शीघ्र ही तीन मास के लिए वैदिक प्रशिक्षण श्रेणी की योजना अमल मे आने वाली है। जिसमे यहा के युवको को वैदिक सिद्धातो के अति-रिक्त यज्ञ पद्धति योगासन मन्त्रो का शुद्ध उच्चारण आदि की शिक्षा दी जाएगी। (शेष पृष्ठ ८ पर)
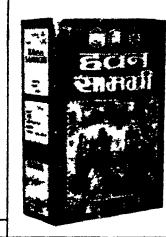
आर्य समाज का विश्व संगठन

अनिवार्यतायें एवं पूर्वापेक्षाये

डा० आनन्द प्रकाश वाराणसी

चिरस्मरणीय भवानीदयालजी सन्यासी,जिनका आर्यसमाज के देशान्तर या प्रचार के क्षेत्र मे गौरवपूर्ण स्थान है, के शती समारोह के अवसर पर 'देशान्तर प्रचार' से सम्बन्धित लेख व विचार प्रकाशित करने का निर्णय सर्वथा उपयुक्त रहा। मेरी दृष्टि मे, देशान्तर प्रचार का समय गम्भीर वैचारिक सकट से गुजर रहा है और भारत से बाहर सगठन को सुदृढ बनाने के लिये कोई समय तथा योजना बद्ध कार्य नही हो रहा है। अतएव आर्य समाज की विचारधारा को देशान्तर में तीव्र गति से फैलाने के लिये गम्भीर चिन्तन की आवश्यकता है। आर्य समाज का सगठन (कार्यक्षेत्र) हिन्दू समाज तक सीमित है, परन्तु इसकी विचारधारा (इसके मन्तव्य) मानव-मात्र के समग्र कल्याण के लिये बनी है। महर्षि दयानन्द ने मत और सम्प्रदायो के झगडो को समाप्त कर, वेद प्रतिपादित मानव धर्म की पुर्नस्थापना के द्वारा ईश्वर व धर्म के सत्य स्वरूप को समझाया और मानव-मात्र की एकता का मार्ग प्रशस्त किया। अत यह स्पष्ट है कि आर्य समाज के सगठन को देशान्तर मे अवश्य ही शक्तिशाली बनाया जाये परन्तु उसके वैचारिक पक्ष को व्यापक बनाने पर अपेक्षाकृत अधिक बल दिया जाये। तभी महर्षि की वैचारिक क्रान्ति (आध्यात्मिक क्रान्ति) को विश्वव्यापी बनाया जा सकेगा।

विश्वव्यापी कार्य के लिये कुछ सुझाव (जो अनिवार्य व पूर्वापेक्षी है) इस प्रकार है—

१. सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत 'देशान्तर प्रचार विभाग" है परन्तु वह बहुत सगठित, व्यवस्थित और सक्रिय नही है। सार्वदेशिक सभा के पास साधन भी सीमित हैं और उसके समक्ष आन्तरिक उलझनें व राष्ट्रीय समस्यायें भी अनेक हैं। इनको व्यवस्थित करने की आवश्यकता है।

२ आर्य समाज की पहचान (इसके सर्वव्यापी विशिष्ट स्वरूप अथवा विशेष उद्देश्य) को अक्षुण्ण बनाये रखने का महती आवश्यकता है। इस बात का पालन आदेशात्मक रूप से होना चाहिये। भारत से बाहर ऐसे लोगो की सख्या बहुत कम है जो आर्य समाज के समग्र-रूप से परिचित हैं। पुरानी पीढ़ी मे तो ऐसे लोग मिल जाते हैं जो आर्य समाज के मूल सिद्धान्तो से अवगत हैं, परन्तु नई पीढ़ी स्वाध्याय की कमी के कारण आधारभूत मान्यताओ से अवगत नहीं है। इस स्थिति को समाप्त करने के लिये, सर्वप्रथम इस निश्चय का पालन करना जरूरी है कि आर्य समाज के मच से ऐसे कार्यक्रम कदापि आयोजित नही किये जायेंगे और न ही आर्य समाज को भागीदारी ऐसे आयोजनो मे होगी, जिनसे आर्य समाज की मूल मान्यताओ का खण्डन होता है। (लेखक का आर्य समाज के देशान्तर प्रचार से सम्बन्ध रहा है और देशान्तर के क्रिया कलापो को वह ध्यान से देखता रहता है। प्रकाशित साहित्य का भी अध्ययन करने का अवसर उसे मिलता है। आर्य समाज पर छा रहे वैचारिक सकट, जिसके द्वारा प्रकारान्तर से पार्थिव पूजा, अवतारवाद, फलित ज्योतिष तथा अन्य धार्मिक आडम्बरो का समर्थन हो रहा है, से भलीभाति अवगत है। अत्यन्त मानसिक पीड़ा के साथ ही ऐसा लिखने को मजबूर होना पड़ा है।) हमारी सार्थकता, प्रासगिकता और श्रेष्ठता—हमारी पहचान से जुडी है। अगर यह समाप्त हो गयी तो आर्यसमाज एक साधारण सस्था ही रह जायेगा, इसका विश्व-मानवता को जागृत करनेवाले आन्दोलन का रूप नष्ट हो जावेगा।

३ साहित्य प्रचारकी भी अनिवार्य आवश्यकता है। आर्य समाज का तत्व ज्ञान (जो पूर्ण जीवन दर्शन है) इतना विशद, व्यापक एव क्रमिक है कि अन्यो की भांति कही से भी और कुछ भी पढ लेने व मनमानी व्याख्या कर देने से कोई व्यक्ति विद्वान नहीं बन सकता। आर्य समाज का साहित्य, प्रत्येक दृष्टि से अन्यो से भिन्न है। महर्षि दयानन्द की दृष्टि से किया गया वेद भाष्य, ज्ञान विज्ञान की कुजी बन सकता है। उनके द्वारा समर्पित आदि सृष्टि से लेकर अब तक का मानव इतिहास, भ्रमित मानवता को जोड़ सकता है। सत्यार्थ-प्रकाश ऐसा प्रकाश-स्तम्भ है जो भ्रमित, सतप्त और शोषित मानवता को सदा असत्य से सत्य की ओर अग्रसर करता रहेगा। विश्व के जिन देशो मे भी आर्य समाज का सन्देश पहुचा है, उसके पीछे सत्यार्थप्रकाश की प्रेरणा है। सत्यार्थप्रकाश को पढकर असख्य लोगो के जीवन बदल गये और साधारण मनुष्य से राष्ट्रनायक बन गये। अत हमारा साहित्य प्रचार मुख्य रूप से सत्यार्थप्रकाश तथा वेदभाष्य पर ही केन्द्रित होना चाहिये। देशान्तर मे इस प्रकार के साहित्य को पर्याप्त मात्रा मे पहुचाने का कार्य अनेक स्तरो पर होना चाहिये। आर्ष साहित्य, आर्य विचारधारा की पत्र-पत्रिकाओं तथा बालोपयोगी धर्म शिक्षा की पुस्तको को विश्व के कोने कोने तक पहुचाने के लिये एक वृहत् प्रकाशन सस्थान की आवश्यकता है, जो निर्यातक का कार्य भी कर सके। फिलहाल कोई व्यावसायिक सस्था इस कार्य को अपने हाथ मे ले सकती है। प्रतिनिधि सभाओ के लिये स्वय यह कार्य कर पाना सम्भव नही है। वे किसी व्यावसायिक सस्था को प्रोत्साहन दे सकती है। साहित्य का प्रचार, भाषण की तुलना मे अधिक प्रभावी और स्थायी होता है। सार्वदेशिक सभा द्वारा अनुमोदित साहित्य ही देशान्तर मे भेजा जाये।

४ अब बात है प्रचारको और कार्यकर्ताओ की। वर्तमान स्थिति को देखत हुए, देशान्तर मे ऐसे प्रचारको को भेजना अधिक हितकर है जो वहा पर सगठन की दृष्टि से कार्य करे। सैद्धान्तिक प्रवक्ता के रूप मे भी श्रेष्ठ उपदेष्टा जाते रहे (सन्यासी वर्ग का दौरा अधिक सार्थक होता है), परन्तु व्यावसायिक दृष्टि से भाषण देने और विदेश भ्रमण करने वालो के भाषणो से आर्य समाज का कोई हित नहीं। यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि ऐसे व्यावसायिक उपदेशको ने आर्य समाज का अहित ही किया है, उसकी छवि को बिगाडा है, वे तो गगा गये गगादास—"जमुना गये जमुनादास" की उक्ति को ही चरितार्थ करते हैं। आज के युग मे प्रत्येक कार्य को व्यवस्थित व वैज्ञानिक ढग से करने मे ही उसकी सार्थकता है। अतएव इस प्रकार के मिशनरी व जीवनदानी प्रचारको को (जो आर्य समाज के प्रति पूर्ण समर्पित हो और बहु-भाषाविद् हो) तैयार कर कार्यक्षेत्र मे उतारना होगा। ऐसी कारगर योजना तभी बन सकती है, जबकि सार्वदेशिक सभा, देशान्तर की

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्यसमाज का विश्व संगठन

(पृष्ठ ७ का शेष)

सभी प्रतिनिधि सभाओ तथा प्रमुख आर्य समाजो के प्रतिनिधियो की बैठक बुलाकर उस सम्बन्ध मे निर्णय करे। आर्य समाज का कार्यकर्त्ता बनने के लिए केवल मात्र "समय देना" ही पर्याप्त नही है, अपितु उसके लिए स्वाध्याय व सत्सग के माध्यम से तत्वज्ञान को समझना भी अनिवार्य है। कार्यकर्त्ताओ के प्रशिक्षण के लिए समय-समय पर शिविर भी आयोजित किये जाये। देशान्तर मे आर्य समाज का प्रचार, प्रवासी भारतीयो और उनमे भी विशेष कर हिन्दीभाषी जनो मे सीमित है (कुछ अपवादो को छोडकर) उसका बहुत बडा कारण, सगठन की दृष्टि से कार्य करने वाले प्रचारको व प्रशिक्षित कार्यकर्त्ताओ का अभाव ही रहा है।

५ कार्यक्रमो की प्राथमिकताए निर्धारित करना भी आवश्यक है। आर्यसमाज के देशान्तर प्रचार के लिये अनेक रचनात्मक कार्यक्रम सुझाये जा सकते हैं परन्तु प्राथमिकताओ के निर्धारण मे सतर्क और सावधान रहना होगा। मैंने लोगो को ऐसा सुझाव देते हुए बहुत बार सुना है कि आर्य समाज को चाहिए कि वह अपनी शक्ति का उपयोग अन्य देशो मे हो रहे धर्मान्तरण को रोकने मे करे। आर्य समाज ने अपने जन्मकाल से ही यह कार्य किया है और इसके प्रभाव के कारण ही हिन्दुओ मे सामाजिक समता का भाव जाग्रत हुआ। मारीशस मे हिन्दुओ का बहुमत आर्य समाज के कारण ही कायम है। परन्तु यह ध्यान मे रखना चाहिये कि सामाजिक सुधार (धर्मान्तरण रोकना भी इसी मे सम्मिलित है) के कार्य आर्यमसाज के मूल उद्देश्य नही है। यह तो मूल उद्देश्य की प्राप्ति के लिये किए गये अनुषगी कार्य है। हमारे प्रथम श्रेणी के रचनात्मक कार्य ब्रह्म-यज्ञ, देव यज्ञ, पाखण्ड खण्डन व मानव एकता होना चाहिये। देशान्तर प्रचार के कार्य मे हमे अनेक विश्व व्यापी सगठनो एव मचो का समर्थन इन कार्यक्रमो को लागू करने मे मिलेगा। एक बार विश्व के बौद्धिक व वैज्ञानिक जगत को अपनी श्रेष्ठ मान्यताओ को उपरोक्त कार्यक्रमो के माध्यम से अवगत कराने की आवश्यकता है। महर्षि दयानन्द की शिक्षाओ के सन्दर्भ मे विचार-गोष्ठिया भी आयोजित करत रहना चाहिए। हमारे लिए हर्ष और सन्तोष का विषय है कि मारीशस के श्रद्धेय आर्यरत्न मोहनलाल मोहित जी की उदारता से "अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ' की स्थापना ५ वर्षों पूर्व हुई है। इस वेदपीठ के द्वारा एक उच्चस्तरीय शोध-पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। भारत मे अनेक विषयों पर वेद गोष्ठियो का आयोजन किया जा चुका है। इस सक्षम सस्था के तत्वावधान मे भारत से बाहर भी वेदगोष्ठिया आयोजित करने का विचार चल रहा है। पूज्य स्वामी सत्यप्रकाश जी के मार्गदर्शन मे यह सारा कार्य चल रहा है। देशान्तर प्रचार के लिए सभी कार्यक्रमो का निर्धारण और उनकी प्राथमिकताए परिस्थितियो व अनुकूलताओ के आधार पर निश्चित करना होगा।

मुझे विश्वास है कि अनेक विद्वत् जन इस विषय पर विभिन्न दृष्टिकोणो से प्रकाश डालेंगे। ऐसे सभी उपयोगी सुझाव व विचार, समन्वित योजना निर्धारित करने मे सहायक होगे।

—काशी हिन्दू विश्व विद्यालय वाराणसी (उ० प्र०)

अन्धेरे महाद्वीप में वेद की ज्योति

(पृष्ठ ६ का शेष)

आर्थिक कठिनाई और हमारा कर्तव्य

इस अधेरे महाद्वीप मे वैदिक ज्योति को प्रज्वलित करने का पवित्र पुरुषार्थ अफ्रिकन आर्य युवक कर रहे हैं। यह कार्य सहारा के रेगिस्तान मे हरा-भरा उद्यान लगाने जैसा ही कठिन है। फिर भी वहा के उत्साही युवक इसे सफल बनाने मे तन, मन और धन से जुट गये हैं। वहा उन्हे कदम-कदम पर अनेक कठिनाइयो का सामना करना पड रहा है। जिनमे एक मुख्य आर्थिक कठिनाई है। घाना मे कार्य करने के लिए वहा के आर्य वैदिक मिशन का स्वतन्त्र केन्द्र होना जरूरी है। उस केन्द्र के साथ सेवाश्रम भी स्थापित करने की योजना है। प्रचार कार्य के लिए धार्मिक पुस्तकें, ट्रेक्ट्स पेम्पलेट आदि चाहिए वहा पर उनका प्रकाशन करना है कार्यालय के लिए किराए पर मकान रखा गया है। समाज सेवा के लिए अपना स्थान आवश्यक होना चाहिए। वहा के कार्यकर्ता आज कल अवैतनिक सेवाए दे रहे हैं। वहा एक स्थायी शास्त्रज्ञ विद्वान रखना है। दिन प्रतिदिन मिशन के कार्यो का विकास हो रहा है। इस सबके लिये धन की आवश्यकता को स्वय समझा जा सकता है। यदि इसे पूर्ण न किया गया तो इस ज्योति के बुझ जाने की सभावना भी हो सकती है।

अत इस रणोद्यान को पल्लवित, प्रफुल्लित और फलित रखना हम सब आर्यों का और हिन्दुत्व पर गर्व करने वाले धनीमानी सदगृहस्थो का और आर्य सस्थाओ का उत्तरदायित्व है। इस आर्य वैदिक मिशन घाना को आर्य प्रतिनिधि सभा, दक्षिण अफिका की तरफ से प्रतिवर्ष करीब पाच हजार रुपए का वैदिक साहित्य मुफ्त मे भेजा जाता है तथा प्रतिवर्ष करीब २५ हजार रुपयो की सहायता भेजी जा रही है। आशा है भारत के और विदेशो मे स्थित उदारदाता धनीमानी लोग इस कार्य मे अपना हाथ बटायेंगे तथा नैरोबी लागोस या लडन मे प्रवास करने वाल विद्वान एव उद्योग पति और प्रवासी लोग इस केन्द्र की भी मुलाकात करेगे।

यह प्रसन्नता की बात है कि घाना सरकार ने प० रेस्टन चार्ल्स एनकोह को विदेशी सहायता पाने की स्वीकृति दी है। उनका पता है—

प० रेस्टन चार्ल्स एनकोह, आर्य वैदिक मिशन, आकरा नोर्थ घाना, वष्ट अफ्रीका।

—नरदेव वेदालकार
35 Cross Street Durban-4001
South Africa

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ की मध्यप्रदेश के थांदला (जिला झाबुआ) में गतिविधियां

चिरकाल से वनवासी क्षेत्र की कन्याओं को शिक्षित करने तथा धार्मिक चेतना जगाने हेतु एक वन कन्या आश्रम की आवश्यकता अनुभव की जा रही थी। उस कार्य को गति देने के लिए एक आश्रम (भवन) की वनवासी क्षेत्र में ही आवश्यकता थी, इसके लिए एक दानी महिला श्रीमती कमला जी सूद, जोकि पहले ५ वर्षों से वनवासी क्षेत्र में बालवाड़ियों के संचालन हेतु आर्थिक सहयोग दे रही है, ने सर्वप्रथम दस हजार रुपये का सात्विक दान देकर कार्य प्रारम्भ करने की प्रेरणा दी तत्पश्चात् इस संस्था के हितैषी व कर्मठ कार्यकर्ता श्री बी० एन० चौधरी व श्रीमती शकुन्तला चौधरी ने लुधियाना निवासी दानवीर श्री हरिदत्त जी कुमरा को प्रेरित करके एक लाख रुपये की राशि दान के रूप में प्राप्त कराई। और भवन निर्माण का कार्य प्रारम्भ कर दिया। लगभग १,५०,०००/०० रु० की लागत से भवन बन जाने पर इसका विधिवत उद्घाटन पूज्यपाद श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कर कमलों द्वारा १४ जनवरी १९९३ को मकर संक्रान्ति के पावन पर्व एवं स्व० पं० पृथ्वीराज शास्त्री की प्रथम पुण्य तिथि पर सम्पन्न हुआ। संघ परिवार इन दोनों दानी महानुभावों को धन्यवाद देता हुआ, इनके स्वस्थ-सम्पन्न एवं दीर्घायु की कामना करता है।

कन्याओं के निवास भवन बन जाने पर, इनके लिए विद्यालय भवन की आवश्यकता भी अनुभव की गई। जिसके लिए संस्था की मन्त्री एवं धर्मपत्नी स्व० श्री पृथ्वीराज शास्त्री श्रीमती प्रेमलताजी ने आर्य वीर दल के महामन्त्री श्री राजसिंह जी के सहयोग से दिल्ली के दानवीर श्री बृजकिशोर जी अग्रवाल से प्रार्थना की जिसके फलस्वरूप उदार मन से सेठ जी ने अपनी धर्म परायणा स्व० धर्मपत्नी श्रीमती रामदुलारी जी अग्रवाल की पुण्य स्मृति में स्कूल के भवन निर्माणार्थ तीन लाख रुपये का सात्विक दान देने का संकल्प लेकर दस हजार रुपये की प्रथम किस्त चैक द्वारा देकर कार्य को आगे बढ़ाने की इच्छा व्यक्त की। इसी सन्दर्भ में, मैं और श्रीमती प्रेमलता जी ३१-३-९३ को थांदला गए और विद्यालय भवन के निर्माण का स्थान निश्चित करके थांदला आश्रम के प्रधान श्री परमानन्द जी सोलंकी, श्री रामकृष्ण जी बजाज व अन्य मान्य अतिथियों ने हवन यज्ञ करके मकान की नींव रखने का कार्य आरम्भ कर दिया। जैसा जैसा सेठ श्री बृजकिशोर जी अग्रवाल उत्साहित करते जायेंगे कार्य को गति मिलती रहेगी। आदरणीय सेठ जी ने लगभग छः मास के अन्दर ही अपना वचन पूरा करने का संकल्प लिया है। मैं संघ परिवार की ओर से श्री सेठ जी व उनके परिवार के सदस्यों की स्वस्थ, सम्पन्न, एवं दीर्घायु की कामना करता हुआ धन्यवाद देता हूं।

मैं आर्य भाइयों की सूचनार्थ निवेदन करना चाहूंगा कि इसी अवसर पर उस क्षेत्र में संघ द्वारा चलाई जा रही बालवाड़ियों व आश्रमों के काम काज का भी ब्यौरा लिया गया जो कि सन्तोषजनक पाया गया। आश्रमों व बालवाड़ियों का विवरण सहयोगकर्त्ताओं सहित निम्न प्रकार है :—

ग्राम जहां जहां पर आश्रम व बालवाड़ियां चल रही हैं।

१—मध्य प्रदेश : काकरी डूंगरी, परवलिया, मामल, रामपुरिया, शुजापुर, चिकलिया दौलतपुरा, नरसिंहपुरा, डेडावा, धोसलिया, रामपुरिया व पंचलेड़िया।

२—राजस्थान : बिजियापाड़ा, मोहकमपुरा व सज्जनगढ़।

३—उड़ीसा : पंगसुआ, सलखिया, पाथरगाव, गुडुबदाल, पाकेट और झूटकापाड़ा।

सहयोगकर्ता

१—श्रीमती चांदरानी अरोड़ा द्वारा प्रेरित सहयोगियों की सूची :

क—श्रीमती सुशीला खन्ना, गुरुकुल आश्रम राजेन्द्रनगर, नई दिल्ली।
ख—श्रीमती विमला गुप्ता, ई १८ अमरकालोनी, नई दिल्ली।
ग—श्रीमती दुर्गादेवी चैरिटेबल मेमोरियल ट्रस्ट, नई दिल्ली।
घ—श्रीमती कमला सूद, एन १०५ पंचशील पार्क, नई दिल्ली।
ङ—श्रीमती शकुन्तला (लाला इन्द्र नारायण जी) ए १६ ग्रीनपार्क न.दि.
च—श्रीमती लीलावती बाई, एल. ३०४, पंचशीलपार्क, नई दिल्ली।
छ—अमर कालोनी, नई दिल्ली के सहयोगकर्ता।
ज—श्रीमती शान्ति अरोड़ा ८०/२८ मालवीय नगर, नई दिल्ली
झ—श्रीमती दमयन्ती पाराशर, हांगकांग।
ट—श्रीमती व श्री वीरेन्द्र जी गुप्त, बम्बई।
ठ—श्री रणधीरसिंह जी राठी, हांगकांग।
ड—मिगलानी ट्रस्ट, राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली।
ढ—श्रीमती चांदरानी अरोड़ा, नई दिल्ली।

२—श्रीमती प्रेमलताजी द्वारा प्रेरित सहयोगियों की सूची :

क—श्रीमती प्रेम जी, अमेरिका निवासी।
ख—श्रीमती अग्निहोत्री, कमलानगर दिल्ली।
ग—श्रीयुत राहुल, रानीबाग, दिल्ली।
घ—श्री धर्मजी, रानीबाग, दिल्ली।
ङ—श्री पुनीत जी, रानीबाग, दिल्ली।
च—श्री सुशील जी गैस वाले।
छ—आर्य समाज रानीबाग, दिल्ली।
ज—श्रीमती सुनीता, दिल्ली।
झ—श्री कृष्ण कुमार जी साहनी।
ट—श्रीमती चन्द्रकान्ता जी, रानीबाग, दिल्ली।
ठ—श्री सुदर्शन नारंग, ८३५, ऋषिनगर, दिल्ली।
ड—श्रीमती सुदेश कुमारी आहुजा चैरीटेबल ट्रस्ट, माडल टाउन, दिल्ली

(शेष पृष्ठ १० पर)

दयानन्द सेवाश्रम संघ की गतिविधियां

(पृष्ठ ६ का शेष)

ड—श्री कमल जी, बम्बई ।

च—श्रीमती सगीता सेठ दिल्ली ।

छ—आर्य स्त्री समाज, पश्चिमपुरी ।

ज—श्री निहालचन्द सपरा, रानीबाग दिल्ली ।

झ—श्रीमती लक्ष्मीदेवी शान्तिदेवी रानीबाग दिल्ली ।

ञ—स्त्री आर्य समाज रानीबाग शकूरबस्ती दिल्ली ।

३—श्रीमती ईश्वर रानी द्वारा प्रेरित सहयोगी

क—अशोक विहार आर्य समाज (पुरुष) दिल्ली ।

ख—अशोक विहार स्त्री आर्य समाज दिल्ली ।

ग—श्रीमती राज मल्होत्रा ए १०५, दिल्ली ।

घ—श्री चन्द्रप्रकाश आहूजा दिल्ली ।

ङ—श्री इन्द्रभान कालड़ा दिल्ली ।

संघ के कार्यों को गति देने मे आदरणीया बहिन चादरानी जी अरोड़ा डी ४१, प्रेस इन्क्लेव नई दिल्ली जो कि पिछले २० वर्षों से संघ की नि स्वार्थ सेवा करती आ रही है । आपने भूतपूर्व महामन्त्री स्व० ओमप्रकाश जी त्यागी व स्व० प० पृथ्वीराज जी शास्त्री के साथ धन एकत्र करने का व नागालैण्ड, आसाम राजस्थान उड़ीसा व मध्य प्रदेश आदि क्षेत्रो मे कार्य किया है। बालवाड़ियो व आश्रमो के सचालनार्थ धन जुटाने मे इनका प्रमुख सहयोग रहा है । सन् १९९२ के वर्ष मे तथा इस वर्ष मई माह तक इन्होंने एक बारगी व मासिक सहायता के रूप में एक लाख रुपये से ऊपर एकत्र करने का श्रेय प्राप्त किया है । साथ ही उनके अन्य सहयोगी श्री वेदरतनजी आर्य मालवीय नगर निवासी भी इस संस्था को सहयोग देने मे अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं । आपने भी इस अवधि मे दस हजार रुपये से अधिक एकत्र करके संस्था की सहायता की है । संघ इन दोनो सहयोगियो के प्रति आभार प्रकट करते हुए उनके दीर्घ जीवन की कामना करता है ।

सन ९२ ९३ मे जिन सज्जनो ने ठोस आर्थिक सहायता की है उनकी सूची शीघ्र प्रकाशित करने का प्रयत्न किया जाएगा । आर्य भाइयो से संघ की सहायता की अपेक्षा करता हू ताकि इस संस्था का भविष्य और उज्ज्वल हो सके ।

सहयोगकर्ताओ का पूरा पूरा ब्यौरा देनेका प्रयत्न किया गया है, हो सकता है कि कोई चूक रह जावे । यदि किसी भी सज्जन की दृष्टि मे भूल पता लगे तो कृपया अवगत कराने की कृपा करें ताकि भूल सुधार का प्रयत्न किया जा सके ।

—वेदव्रत महता

महामन्त्री—अ० भा० दयानन्द सेवाश्रम संघ दिल्ली

वैदिक धर्म प्रचार आयोजन सम्पन्न

चतुर्दिवसीय वैदिक धर्म प्रचार दि० ११ से १४ मई तक का समापन आर्य समाज पिपल्यामण्डी मे हुआ । उसकी सफलता के लिये दिल्ली से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री कैप्टिन देवरत्न जी बम्बई से श्री प० सोमदेव जी हरिद्वार से श्री मामचन्द दीपचन्द जी इन्दौर से श्रीमती स्नेहलता जी सोम पधारे ।

दि० १३ को पिपल्या मण्डी मे एक विशाल चल समारोह निकाला गया जिसमे नारायण गढ बूटा कन्नाडा गुडेडी लडा आदि विभिन्न स्थानो के आर्य वीर दलो का भव्य प्रदर्शन हुआ । आस पास के लगभग पाच हजार लोगो ने इस आयोजन मे भाग लिया ।

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री जगदीश प्रसाद सरन, श्री प० सोमदेव जी शास्त्री एव पिपल्या आर्य समाज के प्रधान श्री सत्येन्द्र जी आर्य ने सभी का आभार प्रकट किया ।

—जगदीश प्रसाद आर्य

गलत प्रथा चलती रही

(पृष्ठ २ का शेष)

को तलाक दें। कई युवतियां पाने की जल्दबाजी में लोगों ने अपनी पत्नियों को एक साथ तीन तलाकें देनी आरम्भ कर दीं।

यह चलन जब बहुत बढ़ गया तो हजरत उमर रजि. ने अपने सहयोगियों से मन्त्रणा करते हुए फरमाया कि जिस मामले में लोगों को सोचने समझने का मौका दिया गया था, उसमें वे जल्दबाजी करने लगे हैं, अतः हम क्यों न यही नियम लागू कर दें और उन्होंने यही नियम लागू कर दिया। बस तब से वही नियम लागू हो गया। इस बारे में दलील यह दी जाती है कि चूंकि इस कानून का किसी ने विरोध नहीं किया, इसलिए यह सही कानून है। यहां सवाल यह है कि अल्लाह और पैगम्बरका कानून बड़ा है या एक खलीफा का?

कुछ हदीसों में यह भी कहा गयाहै कि हजरत उमर ने लोगों को सुधारने के लिए यह कानून लागू किया था, जो एक अस्थाई व्यवस्था थी।

क्योंकि यह व्यवस्था पुरुषों के हित में थी, अतः बाद में मौलवी-मुफ्तियों ने हजरत उमर की इस व्यवस्था के आधार पर फतवे जारी कर इसे स्थाई बना दिया। बाद में चार इमामों ने भी इस्लामी कानूनों की व्यवस्था कर इसी कानून पर अपनी मुहर लगा दी। तब से यह माना जाने लगा कि जब किसी का भी इससे विरोध नहीं तो यही कानून लागू रहना चाहिए।

इसके विपरीत अहले हदीस वालों का मानना है कि जब अल्लाह का कानून मौजूद है और उसकी पुष्टि में हजरत मोहम्मद स. अ. के दौर और उनके बाद की हदीस मौजूद हैं, तो किसी इमाम का कानून मान्य कैसे हो सकता है, क्योंकि अल्लाह का कानून सभी कानूनों से ऊपर है। अहले हदीस का यह तर्क चूंकि दमदार है इसलिए इनके द्वारा जारी फतवे को गलत कहने का साहस कोई नहीं करता।

एक साथ दी गई तीन तलाक को एक तलाक मानने का अहले हदीस का यह कदम उन लोगों के लिए वरदान है जो क्रोध, सनक, मजाक या नशे में अपनी पत्नी को तीन तलाक कह कर बाद में पछताते हैं, क्योंकि वास्तव में वह तलाक देना नहीं चाहते थे। ऐसे लोग अहले हदीस से फतवा लेकर अपनी जिन्दगी सुखी बना सकते हैं। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि किसी भी इमाम की विचारधारा का अनुयायी अगर अहले हदीस से फतवा लेता है, तो इसमें कुछ बुराई नहीं।

(नवभारत टाइम्स १३-१४ जून से साभार)

स्वाध्यायान्मा प्रमदः

(पृष्ठ ४ का शेष)

है कि संस्कृत और वेद कठिन हैं? संसार में कठिन कुछ नहीं है, बस, मन की पूरी लगन चाहिए, फिर तो सब काम पूरे हो जाते हैं।

इसलिए आर्यों का कर्त्तव्य है कि यदि वे स्वामी दयानन्द सरस्वती और उनसे प्राचीन मनु, याज्ञवल्क्य, पतञ्जलि, वेदव्यास आदि के कथनो पर थोड़ी भी श्रद्धा रखते हो तो वेद, उपनिषद, गीता, षड्दर्शन आदि उत्तमोत्तम ग्रन्थों का नित्य स्वाध्याय किया करें। जो सज्जन केवल हिन्दी जानते हैं, वे उक्त ऋषियों के ग्रन्थों का हिन्दी के माध्यम (अनुवाद) से स्वाध्याय करें। इससे उन्हें अपनी संस्कृति का ज्ञान होगा एवं उसका परिचय होने से उससे प्रेम होगा और उत्साह की वृद्धि होगी। यदि आर्य जाति संसार में जीवित-जाग्रत रहना चाहती है, तो उसे वेद को आगे करके सब कार्य करने होंगे। यदि आर्य समाज 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' की उक्ति चरितार्थ करना चाहता है तो उसे आचार्य द्रोण के शब्दों में घोषणा करनी होगी —

अग्रतश्चतुरो वेदाः पृष्ठतः सशरं धनुः।
उभाभ्यामपि समर्थोऽस्मि शापादपि शरादपि॥

चारों वेदों को आगे (हृदय में) तथा पीठ पर शरयुक्त धनुष को धारण करके कहना चाहिए कि मैं शाप और शर-संधान (शास्त्रार्थ तथा शस्त्र-संचालन), दोनों में समर्थ हूं, जिसका जी चाहे, परीक्षा कर ले।

इसके बिना कभी भी कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का लक्ष्य सफल नहीं हो सकता, अतः प्रत्येक आर्य का कर्त्तव्य है कि वह प्रतिदिन (चाहे समय थोड़ा ही लगावें) वेद का स्वाध्याय अवश्य करे।

आर्य समाजों के निर्वाचन

आर्य समाज परमानन्द बस्ती बीकानेर—श्री डा० रवीन्द्र जी कुलश्रेष्ठ प्रधान, श्री डा० शिवनारायण आर्य मन्त्री, श्री बसन्तसिंह कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज राऊ इन्दौर—श्री मोहनलाल दुबे प्रधान, श्री कन्हैयालाल जी मुकाती मन्त्री, श्री जगदीश प्रकाश जी कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज अम्बहटा—श्री मोहनलाल सर्राफ प्रधान, श्री अक्षयमित्र वत्स मन्त्री, डा० रामपाल शर्मा पुस्तकालयाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज सीलेर—श्री ओमप्रकाश आर्य अध्यक्ष, श्री राजवीर आर्य मन्त्री, श्री रामभरोस आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज रुड़की—श्री हरीपालसिंह प्रधान, श्री हरिनारायण मेहरोत्रा मन्त्री, श्री शम्भूनाथ जी कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज कृष्णा नगर मथुरा—श्री शिवप्रसाद गुप्ता प्रधान, श्री जनकराज सैनी मन्त्री, श्रीमती लज्जावती कोषाध्यक्षा चुने गए।

आर्य समाज अशोक नगर नई दिल्ली—श्री जसवन्तराय जी ढींगरा प्रधान, श्री मंगतराम जी मन्त्री, श्री मिट्ठनलाल जी कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज रेलवे कालोनी कोटा—महाशय मुकुटलाल गुप्त प्रधान, महाशय करणसिंह मन्त्री, महाशय प्रेमसिंह परिहार कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज कपूरथला—श्री हरिचन्द्र प्रधान, श्री हरिसिंह अहलूवालिया मन्त्री, श्री रोशनलाल कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज रावतभाटा कोटा—श्री महेश जी प्रधान, श्री ओमप्रकाश आर्य मन्त्री, श्री देवप्रसाद पाण्डेय कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज रामपुरा कोटा—श्री प्रहलाद किशन भार्गव प्रधान, श्री भगवती प्रसाद श्याम मन्त्री, श्री कल्याण मलमित्तल कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज शास्त्री नगर भीलवाड़ा—श्री रजनीकान्त कौशिक्य प्रधान, श्री भंवरलाल अमरपाल मन्त्री, श्री नत्थूलाल त्रिवेदी कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज सुलतानपुर पट्टी—डा० रामप्रसाद प्रधान, श्री दर्शनसिंह मन्त्री, श्री श्रीकृष्ण आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य विरक्त आश्रम ज्वालापुर—माता पुष्पावती जी मोंगा प्रधान, श्री यशवन्त मुनि मन्त्री, श्री देवराज शर्मा कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज आर्यनगढ़—श्री कपिलदेव राय प्रधान, श्री राजीव कुमार आर्य मन्त्री, श्री ओमप्रकाश शास्त्री कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज सोरिख (फर्रुखाबाद) का ६१वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

सोरिख। दि. २१ से २३ अप्रैल, १९९३ को आर्य समाज सोरिख का वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस उत्सव में स्वामी प्रकाशानन्द जी, कुलपति, स्वामी सच्चिदानन्द जी, सचिव एवं श्री रामदेव जी, राजीव जी अरविन्द जी तथा अवधेश जी, ब्रह्मचारीगण, गुरुकुल कासगंज (मैनपुरी) के आगमन से चार चांद लग गए। पं. रामबलि आर्य, कानपुर, पं. राजकुमार आर्य एवं भोलाजी आर्य, फर्रुखाबाद, स्वामी आत्मानन्दजी, गुरुकुल विश्वम्भर पुर, स्वामी यज्ञमुनि जी फतेहगढ़ के भजनों एवं उपदेशों की श्रोतागण पर अमिट छाप पड़ी।

अन्तिम दिन रात्रि ९ बजे से १२ बजे तक स्वामी सच्चिदानन्द जी की अध्यक्षता और श्री ओमप्रकाश शुक्ल 'अज्ञातजी' के संयोजकत्व मेंएक स्थानीय कवि गोष्ठी का भी आयोजन किया गया।

वार्षिकोत्सव

—नेपाल आर्य समाज शाखा राजापुर (बर्दिया) का १५वां वार्षिकोत्सव ३ अप्रैल से ६ अप्रैल तक वैदिक यज्ञ समारोह तथा प्रवचन के रूप में मनाया गया। जिसमें प्रथम दिन प्रातः शोभायात्रा निकाली गई। नेपाल आर्य समाज राजापुर के भवन का उद्घाटन गांव विकास समिति राजापुर के अध्यक्ष के द्वारा हुआ। बाजना मथुरा से पधारे स्वामी मोक्षानन्द सरस्वती के ब्रह्मत्व मे ४ दिनों तक यज्ञ तथा प्रवचन हुआ।

प्रधान श्री मुन्नालाल जी आर्य स्वामी मोक्षानन्द जी से वानप्रस्थ की दीक्षा लेकर "महात्मा अग्नि मित्र" बने। सम्पूर्ण कार्यक्रम प्रशंसनीय तथा सफल रहा। —घनश्याम आर्य, महासचिव आ. स. राजापुर

दिल्ली पंजिकृत सं० डी० एल० ११०४६/९३ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२०-६-१९९३) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (G) ९३
R. N. 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U (G) 93 Post in N.D.P.S.O.on 21-6-1993

सम्पादक—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

प्रकाशक—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नई दिल्ली-२

शिकारपुर (बुलन्दशहर) में आर्य वीर दल शिविर

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा बुलन्दशहर के तत्वावधान में जनपद का तीसरा आर्य वीर दल शिविर दिनांक १३ जून से २० जून तक 'आदर्श इन्टर कालेज शिकारपुर" में लगाया जायेगा। जिसमें जिले भर के आर्य समाजों से लगभग २०० आर्य वीरों के भाग लेने की आशा है।

समस्त आर्य जनों से इस परमपुनीत कार्य में तन मन धन से अधिकाधिक सहयोग देने की प्रार्थना है। नवयुवकों में नैतिकता एवं शुद्ध राष्ट्रीय चेतना जागृत करने का यह ही अनुपम साधन है। —धर्मेन्द्र शास्त्री

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित

सत्यार्थप्रकाश पत्राचार प्रतियोगिता

—: पुरस्कार :—

प्रथम : ११ हजार द्वितीय : ५ हजार

तृतीय : २ हजार

न्यूनतम योग्यता : १०+२ अथवा अनुरूप

आयु सीमा : १८ से ४० वर्ष तक

माध्यम : हिन्दी अथवा अंग्रेजी

उत्तर पुस्तिकायें रजिस्ट्रार को भेजने की अन्तिम तिथि ३१-८-१९९३

विषय :

महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश

नोट :—प्रवेश, रोल नं०, प्रश्न-पत्र तथा अन्य विवरण के लिए देश में मात्र बीस रुपये और विदेश में दो डालर नगद या मनी-आर्डर द्वारा रजिस्ट्रार, परीक्षा विभाग सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नयी दिल्ली-२ को भेजें। पुस्तक अगर पुस्तकालयों, पुस्तक विक्रेताओं अथवा स्थानीय आर्य समाज कार्यालयों से न मिलें तो तीस रुपये हिन्दी संस्करण के लिये और पैंसठ रुपये अंग्रेजी संस्करण के लिये सभा को भेजकर मंगवाई जा सकती हैं।

(२) सभी आर्य समाजों एवं व्यक्तियों से अनुरोध है कि इस तरह के हैंडबिल ४-५ हजार छपवाकर आर्यजनों, स्थानीय स्कूल कालेजों के अध्यापकों और विद्यार्थियों में वितरित कर प्रचारबढ़ाने में सहयोग दें।

डा० ए०बी० आर्य रजिस्ट्रार — **स्वामी आनन्दबोध सरस्वती** प्रधान

आषाढ़

वैदिक छात्रा[illegible] का शुभारम्भ देश विदेशों में सनातन संस्कृति को गौरवान्वित करने वाले पं० राजगुरु शर्मा की स्मृति स्वरूप किया जा रहा है। छात्रावास भवन का उद्घाटन सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती करेंगे।

अब तक इस छात्रावास मे ८० छात्रो को प्रवेश दिया जा चुका है। छात्रों को विद्यालयीन पाठ्यक्रम की शिक्षा के अतिरिक्त उन्हें संस्कृत, योग, प्राणा-याम, संगीत, व्यायाम, सन्ध्या हवन एवं राष्ट्रीयता से परिपूर्ण सत्य सनातन वैदिक धर्म की शिक्षा दी जावेगी।

इस अवसर पर प्रातः ९ बजे से एक विशाल शोभा यात्रा का आयोजन भी किया गया है।

स्वामी सत्यप्रकाश जी को वेद वेदांग तथा पं. नरदेव जी स्नातक को वेदोपदेशक पुरस्कार से सम्मानित किया जायेगा

आर्य समाज शान्ताक्रुज बम्बई ने संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान एवं प्रख्यात वैज्ञानिक स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती को १९९३ के वेद वेदांग पुरस्कार से सम्मानित करने का निर्णय किया है। आदरणीय स्वामी जी महाराज ने वैदिक वांग्मय के अनुसन्धान का कार्य करते हुए अनेक ग्रन्थों की रचना तथा वेदों का भाष्य करके अद्वितीय कार्य किया है। आपने अपना सम्पूर्ण जीवन वेदों के प्रचार प्रसार में ही व्यतीत किया है। उनकी सेवाओं के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए उन्हें २५०००/- की थैली, रजत ट्राफी, अभिनन्दन पत्र एवं शाल भेंट कर सम्मानित किया जाएगा।

इसी प्रकार श्री पण्डित नरदेव जी स्नातक डरबन (दक्षिण अफ्रीका) को वेदोपदेशक पुरस्कार १९९३ से सम्मानित किया जाएगा। श्री पण्डित नरदेव जी ने निरन्तर ५० वर्षों तक दक्षिण अफ्रीका में वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार का कार्य किया है। उनके इस समर्पित जीवन और प्रचार के कार्य के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने हेतु उन्हें १५०००/- की थैली, रजत ट्राफी, अभिनन्दन पत्र एक शाल भेंट कर सम्मानित किया जाएगा।

यह निर्णय आर्य समाज शान्ताक्रुज की कार्यकारिणी में पुरस्कार समिति की सिफारिश पर श्री कैप्टिन देवरत्न आर्य जी की अध्यक्षता में किया गया।

यह पुरस्कार समारोह ४ जुलाई १९९३ को आर्य समाज शान्ताक्रुज में किया जाएगा। (कैप्टिन देवरत्न आर्य) प्रधान

आंखों देखी कानों सुनी

आर्य समाज तिलक नगर, नई दिल्ली-१८ का ४३ वां वार्षिक उत्सव २६ ४-९३ से २-५-९३ तक उत्साह पूर्वक चलता रहा। २९ अप्रैल १९९३ को बच्चों की प्रतियोगिताएं हुई। विषय था "मुझे भारत माता की सन्तान होने का गर्व है"। प्रत्येक बालक को अभिव्यक्ति के लिए तीन मिनट का समय दिया गया था। प्रतियोगिता मे अनेकों विद्यालयों ने भाग लिया तथा विजयी छात्राओं को पुरस्कृत किया गया।

३० अप्रैल १९९३ को समूह गान(देश भक्ति)डी०ए०वी० पश्चिम-विहार (शील्ड)सरस्वती बालमन्दिर, जनकपुरी(शील्ड)ने जीती, यज्ञ के ब्रह्मा श्री चन्द्र-शेखर पुरोहित आर्य समाज विकास पुरी थे। आचार्य आर्य नरेश जी के व्याख्यान प्रभावशाली थे। उनकी अकाट युक्तियो को सुनकर लगता था राम-चन्द्र देहलवी बोल रहे हैं। श्री जयदेव चतोई के भजन पुरानी मान्यताओं के महत्व पर थे। परन्तु दिनेश दत्त एवं श्यामवीर के भजन मनोरंजन के लिए लाभदायक सिद्ध हुए। नवयुवकों में उत्साह बना।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

महर्षि दयानन्द उवाच

- कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम अथवा मत-मतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराए का पक्षपात शून्य प्रजा पर पिता-माता के समान कृपा, न्याय दया के साथ विदेशियो का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नही है।
- विद्या का यही फल है कि जो मनुष्य को धार्मिक होना आवश्यक है। जिसने विद्या के प्रकाश से अच्छा जान कर न किया और बुरा मान कर न छोडा तो क्या वह चोर के समान नही है?

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष : ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पसै
वर्ष ३१ अंक २०] दयानन्दाब्द १६९ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९४ आषाढ शु० ८ वि० २०५० २७ जून १९९३

स्व० पं० राजगुरु शर्मा वैदिक छात्रावास का भव्य उद्घाटन समारोह

महू में शानदार शोभायात्रा तथा वृहद यज्ञ

८० विद्यार्थियों का यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न

महू २० जून।

आज आर्य समाज मन्दिर महू के विशाल प्रागण मे स्व० पंडित राजगुरु शर्मा वैदिक छात्रावास का उदघाटन किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने छात्रावास के भव्य भवन का उद्घाटन किया। इसके पूर्व प्रात ७ ३० बजे एक वृहद यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसमे छात्रावास मे प्रवेश लेने वाले ८० विद्यार्थियो का वैदिक मन्त्रोच्चार के साथ यज्ञोपवीत सस्कार किया गया। सभी विद्यार्थियो ने स्वेच्छा पूर्वक यज्ञोपवोत ग्रहण किए। इस अवसर पर हजारो की सख्या मे आर्य नर-नारियो ने पधारकर वैदिक धर्म की जय-जयकार के नारे लगाये जिससे आकाश गु जायमान हो गया।

छात्रावास के कार्यक्रम के पश्चात स्व० प० राजगुरू शर्मा की यादगार मे एक विशाल शोभा यात्रा नगर की प्रमुख सडको से निकाली गई जिसमे सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को एक खुली जीप मे बैठाया गया और नगर के हर चौराहे पर उनका पुष्प मालाओ द्वारा स्वागत किया गया। इस शोभा यात्रा मे हजारो की सख्या मे आर्यनर-नारियो एव बच्चो ने भाग लिया और प० राजगुरू शर्मा की यादगार मे अपना दु ख प्रकट किया।

अब तक इस छात्रावास मे ८० छात्रो को प्रवेश दिया जा चुका है। छात्रो को विद्यालयीन पाठ्यक्रम की शिक्षा के अतिरिक्त उन्हे सस्कृत योग प्राणायाम सगीत, व्यायाम, सन्ध्या हवन एव राष्ट्रीयता से परिपूर्ण सत्य सनातन वैदिक धर्म की शिक्षा दी जावेगी। बालको के सर्वा गीण विकास की यह व्यवस्थित व सरल योजना है।

इस अवसर पर बडी सख्या मे आर्य महानुभावो ने छात्रावास के लिए दान की राशिया लिखाई जिन्हे सूचीबद्ध करके सार्वदेशिक के आगामी अक मे प्रकाशित कर दिया जायेगा। सार्वदेशिक सभा की ओर से सभा प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने ११०००/- रु० की सहायता राशि इस छात्रावास को देने की घोषणा की। एक स्थानीय देवी ने भी इस छात्रावास के लिये अपनी ओर से १०,०००/- रु० की राशि दान स्वरूप देने की घोषणा की।

इस अवसर पर अनेक गणमान्य महानुभावो के अतिरिक्त म० प्र० हाईकोर्ट के पूव न्यायाधीश और इन्दौर विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री उमरावसिंह जी भी उपस्थित थे।

८० परिवारों के ३२५ ईसाई सदस्य वैदिक धर्म में दीक्षित

ग्राम टागरपाली जिला सम्बलपुर के लगभग ३२५ से अधिक सदस्यो ने वैदिक धर्म मे प्रवेश किया। गुरुकुल आश्रम आमसेना के प्राचार्य एव उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी धर्मानन्द जी महाराज की प्रेरणा एव सहयोग से एव गुरुकुल आमसेना के आचार्य स्वामी व्रतानन्द जी के निर्देशन मे गत २७ मई को प्रात सम्पन्न हुए इस शुद्धि समाराह मे ईसाई सदस्यों ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म मे प्रवेश किया।

प्रात: देवयज्ञ का नेतृत्व करते हुए प० विश्वकेशन शास्त्री ने उपस्थित जनता को वैदिक धर्म की विशेषताए समझाई, शुद्धि हेतु पधारे लोगो के अलावा उपस्थित जनता का उत्साह देखते बनता था, इस क्षेत्र के अनेक नवयुवको ने इस अवसर पर यज्ञोपवीत धारण कर मास अण्डा आदि त्यागने का व्रत लिया। स्मरण रहे इस क्षेत्र मे अनेक शुद्धि समारोह सम्पन्न हो चुके है। यह समारोह मदर टेरेसा मिशन के पास उस भूमि पर पूर्ण हुआ जिसे मिशन ने कब्जा लिया था अब वहा मानव सेवा स्कूल है।

शुद्ध हुए लोगो को ओममुनि वानप्रस्थी, श्री सत्यपाल जुनेजा, सभा, कोषाध्यक्ष मोहनदास रावल, जगन्नाथ होता, श्री प्रफुल्ल बेहेरा, धनुर्धर महापात्र आदि आर्य जनो ने उपदेश एव आशीर्वाद दिया।

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सम्पादकीय

बोये पेड़ बबूल के—आम कहां तें खांय ?

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद एक युग बदला और त्याग तथा बलिदान से परतन्त्रता की बेड़ियां तोड़कर स्वतन्त्रता के स्वर्ण विहान में विचरे। उस समय सत्तासीन व्यक्ति के प्रति आस्था-श्रद्धा झलकती थी त्यागमय जीवन था। म० गांधी के सपनो को संजोने का नेताओं में पावन भाव था। राष्ट्र को सुखमय जीवन तथा जीने की कला देना चाहते थे तब व्यक्ति के व्यक्तित्व की एक अलग छाप थी जिसे देखकर जनमानस प्रभावित होता था। म० गांधी बिना प्रार्थना-पूजन किये कोई कार्य भी नहीं करते थे। उसका व्यापक प्रभाव सत्तासीनों पर था।

फिर युग बदला—!

धर्म निरपेक्षता का-जिसमें जीवन में कुछ भी करो, कैसे भी करो, धर्म का उसमें कोई लगाव नहीं ? परिणामतः उन्हीं नेतृवर्ग में बुद्धि विभेद हुआ और तप-त्याग के जीवन में भोग ऐश्वर्य की लालसा जगी।

मुझे स्मरण है आजादी के बाद प्रथम विधान सभा उ० प्र० की बनी थी। मुरादाबाद के पं० शंकर दत्त शर्मा विधायक बनें थे। विधान सभा की समय समाप्ति पर झोला लेकर नरही बाजार से साग-सब्जी ले आकर भोजन बनवाते थे। उस समय विधायक को दैनिक भत्ता जो भी मिलता था उसमें मकान का किराया, बिजली आदि काटकर भोजन व्यय मिलता था। यदि विधायक मकान का प्रयोग नहीं करता था तो सरकारी ताला लगा होता और न पलंग, कुर्सी, दरी खराब होती न अपव्यय होता था फोन तो केवल सारे बरामदे में एक ही था।

आज परिस्थितियों ने सुविधा का युग दिया तो मकान, बिजली, पानी, टेलीफोन, डाक्टरी सुविधा सब निःशुल्क दिया गया। ऐश-आराम की जिन्दगी बीतने लगी। फिर त्यागी-बलिदानी व्यक्ति किनारे किये गये और जागीरदार, जमींदार, जातिवाद, पूंजीवाद को बढ़ावा मिला। त्यागवाद-भोगवाद में बदल गया। जिस धर्म के नाम से व्यक्ति डरता था वह निरपेक्षता में चला गया।

उस समय का चुनाव थोड़े में होता था दो-चार गाड़िया, थोड़े से धन से पूरा चुनाव हो जाता था। फिर तिकड़म का युग आया और नेताओ ने पूंजीपतियों के घर देखने शुरू किये। चुनाव में उन्हीं पूंजीपतियों, उनके दलालो, जागीरदारो में सत्ता का लोभ सम्वरण न हो सका। परिणामतः आज माफिया गिरोह, डकैत और हर्षद महता जैसो के हाथों में सत्ता पनप रही है।

याद कीजिये-त्यागवाद पर प्राप्त सत्ता आज भोगवाद पर चल रही है चुनाव में लाखों व्यय करके सरकार के कागज झूठे भरे जाते हैं कैसा नियमों का उल्लंघन—किस-किस को याद कीजिये, किस-किस को रोइये।

यदि त्यागी-बलिदानी कांग्रेस में थे, तो आचार्य नरेन्द्रदेव, जयप्रकाश लोहिया, कृपलानी जैसे तपे हुए नेता विरोध में बैठकर मार्ग दर्शन देते थे जनता में इसका व्यापक प्रभाव था। जब आप धर्म सापेक्ष थे तो नियत में भी अन्तर नहीं था जब आप धर्म निरपेक्ष हुए तो बदनियत हुए और इन पूंजीपति दलालों से मिलकर खेलने लगे। अब चुनाव हजारों में नहीं लाखों-करोड़ो में सम्पन्न होते हैं। यह सिलसिला आज से नहीं कई दशकों से पनपा कर चलाया जा रहा है। सत्ता के गलियारे में धर्मतत्व न लेकर माफिया गिरोहों से सरकार बन रही है। उत्तर प्रदेश इसका उदाहरण है।

म० गांधी के दिये सपनों को एक तरफ रखकर पुनः विदेशी चाल-ढाल में देश को धकेला जा रहा है। पी० एस० ४८० की राशि पर इसाइयत को बढ़ावा मिला और आज देश खतरे में है। दूसरी ओर पैट्रोल डालरों के बल पर इस्लाम देश में घुसकर नंगा-नाच कर रहा है। यह दो खतरे ऐसे हैं जिनसे जूझकर आजादी ली और पाक० बना।

हर्षद महता जैसे और विदेशी ताकतों के हाथों में पड़कर देश दिवाला की ओर जा चुका है। जिनके हाथों हम बिक कर चल रहे हैं, वह विदेशी एजेन्ट हैं। हम सत्ता के लोभ में चोर-उचक्कों के हाथों में खेल रहे हैं।

हमारी पार्टियों के नियम धर्म थे। प्रार्थना, उपासना, खादी का श्वेत वस्त्र एक पहचान थी। बदले और इतना बदले कि हमारा स्वरूप ही बदल गया।

भाषा, वेष, भाव, विचार, खराब, अंग्रेजियत सभी बदल गया। परिवर्तन के नाम पर हम अपने अस्तित्व को ही खो बठे। फिर कैसे कल्पना कर सकते हो हम देश को स्वर्ग बनायेंगे।

कहां क्रान्तिकारी जीवन जिसमें सत्ता पैरों में थी और त्यागवाद के नाम पर झोंपड़ी मे बसकर म० गाधी का राम राज्य लाना चाहते थे-परन्तु

"विनायकं प्रकुर्वाणो रचयामास वानर" !

गणेश जी बनाने चले थे बन्दर बना दिया पढ़ा-लिखा इन्सान आज स्वयं तो मरेगा ही पर इस विशाल भूतल का भी विनाश करके ही दम लेगा।

अब तुमने त्यागवाद को दफनाया है तो माफिया दलाल हर्षद महता व बोफोर्स काण्ड एक नहीं अनेक पैदा कर दिये हैं। फिर कैसे सोचते हो कि देश को रसातल मे न लेजाकर स्वर्ग समान बनाओगे।

सोमयज्ञ विकास के लिए या विनाश हेतु

विद्वान इस पर विचार करें।

य. शास्त्र विधि मुत्सृज्य वर्तते काम कारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति न शान्ति न परांगतिम् ॥

विधि अनुसार शास्त्रानुसार किया गया कार्य सिद्धि को प्राप्त कराता है शान्तिदायक भी और परमगति को भी प्राप्त कराता है। शास्त्रविधि को छोड़ कर जो कार्य किया जायगा वह कदापि भी न परमगति को प्राप्त करायेगा और न जीवन में शान्ति ही प्रदान करेगा।

आज भारत में राजनीतिक नेता नए भगवानों के पीछे सिद्धयर्थ भाग रहे हैं और जनता का अरबों रुपया पानी की तरह बहा रहे हैं परन्तु मिला क्या ?

चाहे जो भी दावे करें, कितनी भी दलीलें दे, क्या चन्द्रास्वामी ने अयोध्या में जो कथित अनुष्ठान किया वह किसी भी अर्थ में, 'सोमयज्ञ' नहीं था। सोमयज्ञ का अनुष्ठान दो दिन का नहीं किन्तु कई वर्षों का तप-त्याग पूर्वक किया गया अनुष्ठान है। ऐसे ढोंगी, कपटी-छली लोगों के बस का नहीं, दुःसाध्य और दुष्कर है।

विद्वानों ने इसमें पशुबलि अनिवार्य बताई हैं पर विद्वान विचार करें जब पवित्र कार्य में जीव की हत्या होगी, तो निश्चय ही उसे कष्ट होगा। यह चन्द्रास्वामी स्वयं अपनी पीड़ा अनुभूति करें। म० बुद्ध व महावीर स्वामी से पूर्व भी भगवान और वेद शास्त्र के नाम से बलि दी जाती थी। जिसका घोर विरोध म० बुद्ध आदि सन्तो ने किया था और योग के प्रथम तत्व से पहले अहिंसा तत्व को लेकर "अहिंसा परमोधर्मः' का उद्घोष किया था। पंडितों ने आज यह नारा दिया इस सिद्ध हेतु आवश्यक बलियां पूजन हवन समर्पण-तर्पण जिस किसी को सुलभ नहीं। इसके साथ उस राज्य में जिसमें हवन हो रहा है उसमें वर्षों से अशान्त वातावरण न रहा हो। न ही यज्ञ में कोई विघ्न हो। इसकी पूर्ण व्यवस्था कर ली जाए। जैसे—महर्षि विश्वामित्र यज्ञानुष्ठान, राष्ट्र-भृत यज्ञ के लिए राम-लक्ष्मण दो राजपुत्रों को महाराज दशरथ से रक्षार्थ लाये। जहां इतनी हिंसा न हो सके तो फिर आज यज्ञ कार्यार्थ जानवरों की बलि दी जाय। कहां तक उचित है। अतः इस प्रकार के महायज्ञ महाराजा या देवगण ही सम्पन्न करा सकते हैं। अश्वमेध यज्ञ राष्ट्रमेध ज्योतिष्टोम यज्ञ यह पूर्व काल में महर्षि गण देवता व महाराजाओं के द्वारा किए जाते थे।

नारद मुनि ने विष्णु से पूछा, उत्तर में बताया—

न सर्वसाध्यो यज्ञोऽयं बहुवन्तो बहुवत्तिनाम् ।
महाराजस्य देवो वा यज्ञं कर्तुमर्हं मुने ।
वर्षं सोमलता पानं यजमानः करोति च ।
वर्षैकं फलं भुंक्ते वर्षं येकं जलं मुदा ।
नैवार्थिकमिदं यज्ञं सर्वं पाप प्रणाशनम् ॥

(शेष पृष्ठ ११ पर)

सम्पादक के नाम पत्र—

सार्वदेशिक पत्रिका का महत्व

तर्करत्न लक्ष्मीनारायण शास्त्री, आ० र० महोपदेशक लौकहवा, गोन्डा (उ०प्र०)

मैं बैठा वैदिक ग्रन्थों का अनुशीलन कर रहा था कि इतने में पोस्टमैन ने "सार्वदेशिक पत्रिका" ३० मई, ६ जून ९३ का अंक दिया। मेरी दृष्टि दोनों अंकों पर पड़ गई। मैं वैदिक सिद्धान्तो पर लेख लिखने की धारणा बना रहा था कि अपनी धारणा में परिवर्तन कर "सार्वदेशिक पत्रिका का महत्व" पर लेख लिखने को आतुर हो उठा। आज जब मैंने प्रथम पृष्ठ पर महाराणा प्रताप के चित्र को देखा तो मेरा मस्तक गौरवान्वित हो उठा और सोचा कि काश आज के नेता भी इस राष्ट्रनायक के पथ का अनुसरण करते तो कितना उत्तम होता आज नेता राष्ट्र को बेचने में लगे हुये हैं। जब सृष्टि सम्वत् १,९७, २९,४९०९४ देखा तो मेरा मस्तक वैदिक धर्म पर स्वतः झुक गया। क्योंकि न जाने कितनी आपदाओं को झेलते हुये भी यह पावन भारत इसे अभी संजोये हुये है। वैदिक धर्म के अंगणित ग्रन्थ आक्रान्ताओं के हमाम बन गये अर्थात् जलाये गये। वैसे तो आर्य जगत में अनेक पत्र-पत्रिकायें निकल रही हैं किन्तु उनमें "सार्वदेशिक पत्रिका" का स्थान सर्वोच्च है। यह सर्वोच्च पत्रिका, सर्वोच्च सार्वदेशिक सभा जो विश्व की आर्यसमाजों का केन्द्र है के द्वारा प्रकाशित होती है। पूज्य स्वामी आनन्दबोधजी महाराज प्रधान, डा० सच्चिदानन्द जी शास्त्री मन्त्री की संरक्षता में यह पत्रिका प्रति सप्ताह निकलती है। इसमें लेख-कविता वैदिक सिद्धान्तों तथा सामाजिक सुधार युक्त होते हैं। पत्रिका के लेख-प्रवाह, ओज तथा सरस रहते हैं। ३०, ६ जून के अंकों के, कुछ लेखों के शीर्षक को उद्धृत कर रहा हूं जिसका रसास्वादन कीजिये—दूसरे पृष्ठ पर महाराणा प्रताप की जयन्ती तीसरे पृष्ठ पर स्वामी दयानन्द और उदयपुर नरेश. चतुर्थ पृष्ठ पर भारत और इस्राइल, हज पर सरकारी व्यय पंचम पृष्ठ पर 'प्रताप चरित्रम्' इसके रचयिता डा० सच्चिदानन्द जी शास्त्री हैं जो संस्कृत के उद्भट विद्वान तथा मन्त्री एवं महोपदेशक हैं। आपका यह श्लोक अधिक प्रेरणादायक है:—

वासं पर्ण गृहे क्षितौ च शयनं पत्रेषु यो भोजनम्।
कर्तुं सर्व सुखाभिलाष शमन तावत् प्रतिज्ञातवान्॥
याबन्नैति विमुक्तिमकवर वशात् सोऽयं मिवारः पुनः।
येनाऽऽस्वासमुपासितं व्रतमिदं नम्रः प्रतापः स नः॥

इस श्लोक का अनुवाद मैंने अपनी कविता में इस प्रकार किया है—
"पत्तों की कुटियों में रहना, धरती शयन का व्रत था पाला,
पत्तल पर भोजन करना और इच्छाओं को था त्यागा।
स्वतन्त्र न हो मेवाड़ हमारा अरावली गिरि को पाला,
नमन कोटिशः उस प्रताप को पथ प्रदर्शक वीर हमारा॥"

पृष्ठ ८ पर धर्म निरपेक्षता की विकृति ले० दत्तात्रेय वाब्ले अजमेर इसमें आज के नेताओं की धर्म के वास्तविक अर्थ की अनभिज्ञता को स्पष्ट किया गया है। ये समाजवादी नेता पाश्चात्य धर्म निरपेक्षता के अन्ध भक्त बनकर इसका प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। बारह पृष्ठ पर "प्रताप-प्रतिज्ञा" रचयिता धर्मवीर शास्त्री की छपी है जो नवयुवक-नवयुवतियों को प्रताप-प्रतिज्ञा-प्रेरणा देने वाली है। कुछ पंक्तियों का आनन्द लीजिये:—

"यह झुक न सकेगा सिर पल भर मैं हूं दिनमणि की रश्मिप्रखर।
रे सुनो सभी मैं वीर तीर, लौटा न कभी जो हो अधीर॥

अब ६ जून के अंक के कुछ शीर्षकों का दिग्दर्शन कर लें। प्रथम पृष्ठ पर यज्ञों के नाम पर पशुबलि नहीं होने दी जायेगी दूसरे पृष्ठ पर सोम यज्ञ में बलि रोकने हेतु स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का कड़ा विरोध, तृतीय पृष्ठ पर वीर सावरकर का संक्षिप्त परिचय चतुर्थ पृष्ठ पर "तलाक, तलाक, तलाक कहने से अब तलाक नहीं" जमीयत अहले हदीस के एक तवारीखी फतवे ने तीन बार तलाक कहने से बीवी को तलाक गैर कानूनी है। मुस्लिम जमात के विद्वानों के लिये सोचने को बाध्य करता है। पंचम पृष्ठ पर डा० महेश विद्यालंकार का लेख "पश्य देवस्य काव्यम्" अतीव हृदयग्राही तथा प्रभु की गोदी में बैठकर आनन्द सागर में डुबकियां नित्य लगाकर आनन्द पान करने की प्रेरणा देता है। इसके लेख ज्ञानात्मक तथा सरस होते हैं। मैं जब बाहर से वैदिक धर्म प्रचार करके घर लौटता हूं तो मेरी देवी जी सब अंक सर्वप्रथम मुझे दे देती हैं। कोई भी अंक इसका ऐसा नहीं है जो मेरी दृष्टि से ओझल हुआ हो। मैं अपना व्याख्यान भी इस पत्रिका के आधार पर देता हूं। यह पत्रिका मेरे जीवन के अन्त तक का सोपान है। आर्य जगत में इस पत्रिका का अधिकाधिक प्रचार-प्रसार हो प्रभु से मेरी विनय है। पूज्य स्वामी आनन्दबोध जी महाराज प्रधान तथा डा० सच्चिदानन्द जी शास्त्री मन्त्री चिरायु हों जिससे वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार विश्व में अधिक हो। मैं अब आजीवन सदस्य इस पत्रिका का होने जा रहा हू। अभी वार्षिक ग्राहक था। मेरा अन्तःकरण आजीवन ग्राहक बनने की प्रेरणा दे रहा है। पत्रिका वैदिक सिद्धान्तों से परिपूर्ण है और आर्य जनों के लिये अतीव लाभकारी है।

हिन्दी न जानने वाला सूरीनाम की संसद में नहीं पहुंच सकता

पारामारिबो, १४ जून। भारत में चाहे यह जरूरी नहीं हो लेकिन सूरीनाम में कोई भी भारतवंशी अगर बढ़िया हिन्दी नहीं जानता तो वह यहां की संसद मे नहीं पहुंच सकता।

सूरीनाम की संसद में जितने भी भारतवंशीय सदस्य हैं, वे धारा प्रवाह हिन्दी बोलते हैं। उनकी हिन्दी शुद्ध, मुहावरे दार और प्रभावशाली है। चुनाव में हिन्दी बोले बिना किसी का गुजारा नहीं, हालांकि पुराने मालिकों की भाषा डच सूरीनाम की राजभाषा है तथा अफ्रीकी मूल के लोग क्रियोल भाषा बोलते हैं। फिर भी समस्त भारतवासी आपस में या तो हिन्दी का प्रयोग करते हैं या मैथिली, भोजपुरी और अवधी में बोलते हैं। संसद की पहली भारतवंशी महिला सांसद सुश्री इन्दिरा ज्वाला प्रसाद की हिन्दी सुनने लायक है।

सूरीनाम की संसद मे बहस प्रायः डच भाषा में ही होती है, लेकिन अगर कोई हिन्दी में बोलना चाहे तो मनाही नहीं है। संसद अध्यक्ष चाहे तो अनुमति दे सकता है। सूरीनाम के राष्ट्रपति श्री रोनाल्ड वेनेशियान ने कहा कि "अगर हमारी संसद में लोकभाषाएं चलें तो मुझे खुशी होगी. लेकिन छोटा देश होने के कारण अभी तक वैसी व्यवस्था नहीं बन पाई है। उन्होंने कहा कि हम इस मुद्दे पर गम्भीरता से विचार कर रहे हैं कि अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्कों के लिए सिर्फ डच पर निर्भर रहे या हिस्पानी, फ्रांसीसी और अंग्रेजी को भी मौका दें।

यहां पाठशालाओं मे 'पहले डच, फिर हिस्पानी और अंग्रेजी भी पढ़ाई जाती है। सरकारी स्कूलों में अभी हिन्दी नहीं पढ़ाई जाती। सुरीनाम में हुए अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन के बाद राष्ट्रपति वेनेशियान ने आश्वस्त किया है कि ये हिन्दी पढ़वाने की व्यवस्था भी करवा सकते हैं। "हिन्दी परिषद" के प्रयत्नों से हजारों बच्चे यहा नियमित रूप से हिन्दी सीखते हैं। आर्य समाज और सनातन धर्म की पाठशालाओं में भी बच्चों को हिन्दी पढ़ाई जाती है।

पारामारिबो की अनेक सड़कों के नाम इन्दिरा गांधी, लखनऊ, पटना, कश्मीर की याद दिलाते हैं सूरीनाम दूरदर्शन पर रामानन्द सागर की रामायण इतनी लोकप्रिय हो गई है कि जब वह दिखाई जाती है तो यहां सारा कामकाज ठप्प हो जाता है। तीन प्राइवेट रेडियो निरन्तर हिन्दी के कार्यक्रम प्रसारित करते हैं। गली-गली में भारतीय भजन और गानों की गूंज सुनाई पड़ जाती है।

हरिजन पुजारी को हाथों-हाथ लिया पटना के भक्तों ने

पटना, १४ जून। बिहार के भक्तो ने पटना रेलवे जंक्शन स्थित महावीर मन्दिर के पहले हरिजन पुजारी को हाथों हाथ लिया है। कल रविवार को समारोह पूर्वक अयोध्या के सन्त फलाहारी सूर्यवंशी दास को इस मन्दिर का पुजारी नियुक्त किया गया था। समारोह के बाद से ही नए पुजारी के पैर छूकर प्रणाम करने वालों और उनके हाथ का चरणामृत प्रसाद लेने वालों का तांता लगा हुआ है। इन भक्तों में सवर्ण भी शामिल हैं।

रविदास (चमार) जाति से आने वाले सूर्यवंशी दास उत्तर प्रदेश के मऊ जिले के हलधरपुर थाने के तरवाडीह गांव के रहने वाले हैं। उनकी स्कूली शिक्षा नवीं कक्षा तक हुई है। संस्कृत का ज्ञान भी उन्हें ज्यादा नही है। लेकिन उन्होने रामचरित मानस और पुराणों का अध्ययन किया है। पटना आने से पहले वे अयोध्या में रविदास मन्दिर के पुजारी थे।

श्री दास अपने बचपन से ही आध्यात्म की ओर मुड़ गए थे। अपने घर के सामने बने महावीर मन्दिर आश्रम में वे श्रीनंदन साधु के सम्पर्क में आए। इनके पिता नगीना दास कोलियरी में नौकरी के बाद रिटायर होकर अपने गांव मे रह रहे हैं। महावीर मन्दिर (पटना जकशन) न्यास समिति के सचिव किशोर कुणाल (डी आई जी सी आई एस एफ) की लम्बी कोशिश के बाद श्रीमठ काशी के सन्तराम नरेशाचार्य ने श्री दास को पटना भेजा। श्री दास ने पिछले बारह साल से अन्न ग्रहण नहीं किया है। वे फलाहारी हैं।

सूर्यवंशी दास इस बात से बेखबर हैं कि बिहार में हरिजनों को पुजारी बनाने का मामला राजनैतिक हो गया है और इस सवाल पर काफी हंगामा हो चुका है। श्री दास का कहना है कि—"पुजारी पुजारी होता है। वह हरिजन हो या ब्राह्मण। इसमे फर्क नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि साधु बनने के बाद उसकी जाति समाप्त हो जाती है।'

पिछले साल के अन्त और इस साल के शुरू के महीनों में बिहार के मंदिर मठो में हरिजन पुजारी और महंत बनाने को लेकर जनता दल ने एक अभियान छेड़ा था। पटना का महावीर मन्दिर भी उसकी सूची में था। यही नहीं चार शंकराचार्यों तक के नाम घोषित कर दिए गए थे। इनमें से एक प्रदेश जनता दल के अध्यक्ष रमई राम भी थे। रमई राम को पटना स्थित महावीर मन्दिर का महन्त बनाने की घोषणा भी हो गई थी। चार शंकराचार्यों में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के एक विधायक और एक कार्यकर्ता थे। बाद मे जनदा ने इस मुहिम से अपना हाथ खींच लिया।

—अली अनवर

चमत्कार और साईं बाबा

सत्य साईं बाबा और चमत्कार एक दूसरे के अनन्य पर्याय हैं। इन चमत्कारों के चलते यहां उनके भक्त उन्हें भगवत्पुरुष की गरिमा देते हैं, वहीं उनके आलोचक उन्हें 'बाजीगर' और 'मदारी' मानते हैं। आंध्र प्रदेश के अनन्तपुर जिले में चित्रवती नदी के तट पर बसे पट्टपर्ती नामक गांव में पेंद्दवेंकप्पा राजू नामक जौहरी के घर २३ नवम्बर, १९२६ को जन्मे सत्यनारायण (साईं बाबा का मूल नाम) के साथ चमत्कारों के किस्से शुरू से ही जुड़ने लगे थे। पिता के अनुसार जब वह गर्भ में थे, तभी घर में रखे वीणा, मृदंग, मंजीरे आदि अपने आप बजने लगते।

लोगो की खोयी चीजो का पता बता देने के कारण बचपन में ही उनकी ख्याति चमत्कारी बालक के रूप में फैल गयी। २३ मई १९४० को उन्होंने स्वयं को 'सत्य साईं बाबा' घोषित कर दिया। इसी दिन उन्होंने खुद को शिरडी के साईं बाबा का पुनर्जन्म भी करार दिया। तब से उन्होंने चमत्कार को ही अपने प्रचार का जरिया बना लिया। शिरडी के साईं बाबा की तरह वह भी विभूति (धूनी) बांटने लग गये। लेकिन इसे वे अपने हाथों से आविर्भूत करते हैं। दाहिने हाथ को ऊपर हवा में उठाकर एक झटके से वह मुट्ठी बन्द करते हैं और विभूति प्रकट हो जाती है।

विज्ञान की कसौटी पर उनके चमत्कार कभी खरे नहीं उतरे, किन्तु जीवन भर वह चमत्कार ही चमत्कार करते रहे। भक्तों के अनुसार पत्थर को मिश्री में बदलने, मुर्दे को जिलाने, पानी खौलाकर पूड़ी तलने, गूंगे को वाणी देने, मुंह से शिवलिंग पैदा करने, आंधी-तूफान लाने, हवा से मूर्तियां पैदा करने आदि अनगिनत चमत्कार उनसे संभव हुए हैं।

अपने 'चमत्कार के लिए सुपात्र, उचित अवसर और उपयोगिता को जरूरी मानने वाले साईं बाबा का कहना है—"मैं केवल प्रदर्शन के लिये चमत्कार नहीं करता। जब आवश्यकता होती है, तब चमत्कार स्वयं घटित हो जाता है।'

स्वयं को भगवान कहने वाले बाबा के चमत्कार आजकल यदा-कदा ही दिखते हैं। इसकी वजह यह है कि उनके जीवन का यह दौर उपदेशों का है। अपने लिए उन्होंने तीन चरणों का कार्यक्रम घोषित किया था। पहले १६ वर्षों तक लीला (बचपन के चमत्कार), अगले १६ वर्षों तक महिमा (गम्भीर चमत्कार) और उसके बाद के वर्षों में उपदेश।

दया और सत्य-दयानन्द के दो नेत्र

भारतीय ज्ञानपीठ के कार्यकारी निदेशक, संस्कृत के प्रख्यात विद्वान डा० पांडुरंगराव जी के द्वारा आकाशवाणी दिल्ली से दिनांक १० जून १९९१ को विदेश प्रसारण हेतु स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन चरित्र पर जारी वार्ता।

आर्य समाज के संस्थापक, आर्ष-चिंतन के उन्नायक, वेदविद्या के विवेचक और सच्चे अर्थों में समाज-सुधारक स्वामी दयानन्द सरस्वती का प्रादुर्भाव भारत के सांस्कृतिक इतिहास में एक सुख-स्मरणीय घटना है। उन्नीसवीं शताब्दी के प्रथम चरण के अन्त में सन १८२४ में गुजरात के धर्मनिष्ठ शैव परिवार में जन्मे मूलशंकर त्रिवेदी ने आठ वर्ष की आयु में ही अपने पिता अंबाशंकर के श्रीचरणों में बैठकर वेद का समग्र, गहन और विवेकशील अध्ययन किया। तेरह वर्ष की आयु में शिवरात्रि के दिन विधिवत उपवास का व्रत रखकर रात भर शंकर की मूर्ति के सामने ध्यानावस्थित मुद्रा में मूलशंकर ने प्रजागर जागरण किया। आधी रात के बाद जब एक चूहा शंकर की मूर्ति पर चढ़ाये गये नैवेद्य को अपना खाद्य बनाकर प्रतिमा को निष्प्रभ और कलुषित बना रहा था तो मूलशंकर के मूलाधार में जागृति की निर्मल भावना उदित हुई। शंकर की निष्क्रिय और असहाय स्थिति पर दया के साथ-साथ मृत्युंजय शंकर के वास्तविक स्वरूप का साक्षात्कार करने की तीव्र लालसा मूलशंकर के मन में जागृत हुई। वैदिक चिंतन के बल पर प्रत्येक प्राणी के भीतर शिवतम रस के रूप में प्रतिष्ठित ईश्वर को मूलशंकर ने अपने मन की आखों से देखा। भौतिक चक्षुओं से वंचित, पर आत्मदर्शन में चरितार्थ स्वामी विरजानन्द की शुश्रूषा मे मूल शंकर को आत्मा के सच्चे प्रकाश का परिपूर्ण अनुभव हुआ और इसी प्रकाश ने मूलशंकर को स्वामी दयानन्द सरस्वती के रूप मे परिणत किया और उनकी जिज्ञासा को सत्यार्थ प्रकाश बना दिया।

इससे पहले अपनी बहन और चाचा के आकस्मिक निधन ने मूलशंकर को निधनपति शंकर का आराधक बना दिया और स्वामी पूर्णानन्द के यहां उन्होंने संन्यास की दीक्षा ग्रहण की। घर का मोह, पारिवारिक सुख का लोभ, ऐहिक वैभव-सब कुछ छोड़कर तरुण तपस्वी स्वामी दयानन्द सत्य की खोज में निकले। वेद की ऋचाएं स्वामी जी के मानस में अपने सच्चे अर्थ का प्रकाश प्रसारित करने लगीं। महर्षियों की महती मेधा से प्रसूत मननीय वेदमन्त्रों की मूल भावना को समझने और समझाने मे स्वामी जी ने अपना शेष जीवन व्यतीत करने का शिवसंकल्प कर लिया और उनके गुरु स्वामी विरजानन्द ने भी उनसे यही प्रतिज्ञा अपनी गुरु दक्षिणा के रूप में मांगी। वेद और व्याकरण स्वामी दयानन्द सरस्वती के अध्ययन, मनन और अनुशीलन के प्रमुख क्षेत्र रहे। वेद के नाम पर जो असत्य आचरण और अभद्र व्यवहार समाज को दूषित कर रहा था और अन्धविश्वासों के कारण सत्य का प्रकाश साधक समाज के लिए दुर्लभ बनता जा रहा था, उससे स्वामी जी का मन क्षुब्ध हुआ। इसके साथ ही विदेशी व्यामोह के कारण वेद विद्या के प्रति जनमानस में जो अनास्था प्रबल होती जा रही थी, उससे भी स्वामी जी अत्यन्त चिन्तित थे।

सत्य का प्रकाश प्रसारित कर असत्य, अनाचार और अनास्था के अंधकार का निराकरण और अनावरण करने मे स्वामी जी दिन रात लग गए। सन १८५५ में हरिद्वार में लगे कुंभ मेले में जाकर उन्होंने पाखण्ड खंडिनी पताका फहरा दी। काशी, कलकत्ता, मथुरा, जोधपुर, बम्बई आदि कई स्थानों में जाकर स्वामी जी ने सत्य का प्रचार किया, वेद के परमार्थ को समझाया, धर्म को अधर्म बनाने वाले कर्मकांड के आडम्बर का खण्डन किया, वेद की प्रामाणिक आराधना पर बल दिया, ईश्वर को वेदमन्त्रों के आधार पर परिभाषित करने का प्रयास किया और अग्नि की आराधना और वेदमन्त्रों का पाठ-दोनों को संबल बनाकर मानव जीवन में दया, आनन्द, सत्य, निष्ठा, परोपकार, स्वाध्याय, सौहार्द सौशील्य, सात्विकता, संयम आदि सद्गुणों को प्रतिष्ठित और प्रोत्साहित करने का स्तुत्य कार्य स्वामी जी ने आरम्भ किया। वैदिक सत्य ही परम सत्य है और वेद पुरुष ही परमेश्वर है—यही स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन दर्शन का सार है।

सूर्य, चन्द्र और अग्नि के रूप में समस्त चराचर जगत में निरन्तर व्याप्त परम तेज ही परमात्मा है, उनकी कोई मूर्ति नहीं है, सभी प्राणी उनके प्रतिरूप हैं। यही विश्वजनीन ईश्वर भावना स्वामी जी के सन्देश का सार है।

महर्षि दयानन्द के लिए सर्वप्रिय वेद मन्त्र है—

विश्वानिदेव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आसुव॥

हे सूर्य देवता, तुम सब कुछ देने और लेने में सर्वसमर्थ हो। तुमसे यही प्रार्थना है कि इस संसार मे जो भी बुरा है, तुम उसको हटा दो, जो कुछ अच्छा है, वह हमें दे दो।

इसी सद्भाव को लेकर स्वामी जी की सत्ययात्रा सत्यनिष्ठा के साथ सम्पन्न हुई। लगभग ६० वर्ष के जीवनकाल में स्वामी जी पहले २२ वर्ष मूल शंकर ही रहे, संन्यास की दीक्षा ग्रहण करने के बाद सत्य की खोज में उन्होंने पूरे सत्रह वर्ष बिताये। चालीस वर्ष की आयु में सत्यार्थ का प्रकाश वितरित करने का कार्य प्रारम्भ किया और १० अप्रैल १८७५ को आर्य समाज की स्थापना हुई। इस प्रतिष्ठित संस्था की स्थापना की आधारशिला के रूप में स्वामी जी ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना बिल्कुल एक वर्ष पहले १८७४ में की आर्यसमाज के लिए यह प्रामाणिक आधार ग्रन्थ है। स्वामी जी की आर्य संस्कृति की परिकल्पना इस ग्रन्थ के चौदह समुल्लासों में सरल सुन्दर और संतुलित शब्दों में वर्णित है। वेद मन्त्रों के प्रचुर-उद्धरण देते हुए स्वामी जी अपने मत का समर्थन करते हैं, पर सारी व्याख्या आर्य भाषा हिन्दी में है ताकि आम आदमी उसको समझ सके। जिस हिन्दी को आज हम राष्ट्रभाषा, राजभाषा, सम्पर्क भाषा आदि लौकिक नामों से प्रचारित करते हैं, उसको दयानन्द जी ने आर्यभाषा का गौरव प्रदान किया था और इसे आर्यचिंतन का सशक्त वाहन बना दिया था। हिन्दी को सार्वदेशिक रूप देने का पहला प्रयास स्वामी दयानन्द जी का ही था। महात्मा गांधी महर्षि दयानन्द को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहते हैं :

"महर्षि दयानन्द ने धर्म जागृति बढ़ाई। आर्य संस्कृति का, वेदाभ्यास का, संस्कृत भाषा का, हिन्दी का प्रेम बढ़ाया। अस्पृश्यता रूपी कलंक को धोने का प्रयत्न किया। ऐसे सब कार्यों के लिए महर्षि का स्मरण चिरस्थायी रहेगा, इसमें कोई सन्देह नहीं है।"

सन् १९३३ में पर्णकुटी पूना में महात्मा गांधी द्वारा व्यक्त किए गए ये विचार महर्षि दयानन्द का सम्पूर्ण चित्र हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं। स्वामी दयानन्द का पार्थिव शरीर ३० अक्तूबर १८८३ को पांच तत्वों मे लीन हो गया। आर्य समाज की स्थापना के बाद केवल आठ वर्ष महर्षि जीवित रहे। इस अत्यन्त स्वल्प अवधि में दयानन्द जी ने जो महत्वपूर्ण कार्य किया है, वह समस्त मानव जाति के लिए चिरस्मरणीय रहेगा।

केवल धार्मिक क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि सामाजिक, शैक्षिक, औद्योगिक और राजनीतिक क्षेत्र में भी स्वामी दयानन्द सरस्वती ने जीवन के शाश्वत मूल्यों को प्रतिष्ठित किया है। आज आर्यसमाज के तत्वावधान में देश-विदेश में जितनी सामाजिक, शैक्षिक और औद्योगिक संस्थाएं सक्रिय कार्य कर रही हैं, उन सबको मूल प्रेरणा मूलशंकर अथवा स्वामी दयानन्द सरस्वती से ही मिली है। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय भारतीय भाषा के माध्यम से संचालित प्रथम विश्वविद्यालय है। स्वामी जी का वेद भाष्य सायण भाष्य के बाद सबसे अधिक प्रामाणिक वेद-भाष्य है। अष्टाध्यायी को केवल व्याकरण तक सीमित न रखकर उसे वेद की प्रामाणिकता प्रदान करने का श्रेय स्वामी दयानन्द को है। सबसे बढ़कर दयानन्द की दया मानव जाति के लिए संजीवनी जीवनधारा है। मनुष्य के हृदय में दया के बीज बोकर स्वामी जी ने सहृदय को सदा के लिए सदय बना दिया है। दया और सत्य दयानन्द के दो नेत्र हैं जो हजारों, करोड़ों नेत्रों को प्रकाश दे सके।

वार्ताकार—डा० पांडुरंग राव

आत्मदर्शन के साधन

—डा० रघुवीर वेदालंकार

मानव जीवन का चरम लक्ष्य आत्म साक्षात्कार परमात्म साक्षात्कार माना गया है। कदाचित इसीलिए याज्ञवल्क्य कहते हैं—इह चेदवेदीत् अथ सत्यमस्ति नो चेदवेदीन्महती विनष्टि'। यदि इसी जन्म में आत्मा-परमात्मा को जान लिया तो ठीक है अन्यथा महान अनर्थ हो जायेगा। आत्मदर्शन का सर्वाधिक प्रतिष्ठित एव प्रामाणिक मार्ग महर्षि पतञ्जलि प्रणीत योग मार्ग है। उपनिषदो मे भी विस्तार से आत्म-साक्षात्कार की बात कही गई है। किन्तु वहा पर अष्टाग योग का नाम नहीं लिया गया। तथा यह आश्चर्यजनक तथ्य है कि योग दर्शन के अष्टाग योग से उपनिषदों में वर्णित आत्मदर्शन के मार्ग की बिल्कुल समानता है। उपनिषदो मे चर्चित ब्रह्म ही योगदर्शन मे 'पुरुष विशेष ईश्वर' कहा गया है। उपनिषदो के अनुसार ब्रह्मदर्शन से पूर्व आत्म-साक्षात्कार होना अनिवार्य है। इसी प्रकार योगदर्शन के अनुसार ईश्वर प्रणिधान से प्रत्यक् चेतनाधिगम अर्थात आत्म स्वरूप दर्शन होता है। योगदर्शन मे ईश्वर का वाचक (मुख्य नाम) ओ३म् के जप से आत्मदर्शन की बात कही है। इसी प्रकार उपनिषदो मे 'ओ३म् ख ब्रह्म, ओमिति ब्रह्म' आदि के द्वारा यही भाव व्यक्त करके कहा गया है कि प्रणव को धनुष बनाकर ब्रह्म की प्राप्ति करनी चाहिए।

ब्रह्म प्राप्ति के साधन—ब्रह्म अथवा ईश्वर किस प्रकार प्राप्त होता है, इस विषय मे उपनिषदो तथा योगदर्शन मे पर्याप्त समानता है। उपनिषदो मे ब्रह्म-प्राप्ति के जो साधन बतलाये गये हैं उनका ही उल्लेख एक क्रमबद्ध पद्धति के रूप मे योगदर्शन मे उपलब्ध होता है। उपनिषदो मे इस प्रकार की सुसबद्ध पद्धति दृष्टिगोचर नही होती। इन शास्त्रो मे ब्रह्म-प्राप्ति के साधन इस प्रकार वर्णित है—

सत्य, तपस्या, ज्ञान तथा ब्रह्मचर्य—

श्वेताश्वतरोपनिषद् तथा मुण्डकोपनिषद में कहा गया है कि आत्मा, सत्य, तप, ज्ञान तथा ब्रह्मचर्य से प्राप्त होता है। इसी प्रकार कठोपनिषद मे भी 'यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति' आदि के द्वारा ब्रह्मचर्य को ब्रह्म-प्राप्ति का उपाय बतलाया गया है। योगदर्शन मे सत्य, तप ब्रह्मचर्य आदि का वर्णन अष्टागयोग के अन्तर्गत किया गया है। तपस्या पर जोर देते हुए योगदर्शन के भाष्यकार व्यास जी कहते हैं—'नातपस्विनो योग सिद्ध्यति'। अर्थात् तप रहित पुरुष का योग सिद्ध नहीं हो सकता क्योंकि कर्म-क्लेश तथा वासना से दूषित चित्त तपस्या के बिना शुद्ध नही हो सकता। उपनिषदो मे भी इसी प्रकार तपस्या पर बहुत अधिक बल दिया गया है। आधुनिक काल मे विलासिता के साथ-साथ योग-साधना का ढोंग करने वालो के लिए यह एक चेतावनी है कि तपस्या के बिना योग सिद्ध नहीं हो सकता।

सम्यक् ज्ञान—

मुण्डकोपनिषद मे सम्यक् ज्ञान को भी ब्रह्मदर्शन का साधन माना गया है। इसका उल्टा असम्यक् ज्ञान है। इसी को योगदर्शन मे अविद्या कहा गया है। पतञ्जलि के अनुसार अनित्य, अशुचि, दु ख तथा अनात्मा मे क्रमश नित्य शुचि, सुख तथा आत्म बुद्धि रखना अविद्या कहलाती है। योगदर्शन मे समाधि की सिद्धि के लिए चित्त की एकाग्रता के विभिन्न साधन योगदर्शन मे गिनाये गये हैं। इन साधनो मे से ही एक साधन है—प्रणव का जप। व्यास जी ने इस सूत्र के भाष्य मे लिखा है कि प्रणव का जप करते हुए तथा प्रणवाभिधेय ईश्वर का ध्यान करते हुए योगी का चित्त एकाग्र हो जाता है। उपनिषदो मे भी इसी प्रकार प्रणव जप पर बहुत बल दिया गया है। योगदर्शन तथा उपनिषदों के अनुसार प्रणव का जप चित्त की एकाग्रता को उत्पन्न करके समाधि लाभ कराता है।

ईश्वर प्रणिधान—

योगदर्शन मे समाधि के उपायो मे ईश्वर-प्रणिधान भी प्रधान उपाय है। प्रणिधान का फल बतलाते हुए योग भाष्यकार कहते हैं कि प्रणिधान अर्थात् भक्ति विशेष से प्रसन्न होकर ईश्वर योगी को अभिध्यान मात्र से अनुगृहीत करता है। यही भावना कठोपनिषद् तथा मुण्डकोपनिषद मे व्यक्त की गई है कि परमात्मा जिस को स्वीकार कर लेता है उसके द्वारा ही प्राप्य होता है। यह एक प्रकार का भक्तियोग है। गीता मे इसका वर्णन इस प्रकार किया गया है—

> अनन्याश्चिन्तयन्तो मा ये जना पर्युपासते।
> तेषा नित्याभियुक्ताना योगक्षेम वहाम्यहम्॥ ९।२२।

पतञ्जलि ने तप स्वाध्याय तथा ईश्वर प्रणिधान के रूप मे इस क्रिया-योग का वर्णन किया है। ईश्वर प्रणिधान को उपनिषदो मे 'धातु प्रसाद' अर्थात् परमात्मा की कृपा के रूप मे भी कहा गया है। श्वेताश्वतर तथा कठोपनिषद् मे समान रूप से एक श्लोक प्राप्त होता है। 'तमक्रतु पश्यति वीतशोको धातुप्रसादान्महिमानमात्मन।'

अर्थात् परमात्मा की कृपा से शोक रहित व्यक्ति उसके दर्शन कर सकता है।

प्रज्ञान—

कठोपनिषद मे कहा गया है कि आत्मा को समाहित चित्त होकर प्रज्ञान के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। इसी उपनिषद मे अन्यत्र अग्रा सूक्ष्मा प्रज्ञा के द्वारा ब्रह्मप्राप्ति की बात कही गयी है। यह प्रज्ञा तथा प्रज्ञान एक ही चीजें हैं। व्यास भाष्य के अनुसार यह प्रज्ञा समाहित चित्त वालो को ही प्राप्त होती है। कठोपनिषद तथा मुण्डकोपनिषद मे अन्यत्र इस बुद्धि को मनीषा कहा गया है। इसके द्वारा परमात्मा का साक्षात्कार होता है—हृदा मनीषा मनसाऽभिक्लृप्तो य एनद्विदुरमृतास्ते भवन्ति।

यह अवस्था ज्ञान की पराकाष्ठा है। यह परम वैराग्य से प्राप्त होती है। योगदर्शन के भाष्य मे इसे ज्ञानप्रसाद नाम दिया गया है। इसके तुरन्त पश्चात कैवल्य हो जाता है। उपनिषदो मे 'ऋते ज्ञानान्न मुक्ति' कहकर इसी ओर सकेत किया गया है। योगदर्शन एव उपनिषदो के अनुसार इस अवस्था मे आत्मा के स्वरूप दर्शन के साथ-साथ परमात्मा का साक्षात्कार भी हो जाता है।
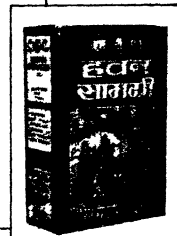
अयोध्या विवाद : हिन्दू संगठन और आर्यसमाज (२)

—सन्तोष 'कश्व'

हम आर्य समाज से ईर्ष्या और द्वेष रखने को मना नहीं करते। खूब रखो, चुप-चुप विरोध भी करो, परन्तु यह तो बताओं कि इस बेचारे 'नमस्ते' ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? 'नमस्ते' आपकी अपनी भाषा का शब्द है। विशुद्ध संस्कृत का है। प्राचीन है। व्यावहारिक और सार्थक है। हमारी अतीत की परम्परा से जुड़ा है। फिर इसे आर्य समाज से क्यों जोड़ते हो?

परन्तु हिन्दुओं की ठेकेदारी संभालने वाले राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ को 'नमस्ते' के स्थान पर 'नमस्कार' ही उचित लगा। अब किस दृष्टि से लगा, यह तो वे ही बता सकते हैं, हमारे तो 'नमस्कार' सुनते-सुनते कान पक गये। एक तो 'नमस्कार' (नमस्कार) में प्रयोग सार्थकता दोष, ऊपर से स-कार का ष-कार उच्चारण। करेला और नीम चढ़ा!

अब यह 'जय श्रीराम' की बीमारी चल पड़ी। कुछ लोग कहते हैं कि यह अभिवादन अर्थ में नहीं है। तो फिर किस अर्थ में है? 'नमस्ते छोड़ो—जय श्रीराम बोलो' का क्या कोई और भी अभिप्राय हो सकता है? फिर यह प्रचार-पट आर्य समाज के भवन पर टांगने का क्या भाव है? संघ का प्रमुख पत्र 'पांचजन्य जहां 'सप्रेम नमस्कार' छपता था, वहां अब 'सप्रेम जय श्रीराम' क्यों छप रहा है।

हम इन बातों का बुरा नहीं मानते, न ही इनसे हमें कुछ लेना-देना है। भावनाओं में बहकर कोई कुछ भी कर सकता है। जो मन में आए कह सकता है। परन्तु यह तो सोचो कि इस प्रकार हिन्दू समाज का कौनसा हित हो रहा है। जहां तक हमारा प्रश्न है, तो 'जय श्रीराम' हो या 'जय भीम', 'सत् श्री अकाल' हो या 'जय श्रीराधे', जय रामजी की हो या जय शिवशंकर की, परस्पर के अभिवादन में इनकी कोई सार्थकता हमें तो समझ आती नहीं।

राष्ट्रोन्नति में आर्य समाज सभी का सहयोगी

इस साधारण से प्रसंग की चर्चा करना तो नहीं चाहता था, परन्तु इस कारण कर दी ताकि आज के प्रमुख हिन्दू संगठन के मानस की एक झलक मिल सके। अपने-अपने ढंग से सोचने में हर कोई स्वतन्त्र है। जो जैसा चाहे, वैसा सोचे। हमारा उससे कोई सम्बन्ध नहीं। कुछ संगठन केवल अपने संगठन के तुच्छ स्वार्थों के लिए ही सोचते और कार्य करते हैं। अब इसमें आर्यसमाज उनका क्या सहयोग करे? कोई राष्ट्रहित का काम हो तो सोचा भी जाए। हर वर्ष बदल-बदलकर एक दो अभियान चलाने से यह तो हो सकता है कि कोई संगठन अपने कार्यकर्त्ताओं को किसी न किसी काम में फंसाए रहे तथा अपने व्यापक धन संग्रह तन्त्र द्वारा लोगों को बहकाकर अपार सम्पदा बटोर ले, परन्तु इस संकुचित दृष्टि से राष्ट्र की हानि ही होती है। धीरे-धीरे संगठन की विश्वसनीयता भी घटने लगती है। अतः हमारा ऐसा मत है कि संस्था को जीवित रखने के लिए आन्दोलन या अभियान नहीं चलाने चाहिए। और न ही किसी संस्था को किसी की प्रतिक्रिया में खड़ा करना चाहिए। आर्य-समाज इस राष्ट्रको पुनः परमैश्वर्यशाली बनाकर सम्पूर्ण विश्व में सच्चे धर्म की स्थापना करना चाहता है, ताकि प्राणी-मात्र का कल्याण हो सके।

जहां तक सहयोग या असहयोग का प्रश्न है तो एक बात हम स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि आर्यसमाज का किसी व्यक्ति, संस्था या देश से कोई विरोध नहीं है। न ही हम किसी के प्रति द्वेष-भाव रखते हैं। किसी संस्था को समाप्त करना भी हमारा ध्येय नहीं है। हम सभी का कल्याण चाहते हैं। सबसे यथायोग्य व्यवहार रखते हैं।

सार्वजनिक हित और राष्ट्रोन्नति के प्रत्येक कार्य में हम हर किसी के साथ गुण-दोष के आधार पर सक्रिय सहयोग करने को सदैव तत्पर रहते हैं। कोई सहयोग मांगे अथवा न मांगे, आर्यसमाज अपना कर्त्तव्य समझकर सहयोग देता है। हां! ढोंग, पाखण्ड, छल, प्रपंच, अन्धविश्वास और ठगी को हमारा कोई समर्थन नहीं है। कुरीतियों और कुनीतियों को हम मिटाना चाहते हैं। आलस्य और प्रमाद को समाप्त करना चाहते हैं। मानव एवं राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति में बाधक प्रथाओं और चिन्तन को विनष्ट करना चाहते हैं

लोग हमारे साथ चलें या न चलें, हमें सहयोग करें या न करें, चाहे हमारा मान हो या अपमान हो, आर्य समाज असत्य पर कदापि नहीं चलेगा। परमेश्वर की सृष्टि में सर्वहितकारी सत्य-पथ पर हमें एकाकी चलना स्वीकार है, सबका विरोध और प्रतिरोध स्वीकार है, उपेक्षा और उपहास स्वीकार है, परन्तु असत्य और पाखण्ड स्वीकार नहीं है। अविद्या, अन्याय और अभाव को हम इस धरती पर नहीं देखना चाहते हैं। इनको हम पनपने नहीं देंगे, क्योंकि इनकी उपस्थिति मानव के अस्तित्व को चुनौती है।

हमारे सुविचारित मत में पाखण्ड से लोग जड़मति होते हैं और अन्ध-विश्वास से आत्मविश्वास नष्ट होता है। यदि कुछ व्यक्ति अथवा संगठन अविद्या, अन्याय और अभाव के प्रचार में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष सहयोग करते हैं तो आर्य समाज उनके साथ नहीं चल पायेगा। कोई बुरा माने या भला हम पाखण्डवाद और अन्धविश्वास को पनपने नहीं देंगे। संकीर्णता और उन्माद को फैलाने से रोकेंगे। मूर्तिपूजा व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की उन्नति में सबसे बड़ी बाधा है। चेतन आत्मा द्वारा जड़ प्रकृति की उपासना आत्मोन्नति में बाधक है। मन्दिर-मस्जिद विवाद राष्ट्रहित में नहीं है।

मूर्खताओं की श्रृंखला

जिसने भी बनाया, जब भी बनाया, अयोध्या में राम का मन्दिर बनाना ही पहली मूर्खता थी। उसको तोड़कर उसे मस्जिद का रूप देने का प्रयास करना दूसरी मूर्खता हुई है। सन १९४७ में भारत विभाजन के साथ ही इस समस्या को सदा के लिए हल न करना तीसरी मूर्खता थी। मन्दिर-मस्जिद विवाद को चार दशक मुक बनाए रखना भी चौथी मूर्खता है। पांचवीं मूर्खता मन्दिर-निर्माण और मस्जिद-रक्षा के नाम पर अपनी-अपनी राजनीतिक स्वार्थ सिद्ध थी। ईंटों के ढांचे (जो ६ दिसम्बर १९९२ को टूट गया) को सम्मान-पूर्वक हटाकर वहां मन्दिर बनाने की बात करना छठी मूर्खता थी। मस्जिद ऐसे ही रहे और उसके समीप ही राम-मन्दिर भी बने, ऐसा कहना सातवीं मूर्खता थी। मन्दिर-मस्जिद विवाद कुछ समय के लिए लम्बित रखे जायें, यह सुझाव देना आठवीं मूर्खता थी। नवीं मूर्खता थी—बाबरी मस्जिद की हर कीमत पर रक्षा करने की गर्वोक्ति। ६ दिसम्बर के बाद भी मन्दिर-मस्जिद विवाद को व्यर्थ में उलझाना और हिन्दू-मुसलमानों की भावनाओं को भड़काना दसवीं मूर्खता है। मूर्खताओं पर मूर्खतायें हो रही हैं। सत्य कहने को कोई तैयार नहीं है।

प्रभु की उपासना से किसको यहां है मतलब।
मन्दिर व मस्जिदों के झगड़े ही उठाना है॥

मर्यादा पुरुषोत्तम राम अयोध्या में ही पैदा हुए थे, इस ऐतिहासिक तथ्य को अस्वीकार करने का कोई कारण नहीं है, परन्तु इसी स्थल पर राम पैदा हुए थे, ऐसा कहना क्या मूर्खता नहीं है? मैं अपने भावुक हिन्दू भाइयों से यह पूछना चाहूंगा कि राम को रामलीला और कृष्ण को कृष्णलीला में नचाने से तुम्हारा पेट नहीं भरा जो यह नया पाखण्ड शुरू किया है। अपने आदरणीय पूर्वजों का सम्मान करना सीखो मेरे भाई! उनके जीवन से प्रेरणा लो, उनके उपदेशों पर आचरण करो, उन्हें बीच बाजार में नचाओ मत। अपने पूर्वजों का तमाशा मत बनाओ। उनके नाम पर धन्धा मत करो।

भारत के प्रदीप्त अतीत को देखते हुए मैं बड़ी ही, विनम्रता से कहना चाहता हूं कि अयोध्या का राम-मन्दिर हमारी 'राष्ट्रीय अस्मिता' का नहीं प्रत्युत 'राष्ट्रीय मूर्खता' का प्रतीक है। कथित बाबरी मस्जिद भी मुसलमानों की मूर्खता का चिह्न है। क्या दोनों पक्ष अपनी-अपनी मूर्खतायें नहीं छोड़ सकते? अतीत की भयंकर भूलों को अपनी अस्मिताओं से जोड़ कर हम किस का भला कर रहे हैं? (क्रमशः)

संस्कार चन्द्रिका के ग्राहकों से निवेदन

संस्कार चन्द्रिका सभी ग्राहकों को प्रकाशित होने पर डाक द्वारा भेजी जा चुकी हैं। आठ दस ग्राहकों की पुस्तकों की वी. पी. वापस आ गई हैं। जिन ग्राहकों को पुस्तक अभी तक प्राप्त नहीं हुई है वे अपना पूर्ण पता सभा कार्यालय में अविलम्ब भेजें जिससे उन्हें पुस्तक भेजी जा सके।

आर्य समाज और विद्यालयों के अधिकारियों से निवेदन है कि अपने पुस्तकालयों के लिए उक्त पुस्तक शीघ्र मंगवाएं। पुस्तक का मूल्य १००) रु० तथा डाक व्यय पृथक।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

पुस्तक-समीक्षा

भक्त हृदय "आचार्य भद्रसेन"

प्रकाशक—मयूर-प्रकाशन
आर्यसमाज सीताराम बाजार दिल्ली-६
मूल्य ५० रुपये

भारतीय परम्परा में नव-जागरण की बेला—महर्षि दयानन्द से लेकर विस्मिल नेता जी आजाद श्रद्धानन्द के बाद भी एक समाप्त न होने वाली परम्परा है उसी शृंखला मे यदि एक कड़ी और जोड़ दें वह है श्री आचाय भद्रसेन जी के नाम की जिनके नाम से ही ज्ञात है कि रैमलदास मे भद्रसेन नाम से विख्यात हुए। राजस्थानी दुनिया से चलकर सिन्ध, पंजाब का पानी पीकर जीवन मे निखार पाया। आचार्य भद्रसेन जी ने शिक्षा के लिये अलीगढ़ हरदुआगंज और काशी में अध्ययन किया। उसी समय स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान हुआ। बस गुरुवर ने पढ़ाने को मना कर दिया और कहा जाओ—शुद्धि प्रचार करो, जिस उद्देश्य हेतु स्वामी जी का बलिदान हुआ उसको पूर्ण करो ? क्या भावना भरी थी हृदय में।

लोकेषणा पदों को मन से विसार दी थी।
दिन रात एक चिन्ता—जाति सुधार की थी।

तिलक युग समाप्ति पर था गांधी युग आ रहा था क्रान्ति की आंधी चली अतः भद्रसेनजी ने वन्देमातरम् व प्रताप बेचकर धैर्य रख कर विद्योपार्जन किया।

जीवन को विडम्बना देखिये—माता-पिता का वियोग और साथ रही बुआ उनकी भी मृत्यु। लेकिन एक दिन बुआ से भी बिना बताये गृह त्याग दिया।

ऋषिवर के गृहत्याग से मिलता हुआ भद्रसेन जी का गहत्याग भी अजीब है। जिज्ञासु जी ने ठीक ही कहा है—

भावों की भीषण ज्वाला को सीने में कौन दबा सकता।
अलबेले दृढ़ संकल्पी को मार्ग से कौन हटा सकता॥

आचार्य पं० भद्रसेन जी आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् वक्ता और सुलेखक थे जीवन का एक लक्ष्य था, ऋषि दयानन्द का मिशन जिसमें सदा तन्मय होकर लगे रहे।

निज कृतित्व के कारण जो आर्य महिमा मण्डित प्रकाण्ड पण्डित थे वे थे भद्रसेन आचार्य।

इन्ही गुणों से युक्त आपका परिवार है उदाहरण हेतु कैं० देवरत्न जी को देखें—आचार्य जी की कृति ही हैं।

"आचार्य भद्रसेन" पुस्तक का पाठक स्वाध्याय कर अनुभव करेंगे कि चरित्र नायक भले ही नेता न थे पर एक सच्चे ईश्वरभक्त, वेद-भक्त कर्त्तव्यनिष्ठ देशभक्त थे ऐसे व्यक्तित्व को पढकर सुधीजन आत्म प्रेरणा लेंगे तभी इतिहास साक्षी बनेगा। प्रकाशक बधाई के पात्र हैं जिन्होंने जनहित में इस सुन्दर कृति को प्रकाशित किया।

—सम्पादक

अपूर्व बलिदानी वीरांगना पन्नाधाय

मेवाड़ के इतिहास की एक स्वर्ण गाथा जान लो।
धाय पन्ना कौन थी इस बात को पहचान लो॥

इतिहास के पन्नो मे पन्ना की निराली शान है।
कोई बतादे विश्व में ऐसा कोई बलिदान है॥

अपने जाये लाल का बलिदान पन्ना कर चली।
संग्रामसिंह के लाल का तत्काल रक्षण कर चली॥

मेवाड़ के इतिहास की जो मान मर्यादा रही।
पन्ना भी सुत बलिदान से आलोक उसमें भर रही॥

पन्ना तेरे यश मान की कैसे उतारे आरती।
तेरा निरन्तर मान तो है कर रही मा भारती॥

तू यदि उदयसिंह की रक्षा का व्रत नहीं ठनती।
राणा प्रताप वीर को यह दुनिया कैसे जानती।

भारत की वीर नारियो पन्ना को तुम पहचान लो।
कोई कहीं निर्दोष की हत्या न हो प्रण ठान लो॥

हे प्रभो ! इस देश को पन्ना सी देवी दीजिए।
राष्ट्र भक्ति हो यहां यह भावना भर दीजिए॥

रचयिता—ब्रह्मप्रकाश शास्त्री
शास्त्री सदन-११/१२४ पश्चिम आजाद नगर दिल्ली-००५१११

विदेश समाचार—

भारत मारीशस सहयोग

सन १८३४ को भारत के बिहार प्रान्त से हमारे पूर्वज मोरीशस आये थे। कूली प्रथा के अन्तर्गत उन्हें बहुत कष्ट सहना पडा था।

समय समय पर भारतीय विद्वान यहा पर पधारते रहे, प्रथम भारतीय विद्वान महात्मा गाधी जी सन १९०१ मे दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटते समय यहा पर पधारे थे। ऐसा सिलसिला नही होता तो प्रवासी भारतीय बरबाद हो जाते।

३ दिनो की यात्रा पर भारत के कृषि मन्त्री श्री बलराम जाखड जी गत २ जून को पधारे थे। यहा पर कृषि के क्षेत्र मे भारत जो सहयोग मोरिशस को प्रदान करने वाला है उसी पर बात विचार करने आये थे। मौके पर मोरिशस के कृषि मन्त्री श्री मदन दल जी और भारतीय कृषि मन्त्री जी ने एक मिलीजुली कृषि सहयोग सधि पर हस्ताक्षर किये। मौके पर श्री जाखड जी ने कहा कि भारत मोरीशस सम्बन्ध बहुत प्रगाढ और पुराना है। यह जो हमारा समझौता हुआ है कृषि के क्षेत्र मे यह एक ऐसा कदम है जो किसानो के लिए और भारत मोरिशस सहयोग के लिए बहुत उपलब्धिया प्राप्त करायेगा, यहा एक नक्शा बदल होगा, किसानो के जीवन का, उनके रहन सहन का उनकी आमदनी का, और हर क्षेत्र का, यह खेती का है, सब्जियो का है फलो का है, दूध उत्पादन का है, चारे का है, चीनी उद्योग का है, इन सारी चीजो मे इतना कुछ करने को है हम उस पर एक दूसरे को देने के लिए सब बात कर चुके हैं, और हम मिल जुल कर काम करेंगे तो एक नया वातावरण पैदा हो जायगा। इससे आमदनी बढ जायगी और हमारी आत्मीयता भी बढ जायगी। एक प्रकार से जो भाईचारा है हमारा उसमे चार चान्द लग जायेंगे। आने वाला जमाना यह देखेगा कि किस प्रकार से भारत मोरिशस हाथो मे हाथ मिलाकर कन्धे से कन्धा मिलाकर उस उज्जवल भविष्य की ओर बढ़ेंगे। मोरीशस के कृषि मन्त्री जी ने उनके प्रति आभार प्रगट किया।

श्री बलराम जाखड जी के साथ गुरुवार ता० ३ जून को भारतीय राजदूत श्री श्याम शरण जी के निवास पर भेंट हुई। जलपान का आयोजन रहा। मौके पर मैंने उनसे कहा कि "विगत वर्ष दिसम्बर मास मे हमारी भेंट आर्य महासम्मेलन मे, नई दिल्ली, भारत के रामलीला मैदान मे हुई थी। उनका भाषण हुआ था। सार्वदेशिक सभा के अध्यक्ष स्वामी आनन्दबोध जी और मन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री जी भी थे।' वे बहुत खुश हुए। हम घुल मिल कर बातें करने लगे। श्री जाखड प० धर्मवीर शास्त्रीधूरा, वाक्वा, मोरीशस मोरीशस के प्रधानमन्त्री श्री अनिरुद्धजगन्नाथ जी और अन्य नेताओ से भी मिले।

—प० धर्मवीर धूरा

आर्य समाज नैरोबी का निर्वाचन

९ मई, १९९३ रविवार, को आर्य समाज नैरोबी का वार्षिक चुनाव सम्पन्न हुआ। जिसमे निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुये।

प्रधान श्री विजय जी बई, वरिष्ठ उपप्रधान श्री सुशील कुमार कोछर उपप्रधान डाक्टर राजेन्द्र सैनी, मन्त्री श्री भगवान दास सोमन, उपमन्त्री श्री देवेन्द्र मोहन मिश्रा, कोषाध्यक्ष श्री रणजीत भल्ला, सह कोषाध्यक्ष श्री अनिल जी कपिला, पुस्तकाध्यक्ष श्री कुलभूषण विद्यार्थी, सह पुस्तकाध्यक्ष श्री डाक्टर मोहन लुम्बा, पूर्व प्रधान श्री स्वर्ण जी वर्मा

अन्तरंग सभा के सदस्य

श्री धर्मेन्द्र जी कपिला, श्री सुरेन्द्र जी विनायक, श्री प्रदीप जी बहल श्री यश पाल सागर, श्री लक्ष्मण जी गुप्ता, श्री डाक्टर रवि शर्मा, श्री प्रीतम जी सैनी, श्री प्रकाश जी वर्मा, श्री डाक्टर सत्यव्रत राम रक्खा, श्री एम, पी पटेल, श्री हरेन्द्र कोछर श्री शरद वर्मा, श्री रोशनलाल खन्ना, श्री राम लाल शर्मा, श्री प्रदीप जी सूद, श्री आर के वर्मा, कुमारी श्यामला भल्ला

आर्य समाज शिक्षा बोर्ड के सदस्य

श्री स्वर्णभूषण जी वर्मा, डाक्टर राजेन्द्र जी सैनी, श्री अनिल जी कपिला, श्री देवेन्द्र मोहन जी मिश्रा

—कुमारी श्यामला भल्ला
मन्त्री, आर्य समाज नैरोबी

आर्य समाज नीदरलैंड आसान में आर्य समाज स्थापना दिवस सम्पन्न

रविवार ११ अप्रैल १९९३ को आर्य समाज मन्दिर नीदरलैंड आसान दमहाख के तत्वावधान मे रेंखनतेस्सैलान २३७ पर आर्य समाज मन्दिर मे आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया, जिसमे पधारे ३०० के लगभग धर्म प्रेमी पुरुष महिलाओ तथा बच्चो ने भाग लिया। विशेष देव यज्ञ के उपरात सभापति श्री पूज्य देवकली जी ने लोगो को सचेत किया कि हम लोगो को यह दिन सदा याद रखना चाहिए कि हम सभी लोग आर्य समाज की सेवा कर आर्य समाज को ऊचे शिखर तक पहुचावें, सब को धन्यवाद देते हुए प्रवचन समाप्त किये।

स्त्री समाज और पुरुषो ने मधुर गान गाया प० श्री अवधबिहारी, प० जगदीश दातादीन, प० बलराम, प० ओमप्रकाश, प० अलगू जी आदि विद्वानो ने वेदो पर गहरा प्रकाश डाला। यज्ञ ब्रह्मा प रामप्रसाद जयजयराम आर्य थे। देवयज्ञ के बाद श्री प रामप्रसाद जयजयराम ने प्रचलित मान्यताओ तथा वैदिक धर्म के सर्वोच्च सिद्धान्तो की तुलनात्मक समीक्षा प्रस्तुत करते हुए सिद्ध किया कि ससार भर मे केवल वेद ही एक सच्चा ईश्वरीय ज्ञान है, जो वास्तव मे, एकेश्वरवाद, मानव के सच्चे परस्पर मातृ भाव तथा सद्गुण, सद विचार तथा सदाचरण धारण करने की प्रेरणा देता है। जो दीपक स्वामी दयानन्द सरस्वती जला गये उसको बुझाना नहीं चाहिए, बाती सूखनी नही चाहिए, सदा ज्ञान और परिश्रम का तेल छोडते रहना हम आर्यों का परम धर्म है। क्योकि हम सभी लोग उनके ऋणी हैं।

कार्यक्रम आरती तथा शान्तिपाठ के साथ समाप्त हुआ।

—प० रामप्रसाद जयजयराम आर्य

शिरोमणि कमेटी और दमदमी टकसाल में ठन गयी

अमृतसर १३ जून। उग्रवादी दमदमी टकसाल (जिससे भिण्डरावाला सम्बन्धित था) और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के (जो गुरुद्वारों को नियन्त्रण मे रखने वाली समिति है) दरमियान संघर्ष अनिवार्य हो गया है समस्या सिख पूजा स्थानो मे राहुत तथा आचना करदारो (कार्यकरताओ) की है दमदमी टकसाल का कहना है कि सिखो को 'नित्य नियम' अरदास पूरी करनी चाहिए—शिरोमणि कमेटी ने एक पुस्तक मे नित्य नियम की विशेषता का वर्णन किया है जिन्हे सिखो को पढना चाहिए—अत' अहम तनाजा रहरस साहिब की पढाई पर है जो सायकाल की अरदास है—इसमे जो भजन सम्मिलित है वो दो गुरुओ के हैं—दमदमी टकसाल का कहना है कि रनदाना और कभी कभार प्रयाग के लिए गुटका (छोटे छोटे सग्रह) प्रकाशन अधूरा है जो शिरोमणि कमेटी ने प्रकाशित किए हैं—जिन ग्रन्थो ने टकसाल से तरबीयत ली है वह रहरस साहिब के अतिरिक्त छोटी चोपाइयो की सहायता से पढते हैं शिरोमणि के अनुसार पाच बानिया अर्थात जापी जाप-सुयास-रहरस-कीतन-सोपोला किसी अकीदत मन्द सिख को याद करनी चाहिए—जबकि टकसाल चोपाई-साहब और आनन्द साहब को दो पृथक बानिया मानती है—राग माला अन्तिम सेहरी अध है जो आदमी ग्रन्थ मे सम्मिलित है—इसमे भारतीय मोसीकी के रागो का सूची है—परन्तु आदि ग्रन्थ मे तमाम ८४ नजमिया नही है—टकसाल की राय है कि अकाल तख्त से ही राग माली गाये जाये—परन्तु शिरोमणि कमेटी सहमत नही है और उग्रवादियो के दबाव से अब यह पढी जाने लगी है।

(१४-६-९३ प्रताप के सौजन्य से)

मुस्लिम मां बेटों ने हिन्दू धर्म ग्रहण किया

कानपुर। आर्य समाज मन्दिर गोविन्द नगर में आर्य समाज व केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने एक मुस्लिम महिला व उसके पुत्र को उनकी इच्छानुसार वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) ग्रहण कराया। श्री आर्य ने उन का नाम दिवाज फातमा से श्रीमती रीता व उसके बेटे का नाम मोहित रखा।

शुद्धि सस्कार के पश्चात श्रीमती रीता का विवाह एक हिन्दू युवक श्री बृजेश चतुर्वेदी के साथ वैदिक रीति से सम्पन्न कराया गया।

ज्ञातव्य हो कि आर्य समाजी नेता श्री देवीदास आर्य ने हाल ही मे तीन मुस्लिम युवतियो जो डाक्टर, वकील व इन्जीनियर हैं और एक ईसाई युवती जो अध्यापिका है को हिन्दू धर्म ग्रहण कराया था तथा उनके विवाह शिक्षित हिन्दू युवको के साथ कराये थे। —बाल गोविन्द आर्य, मन्त्री

आर्य समाज गोविन्द नगर कानपुर

प्रवेश प्रारम्भ

"गुरुकुल वैदिक सस्कृत महाविद्यालय, सिराथू इलाहाबाद का नवीन सत्र १ जुलाई ९३ से प्रारम्भ हो रहा है। अपने बच्चो के उज्जवल भविष्य तथा राष्ट्र के योग्य नागरिक बनाने के लिए, सिराथू "क" वर्गीय प्रथम श्रेणी मे राज्य सरकार से मान्यता प्राप्त सम्पूर्णानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय से सम्बद्ध है, प्रवेश करावे। यहा सुयोग्यतम आचार्यों द्वारा प्रथमा (कक्षा ६) से आचार्य (एम० ए०) तक की शिक्षा का उत्तम प्रबन्ध है। विद्यालय पाठ्यक्रम के अतिरिक्त विद्यार्थियो की दैनिक दिनचर्या प्रात साय सन्ध्या हवन, व्यायाम योगासन नैतिक शिक्षा, धार्मिक शिक्षा, धनुर्विद्या, सगीत आदि के प्रशिक्षण पर विशेष बल दिया जाता है।

विशेष जानकारी के लिये कार्यालय से शीघ्र सम्पर्क करें।

—आचार्य डा० रमामित्र शास्त्री

गुरुकुल वैदिक सस्कृत महाविद्यालय, सिराथू, इलाहाबाद (उ० प्र०)

"पद्मश्री" डा० कपिलदेव द्विवेदी विदेश यात्रा पर

ज्ञानपुर (वाराणसी) सुप्रसिद्ध संस्कृत विद्वान तथा विश्वभारती अनुसंधान परिषद, ज्ञानपुर के निर्देशक "पद्मश्री" डा० कपिलदेव द्विवेदी अमेरिका, जर्मनी, इग्लैण्ड के विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा वेद तथा भारतीय संस्कृतिसे संबंधित विभिन्न विषयो पर व्याख्यान देने हेतु आमंत्रित किया गया है। आप अमेरिका मे वेद सम्मेलन मे भी अपने विचार प्रस्तुत करेंगे।

डा० द्विवेदी का इन देशो में विभिन्न विश्वविद्यालयों के अतिरिक्त आर्यसमाज तथा अन्य धार्मिक संस्थाओ ने प्रमुख नगरो में आपके व्याख्यान रखे है। डा० द्विवेदी की विदेश यात्रा का उद्देश्य विश्व में वेदो के सन्देश का प्रचार करना है।

डा० कपिलदेव द्विवेदी वेद, संस्कृत साहित्य एवं व्याकरण के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वानों में से हैं। आपके अब तक ७० से भी अधिक ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। आधा दर्जन से अधिक पुस्तकें उ० प्र० शासन द्वारा पुरस्कृत की जा चुकी हैं। संस्कृत साहित्य की विशिष्ट सेवा के लिए भारत सरकार द्वारा "पद्मश्री" अलंकरण से विभूषित किया जा चुका है। डा० द्विवेदी ने विदेशो मे वेद के सन्देश का प्रचार करने के लिए "द एसेन्स आफ वेदाज" अंग्रेजी ग्रन्थ लिखा है जो काफी लोकप्रिय हुआ है। आपने वेदामृतम् ग्रन्थमाला के १३ भाग जनसाधारण तक वेदो का सन्देश पहुंचाने के उद्देश्य से लिखे हैं यह ग्रन्थ हैं वेदामृतम् सुखी जीवन, सुखी गृहस्थ, सुखी परिवार, सुखी समाज, आचार शिक्षा नीति शिक्षा, वेदो में नारी, वैदिक मनोविज्ञान तथा चारों वेदो के सुभाषित ग्रन्थ एवं वेदो में आयुर्वेद प्रमुख हैं।

७४ वर्ष के डा० द्विवेदी इससे पूर्व अनेक बार आर्य समाज तथा भारतीय संस्कृति के प्रचारार्थ विदेश यात्राकर चुके हैं। आप इससे पूर्व हालैण्ड, जर्मनी, इग्लैण्ड, अमेरिका, कनाडा, फ्रांस, स्विट्जरलैण्ड, मारीशस, केन्या, तजानिया, सूरीनाम, गुयाना, इटली आदि देशो में आमन्त्रित किए जा चुके हैं। वेदों के विद्वान के रूप मे आपको लन्दन विश्वविद्यालय, फ्रेंकफर्ट विश्वविद्यालय टोरेन्टो विश्वविद्यालय, यूनिवर्सिटी आफ ईस्टवेस्ट यूनिटी, न्यूयार्क द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। आप देश विदेश की १० भाषाओं के ज्ञाता हैं तथा संस्कृत भाषा के सरलीकरण पद्धति के उन्नायको में से हैं।

पद्मश्री डा० कपिलदेव द्विवेदी अपने तीन मास के विदेश कार्यक्रम में भाग लेने के लिए ६ जुलाई को दिल्ली से न्यूयार्क के लिए प्रस्थान कर रहे हैं।

—आर्येन्दु मन्त्री

विश्वभारती अनुसंधान परिषद ज्ञानपुर वाराणसी

आर्य समाज की स्थापना एवं सामवेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

पीपाड़ शहर। यहां से लगभग २५ किलोमीटर दूर ग्राम चोकड़ी कलां मे प्रथम बार सामवेद पारायणयज्ञ का आयोजन आचार्य कृष्णपालसिंह शास्त्री के ब्रह्मत्व में दिनांक १-६-९३ से ५-६-९३ तक सानन्द सम्पन्न हुआ। पीपाड़ शहर के श्री भंवरलाल आर्य (आर्य वीर दल जोधपुर मण्डल के मण्डल संचालक) के अथक प्रयत्नों से चोकड़ी कला व उसके आसपास के गांवों में आर्य समाज के उद्देश्य एवं कार्यों के महत्व को समझा एवं वेदों के अनुसार यज्ञ की पहचान की। नव निर्वाचित प्रधान श्री चम्पालाल टाक एवं मन्त्री श्री भंवरलाल आर्य ने अपने अथक प्रयत्नो से यज्ञ को सफल बनाने में महत्वपूर्ण सहयोग दिया।

—भंवरलाल आर्य मन्त्री

आर्य समाज चोकड़ी कलां

सोमयज्ञ

(पृष्ठ २ का शेष)

हे मुनि! यह यज्ञ सबके लिए साध्य नहीं। इसमें बहुत अन्न दक्षिणा धन की आवश्यकता है। इसे महाराजा व देवगण ही कर सकते हैं। इसमें विद्वानगण सोमलता का पान करते हैं फलाहार पर एक वर्ष रहे तब कहीं तपश्चर्या पूर्णता को प्राप्त होकर कार्य की सिद्धि होती है।

ब्राह्मण ग्रन्थों पुराणों से ज्ञात होता है यह लता ऊंचे पर्वत शिखरों पर उपलब्ध होती थी। जो चन्द्रमा की बढ़ती पर बढ़ती और कृष्णपक्ष पर घटती थी। बताते हैं कि हिमालय पर (मूंज वन) पर्वत विख्यात था ब्राह्मण ग्रन्थों में सात प्रकार के यज्ञो की चर्चा है यथा अग्निष्टम्, अत्यग्निष्टम्, उक्थ-षोडषी, अतिराज और षोडषी वाजपेय व आप्तोर्यम्'।

कुछ ब्राह्मण ग्रन्थो की व्यवस्था यह है कि पांच दिन यजमान का भी व्रत चलता रहे। और सोमरस निकालकर रस की आहुति दी जाय और पान भी किया जाए।

ऋग्वेद और सामवेद के मन्त्रोच्चार के साथ कार्यकर्ता सोम का पान करें और पशु बलि दी जाय। क्या अन्धेर है ९६ पशु यज्ञ मे बलि देने योग्य बताये हैं इनमें बकरा भी है। विकृत यागों में बकरे की बलि दी जा रही थी जिसका बुद्धिजीवि वर्ग ने विरोध व्यक्त किया।

राष्ट्र की कितनी हानि इन बुद्धिजीवि ढोंगी सन्तो ने की है और इसका शिकार साधारण व्यक्ति ही नहीं है किन्तु राजनेता भी हैं जिनके द्वारा धर्म का विनाश और राष्ट्र का विकास अवरुद्ध किया जा रहा है बुद्धि का विकास न करके बुद्धि का विनाश हो रहा है किसलिए राष्ट्र के उन्नायको के फल प्राप्त्यर्थ, सोमयज्ञ रचाया गया। मूर्खता की भी कोई सीमा है जरा सोचो इन नेताओं के द्वारा जनता भ्रमित की जा रही है। विद्वान विचार करें और लिखें—

विशाल यज्ञ एवं वार्षिकोत्सव

—आर्यसमाज पन्द्रावल बुलन्दशहर का छटा वार्षिकोत्सव दिनांक २५ से २७ जून ९३ तक बड़े ही समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है।

जिसमे प्रसिद्ध संन्यासी महात्मा तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। आपसे प्रार्थना है सपरिवार पधारकर इस सुअवसर से लाभ उठायें तथा यज्ञ की सफलता हेतु सहयोग प्रदान करें।

गोल्डन रजिस्ट्रेशन न० डी० एल० ११०२४/९३ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२७-६-१९९३) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (C) ९३
R N 626/57 Licensed to post without prepayment licence No. U (G) 93 Post in N.D.P.S.O.on 24-25-6-1993

पुस्तकालयाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी
विश्वविद्यालय हरिद्वार, जि हरिद्वार (उ.प्र.)

वार्षिकोत्सव

—आर्य समाज अल्मोड़ा का ८९ वां वार्षिकोत्सव दिनांक २५, २६, तथा २७ जून १९९३ को सम्पन्न होने जा रहा है।

इस बार के उत्सव का विशेष आकर्षण आर्य समाज के विद्वान लेखकों का एक त्रिदिवसीय सम्मेलन भी है। इसमें ग्रन्थ लेखक परिषद के अध्यक्ष डा० भवानीलाल भारतीय तथा मन्त्री श्री वेदप्रिय शास्त्री सहित अनेक विद्वान तथा विदुषी पधार रहे हैं।

सम्मेलन का उद्घाटन तथा स्मारिका 'अदिति' का विमोचन करने की स्वीकृति मुख्य अतिथि श्री भैरवदत्त पाण्डे जी, भूतपूर्व राज्यपाल, प० बंगाल तथा पंजाब ने कृपा कर प्रदान की है।

अतः कार्यक्रमानुसार आप सपरिवार अवश्य पधारें तथा मित्रों को भी प्रेरित करें।

—आर्य समाज सिंगरौली कोलियरी का ५ वां वार्षिकोत्सव ७ व ८ मई ९३ को बड़े ही धूम-धाम से मनाया गया। जिसमें भाग लेने हेतु आर्य जगत के कई विद्वानों ने भाग लिया। यज्ञ के ब्रह्मा के पद को सुशोभित किया श्री सत्यदेव जी शास्त्री ने। श्री कुंवर महिपालसिंह जी ने भजनोपदेश तथा ओजस्वी वाणी से जनता को मन्त्र मुग्ध किया तथा श्री महेन्द्र जी के भाषण की जनता ने अत्यधिक सराहना की।

—आर्य समाज मानपुर (गया) का स्वर्ण जयन्ती समारोह (५० वां वार्षिकोत्सव) दिनांक ३ ६ ९३ से ६-६-९३ तक बड़े ही हर्षोल्लास के वातावरण में मनाया गया। विशाल समारोह में आर्यजगत के दिग्गज विद्वान श्री सत्यदेव शास्त्री श्री सुकृतिमित्र शास्त्री एवं भजनोपदेशक श्री ठाकुर वीरेन्द्र आर्य, श्री सुरेशचन्द्र आर्य ने अपना बहुमूल्य समय देकर समारोह को सफल बनाया।
—प्यारचन्द कुमार गोयल

महाराणा प्रताप जयन्ती मनाई

आर्य समाज धनेटा ने महाराणा प्रताप जयन्ती २४ मई १९९३ को बड़ी धूम धाम से श्री मथुरादास नन्दा प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी की अध्यक्षता में मनाई। इस अवसर पर बृहद यज्ञ भी किया गया। इस समारोह के मुख्य अतिथि प० हरिश्चन्द्र शास्त्री ने अपने ओजस्वी भाषण तथा मधुर गीतों से महाराणा प्रताप की जीवनी पर प्रकाश डाला तथा श्रोताओं से आग्रह किया कि वे महाराणा प्रताप के जीवन से प्रेरणा लें।

आर्य समाज धनेटा का २२ वां वार्षिकोत्सव २२ मई से २५ मई तक बड़ी श्रद्धा तथा धूम-धाम से मनाया गया जिसमें दयानन्द मठ चम्बा के विख्यात भजनोपदेशक प० हरिश्चन्द्र शास्त्री ने श्रोताओं को आध्यात्मिक ज्ञान से मन्त्र मुग्ध कर नई प्रेरणा दी।

प्रचार मन्त्री
आर्य समाज, धनेटा (हि० प्र०)

वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाज महबूबाबाद—श्री टी सूर्यनारायण प्रधान, श्री एस लक्ष्मी नरसैय्या मन्त्री, श्री शिवप्रसाद कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग बीकानेर—डा० मनमोहन भाटिया प्रधान श्री मनोहरलाल आर्य मन्त्री, श्री उदयशंकर व्यास कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज से० १५ फरीदाबाद—श्री प्यारेलाल जी नैय्यर प्रधान श्री हरीशचन्द्र बजाज मन्त्री, श्री देवराज अरोड़ा कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज सीतापुर—चौ० रनधीरसिंह प्रधान, श्री वीरेन्द्रसिंह चौहान मन्त्री, श्री कृष्णकुमार आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली—श्री राममूर्ति कैमा प्रधान, श्री वेदव्रत शर्मा मन्त्री श्री प्रेमनारायण सूद कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज मन्दिर फिरोजपुर छावनी—श्री द्वारकानाथ वर्मा प्रधान श्री मनोज आर्य महामन्त्री, श्री राजेन्द्र गुप्ता कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज (सेन्ट्रल) मद्रास—श्रीमती विजयलक्ष्मी मोगा प्रधाना, श्री भूपेन्द्रपाल अग्गी महामन्त्री श्री देशराज अग्रवाल कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज डा० मुखर्जी नगर (ईस्ट) दिल्ली—श्री ठाकुरदास सुधेरा प्रधान, श्री सुदर्शन सरीन मन्त्री श्री देवराज नारंग कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज आबू रोड श्री जेठमल आर्य प्रधान, श्री छोटूलाल जी मित्तल मन्त्री, श्री राधेश्याम जी जोशी कोषाध्यक्ष चुने गए।

वैदिक क० सी० मा० विद्यालय आबू रोड—श्री जेठमल जी आर्य प्रधान, श्री राधेश्याम जी जोशी मन्त्री, श्री मोतीलाल जी आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज राजौरी गार्डन का निर्वाचन

आर्य समाज राजौरी गार्डन का वर्ष ९३-९४ की कार्यकारिणी का निर्वाचन निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज राजौरी गार्डन—श्री जगदीश आर्य प्रधान डा० अशोक नागिया मन्त्री, श्री ओ० पी० भाटिया कोषाध्यक्ष चुने गए।

स्त्री आर्य समाज राजौरी गार्डन—श्रीमती राज पाण्डेय प्रधाना, शशि आर्या मन्त्रिणी, कुसुम भाटिया कोषाध्यक्षा चुनी गयीं।

आर्य समाज हेमचन्द्र "सुमन" अस्पताल राजौरी गार्डन—श्री जगदीश आर्य कार्यकारी प्रधान श्री मदनलाल साहनी मन्त्री, श्री केवल कृष्ण कोहली कोषाध्यक्ष चुने गए।

सम्पादक—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
प्रकाशक—
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नई दिल्ली-२

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य समाज भवन दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

महर्षि दयानन्द उवाच

- वेदादि शास्त्रों को पढ़ना-पढ़ाना, परोपकार, धर्मानुष्ठान, योगाभ्यास, निर्वैर, निष्कपट, सत्यभाषण, माता-पिता की सेवा, परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना उपासना, शान्ति, जितेन्द्रियता, सुशीलता, धर्मयुक्त पुरुषार्थ ज्ञान-विज्ञान आदि शुभ कर्म दुःखों से तारने वाले होने से तीर्थ हैं।
- जब मनुष्य प्राणायाम करता है तब प्रतिक्षण उत्तरोत्तर काल में अशुद्धि का नाश और ज्ञान का प्रकाश होना है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष । ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पै०
[वर्ष ३१ अंक २१] दयानन्दाब्द १६९ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९४ श्रावण कृ० १ सं० २०५० ४ जोलाई १९९३

बिहार के मन्दिरों में हरिजनों को भी पुजारी बनने का अधिकार

आर्य समाज ने जन्मना जात-पात के खिलाफ सदैव संघर्ष किया

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

बिहार के मुख्यमन्त्री श्री लालूप्रसाद यादव ने विधान सभा मे कानून बनाकर मन्दिरों में हरिजनो को भी पुजारी बनाकर महर्षि दयानन्द सरस्वती के बताये मार्ग का अनुसरण किया है। उनके इस कार्य से जहां पौराणिक विचारधारा के लोग इस का विरोध कर रहे हैं वहीं बुद्धिजीवि वर्ग ने इस ऐतिहासिक निर्णय का स्वागत किया है। छूतछात, ऊंच-नीच, भेदभाव यह सब बुराइयां जन्मना जातवाद के कारण उत्पन्न हुई है जिससे देश को प्रगति को भारी नुकसान पहुंचा है।

आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ५ हजार वर्ष से पूर्व के आर्य धर्म और वेद के शाश्वत सिद्धान्तों का प्रतिपादन करते हुये वर्ण व्यवस्था को गुण कर्म और स्वभाव के आधार पर ही माना, उस समय के पौराणिक पण्डितों ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के इस सुधार का भारी विरोध किया और आर्यसमाज के साथ वर्ण व्यवस्था पर अनेक शास्त्रार्थ भी किये।

इस सम्बन्ध में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का विस्तृत लेख नीचे प्रकाशित किया जा रहा है।

हरिजन पुजारी, वर्ण व्यवस्था और आर्य समाज

बिहार के मुख्यमन्त्री श्री लालूप्रसाद यादव ने विधान सभा में कानून बनाकर हरिजनों को मन्दिरों मे पुजारी बनने का अधिकार दिया। निश्चित रूप से पौराणिक विचारधारा में विश्वास रखने वाले हिन्दू समाज के घटक इसका विरोध करेंगे, क्योंकि अब तक मन्दिरों में पुजारी और पुरोहित का काम जन्मना ब्राह्मण कुलोत्पन्न पण्डित ही करते हैं। इस विषय पर गम्भीरता से विचार करने पर इतिहास की अनेक घटनायें सामने आती हैं क्योंकि वर्ण व्यवस्था पर अनेक बड़े-बड़े शास्त्रार्थ हो चुके हैं।

स्वामी दयानन्द के प्रादुर्भाव से पूर्व हिन्दू समाज में जन्मना वर्ण व्यवस्था का ही समर्थन किया जाता था। इसका कारण यह था कि ५ हजार वर्ष से धर्म की बिगड़ती हुई मर्यादाओं के कारण ही इस प्रकार के अवैदिक सिद्धान्त हिन्दू जाति ने अपना लिए। लालूप्रसाद यादव का हरिजनों को पुजारी बनाने के पीछे चाहे कोई राजनैतिक स्वार्थ हो यह एक दूसरी बात है. किन्तु यह सच्चाई है कि जन्मना वर्ण व्यवस्था को मानकर हिन्दू जाति में बिखराव आया है, छूतछात, ऊंचनीच, भेदभाव यह सब बुराईयां जन्मना जातवाद के कारण ही उत्पन्न हुई, जिससे देश की प्रगति को भारी नुकसान हुआ।

देश की आजादी से पहले कुछ मुस्लिम लीगी नेताओं ने यह मांग की थी कि ७ करोड़ अछूतों को हिन्दू और मुसलमानों मे आधा-आधा बाट लिया जाये। महामना मदनमोहन मालवीय, स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय और दबे शब्दों में महात्मा गांधी ने भी इसका विरोध किया था। महात्मा गांधी ने तो इसी मांग से प्रभावित होकर अछूतों को हरिजन का नाम दिया था। आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ५ हजार वर्ष से पूर्व के आर्य धर्म और वेद के शाश्वत् सिद्धान्तों का प्रतिपादन करते हुए वर्ण व्यवस्था को गुण, कर्म और स्वभाव के आधार पर ही माना। उस समय के पौराणिक पण्डितों ने महर्षि दयानन्द के इस सुधार का भारी विरोध किया और आर्य समाज के साथ वर्ण व्यवस्था पर अनेक शास्त्रार्थ भी किये।

हिन्दू संगठन के बड़े-बड़े नेता भी वर्ण व्यवस्था के मामले में पौराणिक मांगों का ही समर्थन करते रहे। मुझे याद है कि जब मैं लोकसभा सदस्य चुना गया उस समय सर्व प्रथम जनसंघ के लगभग २० सांसद लोकसभा में पहली बार चुनकर आये थे। श्री अटलबिहारी वाजपेयी, बलराज मधोक, ओमप्रकाश त्यागी, प्रकाशवीर शास्त्री, पं० शिवकुमार शास्त्री और पं० रघुवीर शास्त्री जैसे अनेक आर्य समाजी विद्वान भी विभिन्न दलों से चुनकर आये थे।

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

हरिजन पुजारी, वर्ण व्यवस्था और आर्य समाज

आर्य समाज ने गुरुकुलों विद्यालयों में अनेक अछूत विद्यार्थियों को पढ़ा लिखाकर पुरोहित बनाया, उनकी विद्वता का देश में बड़ा सम्मान हुआ और बड़े-बड़े लोगों ने उनके चरण स्पर्श किए। किन्तु राजनीतिक खिलाड़ियों ने हरिजनों के लिए अलग सीटें आरक्षित करके इस खेल को बिगाड़ दिया। जिन शूद्रों को हमने ब्राह्मण बनाया था वह राजनीतिक लाभ प्राप्त करने के उद्देश्य से पुनः शूद्र बन गए और अपने को हरिजन कहने लगे।

(पृष्ठ १ का शेष)

मुझे याद है जनसंघ के उदीयमान सांसद श्री कंवरलाल गुप्ता के घर पर एक भोज का प्रबन्ध किया गया, जिसमें जनसंघ समर्थित लोक सभा सदस्यों को विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया और मुझे भी विशेष रूप से बुलाया गया और मैं वहां पहुंचा। वहां जाकर पता चला कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघ चालक श्री गुरु गोल बलकर जी भोजन से पूर्व सांसदों को सम्बोधित करेंगे। मैंने कोठी में जब प्रवेश किया तो अन्दर आने पर गुरु गोल बलकर जी ने मुझे विशेष रूप से आगे बुलाया और उन्होंने बैठते ही कहा कि प्राचीन काल में वर्ण व्यवस्था जन्मना ही होती थी। मैंने निवेदन किया कि गुरु जी नहीं वर्ण व्यवस्था तो प्राचीनकाल से ही गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर ही मानी गई है। गुरु जी ने वेदमन्त्र—

'ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्य. कृतः'

बोलते हुए मुझसे पूछा कि इसका तात्पर्य क्या है? मैंने इसका उत्तर देते हुए कहा कि गुरु जी आपने जो वेद मन्त्र बोला है यह तो उत्तर है इसका प्रश्न आपको इस वेद मन्त्र से पहले के मन्त्र को देखने पर मिलेगा जो निम्न है—

मुखं किमस्यासीत्किम्बाहू किमूरू पादाऽउच्येते।

इस मन्त्र के देखने से उपरोक्त मन्त्र का अर्थ आपको स्वतः समझ में आ जाएगा। इस प्रश्न स्वरूप मन्त्र में कहा गया है कि मुख के समान श्रेष्ठ कौन है, भुजबल का धारण करने वाला कौन है, घुटनों के कार्य करने हारे और पांव के समान निचले स्थान के कौन कहे जाते हैं? इस प्रश्न स्वरूप मन्त्र का उत्तर आप द्वारा पूछे गए मन्त्र में है कि—"जो मनुष्य विद्या और शमदमादि उत्तम गुणों में मुख के तुल्य उत्तम हों वे ब्राह्मण, जो अधिक पराक्रम वाले भुजा के तुल्य कार्यों को सिद्ध करने हारे हो वे क्षत्रिय, जो व्यापार विद्या मे प्रवीण हो वे वैश्य और जो सेवा में प्रवीण विद्याहीन पगों के समान मूर्खपन आदि सेवा गुण युक्त हैं वे शूद्र कहने और मानने चाहिए। इस पर मैंने कहा—

प्राचीनतम वैदिक धर्म में शूद्र उत्पन्न नहीं होता बताया जाता है। मैंने कहा गुरु जी महाभारत में एक प्रसंग आता है जिसमे प्राचीनकाल की वर्ण व्यवस्था की चर्चा करते हुए कहा गया है—

"न विशेषोऽस्ति वर्णानां सर्वं ब्रह्ममिदं जगत"

परमात्मा ने सबको ब्राह्मण ही पैदा किया था किन्तु मनुष्यों की दुर्बलताओं के कारण जो ब्राह्मण धर्म का पालन न कर सके वे क्रमशः क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र बने जिसे निम्न प्रकार कहा गया है—

'ते द्विजाः क्षत्रतां गताः, ते द्विजाः वैश्यतां गताः, तेद्विजाः शूद्रतां गताः.'

द्विज शब्द केवल ब्राह्मण और क्षत्रिय के लिए ही प्रयोग होता है।

गुरु गोलवलकर जी ने पूछा कि आर्य समाज ने कोई ऐसा प्रयोग किया है कि जिसमें जन्मना किसी शूद्र को ब्राह्मण बनाया गया हो। मैंने उत्तर दिया, गुरु जी अलीगढ़ के पास काली नदी के किनारे पर स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज का साधु आश्रम है। इस आश्रम ने आर्य समाज के बड़े-बड़े विद्वान तैयार किए हैं। इसी आश्रम में स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज ने एक ऐसा प्रयोग किया कि एक ब्राह्मण के बालक को और एक शूद्र के बालक को दोनों को समान आसन, समान भोजन, समान वस्त्र और समान शिक्षा दी गई, वे दोनो ही आर्य समाज के उच्चकोटि के विद्वान बने, एक का नाम था राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री और दूसरे का नाम मुनीश्वर देव शास्त्री था। राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री अनेक राजकुमारों के गुरु बने और सार्वदेशिक सभा के प्रधान बने, और मुनीश्वरदेव शास्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उपदेशक विभाग के सर्वोच्च पद पर विराजमान हुए, उन्होंने अनेकों बड़े-बड़े यज्ञ कराए जिसमें उन्हें ब्रह्मा बनाया गया। आर्य समाज में कोई नहीं जानता कि इन दोनों में जन्मना कौन ब्राह्मण और कौन शूद्र था? यह सुनकर गुरु जी ने कहा वर्ण व्यवस्था तो जन्मना ही मानी गई है, इस पर अटलबिहारी वाजपेयी जो भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता हैं, ने चुटकी लेते हुए कहा कि फिर तो गुरुजी बड़ी गड़बड़ी हो जाएगी। अटलबिहारी वाजपेयी आज भी राजनैतिक नेता हैं जो सज्जन इसका स्पष्टीकरण चाहें वे उनसे पूछ सकते हैं।

आर्य समाज ने जन्मना ब्राह्मणवाद के साथ जो लड़ाई लड़ी थी उसमें उसको विजय प्राप्त हुई और छूत-छात, भेदभाव मिटाने के लिए आर्य समाज ने जो काम अनेक बलिदान देकर किए थे और उसके विद्वानों ने गुण, कर्म और स्वभाव के आधार पर वर्ण व्यवस्था पर अनेक शास्त्रार्थ करके धर्म शास्त्रों के आधार पर हिन्दू जाति का एकीकरण करने का जो महान कार्य किया था उसको वोटों के लोभी राजनीतिज्ञों ने धराशाही कर दिया।

उसके पश्चात जनसंघ का एक अधिवेशन बम्बई में रखा गया जिसमें मुझे भी विशेष रूप से बुलाया गया था किन्तु मैं किन्हीं कारणों से बम्बई न पहुंच सका।

आर्य समाज ने गुरुकुलों विद्यालयों में अनेक अछूत विद्यार्थियों को पढ़ा लिखाकर पुरोहित बनाया, उनकी विद्वता का देश में बड़ा सम्मान हुआ और बड़े-बड़े लोगों ने उनके चरण स्पर्श किये। किन्तु राजनीतिक खिलाड़ियों ने हरिजनों के लिए अलग सीटें आरक्षित करके इस खेल को बिगाड़ दिया। जिन शूद्रों को हमने ब्राह्मण बनाया था वह राजनीतिक लाभ प्राप्त करने के उद्देश्य से पुनः शूद्र बन गए और अपने को हरिजन कहने लगे।

आर्य समाज ने जन्मना ब्राह्मणवाद के साथ जो लड़ाई लड़ी थी उसमें उसको विजय प्राप्त हुई और छूत छात, भेदभाव मिटाने के लिए आर्य समाज ने अनेक बलिदान भी दिये। भगत फूलसिंह जी ने हरिजनों को हरियाणा में कुओं पर पानी भरने का अधिकार दिलाने के लिए ६० दिन का अनशन किया और इसमें उन्हें सफलता प्राप्त हुई तथा जन्मजात के ठेकेदारों को उनके आगे झुकना पड़ा और भगत फूलसिंह जी के दिल्ली आने पर उनका भव्य स्वागत किया गया। इसी प्रकार जम्मू में हरिजनों को सार्वजनिक कुओं पर चढ़ने के लिए रोका जाता था उस समय वीर रामचन्द्र जी ने वहां पर सत्याग्रह किया, इस पर जन्मजात के ठेकेदार ब्राह्मणों और राजपूतों ने उनकी हत्या कर दी और वे शहीद हो गए। इसी प्रकार की अनेकों घटनायें रोपड़ और गुरुदासपुर में हुई जिनमें आर्य समाज के सेवकों ने अपने सिर की बाजी लगाकर इन पिछड़े लोगों को हिन्दू समाज का अभिन्न अंग बनाने के लिए बलिदान दिये। यह कहानी बड़ी लम्बी है जिसका पूर्ण ब्योरा यहां पर नहीं दिया जा सकता है।

यहां पर यह बताना भी आवश्यक है कि श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने वोटों के लालच में लाल किले की प्राचीर से १५ अगस्त के भाषण में मण्डल

(शेष पृष्ठ १२ पर)

सम्पादकीय

साम्प्रदायिक कौन ?

देश की जनभावनाओं के साथ खिलवाड़ करते हुए राजनीतिक प्रतिष्ठा अर्जित करने के लिए आज के राजनेताओं ने एक महत्वपूर्ण विषय का चयन किया है—"साम्प्रदायिकता"। देश के कोने-कोने में साम्प्रदायिकता विरोधी सम्मेलन आयोजित कर स्वयं को धर्मनिरपेक्ष सिद्ध करने के लिए इन नेताओं ने जिस तरह भाषणबाजी के साथ राजनीतिक पृष्ठभूमि की भूमिका बांधने का उपक्रम किया है उससे मुझे इनकी बुद्धि पर तरस भी आता है और हंसी भी।

लब्ध प्रतिष्ठित राजनेता एवं विशाल राजनीतिक दीर्घदर्शी सम्मेलनों के नीति नियामकों से पूछ सकता हूं कि वास्तव में साम्प्रदायिकता की क्या परिभाषा है जिसके आधार पर दूसरे को साम्प्रदायिक कह रहे है? वे साम्प्रदायिक है और किस आधार पर आप धर्मनिरपेक्ष है?

आपके उत्तर क्या होंगे मैं नहीं जानता पर इतना स्पष्ट अवश्य है कि साम्प्रदायिकता विरोधी सम्मेलनों के सरकारी आयोजनों का मुख्य उद्देश्य देश में उठती कट्टरवादिता की आग पर सियासत की रोटी सेंकना ही है। जिसके लिए "राष्ट्रीय एकता के खतरे" का डर दिखाया जाता है। क्या ये महानुभाव बता सकते हैं कि खिलाफत आन्दोलन के सहारे तुष्टीकरण प्रारम्भ करने वाले व १९२० में "वन्देमातरम्" गान को साम्प्रदायिक कह कर कांग्रेस अध्यक्ष पद पर विराजमान मो० अली जिन्ना के मंचपर से उतर आने के बाद भी उन्हें राष्ट्र भक्त का तमगा देने वाले वे कांग्रेसी जिन्होंने जिन्ना को प्रधानमन्त्री पद सौंपने का फैसला किया था, ने कौन सी राष्ट्र की एकता बरकरार रखी? अपनी लाश पर देश के विभाजन का आश्वासन देने वाले कांग्रेसियों द्वारा तुष्टीकरण के लिए ही स्व हस्ताक्षर से पाक का निर्माण स्वीकारना किस अखण्डता की रक्षा कर सका? इसी नीति का अनुगमन करने वाले राजनीतिज्ञों की देन काश्मीर समस्या किस प्रकार से राष्ट्र को खण्डित होने से बचा रही है? पूर्वी सीमा पान्तो मे ईसालैण्ड की परिकल्पना को मूर्त रूप देने का आश्वासन कब तक देश को एक रखेगा? अपने पूर्व पदासीनों की भांति पूर्व प्रधानमन्त्री वी० पी० सिंह का मौलाना बुखारी से गुप्त समझौता करना, काश्मीर उग्रवादियों की सुरक्षा हेतु बुखारी को अनुदान देना उत्तर प्रदेश मे तकरीर देते हुए दंगे कराने वाले उबैदुल्ला आजमी को राज्य सभा में पहुचाना कैसे राष्ट्रीय एकता को सुरक्षित रख रहे हैं? पूर्व प्रधानमन्त्री श्री चन्द्रशेखर का पाक से अच्छे सम्बन्ध-निर्माण होने की डींग हांकना और साथ ही पाक नीति-नियामको द्वारा भारत के विरुद्ध आग उगलना क्या इस तुष्टीकरण से हट कर है? सिद्ध दंगाई सांसद मुन्नन खा को मुलायम सिंह द्वारा पाक साफ सिद्ध करना, एक वर्ग विशेष को अवैध हथियार रखने के लिए मंच से कहना किस प्रकार देश की अखण्डता बरकरार रखेगा, सोचनीय है।

मुस्लिम लीग से समझौता करने वाले व ईसालैण्ड की परिकल्पना (मिजोरम व अरुणाचल) को साकार रूप देने के प्रयास को समर्थन देने वाले किस आधार पर साम्प्रदायिकता का विरोध कर रहे है? जब राष्ट्रवादी मुसलमानो व शिया मुसलमानो (जिस वर्ग की बाबरी मस्जिद है), एशिया के सबसे बड़े इस्लामी शिक्षा केन्द्र देवबन्द दारुल उलुम के विद्वानो एवं मीरबाकी (बाबर के सेनापति) के वंशजों ने मन्दिर के अस्तित्व को स्वीकार कर शान्ति चाही है तो भी अधिकार विहीन मुस्लिम समुदाय (सुन्नी) के स्वार्थी नेताओं के माध्यम से विवाद को हवा देकर अल्पसंख्यको के मसीहा की छवि भुनाने की चेष्टा से चुनावी रणनीति की तैयारी मे जुटे वामपंथी, खून सने हाथ ले बढ़ती साम्प्रदायिकता पर चर्चा करें तो देश का इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या हो सकता है?

अपनी जन्मभूमि को मां मानते हुए पूजा करना व "वन्देमातरम्" कहना अपने धर्म का विधिपूर्वक बिना दूसरे के धर्म पालन मे खलल डाले अनुपालन करना अपने आदर्श पुरुषों की प्रतिष्ठा एवं सम्मान के लिए संघर्ष करना, देश के संविधान का परिपालन करते हुए शासन के गलत कदमों का विरोध करना, देश की प्रतिष्ठा मान-सम्मान की रक्षा के लिए सम्प्रदाय विशेष के बन्धन तोड़कर मानवोचित कर्म करना व सभी प्राणियों में समभाव की कामना करना साम्प्रदायिकता है या देश की धरती को भोग भूमि मानकर उसे चूसने का कर्म करना भारतीय धर्मनिरपेक्षता सिद्धांत को ढोंग ढकोसला मानकर तलवार के बल पर विश्व मे शासन करने के सपने देखना, मानवीय मूल्यो का हनन करते हुए केवल स्वार्थ को तुष्ट करने वाले शरीयत के कानून को ही मानना (नसबन्दी के सम्बन्ध मे शरीयत की दुहाई देना पर स्वार्थ हेतु चोरी के लिए हाथ काटने का दण्ड न मानना) अपने को शासक वर्ग का सिद्ध करते हुए देश की सत्ता हथियाने का यत्न करना, स्वयं को विजेता सिद्ध करना, यहा के दुश्मनों को अपना मित्र व आदर्श बताना, देश के इतिहास में अंकित कलंक को अपना स्वर्णिम इतिहास मानना, आक्रान्ता को गौरवमयी इतिहास में जोड़ने का प्रयास करना, विदेशी संस्कृति का पोषण कर भारतीय सभ्यता का मान-मर्दन करने हेतु काम करना, अपने तीर्थों को देश के बाहर स्वीकारना, देश के संविधान को न मानना, यहां की न्यायपालिका को अस्वीकार करना (शाहबानो प्रकरण, शरीयत के प्रति दावे पर लिए गए कलकत्ता उच्च न्यायालय के निर्णय उच्चतम न्यायालय द्वारा दिया गया बनारस के कब्रिस्तान के सम्बन्ध में फैसला १९५१ व १९८६ का श्रीराम जन्मभूमि सम्बन्धी न्यायालय का निर्णय आदि) व देश के विभिन्न भागो में पूजा पर आपत्ति का बहाना ले दंगे व उपद्रव करना, देश के शत्रु उग्रवादियों को संरक्षण देना (जामा-मस्जिद दिल्ली व काश्मीर की मस्जिदें उदाहरण है) क्या साम्प्रदायिकता नही है?

भारत राष्ट्रीय धर्मनिरपेक्ष है इस आधार पर यह बात मान्य है कि धर्म के नाम पर किसी को कोई अतिरिक्त सुविधा न मिले, सरकार की दृष्टि में मानव-मानव एक समान है। पर क्या भारत में ऐसा ही हो रहा है? जब हम धर्मनिरपेक्ष हैं तो समान नागरिक संहिता क्यो नहीं है?

भाग्यशाली व्यक्ति

निसन्देह वह व्यक्ति भाग्यशाली होते है जिनको माता पिता की सेवा करने का अवसर प्राप्त होता है और जो उस अवसर का पूर्ण रूप से सदुपयोग करता है।

तैत्तरीय उपनिषद (११-२) का आदेश है कि माता को देवी तथा पिता को देव समझना चाहिए। देव और देवी आदर सत्कार करने योग्य होते हैं। इसी प्रकार बाइबल के दस आदेशों में मुख्य आदेश है कि माता और पिता का आदर करना चाहिए।

आधुनिक युग की परिस्थितियो मे व्यक्तियो का प्रायः अपने व्यवसाय तथा कार्य के निमित्त अपने माता पिता से अलग रहना पड़ता है। वह माता पिता के सेवा कर्तव्य से वंचित होते हैं। इसमे कुछ सन्देह नहीं कि माता-पिता अपने बच्चो को पालने के निमित्त अपने सुखो को त्याग देते हैं। अच्छी से अच्छी वस्तुएं वे अपने बच्चो को देते हैं चाहे उसके लिए उन्हे कितना ही कष्ट सहना पड़े।

एक पाश्चात्य विद्वान ने कहा है कि यदि संसार के सकल प्राणी तुला के एक पलड़े मे रख दिए जावें और दूसरे पलड़े में मेरी माता बैठ जावे तो भी मेरी माता का पलड़ा पृथिवी को छूता रहेगा।

प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य ही नहीं किन्तु धर्म है कि वह अपने माता-पिता की भरसक सेवा करे। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि मानव की सेवा ईश्वर की सबसे बड़ी पूजा है। यह कहना सत्य होगा कि माता पिता की सेवा मानवता की सेवा से अधिक महत्व रखती है।

'पाठक वृन्द! चाहे तुम को कितना कष्ट तथा दुःख सहना पड़े पर तुमको माता पिता की सेवा अवश्य करनी चाहिए ऐसा करने से तुम्हारी आत्मा उन्नति को प्राप्त होकर दैवी सुख को प्राप्त करेगी।

—कर्मनारायण कपूर

पंजाब में आतंकवाद को जड़ से उखाड़ना अभी बाकी : बेअन्त

५४ वे शहीद परिवार फंड वितरण समारोह मे ५३ आतंकवाद पीड़ित परिवारो मे ५.३० लाख की राशि वितरित

जालन्धर २० जून। पजाब मे हालाकि आतकवाद पर प्रभावी ढग से अंकुश लगा दिया गया है लेकिन इसे अभी जड से नही उखाडा जा सका है इसलिए किसी तरह की ढील इस सघर्ष मे नही दी जाएगी।

यह घोषणा आज यहा पजाब के मुख्यमन्त्री श्री बेअन्त सिंह ने हिन्द समाचार पत्र समूह द्वारा आयोजित शहीद परिवार फड के ५४ वें सहायता वितरण समारोह के अवसर पर की। समारोह के मुख्य अतिथि भाकपा की राष्ट्रीय परिषद के सचिव श्री एम फारुकी और अध्यक्षा श्रीमती विमला फारुकी थी। समारोह मे ५३ आतकवाद पीडित परिवारो मे यूनिट ट्रस्ट बाडो के रूप मे ५ ३० लाख रु० वितरित किये गये।

इस अवसर पर श्री फारुकी ने पजाबियो का आह्वान किया कि वे उन महान परम्पराओ व इतिहास को और उजागर करें जिन्हे अपनाकर उन्होने आतकवादियो की भारी उकसाहट के बावजूद हिन्दू सिख भाईचारा कायम रखा। यही आतकवादियो की पराजय का एक मुख्य कारण रहा। अब इस शाति को स्थायी व सुदृढ करने के लिए इस भाईचारे को और मजबूत बनाना होगा।

उन्होने कहा कि स्वतन्त्रता सग्राम के दौरान जलियावाला बाग मे भी सभी वर्गों के लोग एक साथ शहीद हुए गदर आन्दोलनकारियो ने भी इसी परम्परा को आगे बढ़ाया आर्य समाजियो ने सुधार लहर चलाई लेकिन आतकवादियो ने सभी परम्पराओ को तोडने मरोडने की कोशिश की लेकिन पजाबियो मे किसी प्रकार का भ्रम व विभेद पैदा नही कर सके।

उन्होने कहा कि सभी दल राजनीतिक मतभेद त्याग कर भाईचारे की भावना को और सुदृढ बनाए। उन्होने कहा कि शहीद परिवार फड अपने आप मे एकता का अहसास कराने वाला एक आन्दोलन है।

मुख्यमन्त्री बेअन्त सिंह ने कहा कि पजाब के लोगो पुलिस और सुरक्षा बलो ने आतकवादियो का साहस से सामना करते हुए उनके मन्सूबे विफल कर दिये। उकसाहट की गम्भीर घटनाओ के बावजूद हिन्दू सिख भाईचारा कायम रहने के कारण आतकवादियो को मुह की खानी पडी।

श्री एम फारुकी एव श्रीमती विमला फारुकी सहायता राशि वितरित करते हुए।

'तलाक' कह देने मात्र से नहीं उतरेगा शादी का जोड़ा

मुसलमान महिलाओ की पर्सनल ला बोर्ड को चेतावनी

नई दिल्ली २४ जून। उनकी आखो मे उस गुजरे वक्त की तडप था जो तीन बार गूजे उस शब्द मे सिमट कर रह गया था। पर इस निश्चय की चमक कही कोने मे झलक रही थी कि वे अब यह और नही जुल्म करेंगी। आखिर किसी मर्द को यह अधिकार नही कि वह अपने जुनून मे तीन बार तलाक कहकर अपनी ब्याहता को बेघर कर दे और निकाह से बने उस पाक रिश्ते की डोर को यू तोड दे।

कुल मिलाकर यह मुसलिम धार्मिक कट्टरवाद व औरतो की अशिक्षा का ही परिणाम है। सदियो से वे यह जुल्म सहती रही। आज यही पीडा शायद फूटकर बाहर निकल रही थी।

'तलाक शुदा मुसलमान औरतें आखो मे पानी लिए आज पत्रकारो के सामने बरस पडीं। उनकी आवाज आगाह कर रही थी मुसलिम पर्सनल ला बोर्ड को कि अब तीन बार तलाक सुनकर ही वे शादी का जोडा नही उतार फेंकेंगी।

मुसलमान महिलाओ के सगठन आल इडिया मुसलिम वूमेन एसोसिएशन ने इन तलाक शुदा औरतो की मुलाकात प्रेस से कराई। एसोसियेशन ने स्पष्ट चेतावनी दी कि यदि पर्सनल ला बोर्ड एक वक्त मे तीन बार तलाक कहकर निकाह से छुटकारा पाने की प्रथा को समाप्त करने के सम्बन्ध मे कोई ठोस कदम नही उठाएगा तो मुसलमान महिलाए देशव्यापी आदोलन छेडेंगी।

एसोसिएशन की अध्यक्ष श्रीमती हुस्ना सुभानी ने कहा कि मुसलमान मर्दों को तलाक का यह अधिकार पाक कुरान व हदिस के विरुद्ध है और इसलाम की मूल भावना का उल्लघन करता है।

एसोसिएशन एक ही बार मे तीन बार तलाक बोलकर तलाक देने के खिलाफ लोगो मे जागरूकता लाने का प्रयास करेगा। श्रीमती सुभानी ने सवाददाताओ को बताया कि कट्टरपथियो ने अपने स्वार्थ के लिए गलत ढग से प्रस्तुत किया। उन्होने बताया कि वर्षों से धर्म के नाम पर मुसलिम महिलाओ का उत्पीडन व शोषण हो रहा है। उन्होने कहा कि इस तरह के कानून इसलाम के खिलाफ है।

श्रीमती सुभानी ने बताया कि पाक कुरान के सूरा ६५ अल तलाक मे तलाक के बारे मे जिक्र किया गया है। इसमे कहा गया है कि कम से कम तीन माह मे तलाक दिया जा सकता है।

उन्होने कहा कि मुसलिम पर्सनल ला बोर्ड ने शाहबानो के मुकदमे के बाद घोषणा की थी कि इसलाम की कुरीतियो को खत्म करने की दिशा मे कारगर कदम उठाया जाएगा

बोर्ड की बैठक अगले माह जयपुर मे हो रही है। एसोसिएशन ने बोर्ड से अपील की है कि तलाक के मुद्दे पर विचार करें और उचित फैसला करें। एसोसिएशन ने पत्रकारो से आग्रह किया कि इस मुद्दे को प्रचारित करें ताकि मुसलिम महिलाओ को न्याय मिल सके। इस कुरीति के कारण लाखो मुसलिम महिलायें अपने बच्चो के साथ नारकीय जीवन जीने के लिए विवश हैं। भारत मे लगभग ९० प्रतिशत सुन्नी मुसलिम इस कुरीति को मानते हैं।

(शेष पृष्ठ ९ पर)

अयोध्या विवाद : हिन्दू संगठन और आर्यसमाज (३)

—सन्तोष 'कण्व'

इस्लाम और विध्वंस

अन्य सम्प्रदायों के उपासना स्थलों को तोड़ना इस्लाम में निषिद्ध नहीं है। उसका इतिहास यही बताता है कि मूर्तियों और मन्दिरों को तोड़ना या मन्दिरों पर बलात् कब्जा करना मुसलमानों का स्वभाव रहा है। यह अरब से प्रारम्भ हुआ था। वहां के समस्त मन्दिर और मूर्तियां ध्वस्त कर दी गईं। केवल मक्का का विशाल मन्दिर और उसके अन्दर रखा पाषाण बच गया। मन्दिर पर कब्जा कर उसे "काबा" नाम दिया गया है। उसके अन्दर रखी प्रतिमा को "संग-ए-असवद" कहा जा रहा है। काले रंग के इस विशाल पाषाण के विषय में मुसलमानों का विश्वास है कि यह पवित्र पत्थर पहले बिल्कुल सफेद था, लेकिन मुसलमानों के चूमने से अब काला पड़ गया है। पदार्थ-विज्ञान पर भले ही इस रहस्य का उत्तर न हो लेकिन इस्लामी विश्वास कहता है कि चूमने से मुसलमानों के पाप (काले कारनामे) इस पत्थर में चले गए और यह काला पड़ गया।

अरब से भारत तक की यात्रा में इस्लाम के अनुयाइयों ने ज्ञान-विज्ञान के ग्रन्थों और विद्या मन्दिरों को ही नष्ट नहीं किया अपितु अनेक देशों के वास्तुशिल्प और स्थापत्य कला को भी ध्वस्त कर दिया। यह आरोप नहीं यथार्थ है। ईरान की समृद्ध परम्परा, उन्नत वास्तुशिल्प और विशाल इतिहास आज नहीं रहा। चौदह सौ साल पहले के यूनान, मिस्र और ईरान आज पहेली बन गए हैं। समस्त अवशेष नष्ट कर दिए गए है। नाम मात्र के लिए जो कुछ बचा है, उसके कुछ और कारण हैं।

मुसलमानों को गम्भीरता से अपने अतीत पर विचार करना चाहिए। दूसरों के पूजा स्थलों को तोड़ना, ज्ञान-विज्ञान के ग्रन्थों को जलाना, स्थापत्य कला को नष्ट करना कुछ ऐसे कृत्य हैं जो इस्लाम पर निश्चित ही कलंक हैं। इस कलंक को जितना जल्दी हो मिटा देना चाहिए। अपने पूर्वजों के उन्मादी कृत्यों को अपनी अस्मिता का प्रश्न बनाना तथा दूसरो के बहकावे में आकर व्यर्थ की हठ पकड़ना कोई बुद्धिमत्ता नहीं है।

जाने-अनजाने में भूलें होती ही हैं। उन्हें सहृदयता से स्वीकार कर ही आप इस दुनियां में जी सकते हैं। दूसरों को अपमानित कर कोई भी सम्मान से नहीं रह सकता। भारतीय मुसलमानों को यह बात बहुत पहले ही समझ लेनी चाहिए थी। तब नहीं तो अब सही। अभी भी समय है। भूलों के प्रायश्चित्त में विलम्ब करना टकराव को बढ़ाना है। कोई भी समुदाय दीर्घ-काल तक अपमान की आग में नहीं जलेगा। इससे पहले कि वह बदले की भावना से खड़ा हो, उसके सम्मान को सद्भावनापूर्वक लौटा देना चाहिए। लेकिन यह मुसलमानों के सोचने का काम है। वे सोच सकेंगे, इसमें सन्देह है, क्योंकि उनकी शिक्षा-दीक्षा और भावना इसमें बाधक है। बहरहाल, सोचना या न सोचना उनका अपना काम है। यदि नहीं सोचते और स्थिति की गम्भीरता को नहीं समझते तो इसका परिणाम भी उन्हीं को भुगतना पड़ेगा।

आज अयोध्या मे विवाद है। काशी और मथुरा मे विवाद है। यही विवाद मक्का के काबा' को लेकर अरब में भी खड़ा हो सकता था। वह तो यह कहिए कि अरब के मूर्तिपूजकों को या तो मुसलमान बना लिया गया या फिर समूल नष्ट कर दिया गया या उन्हें वहा से भगा दिया गया। ईरान के अग्निपूजक (पारसी, आज भी इधर-उधर भटक रहे हैं। कितने ही परिवार भारत में हैं। यदि अरब के मूर्तिपूजकों में कुछ जीवित और संगठित होते तो 'काबा' पर अधिकार का संघर्ष आज भी जारी होता। इस्लाम को जो सफलता अरब, ईरान आदि पश्चिमेशियाई देशों मे मिल गई वह भारत में नहीं मिल सकी। इसीलिए आज अयोध्या गर्म है।

मुसलमानों की समस्या

हमारे कुछ मुस्लिम बन्धु कहते हैं कि मुसलमान परिवार में जन्म लेने की सजा उन्हें क्यों मिल रही है! यह विचार उठना अच्छी बात है। परन्तु मूल प्रश्न यह नहीं है। प्रश्न है जन्म के आधार पर ही कोई स्वयं को मुसलमान क्यों मानता है? उसने आज तक इसका विरोध क्यों नहीं किया? किसी को जन्म से ही सिख, मुसलमान, ईसाई आदि मानना तो अन्याय है। आर्य समाज इस परम्परा का विरोधी है। हम न जन्म के आधार पर वर्ण मानते हैं, न मत। हमे आश्चर्य है कि दूसरे हमारे साथ क्यों नहीं आते! बन्धनो मे पड़े छटपटाते, तो रहते हैं, मकड़जाल से बाहर निकलने का साहस नही जुटा पाते। इस साहस के अभाव में ही उलटी गंगा बह रही है। जन्म से ही लोगों पर अतीत, मान्यताएं और प्रथाएं थोपी जा रही हैं। उन्हें मन्दिर, मस्जिद, गिरजा, गुरुद्वारा से बांधा जा रहा है। अस्मिता के नाम पर उन्हें भड़काया जा रहा है। परस्पर लड़ाया जा रहा है। हमें आश्चर्य है कि यह सब क्यो सहन किया जा रहा है? जब तक लोगों में अपने ऊपर थोपे गए अतीत, ग्रन्थों और परम्पराओं को ठुकराने का साहस नहीं होगा, तब तक ऐसा ही चलेगा। हमारे विचार से बीस-पच्चीस वर्ष की आयु से पहले किसी को अपना मत सुनिश्चित करने का कोई अधिकार नहीं होना चाहिए। जब बुद्धि परिपक्व हो जाए, उचित-अनुचित का बोध हो जाए, सत्य और असत्य के निर्णय की सामर्थ्य विकसित हो जाएं तब ही उसे अपना मत निश्चित करने दिया जाए, उससे पहले नहीं। ऐसा होने पर किसी को यह कहने का बहाना नहीं मिलेगा कि उसको किसी समुदाय विशेष में जन्म लेने की सजा मिल रही है। बुद्धि परिपक्व हो जाए तर्क-शक्ति जग जाए, तभी किसी को कोई समुदाय अपनाने या छोड़ने का अधिकार होना चाहिए। तर्क से भागने वाले तो मत मतान्तरों बन्धक हैं। बन्धन में सुख कहां?

हिन्दू-मुस्लिम पूर्वाग्रह

अयोध्या के मन्दिर के विषय मे आर्य समाज का स्पष्ट मत है कि त्रेता के राम को विष्णु का अवतार घोषित कर वर्तमान अयोध्या में उनका मन्दिर बनाना कुछ हिन्दुओ की मूर्खता थी। इसमें पूरा राष्ट्र सहभागी नहीं है। न ही यह कोई राष्ट्रीय अस्मिता का प्रश्न है। हमारे विचार से राम को भगवान का अवतार मानना भारत के अतीत से बलात्कार है। राम के गौरव को मिट्टी में मिलाना है। अपने इतिहास को नष्ट करना है। राम की महान साधना का परमेश्वर की लीला के नाम पर उपहास उड़ाना है। आर्य-समाज की दृष्टि में राम का मन्दिर बनाना राम का अपमान करना है। राम की लीला खेलना अपने आदरणीय पूर्वज की अवमानना करना है। परमेश्वर की उपासना के स्थान पर राम या हनुमान की पूजा करना स्वयं को धोखा देना है। पौराणिक कल्पनाओ को प्रश्रय देना आर्य समाज का अभीष्ट नहीं है। अयोध्या के मन्दिर को त्रेतायुग से जोड़ना कपोल कल्पना ही है। भारत में मूर्तिपूजा का प्रचलन जैन काल से हुआ है।

जिस प्रकार मन्दिर-निर्माण कुछ हिन्दुओं का भावुक अज्ञान था, उस प्रकार मन्दिरो को तोड़कर उन्हें मस्जिद का रूप देने के प्रयास भी कुछ थोड़े से मुसलमानो की उन्मादी मूर्खता थी। जैसे राम और कृष्ण को भगवान का अवतार मानकर हिन्दू बहक गए वैसे ही अरब के अति उत्साही उम्मी मुबारक को खुदा का पैगम्बर मानकर मुसलमान गुमराह हुए। मन्दिरों और मूर्तियो के विध्वन्स की प्रेरणा लेते समय उन्होने अपन दिल और दिमाग को किसी का बन्धक बना दिया। आज दोनों ही अपने अविवेक और पूर्वाग्रहों के कारण समस्या बन गए हैं।

जहां तक अयोध्या के विवादित ढांचे (जो अब टूट चुका है) के सम्बन्ध में उपलब्ध ऐतिहासिक तथ्यों का प्रश्न है, तो उनका निष्पक्ष विश्लेषण कर कोई भी इस परिणाम पर सहज ही में पहुंच सकता है कि किसी विशाल मन्दिर को तोड़ा गया है। इसपर अधिकार को लेकर हिन्दुओं और मुसलमानो में समय-समय पर संघर्ष होते रहे हैं। तथ्य यह है कि न तो मुसलमान कभी उन पर स्थाई कब्जा कर सके और न हिन्दू ही उसे पूर्णतया वापस ले सके। आज का विवाद एक लम्बे संघर्ष की ही एक कड़ी है। उसका स्थाई समाधान नहीं हुआ तो यह संघर्ष अनवरत जारी रहेगा।

कर्म सिद्धान्त एवं प्रायश्चित का महत्व

—रामसुफल शास्त्री, विद्यावाचस्पति, संगरूर (पंजाब)

वैदिक सिद्धान्त के अनुसार कर्म सिद्धान्त एक वह अटल सिद्धान्त है। जिसे किसी भी कीमत में टाला नहीं जा सकता। जो जैसा करेगा वैसा ही भरेगा। यह एक अटल सिद्धांत है। इसी बात की पुष्टि करते हुए श्रीमद् भगवत गीता के अन्दर महाराज श्रीकृष्ण भगवान ने बताया है कि—

अवश्यमेव भोक्तव्यं फलं कृत कर्मं शुभाऽशुभम्।

अर्थात किए गए (अच्छे बुरे) शुभ-अशुभ कर्मों का फल अवश्य ही भोगना पड़ता है। चाहे बुरा कर्म हो, चाहे अच्छा, चाहे कम पाप हो, या अधिक जो जितना कम या अधिक भला-बुरा कर्म करता है उसे कृत कर्मानुसार उतना ही पाप-पुण्य फल के रूप में सुख-दुःख भोगना पड़ता है।

प्राय: लोग यह धारणा रखते हैं कि हम पाप कर्म करके कुछ दान पुण्य कर देंगे तो हमारे पापों का बोझ हलका हो जाएगा। कई लोग तो अपनी कमियों एवं बुराइयों को छिपाने के लिए धार्मिक संस्थाओं का सहारा लेते हैं। कई तीर्थ स्नानादि करके पापों की निवृत्ति समझते हैं, तो कोई भगवान से क्षमा मांगकर ऐसा सोचते हैं कि प्रभु हमें क्षमा कर देंगे। मगर ऐसा कुछ नहीं होता। ऐसा करना एक बहुत बड़ी अज्ञानता है। जो जन अच्छा-बुरा, कम-अधिक जैसा और जितना कर्म करेंगे उन्हें वैसा फल तो भोगना ही पड़ेगा। बिना भोगे तो छुटकारा है ही नहीं।

कुछ लोग कहते हैं कि हजरत मुहम्मद की सिफारिश से पाप बख्शे जायेंगे कुछ लोग कहते हैं कि ईसामसीह की शरण में आने से छुटकारा हो जाएगा, कुछ कहते हैं गंगा-गंगा कहने मात्र से पापों से मुक्ति मिल जाएगी। मगर उन भोले लोगों को यह पता नहीं है कि वेद का अटल सत्य सिद्धान्त है कि—

'अनून पात्रं निहितं न एतत् पक्तायं पक्क: पुनराविशाति'

ऐ इन्सान कर्मों का फल अटल है वह किसी प्रकार भी भोगे बिना टल नहीं सकता, जो तूने बर्तन में डालकर पकाया है वही खाने को मिलेगा, सावधान होकर विचार कर और समझले कि—

कुछ देर है पर अन्धेर नहीं इन्साफ है अदल परस्ती है।
इस हाथ करो इस हाथ मिले यहां सौदा दस्तबदस्ती है॥

गुरुवर देव दयानन्द जी महाराज संस्कार विधि के अन्दर गृहस्थ प्रकरण में मनुस्मृति का हवाला देते हुए लिखते हैं।

नाधर्मश्चरितो लोके सद्य: फलति गौरिव।
शनैरावर्तमानस्तु कर्तुर्मूलानि कृन्तति॥

अर्थात—मनुष्य निश्चय करके जाने कि इस संसार में जैसे गाय की सेवा का फल दूध आदि शीघ्र नहीं होता, वैसे ही किए हुए अधर्म का फल भी शीघ्र नहीं होता, किन्तु धीरे-धीरे अधर्म कर्ता के सुखों को रोकता हुआ सुख के मूलों को काट देता है, पश्चात अधर्मी दुःख ही दुःख भोगता है। इसलिए दुःखों के कारण, वेद शास्त्रों के विरुद्ध सभी दुष्कर्मों को छोड़ देना चाहिए। किसी कवि ने बड़ा सुन्दर लिखा है कि—

"बोया पेड़ बबूल का तो आम कहां से होय"

हां किए गए बुरे कर्म पर प्रायश्चित तो अवश्य करना चाहिए। वह भी पाप वासना अर्थात बुरे कर्म की प्रवृत्ति समाप्त करने की भावना को दृष्टिगत रखके ही प्रायश्चित करना चाहिए। क्योंकि इस प्रकार प्रायश्चित करने से आगे से पाप कर्म न करने की शक्ति एवं प्रेरणा मिलती है। पश्चाताप से पाप क्षय नहीं होते। परन्तु आगे पाप करना बन्द हो जाता है। जो पाप हो चुके हैं, उनका फल तो भोगना ही पड़ेगा।

कृत्वा पापहि संतप्य तस्मात् पापात् प्रमुच्यते नैवं कुर्या पुनरति निवृत्या पूयते तुस:। चाहे कितना भी पश्चाताप किया जावे तो भी कृत पापों को भोगना ही पड़ता है। जैसे कोई कुए में गिरा और उसके हाथ-पांव टूट गए, तो अब चाहे जितना पश्चाताप करे, तो भी उनके हाथ पांव जो टूटे सो तो टूट ही चुके। हां पश्चाताप से इतना जरूर होगा कि वह आगे के लिए फिर कभी कुएं में नहीं गिरेगा। जहां यह अटल सत्य सिद्धान्त हैं कि हर किसी को अच्छे बुरे कर्म का फल हर हाल में भोगना ही भोगना पड़ता है। वहां यह भी अटल सत्य है कि सच्चे दिल से किया गया प्रायश्चित पुन: पाप करने से बचाता है।

यदि गम्भीरता पूर्वक इस विषय पर विचार किया जाय तो पता चलता है कि प्रायश्चित एक महत्वपूर्ण वैदिक क्रिया है। इसमें तो जहां अपने किए पर पछतावा होता है वहां आगे वैसा न करने का व्रत लेना होता है। वस्तुत: सच्चा पश्चाताप दुहरा कार्य करता है। जहां वह अपने भूतकाल पर खेद भरी दृष्टि डालता है वहां अपने भविष्य पर सावधानी की निगाहें रखता है। तात्पर्य यह है कि सच्चे प्रायश्चित द्वारा जहां अपने किये गये कर्मों के प्रति खेद एवं पश्चाताप के भाव उत्पन्न होते हैं वहां भविष्य के लिए वैसा न करने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ एवं संकल्पवान होना होता है। क्योंकि प्रत्येक कर्म एक वासना छोड़ जाता है। जो पुन: वैसा कर्म करने को प्रेरित किया करता है। प्रायश्चित उस वासना पर चोट करता है। जिससे वासना मर जाती है और मनुष्य वैसा कर्म पुन: करने से बच जाता है।

यही प्रायश्चित का महत्व है। अत: प्रायश्चित पापवासना की निवृति में प्रबल सहायक सिद्ध होता है।

महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज का कथन है कि जब कोई व्यक्ति कर्म करता है तो उसे उस कर्म का फल मिलता है और उसके अलावा एक वासना बना करती है। चित्त में ये वासनायें लाल, पीली, नीली आदि रंगों की रेखाओं के रूप में रहा करती हैं। इनका काम एक और भी होता है कि जो जिस कर्म की वासना होती है उसी के करने की यह अन्दर से प्रेरणा करती है। प्रायश्चित की उपयोगिता यह है कि उससे वासना का यह प्रेरक अंक नष्ट हो जाता है और प्रायश्चित करने के बाद उस दुष्कर्म के करने का

(शेष पृष्ट ८ पर)

सत्यार्थप्रकाश के ३७वें संस्करण (परोपकारिणी सभा द्वारा प्रकाशित) पर मेरे विचार

—प्रो० डा० भवानीलाल भारतीय

सत्यार्थ प्रकाश के मूल पाठ तथा परवर्ती सस्करणो मे किए गये सशोधनो, पाठ परिवर्तन, तथा सम्पादको द्वारा किए गए अनेक प्रकार के स्वेच्छापूर्ण कृत्यो की एक लम्बी कहानी है। मुझे आज से लगभग चालीस वर्ष पुरानी घटना का स्मरण आता है। राजस्थान के डीडवाना (नागौर जिले का एक कस्बा) जहा रामानुज सम्प्रदाय के कट्टर उपासक करबपति सेठ बागड का जनव्यापी प्रभाव है, कस्बे में आर्यसमाज तथा पौराणिको के बीच जबरदस्त शास्त्रार्थ हुआ था। मैं उस शास्त्रार्थ का प्रत्यक्षदर्शी था। शास्त्रार्थ के पहले दिन हम कतिपय आर्य समाजी मित्रो के साथ पौराणिक प माधवाचार्य से मिलने गये जो सेठ बागड के अतिथिगृह आनन्द भवन मे ठहरा हुआ था। बातो ही बातो में प माधवाचार्य आवेश म आकर बोला, "आप आर्य समाजी हमारे पुराणो मे प्रक्षेप की बात करते हैं। आप कहते हैं कि हमने इन तथा अन्य ग्रन्थो मे मनमानी मिलावटें की हैं। किन्तु आप अपने ही ग्रन्थ सत्यार्थ-प्रकाश का क्या कोई प्रामाणिक सस्करण अब तक छाप सके हैं?' इसके पश्चात् उसने पुन हमे ललकारते हुए कहा, "अब तक आपके सत्यार्थ प्रकाश के इतने (स ख्या याद नही) स स्करण निकले हैं। मैंने प्रत्येक स स्करण को आपस मे मिलाया है और देखा है कि आपके इन सभी स स्करणो के पाठो मे सेकडो पाठ भेद हैं। जब आप साठ सत्तर साल पुराने लिखे या छपे सत्यार्थ प्रकाश का एक सही स स्करण नही निकाल सके तो हजारो वर्षों से प्रचलित पुराणो मे न्यूनाधिक हो जाने की आलोचना क्यो करते है?' हम लोगो के पास इसका कोई उत्तर नही था।

सत्यार्थ प्रकाश के पाठालोचन, पाठ स शोधन तथा सम्पादन का इतिहास आज का नही है। जब प्रथम बार के मुद्रित तथा १८८४ मे (महाराज के निधन के पश्चात्) प्रकाशित सत्य थ प्रकाश की प्रतिया लोगो के हाथो मे आई तो उसमे भी मुद्रण की भूलें तो थी ही जिनका होना आश्चर्यजनक भी नही था, किन्तु अन्य ग्रन्थो से उद्धत प्रमाणो के पाठो को लेकर भी अनेक कठिनाईया थी जिनका सामना आर्य समाज के विद्वानो, खास तौर से विधर्मियो से शास्त्रार्थ करने वालो को करना पडता था। स्वामी दयानन्द का युग और आज का युग भिन्न है। आज जिस अध्ययन कक्ष मे बैठकर मैं लिखता हू उसमे १० अलमारिया हैं, जिनमे लगभग ६ हजार ग्रन्थ तो मेरे अपने हैं। अपने प्रत्येक लेख या ग्रन्थ को प्रामाणिक बनाने, अन्य ग्रन्थो से दिये जाने वाले प्रमाणो की पूरी छानबीन करने तथा उनके सही पते देने के लिये मुझे अपने लिखने के आसन से पचासो बार उठ कर तत तत ग्रन्थ के तत् तत् स्थल को देखना पडता है। मात्र स्मरण शक्ति पर निर्भर रह कर कोई ग्रन्थ लिखना (उपन्यास, कहानी की बात छोड दें) कठिन है।

किन्तु ऋषि दयानन्द के ग्रन्थ लेखन की स्थिति भिन्न थी। यद्यपि जीवन के अन्तिम दिनो मे वे काफी बडे पुस्तक-सग्रह को अपने यात्राकाल में भी साथ रखते थे तथा वेद भाष्य एव अन्य ग्रन्थो की रचना एव सशोधन के समय सन्दर्भ ग्रन्थो की सहायता भी लेते थे, किन्तु उनके लेखन के प्रारम्भिक युग मे ऐसी स्थिति नही थी। वे प्राय अपने ग्रन्थ बोलकर ही लिखाते थे तथा स्मृति के आधार पर ही प्रमाण आदि को उद्धृत करते थे। उन्हें इतना अवकाश भी नही था कि अपने लिखाये को सावधानी पूर्वक पुन देखते। यद्यपि बहुलाश मे उन्होने ऐसा किया भी। वे प्राय लेखको पर ही निर्भर रहते, यद्यपि यह भी जानते थे कि दिनेश राम जैसे धूत पण्डित उनके आशय के विरुद्ध सामग्री को उनके लिखे मे मिला देने के लिये उधार खाये बैठे है।

मैं यहा सत्यार्थ प्रकाश के पाठान्तरो, पाठ निर्धारण तथा पाठ सशोधनो का इतिहास नहीं लिख रहा हू। यह शक्य भी नही है। तथापि सशोधन कार्य को अनेक विद्वानो ने बडी गम्भीरता से किया है यद्यपि उनके कार्यों मे स वाद की स्थिति कभी नही रही। विसम्वादी स्वर ही प्राय उभर कर आये। प० भगवद्दत्तजी ने गोविन्दराम हासानन्द के लिये सत्यार्थ प्रकाश का सशोधन सम्पादन किया जो १९६३ मे छपा। उधर स्वामी वेदानन्द तीर्थ ने जब विरजानन्द शोध स स्थान गाजियाबाद के लिये स्थूलाक्षरी सत्यार्थ प्रकाश का सम्पादन किया तो लेखक के विचारो की पुष्टि मे अनेक सुदृढ प्रमाण अपने विशाल स्वाध्याय के बल पर पाद टिप्पणियो के रूप मे तो दिये किन्तु जहा उन्हें मूल ग्रन्थ के पाठ मे ही कोई विप्रतिपत्ति दृष्टि मे आई, उन्होंने बडे आराम से उस पाठ को बदलने मे भी कोई स कोच नहीं किया। प० युधिष्ठिर जी मीमासक ने आर्य समाज स्थापना शताब्दी के अवसर पर सहस्रो टिप्पणियो तथा नाना उपयोगी परिशिष्टो एव अनुक्रमणियो से युक्त जो स स्करण निकाला, विद्वान् पाठको के लिये उसकी उपयोगिता निर्विवाद रही। यद्यपि अनेक व्यक्तियो तथा स स्थाओ ने सत्यार्थ प्रकाश जैसे क्लासिकल ग्रन्थ पर सम्पादक द्वारा अपनी सूझ-बूझ से लिखी इन टिप्पणियो का स्वागत नही किया, तथापि मीमासक जी का यह स स्करण भी सत्यार्थ प्रकाश की जीवन यात्रा का एक स्मरणीय पडाव सिद्ध हुआ।

उधर आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के स स्थापक तथा ऋषि दयानन्द एव उनके साहित्य के प्रति अनन्य श्रद्धावान स्व० सेठ दीपचन्द जी आर्य ने इस सिद्धान्त को मान्यता दी कि सत्यार्थ प्रकाश का द्वितीय स स्करण (जो १८८४ मे छपा-पूर्व प्रकाशित १९७५ के सस्करण की तो कथा ही भिन्न है) ही प्रामाणिक है क्योकि इसका मुद्रण श्री महाराज के जीवन काल मे ही आरम्भ हो गया था। वह उनके अवसान के समय तक लगभग दो तिहाई छप भी चुका था, इसकी प्रेस कापी को भी महाराज ने बहुलाश मे देख लिया था तथा उस पर समुचित सशोधन भी कर दिये थे। श्री आर्य के इस कथन को महत्व देना ही चाहिए। उन्होने अपने ट्रस्ट से जो सत्यार्थ प्रकाश छापा वह द्वितीय सस्करण का ही अक्षरश अनुकरण करता है। यह भिन्न बात है कि इस स स्करण मे भी मुद्रण की भूलें रह गई, शास्त्र वचनो तथा अन्य ग्रन्थो के प्रमाण तथा पतो मे भूलें रहीं। इन सबका परिमार्जन करने का प्रयास अजमेर से छपने वाले अगले स स्करणो मे किया जाता रहा।

सत्यार्थ प्रकाश के स शोधनो की ओर परोपकारिणी सभा का ध्यान जाना तो स्वाभाविक ही था, क्योकि १९३३ तक कापी राइट कानून के प्रावधान के अनुसार इस ग्रन्थ को छापने के सर्वाधिकार तो इस सभा के ही पास थे। अत इस सभा ने भी अनेक बार ऋषि के इस अमर ग्रन्थ का प्रामाणिक पाठ निश्चित कराने का प्रयास किया। सभा द्वारा किये गये इन सारे प्रयासो का विवरण मैंने परोपकारिणी सभा के इतिहास मे विस्तार से दिया है। मैंने इस सभा की सदस्यता १९७० मे ग्रहण की। उससे पूर्व ही सर्वश्री प० भगवद्दत्त जी, प० ब्रह्मदत्तजी जिज्ञासु डा० परमात्माशरण डा० मगलदेव शास्त्री आदि सदस्यो की एक समिति को यह काम सौंपा गया। जिज्ञासु जी का निधन १९६८ मे तथा प० भगवद्दत्त का परलोकगमन १९६८ मे हो गया, तथापि सभा के कार्यकर्ता श्री धर्मसिंह कोठारी ने उक्त समिति द्वारा निर्धारित नीति का अनुसरण करत हुए यह कार्य किया। तथापि इस कार्य को अन्तिम तथा परिपूर्ण नही कहा जा सकता। विगत वर्षों मे ही स्वामी विद्यानन्द सरस्वती तथा कतिपय अन्य विद्वानो ने इस ग्रन्थ के कतिपय स्थलो पर जो प्रश्न उठाये हैं वे पर्याप्त गम्भीर हैं। निष्कर्षत सत्यार्थ प्रकाश का स शोधन सम्पादन, पाठ निर्धारण तथा उसका एक आदर्श स स्करण प्रस्तुत करना किसी एक व्यक्ति का काम नही है। कम से कम आर्य समाज के आठ दस विद्वान सम्मिलित रूप से रात दिन बैठ कर इस कार्य का सम्पादन परस्पर विश्वास तथा समन्वित रूप से करें तो भी इसे पूरा होने मे पर्याप्त समय लगेगा। (क्रमश)

आवश्यक सूचना

उद्गीथ साधना स्थली, ओम वन डोहर राजगढ (हिमाचल) में आजकल निर्माण कार्य चल रहा है एव पूरे हिमाचल प्रदेश मे पानी का अभाव है। और यह स्थान ऊचाई पर है और कच्चे रास्ते से चढाई चढनी पडती है।

अत सूचित किया जाता है कि सभी श्रद्धालुगण विशेषकर वृद्ध और रोगी सज्जन ध्यान रखें। तथा आने से पहले सभी व्यक्ति हमेशा ही स्वीकृति लेकर ही आवें। बिना स्वीकृति लिए आने वाले अपनी व्यवस्था के स्वय ही जिम्मेवार होंगे।

—न्यासकर्त्ता

आर्य जगत् के समाचार

आर्य वीर दल जीन्द द्वारा आयोजित चौथा आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर

आर्य वीर दल जीन्द ने 'गोल्डन फोरेस्ट्स् (इण्डिया) लि० के सौजन्य से ३० मई से ६ जून १९९३ तक आट उच्च विद्यालय जीन्द मे आर्य वीर प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया। इसका उद्घाटन माननीय डा० राम भक्त लाम्बा एच सी एस एस डी एम सफीदो ने किया। शिविर में ८० शिविरार्थियो ने भाग लिया। प्रतिदिन यज्ञ, सुबह शाम सन्ध्या तथा दो बार रोजाना बौद्धिक की व्यवस्था थी जिसमे युवा शिविरार्थियो को शारीरिक, मानसिक एव बौद्धिक रूप से तैयार किया गया।

६ जून रविवार को समापन समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि माननीय आर एस यादव आई पी एस. एस पी जीन्द थे। और श्री वी के गुप्ता वाईस चेयरमैन गोल्डन फोरेस्ट्स् (इण्डिया) लि तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती गुप्ता विशेष आमन्त्रित थे। उद्घाटन तथा समापन दोनो समारोह पूज्य स्वामी रत्नदेव जी सरस्वती की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुये।

दशम उपनिषद कथा सत्संग समारोह सम्पन्न

उपरोक्त कथा सत्संग समारोह ११ दिन दिनांक १६-५-९३ से २६-५-९३ तक आर्य समाज रातानाडा जोधपुर मे मनाया गया। इसमे जम्मू के दार्शनिक विद्वान डा० योगेन्द्र कुमार शास्त्री एम ए पी एच डी के प्रतिदिन प्रात एव साय वेद दर्शन उपनिषद पर प्रवचन हुए तथा प० वेदराज भजनोपदेशक के सुमधुर भजनोपदेश हुए। जोधपुरके सत्संग प्रेमी नागरिको ने अच्छी सख्या मे भाग लेकर कथा सत्संग को बहुत पसन्द किया और भजन, प्रवचन का भरपूर आनन्द लिया।

श्री प्रेमशंकर आर्य दिवंगत

बरेली। उत्तरप्रदेश के प्रसिद्ध पुस्तक प्रकाशक और विक्रेता श्री प्रेमशकर आर्य (प्रेम पुस्तक भण्डार) का गत ३ जून को देहान्त हो गया। वे ८५ वर्ष के थे।

श्री प्रेमशकर जी ने आर्य समाजो के वार्षिकोत्सवो पर जाकर आर्य साहित्य पाठको को उपलब्ध करवाया। वैदिक साहित्य के महत्वपूर्ण ग्रन्थो का प्रकाशन भी उन्होने किया। उनके निधन से इस क्षेत्र मे आर्य साहित्य का प्रचारक और प्रसारक उठ गया।

—प्रधान आर्य समाज बिहारीपुर

कर्म सिद्धान्त

(पृष्ठ ६ का शेष)

जिसका प्रायश्चित किया गया है प्रेरणा करने वाली कोई वस्तु अन्त करण मे बाकी नही रहती है। यह कोई थोडी बात नही है। सच्चे अर्थों मे वही इसान हैं जो अपने किए हुए गलत कार्य पर पश्चाताप करे। इसी बात की पुष्टि करते हुए आर्य जगत के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक प० श्री सत्यपाल जी पथिक ने लिखा है कि—

जो गलती करके पछताए उसे इन्सान कहते है।

इसलिए प्रायश्चित को उन्नत जीवन बनाने का एक मुख्य साधन समझना चाहिए। वस्तुत प्रायश्चित मानव जीवन को ऊंचा उठाने की एक अमोघ औषधि एव साधन है। किन्तु यदि पश्चातापादि करते हुए भी दुष्कर्मों मे प्रवृत्ति है और मनुष्य दुष्कर्म भी करता रहे एव प्रायश्चित भी, तो उसका कोई लाभ नही है। जैसा कि पथिक जी ने लिखा है कि—

किया परहेज कुछ भी न तो दवा खाने से क्या होगा।

अत प्रायश्चित सच्चे मन से करना चाहिए एव दुष्कर्मों को छोडने के लिए सदैव उद्यत भी रहना चाहिए,तभी प्रायश्चित की सार्थकता है। तो आइए हम सब मिलकर परमपिता से प्रार्थना करें कि प्रभु हम सबको ऐसी सुमति दें कि हम अपनी पडताल करते हुए बुराइयो को तजकर हमेशा शुभ कर्म ही करें।

आर्य समाजों के निर्वाचन

आर्य समाज सिविल लाइन्स अलीगढ—श्री शिवस्वरूप शर्मा प्रधान, श्री सत्यप्रकाश सत्यार्थी मन्त्री, श्री ओमप्रकाश शर्मा कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य वीर दल मधुपुर—श्री दिलीप मिश्रा प्रधान, श्री पकजकुमार तिवारी मन्त्री, श्री सतोष कुमारदास अमेला कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज फाजिल्का—श्री सुभाषचन्द्र बब्बुजा एड प्रधान, मा० मूलचन्द्र शर्मा मन्त्री, श्री बनवारीलाल कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य उपप्रतिनिधि सभा लखनऊ—कै० सुखपाल सैन मेहता प्रधान, श्री सत्यनारायण आर्य मन्त्री, श्री रमेशचन्द्र त्रिपाठी कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज रांची—श्रीमती सुशीला आर्या प्रधाना, श्री सतीश आर्य मन्त्री, श्री सुनील कुमार आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज विष्णुगज फर्रुखाबाद—श्री बालकराम आर्य पथिक प्रधान, श्री कृष्ण आर्य मन्त्री, श्री मगाराम आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज नकुड—श्री साधुराम जी प्रधान, श्री भूपेन्द्र कुमार गोयल मन्त्री, श्री पकज कुमार कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज (शिवपुरी) खतौली—श्री सत्येन्द्रपाल आर्य प्रधान, श्री हरपालसिंह राणा मन्त्री, श्री हरीश कुमार ग्रोवर कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज कागज नगर सिरपुर कैम्प—श्री एम० ठाकुर राय प्रधान, श्री देवेन्द्र आर्य मन्त्री, श्री रजीत कुमार मण्डल कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज सायला जि० सुरेन्द्र नगर (गुज०)—श्री मनुभाई मानसी भाई प्रधान, श्री घनश्याम नाथ लाल आर्य मन्त्री श्री मूपत भाई वीर सगभाई कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज सरस्वती विहार दिल्ली—श्री सरदारीलाल बजाज प्रधान, श्री विनय भूषण गुप्ता मन्त्री, श्री गोपीचन्द्र गौहर कोषाध्यक्ष चुने गए।

स्वास्थ्य सुधा--

बागवानी में ढूढ़िए स्वस्थ जीवन का रहस्य

कुछ दिन पूर्व किसी पत्रिका मे एक अति रोचक समाचार छपा था, यह समाचार एक कैसर के मरीज के आत्मकथन के रूप मे था। कैंसर से पीडित उस व्यक्ति के लिए डाक्टर घोषणा कर चुके थे कि वह छह मास से अधिक किसी भी तरह जीवित नही रहेगा।

कैंसर रोग से निराश उस व्यक्ति ने घुल घुलकर मरने की बजाए जीवन के शेष छह महीनो को अधिक प्रफुल्लता और आनन्द से बिताने की सोची और गुलाब के फूलो के शौकीन इस व्यक्ति ने जीवन के शेष दिन गुलाब की बागबानी के लिए समर्पित कर दिए।

उसने पाच सौ पौधे मगाकर गुलाब उगाने शुरू कर दिये। अब वह दिन भर इन पौधो की देखभाल मे व्यस्त रहने लगा। निराई, गुडाई जगली फुटाव हटाना छटाई करना, पानी और खाद देना कीटाणुनाशक छिडकना, थाले बनाना और सूखे फूल हटाना हर काम वह अपने निरीक्षण व निर्देशन मे करता कराता। जब पौधो मे सुन्दर, सुगन्धित रग बिरगे गुलाब खिलने शुरू हुए तो उसे लगा कि अपने मारक रोग की तरफ अब उसका ध्यान बहुत कम ही जाता है।

काल की छडी तेजी से टिकटिक करती जा रही थी पर उसने महसूस किया कि समय पूरा होने पर भी उसके रोग मे कोई वृद्धि नही हुई है। उल्टा खुद को पहले से स्वस्थ महसूस कर रहा है। एक दिन वह अपने डाक्टर के पास जा पहुचा। डाक्टर ने परीक्षण मे जो देखा उससे वह और रोगी दोनो विस्मित थ। उसके असाध्य घोषित कैसर की गाठ बहुत कम हो चुकी थी, बिना किसी विशेष चिकित्सा के।

कैसे घटा यह चमत्कार ? उसकी गुलाब गाथा सुनने के बाद डाक्टर का अनुमान यही था कि रोगी की मन दशा मे गुलाबो की खेती के दौरान जो परिवर्तन आया, उसने चिंता और तनाव से रहित होकर जिस प्राकृतिक वाता वरण मे जीना शुरू किया उसी से उसका यह रोग कम हो रहा है। और कुछ ही समय मे वह व्यक्ति पूर्णत स्वस्थ हो गया। पेड पौधे के मानव स्वास्थ्य से सम्बन्ध का यह एक अदभुत उदाहरण है।

वस्तुत चिंता क्रोध, घृणा, प्रतिशोध की इच्छा, निराशा आदि ऐसी भावनाए हैं जो हमारी नत स्रावी ग्रन्थियो की स्वाभाविक क्रिया को अस्त-व्यस्त करती है और शरीर मे जैव रासायनिक परिवर्तन लाती हैं इससे नाना भाति के रोग उत्पन्न होते हैं। उच्च रक्तचाप और हृदयरोग ही नही कैसर दमा, गठिया, एग्जीमा जैसी बीमारियों की जड भी मानसिक तनावो मे पायी गयी है।

दिल्ली के गगाराम अस्पताल मे भी इस वाटिका चिकित्सा पर बाकायदा शोध और परीक्षण हो रहे हैं यहा विविध प्रकार के वृक्ष और बहुवर्णी पुष्पो वाले पौधे लगाये गए हैं विशेष मरीजो के वार्डो की खिडकियो के सामने।

डा० रघावा ने बताया कि यह प्रयोग लम्बे समय तक चलना चाहिए। इसके अतिरिक्त केवल माली से काम कराना इतना लाभ नही देता जितना थोडे समय तक स्वय को बागबानी मे लगाना। यहा भी इस तथ्य की पुष्टि हुई है कि वाटिका चिकित्सा से उच्च रक्तचाप तथा मानसिक रोगो मे विशेष लाभ होता है। यह मनुष्य को दीर्घ जीवन प्रदान करती है।

वनस्पति का हरा रग मन को राहत देता है तो लाल, पीले और नारगी रग उत्फुल्लता लाते हैं। सफेद तथा ऊदे रगो से शाति की अनुभूति होती है। फेफडे के रोगो के लिए चीड, हृदय के लिए अर्जुन और त्वचा के लिए नीम लाभदायक माने गये हैं। पीपल बड, तुलसी हरड आवला, हरसिंगार, मरुआ, कचनार, सेमल, जबा आदि के गुण गाव देहात मे अनपढ लोग भी जानते हैं।

'तलाक' कह देने मात्र से

(पृष्ठ ४ का शेष)

उन्होने कहा कि कितने आश्चर्य की बात है कि इस आधुनिक युग मे पति यदि शराब पीकर, गुस्से मे या किसी दबाव मे आकर तलाक तलाक तलाक' बोल देता है तो उसका अपनी पत्नी से तलाक हो जाता है। अब यदि वह फिर से उसी पत्नी के साथ रहना चाहता है तो महिला को 'हलाल' से गुजरना पडता है। मतलब उक्त महिला दूसरे मर्द से निकाह करे शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करे फिर तलाक ले तब जाकर वे पुन एक साथ रह सकते हैं।

एसोसिएशन ने इसलामिक विद्वानो से आग्रह किया कि वे इस आन्दोलन मे शरीक हो। उन्होने माग की है कि पाक कुरान के प्रकाश मे ही तलाक की व्यवस्था हो।

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में प्रवेश प्रारम्भ

स्वामी दयानन्द की जन्म भूमि टकारा गुजरात मे स्थित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय मे ५ वर्ष के पाठ्यक्रम हेतु १६ से २० वर्ष की आयु के अविवाहित अभ्यर्थी, जिन्होने सस्कृत, अग्रेजी एव हिन्दी विषय मे हाईस्कूल उसके समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण की हो आवेदन करें। पाठ्यक्रम गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर के समकक्ष है, जिसमे सिद्धान्त विशारद एव ३ वर्षीय सिद्धान्ताचार्य पाठ्यक्रम सम्मिलित है। आवेदन १५ जुलाई तक भेजें। पूरी शिक्षा, भोजन आवास एव वस्त्र आदि सब नि शुल्क है।

—विजयपाल शास्त्री प्राचार्य

गुरुकुल बिठूर (कानपुर) मे प्रवेश

कातिक पूर्णिमा १९८४ ई० को गगातट पर सस्थापित गुरुकुल आश्रम मे कक्षा ६ से १० तक गुरुकुल कागडी के पाठ्यक्रमानुसार जुलाई मे छात्र प्रवेश पाते हैं। आवासीय कमरो के निर्माण हेतु ग्यारह सौ रुपये के दानदाताओ के नाम सगमरमर पर अकित होगे।

सैंतीस सौ रुपये के वार्षिक पालक सदस्य द्वारा प्रविष्ट छात्र को आवास-शिक्षा-भोजन दूध ! प्रवेश शुल्क चार सौ अस्सी रुपये।

आचार्य, गुरुकुल बिठूर (कानपुर), पिन २०९२०१ से प्रवेश नियमावलि निश्शुल्क मगावें।

—स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती (कन्दाहारी)
आर्य समाज पिथौरागढ़
(उत्तर प्रदेश) पिन २६२५०१

प्रवेश प्रारम्भ

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, हाथरस (जनपद अलीगढ) उ प्र में शिशु कक्षा से बी ए स्तर तक की नि शुल्क शिक्षा गुरुकुल पद्धति पर नि शुल्क छात्रावास, सबका सीधा सादा एकसा रहन सहन, कड़ा अनुशासन नगर से दूर उत्तम वातावरण, सामान्य विषयो के अतिरिक्त धर्म नैतिकता सगीत, कला गृहकार्यों की भी अनिवार्य शिक्षा, नवम श्रेणी से विज्ञान (सामान्य एव विशेष) की भी शिक्षा देसी घी दूध, दो समय जलपान सहित भोजन शुल्क कक्षा शिशु से पचम तक रुपये २०० मासिक तथा कक्षा ६ से बी ए तक २२० रुपये मात्र। प्रवेश प्रारम्भ।

नियमावली मगवाये।

—मुख्याधिष्ठात्री

महिला अभ्यर्थी चाहिये

तबला (सगीत प्रभाकर। एम ए) विज्ञान-दो पद (एम एस-सी जीव-विज्ञान, बी एस सी भौतिक विज्ञान) गणित (बी एस सी), अग्रेजी एम ए बी एड्०। पी-एच डी) आश्रमाध्यापिकायें (कन्याओ की देखभाल हेतु), आश्रमाध्यक्ष। (अवकाश प्राप्त को वरीयता), लिपिक (बी काम०। बी ए अनुभवी पुरुष)। द्वारपाल (पुरुष अवकाश प्राप्त सैनिक को वरीयता) वेतन योग्यतानुसार। शीघ्र आवेदन पत्र भेजें।

मुख्याधिष्ठात्री
कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, हाथरस

उपन्यास समीक्षा-

शक्ति पुत्र

(मेवाड़ की ऐतिहासिक घटनाओं का सजीव चित्रण)

उदयपुर शिक्षा उपनिदेशक कार्यालय में सहायक निदेशक श्री श्यामसुन्दर भट्ट की अनुपम कृति शक्तिपुत्र एक ऐतिहासिक उपन्यास के रूप में उन आत्माओं को समर्पित है जिन्होंने मेवाड़ की रक्षा हेतु अपना बलिदान दिया तथा उन माताओं और बहनों को जिन्होंने स्वधर्म निधनं श्रेयः की उक्ति को चरितार्थ करने के लिए अग्निपथ का वरण किया तथा जिन लोगों ने मुगलों के समक्ष कभी अपनी पगड़ियां झुकने नहीं दी।

रक्तरंजित पर्वत श्रेणियां, जौहर की धधकती ज्वालाएं, स्वामि भक्ति के अपूर्व उदाहरण और मृत्यु के समक्ष भी अपने वचनों कार्यों एवं व्यवहारों को पवित्रता बनाये रखना आदि दृश्यों का वृत्तान्त इस उपन्यास में जगह-२ सजीव भाषा में पढ़ने को मिलता है।

लेखक ने मेवाड़ के एक महाराणा हमीर की वीर और शौर्य गाथा को इस उपन्यास के कलेवर में समेटने का प्रयत्न किया है। महाराणा हमीर की सेना द्वारा मोहम्मद तुगलक को हराने और उसे बन्दी बनाये जाने के पश्चात् महाराणा और मुगल सम्राट के बीच बातचीत विशेष रूप से पठनीय है। मोहम्मद तुगलक द्वारा अपने किये गये कुकृत्यों पर क्षमा किये जाने की याचना के बाद महाराणा ने कहा क्षमा तो आपको आपका खुदा कयामत के दिन ही करेगा" जिन बहू-बेटियों को बेइज्जत किया गया है उनकी पीड़ा का अन्दाज आप नहीं लगा सकते। दूसरों की गर्दन उड़ा देना आसान है परन्तु अपनी कटी अंगुली की पीड़ा सहना कितना असहनीय होता है। आप विदेशियों को भारतीय मन की पीड़ा को समझना चाहिऐ।'

महाराणा आगे कहते हैं "आपके लिए यह भूमि कंकड़ पत्थर है और यहां के निवासी फसलों की तरह। आप जब चाहे, जिसे चाहें कुगन की आयतें सुनाकर अपने धर्म दल में मिला लेते हैं। लूटना, धोखा देना और खरीदने जैसे कार्य आप लोग सामान्यतः करते रहते है। इस धरती से आपको क्या लेना देना? आपका काम है यहां से जेब भरना। पांचों वक्त की नमाज अदा करके आप भले ही अपने को पवित्र समझ ले परन्तु इन्सानों के दिलों को चोट पहुंचाकर आप खुदा के घर में प्रवेश पाने के अधिकारी नहीं बन सकते।"

इस प्रकार दर्जनों स्थलों पर महाराणा हमीर ने अपनी भावनाओं को मूर्त रूप देकर मुहम्मद तुगलक को कई बार गिड़गिड़ाकर माफी मागने पर मजबूर किया।

हर सफल व्यक्ति के पीछे किसी नारी की तपस्या और त्याग की कहानी अवश्य पाई जाती है। महाराणा हमीर की सफलता का श्रेय एक तरफ उसकी वीर माता को जाता है तो दूसरी ओर महाराणा की पत्नी दमयन्ती को, जो कि वास्तव में महाराणा के एक दुश्मन की बेटी थी परन्तु अपनी वीरता के लिए प्रसिद्ध थी। सुधारवाद के लिए सदैव प्रयत्नशील दमयन्ती अपने पिता के राज्य में भी उन्हें तथा उनके कई मन्त्रियों को बड़े गूढ़ उपदेश दिया करती थी जैसे—

"पिछली पगडण्डियों से आकर हम चौराहे पर खड़े हैं, हमें आगे राजपथ निर्मित करना है। अपने श्रम सीकरों से आगे के मार्ग को चौड़ा करें। तभी बाद में आने वालों को तंग पगडण्डियों की ठोकरें नहीं खानी पड़ेंगी।'

'परम्पराओं में चिपके रहना तब तक अच्छी बात है जब तक वे व्यक्ति व समाज को प्राणवान बनाये रखने में सक्षम हों। जब वे पांव की बेड़ियां बनने लगे उन्हें नकारने में संकोच नहीं करना चाहिए।"

"क्षुद्र स्वार्थ जब राजनीति का आधार बन जाता है तो महा विनाश अवश्यम्भावी होता है और राष्ट्र का खण्ड-खण्ड हो जाना उसकी अंतिम परिणति होती है।"

महाराणा प्रताप सिंह के समय से लगभग दो सौ वर्ष पूर्व सन् १३२० में मेवाड़ के महाराणा हमीर और उनके इर्द गिर्द की सत्य कथाओं पर रचित इस उपन्यास के लिए लेखक वास्तव में साधुवाद के पात्र हैं। आजकल के बादशाहों अर्थात राजनीतिक नेताओं को इस प्रकार के उपन्यासों से अपने तथा देश के भविष्य को सुरक्षित करने की प्रेरणा लेनी चाहिए।

प्राप्ति स्थान—अंकुर प्रकाशन १३, पिपलेश्वर
महादेव की गली, नाईयों की
तलाई, उदयपुर (राजस्थान)
पिन—३१३००१
मूल्य १२५/- रु०

विमल वधावन एडवोकेट
संयोजक सार्वदेशिक न्याय सभा

उपदेशक सम्मान समारोह सम्पन्न

आर्य समाज एस. डी. ए. सफदरजंग दिल्ली में ६-६-९३ को उपदेशक सम्मान समारोह उत्साह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर दिल्ली सहित अनेकों प्रदेशों के विद्वानों उपदेशकों, भजनोपदेशकों एवं आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ताओं का स्वागत तथा सम्मान किया गया। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री थे। आर्य समाज एस. डी. ए. के प्रधान तथा प्रसिद्ध उद्योगपति श्री विक्रम कपूर ने विद्वानों को दक्षिणा तथा मिष्ठान प्रदान कर सम्मानित किया। इस अवसर पर अनेकों आर्य समाजों के प्रतिनिधि सैकड़ों की संख्या में उपस्थित थे। लगभग ६० विद्वानों तथा कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथियों में श्री राजपाल शास्त्री, श्री महेन्द्रकुमार शास्त्री, श्री वैद्यनाथ जी, डा० कर्णदेव शास्त्री, श्री कर्मवीर शास्त्री, श्री मेधावी शास्त्री तथा ग्राम प्रचार समिति के संयोजक तथा उपदेशक श्री अशोक कुमार जी उपस्थित थे। कार्यक्रम के पश्चात सहभोज का आयोजन भी किया गया।

ब्रह्मचर्य शिक्षण शिविर सम्पन्न

आर्य वेद प्रचार मण्डल सोनीपत के तत्वावधान में "आर्य वीर ब्रह्मचर्य शिक्षण शिविर" गुरुकुल यज्ञ तीर्थ एटा के यशस्वी आचार्य श्रद्धेय श्री विश्वदेव जी की अध्यक्षता में तथा चौ० सुरजमल जी आर्य की प्रधानता में जनता हाई स्कूल गन्नौर के शान्ति निकेतन के प्रांगण मे दिनाक ६-६-१९९३ से १३-६-१९९३ तक सोत्साह एवम् सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस शिविर में उत्साह और निष्ठा पूर्वक ४२ आर्य वीरों को प्रशिक्षित किया गया। आर्य वीरों द्वारा निकाली गई शोभा यात्रा और व्यायाम प्रदर्शन अविस्मरणीय एवम् प्रशंसनीय रहा। यज्ञ, भजन, आशीर्वचन, व्यायाम प्रदर्शन, दीक्षांत एवम् अलंकरण तथा ऋषि लंगर के आयोजन सहित समापन समारोह सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

प्रेषक हरिचन्द स्नेही मण्डल पति आ० वी० दल

शोक संवेदना हेतु धन्यवाद

३० मई १९९३ के सार्वदेशिक साप्ताहिक में मेरी पत्नी श्रीमती सुशीला देवी आर्या हैदराबाद के निधन का समाचार प्रकाशित होने पर अनेक प्रान्तों के आर्य समाजों एवं व्यक्तिगत मित्रों के शोक प्रस्ताव एवं सान्त्वना भरे पत्र आ रहे हैं। जिनमे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी का पत्र भी है जिसमें उन्होंने मुझे धैर्य दिया है। मैं उन सभी मित्रों का इस समाचार द्वारा धन्यवाद करता हूं।

—सूबेदार वेंकटेश आर्य
प्रान्तीय संचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल
३६-१६-डिफेंस कालोनी सिकन्द्राबाद (आ० प्र०)

अध्यापकों की आवश्यकता

श्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट, टंकारा, राजकोट द्वारा संचालित उपदेशक महाविद्यालय को एम. ए. संस्कृत आचार्य व हिन्दी एम. ए. उत्तीर्ण प्राध्यापकों की आवश्यकता है। वेतन योग्यतानुसार आर्य विचार वालों को प्रथम प्राथमिकता दी जायेगी। आवास की सुविधा भी है।

अपने प्रमाण पत्रों की प्रतिलिपि एवं आवेदन पत्र १५ जुलाई १९९३ तक निम्न पते पर प्रेषित करें।

—विजयपाल शास्त्री, प्राचार्य
महर्षि दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय
टंकारा, राजकोट (सौराष्ट्र) ३६३६५०

दिल्ली पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०२४/९३   सार्वदेशिक साप्ताहिक   (४-७-१९९३)   बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (G) ९३
R N. 620/57   Licensed to post without prepayment License No. U (C) 93 Post in N.D.P.S.O.on   1-2-7-1993

वर्णव्यवस्था और आर्यसमाज

(पृष्ठ २ का शेष)

कमीशन की रिपोर्ट को स्वीकार करके हिन्दू समाज को दो हिस्सों में बांटने का प्रयत्न किया।

आर्य समाज ने जो काम अनेक बलिदान देकर किये थे और उसके विद्वानों ने गुण, कर्म और स्वभाव के आधार पर वर्ण व्यवस्था पर अनेक शास्त्रार्थ करके धर्म शास्त्रों के आधार पर हिन्दू जाति को एकीकरण करने का जो महान कार्य किया था उसको वोटों के लोभी राजनीतिज्ञों ने धराशाही कर दिया। यही कारण था कि बाबू जगजीवन राम ने भी गांधी मैदान में कहा था कि मुझे चाहे गृह मन्त्री बनाओ, चाहे खाद्य मन्त्री, कृषि मन्त्री बनाओ किन्तु जगजीवन राम तो चमार ही रहेगा। उस समय मैंने जवाब दिया था कि जगजीवन राम यदि आज भी चमार है तो उनके हाथ में झाडू होना चाहिए। आगे हमने कहा बाबू जगजीवन राम जी को हम सब उच्च कोटि का विद्वान, विधिवेत्ता और योग्य प्रशासक मानते हैं इसी आधार पर उन्हें रक्षा मन्त्री, कृषि मन्त्री और अनेक मन्त्रालय उन्हें सौंपे गये हैं। जगजीवन राम जी के दिमाग में भी शायद हरिजनों के वोटों की लालसा थी इसीलिए उन्होंने ऐसी बात कही।

श्री लालू प्रसाद यादव ने हरिजनों को जो पुजारी बनाने का निर्णय किया है आर्य समाज उसका स्वागत करता है। किन्तु इसका लाभ सबसे पहले भारतीय जनता पार्टी को हुआ। सबसे पहले पटना रेलवे स्टेशन पर जो भव्य हनुमान मन्दिर है वहां पर भाजपा वालों ने हरिजन पुजारी रखने की घोषणा की और इससे पूर्व जब अयोध्या में राम मन्दिर का शिलान्यास किया गया तो लालकृष्ण अडवाणी और अटल बिहारी वाजपेयी ने हरिजन व्यक्ति के हाथ से प्रथम ईंट रखाकर कुछ सीमा तक आर्य समाज के सिद्धान्तों का समर्थन किया है।

हमारा निवेदन है कि हिन्दू जाति में वर्ण व्यवस्था के नाम पर जो ऊंच नीच- भेदभाव और छुआछूत फैलाई गई है यहां तक दक्षिण भारत में अब तक शंकराचार्य और साधु-सन्त, महात्मा हरिजनों की छाया से डरते हैं जब वे गरीब उनके पैर छूने आते हैं तो वे पीछे हटते हैं यह सब समाप्त होना चाहिये।

अतः स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वैदिक सिद्धान्त के अनुरूप वर्ण व्यवस्था का जो सन्देश हिन्दू जाति को दिया है वही समस्त हिन्दू जाति को स्वीकार करना चाहिए।

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान,
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
नई दिल्ली—११०००२

शोक समाचार

—नगर आर्य समाज गाजीपुर के मन्त्री श्री केशवसिंह आर्य के बहनोई श्री आमोद कुमार का आकस्मिक निधन ११-४-९३ को हृदयगति रुक जाने के कारण लखनऊ के संजय हास्पिटल में हो गया। नगर आर्य समाज गाजीपुर ने रविवार को अपने साप्ताहिक सत्संग के पश्चात शोक प्रस्ताव पारित कर दिवंगत आत्मा की चिर शान्ति हेतु प्रार्थना तथा शोक संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति हार्दिक सम्वेदना प्रकट की।

—आर्य समाज अमरोहा के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री धर्मेन्द्र कुमार आर्य का हृदयगति बन्द हो जाने के कारण दिल्ली में १० जून को निधन हो गया। श्री धर्मेन्द्र जी ने शिक्षक के पद से ४ वर्ष पूर्व अवकाश प्राप्त किया था और तभी से उनका पूर्ण समय आर्य समाज की सेवा में व्यतीत होता था। उनके निधन से आर्य समाज अमरोहा का एक धर्मनिष्ठ सदाचारी कार्यकर्ता सदा के लिये बिछुड़ गया है। आर्य समाज मन्दिर में उनकी आत्मा की शान्ति तथा परिवार जनों के प्रति हार्दिक सम्वेदना व्यक्त की गई।

निर्वाचन

आर्य समाज नवाबगज बरेली—श्री माधोदास आर्य अध्यक्ष, श्री राधेश्याम आर्य मन्त्री, श्री विश्वमित्र कोहली कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज हैवी इलैक्ट्रिकल्स पिपलानी—श्री धर्मवीर वाधवा प्रधान, श्री जगदेव बैठा मन्त्री, श्री विनोद कुमार आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज जसपुर नैनीताल—श्री चन्द्रकिशोर बिश्नोई प्रधान, डा० देव शर्मा मन्त्री, श्री रमेशचन्द्र शर्मा कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज सराय तरीन हयात नगर मुरादाबाद—श्री केशवदेवजी आर्य प्रधान, श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य मन्त्री, श्री भूमित्र आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

महर्षि दयानन्द उवाच

- मज्जन लोगो को मद्य के पीने का नाम भी न लेना चाहिए ।
- जो अनेक कुल की उत्तमता, उत्तम सन्तान, दीर्घायु, सुशील, बुद्धि बल पराक्रम युक्त विद्वान् और श्रीमान् करना चाहे, वे सालहवे वय से पूर्व कन्या और २८ (पच्चीसवे) वर्ष से पूर्व पुत्र का बिवाह कभी न करें। यही सब सुधारो का सुधार, सब सौभाग्यो का सौभाग्य और सब उन्ननियो की उन्नति करने वाला कर्म है ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष : ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य १०) एक प्रति १
वर्ष ३१ अंक २२] दयानन्दाब्द १६६ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९४ श्रावण कृ० ७ सं० २०५० ११ जौलाई १९९३

महाराणा प्रताप जयन्ती का दूसरा समारोह मेरठ में ३१ अक्तूबर १९९३ को

सशक्त स्वागत समिति का गठन

मेरठ २७ जून । पश्चमी उ० प्र० की कई आर्य समाजो जिला उपप्रतिनिधि सभाओ तथा उ० प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एव अन्य पदाधिकारियो और कार्य कर्त्ताओ की बैठक आर्य समाज सदर बाजार मे हुई। इस बैठक की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी ने की। इस बैठक मे यह निश्चय किया गया कि महाराणा प्रताप जयन्ती का दूसरा समारोह मेरठ के जिमखाना मैदान मे आगामी ३१ अक्तूबर को आयोजित होगा । उसकी तैयारियो के लिए प्रभावशाली स्वागत समिति का गठन किया गया है । इस समिति के अध्यक्ष प्रिंसिपल माधवसिंह जी और सयोजक प इन्द्रराज जी चुने गये । इस समारोह को सफल बनाने के लिए सार्वदेशिक सभा की ओर से १०००० रु० की सहायता की घोषणा की गयी । मेरठ की कई आर्य समाजों महिला सभाओ से भी दान की राशि की घोषणा की आशा है इस समारोह को सफल बनाने हेतु उ० प्र० हरियाणा दिल्ली राजस्थान पजाब आदि क्षेत्रो मे आर्य जनता भाग लेगी ।

अपने अध्यक्षीय भाषण मे स्वामी जी ने कहा कि देश और समाज की वर्तमान परिस्थितियो को देखते हुए देश की जनता मे महाराणा प्रताप सरीखे महापुरुषो के जीवन मे प्रेरणा तथा जाग्रति उत्पन्न करने के लिए सार्वदेशिक सभा ने यह लक्ष्यबद्ध कार्यक्रम बनाया है ।

'तलाक' के विवाद पर मुसलिम पर्सनल ला बोर्ड में फूट

नई दिल्ली, ३ जुलाई । जमीयत अहले हदीस के फतवे से उत्पन्न 'तलाक' के विवाद को लेकर मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड मे फूट पड गई है । सूत्र बताते है कि इस मुद्दे पर पर्सनल ला बोर्ड की जयपुर मे होने वाली बैठक मे काफी हगामा होने की सम्भावना है ।

गौरतलब है कि पिछले दिनो जमीयत अहले हदीस ने फतवा दिया कि एक वक्त मे तीन बार तलाक कहा जाना एक ही तलाक माना जाएगा । इस फतवे को लेकर मुसलमानो मे काफी मतभेद है । मुसलमानो के हनफी सम्प्रदाय का बहुमत अहले हदीस के इस फतवे के खिलाफ है । जब कि भारत के ९० फीसदी मुसलमान हनफी शरीयत को हो मानते है ।

लेकिन दिलचस्प बात यह है कि वरिष्ठ मुस्लिम नेता एव सासद सैयद शहाबुद्दीन ने अहले हदीस के इस फतवे का समर्थन करते हुए मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड के अध्यक्ष मौलाना अली मियां नदवी को पत्र लिखा है कि बोर्ड अपनी आगामी बैठक मे कुरान हदीस की रोशनी मे अहले हदीस के इस फतवे पर विचार करे ।

श्री शहाबुद्दीन का मानना है कि एक ही समय मे कही गई तीन तलाक कुरान और हदीस के मुताबिक गलत है । उन्होने कहा कि मैं इसे एक सामायिक बुराई मानता हू । उनके मुताबिक दूसरे खलिफा हजरत उमर के जमाने मे एक बैठक मे तीन बार तलाक देकर विवाह सम्बन्ध विच्छेद कर देने का फैसला एक खास परिस्थिति के तहत किया गया था । अत इसे हमेशा के लिए नजीर नहीं माना जा सकता ।

उधर, आजकल पर्सनल ला बोर्ड के उलेमाओ की पटना मे एक बैठक चल रही है । इस बैठक मे उलेमा अहले हदीस के इस फतवे पर विचार कर रहे है । सूत्रो के मुताबिक लगातार कई दिनो तक चली इस बैठक के बावजूद वे तलाक के मुद्दे पर किसी निर्णायक स्थिति पर नही पहुचे है ।

दूसरी तरफ जमीयत उलेमा-ए-हिन्द के अध्यक्ष और सासद असद मदनी जो कि मुसलिम पर्सनल ला बोर्ड के अध्यक्ष भी है ने दिल्ली मे एक सवाददाता सम्मेलन आयोजित करके आधा दर्जन मुसलमानो से यह कहलवा दिया है कि अहले हदीस का यह फतवा गलत है । जब उनसे यह पूछा गया कि यदि मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड अहले हदीस के इस फतवे को वैध ठहरा देता है, तो वह क्या तब भी इसका विरोध करेंगे । इस सवाल पर उनका जवाब था कि हम मस्लिम पर्सनल ला बोर्ड के हर फैसले को मानने के लिए बाध्य नही है ।

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्य समाज के मंच से दिवंगत दो महिला प्रभावती

विगत ५०-६० वर्षों तक आर्यसमाज के मंच पर बहुत सी महिलाओं ने महर्षि दयानन्द और वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार किया। इनमें दो महिलायें अति प्रसिद्ध थी। एक थी —गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के प्रोफेसर श्री पं० हरसुखदेव जी शास्त्री वाचस्पति की धर्मपत्नी श्रीमती प्रभावती जी। जिनके मधुर और ओजस्वी भाषणों का अच्छा प्रभाव था आज वह इस दुनिया में नहीं है केवल उनके नाम की चर्चा ही शेष है। दूसरी प्रभावती जी थी प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री कु० जोरावर सिंह जी बरसाना मथुरा उ० प्र० की धर्मपत्नि जिनकी वाणी आर्य जगत में यशस्वी बनकर फैला। उन्होंने भारत से बाहर विदेशों में भी कुंवर साहब के साथ वैदिक धर्म का प्रचार किया।

श्रीमती प्रभावती जी कन्या गुरुकुल बड़ौदा की स्नातिका थी जो ओज और तेज ओजस्वी वाणी में प्रारम्भ में था वह अन्त समय तक बना रहा।

आर्य समाज का मंच इन दोनों महिलाओं के बिना सूना हो गया। मेरा दोनों ही माताओं से अच्छा सम्बन्ध था गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर का स्नातक होने से और इसके बाद आर्य समाज के मंच पर बराबर इन महिला विदुषियों से सम्पर्क रहा। स्नेहवत व्यवहार हंसमुख स्वभाव होने से विद्वता में चार चांद लगे हुए थे।

आज मैं जिन प्रभावती जी की चर्चा कर रहा हूं वह हैं कु० जोरावर सिंह आर्य भजनोपदेशक की (अब दिवंगत) धर्मपत्नी। यह दुखद समाचार श्री कुंवर साहब ने पत्र द्वारा सूचित किया। पढ़कर अत्यन्त दुख हुआ। उनकी सम्पूर्ण स्मृतियां आंखों के सामने घूम गई। दोनों पति पत्नि ने सारे जीवन परस्पर सहयोगी तथा दयानन्द के मिशनरी बनकर अनथक योद्धा के रूप में काम किया। जो चिरस्मरणीय रहेगा।

मेरा सम्पर्क बहुत बार उत्सवों पर रहा। परन्तु आज से ४ वर्ष पूर्व कुंवर साहब ने एक पत्र भेजकर बरसाने की लट्ठमार त्यौहार होली देखने को बुलाया। मैं जीवन भर का साथी होने से निमन्त्रण को ना न कर सका और बरसाना पहुंच ही गया। दो तीन दिन तक उनके निवास पर आतिथ्य ग्रहण किया। वह आतिथ्य न होकर एक पारिवारिक सम्मिलन था मैंने देखा है कि एक प्रचारक की स्थिति को साधारण जीवन टूटा फूटा मकान एवं अभाव ग्रस्त जीवन। किन्तु कुंवर साहब की स्थिति देखकर मन के भाव बदल गये।

एक अच्छा खासा जीवन जी रहे कुंवर साहब की दशा इससे भिन्न थी। शहर के पूर्व में एक विशाल प्लाट में पूर्व पश्चिम बने भवन के ५-६ कमरे बने हुए हैं और एक ओर उत्तर दक्षिण में बने सम्भाग में कुछ में स्वयं कुंवर साहब रहते हैं उसी के एक उत्तर भाग में अतिथि शाला है खाट लगा है कोई भी अतिथि आ जाय उनका विधिवत सत्कार करके ठहरने की व्यवस्था है। कोई किराया लेना नहीं। दक्षिण से उत्तर तक विशाल क्षेत्र फल जिसमें सब्जी या कुछ अन्य वस्तु बोकर उस स्थान की सफाई बनाए रखते हैं। प्रचार कार्य से अवकाश पर पति-पत्नी खुरपा कुदाली लेकर खेती में व सफाई में लगकर समय बिताते हैं। बरसाने में उनका बड़ा सम्मान है। रंगीली होली का त्यौहार देखा उस समय की वह बात स्मरण हो आती है जो होली के हुड़दंग में मैंने प्रभावती जी के कही थी दोनों भइया भाभी का वह मधुर हास्य आंखों के सामने है।

दो दिन ठहरकर मैंने उनसे विदा ली। मन वहां से जाने को नहीं कर रहा था। किन्तु चलना तो था ही—

मैंने देखा दोनों पति पत्नि कुछ सामान लिए मेरे सामने खड़े हैं मैंने कहा यह क्या है? कुंवर साहब व प्रभावती जी ने कहा कि यह तो हमारा दस्तूर है कि अतिथि की विदाई पर भेंट देकर विदा करना।

एक बढ़िया चद्दर गिलाफ तकिया और एक सौ का नोट मेरे हवाले किया। वह चद्दर तकिया आज भी मेरे बिस्तर पर बिछा है और उनकी याद दिला रहा है।

संसार चक्र कितना विचित्र है

असारोऽयं संसार क्षणभंगुर प्राण

सब ठाठ धरे रह जायेंगे जब कूच करेगा बन्जारा—भाई साहब वह प्रभावती जी तो गई केवल जीवन के दर्दीले गीत छोड़ गई है—

वह गई गया सब कुछ तेरा

केवल दर्दीले गीत रहे—इन्हें याद कर जीवन में विचलित न होकर संसार पथ पर चलते हुए—

हमारी याद जब आये तो दो आंसू बहा लेना।

प्रभावती जी आप जहां भी हो आपको सद्गति मिले यही कामना है।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

स्वास्थ्य सुधा—

अंकुरित अन्न को शामिल करें भोजन में

आज के दौर में गृहिणी की जिम्मेदारी सिर्फ खाना बना कर खिलाने से ही पूरी नहीं हो जाती बल्कि उसे इस बात का भी ध्यान रखना होता है कि भोजन सस्ता होने के साथ ही पौष्टिक भी हो ऐसा ही सस्ता एवं पौष्टिक आहार है अंकुरित आहार जो शरीर के लिए आवश्यक सारे पोषक तत्वों की पूर्ति करने में समर्थ होता है हमारे आयुर्वेदिक ग्रन्थों में अंकुरित आहार को ऋषि आहार की संज्ञा प्रदान की गयी है। अंकुरित अन्नों में पोषक तत्व दो गुने परिमाण में विद्यमान रहते हैं। साथ ही इनकी कम मात्रा से ही काम चल जाता है।

पोषण विज्ञानियों का कहना है कि बीज अवस्था में निष्क्रिय विटामिन भीगने एवं सूर्य के सम्पर्क में आने से सक्रिय हो जाते हैं। इस प्रकार शरीर को विटामिन का लाभ प्राप्त हो जाता है। चिकित्सा विशेषज्ञ डा० राल्फब्चर ने अंकुरित आहारों में विटामिन पोषक तत्वों एवं शरीर में उनके उपयोग पर लम्बे समय तक अनुसंधान किया। और शरीर के लिए उनकी निर्विवाद उपयोगिता सिद्ध की उन्होंने निष्कर्ष निकाला है कि अनाजों को अंकुरित करने पर उनमें छह ऐसे पोषक तत्वों का निर्माण होता है जिनमें औषधीय गुण होते हैं साथ ही इनसे जीवन शक्ति बढ़ाने में भी सहायता मिलती है। उनके अनुसंधान के अनुसार अंकुरित आहार के ९२ प्रतिशत पोषक तत्वों का अवशोषण आंतों द्वारा हो जाता है जबकि सामान्य भोजन का मात्र ३५ प्रतिशत ही हमारे काम आता है।

अंकुरित दानों में शारीरिक विकास के लिए आवश्यक प्रोटीन की मात्रा बढ़ जाती है। इसके साथ ही विटामिन ए बी और ई की भी मात्रा बढ़ जाती है। आहार में अंकुरित अन्न सम्मिलित करने से शरीर में सोडियम मैग्नीशियम कैल्शियम लवण तत्वों की कमी नहीं हो पाती। हृदय की कार्यक्षमता बनाये रखने के लिए उपयुक्त तीनों तत्व अति आवश्यक हैं। चना मटर मूंग मूंगफली मसूर सोयाबीन राजमा सेम के बीज बरबटी के बीज गेहूं ज्वार आदि अन्न सूखे बीज अंकुरण के पश्चात द्विगुणित पोषक तत्वों से भर जाते हैं। ये पोषक तत्व पोषण के अतिरिक्त रोग प्रतिरोधक शक्ति को भी बढ़ाते हैं अमरीका में डा० एन विगमोर ने हिपोक्रेट हेल्थ इंस्टीटयूट संस्था खोला है।

प्राकृतिक चिकित्सा पर आधारित इस संस्था में वे अंकुरित अन्नों के रस से इलाज करती हैं। उनके अनुसार अंकुरित गेहूं में लेटाइल नामक एक एंजाइम पाया जाता है इस एंजाइम में कैंसर को रोकने एवं समाप्त करने का गुण है। मधुमेह के रोगियों के लिए तो सस्ता एवं सुलभ उपाय है अंकुरित सेम के बीज उनका कहना है कि अंकुरित सेम के बीजों में इंसुलिन की भरपूर मात्रा पायी जाती है। नोबल पुरस्कार विजेता डा० फिशर भी अंकुरित आहारों को औषधि तुल्य मानते हैं। उन्होंने एनीमिया, अल्सर चर्मरोग, आत्रशोथ पायरिया जैसी बीमारियों को अंकुरित अनाजों के रस से दूर किया।

अन्नों को अंकुरित करने के लिए थोड़े से पानी में पहले उन्हें भिगो दें। भीग जाने पर सूती कपड़े में बांध कर ऐसे स्थान पर रखें जहां सूर्य का

(शेष पृष्ठ १२ पर)

सम्पादकीय

आखिर ऐसा क्यों ?

दूर दृष्टि पक्का इरादा और अनुशासन जैसी बाते अब कही नही दिखाई देती। अब सब अपने मन के राजा हैं। आज क्या हो रहा है ? कल क्या हो सकता है और यदि कुछ अघटित घट गया तो उससे कैसे निपटना है इसका कोई नक्शा हमारे राजनेताओ के दिलो-दिमाग म उभरता हो ऐसा नहीं लगता। न ही अब हमारे सामने कोई चिन्ताजनक स्थिति ही उपस्थित होती है। हम बच रहे दूसरो का क्या होता है यह वह जाने। इसी का तीर तुक्का भिडाये रखन का कार्य किया जा रहा है।

जीवन के प्रत्यक क्षेत्र मे चाहे वह राजनीतिक हो, साहित्यिक हो धार्मिक हो, सरकारी या गैर सरकारी कर्मचारी हो, सब इसी ताक और फिराक म रहते है कि दूसर का पराभव हो और वही अकेला सबका सरताज बना रहे। उसी अकेले को छोडकर सब बेकार और निकम्मे सिद्ध हो यह पेंतरेबाजी आज सर्वत्र दिखाई पड रही हैं। लकिन यह मानसिकता किसी शुभ लक्षण की ओर सकेत नही करती। इससे दूसरे की क्षमता, निष्ठा और आस्था, योग्यता प्रभावित होती है। दूसरो की गर्दन पर पैर रखकर निकल जाने की होड ने हमारे सारे मानवीय गुणो के अजस्र स्रोत को सुखा दिया है। फलत उन कुर्सियो पर व लोग बैठने लगे जो बद और बदनामी की हद तक देश भर मे विख्यात थे और हैं। वह समय लगता है पख पसार कर दूर बहुत दूर उडकर चला गया, जब जिम्मेदार पदो की कुर्सियो पर व लोग बैठते थे जिनके चरित्र और प्रतिभा के समक्ष देवता भी अपने को लज्जित महसूस करते थे।

लेकिन समय की विडम्बना देखिए कि अयोग्य और कर्तव्यहीन महाबलियो का कैसा लज्जा और शर्म से भरा हुआ पतन होते देखा जा रहा है, जिसकी अनुभूति होते ही शर्म लगती है कि कहा इस समय हम जीवित हैं। स्वार्थ और मात्र अपनापन ही आज हमारे रहनुमाओ पर किसी बावरे भूत की तरह उनके सिर पर चढ गया है और अपनो के अलावा उन्हे कुछ सुझाई नही देता। और यही वह मुख्य कारण है कि आज सत्ता और जनता के बीच इतना फासला हो गया है कि वह मनुष्य स्वभाव की प्रवचना ही बनकर रह गया है। लेकिन क्या हमारी सोच और समझ का यही दायरा रहेगा। यदि हा तो जब तक सत्ता और जनता का फासला कम नही होगा, एक दूसरे के प्रेम अपनत्व और विश्वास की डोरो मे बाधेगे नही तो इनकी दुर्गति का निवारण सम्भव नही है।

और जब तक ऐसा नही होता तब तक जनता और सत्ता एक दूसरे पर नाक भौ सिकोडते रहगे और सच कहा जाय तो यही वह बिन्दु है जो एक-दूसरे को नदी के दो किनारो की तरह अलग किये हुए है और प्रगति की सारी राहे अवरुद्ध किये हैं।

स्वामी, फिर कभी दगा न हो फिर कोई बेसहारा न हो क्योकि वह जानती हैं कि जब भी ऐसा होता है या होगा तो नारी ही शवो पर शोक प्रकट करने के लिए रह जाएगी। इसीलिए उसे सबसे अधिक शाति की आवश्यकता है, एक यह स्थिति उस मतदाता वर्ग को तनिक भी सुहानी नही लग सकती है जिसने अपने प्रतिनिधि को मत देते समय अपने मन मे कुछ इच्छा-आकाक्षा को जन्म दिया था। अपने वर्तमान से आहत हो भविष्य के प्रति कुछ उम्मीदें लगा रखी थी इससे निश्चय ही उस जनता को अपनी उम्मीदो की बेदखली पर घोर पश्चाताप होगा और उसका मन कच्चे शीशे की तरह टूटकर चूर-चूर हो जाएगा। क्या यह स्थिति किसी देश हित मे होगी।

जब आम आदमी का मन बेआवाज टूटता है तब देश की जनता का अपनी वर्तमान सरकार से विश्वास टूटता है तब न पार्टी बचती है और न सरकार और ना ही देश। कमोवेश आज की स्थिति कुछ ऐसी ही है। इसे बचाए रखने के लिए हर उपाय किए जाने की आवश्यकता है अब मुह चुराने का समय नही रह गया है।

डा० धर्मपाल गुरुकुल कांगड़ी विश्व-विद्यालय में कुलपति पद पर नियुक्त

नई दिल्ली ३० जून। गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के परिद्रष्टा न्यायमूर्ति श्री महावीरसिंहजी ने आज विश्वविद्यालय के कुलपति पद पर डा० धर्मपाल का चयन किया। इससे पूर्व विश्वविद्यालय के कुलाधिपति परिदृष्टा तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के एक एक सदस्य से मिलकर बनी तीन सदस्यीय समिति ने तीन विद्वानो के नाम की सूची अपनी २९ जून की बैठक में विचार विमर्श करके श्री महावीर सिंह जी के समक्ष प्रस्तुत की। जिसमे से उन्हे एक नाम का चयन करना था। सुप्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री डा० धर्मपाल वर्तमान मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री हैं तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के अन्तर्गत अध्यापन कार्य कर रहे हैं। वे वैदिक सिद्धान्तो के मर्मज्ञ विद्वान तथा आर्य समाज के समर्पित नेता है, उनकी वैदिक सिद्धान्तो पर कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

डा० धर्मपाल शीघ्र ही इस नये पद का भार ग्रहण करने हेतु हरिद्वार के लिये रवाना होगे। इस नयी नियुक्ति पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुये डा० धर्मपाल ने कहा कि दिल्ली पजाब और हरियाणा की प्रान्तीय सभाओ और आर्यजनो के सहयोग तथा सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती के आशीर्वाद से वे ऋषि कार्य को आगे बढाने के लिये कृत-सकल्पित रहेगे।

उन्होने कहा कि मेरा पहला लक्ष्य गुरुकुल विश्वविद्यालय मे लगभग चार करोड रुपये के एक वैदिक अनुसधान केन्द्र की सफल स्थापना तथा सचालन है। जिससे आर्य समाज के इतिहास मे एक नया अध्याय जुडेगा। उल्लेखनीय है कि इस विशाल प्रोजेक्ट के लिये सम्पूर्ण राशि हिन्दुजा उद्योग समूह के द्वारा लगाये जाने का प्रस्ताव है।

सिद्धान्त चर्चा :

मूर्तियों के सामने नाचना गाना

बहुत से लोग मूर्तियो के सामने नाचते हैं, गाते हैं, उनके सामने हाथ जोडते हैं। मूर्तियो मे ज्ञान कोई नही, तब भी वे करते है। मान लीजिये कक्षा मे कोई मास्टर सो रहा हो और कुछ लड़के उन सोते हुए से छुट्टी मागकर चले जाते हैं। कोई पेशाब करने चला गया, कोई पानी पीने। जब लडके लौट कर आए तो मास्टर जी ने पूछा तुम कहा गये थे ? लडके बोले जी आपसे पूछकर पानी पीने गये थे, कोई बोला पेशाब करने गये थे। मास्टर जी ने पूछा कि कब पूछकर गये थे ? लडको ने उत्तर दिया जब आप सोये हुए थे। मास्टर ने सभी को ताडना दी और कहा कि बेवकूफो वह इजाजत लेने का समय था ? हम तो सोये हुए थे हमे क्या पता क्या हो रहा है ? खबरदार अब कभी भी ऐसे मत जाना। तब वे मूर्तिया जो बेजानदार हैं उनके ऊपर हाथ जोडने या नाचन का क्या असर हो सकता ? उनके सामने यह क्रियायें करना फिजूल है। उसका कोई लाभ नही है।

—शास्त्रार्थ महारथी प० रामचन्द्र देहलवी

संस्कार चन्द्रिका के ग्राहकों से निवेदन

संस्कार चन्द्रिका सभी ग्राहको को प्रकाशित होने पर डाक द्वारा भेजी जा चुकी हैं। आठ दस ग्राहको की पुस्तको की वी पी. वापस आ गई है। जिन ग्राहको को पुस्तक अभी तक प्राप्त नहीं हुई है वे अपना पूर्ण पता सभा कार्यालय मे अविलम्ब भेजें जिससे उन्हें पुस्तक भेजी जा सके।

आर्य समाज और विद्यालयो के अधिकारियो से निवेदन है कि अपने पुस्तकालयों के लिए उक्त पुस्तक शीघ्र मगवाए। पुस्तक का मूल्य १००) रु० तथा डाक व्यय पृथक।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

ब्रह्मचारी के कारनामों से अब उठ रहा है पर्दा !

कलकत्ता २ जुलाई। बालक ब्रह्मचारी की अन्त्येष्टि के साथ उनके शव से उठ रही बास भले ही खत्म हो गयी हो, लेकिन अब उनके गोपनीय कारनामों की चमक सुनी जा रही है। कहते हैं कि उनकी तीन करोड़ की सम्पत्ति में इत्र और सुगंधित पाउडर की फैक्टरी भी थी।

बताया जाता है कि उत्तरी कलकत्ता में स्थापित आश्रम 'सुखचर' में बालक ब्रह्मचारी ने कई गुर्गे पाल रखे थे, जिनसे स्थानीय निवासी खौफ खाते थे। धर्म गुरु अनाप-शनाप कीमत देकर जमीन खरीदते रहे। दो एक बार स्थानीय लोगो ने अपना विरोध दर्ज कराना चाहा, तो बालक ब्रह्मचारी के सन्तान दल के त्रिशूलधारी सदस्यों के सामने उन्हें मुंह की खानी पड़ी।

वैसे तो बालक ब्रह्मचारी अपने उपदेशों में सेक्स पर नहीं बोलते थे, लेकिन रजनीश की तरह उन्होने अपने आश्रम में मुक्त सेक्स को खुला प्रोत्साहन दे रखा था। आसपास के लोग इस धर्म गुरु की राजनीति और नौकरशाही में पैठ के कारण आपत्ति के बावजूद मुंह बन्द रखना ही श्रेयस्कर समझते थे।

केवल आश्रम के करीब ब्रह्मचारी का सम्पत्ति की कीमत लगभग तीन करोड़ आंकी गयी है। अन्यत्र भी उनकी सम्पत्ति होगी, ऐसा अनुमान है। ब्रह्मचारी की सम्पत्ति में परफ्यूम और पाउडर की फेक्टरी शामिल है। वैसे पुलिस के पूछताछ के दौरान यह भी पता चला कि ब्रह्मचारी अपने एक डाक्टर शिष्या की सलाह पर केवल विदेशी सेंट और माउथवाश का इस्तेमाल करते थे।

पुलिस ने ब्रह्मचारी के ५५ दिन से पड़े शव को अपने कब्जे मे करने के लिए जब आश्रम पर छापा मारा, तो वहां कई और भी चीजें मिली, जो धर्म गुरु के शिष्यों की रोचक आदतो की कहानी कहती हैं, मसलन शराब की खाली बोतलें, अश्लील पत्रिकाओं का ढेर, तलवार, बम, एसिड बल्ब आदि।

वैसे तो अब आश्रम की दीवार के बाहर ये खबरें पहुंच रही हैं, लेकिन आश्चर्य इस बात पर है कि राज्य की वामपंथी सरकार इतने वर्षों तक चुपचाप यह तमाशा क्यों देखती रही। भूतजंन में ही ब्रह्मचारी ने कई नियम तोड़े थे। वैसे ब्रह्मचारी के निकट सहयोगी अंजन देव ने पुलिस को बताया कि उनके एक स्थानीय माकपा विधायक से घनिष्ठ सम्बन्ध थे और शायद यह सरकार की निष्क्रियता को बताने के लिए पर्याप्त आधार देता है, क्योंकि इस धार्मिक गुरु के विभिन्न हलकों में गहरी पहुंच की बात तो पहले से ही जाहिर थी।

—सुमंत सेन

स्व० पं. राजगुरु शर्मा वैदिक छात्रावास हेतु सहयोग की अपील

आर्य समाज के प्रसिद्ध कर्मकाण्डी वैदिक विद्वान स्व. पं. राजगुरु शर्मा की स्मृति में इन्दौर के महू नगर में आर्यजनों की प्रेरणा और सहयोग से स्व० पं० राजगुरु शर्मा छात्रावास का विशाल भवन निर्मित हो चुका है। २० जून १९९१ को विशाल समारोह में इस छात्रावास भवन का उद्घाटन सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर ८० छात्रों को यज्ञोपवीत देने के उपरान्त छात्रावास मे प्रवेश दिया गया है। आवास व्यवस्था सीमित होने के कारण भारी संख्या में छात्रों को प्रवेश नहीं दिया जा सका।

छात्रावास मे आवास व्यवस्था बढ़ाने के लिए सार्वदेशिक सभा ने ५५ हजार रुपये की राशि देने का निश्चय किया है जिस मध्ये २५ हजार ६० की राशि भिजवाई जा चुकी है। अत: सभी आर्य समाजो और धार्मिक जनों से निवेदन है कि स्व० पं० राजगुरु जी शर्मा की स्मृति को मूर्त रूप देने के लिए अपनी सहयोग राशि "मनीआर्डर/चैक/अथवा बैंक ड्राफ्ट द्वारा" "सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा" के नाम पर सभा कार्यालय में अविलम्ब भेजने की कृपा करें।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान—सार्वदेशिक सभा
महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान, दिल्ली-२

शाहजहां व औरंगजेब का तलाई कुरान जामा हमदर्द से चोरी हो गया

नई दिल्ली ६ जून। जामा हमदर्द नई दिल्ली से कुरान के तलाई समेत कई मूल्यवान पुस्तकें चोरी हो गई हैं - चोरी होने वाली पुस्तकों में उपलब्ध न होने वाली पुस्तकों मे से सोने के हरफ से लिखा हुआ कुरान और मुगल बादशाह औरंगजेब के हाथ का लिखा हुआ कुरान है। इस कुरान की शाहजहां और औरंगजेब तलावत किया करते थे। प्राचीन वस्तुएं दो मास पूर्व तक पुस्तकालय के तिजोरी वाले कमरे में सुरक्षित रखी थीं। गुडफ्राईडे के अवकाश के बाद १२ अप्रैल को चोरी का पता लगा। इस दिन स्थानीय थाने में इस सनसनी खेज चोरी की रिपोर्ट दर्ज कराई गई। इसके साथ ही यूनीवर्सिटी के अधिकारियो को अन्दरूनी स्तर पर जांच पड़ताल-पूछताछ की आज्ञा दी। दो मास व्यतीत होने के बाद न तो मूल्यवान वस्तुओं का पता लगा और न ही चोरो को पकड़ा जा सका। पुलिस को शक है कि इन्हें भारत से बाहर भेज दिया गया। इसके बावजूद पुलिस ने विशेष हवाई अड्डों को मूल्यवान पुस्तकों की सूची के सम्बन्ध मे सूचित कर दिया है। डी० सी० पी० साउथ डिस्ट्रिक आलोक वर्मा के अन्दाज के मुताबिक अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में इन किताबों का मूल्य ३० लाख रुपये है। ड्रामाई ढंग से गायब की गई पुस्तकों की लाईब्रेरी के बरामदे का दरवाजा पुलिस ने टूटा हुआ पाया।

यूनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार श्री हमीद उल्ला ने बताया कि जो किताबें चोरी हुई हैं इनमें कुछ व्यक्तियो का हाथ मालूम होता है तलाई रोशनाई वाली कुरान की अहमीयत इसलिए भी है कि इन पर शाहजहां और औरंगजेब दोनों के शाही हस्ताक्षर मौजूद थे। —प्रताप के सौजन्य से दि. ७-६-९१

बुश की हत्या का काम सौंपा था : वली

कुवैत, २७ जून (रायटर)। कुवैत के न्यायाधीश सलह अल फहद ने पूछा, "इराकी गुप्तचर विभाग ने आपको क्या काम सौंपा था ?"

वली अब्दल हाजी अल गजली ने जवाब दिया, "यह काम अमरीका के पूर्व राष्ट्रपति जार्ज बुश की हत्या करने का था।"

विशेष सुरक्षा न्यायालय के न्यायाधीश ने पूछा, "क्या यह कहने के लिये तुम पर दबाव डाला जा रहा है ? छत्तीस वर्षीय इराकी वली अब्दल हाजी ने कहा "नहीं बिल्कुल नहीं।"

वली अब्दल हाजी ने कहा कि षड्यन्त्र में शरीक होने के लिये उसे मजबूर किया गया था। न्यायाधीश और अब्दल हाजी के बीच यह सवाल-जवाब कल हुए।

कथित बम षड्यन्त्र के मामले में ११ इराकियों तथा तीन कुवैतियों की सुनवाई यहां चल रही है। इस बम षड्यन्त्र की वजह से अमरीकी सेना ने क्रूज मिसाइलो से आज तड़के बगदाद स्थित इराकी गुप्तचर मुख्यालय पर हमला किया।

एक अन्य अभियुक्त सआद अल असदी ने न्यायालय को बताया कि इराकी गुप्तचर विभाग ने उसे कुवैत में बम रखने, सीमा पार कर वली अब्दल हाजी को अमीरात पहुंचाने एवं कुवैत विश्वविद्यालय दिखाने के निर्देश दिए थे। वली अब्दल हाजी ने बताया कि कुवैत विश्वविद्यालय में श्री बुश की हत्या की जानी थी।

साद ने श्री बुश की हत्या सम्बन्धी विशेष योजना की पूर्व जानकारी होने का खण्डन किया।

अदल इस्माईल ईसा अल ओदैनी (४४ वर्ष), बन्दर अजीज जाबिर अल शमरी (२४ वर्ष) और सलीम नासिर अलशमरी (३४ वर्ष) ने सभी आरोपों का खण्डन किया। कुवैती प्रत्यक्षदर्शियों ने इन तीनों को इराकी गुप्तचर विभाग का सदस्य बताया है।

मुसलमान अपनी भूमिका निभाने में विफल

—मौलाना वहीदुद्दीन खान

सन १९४७ में हमारे देश के विभाजन का आधार कम से कम प्रच्छन्न कारण था। भारत को एक हिन्दू राज्य और पाकिस्तान को मुस्लिम राज्य घोषित करना। पाकिस्तान में यह हुआ। यह एक मुस्लिम राज्य घोषित हुआ। इसका तर्कसंगत समानांतर होता भारत को एक हिन्दू राज्य घोषित करना। लेकिन एक कारण था जिसने भारत को ऐसा घोषित करने से रोका। यहां के हिन्दू, कम से कम उनमें से अधिकांश, आधुनिक शिक्षा में इतने आगे निकल चुके थे कि वे गैर-धार्मिक रास्ते पर जा सकते थे। पं० नेहरू अगुवाई कर रहे थे। ऐसे शिक्षित हिन्दुओं के दबाव के कारण ही भारत एक हिन्दू राज्य नहीं बल्कि एक धर्मनिरपेक्ष राज्य घोषित किया गया।

ऐसी स्थिति निस्सन्देह भारतीय मुसलमानों के लिए वरदान थी। लेकिन बद किस्मती से चन्द गुमराह करने वाले मुसलमान नेताओं के कारण वे (मुसलमान) धर्मनिरपेक्षता को सही परिप्रेक्ष्य में नहीं देख सके। उनके नेताओं ने उन्हें कहा था कि धर्मनिरपेक्षता का मतलब है, एक धर्म-विरोधी व्यवस्था यही कारण है कि वे धर्मनिरपेक्षता के बारे में कभी भी स्पष्ट दृष्टिकोण नहीं अपना सके।

सीधे-साफ शब्दों में कहें तो धर्मनिरपेक्षता की परिभाषा हैं "एक सांसारिक (व्यावहारिक) अथवा गैर-धार्मिक व्यवस्था"। इस प्रकार, एक अनेकवादी समाज में धर्मनिरपेक्षता एक ऐसी राजनीतिक व्यवस्था है जिसमें निजी जीवन (क्षेत्रों) में धार्मिक स्वतन्त्रता दी जाती है, जबकि रोजमर्रा के सामान्य सांसारिक जीवन को गैर-धार्मिक आधार पर तय किया जाता है। ऐसी व्यवस्था में, एक बहुवादी समाज में विभिन्न मतमतांतरों वाले लोगों के बीच जो मतभेद पैदा हो सकते हैं उन्हें आसानी से निपटाया जा सकता है।

इस व्यवस्था के अनुसार, धर्मनिरपेक्षता को एक गैर-धार्मिक व्यवस्था का नाम नहीं दिया जा सकता। भारतीय सन्दर्भ में और स्पष्ट रूप से कहें तो धर्मनिरपेक्षता को अहस्तक्षेप की एक व्यवस्था कहा जा सकता है। दूसरे शब्दों में, राज्य विभिन्न समूहों के धार्मिक मामलों में अहस्तक्षेप की नीति अपनाता है, और सभी समूहों के प्रति गैर-धार्मिक आधार पर मामले सुलझाता है।

मुसलमानों को उक्त गलतफहमी के परिणामस्वरूप, वे धर्मनिरपेक्षता के क्रियाकलाप में पूरी तरह शामिल होने में असफल रहे। वे मुसलमान जो धर्मनिरपेक्ष व्यवस्था में शामिल हुए उन्हें न तो आदर-सम्मान मिला, और न ही कभी उन्हें मुसलमानों का विश्वास प्राप्त हुआ। यह एक बुनियादी कारण है कि हमारे देश में धर्मनिरपेक्षता पूरी तरह सफल नहीं हुई।

यद्यपि भारत में मुसलमान एक अल्पसंख्यक सम्प्रदाय है, फिर भी संख्या की दृष्टि से उन्हें देश में "दूसरी बहुसंख्या" का दर्जा हासिल है। इस स्थिति में इस समुदाय पर बहुत बड़ी निर्णायक भूमिका निभाने का दायित्व है। मुसलमानों की इसी विशेष स्थिति के कारण भारत में कोई भी व्यवस्था सफलतापूर्वक कायम नहीं हो सकती जब तक कि मुसलमान इसको स्वीकार न करें और इसे अपना पूरा सहयोग प्रदान न करें।

ऐसे सभी प्रमाण (रिकार्ड) मौजूद हैं जो यह बात सिद्ध करते है कि पंडित जवाहरलाल नेहरू और उनके अन्य सहयोगी पूरे अर्थ में धर्मनिरपेक्ष थे। यदि उन्हें मुसलमान सम्प्रदाय का पूरा सहयोग मिला होता तो वे हमारे देश में एक धर्म निरपेक्ष व्यवस्था कायम करने में सफल हुए होते।

व्यवस्था कोई भी हो, धर्मनिरपेक्ष या इस्लामी, हमारी इस दुनिया में कोई भी व्यवस्था सम्पूर्ण नहीं हो सकती। कुछ न कुछ अभाव तो हर व्यवस्था में रहेगा ही। भारत जैसे विशाल देश में, कुछ न कुछ, कहीं न कहीं, आदर्शोचित कमी रहेगी ही, यदि यह एक इस्लामी राज्य भी बने तब भी। इस स्थिति को न समझकर मुसलमानों ने बार-बार इस (धर्मनिरपेक्ष) व्यवस्था के, वास्तविक या काल्पनिक, अभावों का उल्लेख किया है, उन्होंने लगातार अपने आतिशी भाषणों और गलत लेखों द्वारा इस व्यवस्था की निन्दा की है।

उदाहरण के लिए सरकारी नौकरियों का सवाल लिया जा सकता है। सरकारी नौकरियों में मुसलमानों के बहुत कम अनुपात को देखकर, मुसलमानों ने इलजाम लगाना शुरू किया कि सरकार धर्मनिरपेक्षता की तो बातें बहुत करती हैं, लेकिन अधिकांश नौकरियां हिन्दुओं को देती है। लेकिन ऐसा नहीं है। सरकारी नौकरियों में हिन्दुओं की अधिक संख्या का वास्तविक कारण कुछ और है। देश के विभाजन से पहले ही सरकारी मुसलमान मुलाजिमों की एक बहुत बड़ी संख्या पाकिस्तान चली गयी थी। उनकी जगहें भरने के लिए पाकिस्तान से आये हुए सरकारी कर्मचारियों को नौकरियों में उन्हें स्वत: ही पहली तरजीह दी गयी। इसलिये सरकारी नौकरियों में हिन्दुओं की संख्या मुसलमानों से ज्यादा हो गयी।

कम अनुपात का दूसरा कारण यह था कि मुसलमान, आधुनिक शिक्षा के क्षेत्र में हिन्दुओं से एक सौ (१००) साल पीछे थे। इसलिये डिग्री प्राप्त मुसलमानों की संख्या हिन्दुओं से काफी कम थी। उदाहरण के लिये अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय की बात करें। जब मुसलमानों ने अपने धन से अपने मेडिकल कालेज की स्थापना की तो वे हिन्दू प्रोफेसरों को नियुक्त करने पर इसलिये मजबूर हुए क्योंकि मुसलमानों में ऐसे डिग्रीधारियों का अभाव था। इसकी जड़ें आधुनिक आवश्यकताओं के प्रति मुसलमानों में जागृति के अभाव में खोजी जा सकती है। सन १८३५ में जब कलकत्ता में पहला मेडिकल कालेज खुला तो मुसलमानों ने जलसे करके और जलूस निकालकर इसका विरोध किया। इसके विपरीत हिन्दू इस कालेज में दाखिला ले रहे थे। सच्चाई तो यह थी कि मुसलमान अंग्रेजी भाषा को विज्ञानों से अलग कर ही नहीं सकते थे। चूंकि वे ब्रिटिश शासन के खिलाफ आन्दोलन चलाने में व्यस्त थे, इसीलिए वे इस गलत धारणा का शिकार हुए कि विज्ञानों की बिना पर मुसलमान भूतकाल में पीड़ित रहे और आज भी इन कुपरिणामों का फल भुगत रहे हैं। लेकिन अपने इन दोषों की अनदेखी करके उन्होंने सरकार को दोषी ठहराया, वहां भी जहां सरकार का कोई हाथ नहीं था।

लोगों के सहयोग के बगैर कोई भी व्यवस्था कुशलता से चल नहीं सकती। कोई भी सरकार केवल ५० प्रतिशत जिम्मेदारी ले सकती है। शेष ५० फीसदी उत्तरदायित्व लोगों को उठाना ही पड़ेगा। लेकिन अपने रवैए को ठीक करने के बजाय मुसलमान धर्मनिरपेक्षता को कटु संदेह की नजर से देखने लगे। और इसके खिलाफ उठ खड़े हुए शिक्षा के क्षेत्र में अपनी दशा में सुधार लाने में असफल रहने के कारण उनका रवैया अधिक कठोर हो गया।

इस स्थिति का खूब फायदा उठाया हिन्दू कट्टरपंथियों ने। यह स्थिति पैदा करने में भले ही उनका हाथ न हो, लेकिन इस स्थिति में उन्होंने जबरदस्त फायदा उठाया है।

चूंकि कांग्रेस धर्मनिरपेक्षता की पक्षधर थी, और पढ़े लिखे लोगों का इसे समर्थन प्राप्त था, इसलिये कट्टरपंथी गुट उभरकर सामने न आ सके। सही सोच-विचार वाले लोगों ने हर जगह धर्मावलम्बी राज्य की प्रक्रिया को नामंजूर किया। लेकिन मुसलमानों ने इसमें अपनी समयोचित भूमिका नहीं निभायी। बहुत हद तक धर्मनिरपेक्षता के विघटन के लिये यही रवैया जिम्मेदार है। इसके अलावा कई और भी कारण है, लेकिन धर्मनिरपेक्षता को सही अर्थ में न पहचानने की मुसलमानों की असफलता इसका सबसे अधिक निर्णायक कारण है।

मुसलमान अपनी ५० प्रतिशत भूमिका अदा करने में असफल रहे इसके परिणामस्वरूप हिन्दू कट्टरपंथ प्रोत्साहित हुआ। भारतीय जनता पार्टी की सीटें संसद में दो (२) से बढ़कर ११६ हुई। इसके लिये सीधे-सीधे मुसलमानों को गुमराह करने वाला उनका नेतृत्व जिम्मेवार है।

अब मुसलमानों को अपने विचार बदलने ही होंगे। उन्हें यह एहसास होना चाहिए कि धर्मनिरपेक्षता इस्लाम विरोधी नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा सर्वोत्तम सिद्धान्त है जिसके आधार पर एक बहुवादी समाज चलाया जा सकता है। सी. एन. एफ.

वेदोक्त समाजवाद: वेदोक्त सामाजिक जीवन

श्री विद्यामार्तण्ड श्री स्वामी ब्रह्ममुनि जी

(१) व्यक्तियो के समूह का नाम समाज है। जैसे शब्दो के समूह का नाम वाक्य है। केवल शब्दो का समूह ही नही। किन्तु उसमे क्रिया का होना आवश्यक है। जैसे षड् दाडिमानि, दशापूर्ण पञ्चाजाणि, दशकदलीफनानि, यह बिना क्रिया के शब्द समूह निरर्थक हैं वाक्य नही। जब इन शब्दो के समूह के साथ क्रिया लग जाती है— 'वितर' या 'भक्षय' तो वह वाक्य बन जाता है। ऐसे ही व्यक्तियो के समूह का नाम समाज है। जब कि क्रिया के साथ युक्त हो जिससे समाज का साफल्य हो। अन्यथा भीड या झुण्ड है। व्यक्ति की शक्ति भिन्न है। समाज की शक्ति भिन्न है। जैसे अ केवल शब्द का अर्थ भिन्न है। वाक्य का अर्थ भिन्न है। एक शब्द है वत्स इसका अर्थ है बच्चा, किसी का भी बच्चा हो। दूसरा शब्द है पण्डित कोई भी विद्वान है। ती रा शब्द है जल कैसा भी जल हो। परन्तु जब यह शब्द आनय क्रिया से जुड जाते हैं तो उनके अर्थो मे विशेषता आ जाती है। जैसे वत्स पण्डिताय जलमानय इस वाक्य मे वत्स जिसका अपने साथ सम्बन्ध हो, उस अर्थ मे है अर्थात अपने पुत्र के अर्थ मे। यहा पण्डित का अर्थ जो उपस्थित विद्वान है उसके लिए है और जल शब्द का अर्थ पेयजल है। इस प्रकार व्यक्तियो का समूह समाज कहलाता है किन्तु क्रिया के साथ अन्यथा पशुओ की भीड का नाम समाज है। किसी क्रिया के साथ बन्ध जाने से व्यक्तियो के समूह मे शक्ति आ जाती है। बड से बड काम करने की। रुई का तन्तु जिसे क्षणभर पहले तोड सकते हैं जब उनका संगीत रस्सी बन जाता है रस्सी के रूप मे हो जाते हैं तो बलवान हाथियो को बाध लेते हैं। सामाजिक जीवन बनाने के लिए वेद का आदेश है।

> सगच्छध्व स वदध्व स वो मनासि जानताम्।
> देवा भाग यथापूर्वे सजानाना उपासते।
> ऋग्वेद १० १९१ २ ॥

मन्त्र मे प्रथम पद है—'स गच्छध्वम्' इसका अर्थ किया जाता मिलकर चलो परन्तु यह अर्थ ठीक नही है। क्योकि यह पद सम् पूर्वक गम धातु का आत्मने पद है। अकर्मक मे 'समोगध्यृच्छिभ्याम्' सूत्र से। जैसे ऋषि दयानन्द ने अर्थ किया है—हे मनुष्यो! 'सगतामव'। हे मनुष्यो! तुम सब सगत होओ, मिलो सम पूर्वक गम धातु मिलने अर्थ मे आती है। जैसे सगच्छते दूरे जलम्। दूर मे जल मिल जाता है यहा जाना अर्थ नही। तथा सगति और म गि मेल को कहते हैं। यह मन्त्र समाज शास्त्र का मूल है। क्योकि मिल अगले पदमे इसका उत्तर है। अत सवादध्वम जिसमे तुम लोग सवाद कर सको बिना मिले सवाद नही होता। सवाद क्यो करें? इसका उत्तर आगे है। स वो मनासि जानताम् जिसमे तुम्हारे मन एक हो जावें। बिना सवाद किए मन एक नही होते। मनो को एक बनाने की आवश्यकता क्या है? इसका उत्तर निम्न पक्ति मे देते हैं - देवा भाग यथा पूर्व सजानाना उपासते' यत तुम से पूर्व विद्वान एक मन हो करके अपने भाग अधिकार को सेवन करते थे तुम भी कर सको। यहा चार बाते मन्त्र मे समाज शास्त्र की बताई गई है।

(१) मिलकर बैठने की। जो लोग मिलते नही उनका समाज नही बन सकता है।

(२) सवाद करने की, मिलकर बैठने पर भी सवाद न हो, विवाद हो जाए तो उनका भी समाज नही बनता। सवाद हो जाने पर भी मनो का एक बनाना आवश्यक है। जिनके मन एक न हो तो समाज बन नही सकता। मनो के एक होने पर भी कार्य क्षेत्र मे तुरन्त न उतरना। आज नही कल करेंगे कल नही परसो करेंगे विचार वालो का भी समाज लुढक जाता है।

यह तीसरी व चौथी बातें हैं। इस प्रकार समाज बनाने का यह प्रथम वचन है। शरीर वाणी मन और आत्मा को एक लक्ष्य मे जोड देना या जुड जाना यह समाज का स्वरूप बतलाया गया है। हिन्दुओ मे इस एक मन्त्र का आचरण नहीं घटता। उदाहरण के रूप मे—एक हिन्दू रेल म यात्रा कर रहा है और वह ब्राह्मण है। दूसरा हिन्दू उसमे और आ बैठा। ब्राह्मण उससे पूछता है—आप कौन हैं? दूसरा कहता है मैं हिन्दू हू। उसे सुनकर प्रसन्न होना चाहिए कि एक साथी हमे और मिला। किन्तु वह पूछने लगता है हिन्दुओ मे कौन हैं? उत्तर मिलता है ब्राह्मण हू। इस पर भी उसे प्रसन्नता न हुई, पूछता है कौन ब्राह्मण हो? पूछने वाला गौड है उत्तर देने वाला भी गौड निकला आया फिर भी उसे शान्ति नही। फिर पूछता है कौन गौड? कौन गोत्र? कौन शाखा? कौन डाली? कौन पत्ता अपने प्रश्नो की झडी की झडी वह एसे स्थान पर समाप्त करेगा जहा पर उससे अपना भिन्नत्व सिद्ध हो जाएगा और अपने को उससे पृथक् समझेगा। अपेक्षाकृत मुसलमानो मे इस मन्त्र का आचरण अधिक है। अल्पसख्यक मुसलमान भारत मे थाए। पाकिस्तान अलग बन गया। वहा कोई हिन्दू नही रहता। यहा जो कुछ मुसलमान रहते हैं उनका पूरा सगठन है। सोमनाथ के मन्दिर का जीर्णोद्धार करने के लिए सरदार वल्लभ भाई पटेल ने कहा था—ये मुसलमानो को अभीष्ट नही है अलीगढ विश्वविद्यालय मुसलमानो का मुस्लिम विश्वविद्यालय है। वहा एक मासिक पत्रिका विद्यार्थियो की निकलती है उस पत्रिका के मुख पृष्ठ पर उस समय ये वाक्य लिखे गए थे—

> आकाश मे ग जी हैं अब फिर से सदाए सोमनाथ।
> फिर किसी गजनी से कोई गजनबी पैदा करो॥

> २) समानो मन्त्र समिति समानी।'
> ऋग्वेद १०। १९१। ३।

हे मनुष्यो तुम्हारा मन्त्र दीक्षा मन्त्र अर्थात् गायत्री मन्त्र या धर्म ग्रन्थ (वेद समान अर्थात एक हो हिन्दुओ मे इसका आचरण भी नही है किसी का मन्त्र सीताराम किसी का राधेश्याम किसी का जयगणेश किसी का जय महेश। प्रणाम करने की पद्धति भी एक नही है। नम शब्द के अनेक प्रकारहैं। नम नमो नम नमो नारायण, नमस्कार, नमस्ते तथा, राम राम सीताराम, जयराम कोई कहता है वा वा गोक। एक पद्धति नही है। (क्रमश)

धर्मनिरपेक्षता नहीं राष्ट्रीयता

--डा० प्रशांत वेदालंकार ७।२ रूपनगर, दिल्ली-७

गत कुछ समय से देश मे निरन्तर "धर्मनिरपेक्षता" की चर्चा हो रही है। ११ मार्च को राष्ट्रपति के अभिभाषण पर बहस के उत्तर मे प्रधानमन्त्री श्री पी० वी० नरसिंहराव ने घोषणा की कि "धर्म निरपेक्ष लोकतन्त्र" की रक्षा के लिए सविधान मे सशोधन होगे। अयोध्या की घटनाओ के बाद धर्मनिरपेक्षता की रक्षा को अपनी पहली प्राथमिकता बताते हुए प्रधानमन्त्री ने कहा कि धर्म को चुनावी राजनीति मे हम इस्तेमाल नहीं होने देंगे। ८५ प्रतिशत लोग हिन्दू हैं, लेकिन लोगो को धार्मिक आधार पर नही बटने दिया जा सकता।

दिलचस्प बात यह है कि जो प्रहार प्रधानमन्त्री भाजपा पर कर रहे हैं वही प्रहार भाजपा प्रधानमन्त्री पर, उनके दल तथा अन्य सभी दलो पर करती हैं। वही धर्मनिरपेक्षता का नही, छदम धर्मनिरपेक्षता का विरोध करती रही है, और आज भी कर रही है। उसका कहना है जिस प्रकार ८५ प्रतिशत हिन्दुओ को धर्म के आधार पर केवल मतो के लिए सगठित करना गलत है, उसी प्रकार १५ प्रतिशत अल्पसख्यको को भी धर्म के आधार पर एक करके भी उनके मतो को बटोरना अनुचित है।

धर्म निरपेक्ष लोकतन्त्र की रक्षा के लिए प्रधानमन्त्री अथवा सरकार कब किन सविधान सशोधनो को प्रस्तुत करेगी, पता नही, पर भाजपा सविधान की उन सब धाराओ को उदधृत करती रही है जिनके कारण देश, धर्म के नाम पर विभाजित होता रहा है। उसका कहना है कि धारा ३०ए, ३७०, ३७१ हिन्दू कोडबिल तथा अल्पसख्यक धर्मावलम्बियो के व्यक्तिगत कानूनो के अतिरिक्त सविधान मे 'सामाजिक सस्कृति की स्वीकृति के कारण है जिनसे देश धर्म के नाम पर बटता है। यदि देश मे धर्म निरपेक्ष लोकतन्त्र की स्थापना करनी है तो उक्त धाराओ को हटाकर कुछ सविधान सशोधन करने होगे। सविधान की मूल भावना जाति वर्ण पन्थविहीन लोकतन्त्र की है। उक्त सभी व्यवस्थाए सविधान की इस भावना मे बाधक हैं। इन्ही सब व्यवस्थाओ के कारण ही अल्पसख्यक बहुसख्यक की सोच उत्पन्न हुई है, अल्पसख्यक आयोग का गठन कर इसी सोच को और अधिक सुदृढ किया गया है।

प्रधानमन्त्री को कहना चाहिए था कि हम सविधान मे सेकुलरिज्म अथवा धर्म (पन्थ) निरपेक्षता शब्द को हटाकर धार्मिक राज्य की घोषणा करेंगे क्योकि धर्म ही साम्प्रदायिक मनोवृत्ति का नष्ट करता है। धर्म से ही राज्य स्थिर होता है। जिस सविधान की शपथ ईश्वर के नाम पर ली जाती है, वह सविधान धर्म से निरपेक्ष कैसे हो सकता है। धर्म उन शाश्वत नियमो का नाम है जो मनुष्य को जीवित रखते हैं।

जब सविधान के हिन्दी अनुवाद के सेकुलरिज्म का अनुवाद धर्मनिरपेक्षता के स्थान पर पन्थ निरपेक्षता किया गया तो कुछ लोग बहुत प्रसन्न हुए। सोचा कि अब धर्म की सत्ता हो गयी। पर पन्थ निरपेक्षता शब्द से और भ्रान्तिया उत्पन्न हुई। 'पन्थ' को सकीर्ण मान लिया गया। पर वास्तविकता यह है कि प्रत्येक पन्थ' मत' अथवा सम्प्रदाय' मे धर्म की ही उनके प्रवतको द्वारा की गयी व्याख्याए हैं। सम्प्रदायो अथवा मतों के प्रवतक सर्वथा निष्पाप व निश्छल होते हैं। सच्चा मत चाहे किसी हिन्दू महात्मा का हो महात्मा बुद्ध, ईसा मुहम्मद या नानक का हो, हमसे यह माग करता है कि हम घृणा और हिंसा का मुकाबला शान्ति और सम्मान के साथ करें। विश्व के सभी पन्थ अपनी उच्चावस्था मे हमसे यह अपेक्षा करत हैं कि हम एक दूसरे से विनम्रता मैत्री और भ्रातृत्व की दृष्टि से व्यवहार करें

वामपन्थी विचारको व राजनीतिक दलो द्वारा पन्थ अथवा धर्म निरपेक्ष की व्यवस्था इनका सर्वथा निषेध करके इन्हे समाप्त करने की, की जाती रही है। अब इस व्याख्या मे थोडा परिवर्तन हुआ है। देश के अल्पसख्यक पन्थो के प्रति उदारता तथा बहुसख्यको के मत के प्रति घृणा उसका अर्थ किया जाता है। पर यह राष्ट्र की एकता के लिए घातक दृष्टि है।

पन्थ निरपेक्षता का यह अर्थ कि राज्य किसी भी पन्थ मे दखल नही देगा, राष्ट्र के विकास की दृष्टि से अनुचित है। राष्ट्र का कर्तव्य है कि वह प्रत्येक प्रकार की रूढि व अन्धविश्वास को नष्ट करे। वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करे। किसी भी पन्थ मे अन्धविश्वास अथवा अवैज्ञानिकता है तो उसे दूर करना राज्य का ही कर्तव्य है। पन्थ' के सिद्धान्तो व उनके कर्मकाण्डो मे दखल न होने की नीति से उन पन्थो मे अनेक कमिया आज तक बनी हुई हैं।

यहा इस तथ्य का उल्लेख भी आवश्यक है कि साम्प्रदायिक तनाव का कारण धर्म अथवा पन्थ को बताना गलत है। सत्य यह है कि साम्प्रदायिक तनाव राजनीतिक कारणो से ही होते हैं। बदनाम धर्म होता है लाभ राजनीतिज्ञ उठाते हैं। धार्मिक हिन्दू और धार्मिक मुसलमान अपने कर्मकाण्डो व अन्य कटटरताओ से जुडे रहने पर भी पारस्परिक वैमनस्य से दूर रहते हैं। ये राजनीतिज्ञ होते हैं जो कि दोनो सम्प्रदायो को परस्पर भिडा कर अपना उल्लू सीधा करते रहते हैं। यह स्वीकार करने मे हमें कोई आपत्ति नही कि सम्प्रदायो के तथाकथित धार्मिक नेता भी धार्मिकता का लबादा ओढे रहते हैं। असल मे व राजनीति के खिलाडी हैं। वे अपने को धार्मिक कहकर भी धर्म का राजनीतिक उपयोग करते हैं।

पन्थ निरपेक्ष नीति होते हुए भी देश मे राजनीतिक नेता सभी पन्थो के समारोहो मे मुख्य अतिथि बनकर जाते हैं। यह उनके प्रति तुष्टीकरण का प्रमाण है पर उन समारोहो मे निमन्त्रित राजनीतिक नेता इसे सर्वधर्म समभाव बताते हैं। महात्मा गाधी, डा० राधाकृष्ण तथा अनेक आधुनिक अनेक राजनीतिज्ञ पन्थ निरपेक्षता का अर्थ सर्व धर्मभाव ही करते हैं। यदि पन्थ निरपेक्षता का अर्थ सवधर्म समभाव है तो पन्थनिरपेक्षता के स्थान पर सविधान मे सर्वधर्मभाव शब्द रखने मे क्या आपत्ति है? और उन सभी धाराओ को हटाने व उसमे समुचित सशोधन करने मे क्या आपत्ति है? जो सर्वधर्मभाव की भावना के विरुद्ध है।

(क्रमशः)
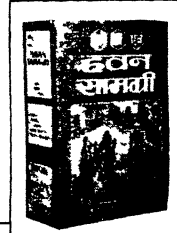
सत्यार्थप्रकाश के ३७वें संस्करण (परोपकारिणी सभा द्वारा प्रकाशित) पर मेरे विचार (२)

प्रो० डा० भवानीलाल भारतीय

आर्य समाज के सामान्य सदस्यों में स्वाध्याय की निरन्तर कमी होने तथा संस्थाओं के अधिकारियों के ऐसे महत्वपूर्ण कार्यों मे रुचि न लेने, संस्थावाद (स्कूल, कालेज, अनाथालय, कन्या पाठशाला, औषधालय, सिलाई खाने आदि) के दानव द्वारा आर्य समाज के सत्व को ही सर्वथा निर्मूल कर देने जैसे कारणो के रहते इन कार्यों को कराने का दायित्व लेने के लिये भी कोई संस्था तैयार नही है। प्राय: देखा गया है कि उत्तरदायी सस्थाओ की बैठको में इस विषय पर गम्भीर बहस करने से भी अधिकारी लोग कतराते है और लीपापोती करने या कराने की बात कहते है। इन पंक्तियों के लेखक का यह खुद का अनुभव है।

यह सब तो मैने भूमिका रूप में ही निवेदन किया है। अब परोपकारिणी सभा के ३७ वें सस्करण पर मेरा निवेदन निम्न बिन्दुओ मे समाविष्ट है:—

(१) यह संस्करण श्री विरजानन्द दैवकरणि द्वारा सम्पादित तथा संशोधित है। उन्होने १९८३ में सत्यार्थ प्रकाश के जिस ताम्र पत्र संस्करण (वह पुस्तकाकार भी छपा) का सम्पादन करने में जो नीति बरती उसी ही उन्होने अजमेर के संस्करण मे भी न्यूनाधिक रूप से काम लिया है। अच्छा होता यदि इस कार्य को आरम्भ करने के पहले वे सम्पादन विषयक अपनी नीति से सभा के अधिकारियो या कार्यकारिणी को अवगत करा देते तथा उस पर उनकी प्रतिक्रिया को जानकर तथा उनसे आवश्यक नीति निर्देश लेकर ही इस कार्य को आरम्भ करते।

(२) यह सत्य है कि स. प्र. की एक मूल प्रति (रफ कापी) तथा दूसरी उस मूल प्रति के आधार पर तैयार की गई प्रेस कापी थी। प्रेस कापी की भी दो प्रतियां रही होंगी क्योंकि इनमें से एक को तो मुद्रणार्थ वैदिक यंत्रालय प्रयाग को भेजा जाता था, जो कम्पोजीटरो के हाथो मे जाकर नष्ट प्राय ही हो गई होगी। दूसरी प्रति सभा के संग्रहालय में सुरक्षित है। इसी के आधार पर १८८४ का संस्करण छपा। इसी का पाठ लेखक (स्वामी जी) को अभिप्रेत था क्योंकि इसे ही मुद्रणार्थ भेजा गया था।

(३) जब महाराज के जीवनकाल मे ही मुद्रणार्थ प्रेस कापी तैयार कर ली गई और उसे ऋषि ने देख भी लिया तो रफ कापी के आधार पर ३७वें संस्करण को तैयार करने का क्या औचित्य रहा? (सिवाय छोटी-मोटी लेखन की भूलो को अपवाद मानकर)।

(४) प्रेस कापी भी प्रेस को थोड़ी-थोड़ी (किस्तो मे) भेजी जाती रही। अतः इसे ही ग्रन्थ का वास्तविक पाठ माना जाना चाहिए। यह कापी किस प्रकार प्रयाग भेजी गई, इसका विवरण इस प्रकार है:—

(अ) १९ अगस्त, १८८२ को भूमिका तथा प्रथम समुल्लास पर्यन्त ३२ पृष्ठ भेजे गये।

(ब) १५ अक्टूबर १८८२ का पत्र कहता है कि ३७ से ५७ तक के पृष्ठ भेजे जायेंगे।

(स) १७ सितम्बर, १८८३ (स्वामी जी को विष दिये जाने के १२ दिन पहले तक) तक ११ वें समुल्लास के अन्त मे आई आर्यावर्त के राजाओं की वंशावली तक का मैटर कम्पोज होकर महाराज की सेवा में जोधपुर भेजा गया। अर्थात ११वें समुल्लास तक के पाठ मे न्यूनाधिक करना सर्वथा अनौचित्यपूर्ण है।

(द) २४ सितम्बर, १८८३ का पत्र कहता है कि १३वे समुल्लास का मैटर भेज देंगे। निष्कर्ष निकलता है कि विष लेने के पांच दिन पहले तक महाराज ने ईसाई मत की समीक्षा तक के मैटर को प्रमाणित कर दिया था।

(य) २९ सितम्बर, १८८३ (विष पीने का दिन) ३२०-३४४ पृष्ठ तक का तौरेत और जबूर (ईसाई यहूदी ग्रन्थ) तक का विषय प्रयाग भेजा। दिन में यह काम किया और उसी रात को महाराज ने नीलकण्ठ की भांति विष पी लिया।

(५) २० अगस्त १८८३ को समर्थदान ने महाराज को पत्र लिखा कि ३८ फार्म छप चुके है और ११वां समुल्लास चल रहा है।

टिप्पणी :—जब महाराज के निधन के लगभग २ मास पहले तक ३८ फार्म छप गये और ऋषि ने उन पर नजर भी डाल ली तो उतने तक के पाठ के साथ छेड़खानी करना अनुचित है। ३८ फार्म तक का ग्रन्थ तो सर्वथा निर्दोष ही माना जायेगा, मुद्रण अन्य भूलों को बाद देना होगा।

(६) १३वें समुल्लास तक की प्रेस कापी को ऋषि ने आद्योपान्त देखकर प्रयाग भेज दिया।

(७) महाराज के निधन के २ मास पूर्व तक ३२० पृष्ठ (४० फार्म) छप चुके थे।

(८) ३६४ पृष्ठ तक का सत्यार्थ प्रकाश महाराज के जोधपुर निवास काल तक छप चुका था। इतने पृष्ठो तक के ग्रन्थ की एक प्रति रोहट के ठाकुर गिरधारी सिंह ने खरीदी।

(९) अगस्त १८८३ में स्वामीजी १४वे समुल्लास का संशोधन कर रहे थे। इसमें प्रमाण-भारत मित्र कलकत्ता मे छपी अल्लोपनिषद् विषयक टिप्पणी को देखकर स्वामीजी ने उसकी समीक्षा (मूल पाठ सहित) लिखी ताकि किसी को यह भ्रम न रहे कि इस्लाम का मूल अथर्ववेदीय किसी अल्लोपनिषद् में है अर्थापत्ति मे सिद्ध हुआ कि १४वें समुल्लास के अन्त तक का पाठ ऋषि की नजरों से अगस्त ८३ तक ही गुजर चुका था। इसे वे मूल ग्रन्थ में स्थान दे चुके थे।

(१०) अवशिष्ट २०० पृष्ठ (१३. १४ समुल्लास) महाराज के निधन के पश्चात् छपे तथापि उनकी प्रेस कापी भी यंत्रालय को भेज दी गई थी।

(११ रफ कापी तथा प्रेस कापी मे यदि अन्तर है या कुछ न्यूनाधिक है तो उसके लिये लिपिकर्ता लेखक को दोष देना तथा उत्तरदायी ठहराना तब तक अनुचित है जबकि प्रथम तो हम उसकी पहचान (आईडेन्टीटी) नहीं कर लेते, साथ ही गड़बड़ करने के उसके इरादे (मेलाफाइड इन्टेन्शन) को पुख्ता तौर पर सिद्ध नही कर देते। (क्रमशः)

आरती (भारत माता शेरावाली की)

रचयिता,—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

ओम जय शेरावाली माता जय शेरावाली।
दुख निवारिणी विभव धारिणी छ: ऋतुओं वाली॥ माता जय शेरा वाली।
हुए कोख से पैदा तेरी रामकृष्ण सन्तान—माता रामकृष्ण सन्तान।
तेरे पूत सपूत सभी मा, चमके सूर्य समान—
ओम जय शेरा वाली॥१॥

वीर, प्रताप, सुभाष, शिवा, शेरो को जन्म दिया—तैंने शेरो को जन्म दिया।
भीमार्जुन गुरु गोविन्दसिंह ने, ऊचा भाल किया—
ओम जय शेरा वाली॥२॥

भगत, चन्द्रशेखर, बिस्मिल बैरागी, वीर महान। हुए बैरागी वीर महान।
देश धर्म हित इन वीरो ने, तन कर दिया बलिदान।
ओम जय शेरा वाली॥३॥

झासी की लक्ष्मी बाई, जब, रण मे कूद पडी, माता रण मे कूद पडी।
कितनो को यमलोक पठा, मरदानी खूब लडी,
ओम जय शेरावाली॥४॥

ऋषि दयानन्द सरस्वती भारत माकी तस्वीर। ऋषि भारत माकी तस्वीर।
ध्रुव प्रह्लाद सूर तुलसी दादू सन्त कबीर।
ओम जय शेरा वाली॥५॥

तिलक, पटेल, गोखले, गाधी प्रथीराज चोहान—जन्मे पृथीराज चोहान॥
विवेकानन्द, नानक जन्मे चाणक्य नीति निधान—
ओम जय शेरावाली॥६॥

भारत मा शेरावाली की आरती नित गावे मिलकर आरती नित गावें।
कहे स्वरूपानन्द देश पर हम बलि बलि जावें।
ओम जय शेरा वाली।७॥

आर्य समाजो के निर्वाचन

आर्य समाज गाजीपुर—श्री अमरनाथ वर्मा प्रधान, श्री जयकृष्ण आर्य मन्त्री, श्री कन्हैयालाल चौरसिया कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज रावतभाटा—श्री महेन्द्रप्रधान प्रधान, श्री ओमप्रकाश मौर्य मन्त्री, श्री देवप्रसाद पाण्डेय कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य उप प्रतिनिधि सभा बरेली—श्री श्रीकृष्ण आर्य प्रधान, श्री वीरेन्द्र वीर, मन्त्री, श्री पूरनलाल आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज धार—प० बालकृष्ण चतुर्वेदी प्रधान, श्री भगवन्तराव तिवारी मन्त्री, श्री सुशील सुराना कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज चोकडी कला—श्री चम्पालाल टाक प्रधान, श्री भवरदास मन्त्री श्री शिवकरण लोहार कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज बालोतरा—श्री बृजमनोहर जी पियानी प्रधान, श्री लक्ष्मी नारायण जी मन्त्री, श्री भगवानदास जी कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज सुल्तानपुर पट्टी—डा० रामप्रसाद प्रधान श्री दर्शनसिंह मन्त्री, श्री श्रीकृष्ण आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज उदयपुर—श्री हनुमानप्रसाद चौधरी प्रधान, श्री अम्बालाल गौड़ मन्त्री, लालचन्द्र जी कालरा कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज चूनामण्डी पहाड़ गज नई दिल्ली—श्री चन्द्रप्रकाश कपूर प्रधान, श्री रामदास सचदेव मन्त्री, श्री अरुण मलिक कोषाध्यक्ष चुने गए।

शराबबन्दी सत्याग्रह का मोर्चा रोहतक से लगेगा स्वामी ओमानन्द सरस्वती सर्वाधिकारी मनोनीत

रोहतक २० जून। आज यहां दयानन्दमठ रोहतक मे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरग बैठक प्रो० शेरसिंह जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई। इस अवसर पर हरयाणाभर से आर्य समाजो के तथा शराब बन्दी कार्यकर्ता भारी सख्या मे उपस्थित थे।

पर्याप्त विचार विमर्श के पश्चात सर्वसम्मति से निश्चय किया गया है कि हरयाणा सरकार से कानून के अनुसार ग्राम पचायतो से शराबबन्दी प्रस्ताव अधिक से अधिक सख्या मे करवाकर सरकार को भेजकर पूर्ण शराबबन्दी लागू करने की पुन माग की जावेगी। जिलेवार शराबबन्दी सम्मेलन का आयोजन करके शराबबन्दी सत्याग्रह की तैयारी की जावेगी और अक्तूबर मास से हरयाणा के ऐतिहासिक नगर जो कि हरयाणा के मध्य मे स्थित है, सत्याग्रह का मोर्चा लगाया जावेगा। इस उद्देश्य हेतु आर्यसमाज के आन्दोलनो के प्रमुख योद्धा स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती को प्रथम सर्वाधिकारी (डिक्टेटर) तथा स्वामी रत्नदेव जी सरस्वती को द्वितीय सर्वाधिकारी सर्वसम्मति से मनोनीत किया गया है।

'संधान' द्वारा भारतीय सस्कृति के उद्धार का प्रयास - सस्कृत पत्राचार-पाठ्यक्रम के माध्यम से

वर्तमान शिक्षा हमारे बच्चो को भारतीय सस्कृति से वचित कर रही है जिसका दुष्परिणाम भारतीय जीवन के सभी क्षेत्रो मे दिखाई दे रहा है। इसी बात को ध्यान मे रखते हुए प्रो० अनिल विद्यालकार ने अपनी पत्नी श्रीमती इन्दुमती जी के निधन के बाद अपना जीवन इस राष्ट्रीय महत्व के कार्य के लिए अर्पित कर दिया है। उन्होने अपन जीवन की अर्जित सम्पत्ति का अधिकाश भाग इस कार्य के लिए निर्मित इन्दुमती न्यास को दे दिया है। इसी उद्देश्य से 'सधान' नामक एक सस्था भी स्थापित की है जिसके माध्यम से भारतीय सस्कृति के उद्धार की योजना को कार्यान्वित किया जाएगा।

'सधान' ने सर्वप्रथम भारतीय सस्कृति की प्रतिनिधिभूत गीता के सौ श्लोको का सग्रह 'गीतासार' के नाम से प्रकाशित किया है। इसकी पहले सस्करण की ५००० प्रतिया तो तत्काल बिक गई अत १०००० प्रतियों का दूसरा सस्करण छपाना पडा।

सस्कृत मे पत्राचार पाठ्यक्रम

भारतीय सस्कृति की सर्वप्रमुख वाहिका सस्कृत है। स्वतन्त्रता के बाद देश की शिक्षा पद्धति मे सस्कृत की निरन्तर उपेक्षा हो रही है। विद्यालयों मे सस्कृत का पूर्ण बहिष्कार हो चुका है। प्राय सभी भारतीय वेदो को अपनी सस्कृति का मूल आधार मानते है। इस दृष्टि से वेदो का ज्ञान प्रत्येक भारतीय, विशेषत प्रत्येक आर्य समाजी के लिए आवश्यक है। भारत मे और विदेशो मे सस्कृत की सुविधा प्रदान करने के लिए सधान द्वारा २० पाठो का एक प्रारम्भिक पत्राचार पाठ्यक्रम अग्रेजी और हिन्दी माध्यम से उपलब्ध कराया जा रहा है। इसके पाठ इस प्रकार तैयार किए गए है कि कोई भी व्यक्ति बिना अध्यापक की सहायता से स्वय घर बैठे सस्कृत सीख सकता है। 'सधान' पत्राचार द्वारा उनका मार्गदर्शन भी करता है। पाठ्यक्रम शुल्क भी बहुत कम रखा गया है। इसका शुल्क अग्रेजी माध्यम से २००) रुपये और हिन्दी माध्यम से १००) रुपये मात्र है। यदि किसी सस्था के माध्यम से एक ही पते पर पाच छात्र पाठ मगाए तो उनके लिए शुल्क की राशि निर्धारित शुल्क से आधी होगी। इसके लिए डा० भारत भूषण, सयुक्त निदेशक, सधान जे-५६ साकेत, नई दिल्ली से सम्पर्क किया जा सकता है।

—डा० भारत भूषण विद्यालकार

सम्पादक के नाम पत्र

एक अत्यावश्यक कमी की पूर्ति

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ मन्त्री डा० सच्चिदानन्द जी शास्त्री को जितना भी साधवाद दिया जाय थोड़ा है जो उन्होंने प० आत्माराम जी अमृतसरी आदि विद्वानो द्वारा सम्पादित एक अनुपलब्ध परन्तु अत्यन्त उपादेय पुस्तक 'सस्कार चन्द्रिका' का पुनर्मुद्रण कराकर एक अत्यन्त पुनीत कार्य किया है। इसमे कोई सन्देह नही कि आर्य पुरोहित जो विद्वान हैं सस्कार कराने मे सक्षम हैं परन्तु प्रत्येक समाज मे ऐसे पुरोहितो की व्यवस्था नहीं है। सस्कारो की लकीर पीटना अलग बात है पर सस्कारो का महत्व क्या है इसे प्रत्येक व्यक्ति बताने मे अक्षम ही कहा जायगा।

प्रस्तुत पुस्तक सस्कार शास्त्री बनाने मे सर्वथा उपयुक्त है अत इच्छुक व्यक्ति को इसका सग्रह अवश्य करना चाहिए। सभा को भी चाहिए कि आर्य समाजो तथा पुस्तक विक्रेताओ को भरपूर सुविधा दें ताकि इसकी खपत बढ सके।

शास्त्री जी को पुन धन्यवाद के साथ —नरेन्द्रार्य मैनपुरी-२०५००१

प्रवेश सूचना

गुरुकुल महाविद्यालय, ततपुर

विगत वर्षों की श्लाघनीय उपलब्धियो के साथ "गुरुकुल महाविद्यालय ततपुर' का नवीन शिक्षा सत्र ८ जुलाई ९१ से प्रारम्भ होने जा रहा है। पुराकालीन आश्रम पद्धति के अनुसार समग्र व्यक्तित्व के विकास पर ध्यान देने वाली यह सस्था उत्तर प्रदेश शासन से प्रथम श्रेणी मे वर्गीकृत तथा अनुदानित है। सुविधा की दृष्टि से अध्यापन क्रम निम्न वर्गों मे विभक्त है।

(१) बेसिक शिक्षा परिषद के नियत पाठ्यक्रम के साथ कक्षा एक से पञ्चम के छात्रो के लिए धार्मिक तथा नैतिक शिक्षा का प्रावधान है।

(२) प्रथमा (षष्ठ) से आचार्य (एम० ए०) पर्यन्त सम्पूर्णानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी के निर्धारित पाठ्यक्रम के अन्तर्गत प्राचीन तथा सभी आधुनिक विषयो (अग्रेजी, गणित, विज्ञानादि) की उत्तम शिक्षण व्यवस्था है।

(३) अनुसधेय विषयो के गहन अध्ययन तथा सस्कृत हिन्दी मे स्नातकोत्तर उपाधि लाभ हेतु स्वतन्त्र रूपेण सेवा निवृत्त विद्वानो का सानिध्य सुलभ है।

ज्ञातव्य है कि उक्त सभी परीक्षाए राजकीय विभागो मे नियुक्ति, प्रशिक्षण एव तकनीकि सस्थाओ मे प्रवेश हेतु मा य हैं।

प्रथम प्रवेश शुल्क ४००/ तथा प्रतिमास भोजन शुल्क १२०/- है। घृत दुग्ध तेल साबुन, वस्त्र एव पाठ्य पुस्तको पर व्यय बच्चे की निजी आवश्यकता एव क्षमता के अनुसार पृथक से देय होगा।

विद्युत चालित उपकरणो से युक्त गुरुकुल का एकान्त, शान्त, सुरम्य, वातावरण अध्ययन मनन के लिए नितान्त उपादेय है।

प्रवेशार्थी शीघ्र सम्पर्क स्थापित करें।

प्राचार्य -गुरुकुल महाविद्यालय, ततपुर
तिलहर शाहजहापुर

आर्य समाज की गतिविधियां

वैदिक धर्म प्रचारार्थ युवक आगे बढ़ें

वेदोपदेशक महाविद्यालय ब्रजघाट (गढमुक्तेश्वर) मे प्रवेश के लिए न्यूनतम दशम श्रेणी की योग्यता वाले छात्र प्रवेश के लिए आवेदन करें। प्रवेश शुल्क २५० रु है फिर कभी कोई शुल्क नही। शिक्षा और आवास निःशुल्क है और भोजनादि की सुव्यवस्था भी पूर्णतया निःशुल्क है। निर्धन विद्यार्थियो को प्रतिमास २५ रु की छात्रवृत्ति भी दी जायेगी। शीघ्रता करे क्योकि स्थान सीमित है।

पत्र व्यवहार हेतु—कुलाधिपति ब्रह्मप्रकाश शास्त्री
शास्त्री सदन ११ १२४ पश्चिम आजाद नगर
दिल्ली ११० ५१

पाठ्यक्रम परिवर्तन का विरोध

आर्य गुरुकुल विद्यार्थी परिषद की यह सभा उत्तर प्रदेश में केन्द्र सरकार द्वारा किए गए पाठ्यक्रम परिवर्तन की तीव्र शब्दों मे निन्दा करते हुए उसको पूर्ववत करने की माग करती है।

आजादी के बाद यह एक पहला मौका था जब किसी सरकार ने ऐतिहासिक तथ्यो को शुद्ध रूप मे जनता जनार्दन के समक्ष प्रस्तुत किया था। उस वास्तविकता को छिपाने का प्रयास करके केन्द्र सरकार ने अपने मानसिक दिवालियेपन का प्रमाण प्रस्तुत किया है।

— ओमदेव पुरुषार्थी मन्त्री विद्यार्थी परि०

चौ० लक्ष्मीचन्द्र जी के भ्राता श्री भीमसिंह की पत्नी का देहावसान

आर्य समाज दीवानहाल तथा सार्वदेशिक सभा के कर्मठ कार्यकर्त्ता चौ० लक्ष्मीचन्दजी के लघु भ्राता श्री भीमसिंहजी की सहधर्मिणी का अल्पकाल की बीमारी के बाद देहावसान हो गया। उनकी मृत्यु से सारा परिवार ही बिखर गया। वह अपने पीछे तीन लड़के व तीन कन्याए छोड़ कर गई है।

श्यामलाल नर्सिंग होम व गंगाराम अस्पताल मे भर्ती करके उनका अच्छा उपचार कराया गया। पर विधि के विधानानुसार वह हमसे बिछड़कर अनन्त मे विलीन हो गई। प्रभु उनकी आत्मा को मन्ति तथा पारिवारिक जनो को उनके वियोग को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। सम्पादक

भड़ौंच आर्य समाज का १०१ वां स्थापना दिवस

भड़ौच आर्य समाज के १०१ वर्ष पूरा होने के उपलक्ष्य मे दिनाक १९ २० और २१ जून को दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़ (साबरकांठा) के उपाध्याय श्री ब्र० विवेकभूषण जी दर्शनाचार्य को आमन्त्रित किया गया। भड़ौंच में लगी हुई प्रसिद्ध उर्वरक फैक्टरी गुजरात नर्मदा वैली फर्टिलाइजर्स के टाउनशीप के हाल मे आपके दो प्रवचन हुये। विषय थे (१) वर्तमान जीवन मे वैदिक ज्ञान की प्रासंगिकता और (२) देश की वर्तमान समस्याओ को कैसे सुलझायें? दोनो ही प्रवचन मे अपेक्षाकृत बहुत ही अच्छी उपस्थिति रही। परिणाम यह हुआ कि डेढ़ डेढ़ घण्टे के लिए निर्धारित प्रवचनो के बाद दो-दो घण्टे तक गीता की प्रामाणिकता मूर्तिपूजा अवतारवाद स्वामी विवेकानन्द द्वारा काली माता का किया गया तथाकथित साक्षात्कार जीव ब्रह्म की भिन्नता आदि आदि विभिन्न विषयो पर प्रश्नोत्तर एवं शंका समाधान होते रहे। मगर जिस दक्षता से श्रोताओ की शंकाओं का निराकरण किया गया उसके कारण आर्य समाज के मन्तव्यो के प्रति लोगो का आकर्षण बहुत ही बढ़ा है।

२१ जून को सुबह मे लगभग बीस जिज्ञासु युवको को क्रियात्मक योग प्रशिक्षण भी दिया गया जिसमे अष्टांग योग की संक्षिप्त व्याख्या करने के बाद श्री विवेक भूषण जी ने आसन प्राणायाम जप आदि की विधि भी बताई। आर्य समाज की ओर से निःशुल्क साहित्य भी बांटा गया।

—मावेश मरेजा
प्रधान आर्य समाज भड़ौंच

नामकरण एवं मुण्डन संस्कार

ग्राम मनिकौली टोला मइन दरभंगा निवासी श्री जयप्रकाश आर्य की नवजात पुत्री का नामकरण संस्कार एवम श्री ओ३म प्रकाश आर्य के पुत्र आयुष्मान प्रथम चन्द्र प्रकाश का मुण्डन संस्कार दिनाक १८ ६ ९३ को आर्य समाज लहेरियासराय के महामन्त्री श्री ध्रुवनारायण जी आर्य सिद्धान्तशास्त्री विद्यावाचस्पति के पौरोहित्य मे सानन्द सम्पन्न हुआ। समाज को ५१ रुपये का दान मिला।

—डा महावीर प्रसाद जैन

आर्य समाज माडल टाउन यमुनानगर मे वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज माडल टाउन यमुनानगर मे वेद प्रचार समारोह ६ अगस्त से ११ अगस्त तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है इस अवसर पर गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार के प्रमुख विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे है। अधिक से अधिक संख्या मे पहुंचकर समारोह को सफल बनाये।

दिल्ली पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०५५/९३ सार्वदेशिक साप्ताहिक (११-७-१९९३) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (C) ९३
R N. 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U (C) 93 Post In N.D.P.S.O.on 8-9-7-1?-?

छात्रवृत्तियां

नव सत्र-जुलाई १९९३ से अप्रैल १९९४

श्री वजीरचन्द धर्मार्थ ट्रस्ट की ओर से नये सत्र के लिए गुरुकुलों, स्कूलों, महाविद्यालयों व्यवसायिक प्रशिक्षणालयों और अनुसंधानों के सुयोग्य और सुपात्र छात्र/छात्राओं और स्पर्धात्मक परीक्षाओं के परीक्षार्थियों और परिक्षार्थिणियों को छात्रवृत्तिया देने का कार्यक्रम शुरू हो गया है।

इन छात्रवृत्तियों से लाभ उठाने के इच्छुक विद्यार्थियों को चाहिए कि ट्रस्ट द्वारा नियत आवेदन पत्र मंगवा कर शीघ्र ही ट्रस्ट के आदरी सचिव के नाम निम्न लिखित पते पर भेजें।

गत सत्र इस कार्यक्रम पर ३८,००० रुपये व्यय किए गए हैं। इस सत्र के लिए यह राशि बढ़कर ४०,००० रुपये कर दी गई है।

—जोगेन्द्रनाथ उप्पल आदरी सचिव
श्री वजीरचन्द धर्मार्थ ट्रस्ट
सी-३२, अमर कालोनी
लाजपत नगर, नई दिल्ली-२४

वैदिक विवाह संस्कार सम्पन्न

आर्य समाज पुष्पनगर (आर्यमगढ़) उ० प्र० के उपमन्त्री श्री हरिदास विश्वकर्मा की सुपुत्री सुश्री अनिता आर्या एवं श्री दशईराम के सुपुत्र श्री धनुषधर विश्वकर्मा का विवाह संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से पं. गणेश प्रसाद मिश्र उपप्रधान आर्य समाज पुष्प नगर के पौरोहित्य में ३० मई १९९३ को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य समाज कलकत्ता के सभासद सर्वश्री शिवदास आर्य एवं सुरेशचन्द्र आर्य ने वर-वधु को सफल दाम्पत्य जीवन हेतु अपना शुभाशीर्वाद प्रदान किया।

— विद्याधर मन्त्री

प्रवेश सूचना

श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय, खेड़ाखुर्द, दिल्ली-८२, में १६ जुलाई १९९३ से प्रवेश प्रारम्भ हो रहा है। गुरुकुल दिल्ली प्रशासन से मान्यता प्राप्त है। यह गुरुकुल प्रकृति के सुरम्य वातावरण में स्थित है। यहां सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी की प्रथमा (८ वीं) पूर्वमध्यमा (१० वीं) उत्तर मध्यमा (१२ वीं) शास्त्री (बी. ए.) पर्यन्त परिक्षायें दिलायी जाती हैं। संस्कृत के अतिरिक्त अंग्रेजी, विज्ञान एवं आधुनिक विषयों की शिक्षा की पूरी व्यवस्था है। गुरुकुल का लक्ष्य शिक्षा के साथ-२ वैदिक संस्कृति का प्रचार प्रसार करना। योग्य, निर्धन एवं असहाय छात्रों की निःशुल्क आवास, दूध एवं भोजन की व्यवस्था है। प्रवेश की अन्तिम तिथि १६ अगस्त १९९३ है।

— प्रबन्धक

अंकुरित अन्न

(पृष्ठ २ का शेष)

प्रकाश पहुंच सके। सूर्य के प्रकाश से उनमें क्लोरोफिल का निर्माण होता है। वैज्ञानिकों ने क्लोरोफिल युक्त अनाजों के रस को 'ग्रीन ब्लड' नाम दिया है। ग्रीन ब्लड यानी अंकुरित अन्न के सेवन से रक्तकणों की संख्या बढ़ जाती है। गर्मियों में अंकुरण अन्य ऋतुओं को तुलना में जल्दी ही यानी २४ घण्टों में हो जाता है, सर्दियों में अंकुरण सबसे देर में होता है। मूंग दाल अन्य सभी अन्नों की तुलना में जल्दी अंकुरित होजाती है, मात्र दस से बारह घण्टो में ही, इसका अंकुरण हो जाता है। अंकुरित अनाजों का उपयोग नीबू धनिया, हरी मिर्च, अथवा दही के साथ सलाद के रूप में ही करना लाभदायक होता है। लेकिन कुछ अंकुरित अन्नों को सब्जी के रूप में प्रयुक्त किया जा सकता है। ध्यान रहे अंकुरित अन्नों को कभी भी उबालना नहीं चाहिए ऐसा करने से उनकी पौष्टिकता समाप्त हो जाती है।

—सविता चिपोलकर

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

महर्षि दयानन्द उवाच

- जिस देश मे यथायोग्य ब्रह्मचर्य, विद्या और वेदोक्त धर्म का प्रचार होता है वही देश सौभाग्यवान् है।
- विद्या का यही फल है कि जो मनुष्य को धार्मिक होना आवश्यक है। जिसने विद्या के प्रकाश से अच्छा जान कर न किया और बुरा मान कर न छोडा तो क्या वह चोर के समान नही है।
- जो कोई पाठ मात्र ही पढता है, वह उत्तम सुख को कभी प्राप्त नही हो सकता। इस कारण मे जो कुछ पढे सो अर्थ ज्ञान पूर्वक पढे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र   दूरभाष । ३२७४७७१   वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३१ अंक २३]   दयानन्दाब्द १६९   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९४   श्रावण कृ० १४   स० २०५०   १८ जौलाई १९९३

आर्य समाजें वेद प्रचार सप्ताह सोत्साह मनायें

यज्ञ, वेद प्रवचन तथा हैदराबाद सत्याग्रह के शहीदों को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करें

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने देश तथा विदेश की समस्त आर्य समाजो तथा शिक्षण संस्थाओ से अपील की है कि श्रावणी पर्व २-८-९३ को हर्षोल्लास के साथ मनाये तथा इस सप्ताह मे नियमित वेद कथा यज्ञ तथा प्रवचनो का विशेष आयोजन किया जाय एव आर्य समाज मन्दिरो मे नये ध्वज लगाये जाये।

स्वामी जी ने कहा कि प्रतिवर्ष श्रावणी पर्व आता है तथा हम आर्य गण वेद के स्वाध्याय का व्रत ग्रहण करते है। आज के सन्दर्भ मे श्रावणी का पर्व हमारे लिये और भी महत्व का है। जन जीवन मे व्याप्त बुराइयो तथा विकृतियो को दूर करने के लिये आर्य समाज प्रारम्भ ही से कटिबद्ध रहा है। आर्य समाज के सदस्यो से इस पावन पर्व पर अपेक्षा की जाती है कि वे श्रावणी वेद प्रचार सप्ताह को अत्यन्त निष्ठापूर्वक एव श्रद्धा के पावन वातावरण म मनाये।

श्रावणी उपाकर्म का कार्य नये यज्ञोपवीत धारण कर प्रारम्भ करे और इसी दिन हैदराबाद सत्याग्रह के उन पावन बलिदानियो का स्मरण कर उन्हे श्रद्धाञ्जलि अर्पित कर।

इस पर्व के साथ ही योगिराज श्री कृष्ण जी का जन्म दिवस भी मनाया जाता है। योगिराज कृष्ण को महर्षि दयानन्द ने आप्त पुरुष माना है और वे जीवन भर अपने प्रवचनो मे गीता के प्रमाणो को आप्त शब्द के रूप मे प्रयोग करते रहे है। आर्यसमाज ही वेद भावना के उपदेशो व योगीराज कृष्ण के बुद्धि कौशल पूर्ण ज्ञान प्रकाश से जनता का मार्ग दर्शन कर सकता है।

अत समस्त आर्य बन्धुओ से निवेदन है कि इस पवित्र पर्व (वेद प्रचार सप्ताह) मे कोई भी समाज निष्क्रिय न रहे तथा सम्मेलन एव शोभायात्रा निकाल कर जन जागरण का कार्य करे। आज समाज तथा देश को जगाने की आवश्यकता है। सभी आर्य बन्धु आपसी मत-भेदो तथा वैमनस्यो को ताक मे रखकर एक भाव होकर आर्य समाज के प्रचार तन्त्र को सबल, सार्थक व सम्पुष्ट बनावे।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

महर्षि दयानन्द स्मृति भवन न्यास जोधपुर

१८ जुलाई १९९३ को विशेष बैठक

जोधपुर १२ जुलाई।

जोधपुर के मिया फैजुल्लाह साहब की कोठी जिसमे आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने अपने जोधपुर प्रवास काल मे निवास किया था तथा उसी भवन मे उन्हे किसी षडयन्त्र द्वारा विषपान कराया गया था, आर्यसमाज की भारी माग पर राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमन्त्री श्री बरकत उल्लाहखा (फैजुल्लाह साहब के पौत्र) ने अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन अलवर के अवसर पर सन् १९७२ मे आर्य समाज को दान म देने की घोषणा की थी। मुख्यमन्त्री की घोषणा के बाद उक्तभवन आर्य समाज को राज्य सरकार द्वारा सौंप दिया गया था।

भवन प्राप्त होने पर महर्षि दयानन्द के बलिदान की स्मृति मे वहा महर्षि दयानन्द स्मृति भवन न्यास का विधिवत गठन किया गया था। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान, न्यास के पदेन प्रधान है इसके अतिरिक्त सभी आर्य प्रतिनिधि सभाओ के प्रधान भी न्यास के सदस्य हैं।

आगामी १८ जुलाई १९९३ को न्यास की विशेष बैठक श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे जोधपुर मे होगी, इस बैठक मे कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए जायेगे।

—मन्त्री म० द० स्मृति भवन न्यास

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सिद्धांत चर्चा—

मुर्दे को दवाई

एक शख्स है जिसका कोई रिश्तेदार है और वह गुजर गया है। डाक्टर की दवाई जो उनके लिए लाई गई थी वह भी रखी हुई है। आप जानते है लोग यथाशक्ति अपने मरीज को बचाने की सारी कोशिशें करते हैं। डाक्टर के यहां से लाई हुई दवा में से खुराक बाकी थी। वह रखी रहा। मरीज गुजर गया। मुहल्ले में सूचना भिजवा दी गई कि हमारे अमुक रिश्तेदार गुजर गए हैं। श्मशान भूमि में उन्हें ले जाने के लिए लोग इकट्ठा हो गए। जब उनको अर्थी पर रखा गया तो ये दवा ले आए और लाकर उनके मुंह में डालने लगे। तमाम लोग चिल्ला उठे कि, बेवकूफ तेरी अक्ल मारी गई है। अब तो ये मर गए, मुर्दा है अब दवाई पिलाने का क्या लाभ?' बोला, 'मैं लाया तो इन्हीं के लिए था।' लोगो ने कहा, 'लाया तो इन्हीं के लिए था लेकिन अब तो मर गए। जिन्दा तो हैं नहीं तू इन्हें अब क्या दवाई पिलाता है? अब क्या ये दवाई पी लेंगे?' फिर वह बोला, 'यदि ये नहीं पीते तो आप लीजिए, दवा के पैसे तो वसूल होवे ही चाहिए।' लोग कहने लगे कि तू बड़ा मूर्ख आदमी है हम दवाई क्यों पी लें हम कोई बीमार हैं जो दवाई पीवें। तो उसने कहा, 'इसीलिए तो पिला रहा हूं। आप पिलाने क्यों नहीं देते?' इन सब बातों को मान लीजिए कोई आर्य पुरुष सुन ले और यह कह दे कि जो दो-चार घण्टे पहले जिन्दा था और अब मर गया है उसे दवाई पिलाने वाले को तो आप बेवकूफ बता रहे हैं जो कभी जिन्दा थे ही नहीं, प्रारम्भ से ही मन्दिर में पत्थर के रखे हैं, उन्हें जो लोग खिलाते पिलाते हैं, और लड्डू पेड़े चढ़ाते हैं वे कितने बड़े बेवकूफ होंगे। इसको Rule of Three से समझदार लोग लगा लें। अक्ल व हिसाब वाले ही सोचें और विचारें। भगवान की उपासना क्या लड्डू और जलेबी चढ़ाने से होती है? नहीं! बिल्कुल नही!! यह उपासना का तरीका नहीं है!!!

—पं० रामचन्द्र देहलवी, शास्त्रार्थ महारथी

देववाणी संस्कृत की पूजा करो

रचयिता—श्री रामसुफल शास्त्री वाचस्पति

तर्ज—आओ बच्चो तुम्हे दिखायें

चेतो देशवासियो जिससे रही हमारी शान है।
सब भाषाओ की जननी का होता क्यों अपमान है॥
लोग हमारी हो संस्कृति की शिक्षा लेने आते थे।
इसी देश से सब देशों के रहन हरदम नाते थे॥
ऋषि मुनियों के चरणों में सब आकर शीश नवाते थे।
पाकर के आशीर्वाद अपना सौभाग्य मनाते थे॥
इगंलिश के टट्टू बन यारो क्यो खोया स्वाभिमान है॥ चेतो
गोरे तो है चले गये बस काले बसते जाते हैं।
पहले की ही भांति यहां आपस में फूट डलाते है।
दो नम्बर की करके कमाई कोठी महल बनाते है।
फैल गया जब जाल ठीक से शोषण खूब चलाते है॥
जग जननी मां के आंचल में करते लहू लुहान हैं॥ चेतो ..
जहां देववाणी संस्कृत की हरदम पूजा होती है।
धन सम्पति सुख शान्ति हमेशा उत्तम खेती होती है॥
मानवता दुःख से कराह कर वहां कभी नहीं रोती है।
पर द्रव्येषु लोष्ठवत् देखें चाहे हीरे मोती हैं॥
देश वासियों का जो 'जीवन' होगा तभी महान है॥ चेतो

शोक समाचार

दिनांक २७-६-९३ रविवार को श्री हेतराम गर्ग प्रधान आर्य समाज होडल की धर्मपत्नी श्रीमती शकुन्तलादेवी प्रधान महिला आर्य समाज होडल का हृदय गति रुक जाने से अचानक निधन हो गया। आर्य समाज होडल की कार्यकारिणी की बैठक में सर्वसम्मति से शोक प्रस्ताव पास किया गया कि उनके शोक संतप्त परिवार को परमपिता परमात्मा इस असाह्य शोक को सहन करने की शक्ति प्रदान करे और दिवंगत आत्मा को सद्गति दें।

—ब्रह्मसेन सचदेवा

स्वास्थ्य चर्चा—

मधुमेह से कैसे बचें

मधुमेह के रोगी की जिंदगी में सन्तुलित भोजन के साथ-साथ गोलियां एवं कैपसूल भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। लेकिन इसका अर्थ यह भी नहीं कि हर मधुमेह रोगी अपनी मर्जी से कोई भी गोली या कैप्सूल खा सकता है। ये गोलियां कितनी प्रकार की हैं और इनके प्रयोग में किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए। यह जानकारी भी एक मधुमेह रोगी को होनी चाहिए।

मधुमेह रोगी दो प्रकार के होते है—टाइप एक और टाइप दो। टाइप एक के रोगियो में इन्सुलिन का उत्पादन और उसकी मात्रा बहुत कम होती है। इनके लिये गोलियां कारगर सिद्ध नहीं होती। इसलिये इन्हें इन्सुलिन की जरूरत होती है। टाइप दो के लक्षण अक्सर ४० साल के उम्र के बाद लोगो में नजर आते है।

टाइप दो में जैसे-जैसे रोग बढ़ता जाता है, इन्सुलिन का उत्पादन कम होता जाता है। फिर भी शरीर में इतनी इन्सुलिन होनी है कि डाइबिटिक कोमा से बचत होती रहती है। इन रोगियों में खाने पीने के पूरे सन्तुलन, नियमित व्यायाम, गोलिया एवं कैप्सूल की मदद से ब्लड शुगर सामान्य रखी जा सकती है।

गोलियां मुख्यत: दो ग्रुप मे बांटी जा सकती है:

(१) सल्फोनिल यूरिया जैसे—रेस्टीनान, डाइबिटीज, डायोनिल या युग्लूकान, ग्लाइनेस, डाइमाइक्रोन।

(२) बाईग्वानाइड—डी. बी. आई.-डी. बी. आई. (टी. आई.), ग्लाइसीफेज या इन दोनो ग्रुप की दवाइयों का मिश्रण जैसे क्लोरफोरमिना।

मोटे तौर पर गोलियों का प्रयोग सिर्फ टाइप दो के रोगी ही करते है। गोलियों को खाने से पहले निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिए।

—इन दोनों ग्रुपों की गोलियों के अलग-अलग असर हैं। कौन सी गोली किस मात्रा में व कितनी बार लेनी है, इसका निर्णय डाक्टर करेगा, आप (रोगी) नहीं।

—अपने आप गोलियां न बदलें।

—ज्यादा खाना खा लेने के कारण तकलीफें बढ़ सकती है इसलिये एक गोली और लेलें, यह धारणा गलत है।

—यदि आपका भार सामान्य से अधिक है, तो पूरा भार घटायें फिर गोलियों का प्रयोग करें।

—यह सच नहीं है कि यदि कोई गोली आज पूरा असर दिखा रही है, हमेशा ही ऐसा करती रहेगी। इसी लिये नियमित ब्लड शुगर की जांच कराना जरूरी होता है, ताकि समय-समय पर पता चल सके कि गोलियों का कितना असर हो रहा है।

—गोली निर्धारित समय पर लेना न भूलें। बीच-बीच मे गोलियां छोड़ देने से शुगर कन्ट्रोल फिर बिगड़ सकता है। उसको पुन: ठीक होने में समय लग सकता है।

—जो लोग अक्सर अपनी दवा लेना भूल जाते हैं, वे पहले गोली ले, फिर खाना खायें।

—कुछ गोलियों के कुछ प्रतिकूल प्रभाव भी हो सकते हैं। यदि कोई कठिनाई महसूस करें, अपने डाक्टर को अवश्य बतायें।

(प्राकृतिक चिकित्सा : मधुमेह के लिए पुस्तक से साभार)

दो शिक्षकों की आवश्यकता

योग्यता—व्यायाम शिक्षक (सा० आर्य वीर दल)।
१०+२ अथवा समकक्ष।

इसके अतिरिक्त यज्ञ, हवन करना कराना, संस्कारों आदि का ज्ञान मधुरभाषी, सम्पर्क कुशलता आदि। आवश्यक प्रमाण पत्रों सहित निम्न पते पर सम्पर्क करें—

—श्री धर्मवीर आर्य
जिला संचालक आर्य वीर दल मेरठ
ग्राम पोस्ट—खबरा, जिला-मेरठ (उ० प्र०)

मन्दिर का हरिजन पुजारी—एक सही कदम

हरिजनों को मन्दिर का पुजारी बनाने पर पंजाब केसरी के सम्पादक श्री विजयकुमार चोपड़ा द्वारा आर्य समाज के कार्यों का जोरदार समर्थन

जब से बिहार के मुख्यमन्त्री श्री लालूप्रसाद यादव ने राज्य की विधान सभा में बिल पास करवा कर हरिजनों को मन्दिरों में पुजारी बनने का अधिकार दिया है तब से जहां पुरातन पन्थी लोग इसका विरोध कर रहे हैं, वहां बुद्धिजीवी वर्ग द्वारा इसका सर्वत्र स्वागत किया जा रहा है।

पौराणिक विचारधारा के लोग इस बात का विरोध इसलिए कर रहे है क्योंकि अब तक मन्दिरो में पुजारी और पुरोहित का काम वही लोग करते रहे हैं जिनका जन्म ब्राह्मण परिवार मे हुआ है जब कि प्रबुद्ध वर्ग द्वारा इसका स्वागत इसलिए हो रहा है क्योंकि वर्ण व्यवस्था के प्रारम्भिक सिद्धान्तों के अनुसार जन्म को नहीं बल्कि वर्ण का आधार गुण, कर्म और स्वभाव को ही माना जाता था। उदाहरण के रूप में एक क्षत्रिय परिवार मे जन्मा व्यक्ति ब्राह्मण तथा ब्राह्मण परिवार में जन्मा व्यक्ति गुण, कर्म और स्वभाव के आधार पर क्षत्रिय हो सकता था मगर धीरे-धीरे यह पवित्र परम्परा लुप्त होती चली गई और वर्ण व्यवस्था का आधार जन्म बन गया।

नतीजा यह निकला कि छूत-छात, ऊंच-नीच और भेदभाव जैसी अनेक बुराइयां इस जन्म के आधार पर विकसित हुए जातिवाद के कारण उत्पन्न हुई जिससे समाज दुर्बल हुआ और देश की प्रगति को भारी क्षति पहुंची—यहा तक कि देश के विभाजन से पूर्व कुछ मुस्लिम लीगी नेताओ ने यह माग भी की थी कि उन ७ करोड लोगो को जिन्हे उस समय 'अछूत' कहा जाता था, हिन्दुओ और मुसलमानो मे आधा-आधा बाट लिया जाए। महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय, स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय और महात्मा गांधी ने इस माग का विरोध किया था। महात्मा गांधी ने तो इसी मांग से प्रभावित होकर अछूतो को 'हरिजन' का नाम दिया था। अग्रेजो ने स्वयं भारत मे अपने साम्राज्य की जड़े मजबूत करने के लिए हमारी सामाजिक दुर्बलता का लाभ उठाया और बहुत से लोगों का धर्म परिवर्तन किया जिसके विरुद्ध राजा राम मोहन राय और स्वामी दयानन्द सरस्वती ने पूरी ताकत से आवाज उठाई।

पिछले दिनों बिहार के मुख्यमन्त्री श्री लालूप्रसाद यादव ने बिहार में हरिजनों को मन्दिर का पुजारी बनने का अधिकार दिया था। इसका सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने जोरदार स्वागत करते हुए, सार्वदेशिक साप्ताहिक में "हरिजन पुजारी वर्ण व्यवस्था और आर्य समाज" नामक शीर्षक से अपना अग्रलेख प्रकाशित कराया था। प्रमुख दैनिक पत्र पंजाब केसरी के विद्वान सम्पादक श्री विजय कुमार चोपड़ा ने इस सम्बन्ध में आर्य समाज के पक्ष का जोरदार समर्थन करते हुए पंजाब केसरी में जो सम्पादकीय लिखा है उसे अविकल रूप में निम्न प्रकार प्रकाशित किया जा रहा है।

आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने तो आरम्भ से ही वर्ण व्यवस्था का आधार गुण, कर्म और स्वभाव को ही माना और अनेक आर्य नेताओ ने समाज में व्याप्त इस भेदभाव के विरुद्ध कड़ा संघर्ष किया और पिछड़े हुए लोगों को समाज का अभिन्न अंग बनाने के लिए अनगिनत बलिदान दिए। इस अभियान के फलस्वरूप कितने ही पिछड़े हुए परिवारों में जन्मे लोग उच्चकोटि के विद्वान बने और आर्य समाज के सर्वोच्च पदों पर आसीन हुए।

यहां यह लिखना भी असंगत नहीं होगा कि महाभारत मे भी वर्ण-व्यवस्था के सम्बन्ध में यही कहा गया है कि परमात्मा ने तो सबको ब्राह्मण ही पैदा किया था किन्तु मानवीय दुर्बलताओं के कारण जो लोग धर्म का पालन न कर सके वे क्रमशः क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र बने।

बहरहाल, हम इस सन्दर्भ में केवल इतना ही कहना चाहेंगे कि अब जब कि विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति करते करते आदमी धरती से ऊपर जाकर अन्तरिक्ष तक में बस्तियां बसाने की बात सोच रहा है तो उन संकीर्णताओं की शृंखलाएं भी हमें तोडनी चाहिएं जिनकी वजह से समाज दुर्बल हुआ और देश को तरह-तरह के नुक्सान झेलने पड़े। आज जरूरत इस बात की है कि सामाजिक भेदभाव के कारण एकता की जो माला बिखर सी रही है, उसे किसी भी हालत में बिखरने न दिया जाए तथा ऊंच-नीच, भेदभाव और छुआछूत जैसे अभिशाप जितनी जल्दी हो सके समाप्त किए जाएं।

यहां यह लिखना भी असंगत नहीं होगा कि पटना रेलवे स्टेशन पर हनुमान जी का जो भव्य मन्दिर है, सबसे पहले उसका हरिजन पुजारी रखने की घोषणा की गई थी और इससे पहले जब अयोध्या में राम मन्दिर का शिलान्यास करवाया गया था तब भी सर्वश्री लाल कृष्ण अडवानी और अटल बिहारी वाजपेयी ने एक हरिजन भाई से ही पहली ईंट रखवाई थी। इसी शृंखला में अब श्री लालूप्रसाद यादव ने हरिजनों को मन्दिरो का पुजारी बनाने का अधिकार दिलवाया है जो निश्चित ही एक स्वागत योग्य और अनुकरणीय कदम है।

अब समय आ गया है जब समाज और देश के हित मे उन दीवारो को हमे मिल-जुलकर गिराना ही होगा जो हमारे विशाल समाज को छोटा करने का कारण बनती रही है तथा बन रही हैं और जो देश के लिए अतीत की तरह भविष्य में भी खतरो का कारण बन सकती है।

(पंजाब केसरी ८-७-९१)

लेखकों से निवेदन

जैसा कि आपको विदित है कि "सार्वदेशिक साप्ताहिक" आर्य जगत का सर्वोत्कृष्ट अखबार है। यह देश तथा विदेश के सहस्रो परिवारो, पुस्तकालयों तथा विद्यालयों मे नियमित रूप से पढ़ा जाता है। सार्वदेशिक के पाठको को विद्वतापूर्ण लेख, सामाजिक विचारो तथा धार्मिक, राजनैतिक और सामाजिक दृष्टिकोण की जानकारी देने हेतु आप अपनी नवीन रचनायें भेजकर अनुगृहीत करें।

किसी भी अंक विशेष में प्रकाशनार्थ सामिग्री अथवा समाचार विशेषतया पर्व एवं विशिष्ट व्यक्ति के जन्म अथवा पुण्य तिथि से सम्बन्धित लेख कम से कम १५ दिन पूर्व भेजना चाहिये।

लेख अथवा अन्य सामिग्री साफ शब्दों में लिख कर अथवा टाइप करा कर ही भेजें तथा स्थान का ध्यान रखते हुये अधिक लम्बे लेख न भेजें।

—सम्पादक

विहिप ने २० करोड़ की मूर्तियां चुराई : लाल दास

नई दिल्ली, ७ जुलाई। अयोध्या स्थित राम जन्मभूमि मन्दिर के पूर्व प्रधान पुजारी लाल दास ने आज विश्व हिन्दू परिषद पर बीस करोड़ रुपए से अधिक मूल्य की राम लला की ६४ मूर्तियां चुराने का आरोप लगाते हुए घटना की न्यायिक जांच कराने की मांग की।

श्री दास ने यहा एक वक्तव्य मे कहा कि गत छह दिसम्बर १९९२ की सुबह नौ बजे विहिप के नेता अशोक सिंघल के आदेश से राम मन्दिर में रखा खजाना सोने-चांदी के आभूषण, सिंहासन और ६४ मूर्तियां विवादित स्थल से हटाकर मानस भवन के कमरा नम्बर ४२ में रखी गई थीं। इसमें से २२ मूर्तियां विवादित स्थल और ४२ मूर्तियां राम चबूतरे की थीं।

उन्होने कहा कि विवादास्पद ढाचा गिराए जाने के बाद सारी मूर्तियां यहा से गायब कर दी गई और बाद में दुकानों से नई मूर्तियां लाकर वहां रखी गई।

पुजारी लाल दास ने अपने वक्तव्य मे कहा कि मूर्तिया चोरी होने की लिखित सूचना उन्होने प्रदेश के राज्यपाल व केन्द्रीय गृह मन्त्री को गत तीन जनवरी १९९३ को दी थी और लोकसभा में यह मामला उठने पर गृह मन्त्री ने इस काड की जांच कराने का आश्वासन दिया था।

उन्होने गृह मन्त्री पर आरोप लगाया कि मूर्तिया नहीं बदले जाने का जो बयान उन्होने प्रदेश सरकार के हवाले से दिया, वह झूठा है। उन्होने कहा कि केन्द्र सरकार ने इस तरह भाजपा और विहिप नेताओ को बचाया है। उन्होंने सरकार से असली मर्तियों का पता लगाने की मांग की है।

दैनिक हिन्दुस्तान ८-७-९३ से साभार

पाकिस्तान में मोहर्रम के जुलूसों पर हमले : १९ व्यक्ति मरे, ७० घायल

हैदराबाद, १ जुलाई। पाकिस्तान में आज मोहर्रम के मौके पर निकाले जा रहे जुलूसो पर किए गए हमले में १९ व्यक्ति मारे गए और ७० अन्य घायल हो गए।

अधिकारियों ने बताया कि हजरत इमाम हुसैन की शहादत की १४०० वर्ष पुरानी घटना के सिलसिले मे शिया मुसलमानों द्वारा दक्षिण सिंध प्रात के हैदराबाद शहर मे निकाले जा रहे जुलूस पर आधी रात के बाद हमला हुआ। सैकड़ों लोगो की भीड़पर ग्रेनेड फेंके जाने से चार बच्चो की मृत्यु हो गई तथा ५० अन्य घायल हो गए। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि तीन बच्चे मौके पर ही मर गए जबकि एक अन्य ने अस्पताल में दम तोड़ा।

खबरों में कहा गया है कि मध्य पंजाब प्रान्त के गुजरात में भीड़ पर कुछ लोगो द्वारा गोलियां चलाने की एक अन्य घटना में पांच व्यक्ति मारे गए तथा २१ घायल हो गए। किसी ने भी इन मामलों की जिम्मेदारी नहीं ली है।

पाकिस्तान मे शिया और सुन्नी मुसलमानों के बीच हिंसा अकसर भड़क उठती है। पुलिस को दोनो घटनाओं मे चरमपंथी सुन्नी मुस्लिम गुटो का हाथ होने का सन्देह है। अधिकारी बताते है कि पिछले कुछ वर्षों मे इन दोनों समुदायों के बीच हिंसक झड़पों मे सैकड़ो जानें जा चुकी हैं। लेकिन गुजरात अभी तक इस हिंसा से अछूता था।

पंजाब केसरी २-७-९३

शादी और बर्बादी

ग्यारह करोड़ की आबादी वाले बंगलादेश में गरीबी की गोद मे मुहब्बत पल रही है और मर्दों मे एक से ज्यादा बीबियां रखने का चलन बढ़ता जा रहा है।

सन १९६१ मे जब यह देश पूर्वी पाकिस्तान था, तकरीबन ४९००० औरतें ऐसी थी जो उन मर्दों मे ब्याही गई थीं जिनकी एक बीबी या कई बीबिया पहले से ही थीं।

पूर्वी पाकिस्तान सरकार ने १९६१ में एक कानून मुस्लिम परिवार कानून अध्यादेश पास कर एक से ज्यादा बीबिया रखने पर रोक तो नही लगाई लेकिन इतना जरूर किया कि आइन्दा कोई मर्द अपनी पहली बीबी या बीबियो की रजामन्दी के बिना नई शादी नही कर सकेगा।

१९७४ की जनगणना के मुताबिक एक से ज्यादा बीबियां रखने वाले मर्दों की तादाद एक लाख चालीस हजार थी जो १९८० मे बढ़कर सात लाख तीन हजार हो गई। १९८१ मे इसमे और वृद्धि हुई और यह बढ़कर दुगुनी यानी चौदह लाख हो गई।

यह चौंका देने वाली बातें आज ही जारी की गई एक रिपोर्ट मे कही गई हैं। इसमें कहा गया है कि ऐसे वक्त जब दुनिया इक्कीसवी सदी में छलांग लगाने को तैयार बैठी है हममे से ज्यादा लोग आज भी मध्ययुगीन जिन्दगी जी रहे हैं और शरियत की दुहाई देकर इसे सही और वाजिब कराने की कोशिश कर रहे है। क्या हमे हक है कि हम खुद को सभ्य कहलाएं।

—सम्पादक

मुस्लिम धर्मान्धों की हिंसा की भर्त्सना करें, रुश्दी का सात देशों से आग्रह

लन्दन ४ जुलाई। लेखक सलमान रुश्दी ने सात प्रमुख औद्योगिक देशों के नेताओ से अनुरोध किया है कि वे उनकी पुस्तक सैटेनिक वर्सेज के खिलाफ मुस्लिम धर्मान्धो की हिंसक प्रतिक्रिया की भर्त्सना करे। रुश्दी ने कहा कि उनकी पुस्तक के आलोचक मुसलमानो द्वारा विगत दिनो तुर्की के होटल मे लगाई गई आग की घटना 'धर्मान्ध हुजूम' का एक तरह का धार्मिक आतंकवाद था जिसकी सर्वोच्च स्तर पर भर्त्सना की जानी चाहिए।

नोबल पुरस्कार से सम्मानित लेखक ने एक ब्रिटिश टेलीविजन के साथ एक भेंट में कहा कि "हम हत्यारो के खिलाफ आवाज उठाएं और उसके लिए तोक्यो मे अगले सप्ताह समूह सात की बैठक एक महत्वपूर्ण अवसर है।

रुश्दी के खिलाफ ईरान ने १९८९ मे उनकी पुस्तक 'द सैटेनिक वर्सेज' को इस्लाम का अपमान बताते हुए मौत का फतवा जारी किया था।

इन ओप रायटर ने तुर्की मे एक रिपोर्ट में बताया कि सिवस शहर में कर्फ्यू के बाद स्थिति नियन्त्रण मे है। गत शनिवार को रुश्दी के उपन्यास 'सैटेनिक वर्सेज' को लेकर भड़के दंगे में पैंतीस लोग मारे गए थे।

संस्कार चन्द्रिका के ग्राहकों से निवेदन

संस्कार चन्द्रिका सभी ग्राहको को प्रकाशित होने पर डाक द्वारा भेजी जा चुकी हैं। आठ दस ग्राहको की पुस्तको की वी. पी. वापस आ गई है। जिन ग्राहको को पुस्तक अभी तक प्राप्त नहीं हुई है वे अपना पूर्ण पता सभा कार्यालय मे अविलम्ब भेजें जिससे उन्हें पुस्तक भेजी जा सके।

आर्य समाज और विद्यालयो के अधिकारियो से निवेदन है कि अपने पुस्तकालयो के लिए उक्त पुस्तक शीघ्र मगवाएं। पुस्तक का मूल्य १००) रु० तथा डाक व्यय पृथक। —डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सार्वदेशिक के ग्राहकों से

सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहको से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क भेजते समय या पत्र व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या का उल्लेख अवश्य करें।

अपना शुल्क समय पर स्वत: ही भेजने का प्रयास करें। कुछ ग्राहको का बार बार स्मरण पत्र भेजे जाने के उपरान्त भी वार्षिक शुल्क प्राप्त नहीं हुआ है अत: अपना शुल्क अविलम्ब भेजें अन्यथा विवश होकर अखबार भेजना बन्द करना पड़ेगा।

'नया ग्राहक" बनते समय अपना पूरा पता तथा "नया ग्राहक' शब्द का उल्लेख अवश्य करें। बार बार शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिये, एक बार ३०० रुपये भेजकर सार्वदेशिक के आजीवन सदस्य बने।

—सम्पादक

धर्म निरपेंक्षता नहीं राष्ट्रीयता (२)

—डा० प्रशांत वेदालंकार ७।२ रूपनगर, दिल्ली-७

सभी सम्प्रदायों के धर्म-ग्रन्थों में प्रत्यक्षाप्रत्यक्ष रूप से यह कहा गया है कि भक्ति और निष्ठा जहां अपने सिद्धात के प्रति हो, वहां मानवता के प्रति भी होनी चाहिए। कोरी अपने सिद्धात के प्रति व्यक्ति निष्ठा अन्ततः दूसरे सम्प्रदाय के प्रति द्वेष-वृत्ति जागरित करती है और यह द्वेष वृत्ति हृदय की संकुचित अवस्था का दुष्परिणाम है। हृदय की यह संकुचित अवस्था ही पाप है। 'स्व' का जितना अधिक विस्तार होता जाता है, व्यक्ति उतना ही उदार बनता है और वह उतना ही पुण्य का भागी बनता है। मनु और याज्ञवल्क्य भिन्न विश्वासियो की प्रथाओ का आदर करने का उपदेश देते हैं। महात्मा बुद्ध ने कहा था ऐसा कभी मत सोचो या कहो कि तुम्हारा अपना धर्म ही श्रेष्ठ है। दूसरो के धर्म को कभी स्वीकार मत करो। बल्कि उनमे से जो आदर योग्य है उसका आदर करो। जो लोग धर्म को दूसरे देशो मे ले जाने वाले थे, अशोक उन्हें अपने एक स्तम्भ में निर्देश देता है—याद रखो कि तुम प्रत्येक जगह आस्था की कुछ जड़ें और विचार सत्य पाओगे, ध्यान रहे कि तुम उन्हें प्रोत्साहित करो, नष्ट नही। जैन सम्प्रदाय मे स्यादवाद के सिद्धान्त के द्वारा इसी सहिष्णुता व सबके सत्य के अन्वेषण के सिद्धान्त को ही स्वीकार किया गया है।

पर दूसरे धर्म अथवा पन्थ की उन्हीं बातो व अन्य धर्मावलम्बियों के विश्वासो को समझाने के लिए यह आवश्यक है कि उनकी ठीक जानकारी हो। आधुनिक युग में धर्म-निरपेक्षता का नारा लगाने वाले लोगों ने यह भी प्रचारित किया कि धर्म या धर्मों (मतो) की शिक्षा पर रोक लगा दी जाए। यहां तक तमाशा हुआ कि गगा व गौ पर लिखे पाठो को भी पाठ्यक्रम मे रखने से इन्कार किया गया क्योंकि इनका सम्बन्ध किसी धर्म-विशेष से है। लेखक का मत है कि धर्म अथवा धर्मों की शिक्षा राष्ट्र में अनिवार्य होनी चाहिए। विभिन्न मत पूर्ण सत्य का प्रतिनिधित्व भले ही न करें, किन्तु वे सत्य के उन विभिन्न पक्षो और धारणाओ का प्रतिनिधित्व अवश्य करते हैं जिनमें कि लोग विश्वास करते रहे हैं, वस्तुत वे एक ही सत्य की विविध ऐतिहासिक अभिव्यक्तियां हैं। उनका (उनमे से किसी एक का भी नही वरन सबका) अध्ययन हमें एक सार्वभौम सत्य की ओर ही ले जाता है। अपने मत के स्वरूप को ठीक प्रकार से समझने के लिए आवश्यक है कि हम जहां अपने मत का अध्ययन करें, वहां विभिन्न मतों का भी गहन अध्ययन करें, क्योंकि वे सभी एक ही संस्कृति के मूल्यवान अंग हैं। उन सबका अध्ययन करके ही व्यक्ति उन मतों में विद्यमान धर्म के समान तत्वो का अन्वेषण कर सकेगा। उनके गहन अध्ययन से ही व्यक्ति सत्य के विभिन्न रूपो का साक्षात्कार कर सकेगा।

जब व्यक्ति को यह सैद्धांतिक व संवैधानिक अधिकार दिया गया है कि वह अपनी रूचि के अनुसार किसी भी मत के प्रति आस्था व्यक्त कर सकता है, तब यह और भी अधिक आवश्यक है कि उस देश के नागरिक को कम से कम उस राष्ट्र मे प्रचलित धार्मिक मतो का दार्शनिक स्तर तक का अध्ययन करने की पूर्ण सुविधा प्रदान की जाए। प्रत्येक छात्र को धर्म के सामान्य तत्वों के अध्ययन के साथ विभिन्न मतो की शिक्षा दी जाए। ऐसे पाठ्यक्रम तैयार करवाए जाएं जिनमे प्रत्येक मत से सम्बद्ध लेख हो। ये लेख उस के धर्माचार्यो से ही लिखवाए जाएं, ताकि उन्हें यह शिकायत न रहे कि उनके मत को ठीक प्रकार से प्रस्तुत नही किया गया। प्राथमिक कक्षाओं में नैतिक एव चारित्रिक गुणों के विकास की शिक्षा तथा माध्यमिक एवं उच्चतर कक्षाओं में विभिन्न मतों की अनिवार्य शिक्षा व्यक्ति को विवेकपूर्वक धर्म का प्रयोग करने में सहायक सिद्ध होगी।

वर्तमान व्यवस्था के अनुसार व्यक्ति विभिन्न मतों का अध्ययन नहीं करता परिणाम यह होता है कि वह अपने मत को भी ठीक प्रकार से नहीं जानता। वह उनके बाह्य कर्मकाण्डपरक रूप से ही परिचित होता है। उसकी उस कर्मकाण्ड के प्रति अन्ध श्रद्धा तो होती है, पर उसका विवेक सम्मत अभिप्राय वह नहीं जानता दूसरे मतों से सर्वथा अनभिज्ञ होने के कारण सुनी-सुनाई बातों के आधार पर उसका अनावश्यक रूप से बिना तर्क के खण्डन करता है।

प्रत्येक व्यक्ति को अपनी रुचि के मत को मानने का अधिकार देने का यह अर्थ हो गया है कि वह अपने पिता के मत को ही माने। जन्म के आधार पर व्यक्ति पर मत थोपने की प्रणाली तर्कसंगत नहीं कही जा सकती। किसी मत विशेष में उसकी रुचि तभी जाग्रित हो सकती है अथवा अनेक मतो में से अपने लिए किसी एक मत का चुनाव वह तभी कर सकता है जब प्रत्येक की उसने विस्तृत शिक्षा प्राप्त की हो। इस प्रकार धर्म व सम्प्रदायो की शिक्षा से जहां व्यक्ति धर्म के मूल तत्वो को जान लेता है, वहां वह विभिन्न सम्प्ररायो के सम्बन्ध में ठीक जानकारी प्राप्त कर साम्प्रदायिक विद्वेष से भी बच जाता है।

हमे यह स्वीकार करना होगा कि 'धर्मनिरपेक्षता' की नीति हमारे देश मे असफल रही है। 'धर्मनिरपेक्षता' की नीति के रहते हुए साम्प्रदायिक सघर्ष हुए है, परस्पर अविश्वास बढा है। देश में अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक का प्रश्न खड़ा हो गया है। हम धर्मनिरपेक्षता से देश की शान्ति चाहते थे, वह हमें नहीं मिली। हमारा लक्ष्य धर्मनिरपेक्षता नहीं हो सकता, हमारा लक्ष्य देश की शान्ति व उसकी उन्नति है। पिछला अनुभव यह बताता है कि धर्म निरपेक्षता की जितनी चर्चा की जाएगी या संविधान में संशोधन करके उसका पालन जितना कठोर किया जाएगा उतना ही तनाव बढ़ेगा। उसके विपरीत धर्मनिरपेक्षता के स्थान पर धार्मिक राज्य बनने से देश अधिक समुन्नत होगा।

हमारी कसौटी राष्ट्रीयता है, धर्मनिरपेक्षता नहीं। पर विचित्र विडम्बना यह है कि जो लोग राष्ट्रीयता या राष्ट्रवाद की बात करते है उन्हें साम्प्रदायिक कहा जाता है। आलोचको का कहना है कि वोटलोलुप राजनीतिक को हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई की एकता या उनकी राष्ट्रीयता रास नही आती और प्रच्छन्न द्विव राष्ट्रवाद को बनाए रखने के लिए धर्मनिरपेक्षता की दुहाई दी जाती है। अभी केरल में यह मांग हुई है कि जहा ५० प्रतिशत से अधिक बच्चे मुसलमान हैं वहां साप्ताहिक अवकाश शुक्रवार को हो। यह भी कहा गया है कि स्कूलों में मुस्लिम शिशुओ को नमाज अदा करने का समय दिया जाए। जिन राजकीय विद्यालयों में ५० प्रतिशत से अधिक मुसलमान बच्चे हैं उनका नाम राष्ट्रीय मुस्लिम विद्यालय रख दिया जाय। यदि उनकी मांग मान ली जाए तो हिन्दू, सिख, ईसाई भी इसी प्रकार की मांग करेंगे और तब राष्ट्रीय हिन्दू विद्यालय को किस प्रकार साम्प्रदायिक कहा जा सकेगा?

राष्ट्रीयता के लिए यह आवश्यक है कि हमारा संविधान व वातावरण ऐसा हो जो भारत में भूगोल, जन धर्म व संस्कृति के प्रति निष्ठा जागरित करे। भारत के गौरवपूर्ण इतिहास पर प्रत्येक व्यक्ति समान रूप से गर्व कर सके। भारत के महापुरुष सभी के लिए आराध्य हों। हमारा यह निश्चित मत है कि धर्मनिरपेक्षता नहीं, राष्ट्रीयता हमारा लक्ष्य है। उसी लक्ष्य को प्राप्त करने का ही हमें प्रयत्न करना चाहिए। उसी लक्ष्य के लिए ही संविधान में यदि कुछ परिवर्तन अपेक्षित हैं, तो उनको करना चाहिए। ●

वेदोक्त समाजवादः वेदोक्त सामाजिक जीवन (२)

विद्यामार्तण्ड श्री स्वामी ब्रह्ममुनि जी

समिति समान होनी चाहिए। समिति सभा को कहते हैं। "सामामायत्र सर्वे भान्ति सा सभा।" सभा में बैठे हुए सब लोगों का आसन एक हो। एक समिति सभा की कहलाती है। सबके पैरों की गति संचार एक हो। वाणी की ललकार एक हो और शास्त्र एक हो अधिक तो क्या दो मनुष्य भी समान वेश में और समान गति से बाजार के एक कोने से दूसरे कोने तक चले जायें तो उनका रास्ता कोई नहीं काटेगा। हिन्दुओं के जुलूसो में साधारण साईकिल वाले को रास्ता काटने का साहस हो जाता है। मुसलमान आदियों के जुलूसों में समानता का व्यवहार अधिक होता है पुलिस का भी साहस उनकी भीड़ में घुसने का नहीं होता।

'समानी प्रपा सहवोऽन्नभागः।
समाने योक्ते स वो युनज्मि।''
अथर्व ३।३०।६॥

"हे लोगो! तुम्हारे पीने का स्थान एक हो। तुम्हारा अन्न भाग भोजनालय एक हो, समान जुए में तुम्हें जोड़ता हू!" जब तक खान-पान एक न होगा समाज नहीं जुड़ेगा, हिन्दुओं में छुआछूत अधिक होने से पृथक्-पृथक् दल बने हुए हैं। कानपुर के आस-पास आर्य समाज का उत्सव था महात्मा हंसराज जैसे नेता आए थे। भोजन के लिए आठ नौ बज गए भोजन नहीं आया। पता लेने के लिए किसी को भेजा कि क्या बात हुई कि अब तक भोजन नहीं आया तो देखने वाले ने देखा कि भोजन आ रहा है और आगे पानी छिड़का जा रहा है। ऋषि दयानन्द ने इस चौका-चाकी के सम्बन्ध में लिखा था इस चौका चाकी ने भारत के वैभव पर चौका लगा दिया।

गुण कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था वेद में बताई है। जो सामाजिक जीवन को बनाने वाली होती है।

ब्राह्मणोस्य मुखमासीत् बाहु राजन्यः कृतः।
उरु तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत:॥
ऋग्वेद १०।९२।१२॥

अथर्ववेद मे मध्यं तदस्य यद्वैश्यः पाठ है। समाज में जो मुख से आचरण करते हैं वे ब्राह्मण हैं। मुख मे तीन बाते पाई जाती हैं। त्याग, तपस्या और ज्ञान। मुख में कितना ही बढ़िया पदार्थ खाने को आए वह थोड़ी ही देर अपने में रखता है फिर त्याग देता है। मुख प्रत्येक ऋतु में नग्न रहता है। तपस्या करता है। समस्त ज्ञानेन्द्रियां मुख में ही हैं। जिस मनुष्य के अन्दर त्याग तपस्या और ज्ञान हो उसे ब्राह्मण समझना चाहिए। यह तो ब्राह्मण का लक्षण हुआ। किन्तु जो ब्राह्मण बनना चाहे उसे त्याग तपस्या और ज्ञान की ओर चलना चाहिये। यह कर्तव्य हुआ। बाहुओं के समान समाज में जो आचरण करे वह क्षत्रिय है। बाहुओं अर्थात भुजाओ में तीन बातें मिलती हैं। शोधन, रक्षण, त्राण। मल मूत्र की सफाई करना भुजाओं का काम है। राष्ट्र मे जो बुराइयां हैं उनका शोध निकालना क्षत्रिय का काम है। टैक्स लगाकर प्रचार करना नही। दूसरे अंग में कहीं फोड़ा फुन्सी हो तो मरहम पट्टी करना भुजाओ का काम है। ऐसे ही राष्ट्र में पीड़ितो की सेवा करना क्षत्रियो का काम है। तीसरे त्राण (बचाव) कोई अपने शरीर पर प्रहार करे तो बचाव हाथो से किया जाता है। चाहे हाथों में कितनी ही चोट लग जावे। ऐसे ही राष्ट्र मे आक्रमणकारियो से बचाव करना क्षत्रिय का काम है।

"उरु तदस्य यद् वैश्य." जो शरीर के मध्य भाग अर्थात उदर के समान आचरण करता है वह वैश्य है। उदर अर्थात पेट में भोजन का संग्रह और उसका विभाजन होता है। वैसे ही राष्ट्र में धनधान्य का जो संग्रह करते हैं और यथायोग्य जो विभाजन करते हैं वे वैश्य हैं। "पद्भ्यां शूद्रोऽजायत" पैरों के समान जो आचरण करते है वे शूद्र हैं। पैरों का काम है दौड़ धूप करना। राष्ट्र में कहीं आग लग जाए तो दौड़ जाए बुझाने के लिए, कोई छत से, पेड़ से गिर जाए तो दौड़ जाए बचाने के लिए। तथा वेद में कहा है।

ब्राह्मणे ब्राह्मणं क्षत्राय राजन्य मरुद्भ्यो वैश्य तपसे शूद्रम्॥

जहां ब्रह्म अर्थात विद्या का प्रसग हो वहां ब्राह्मण को प्रमाण मान लो अर्थात उसे नियुक्त करो।

'क्षत्राय राजन्यम्'' राष्ट्र का प्रसंग जहां हो वहां क्षत्रिय को नियुक्त करो।

"मरुद्भ्यो वैश्यम्" अन्नं वैमरुतः, पशवो वैमरुतः, जहां अन्न व पशुओं का प्रसंग हो वैश्य को प्रमाण मानो या नियुक्त करो। तप से शूद्रम् जहां तप अर्थात परिश्रम का प्रसंग हो वहां शूद्र को प्रमाण मानो या नियुक्त करो।

लोग शूद्र को नीच कहते हैं। वेद तो उसके लिए तप का विधान करते हैं। लोक में तपस्वी को ब्राह्मण से भी ऊंचा मानते हैं। इसलिए शूद्र नीच नहीं। समाज रूपी छप्पर को सम्भालने वाले ब्राह्मण आदि चार खम्भे हैं। उनमें कोई नीच नहीं। विशायें भिन्न-भिन्न है। सब सम्मान के योग्य हैं। वेद में कहा है—

रुचन्नो ब्राह्मणेषु धेहि, रुचं राजसु न स्कृधि।
रुचं वैश्येषु शूद्रेषु मयि धेहि रुचा रुचम्॥

हे परमात्मन्! मुझे ब्राह्मण मे रुचि दे, मुझे क्षत्रिय में रुचि दे, मुझे वैश्य में रुचि दे, मुझे शूद्रों में रुचि से भी अधिक रुचि दे। वेद तो शूद्रों में अधिक से अधिक रुचि दिलाने का उपदेश देता है और हिन्दू शूद्रों से घृणा करते हैं अनेक शूद्र ऋषि हो गए है। कवषऐलुष ऋग्वेद के एक सूक्त का ऋषि था। ऐतरेय महीदास ने ऋग्वेद पर ऐतरेय ब्राह्मण लिखा। ताण्डव ने सामवेद पर ताण्डय महाब्राह्मण लिखा।

हिन्दुओ ने जो थोड़े से मुसलमान अन्य देशो से भारत में आए थे उनको संख्या को बढ़ा दिया शूद्रों से घृणा करके। फलतः मुसलमानो की संख्या बढ़ी और पाकिस्तान की आवाज उठी और उठी ही नहीं फलीभूत भी हुई। कभी उनको जब हिन्दू बनाने का अवसर आया तो पौराणिक ब्राह्मणो ने नकार दिया। महाराजा रणबीरसिंह कश्मीर ने मुसलमान बने लोगों को शुद्ध करके फिर हिन्दुओं में प्रवेश होने के लिए ब्राह्मणों से अनुमति मांगी तो ब्राह्मणो ने नकार दिया। महाराजा "रणबीर शुद्धि" नामक पुस्तक लिखकर मर गये।

सरदार वल्लभ भाई पटेल ने ऋषि निर्वाण दिवस पर रामलीला मैदान मे अपने भाषण में कहा था—यद्यपि मैं रोगी हू परन्तु ऋषि दयानन्द के सम्बन्ध में मुझे श्रद्धाञ्जलि देनी है। उनकी एक बात अपूर्व थी। आर्यों से इतर धर्म वालों को भी "आर्य धर्म मे प्रवेश करने का उन्होने अधिकार दिया था। यदि यह बात पहले मान ली जाती तो हमारे सामने काश्मीर का प्रश्न न उठता। ऐसे ही अकबर बादशाह ने बीरबल से कहा था—तुम्हारा धर्म हमें अच्छा लगता है क्या हमे हिन्दू बना लोगे तो बीरबल ने एक धोबी को तैयार किया और अकबर बादशाह को साथ लाया। धोबी गधी को साबुन लगा रहा था तब अकबर ने धोबी को देखकर कहा—तुम्हारा काम कपड़े मे साबुन लगाने का है गधी को क्यो लगाते हो? बीरबल के सिखाये धोबी ने उत्तर दिया मैं गधी को गाय बना रहा हू अकबर बादशाह ने कहा—अरे कहीं गधी भी गाय बन सकती है? तो बीरबल अकबर से कहने लगा यदि गधी से गाय नहीं बन सकती तो मुसलमान से हिन्दू भी नहीं बन सकता। हिन्दू जन्म जन्म से ब्राह्मण आदि मानते है। पर मैं कहता हूं नही मानते यदि मानते हैं तो जब कोई ब्राह्मण मुसलमान या ईसाई बना जाता है तो वे लोग उसे मुसलमान ब्राह्मण या ईसाई ब्राह्मण कहा जाना चाहिए। शूद्रों पर वेद पढ़ने और वेद मन्त्र सुन लेने पर श्री शंकराचार्य जैसे विद्वान ने लिख डाला। उसकी जिह्वा छेदन व कानो में शीशा पिघला कर भर देना चाहिए। इस प्रकार ऊंचे वर्ण से छोटी-सी त्रुटि हो जाने पर उसे जाति से बाहर कर देना और शूद्रों को जानबूझ कर अपने से अलग कर देना बीच का शरीर धड़ मात्र ही हिन्दुओं का शेष बचा। जिस तालाब मे पानी निकालने की दो नालियां हो जाएं और जल का आगमन न हो तो तालाब का सूखना ही तो होता है। इस प्रकार मानव का सामाजिक जीवन ऊंचा हो जाने पर परस्पर मेल से रहेंगे तो सुख शान्ति का लाभ होगा।

सत्यार्थप्रकाश के ३७वें संस्करण (परोपकारिणी सभा द्वारा प्रकाशित) पर मेरे विचार (३)

प्रो० डा० भवानीलाल भारतीय

(१२) श्री विरजानन्द द्वारा मुन्शी समर्थदान पर लिखित रूप मे आक्षेप करना अन्यायपूर्ण और आपत्तिजनक ही नही अपितु इतिहास को विकृत करना भी है। समर्थदान की विश्वसनीयता प्रामाणिकता तथा महाराज का विश्वास भाजन होने की पुष्टि स्वामी श्रद्धानन्द, हर बिलास शारदा आदि ने की है। ऋषि के पत्रो से ही सिद्ध होता है कि उन्होने मुन्शी समर्थदान को सत्यार्थ प्रकाश मे समुचित संशोधन, परिवर्तन, भाषा को बदलने आदि के अधिकार दिये थे। यदि समर्थदान सावधानी नहीं बरतते तो इस ग्रन्थ का ठीक ठीक छपना भी दुश्वार था।

(१३) अब इस संस्करण के विषय मे आर्यजगत् (५ जुलाई १९९२) मे प्रकाशित डा० रामनाथ वेदालकार के लेख को देखकर मैं कुछ मुददे प्रस्तुत करता हू—

(अ) प्रेस कापी के लेखक ने यदि मिलावट की तो क्यो की ? इससे उसका क्या प्रयोजन सिद्ध हुआ ? पूर्व संस्करण की भांति इसमे यज्ञो मे पशु हिंसा तथा मृतक श्राद्ध तो नही है। यदि वह लेखक पौराणिक था तो इसे सिद्ध करना होगा। रफ कापी से प्रेस कापी मे जो रद्दोबदल दिखाई देती है वह भी ऋषि के आशय के विरुद्ध नही है।

(ब) प्रेस कापी मे यत्र तत्र मूल कापी के किसी आशय का स्पष्टीकरण या विस्तार ही हुआ है।

(स) परिवर्तन इतने अच्छे हैं जिससे लगता है कि ऋषि ने स्वय बोल कर ही कराये हैं। तुलनीय ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के संस्कृत तथा हिन्दी रूपान्तरण मे जो अन्तर है उसका कारण भी यही है कि हिन्दी मे लिखते समय लेखक ने मूल विषय का कुछ अधिक स्पष्टीकरण किया है।

(द) परिवर्तन उपेक्षणीय नही हैं।

(य) यदि प्रेस कापी मे लेखक ने कोई दोष पूर्ण या आपत्ति जनक परिवर्तन किया होता तो उसे देखते (रिवाईज) समय ऋषि ने इसे अवश्य पकड़ लिया होता।

(र) मुद्रण के लिये तो रफ कापी नही अपितु प्रेस कापी को ही तैयार कराया गया था।

(१४) ३७वें संस्करण के प्रत्यक्ष दृष्टया दोष निम्न है —

(अ) मुद्रण मे अक्षम्य प्रमाद, शतश अशुद्धिया शुद्धिपत्र भी अपर्याप्त तथा अधूरा। इसका उत्तरदायित्व किसी न किसी को देना होगा।

(ब) उद्धत ग्रन्थो के प्रमाणो (पतो) को यथा स्थान से हटाकर ३७ पृष्ठो के परिशिष्ट मे रखने मे क्या औचित्य था। इससे पाठक को पतो के जानने मे असीम कठिनाई होगी।

(स) पृ० ३२२ में अश्लील प्रयोग। यह क्यो लाया गया ?

(१५) डा० रामनाथ वेदालकार द्वारा २५ अगस्त १९९२ को तैयार किया प्रतिवेदन देखें। उनके निष्कर्ष इस प्रकार हैं —

१—३७ वें संस्करण को विश्वसनीय और अन्तिम नही कहा जा सकता। अत इसे तैयार करने तथा छपाने का परिश्रम व्यर्थ गया।

२—प्रेस कापी अधिक परिष्कृत तथा ग्राह्य है तब रफ कापी पर जोर देना ठीक नही।

(१६) ३७वें संस्करण की प्रामाणिकता पर जोर देने का परिणाम यह निकलेगा कि इस ग्रन्थ के अब तक प्रकाशित सभी संस्करण (अजमेर के भी) तथा अन्य भाषाओ के अनुवाद अप्रामाणिक, फलत मिथ्या सिद्ध होगे। लोग आक्षेप करेंगे कि दयानन्द के अनुयायियो ने ही उनके ग्रन्थ को इस उपहासास्पद स्थिति मे पहुचाया है। इसके कारण जो नये शास्त्रीय या सैद्धान्तिक वाद विवाद उत्पन्न होगे उनसे निपटना कठिन होगा।

(१७) जनसत्ता के २१ सितम्बर, १९९२ के अक को देखे। इसके लेखक अवनीन्द्र वत्स ने एक मौलिक आपत्ति उठाई है। कुरान की उन आयतो तथा उनकी समीक्षा को इसमे क्यो समाविष्ट किया गया जिनके बारे मे मौलवी महेश प्रसाद (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय मे अरबी फारसी के भू.पू. प्राध्यापक) ने ही व हरविलास शारदा को राय दी थी कि इनका न छापना ही श्रेयस्कर है।

(१८) इन नवीन आयता तथा उनकी समीक्षा को इस संस्करण मे स्थान देकर हम इस्लाम मत के अनुयायियो की इस सम्भावित आपत्ति का क्या उत्तर देंगे कि जो आयते ३६वें संस्करण तक नही छपी उन्हे ३७वे मे क्यो प्रविष्ट किया गया। क्या इसके लिये वे आर्य समाजियो को यह कह कर लाछित नही करगे कि ये लोग स्वामी दयानन्द के ग्रन्थो मे भी उनके निधन के ११० वर्ष पश्चात भी मनमानी जोड तोड करते रहते हैं।

(१९) संशोधक के लिये उचित था कि वह इस कार्य को पूरा करके भी उसे छापने के पहले सभा को दिखाता तथा उसे परामर्श देता कि उसने इस संशोधन मे अमुक नीति को अपनाया है अत इस पर सभा ग्रन्थ को छपाने के पहले चर्चा कर ले। मुद्रण कराने मे शीघ्रता का परिणाम यह निकला कि (१) सभा का लाखो रुपया लगा (२) एक नये विवाद न जन्म लिया।

यद्यपि मुझे प युधिष्ठिर जी ने कई मास पहले ही इस समस्या पर अपने स्वतन्त्र विचार प्रकट करने के लिये कहा था, किन्तु मैं स्वय सभा का सदस्य और अधिकारी होने के नाते इसे टालता रहा।

(१) मैं पुन परोपकारी सभा से निवेदन करता हू कि वह इस संस्करण के डिफेंस को अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न न बनाये।

(२) इस संस्करण पर सबसे पहले प० युधिष्ठिर जी ने अपनी आपत्ति सार्वजनिक रूप से प्रकट की इसीलिये केवल उन्हे ही प्रतिपक्षी मान कर मात्र उत्तर देने के लिये ही कोई स्थिति (स्टैण्ड) अख्त्यार करना अनुचित है।

(३) आवश्यकता इस बात की है कि स्वय सभा यह अनुभव करे कि क्या इस संस्करण को इस रूप मे उपर्युक्त त्रुटियो की विद्यमानता मे छाप कर उसने कोई गलती तो नही की है। यदि ऐसी गलती हुई है तो उसके समाधान या निराकरण का उपाय तलाश करना चाहिये।

आर्य समाजों के निर्वाचन

आर्य समाज श्रद्धानन्द पुरम गुडगाव—श्री वेद प्रकाश जी सिक्का प्रधान, श्री राजपाल जी आर्य मन्त्री श्री वासदेव जी गाबा कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज पालम गाव दिल्ली—चौ० अमरसिंह मान प्रधान श्री उदयश्रेष्ठ मन्त्री श्री हरस्वरूप शर्मा कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज अरिमार बादा—श्री प्रेम परमार प्रधान श्री विशाल आर्य मन्त्री, श्री राजेन्द्र आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज पुष्पाजलि एन्क्लेव दिल्ली—श्री राजकुमार जी भाटिया प्रधान, श्री बहोरीलाल कश्यप मन्त्री, श्री एन डी मल्होत्रा कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज पूजला नया पुरा जोधपुर—श्री जगदीशसिंहजी आर्य प्रधान, श्री बहादुरसिंह आर्य मन्त्री श्री राजेन्द्रप्रसाद आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज सिविल लाइन्स नरही लखनऊ—श्री रघुनाथलाल प्रधान श्री कन्हैयालाल मन्त्री, श्री चन्द्रशेखर कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज लश्कर ग्वालियर—श्री डा आनन्द मोहन सक्सैना प्रधान, श्री मदन मुरारी सक्सैना मन्त्री, श्री अभिमन्यु कुमार खुल्लर कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज रेलवे कालोनी रतलाम म प्र—श्री रामकिशोर मिश्र प्रधान, श्री बसन्तात्र्यम्बक मुले मन्त्री, श्री काशीराम आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज ग्रेटर कैलाश II—श्री रघुनन्दन गुप्त प्रधान, श्री यशपाल मिगलानी मन्त्री श्री तेजकुमार टण्डन कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज महाराजपुर छतरपुर—श्री जयनारायण जी आर्य प्रधान, श्री दयाराम जी आर्य मन्त्री, श्री देवेन्द्र कुमार जी आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज रमेश नगर करनाल श्री यशपाल भाटिया प्रधान, श्री राजेन्द्रपाल शास्त्री मन्त्री, श्री जसवन्तसिंह बोहरा कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज किशनगज मिल एरिया दिल्ली—श्रीमती प्रीतमदेवी तुली प्रधाना, श्री चमनलाल मदान मन्त्री, श्री रामचन्द्र आमेठा कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज नई मण्डी मुजफ्फर नगर—श्री सुगनचन्द्र बसल प्रधान, श्री रामजनेश्वर गोयल मन्त्री श्री रामेश्वरदयाल गोयल कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य उप प्रतिनिधि सभा जोधपुर—श्री मनाप्रसाद त्रिपाठी प्रधान, स्वामी मण्यानन्द सरस्वती मन्त्री, श्री त्रिवेणी प्रसाद कोषाध्यक्ष चुने गए।

यजुर्वेद शतक महायज्ञ सोत्साह सम्पन्न

आर्य समाज, महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना की ओर से आर्य समाज, दाल बाजार के मान्य प्रधान श्री रणबीर जी भाटिया के निवास स्थान शाहपुर रोड लुधियाना मे तीन दिवस का यजुर्वेद शतक का महायज्ञ तथा विशेष सत्सग का आयोजन किया गया जिसमे उच्चकोटि के विद्वान तथा भजनोपदेशक अपनी ज्ञान की गगा मे जनता जनार्दन को स्नान कराते रहे। महायज्ञ आर्य समाज के पुरोहित आचार्य रामेश्वर जी शास्त्री ने सम्पन्न करवाया। यह कार्यक्रम १९ जून से २१ जून तक सायकाल ५ बजे से ७ बजे तक प्रतिदिन चलता रहा।

—कुलदीपराय आर्य मन्त्री

वैदिक प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आर्य समाज महाराजपुर जिला छतरपुर में दिनाक १६-६-९३ से २५-६-९३ तक वैदिक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया जिसमे आर्य समाज द्वारा सचालित महर्षि दयानन्द उ० मा० वि० एव माध्यमिक विद्यालय महाराजपुर, छतरपुर, खजुराहो एव स्वामी प्रणवानन्द उ० मा० वि० टटम जिला छतरपुर तथा गोकुल प्रसाद महाशय विद्यामन्दिर राजनगर के शिक्षक/शिक्षिकाओ एव आर्य समाज महाराजपुर के सभासदो ने भाग लिया। शिविर का प्रारम्भ देवयज्ञ से किया गया।

उक्त प्रशिक्षण शिविर मे पूज्य स्वामी सत्यानन्द जी सरस्वती, मुनि वशिष्ठ जी एव आर्यवीर शिक्षक श्री गणेशजी ने विभिन्न विषयो पर प्रवचन देकर शिक्षित किया।

उक्त शिविर का समापन परम आदरणीय डा० श्री गगाप्रसाद जी बरसैया प्राचार्य छा० छत्रसाल महाराजा महाविद्यालय महाराजपुर के मुख्य आतिथ्य एव श्री गगाप्रसाद जी के पिता की अध्यक्षता मे किया गया।

प्रधान, आर्य स० महाराजपुर
जिला छतरपुर (म० प्र०)

फासनेद सभा के उद्देश्य

फासनेद सभा के प्रधान

फासनेद सभा के मन्त्री

प्रतिनिधि आर्य समाज नीदरलण्ड नामक यह आर्यो का सगठन नीदरलैण्ड सरकार को आर्यों की समस्याओ से अवगत कराना है तथा उनके समाधान हेतु सघर्ष करता हुआ सरकार तथा आर्यों की मध्यस्थता करता है। फासनेद' सभा सभी आर्यो के लिए एकमात्र सम्पर्क का ... यह सगठन पिछड़े वर्ग के लिए अधिकाश जो अप्रवासी ... हालैण्ड म रहते हैं। उनकी संस्कृति, सभ्यता की रक्षा करने मे ... सदा कार्य करता है।

फासनेद" सभा के निकट भविष्य म ... —

हिन्दू कार्य समिति पूर्व जन्म सिद्धान्त आदि विषयो पर सगोष्ठी का आयोजन करके सत्य का प्रचार प्रसार करना। युवा के विकास का ओर विशेष ध्यान देना। पण्डितो पुरोहितो) के ... शिविर का आयोजन करके अच्छे पण्डित तैयार करना।

"फासनेद' सभा की नव निर्वाचित कार्यकारिणी के अध्यक्ष श्री मलहू जी' बहुत ही कर्मठ व कर्मशील आर्य सज्जन है प्रत्येक आर्य एव आर्यसमाज का विशेष ध्यान रखते हैं। फासनेद सभा के अन्य भी अधिकारी भी पूरी निष्ठा से अपना कर्तव्य पालन करते हुए वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार मे पूर्ण सहयोग देते हैं।

फासनेद सभा का निर्वाचन

१९९२ मे इस सभा का नव निर्वाचन हुआ जिसमे निम्नलिखित अधिकारी सर्व सम्मति से पदाधिकारी निर्वाचित किए गए—

श्री मलहु जी (अध्यक्ष), श्री हरि विश्वेश्वर ... (धर्म सम्बन्धी श्री जे० महावीर, उपाध्यक्ष (बाहरी मामलो ... सचिव ... के लिए), एस० पतलु, उपसचिव, । एच० ... कोषाध्यक्ष, बी० कमान-सिंह, उपकोषाध्यक्ष, डा० गुरुबीन, सदस्य, ... ।

इसके अतिरिक्त प्रतिनिधि परिषद भी निर्वाचित की गई। इसमे अध्यक्ष श्री एन० देवकली उपाध्यक्ष, श्री ए० भीखा जी है यह निर्वाचन १९९४ तक के लिए हैं। इस कार्यकारिणी के सभी अधिकारी व सदस्य अपने २ शहरो मे अपने-२ समाजो को सुचारू रूप से चला रहे हैं।

मारीशस के एक समाज सेवी भारत यात्रा पर

मारीशस, वाक्वा आर्य समाज के कोषाध्यक्ष श्री धनराज भगुन आजकल भारत यात्रा पर आए हैं। श्री धनराज जी एक अच्छे और विनम्र समाजसेवी है तथा मारीशस मे अच्छे सरकारी पद पर कार्यरत हैं।

उनकी इस यात्रा पर भारत के सभी प्रान्तो के आर्य समाज केन्द्रो के अधिकारियो से निवदन है कि वे श्री भगुन जी को उचित सहयोग प्रदान करे।

नवीन आर्यसमाज की स्थापना

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे नन्दनगरी दिल्ली मे सात दिवसीय समारोह हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। समारोह मे प्रतिदिन प्रात तथा साय यज्ञ भजन तथा प्रवचन के कार्यक्रम स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती (अधिष्ठाता दिल्ली वेद प्रचार सभा) की अध्यक्षता म होते रहे। यज्ञ के ब्रह्मा श्री स्वामी शान्तानन्द सरस्वती तथा प० टीकाराम आदि थे। यज्ञ की पूर्णाहुति के साथ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव जी ने आर्य समाज नन्दनगरी की विधिवत स्थापना का कार्य सम्पन्न किया तथा निम्न अधिकारी नियुक्त किए। श्री अशोक कुमार आर्य प्रधान श्री बुद्धदेव आर्य मन्त्री तथा श्री श्यामलाल वानप्रस्थी कोषाध्यक्ष —मन्त्री

ग्राम जखराना मे शराब पीने पर प्रतिबन्ध

ग्राम जखराना जिला ... मे आर्यसमाज के वार्षिक उत्सव के समापन समारोह पर ३० मई को स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती की अध्यक्षता मे गाव की पचायत हुई जिसमे गाव के लगभग १५० प्रमुख व्यक्तियो ने भाग लिया। इस पचायत मे शराब बनाने बेचने तथा पीने वालो पर आर्थिक दण्ड का निर्णय लिया गया। तथा विभिन्न प्रस्ताव पास किये गये। उपरोक्त निर्णय गाव म पूरी तरह से लागू हो गये है तथा अब तक इन नियमो के तोडनेवालो पर अठारह हजार रुपये जुर्माना किया जा चुका है। वर्तमान म शराब पीने का प्रचलन गावो मे प्राय बन्द हो चुका है और इस प्रकार का निर्णय करने का अन्य गावो म भी वातावरण बनता जा रहा है।

—जगदीशचन्द्र आर्य
प्रधान आर्य समाज जखराना

आर्य समाज आरा का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज आरा का ६२ वा वार्षिकोत्सव १५ से १८ मई तक समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सक्षिप्त यजुर्वेद पारायण यज्ञ स्वामी सुमेधानन्द जी के ब्रह्मत्व मे सम्पन्न हुआ। समारोह के प्रथम दिवस नगर के मुख्य मार्गो मे एक विशाल शोभा यात्रा निकाली गई जिसका नगर निवासियो पर अच्छा प्रभाव पडा। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वानो तथा भजनोपदेशको ने अपने प्रवचनो द्वारा जनता को अत्यधिक प्रभावित किया।

यज्ञ एवं वार्षिकोत्सव सम्पन्न

—आर्यसमाज बरदहा-बाजार जनपद बहराइच (उत्तरप्रदेश) का ३२ वा वार्षिकोत्सव दिनाक २७ मई से ३० मई १९९३ तक समारोह पूर्वक मनाया गया। जनपद सीतापुर निवासी आर्य स्वामी महावीर जी के पोरोहित्य मे नित्य प्रात यज्ञ भी होता रहा। आयोजन के सफलीकरण मे मन्त्री श्री रामनरेश जी वर्मा तथा कोषाध्यक्ष श्री कैलाशनाथ जी गुप्त का योगदान सराहनीय रहा। अस्तु समाज की ओर से उन्हे हार्दिक धन्यवाद।

—नत्थाराम गुप्त विद्यावाचस्पति, प्रधान

—दिनाक ५, ६, ७, जून १९९३ दिन शनिवार, रविवार व सोमवार को आर्य समाज ख्वाजपुरा (नया गाव) जिला बुलन्दशहर का वार्षिक महोत्सव बडी धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। जिसमे आर्य जगत के सुप्रसिद्ध वयोवृद्ध सन्यासी श्रद्धेय स्वामी मुनीश्वरानन्द सरस्वती जी महाराज धर्मवीर जी धर्मी "वैदिक धर्म भूषण' कलोदा गाजियाबाद, आचार्य धर्मपाल जी सस्थापक गुरुकुल पूर्व गाजियाबाद, श्री आशाराम जा आर्य सीतादेई हापुड गाजियाबाद अपनी पूर्ण मण्डली सहित, सुश्री राजबाला आर्या भजनोपदेशिका नारी समाज सुधारक पलवल हरियाणा सुश्री कौशल्यादेवी अध्यक्षा महिला आर्य समाज बुलन्दशहर, श्री रघुराजसिह आर्य, जिला सचालक आर्य वीर दल अलीगढ, माननीय श्री हिम्मतसिह जी भूतपूर्व मन्त्री उ प्र सरकार व डा छत्रपालसिह जी सासद बुलन्दशहर तथा अन्य अनेक विद्वानो ने अपने विचार प्रकट किये

सभी आने वाले सज्जनो के लिए भोजन व ठहरने की उचित व्यवस्था की गई थी।

अध्यक्ष विनोद गुप्ता (पत्रकार)

—आर्य समाज पो अलीगज बाजार जि. सुल्तानपुर उ.प्र. का वार्षिकोत्सव २४, २५, २६ मई ९३ को बडी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री कुवर महिपालसिह स्वामी विश्वबन्धुजी रायबरेली, श्री वेदपाल आर्य वाराणसी तथा समरजीतसिह ने हिन्दू समाज मे व्याप्त कुरीतियो, छुआछूत दहेज प्रथा अनमेल विवाह पर कुठाराघात करते हुए राष्ट्रीय एकता अखण्डता कायम करने हेतु पुरजोर अपील की।

प्रतिदिन प्रात यज्ञ के साथ प्रथम दिन श्री सुरेशचन्द्र आर्य ने आर्यसमाज मन्दिर पर वैदिक पताका फहरायी जो दर्शनीय थी।

—सुरेशचन्द्र आर्य मन्त्री

मण्डी डबवाली में प्रचार

वैदिक सत्सग सभा मण्डी डबवाली क्षेत्र के देहातो व पिछडे वर्गों मे वेद प्रचारार्थ बढचढ कर काय कर रहा है। स्थानीय डा० बधवा के यहा सीमन्तोनयन सस्कार सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर डा अशोक आर्य ने सस्कारो के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होने बताया कि जिस सीमन्तोनयन सस्कार को आज लोग भूल चुके है वास्तव मे वह सस्कार मानवीय मस्तिष्क के विकास के लिये आवश्यक है। इससे गर्भस्थ शिशु को माता अपनी इच्छानुसार सस्कार देती है। अभिमन्यु सरीखे बालक इसी सस्कार का ही परिणाम है।

गाव फिलियावाली मे महाशय हसराज की अन्तिम क्रिया के उपलक्ष्य मे भी हवन-यज्ञ का आयोजन किया गया। दोनो सस्कारो को सम्पन्न करवाने का कार्य डा अशोक आर्य के किया।

—अशोक आर्य

"आओ वेद पढ़े "अभियान

दिव्य भारती प्रतिष्ठान द्वारा सचालित वैदिक शोधसस्थान क तत्वावधान मे १७ जुलाई १९९३ को अन्तर्राष्ट्रीय सभागार केन्द्र वाई एम सी ए जयसिंह रोड नई दिल्ली-१ मे जर्मनी के सन्त प्रवर श्रीमन्त स्वामी दिव्यानन्द जी महाराज के शुभ प्रवचनो द्वारा "आओ वेद पढे अभियान का आयोजन हो रहा है। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती भी अपना आर्शीवचन देने हेतु पधार रहे है। इसके अतिरिक्त अन्य अनेक वैदिक विद्वान भी वेदो के ज्ञान पर प्रकाश डालेंगे।

शोक प्रस्ताव

नगर आर्य समाज (टेढीबाजार) गाजीपुर म दिनाक २३-५-९३ दिन रविवार की साप्ताहिक बैठक मे समाज के सदस्य श्री श्रीप्रकाश जायसवाल के पिता के दिवगत होने पर शोक प्रस्ताव पारित कर दिवगतात्मा की चिर शान्ति हेतु प्रार्थना की गई तथा शोक सन्तप्त परिवार के सदस्यो के प्रति हार्दिक सवेदना प्रकट की गई।

—केशवसिंह आर्य मन्त्री

एक वर्षीय 'निशुल्क धर्म शिक्षा' पाठ्यक्रम मे प्रवेश आरम्भ

डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली के अन्तर्गत नैतिक शिक्षा सस्थान मे एक वर्षीय नि शुल्क धर्म शिक्षा पाठ्यक्रम का प्रशिक्षण देता है। इसमे आवास व्यवस्था नि शुल्क और मासिक छात्रवृत्ति भी दी जाती है। इस वर्ष १० अगस्त से प्रशिक्षण का नव सत्र प्रारम्भ हो रहा है।

जो प्रत्याशी एम० ए० (सस्कृत) शास्त्री, आचार्य एव वेदालकार परीक्षा उत्तीर्ण अग्रेजी का प्रारम्भिक ज्ञान, आर्य सिद्धातो से ओत प्रोत, वेद प्रचार की लगन व निष्ठा और सगीत मे रुचि रखते हो वो प्रमाणपत्रो की फोटो स्टेट प्रतिलिपि के साथ साक्षात्कार हेतु अपने आवेदन पत्र क साथ प्रात ११ बजे ५ अगस्त को उक्त पते पर पहुच ए।

एक वर्ष के सफल प्रशिक्षण के उपरान्त डी ए०वी० पब्लिक स्कूल मे कुल मिलाकर २ ०/ रु० प्रतिमाह पर नियुक्ति सुनिश्चित है।

—कर्मवीर शास्त्री, प्राचार्य

महाशय धर्मपाल जी द्वारा वानप्रस्थ आश्रम मे प्रवेश

दिल्ली के प्रसिद्ध उद्योगपति और आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान महाशय धर्मपाल जी ने ३ जुलाई १९९३ को विधिवत योगीराज स्वामी सर्वानन्द जी से विशाल जन समूह के मध्य (एम डी एच सत्सगहाल) कीर्ति नगर नई दिल्ली मे वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा ली है। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव और गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति डा० धर्मपाल और अन्य अनेक गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे। दीक्षा समारोह के बाद सामूहिक भोजन का भी सुन्दर आयोजन किया गया था।

सार्वदेशिक परिवार महाशय जी द्वारा वानप्रस्थाश्रम की दीक्षा ग्रहण करने पर हार्दिक अभिनन्दन करता है।

उदय श्रेष्ठ पुन: अध्यक्ष बने

वेद प्रचार मण्डल दिल्ली देहात का द्विवार्षिक अधिवेशन बड़े ही खुशगवार एव शान्तमय वातावरण मे सपन्न हुआ। प० उदय श्रेष्ठ 'धर्माचार्य' (पालम गाव) को तीसरी बार सर्वसम्मति से सस्था का अध्यक्ष बनाया गया। इस अवसर पर २१ सदस्यीय नवीन कार्यकारिणी का गठन सर्वसम्मति से किया गया।

अस्त म प श्रेष्ठ ने धन्यवाद करते हुए सभी से पदाधिकारियो के साथ कधे से कधा मिलाकर दिल्ली देहात मे धार्मिक एव सामाजिक जन जागरण की अपील की।

—जयप्रकाशसिंह महासचिव

वैदिक धार्मिक सत्संग का आयोजन

गुड़गावा आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वावधान मे गैर आर्य समाज कालोनियो मे २० से ३० जून ९३ तक वेदप्रचार हेतु वैदिक धार्मिक सत्सग का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डा० शिव कुमार शास्त्री ब्र० अर्जुनदेव वर्णी ब्र० राजसिंह श्री गुल बसिंह राघव, श्याम वीर रावत तथा श्री दिनेश आर्य सहित अनेको विद्वानो तथा भजनोपदेशको ने अपने ओजस्वी प्रवचनो तथा भजनोपदेशो से श्रोताओ को अत्यधिक प्रभावित किया। इस आयोजन से व्यक्तियो मे आर्य समाज के प्रति आकर्षण बढा है।

दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० एल० ११०२४/९३ साप्ताहिक सार्वदेशिक (१५-७-१९९३) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (C) ९३
R N 626 57 Licensed to post without prepayment License No. U (C) 93 Post in N.D P.S O.on 15-16 7-1993

ओड़िया भाषा में महर्षि दयानन्द सरस्वती पूर्णांग जीवन चरित का लोकार्पण

ओडिया भाषा मे महर्षि दयानन्द सरस्वती का पूर्णांग जीवन चरित जून १४ तारीख को भुवनेश्वर आर्य समाज मन्दिर मे लोकार्पित हुआ। समारोह मे डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री आचार्य हरिदेव स्वामी धर्मानन्द सरस्वती आचार्य विश्वपाल आदि आर्य विद्वान तथा ओडीशा के सैकडो आर्य-समाजी उपस्थित थे। उडीया भाषा के विशिष्ट साहित्यकार उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री तथा अवकाश प्राप्त चीफ इन्जीनियर श्री प्रियव्रतदास इस ग्रन्थ के लेखक है। इनकी लेखनी ने बीस से अधिक वैदिक तथा आर्य ग्रन्थ रचित करके ओडिया साहित्य को सपुष्ट किया है।

प्रचार मन्त्री आर्य समाज भुवनेश्वर

श्री रेमलदास अरोडा का अभिनन्दन

श्री रविन्द्र कुमार मेहता उपप्रधान आर्य समाज आनन्द विहार दिल्ली की अध्यक्षता मे आर्य समाज दिलशाद गार्डन दिल्ली ९५ मे दिनांक ६-६-९३ को एक विशेष व संक्षिप्त समारोह मे संरक्षक वयोवृद्ध श्री रेमलदास अरोडा जी की आर्य जगत को दी गई सेवाओ का बखान कर उन्हे आदर सहित शाल व अभिनन्दन पत्र भेंट किया गया।

तत्पश्चात अन्य कार्यक्रमो के अतिरिक्त वर्ष १९९३ के लिये अधिकारियो व कार्यकारिणी का चुनाव व नामाकन सर्वसम्मति से किया गया मुख्य अधिकारी निम्न प्रकार है —

१ श्री रेमलदास अरोडा संरक्षक २ श्रीमती कृष्णा शर्मा प्रधान
३ श्री रामचन्द्र मन्त्री ४ श्री सुरेश मुखीजा कोषाध्यक्ष

—रामचन्द्र मन्त्री

आर्य समाज लक्ष्मणसर अमृतसर अर्ध शताब्दी समारोह

अमृतसर। आर्य समाज लक्ष्मणसर अमृतसर के प्रधान श्री इन्द्रपाल जी आर्य ने सूचना दी है कि आर्य समाज का अर्ध शताब्दी समारोह दिनांक १ अगस्त से ८ अगस्त तक सम्पन्न होगा। जिसमे पंजाब शान्ति एव प्रगति के निमित्त महायज्ञ का आयोजन किया जायेगा। समारोह मे आर्य-समाज के स्थापना मे योगदान देने वाले महानुभावो को सम्मानित किया जायेगा। इसमे कई महान नेता विद्वान और सन्यासी भाग लेंगे। अन्तिम दिवस राष्ट्रीय सम्मेलन और महिला सम्मेलन भी होगे।

—नरदेवराज वर्मा
स्वागताध्यक्ष अर्ध शताब्दी समारोह समिति

धर्मनिरपेक्षता नहीं, पंथनिरपेक्षता !

अजमेर, ६ जुलाई। प्रधानमन्त्री पी वी नरसिंह राव ने आज यहा पटेल मैदान मे सार्वजनिक सभा को सम्बोधित करते हुए धर्मनिरपेक्षता शब्द का प्रयोग नही किया। इसकी जगह उन्होने 'पंथनिरपेक्षता' का प्रयोग किया। श्री राव ने कहा कि 'पंथनिरपेक्षता' को मजबूत किये बिना भारत की एकता सभव नहीं है। उन्होने कहा कि अग्रेज फूट डालने वाले विषवृक्ष का रोपण कर गये थे जिसे उखाड फेंकना बहुत आवश्यक है।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

महर्षि दयानन्द उवाच

- मै आजकल के कालेज व स्कूलो का पढा लिखा हुआ नही जो मन मे और हो और प्रकट मे और हो। मै तो जो कुछ मन मे सत्य समझता हू उसी को प्रकट करता हू। मुलम्म्येबाजी (दम्भ) और कुटिल नीति की बातें मुझ नही आती।
- जिस सभा मे अधर्म से धर्म असत्य मे सत्य सभासदो के देखते हुए मारा जाता है उस सभा मे सब मृतक के समान है। मानो कि उनमे कोई भी जीता नही है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष : ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३१ अंक २५] दयानन्दाब्द १६६ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९४ श्रावण शु० १४ सं० २०५० १ अगस्त १९९३

पाकिस्तानी सिखों के भेष में

पाकिस्तानी इन्टैलीजैन्स का नया मनसूबा

जालन्धर २५ जुलाई। पजाब बार्डर बेच के इन्सपैक्टर जनरल पुलिस देशराज भट्टी ने आज दावा किया कि पाकिस्तान की ताकत (आई० एस०आई) ने अपने एक हजार नागरिको को सिखो के भेष मे घुसकर खतरनाक सरगर्मिया करने की शिक्षा दी है। यहा समाचार पत्र हिन्द समाचार ग्रुप के अन्तरगत शहीद परिवार फण्ड के उत्सव मे अपने विचार व्यक्त करते हुए श्री भट्टी ने कहा कि आई०एस०आई० भारतको जलील करने के अपने इरादे के हिस्से के तौर पर वीर खालसा और खालिस्तान लिबरेशन फोर्स के रहे सहे उग्रवादियो को पुन सरगर्म करने की भी कोशिश कर रही है। श्री भट्टी ने कहा कि आई० एस०आई० अपनी नयी हकूमत की भावनाओ के अनुसार अब तहरीब कारो को बेगुनाहो का खून करने के बजाए उच्च अधिकारियो तथा राजनैतिको और प्राईवेट इदारो को निशाना बनाने की ट्रेनिंग दे रही है और यह कि इनको बम तथा अन्य भयानक हथियारों के प्रयोग की ट्रेनिंग दी जा रही है अपितु श्री भट्टी ने कहा कि पजाब मे सिक्योरिटी फोर्स देश को आई० एस० आई० और इसके एजेन्टों की तरफ से ऐसी अवस्था मे नये खतरो का सामना करने के लिए जवाबी हकूमत अमली के साथ तैयार हैं—

(प्रताप २६ ७ ९ से साभार)

योगिराज श्रीकृष्ण जन्मोत्सव समारोह पूर्वक मनायें

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने देश देशान्तर की समस्त आर्य जनता से अपील की है कि आगामी ११ अगस्त १९९३ का योगिराज श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव पूर्ण श्रद्धा के साथ समारोह पूर्वक मनाया जाय और उनके जीवन तथा व्यक्तित्व पर विद्वानो के प्रवचन व व्याख्यान कराये जाय। स्वामी जी ने कहा आज देश के सामने जो गम्भीर सकट और चुनौतिया हैं उनके निराकरण हेतु योगिराज श्री कृष्ण जैसे महापुरुषो की राष्ट्र और विश्व को बडी जरूरत है स्वामी जी ने कहा— आर्य समाजो द्वारा श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य म आयोजित वेद प्रचार सप्ताह का समापन ११ अगस्त १९९३ का श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर ही होगा। महाराज श्रीकृष्ण का जीवन पूर्ण रूपेण वैदिक था उन्होने आजीवन वैदिक मर्यादा का पालन किया। अन्याय को दूर करना और न्याय को प्रतिष्ठापित करना उन्होने अपने जीवन का लक्ष्य बनाया। योगिराज श्रीकृष्ण सच्चे वेदज्ञ और प्रभु भक्त थे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश मे श्रीकृष्ण के विषय मे लिखते है देखो श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत मे अत्युत्तम है। उनका गुण कर्म स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषो के सदृश है जिसमे अधर्म का कोई आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से लेकर मरणपर्यन्त बुरा क म कुछ भी किया हो, ऐसा नही लिखा।" श्री कृष्ण के समान प्रगल्भ बुद्धिशाली, प्रज्ञावान, व्यवहार कुशल कर्तृत्ववान पराक्रमी पुरुष ज्ञानी आज तक ससार मे नही हुआ। अत आर्य जनता से अनुरोध है कि योगिराज श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव समस्त आर्य समाजो मे पूर्ण श्रद्धा के साथ मनाया जावे।

आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली द्वारा आर्य सत्याग्रही स्वागत समारोह

दिल्ली की प्रमुख आर्य समाज, आर्य समाज दीवान हाल मे हैदराबाद आर्य सत्याग्रह विजय दिवस के उपलक्ष्य मे आर्य सत्याग्रही स्वागत समारोह का आयोजन किया गया है। २ अगस्त ९३ को प्रात ८ बजे से वृहद यजुर्वेद पारायण यज्ञ, सामूहिक यज्ञोपवीत एव श्रावणी उपाकर्म के पश्चात आर्य बलिदानियो को श्रद्धा सुमन तथा आर्य सत्याग्रह सेनानियो का सम्मान किया जायेगा। समारोह की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती करगे।

श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य मे आर्य समाज दीवान हाल मे २ अगस्त से ११ अगस्त तक वेद प्रचार सप्ताह का जोरदार कार्यक्रम वृहद यजुर्वेदीय यज्ञ के साथ प्रारम्भ हो रहा है। कार्यक्रम की समाप्ति ११ अगस्त को योगिराज श्रीकृष्ण जन्मोत्सव के साथ सम्पन्न होगी। इस अवसर पर ३ अगस्त से १० अगस्त तक प्रतिदिन रात्रि मे श्री गुलाबसिंह राघव द्वारा भजनोपदेश तथा प० श्याम सुन्दर स्नातक द्वारा वेद प्रवचन होगे।

सम्पादक : डा०सच्चिदानन्द शास्त्री

सहारनपुर में आर्य समाज की—

१२ लाख रु० की सम्पत्ति धर्मेन्द्रसिंह द्वारा 'गुरुसिंह सभा' को ३ लाख साठ हजार रुपये में बेची गई।

दिल्ली २६ जुलाई,

आर्य समाज खालापार सहारनपुर के मन्त्री श्री विद्यासागर जी ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को अपने पत्र द्वारा सूचित किया है कि सन १९२७ मे सहारनपुर मे एक दानी ने ९९९.९ वर्गमीटर भूमि जिसमें एक कमरा बना हुआ है आर्य समाज को दान मे दी थी, और वसीयत में लिखा था कि सम्पत्ति की आय से आर्य समाज खालापार वेद प्रचार करे। श्री धर्मेन्द्रसिंह को इस सम्पत्ति को बेचने का कोई अधिकार नहीं था, उन्होने २६ मई १९९३ को अवैधानिक रूप से बिना अधिकार के आर्य समाज खालापार की इच्छा के विरुद्ध 'गुरू सिंह सभा' सहारनपुर से इस सम्पत्ति को बेचने का सौदा ३,६०,०००-०० (तीन लाख साठ हजार रु०) में करके एक लाख साठ हजार रु० गुरुसिंह सभा से ले लिया है। इस सम्पत्ति का सरकारी तौर पर अनुमानित मूल्य इस समय लगभग १२ लाख रुपये है। लोगों मे चर्चा है कि धर्मेन्द्रसिंह ने इस सौदे में काफी गोलमाल किया है। इस सौदे के विक्रय के कागजातों की फोटोकापी भी सार्वदेशिक सभा को भेजी गई है।

वैधानिक आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के वर्तमान प्रधान श्री इन्द्रराज और मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी हैं। उनकी स्वीकृति और आर्य समाज खालापार की सहमति के बिना यह विक्रय सर्वथा अवैध है, परन्तु भ्रष्टाचार के अनेक आरोपो में दोषी पाये गये आर्य समाज से निष्कासित श्री कैलाशनाथ सिंह ने अपने राजनीतिक प्रभाव से आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० का एक अवैध और बोगस सगठन बना रखा है जिसका मन्त्री श्री धर्मेन्द्रसिंह को बनाया हुआ है। इस प्रकार इस तथाकथित और अवैध आर्य प्रतिनिधि सभा के अवैध मन्त्री को उक्त भूमि का सौदा करने का कोई अधिकार नहीं है।

आर्य समाज खालापार (सहारनपुर) के मन्त्री श्री विद्यासागर के पत्र के परिपेक्ष में उत्तर प्रदेश की समस्त आर्य समाजों को आगाह किया जाता है कि इस प्रकार के अवैधानिक और तथाकथित व्यक्तियों द्वारा आर्य समाज की सम्पत्तियों का क्रय-विक्रय असंवैधानिक हैं, सभी आर्य समाजों को इसका जोरदार विरोध करना चाहिए और सहारनपुर की उक्त सम्पत्ति के हस्तांतरण कार्य को पूरी शक्ति से रोके।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री, सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

दिल्ली के न्यायालयों में हिन्दी के प्रयोग की अनुमति दी जाय

—न्यायमूर्ति महावीरसिंह

आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत न्याय सभा के अध्यक्ष तथा उत्तर प्रदेश उच्च न्यायालय के सेवा निवृत्त न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री महावीरसिंह जी ने दिल्ली उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश को एक पत्र लिखकर दिल्ली के समस्त न्यायालयों में हिन्दी भाषा के प्रयोग की अनुमति दिये जाने की मांग की है। अपने पत्र मे श्री महावीरसिंह जी ने १९ मार्च के समाचारपत्रों में छपी खबरों के हवाले से न्यायालयों में हिन्दी प्रयोग से सम्बन्धित कुछ आपत्तियों का स्पष्टीकरण भी किया है।

इस समाचार के अनुसार दिल्ली उच्च न्यायालय की राय है कि कानूनी किताबों का अनुवाद हिन्दी में उपलब्ध न होने के कारण और हिन्दी में वकीलो और न्यायाधीशो के प्रवीण न होने के कारण दिल्ली के न्यायालयों में हिन्दी का प्रयोग नहीं किया जा सकता और न ही दिल्ली न्यायिकसेवा परीक्षा हिन्दी मे करना संभव है।

जहां तक हिन्दी में विधि साहित्य के उपलब्ध न होने का प्रश्न है सही स्थिति इस प्रकार है :-

क--अधिनियम

(१) सन १९६३ से जबसे राजभाषा अधिनियम १९६३ पारित हुआ, उसकी धारा ५ (२) के अनुसार संसद मे प्रत्येक विधेयक अंग्रेजी तथा हिन्दी दोनों भाषाओं में पेश किया जाता है और उन्हीं मे पारित होता है। विधेयक पारित होने पर फिर प्राधिकृत अनुवाद हिन्दी में राजकीय गजट में प्रकाशित होता है।

(२) उससे पहले के लगभग सब अधिनियमों के राजभाषा अधिनियम १९६३ की धारा ५ (१) के अनुसार प्राधिकृत हिन्दी अनुवाद प्रकाशित कर दिये गये।

(३) इनके अतिरिक्त भारत सरकार के विधायी विभाग (राजभाषा खण्ड) ने लगभग सब महत्वपूर्ण अधिनियमों मय संविधान, दण्ड प्रक्रिया संहिता तथा सिविल प्रक्रिया संहिता आदि अधिनियमों के द्विभाषी पाठ प्रकाशित किये थे। एक विधि शब्दावली भी प्रकाशित की है जिससे सब आवश्यक अंग्रेजी के विधि सम्बन्धी शब्दों का हिन्दी अर्थ दिया गया है।

(४) इसी मन्त्रालय न विधि के प्रसिद्ध लेखकों द्वारा महत्वपूर्ण अधिनियमों पर विस्तृत टीकायें प्रकाशित की हैं।

(५) निजी प्रकाशको ने भी महत्वपूर्ण अधिनियमों (मय संविधान) की विस्तृत टीकायें प्रकाशित की हैं।

ख—हिन्दी विधि पत्रिकायें

(१) भारत सरकार के विधायी विभाग (राजभाषा खण्ड) ने १९६९ से "उच्चतम न्यायालय निर्णय पत्रिका" व उच्च न्यायालय निर्णय पत्रिका प्रकाशित कर रहा है। अब कुछ वर्षों से उच्च न्यायालय के स्तर पर दांडिक निर्णय पत्रिका व सिविल निर्णय पत्रिकायें प्रकाशित हो रही हैं।

(२) अखिल भारतीय हिन्दी विधि प्रतिष्ठान सन १९८१ से "उच्चतम न्यायालय निर्णय सार" निकाल रहा है। इसमे उच्चतम न्यायालय के सब निर्णयों को सक्षेप मे जल्द से जल्द प्रकाशित किया जाता है। फिर वर्ष के अन्त में उनका इन्डेक्स बनाकर आल इण्डिया रिपोर्टर व अन्य केन्द्रीय विधि पत्रिकाओं का संदर्भ भी दे दिया जाता है। इसलिए हिन्दी के प्रयोग के लिए सब आवश्यक विधि साहित्य उपलब्ध है। दिल्ली के विधि पुस्तक विक्रेताओं मे

(शेष पृष्ठ १२ पर)

श्रावणी पर्व की सार्थकता

भगवान देव 'चैतन्य' एम. ए., साहित्यालंकार

यदि अविद्यान्धकार से बचना हो तो उसका एकमात्र उपाय है कि हम वेद की शरण मे आए। जिस प्रकार से सूर्य न हो तो अन्धकार मे क्या कहा है इसका पता नही लगता है ठीक इसी प्रकार वेदज्ञान के अभाव मे व्यक्ति इधर उधर भटक रहा है। महर्षि पतजलि जी न अविद्या, राग द्वेष, अस्मिता और अभिनिवेश को क्लश माना है महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अविद्या को अन्य चार क्लशो का भी आधार माना है। अर्थात अविद्या ही भौतिक और अभौतिक सब प्रकार के कष्टो का मूल कारण है। जब तक हमारे राष्ट्र का आधार वेद था तब तक यहा पर सुख समृद्धि भरपूर मात्रा मे थी मगर ज्यो ही वेदमार्ग से हम शिथिल होने लगे त्यो ही अनेक प्रकार के भौतिक और दैविक कष्टो ने हमे घर लिया इसीलिए देव गुरु दयानन्द जी ने एक नारा दिया कि— वेदो की ओर लौटो। वेद स्वय ही ज्ञान का पर्याय है अत अज्ञानान्धकार के निराकरण के लिए वेदो का स्वाध्याय परम आवश्यक है। इसी स्वाध्याय के लिए तथा वैदिक मनन और चिन्तन के लिए आदि काल से वेद सप्ताह मनाने की परम्परा चली आ रही है इसे ही दूसरे शब्दो मे आज कल श्रावणी पर्व के नाम से भी मनाया जाता है। हमारा सौभाग्य है कि आर्य समाज अब भी वेद ज्ञान के मनन चिन्तन और इसके प्रचार प्रसार मे लगा हुआ है। आर्य समाजो मे इस अवसर पर अनेक प्रकार के पारायण यज्ञो का आयोजन किया जाता है।

यह एक स्तुत्य प्रयास है। यही प्रक्रियाए है जो आज भी ऋषि मुनियो की प्राचीनतम परम्पराओ को जागृत रखे हुई हैं। अन्यथा आज के इस भौतिक वादी युग मे मानव केवल कारें, कोठिया और बैंक बैलेंस आदि पर ही अपना अधिक ध्यान दे रहा है। इस शरीर की आवश्यकताए इतनी अधिक बढ़ गई हैं कि शेष कुछ सोचने का आज के मानव के पास मानो समय ही नही है। रात दिन बस एक ही धुन मे चला जा रहा है कि मैं अधिक से अधिक भौतिक सम्पदा प्राप्त कर लू ऐसी बात नहीं कि उसे इस बात का आभास न होता हो कि इन प्रसाधनो मे सुख और शान्ति नही है मगर इसके बावजूद वह आत्मा की उन्नति के प्रसाधनो की ओर तनिक भी ध्यान नही दे पाता है। भोगो की अतृप्ति निरन्तर उसे त्रसित कर रही है मगर फिर भी वह उन्हीं मे पुन पुन डूबकर तृप्ति चाहता है। यह बडे ही आश्चर्य की बात है। वह रो भी रहा है, तडप भी रहा है मगर उन्ही भोगो को पकडे हुए भी हैं। यह तो ठीक ऐसा ही हुआ मानो कोई हाथ मे जलती हुई अग्न का अगारा लिए हुए खडा हो—उसे छोडता भी न हो और जलन के कारण चिल्ला भी रहा हो। वह मूर्ख इतना भी नही जानता कि जलन देने वाली अग्नि को तो उसने स्वय ही पकड रखा है। यदि वह उस अग्न को छोड दे तो वह जलने से बच सकता है। ऐसे ही लोगो के बारे मे वेद कहता है—

अन्ति सन्त न जहाति अन्ति सन्त न पश्यति।
देवस्य पश्य काव्य न ममार न जीयति ॥ अथर्व० १० ८।३२

अर्थात पास बैठ हुए को छोडता नही, पास बैठ हुए को देखता नही। अरे उस परमपिता देव का काव्य देख जो न कभी मरता है और न पुराना होता है।

यदि हम गहराई से इस मन्त्र के भावो का मनन करें तो हमारे जीवन का काटा ही बदल सकता है। इस मन्त्र के रहस्य को हम सक्षिप्तता से इस प्रकार समझ सकते हैं कि परमात्मा के काव्य अर्थात प्रकृति और वेदज्ञान के सम्यक अध्ययन से इस तथ्य को जान ल कि इस प्रकृति मे सुख तो है मगर आनन्द नही है। यदि तूने आनन्द प्राप्त करना है तो शारीरिक और भौतिक तुष्टि के प्रयासो को छोडकर आत्मा को आध्यात्मिकता मे डूबाकर तृप्त कर। आत्मा की खुराक मिलने पर ही तृप्ति मिल सकती है। इसीलिए वेद मन्त्र चेतावनी देते हुए कह रहा है कि हे मानव यदि तू सुख शाति चाहता है तो परमात्मा के शाश्वत नियमो को देखने के बाद भी तू शरीर के मोह को छोडकर आत्मा की ओर क्यो नही मुडता है। उस आत्मा को जानने से तुझे परमशान्ति और तृप्ति मिलेगी अत उसे देख।

हमारा वेद सप्ताह मनाने का उद्देश्य यही होना चाहिए कि हम जीवन की पगडण्डी पर चलते चलते अचानक जिन झाड झखाडो मे उलझ गए हैं उनसे निकलने के लिए हम वेद ज्ञान के प्रकाश मे कोई मार्ग खोजें। आज राष्ट्र एक अजीब प्रकार की हिंसक और आतक की छाया मे जी रहा है। समाज मे जो मान्यताए कुछ वर्ष पूर्व हमारे बीच प्रेम और सौहार्द का वातावरण बनाती थी वे प्राय. लुप्त हो चुकी हैं। आपसी प्यार कही खोकर रह गया है। मानव इतना स्वार्थी हो गया है कि जहा पहले वह किसी का उपकार करके प्रसन्न होता था वही आज किसी का अपकार करके उसे आनन्द आने लगा है। अलगाववाद, मजहबवाद क्षेत्रवाद और सम्प्रदायवाद आदि के काले बादल हमारे चारो ओर मडरा रहे है। कब किसके घर पर बिजली गिर जाए कोई पता नही। इन सब समस्याओ का निराकरण किया तो जा रहा है मगर स्थिति वही है कि ज्यो ज्यो दवा की मरज बढता गया। जितना भी प्रयास किया जा रहा है समस्याए और से और अधिक विकट होती चली जा रही हैं। इसका कारण यह है कि राजनेता अपनी अपनी पार्टी की जीत हार के समीकरणो को देखकर ही निर्णय लेने लगे हैं। राष्ट्र और समाज तथा मानवता का सामूहिक हित कही बहुत दूर छूट गया है। तुष्टिकरण और वोट की राजनीति ने ऐसी दीवारें खडी कर दी हैं जो दिन-प्रतिदिन अधिक, और अधिक ऊची होती चली जा रही हैं। क्योकि वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है इसलिए उसी की छत्रछाया मे जाकर हम आज की समस्त समस्याओ का हल खोज सकते हैं। सत्यता से ही किसी रोग अर्थात समस्या का निराकरण किया जा सकता हैं। रोग या समस्या बढने का कारण ही यह होता है कि निदान गलत ढग से किया जा रहा है। अत आज भी सत्यता यह है कि राष्ट्र, समाज और व्यक्ति की सभी समस्याओ का हल वैदिक दार्शनिकता के अन्दर है। यह ठीक है कि जिस प्रकार रोगी को कडवी और सही औषधि प्रथम बुरी लगती है मगर उसका परिणाम बडा सुखदायक होता है। ठीक इसी प्रकार वेद का परामर्श हमे प्रथम अपने अनुकूल नहीं भी लग सकता है क्योकि हमे अपने-अपने दायरो मे जीने का अभ्यास पड गया है मगर वास्तविकता यह है कि यदि हम राष्ट्र और समाज का भला चाहते हैं तो अपने-अपने स्वार्थो से ऊपर उठकर ही कुछ सोचा जा सकता है। और वही सोच ठीक भी होगी।

वेद की शिक्षा की गहनता को यदि आज का मानव समझ जाए तो आज जो आपा धापी तथा लूट खसूट का वातावरण बना है उससे उसे तुरन्त छुटकारा मिल सकता है। लोभ के कारण ही मानव मेरा मेरा करता हुआ प्रत्येक वस्तु के साथ आसक्ति जोड देता है तथा फिर उसके छोड़ने पर उसे कष्ट अनुभव होता है मगर इसके विपरीत यदि वह समझ ले कि परमात्मा इस सृष्टि के कण कण मे विद्यमान है और समस्त सम्पदाओ का स्वामी है तो व्यक्ति आसक्ति रहित होकर आनन्द से जी सकता है। त्याग और अलोभ की वृत्ति पैदा होन पर ही व्यक्ति परोपकारी हो सकता है। जो परोपकारी होगा वह अपने दायरे मे सिमटने की बात न करके समूची मानवता के हित की बात करेगा फिर उसके हाथ किसी को मारने के लिए या किसी की सम्पत्ति को लूटने के लिये नही उठेंगे। वह मानव मात्र को स्वजन समझने लगेगा इस प्रकार की त्याग वृत्ति का सृजन करके मानव एक परम पिता की उपासना मे जब लग जायेगा तो वह देखगा कि मैंने जो दीवारें बना रखी थी उनमे सिमटकर मैं कितना सकीर्ण हो गया था। मैं समझता था कि मेरा मजहब, सम्प्रदाय, गुरु या उपास्य देव ही मात्र सर्वश्रेष्ठ है इस सकुचित विचार ने तो मुझे उस विशाल परमात्मा से ही दूर कर दिया था। भगवानो और उपास्य देवो और गुरुओ की आज जो भीड लग गई है यह आज विनाश का कारण बन गई है। उस परमात्मा के बारे मे वेद मे कितना सुन्दर कहा है—

भूतस्य जात. पतिरेक आसीत्। (यजु० १३।४)

अर्थात समस्त प्राणीमात्र का पति अर्थात स्वामी वह परमपिता परमेश्वर ही है और वह अनेक नही एक ही है।

वेद मे ऐसे अनेको मन्त्र है जिनमे परमात्मा के एक होने और उसके अवतार न लेने के बारे मे कहा गया है। कितने आश्चर्य की बात है कि आज हमने अपने स्वार्थो के लिये भगवान भी बाट लिए हैं। हमारा वास्तव मे

(शेष पृष्ठ १२ पर)

प्रतिज्ञाओं का स्मारक श्रावणी उपाक्रम

डा० महाश्वेता चतुर्वेदी, बरेली

'पर्व' शब्द "पूरणे" धातु से निष्पन्न होकर, जीवन की अपूर्णताओं को संशोधित करने का आग्रह करता है। हमारे यहां का प्रत्येक 'पर्व' किसी न किसी लक्ष्य से गर्भित है। श्रावणी उपाक्रम श्रावण शुदि पूर्णिमा को मनाया जाता है। श्रावणी के दिन वृहद यज्ञ का उपाक्रम करके वैदिक ग्रन्थों के स्वाध्याय, मनन एवं चिन्तन का आजीवन निर्वाह करने हेतु आवाहन भी समाहित है।

वर्तमान में जो राष्ट्रीय विसंगतियां दिखाई दे रही हैं, उनके मूल में अनार्यत्व की दुर्भावनायें हैं। वैदिक ग्रन्थों का स्वाध्याय छोड़ कर हमने 'आर्यत्व' को भुला दिया है, जिससे मतवाद, मजहब, हिंसा, राग-द्वेष, स्वार्थान्धिता, एवं देशद्रोहिता जैसी दुर्भावनाओं का साम्राज्य हो गया है। घोटाले, दंगे, लूट आतंक, हिंसा का क्रूर तांडव व अन्य विनाशकारिणी शक्तियां हमारे देश को बर्बाद करने में लगी हुई हैं, ऐसे समय में हम हाथ पर हाथ धरे बैठ कर अपनी कायरता क्यों दिखा रहे हैं? क्या अन्याय व अत्याचार को चुपचाप सहना शान्ति का सूचक है? राष्ट्रकवि दिनकर ने भी अन्याय को न सहने का आग्रह किया है :—

"उत्पीड़न अन्याय कहीं हो, दृढ़ता सहित विरोध करो।
किन्तु विरोधी पर भी अपनी, करुणा करो न क्रोध करो।"

हमें व्यक्तिगत घृणा द्वेष एवं शत्रुता को त्याग कर, इन दुर्भावनाओं के विनाश के लिए प्रयत्न करना है। वेद हिंसा का विरोधी है क्योंकि हिंसा दुर्गुणों की खान है। मानवीय प्रवृत्तियां विचित्र होती हैं—'विचित्ररूपा खलु चित्तवृत्तयः' कुटिल प्रकृति के मनुष्य समाज में फूट डालते हैं, जिससे सामाजिक व राष्ट्रीय शक्ति क्षीण हो जाती है। अतः ऋचाओं का आवाहन है :—

"नकिर्देवा मिनीमसि नकिरा योपयामसि।"
ऋ० १०। १३४। ७॥

हम न घातपात करते हैं, और ना ही फूट डालते हैं। निषिद्ध कर्मों से बचना निस्सन्देह उत्तम है, एवं मानवीय हित विहित कर्मों में है, अतः कहा है :—

मन्त्रश्रुत्य 'चरामसि" ऋ० १०। १३४। ६॥

अर्थात् मानव को मन्त्रानुसार चलना चाहिये। मानवीय कल्याण के लिए ईश्वर की ओर से वेदवाणी का विधान है। कल्याणमयी वेदवाणी के कुछ उदाहरण :—

त्वामग्ने अंगिरसो गुहा०। ऋ० ५। ११। ६॥

हे अग्ने! आत्मरस के रसिक तुमको हृदय गुफा में पाते हैं।

न स जीयते मरुतो न हन्यते०। ऋ० ५। ५४। ६॥

हे प्राणों! कर्मयोगी नहीं मारा जाता है।

जागृवांसः समिन्धते०। ऋ० ३। १०। ९॥

तुम मेधावी को मेधावी विद्वान् प्रकाशित कर सकते हैं।

उत्तिष्ठत जाग्रत। कठ० १। ३। १४॥

पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते०। ऋ० ९। ८३। १॥

हे तपोरक्षक प्रभो! तेरा पवित्र नियम सर्वत्र फला है।

श्रावणी पर वेदमन्त्रों का श्रवण कर, स्वयं को अज्ञान सागर में डूबने से बचायें, तथा अन्य डूबते हुए लोगों का भी सम्बल होकर, उन्हें अज्ञान से ज्ञान की ओर ले आयें जिसके लिए हमें स्वयं सामर्थ्यवान् एवं तेजस्वी बनना है। सत्ता तथा जनता के बीच निरन्तर फासला बढ़ता जा रहा है, जिसका कारण नेताओं का आत्मकेन्द्रित तथा स्वार्थान्ध होना है। लोकहित की भावना से परिपूर्ण व्यक्ति ही नेता बनने योग्य होते हैं, वही जनता के साथ न्याय कर सकते हैं।

'श्रावणी' पर वेद वाक्यों का श्रवण कर, उसे जन-जन तक पहुंचाने की प्रतिज्ञा करें, "तथा कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"।

अर्थात् "विश्व को आर्य बनायें" के लिए प्रयत्नशील बनें, तभी हमारा यह श्रावणी उपक्रम सार्थक हो सकेगा।

ऋषि दयानन्द के स्वप्नों को साकार करने के लिए हमें अपने संकल्पों को क्रियोन्मुख बनाना है। एकत्रित होकर, श्रावणी के पुनीत पर्व पर हम वेद-पथ पर चलने का संकल्प लें, तथा अपनी राष्ट्रीय-अस्मिता की रक्षा करें। हमें निर्भयता से कहना चाहिये :—

दयानन्द के वीर सैनिक बनेंगे, दयानन्द का काम पूरा करेंगे।

हमें देशद्रोहियों से सावधान रह कर अपने पथ को प्रशस्त बनाना है, क्योंकि गद्दारों को देख हमें भारती की अपार पीड़ा की अनुभूति होती है, और ये उद्गार स्वयं निकलते हैं :—

"कोई यह देश बेचता अब, कोई हर्षद कोई मेमन।
अब नहीं देश सेवा का व्रत, सब अन्ध स्वार्थ में हैं उन्मन।"

अपनी तेजस्विता से हमें अन्धकार से प्रकाश की ओर चलना है यही 'श्रावणी' का आवाहन है, जिसे आत्मसात करना प्रत्येक आर्य का पुनीत कर्तव्य है।

रक्षा बन्धन

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

मन भावन त्योहार सुहाना रक्षा बन्धन आया।
हरियाली का बिछा बिछौना भू पर अति मन भाया॥
दादुर मोर पपीहा बोलें भांति भांति की बाणी।
बनगरजे और बिजली चमके खुशी जगत के प्राणी॥
ज्वार बाजरा मक्का फूले काश्तकार हरषाया॥१॥
रिमझिम रिमझिम बादल बरसे हवा चले पुरवाई।
राखी लेकर चली बहिन निज भ्राता के घर आई॥
राखी बांध कलाई मे अति मन में मोद मनाया॥२॥
राखी की बंधाई भय्या दक्षिणा भी देनी मुझे।
निज कर्तव्य निभाओ आज प्रतिज्ञा भी लेनी तुझे॥
करो राष्ट्र रक्षा मिल करके मैंने सब कुछ पाया॥३॥
भारत का है अंग यह कश्मीर ध्यान में रखिये वीर।
गद्दारों का गर्व चूर कर आगे आगे बढ़िये वीर॥
मातृभूमि की लाज बचाना बहिना ने फरमाया॥४॥
नहीं मांगती शाल दुशाला नहीं चाहिये गहना।
मदिरा मांस तमाकू सुलफा इनसे बच के रहना॥
यही दक्षिणा चाहती हूं मन में आनन्द छाया॥५॥
दक्षिणा गहाओ इसे सहर्ष स्वीकार करिये।
सकल्प निभाना भय्या मन में विचार करिये॥
कहे स्वरूपानन्द सरस्वती शुभ त्योहार मनाया।
मन भावन त्योहार सुहाना रक्षा बन्धन आया॥६॥

सार्वदेशिक के ग्राहकों से

सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहकों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क भेजते समय या पत्र व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या का उल्लेख अवश्य करें।

अपना शुल्क समय पर स्वतः ही भेजने का प्रयास करें। कुछ ग्राहकों का बार बार स्मरण पत्र भेजे जाने के उपरान्त भी वार्षिक शुल्क प्राप्त नहीं हुआ है अतः अपना शुल्क अविलम्ब भेजें अन्यथा विवश होकर अखबार भेजना बन्द करना पड़ेगा।

"नया ग्राहक" बनते समय अपना पूरा पता तथा "नया ग्राहक" शब्द का उल्लेख अवश्य करें। बार बार शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिये, एक बार १०० रुपये भेजकर सार्वदेशिक के आजीवन सदस्य बने।

—सम्पादक

श्रावणी उपाकर्म का वैदिक स्वरूप

डा० महेश विद्यालंकार

उत्सव प्रियता भारत की महत्वपूर्ण विशेषता रही है। पर्व हमारी भावनात्मक एकता, सामाजिक संगठन और जातीय गौरव के प्रतीक हैं। पर्वों की लम्बी परम्परा में श्रावणी का महत्वपूर्ण स्थान है। वैदिक चिन्तन परम्परा के अनुसार इस पर्व का सम्बन्ध वेदाध्ययन से है। श्रवण नक्षत्र की पूर्णिमा को मनाने के कारण इसे श्रावणी कहते हैं। श्रवण का अर्थ होता है, सुनना। वेद, उपनिषद सदग्रन्थ व धर्म ग्रन्थो का सुनना और सुनाना श्रावण कर्म कहलाता है। वेदाध्ययन और स्वाध्याय मानव जीवन का प्रमुख कर्त्तव्य बताया गया है। स्वाध्याय का अर्थ होता है आत्मचिन्तन, तप, ईश्वर विचार, वेद तथा श्रेष्ठ जीवन निर्माण करने वाली पुस्तकों का पढ़ना, पढ़ाना, पढ़े हुए को अपना बना लेना सभी स्वाध्याय का अर्थ देते हैं। मानव जीवन का लक्ष्य रहा है—अज्ञान को दूर करके ज्ञान प्राप्ति करना और ब्रह्म के परमानन्द मोक्ष को प्राप्त करना। इस उद्देश्य की प्राप्ति स्वाध्याय साधना से होती है अतः स्वाध्याय का महत्व अत्यधिक है। इतिहास साक्षी है कि अनेक ऋषि मुनि सन्त, विचारक स्वाध्याय के बल से संसार में अमर हो गए। प्राचीन परम्परा में इसी उद्देश्य को लेकर गुरु नवदीक्षित स्नातकों को उपदेश देते थे :—

स्वाध्यायान्मा प्रमदः

स्वाध्याय कर्म से कभी प्रमाद नहीं होना चाहिए। जो तुमने पढ़ा है उसे जीवन में दुहराते रहना। सांसारिक कार्यों में संलग्न होकर भी कुछ समय स्वाध्याय के लिए अवश्य निकालते रहना। मनु का भी इसी की ओर संकेत है—स्वाध्याये नित्ययुक्तः स्यात् "चाहे किसी अन्य कर्म में छुट्टी हो जाय, किन्तु स्वाध्याय में व्यवधान नहीं आना चाहिए। यह तो नित्य कर्म है। स्वाध्याय से मनुष्य जीवन पवित्र बनता है। स्वाध्याय करने से जीवन पाप से पुण्य की ओर, अधर्म से धर्म की ओर, असत्य से सत्य की ओर, मृत्यु से अमृत की ओर अग्रसर होता है। स्वाध्यायशील का जीवन संयमित, सन्तुष्ट एवं व्यवस्थित होने लगता है। वह रोगों से मुक्त होकर सुख की नींद सोता है। स्वाध्याय से विवेक व आत्मबोध जाग्रत होने लगता है। स्वाध्याय महिमा अपार है। इसलिए ऋषिवर ने आर्य समाज के तीसरे नियम में वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परमधर्म बताया है।

वर्षाऋतु में वनों और आश्रमों से संन्यासी, वानप्रस्थी, साधक व पितर-जन नगरों में वर्षाकाल व्यतीत करने आ जाते थे। नागरिकजन भी पावस ऋतु में कार्य व्यापार से मुक्त होकर, स्वाध्याय, सत्संग और यज्ञ में समय व्यतीत करते थे। यज्ञ के व्रती बनते थे। यज्ञोपवीत धारण करके व्रत संकल्प लेते थे। पुराने यज्ञोपवीत को बदल कर नया धारण करते थे। भाव यही होता था कि जो व्रत, संकल्प यज्ञमय जीवन जीने के लिए हैं—उनका नवीनीकरण हो जाय। उन्हें दुहराते थे, जिससे भाव भावना दृढ़ बनी रहे। ज्ञान चर्चा व धर्म चर्चा का क्रम चलता था। वनों से आए हुए साधक ज्ञानी व तपस्वीजन गृहस्थियों का धर्मोपदेश से जीवन मार्ग प्रशस्त करते थे। अपने अनुभवों से आध्यात्म तथा परमार्थ की ओर लोगों को प्रेरित करते थे। वर्षा की समाप्ति पर ज्ञानी साधकों, सन्तों व पितरों का विदाई समारोह होता था। तब उन्हें उत्तम भोजन कराके, साथ के लिए खाद्य सामग्री भेंट में दी जाती थी,' इसी श्रद्धा पूर्वक किए हुए कर्म को श्राद्ध कहते थे। आजकल इसका अर्थ उल्टा समझा जाने लगा। मृतक का श्राद्ध तर्क हीन व सिद्धान्त विरुद्ध है। इस प्रकार श्रावणी का मुख्य उद्देश्य होता था, घर घर में वेदपाठ और घर घर मे यज्ञ कर्म। इससे व्यक्ति, परिवार, सन्तान व समाज में श्रेष्ठ विचारों, संस्कारों और परम्पराओ का प्रचलन बना रहता था। जीवनों में भौतिकता और आध्यात्मिकताका समन्वय रहता था। जीवन तनाव चिन्ता रोग शोक, ईर्ष्या द्वेष, पाप वासना से बचा रहता था। यह था श्रावणी उपाकर्म का वैदिक स्वरूप, जोकि मूलात्मा से छिन्न भिन्न हो गया। मात्र चिह्न रूप में परम्परा का निर्वाह किया जा रहा है। वह भी आर्य समाज कोई कोई विरला पड़ता जैसे तैसे श्रावणी पर यज्ञ और वेद कथा का आयोजन कर लेता है, और मन्दिरों में तो वह परम्परा नष्ट ही हो चुकी है। आर्य समाज के ऊपर वेद की रक्षा, परम्परा, पठन पाठन प्रचार प्रसार का दायित्व है। वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है और कोई नहीं मानता है? यह आर्य समाज का नियम इसकी सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है। ऋषि की वेद प्रचार का कार्य ही वसीयत रही है किन्तु आज जो समाजों, सभाओं व संगठनों मे हो रहा है, उसे देखकर हृदय पीड़ा से भर जाता है। आर्य समाज भी अपने असली कार्य से हट और कट रहा है? वह भी दुकानें स्कूल, बारात घर, सिलाई सैन्टर विवाह केन्द्र और ईंट पत्थर मे उलझ रहा है, वेद प्रचार छूट रहा है। वेद की ज्योति जलती रहे। मात्र नारे से वेद प्रचार, और वेद की रक्षा न हो सकेगी। आज पुनः आर्य जगत के समक्ष चैलेंज और प्रश्न खड़ा है—को वेदानुद्धरिष्यति? अब वेदों की रक्षा कौन करेगा? कौन पढ़ेगा? कौन पाठक, द्विवेदी त्रिवेदी और चतुर्वेदी बनेगा? आर्य जनता को इस ओर गम्भीरता व बेचैनी से सोचना चाहिए? यही इस श्रावणी पर्व का मूक सन्देश है कि वेद के पठन पाठन के लिए कुछ करो? वेद ज्ञान से जीवन, परिवार एवं समाज मन्दिरों को जोड़ो।

कालान्तर में भारतीय समाज मे श्रावणी उपाकर्म रक्षाबन्धन के नाम से मनाया जाने लगा। प्राचीनकाल में तत्वज्ञ ब्राह्मण वेद की रक्षार्थ क्षत्रियों व वैश्यों के हाथों में रक्षा सूत्र बांधते थे। यज्ञों में भी यजमानों के हाथों में रक्षा सूत्र बांधे जाते थे। जो आज भी विकृत रूप में घर में कथा, यज्ञ व शुभकर्म होने पर पुरोहित यजमान के हाथ में बांधते हैं। मध्ययुग में विदेशी आक्रान्ताओं के भय से भारतीय नारियां अपने सतीत्व की रक्षा हेतु भाईयों तथा बलवान पुरुषों के हाथों में राखी बांधकर, उनसे अपनी रक्षा की कामना के उपलक्ष पर उत्सव मनाने की परम्परा चल पड़ी। यह भावनात्मक सम्बन्ध सच्चे स्नेह का प्रतीक बनकर नारी की रक्षा का कवच सिद्ध हुआ। विश्व के किसी देश में ऐसा स्नेहपूर्ण भावनात्मक त्यौहार नहीं मनाया जाता है। यहां भाई बहिन की भावना से और राखी के बन्धनकी मर्यादासे प्रेरित होकर आजीवन व्रत का निर्वाह करते हैं। चाहे धागे कच्चे हों, पर सम्बन्ध पक्के बनाये और माने जाते थे, किन्तु युग की आंधी व धन की अन्धी दौड़ इन भावनात्मक सम्बन्धों में भी पैसे की दीवार बना रही है जो कि हमारे टूटन, बिखराव एवं विषमता का कारण बन रहा है। इस पर्व के साथ कई पौराणिक कथाएं भी जुड़ गई हैं, जो मात्र इस त्यौहार की महत्ता, सामाजिकता एवं भावनात्मकता को बल देती हैं। समय के प्रबल प्रवाह में बहुत कुछ, छूट, टूट व फूट जाता है, यही हमारे पर्वों, सामाजिक जीवन मूल्यों, आदर्शों, संस्कारों आदि के साथ हुआ। मूल चेतना टूट गई। वास्तविक स्वरूप और ध्येय भूल गया, मात्र रूढ़ियों की कल्पित घटनाओं की तथा अन्धविश्वासों का निर्वाह हो रहा है। अब इन पर्वों में न पूर्व जैसा रस है, न मस्ती है, न भाव-भावना है, न कोई उत्साह भाव है, न मेल जोल है, न आने की खुशी है, एक ढर्रे में बंधा आदमी भाग रहा है किसी को समय ही नहीं है कि दो घड़ी बैठकर इन पर्वों की मस्ती का स्वाद ले। कुछ विचार, चिन्तन व भावना जेहन में उतारे। आदमी मशीन बनकर दौड़ रहा है, यही आज के मानव की सबसे बड़ी विडम्बना और त्रासदी है।

वैदिक चिन्तन में प्रत्येक पर्व विशेष उद्देश्य से मनाया जाता है और एक विशेष सन्देश लेकर आता है। यह श्रावणी पर्व भी वेदों के पठन-पाठन व रक्षा के संकल्प को दुहराने का सन्देश लेकर आता है। वेद का चिन्तन प्रेरित करता है कि हम सच्चे अर्थ में मानव बनकर अपने जीवन जगत को सुखी बनाए। वेद ज्ञान प्रभु का कल्याणी वरदान है। इसी ज्ञान से मानवता सुखी, शान्त व आनन्दित हो सकती है। वेद का चिन्तन प्राणी मात्र के लिए है। आज संसार विचारों के कारण दुःखी है। भाव मंगलदायक, श्रेष्ठ, पवित्र विचारों का सर्वत्र अभाव हो रहा है। वैदिक चिन्तन विचार देता है। जीवन को सुन्दर, पवित्र व श्रेष्ठ बनाने का मार्ग दिखाता है। श्रावणी उपाकर्म इन्हीं "वैदिक विचारों के प्रचार-प्रसार का पर्व है। इसकी महत्ता, उपयोगिता एवं सार्थकता तभी है, जब हम सत्संग, स्वाध्याय, साधना, सेवा आदि श्रेष्ठ भावों से जुड़े। जीवन को उन्नत बनाए। यही श्रावणी का वैदिक रूप है।

आओ मनायें रक्षाबन्धन

लेखक—रामसुफल शास्त्री "विद्यावाचस्पति"

जितने भी हमारे पर्व हैं, वे सारे के सारे हमारी भारतीय संस्कृति के परिचायक हैं। रक्षाबन्धन भी भारतीय पर्वों मे एक प्रमुख एव पावन पर्व है। जो भाई-बहन के पावन स्नेह का प्रतीक है। भारत वर्ष में भाई और बहन के अमर प्रेम की यादगार मे रक्षाबन्धन का पावन पर्व बडी ही धूमधाम से श्रावण मास की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। बहनें अपने भाइयो की कलाइयो मे रग बिरगी राखिया बाधती, और उनका मुह मीठा कराती हैं। आजकल प्राय. बहन भाई को राखी बाध कर उससे कुछ प्राप्त होने की इच्छा रखती हैं। राखी बाध कर भाई से कुछ रुपये या वस्तु भेंट स्वरूप प्राप्त कर लेने मात्र का नाम ही रक्षाबन्धन नहीं है।

रक्षाबन्धन अर्थात् जिस पर्व मे रक्षा करने का भाव भरा हुआ है। हर इन्सान जीवन मे अपने तन, मन, धन की रक्षा करना चाहता है। भले कोई बुजुर्ग हो, बीमार हो, घर-ससार से परेशान हो, सगे सम्बन्धी व्यवहार और व्यापार से तग आ गये हो, और रोज यह भी कहते हो कि इससे तो मर जाना ही अच्छा है। परन्तु जब शरीर छोड़ने का समय आता है तब वह सोचता है कि इस शरीर की रक्षा कैसे हो? जीवन की अन्तिम घड़ियो में भी इन्सान सोचता है कि और दो चार वर्ष निकल जायें शरीर न छूटे तो अच्छा है।

इस प्रकार भले ही तन से रोगी क्यो न हो, दु.ख में तड़फता हो फिर भी वह भगवान से लम्बी आयु की प्रार्थना करता है। मन की रक्षा के लिए भी वह प्रभु से प्रार्थना करता है कि हे प्रभो! मेरे मन को सम्भालना उसे स्वस्थ रखना, अच्छे मार्ग पर चलाना। धन की रक्षा के लिए भी वह भागदौड़ करता है। परन्तु वर्तमान समय में आज का मानव अपनी रक्षा करने में असमर्थ होता जा रहा है। क्योंकि सिर्फ स्थूल धागो की राखी बाधने मात्र से जीवन की रक्षा नहीं होती किन्तु रक्षाबन्धन के सच्चे रहस्य को जानने से ही रक्षा हो सकती है।

प्राचीन काल में ऋषि लोग वर्षात् के समय मे लगातार यज्ञ किया करते थे। जिन्हें चातुर्मास यज्ञो के नाम से जाना जाता है।

उनमे बड़े-बड़े राजे महाराजे लोग उपस्थित हुआ करते थे। दीक्षा के रूप में उन्हें लाल सूत्र बाधा जाता था। वह लाल सूत्र रक्षा के लिए बन्धन होता था। बाद मे इसका रूप बदल गया है।

आजकल तो प्राय ऐसा भी देखा जाता है कि जिनके अपना कोई भाई नही होता वे बहनें इस पावन पर्व से द्वेष करती हैं। परन्तु इतिहास साक्षी है कि मध्यकाल मे बहनें राखी बाधकर भाई बनाया करती थी ताकि अत्याचारियो से रक्षा पाई जा सके।

महाराणा सागा की महारानी कर्मवती ने अत्याचारी बहादुरशाह से अपनी रक्षा के लिए हुमायू को राखी भेजी थी। राखी बन्ध भाई हुमायू ने कर्मवती की रक्षा की थी। इतिहास साक्षी देता है कि जिन बहनो के कोई अपना भाई नहीं हुआ करता था वे राखी बाधकर अपनी रक्षा के लिए भाई बनाया करती थीं। किन्तु यह भी सच है कि मध्यकाल मे जिस तरह भाई जी-जान से बहन की रक्षा किया करता था, अब उस तरह बहनो की रक्षा भी नही हो रही है। प्रसगवश प० लेखराम जी के जीवन की घटना का सकेत करना उपयुक्त समझता हू। अग्रेजो के समय की बात है। एक हिन्दू बेटी को विधर्मी लोग बलात् ले जाकर मस्जिद मे रख लिया और धमकी दी कि यदि कोई हिन्दू इस धरती पर जीवित है तो पाच बजे शाम तक छुड़वाकर ले जाये, वर्ना पाच बजे के बाद निकाह किया जायेगा। जब प० लेखराम् जी को पता चला तो वे अपनी धर्मपत्नी जी के मना करने पर कि मत जाओ पुत्र बीमार है।' ऐसा कहकर कि यदि पुत्र मर जायेगा तो प्रभु कृपा से दूसरा मिल सकता है, परन्तु एक बहन की यदि इज्जत लुट जायेगी पुन नहीं मिल सकती। प० लखराम जी अपनी बहन समझ उस हिन्दू बेटी की रक्षा के लिए घर से निकल पड़े। पाच बजने ही वाले थे कि प० जी वहा पहुच गये जहा विधर्मियो के चगुल मे फसी हुई वह हिन्दू बहन किसी हिन्दू भाई की प्रतीक्षा मे थी कि कोई आकर छुड़ाये और मेरी रक्षा करे। प० जी ने पहुचते ही कहा, बहन घबराओ नहीं! मैं तुम्हारा भाई तुम्हारी रक्षा के लिए आ गया हू।

अपरिचित होने के कारण विश्वास नहीं हो रहा था। तब प० जी ने अपना परिचय देते हुए धीरज बधाया और उन विधर्मियो से डटकर मुकाबला करके उसकी रक्षा की। इस प्रकार पहले भाई अपना कर्तव्य समझकर बहनो की रक्षा किया करते थे। यह एक परम पावन पर्व है। इससे भाई-बहन का सम्बन्ध दृढ होता है। पुरानी परम्पराओ का परिचय मिलता है। अत आइये हम सब मिलकर इस पावन पर्व रक्षाबन्धन को बड़े हर्षोल्लास के साथ मनायें और इसके वास्तविक स्वरूप को समझें तभी हम लाभान्वित हो सकेंगे।

फिर आया रक्षा बन्धन

रामसुफल शास्त्री "विद्यावाचस्पति"

हर वर्षों की भांति अब भी रक्षा बन्धन आया है।
भाई-बहन के अमरप्रेम की याद दिलाने आया है॥

हर बहन, भइया को राखी बांधे पुलकित होकर के।
सजी कलाई देख के बहना हंसती है खुशिया भर के॥

हर धागे के तार तार मे ऐसा रग समाया है।
भाई-बहन के अमर प्रेम की याद दिलाने आया है॥

इसी तरह भइया खुश होकर फूला नहीं समाता है।
बहन की रक्षा वास्ते भइया वचन बद्ध हो जाता है।

कह हमेशा बहन की रक्षा भइया ने फरमाया है।
भाई-बहन के अमर प्रेम की याद दिलाने आया है॥

राखी एक अनोखा कगन कैसा सुन्दर नाता है।
हर एक बहन और भइया के मन को ये हर्षाता है॥

"रामसुफल" के मन को भी ये भाव बहुत ही भाया है।
भाई बहन के अमर प्रेम की याद दिलाने आया है॥
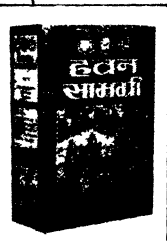
मरणशील मनुष्य के लिए वेद का सन्देश

सुश्री डा० आराधना एम०ए०, पी-एच० डी०

मनुष्य मरणशील प्राणी है उसे प्राणियों में सर्वाधिक विवेकशील भी कहा गया है। जीवन के तीन सत्यों से वह भली भांति परिचित भी है जैसे (१) वह यह जानता है कि उसे एक दिन मरना है क्योंकि संसार में जन्म लेने के बाद सभी मृत्यु को प्राप्त होते हैं। (२) मनुष्य अपने किये गये शुभाशुभ कर्मों का फल अवश्य भोगता है वह ईश्वर के इस शाश्वत न्याय से बच नहीं सकता। (३) जिन भौतिक पदार्थों व सुखों की प्राप्ति के लिये वह जीवन भर प्रयत्न करता रहता है वे सब यहीं रह जाते हैं किसी के साथ नहीं जाते हैं। इन तीन वास्तविकताओं के जानने के उपरान्त भी वह शरीर से अमर बने रहने की चेष्टा करता है अर्थात मरना नहीं चाहता है। वह प्रभु के कर्मफल विधान को भूलकर पापकर्मों में लिप्त रहता है और परिग्रह की भावना वश संसार के समस्त ऐश्वर्यों के भोग भोगने तथा सुख के समस्त भौतिक साधन जुटाने में जुटा रहता है। इन विवेकहीन क्रिया कलापों को करने वाला यह मनुष्य फिर भी, सर्वश्रेष्ठ और मेधावी मनुष्य माना जाता है, यह बात कितने आश्चर्य की है? इस गम्भीर विषय पर शास्त्रों में पर्याप्त सामग्री विद्यमान है जिसमें मनुष्यों का श्रेय तथा प्रेय मार्गी प्रवृत्तियों, उनके कारण तथा परिणामों की विस्तार से चर्चा की गई है, विस्तारभय से मैं उनका विवेचन यहां करना उचित नहीं समझती हूं।

विचारणीय प्रश्न यह है कि मरणशील प्राणी इन विडम्बनाओं से कैसे मुक्त हो सकता है? यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के १६ वें मन्त्र में सच्चित जीव के लिए यह प्रार्थना की गई है कि वह सच्चिदानन्द बने। 'योऽसावसौ पुरुषः सो अहमस्मि" मन्त्रांश इसका उदाहरण है। श्री नारायण स्वामी महाराज ने इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए तीन साधनों की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया है पहला साधन, इसी मन्त्र के आधार पर पूषन्, एकर्षि, यम, सूर्य व प्रजापति बनने का है जो जन्म जन्मान्तर के सुकर्मों पर निर्भर करता है। दूसरा साधन यम नियमों के अभ्यास का तथा तीसरा साधन श्रद्धा और प्रेम से भरकर भक्ति करना है। गीता में योगिराज कृष्ण ने कहा है कि जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः ध्रुवं जन्म मृतस्य च" अर्थात जन्म मरण का चक्र चलता ही रहता है। ऐसी स्थिति में वेद आदेश देता है कि हे संसार के वैभवों में फंसा हुआ मानव तू याद रख—

> ओ३म् वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तं शरीरं।
> ओम् क्रतो स्मर, क्लिवे स्मर, कृतं ७ स्मर ॥

अर्थात शरीरों में आने वाला यह जीवात्मा अजर अमर है किन्तु यह पंच तत्वों से बना हुआ शरीर भस्मान्त है इसलिये हे प्राणी तू अन्त समय में ओ३म् का स्मरण कर, अपनी निर्बलता को याद कर और जीवन में कृत कर्मों का स्मरण कर।

यह है वह सन्देश जो वेद द्वारा मरणशील प्राणियों को दिया गया है। यदि मरणशील प्राणी इस वेद मन्त्र का आशय समझ ले और यह सोच ले कि मृत्यु के समय सम्पूर्ण जीवन के विचार-चित्र उसी प्रकार उभर कर अन्तःकरण के पटल पर आया करते हैं जिस प्रकार टी. वी. के पर्दे पर भिन्न-भिन्न चित्र उभरते हैं। जिन्हें देखकर मनुष्य को सुखद एवं दुखद अनुभूतियां होती हैं। उसी प्रकार मृत्यु के समय जीवन में किये गये कार्यों से आत्मा को सुख दुख हुआ करता है जो उसकी अगली योनि को प्रभावित करते हैं। मन्त्र में 'ओ३म्' स्मरण का भी निर्देश दिया गया जो अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसमें बताया गया है कि मनुष्य को अपना जीवन इस प्रकार व्यतीत करना चाहिए जब मृत्यु का समय उपस्थित हो तब वह 'ओ३म्' नाम का स्मरण कर सके। मन्त्र के दूसरे भाग में दो बातों के स्मरण का विधान है एक ओ३म् तथा दूसरे अपने किये कर्मों का स्मरण। वेद के समस्त मन्त्र और ऋचायें दो भागों में विभक्त हैं। एक भाग में उपदेश है और दूसरे में नियम का निर्देश विद्यमान है। उपदेश ग्रहण करने में मनुष्य स्वतन्त्र है किन्तु नियम Law of Nature) के उल्लंघन की शक्ति उसमें नहीं है। 'ओ३म्' स्मरण का उपदेश ऐसा ही उपदेश है जिसे मनुष्य ग्रहण करे या न करे। ऐसा वही व्यक्ति कर पाता है जिसकी आत्मा अविद्यादि पंच क्लेशों से मुक्त होती है। दूसरा भाग यह है जब मनुष्य मृत्यु शैय्या पर पड़ा अन्तिम श्वास ले रहा होता है इस स्थिति में ही जीवन भर के अनुभवों और कार्यों के चित्र अन्तःपटल पर उभरा करते हैं धन, व्यापार, हिंसा, सेवा, परोपकार आदि सभी की स्मृतियां मन में घुमड़ती हैं। ये वे स्मृतियां हैं जिन्हें उसने जीवन के पहले भाग में कमाया था और जिन्हें स्मरण करता हुआ उसे संसार से कूच करना पड़ता है।

मनोवैज्ञानिक पक्ष:—स्वाध्याय शील व्यक्ति के लिए यह मन्त्र मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी उपयोगी है क्योंकि इससे मनुष्य यह समझने लगता है कि—

(१) यह शरीर भस्मान्त है। आत्मा उसी शरीर में पुनः कभी नहीं आती है अतः मृतशरीर को भस्म में बदल देने के उपरान्त श्राद्ध पिंड दान, मृत्यु भोज तथा तर्पण आदि की क्रियायें व्यर्थ है तथा समाज में ढोंग फैलाकर उसे कमजोर बनाने वाली है। इसके अतिरिक्त यह भी प्रमाणित हो जाता है कि अन्त्येष्टि का वैदिक कर्मकांड ही ठीक है शेष कृत्य जैसे दफनाना, जलप्रवाह आदि अवैज्ञानिक और हानिकर हैं। अन्त्येष्टि के प्रामाणिक निर्देश से भी हमें मनोवैज्ञानिक रूप से सन्तोष प्राप्त होता है।

(२) मनुष्य को यह भी ज्ञात हो जाता है कि अन्त समय में 'ओ३म्' नाम का स्मरण बड़ा सन्तोष और शक्ति प्रदान करता है उसके (प्रभु के) अस्तित्व और कर्मफल का नियंता होने की धारणा से भी मृत्यु शैय्या पर पड़े व्यक्ति को आगामी योनि की उत्तमता का आभास उसे सान्त्वना प्रदान करता है।

(३) मनुष्य को वेद के इस आदेश से यह भी ज्ञात हो जाता है कि मृत्यु के क्षणों में जीवन के शुभाशुभ कर्मों का स्मरण उसे सुखद और दुखद अनुभूतियां प्रदान करेगा अतः जीवन में ऐसे कार्य करने चाहिए जिनके स्मरण मात्र से जीवन के अन्तिम क्षणों में सुख, सन्तोष तथा निश्चिन्तता प्राप्त हो सके। मृत्यु समय की निश्चिन्तता और सुख व सन्तोष की भावना अगली योनि को सुनिश्चित और प्रभावित किया करती है। अत. अन्तिम क्षणों में 'क्रतोस्मर' के आधार पर किया गया स्मरण कहीं हमें निराशा के सागर में न डुबो दे इसका ध्यान स्वाध्यायशील व्यक्ति सदैव रखता है। इससे व्यक्ति के मान-

(शेष पृष्ठ १० पर)

आर्य जगत के समाचार

आशा रानी लखोटिया की षष्टि-पूर्ति पर श्रीमद्भागवत ज्ञान यज्ञ सुसम्पन्न

सुप्रसिद्ध आयकर विशेषज्ञ लेखक एवं समाजसेवी श्री रामनिवास लखोटिया की धर्मपत्नी श्रीमती आशारानी लखोटिया की षष्टि पूर्ति के अवसर पर उनके ग्रेटर कैलाश-२, नई दिल्ली निवास पर सप्ताह व्यापी श्रीमद्भागवत ज्ञान यज्ञ का समापन ८ जौलाई, ९३ को हुआ। सुविख्यात कथा वाचक पं० रामगोपाल जी गोड़ ने जिस सरस एवं सरल शैली मे प्रवचन प्रस्तुत किया उससे देश विदेश से पधारे धर्मप्रेमी श्रोताओ का मन मोह लिया। कथा समापन के पश्चात अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त सरोद वादक श्री अमजद अली खा ने श्रीमती आशारानी लखोटिया को जन्म दिवस पर शुभकामनाएं व्यक्त की एवं प्रसाद ग्रहण किया। सायंकाल को श्रीमती लखोटिया की स्वरचित राजस्थानी गीतों की पुस्तक "राजस्थानी गीत" का राष्ट्रपति भवन में श्रीमती विमला शर्मा (धर्मपत्नी राष्ट्रपति डा० शर्मा जी) ने विमोचन किया एवं उन्हें शाल भेंट कर शुभकामनाएं प्रदान की।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

शाहजहांपुर, आर्य समाज मीरानपुर कटरा का ५३ वां वार्षिकोत्सव दि० २१ से २३ जून १९९३ तक समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वान पं० धर्मवीर शास्त्री, श्री कृपालसिंह आर्य भजनोपदेशक, विजयपाल सिंह आर्य भजनोपदेशक, श्री कृष्णकुमार सक्सैना प्रधान आर्य जिला सभा, श्री बलबीर सिंह आर्य मन्त्री आर्य जिला सभा एव श्री राजेशकुमार आर्य उपमन्त्री आर्य जिला सभा ने वेदों के सन्देश को जनता तक पहुंचाया। मंच का संचालन श्री महेश चन्द्र आर्य मन्त्री ने किया तथा आगन्तुकों को श्री नवाब सिंह आर्य प्रधान आर्य समाज मीरानपुर कटरा ने धन्यवाद दिया। —मन्त्री

डा० रामकृष्ण आर्य दुर्घटनाग्रस्त

कोटा। आर्य लेखक परिषद के मन्त्री वेदप्रिय शास्त्री और कोषाध्यक्ष डा० रामकृष्ण आर्य द्वितीय आर्य लेखक सम्मेलन अल्मोड़ा में भाग लेने हेतु जाते समय गोल मार्केट, नई दिल्ली में उनके आटो रिक्शा और मारुती कार के आमने-सामने जबरदस्त भिड़न्त हो जाने से दुर्घटना ग्रस्त हो गये। जिसमें वेदप्रिय शास्त्री बाए हाथ मे चोट खाकर बाल-बाल बच गये और डा० रामकृष्ण आर्य के दाहिने हाथ की कोहनी के ऊपर की हड्डी टूटकर चार टुकड़ो में बदल गई। डा० आर्य अपनी यात्रा बीच में छोड़कर कोटा लौट आये और इलाज करा रहे हैं और वेदप्रिय शास्त्री ने अल्मोड़ा जाकर सम्मेलन को सफल बनाने मे योगदान दिया।

—धर्म बन्धु आर्य, विज्ञाननगर, कोटा (राज०)

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज नयाबांस दिल्ली का ७३ वां वार्षिकोत्सव १३ जून से २० जून ९३ तक समाज मन्दिर के प्रांगण में बड़े हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान आचार्य विशुद्धानन्द जी यज्ञ के ब्रह्मा रहे। प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार, श्री उत्तमचन्द जी शरर डा० वसन्त कुमार श्री श्री ज्ञानप्रकाश शर्मा, श्री गुलाबसिंह राघव आदि सभी की श्रोताओं ने भूरि-भूरि प्रशंसा की।

इस अवसर पर बाल सत्यार्थ प्रकाश प्रतियोगिता तथा महिला सम्मेलन का भी आयोजन किया गया।

—धर्मपाल आर्य, मन्त्री

शोक समाचार

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के वरिष्ठ व्यायाम शिक्षक श्री अनिलकुमार ग्राम मुकरबा (देव बन्द) जिला सहारनपुर का ५ जुलाई को असामयिक निधन हो गया। आप दिल्ली मे तिपहिया स्कूटर मे बैठ कर जा रहे थे कि एक ट्रक से टक्कर मारी। अनिलकुमार एवं चालक दोनो घायल हो गये। परन्तु अपनी परवाह न करके उस साहसी आर्य वीर ने चालक को सहारा देकर अस्पताल पहुंचाया और स्वयं भी मर्मघाती चोटो के कारण आहत होकर वहीं पर गिर पड़ा। ६ जुलाई को उनके गांव में वैदिक मन्त्रोच्चारण के साथ अन्त्येष्टि संस्कार किया गया जिसमें आर्य वीर दल के अधिकारी और सैकड़ों लोग उपस्थित थे। उनका विवाह गत फरवरी में ही हुआ था। वे अपने माता पिता के इकलौते ही पुत्र थे। इस दुःखद घड़ी में सार्वदेशिक आर्य वीर दल उनके शोक संतप्त परिवार के प्रति अपनी संवेदना प्रकट करता है। उनकी मृत्यु से आर्य वीर दलको अपूर्णीय क्षति हुई है। परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

—डा० देवव्रत आचार्य
प्रधान सञ्चालक

—सार्वदेशिक आर्य वीर दल के शिक्षक श्री अनिल कुमार जी निवासी मुकरबा जनपद सहारनपुर उत्तर प्रदेश का ५-७-९३ को सड़क दुर्घटना में आकस्मिक निधन हो गया है। श्री विश्वम्भर देव शास्त्री एवं मन्त्री श्री जनेश्वर प्रसाद द्वारा मन्त्रोच्चारण से वैदिक रीति से अन्तिम संस्कार प्रातः ९ बजे किया गया।

—जनेश्वर प्रसाद
आर्य वीर दल सहारनपुर

१—आर्य समाज मीरानपुर कटरा (शाहजहांपुर) के भूतपूर्व मन्त्री श्री सालिगराम जी आर्य की धर्मपत्नी श्रीमती शकुन्तलादेवी का अकस्मात देहान्त दिनांक २१-६-९३ के दोपहर २ बजे हो गया था जो अपने पीछे पति एवं पुत्रियां छोड़ गयी, उनकी आयु करीब ५० वर्ष की थी। तथा

२—इसी समाज की "परामर्शदातृ समिति" के सदस्य श्री सुधीर कुमार आर्य के लघु भ्राता श्री राकेश कुमार की "कालरा" होने के कारण २२ जून के प्रातः ५ बजे निधन हो गया। श्री राकेश कुमार जी के विवाह के २४-२५ दिन ही व्यतीत हुए थे।

शोक श्रद्धांजलि प्रस्ताव पारित कर दिवंगत आत्माओं की चिर शान्ति हेतु प्रार्थना तथा शोक संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति हार्दिक सम्वेदना प्रकट की गई।

—सत्यप्रकाश आर्य, प्रशासक

संस्कार चन्द्रिका के ग्राहकों से निवेदन

संस्कार चन्द्रिका सभी ग्राहकों को प्रकाशित होने पर डाक द्वारा भेजी जा चुकी हैं। आठ दस ग्राहको की पुस्तकों की वी. पी. वापस आ गई है। जिन ग्राहकों को पुस्तक अभी तक प्राप्त नही हुई है वे अपना पूर्ण पता सभा कार्यालय में अविलम्ब भेजें जिससे उन्हें पुस्तक भेजी जा सके।

आर्य समाज और विद्यालयों के अधिकारियो से निवेदन है कि अपने पुस्तकालयों के लिए उक्त पुस्तक शीघ्र मंगवाएं। पुस्तक का मूल्य १००) रु० तथा डाक व्यय पृथक।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सार्वदेशिक आर्य वीर दल का राष्ट्रीय शिविर सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य वीर दल द्वारा आयोजित दिनांक ६ से २० जून १९९३ तक राष्ट्रीय शिविर गुरुकुल झज्जर में हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ इस शिविर में देश के विभिन्न प्रान्तों से ४०० आर्य वीरों एवं शिक्षकों ने भाग लिया। इस शिविर में प्रधान संचालक डा० देवव्रत आचार्य जी के नेतृत्व में विभिन्न विषयों का प्रशिक्षण कुशल शिक्षकों द्वारा दिया गया। हरयाणा होम गार्ड के सहयोग से सभी को राईफल ट्रेनिंग भी दी गयीं। दीक्षान्त समारोह स्वामी ओमानन्द जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर २५ व्यायाम शिक्षक एवं ४५ उपव्यायाम शिक्षक तथा १०० शाखा नायक उत्तीर्ण घोषित किये गये। इस वर्ष २ शास्त्राचार्य, १ योगाचार्य, व्यायामाचार्य, नियुध्य (कराटे) में २ ग्रीन बैल्ट, ६ यलो बेल्ट के प्रमाण पत्र भी दिये गये।

विशेष—इस वर्ष देश के सभी प्रान्तों में लगभग ३५ शिविर सम्पन्न हुए जिनमें लगभग ५००० आर्य वीरों ने प्रशिक्षण प्राप्त कर वैदिक संस्कृति से ओतप्रोत होकर देश में कार्य करने का संकल्प लिया।

—हरीसिंह आर्य कार्यालय मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य वीर दल

सार्वदेशिक आर्य वीर दल का कार्यकर्त्ता शिविर सम्पन्न

दिनाक २२ जून से ३ जुलाई तक उदगीथ साधना स्थली राजगढ़ सिरमौर (हिमाचल प्रदेश) में सार्वदेशिक आर्य वीर दल का कार्यकर्त्ता शिविर डा० देवव्रत आचार्य जी की अध्यक्षता मे लगाया गया जिसमें ५ प्रान्तों के अधिकारियों, शिक्षकों एवं कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया। शिविर में योग साधना, आसन-प्राणायाम, योगदर्शन का स्वाध्याय सन्ध्या यज्ञ प्रवचन नियुध्यम् तथा सैनिक शिक्षा का अभ्यास किया गया। आगामी वर्ष के लिए निम्न कार्यक्रमों पर विचार हुआ।

१—१५ जुलाई से १५ अगस्त तक सभी आर्य वीर दल की ईकाईयां एवं अधिकारी सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र में फलदार एवं छायादार वृक्षो को लगाये तथा उनकी सुरक्षा भी करें?

२—आदर्श वाक्य ग्रामों तथा नगरों की दीवारो पर लिखे जाएं। और उसके नीचे आर्य वीर दल लिखा जाये?

३—सभी प्रान्तीय सञ्चालकों एवं शिक्षकों ने आर्य वीर दल की शाखाओं के विस्तार करने का संकल्प किया?

४—विजय दशमी के उपलक्ष्य में वीर पर्व तथा क्रीड़ा प्रतियोगिता एव दीपावली के अवसर पर भाषण एवं निबन्ध प्रतियोगिताओ का आयोजन किया जाये।

५—प्रत्येक प्रान्त में सेवा सीमित गठित करने का निश्चय किया गया।

—हरीसिंह आर्य कार्यालय मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य वीर दल

मरणशील मनुष्य

(पृष्ठ ७ का शेष)

साथ समाज व राष्ट्र की व्यावहारिक क्रियाओं में भी पवित्रता आ जाती है। इस प्रकार यह मन्त्र मानवमात्र का कल्याण करने वाला है।

(४) क्लिबे स्मर का तात्पर्य निबलता दूर करने की प्रभु से प्रार्थना करना भी है तथा स्वयं की निबलता को स्मरण करके यह संकल्प लेना भी है जिसकी पुनरावृत्ति अगले जीवनमें न करने की भावना लेकर वह मृत्यु को प्राप्त होता है इससे सुधारात्मक दिशा प्राप्त हुआ करती है जो इस मन्त्रमें निर्दिष्ट है।

(५) कृतं स्मर में किये गये कर्मो के स्मरण का निर्देश है। कृत कर्म दो प्रकार के होते हैं (१) शुभ (२) अशुभ। इनका फल भी अवश्य भोगना पड़ता है जैसा कि कहा गया है अवश्य मेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्। यह भावना जब मनुष्य में उत्पन्न हो जाती है तब वह अकरणीय कर्मों से विरत होकर शुभ कर्मों की ओर प्रवृत्त हुआ करता है जिससे वह अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में जब कृतं स्मर के अनुसार किए गए कर्मों का स्मरण करता है और शुभ कर्मों का स्मरण करके अत्यन्त सन्तोष का अनुभव करता हुआ अपने प्राणों को त्याग देता है। तब उसका यह स्मरण और तज्जन्य सन्तोष उसकी आगामी योनि पर अनुकूल प्रभाव डालता है। इस प्रकार कृतं स्मर का सन्देश भी व्यक्ति को लाभान्वित किया करता है।

प्रकारान्तर से यह मन्त्र विश्व मानवों को यह सन्देश दे रहा है कि यदि व्यक्ति तीन वेदादेशों अर्थात् जीवन मूल्यों को स्वीकार करके उन्हें अपने जीवन का अंग बना लेता है तो उसे कभी न तो मृत्यु का भय होता है और न वह कभी इस लोक और परलोकमें दुखी होता है। ये तीन मूल्य इस प्रकार है —

(१) ईश्वर सर्वत्र मौजूद है उसकी भक्ति सदैव मनुष्य का कल्याण करती है अतः प्रतिक्षण प्रभु की सर्वत्र उपस्थिति मानकर ही कार्य करने चाहिए। ऐसा व्यक्ति कभी भी पाप कर्म नहीं करता है।

(२) शुभाशुभ कार्यों का फल अवश्य भोगना पड़ता है अतः सदैव सत्कर्म करने की दिशा में प्रयत्नशील रहना चाहिए। ये ही सत्कर्म मृत्यु के समय सन्तोष प्रदान करते हैं।

(३) मनुष्य को अपनी निबलताओं को दूर करने के लिये सचेष्ट रहना चाहिये। इन्हें दूर तभी किया जा सकता है जब हम आत्मा को साक्षी मानकर उनको स्मरण करते रहें और नीर क्षीर विवेक न्याय से उन्हें दूर करने के यम नियमादि का पालन करते रहें।

वेद के इस कल्याणकारी सन्देश को यदि मानव स्वीकार करले और उसे अपने जीवन का अंग बना ले तो सर्वत्र सुख शान्ति और आनन्द का साम्राज्य छा जाय।

—प्राध्यापिका जियालाल ट्रेनिंग कालेज अजमेर

वैदिक प्रशिक्षण शिविर

गत दिनांक २२ ६ ६३ से ३० ६ ६३ तक आर्य समाज सीतामढ़ी के द्वारा स्थानीय आर्य समाज कार्यालय में आर्य महोपदेशक श्री रामचन्द्र आशोपुरी द्वारा विधिवत प्रशिक्षण शिविर का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

इस शिविर में लगभग २५ शिक्षित नवयुवकों ने वैदिक रीति से सारे संस्कारों को कराने का प्रशिक्षण लिया। अन्त में आर्य समाज की ओर से उपरोक्त प्रशिक्षित व्यक्तियों को प्रशस्ति पत्र देने का निर्णय किया गया।

—रामबहादुर अकेला

रजिस्टर्ड नं० डी० एल० ११०७५/९३ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१३८-१९९३) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (G) ९३
R N. 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U (G) 93 Post in N.D.P.S.O.on 29-30-7-1993

मूल सुधार

सार्वदेशिक साप्ताहिक के २५-७-९३ के अंक में पृष्ठ २ पर "ईसाई और मुसलमान नपुंसक हैं जिन्दगी की रमक" शीर्षक छपा था। इसको पाठक "नपुंसक में जिन्दगी की रमक" इस प्रकार पढ़ें। —सम्पादक

श्रावणी पर्व की सार्थकता

(पृष्ठ ३ का शेष)

गुरुओं का गुरू वह परमपिता परमात्मा एक ही उपास्य देव है और उसी की उपासना करनी योग्य है। उस एक की उपासना के स्थान पर अनेकों की उपासना करने का कुपरिणाम भी हमने देख लिया है अतः अब पुनः सचेत होकर उस एक परमात्मा की शरण में जाने की आवश्यकता है जहां जाकर व्यक्ति इतना पावन और सत्यवादी हो जाएगा कि यह सम्प्रदायवाद की कुचालें स्वयं ही समाप्त हो जायेंगी। हम सब मानव हैं और वह परमात्मा ही हम सबका उपास्य देव है इस बात को अपने अपने हृदयों में बिठाने की आज सबसे अधिक आवश्यकता है। यही राष्ट्र समाज और व्यक्तियों की उन्नति का मूलमन्त्र है। हम सब एक ही जाति अर्थात मनुष्य जाति से सम्बन्धित हैं तथा वह परमात्मा ही हम सबका पिता है।

यदि वास्तव में एकता का सृजन करना है तो प्रत्येक मानव को वैदिक विचारधारा की शरण में आना होगा। वहीं पर मानवता और समूचे विश्व को एक सूत्र में बांधने और भ्रातृभाव फैलाने के विलक्षण सूत्र हमें मिलेंगे। तनिक इस वेद मन्त्र का चिन्तन और मनन करें—

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथापूर्वे संजानाना उपासते ॥ ऋ० १०।१९१।२

अर्थात हम सभी मिलकर चलें, मिलकर बोलें, हमारे मन एक हों और हमारे पूर्वज जिस प्रकार देवत्व से परिपूर्ण होकर अपने अपने अधिकार क्षेत्र में रहकर जीते थे। हम भी उन्हीं का अनुसरण करें।

ऊपर इस मन्त्र का भाव थोड़ा सा प्रस्तुत किया गया है। वास्तव में इस मन्त्र की महानता को हम सभी अपने-अपने मनो की गहराइयों में बिठालें तो आज का वातावरण स्वर्ग से भी सुन्दर बन सकता है। यह मन्त्र परिवार, समाज, राष्ट्र और समूचे विश्व पर भली प्रकार से घटित होता है। यदि हम मिलकर चलें, मिल बैठकर विचार करें और एक समान वाणी बोलने वाले हों अर्थात हमारी कथनी और करनी एक समान और एक जैसी हो तभी मन भी एक समान हो सकते है। जब तक न तो हमारे कदम मिले, न हमारी आवाज और विचार मिलें तब तक एकता की स्थापना मात्र दिवा स्वप्न ही है। अनेकता मे एकता का नारा जो लोग लगाते हैं उनसे एकता स्थापित करने की आशा करना अपने आप को धोखे में रखना ही है। हम तो एकता में ही एकता की कल्पना करने वालो में हैं। इस वेदमन्त्र को आधार मानकर हमारी मान्यताएं इस प्रकार की हो सकती हैं कि स्वयं अपना, अपने परिवार का, समाज का तथा अपने राष्ट्र और समूचे विश्व का कल्याण कर सकते है।

कुछ वेद मन्त्रो के माध्यम से हमने विभिन्न विचारो को उद्घाटित करने का प्रयास किया है। मुख्य लक्ष्य यही है कि आज के इस विध्वंसकारी वातावरण का कोई न कोई हल निकाला जाना चाहिए। इसका हल हमे बमों और बन्दूकों की छाया मे नही मिलेगा बल्कि परमात्मा के दिए हुए वेद ज्ञान को अपने समक्ष रखकर तद्वत आचरण करने से ही हम इसका समाधान निकाल सकते हैं। हमें परमात्मा के काव्य को देखकर अपने लिए आत्मिक उन्नति का आधार खोजना होगा। जब तक हम आत्मा के स्तर पर प्रत्येक समस्या को नहीं तोलेंगे तब तक हमारे साथ अपने अपने स्वार्थ जुड़े रहेंगे। स्वार्थों से ऊपर उठने के लिए वेद में बहुत ही सुन्दर सूत्र दिए गए हैं। उन सूत्रो को गहराई से हृदय मे उतार कर मनन और चिन्तन करने की आवश्यकता है। श्रावणी पर्व या वेद सप्ताह की सार्थकता इसी मे है कि हम इस विघटित और ग्रस्त होती हुई मानवता को कुछ ऐसे नए आयाम दे सकें जो इसके लिए एक ऐसा मार्ग प्रशस्त कर सके जो मानवीय विकास की उच्चतम अवस्था है।

१६०, एल-३ सुन्दरनगर, (हि. प्र.)-१७४४०२

१०१५०—पुस्तकालयाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी
विश्वविद्यालय हरिद्वार, जि. हरिद्वार (उ.प्र.)

दिल्ली के न्यायालयों में हिन्दी

(पृष्ठ २ का शेष)

पास "हिन्दी संस्करण इसलिए नहीं है क्योंकि यहां प्रयोग न होने से उनकी मांग नहीं है। जब अनुमति मिल जावेगी तो हिन्दी में विधि की पुस्तकें यहां दिल्ली बाजार में नजर आने लगेंगी।)

यहां यह भी बताना उचित है कि उ० प्र० राजस्थान, मध्य प्रदेश व बिहार उच्च न्यायालयो ने हिन्दी के प्रयोग की अनुमति लगभग २० वर्ष से दी हुई है।

न्यायाधीशों व वकीलों का हिन्दी में प्रवीण न होना

इस सम्बन्ध में श्री महावीरसिंह जी का कहना है कि प्रवीणता प्रयोग से आती है। जब प्रयोग करने की ही अनुमति नहीं हैं तब वे कैसे प्रवीण हो सकते हैं? कोई अन्य संस्थान भी नहीं है जहां इन्हें हिन्दी के प्रयोग करने का प्रशिक्षण व अभ्यास कराया जा सके। जब प्रारम्भ से अंग्रेजी भाषा में प्रयोग का अभ्यास है तो जब भी हिन्दी का प्रयोग प्रारम्भ करेंगे, उन्हें कठिनाई होगी। इसलिए कभी तो वह समय आना ही है। यदि स्वतन्त्रता प्राप्ति के ४६ वर्ष पश्चात भी वह समय नहीं आया है तो फिर आने की कोई संभावना नहीं है। वैसे कठिनाई थोड़े समय के लिए है। अधिकतर वकीलों व न्यायाधीशो की मातृ भाषा हिन्दी है। अतः बहुत जल्द से जल्द वह इसके प्रयोग में निपुण हो सकते हैं।

इस सम्बन्ध मे इग्लैण्ड का उदाहरण भी प्रासंगिक होगा। वहां न्यायालय व विधि साहित्य की भाषा फ्रेंच व लेटिन थी। वकील व न्यायाधीश, जब भी यह प्रश्न उठता था, हमेशा इसका विरोध करते थे। सबसे पहले सन १३६२ मे वाद में पत्रो आदि के लिए "अंग्रेजी भाषा" के प्रयोग के लिए अधिनियम बना। परन्तु वह कानून भी फ्रेंच में ही था। सन १४८३ से कानून अंग्रेजी भाषा में बनना प्रारम्भ हुआ। सन १६५० में सब कानूनो का अंग्रेजी अनुवाद करने का आदेश हुआ व निर्णयो के लिए भी प्रावधान किया गया। परन्तु वह क्रामवेल का जमाना था जल्दी ही समाप्त हो गया। लेकिन १७३१ में फिर कानून बनाकर अंग्रेजी अनिवार्य की गई। परन्तु इसका घोर विरोध हुआ था, परन्तु फिर अंग्रेजी प्रचलित हो गई।

इन तथ्यो के साथ मुख्य न्यायाधीश महोदय से प्रार्थना की गई है कि वे उच्च न्यायालय मे हिन्दी के प्रयोग की अपनी सहमति उपराज्यपाल जी को भेज दें ताकि संविधान के अनुच्छेद ३४८ (२) व राजभाषा अधिनियम की धारा ७ के अन्तर्गत अधिसूचना जारी की जा सके। इससे हिन्दी के प्रयोग का अवसर मिलेगा परन्तु अनिवार्य नहीं होगी। जो न चाहे, वह प्रयोग न करे।

इसी सम्बन्ध में एक पत्र श्री सिंह ने दिल्ली के उपराज्यपाल श्री पी. के. दवे, को भी लिखा है जिसमे कहा गया है कि भारतीय संविधान के अनुच्छेद ३४८ (२) के अन्तर्गत उपराज्यपाल राष्ट्रपति की सहमति से राज्य के न्यायालयों में हिन्दी प्रयोग की अनुमति दे सकते हैं। बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और राजस्थान के राज्यपाल पहले ही इस आशय की अधिसूचना लगभग २० वर्ष पूर्व जारी कर चुके हैं और इन राज्यों के न्यायालयों में हिन्दी का कार्य अच्छे स्तर पर चल रहा है।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

महर्षि दयानन्द उवाच

- जो-जो बात सबके सामने माननीय है, उसको मानना अर्थात् जैसे सबके सामने सच बोलना अच्छा और मिथ्या बोलना बुराहै,ऐसे सिद्धांतो को स्वीकार करता हूं और जो मत-मतान्तर के परस्पर विरुद्ध झगड़े हैं उनको मैं पसन्द नहीं करता, क्योंकि इन्हीं मत वालों ने अपने मतों का प्रचार कर मनुष्यों को फंसा के परस्पर शत्रु बना दिया है।
- जो मूर्ख लोग अपनी बुराई को नही छोड़ते, तो बुद्धिमान् धर्मात्मा लोग अपनी धर्मात्मता को क्यों छोड़कर दुःख सागर में पड़े।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष । ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३१ अंक २६] दयानन्दाब्द १६९ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९४ भाद्रपद कृ० ८ सं० २०५० ८ अगस्त १९९३

कौल ने नए वायुसेनाध्यक्ष का पद संभाला

'हम पाक में कहीं भी मार करने में सक्षम'

नई दिल्ली ३१ जुलाई। एयर चीफ मार्शल स्वरूप कृष्ण कौल ने आज नए वायुसेनाध्यक्ष का पदभार सभालने के बाद भारतीय वायुसेना की सामरिक तैयारी की जानकारी ली। उन्होंने कहा कि भारतीय वायुसेना बिना किसी सन्देह के पाक में कहीं भी लक्ष्य साध सकती है।

उन्होंने यह जानकारी कल पुर्जो की आपूर्ति, अत्याधुनिक लड़ाकू प्रशिक्षण विमान एडवांस्ड जेट ट्रेनर्स (एजेटो) की प्राप्ति तथा मिग २१ को अत्याधुनिक बनाए रखने मे आ रही अड़चनो को ध्यान मे रखते हुए ली।

पत्रकारों के एक दल से वार्ता करते हुए ५८ वर्षीय एयरचीफ मार्शल कौल ने कहा कि जब तक हमें कलपुर्जे नहीं मिलते तब तक हम सामरिक तैयारी को बरकरार रखने में सक्षम नहीं हो सकते।

वार्ता के अनुसार हालांकि नये वायु सेनाध्यक्ष ने आज यह उम्मीद भी जताई कि उन्हें वायुसेना के अत्याधुनिक लड़ाकू प्रशिक्षण विमान अपने कार्यकाल के दौरान मिल जाने की उम्मीद है।

'एयर चीफ मार्शल कौल ने पदभार ग्रहण करने के बाद संवाददाताओं से अनोपचारिक बातचीत मे कहा कि अत्याधुनिक लड़ाकू प्रशिक्षण विमान की आवश्यकता को सरकार स्वीकार कर चुकी है और इस विमान को हासिल करने के बारे में अन्तिम निर्णय की बात काफी आगे के दौर में पहुंच चुकी हैं।

उन्होने कहा कि पिछले दशक के दौरान चार वायुसेनाध्यक्ष सरकार को वायुसेना की जरूरतों के बारे में बता चुके है और सभी की यह राय रही है कि एजेटी की जरूरत है।

उन्होने कहा कि संसाधनों की कमी के बावजूद संचालन क्षमता को बनाए रखने के लिए कलपुर्जों की आपूर्ति, ए.जे.टो हासिल करना तथा मिग २१ का आधुनिकीकरण सुनिश्चित करना उनकी प्राथमिकता होगी। वायुसेनाध्यक्ष ने कहा कि कलपुर्जों की आपूर्ति सुनिश्चित करना आवश्यक हो गया है क्योंकि सोवियत संघ के विघटन के बाद सामान्य मे बाधा पडी है और उसमे कमी आई है।

यह पूछे जाने पर कि क्या कल पुर्जों की आपूर्ति के बारे में रूस कुछ भिन्न रुख अपना रहा है, उन्होंने कहा 'नहीं-नहीं'। उन्होने कहा कि उन्हें ऐसा आभास देने वाली रिपोर्ट नहीं मिली है। उन्हें ऐसा नहीं लगता कि रूस से कल पुर्जे हासिल करने में कोई बहुत गम्भीर कठिनाई आएगी।

उन्होने विश्वास व्यक्त किया कि भारत तथा रूस के बीच इस सिलसिले में चल रही बातचीत के जल्दी ही ठोस परिणाम निकलेंगे। लेकिन एयर चीफ मार्शल ने स्वीकार किया कि कल पुर्जों की आपूर्ति दर पहले जैसी नहीं होगी।

उन्होने आज सुबह वायु भवन मे एक समारोह में वायुसेनाध्यक्ष का पद ग्रहण किया।

सोचते अंग्रेजी में, वोट मांगते हिन्दी में

जयपुर, १ अगस्त। भारतीय जनता पार्टी की राष्ट्रीय कार्यसमिति की दो दिवसीय बैठक आज यहां सम्पन्न हो गई। भारतीय संस्कृति व भाषा की रक्षक होने की उद्घोषक भाजपा की इस कार्य समिति के तीन प्रस्तावों मे से दोनों महत्वपूर्ण प्रस्ताव राजनीतिक प्रस्ताव तथा संविधान में ८०वें संशोधन विधेयक से सम्बन्धित प्रस्ताव अंग्रेजी भाषा में ही तैयार किये गए, अंग्रेजी मे ही पढ़े गये और अंग्रेजी में वितरित किए गए। केवल एक प्रस्ताव जिसका संबन्ध सूखे व बाढ़ से था, वह हिन्दी में तैयार किया गया था।

अंग्रेजी की मानसिक गुलामी का बोलबाला यहां तक था कि जो केन्द्रीय कार्यकारिणी बनाई गई या जो अनुशासन नियन्त्रण समिति बनाई गई उसके नामों की घोषणाएं भी हिन्दी में नहीं की गई।

पत्रकार सम्मेलन में राजनीतिक प्रस्ताव हिन्दी मे उपलब्ध नहीं था। इस पर पत्रकारों ने टिप्पणी की "भाजपा सोचती अंग्रेजी में है, बात रामजी व धर्म की करती है और वोट हिन्दी में मांगती है।"

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के स्वतन्त्रता सेनानियों का भव्य स्वागत

दिल्ली २ अगस्त। दिल्ली की प्रसिद्ध आर्य समाज दीवान हाल में हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के स्वतन्त्रता सेनानियों का स्वागत समारोह सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर बड़ी संख्या में आर्यसमाज के लोग और सैंकड़ों स्वतन्त्रता सेनानी उपस्थित थे। सभी सत्याग्रहियों का आर्य समाज के प्रधान श्री मूलचन्द गुप्ता और मन्त्री श्री

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक : डा०सच्चिदानन्द शास्त्री

उग्रवादियों के ट्रेनिंग कैंप अब जम्मू सीमा की ओर

जम्मू २३ जुलाई। पाकिस्तान ने कश्मीरी उग्रवादियो के लिए प्रशिक्षण शिविर अब जम्मू सीमा की तरफ कर दिये है। उसने यह कदम कुपवाड़ा सैक्टर से घुसपैठिए भेजने की करीब १२ कोशिशो के नाकाम होने के बाद उठाया है।

सरकारी सूत्रो के मुताबिक पाकिस्तान ने अपनी सीमा स २५ किलोमीटर भीतर छपराल शकरगढ नरोवाल और सियालकोट मे हथियार प्रशिक्षण शिविर स्थापित किये हैं। पहले ये शिविर पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर मे थे। लेकिन भारतीय सैनिको की कड़ी निगरानी के कारण उग्रवादियो को कश्मीर घाटी मे भेजना पाकिस्तान के लिये मुश्किल हो गया।

हाल की घटनाओ मे कश्मीर घाटी मे कुछ विदेशियो सहित करीब ७५ घुसपैठिए सुरक्षा बलो और सेना के हाथो मारे गये है। एक अधिकारी ने कहा कि हमने अन्तर्राष्ट्रीय सीमा और नियन्त्रण रेखा से उग्रवादियो का आना जाना बहुत मुश्किल कर दिया। जिससे उनके भर्ती अभियान पर बुरा असर पड़ा है। सूत्रो के मुताबिक खुफिया रपटो से पता चलता है कि पाकिस्तान की इटर सर्विस इटेलिजेंस उग्रवादियो के गिरते मनोबल को फिर से कायम करने के लिये नये सिरे से कोशिश कर रही है। भारतीय सुरक्षा बलो की कारंवाई से भारी नुकसान उठा चुके उग्रवादियो का मनोबल काफी गिर चुका है।

रपटो से यह सकेत भी मिलते हैं कि पाकिस्तानी सैनिक अधिकारी भाड़े के विदेशी सैनिकों के साथ मिलकर कश्मीर घाटी मे घुसपैठ की कोशिश कर रहे हैं। सूत्रो के मुताबिक ऐसी रपटें भी हैं कि कुछ घुस आए भाड़े के सैनिक अब कश्मीर घाटी मे सुरक्षा बलो के खिलाफ उग्रवादी अभियानो मे सीधे तालमेल बिठा रहे हैं।

इसका एक महत्वपूर्ण सकेत हाल मे उग्रवादियो की रणनीति मे आया बदलाव है। सुरग बिछाना और सेना के वाहनों को विस्फोट से उड़ाने की घटनाओ से पता चलता है कि यह काम सिफ कश्मीरी उग्रवादियो का नही है। सूत्रो का कहना है। कि कुछ विदेशी एजेंसियो ने घाटी म घुसपैठ कर ली है और वे अपनी कमान मे ये अभियान चला रहे है।

सूत्रो के अनुसार पाक अधिकृत कश्मीर और पाकिस्तान मे अभी भी उग्रवादियो के लिए करीब सो प्रशिक्षण केन्द्र चल रहे हैं जिनम से कुछ पाक अफगान सीमा पर हैं।

रपट के अनुसार इन शिविरो मे प्रशिक्षण के तरीको मे भारी परिवतन किये गए हैं। विमानभेदी तोपो सहित कई अत्याधुनिक हथियारो का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। यह जानकारी भी मिली है कि शिविरो म पर्वतारोहण चट्टानो पर चढने और सीमा पार करने का प्रशिक्षण भी इन शिविरो मे दिया जा रहा है।

चारों वेदों का पारायण

वेद सप्ताह के उपलक्ष्य मे चारो वेदो का पारायण १८ से २९ अगस्त ९३ तक ८ श्रीराम रोड सिविल लाइन्स दिल्ली म समारोह पूवक सम्पन्न होगा। स्वामी जीवनानन्द जी तथा श्री लखपति जी शास्त्री की अध्यक्षता मे होने वाले इस विशाल यज्ञ के अवसर पर अनेको विद्वानो तथा विदुषी महिलाओ के भजन व उपदेश साय ३ से ५ बजे तक होगे। २९ अगस्त को पूर्णाहुति के अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती भी पधारेंगे। अधिक से अधिक सख्या में पहुचकर धर्मलाभ उठायें। पूर्णाहुति के बाद ऋषिलगर का भी आयोजन किया गया है।

पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज नया कविनगर को एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है जो सभी सस्कार आदि करा सके। आवास बिजली, पानी नि शुल्क, दक्षिणा योग्यतानुसार।

—दीवानचन्द्र अरोड़ा (मन्त्री)
के० सी०—८३ कविनगर, गाजियाबाद (उ० प्र०)

५५ वां शहीद परिवार फंड उत्सव सम्पन्न
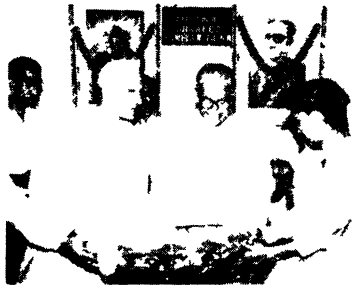
आतंकवाद से प्रभावित ८० परिवारो को आठ लाख रुपए वितरित किए गए

दिनांक २५ जोलाई १९९३ को जालन्धर मे "५५ वें शहीद परिवार फड उत्सव पर ८ लाख रुपए आतकवाद से प्रभावित ८० परिवारो को वितरित किए गए। उत्सव की अध्यक्षता पजाब के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री कामरेड रामकिशन ने की। राजस्थान के राज्यपाल, महामहिम बलिराम भगत इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे।

चित्र मे श्री बलिराम भगत एक विधवा को 'यूनियन ट्रस्ट आफ इण्डिया का बाड प्रदान कर रहे हैं तथा श्री रामकिशन अन्य दैनिक उपयोग की वस्तुए दे रहे हैं।

स्वतन्त्रता सेनानियो का भव्य स्वागत

(पृष्ठ १ का शेष)

सूर्यदेव जो द्वारा फूल मालाओ मे स्वागत करते हुये उन्हे एक-एक शाल भट की गई।

स अवसर पर आर्य समाज के अमर शहीदो को भावभीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई। हैदराबाद सत्याग्रह आन्दोलन की ५४वी वर्ष गाठ क अवमर पर स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने कहा कि उस समय हैदराबाद निजाम के द्वारा हिन्दुओ के ऊपर जो अत्याचार और धार्मिक पाबदिया लगायो गई थी, राष्ट्र के तत्कालीन नेता म० गान्धी और जवाहर लाल नेहरू ने भी इन अत्याचारो के विरुद्ध बोलने का साहस नही किया था। अन्त मे आर्य समाज ने निजाम के विरुद्ध सत्याग्रह की घोषणा की जिसमे अविभाजित भारत के कोने-कोने से लगभग २८ हजार लोगो ने सत्याग्रह मे भाग लिया। हजारो लोगो को जेलो मे भयकर यातनायें भी सहनी पडी और कुछ लोगो को धर्म रक्षा के लिये अपने प्राण भी न्योछावर करने पडे। आर्य समाज के इस आन्दोलन ने राष्ट्र को एक नयी जागृति और चेतना दी। महात्मा गान्धी जो पहले आर्य सत्याग्रह के पक्ष मे नही थे, बाद मे उन्होने भी सत्याग्रह की सफलता पर कहा था कि "मैंने ऐसा सत्याग्रह कभी नहीं किया जो आर्य समाज ने कर दिखाया।"

स्वामी जी ने अपनी ओर से देश विदेश मे रह रहे आर्य सत्याग्रहियो को अपनी शुभकामनाय अर्पित की।

समारोह के अन्त मे प० ब्रह्मदत्त स्नातक ने उपस्थित सभी सत्याग्रहियो की ओर से स्वामी जी और आर्य समाज दीवान हाल के प्रति आभार प्रकट किया।

योगिराज श्रीकृष्ण विषयक मान्यता

--धर्मवीर शास्त्री--

कुछ लोग ऐसा सोचते हैं कि आर्य समाज न तो श्रीकृष्ण को मानता है। और न भगवान रामचन्द्र जी महाराज को मानता है। वे एक भ्रान्त धारणा के शिकार हैं।

यदि आय समाज श्री रामच द्र जी महाराज और श्री कृष्णचन्द्र जी महाराज को न मानता तो रामनवमी तथा श्रीकृष्णजन्माष्टमी जैसे पर्वों को न मानता। परन्तु हम सभी लोग जानते है कि आर्य समाज मे ये दोनो ही पर्व धूमधाम से मनाये जाते हैं। इतनी बात अवश्य है कि आय समाज श्रीकृष्ण जी तथा श्री रामचन्द्र जी महाराज को सृष्टि का कर्ता धर्ता अर्थात ईश्वर न मानकर महान पुरुष के रूप म स्वीकार करता है। आय समाज के सिद्धान्तो के अनुसार अवतारवाद वेद प्रतिपादित न होकर पौराणिक कल्पना है और जो वेद विरुद्ध बात है आय समाज उसे स्वीकार नही करता। दूसर शब्दो मे अगर हम कहे तो यो कह सकते हैं कि आर्य समाज इन महापुरुषो के चित्र की नही बल्कि चरित्र की पूजा करना बतलाता है। उन च रत्र – जिनके होने से वे महापुरुष कहलाय। उन्हे उत्तम गुणो को अपने अ दर धारण करन की बात कहता है। अगर उनम चरित्र की कमी होता तो वे आज ससार म महापुरुष कभो न माने जा— अत उपरोक्त शका निर्मूल हो जाती है।

श्रीकृष्णचन्द्र जी महाराज के बारे मे आय समाज की क्या मान्यता है इस सम्बन्ध मे विचार करने से पूर्व आज किस रूप मे श्रीकृष्ण जी को माना जा रहा है, इस पर हम सक्षेप मे विचार करते हैं। आज श्रीकृष्ण जी का सच्चा स्वरूप ही बिगाड़कर रख दिया गया है। इसका कारण है। पुराणो का धार्मिक दृष्टि से पठन पाठन कथा आदि। पुराणो के आधार पर आज भी श्रीकृष्ण जी को भगवान माना जा रहा है। उनकी बालकपन की लीलाए बड़े विचित्र रूप से पेश की जाती हैं और श्रीकृष्ण जी की युवावस्था ऐसे ढग से प्रस्तुत की जाती है कि उनकी कथाओ को कोई भला आदमी सुनने तथा कहने म शर्म महसूस करता है। इतने चारित्रिक दोष श्रीकृष्ण जी महाराज पर लगाए गए हैं कि कदाचित ही किसी अन्य पर लगाए गए हो। श्रीकृष्ण जी को चोरजार-शिखामणि चोरो और जारो का शिरोमणी तक कह दिया जाता है कि वे माखनचोर थे। हम पूछते हैं कि जो श्रीकृष्ण जी नन्दजी के पास थे जिनके पास कई हजार गौए थी जिनको श्रीकृष्ण जी चराकर लाते थे, भरपेट दूध दही मिलता था फिर माखन चोर कैसे हो गय आज कहा जाता है कि श्रीकृष्ण की ३६० पटरानिया थी। आप सोचें कि यह कैसे सम्भव है? इतना तो पटरानिया थी इनम निचले स्तर का पता नही कितनी होगी। जरा सोचें भगवत पुराण म तो श्रीकृष्ण जी का चा रत्रिक दोष इतना लगाया गया है कि एक गया गुजरा भी इस प्रकार का नही हो सकता जैसा श्रीकृष्ण जी को पुराणकार ने बनाकर रख दिया। कुब्जा दासी से सम गम पराई स्त्रियो के साथ हसी मजाक तथा उनसे रमण गो पयो के साथ समागम अपनी पत्नी से प्यार न कर राधा से विशेष प्यार करना इत्या द कितनी गलत बातें श्रीकृष्ण जी के बारे मे कही जाती हैं। जब हम उन तसवीरो को देखते हैं जिनमे गोपिया यमुना मे नगी नहा रही हैं और श्रीकृष्ण जी उनके वस्त्र उठा कर वृक्ष पर चढ जाते हैं। तो तसवीरो को देखकर एक ऐसे दुश्चारित्र व्यक्ति का रूप हमारे सामने आता है जिसे सजा मिलनी चा हए। भला श्रीकृष्ण के इस रूप को जो सर्वथा इतिहास विरुद्ध है उसे फिर ईश्वर मानना तो ऐसे है जैसे हम किसी गुण्डे को अपना भगवान मान बैठ हा। ऐसे श्रीकृष्ण के चरित्र का हमारी भावी पीढ़ी पर तथा आधुानक पीढ़ी पर कितना गलत असर पड़ रहा है। कभी हमने सोचा भी है? आज हमारे घरो मे लड़किया अपने मा बाप के सामने ऐसे-ऐसे गन्दे गीत गाती हैं जिन्हें कोई समझदार व्यक्ति तो अच्छा समझता नही। सिर्फ गीत मे श्रीकृष्ण का नाम जोड़ा हुआ है इसलिए माता-पिता भी कुछ नही बोलते। गीतो के भाव होते हैं कि हे श्याम! अन्धेरे मे कुए के पास चले आना। रात को मैं उस समय तुम्हें जरूर मिलूगी। अब बताओ कि गोपियो की श्रीकृष्ण के प्रति गन्दी भावनायें है वैसे ही ये महिलायें गीत गा रही है। कोई सभ्य समाज इसकी इजाजत नहीं दे सकता। अब आप देखें कि आर्य समाज श्रीकृष्ण को किस रूप मे मानता है आर्यसमाज पुराणो मे प्रतिपादित श्रीकृष्ण जी के घिनौने स्वरूप को पसन्द नही करता। आर्य समाज तो महाभारत के उस इतिहास प्रसिद्ध श्रीकृष्ण को मानता है जिसने कस का बड़ी वीरता से वधकर जनता को दु खो से बचाया। जरासन्ध को मारकर राजाओ को कैद से छुड़ाया। पाण्डवो का साथ देकर धर्म की रक्षा की। अनेक राक्षसो को मार कर जन जन के नेता बने वह गरीबो के मसीहा धर्मोद्धारक परम ईश्वरभक्त, नीति निपुण श्रीकृष्ण को स्वीकार करता है। और साथ ही कहता है कि श्रीकृष्ण के उत्तम गुणो को स्वय धारण करके हम भी महान बनें। श्रीकृष्ण जी के सम्बन्ध मे महर्षि दयानन्द की श्रद्धाजलि जरूर पढ लें। उन्होने लिखा —

देखो श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत मे अत्युत्तम है। उनका गुण कर्म स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषो के सदृश है। जिसमे कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा और इस भागवत वाले ने अनुचित मनमाने दोष लगाए है। दूध दही मक्खन आद की चोरी और कुब्जा दासी से समागम परस्त्रियो से रास मण्डल क्रीडा आदि मिथ्या दोष श्रीकृष्ण जी को बहुत सी निन्दा करते हैं। जो यह भागवत न होता तो श्रीकृष्ण के सदृश महान महात्माओ की झूठी निन्दा क्यो कर होती? (सत्यार्थ प्रकाश एकादश समु०)

आपने देखा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के श्रीकृष्ण जी के बारे मे उपरोक्त शब्द कितने अच्छे हैं। जब आय समाज के प्रवर्तक के श्रीकृष्ण जी के बारे मे इतने उत्तम विचार हैं तो उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज के विचार उनके बारे मे गलत कैसे हो सकते हैं। अत आर्य समाज श्रीकृष्ण जी को महापुरुष के रूप मे स्वीकार करके उनके चरित्र की पूजा करता है। और कहता है कि हमे श्रीकृष्ण के सदगुणो को अपने जीवन मे धारण करना चाहिए। श्रीकृष्ण जैसी मित्र भावना उनके जैसा विपत्ति मे धैर्य उनकी वीरता उन जैसी सच्चरित्रता यदि हमम भी आ जाए तो हम भी महापुरुषो की पक्ति मे गिने जा सकते है। आप आय समाज मे आयें और श्रीकृष्ण जी के गुणो को अपना कर उन्हे सच्चा श्रद्धाजलि दें।

चर्बी खाओ—चर्बी से नहाओ

गाय की अपवित्र चर्बी कारतूसों में प्रयोग किये जाने के विरुद्ध गोभक्त हिन्दुस्तानी सैनिकों ने १८५७ में खुला विद्रोह करके ब्रिटिश सरकार को हिला डाला था। क्रान्तिवीर अमर बलिदानी मंगलपाण्डे ने स्पष्ट घोषणा की थी कि गोमाता की अपवित्र चर्बी से हमारा धर्म भ्रष्ट करने वाला ब्रिटिश शासन अब सत्ता में कदापि नहीं रह सकता।

महान राष्ट्रभक्त तथा आध्यात्मिक विभूति स्व० भाई हनुमान प्रसाद जी पोद्दार (संस्थापक, सम्पादक 'कल्याण') ने बम्बई में व्यापार करते समय, यह पता लगते ही कि विदेशी मिलों में बनने वाले कपड़े में लगाये जाने वाले कलफ मे गाय की चर्बी लगाई जाती है—विदेशी वस्त्रो के प्रयोग को तिलांजलि देकर खादी पहनने का संकल्प ले लिया था।

किन्तु आज स्वाधीन भारत में विदेशों से आयातित गाय, बैलो की चर्बी को हम वनस्पति घी तथा खाद्य तेलों के रूप में खाकर धर्म भ्रष्ट कर रहे हैं। यह चौंकाने वाले तथ्य हाल ही में एक विदेशी पत्रिका ने पूरे आंकड़ों सहित प्रस्तुत किये हैं।

देश में बनने वाले अधिकांश साबुनों में भी गाय बैल की अपवित्र चर्बी का प्रयोग किया जा रहा है। दवाओ के नाम पर, खून बढ़ाने वाले टोनिकों में, "हैमोग्लोबिन" बढ़ाने के नाम पर गाय बैलों का खून हमें पिलाया जा रहा है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के अनेक नगर तथा गांव जहां गोवंश की नृशंस हत्या की जाती है, वहां के कसाई मांस के साथ-साथ खून को कनस्तरों में इकट्ठा कर दवा के कारखानों में भेजते हैं। अब यह किसी से छिपा नहीं रह गया है।

पशुओं की यह चर्बी जहां हमारे धर्म को भ्रष्ट कर रही है वहीं स्वास्थ्य को भी चौपट कर रही है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अपनी एक रिपोर्ट में साफ कहा है कि पशुओं की चर्बी शरीर मे पहुंचकर अनेक असाध्य रोगों को जन्म देती है। चर्बी से धमनियां जाम हो जाती हैं तथा हृदय रोग पैदा होता है। गाय-बैल की चर्बी आंतों में घाव तथा सड़ांध पैदा कर देती है। इन सब चेतावनियों के बावजूद हम पशुओ की चर्बी का किसी न किसी रूप में प्रयोग कर रहे हैं।

हाल ही में हरियाणा में देशी घी में गाय-बैलों की चर्बी मिलाये जाने का भण्डाफोड़ हुआ था। चन्दौसी, खुर्जा तथा अन्य नगरों में भी कुछ अवांछनीय व्यापारी देशी घी में चर्बी मिलाते पकड़े जा चुके हैं। इसके बावजूद भी सरकार ने आज तक ऐसे पग नहीं उठाये कि पशुओं की चर्बी के इस उपयोग को रोका जा सके।

सरकार साबुन तथा अन्य वस्तुओं में उपयोग के नाम पर लाखो टन चर्बी के आयात की स्वीकृति देती है। लगभग १० वर्ष पूर्व दिल्ली का एक जैन व्यापारी आयातित चर्बी वनस्पति घी वालो को बेचने के आरोप में पकड़ा गया था। उस समय अनेक धार्मिक संस्थाओ ने इसके विरोध मे आन्दोलन भी किया था किन्तु कुछ दिन बाद ही चर्बी का आयात पुनः धड़ल्ले से शुरू हो गया।

साबुन तथा अन्य सौन्दर्य सामग्री में पहले तेलो का प्रयोग होता था। किन्तु धन के पीछे भागने वाले धनपिशाच' व्यापारियों ने चर्बी मन्दी होने के कारण उसका प्रयोग शुरू कर दिया। उनको न धर्म भ्रष्ट होने से कुछ लेना है न स्वास्थ्य के चौपट होने से। उन्हें केवल धन चाहिए चाहे भले ही वह 'नरसंहार' करके मिलता हो ?

धर्म प्राण भारत में गाय-बैलों की चर्बी का खाद्य पदार्थों में प्रयोग घोर अधार्मिक तथा अमानवीय कृत्य है। इसे रोके जाने के लिए सभी धर्माचार्यों तथा धार्मिक संस्थाओं को एकजुट होकर आन्दोलन चलाना होगा। सरकार को ' धन-पिशाच" व्यापारियों को गाय-बैलो की अपवित्र चर्बी का प्रयोग कर हमारे खान-पान तथा धर्म को भ्रष्ट करने की छूट कदापि नहीं दी जानी चाहिए।

दवाओ में गोमांस या गोरक्त का उपयोग तुरन्त बन्द किया जाना चाहिए। गोमांस तथा गोरक्त कौन-कौन एवं कारखाने खरीदते हैं इसका पता लगाया जाना जरूरी है।

—शिवकुमार गोयल

गोधन जून, १९९३ से साभार)

सम्पादक के नाम पत्र

संस्कृत सम्मेलन

आदरणीय सम्पादक जी, सार्वदेशिक साप्ताहिक !

माननीय महोदय, सम्मान पूर्वक नमस्ते !

भारत के राष्ट्रपति ने पहली बार अपने विचार प्रकट करते हुए संस्कृत को सभी भाषाओं की जननी तथा ज्ञान विज्ञान का अपार भंडार बताया है। आर्य समाज की शिरोमणि सार्वदेशिक सभा दीर्घकाल से भारत सरकार का ध्यान संस्कृत के पठन पाठन को स्कूलों में लागू करने की ओर दिलाती रही है। यह हमारा दुर्भाग्य है कि भारत सरकार इसे मरी हुई, न बोलने वाली, व्यवहार में न लायी जाने वाली भाषा कहकर तथा प्रांतीय सरकारोंका विषय कहकर पीछे धकेलती रही है, इसके विपरीत प्रांतीय सरकारों को अन्य विदेशी भाषा लागू करने के लिए प्रोत्साहित करती रही है। राष्ट्रपति महोदय ने संस्कृत को अन्य भाषाओ का प्राण माना है। हम हर वर्ष महात्मा गांधी की समाधी पर फूल चढ़ाते हैं और उनके पद चिन्हों पर चलने का संकल्प लेते हैं, परन्तु बड़े दुःख की बात है कि हमने स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद गांधी जी की किसी भी बात को न मानकर शराब तथा गौ हत्या जैसी बातों को केन्द्र सरकार की एक मात्र आय का साधन मानकर बढ़ावा दिया है।

हमारी सभी धार्मिक पुस्तकें मूल रूप से संस्कृत भाषा में हैं जिन्हें पढ़कर विदेशियों ने ज्ञान प्राप्त किया है, आज यदि संस्कृत भाषा को प्राचीन गौरव प्राप्त हो जाए तथा भारत सरकार की ओर से प्रोत्साहन मिले, एक बार फिर संस्कृत का प्रचलन हो जाए और हमारे राजनैतिक नेता इस भाषा के माध्यम से प्राचीन ग्रन्थो का अध्ययन करके राजनीति को धर्म से चलाकर शीघ्र ही रामराज्य लाने में सफल हो सकते हैं, इसी में भारत का कल्याण है।

आदर तथा धन्यवाद सहित, भवदीय

मदन लाल गुप्ता

३०९ १/२ एन. एटलान्टिक

अलहम्बरा, यू. एस. ए.

महान् भारत के स्वप्नद्रष्टा—श्रीकृष्ण

-- स्व० क्षितीश वेदालंकार --

योगेश्वर श्रीकृष्ण से लेकर 'चोर-जार शिखामणि' तक श्रीकृष्ण के इतने रूपों का चलन है कि हरेक रूप पर ग्रन्थों की भरमार है। परन्तु आश्चर्य है कि श्रीकृष्ण के जिस रूप की सबसे अधिक चर्चा होनी चाहिए, वही रूप सबसे अधिक उपेक्षित है। शायद इसका कारण यह है कि भारतीय जनता ने श्रीकृष्ण को ईश्वर का अवतार मानकर मनुष्य की कोटि से बाहर कर दिया और अपने मन मे यह समझ लिया कि उनकी सारी लीलाएं अलौकिक थी। इसलिए इस लोक में किसी भी मनुष्य के लिए उनका अनुकरण करना संभव नहीं। परन्तु महाभारत में श्रीकृष्ण का जैसा चरित्र कीर्तन किया गया है, उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि वे कोई अलौकिक शक्ति-सम्पन्न देवता या ईश्वर नहीं, बल्कि मनुष्य ही थे। स्वयं श्रीकृष्ण कहते हैं—

अहं हि तत् करिष्यामि परं पुरुषकारतः।
दैवं तु न मया शक्यं कर्म कर्तुं कथंचन॥

'मनुष्योचित जो भी प्रयत्न है वह सब यथासाध्य मैं कर सकता हूं, परन्तु दैव के कार्यों में मेरा कुछ भी वश नहीं है।' महाभारत से और ऐसे अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं, जिनसे श्रीकृष्ण की मानवीयता सिद्ध की जा सकती है। रामायण और महाभारत जैसे आर्ष महाकाव्यों के प्रणेता अपने चरित्र नायकों को 'नर' संज्ञा से अभिहित करते हैं। परन्तु परवर्ती पुराणकर्ता इन नरों को 'नारायण' बनाकर उन्हें अपार्थिव धरातल पर प्रतिष्ठित करने से बाज नहीं आते।

महाभारत के समय इस देश में धन-जन सब कुछ था, शक्ति और साहस भी था, परन्तु जन-सामान्य में अकर्मण्यता थी। समाज के कथित उच्च वर्ग मे महत्त्वाकांक्षाओं का आपसी टकराव इस सीमा तक पहुंच गया था कि संभवत: देश टूटने के कगार पर होता, यदि श्रीकृष्ण न आते। ठीक है कि आर्य जीवन का सर्वांगीण विकास जैसा कृष्ण चरित्र में दिखाई देता है, वैसा अन्य कहीं नहीं। और यह भी सही है, स्व० कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी के शब्दों में कि 'इतिहास की रंगभूमि पर ऐसे व्यक्ति जब अवतरित होते हैं तब दूसरे तन्त्र पुरुषार्थ-विहीन हो जाते हैं। इतिहास-क्रम रुक जाता है। सम-शक्तियों का मान भूलकर दर्शकों का मोह उसके आसपास लिपट जाता है।' उस समय गान्धार से लेकर सह्याद्रि पर्वतमाला तक क्षत्रिय राजाओं के छोटे-छोटे किन्तु निरंकुश राज्यों की भरमार थी। उन्हें एकता के सूत्र मे पिरो कर समग्र राष्ट्र को एक सुदृढ़ शासन व्यवस्था के अन्तर्गत लाने वाला कोई नहीं था। उस समय की स्थिति का आभास महाभारत के इस श्लोक से भलीभांति हो सकता है—

देशे-देशे हि राजानः स्वस्य-स्वस्य प्रियंकराः
न तु साम्राज्यमाप्तास्ते सम्राट् शब्दो हि कृच्छ्रभाक्॥

'छोटे छोटे प्रदेशों पर अपनी-अपनी सत्ता जमा कर राजा कहाने वाले तो अनेक थे पर सब अपने-अपने स्वार्थों मे लिप्त थे। साम्राज्य की कल्पना नहीं थी और सम्राट् शब्द से सम्बोधित किया जा सकने योग्य कोई व्यक्ति नहीं था।'

उस समय सबसे अधिक प्रतापी राजा मगध का जरासन्ध था और वह समग्र भारत का सम्राट् बनने का स्वप्न देख रहा था। राजगृह से लेकर मथुरा तक उसका प्रभाव क्षेत्र था। मथुरा-नरेश कंस उसका सगा दामाद था। चेदि देश का शिशुपाल, सिन्धु देश का जयद्रथ और हस्तिनापुर का दुर्योधन ये सभी जरासन्ध के मित्र और वशंवद थे और उसके सम्राट् बनने में बाधक बनने की बजाय यथाशक्ति के कारण साधक ही अधिक थे। पूर्व की मगधपुरी और हस्तिनापुर की कुरुधुरी ये दोनों तत्कालीन राजनीति की मुख्य धुरियां थीं।

इस समय कुरुधुरी की एक विशेषता तत्कालीन राजनीति की प्रचलित विचारधारा भी थी, जिसके कारण राजा को बंधनमुक्त और दैवी गुणों से युक्त समझा जाता था। 'राजा परं दैवतम्' उस समय की बद्धमूल मान्यता थी और यह समझा जाता था कि एक बार अगर किसी व्यक्ति ने किसी तरह राज्य हस्तगत कर लिया तो उसके विरोध में आवाज उठाना अनुचित है। प्रजा को हर हालत में राजा का अनुगत होना ही चाहिए। यह विचारधारा इतनी रूढ़ थी कि भीष्मपितामह, द्रोणाचार्य और कृपाचार्य जैसे मनीषी और बुजुर्ग भी दुर्योधन के किसी अनुचित काम के विरुद्ध कुछ कहने की हिम्मत नहीं करते थे। उस समय इन बुजुर्गों का यही शिष्टजनानुमोदित आचार था। इस विचारधारा के चलते राजा को निरंकुश और अत्याचारी होने की पूरी छूट थी इसी विचारधारा के कारण जरासन्ध अन्य अनेक मांडलिक राजाओं को परास्त करके गिरफ्तार कर चुका था और उनके राज्यों को अपने राज्यों में मिला चुका था। इस प्रकार दुर्योधन आदि अन्य मित्रों की सहायता से एक दिन वह भारत का चक्रवर्ती सम्राट् बनाने का स्वप्न देखता था।

जहां जरासन्ध साम्राज्यवादी विचारधारा का पोषक था वहां श्रीकृष्ण गणतन्त्रीय प्रणाली के पोषक थे क्योंकि उनके यादव और वृष्णिकुल में गणराज्य की पुरानी परम्परा चली आ रही थी। जब से मथुरा में कंस राजा बना, उसने गणतन्त्रीय प्रणाली समाप्त करके तानाशाही स्थापित कर दी और प्रजा पर साम्राज्यवादी पंजा पक्का कर दिया। उसने अपने से पूर्ववर्ती गण-प्रमुख महाराज उग्रसेन को बन्दी बना लिया। इससे सारी प्रजा अन्दर ही अन्दर घुटन महसूस कर रही थी और विद्रोह के अवसर की प्रतीक्षा में थी। श्रीकृष्ण ने कंस को मारकर जनता के विद्रोह का नेतृत्व किया और एक तरह से मगध-धुरी के सूत्रधार जरासन्ध को अपनी ओर से पहली चुनौती दी। निश्चय ही जरासन्ध इस अपमान को अमृत के घूंट की तरह नहीं पी सकता था। इसलिए उसने बारम्बार मथुरा पर आक्रमण किए। पर हर बार श्रीकृष्ण जनता के सहयोग से छापामार युद्ध द्वारा उसे अकृतकार्य करते रहे। अन्त मे जब जरासन्ध ने एक विदेशी राजा कालयवन को लेकर मथुरा पर चढ़ाई की, तब कृष्ण ने उतनी बड़ी सेना के सामने किसी भी तरह सफलता की आशा न देख मथुरा छोड़ भारत के ठेठ पश्चिम में स्थित समुद्र तटवर्ती द्वारिका को राजधानी बनाया। मगध-धुरी को समाप्त कर भारत को पश्चिम से पूर्व तक एक सूत्र में बांधने के स्वप्न की पूर्ति का ही यह अंग रहा होगा।

इधर कुरुवंश मे न्याय और अन्याय के आधार पर दो टुकड़े हो गये थे और दुर्योधन का अन्यायी पक्ष मगध-धुरी के साथ जुड़ा हुआ था। तब स्वभावत: ही श्रीकृष्ण ने अन्याय से पीड़ित और अभावग्रस्त पाण्डवों को अपने उस विराट् स्वप्न को चरितार्थ करने का माध्यम बनाया।

(शेष पृष्ठ १० पर)

अंधविश्वास का बोझ कब तक ढोएंगे हम ?

महात्मा गांधी की आंखों में एक सपना था—सुसंस्कृत भारत का सपना, विकसित भारत का सपना। वक्त अपनी निर्बाध गति से गुजरता रहा। गांधी की मृत्यु के ४५ वर्ष हो गए। दिल्ली के कई छोटे-छोटे मकान अट्टालिकाओं में बदल गए। कहने को संस्कृति अपनी विकास की चरम सीमा पर पहुंच गई। भारत विश्व का छठा देश बन गया। आधुनिकता की पराकाष्ठा फटे जिस की पेंट पहने नवधनाढ्य घर की लड़कियों पर नजर आने लगी। पॉप म्युजिक का शोर बढ़ता गया और हमने यह मान लिया कि विगत ४७ वर्षों में हमने विकास की एक लम्बी यात्रा तय की है। यह और बात है कि इस लम्बी विकास-यात्रा में हर उदय पर कोई-न-कोई बालक ब्रह्मचारी से हमारी मुलाकात होती रही है और हम लगातार उसके कदमों में नतमस्तक होते रहे हैं।

हमारे लिए यह युग विज्ञान और अंधविश्वास का मिश्रित युग है। एक तरफ हम आज भी चांद और सूर्य को देवता मानकर पूजते हैं। तो, दूसरी तरफ मानव को अंतरिक्ष में बसाने की तैयारी भी काफी जोर-शोर से चल रही है। हम अपनी प्रगति की लम्बी-चौड़ी दलीलें देते हैं लेकिन दुर्भाग्य कि आज तक हमारा दृष्टिकोण वैज्ञानिक नहीं हो सका है। आज जब हम इस मिश्रित युग में जी रहे हैं तो कुछ अन्य देश वैज्ञानिक युग में पहुंच गए हैं। जिनके लिए आज का युग विज्ञान का युग है और आज के इस विश्व में अगर हम विश्व बिरादरी से अलग-थलग होकर रहना चाहें तो वह सम्भव नहीं है। हमें विश्व की विकसित संस्कृति और सभ्यता के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना होगा लेकिन यह विडम्बना ही है कि आज भी इस देश की बहुसंख्य जनता में अंधविश्वास की जड़ गहरी जमी हुई है।

अंधविश्वासी लोग चमत्कारों में अधिक विश्वास करते हैं। उन्हें लगता है कि कोई बाबा, कोई सिद्ध या सन्त उनका सारा दुःख-दर्द, उनकी सारी पीड़ाएं हर लेगा और वे कष्टमुक्त होकर जीवनयापन तो करेंगे ही, साथ ही लोकान्तरण के बाद भी उनका विश्राम स्थल स्वर्गपुरी ही होगा। अगर ऐसा वाकई सम्भव होता तो कम-से-कम महात्मा जी खुद तो किसी कष्ट में नहीं होते।

पिछले दिनों ऐसा ही एक किस्सा धर्म को अफीम मानने वाले मार्क्स-वादियों के गढ़ पश्चिम बंगाल में देखने को मिला। सन्तान दल के गुरु बालक ब्रह्मचारी चिरनिद्रा में लीन हो गए। डाक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। विज्ञान की इस घोषणा को अंधविश्वास ने अपने कब्जे में ले लिया और फिर महीनो तक अन्धविश्वास बनाम विज्ञान का अघोषित संघर्ष चलता रहा। बाबा के शिष्यो के द्वारा यह अफवाह फैलायी गई कि बाबा मरे नहीं हैं, बल्कि चिर समाधि मे हैं। फिर जिंदा होंगे। जिस तरह विज्ञान बनाम अन्धविश्वास की इस जंग में हर बार विज्ञान की जीत होती रही है उसी तरह इस बार भी हुई। बाबा के शव को महीनों बाद जलाया गया। यह और बात है कि इस जग में ज्योति बसु को कूदना पड़ा। मन्त्रिमण्डल की बैठक हुई और तब यह फैसला लिया गया कि पुलिस के संरक्षण में शव की अंत्येष्टि की जाए। शिष्यो ने बाबा की मौत को भी बेचा।

सवाल यह उठता है कि वह कौन-सा तत्व है जो हवा-पानी देकर अन्धविश्वास की जड़ को मजबूत करता है। बाबा की मौत की दुकानदारी क्यों की जाती है तथा इसमे किसको लाभ होता है ? उत्तर स्पष्ट है। इस बाजार में अपनी दुकान लगाने वाले हर दुकानदार की एक ही मंशा होती है, हमें मूर्ख बनाकर हमारी भावनाओ से खेलने की। वह हमें आलोकित पथ से हटाकर किसी अंधे कुएं में फेंकना चाहता है। उसकी एक मात्र मंशा होती है हमें पीछे ढकेलने की और हम उसकी बातो में आकर उसकी योजनाओं को कार्य-रूप में बदलने मे मदद करते हैं।

बालक ब्रह्मचारी का किस्सा इस देश के लिए कोई इकलौता किस्सा नहीं है। इस ढंग के हजारों किस्से इतिहास ने अपने पन्नों में छुपा रखे हैं। "मस्जिद भीतर मुल्ला पुकारें क्या तेरा साहिब बहिरा है"—लिखने वाले कबीर को हमने अवतार मान लिया। भक्तिकालीन कवि रैदास आज भी चमारों के देवता माने जाते हैं। (देवता की परिकल्पना दुःखहरण की है), इसी तरह चंदुलिया बाबा से लेकर ओशोरजनीश तक को भगवान का अवतार मान लिया गया। यही भारत के अधिकांश लोगों की सबसे कमजोर नस है जिस पर चोट के उन विक्रेताओं की उंगली आसानी से चल जाती है। और लोग उनके वाक्जाल में फंस जाते हैं।

प्रारम्भ से ही भारत की छवि विश्व में एक तन्त्र-मन्त्र, जादू-टोना वाले देश की रही है। चन्द चमत्कारिक किम्वदन्तियों की वजह से भी भारत विदेशियों के आकर्षण का केन्द्र रहा है। विश्वास भारतीय संस्कृति का एक अविभाज्य अंग है और यही विश्वास जब हद से गुजर जाता है तब अन्ध-विश्वास का रूप ले लेता है। दरअसल हमारी एक पीढ़ी किसी पर विश्वास करती है, दूसरी पीढ़ी उसे काफी हद तक ले जाती है और तीसरी पीढ़ी उसे अन्धविश्वास में बदल देती है। बुद्ध, महावीर, कबीर, नानक, रैदास, बिरसा मुंडा—सभी के मामले में यही हुआ है।

बालक ब्रह्मचारी के मामले में भी यही सब कुछ होना है। बालक ब्रह्मचारी पर सन्तान दल के लोगों ने विश्वास की हद तक विश्वास किया और अब उनके शिष्यों के प्रचार तन्त्र ने लोगों को अन्धविश्वास करने पर मजबूर कर दिया है। भविष्य भी उन्हीं का है। कल बाबा जी की आत्मा किसी भक्त के शरीर में प्रवेश कर जाएगी और फिर वह भक्त भी शायद इस काबिल बन जाएगा कि किसी का दुःख, किसी की तकलीफ को मिनट में ठीक कर दे। लोग उसका आशीर्वाद पाने उसके पास जाएंगे। कुछ की तकलीफ तो प्रकृति के नियमानुसार खुद-ब-खुद दूर हो जाएगी। जिसकी तकलीफ दूर हो जाएगी, वह तो बाबा का भक्त हो ही जाएगा, जिसकी तकलीफ दूर नहीं भी होगी वह भी अपने पिछले जन्म के पाप-कर्मों की सजा मानकर बाबा की आराधना करता रहेगा जिससे अगले जन्म में फिर उसे किसी कष्ट का सामना न करना पड़े। यानी हर हाल में बाबा के पौ-बारह हैं। जनता उनकी बातों में उलझी रहे। मूर्ख बनती रहे, उन्हें इससे क्या ?

ऐसा नहीं है कि सिर्फ भारत ही इस धर्मांधता का शिकार है। इंग्लैंड में १३ नम्बर अशुभ माना जाता है। तिब्बत में दलाई लामा के पुनर्जन्म की बात की जाती है। पोप पिछले कई सौ वर्षों से लोगों को स्वर्ग भेजने का ठेका लेते रहें हैं। आखिर क्यों विज्ञान की हर जीत को हम हार में बदल देने पर तुले हैं ? ईसा पूर्व में चार्वाक, बुद्ध और बाद में कबीर, विवेकानन्द जैसे सैकड़ों लोगों ने अन्धविश्वास का विरोध किया फिर भी हम क्यों बजाए इसके विरोध के, इसे आसानी से स्वीकार कर लेते हैं ?

अन्धविश्वास की जड़ इस देश में काफी गहरी जमी हुई है। बाबाओं की अब तक चलती रही है। यहां की मासूम जनता के विश्वास का लगातार गला घोंटा गया है। लेकिन शायद बाबा लोग भूल गए हैं कि जब भी धर्म पर रूढ़ियो और अन्धविश्वासो को अधिक थोपा गया है तब वह धर्म गुमनामी के अंधेरे मे खो गया है। बौद्ध धर्म के साथ यही हुआ। अन्त क्या हुआ ? महायान, हीनयान और फिर सहजयान वगैरह में टूटते-टूटते अन्त में इस देश मे जहा बौद्ध धर्म का जन्मस्थल है, कोई नाम लेने वाला नहीं रहा। वक्त आ गया है जब धर्म के इन लुटेरो को समझना चाहिए कि अब उनके दिन लदने वाले हैं। आज न सही कल उनकी पोल खुलने वाली है।

आलोक 'सुमन'

(हिन्दुस्तान २९-७-९१) से साभार

संस्कार चन्द्रिका के ग्राहकों से निवेदन

संस्कार चन्द्रिका सभी ग्राहकों को प्रकाशित होने पर डाक द्वारा भेजी जा चुकी है। आठ दस ग्राहको की पुस्तकों की वी. पी. वापस आ गई हैं। जिन ग्राहकों को पुस्तक अभी तक प्राप्त नहीं हुई है वे अपना पूर्ण पता सभा कार्यालय में अविलम्ब भेजें जिससे उन्हें पुस्तक भेजी जा सके।

आर्य समाज और विद्यालयों के अधिकारियों से निवेदन है कि अपने पुस्तकालयों के लिए उक्त पुस्तक शीघ्र मंगवाएं। पुस्तक का मूल्य १००) रु० तथा डाक व्यय पृथक।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

श्रीकृष्ण के जीवन से शिक्षा

आचार्य राजेन्द्र शर्मा, आर्य समाज हापुड

पाच हजार वर्ष से कुछ अधिक समय हुआ जब भारत का नेतृत्व श्रीकृष्ण जी के हाथ म था। उन्होने देश का नेता होते हुए देश वासियो के सभी वर्गो के साथ वह व्यवहार किया जो आज के ससार के लिये अनुकरणीय है।

उनके क्रियात्मक जीवन पर हम तीन तरह से दृष्टिपात कर सकते हैं—

१ शारीरिक तौर पर वे इतने बलवान थे कि उनकी शक्ति का लोहा भीष्म पितामह जैसे ब्रह्मचारी भी मानते थे। शिशुपाल ने जब पाडवो की सभा मे उनका अपमान करना चाहा और इसी उद्देश्य से मुकाबले के लिये ललकारा तो उन्होने बिना कोई अगर मगर किये शिशुपाल का प्राणात कर दिया।

२ अध्यात्मिक रूप से वे इतना ऊचा स्थान रखते थे कि आज भी दुनिया की तमाम सभ्य जातिया गीता मे दी हुई शिक्षा के सम्मुख नतमस्तक है। नेपोलियन व नैलसन बनने की इच्छा कही नही देखी जाती परन्तु कृष्ण बनने की इच्छा प्राय सभी मनुष्यो मे पाई जाती है।

३ सामाजिक उन्नति का उन्होने इतना अच्छा उपदेश दियाहै कि यदि हम उसे अपनायें तो हमारा भविष्य बहुत उज्ज्वल हो सकता है। उनके विचार मे सामाजिक उन्नति के लिये हरेक व्यक्ति का अच्छा होना आवश्यक हैइसलियेउनका विश्वास था कि माता-पिता का कर्त्तव्य है कि तैयारी करके सन्तान पैदा करे। इसकी उन्होने क्रियात्मक शिक्षा दी और वह यहथी कि रुक्मिणी से विवाह करने केअनन्तर जबदोनो मे सन्तान उत्पन्न करने की इच्छा उत्पन्न हुई तो दोनो न सन्तान पैदा करने की तैयारी की और १०,१२ वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन किया और तब एक पुत्र उत्पन्न किया। वह पुत्र प्रद्युम्न ऐसा पैदा किया कि माता-पिता दोनो को उस पर गर्व था।

जाति मे जो निर्धन व्यक्ति हो उनसे कैसा व्यवहार करना चाहिये। उनकी वह शिक्षा वह अमल था जो उन्होने सुदामा जैसे निर्धन के साथ किया। यदि आज दुनिया के धनवान अपना ऐसा व्यवहार बनाल तो Labour and Capital का झगडा समाप्त हो सकता है। सामाजिक उन्नति के लिये यह आवश्यक है कि मनुष्य समाज के स्वार्थ के सामन अपने स्वार्थ को हेय समझे।

कृष्ण ने जब तय कर लिया कि उन्हे इस देश मे चक्रवर्ती राज्य स्थापित करना चाहिये तो उन्होने इसके लिय विचार भी नही किया कि राज्य का राजा मुझे बनना चाहिये। यदि वे ऐसा करते तो वे इसके लिये उपयुक्त थे परन्तु इससे जो उदाहरण वह प्रस्तुत करना चाहते थे वह प्रस्तुत नही हो सकता था। इसलिये उन्होने जो किया उसका उदाहरण इतिहास मेंनही मिलता।

गृह कलह से देश की शक्ति नष्ट नही करनी चाहिये इसके लिये भी उनकाजीवन शिक्षाप्रद हैं,उन्होने जरासध से युद्ध,नही किया।उन्हे मथुरा छोडकर द्वारिका जाना पडा, उन्होने स्वीकार किया। परन्तु गृह कलह मे नही उलझे। जरासन्ध के राज्य को देश के चक्रवर्ती राज्य के अधीन होना चाहिये इसके लिये उन्होने इतनी बुद्धिमत्ता से काम लिया कि सिवा जरासन्ध के एक आदमी की जान की हानि नही हुई और उसका राज्य आधीनता मे आ गया।

अत्याचार और धीगा धीगी सहना पाप है। कृष्ण के जीवन का यह चिह्न था। उन्होने कंस का वध इसे पाप से बचने के लिये किया।

केवल शारीरिक बल और शिक्षा पर जो रणपटुता निर्भर है वह सामान्य सैनिक मे भी हो सकती है सेनापतित्व ही योद्धा का वास्तविक गुण है। महाभारत आदिमे एक भी अच्छे सेनापति का पता नही लगता। भीष्म या अर्जुन अच्छे सेनापति न थे। श्रीकृष्ण के सेनापतित्व का कुछ विशेष परिचय जरासन्ध युद्ध से मिलता है। उन्होने अपनी मुट्ठी भर यादव सेना लेकर जरासध की अगणित सेना को मथुरा से मार भगाया था।

कृष्ण की ज्ञानार्जनी वृत्तिया सब ही विकास की पराकाष्ठा को पहुची हुई थी। वे अद्वितीय वेदज्ञ थे। भीष्म ने उन्हे अर्घ्य प्रदान करने का एक कारण यह भी बताया था। शिशुपाल ने इसका कुछ उत्तर नही दिया था केवल इतना ही कहा था कि वेद व्यास के रहते कृष्ण की पूजा क्यो ?

श्री कृष्ण मन से श्रेष्ठ और भारतीय राजनीतिज्ञ थे। इसी से युधिष्ठिर ने वेदव्यास के कहने पर भी श्रीकृष्ण के परामर्श बिना राजसूय यज्ञ मे हाथ नही लगाया। स्वेच्छाचारी यादव और कृष्ण की आज्ञा मे चलने वाले पाडव दोनो ही उनसे पूछे बिना कुछ नहीं करते थे। जरासध को मारकर उसकी कैद से राजाओ को छुडाना उन्नत राजनीति का अति सुन्दर उदाहरण है। धर्म राज्य स्थापन के बाद उसके शासन के हेतु भीष्म से राज्य व्यवस्था ठीक कराना राजनीतिज्ञता का दूसरा बडा प्रशसनीय उदाहरण है।

कृष्ण की सब कार्यकारिणी वृत्तिया चरम सीमा तक विकसित हुई थी। उनका साहस उनकी फुर्ती और तत्परता अलौकिक थी। स्थान-स्थान पर उनके शौर्य दयालुता और प्रीति का वर्णन मिलता है। वे शान्ति के लिए दृढता के साथ प्रयत्न करते थे और इसके लिए वे दृढ प्रतिज्ञ थे। महाभारत को टालने के लिए उन्होंने जो यत्न किया वह जगदविख्यात है। वे सबके हितैषी थे। केवल मनुष्यो पर ही नही गौ वत्सादि जीव जन्तुओ पर भी वह दया करते थे।

(शेष पृष्ठ ८ पर)
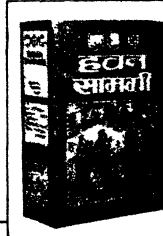
दुनिया से कह दो कि गांधी अंग्रेजी भूल गया

(सन् १९४७ में भारत स्वतन्त्र होने पर बी. बी.सी. द्वारा मांगे गए सन्देश के उत्तर मे गांधीजी द्वारा दिया गया केवल एक वाक्य का सन्देश)

'युवक और युवतियां अंग्रेजी और दुनिया की दूसरी भाषाएं खूब पढ़ें और जरूर पढ़ें। लेकिन उनसे मैं आशा करूंगा कि वे अपने ज्ञान का प्रसाद भारत को और सारे संसार को उसी तरह प्रदान करेंगे, जैसे बोस, राय और स्वयं कवि रवीन्द्रनाथ ने प्रदान किया है। मगर मैं हरगिज यह नहीं चाहूंगा कि कोई भी हिन्दुस्तानी अपनी मातृभाषा को भूल जाए या उसकी उपेक्षा करे या उसे देखकर शरमाए अथवा यह महसूस करे कि अपनी मातृभाषा के जरिए वह ऊंचे से ऊंचा चिन्तन नहीं कर सकता है।'

'मेरा यह सुनिश्चित मत है कि जिस रूप में अंग्रेजी की शिक्षा यहां दी गई है, उससे अंग्रेजी पढ़े-लिखे हिन्दुस्तानी कमजोर हो गए हैं। इस पद्धति ने भारतीय छात्रो की स्नायविक ऊर्जा पर भयानक दबाव डाला है तथा हम सबको नक्काल बना दिया है। कोई भी जाति नक्कालो की कौम पैदा करके बड़ी नहीं हो सकती।'

'मुझे पक्का विश्वास है कि किसी दिन हमारे द्रविड़ भाई-बहन, गम्भीर भाव से, हिन्दी का अध्ययन करने लगेंगे। आज अंग्रेजी भाषा पर अधिकार प्राप्त करने के लिए वे जितनी मेहनत करते हैं, उसका आठवां हिस्सा भी हिन्दी सीखने मे करें तो बाकी हिन्दुस्तान, जो आज उनके लिए बन्द किताब की तरह है, उससे वे परिचित होंगे और हमारे साथ उनका ऐसा तारतम्य स्थापित हो जाएगा, जैसा पहले कभी नहीं था।'

'...जरा सोचकर देखिए कि अंग्रेजी भाषा में अंग्रेज बच्चों के साथ होड़ कराने मे हमारे बच्चों पर कितना बजन पड़ता है। पूना के कुछ प्रोफेसरों से मेरी बात हुई। उन्होंने बताया कि चूंकि हर भारतीय विद्यार्थी को अंग्रेजी के मार्फत ज्ञान सम्पादन करना पड़ता है, इसलिए उसे अपने बेशकीमती बरसों में से, कम से कम, छह वर्ष अधिक जाया करने पड़ते है। हमारे स्कूलों और कालेजों से निकलने वाले विद्यार्थियों की संख्या में इस छह का गुणा कीजिए और फिर देखिए कि राष्ट्र में कितने हजार वर्ष बर्बाद हो चुके हैं।'

'हिन्दी भाषी लोगों को दक्षिण की भाषा सीखने की कितनी जरूरत है, उसकी अपेक्षा दक्षिण वालों को हिन्दी सीखने की आवश्यकता अवश्य ही अधिक है। सारे हिन्दुस्तान में हिन्दी बोलने और समझने वालों की संख्या दक्षिण की भाषाएं बोलने वालों से दुगुनी है। प्रांतीय भाषा या भाषाओं के बदले मे नहीं, बल्कि उनके अलावा एक प्रान्त से दूसरे प्रांत का सम्बन्ध जोड़ने के लिए सर्वमान्य भाषा की आवश्यकता है। ऐसी भाषा तो एकमात्र हिन्दी या हिन्दुस्तानी ही हो सकती है।'

'क्या वे लोग जो अपनी मातृभाषा का अपमान करते है, कभी देश का भला कर सकते हैं? मैं इसकी कल्पना नहीं कर सकता कि गुजरात के लोग अपनी मातृभाषा छोड़कर अन्य कोई भाषा अपना लें। ऐसा हो तो यह कहने में जरा अतिशयोक्ति न होगी कि जो लोग अपनी भाषा छोड़ देते है, वे देशद्रोही हैं और जनता के प्रति विश्वासघात करते है।

'अगर स्वराज्य अंग्रेजी बोलने वाले भारतीयों को और उन्हीं के लिए होने वाला हो, तो निस्संदेह अंग्रेजी ही राष्ट्रभाषा होगी। लेकिन अगर स्वराज्य करोड़ों भूखों मरने वालों, निरक्षरों निरक्षर बहनों और दलितो व अन्त्यजों का हो और इन सबके लिए होने वाला हो, तो हिन्दी ही एकमात्र राष्ट्रभाषा हो सकती है।' 'अंग्रेजी आज इसलिए पढ़ी जा रही है कि उसका व्यावसायिक एवं कथित राजनैतिक महत्व है, हमारे बच्चे अंग्रेजी यह सोच कर पढ़ते है कि अंग्रेजी पढ़े बिना उन्हें नौकरियां नहीं मिलेंगी। लड़कियो को अंग्रेजी इसलिए पढ़ाई जाती है कि इससे उनकी शादी में सहूलियत होगी। मैं ऐसी कितनी ही औरतों के बारे में जानता हूं जो अंग्रेजी फकत इसलिए सीखना चाहती थी कि अंग्रेजों के साथ वे अंग्रेजी में बातचीत कर सकें। मैं कितने ही ऐसे पतियों को जानता हू, जिन्हें इस बात का मलाल है कि उनकी बीवियां उनके साथ और उनके दोस्तों के साथ अंग्रेजी में बात नहीं कर सकती। मुझे ऐसे परिवारो की जानकारी है, जहां अंग्रेजी मातृभाषा बनाई जा रही है।... ये सारी बातें मेरी नजर में गुलामी और घोर पतन के चिह्न हैं। मैं इस बात को बर्दाश्त नहीं कर सकता कि देशी भाषाए इस तरह कुचल दी जाए, भूखों मार डाली जाएं।

'वास्तव में ये अंग्रेजी मे बोलने वाले नेता है जो आम जनता में हमारा काम जल्दी आगे बढ़ने नहीं देते। ये हिन्दी सीखने से इन्कार करते हैं जबकि हिन्दी द्रविड़ प्रदेश मे भी तीन महीने के अंदर सीखी जा सकती है, अगर सीखने वाले इसके लिए दो घण्टे हर रोज देंगे।'

'लाखो लोगों को अंग्रेजी का ज्ञान कराना उन्हें गुलाम बनाना है। मैकाले ने भारत में जिस शिक्षा की नींव रखी, उसने हम सबको गुलाम बना दिया है।

'आप और हम चाहते है कि करोड़ों अन्तर्प्रान्तीय सम्पर्क कायम करें। स्पष्ट है कि अंग्रेजी के द्वारा कई पीढ़ियां गुजर जाने पर भी वे परस्पर सम्पर्क स्थापित न कर सकेंगे।'

मैं कहना यह चाहता हूं कि मुझे इस पवित्र नगर में इस महान् विद्यापीठ के प्रांगण मे अपने ही देशवासियों से एक विदेशी भाषा में बोलना पड़ रहा है, यह बड़ी अप्रतिष्ठा और शर्म की बात है।

श्रीकृष्ण के जीवन से शिक्षा

(पृष्ठ ७ का शेष)

वह स्वजन प्रिय थे। पर लोकहित के लिए दुष्टाचारी स्वजनों का विनाश करने में कुण्ठित न होते थे। कंस उनका मामा था। उनके जैसे पांडव थे वैसे शिशुपाल भी था। दोनों ही उनकी फूफियों के बेटे थे। उन्होंने मामा वा भाई का लिहाज न कर दोनों को ही सजा दी। जब यादव शराबी हो उद्दण्ड हो गए तो उन्होने उनको भी अछूता न छोड़ा।

श्रीकृष्ण आदर्श मानव थे। मानव का आदर्श प्रचारित करने के लिए उनका प्रादुर्भाव हुआ था। वे अपराजय, अपराजित, विशुद्ध पुण्यमय प्रेम और दयामय दृढ़ कर्मी धर्मात्मा, वेदज्ञनीतिज्ञ धर्मज्ञ, लोक हितैषी, न्यायशील, क्षमाशील, निरहंकार योगी व तपस्वी थे। वह मानुषी शक्ति से काम करते थे परन्तु उनमें देवत्व अधिक था।

कृष्ण ने वेद प्रतिपादित, उन्नत, सर्वलोकहितकारी सब लोगों के आचरण योग्य धर्म का प्रचार किया। गीता कृष्ण की अनुपम देन है।

सार्वदेशिक के ग्राहकों से

सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहकों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क भेजते समय या पत्र व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या का उल्लेख अवश्य करें।

अपना शुल्क समय पर स्वतः ही भेजने का प्रयास करें। कुछ ग्राहकों का बार बार स्मरण पत्र भेजे जाने के उपरान्त भी वार्षिक शुल्क प्राप्त नहीं हुआ है अतः अपना शुल्क अविलम्ब भेजें अन्यथा विवश होकर अखबार भेजना बन्द करना पड़ेगा।

"नया ग्राहक" बनते समय अपना पूरा पता तथा "नया ग्राहक" शब्द का उल्लेख अवश्य करें। बार बार शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिये, एक बार १०० रुपये भेजकर सार्वदेशिक के आजीवन सदस्य बने।—सम्पादक

महान् भारत के स्वप्नद्रष्टा—श्रीकृष्ण

(पृष्ठ ५ का शेष)

उसके बाद जिस प्रकार बिना सैन्य बल के प्रयोग के भीम के साथ मल्ल युद्ध द्वारा जरासन्ध को समाप्त करवाया, वह कृष्ण की कंस वध के पश्चात् दूसरी सबसे बड़ी विजय थी। इस प्रकार मगध-धुरी की कमर टूट जाने के पश्चात् श्रीकृष्ण ने मणिपुर की राजकुमारी चित्रागदा से अर्जुन का, नगा प्रदेश की राजकुमारी हिडिम्बा से भीम का और अरुणाचल की राजकुमारी रुक्मिणी से अपना विवाह करके पूर्वी सीमान्त के इन प्रदेशो के साथ जो अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण हमेशा डावाडोल रहने को बाध्य रहते थे अपने रक्त संबंध जोड़े और उत्तर पश्चिम धुरी के साथ उन्हे एकाकार कर दिया।

परन्तु अभी हस्तिनापुर के अन्दर आपसी विवाद को समाप्त करवाने के लिए महाभारत होना शेष था, अनिवार्य भी। क्योंकि उसके बिना दुर्योधन सुई की नोक के बराबर भी जमीन देने को तैयार नही था। परन्तु इस महाभारत से पहले श्रीकृष्ण ने पाचाली (द्रौपदी) के साथ अर्जुन का विवाह करवाकर पाडवो के साथ पाचाल नरेश द्रुपद का गठबन्धन करा दिया और इस प्रकार पाडवो को कौरवो से लोहा लेने मे समर्थ बना दिया। पाण्डवो की विजय का मुख्य आधार जहा यह कुरु पाचाल की वज्रसन्धि थी, वहा कृष्ण की अपनी रण-चातुरी भी थी। यदि कृष्ण की नीतिमत्ता न होती तो पाडव किसी भी हालत मे महाभारत मे विजय प्राप्त नही कर सकते थे।

महाभारत की विजय का सारा श्रेय श्रीकृष्ण को है। महाभारत के असली सूत्रधार वही हैं। पर इतने बड़े महायुद्ध के बिना जो उनका विराट् स्वप्न था पूर्व से लेकर पश्चिम तक—मणिपुर से लेकर द्वारिका तक—समस्त भारत को एक दृढ केन्द्र के अधीन करना वह पूरा नही हो सकता था। सभवत श्रीकृष्ण ने भविष्य मे होने वाले शको और हूणो आदि विदेशियो के आक्रमणो की कल्पना करके इस महान् भारत देश को एक दृढ केन्द्र के अधीन करने की योजना बनाई थी। उसी का यह परिणाम था कि ४ हजार साल तक, जब तक यह देश दृढ केन्द्र के अधीन रहा कभी विदेशी आक्रमणकारी सफल नही हो सके। जब केन्द्र कमजोर हो गया तो उसे चारो ओर से नोचने वाले गिद्ध भी सफल होते दिखाई देने लगे।

महाभारत का अर्थ केवल महायुद्ध ही नही, बल्कि महान् भारत और बृहत्तर भारत भी है। भारत के इस विराट् रूप को चरितार्थ करने वाले दिव्य पुरुष श्रीकृष्ण की इस राजनैतिक दिव्य महिमा को समझने वाले कितने लोग है?

आर्य समाजो के निर्वाचन

—आर्य समाज रमेश नगर दिल्ली, श्री नन्दलाल जी प्रधान, श्री नरेन्द्र आर्य मन्त्री श्री सत्यपाल नारग कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज दिलदार नगर गाजीपुर, श्री मगलाप्रसाद सिंह आर्य प्रधान श्री बनारसीप्रसाद जी मन्त्री श्री राधश्याम जी कोषाध्यक्ष चुने गये।

१५ अगस्त से बाबरी मस्जिद बनाने की खबर से अयोध्या मे खलबली

गुप्तचर विभाग ने संदिग्ध गतिविधियों पर रिपोर्ट भेजी

अयोध्या, १ अगस्त । १५ अगस्त करीब आने के साथ ही विवादित परिसर के ठीक पीछे मुसलिम बहुल कुआ मोहल्ले मे चल रही संदिग्ध गतिविधियो, अयोध्या में भारी संख्या मे बाहरी युवको के १० अगस्त तक जमा होने की गुप्तचर रपटो और दो दिनो से घुसलके में अज्ञात लोगो के निर्देश पर जमा हो रही भवन निर्माण सामग्री ने प्रशासन को चिन्ता में डाल दिया है ।

अयोध्या मे १५ अगस्त को मस्जिद का काम शुरू होने की चर्चा से दहशत का माहौल है ।

चौदह पन्द्रह जून को दिल्ली मे बाबरी मस्जिद समर्थक सैकड़ो युवकों द्वारा पन्द्रह अगस्त को हर कीमत पर अयोध्या मे बाबरी मस्जिद की नींव डालकर काम शुरू कर देने और १५ अगस्त से ही उपयुक्त स्थल पर नमाज पढ़कर अल्लाह से बाबरी मस्जिद की बहाली के लिये प्रार्थना करने की प्रतिज्ञा ली गई थी ।

दो जुलाई को 'सहमत' संस्था ने अयोध्या में १५ अगस्त को साम्प्रदायिक सदभाव के लिये एक बड़ा जलसा करने की अनुमति मांगी । इसी दौरान बाबरी समर्थक युवकों द्वारा १५ अगस्त को अयोध्या मे एकत्र होने और १५ को ही लगभग ८० राष्ट्रीय स्तर के कलाकारों व फिल्मी हस्तियों द्वारा अयोध्या में राम की पैड़ी पर हजारों की भीड़ जुटाने वाला जलसा किये जाने की योजना ने जिला प्रशासन के सामने मुसीबत खड़ी कर दी ।

फैजाबाद अयोध्या के होटलों, धर्मशालाओं और मुसाफिर खानो में १५ अगस्त के आस पास सैकड़ों बाहरी लोगों को ठहराने की तैयारियों की सूचना से सतर्क प्रशासन को नेहरू ब्रिगेड की ओर से १५ को ही कम से कम दो हजार लोगों के अयोध्या भेजे जाने की खबर ने बेहद बेचैन कर दिया ।

शुक्रवार ३० जुलाई को जिला प्रशासन को सूचना मिली कि मदरसा-तालीम ओ तरबुमत के आस पास और चेराही कुआ क्षेत्र में कम से कम तीन स्थानो पर ईंटे गिर रही हैं । लेकिन पता नहीं है कि ये ईंटें किस उद्देश्य से गिराई जा रही है । अयोध्या के चक्कर लगा रहे अफसरान ने तफतीश की तो पता चला कि किसी ने भी कोई निर्माण करने की न तो विकास प्राधिकरण से अनुमति ही मांगी है और इन ईंटो का क्या होगा यह बताने वाला भी कोई नही है । कल परसो मे ही रात मे सीमेंट के ट्रक दोराही कुआ क्षेत्र मे आने की भी सूचना मिली । इन खबरो ने प्रशासन के कान खड़े कर दिये हैं ।

गढ़वाल आर्योपप्रतिनिधि सभा का कार्यक्रम

गढ़वाल आर्योपप्रतिनिधि सभा की प्रथम मीटिंग श्रावणी पर्व के शुभावसर पर दिनांक २ अगस्त १९९३ को आर्य समाज मन्दिर नजीबाबाद रोड, कोटद्वार गढ़वाल मे होनी निश्चित हुई है । जिसमें सभा के सभी नवनिर्वाचित पदाधिकारी, सदस्यो के अतिरिक्त गढ़वाल की सभी आर्य समाजों के प्रधानो, मन्त्रियो को आमन्त्रित किया गया है । सभा के उत्थान वा प्रगति के लिए भावी कार्यक्रम बनाया जायेगा ।

उक्त सभा के माध्यम से वेदज्ञान का सन्देश पर्वतीय आंचल, कन्दराओं में और जन जन तक पहुंचाया जा सके । श्रावणी पर्व के शुभावसर पर वेदसप्ताह प्रचार के लिये पुरोहित, भजनीक और उपदेशक को गढ़वाल में प्रचार, प्रसार के लिये भेजा जाएगा तथा यह क्रम नियमित रूप से चलता रहेगा, महर्षि स्वामी दयानन्द जी के मिशन को प्रतिदिन आगे बढ़ाते रहना चाहिए ।

— दीनदयाल राव, सभा प्रधान

वैदिक धर्म अपनाया

दिनांक ९-७-९३ को आर्य समाज ग्रेटर कैलाश-२ दिल्ली में एक मुस्लिम युवती कु० रूपा अबीन पुत्री श्री अब्दुल खालिक ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म में प्रवेश किया तत्पश्चात उसकी शादी श्री राजेश घोष नामक युवक से वैदिक रीति के अनुसार सम्पन्न कराई गई ।

रघुनन्दन गुप्त, प्रधान-आ. स. ग्रेटर कैलाश-२

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का कुलपति बनने पर डा० धर्मपाल का सार्वजनिक अभिनन्दन

नई दिल्ली २५ जुलाई । दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल का गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वारके कुलपति का पदभार ग्रहण करने के उपलक्ष्य मे आज दिल्ली की समस्त आर्यसमाजो, प्रांतीय महिला सभा, गुरुकुलो व आर्य शिक्षण संस्थाओ की ओर से भव्य अभिनन्दन किया गया । सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता में यह कार्यक्रम दिल्ली की प्रमुख आर्य समाज हनुमान रोड, मे सम्पन्न हुआ । इस स्वागत समारोह में सुप्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री, विद्वान लेखक, कुशल वक्ता व प्रशासक डा० धर्मपाल का दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, राजधानी की आर्य-समाजो व आर्य संस्थाओं के पदाधिकारियों द्वारा माल्यार्पण व पुष्प गुच्छों से हर्षोल्लास के वातावरण में हार्दिक अभिनन्दन किया गया । इस अवसर पर डा० साहिब की धर्मपत्नी श्रीमती कृष्णा का भी पुष्पमाला द्वारा स्वागत किया गया । मंच संचालन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने किया ।

स्वामी आनन्दबोध जी ने अध्यक्षीय भाषण में अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि डा० धर्मपाल ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री के पद पर रहते हुए भी शानदार काम किया है ।

उन्होंने कहा कि डा० धर्मपाल को जो फूलमालायें पहनायी गयी हैं उनमें हम सबकी शुभ कामनायें हैं । आर्य जगत आपके साथ है हमें आशा है कि अब गुरुकुल में एक नया प्रकाश आयेगा । दिल्ली का यह चलता फिरता आर्य-समाज बुराई से कभी समझौता नहीं करेगा । डा० धर्मपाल चुनौती का पूर्ण मुकाबला कर परीक्षा में खरे उतरेंगे । स्वामी जी ने कहा कि आज प्रमुख कार्य स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित इस गुरुकुल की छवि सुधारने का है । प्रभु से प्रार्थना है कि डा० धर्मपाल, अपने कार्य में सफल हों और हम तीन वर्ष के कार्यकाल की समाप्ति के बाद पुन: उनके कुलपति बनने पर लगातार इसी प्रकार स्वागत करते रहे ।

इस अवसर पर प्रो० शेरसिंह, स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती, पद्मश्री डा० श्यामसिंह जी, श्री सूर्यदेव, श्री प्रकाशवीर शास्त्री, श्री मनोहर विद्यालंकार श्रीमती शकुन्तला आर्या, डा० वाचस्पति उपाध्याय, डा० महेश विद्यालंकार सहित अनेको गणमान्य व्यक्तियो ने अपने विचार प्रकट किये ।

आर्य प्रति० सभा अमेरिका के तत्वावधान में तृतीय आर्य सम्मेलन सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के तत्वावधान में तृतीय आर्य सम्मेलन अमेरिका की नगरी शिकागो में १० तथा ११ जुलाई ९३ को बड़ी सफलता के साथ सम्पन्न हुआ । इस सम्मेलन मे भारत सहित विश्व के अनेक देशों के आर्य जनो ने उत्साह पूर्वक भाग लिया । लगभग ५०० से अधिक प्रतिनिधि सम्मेलन मे उपस्थित थे । सम्मेलन मे अनेक विषयो पर चर्चा हुयी । सम्मेलन की विस्तृत रिपोर्ट प्राप्त होने पर प्रकाशित की जायेगी ।

सम्मेलन, अभिनन्दन एवं योग शिविर

आर्य समाज श्रृंगार नगर लखनऊ मे २० जून, १९९३ को सप्तम आर्य युवा सम्मेलन हुआ । इसमें ५० बच्चो, किशोरों एवं नवयुवकों ने भजन, कविता, भाषण आदि के कार्यक्रम प्रस्तुत किये लखनऊ के प्रसिद्ध आर्य विद्वान पं० मुरारीलाल शास्त्री इसके मुख्य अतिथि थे । उनका अभिनन्दन किया गया । सम्मेलन की अध्यक्षता उ० प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व कोषाध्यक्ष श्री मदनलाल माथिकटाला ने की ।

तत्पश्चात २१ से २७ जून १९९३ तक चतुर्थ योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ ।

—पं० रूपचन्द्र 'दीपक', प्रधान

R N 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U (C) 93 Post in N.D.P.S.O.on 6-8-1993

श्री कृष्ण युग नायक थे

पं० नन्दलाल निर्भय सिद्धान्तशास्त्री
ग्राम पोस्ट बहीन जिला फरीदाबाद (हरियाणा)

हमें धर्म का पाठ पढाने, जन्म अष्टमी आई है।
श्रीकृष्ण की महिमा, स्वामी दयानन्द ने गाई है॥
वैदिक पथ को भूल गई थी, सुनो-सुनो दुनिया सारी।
आपा-धापी मची हुई थी, व्याकुल थे नर नारी॥
खाओ पीओ मौज उड़ाओ, कहते थे भ्रष्टाचारी।
भेद भाव और ऊंच नीच की पनप गई थी बीमारी॥
पढो महाभारत को जिसमे, लिखी कहानी पाई है।
श्रीकृष्ण की महिमा, स्वामी दयानन्द ने गाई है॥
जरासन्ध, शिशुपाल कंस से करते थे अत्याचार यहा।
देता था चहु ओर सुनाई, जग में हा हाकार यहा।
ऋषियों मुनियो को आतंकित करते थे गद्दार यहा।
सज्जन छुपते फिरते थे, थी दुष्टो की भरमार यहां॥
सत्यार्थ प्रकाश पढो यह, बात स्पष्ट दर्शाई है।
श्रीकृष्ण की महिमा स्वामी दयानन्द ने गाई है॥
श्रीकृष्ण ने ठोस कदम निर्भय हो सुनो उठाए थे।
वे महावीर बलशाली थे दुष्टो से ना घबराए थे॥
शिशुपाल कंस को मारा था, निर्बलो के कष्ट मिटाए थे।
मरवाया जरासन्ध पापी केशव प्रजा मन भाए थे॥
सम्राट युधिष्ठिर बनवाया, ये दुनिया [illegible] पाई है।
श्रीकृष्ण की महिमा, स्वामी दयानन्द ने गाई है॥
जीवन भर लड़े पापियों से, [illegible] सत-सहायक थे।
पर हितकारी, त्यागी, [illegible], श्रीकृष्णचन्द्र युग नायक थे॥
लेकिन हमने की कृतघ्नता योगी को भोगी बना दिया।
पर स्त्री गामी, चोर, मान करके है भारी पाप किया॥
मुकुट पहना कर नचा रहे, यह देख धर्म शर्माई है।
श्रीकृष्ण की महिमा, स्वामी दयानन्द ने गाई है॥
यदि श्रीकृष्ण की बातो को, ये दुनिया आज मान जाए।
दुष्टों का कहीं न नाम रहे, धरती पर स्वर्ग उतर आए॥
जागो जगके सब नर नारी, वैदिक पथको तुम अपनाओ।
दानव दलका संहार करो, निज नाम अमर तुमकर जाओ॥
जो जिए धर्म के लिए सदा, उनकी हो रही बड़ाई है।
श्रीकृष्ण की महिमा स्वामी दयानन्द ने गाई है॥

गुरुकुल करतारपुर मे गुरु विरजानन्द दिवस सम्पन्न

गतवर्ष की तरह इस बार भी गुरुकुल करतारपुर मे ३ जुलाई-९३ को गुरु विरजानन्द दिवस गुरु पूर्णिमा) पर्व बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया। यह कार्यक्रम प्रात ८ बजे बृहद यज्ञ के साथ आरम्भ हुआ। यज्ञ डा० नरेश कुमार आचार्य के ब्रह्मत्व मे सम्पन्न हुआ।

इसके पश्चात गुरु विरजानन्द सम्मेलन आरम्भ हुआ जिसके अध्यक्ष गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार, मुख्य अतिथि श्री सत्यानन्द मुंजाल हीरो साईकिल लुधियाना तथा उद्घाटन कर्ता श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज हरिद्वार रहे। सर्वप्रथम गुरुकुल के ब्रह्मचारियो ने संस्कृत मे स्वागत गान कर तीनो अभ्यागतो का पुष्प मालाओ से स्वागत किया। तदनन्तर पूज्य स्वामी सत्यानन्द जी का उद्घाटन भाषण हुआ, उसके पश्चात आचार्य रामप्रसाद जी ने गुरु पूर्णिमा के महत्व को स्पष्ट करते हुए अपने विचार व्यक्त किए। मध्य-मध्य मे गुरुकुल के ब्रह्मचारियो, श्री सत्यपाल पथिक श्री बीरेन्द्र कुलदीप ने अपने मनोहर भजनो से जनता को मन्त्रमुग्ध किया। इस अवसर पर आर्य समाजिक क्षेत्र मे सहयोग और सेवाओ को ध्यान मे रखत हुये कई व्यक्तियो को सम्मानित किया गया।

—सुखदेवराज शास्त्री
श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल, करतारपुर

शुभ विवाह

गत दिनांक ३१-४-९३ दिन सोमवार को भच्छी ग्राम निवासी वैदिक धर्मज्ञ श्री श्री वेदानन्द यादव के सुपुत्र श्री अशोक कुमार यादव का विवाह कबीर चक निवासी कमलेश यादव की सुपुत्री श्रीमती संगीता के साथ वैदिक रीति से श्री योग नारायण ठाकुर जी प्रधान आर्य समाज भच्छी एवं श्री हेमन्त कुमार जी के पौरोहित्य मे सोल्लास सम्पन्न किया गया।

सोमप्रकाश मल्होत्रा दिवगत

आर्य समाज अल्मोड़ा के प्रधान रह चुके तथा १९३९ के हैदराबाद सग्राम के आर्य सत्याग्रही श्री सोमप्रकाश जी मल्होत्रा का लम्बी बीमारी के पश्चात अल्मोड़ा मे दिनाक १२ ७ ९३ को ७३ वर्ष की अवस्था मे निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार वैदिक विधि से किया गया। वे अपने पीछे ३ पुत्र, १ पुत्री और नाती पोतो से युक्त भरा परिवार छोड़ गए हैं।

आर्य समाज अल्मोड़ा मे उनके सम्मान मे आयोजित शोकसभा मे उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई और परमात्मा से उनकी आत्मा की शांति तथा शोक सन्तप्त परिवार जनो की सान्त्वना के लिये प्रार्थना की गई।

मन्त्री, श्री जयदत्त शास्त्री

प० हरवंश लाल शर्मा पुनः प्रधान निर्वाचित

विगत ३ जुलाई ९३, शनिवार को श्री गुरु विरजानन्द भवन करतारपुर मे श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट करतारपुर का त्रैवार्षिक चुनाव सम्पन्न हुआ। जिसमे श्री प० हरवंशलाल जी शर्मा को तीसरी बार पुन सर्व-सम्मति से प्रधान चुना गया। इसी के साथ श्री चतुर्भुज मित्तल को मन्त्री, श्री यशपाल चन्द्र अग्रवाल को कोषाध्यक्ष, तथा श्री रोशनलाल गुप्ता को वरिष्ठ उपप्रधान चुना गया तथा शेष कार्यकारिणी के निर्माण का अधिकार प्रधान एवं मन्त्री को दिया गया।

आर्य लेखक सम्मेलन अल्मोड़ा में सम्पन्न

२५ से २७ जून तक अल्मोड़ा नगर में आर्य लेखक सम्मेलन का आयोजन किया गया। आर्य लेखक परिषद के सौजन्य से सम्पन्न इस सम्मेलन मे देश भर के प्रसिद्ध आर्य लेखको ने भाग लिया। श्री वेद प्रिय शास्त्री के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुए यज्ञ तथा "अदिति" नामक स्मारिका के विमोचन के साथ समारोह का उद्घाटन किया गया तीन दिन चले इस सम्मेलन में आर्य लेखको को सगठित करने पर बल दिया गया तथा लेखकों को निष्पक्ष लेखन के लिए प्रोत्साहित किया गया। इस अवसर पर परिषद की आगामी योजनाओं पर भी प्रकाश डाला गया।

आर्य समाज भच्छी का ४६ वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज भच्छी का ४६ वा वार्षिकोत्सव १७, १८, १९ एवं २० अप्रैल १९९३ को बड़ी धूमधाम से मनाया गया। तिथि १७, १८ एवं १९ अप्रैल को भच्छी मे एवं २० अप्रैल को फतुलाहा ग्राम, थाना बहेड़ा जिला दरभंगा मे ग्राम प्रचार किया गया। इस शुभावसर पर आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान एवं भजनोपदेशक श्री प० सत्यव्रत वानप्रस्थी, श्री नवलकिशोर शास्त्री, श्री कमलेशचन्द्र विश्वदर्शी एवं श्री दयानन्द सत्यार्थी आर्य भजनोपदेशको का प्रभावपूर्ण व्याख्यान एवं भजनोपदेश हुआ। स्थानीय जनता के ऊपर प्रचार का व्यापक असर हुआ।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन दिल्ली-२ से प्रकाशित।

महर्षि दयानन्द उवाच

- जैसे मै अपना और दूसरे मत-मतान्तरो का दोष पक्षपात रहित होकर प्रकाशित करता हू इसी प्रकार यदि सब विद्वान् लोग कर तो क्या कठिनता है कि परस्पर का विरोध छूट मेल होकर आनन्द म ग्न मन होके सत्य प्राप्ति सिद्ध हो।
- हठ दुराग्रह ईर्ष्या द्वेष और विरोध हटाने के लिये वाद विवाद किया गया है न कि इनको बढ़ाने के अर्थ क्योकि एक दूसर की हानि मे पृथक रह ।कर पर स्पर को लाभ पहुचाना हमारा मुख्य कर्म है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र   दूरभाष । ३२७४७७१   वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३१ अंक २७]   दयानन्दाब्द १६६   सृष्टि सम्वत् १६७२६४६०६४   भाद्रपद कृ० १२   सं० २०५० १५ अगस्त १६६३

ईसाई मिशनरी आतंकवाद की राह पर : रायगढ़ में प्रशासनिक सन्नाटा

ईसाई ननों की अगुवाई में सरकारी अधिकारी घण्टों बन्धक

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा प्रधानमन्त्री, गृहमन्त्री और मध्यप्रदेश के राज्यपाल से कड़ी कार्रवाई करने की माग

दिल्ली ७ अगस्त । सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा मे प्राप्त सूचनाओ के अनुसार पिछले दिनो मध्य प्रदेश के रायगढ जिले के महादेवगज नामक गाव मे ईसाईयो द्वारा आतकवाद का नगा प्रदर्शन किया गया और ईसाई ननो की अगुवाई म प्रशासनिक अधिकारियो और पुलिस बल को घण्टो बन्धक रखा गया था। इस घटना की कडी निन्दा करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि वहा बन्धक पुलिस कर्मियो के कपड तक उतार दिये गये और उनके साथ दुर्व्यवहार किया गया। वहा चर्चो मे खतरे की घण्टी बजाकर गाव वालो को परम्परागत हथियारा के साथ इकट्ठा किया जाता रहा और ननो को आग करके अधिकारियो थाना प्रभारी तथा जिला दण्डाधिकारी तक को बन्धक बनाया गया। जब स्थिति काबू स बाहर हो गई तो रात को रायगढ जिले का तमाम पुलिस बल घटना स्थल पर भजा गया तब जाकर बन्धको को छुडाया जा सका।

स्वामी जी ने कहा कि विदेशी धन क बल पर ईसाई मिशनरी आदिवासी लोगो का भय आतक तथा लोभ-लालच से धर्म परिवर्तन करने मे लगे हुए हैं। उन्होने कहा कि इस बात के भी पर्याप्त प्रमाण मिले है कि ईसाइ रायगढ को भारत के मानचित्र मे ईसाई बहुल जिले के रूप मे पहचान देना चाहते है।

स्वामी जी ने इस विषय म प्रधानमन्त्री गृहमन्त्री भारत सरकार तथा मध्यप्रदेश के राज्यपाल को विशेष पत्र लिखकर घटना की जाच कराकर दोषियो को कठोर दण्ड दिलाने के आदेश जारी कराने का माग की ताकि भविष्य मे अपराधियो को इस प्रकार क जघन्य कार्य करने का स हस न होने पावे।

स्वामी जी ने यह भी बताया कि व आर्य समाज के एक शिष्टमण्डल के साथ इन क्षेत्रो का व्यापक दौरा करेगे और वस्तु स्थिति का जायजा लेकर आर्य समाज के भावी कार्यक्रम की घोषणा करगे। —प्रचार विभाग सार्वदेशिक सभा

श्री मलकराज डावर द्वारा सात्विक दान

नई दिल्ली के श्री मलकराज डावर ई २७ अमर कालोनी लाजपत नगर निवासी ने सार्वदेशिक सभा के कार्यालय मे कृपा पूर्वक पधारकर सभा के महर्षि दयानन्द गो सम्वर्धन दुग्ध केन्द्र और आपात कालीन सहायता कार्यक्रमो के लिये क्रमश १० हजार और ५ हजार रुपए की राशि सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को भेंट की। स्वामी जी ने उनके इस सात्विक दान पर धन्यवाद प्रगट करते हुए आशा व्यक्त की कि इसी तरह अन्य दानी महानुभाव भी सभा के कार्यों मे सहयोग के लिये आगे आयगे। श्री मलकराज जी न सभा मे अपने माता पिता की स्मृति मे भी २० हजार रुपये की एक स्थिर निधि स्थापित की हुई है।

संस्कृत को उचित सम्मान देने की मांग

नई दिल्ली २ अगस्त। आज नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। नैतिक मूल्यो की रक्षा के लिए संस्कृत को उचित सम्मान देने की जरूरत है क्योकि संस्कृत ने हमारी संस्कृति की रक्षा की है। किसी एक जाति के मूल्यो का प्रश्न नही बल्कि यह मानव मात्र के मूल्यो की रक्षा का प्रश्न है।

संस्कृत को उचित दर्जा देने के लिए यह विचार डा कर्णसिंह ने हिन्दी संस्कृत अकादमी द्वारा संस्कृत दिवस के अवसर पर प्रकट किये।

संस्कृत दिवस के अवसर पर डा० के पी ए मेनन, डा० रामकरण शर्मा डा मडन मिश्र विश्वनारायण शास्त्री, अकादमी सचिव श्रीकृष्ण सेमवाल ने अपने विचार व्यक्त किए।

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्य समाजों में विवाहों के प्रस्तावित नियम

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक दिनांक २८ फरवरी १९९३ में आर्य समाजो मे कराये जा रहे विवाहों का विषय प्रस्तुत हुआ था। इस विषय पर कई सदस्यो ने अपनी-अपनी राय प्रकट की और यह निर्णय हुआ कि समस्त आर्य समाजो मे विवाह संस्कारो के लिए एक जैसे नियम लागू किये जाने चाहिए। कई आर्य समाजों में वैदिक सिद्धांतो के विरुद्ध बेमेल विवाह कराये जाने के कई प्रकरणों पर भी इस बैठक मे चर्चा हुई। जैसे ५० वर्ष के व्यक्ति का विवाह २२ वर्ष की कन्या से कराया जाना।

अन्तरंग सदस्यो के विचार से इन नियमो का निर्धारण करने के लिए एक ५ सदस्यीय उप समिति गठित की गई जिसमे मेरे अतिरिक्त सर्वश्री महावीर सिंह, सोमनाथ मरवाह, जयनारायण अरुण तथा सूर्यदेव जी सदस्य थे। इन सदस्यो ने विचारोपरान्त आर्य समाजो द्वारा वैदिक विवाह हेतु आवश्यक नियमो का एक प्रारूप तैयार किया हैं। जो कि निम्न प्रकार है –

नियम--

१—वर-कन्या दोनो के पृथक-पृथक प्रार्थना पत्र जिन पर एक दूसरे की स्वीकृति के हस्ताक्षर होंगे।

२—दोनो प्रार्थना-पत्रो पर दो सम्भ्रान्त व्यक्तियो, आर्य समाज के सभासदो द्वारा संस्तुति।

३—आयु प्रमाण पत्र (हाई स्कूल की सनद) आयु सीमा कन्या १८ वर्ष, वर २१ वर्ष। अशिक्षित होने की स्थिति में सी० एम० ओ० (मुख्य चिकित्सा अधिकारी का आयु प्रमाण पत्र)।

४—शपथ पत्र (बयान-ए-हल्फी) जिसमें नाम, वल्दियत, पता, आयु, शिक्षा, वर्तमान अवस्था विवरण, (विवाहित, अविवाहित, विधुर, विधवा--तलाकशुदा आदि) मानसिक स्थिति स्वस्थ्य, परस्पर रिश्ता (यदि कोई है) निषिद्ध नातेदारी, सपिण्ड-सगोत्र न होने की आस्था, विरुद्ध कोई पुलिस रिपोर्ट या कोर्ट केस न होने की आत्म स्वीकृति, लालच, दबाव, धमकी आदि न होकर स्वेच्छा से विवाह की स्वीकारी तथा बेमेल विवाह न होने का प्रमाण हो।

५—विधर्मी की स्थिति मे शुद्धि प्रमाण पत्र तथा नए नामो की घोषणा।

६—वर एवं कन्या के दो-दो फोटो ग्राफ (एक-एक प्रार्थना पत्र पर तथा एक-एक समाज के रिकार्ड के लिए)।

७—तीन गवाहों के हस्ताक्षर (विवाह के साक्षी के रूप मे मित्र या सम्बन्धी)।

८—नोटिस बोर्ड पर सूचना।

९—माता पिता को २० दिन का समय देकर सूचना तथा सहमति के लिये पत्र आर्य समाज द्वारा लिखा जाए।

१०—माता-पिता की असहमति होने पर उसके कारणो पर वैदिक सिद्धान्तानुकूल निर्णय आर्य समाज के प्रधान मन्त्री अथवा विशेष नियुक्त विद्वान द्वारा लिया जाय।

यदि असहमति जन्म गत जातिवाद के कारण या अमीरी गरीबी के कारण हो, परन्तु वर और कन्या की योग्यता लगभग समान हो तो उसकी परवाह किए बिना विवाह कराया जा सकता है।

यदि असहमति बेमेल विवाह जैसे आयु का अन्तर बहुत अधिक होना या किसी प्रकार का चरित्र दोष आदि के कारण हो तो ऐसे विवाहो को नही कराया जाए।

११ समाज के पत्राचार--एजेण्डा, कार्यवाही पंजिका तथा प्रमाण पत्र जिस पर प्रधान मन्त्री तथा पुरोहित के हस्ताक्षर तथा वर-कन्या के हस्ताक्षर विधिवत रजिस्टर के रूप में सुरक्षित रखे जायें।

इन नियमों को अगली अन्तरग सभा में अन्तिम स्वीकृति हेतु प्रस्तुत किया जायेगा। यदि आर्य विद्वान, पुरोहित अथवा सदस्य इनमें किसी प्रकार के संशोधन का सुझाव देना चाहते हों तो शीघ्रातिशीघ्र सार्वदेशिक सभा के कार्यालय में भिजवा दिये जायें।

—विमल वधावन एडवोकेट
संयोजक

कैसे स्वतन्त्रता दिवस मनाऊं

आज है स्वतन्त्रता दिवस, मैं कैसे खुशी मनाऊं।
भारत मे आतंक व्याप्त मै तो रुदन मचाऊं॥
भारत का कण-कण रो रहा, रो रही देश की माटी।
नारी विधवा बनी, अनाथ बन गए हजारो नाती॥
भारत के लाखो लाल मिटाए, फिर फिरे गुमराह लोगो ने।
वैद्य से सेनाध्यक्ष मिटाए, खूनी बर-बर दीवाने ने॥
आज न कोई प्राण सुरक्षित, मैं कैसे जान बचाऊं॥ मैं कैसे॥

शिक्षण लेकर आते अधर्मी, भारत देश को मिटा रहे।
आज करोड़ो हृदय तड़फते, खून की नदी बहा रहे।
दुनिया के सिरमौर भारत मे, मानव मास भी खाया जाता।
पनप रहे व्यापारी गुण्डो के, भोला मानव मारा जाता॥
नारी बिकती ना किसी देश में, यहा बिकती अबला बेचारी।
ब्लू फिल्म को देख-देखकर, खुशी मनाते व्यभिचारी॥
ऐसी तड़फन और घुटन मे क्या झूंठी खुशी मनाऊं॥ मैं कैसे ··

बगावत व देशद्रोह ने, चहु ओर आग लगाई।
आतंकवादी पापी दानव ने, हा-हा कार मचवाई॥
अवनि से अम्बर तक देखो, कोहराम मचा है भारत मे।
पहचान नहीं मानव दानव की, रिश्वत चोरी दुनिया में॥
जिन्दगी चलेगी रोनी कब तक, इसका किसी को पता नहीं।
मानव मानव का भक्षक होगा, किसी धर्म में लिखा नही॥
इस आग बरसती दुनिया मे, मैं कैसे गाना गाऊं। मैं कैसे ··

भारत का सिरमौर काश्मीर, सुलग रहा अलगाववादी लोगों से।
प्रहरी प्रान्त पजाब मिट रहा, खालिस्तानी खूंखार नागों से।
पाकिस्तानी चाल मिटा रही, भारत की सुख शांति को।
सफेदपोश भेड़िये खाते, भोली भाली जनता को॥
भाई भाई के खून का प्यासा, क्या ऐसे मे शीश उठाऊं।
आज है स्वतन्त्रता दिवस, मैं कैसे खुशी मनाऊं॥

रचयिता—पूर्ण प्रकाश मित्तल, बिजनौर

रक्षा बन्धन पर वृहद यज्ञ

बागपत। यहां आर्यसमाज बागपत द्वारा रक्षा बन्धन पर आर्य पर्व पद्धति के अनुसार विशेष यज्ञ किया गया। यज्ञोपरान्त आर्य विद्वान मा० मुरारीलाल जी सिद्धान्तशास्त्री ने रक्षा बन्धन पर्व को श्रावणी, ऋषि तर्पण व वेद उपाकर्म बताते हुए विस्तृत रूप से व्याख्या की उन्होने बताया कि वेदो का प्रचार प्रसार करना इस पर्व का मुख्य लक्ष्य है जगह जगह वेद पाठ के कार्यक्रम होने चाहिए। समारोह मे समाज के प्रधान जयप्रकाश वर्मा, सुभाष त्यागी एड०, प्रकाशचन्द्र आदि ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन समाज के मन्त्री मा० सत्यप्रकाश गोड़ ने किया।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व मे वेद प्रचार सप्ताह भी मनाया जायेगा।

—सत्यप्रकाश गोड़ मन्त्री

सम्पादकीय

सामयिक चर्चा तलाक

आज कल मुस्लिम समाज के मुल्ला-मौलवियों और उलेमाओं द्वारा जिस तरह दकियानूसी दृष्टिकोण अपनाया जा रहा है और इस सन्दर्भ में उदारवादी दृष्टिकोण को समझने तथा अपनाने से इन्कार किया जा रहा है। वह केवल इस बात का द्योतक है कि भारत में रहने वाला मुस्लिम समाज अभी भी न केवल मजहबी रूढ़िवाद और मजहबी अन्ध विश्वास से ग्रसित है। बल्कि यह मुल्ला-मौलवियों और उलेमाओं की गिरफ्त से चाहते हुए भी बाहर नहीं निकल पा रहा है।

नि:सन्देह जब तक यह स्थिति रहेगी तब तक मुस्लिम समाज न तो राष्ट्र की मुख्य धारा से जुड़ सकेगा न लोकतन्त्र के वास्तविक अर्थ को ही समझ सकेगा। और न ही उसे अधिकार प्राप्त हो सकेंगे जिनकी घोषणा भारतीय सम्विधान में की गई है। ऐसी दशा में देश का युवा मुस्लिम वर्ग न तो राष्ट्र व समाज के प्रति अपने दायित्वों और कर्त्तव्यों का सही ढंग से निर्वाह कर सकेगा और न इस सन्दर्भ में सजग ही रह सकेगा। यह स्थिति कुलमिला कर दुर्भाग्यपूर्ण है।

वैसे तो पति-पत्नि के मध्य स्थायी और पवित्र सम्बन्ध होने चाहिये लेकिन यदि कभी किसी टकराव या अन्य किसी कारण पृथक्त्व की स्थिति आ ही जाय तो विवाह-विच्छेद का निर्णय सोच-विचार कर लेना चाहिये। तलाकका निर्णय अगर-क्रोध उन्माद या दुर्भावनावश लिया जाता है—तो फिर भारतीय सम्विधान का दायित्व है कि वह उनके अधिकारों की रक्षा करें।

इसी प्रकार तलाक के विषय में भी रूढ़िवादी चिन्तन का परित्याग करना ही होगा। महिलाओं को पुरुषों की खेती माना है—ऐसा नहीं मानना चाहिये। जो अधिकार किसी महिला को प्राप्त नहीं है वह किसी पुरुष को दिये जायं ? यदि तलाक देने का अधिकार किसी पुरुष को है तो यह अधिकार एक महिला को भी मिलना चाहिये। यदि पुरुष अपनी वासना पूर्ति के लिए किसी अन्य महिला को खोजना चाहता है और पत्नि को तलाक देकर उसे त्यागना चाहता है तो इस कार्य को मान्यता नहीं मिलनी चाहिये। लेकिन पुरुष यदि अपने विचारों को बदलने में तैयार न हो तो यह कार्य एक सोची समझी प्रक्रिया के द्वारा ही होना चाहिये। यह चिन्ता की बात है कि सम्बन्ध विच्छेद मान लिया जाता है कि तलाक हो गया। इस तरह तलाक के बाद शौहर न तो अपनी बीबी को गुजारा-भत्ता देता है। और न ही बच्चों की परवरिश की व्यवस्था करता है।

आज मुस्लिम समाज की जो दुर्दशा है उसका बड़ा कारण शरियत के वे नियम हैं जो पुरुषों को महिलाओं पर अत्याचार करना तो सिखाते हैं किन्तु यह नहीं सिखाते कि महिलाओं का सम्मान किये बिना समाज और स्वयं को वास्तविक प्रगति नहीं हो सकती।

मुस्लिम समाज में तलाक की जो व्यवस्था है उस पर आज देश में एक अच्छी बहस चल रहा है।

लेकिन इस बहस के बाद भी इस समाजका जो रूढ़िवादी, प्रतिक्रियावादी तत्व है अपनी नीतियों में किंचिन्मात्र भी बदलाव नहीं लाना चाहता है। कितनी निन्दनीय स्थिति है। मुस्लिमवर्ग जरासे असन्तोष पर तलाक दे देता है और बच्चों को भूखा नादान मरने के लिये छोड़ देता है। पर इस जघन्य अपराध का इलाज न सरकार करती है और न मुस्लिम समाज ही इस पर विचार करता है।

हां भारतीय संविधान ने मुस्लिम तलाक की वर्तमान स्थिति पर परिवर्तन लाने के लिये अपने कदम उठाए हैं। पर इस्लामी रूढ़िवादिता के आगे वह किस प्रकार असहाय सिद्ध हो रहा है। आश्चर्य यह है कि इस चुनौती का सामना न तो संसद करना चाहती है और न देश के राजनीतिक दल ही।

अपने को प्रगतिशील कहने वाले वामपन्थी दल भी शरियत के रूढ़िवादी स्वरूप पर कोई टिप्पणी नहीं करना चाहते। वे शरियत के उन नियमों की भी आलोचना नहीं करना चाहते, जिन्होंने मुस्लिम समाज को मुल्ला और मौलवियों का गुलाम बना रखा है। निश्चित रूप से शरियत में वर्णित इस्लामी नियम भारतीय संविधान से ऊपर नहीं। पर यह कहने का साहस आज देश के अधिकांश दलों के पास नहीं है।

शरियत में अनेक ऐसी व्यवस्थायें हैं जो भारतीय संविधान की मूलभावना से मेल नहीं खाती और जो भारतीय संविधान के संकल्प व उद्देश्यों का अनादार करती हैं। वस्तुतः इन कमियों को दूर करने का संकल्प मुस्लिम समाज अब स्वयं ही लें। यदि शरियत के कमजोर पक्ष पर मुस्लिम समाज चुप रहता है तो निश्चित रूप से उसकी राष्ट्र निष्ठा पर प्रश्न चिन्ह लगेगा, साथ ही वह सन्देह के घेरे में भी आयेगा। उसे यदि राष्ट्र की मुख्य धारा से जोड़ना है तो शरियत की उन तमाम बातों से अपने को पृथक करना होगा जो भारतीय मानसिकता और राष्ट्र की मुख्यधारा से मेल नहीं खाती है।

आज मुस्लिम समाज की तलाक शुदा महिलाओं और उनके बच्चों का भविष्य पूरी तरह अन्धकार में है। तलाक शुदा महिलाओं के बच्चों की पूरी पीढ़ी घोर अशिक्षा, कुपोषण और भटकाव के अन्धकार में रहने के लिए मजबूर है परन्तु इसकी चिन्ता न तो इस्लाम के वर्तमान नेताओं को है और न उन मुल्ला-मौलवियों को जो कहते तो यह है कि मुस्लिम समाज में महिलाओं को बहुत उच्च स्थान प्राप्त है पर सोचते इसके बिल्कुल विपरीत हैं। उचित यह होगा कि मुस्लिम समाज का जो प्रबुद्ध वर्ग है वह इन मुल्ला-मौलवियों से अपने आपको मुक्त करायें। मुल्ला मौलवियों का यह शिकंजा मुस्लिम समाज को पिछड़पन की गहरी खाई में धकेल सकता है।

तलाक आदि के सन्दर्भ में शरियत के नियमों की जसी व्याख्या भारत में की जा रही है वह श्रेष्ठ मानव मूल्यों के विपरीत है। अतः उनका विरोध करना मानव का मुख्य कर्तव्य है।

मुल्ला और मौलवियों द्वारा इन नियमों की आड़ लेकर व गलत व्याख्या करके मुस्लिम समाज को राष्ट्र की मुख्यधारा से पहले ही पृथक् किया जा चुका है। अब इस समाज को मध्य युग में धकेलने की चेष्टा और इस सन्दर्भ में न्याय के सार्वभौमिक व नैसर्गिक सिद्धांतों की जिस तरह उपेक्षा की जा रही है तथा न्याय पालिका के निर्णयों तक की अवहेलना की जा रही है। यह सब कुछ मुस्लिम समाज को एक अन्धेरी खाई में धकेलने की साजिश है इस साजिश का मकसद मुस्लिम समाज पर चन्द मुल्ला-मौलवियों की पकड़ बनाए रखना है।

समय की मांग है कि संसद तलाक की अन्याय पूर्ण व्यवस्था को समाप्त करे और एक ऐसी व्यवस्था बनाए जिसमें मुस्लिम समाज की महिलाओं को भी वैसे ही अधिकार प्राप्त हो जैसे कि देश के अन्य समाज की महिलाओं को प्राप्त है। ●

मनुर्भव

विधाता ने तुझे मानव बना जग में पठाया है।
न हिन्दू बनाया है न मुस्लिम ही बनाया है॥

न था तू पादरी मुल्ला न पण्डित वैश्य और क्षत्री।
न था तू जाट गूजर न था कायस्थ न था खत्री॥
तेरा जब गर्भ के अन्दर सही नकशा बनाया है॥१॥

न कोई रखा अन्तर बनावट एक जैसी की।
चरण, कर, नेत्र, कानों की बनावट एक जैसी की॥
मनुज की एक जाती की न सूरत को मिलाया है॥२॥

जन्म से एक हम सब किन्तु कर्मों से बदल जाते।
सभी नौमास रहते गर्भ अन्दर कष्ट अति पाते॥
सुरासुर राम व रावण भी इससे बच न पाया है॥३॥

करम जैसा करे मानव वह 'रावण' देवता ईश्वर।
पढ़ो विख्यात रामायण कि डाकू चोर रतना कर॥
सुकर्मों से वही ऋषि वाल्मीक उत्तम कहाया है॥४॥
विधाता ने तुझे मानव बना जग में पठाया है॥

स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

क्रायोजेनिक राकेट समझौता रद्द होने का अर्थ

-- ओमप्रकाश हाथपसारिया --

अमेरिकी दबाव में रूस द्वारा क्रायोजेनिक राकेट इंजन समझौता रद्द किया जाना भारतीय अन्तरिक्ष कार्यक्रम के लिए दुखद प्रसंग है। सबसे अधिक असर जी एस एल की पहली उड़ान (१९९५-९६) पर पड़ा है। इंजन अनुपलब्ध होने के कारण फिलहाल यह कार्यक्रम अधर में झूलता नजर आ रहा है।

भारतीय अन्तरिक्ष कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य है-(क) देश के पिछड़े और अगम्य भागों तक विशेष संचार व्यवस्था का विस्तार करना तथा (ख) प्राकृतिक संसाधनों के समयोचित प्रबन्ध के लिए राष्ट्र व्यापी प्रणाली के विकास में सहायता करना। भारत में ऐसे विभिन्न क्षत्र हैं, जहां अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी का उपयोग किया गया है-इनमें दूरसंचार, दूरदर्शन-प्रसारण, मौसम की जानकारी, कृषि, वन, जल संसाधन व खनिज आदि से सम्बन्धित महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त करना उल्लेखनीय है।

भारत सरकार द्वारा १९७२ में अन्तरिक्ष आयोग तथा अन्तरिक्ष विभाग की स्थापना से संचार, मौसम-विज्ञान तथा संसाधन सर्वेक्षण और प्रबन्ध के क्षेत्रों के साथ-साथ इनसे सम्बद्ध उपग्रहों, राकेटों एवं भू-प्रणालियों के विकास के लिए अन्तरिक्ष कार्यक्रम की औपचारिक रूप से शुरूआत हुई। भारतीय अन्तरिक्ष कार्यक्रम के द्वारा भारत के आत्मनिर्भरता के लक्ष्य के साथ-साथ राष्ट्र की वैज्ञानिक प्रतिभा की उपलब्धियां उजागर होती है।

अब तक भारत द्वारा कई उपग्रह अन्तरिक्ष में छोड़े जा चुके हैं,इन प्रायोगिक उपग्रहों में १९ अप्रैल, १९७५ को 'आर्यभट्ट', ७ जून १९७९ तथा २० नवम्बर १९८१ को क्रमशः 'भास्कर-I' तथा 'भास्कर-II', १९ जून १९८१ को 'एप्पल' तथा २० मई १९९२ को रोहिणी श्रृंखला का 'श्रोस-सी' शामिल है। उपग्रह उपयोग सम्बन्धी परीक्षणों में १९७५-७६ मे उपग्रह शैक्षिक दूरदर्शन परीक्षण (साइट) १९७७-७९ में 'उपग्रह दूरसंचार परीक्षण परियोजना' (स्टैप), सुदूर-संवेदन उपयोग सम्बन्धी परीक्षण तथा एप्पल उपयोगिता कार्यक्रम महत्वपूर्ण है। अन्तरिक्ष सेवाओं में इन्सैट प्रणाली, इन्सैट-२ उपग्रह तथा सुदूर संवेदन उपग्रह (आई. आर. एस.) शामिल है।

भारतीय अन्तरिक्ष कार्यक्रम के अन्तर्गत राकेट छोड़े जाने की श्रृंखला में भारत की अन्तरिक्ष क्षमता में एक प्रमुख उपलब्धि जुलाई १९८० में एस. एल. वी.-३ के छोड़े जाने से प्रदर्शित हुई। इसने भू-कक्षा मे ४० कि. ग्रा. भार के रोहिणी उपग्रह को स्थापित किया। इस राकेट में ठोस ईंधन का प्रयोग किया गया। मई १९८१ तथा अप्रैल १९८७ मे इसकी दोऔर उड़ाने सफलतापूर्वक आयोजित की गयीं।

इसके पश्चात ए. एस एल. वी. डी. ३ (संवर्धित उपग्रह प्रमोचक राकेट) को २० मई, १९९२ को श्री हरिकोटा से छोड़ा गया। इसने 'श्रोस-सी' उपग्रह को भू-कक्षा में स्थापित किया। यह राकेट पांच चरण वाला ठोस ईंधन पर आधारित राकेट था। अब स्वदेशी ध्रुवीय उपग्रह राकेट पी.एस एस. वी. की प्रथम उड़ान १९९३ के लिए निर्धारित है। पी.एस. एल. वी. १००० कि. ग्रा श्रेणी के उपग्रहों को ९०० कि. मी. की ध्रुवीय सूर्य तुल्कालिक कक्षा में स्थापित करेगा। यह राकेट चार चरणों वाला है, जिसमें छह एस. एल. वी-३ के प्रथम चरण की मोटरें लगी है। इसके द्वितीय चरण में यूरोपीय राकेट एरियाने की द्रव इंजन प्रौद्योगिकी का प्रयोग हुआ है तथा तृतीय चरण में ठोस ईंधन पर आधारित इंजन और चतुर्थ में द्रव ईंधन आधारित इंजन का प्रयोग हुआ है।

अब तक जितने राकेटों का निर्माण किया गया वे ठोस ईंधन इंजन पर आधारित थे या यूरोपियन राकेट 'एरियाने की द्रव इंजन प्रौद्योगिकी पर आधारित थे परन्तु अब जी. एस. एल. वी. (भारतीय भू-तुल्यकालिक उपग्रह राकेट) जिसे २५०० कि ग्रा. भार के उपग्रहों की भू-स्थायी कक्षा में स्थापित करना है उसके विकास के लिए द्रव-ईंधन इंजन 'क्रायोजेनिक राकेट इंजन' की भारत को आवश्यकता थी। जी एस. एल. वी. के विकास के लिए क्रायोजेनिक राकेट इंजनों का उपयोग इसलिए किया जाने वाला था कि क्रायोजेनिक राकेट इंजन की विशेषता यह है कि यह इंजन अंतरिक्ष परिवहन के लिए सबसे अधिक सुविधाजनक है। और यह अधिकतम भार को बहुत अधिक दूरी तक ले जाने में पूर्णत सक्षम एवं सुरक्षित प्रौद्योगिकी पर आधारित है। यह इंजन 'द्रव-इंजन' प्रणाली पर आधारित है जिसमे 'आक्सीजन तथा हाइड्रोजन को द्रव अवस्था मे ईंधन के रूप मे प्रयोग किया जाता है। राकेट इंजन प्रायः ईंधन की दृष्टि से दो प्रकार के होते है-'ठोस ईंधन' पर आधारित और द्रव-ईंधन पर आधारित। ठोस ईंधन वाले राकेट इंजन की तकनीक सरल होती है। परन्तु ठोस ईंधन वाले राकेट मे मुख्य असुविधा यह होती है कि एक बार इसे प्रज्ज्वलित करने के बाद इसे नियंत्रित करना कठिन हो जाता है। और इसमे इसका ही अपना भार अधिक होता है। द्रव ईंधन वाले राकेट इंजनों में यह असुविधा नहीं होती है।

क्रायोजेनिक-राकेट इंजन जिस 'क्रायोजेनिक्स' नामक प्रौद्योगिकी पर आधारित है उसमे पदार्थ तथा उसकी अभिक्रिया स्थिति का शून्य से भी निम्न तापक्रम पर अध्ययन किया जाता है। इस तकनीक का सम्बन्ध प्रायः राकेट इंजनो के लिए अत्यधिक मात्रा मे द्रव आक्सीजन (एल ओ. २) तथा द्रव-हाइड्रोजन (एल. एम.-२) को बनाने की समस्याओं से है। आजकल क्रायोजेनिक प्रौद्योगिकी मुख्यत. हाइड्रोजन, आक्सीजन तथा हीलियम को द्रव अवस्था में लाने से सम्बद्ध है। द्रव अवस्था मे गसें अधिक सघन होती है और इस प्रकार इसे गैसीय अवस्था की अपेक्षा आसानी से नियंत्रित किया जा सकता है।

क्रायोजेनिक राकेट इंजन द्रवों के अनुसार चार प्रकार के होते है जो द्रव आक्सीजन तथा द्रव हाइड्रोजन, द्रव आक्सीजन तथा द्रव केरोसीन, द्रव फ्लोरिन तथा द्रव हाइड्रोजन और द्रव आक्सीजन डाइफ्लोराइड तथा द्रव हाइड्राजीन ईंधनो पर आधारित होते हैं। प्रायः अंतरिक्ष परिवहन प्रयोग के लिए क्रायोजेनिक इंजनो में ईंधन के रूप में द्रव आक्सीजन तथा द्रव हाइड्रोजन का ही प्रयोग हो रहा है। इसे क्रायोजेनिक' कहने का कारण यह है कि यह द्रव ईंधन को बहुत ही निम्न तापक्रम पर बनाए रखने की जटिल तकनीक पर आधारित है। इसी कारण इसमें उच्च शक्ति उत्पन्न होती है, जो उपग्रह को स्थापित करने की अंतिम अवस्था के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसकी तकनीक जटिल होने का कारण यह है कि इसमें ईंधन का तापक्रम अतिनिम्न बनाए रखने के लिए उष्मारोधी व्यवस्था के साथ-साथ द्रव हाइड्रोजन के विस्फोटक गुण से निपटने के लिए भी अच्छे यन्त्र व्यवस्थित होते हैं।

भारत भी क्रायोजेनिक प्रौद्योगिकी पर आधारित एक इंजन का विकास कर चुका है, परन्तु इसमे मात्र एक टन भार को उठाने की क्षमता है, जबकि भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के अगले राकेट जी. एस. एल. वी. का लक्ष्य २५०० कि. ग्रा. अर्थात लगभग दो-ढाई टन) श्रेणी के संचार उपग्रहों को भू-स्थायी कक्षा मे स्थापित करना है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के प्रमुख प्रो. यू. आर. राव ने भी यह स्पष्ट किया है कि भारत यह प्रौद्योगिकी इसलिए चाहता था कि ताकि वह इसका प्रयोग भू-तुल्यकालिक उपग्रह राकेट मे कर सके, जिसका उपयोग दो टन के लगभग इन्सैट किस्म के उपग्रहों को छोड़ने में किया जाएगा।

भारतीय अन्तरिक्ष कार्यक्रम की प्रोफाइल के अनुसार जी.एस.एल.वी. की प्रथम उड़ान १९९५-९६ के लिए निर्धारित है, जो अब क्रायोजेनिक राकेट इंजनों का सौदा रद्द होने के कारण अनिश्चित हो गयी है। अब भारत को इन राकेट इंजनों को यहीं विकसित करने के लिए एक नया कार्यक्रम तत्काल आरम्भ करना होगा, जिससे भारत के इन इंजनों की वर्तमान एक टन भारवाहक क्षमता को बढ़ाकर जी. एस. एल वी. के लक्ष्य दो-ढाई टन भारवाहक क्षमता का किया जा सके।

तब तक भारत को जी. एस. एल. वी. कार्यक्रम सन् १९९५-९६ के लक्ष्य से हटाकर इन इंजनो के विकास, निर्माण तथा परीक्षण तक स्थगित करना होगा। इससे भारतीय अन्तरिक्ष कार्यक्रममे एक नया अध्याय तो खुल जाएगा परन्तु वर्तमान गति के सूचकांक में निम्नता आ जाएगी, जो राष्ट्र के अंतरिक्ष-प्रौद्योगिकी पर आधारित लक्ष्यों की पूर्ति के लिए भी उचित नहीं है।

राष्ट्रीय चेतना के अग्रदूत—महर्षि दयानन्द सरस्वती

यशपाल आर्यबन्धु

भारत मे प्रसुप्त राष्ट्रीय चेतना को जगाने मे उन्नीसवी शताब्दी का विशेष योगदान रहा है। अनेको महामानवो ने इस शताब्दी मे जन्म लेकर भारतीय राष्ट्रीय नवचेतना का शख फूका था। आर्य समाज के यशस्वी सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती उनमे अग्रगण्य हैं। राष्ट्रीय चेतना के जो स्वर महर्षि के उस समय सुनाई देते थे, उनकी कोई उपमा नही मिलती। भारत का सम्पूर्ण क्षितिज उस समय महर्षि के जागृतनाद से गुजायमान हो रहा था। इस पर भी इतिहासकारो ने उनकी प्राय उपेक्षा ही की है और यदि कही वर्णन किया भी है, तो नितान्त बेमन से। हा! कुछेक निष्पक्ष इतिहासकारो ने उनके कार्य का मूल्याकन अवश्य किया है। और वे इसी निष्कर्ष पर पहुचे हैं कि महर्षि दयानन्द सही अर्थों मे भारतीय राष्ट्रीय चेतना के अग्रदूत एव स्वतन्त्रता तथा स्वदेशी आदि के मन्त्रदाता ऋषि थे। भारत म प्रसुप्त राष्ट्रीय चेतना जगाने वाले वही प्रथम महामानव थे।

भारत के राष्ट्रीय रगमच पर महर्षि दयानन्द के आगमन से पूर्व देश में सर्वत्र घोर निराशा के घने बादल छाये हुए थे। शताब्दियो से विदेशी दासता से जकडे होने के कारण देशवासी अपना जातीय स्वाभिमान और राष्ट्रीय गौरव को सर्वथा भूल चुके थे। सन १८५७ की क्राति की विफलता के पश्चात तो राष्ट्रीय स्वाभिमान जैसी कोई वस्तु भारत मे शेष नही बच पाई थी। मैकाले की दुर्भावनापूर्ण कूटनीति से उपजी शिक्षा ने रही-सही कसर पूरी कर दी। पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान ने भारतीय रूढियो पर एक और प्रबल प्रहार किया जिसके फलस्वरूप भारतवासी द्रुतगति से स्वधर्म, स्वसस्कृति, स्वभाव और जातीय स्वाभिमान से दूर जाने लग गये।

ऐसी भयावह स्थिति मे महर्षि का आगमन हुआ था। उन्होने इस सारी स्थिति का अति सूक्ष्मता से अध्ययन किया और देश को इस सकट से उबारने का सत्सकल्प लिया। यह कार्य कोई सरल नही था पर महर्षि दयानन्द जैसे सुदृढ निश्चय वाले व्यक्ति के लिए कठिन क्या और सरल क्या? युग परिवर्तन का भाव तथा नवजागृति का सन्देश लिए जब महर्षि आये तो उस समय लोगो ने उन्हे पहचाना ही नही। धर्म के नाम पर पाखण्ड की जब उन्होने धज्जिया उडानी प्रारम्भ की तो तब कोई तो उन्हे नास्तिक कहने लगा तो कोई ईसाइयो का गुप्त एजेण्ट। किन्तु उनके राष्ट्र हितैषी स्वरूप को लोग पहचान नही पाये। इतना ही नही लोग उन्हे अपना विरोधी तक समझने लग गये। जैसे प्रगाढ निद्रा म सोये हुए किसी बालक को हठात जगाने से वह अपनी अप्रसन्नता प्रकट करता है और मचलता एव रोता है वैसे ही जन जागरण मे भी लोग अपनी मोहनिद्रा और प्रमाद को त्यागने के लिए शीघ्रता से तत्पर नही होते। पर किसी भी सुधारक के लिए देशवासियो को मोहनिद्रा से जगाना परम आवश्यक हुआ करता है। जन-जागरण का कार्य अत्यन्त कठिन होता है क्योकि उसमे परम्पराओ और रूढियो की परतें तोडनी पडती हैं जिसके लिए समाज सरलता से तैयार नही होता। वह अपनी उन्ही पुरानी घिसी-पिटी रूढिवादी परम्पराओ से लिपटा रहना चाहता है। अत उस जागृति की उस लहर का विरोध करने लग जाता है। प्राय ऐसा समझा जाता है कि जैसे कोई उन्हे पथभ्रष्ट अथवा गुमराह करना चाहता हो। ऋषि दयानन्द इसके अपवाद नही थे। उन्हे भी ऐसी सारी परिस्थितियो का सामना करना पडा था।

महर्षि दयानन्द के आगमन से पूर्व भी जागृति के सन्देशवाहक कई महामानव आये थे पर महर्षि की बात ही कुछ और थी क्योकि जैसा कि योगी अरविन्द का कथन है— वे मूलत राष्ट्रवादी थे और राष्ट्रीय भावनाओ को उद्दीप्त करने म वे सफल भी हुए। विपिनचन्द्र पाल ने उनके सम्बन्ध मे ठीक ही कहा है कि 'वह दयानन्द ही था जिसने उस आन्दोलन की आधारशिला रखी जो बाद मे धार्मिक राष्ट्रीयता के नाम से जाना गया।' धर्म मे राष्ट्रीयता की भावना भरना महर्षि दयानन्द का ही काम था। उन्होने अपनी आध्यात्मिक प्रार्थनाओ तक म राष्ट्रीयता के स्वर भर दिये थे। आर्याभिविनय जसी उच्च कोटि की आध्यात्मिक प्रार्थनाओ की पुस्तक मे वे स्थान-स्थान पर आर्यों के अखण्ड सार्वभौम, चक्रवर्ती साम्राज्य की कामना करना नही भूले। 'अन्य देशवासी हम पर कभी शासन न करें।' आर्याभिविनय की एक प्रार्थना के उपरोक्त शब्दो को आधार बना कर पटियाला षड्यन्त्र अभियोग मे विशेष ट्रिब्यूनल के सम्मुख अग्रेज वकील एडवर्ड्स ने अग्रेजी शासन के विरुद्ध विद्रोह भडकाने का आरोप लगाया था। इससे बढकर धर्मिक राष्ट्रीयता का प्रमाण और क्या हो सकता है? महर्षि ने उस समय अपने ग्रन्थो म स्थान-स्थान पर स्वराज्य, साम्राज्य, और चक्रवर्ती राज्य की चर्चा की थी कि जब किसी ने स्वराज्य अथवा स्वशासन की अभी कल्पना तक भी नही की थी। और सत्य तो यह है कि स्वराज्य की भावना तो दूर, लोग स्वराज्य शब्द तक को नही जानते थे। डा० भक्तराम शर्मा के अनुसार तो उस समय के शब्दकोषो म शब्द स्वराज्य भी नही मिलता। इतिहास साक्षी है कि उस समय के किसी भी गद्य अथवा पद्य साहित्य मे स्वराज्य की भावना की कही कोई चर्चा नही मिलती। न ही जन्मभूमि अथवा राष्ट्रभक्ति पर कोई कविता या लेख आदि ही कही देखने को मिलता है। राजा राम मोहन राय, केशवचन्द्र सेन, रानाडे आदि सरीखे राष्ट्रनेता ब्रिटिश शासन को ईश्वरीय वरदान मानते थे। और तो और स्वय गाधी जी भी पर्याप्त समय बाद तक भी साम्राज्य दिवस के रूप मे मनाये जाने वाले विक्टोरिया दिवस को एक पवित्र दिवस मानते रहे है। कांग्रेस के मच से सन १९२९ ई० म पूर्ण स्वराज्य का ध्येय स्वीकारा गया था, परन्तु महर्षि दयानन्द ने तो कांग्रेस की स्थापना से भी दस वर्ष पूर्व स्वराज्य प्राप्ति का शख फूक दिया था। डा० विजेन्द्रपालसिंह का यथार्थ कथन है कि 'स्वामी दयानन्द ने 'आर्यावर्त्त आर्यों के लिए' का जो सन्देश देशवासियो को दिया था, सन १९०६ ई० म कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन मे भारतवर्ष भारतीयोके लिए" रूप मे दोहराया गया' (द्रष्टव्य-भारतीय राष्ट्रवाद और आर्य समाज आदोलन पृष्ठ ६) डा० पट्टाभिसीतारमैया ऐसा मानते थे कि स्वराज्य के जो स्वर १९०६ ई० मे कांग्रेस के मच पर मुखरित हुए उसकी सम्पूर्ण योजना और कार्यक्रम आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने १८७५ मे ही देशवासियो को दे दी थी।

उपरोक्त तथ्यो और प्रमाणो से यही प्रकाशित होता है कि महर्षि दयानन्द भारतीय राष्ट्रीय चेतना के अग्रदूत एव स्वराज्य के प्रथम उद्घोषक थे। दादाभाई नौरोजी, गोखले, तिलक, गाधी और नेहरू आदि राष्ट्रनेताओ ने मात्र स्वराज्य के उसी मत्र को दोहराया था जो वर्षों पूर्व महर्षि दयानन्द सरस्वती दे गय थ। सुप्रसिद्ध इतिहासकार यदुनाथ सरकार ठीक ही कहते हैं कि— जब भारत के उत्थान का इतिहास लिखा जायेगा तो उस नगे फकीर दयानन्द सरस्वती को उच्च स्थान दिया जायेगा। स्वामी सत्यानन्द जी के शब्दो मे— समय आयेगा जब भारत की भावी सन्तति अपने जातीय मन्दिरो मे स्वायत्त शासन की देवी का पूजन करने से पूर्व उस पहले पहल आहूत करने वाले देव स्वरूप दयानन्द का प्रथम अर्चन किया करेगी।' (श्री मद्दयानन्द प्रकाश पृष्ठ ५१० और श्रीमती एनीबीसेन्ट के शब्दो मे—' जब स्वराज्य मन्दिर बनेगा तो उसमे बडे बडे नेताओ की मूर्तिया होगी और सबसे ऊची मूर्ति दयानन्द की होगी।

—आर्य निवास, चन्द्र नगर, मुरादाबाद-२४४००२

आर्य समाजों के निर्वाचन

आर्य समाज वीरभद्र ऋषिकेश—श्री ज्ञानेश्वरदास प्रधान, श्री शिवचरण जी म त्री श्री गणेश नारायण माथुर कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज खैल बाजार पानीपत—सेठ रामकिशन जी प्रधान, श्री राजेश आर्य मन्त्री, श्री राजेन्द्र प्रसाद आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज शक्ति नगर सोनभद्र—श्री शरद कुमार कमानी अध्यक्ष श्री शिवकरण दुबे मन्त्री श्री सुभाषचन्द्र कोषाध्यक्ष चुने गये।

तलाक पर अलग अलग पंथों के विचार

मुसलमानों में शरीअत की व्याख्या करने वाले चार प्रमुख पंथ हैं। ये उन चार इमामों के नामों से जाने जाते हैं, जिन्होंने अपने-अपने ढंग से शरीअत की व्याख्या की है, यानी अपना-अपना फिक्ह पेश किया है। ये वैचारिक वर्ग हैं-हनफी, मलिकी, हंबली और शाफई। और इनके इमाम या प्रवर्तक हैं-इमाम अबू हनीफा, इमाम मालिक, इमाम अहमद बिन हंबल और इमामों की व्याख्या मे कुछ बिन्दुओं पर मतांतर है। एक पांचवा वर्ग अहले-हदीस का है जो इन चारो में से किसी इमाम पर निर्भर नही करता, बल्कि शरीअत को सीधे कुरआन-हदीस से समझने का दावा करता है। और छठवां वर्ग शिआओ का है, जिसकी अपनी अलग व्याख्या है।

१. हनफी :—इनके अनुसार तलाक की तीन किस्मे हैं-अहसन, हसन और बिदअत। अहसन वह तलाक है जो ऐसे 'तुहर' (मासिक धर्म के अलावा महीने के सामान्य दिन) में दी जाए, जिसमें सहवास न किया गया हो और जिसमे एक तलाक देकर 'इद्दत' (तीन महीने) की मुद्दत गुजरने दी जाए। हसन वह तलाक है जो हर 'तुहर' में एक-एक बार दी जाए। इस सूरत में तीन तुहरो मे तीन तलाक देना भी 'सुन्नत' के खिलाफ नहीं है, हालांकि बेहतर यह है कि एक ही तलाक देकर इद्दत गुजर जाने दी जाए। एक साथ तीन तलाकें देने के तरीके को बिदअत तलाक कहा गया है। वह तलाक भी बिदअत है जो एक ही तुहर के अन्दर अलग-अलग वक्त में तीन बार दी जाए। वह तलाक भी बिदअत है जो मासिक धर्म की हालत मे दी जाए और वह भी जो ऐसे तुहर में दी जाए, जिसमें पति सहवास कर चुका हो।

२. मालिकी :—इनके यहा भी तलाक की तीन किस्मे हैं-सुन्नत, बिदई मकरूह और बिदई हराम। तुहर की हालत में सहवास किए बिना सिर्फ एक तलाक देकर इद्दत गुजर जाने दी जाए तो यह सुन्नत तलाक है। बिदई मकरूह उस तलाक को कहा गया है, जो ऐसे तुहर मे दी जाती है, जिसमें पति सहवास कर चुका हो। सहवास के बिना एक तुहर मे एक से ज्यादा तलाकें देना या इद्दत के अन्दर अलग-अलग तुहरो मे तीन तलाकें देना या एक ही वक्त मे तीन तलाकें देना भी 'बिदई मकरूह' के अन्तर्गत आता है। और 'बिदई हराम' वह तलाक है जो मासिक धर्म की अवस्था में दिया जाए।

३. हंबली :—इस वर्ग या पंथ के अनुसार तलाक का सुन्नत तरीका यह है कि तुहर की हालत में सहवास किए बिना तलाक दिया जाए और फिर इद्दत गुजरने दी जाए। लेकिन तीन तुहरो मे तीन अलग-अलग तलाकें दें या एक ही तुहर मे तीन तलाक दे या एक ही वक्त में तीन तलाक दे दें या मासिक धर्म की हालत मे तलाक दिया जाए या ऐसे तुहर मे तलाक हो, जिसमें सहवास किया गया हो और औरत का गर्भवती होना प्रकट न हुआ हो तो ये सब तलाक 'बिदअत' और हराम हैं।

४. शाफई : इनके अनुसार 'सुन्नत' और 'बिदअत' का फर्क वक्त के लिहाज से है न कि तादाद के लिहाज से इनके मत के अनुसार ये तमाम तलाक बिदअत और हराम हे यानी निषिद्ध हैं—मासिक धर्म वाली सहवास शुदा औरत को मासिक धर्म की हालत मे तलाक देना, जो औरत गर्भवती हो सकती हो उसे ऐसे तुहर मे तलाक देना जिसमे सहवास हो चुका हो और गर्भ प्रकट न हुआ हो।

अहले-हदीस :—यह मतवर्ग, जो इमामो की व्याख्याओ पर निर्भर नहीं करता और जिसके कारण इसे गैरमुकल्लिद' कहा जाता है, तलाक के उस तरीके का समर्थन करता है, जिसे हनफी मत-वर्ग ने अहसन तलाक कहा है। इनकी स्पष्ट राय है कि एक ही बार मे तीन तलाकें देना गलत है और यह तरीका दूसरे खलीफा हजरत उमर के जमाने मे विशेष परिस्थितियों में प्रचलित हुआ। अब वे परिस्थितिया खत्म हो गई हैं, इसलिए इस तरीके को समाप्त कर देना चाहिए।

कि०स०

(जनसत्ता से साभार)

कुरान क्या कहता है ?

और तलाक शुदा औरतें अपने आपको तीन मासिक धर्मों तक इन्तजार मे रखें और उनके लिये जायज नहीं कि वे उसे छुपाएं, जो अल्लाह ने उनके गर्भ मे पैदा किया है। अगर वे अल्लाह और आखिरत के दिन पर विश्वास करते हैं और इस (अवधि) मे उनके पति उनको वापस लेने के लिए ज्यादा हकदार हैं, अगर वे सुलह चाहें (बकर: २२८)।

तलाक दो बार है। फिर भले तरीके से रखना या अच्छे व्यवहार के साथ विदा करना है (बकर: २२९)।

फिर अगर वह उसे (तीसरी बार) तलाक दे तो वह औरत उसके लिये हलाल नहीं, यहा तक कि वह किसी दूसरे पति से निकाह करे। फिर अगर वह उसे तलाक देदे तो इन दोनो पर कुछ गुनाह नहीं कि वे एक दूसरे की तरफ लौट आएं (बकर: २३०)।

और जब तुम औरतो को तलाक दो फिर वे अपनी मियाद (इद्दत) को पहुंचने लगे तो या तो उन्हे अच्छी तरह रखो या भले तरीके से विदा कर दो और उनको दुख देने के लिये न रोके रखो ताकि तुम ज्यादती करो।

(बकर २३१)।

ऐ नबी, जब तुम लोग औरतो को तलाक दो तो उन्हें उनकी इद्दत के लिए तलाक दिया करो और इद्दत के वक्त की ठीक-ठाक गिनती करो और अल्लाह से डरो जो हमारा रब है। (इद्दत के समय में) न तुम उन्हें उनके घर से निकालो और न वे खुद निकलें, सिवा इसके कि वे किसी खुली बेहयायी में पड़ गई हो। यह अल्लाह की तय की हुई हदें है और जो कोई अल्लाह की हदो को लाघेगा वह अपने ऊपर जुल्म करेगा। तुम नही जानते, शायद इसके बाद अल्लाह (सुलह की) कोई बात पैदा कर दे। फिर जब वे अपनी इद्दत की मुद्दत के खात्मे पर पहुचे तो या तो उन्हें भले तरीके से (अपने निकाह मे) रोके रखो या भले तरीके से उनसे जुदा हो जाओ। और दो ऐसे आदमियों को गवाह बना लो जो तुम इंसाफ पसन्द हो और गवाही ठीक-ठाक अल्लाह के लिए अदा करो। (सूर: तलाक. २)

सार्वदेशिक के ग्राहकों से

सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहको से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क भेजते समय या पत्र व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या का उल्लेख अवश्य करें।

अपना शुल्क समय पर स्वत: ही भेजने का प्रयास करें। कुछ ग्राहकों का बार बार स्मरण पत्र भेजे जाने के उपरान्त भी वार्षिक शुल्क प्राप्त नहीं हुआ है अत: अपना शुल्क अविलम्ब भेजें अन्यथा विवश होकर अखबार भेजना बन्द करना पड़ेगा।

"नया ग्राहक" बनने समय अपना पूरा पता तथा 'नया ग्राहक" शब्द का उल्लेख अवश्य करें। बार बार शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिये, एक बार १०० रुपये भेजकर सार्वदेशिक के आजीवन सदस्य बने।—प्रबन्धक

आजादी की लड़ाई में गीतों का योगदान

—श्रीसुरेन्द्र कुमार सिन्हा,

साहित्य मे पद्य का विशिष्ट स्थान है। प्रभावशाली पद्य रचयिता के सीधे हृदय से निकलता है और पाठक या श्रोता के मन पर सीधा प्रभाव डालता है। इसलिए विश्व के सभी राष्ट्रीय आन्दोलनो मे जन भावनाओ को उभारने मे गीतो की विशेष भूमिका रही है। भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन मे भी गीतो ने अपनी यह भूमिका बडी सफलता से निभायी। अनेक क्रान्तिकारी गीत लिखे गये जिन्हें जनसमुदाय बडे उत्साह के साथ समवेत रूप मे सभाओ मे और जुलूसो मे गाते और किसी भी बडे खतरे से टकरा जाते। इन गीतो को गाते हुए अनेक क्रान्तिकारी शहीद हसते हसते फासी पर चढ जाते और दूसरो के लिए अमर प्रेरणा स्रोत बन जाते स्वभावत इन गीतो से अग्रेजी सरकार बहुत आतकित रहती और इसलिए उसने इनमे से अनेक गीतो के प्रकाशन और गायन पर प्रतिबन्ध लगा दिया। फिर भी इस प्रकार के क्रान्तिकारी गीतो का न तो प्रकाशन ही रुका और न गायन। एक पैसे से चार आने तक के लागत मूल्य मे इन गीतो का छोटी छोटी पुस्तको के रूप मे गुप्त रूप से बाजार मे लाया जाता और वह हाथो-हाथ बिक जाती। लोग उन्हें कण्ठस्थ करके पुस्तको को अन्य व्यक्तियो को दे देते और इस प्रकार उन गीतो का प्रचार प्रसार अनायास ही देश के कोने कोने मे हो जाता। फिर वे गीत चौपालो, सभाओ, जुलूसो और प्रभातफेरियो मे हजारो लाखो कण्ठो से गूज उठते।

राष्ट्रीय आन्दोलन के समय गाये जाने वाले गीतो की जिन पुस्तिकाओ को सरकार के द्वारा प्रतिबन्धित किया गया था उनकी जानकारी पुराने सरकारी रिकार्ड मे उपलब्ध है। इस प्रकार के हिन्दी गीतो की पुस्तिकाओ की सख्या २६४ है। इनके अतिरिक्त अन्य भाषाओ के गीतो की जिन पुस्तिकाओ को सरकार द्वारा प्रतिबन्धित किया गया था उनकी सख्या तत्कालीन सरकारी रिकार्ड के अनुसार इस प्रकार है—उर्दू ५८ मराठी ३३, गुजराती-२२ पजाबी-२२ तामिल-१९, तेलगू-१०, सिधी ६, बगाली-४, कन्नड ३ उडिया १,। ऐसे गीत या गीत पुस्तिकाओ के बारे मे पर्याप्त जानकारी उपलब्ध नही है जो सरकार द्वारा प्रतिबन्धित नही की गयी थी गीतो के रचयिताओ के बारे मे भी आधी-अधूरी जानकारी प्राप्त है। जो भी गीत और गीतकार हमारी जानकारी मे हैं, व सब आज हमारी राष्ट्रीय धरोहर के अश हैं। यह भी उल्लेखनीय है कि विभिन्न भाषाओ की इन अधिसख्यक पुस्तको को देवनागरी लिपि मे ही छापा गया था।

विभिन्न भाषाओ की इन अधिसख्यक पुस्तको को देवनागरी लिपि मे ही छापना एक अर्थ रखता है।

सरकार द्वारा जब्त शुदा राष्ट्रीय गीतो मे सर्वाधिक लोकप्रिय और उल्लेखनीय गीत था "वन्दे मातरम्"। सुप्रसिद्ध बगला लेखक श्री बकिम चन्द्र चटर्जी ने इस गीत को १८७५ मे लिखा और बाद मे इसे अपनी पुस्तक (उपन्यास) "आनन्द मठ" मे सम्मिलित किया। 'आनन्द मठ' बगाली राष्ट्रीयता की गीता के नाम से जाना जाता है। उसके गीत वन्दे मातरम् ने भी राष्ट्रीय आन्दोलन मे महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। उन दिनो अनेक भारतीय एक दूसरे से मिलने पर अभिवादन मे वन्दे मातरम् ही कहते थे। इस सुपरिचित गीत को देश के कोने कोने मे बडे उत्साह से गाया जाता और हमारे राष्ट्रीय शहीद इसे गाते हुए प्रसन्नता के साथ मृत्यु का आलिगन कर लेते। अग्रेजी सरकार ने इसके गायन पर कठोर प्रतिबन्ध लगाया और अनेक स्थानो पर शिक्षण सस्थाओ मे छात्रो से बार-बार लिखवाया गया कि वे 'वन्दे मातरम्' नही गायेंगे। इसके बावजूद 'वन्देमातरम्' का गायन रुका नही। उसकी लोकप्रियता निरन्तर बढती ही रही। बाद मे सविधान सभा ने भी राष्ट्रीय आन्दोलन मे 'वन्दे मातरम्' की महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार करते हुए इसे राष्ट्र गीत 'जन गण मन' के समान ही स्थान दिया।

'वन्दे मातरम्' गीत की लोकप्रियता पर भी अन्य अनेक गीत उन दिनो विभिन्न व्यक्तियो द्वारा लिखे गए। उदाहरण के लिए इस गीत को देखें—

छीन सकती है नही सरकार 'वन्देमातरम्।
हम गरीबो के गले का हार 'वन्देमातरम्॥
मौत के मुह मे खडा कह रहा जल्लाद से।
झोक दे सीने मे यह तलवार 'वन्देमातरम्॥
ईद होली और दशहरा शुबरात से भी सौ गुना।
है हमारा लाडला त्योहार 'वन्दे मातरम्॥

देश को सभी धर्म और जातियो से ऊपर समझने की यह भावना विशेष रूप से अनुकरणीय है।

श्री श्याम लाल गुप्त पार्षद द्वारा लिखित गीत झडा गीत की भी राष्ट्रीय आन्दोलन मे विशिष्ट भूमिका रही। अमर शहीद गणेश शकर विद्यार्थी ने विशेष आग्रह करके यह गीत १९२४ मे पार्षद जी से लिखवाया था। इस गीत को जितनी लोकप्रियता मिली उसकी कल्पना तो स्वय उसके रचयिता ने भी नही की थी। जनसमुदाय जब अपने राष्ट्रीय झडे की वन्दना करते हुए इन पक्तियो को गाता तो वह उत्साह से झूम उठता—

शान न इसकी जाने पाये
चाहे जान भले ही जाए
विश्व विजय करके दिखलायें
तब होवे प्रण पूर्ण हमारा,
झडा ऊचा रहे हमारा॥

बहुत कम लोगो को शायद यह मालूम है कि देश के अनेक क्रान्तिकारी शहीद बहुत अच्छे साहित्यकार भी थे। काकोरी काड के अमर शहीद पडित रामप्रसाद 'बिस्मिल' द्वारा लिखा हुआ यह गीत क्रान्तिकारियो मे अत्यधिक लोकप्रिय था—

सरफरोशी की तमन्ना, अब हमारे दिल मे है।
देखना है जोर कितना, बाजुए कातिल मे हैं॥
अब न अगले वलवले है, और न अरमानो की भीड़
सिर्फ मिट जाने की हसरत, इक दिले बिस्मिल मे है।

देश के प्रसिद्ध कवियो मे माखन लाल चतुर्वेदी, सोहन लाल द्विवेदी, सुभद्रा कुमारी चौहान तथा राष्ट्र कवि मैथिली शरण गुप्त, सर्व श्री सुधियानवी जोश मलिहाबादी आदि के भी अनेक गीत लोगो की जुबान पर थे। इन पक्तियो को तो जन साधारण अक्सर ही गुन-गुनाता रहता था

वदना के इन स्वरो मे
एक स्वर मेरा मिला लो।
शीश कटते जहा अनगिन
एक सिर मेरा मिला लो॥

अथवा

जुडेगे हर बरस मेले, शहीदो की चिताओ पर
वतन पर मरने वालो का यही बाकी निशा होगा॥

हमारा यह दुर्भाग्य है कि अनेक गीतो के रचयिताओ के नाम तक हमे मालूम नही। केवल कुछ रचयिताओ की ही जानकारी है।

लेखकों से निवेदन

जैसा कि आपको विदित है कि "सार्वदेशिक साप्ताहिक" आर्य जगत का सर्वोत्कृष्ट अखबार है। यह देश तथा विदेश के सहस्रो परिवारो, पुस्तकालयो तथा विद्यालयो मे नियमित रूप से पढा जाता है। सार्वदेशिक के पाठको को विद्वतापूर्ण लेख, सामाजिक विचारो तथा धार्मिक, राजनैतिक और सामाजिक दृष्टिकोण की जानकारी देने हेतु आप अपनी नवीन रचनायें भेजकर अनुगृहीत करें।

किसी भी अक विशेष मे प्रकाशनार्थ सामिग्री अथवा समाचार विशेषतया पर्व एव विशिष्ट व्यक्ति के जन्म अथवा पुण्य तिथि से सम्बन्धित लेख कम से कम १५ दिन पूर्व भेजना चाहिये।

लेख अथवा अन्य सामिग्री साफ शब्दो मे लिख कर अथवा टाइप करा कर ही भेजें तथा स्थान का ध्यान रखते हुये अधिक लम्बे लेख न भेजे।

—सम्पादक

वेदों में वनस्पति विज्ञान का भरपूर उल्लेख

विमलकान्त शर्मा

नई दिल्ली २५ जुलाई। दिल्ली हिन्दी संस्कृत अकादमी के तत्वावधान मे आज आर्य समाज मन्दिर निमारपुर मे वेदो मे वनस्पति विज्ञान विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमे अनेक मूर्धन्य विद्वानो ने वेदो के गहन अध्ययन पर बल दिया।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलपति डा धर्मपाल ने अपने उद्घाटन भाषण मे कहा कि ज्ञान विज्ञान के अनन्त भण्डार वेदों मे वनस्पतियो का पूर्ण विवरण दिया गया है। अथर्ववेद मे तो अनेक औषधियो का उल्लेख मिलता है। उन्होंने वेदो के गहन अध्ययन एवं अनुसंधान की आवश्यकता पर बल दिया ताकि लोग इसका लाभ उठा सकें।

दिल्ली के पूर्व कार्यकारी पार्षद श्री कुलानन्द भारतीय ने मुख्य अतिथि के रूप मे अपने उदगार व्यक्त करते हुये कहा कि संस्कृत एवं वेद हमारी संस्कृति की नींव है। वेदो मे वनस्पति का पूर्ण उल्लेख मिलता है। वृक्षो के बिना हमारा जीवन अधूरा है। हमे अधिक से अधिक पेड़ उगाकर पर्यावरण को स्वच्छ बनाना चाहिये। पूर्व सांसद श्री रामचन्द्र विकल ने कहा कि वेदो मे अन्न को प्राण बताया गया है

पूर्व निगम पार्षद श्री साहबसिंह वर्मा ने संस्कृति के आधार वेद एवं संस्कृत भाषा के अधिक से अधिक प्रचार प्रसार की आवश्यकता पर बल दिया। कार्यक्रम मे डा० प्रशान्त कुमार वेदालंकार डा० सत्यदेव त्यागी डा० कृष्णलाल डा निर्मल त्रिखा डा उर्मिल रस्तोगी डा० प्रवेश सक्सेना डा० लक्ष्मीश्वर झा आदि विद्वान वक्ताओ ने वेदो मे वनस्पति विज्ञान के सम्बन्ध मे अपने सारगर्भित विचार व्यक्त किये।

संस्कृत अकादमी के सचिव श्री कृष्णचन्द्र सेमवाल ने कहा कि दूषित वातावरण को शुद्ध करने एवं पर्यावरण सुधार के लिये वेदो मे वनस्पति विज्ञान जैसी संगोष्ठियो का आयोजन बहुत महत्वपूर्ण एवं सामयिक है। कार्यक्रम का शुभारम्भ गुरुकुल गौतमनगर के ब्रह्मचारियो के वेदपाठ से हुआ। समाज मन्दिर के प्रधान श्री तेजपाल मलिक एवं मन्त्री श्री विमलकान्त शर्मा ने अतिथियो का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया। शान्ति पाठ के बाद ऋषि लंगर के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज हिरणमगरी मे सभा भवन का शिलान्यास

आपको जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि आर्य समाज हिरणमगरी उदयपुर मे अभी तक यज्ञशाला के साथ केवल एक छोटा कमरा था किन्तु उदयपुर निवासी दानवीर श्री जमनालाल गौतम ने २४ × ३१ का एक सभा भवन निर्माण का संकल्प लिया है। इसका शिलान्यास श्रावणी पूर्णिमा ता० २ अगस्त १९९३ को प्रातः ८ बजे सम्पन्न हुआ। लोगो ने अधिक संख्या मे पहुंचकर कार्यक्रम को सफल बनाया

—जितेन्द्रपाल शर्मा प्रधान

१ स १० सेक्टर ५ फोन ८३२ ७

भारत देश रहा यह न्यारा (गीत)

डा० महाश्वेता चतुर्वेदी

किरणो का उपहार सम्भाले जहां हिमालय गर्वोन्नत है।
वहीं जागरण का आवाहन कल्याणोन्मुख ज्ञानामृत है॥
वेद सूर्य आलोक संजोये भारत देश रहा यह न्यारा।
जग कर सारा विश्व जगाया अभिशापित तम पुञ्ज मिटाया॥
गौतम कपिल कणाद आदि ने जगद्गुरु गौरव का पाया।
ऋषि मनीषियो की महिमा से तीर्थ प्रकाश रहा यह प्यारा
शिवि दधीच और रन्तिदेव का त्याग कौन कैसे भूल सकेगा।
यदि न राम से सीख सका कुछ तो यह जीवन धूल करेगा।
गीता ज्ञान कृष्ण का पावन गुञ्जित देश रहा यह न्यारा।
उपनिषदो मे सुरसरिता है पौराणिक आख्यान प्रेरणा॥
आस्तिक हो या नास्तिक दर्शन छिपी हुई बहुमूल्य धारणा।
सूत्र रूप गागर मे सागर आर्यावर्त रहा यह न्यारा॥
अनयो के मुख ढाने वाले दुष्टो के दन्त थे दल डाले।
अतुलनीय ऋषि दयानन्द ने खोले कुमतो के थे चोले॥
कण्व तो विश्वमायम का सचित जहां अमर वह नारा।
रक्त प्यास का अन्त दुराशा यह इतिहास रहा समझाता॥
स्वयं अशोक बनो फिर पाओ केवल धर्म संग है आता।
नहीं किसी का कुछ भी छीना सबका सम्बल और किनारा।

सार्वदेशिक सभा का नया प्रकाशन

मुगल साम्राज्य का क्षय और उसके कारण (प्रथम व द्वितीय भाग) — २०)००
लेखक पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति

महाराणा प्रताप — १६)००

विषन्नता अर्थात् इस्लाम का फोटो — ५)५०
लेखक—धर्मपाल जी बी० ए०

स्वामी विवेकानन्द का विचार धारा — ४)००
लेखक— स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती

संस्कार चन्द्रिका मूल्य १२५ रुपये
सम्पादक—डा सच्चिदानन्द शास्त्री

पुस्तक मंगवाते समय २५% धन अग्रिम भेजें

प्राप्ति स्थान—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

३/५ महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान दिल्ली २

म० द० स० स्मृति भवन न्यास जोधपुर की

अन्तरंग बैठक के निर्णय

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास की अन्तरंग सभा की बैठक १६ जुलाई को जोधपुर मे स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुयी बैठक मे सर्वसम्मति से लिये गये निर्णय निम्न प्रकार है।

प्रमुख निर्णय

(१) दयानन्द अध्ययन केन्द्र की स्थापना—इस बैठक का सबसे प्रमुख विषय इस न्यास भवन मे दयानन्द अध्ययन केन्द्र की स्थापना करना था इसके लिये निम्न सदस्यो की एक कमेटी बनायी गयी १) डा० भवानीलाल भारतीय (२) श्री फतहसिंह जी (३) श्री डा० श्रद्धा चौहान (४) डा० दयानन्द भार्गव। श्री भारतीय जी को इसका सयोजक बनाया गया।

(२) दूसरे महत्वपूर्ण निर्णय मे न्यास भवन के ऊपर के हाल मे 'दयानन्द चित्रावली' बनाने का निर्णय लिया गया। स्वामीजी ने सुझाव दिया कि ये कार्य बहुत ही कुशल कारीगर से करवाया जावे चाहे इसमे समय अधिक लगे तथा आर्थिक व्यय भी अधिक हो।

(३) तीसरे महत्वपूर्ण निर्णय मे चतुर्थ महर्षि दयानन्द स्मृति सम्मेलन दिनाक २६ ९-९३ से २९ ९ ९३,तक मनाने का निर्णय लिया गया। पूर्व मे यह सम्मेलन दिनाक २९ ९ ९३ से ३ १० ९३ तक मनाया जाने वाला था।

स्वामीजी ने दिनाक १८ ७ ९३ को डा० भवानीलाल जी भारतीय के बृहद पुस्तकालय का भी अवलोकन किया।

स्वामीजी की यह यात्रा बहुत ही सफल रही। आर्यजनो मे नयी स्फूर्ति पैदा हुई।

जगदीशसिंह आर्य मन्त्री
महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास
जसवन्त कालेज के पास जोधपुर (राज०)
पोस्ट बोक्स न ३८

शोक समाचार

श्रीयुत भद्रसेन जी का देहावसान १९ मई १९९३ को श्रीगगानगर मे हो गया। श्री गगानगर आर्य समाज के सस्थापक कार्यकर्त्ता पुरोहित व प्रचारक के रूप मे श्री भद्रसेन जी पिछले ६० वर्ष से इस क्षेत्र मे कार्यरत थे। वैदिक रीति से घरो मे सस्कार कराने मे ही अपने को इतने समय तक समर्पित रखने वाले तपोनिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री भद्रसेन जी का ९० वर्ष की आयु मे देहान्त हुआ।

आर्य जगत की स्थानीय शिक्षण सस्थाओ मे प्रथम अध्यापक के रूप मे माने जाने वाले मास्टर जी के दिवगत हो जाने पर इस क्षेत्र की अपूर्णीय क्षति हुई है।

—श्रीयुत दीनानाथ जी आर्य का देहान्त २१ जून १९९३ को हनुमानगढ (श्री गगानगर) मे हुआ। श्री आर्य श्री गगानगर आर्य समाज के सस्थापक सदस्यो मे से एक थे। वे लम्बे समय तक श्री गगानगर आर्य समाज के मन्त्री रहे।

श्री दीनानाथ जी आर्य हैदराबाद के आर्य समाज के सत्याग्रह मे जत्थे भजने मे प्रेरणा के स्रोत रहे और पजाब के हिन्दी रक्षा आन्दोलन मे जेल गए।

श्री गगानगर आर्यसमाज उस पीढी के कार्यकर्त्ताओ से विहीन हो गया। —प्रधान

सुशीला लखोटिया को मातृ-शोक

सुप्रसिद्ध आयकर विशेषज्ञ एव समाजसेवी श्री रामनिवास लखोटिया की ज्येष्ठ पुत्र वधु सुशीला लखोटिया (धर्मपत्नी सुभाष लखोटिया) की माता जी श्रीमती जमुना देवी मूधडा (धर्मपत्नी स्व० भेरू दान जी मूधडा) का कलकत्ता मे रविवार १ अगस्त १९९३ को स्वर्गवास हो गया। ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति एव शोक सतप्त परिवार को धैर्य धारण करने की सामर्थ्य प्रदान करे।

डा० श्रीराम शर्मा, मेघ जी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार से सम्मानित

मम्बई निवासी वरिष्ठ श्री मेघ जी भाई की स्मृति मे उनके पुत्र श्री कनक भाई के सात्विक धन से जो स्थाई कोष के रूप मे आर्य समाज साताक्रुज मे जमा है प्रति वर्ष ४ जुलाई को एक ऐसे विद्वान साहित्यकार का सम्मान किया जाता है जिसने जीवन पर्यन्त आर्य साहित्य की सरचना की है। इस पुरस्कार का नाम श्री मेघ जी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार है। इसके अन्तर्गत निर्वाचित विद्वान को १५००१) की थैली रजत ट्राफी शाल एव श्री फल से सम्मानित किया जाता है। इस वर्ष यह सम्मान कासगज (एटा) निवासी डा० श्री राम शर्मा जिन्होने खडन मडन पर ८५ से अधिक पुस्तक लिखी हैं उन्हे देने का निश्चय किया गया। डा० श्रीराम शर्मा अस्वस्थ होने के कारण बम्बई ४ जुलाई को पुरस्कार समारोह मे उपस्थित नहीं हो सके। अत श्री कनक सिह जी आसर एव सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान कप्टिन देव रत्न आर्य ने १० जुलाई ९३ को कासगज मे जाकर वहा की स्थानीय आर्य समाज मे एक सादे समारोह मे डा० श्रीराम शर्मा को १५००१) की थैली एव रजत ट्राफी व शाल भेट की।

इस अवसर पर कप्टन आर्य ने उस स्थान का अवलोकन भी किया जहा महर्षि दयानन्द सरस्वती ने बाजार मे लड रहे दो साडो को उनके सीग पकड कर अलग किया था। कप्टन आर्य ने स्थानीय आर्य समाज के सदस्यो का आह्वान किया कि उस स्थान पर एक शिला लेख लगाया जाना चाहिये जिसमे इस प्रसिद्ध ऐतिहासिक घटना का वर्णन हो स्थानीय आर्यों ने इस सुझाव का स्वागत किया व इसे पूर्ण करने का आश्वासन दिया। इस अवसर पर गुरुकुल एटा के आचार्य एव उपाचार्य भी उपस्थित थे।

समस्त नारी समाज की रक्षा का संकल्प ले

कानपुर रक्षा बन्धन के दिन समस्त नारी समाज की रक्षा का सकल्प लेना चाहिये। केवल अपनी बहन की रक्षा तक अपने को सीमित न करना चाहिये। वास्तव मे नारी को ही मैं सबसे अधिक पिछडा वर्ग मानता हू। ये विचार प्रसिद्ध महिला उद्धारक आर्य समाजी नेता श्री देवीदास आर्य ने आर्य समाज मन्दिर गोविन्द नगर मे आयोजित श्रावणी एव रक्षा बन्धन पर आयोजित सभा की अध्यक्षता करते हुए प्रकट किये।

सभा से पूर्व बृहद यज्ञ किया गया और वक्ताओ ने वेद पढने पढाने सुनने सुनाने का आग्रह किया। सभा मे सर्वश्री राम सुमेर मिश्रा बाल गोविन्द आर्य जगन्नाथ शास्त्री शुभ कुमार बोहरा श्रीमती राजपूती एव राम देवी आर्या ने भी अपने विचार प्रकट किये। सभा की अध्यक्षता समाज के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने तथा सचालन श्री बालगोविन्द आर्य ने किया।

—बाल गोविन्द आर्य मन्त्री

आर्य भजनोपदेशक महात्मा मुरलीधर का देहावसान

प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक महात्मा मुरलीधर जी का लगभग ८५ वर्ष की अवस्था मे अचानक हृदयगति रुक जाने से देहान्त हो गया। व आजन्म ब्रह्मचारी थे, और पिछले कुछ समय से अपने ग्राम निजामपुर (शहाजहांपुर) म रहन लगे थे।

मुरलीधर जी का जन्म एक साधारण ग्रामीण परिवार मे हुआ था बाल्यावस्था म ही परिस्थितिवश उन्हे सगीत से जुडना पडा। और जुड तो ऐसे जुडे कि उसी के होकर रह गए और अपने परिश्रम से वे एक सफल भजनोपदेशक बने और अन्तिम समय तक अहर्निश आर्य समाज का प्रचार करते रहे।

काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहकार तो उन्हे छू तक नही सका था। जीवन मे कभी किसी की निन्दा नही की। किसी से कोई शिकायत नही की। आत्म स्तुति और पर निन्दा से वे कोसो दूर थे।

महात्मा मुरलीधर जी मृदुभाषी सरल और सहृदयी व्यक्ति थे। वे अत्यन्त व्यवहार कुशल और परिश्रमी थे। अपना काम सदा स्वय ही करते थे। जिस युगमे उन्होने आर्य समाज का प्रचार किया उसमे न तो यातायात के प्रचुर साधन थे और न ही गावो तक पक्की सडकें थी। बाजा और अपनी आवश्यकता की सभी सामग्री कन्धे पर लटका कर धूल भरी कच्ची सडको पर मीलो पैदल चल कर आर्य समाज का सन्देश उन्होने गाव गाव तक पहुचाया। पूरे सात दशक तक वे सक्रिय रहे।

उनकी लगन श्रद्धा और समर्पण देखते ही बनता था। अपने सन्तोषी स्वभाव, साधक प्रवृत्ति, प्रभावी व्यक्तित्व, सरलता और सादगी के लिए वे वर्षों तक याद आते रहेंगे। उनका सयम और सदाचार वर्तमान और भावी उपदेशको के लिए प्रेरणा-स्रोत रहेगा।

प्रणाम मुरलीधर! आर्य जगत तुम्हे और तुम्हारी सेवाओ को कभी नही भूल सकेगा। हमारा शत शत नमन। हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।

—सन्तोष 'कण्व'

आर्यसमाज महाराजपुर छतरपुर मे वेद प्रचार

आर्य समाज महाराजपुर जिला छतरपुर द्वारा श्रावणी से श्री कृष्ण जन्माष्टमी तक विभिन्न स्थानो पर वेद प्रचार सप्ताह समारोह पूर्वक मनाया गया इस अवसर पर अलग-अलग दिवसो म अलग अलग क्षेत्रो म यज्ञ तथा प्रवचन के कार्यक्रम रखे गये। योग्य विद्वानो द्वारा दिये गये प्रवचनो से जनता ने लाभ उठाया। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

यज्ञशाला का भव्य उद्घाटन

आर्य समाज मन्दिर वी. एन पूर्वी शालीमार बाग दिल्ली म नव निर्मित यज्ञशाला का भव्य उद्घाटन समारोह १५ अगस्त ९३ को प्रात ९ बजे से १ बजे तक सम्पन्न होगा। इस अवसर पर यज्ञ भजन तथा प्रवचन आदि मे आप सादर आमन्त्रित है। कार्यक्रम के सयोजक डा० महेश विद्यालंकार होगे।

चारों वेदों का पारायण

श्री अर्जुनदेव खन्ना ८ श्रीराम रोड सिविल लाइन्स दिल्ली मे वेदसप्ताह के उपलक्ष्य मे १८ अगस्त से २९ अगस्त तक 'चारो वेदो का परायण' का आयोजन किया गया है। इस विराट यज्ञ के अध्यक्ष स्वामी जीवनानन्द जी तथा श्री ब्रह्मपति शास्त्री होंगे। २९ अगस्त को पूर्णाहुति के अवसर पर सार्व० सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती भी पधारेंगे। अनेको विद्वानो और विदुषी बहनो के अमृत वचनो को सुनने हेतु अधिक से अधिक सख्या मे पधारे। २९ अगस्त को ऋषि लगर का आयोजन भी किया गया है।

वैदिक विवाह सम्पन्न

आसापुर सैदपुर, गाजीपुर मे २९ मई ९३ को श्री रणधीर मौर्य सुपुत्र श्री रामनिवास कुशवाहा जमानपुर गाजीपुर का विवाह श्री रामलोचन कुशवाहा की सुपुत्री कुमारी रीता कुशवाहा आसापुर सैदपुर गाजीपुर के साथ वैदिक रित्यानुसार श्री आनन्द स्वरूप वर्मा गाजीपुर के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ। जिसमे नगर आर्यसमाज गाजीपुर के पदाधिकारी एव बैंको के कर्मचारी गण उपस्थित थे।

—केशवसिंह आर्य मन्त्री

वृष्टि यज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज नजफगढ नई दिल्ली ने एक विशाल वृष्टि यज्ञ का आयोजन ७-७-९३ को श्रीराम शिव मन्दिर नजफगढ मे किया। यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी ओमानन्द सरस्वती थे तथा वेद पाठ गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारियो द्वारा किया गया। यज्ञ की पूर्णाहुति के बाद २ बजे जोरदार मूसलाधार बारिश हुयी। जिससे क्षेत्र के वासियो ने राहत की सासली थी। इस सफल यज्ञ से लोगो मे यज्ञ के प्रति विशेष श्रद्धा जागृत हुई। इस अवसर पर नगर के हजारो नर नारी तथा गणमान्य लोग उपस्थित थे। ज्ञातव्य हो कि इससे पूर्व यहा वर्षा नही हुयी थी समारोह के बाद विशाल ऋषि लगर का आयोजन किया गया।

वैदिक कैसेट

मगवाकर

ऋषि दयानन्द का सन्देश घर-घर पहुंचाये

वैदिक धर्म के अनुयायी आर्यो !

कृपया ध्यान दीजिए !

—आप वैदिक धर्म के प्रचार मे वृद्धि करना चाहते हैं।

—आपको वैदिक धर्म और आर्य समाज के सिद्धान्तो से प्रेम है।

—आपको प्रतिदिन सन्ध्या-हवन करना अच्छा लगता है।

—आप अपने बच्चो मे उत्तम सस्कार डालना चाहते हैं।

—आप आर्य समाज के उत्सवो को सफल व आकर्षक बनाना चाहते हैं।

—तो आप मधुर व चित्ताकर्षक सगीत से भरपूर ईश्वर भक्ति ऋषि दयानन्द देश प्रेम, एव आर्य समाज से सम्बन्धित उच्चकोटि के भजनो-गीतो तथा शुद्ध वाणी मे उच्चारण किए गए प्रार्थना मन्त्रो, सन्ध्याहवन, शान्तिकरण, वेद प्रवचन गायत्री महिमा योगासन, प्राणायाम तथा विवाह गीत आदि से सम्बन्धित उत्कृष्ट गुणवत्ता वाले कैसेट आज ही मगवाकर वैदिक धर्म के प्रचार मे अपना योगदान कीजिए।

विवाह, जन्मदिन आदि शुभ अवसरो पर अपने इष्ट मित्रो व बन्धु-बान्धवो को भेंट में भी दीजिये। घर तथा आर्य समाजो मे प्रात साय बजाइए।

विस्तृत सूची पत्र मगवाने के लिये कृपया पोस्ट कार्ड लिखिये।

प्राप्ति स्थान—

संसार साहित्य मण्डल

१४१/२५३ मुलुण्ड कालोनी

बम्बई-४०००८२

वेद गोष्ठी

शुक्रवार १३ अगस्त को 'सगोष्ठी कक्ष हसराज कालेज' मे श्री वैद्य रामगोपाल शास्त्री स्मारक समितिके सौजन्य से वेदगोष्ठी का आयोजन किया गया है। "भारत के मूल निवासी (वेदो के आधार पर)" विषय पर अनेको विद्वान अपने विचार प्रकट करेंगे। श्री जयपाल विद्यालकार की अध्यक्षता मे होने वाली इस सगोष्ठी मे प्रो० बलराज मधोक मुख्य अतिथि होंगे। कार्यक्रम के उपरान्त शका समाधान एव जलपान का आयोजन भी किया गया है।

कटक मेडिकल कालेज की स्वर्ण जयन्ती पर आर्य विद्वान सम्मानित

ओडिशा तथा देश के प्राचीन तथा प्रसिद्ध कटक मेडिकल कालेज के स्वर्ण जयन्ती समारोह मे गत १९ जुलाई को ओडिशा के यशस्वी आर्य विद्वान श्री प्रियव्रतदास जी को सम्मानित किया गया। राज्य के वरिष्ठ इजीनियर होते हुए प्रियव्रत जी का ओडिशा भाषा मे सृजनशक्ति वैदिक साहित्य रचना मे उल्लेखनीय योगदान हेतु उनका भव्य स्वागत हुआ। "शरीर तथा अन्त करण चतुष्टय" के विषय पर व विचारपूर्ण भाषण दिये। प्रियव्रत जी ओडिशा आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री है।

—प्रचार मन्त्री

आर्य समाज भुवनेश्वर

आर्य समाज अनाजमण्डी शाहदरा दिल्ली-३२ का निर्वाचन

वर्ष १९९३ ९४ के लिए आर्य समाज अनाजमण्डी शाहदरा दिल्ली-३२ का वार्षिक चुनाव ७-७-९३ बुधवार को सम्पन्न हुआ जिसमे निम्नलिखित पदाधिकारी एव सदस्य निर्वाचित हुए —

१ श्री बनवारीलाल प्रधान २ श्री ब्रह्मानन्द गुप्ता वरिष्ठ उप-प्रधान, ३ श्री खजाचीलाल उप-प्रधान, ४ डा०बी.एस रावत उप०प्रधान, ५ श्री मेघाकर आर्य मन्त्री ६ श्री रमेश मसीन उप-मन्त्री ७. श्री हरपालसिंह प्रचार-मन्त्री ८ श्री सजीव गुप्ता कोषाध्यक्ष, ९ श्री रामविलास गुप्ता सदस्य, १० श्री एस. एम कसल सदस्य, ११ श्री रामपालसिंह सदस्य चुने गए।
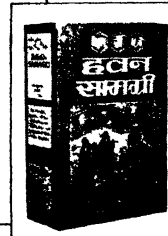
दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० एल० ११०७४/९३ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१५-८-१९९३) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (C) ९३
R N. 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U (C) 93 Post in N.D.P.S.O.on 12-13-8-1993

आर्य समाजों के निर्वाचन

आर्य समाज सोरो एटा—श्री वेद प्रकाश अग्रवाल प्रधान, श्री वैद्य जयपाल आर्य मन्त्री श्री राजेन्द्र प्रसाद अग्रवाल कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज ब्रह्मपुरी—म० कल्याणदास जी प्रधान, श्री श्रीकृष्ण आर्य मन्त्री, श्री कमल कुमार गुप्ता कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज सैं० २२ए चण्डीगढ श्री राजेन्द्र सेठी प्रधान, श्री बुद्धराम आर्य मन्त्री श्री महावीर शर्मा कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज बागपत—श्री जयप्रकाश वर्मा प्रधान, मा० सत्यप्रकाश गौड मन्त्री सुभाषचन्द्र त्यागी एडवोकेट कोषाध्यक्ष चुने गए।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद फरीदाबाद—श्री सत्यभूषण आर्य प्रधान, श्री जितन्द्रसिंह मन्त्री श्री सुधीर कपूर कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्यसमाज कोटला मुबारकपुर नई दिल्ली—श्री हरज्ञानसिंह आर्य प्रधान, श्री बाल किशनदास आर्य मन्त्री श्री शिवचरणदास कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज सासनी अलीगढ—श्री ओमप्रकाश वार्ष्णेय प्रधान, प० सियाराम जी मन्त्री, श्री विनोदकुमार वार्ष्णेय कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य उप प्रतिनिधि सभा भरतपुर—श्री नाहरसिंह आर्य प्रधान, श्री हरगोविन्द शर्मा मन्त्री, श्री देवीसिंह आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज बल्केश्वर कमला नगर आगरा श्री ओमप्रकाश पालीवाल प्रधान, श्री एस पी कुमार मन्त्री, श्री रामजीदास गुप्ता कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्यसमाज मोतीबाग साउथ दिल्ली श्री ज्ञानचन्द्र महाजनप्रधान, श्री प्रेमकुमार मल्होत्रा मन्त्री श्री विजय कुमार मेहता कोषाध्यक्ष चुने गए।

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित

सत्यार्थप्रकाश पत्राचार प्रतियोगिता

: पुरस्कार :

प्रथम : ११ हजार द्वितीय : ५ हजार

तृतीय : २ हजार

न्यूनतम योग्यता : १०+२ अथवा अनुरूप

आयु सीमा : १८ से ४० वर्ष तक

माध्यम : हिन्दी अथवा अंग्रेजी

उत्तर पुस्तिकायें रजिस्ट्रार को भेजने की अन्तिम तिथि ३१-८-१९९३

विषय :

महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश

नोट.—प्रवेश, रोल न०, प्रश्न-पत्र तथा अन्य विवरण के लिए देश म मात्र बीस रुपये और विदेश मे दो डालर नगद या मनीआर्डर द्वारा रजिस्ट्रार, परीक्षा विभाग सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नयी दिल्ली-२ को भेज। पुस्तक अगर पुस्तकालयो, पुस्तक विक्रेताओ अथवा स्थानीय आर्य समाज कार्यालयो से न मिलें तो तीस रुपये हिन्दी संस्करण के लिये और पैंसठ रुपये अंग्रेजी संस्करण के लिये सभा को भेजकर मगवाई जा सकती हैं।

(२) सभी आर्य समाजो एव व्यक्तियो से अनुरोध है कि इस तरह के हैंडबिल ४५ हजार छपवाकर आर्यजनो, स्थानीय स्कूल कालेजो क अध्यापको और विद्यार्थियो मे वितरित कर प्रचारबढाने म सहयोग द।

डा० एल० बी० आर्य — रजिस्ट्रार
स्वामी आनन्दबोध सरस्वती — प्रधान

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (मद्रास) के कार्यालय मे बम विस्फोट की भर्त्सना की

८ अगस्त १९९३ को राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के मद्रास मुख्यालय मे भयकर बम विस्फोट हुआ। इसमे २ महिलाओ सहित १० लोग मारे गए और अनेक घायल हुए। विस्फोट इतना जबरदस्त था कि कार्यालय की पहली मजिल पूरी तरह मलबे मे समा गई। इस भयकर घटना मे मारे गए लोगो के आश्रितो को ५० ५० हजार और घायलो को दस दस हजार रुपया देने की तमिलनाडु की मुख्य मन्त्री सुश्री जयललिता ने घोषणा करते हुए इस घटना की सी०बी०आई० द्वारा जाच करने की घोषणा की है।

प्रधान मन्त्री, मुख्यमन्त्री तमिलनाडु तथा भारतीय जनता पार्टी के नेता श्री लालकृष्ण आडवाणी और अन्य कई नेताओ ने भी इस काण्ड की कड़ी निन्दा की है। प्रधान मन्त्री जी ने गृह राज्यमन्त्री श्री राजेश पायलट को तत्काल घटना स्थल पर भेजा है। श्री पायलट जी ने वहा सारी स्थिति की समीक्षा की। इसी प्रकार भाजपा के श्री लालकृष्ण आडवानी ने भी मद्रास जाकर घटना स्थल का निरीक्षण किया और इस घटना की सी बी आई से जाच की माग की है।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने इस वीभत्स घटना पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए सम्पूर्ण आर्य जगत की ओर से घटना में मारे गए लोगो के परिवारो के प्रति हार्दिक सवेदना प्रकट करते हुए सरकार से माग की कि देश को तोडने की साजिश करने वाले उन लोगो को तुरन्त पकडवा कर कठोर से कठोर दण्ड दिया जावे जिन्होने निरपराध लोगो के जीवन के साथ घिनौना खिलवाड किया है। स्वामी जी ने समूचे आर्य जगत् की ओर से इस बम काण्ड का कडे शब्दो मे भर्त्सना की है।

उपनयन संस्कार

सार्वदेशिक सभा के पूर्व प्रधान माननीय सेठ प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास कच्छ केसल, अपेरा हाउस के सामने वी०पी०रोड,बम्बई-४ के पौत्र चि० ऋतन और पौत्री आयुष्मती अदिती का उपनयन सस्कार श्रावण कृष्णा द्वादशी तदनुसार १५ अगस्त १९९३ को समारोह पूर्वक सम्पन्न होने जा रहा है। सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तथा मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने अपनी तथा आर्य जगत् की ओर से श्री प्रताप भाई जी को शुभ कामनाये भेजते हुए दोनो बच्चो के दीर्घ यशस्वी तथा मगलमय जीवन की कामना प्रकट की।

वेद कथा का आयोजन

दिनाक ११-८-९३ से १७-८-९३ तक आर्य समाज आर्यनगढ द्वारा वेद कथा का आयोजन किया गया है इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान प० उषबुद्ध जी वैदिक प्रवक्ता (राजस्थान) एव भजनोपदेशिका राजबाला आर्या जी (हरियाणा) पधार रही है।

कार्यक्रम प्रतिदिन प्रात. ७ से ९.३० बजे तक आर्य समाज मन्दिर मे व सायकाल ८ बजे से १० बजे तक अग्रवाल धर्मशाला (पुरानी कोतवाली मे होगा। —मन्त्री

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

महर्षि दयानन्द उवाच

- क्या किया जाय ? जिसके लिए हम उपकार करते हैं वे ही उल्टे विरोध करते जाते हैं, अच्छा ! जो दुष्ट दुष्टता को नहीं छोड़ते, श्रेष्ठ श्रेष्ठता को क्यों छोड़ें ?
- जो मूर्ख लोग अपनी बुराई को नहीं छोड़ते, तो बुद्धिमान् धर्मात्मा लोग अपनी धर्मात्मता को क्यों छोड़कर दुःख सागर में पड़ें।
- मैं आर्य समाज को असत्य पर कदापि स्थापित नहीं करूंगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष । ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३१ अंक २८] दयानन्दाब्द १६६ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९४ भाद्रपद शु० ६ सं० २०५० २२ अगस्त १९९३

पाक ने कश्मीर में दखलन्दाजी बन्द न की तो मुंह तोड़ जवाब देंगे

प्रधानमन्त्री की लालकिले की प्राचीर से चेतावनी

नई दिल्ली, १५ अगस्त । प्रधानमन्त्री श्री पी०वी० नरसिंह राव ने आज यहां पाकिस्तान को चेतावनी दी कि वह कश्मीर के मामले में हस्तक्षेप बन्द कर दे। कश्मीर को भारत का अभिन्न अंग बताते हुए उन्होने कहा कि यदि पाकिस्तान द्वारा कश्मीर में उग्रवादियों को हथियार और प्रशिक्षण देना बन्द नहीं किया गया तो उसे मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि कश्मीर को भारत से कोई अलग नही कर सकता है।

ऐतिहासिक लालकिला की प्राचीर से आज यहां ४७वें स्वतन्त्रता दिवस पर अपने भाषण में प्रधानमन्त्री ने विश्व के सभी देशों से भारत के मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध रखने की नीति का उल्लेख करते हुए कहा कि पाकिस्तान को छोड़ कर सभी पड़ोसी देशों के साथ भारत के अच्छे सम्बन्ध है। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान के साथ भी अच्छे सम्बन्ध हो सकते है बशर्ते वह कश्मीर को भारत से अलग करने के प्रयास छोड़ दे।

उन्होंने पाकिस्तान को सलाह भी दी कि वह इस वास्तविकता को स्वीकार कर ले कि कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है जिसे कोई अलग नहीं कर सकता।

उन्होंने स्वीकार किया कि कश्मीर में अभी स्थिति सुधरी नही है। आतंकवाद के लिए वहां पाकिस्तान से प्रेरणा, धन और हथियार मिल रहे हैं। वहां की जनता आतंकवाद के विरुद्ध है लेकिन डर के कारण इसका खुला विरोध भी नहीं कर पाती है।

श्री राव ने कहा कि पाकिस्तान कश्मीर में मानवाधिकारों के उल्लंघन की बात करता है जो उचित नहीं है। आतंकवादी जब किसी मुठभेड मे मारे जाते है तो मानवाधिकारों की बात की जाती है लेकिन अभी दो दिन पहले १६/१७ बस यात्रियों को गोलियो से भून दिया गया तो क्या उनके मानवाधिकार नहीं थे ? उन्होने कहा कि हम इसे स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं।

उन्होंने कहा कि वे पाकिस्तान के प्रधानमन्त्री से ६ बार मिल चुके हैं। व्यक्तिगत तौर पर उनके सम्बन्ध अच्छे हैं लेकिन जब नीति का प्रश्न आता है तो बात बिगड़ जाती है। पाकिस्तान में होने वाले चुनावों का उल्लेख करते हुए उन्होंने नए नेतृत्व से मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध होने की आशा व्यक्त की।

स्वतन्त्रता दिवस पर स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की आर्य जनता को शुभ कामनायें

राष्ट्र के ४७वें स्वतन्त्रता दिवस पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आर्य जनों को अपनी शुभ कामनायें देते हुए कहा—राष्ट्र निर्माण और स्वतन्त्रता आंदोलन में आर्यसमाज ने देशवासियों को नेतृत्व दिया था। अभी हमारे सामने अनेक कठिनाइया और चुनौतिया हैं, हम सब मिलकर—मद्यपान, दहेज प्रथा, नारी शोषण और गोहत्या जैसी बुराइयों के उन्मूलन के लिए कार्य करने का सकल्प करे और देश की एकता और अखण्डता के निर्माण मे सहयोग करे।

भोपाल के मिशनरी स्कूल में

राष्ट्रगान गाने पर तीन विद्यार्थी निष्कासित

नई दिल्ली : आप माने या न माने देश मे आज भी ऐसे स्कूल है जहां ४६ वर्षों की आजादी के बाद भी 'जन-गण-मन' राष्ट्रगान गाने की अनुमति नहीं है। मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल मे ईसाई मिशनरी का एक स्कूल है जहां १२ वीं कक्षा के तीन छात्रों—कपिल चड्डा, नवीन और राजे को स्कूल से केवल इसलिए निष्कासित किया गया कि उन्होने प्रार्थना सभा के बाद राष्ट्रगान गाने का साहसपूर्ण कार्य किया था। यह घटना २२ जुलाई की है। नगर की सबसे अधिक सम्पन्न बस्ती अरेरा मे स्थित इस स्कूल मे प्रभु ईसू

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक : डा०सच्चिदानन्द शास्त्री

डोडा में जंगजुओं ने १५ हिन्दुओं को बस से उतार कर भून डाला

जम्मू १४ अगस्त। अतीत मे पंजाब के खाड़कुओं की तर्ज पर कश्मीरी जंगजुओं ने आज डोडा जिले मे १५ हिन्दू बसयात्रियों को भून डाला। यह घटना यहा से २३० किलोमीटर दूर सरथल रोड पर हुई। इस घटना के बाद पूरे जम्मू क्षेत्र मे रेड एलर्ट घोषित कर दिया गया है। किश्तवाड़ और भद्रवाह कस्बों मे अनिश्चितकालीन कर्फ्यू लागू कर दिया गया है और सेना व बीएसएफ के दस्ते रवाना कर दिए गए हैं। बस यात्रियों के मारे जाने की घटना से उधमपुर और जम्मू के इलाको मे बड़ा तनाव पैदा हो गया है।

आज प्रात किश्तवाड़ से जम्मू के लिए प्राइवेट बस ६ ३० पर रवाना हुई जिसमे ४२ यात्री थे। बस आठ किलोमीटर आगे गाव हुसती के पास पहुची ही थी कि छह सशस्त्र जंगजुओं ने बस को रोका व उसे सरथल रोड की ओर ले गए और हिन्दुओं को अलग करके गोलियों से भून डाला। घटनास्थल पर १४ लोग मारे गए और दो गम्भीर रूप से घायल हो गए जिनमे एक ने किश्तवाड़ अस्पताल मे दम तोड़ दिया। एक अन्य घायल को हेलिकाप्टर द्वारा जम्मू के मेडिकल कालेज मे लाया गया।

मृतको मे सभी पुरुष थे। १२ मृतको की पहचान हो गई है जो जम्मू उधमपुर और डोडा जिला के निवासी थे।

घटना की खबर फैलते ही जिला उधमपुर जम्मू मे तनाव फैल गया। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष चमनलाल गुप्ता ने इस काड की कड़ी भर्त्सना करते हुये राज्यपाल को दोषी ठहराया है। उन्होंने जागरण को बताया कि यह स्पष्ट था कि जगजू इस प्रकार की घृणित कार्रवाई करेंगे। डोडा मे विशेष आशका थी। प्रशासन इस कार्रवाई को रोक नही पाया। जम्मू मे शाम के समय भाजपा कार्यकर्ताओं ने प्रशासन के खिलाफ नारे लगाते हुए जुलूस निकाला।

राज्यपाल के वी कृष्णा राव ने इस हत्याकाड की कड़े शब्दो मे निन्दा की और मृतको के परिजनो को एक एक लाख रुपये देने की घोषणा की। जिला डोडा के किश्तवाड़ भद्रवाह मे करफ्यू लगा दिया गया है। जम्मू रेंज के आई जी एस एस वजीर डिवीजनल कमिश्नर श्री आर कुडल हेलिकाप्टर से किश्तवाड गए। भाजपा ने इस नृशस हत्या के विरोध मे सोमवार को जम्मू बन्द का आह्वान किया है।

जम्मू मे सुरक्षा व्यवस्था की समीक्षा के लिए उच्चस्तरीय बैठक बुलाई गई और साम्प्रदायिक तनाव फैलाने की किसी भी कोशिश को नाकाम करने के लिए सुरक्षाबलो को सतर्क कर दिया गया। प्रशासन ने लोगो से साप्रदायिक सद्भाव बनाए रखने तथा जम्मू कश्मीर के शातिपूर्ण माहौल को खराब करने की किसी भी कोशिश को नाकाम करने की भी अपील की। ●

शोक समाचार

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के वरिष्ठ शिक्षक श्री मदनपाल राठी जी की माता श्रीमती शान्ति देवी जी का अकस्मात ११ जुलाई को निधन हो गया है। अन्तिम समय मे श्री राठी प्रचारार्थ हरयाणा मे गये हुये थे अत. वे अन्तिम शोक सभा मे भी सम्मिलित न हो सके इसका हमे हार्दिक दुख है। अत समस्त सार्वदेशिक आर्य वीर दल की ओर से इस पुण्य आत्मा की प्रभु से सद्गति एव शान्ति की प्रार्थना करता हू। एव इनके परिवार को इनके न रहने से जो आत्मिक कष्ट होगा प्रभु उसको सहन करने की शक्ति प्रदान करे। ओ३म् शान्ति—

हरिसिंह आर्य, कार्यालय मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य वीर दल

५६ वां शहीद परिवार फंड सम्मेलन सम्पन्न

आतंकवाद से प्रभावित ८० परिवारों को आठ लाख रुपए वितरित किए गए

दिनाक ८ अगस्त १९९३ को जालन्धर (पंजाब) मे ५६ वा 'शहीद परिवार फंड सम्मेलन' हुआ था जिसमे श्री आर एल भाटिया, विदेश राज्य मन्त्री, भारत सरकार, मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर ८ लाख रुपए आतकवाद से प्रभावित ८० परिवारो को बाटे गए। ठाकुर रामलाल, भूतपूर्व राज्यपाल, आन्ध्रप्रदेश तथा भूतपूर्व मुख्यमन्त्री हिमाचल प्रदेश ने सम्मेलन की अध्यक्षता की।

चित्र मे श्री भाटिया 'यूनियन ट्रस्ट आफ इण्डिया' के ड्राफ्ट एक विधवा को दे रहे हैं और ठाकुर रामलाल दैनिक उपयोग की अन्य वस्तुऐ उसे भेंट कर रहे हैं।

भोपाल के मिशनरी स्कूल

(पृष्ठ १ का शेष)

की प्रार्थना तो सभी छात्रो के लिए अनिवार्य है परन्तु राष्ट्र के गौरव के प्रतीक जन-गण-मन को गाने की अनुमति नहीं है। मामला भोपाल के कलेक्टर के पास पहुचा परन्तु वे कोई भी कारंवाई न कर पाये। कलेक्टर का कहना था कि ऐसा कोई कानून नहीं हैं जिसके अन्तर्गत किसी व्यक्ति या सगठन को राष्ट्रगान' गाने के लिए बाध्य किया जा सके।

विद्यालय के छात्रो ने राष्ट्रगान गाये जाने के लिए प्रिंसीपल को नियमानुसार एक आवेदन पत्र दिया था परन्तु जब वह अस्वीकृत हो गया तो उन्होंने राष्ट्रगान गाने का यह साहसपूर्ण कार्य किया। आश्चर्य की बात है कि कानून की आड़ मे यह खेल खेला जा रहा है। जिस स्कूल मे राष्ट्रगान पर प्रतिबन्ध हो और छात्रो को जन गण मन गाने पर इस प्रकार प्रताडित किया जाता हो, वहा बच्चो को क्या सस्कार मिलते हैं और उनकी सोच कैसी होगी इसकी सहज ही कल्पना की जा सकती है। कहा जाता है कि केरल के स्कूल में भी इस प्रकार की घटना हो चुकी है। उल्लेखनीय है कि इस आशय का समाचार राजधानी से प्रकाशित राष्ट्रीय सहारा के २५ जुलाई के अक मे छपा है।

प्रबन्धक की आवश्यकता

दयानन्द सेवाश्रम सघ के बासवाडा केन्द्र के लिए एक योग्य प्रबन्धक व्यवस्थापक की आवश्यकता है। वानप्रस्थी, सन्यासी जो निष्काम भाव से जाति व धर्म सेवा के कार्य में रुचि रखते हुए भोजन व आवास व्यवस्था पर आश्रम में रहने व सेवा करने को उत्सुक हों, अपना आवेदन पत्र—प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२ के पते पर शीघ्र भेजें।

आडवाणी और प्रवर समिति

यह अच्छा ही हुआ कि जिन दो विवादास्पद विधेयकों पर सम्पूर्ण विपक्ष को आपत्ति है, उन्हें प्रवर समिति को सौंप दिया गया और इस समिति में लालकृष्ण आडवाणी तथा जार्ज फर्नान्डीस सरीखे राजनीतिज्ञों को भी रखा गया है, पर अभी भी यह स्पष्ट नहीं है कि यह प्रवर समिति भारतीय संस्कृति की आत्मा को पहचान भी पायेगी या नहीं ? विडम्बना यह है कि भारतीय संसद और भारत सरकार ने यह जानने की चेष्टा ही नहीं की कि इस संदर्भ में भारतीय मन चाहता क्या है और क्या है भारतीय संस्कृति, क्या है भारतीय अस्मिता और क्या है राष्ट्रीय मुख्यधारा। समझ में नहीं आता कि जिन दोनों विधेयकों को प्रवर समिति को सौंपा गया है, केवल उनसे भारतीय राजनीति, लोकतंत्र और पंथनिरपेक्षता के कल्याण के मार्ग में जो बाधाये है, वे कैसे समाप्त हो जायेंगी। हा, अगर धर्म का अर्थ मतवाद या कर्मकाण्ड या अन्धविश्वास और मजहब से है तब तो बात अलग है। लेकिन फिर भी भारतीय राजनीतिज्ञों को यह बात तो जाननी और माननी ही चाहिए कि धर्म, पंथ या मत या मजहब का पर्यायवाची नहीं है। यदि भारतीय राजनीति को मतवाद, मजहब, कर्मकाण्ड और अन्धविश्वास पर आश्रित किया गया तो पंथनिरपेक्षता के उद्देश्य को प्राप्त नहीं किया जा सकता।

ऐसा लगता है कि भारतीय राजनीतिज्ञों की चमड़ी इतनी कठोर हो गयी है कि वे कुछ भी सुनना, समझना और जानना नहीं चाहते। भारतीय राजनीतिज्ञ जिस तरह जानबूझकर न जानने का बहाना कर रहे हैं, वह और कुछ नहीं देश के साथ धोखाधड़ी है। निश्चित रूप से भारतीय संस्कृति अधर्म मूलक नहीं है और भारतीय मन अधर्म प्रधान राजनीति नहीं चाहता और न ही यह चाहता है कि राजनीति पर कर्मकाण्ड और मतवाद हावी हों। यदि प्रवर समिति ने रिलीजन को धर्म शब्द का पर्यायवाची माना तो यह अंग्रेजियत का दुर्भाग्यपूर्ण प्रदर्शन होगा। "दीन" शब्द को तो धर्म शब्द के थोड़ा बहुत निकट माना जा सकता है, लेकिन मजहब, पंथ या मत को यह दर्जा नहीं दिया जा सकता। वैसे 'दीन' से भी उतनी बात स्पष्ट नहीं होती, जितनी कि धर्म से। लेकिन चूंकि अकबर ने धर्म शब्द के मर्म और भारतीय मन को समझने की चेष्टा की थी इसलिए उसने "दीन-ए-इलाही" का प्रतिपादन किया था। इलाही का अर्थ होता है परमात्मा और दीन का अर्थ होता है वह सब कुछ जो समिष्ट और मानवता के कल्याण के लिए आवश्यक है। पर यह अजीब बात है कि भारतीय संसद धर्म शब्द के मर्म और भारतीय मन को समझने की चेष्टा नहीं कर रही है। इसका कारण निश्चित रूप से यही है कि भारतीय संसद पर अंग्रेजियत हावी है। यदि अंग्रेजी हावी होती तो गनीमत होती लेकिन यहां तो अंग्रेजियत हावी है और यही सारी समस्या की जड़ है। यह आश्चर्य को बात है कि डा. राधाकृष्णन जैसे दार्शनिक, महात्मा गांधी सरीखे मनीषी, अरविंद सरीखे महर्षि और डा. सम्पूर्णानन्द सरीखे राजनीतिक चिंतक ने धर्म शब्द को रिलीजन का पर्याय नहीं माना, फिर भी आज के भारतीय राजनीतिज्ञ धर्म शब्द को रिलीजन का पर्याय साबित करने में तुले हुए है। आज के राजनीतिज्ञ नेहरू के चिंतन से प्रभावित हैं। लेकिन नेहरू ने भारतीय मन की गहराई की थाह नहीं ली थी, उन्होंने केवल भारतीय मन के ऊपरी हिस्से को जाना था और इसीलिए नेहरू और गांधी में मतभेद थे। गांधी जी ने यह कभी नहीं चाहा कि राजनीति धर्म प्रधान न होकर अधर्म प्रधान हो और धर्म को राजनीति से पृथक किया जाना चाहिए। इस तरह की चाहत तो नेहरू की थी कि वे वामपंथी चिंतन से प्रभावित थे। विश्व के वामपंथी यह मानते हैं कि धर्म और रिलीजन पर्यायवाची शब्द हैं। इन वामपंथियों ने भारतीय दर्शन और भारतीय संस्कृति की गम्भीरता को समझने की चेष्टा नहीं की। यही भूल नेहरू ने की—और यही कारण था कि नेहरू को देश के वामपंथियों का समर्थन मिला और इसी वजह से करेला और नीम चढा वाली स्थिति बनी तथा राष्ट्र की समस्याएं बढती चली गयीं। कुल मिलाकर राजनीतिक धींगामुश्ती के सहारे धर्म शब्द को रिलीजन का पर्यायवाची बना दिया गया और अब हालत यह है कि आज के राजनीतिज्ञ पंथनिरपेक्षता और धर्मनिरपेक्षता में कोई अंतर नहीं देख पा रहे हैं। यदि यही स्थिति रही तो शायद आगे चलकर धर्म से अधिक महत्व और सम्मान अधर्म को दिया जाने लगे। यह स्थिति निश्चिय ही भारतीय संस्कृति के लिए और भी अधिक हास्यास्पद होगी।

आज जिस तरह धर्म और पंथ या मजहब या मत के अंतर को समझने की चेष्टा नहीं की जा रही है, वह अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण है। पता नहीं कैसे इन शब्दों के बीच जो अंतर है, उसे विस्मृत कर दिया गया। ऐसा लगता है कि देश के राजनीतिज्ञों ने भारतीय संस्कृति की ओर देखना ही छोड़ दिया है। क्या इस बात को भी विस्मृत कर दिया गया है कि आज से लगभग सवा सौ वर्ष पहले ऋषि दयानन्द ने जब 'सत्यार्थ प्रकाश' लिखा था तब उन्होंने ईसाई मत, बौद्ध मत, वैष्णव मत, जैन मत, इस्लाम मत, शैव मत आदि का प्रयोग किया था। वैसे भी उन दिनों रिलीजन शब्द के अनुवाद के रूप में मत शब्द का प्रयोग होता था, लेकिन जैसे-जैसे पश्चिम की अवधारणाएं हम पर हावी होती गई, हम मत या पंथ या रिलीजन और धर्म के अन्तर को विस्मृत करते गये। जब संविधान बन रहा था, तब भी इस संदर्भ में सवाल उठा था, लेकिन तब पश्चिम से प्रभावित नेहरू का प्रभाव कुछ इतना अधिक था कि यह सवाल अनसुना और अनुत्तरित रह गया। अब जब भारतीय संसद इस संदर्भ में चर्चा कर रही है, तब धर्म संबंधी अवधारणा को सही रूप में स्वीकार कर अतीत की भूल को सुधारा जा सकता है, लेकिन दुर्भाग्य यह है कि ऐसे कोई संकेत नजर नहीं आ रहे हैं।

यह ठीक है कि 'धर्म' को राजनीति से अलग करने संबंधी विधेयक को जिस पन्द्रह सदस्यीय सयुक्त प्रवर समिति को सौंपा गया है, उसमें लालकृष्ण आडवाणी को भी शामिल किया गया है, लेकिन उनका शामिल होना तभी सार्थक होगा जब वे अंग्रेजियत प्रधान मानसिकता का परित्याग करें और रिलीजन शब्द को धर्म का पर्यायवाची बनने का विरोध करें। अगर लालकृष्ण आडवाणी ने भी रिलीजन शब्द को धर्म शब्द का पर्यायवाची मान लिया, तब बड़ा अनर्थ हो जायेगा। देश यही मानेगा, जैसे नागनाथ वैसे ही सांपनाथ। भले ही लालकृष्ण आडवाणी की बात स्वीकार की जाये या नहीं, लेकिन उन्हें स्पष्ट रूप से यह कहना चाहिए कि धर्म शब्द रिलीजन शब्द का पर्यायवाची नहीं है, अतः धर्म शब्द का प्रयोग न करके उसके स्थान पर मत, पंथ या मजहब शब्द का प्रयोग होना चाहिए। धर्म तो प्राणिमात्र के कल्याण का विषय और सत्य का स्वरूप है। धर्म-विहीनता का अर्थ है, असत्य और अनैतिक। अतः धर्मविहीन राजनीति का अर्थ अनैतिकता और असत्य प्रधान राजनीति होगा। धर्म विग्रह नहीं कराता, धर्म शत्रुता नहीं कराता। विग्रह, शत्रुता, वैमनस्यता आदि तो पंथों, मतों और कर्मकाण्डो से आती है, अतः उनसे ही भारतीय राजनीति को पृथक करना होगा, न कि धर्म से।

"दैनिक जागरण" १ अगस्त, ९१ से साभार।

काश्मीरी हिन्दुओं का भविष्य

काश्मीर घाटी के दक्षिण भाग में अलग होमलैंड की मांग की पृष्ठभूमि और तार्किक आधार

प्रो० बलराज मधोक

काश्मीर घाटी अपने किस्म की संसार में सबसे बड़ी घाटी है। समुद्रतल से लगभग ५००० फुट ऊंचाई पर स्थित इस घाटी की अधिकतम लम्बाई अस्सी मील और अधिकतम चौड़ाई चालीस मील है। जेहलम नदी जिसका वैदिक नाम वितस्ता है और आज भी काश्मीर में इसी नाम से जानी जाती है, इसके बीचोबीच बहती है। यह बनिहाल दर्रे के नीचे पांचाल पर्वत की तलहटी में स्थित चश्मों से निकलती है। उनमें से एक का नाम वितस्ता है दूसरे का वेरीनाग। यह घाटी बारामूला—वराहमूल—के पास खत्म होती है। जहां पर नदी घाटी को छोड़कर हिमालय पर्वत में कश्यप ऋषि द्वारा बनाई गई दरार में घुसती है। वहां इसके बाएं सिरे पर देवी मन्दिर है और दाएं छोर पर रामकुंड वाली पहाड़ी स्थित है। कश्यप ऋषि के नाम से इस घाटी का नाम कश्यपमर्ग अथवा काश्मीर पड़ा।

यह घाटी ऋग्वेद में वर्णित सप्तसिन्धवा क्षेत्र के अन्तर्गत पड़ती है और वैदिक आर्यों के मूल स्थान का अंग होने के कारण वैदिक आर्य संस्कृति का यह शुरू से विशेष केन्द्र रही है।

पन्द्रहवीं शताब्दी के मध्य में एक खोरासानी मुसलमान, शाहमीर, ने काश्मीर की अन्तिम हिन्दू रानी, कोटा रानी, को परास्त करके काश्मीर में मुस्लिम राज की शुरूआत की।

उसने कोटारानी को विवाह के पेशकश की जिसे उसने ठुकरा दिया। इस पर उसने कोटा रानी को बलात् अपने हरम में डाल दिया। अगले दिन कोटा रानी ने आत्म हत्या कर ली।

शाहमीर के उत्तराधिकारी सुलतान सिकन्दर ने काश्मीर घाटी का इस्लामीकरण किया। ललितादित्य द्वारा अनन्तनाग के निकट बनाए गए विशाल मार्तण्ड मन्दिर समेत हजारों मन्दिर तोड़ डाले गये, कुछ को मस्जिदों में बदल दिया गया और सारी जनता के सामने इस्लाम अथवा मौत का विकल्प रखा गया। बहुत से हिन्दुओं ने मुसलमान बनकर अपनी जान बचाई अनेक मार दिये गये और कुछ ने काश्मीर घाटी से भागकर जम्मू क्षेत्र में स्थित किश्तवाड़ और राजौरी के राज्यों में शरण ली। असंख्य मन्दिर और मूर्तियां तोड़ने के कारण मुल्लाओं ने सिकन्दर को—बुतशिकन—मूर्तियां तोड़ने वाला की उपाधि दी।

सिकन्दर बुतशिकन के उत्तराधिकारी जैन-उल-आबदीन ने अपने बाप द्वारा किए गए अत्याचारों से मुंह मोड़ा और भागे हुए हिन्दुओं को काश्मीर में लौटने की अनुमति दी। आज के काश्मीरी हिन्दू उन्हीं की सन्तान हैं।

सोलहवीं शताब्दी में काश्मीर घाटी मुगल साम्राज्य का अंग बनी। जहांगीर इस घाटी की प्राकृतिक सुन्दरता से विशेष प्रभावित हुआ और उसने काश्मीर घाटी में कई बाग, जिनमें डल झील के किनारे पर स्थित निशात बाग और शालीमार बाग बहुत विख्यात है, बनवाए। इस काल में बचे हुए काश्मीरी हिन्दुओं ने जिनमें अधिकांश ब्राह्मण थे, अरबी फारसी पढ़नी भी शुरू की और मुगल दरबार और राजघरानों में उन्हें क्लर्क और शिक्षक के रूप में रखा जाने लगा।

औरंगजेब को काश्मीर में हिन्दुओं का अस्तित्व और उनके मन्दिर और पूजा स्थान अखरने लगे। उसने उन पर मुसलमान बनने के लिए दबाव डालना शुरू किया। कुछ काश्मीरी हिन्दू भाग कर तेग बहादुर के पास आए और उन्हें अपनी व्यथा बताई, तब गुरुजी ने औरंगजेब को लिखा कि उन्हें क्यों तंग करते हो इस पर वे औरंगजेब के इस्लामी क्रोध के शिकार बने और दिल्ली के चांदनी चौक में उनका और उनके साथी भाई मतिदास का बलिदान हुआ। इस बलिदान ने काश्मीरी हिन्दुओं को नया जीवनदान दिया।

मुगल काल में ही एक मुगल बादशाह ने दिल्ली दरबार में कार्यरत काश्मीरी ब्राह्मणों को अन्य ब्राह्मणों से विशिष्ट बताने के लिए उन्हें काश्मीरी पंडित कहना शुरू किया। तब से यह नाम सभी काश्मीरी हिन्दुओं पर लागू हो गया है। परन्तु सारे काश्मीरी हिन्दू ब्राह्मण नहीं हैं कुछ अन्य जातियों के हिन्दू भी हैं परन्तु उनकी संख्या और प्रभाव बहुत कम है।

अहमदशाह अब्दाली के हमलों से दिल्ली में मुगल शासन के दुर्बल हो जाने से मुगलों की काश्मीर घाटी पर पकड़ कमजोर हो गई और कुछ समय के लिए काश्मीर घाटी काबुल के अफगान राज्य का एक सूबा बन गई।

१८ ० के लगभग महाराजा रणजीतसिंह की सेनाओं ने एबटाबाद मुजफ्फराबाद और बारामूला के रास्ते काश्मीर घाटी में प्रवेश किया और उस घाटी पर अधिकार कर लिया। १८२० से लेकर १८४६ तक काश्मीर घाटी रणजीत सिंह द्वारा स्थापित लाहौर राज्य का एक सूबा रही। इस काल में काश्मीरी हिन्दुओं में फिर आत्मविश्वास पैदा हुआ और काश्मीर पर उनका प्रभाव बढ़ा। महाराजा रणजीतसिंह ने एबटाबाद से श्रीनगर तक के मार्ग पर सिक्खों के कई गांव बसाए। इसी काल में जहांगीर के साथ काश्मीर में आए छठे गुरु श्री हरगोबिन्द जी की याद में मुजफ्फराबाद, बारामूला और श्रीनगर में छठी बादशाही गुरुद्वारे भी कायम हुए।

१८४६ में अमृतसर सन्धि के द्वारा ईस्ट इंडिया कम्पनी ने लाहौर दरबार से तावान जंग के रूप में प्राप्त रावी और सिन्धु नदी के बीच के सारे पहाड़ी क्षेत्र पर महाराजा गुलाबसिंह का आधिपत्य स्वीकार कर लिया। काश्मीर घाटी को छोड़ यह सारा क्षेत्र पहले ही गुलाबसिंह के अधिकार में था। इस सन्धि से काश्मीर घाटी पर भी उसका अधिकार हो गया और उसने श्रीनगर को अपने तिब्बत से पठानकोट तक फैले हुए विशाल राज्य की ग्रीष्मकालीन राजधानी बना लिया।

काश्मीर पर डोगरा राजवंश का १९४७ तक वर्चस्व रहा। इस काल में काश्मीर घाटी का बहुत विकास हुआ और शिक्षा और सरकारी नौकरी के क्षेत्र में काश्मीरी हिन्दू बहुत आगे तक गए। बहुत से काश्मीरी परिवारों को बड़ी बड़ी जागीरें भी दी गई। फलस्वरूप काश्मीर घाटी में बहुत से काश्मीरी हिन्दू जमींदार भी बन गए। डोगरा राज्यकाल में काश्मीर घाटी में कुछ डोगरा राजपूत और गोरखे भी बसाए गए।

दूसरे आंग्ल सिक्ख युद्ध के बाद पंजाब पर अंग्रेजों का अधिकार हो जाने के बाद गुलाबसिंह ने जेहलम नदी और सिन्धु नदी के बीच का क्षेत्र अंग्रेजों को वापस कर दिया और फलस्वरूप अंग्रेजों को उसके द्वारा दी जाने वाली एक करोड़ की राशि में २५ लाख की कटौती कर दी। इस प्रकार रावलपिंडी और एबटाबाद का क्षेत्र गुलाबसिंह के अधिकार से निकल कर ब्रिटिश सरकार के अधिकार में चला गया।

डोगरा राज्यकाल में जम्मू काश्मीर राज्य तीन प्रांतों में विभक्त किया गया था। एक था जम्मू जिसमें पठानकोट से बनिहाल तक के क्षेत्र के अतिरिक्त जेहलम नदी के पास लगा हुआ मुस्लिम बहुल मीरपुर क्षेत्र भी शामिल था। दूसरा था काश्मीर प्रान्त जिसमें काश्मीर घाटी के अतिरिक्त मुजफ्फराबाद जिला भी शामिल था। तीसरा था लद्दाख जिसमें बल्तिस्तान भी शामिल था। महाराजा हरीसिंह ने गिलगित को १९३५ में साठ वर्ष के लिए अंग्रेजों को पट्टे पर दे दिया था।

१९४१ की जनगणना के अनुसार काश्मीर प्रान्त में हिन्दू लगभग १५ प्रतिशत थे और काश्मीर घाटी में वे ६ प्रतिशत के लगभग थे।

१९४७ में प० नेहरू के दबाव पर महाराजा हरिसिंह द्वारा रियासत का प्रशासन शेख अब्दुल्ला के हाथ में सौंपने के बाद काश्मीर में हिन्दुओं की फिर दुर्गति होनी शुरू हुई। अब्दुल्ला ने न केवल मुजफ्फराबाद और बारामूला क्षेत्र से आए विस्थापित हिन्दुओं को काश्मीर घाटी में बसने नहीं दिया अपितु

(शेष पृष्ठ ९ पर)

धर्म और राजनीति भिन्न नहीं

विश्वम्भरदेव शास्त्री देवबन्द

भारत आदि काल से धर्म प्रधान देश रहा है। धर्म शब्द भारतीय संस्कृति समाज, और साहित्य का प्राण है। भारतीय मनीषियों ने चार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष मानव मात्र के लिये निर्धारित किये हैं। कणाद ऋषि ने लिखा है "यतोऽभ्युदय निःश्रेयस सिद्धिःस धर्मः" जिन कर्मों को करने से मानव का दोनों लोक कल्याण कारक होते हैं वह धर्म है।

धर्म के आधार पर अर्थ व्यवस्था इसके आधार पर उपभोग जब ये तीनो निरन्तर चलते रहेंगे तो मोक्ष तथा सुख स्वतः प्राप्त हो जावेगा। यह सिद्धान्त जैसे एक मानव के लिये आवश्यक है वैसे ही राष्ट्र और विश्व के लिये भी लाभप्रद है राज्य व्यवस्था की आवश्यकता तभी पड़ी जब जनता में किसी प्रकार का भय उत्पन्न हुआ। समाज से बुरे विचारो को दूर करने के लिये पुलिस की व्यवस्था हुई। इसी लिये गीता वाक्य वानों में बड़े २ शब्दों में लिखा मिलता है :—

"परित्राणाय साधूना विनाशाय च दुष्कृताम्" "धर्म संस्थापनार्थाय" स्वतः प्रकट हो जाता है। सज्जनो का चरित्र ही धर्म है।

भारत के महान् राजनेता चाणक्य ने धर्म से राष्ट्र का मूल माना है। उन्होंने लिखा—"सुखस्य मूलं धर्मः, धर्मस्य मूल अर्थः, अर्थस्य मूलं वाणिज्यं, वाणिज्य मूलं स्वराज्यम्, स्वराज्यस्य मूल चारित्र्यम्। यह है स्वस्थ राजनीति जिसमे धर्म से लेकर चरित्र तक की प्रधानता मानी गई है। राजनीति वही उत्तम है जिसमें जनता का चरित्र ऊंचा हो।

जितने भी कल्याण कारक काम हैं—तप, दान, परोपकार, योग, वैराग्य आदि उनकी गिनती धर्म में गिनी जाती है। जो भी दुःखदायक हानिकारक, पक्षपात युक्त कार्य हैं उनकी गिनती अधर्म और पाप मे होती है।

भारतीय स्वातन्त्र्य आन्दोलन क्यो लड़ा गया—तभी जब अंग्रेजों के अत्याचारों से जनता पीड़ित होने लगी। मुट्ठी भर विदेशी शासक इतने बड़े देश पर मनमानी अत्याचार करने लगे। इस सोने की चिड़िया को विचारों से तथा सम्पत्ति से भी कंगाल बना दिया—तब जन-जागृति उत्पन्न हुई। अंग्रेजों को भगाने के लिये धर्म युद्ध छेड़ा गया।

१८५७ के पश्चात् इस धर्म युद्ध का प्रारम्भ हुआ। ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज और आर्य समाज जैसी संस्थाओं का आविर्भाव हुआ। इनमें पहली दो समाजें अंग्रेजी से प्रभावित थी, अतः अंग्रेजी राज्य का विरोध करने में असमर्थ थी। तीसरी समाज का संस्थापक अंग्रेजी का अक्षर भी न जानने हुये अपनी विद्वता देशभक्ति, ब्रह्मचर्य और दूरदर्शिता से अंग्रेजी राज्य के नाश के लिये कटिबद्ध हो गया।

गान्धी जी के शब्दो में—ब्रिटिश राज स्थापित होने के पश्चात् जनता के साथ सीधा सम्पर्क रखने का मार्ग महर्षि दयानन्द ने खोज निकाला। आर्य-समाज ने प्रजा में नव चेतना पैदा की है। राष्ट्र की महान सेवाओ में मेल रहने के कारण मुझे आर्य समाज बहुत प्रिय है।" समाज की कुरीतियों को दूर करने मे स्वामी जो गान्धी जी के मार्गदर्शक थे। नव जागृति के कारण तत्कालीन अंग्रेज शासको को चिन्ता होने लगी। उनसे जो कुछ बन पड़ा सब कुछ किया और स्वामी दयानन्द के पश्चात ही १८५७ में सर ह्यूम ने कांग्रेस की स्थापना की।

जैसे जैसे कांग्रेस मे आर्य विचारधारा के स्वतन्त्रता प्रेमी लोगों का आना प्रारम्भ हुआ, उसमे आत्मिक शक्ति आने लगी। गान्धी जी ने तो प्रत्यक्ष राजनीति में सत्य और अहिंसा को स्थान देकर उसमें धर्म का प्रवेश कराया। सत्य और अहिंसा धर्म के लक्षणो में गिने जाते हैं। इसका प्रवेश कराकर कैसे राज्य की कल्पना करते थे स्वतन्त्रता प्रेमी—इसका उदाहरण पूर्व भारतीय राजा अश्वपति का शासन था।

एक बार कुछ ऋषि उनके राज्य मे आये राजा ने उनका स्वागत किया भोजन करने के आग्रह पर ऋषियो ने यह समझ कर कि राजा के पास शुद्ध कमाई का होना असम्भव है—मना कर दिया। राजा समझ गया और उसने घोषणा की "न मे जनपदे स्तेन०" हे ऋषियो मेरे राज्य में कोई चोर, शराबी, अशुभकर्मी, व्यभिचारी और अधार्मिक नही है। भारतीय स्वतन्त्रता के लिये अपने प्राणो को अर्पित करने वाले देशभक्त ऐसा ही राज्य चाहते थे। यह धर्ममूलक भावना थी जिसको गान्धी जी रामराज्य कहते थे।

धर्म में मद्यपान पाप समझा जाता है -गान्धी जी ने इसके विरोध में क्या संघर्ष नहीं किया। १९३० के पश्चात धरने दिये जाते थे, पुलिस के डण्डे पड़ते थे, सिर फूट जाते थे सत्याग्रहियो के हम छोटे छोटे बालक स्वयं देखा करते थे। आज क्या है? 'यतो धर्मस्ततो जय' कृष्ण जी का वाक्य सभी दुहराते हैं।

अत्याचार, अन्याय, भ्रष्टाचार आतंकवाद भेद वाद से बचाने के लिये न्यायालयों की आवश्यकता होती है।

अब मुख्य बात है हमारी सरकार धर्म को राजनीति से अलग रखने के लिये कानून बनाने के लिये आतुर हो रही है। इसी लिये धर्म की परिभाषा भी ऊट पटांग करने लगे हैं नेता गण।

हमारे सम्विधान निर्माताओं ने जो विशेष रूप से अंग्रेजी के विद्वान थे—सम्विधान बनाया उन्होंने यह विचार कर कि भारत विभिन्न मत-मतान्तर या सम्प्रदाय वालों का देश है अतः सम्विधान ऐसा बनाया जाय जिसमें किसी एक विशेष मत या सम्प्रदायको लेकर कटुता न हो। इसके लिये सैक्यूलरिज्म" विशेषण दिया। परन्तु जब इसका हिन्दी अनुवाद किया गया तो पाश्चात्य विचारो से ओतप्रोत भारतीय विचारधाराओं से अनभिज्ञ ने उसका अनुवाद धर्म, कर दिया। अतः धर्मनिर्पेक्ष" प्रचलित हो गया। सभी राजनीति के धुरन्धरो ने इसको अपना अस्त्र बना लिया। धर्म और सम्प्रदाय में अन्तर होता है। सम्प्रदाय या मत किसी विशेष व्यक्ति द्वारा चलाया होता है—जिसमें पक्ष-विपक्ष का भेद हो जाता है।

सम्विधान का निर्माण राष्ट्र के कल्याण के लिये होता है—यह तो एक राष्ट्रीय धर्म है। सम्विधान निर्माता भी व्यक्ति विशेष होता है अतः समय-समय पर उसके नियमो में परिवर्तन होता रहता है।

धर्म शाश्वत नियम हैं जिससे मानव उत्तम गुण, कर्म और स्वभाव का बनता है।

मनुस्मृति आदि भारतीय सम्विधान ही तो हैं, बहुत समय व्यतीत होने पर इनमें भी विकार उत्पन्न कर दिया गया। उसमें धर्म का लक्षण कितना उत्तम बताया है।

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ॥

स्वामी दयानन्द इसमें अहिंसा परमोधर्मः" और जोड़ देते हैं। तभी तो कहा—जबतक मनुष्य धार्मिक रहते हैं तभी तक राज्य बढ़ता है, जब दुराचारी हो जाता है तब राज्य नष्ट भ्रष्ट हो जाता है।

अतः भारतीय दृष्टिकोण को अपनाकर धर्म शब्द की पवित्रता की भावना को धूमिल न करते हुए इस शब्द को सम्प्रदाय या मत-मतान्तर का चोला न पहनाया जाय। धर्म विहीन राज्य तो एक विधवा के समान है। मेरे वर्तमान भारत के सासदों भारतीय संस्कृति साहित्य और भावनाओं को ध्यान में रख कर धर्म के भाव को समझो तब इसके विषय पर कार्य करो। धर्म तो राजनीति को पवित्र बनाने वाला है। अतः इससे पृथक करना राज-नीति को उच्छृंखल बना देना है।

धार्मिक भावना परोपकार सदाचार, मानवता, बन्धुत्व और एकता सिखाती है। जितनी भी शुभ भावना हैं सब धर्म में समा जाती हैं। धर्म में अन्धता न आनी चाहिये। हमारा भारत पहले भी विश्व कल्याण में तत्पर था अब भी ऐसा प्रयास करना चाहिये जिससे सबका कल्याण हो—

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग भवेत् ॥

जातिवाद बनाम वर्ण व्यवस्था

आचार्य प्रेमभिक्षु एम०ए० (सम्पादक तपोभूमि मथुरा)

तो क्या 'जातिवाद' और 'वर्ण व्यवस्था' दो भिन्न चीजें हैं? निश्चय ही जिस प्रकार धर्म और सम्प्रदाय एक चीज नहीं हैं, अलग-अलग हैं धर्म मनुष्य मात्र का एक है,धर्म मनुष्य मात्र को धारण करने वाली सचाइयों या नियमों का नाम है और सम्प्रदाय अनेक हैं, मत-पन्थ अनेक हैं, वे मनुष्य समाज को बांटते हैं। राजनीति को स्वच्छ और पवित्र बनाने के लिये धर्म का सहचार आवश्यक है, उसके बिना राजनीति अन्धी है और राजनीति के बिना धर्म लंगड़ा है। पर सम्प्रदायवाद महा विनाशक और भयावह है। इसलिये राजनीति धर्म सम्मत और पन्थ निरपेक्ष होनी चाहिये। धर्म की भांति ही मनुष्यमात्र की जाति एक है। अत 'जातिवाद' का प्रश्न ही निरर्थक और बेबुनियाद है, जब कि वर्ण व्यवस्था शुद्ध राष्ट्रीय व्यवस्था होने से परम आवश्यक है। आइये इस बिन्दु पर थोड़ा विस्तार से विचार करें।

जाति और वर्ण पर्यायवाची शब्द नहीं हैं, जाति की परिभाषा करते हुये बताया गया है—'आकृति जाति लिंगाख्या' आकृति से जाति पहचानी जाती है। जैसे गधा, घोड़ा, गाय, बकरी में से प्रत्येक की एक जाति है। यह ईश्वर कृत हैं। इन्हें बदला नहीं जा सकता अर्थात् गाय को गधी और गधी को गाय नहीं बनाया जा सकता। फिर "समान प्रसवात्मिका जातिः" समान प्रसव से जाति पहचानी जाती है। अर्थात् कहीं के भी घोड़े-घोड़ी, या गधा-गधी या पुरुष-स्त्री के संयोग से सन्तान हो जाती हैं—इसमें देश-काल का कोई प्रश्न नहीं है। यह भी एक 'जाति' की पहिचान है। इस प्रकार सम्पूर्ण मानव जाति एक है, अनेक नहीं। हां, मनुष्य जाति के कार्य की सुविधा और राष्ट्रीय चेतना के आधार पर गुण-कर्म स्वभाव के अनुसार 'वर्ण' चार हैं।

तो जाति मनुष्य मात्र की एक है, यह ईश्वर कृत है। यह अपरिवर्तनीय है, जब कि वर्ण चार हैं, यह वर्ण विभाग मनुष्य कृत हैं, यह परिवर्त्तनीय है। यह ठीक है कि घोड़ा बदल कर गधा या गधा बदल कर घोड़ा नहीं बन सकता क्योंकि यह जाति हैं पर एक ब्राह्मण कुल में जन्मा 'ब्राह्मण' गुण-कर्म स्वभावानुसार क्षत्रिय या वैश्य या शूद्र बन सकता है और शूद्र कुल में जन्म लेने वाला गुण कर्म स्वभावानुसार वैश्य या क्षत्रिय या ब्राह्मण बन सकता है, जैसी कि महर्षि मनु की व्यवस्था है शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम्' अर्थात् एक शूद्र कुलोत्पन्न ब्राह्मणत्व को और ब्राह्मण कुलोत्पन्न 'शूद्रत्व' को प्राप्त हो सकता है। 'जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद द्विज उच्यते' से भी यही तथ्य प्रकट है। वस्तुतः यह वर्ण विभाग किसी प्रकार की उच्चता या निम्नता का परिचायक नहीं, वरन् गुण कर्म-स्वभावानुसार 'पदवी' तथा अपनी २ क्षमताओं का राष्ट्र के प्रति समर्पण-भावना का प्रकाशक है। वृत्त की धुरी से जैसे परिधि तक के सभी सिरे समान हैं, इनमें कोई छोटा, बड़ा नहीं है, यही अवस्था वर्णो की है। पवित्र वेद के अनुसार—"अज्येष्ठा सो अकनिष्ठासः एते संभ्रातरो वावृधुः' तथा—'समानी प्रपा सहवोऽन्नभागः समाने योक्त्रे सहवो युनज्मि। सम्यञ्चोऽग्निं सपर्यतारा. नाभिमिवाभितः" से यही तथ्य प्रकट है।

पवित्र वेद में जहां (यजु० ३१ ११) में राष्ट्र रूप शरीर में ब्राह्मण को शिरोभाग के तुल्य, क्षत्रिय को भुजा (बांहों) के समान, वैश्य को मध्यभाग पेट के समान और शूद्र का चरणों के समान बताया है, वहां भी यह वर्गीकरण किसी उच्चता या निम्नता का द्योतक नहीं. वरन् राष्ट्र रूपी शरीर के सुसञ्चालन के लिये अपने-अपने दायित्वों और कर्त्तव्यों का निदर्शक है। ब्राह्मण या विद्वान् (शिक्षाविद्, वैज्ञानिक, इञ्जीनियर, डाक्टर आदि) समस्त शरीर रूप राष्ट्र का मार्ग दर्शन करेगा, वहां क्षत्रिय (भुजा) राष्ट्र के समस्त अंगों का परिरक्षण, वैश्य (ऊरूभाग) समस्त शरीर रूप राष्ट्र का पोषण और चरण (शूद्र) समस्त राष्ट्रशरीर का धारण करेगा या करता है। पैर का स्थान छोटा होता तो 'पाद वन्दना' क्योंकी जाती है? हाथ पांव की रक्षा के लिये क्यों जाते? पेट अपना रस-रक्त पांव को क्यों पहुंचाये? पैर में कांटा लगता है तो आंख में आंसू क्यों आता है? दांत से कांटा क्यों निकालते है?

वस्तुतः किसी छोटे-बड़े का भाव न होकर राष्ट्र के ये अनिवार्य चार अंग समर्पण भावना से अपना-अपना भाग प्रस्तुत कर राष्ट्र देवता का अर्चन करते हैं। और 'अष्टभुजी दुर्गा' के कार्टून में इसी सत्य को निरूपित किया गया है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र की दो-दो भुजायें मिलकर ही राष्ट्र रूपी दुर्गा की आठ भुजायें हैं। जिस राष्ट्र में ब्राह्मण की विद्या और तप, क्षत्रिय की वीरता और उग्रता, वैश्य का अपार धन-वैभव और शूद्र को सेवा साधना का फल अपने-अपने लिये न होकर राष्ट्र देवता के अर्पित रहता है, जिस राष्ट्र में यह वैदिक वर्ण-व्यवस्था प्रतिष्ठित होती है, वह राष्ट्र अजेय होता है। और यह वर्ण-व्यवस्था जन्म से नहीं गुण कर्म-स्वभाव के आधार पर होती है, जैसा कि योगेश्वर श्री कृष्ण ने भी कहा है—"चातुर्वर्ण्यं मयासृष्टं गुण कर्म विभागशः"।

हमारा सम्पूर्ण प्राचीन इतिहास वैदिक वर्ण-व्यवस्था के इसी आदर्श से अनुप्राणित है। यदि ऐसा न होता तो हम कुल-गोत्रहीन जाबाल को सत्यकाम जाबाल, शूद्र कुलोत्पन्न बाल्मीकि को 'महर्षि' और वसिष्ठ को 'कुलगुरु' एवं 'महामुनि' की पदवी न देते! गाधपुत्र विश्वामित्र को 'राजर्षि' से 'ब्रह्मर्षि' न कहा जाता? श्री राम सर्वाधिक समादर प्राप्त न करते, श्री कृष्ण को 'योगेश्वर' न पुकारते! ठीक इसी प्रकार ब्राह्मण कुलोत्पन्न रावण तब अनार्य और 'राक्षस' न कहा जाता, कंस की प्रतिवर्ष यह दुर्गति न होती? प्रकट है कि एडवोकेट का पुत्र एडवोकेट, प्राध्यापक का प्राध्यापक और डाक्टर का डाक्टर ही हो, यह आवश्यक नहीं है। यह उपाधियां (पदवी) है। इसी प्रकार ब्राह्मण का पुत्र ब्राह्मण और शूद्र का पुत्र शूद्र ही हो, यह आवश्यक नहीं है। इसलिये ब्राह्मण भी शूद्र और शूद्र भी ब्राह्मण हो सकता है, यह भी पदवी हैं, इनमें ऊंच-नीच का भाव लाना पाप है। अतः तुलसीदास की यह चौपाई अवैदिक और त्याज्य है—'पूजिय विप्र शील गुण हीना, शूद्र न पूजिय वेद प्रवीना'।

उपर्युक्त विवेचन के प्रकाश में हिन्दू अर्थात् भारतीयों के हित चिन्तकों ने जहां 'नमस्ते सदा वत्सले मातृ-भूमे' 'नमस्ते' को अपनाया है, जहां 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' और ओंकार को अपनाया है। जहाँ ऋषि दयानन्द निर्दिष्ट दलितोद्धार शुद्धि आन्दोलन को अपनाया है, वहां जन्मगत जाति-व्यवस्था के पाप को हटाकर, सम्पूर्ण 'मानवजाति' की एकता का सन्देश देते हुए गुण कर्म स्वभावानुसार वेदोक्त राष्ट्रीय योजना 'वर्ण व्यवस्था' को भी अपनाना अनिवार्य है, जिसके अभाव में जाति और वर्ण का अन्तर न समझने वाले तथाकथित प्रगतिवादी नेता 'धर्म' की भांति वर्ण-व्यवस्था को ही समाप्त कर, आपस में भेद-भाव उत्पन्न कर 'मण्डल आयोग' जैसी फूट डालने वाली योजनाओं को प्रश्रय दे, सर्वनाश को आमन्त्रित कर रहे हैं। परमेश्वर मेरे राष्ट्रवासियों को सुमति दे। वे आर्यसमाज निर्दिष्ट वैदिक सचाइयों को समझें और अपनायें, जिससे सभी के कल्याण का मार्ग प्रशस्त हो। 'धियो यो नः प्रचोदयात्'।

●

तलाक पर जरूरत है सार्थक बहस की

--मीना हटवाल

तलाक का मसला एक बार फिर विवाद के घेरे में है। दरअसल भारतीय परिवेश के मुस्लिम समाज में सनक भरे तलाकों की बढ़ती संख्या गम्भीर समस्या बनती जा रही है। ऐसे तलाक पिछले दशकों में अधिक हो रहे हैं। जिसकी वजह से आमतौर पर यह धारणा पुख्ता हुई है कि मुस्लिम समाज में कोई भी आदमी केवल अपने मन की मौज या किसी बड़ी ही मामूली वजह पर पत्नी को जब मर्जी आये तलाक दे सकता है। लेकिन हाल ही में एक मुस्लिम संगठन 'जमीयत अहले हदीस' ने इस प्रकार से होने वाले तलाकों को तलाक मानने से इनकार किया है। इस संगठन की पूरे देश भर के मुसलमानों के बीच अच्छी साख है। यह न केवल राजनीति बल्कि मुसलमानों के धार्मिक व सामाजिक मामलों को भी सुलझाने में मदद करता है। इसके तीन मुफ्तियों ने एक मामले पर फैसला देते हुए कहा कि एक साथ तीन बार तलाक कहने से तलाक नहीं होता है। ऐसा करना कुरान के साथ मज़ाक है। उनका यह फैसला तलाक को फिर से परिभाषित करने की दिशा में नया कदम है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि कई तलाक इस प्रकार से दिये गये हैं जो तलाक से ज्यादा औरत की जिन्दगी के साथ क्रूर मजाक अधिक है। मसलन किसी के उकसाने पर पत्नी को तलाक दे देना या दाल में नमक ज्यादा हो जाने पर तलाक जैसी घटनायें बहुत आम हो गयी हैं। मुफ्तियों ने इसके लिए बाकायदा फतवा जारी किया है, जिसकी वजह से मुस्लिम महिलाओं के साथ तलाक सम्बन्धी समस्या पर एक लम्बी बहस छिड़ गयी है।

कमोबेश ऐसी ही बहस शाहबानो मामले पर काफी शिद्दत के साथ चली थी। जिसमें सर्वोच्च न्यायालय ने तलाकशुदा पत्नी को पति द्वारा भरण-पोषण दिये जाने का ऐतिहासिक फैसला दिया था। लेकिन रूढ़िवादी मुसलमानों के विरोध के कारण सर्वोच्च न्यायालय के फैसले पर अमल नहीं हो सका था। हालांकि मुसलमानों का बड़ा तबका इसके हक में था, पर मुस्लिम वोट बैंक बिखरने के भय से घिरी सरकार ने तुरत-फुरत मुस्लिम महिला विधेयक बनाकर मुस्लिम महिलाओं के हक की लड़ाई शुरू होने से पहले ही खत्म कर दी। जिस अहम मुद्दे पर राष्ट्रव्यापी बहस हो रही थी, वह अचानक ही समाप्त हो गयी।

दरअसल मुस्लिम महिला विधेयक बहुत ही जल्दबाजी में बना। औरतों के सामाजिक न्याय से जुड़े प्रश्न को गम्भीरता और जिम्मेदारी से समझने की कोई कोशिश नहीं हुई। सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के विरोध में समाज के किसी वर्ग का एक गुट खड़ा हो गया तो, सरकार ने अपनी किसी तरह संतुष्ट करने की नीति के तहत बिना सोच-विचार के रूढ़ियों पर आधारित एक विधेयक बना दिया। दरअसल यह विधेयक पूरी तरह राजनीति से प्रेरित था। इसमें मुस्लिम कानूनों की कमियों को दूर करने के बजाय और भी पेचीदा बना दिया गया।

गौर तलब बात है कि वक्फ बोर्ड की माली हालत काफी खस्ता है। ऐसे में उस पर भरण पोषण की जिम्मेदारी डालना क्या तर्क संगत हो सकता है? दूसरी ओर शादी के बाद लड़की की हैसियत मायके में एकदम दूसरी हो जाती है—चाहे वह हिन्दू परिवार की हो या मुस्लिम। भारतीय समाज का ढांचा ही कुछ ऐसा है कि विवाहोपरान्त लड़की का अपने परिवार से अधिकार समाप्त हो जाता है। उस पर पति द्वारा ठुकरायी गयी तलाकशुदा औरत अपने मां-बाप पर एक बोझ हो समझी जाती है।

हर वर्ग के धर्म की महिलाओं की अपनी समस्या है। लेकिन मुस्लिम महिलाओं की सबसे बड़ी त्रासदी उनके पति द्वारा उन्हें जब भी आये तलाक देना है। भारतीय समाज कहीं अधिक कट्टरपने से तलाक की इस मनमानी प्रथा का निर्वाह करता आ रहा है जबकि अधिकतर मुस्लिम देशों में पत्नी को एक साथ तीन बार तलाक कहकर छोड़ देने की प्रथा समाप्त हो चुकी है। मिस्र में इस प्रथा को समाप्त कर दिया गया है, जर्दन में तलाक का अधिकार पत्नी को भी है। ईरान में दो पत्नी वाले पति को एक वर्ष की सजा या जुर्माना या दोनों से दण्डित करने का प्रावधान है। ट्यूनीशिया में अदालत के बाहर तलाक गैरकानूनी है, अल्जीरिया में भी इसी प्रकार का कानून है।

अधिकतर मुस्लिम देशों में पत्नी को एक साथ तीन बार तलाक कहकर छोड़ देने की प्रथा समाप्त हो चुकी है। मिस्र में इस प्रथा को समाप्त कर दिया गया है, जार्डन में तलाक का अधिकार पत्नी को भी है। ईरान में दो पत्नी वाले पति को एक वर्ष की सजा या जुर्माना या दोनों से दंडित करने का प्रावधान है। ट्यूनीशिया में अदालत के बाहर तलाक गैर कानूनी है, अल्जीरिया में भी इसी प्रकार का कानून है। पाकिस्तान में तलाक के लिए अदालती कारंवाई अनिवार्य है, तथा इंडोनेशिया में अदालत के बाहर तलाक को मान्यता नहीं है।

पाकिस्तान में तलाक के लिये अदालती कार्रवाई अनिवार्य है तथा इंडोनेशिया में अदालत के बाहर तलाक को मान्यता नहीं है।

मुस्लिम देशों में ऐसी कानूनी शर्तें होने के कारण वहां के पुरुष यदि चाहें भी तो अपनी पत्नी को ऐसे मनमाने ढंग से तलाक नहीं दे सकते हैं। जबकि इसके ठीक विपरीत भारतीय मुस्लिम महिलाओं को इस सन्दर्भ में कोई कानूनी संरक्षण प्राप्त न होने के कारण वह लगातार अन्याय और उपेक्षा का शिकार होती है। वह हमेशा घुट-घुटकर इस तनाव में जीती है कि उनका पति जब चाहे उन्हें तलाक दे सकता है या बिना तलाक दिये तीन विवाह और कर सकता है। इसलिए भारत में मुस्लिम विवाह का पंजीकरण अनिवार्य करके अदालत के बाहर की गई ऐसी कार्रवाई को मान्यता नहीं मिलनी चाहिए। आज के युग में बहुविवाह प्रणाली का अपनाया जाना अनुचित है।

जिस जमाने में कुरान की रचना हुई, उस दौर का यह बहुत ही प्रगतिशील धर्मशास्त्र विधिशास्त्र) भी था। उस समय एक आदमी कई-कई औरतें रखता था इसलिए कुरान में सिर्फ चार विवाह तक की शर्त रख दी गयी। लेकिन आधुनिक परिवेश में पुरानी धार्मिक मान्यताओं और कानूनों के अनुसार नहीं चला जा सकता। इसलिए जमीयत अहले हदीस संगठन के फैसले का स्वागत होना ही चाहिए। लेकिन पटियाला हाउस के एक वकील आई यू खान मुफ्तियों के फैसले से बिल्कुल सहमत नहीं हैं। उनका मानना है कि यदि तीन बार तलाक कहने से भी तलाक नहीं होगा तो तलाक की क्या मान्यता

(शेष पृष्ठ १० पर)

काश्मीरी हिन्दुओं का भविष्य

(पृष्ठ ४ का शेष)

काश्मीर घाटी मे पहले से बसे हिन्दुओ और सिक्खो के लिए भी काफिया तग करना शुरू किया। उनसे जमीने छीन ली गई और सरकारी नोकरियो के द्वार उनके लिए लगभग बन्द कर दिये गए। फलस्वरूप काश्मीर घाटी से हिन्दुओ का पलायन शुरू हुआ।

जिस तेजी से काश्मीर घाटी की जनसख्या गत पचास वर्षो में बढी है वहां हिन्दुओ की जनसख्या उस समय सात लाख से ऊपर होनी चाहिये थी। परन्तु १९८८-८९ में जब योजनाबद्ध ढग से सारे हिन्दुओ को घाटी से निकाला गया उनकी सख्या वहा तीन लाख के लगभग रह गई थी। यह इतिहास की बहुत बड़ी विडम्बना और स्वतत्र भारत का सबसे बड़ा कलक है कि जो काम सिकन्दर बुत शिकन और औरगजेब नही कर पाया था, वह वी पी सिंह की सरकार जो भाजपा के समर्थन से बनी थी ने कर दिखाया। वी पी सिंह सरकार के गृह मन्त्री मुफ्ती सईद, जो स्वय काश्मीरी हैं का भी इसमें बड़ा हाथ था। भाजपा का नेतृत्व भी इस मामले मे अपनी जिम्मेदारी से बच नही सकता।

काश्मीरी हिन्दू काश्मीर घाटी के मूल निवासी हैं। लम्बे मुस्लिम राज्यकाल मे उन्होने ही काश्मीर की विशिष्ट सस्कृति और पहचान को बनाए रखा। आधुनिक काश्मीर के सांस्कृतिक और आर्थिक विकास मे उनका बड़ा हाथ है।

इस समय काश्मीर के विस्थापित हिन्दू सारे हिन्दुस्तान के अतिरिक्त अमेरिका और ब्रिटेन मे भी फैल चुके हैं। उनमे से अधिकाश जम्मू और दिल्ली में हैं। उनकी स्थिति दयनीय है। ठडे क्षेत्र के वे वासी जम्मू और दिल्ली की गर्मी के अभ्यस्त नहीं हैं। उचित निवास और जीवन-यापन का प्रबन्ध न होने के कारण उनकी स्थिति और भी खराब हो गई है।

काश्मीरी हिन्दुओं ने १९९१ मे जम्मू मे अपना एक प्रतिनिधि सम्मेलन बुलाया था। उसमें भारत और विदेश से आए लगभग आठ सौ प्रतिनिधियो ने भाग लिया था। इस सम्मेलन मे पारित एक सर्वसम्मत प्रस्ताव के द्वारा काश्मीरी हिन्दुओं ने माग की थी कि उन्हे काश्मीर घाटी में ही फिर से बसाया जाय। परन्तु क्योकि मुसलमानो ने वहा उनका पुराने घरों मे रहना असभव बना दिया है इसलिए उनकी माग है कि काश्मीर घाटी के दक्षिण भाग में जवाहरमल से लेकर जोजिला दर्रे तक के क्षेत्र को उनका सुरक्षित होमलैंड बनाया जाय और इसे भारत के सविधान के अन्तर्गत केन्द्र शासित राज्य का दर्जा दिया जाय। इस प्रस्ताव मे यह भी स्पष्ट कर दिया गया है कि काश्मीरी हिन्दुओं को संविधान के अनुच्छेद ३७० के द्वारा काश्मीर को दिये गए विशेष दर्जे से कोई लेना देना नहीं। काश्मीरी हिन्दू पहले भारतीय हैं और फिर काश्मीरी। वे सारी काश्मीर घाटी को भारत का अविभाज्य अग मानते हैं। परन्तु जिस प्रकार आसाम में विभिन्न लोगो की आकाक्षाओ को पूरा करने के लिए अनेक अलग अलग राज्य बनाए गए हैं उसी प्रकार काश्मीर में काश्मीरी हिन्दुओ का एक अलग राज्य बनाया जाय। इससे देश की एकता कमजोर नहीं होगी बल्कि उसे बल मिलेगा क्योकि काश्मीरी हिन्दू घाटी और शेष भारत के बीच सबसे पुरानी और स्थिर कड़ी है।

यह दुर्भाग्य का विषय है कि भारत के बुद्धिजीवी, राजनेता और राजनैतिक दल बोसनिया मे ईसाई सर्बो द्वारा मुसलमान सर्बो की सफाई के विरुद्ध तो हाय तोबा मचा रहे हैं किन्तु काश्मीर में काश्मीरी हिन्दुओं की सफाई के विषय में चुप हैं। भारत सरकार ने भी इस विषय को अभी तक किसी भी अन्तर्राष्ट्रीय मच पर नहीं उठाया। अमरीका के काश्मीर फोरम की ओर से १५ नवम्बर १९९२ को सानफ्रासिसको में आयोजित एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन मे मैंने पहली बार इस मुद्दे को तथ्यो और तर्क के साथ उठाया था।

काश्मीर के हिन्दुओ के हित, काश्मीर घाटी के हित और भारत के स्थायी राष्ट्रहित यह माग करते हैं कि भारत सरकार भारत के राजनेता, समाचार पत्र और बुद्धिजीवी काश्मीरी हिन्दुओ की माग को समझें और उनके द्वारा की गई काश्मीर घाटी मे होमलैंड की माग को अपना पूरा समर्थन दें। काश्मीर घाटी केवल काश्मीरी मुसलमानो की ही नहीं है काश्मीरी हिन्दुओ की भी है। उन्हें अपने काश्मीर में सम्मानपूर्वक रहने का अधिकार है और उसका एक मात्र रास्ता उन्हें घाटी मे सुरक्षित होमलैंड देना है।
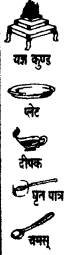
कई बार कहा जाता है कि काश्मीर के सम्बन्ध में कोई भी फैसला करने से पहले काश्मीर के लोगो की भी राय ली जानी चाहिए उन्हें एक पार्टी मानना चाहिये। यह बात काश्मीर के हिन्दुओ पर भी लागू होती है। काश्मीर घाटी के भविष्य इसके भावी, प्रशासनिक ढाचे इत्यादि के सम्बन्ध में फैसला करते समय काश्मीरी हिन्दुओ को भी एक आवश्यक पार्टी मानना चाहिये।

तलाक पर जरूरत है

(पृष्ठ ७ का शेष)

रह जाएगी। इसी तरह वे औरतों को तलाक का हक दिये जाने के भी विरुद्ध हैं। उनके अनुसार मजहब मे नहीं है इसलिये औरत तलाक कैसे दे सकती है? मजहब मे आदमी का स्थान औरत से ऊचा है। हालांकि वे औरत को पति द्वारा भरण पोषण दिये जाने के पक्ष मे है।

उच्च न्यायालय के वकील एम ए खान और श्री अन्सारी तलाक देने का सबसे सही ढग से समय के अन्तराल मे तीन बार दिये गए तलाक को मानते हैं यानि एक तलाक कहने के बाद दूसरा तलाक दूसरे महीने कहा आएगा। इस दौरान तलाक देने वाले को सोचने समझने का मौका मिलता है। यदि वह चाहे तो तीसरा तलाक न बोलकर विवाह टूटने से बच सकता है लेकिन तीसरी बार तलाक कहने पर विवाह टूट जाता है और पुन उन्हीं सम्बन्धो को बनाने के लिये पत्नी को 'हलाला' प्रक्रिया से गुजरना होगा। मुस्लिम समाज में बगैर सोचे-समझे दिये जाने वाले तलाकों की वजह वे मुसलमानो का अशिक्षित और गरीब होना मानते हैं। अशिक्षा के कारण ही उनमे जागरूकता की कमी होती है।

मुस्लिम कानूनो मे व्याप्त कमियो को जब भी दूर करने का प्रयास किया गया तो इन कठमुल्लाओं ने धर्म मे सीधे हस्तक्षेप का मुद्दा बनाते हुए आन्दोलन शुरू कर दिये। क्योंकि कानून मे सुधार होने से सबसे अधिक नुकसान ऐसे ही लोगो का होता है, जो अब तक इसकी कमजोरियो का फायदा उठाते आए हैं। भारत मे जम्मू कश्मीर का सिर्फ बकरवाल समुदाय ही इस प्रकार के तलाक को मान्यता नहीं देता है पर वहा के अन्य मुस्लिम समुदायो मे यह समस्या चिंता जनक ढग से बढ रही है। जबकि बिना किसी कारण के तलाक दे देना अनुचित और क्रूरतापूर्ण है। अब तक मुफ्तियो और मौलवियो ने इस समस्या का स्थायी हल ढूढने की कभी कोई कोशिश नहीं की। न ही मुस्लिम पर्सनल ला के तहत ही ऐसी कोई कोशिश हुई। विभिन्न अदालतो द्वारा तलाक पर दिये गये फैसले भी सिर्फ विवाद बनकर रह गये उनके अमल पर कभी कोई सार्थक प्रयास नही किये गये।

लेकिन शायद पहली बार किसी मुस्लिम सगठन ने एक साथ तीन बार तलाक कहने को तलाक की परिधि नही माना। जबकि मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड ने कभी भी इसमे सुधार का प्रयास नहीं किया। लेकिन मुफ्तियो द्वारा दिया गया यह फैसला मुस्लिम कानूनो को जटिल बनने से रोकने की ओर एक जरूरी पहल बना है। (१३ जुलाई १९९३ के नवभारत टाइम्स से साभार)

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक में

एम. फिल. कोर्स बन्द नहीं होगा

नई दिल्ली ९ अगस्त। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक में एम. फिल की कक्षायें बन्द न करने का निर्णय लिया गया है। यह फैसला कुलपति ओ०पी० चौधरी की अध्यक्षता मे ७ अगस्त को सम्पन्न हुई शैक्षणिक परिषद की बैठक मे लिया गया। उल्लेखनीय है कि दो मास पूर्व हरियाणा सरकार के आदेश पर विश्वविद्यालय मे कक्षायें बन्द करने का निर्णय लिया गया था। कार्यकारी परिषद के अनुरोध पर पुनर्विचार के बाद शैक्षिक परिषद ने अपना पुराना निर्णय बदल दिया।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०७४/९३ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२९-८-१९९३) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० यू (सी) ९३
R N 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U (C),93 Post in N.D.P.S.O.on 19-20-8-1993

पं. जगतराम आर्य का निधन

महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त, आर्य समाज के सिपाही हिन्दी सेवी और देशभक्त प० जगतराम आर्य जी का निधन बुधवार ४ अगस्त १९९३ को हो गया।

जगतराम जी आर्यसमाज मन्दिर बच्छो वाली लाहौर, आर्य समाज मन्दिर दीवान हाल आर्य समाज मन्दिर गाधीनगर और आर्य समाज मन्दिर प्रीत विहार दिल्ली के कर्मठ एव सक्रिय सदस्य रहे। आर्य जी ने अपने जीवन के उत्तरार्द्ध मे दो प्रतिज्ञाओ का पालन किया। पहला—हिन्दी मे निमन्त्रण पत्र स्वीकार करना। दूसरा जीवन के उत्तरार्द्ध मे किसी सामाजिक व धार्मिक सस्था का कोई भी पद ग्रहण न करना।

जगतराम जी ने अब से २५ वर्ष पहले 'किताबघर नाम से प्रकाशन का कार्य आरम्भ किया था। इस प्रकाशन गृह मे हिन्दी कीपुस्त के छपने लगी जिनमे देश भक्ति और नैतिक शिक्षा विषय का समावेश था। प्रकाशन के साथ-साथ आर्य जी यदा कदा बच्चो के लिए उपयोगी पुस्तकें भी लिखते रहे। श्री जगत राम जी की स्मृति मे १४ अगस्त को एक शोक सभा का आयोजन किया गया जिसमे नगर के अनेको प्रतिष्ठित व्यक्तियो ने भाग लेकर उनको भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की।

जन्म १६ दिसम्बर १९१०।

—सम्पादक

आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक सभा द्वारा आयोजित सत्यार्थ प्रकाश प्रतियोगिता मे भाग लेने के लिए जिन प्रतियोगियो ने शुल्क जमा करके अपना रोल न० जारी कराया है, उनसे प्रार्थना है कि वे अपना उत्तर पुस्तिकायें सार्वदेशिक सभा कार्यालय में पूर्व निर्धारित अन्तिम तिथि ३१ अगस्त १९९३ तक अवश्य भेज देवें उसके बाद में भेजी जाने वाली उत्तर पुस्तिकाओ पर विचार नहीं किया जायेगा।

—डा० ए बी आर्य
रजिस्ट्रार, सत्यार्थप्रकाश परीक्षा

स्वामी गणपत राय का निधन

आर्य अनाथालय पटौदी हाउस नई दिल्ली-२ के आजीवन ब्रह्मचारी स्वामी गणपतराय का ८० वर्ष की आयु मे १५ अगस्त १९९३ को निधन हो गया है। वह पुरानी पीढी के आर्य समाजी थे। दिल्ली नगर निगम सेवा से अवकाश प्राप्त पेंशन धारी थे। सार्वदेशिक प्रकाशन लि० स्वामी जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए दिवगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना करता है।

योगिराज श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व

आर्य समाज दीवान हाल की ओर से धूमधाम से मनाया गया

दिल्ली ११ अगस्त। दिल्ली की प्रमुख आर्य समाज दीवान हाल के तत्वावधान मे योगिराज श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व बडे उत्साह और समारोह पूर्वक मनाया गया। श्रावणी उपाकर्म २ अगस्त से चल रहे वेद सप्ताह कार्यक्रम के अन्तर्गत यजुर्वेद पारायण यज्ञ श्री प० महेन्द्र कुमार शास्त्री के ब्रह्मत्व मे सम्पन्न हुआ। आज प्रात यज्ञ की पूर्णाहुति का कार्यक्रम रखा गया जिसम अनेक गणमान्य महानुभावो ने आहुतिया देकर पूर्णाहुति कार्यक्रम मे भाग लिया।

यज्ञ पूर्णाहुति कार्यक्रम के पश्चात् श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का विशेष कार्यक्रम आर्य समाज दीवान हाल के प्रागण मे सम्पन्न हुआ जिसमे मुख्य अतिथि के रूप मे गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के परिदृष्टा न्यायमूर्ति महावीर सिह जी ने पधारकर भाग लिया। उन्होने जन समूह को सबोधित करते हुए कहा कि जिस प्रकार से श्रीकृष्ण ने धर्म की रक्षा के लिए पाडवो का साथ दिया था उसी प्रकार से आज की राजनीति मे भी वही व्यक्ति आवें जो धर्म के आधार पर कार्य करने वाले हो तभी देश का कल्याण हो सकेगा। तत्पश्चात् गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति डा० धर्मपाल, दिल्ली विश्व विद्यालय मे सस्कृत विभाग के अध्यक्ष डा० वाचस्पति उपाध्याय, प० नेत्रपाल शास्त्री श्री प० श्याम सुन्दर स्नातक आदि प्रमुख गणमान्य विद्वानो ने योगिराज श्रीकृष्ण के जीवन पर प्रकाश डालते हुए नव युवको को उनके आदर्शों पर चलने के लिए प्रोत्साहित किया। समारोह की अध्यक्षता न्यायमूर्ति महावीर सिह जी ने ही की।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने अपने आशीर्वाद भाषण मे योगिराज श्रीकृष्ण के जीवन पर प्रकाश डालते हुए समस्त आर्य जनता को, उनके उज्ज्वल जीवन से प्रेरणा लेने का सन्देश दिया।

समारोह का कुशल सचालन आर्यसमाज दीवानहाल के महामत्री श्री सूर्यदेव जी ने किया।

सार्वदेशिक प्रेस ... नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ... दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

महर्षि दयानन्द उवाच

● मनुष्य को यह करना उचित है कि ईश्वर ने मनुष्य में जितना सामर्थ्य रखा है, उतना पुरुषार्थ अवश्य करे। उसके पश्चात् ईश्वर के सहाय की इच्छा करनी चाहिये। क्योंकि मनुष्यों में सामर्थ्य रखने का यही प्रयोजन है कि मनुष्यों को अपने पुरुषार्थ से ही सत्य का आचरण अवश्य करना चाहिए। जैसे कोई मनुष्य आंख वाले पुरुष को ही कोई चीज दिखा सकता है अन्धे को नहीं।

● जब तक एक मत, एक हानि लाभ, एक सुख-दु.ख परस्पर न मानें तब तक उन्नति होना कठिन है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र   दूरभाष : ३२७४७७१   वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३१ अंक २६]   दयानन्दाब्द १६६   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९४   भाद्रपद शु० १३   सं० २०५० २६ अगस्त १९९३

भारत के वैज्ञानिक दो वर्ष में स्वदेशी राकेट इञ्जन बना लेंगे : प्रधानमन्त्री

नई दिल्ली, १८ अगस्त। प्रधानमन्त्री पी०वी० नरसिम्हा राव ने आज देशवासियों को विश्वास दिलाया कि यदि निर्धारित कार्यक्रम के मुताबिक रूस से १९९६ में क्रायोजेनिक राकेट इञ्जन उपलब्ध नहीं हुए तो हमारे वैज्ञानिकों ने आगे के दो वर्षों में उन्हें देश में विकसित करने का भरोसा दिलाया है।

श्री राव ने रूस द्वारा एक-तरफा ढंग से इञ्जन सौदा रद्द कर दिए जाने से उत्पन्न स्थिति पर पचास सदस्यों द्वारा रखे गए ध्यानाकर्षण प्रस्ताव पर ढाई घण्टे की चर्चा का उत्तर देते हुए दोहराया कि 'हम ऐसी कोई बात या शर्त नहीं मानेंगे जो राष्ट्रीय हितों और आम सहमति से उभरे सिद्धान्तों के प्रतिकूल हो।'

उन्होंने कहा कि राकेट इंजन टैक्नालाजी विकसित करने का काम पहले ही शुरू हो गया है और भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संस्थान (इसरो) ने १२ टन भार वाले इञ्जन का प्रोपोटाइप बना लिया है।

श्री राव ने यह भी स्पष्ट किया कि सरकार रूस के साथ करार में मध्यस्थता सम्बन्धी धारा इस्तेमाल करने की इच्छुक नहीं है क्योंकि हम यह नही चाहते कि कई दशकों से उस देश के साथ विभिन्न क्षेत्रों में चल रहे सहयोग कार्यक्रम प्रभावित हों। उन्होंने कहा "ऐसा करना हमारे हित मे नहीं होगा।"

श्री राव ने सदन को भरोसा दिलाया कि रूस ने अन्य कोई विकल्प न रहने की वजह से जो निर्णय किया है, उसका हमारे अन्तरिक्ष कार्यक्रम पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। इनसैट २ सी, डी और आई उपग्रह १९९५ के मध्य से १९९६ के अन्त तक प्रक्षेपित करने के कार्यक्रम में कोई बाधा उत्पन्न नहीं होगी। उन्होंने कहा कि इसके लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर निविदाएं आमन्त्रित की गई हैं और प्रक्षेपण निर्धारित कार्यक्रम के अनुरूप होगा।

राव ने कहा कि "मैं यह नहीं मानता कि यह सौदा टूट गया है। हो सकता है कि बातचीत के बाद सौदा पुनः हो जाए। बहरहाल बात-चीत करने के बारे मे रूस से आश्वासन मिला हैं।"

ध्यानाकर्षण प्रस्ताव पर अपने बयान में प्रधानमन्त्री ने कहा कि सरकार राकेट प्रक्षेपण कार्यक्रम में आत्म-निर्भरता हासिल करने की पक्षधर है और क्रायोजेनिक प्रौद्योगिकी का विकास इसका एक अनिवार्य अंग है।

उन्होने कहा कि यदि रूस इन राकेट इञ्जनों की आपूर्ति का करार पूरा नहीं करता तो भारत इसे देश में ही विकसित करेगा। श्री राव ने कहा, "हमें अपने वैज्ञानिकों और इञ्जीनियरों पर पूरा विश्वास है कि वे अपनी प्रौद्योगिकी विकसित करने में सक्षम होगे।"

श्री राव ने कहा, "मैं इस सदन को विश्वास दिलाना चाहता हूं कि उच्च प्रौद्योगिकी और अन्तरिक्ष जैसे क्षेत्रों में हम आत्म-निर्भरता हासिल करने के लिए वचनबद्ध हैं क्योंकि इसका देश के आर्थिक और सामाजिक विकास पर बहुत असर पड़ता है।

हैदराबाद मुक्ति दिवस समारोह पूर्वक मनाया जायेगा

आन्ध्रप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आगामी १७ सितम्बर १९९३ को हैदराबाद में "हैदराबाद मुक्ति दिवस" का आयोजन उत्साह पूर्वक आयोजित किया जा रहा है। इस ४६वे मुक्ति दिवस के समारोह की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती करेंगे और इसका उद्घाटन केन्द्रीय गृहमन्त्री श्री शकरराव जी चह्वाण के द्वारा कराने की योजना है। इस मुक्ति दिवस समारोह में भारत वर्ष के उन सभी स्वतन्त्रता सेनानियों को आमन्त्रित किया जाता है जिन्होने आर्य सत्याग्रह तथा हैदराबाद मुक्ति आन्दोलन मे अपने प्राणो की परवाह न करते हुए उत्साह पूर्वक भाग लिया था।

निवेदक
क्रान्ति कुमार कोरटकर
प्रधान : आन्ध्र प्रदेश आ०प्र० सभा,

अब्दुल्ला बुखारी फरार घोषित

पटना, १८ अगस्त। प्रथम श्रेणी के मजिस्ट्रेट एसएनएन सिह ने जामा मस्जिद के शाही इमाम सैयद अब्दुल्ला बुखारी एव उनके पुत्र नायब इमाम को भारतीय दंड संहिता ८२ के तहत फरार होने का दोषी ठहराते हुए उनके विरुद्ध गैर जमानती वारंट जारी किया है।

न्यायिक मजिस्ट्रेट ने यह फैसला दिल्ली के पुलिस उपायुक्त की रिपोर्ट के बाद दिया। (दैनिक जागरण १८ अगस्त से साभार)

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

अयोध्या में अधिग्रहीत भूमि पर तीन मजारों का निर्माण

अयोध्या, १६ अगस्त। पुलिस छावनी में तब्दील केन्द्र द्वारा अधिग्रहीत भूमि में तीन मजारें बन चुकी हैं। अधिग्रहीत भूमि मे मजारो का निर्माण होना शासन की मुस्तैदी पर प्रश्नचिन्ह लगा रहा है। इस बात की जानकारी केन्द्र सरकार को भी दी जा चुकी है। बावजूद इसके केन्द्र सरकार ने चुप्पी साध ली है। इसको लेकर हिन्दू संगठनों में काफी आक्रोश है।

मिली जानकारी के अनुसार जून के अन्तिम सप्ताह में केन्द्र द्वारा अधिग्रहीत भूमि के गेट पर रातों रात एक मजार बना दी गई। उसे सीमेंटेड भी करा दिया गया है। लेकिन तीन दिन बाद इसकी जानकारी जिला प्रशासन को मिली। जिला प्रशासन की चौकसी बेकार साबित हो गई। पुलिस छावनी में तब्दील चौकसी फिर ढीली पड़ गई। यही कारण रहा कि एक मजार के अलावा दो अन्य मजारो का भी निर्माण करा दिया गया। ये मजारें जुलाई के दूसरे सप्ताह में बनाई गई। यह दोनों मजारें अधिग्रहीत भूमि के १०० मीटर अन्दर गोकुल भवन के पास बनाई गई हैं।

खुफिया एजेंसी ने इस बात की जानकारी जिला प्रशासन को दी। इधर केन्द्र ने भी जिला प्रशासन से इस बाबत जानकारी मांगी। बात सामने आते ही जिला प्रशासन ने इस सम्बन्ध में केन्द्र से राय मांगी। केन्द्र ने साफतौर पर कहा कि मजारों को छेड़ा न जाए।

सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार जिला प्रशासन ने इस सम्बन्ध में जांच भी की थी। उसने पाया कि तीन स्थानों पर ईंट सीमेंट एवं लोहे के सामान रखे गए हैं। जांच में सन्दिग्ध गतिविधियां मिलने पर जांच रपट कमिश्नर कोसौंप दी गई। बाद में इसकी जानकारी हिन्दू संगठनों को हुई। सभी संगठनों के कार्यकर्त्ताओं के मन में ज्वाला धधक रही है। जो कभी भी फूट सकती है।

तगड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बावजूद एक दो नहीं तीन तीन मजारो का निर्माण होना सुरक्षा व्यवस्था की मुस्तैदी पर सवाल खड़ा करता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि पहली मजार के निर्माण के बाद कई दिन बाद जिला प्रशासन को इसकी भनक लगी। जांच रिपोर्ट में भी इस बात का खुलासा हुआ। केन्द्र सरकार तक बात पहुंची सारी खुफिया एजेंसियों को भी कई दिन बाद इसकी जानकारी हुई।

'सहमत' का विवादास्पद पोस्टर जब्त

नई दिल्ली, २१ अगस्त। तीन मूर्ति भवन में सहमत की प्रदर्शनी के उस पोस्टर को आज शाम पुलिस ने जब्त कर लिया जिसमें बौद्ध परम्परा की जातक कथा के अनुसार राम और सीता को भाई बहन बताया गया था। पुलिस के अनुसार उपराज्यपाल के आदेश पर यह कार्रवाई की गई।

उल्लेखनीय है इस प्रदर्शनी के लगते ही उस विवादास्पद बोर्ड के सवाल पर संसद में भाजपा के सदस्यो ने मामला उठाया और इस पर रोक लगाने की मांग की थी। प्रदर्शनी ३० अगस्त तक चलने वाली थी। लेकिन आज दोपहर ही उसे बन्द करने की घोषणा कर दी।

सांसद अशोक मित्रा ने कहा कि यह कोई ऐसी बात नहीं है बस जबरदस्ती इसे मुद्दा बनाया जा रहा है। सांसद भोगेन्द्र झा ने इस कार्रवाई पर असन्तोष प्रकट करते हुए कहा कि इससे बेकार बतंगड़ बनता है। मुझे भय है कि इस पर हंगामा न हो। यह हमारी प्राचीन भारतीय संस्कृति व परम्परा के खिलाफ है।

उल्लेखनीय है उस विवादास्पद बोर्ड पर लिखा है कि बौद्ध मतानुसार राम और सीता बहन भाई थे। राम के बनवास से लौटने के बाद सीता के साथ राम की शादी हुई। फिर १६००० वर्षों तक उन्होने राज किया। इसमें यह भी कहा गया है कि राम कथा कई बार लिखी गई और हरेक के अपने अपने मत हैं। बौद्ध कथानुसार वह इक्ष्वाकु के वंशज थे।

वधु की आवश्यकता

राजस्थानी ब्राह्मण, आयु २५ वर्ष, कद ५ फुट ६ इंच, आठवीं कक्षा उत्तीर्ण, सिक्योरिटी गार्ड मासिक वेतन १५००), सुदृढ़, स्वस्थ सुन्दर युवक हेतु वधु की आवश्यकता है। जाति बन्धन नहीं।

नारायण वानप्रस्थी
स्वतन्त्रता सैनानी

वासफैल
ग्रामगांव ४४४३०३
जि० बुलढाणा (महाराष्ट्र)

श्री द्वारकानाथ सहगल बौद्धिक विकास सेवा केन्द्र का उद्घाटन

आर्य समाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली में २ अगस्त से ११ अगस्त तक वेद प्रचार सप्ताह तथा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आर्य समाज के भूतपूर्व प्रधान स्वर्गीय श्री द्वारकानाथ सहगल के सुपुत्र श्री अशोक सहगल ने अपने पिता की पुण्य स्मृति मे पचास हजार रुपये की राशि बौद्धिक विकास सेवा केन्द्र की स्थापना के लिये आर्यसमाज को भेंट की। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर बौद्धिक विकास सेवा केन्द्र का विधिवत उद्घाटन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के द्वारा सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पूज्य स्वामी जी ने आर्य समाज की उपलब्धियों का वर्णन करते हुये आशा प्रकट की कि यह सेवा केन्द्र आर्य समाज के प्रचार तथा प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा। स्वामीजी ने इस पुण्य कार्यके सम्पादनके लिये सहगल परिवार को बधाई एवं आशीर्वाद प्रदान किया। समारोह मे प्रो० बलराज मधोक, श्री प्रेमनाथ जोशी तथा डा० वाचस्पति ने भगवान कृष्ण के चरित्र को अपनाकर तदनुकूल आचरण करने की अपील की। महोत्सव के बाद ऋषि लंगर का आयोजन भी किया गया।

—नेमराज आर्य प्रधान

मुस्लिम युवक ने हिन्दू धर्म अपनाया

कानपुर। आर्य समाज गोविन्द नगर में समाज के प्रधान व आर्य समाजी नेता श्री देवीदास आर्य ने एक २५ वर्षीय शिक्षित मुस्लिम युवक को उनकी इच्छानुसार दीक्षा देकर वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) में प्रवेश कराया। शुद्धि संस्कार के बाद इस युवक का नाम मुर्तजा हुसैन से मोहन कुमार रखा गया।

मोहन कुमार ने बताया कि श्री देवीदास आर्य के आदेश पर वैदिक धर्म ग्रहण करने से पूर्व मैंने महर्षि दयानन्द रचित सत्यार्थ प्रकाश व संस्कार विधि आदि धार्मिक ग्रन्थो का अध्ययन किया है। अब मैं नित्य सन्ध्या हवन करता हूं।

बालगोविन्द आर्य, मन्त्री

आर्यों की मोरिशस यात्रा

२६-१०-९३ से हवाई जहाज द्वारा दिल्ली मोरिशस यात्रा शुरू होगी। आने जाने का जहाज का किराया १६३०० रुपये प्रति सवारी है, रहने व भोजन का प्रबन्ध मोरिशस सभा द्वारा। ६००० रु० एडवांस, शेष राशि एक मास मे भेंजे। सवारी अपना पासपोर्ट नाम, आयु, पिता का नाम आदि विवरण भेंजे। बाहर के व्यक्ति ड्राफ्ट संयोजक के नाम भेंजे। बाहर से आने वाले २६-१०-९३ को आर्यसमाज अनारकली, मन्दिर मार्ग या आर्य समाज चूना मण्डी, पहाड़गंज पहुंचे। भोजन संयोजक की ओर से होगा।

सम्पकसूत्र संयोजक

श्री श्याम दास सचदेव,	श्री मालवीय आर्य
मन्त्री, आर्य समाज, चूना मण्डी,	आर्य समाज मन्दिर अनारकली
पहाड़गंज, नई दिल्ली-५५	मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-१
दूरभाष : ७५४६१२८	दूरभाष : ३४३७१८, ३१२११०

पता : मकान नं. २६१३, अमरसिंह
गली नं. ६ चूना मण्डी,
पहाड़गंज, नई दिल्ली-५५
दूरभाष : ७३८५०४४ (पी० पी०)

कार्यक्रम

२६-१०-९३ नई दिल्ली से बम्बई, २७-१० बम्बई से मोरिशस, २८-१० से २-११-९३ तक मोरिशस भ्रमण, २-११-९३ से मोरिशस से बम्बई तथा ३-११-९३ बम्बई से दिल्ली।

सम्पादकीय

देश में यह क्या हो रहा है?

आज देश १९४७ से पूर्व की स्थिति में आ चुका है भारत को खण्डित करने वाले मुसलमान बंगलादेश व पाक० के घुसपैठिए भारत में मेहमान बनकर भारतीय नागरिकों के अधिकारों का हनन कर रहे हैं। प्रशासन का बुरा हाल है। एक नया उदाहरण प्रस्तुत है भारत में स्थान स्थान पर देश द्रोहियो का जाल बिछा हुआ है देश को तहस नहस करने में कृत संकल्प हैं और हमारी सरकार कानों में तेल डाले बैठी है। राजनीति में भ्रष्टाचार किस प्रकार बढ़ रहा है यह भी एक प्रश्न चिन्हित है।

अब्दुल्ला बुखारी इन घुस पैठियों को नेतृत्व प्रदान करता है सरकार को नाकों चने चबाने के लिए अकेला अब्दुल्ला बुखारी पर्याप्त है फिर अब—

हरशाख पै उल्लू बैठा है—अंजामे गुलिस्तां क्या होगा।

आज अब्दुल्ला बुखारी को भगोड़ा घोषित किया है क्यो? क्योंकि उसने खुलकर भारत सरकार के खिलाफ बगावत का झण्डा खड़ा किया हुआ है। उसका ऐलान है कि यदि भारत सरकार मे हिम्मत है तो हाथ लगाकर देखें, फिर सारे भारत में कैसे आग लगती है जो सरकार से बुझाए न बुझ सकेगी।

अभी बाबरी खण्डहर की आग ठण्डी भी न हो पाई थी एक नया शगूफा और छोड़ दिया गया है।

विगत इतिहास ने यही किया कि हम अल्पसंख्यको के साथ मिल गए और घर को बरबाद करने में उनका साथ दिया, यही राजनीति आज चली आ रही है। एक तरफ-कांग्रेस हिन्दू वोट्स को लेने के लिए हिन्दुओं को खुश करना चाहती हैं उसके लिए उसने रामजन्म भूमि में राम जन्म स्व० वीर बहादुर सिंह मुख्यमन्त्री उ० प्र० ने कराया साथ ही भूमि पूजन भी स्व० राजीवगांधी से कराया। पर जनता को खुलकर बता नहीं सके कि हम रामपुजारी हैं यह जो भी हो रहा है हमारे इशारे पर हो रहा है क्योंकि मुसलमान नाराज न हो जाय। परन्तु जिस दिन खण्डहर गिराया गया, उस दिन भी भारत सरकार की १७० बटालियन वहां उपस्थित थी यदि वह चाहती तो मस्जिद तो क्या एक ईंट भी नहीं गिर सकती थी भारत सरकार के संकेत पर ही मस्जिद गिरी। अन्यथा मुलायमसिंह की भांति गोली चलाकर १०–२० मार देते, तो बाबरी खण्डहर बिलकुल नहीं गिरता। परिणाम क्या हुआ।

हिन्दू को बहका ले गए विश्वहिन्दू परिषद वाले, जय श्रीराम कहकर। मुसलमान को ज्ञान हो गया, यह सब खुराफात कांग्रेस वाले ही करवा रहे हैं अत. भारत का मुसलमान जितना कांग्रेस से नाराज है उतना बी. जे. पी. से नहीं है।

नारा है राष्ट्रीय एकता बनाए रखना जरूरी है तो क्या हम अपनी मूर्खताओं से भारत माता के अमर सपूतों का बलिदान व्यर्थ कर देंगे।

आज देश में होने वाले अपराधों की कीमत देश की भावी पीढ़ी को भुगतनी होगी? हम अपनी सत्ता प्राप्ति की होड़ में राष्ट्रीयता को दाव पर लगा रहे हैं। अपराधों को रोकें—स्वयं उनका अध्ययन करें।

राष्ट्रीयता की रक्षा के लिए एक और नया कदम—

लीडरो को लीडरी का सबसे दामन गीर है
कौम मिट जाए बला से—

बुद्धि की बलिहारी है—दैनिक जागरण के १७ अगस्त के अंक में अयोध्या सम्बन्धी एक चौंकाने वाला समाचार प्रकाशित हुआ है कि अयोध्या में केन्द्र द्वारा अधिग्रहीत भूमि में तीन मजारें बन गई हैं अधिग्रहीत भूमि में मजारों का बन जाना चिन्ता का विषय है। एक दिन पढ़ा मजारे बन गई और दूसरे दिन पढ़ा समाचार गलत है। तीसरे दिन पढ़ा -वस्तुत: मजारें बन गई हैं।

वास्तविकता के आधार पर जन के अन्तिम सप्ताह मे अधिग्रहीत भूमि के द्वार पर रातो रात एक मजार बना दी गई। मजार क्या बनी जादू बन गया। खुदाई हुई, ईंटें आई, राज मजदूर लगे यह दो मिनट में नहीं पूरी रात काम हुआ। पुलिस, अफसर, हिन्दू जनता सो रही थी या कहीं चली गई थी इशारो मे काम हो गया। सीमेंट भी करा दिया गया। तीन दिन बाद प्रशासन को पता चला। जुलाई के दूसरे सप्ताह में दो अन्य मजारें भी बना दी गईं। यह दोनो मजारें अधिग्रहीत भूमि के १०० मीटर अन्दर गोकुल भवन के पास बनाई गई है। खुफिया तन्त्र ने प्रशासन को अपनी रिपोर्ट दी। आश्चर्य तब होता है कि यह राजनीति दुम छल्लेदार बी०जे०पी०, आर० एस० एस०, बजरंग दल और अयोध्या के अखाड़े बाज महन्त कहां सो रहे थे।

खबरों में पढ़ा कि यह सभी हिन्दू जमावतें कहां तक अपना रही हैं लेकिन— अब पछताए क्या होत है, जब चिड़ियां चुग गई खेत?

जब आप दस मेज रहे हैं, तब तक सरकार रामलला की सुरक्षा की भांति मजारों की सुरक्षा पर भी बटालियन लगा देगी—फिर क्या—

कारवां गुजर गया, गुबार देखते रहे?

परिणामत: मन्दिर भी नहीं बनेगा, मस्जिद भी नहीं बनेगी। हो गया न कमाल, गम्भीर प्रश्न है हजारों की संख्या में सुरक्षा बल मौजूद है, जबसे बाबरी मस्जिद गिरी है शायद ही ऐसा कोई सप्ताह जाय जब रामजन्म भूमि में कोई न कोई काम व गतिविधि न चलती हो। इसके अतिरिक्त तीन मजारें बनीं प्रशासन को पता ही नहीं चला—अब तो शासन मजनंरी है, यह मामला हर भारतवासी को उत्तेजित करने वाला है। समय को परखिये—चिनगारी लगी है, आग लगने न पावे।

जात-पात हम दूर भगायें

राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति

सभ्य सुसंस्कृत से समाज में, जात-पात है अमिट कलंक।
बीज विषमता का बो करके, इसने युग पर मारा डंक ।।
भारत की अवनति का कारण, जात-पांत ही रहा विशेष।
इसके ही चंगुल में फंसकर, क्षत-विक्षत हो गया स्वदेश ।।
वर्णाश्रम की पुण्य व्यवस्था, धूल धूसरित हुई इसी से।
मनुज वृत्तियों की गरिमा भी,दूषित-कलुषित हुई इसी से ।।
जात-पात के ही चक्कर में, हुये धरा पर भीषण युद्ध।
खो विवेक फंस गये सहस्त्रों, इसमे सत्वर, जन उद्‌बुद्ध ।।
वेद तथा शास्त्रों ने पावन जात-पात का किया विरोध।
युग पुरुषों ने इसके सम्मुख, डाला सतत अमिट अवरोध ।।
आओ! आज सपूतों आओ! जात-पात को दूर भगायें।
जात-पात से रहित सुदृढ़तम, अपना दिव्य समाज बनायें ।।

नया सवेरा लायें (काव्य संग्रह) से साभार

ऋषि दयानन्द के भक्त और प्रशंसक—

महाराजाधिराज कर्नल सर प्रतापसिंह

(आर्यसमाज के इतिहास का एक रोमांचक अध्याय)

प्रो० भवानीलाल भारतीय

जोधपुर नरेश महाराजा जसवन्तसिंह के अनुज कर्नल महाराज प्रतापसिंह स्वामी दयानन्द के अनन्य भक्त थे। स्वामीजी को जोधपुर आमन्त्रित करने मे कर्नल प्रतापसिंह का बडा भारी हाथ था। स्वामी जी की विचारधारा ने प्रतापसिंह के व्यक्तित्व, चिन्तन एव कृतित्व को बहुविध प्रभावित किया था, उनके जीवन-चरित की अनेक घटनाओ को देखकर जाना जा सकता है। इससे पूर्व कि कर्नल प्रतापसिंह के स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज से सम्बन्धो की विस्तृत विवेचना की जाये, उनके जीवन की एक सक्षिप्त झाकी प्रस्तुत करना आवश्यक है।

कर्नल प्रताप का जन्म जोधपुर के महाराजा तख्तसिंह के यहा कार्तिक कृष्णा ६ स० १९०२ वि० तदनुसार २१ अक्टूबर १८४५ मगलवार को हुआ। उनकी माता महाराणी राणावत जी के नाम से जानी जाती थी। कर्नल प्रताप के दो बडे भाई महाराजा जसवन्तसिंह तथा महाराज जोरावरसिंह थे। उनसे एक बडी बहिन चांद कवरबाई भी थी। महाराजा तख्तसिंह को जोधपुर नरेश महाराजा मानसिंह की मृत्यु के पश्चात् गुजरात के अहमदनगर से लाकर स्वर्गीय महाराजा के दत्तक पुत्र के रूप मे जोधपुर की राजगद्दी पर बिठाया गया था।

प्रतापसिंह का प्रारम्भिक अध्ययन उर्दू, फारसी का हुआ। प० अयोध्याप्रसाद इनके उर्दू के शिक्षक थे। इनके अंग्रेजी जीवनी लेखक वानवार्ट के अनुसार उन्हे अपनी मातृभाषा मारवाडी के अध्ययन मे विशेष रूचि थी। यही भाषा उन दिनो मारवाड की राजभाषा भी थी। इन्होने अपने राज्य के प्रशासनिक कार्यों मे भी अभिरूचि दिखानी आरम्भ की। वे अपने पिता के आदेश से तत्कालीन रेजिडन्ट कर्नल शेक्सपियर (कार्यकाल १८५१ ५६ ई०) के पास आवश्यक विचार-विमर्श हेतु जाया करते थे। अध्ययन से भी अधिक रूचि इनकी अश्वारोहण तथा शिकार मे थी। इन कलाओ का इन्होने अच्छा अभ्यास कर लिया था। उस युग मे राजपूत राजाओ मे बहुविवाह की प्रथा सामान्य थी। प्रतापसिंह का प्रथम विवाह १८६० ई० मे जाखण के ठा लक्ष्मणसिंह भाटी की पुत्री के साथ सम्पन्न हुआ। इनका द्वितीय विवाह १८६२ ई० मे जैसलमेर के रावल छत्रसिंह की पुत्री से हुआ।

इन दिनो देशी रियासतो के शासक परिवारोमे पारस्परिक लडाई झगडे एक आम बात थी। किसी कारणवश महाराजा तख्तसिंह अपने युवराजपुत्र जसवन्तसिंह से नाराज हो गये और उन्होने कुछ लोगो के बहकावे मे आकर युवराज को देश निकाले के रूप मे गोडवाड(जालोर भीनमाल साचोर का क्षत्र) मे रहने का आदेश दिया। इस पारिवारिक कलह से प्रताप भी खिन्नता का अनुभव करने लगे और कुछ काल के लिये उन्होने जोधपुर से दूर रहने का निश्चय किया। ऐसी स्थिति मे वे जयपुर चले गये जहा के महाराजा सवाई रामसिंह उनके बहनोई थे। जयपुर निवास प्रतापसिंह के लिये लाभदायक सिद्ध हुआ। उन्हे महाराजा रामसिंह ने अपना अवैतनिक मुसाहिब बनाया और वे वहा शासन कार्य मे भी रूचि लेने लगे। यहा उन्हे अनेक अंग्रेज अधिकारियो के सम्पर्क मे आने का अवसर मिला, जिससे उनके अनुभव तथा दृष्टिकोण मे व्यापकता आई। शीघ्र ही अपने राज्य की परिस्थितियो ने उन्हे जोधपुर लौटने के लिये विवश किया। १२ फरवरी १८७३ को महाराजा तख्तसिंह का निधन हो गया और उनकी बड पुत्र युवराज जसवन्तसिंह मारवाड की गद्दी पर बैठें। पिता के मृत्यु के पश्चात् महाराज प्रतापसिंह पुन जयपुर चले गये। इस बार का जयपुर, प्रवास भी उनके लिये हितकर सिद्ध हुआ। क्योंकि महाराजा रामसिंह के साथ रह कर उन्होने प्रशासन का कुछ ऐसा अनुभव प्राप्त किया, जो उनके भावी जीवन मे सहायक सिद्ध हुआ। १८७७ के जनवरी मास मे जब वायसराय लार्ड लिटन ने इग्लैण्ड की महारानी विक्टोरिया के भारत की साम्राज्ञी की उपाधि ग्रहण करने के उपलक्ष्य मे दिल्ली मे शाही दरबार का आयोजन किया तो प्रताप भी उसमे सम्मिलित हुए। इस अवसर पर उन्हे महारानी के चित्र से विभूषित एक स्वर्ण पदक से अलकृत किया गया। प्रताप के जीवनी लेखक वानवार्ट ने इस दरबार का वर्ष १८७८ बताया है जो स्पष्ट ही गलत है। वास्तव मे यह दरबार १८७७ के जनवरी मास मे हुआ था और स्वामी दयानन्द भी इस अवसर पर दिल्ली पहुचे थे। परन्तु इस समय प्रताप की स्वामीजी से भेट होने का कोई उल्लेख नही मिलता।

उधर जोधपुर मे जब महाराजा जसवन्तसिंह को अपने राज्य सचालन मे प्रताप की आवश्यकता अनुभव हुई तो उन्होंने रेजिडेन्ट कर्नल वाल्टर के परामर्शानुसार उन्हे जोधपुर बुला लिया। भाई के आदेश एव आग्रह को स्वीकार कर वे जोधपुर आये और उन्हे मारवाड राज्य का प्रधानमन्त्री नियुक्त किया गया। इस पद पर रह कर प्रताप ने मारवाड राज्य की शासन व्यवस्था मे अनेक सुधार किये जिनका विस्तृत उल्लेख उनके जीवनी लेखको ने किया है। जोधपुर के महाराजा जसवन्तसिंह पर मुसलमान मुसाहिबोंका बहुत अधिक प्रभाव था। विशेषत मिया फैजुल्लाखा तो उनका बहुत अधिक विश्वासपात्र तथा मुहलगा दरबारी था। सर प्रताप की मिया फैजुल्लां से कभी नही बनी। उन्होने स्वय अपनी आत्मकथा मे मिया साहब के विषय मे निम्न बातें लिखी हैं— (क्रमश)
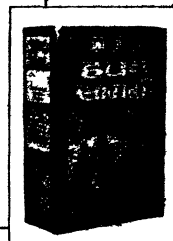
वर्तमान भारत और आर्य समाज

— डा० महेश चन्द्र विद्यालंकार —

आज विज्ञान का युग है। प्रत्येक क्षेत्र में विज्ञान उन्नति एवं प्रगति कर रहा है। मानव प्रकृति पर विजय के लिए सतत प्रयत्नशील है। विज्ञान ने मानव को शारीरिक सुख भोग-विलास के अनेक साधन दिए हैं। जिन्हें पाकर मनुष्य मानवीय मूल्यों से हटकर उन्मत्त हो रहा है। इतना सब कुछ होते हुए भी वर्तमान मानव जीवन अनेक द्वन्द्वों-पीड़ाओं, दुखों, संघर्षों, चिन्ताओं, विकारों और अभावों से भरा दृष्टिगोचर हो रहा है। प्रत्येक मनुष्य केजीवन में अतृप्ति, अभाव चिन्ता के प्रश्न-चिन्ह लगे हुए हैं। कोई न कोई कमी और इच्छा उसे बेचैन किए रहती है। जीवन के चारों ओर कलह, अशान्ति, विद्रोह, संघर्ष एवं द्वेष ही दिखाई देता है। इस वैज्ञानिक और भौतिकवादी जीवन में हम सच्ची सुख-शान्ति एवं आनन्द से दूर होते जा रहे हैं। इसका स्पष्ट कारण है कि हम मानवीय मूल्यों, आदर्शों तथा परम्पराओं से हट और कट रहे हैं। जीवन में दानवता और पशुता बढती जा रही है।

आर्य समाज का चिन्तन, दर्शन, मूल्य तथा आदर्श हमें जीवन से जोड़ते है। जीवन को सुख-शान्ति और आनन्दमय बनाने का उपाय बताते हैं। आर्य समाज मत, मजहब, पन्थ एवं सम्प्रदाय नहीं है। आर्य समाज एक वैचारिक चिन्तन प्रक्रिया है। जीवन पद्धति है। विचारधारा और क्रांति है। एक सुधारक व्यवस्था है इसके विचार चिन्तन व दर्शन, पूर्णता की ओर ले जाते हैं। जीवन-बोध कराते है। जीवन के उद्देश्य की ओर प्रेरित करते हैं। आर्य समाज मार्ग-दर्शक व्यवस्था है, वेदों, महापुरुषों और भारतीय संस्कृति की रक्षक शक्ति है। जैसा कि स्वामी दयानन्द ने स्वयं कहा था, मैं कोई नया पन्थ, मत व सम्प्रदाय नहीं चलाना चाहता हूं। मैं तो ब्रह्मा से लेकर जैमिनि ऋषि तक की परम्परा को पुनः प्रकाशि.त, प्रचारित एवं प्रसारित करना चाहता हूं। महर्षि दयानन्द से पूर्व जो संसार में व्याप्त अज्ञान, अविद्या, जड़ता, पाखण्ड, अनेकेश्वरवाद, जादू टोना, भूत-प्रेत, मूर्ति-पूजा, धर्म के नाम पर बलि, कुरीतियां बुराइयां, आदि मानव समाज में फैली हुई थी उन्हें देव दयानन्द जीवन भर पत्थर-गाली, जहर और अपमान पीकर दूर करते रहे। इसीलिए उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की। 'आर्य' शब्द का अर्थ है जिसमें ज्ञान, गति और प्राप्ति है। तीनों शब्द अपने में सार्थक हैं।

आर्य समाज क्या है

वर्तमान मानव जीवन को आर्य-समाज का चिन्तन, मनन, दर्शन, मान्यताएं आदि सत्य और व्यवहारिक दिशा-बोध करा सकती हैं। क्योंकि अन्य विचारधाराओं की अपेक्षा इसका जीवन दर्शन व्यवहारिक, तार्किक,वैज्ञानिक एवं बुद्धिपरक है। किसी भी पक्ष में अन्ध-विश्वास, अज्ञानता, रूढ़िवादिता धर्मान्धिता आदि मान्य नहीं है। बिलकुल स्वच्छ, स्पष्ट-सत्य सीधी-सरल मान्यताएं हैं। इसलिए आज के मानव के अधिक निकट हो सकती है। संक्षेप में आर्य समाज आज के जीवन को निम्नांकित विचार एवं चिन्तन देता है।

आर्य समाज आस्तिक समाज है। इसकी मान्यता ईश्वर और वेद पर है। ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप सर्वाधार सर्वव्यापक, अजर, अमर शुद्ध, बुद्ध, पवित्र, अजन्मा आदि गुणों से युक्त है वह सृष्टि का कर्त्ता-धर्त्ता संहर्ता त्रिकालदर्शी है। वर्तमान संसार में परमात्मा के बारे में बड़ी भ्रान्त, पाखण्डपूर्ण व काल्पनिक बातें प्रचलित हैं। किसी का भगवान सोने-चांदी में रहता है तो किसी का भगवान गुफाओं में किसी का पुजारी के ताले में, तो किसी का हवाई जहाज में। अजीब सा व्यापार चल रहा है सबने दुकानें खोल रखी हैं, हर कोई दूसरों को मूर्ख बनाने में लगा है। लोग रात-रात भर जागकर जागे हुए भगवान को जगा रहे हैं कैसी विडम्बना है ? आर्य समाज का मन्तव्य है कि भगवान अपने कार्यों से संसार में प्रकट हो रहा है। वह सर्वत्र विद्यमान है। उसकी सत्ता का प्रमाण सृष्टि का कण-कण दे रहा है। देखने के लिए ज्ञान-चक्षु चाहिए। उसे अनुभव करो, वह अनुभव से ही जाना जा सकता है। उसका अहसास करो। उसकी रचना कारीगरी से पहिचानो। वेद प्रमाण है :—

न तस्य प्रतिमास्ति (यजु.) उस महान परमेश्वर की कोई मूर्ति-आकृति नहीं है।

वह प्रभु-कविर्मनीपी परिभू...कवि है, मनीषी और स्वयं सामर्थ्य-वान है। वह हमारे आपके प्रसाद का भूखा नहीं है। जिस परमात्मा ने सूर्य-चन्द्र तारे समग्र सृष्टि का निर्माण किया, उसको हम मूर्ति बनाएं। यह उसका उपहास है। उसकी शक्ति को सीमित करना है।

आर्य समाज तर्क और प्रमाण से वस्तु-सिद्धि पर बल देता है। अतः धार्मिक अन्धविश्वासो को नहीं मानता है। अवतारवाद, रूढिगत कर्मकाण्ड, तन्त्र-मन्त्र कृत्रिम देवी-देवताओं आदि में विश्वास नहीं करता है। मुक्ति प्राप्ति में किसी बिचौलिए की आवश्यकता नहीं है। मनुष्य अपने पुरुषार्थ, सत्यज्ञान, शुद्धाचरण से मुक्ति प्राप्त कर सकता है। अच्छे बुरे कर्मों का फल ईश्वर की न्याय व्यवस्था में अवश्य ही भोगना पड़ता है। स्वर्ग नरक किसी स्थान विशेष पर नहीं हैं। अत्यधिक सुख की अवस्था स्वर्ग और दुःख की अवस्था नरक है। तीर्थ-व्रत-गुरुओं आदि से पापों का क्षय नहीं होता है। जीवित माता-पिता की सेवा करना ही सच्चा श्राद्ध है। जीवात्मा अपने कर्मानुसार ही संसार को छोड़कर अगला जीवन प्राप्त करता है। कर्म से ही मानव ऊंचा उठता है और कर्म से ही पतित निकृष्ट एवं पापी बनता है। परमात्मा की व्यवस्था में जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है और फल भोगने में परतन्त्र है। आज की नई पीढ़ी को आर्य समाज का अमर संदेश यही है कि अगर वह जीवन सुखी बनाना चाहती है तो आस्तिक बनें।

वेद मानव जाति की सम्पत्ति

महर्षि ने वेदों की ओर लौटो का नारा दिया। हिन्दू जाति वेदों को भूलती जा रही थी। वेदों के बारे में भ्रान्त धारणाएं फैली हुई थीं। वेदों को शंखासुर पाताल लोक ले गया है। एक विशेष वर्ग के अतिरिक्त न कोई उन्हें देख सकता था, न सुन सकता था। पढने की बात तो अलग रही। स्त्रियां, शूद्र और पतित वेदों और यज्ञों के पास नहीं जा सकते थे वेदों के जो भाष्य किए गए वे अश्लील, काल्पनिक व भ्रान्त धारणाओं से भरे हुए थे। इससे वेदों की प्रतिष्ठा को बड़ा आघात पहुंचा।

आर्य समाज ने वेदों के द्वार सर्वसाधारण के लिए खोल दिए। जाति, वर्ग, नस्ल, रंग, मजहब, सम्प्रदाय आदि के आधार पर वेदों पर किसी का अधिकार नही है। वेद मानव-जाति की सम्पत्ति है। परमात्मा ने सृष्टि के आदि मे प्राणी-मात्र के कल्याण के लिए वेद का पवित्र ज्ञान ऋषियों को दिया। इसीलिए वेदों में किसी जाति-वर्ग-देश आदि का नाम नहीं है। आज सभी को वेद पढ़ने का अधिकार है। सभी को यज्ञोपवीत धारण करने का हक है। आर्य समाज की मान्यता है—"वेद का पढ़ना-पढाना, सुनना-सुनाना आर्यों का परम-धर्म है" अतः मानव जीवन के लिए वेद प्रत्येक-क्षेत्र में मार्ग-दर्शक हैं वेद जीवन के प्रत्येक-क्षेत्र में यही भावना, चेतना व संदेश देते हैं कि मानव तू मानव बन जा। बुद्धि विचार व विवेक पूर्वक तू सृष्टि का उपभोग कर। तू परमात्मा की श्रेष्ठ संतान हैं। मानव के सुधार से ही सृष्टि सुखी-निर्भय व हिंसा रहित हो सकती है। चारों वेदों में सर्वत्र-विश्व-कल्याण-कामना, प्राणी मात्र पर दया की भावना, सर्वत्र

(शेष पृष्ठ ८ पर)

उपनिषदों में मानवता के सिद्धान्त

डा० ईश्वर भारद्वाज गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

भारतवर्ष विश्वगुरु के पद पर आसीन रहा है। समस्त विदेशी शक्तियां भारतीय संस्कृति को नष्ट करने का प्रयास करने के पश्चात् भी सफल नहीं हो पाईं अपितु स्वयं ही उसमें रच-पच गईं। इसका मूल कारण हमारे पूर्वज ऋषियों द्वारा दिया गया मानवता का सन्देश है। यह सन्देश वेदों उपनिषदों के माध्यम से आज भी इस धर्म भूमि में मानवता के उत्कृष्ट आदर्शों की स्थापना करके पाश्चात्य देशों को अपनी ओर निहारने के लिये बाध्य कर रहा है। इसी के कारण हमारा अस्तित्व है :—

यूनान मिश्र रोमा सब मिट गए जहां से,
बाकी मगर है अब तक नामों निशां हमारा।

भारतीय तत्त्वज्ञान की अपार राशि उपनिषदों में मानवीय मूल्यों को सतत जीवन्त रखा गया है। तत्त्वज्ञान तो है ही मानव हितार्थ। तत्त्वज्ञान की प्रधानता के कारण उपनिषदो को पलायनवादी व नैराश्यवादी तक कह डाला है किन्तु यह धारणा उपनिषदों के गहन अध्ययन के पश्चात् निर्मूल सिद्ध होती है क्योंकि उपनिषदें तो शतवर्षों तक कर्म करते हुए जीने का सन्देश देती हैं। तत्त्वज्ञान प्राप्त कोई भी व्यक्ति "सर्वं खल्विदं ब्रह्म" के भाव को प्राप्त होने के पश्चात् क्या किसी का अनिष्ट कर सकता है? करना तो दूर वह सोच भी नहीं सकता। पुरुष जैसी प्रभु की सर्वोत्कृष्ट रचना के साथ अशुभाचरण करने से क्या उसके प्रभु के प्रति यह अशुभाचरण नहीं होगा? कोई अपने प्रभु के साथ कैसे अशुभाचरण करेगा? प्रभु तो मनुष्य के सम्पूर्ण शरीर में व्याप्त होकर स्थित हो गये हैं।' अतः यह शरीर तो प्रभु का निवास होने के कारण पवित्र और रक्षणीय हो गया है। अतः प्रभु-प्राप्ति का तो यह साधन समझना चाहिए। इसका अर्थ यह नहीं है कि शरीर से आसक्त हो जाए। शरीर को नाशवान् समझ कर तत्त्ववेत्ता इसमें आसक्त नहीं होता।

इसी कारण उपनिषदों में लौकिक अभ्युदय एवं पारलौकिक निःश्रेयस दोनो को ही समान रूप से प्राप्तव्य कहा है। दोनो ही मनुष्य के लिए उपयोगी हैं। किन्तु निःश्रेयस ही कल्याणकारी है। प्रेय सहज प्रिय है, आकर्षक है, अतः उस मार्ग पर जाना स्वाभाविक है किन्तु श्रेयमार्ग पर चलना तो असिधार व्रत के समान दुष्कर कहा गया है। उपनिषदों में बार-बार प्रयत्नपूर्वक वासना-सरित् को शुभ मार्ग पर चलाने का आदेश किया गया है। किन्तु तत्त्वज्ञान के बिना यह सम्भव नहीं है। तत्त्वज्ञान के लिए विद्या और अविद्या के स्वरूप को जानना आवश्यक है, तभी वह मृत्यु को पार करके अमरत्व को प्राप्त कर सकता है अन्यथा अन्धे द्वारा अन्धों को भटकाने के सदृश विनाश को प्राप्त होगा। अतः उपनिषदों में श्रेय व प्रेय दोनो मार्गों के महत्त्व को प्रतिपादित करके मानव के कल्याण का मार्ग प्रस्तुत किया है।

उपनिषदों ने स्पष्ट घोषणा कर दी है कि यह सम्पूर्ण जगत् प्रभु से ओत-प्रोत है। अतः उसमे जो भी कुछ है, वह उसी का है। उसका त्यागपूर्वक भोग करो, ममत्व बुद्धि न रखो व लालच मत करो। दूसरों की सम्पत्ति को लेने से जो विद्वेष की भावना उत्पन्न होती है, वह संसार में अशान्ति का कारण है। दूसरों की सम्पत्ति हड़पने के कारण घर, गांव, शहर प्रदेश, देश और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विवाद होते हैं। विश्वयुद्ध इसी की देन है।

यदि मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे के सिद्धान्तानुसार कार्य किया जाए तथा सबको अपने सदृश समझें तो निश्चय ही विवाद की स्थिति नहीं आएगी। परस्पर घृणा व विद्वेष नहीं होगा। जब दोनों में भेद नहीं होगा तो फिर किससे मोह और किससे द्वेष? यह तो अविद्या के कारण है। यदि अविद्या की ग्रन्थि नष्ट हो गई तो सबमें साम्यभाव आ जाता है और मनुष्य आत्मरति, आत्मक्रीड, आत्ममिथुन और आत्मानन्द की स्थिति प्राप्त कर लेता है। वह सर्प की केंचुली के सदृश इस शरीर की चिन्ता नहीं करता। अतः शरीर की सुख-सुविधा हेतु किसी को भी पीड़ा न पहुंचाने की भावना आ जाती है। स्वयं कष्ट सहकर भी वह दूसरों के कष्ट हरने का प्रयास करता है। 'अहिंसा' का भाव प्रतिष्ठित होने के कारण उसमें वैरभाव का पूर्णतया निरोध हो जाता है। अहिंसादि यमों तथा शौचादि नियमों का पालन करते हुए वह विश्वबन्धुत्व की भावना से ओत-प्रोत हो जाता है। मिलकर चलने, बोलने, समान विचार और समान हृदय होने की घोषणा के अनुरूप उसका चरित्र हो जाता है।

उपनिषदों में सत्य, तप, श्रद्धा, दान, आर्जव, अहिंसादि को मानव जीवन के लिए अत्यन्तावश्यक बताया है। केनोपनिषद् में तप, दम व कर्म को ब्रह्म जिज्ञासु के लिए अनिवार्य बताया है। 'सत्यं वद' तथा 'सत्यमेव जयति' के उपदेशों का उद्देश्य सत्य के प्रति श्रद्धा उत्पन्न करना है। अनृतवादी का वंश-नाश होता है, यह चेतावनी देकर सत्य की महत्ता का प्रतिपादन किया है। बृहदारण्यकोपनिषद् तो लोकोपकारार्थ दम, दान और दया के सिद्धान्त को अपनाने की प्रेरणा देता है।

उपनिषदों की यह डिण्डिम घोषणा है कि पुण्यकर्मों से पुण्यलोक तथा अशुभ कर्मों से अशुभ लोक की प्राप्ति होती है। अतः शुभ कर्म करके शुभ लोक की प्राप्ति का प्रयास करना चाहिए। शुभ कर्मों का मापदण्ड क्या है? जो कर्म किसी को कष्ट न पहुंचाएं, वे शुभ कर्म हैं। यदि परस्पर ऐसा व्यवहार किया जाएगा तो निश्चित रूपेण मानवता को किसी प्रकार का भय नहीं रहेगा। समस्त पृथिवी से दुःखो का नाश हो जाएगा। संसार विश्वबन्धुत्व की भावना में बंध जाएगा। सुख-समृद्धि से पूर्ण होकर यह विश्व सही रूप में मानवता का मूल्यांकन कर सकेगा। फिर भला प्रतिदिन सुनाई पड़ने वाला भीषण युद्धों की स्थिति कैसे आ पाएगी? मानवता के उपनिषदों में अनुस्यूत यही सिद्धान्त आज हमें युद्ध की विभीषिका से बचा सकते हैं। हथियारों की होड़ में दौड़ रहा यह विश्व इन सिद्धान्तो का पालन करके भयावह त्रासदी के चंगुल से मुक्त हो सकता है।

आज आवश्यकता है इस बात की कि मनुष्य के लिए केवल स्वार्थों की पूर्ति को त्यागकर इन सिद्धान्तो के उच्चादर्शों की स्थापना करें। इन भयानक क्षणो में उपनिषद् हमे आत्मघाती प्रवृत्ति को त्याग कर जीने की प्रेरणा प्रदान कर रहे हैं। यही कारण है कि आज भी पाश्चात्य देश टकटकी बांध कर भारत की ओर निहार रहे हैं। हम भारतवासियों का यह कर्त्तव्य बनता है कि निज राष्ट्र का गौरव स्थापित करें।

एक परिचय—

स्वामी दयानन्द के दरबार का गवैय्या पं. पन्नालाल पीयूष

जिस समय से महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मानव जाति को वैदिक सन्देश सुनाने हेतु आर्य समाज की स्थापना की। तब से लेकर आज तक एक नहीं अनेको धर्म प्रचारको ने नानाविध वैदिक नाद गुंजाया।

शास्त्रार्थ महारथी व्याख्यान वाचस्पति कथा वाचक याज्ञिको ने जो अपनी शैली सैद्धांतिक दृष्टि की पुष्टि में दी वही दिया आर्य समाज की द्वितीय पंक्ति बनी कवियो गीतकारो और भजनोपदेशको की। इस द्वितीय पंक्ति मे कवि की कृति में पं० नाथूराम शंकर शर्मा, पं० हरिशंकर शर्मा जैसे विद्वान थे। परन्तु अगली कड़ी थी गीतकार भजनोपदेशको की। ऐसे ही एक गीतकार कवि थे स्व० पं० प्रकाशचन्द्र जी कविरत्न। जिनके गीतो की शृंखला बड़ी लम्बी है उन्हीं के परम शिष्य पं० पन्नालाल जी पीयूष जिन्होने गुरु-परम्परा का भार अपने ऊपर लिया और सुमधुर शैली गीतो की प्रस्तुत की।

पं० पन्नालाल जी थे संगीत कला के मर्मज्ञ और पारखी संगीत गुरु पंडित ओंकारनाथ जी के सान्निध्य मे रहकर शिष्य भाव से संगीत कला को ग्रहण किया। संगीत के साथ गुजरात मे नाट्य कला सीखने के लिए प्रविष्ट होकर नाट्य कला भी सीखी।

इसी समय आप आर्य समाज के सम्पर्क मे आये और पारसी अलफ्रेड थियेट्रिक कम्पनी में पं० नारायण प्रसाद बेताब नाटक के लेखक थे उनके शिष्य श्री पूनालाल जी थे इनके सम्पर्क से आर्य समाज काकड़वाड़ी बम्बई के सत्संग में आने लगे। वहां प्रसिद्ध विद्वान गुरुकुल वृन्दावन के स्नातक आचार्य द्विजेन्द्रनाथ जी शास्त्री से साक्षात्कार हुआ। उसी समय स्वामी ओंकार सच्चिदानन्द जी के आर्य समाज में दर्शन हुए उन्होंने पूछा क्या करते हो। तो पीयूष जी ने कहा कि मैं नाटक मण्डली मे कार्य करता हूं। स्वामी जी बोले नाटक नरक का फाटक है छोड़ो इसे और आर्यसमाज मे आकर ऋषि मिशन का काम करो। यहां अच्छे भजनो को गाओगे तो तुम्हे अच्छा सम्मान मिलेगा। बस नाटक मण्डली छोड़कर घर आ गए।

आपका जन्म स्थान हाडी रानी की बलिदान स्थली सलूम्बर उदयपुर राज० में १९१२ मे हुआ था। साधारण शिक्षा ग्राम्य जीवन में प्राप्त की और १९२५ मे संगीत गुरु ओंकारनाथ जी के साथ बम्बई चले गए।

१९४९ में जोधपुर मे पं० बुद्धदेव जी धार निवासी से कु० चांदकरण शारदा के नाम पत्र लेकर अजमेर आए। इस अल्प आयु मे राजस्थान मालवा में प्रचारक पद पर नियुक्ति की गई। प्रचारक के रूप मे काम करते हुए १९३२ मे प्रसिद्ध कवि गीतकार पं० प्रकाशचन्द्र जी कविरत्न के सम्पर्क मे आए। बस फिर क्या था—एक कवि और गवैए का सान्निध्य पाकर आप सारे भारत मे वैदिक प्रचारक बन गये।

स्वर-ताल लय मधुर वाणी के गायक पीयूष जी ने अपने प्रचार की शैली मे पं० प्रकाश चन्द्र कविरत्न के गीतो का ही आश्रय लिया और सम्पूर्ण भारत में प्रसिद्धि पाई।

१९४२ में अंग्रेजो भारत छोड़ो आन्दोलन मे भाग लेने पर जेल यात्रा भी की और स्वतन्त्रता सेनानियों में आपका नाम अंकित किया गया। हैदराबाद सत्याग्रह, हिन्दी आन्दोलन पंजाब गोरक्षा आन्दोलनो मे सक्रिय भाग लिया और सजा भी काटी।

संगीताचार्य के रूप में—प्रचार कार्य करते हुए संगीत का अध्ययन

(शेष पृष्ठ १० पर)

प्रभावती स्नातिका आर्योपदेशिका

आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ोदा आर्य समाज की एक ऐसी जीती जागती संस्था रही है जिसने देश विदेश मे भारत का नाम ऊंचा किया है। पंडित आनन्दप्रिय जी ने ब्रह्मा व अफ्रीका की दो विदेश यात्रायें गुरुकुल की कन्याओ के साथ की और उन देशो के नेताओ ने इस संस्था की मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

प्रभावती उस संस्था की स्नातिका थी, मधुर कण्ठ शास्त्रीय संगीत मे निपुणता उनकी सारी कलाओ मे विशेषता थी। उन्होंने अपने विद्यार्थीकाल मे ब्रह्मा व अफ्रीका की यात्रायें की। उनकी बड़ी बहन यशोदा कुमारी ने अपना विवाह नही किया और सारा जीवन विद्यालय के अर्पण कर दिया। वे आर्य कन्या विद्यालय की मुख्याधिष्ठात्री थी। उनकी लेखन शैली व व्याख्यान दोनो ही अदभुत थे।

जब कुंवर जोरावरसिंह राजा नारायणलाल पित्ती के निमन्त्रण पर बम्बई गये उस समय कुंवर जोरावरसिंह उत्तर प्रदेश सरकार मे सुपरवाइजर थे। और छुट्टी लेकर बम्बई मे प्रचारार्थ गए थे। पित्ती जी को उनका प्रचार इतना प्रभावित कर गया कि उनके आग्रह पर वे बम्बई मे रह गये और सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। राजा नारायण लाल पित्ती आर्य कन्या-महाविद्यालय के प्रधान थे। जब कन्या गुरुकुल के वार्षिकोत्सव पर कुंवर साहब बड़ौदा गए और उनका भजनोपदेश हुआ तो सारी जनता चकित हो गई और प्रभावती जी ने उसी समय इनसे विवाह का निश्चय कर लिया। पंडित आनन्दप्रिय जी व राजा साहब के आग्रह पर उन्होने प्रभावती के साथ विवाह का निश्चय कर लिया और बड़ौदा मे यह विवाह धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ।

विवाह के बाद कुंवर साहब अफ्रीका गये उन्होने अफ्रीका की दो यात्रायें की और उसके बाद बरसाना आ गये। प्रदीप व दिलीप दो संतानो के बाद प्रभावती जी उनके आग्रह पर प्रचार क्षेत्र मे आई। प्रभावती जी की मृत्यु ७५ वर्ष की उम्र में हुई। उनका गृहस्थ जीवन ५० वर्ष रहा और ४० वर्ष उन्होने कुंवर साहब के कंधे से कन्धा मिलाकर काम किया। यह युगल जोड़ी इतनी प्रसिद्ध हुई कि आर्य समाज के क्षेत्र मे सारे देश ने उनके भजनोपदेश से लाभ उठाया।

वे कुंवर साहब के साथ काश्मीर, हिमाचल, पंजाब हरियाणा, सिंध, गुजरात, काठियावाड, कच्छ बिहार के ३७ जिले बंगाल, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान, उत्तरप्रदेश की लगभग सभी समाजो मे आमन्त्रण पर गई। शायद किसी प्रचारक ने इतने विशाल क्षेत्र मे काम किया हो। वे दोनो गुजराती तथा हिन्दी मे अधिकार पूर्वक बोलते थे। प्रभावती की मातृभाषा गुजराती थी परन्तु वे इतना अच्छी हिन्दी बोलती थी कि कोई भी यह कल्पना नही करता कि वे गुजराती हैं। इटावा के एक यादव महासभा में ६० हजार आदमी थे उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री मुलायम सिंह ने कहा सभा मे नेता बहुत आए पर प्रभावती जी ने दहेज के प्रश्न पर सब स्त्री-पुरुषो के हाथ उठवा दिये।

वे कुंवर साहब के साथ हवाई जहाज में बेंकोक थाइलेंड व सिंगापुर भी गई। उनकी मृत्यु से आर्यसमाजो के सैकड़ो पत्र आए हैं। लोग एक प्रभावशाली स्त्री उपदेशिका के अभाव में सूनापन अनुभव कर रहे हैं।

वे कुछ समय जूनागढ़ मे पेथल जी भाई की संस्थाओ में संचालन करती रहीं। दोनों ही पति पत्नी श्री पेथल जी भाई को सहयोग देते रहे।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

वर्तमान भारत और आर्य समाज

(पृष्ठ ३ का शेष)

स्वस्ति और शांति की भावना मिलती है। वेद सुखी, दीर्घायु तथा चिन्तारहित जीवन व्यतीत करने का रास्ता बताते है। इसीलिए कहा है—"सर्वा आशाममम मित्रं भवन्तु" सभी दिशाए मेरी मित्र बन जाए। "इदन्नमम" यह समस्त जगत् के पदार्थ परमात्मा के दिए हुए है। इसमें मेरा कुछ भी नही है। तेनत्यक्तेन भुंजीथा. संसार का भोग त्यागपूर्वक करो। यदि इस कथन को संसार जीवन और जगत् मे व्यवहार रूप में अपना ले, तो आज संसार पर तृतीय महायुद्ध के जो काले घने और भयकर बादल मडरा रहे हैं, उसका एक मात्र निदान त्यागपूर्वक जीवन ही है। सब झगड़े समाप्त हो जायेगे। अत. वर्तमान जीवन के लिए आर्य समाज का वैदिक-चिन्तन प्रत्येक दिशा मे मार्ग प्रशस्त करने मे समर्थ व पूर्ण है।

अतीत गौरव का स्मरण आवश्यक

वैदिक चिन्तन वर्तमान मानव की अपनी सांस्कृतिक विरासत, आदर्श मर्यादाओं और गौरवपूर्ण इतिहास की ओर सचेत व प्रेरित करता है। जो मानव समाज राष्ट्र एव जाति अपने गौरवपूर्ण साहित्य और इतिहास को भुला देती है, उस जाति एव समुदाय का निश्चय ही शीघ्र पतन हो जाता है। आज हम अपना इतिहास, वेशभूषा, खान-पान एवं भाषा को भूलते जा रहे हैं। इसका प्रत्यक्ष परिणाम है कि नई पीढी को अपने साहित्य, सस्कृति, आदर्शों एव महापुरुषों पर कोई श्रद्धा और लगाव नही है। आर्य समाज हिन्दू जाति को जागृत तथा अगाह करता है कि हमारी संस्कृति-इतिहास एवं साहित्य महान है। हम साहित्य-इतिहास एव सस्कृति के द्वारा बहुत कुछ सीख और सीखा सकते हैं। हमारे उत्सव, सस्कार, व्रत, यज्ञ आदि मानवता का पाठ देते हैं। ज्ञान-कर्म-उपासना की त्रिवेणी मानव-मात्र की पूर्णता की ओर ले जाने मे सक्षम है। यज्ञ-विधान सभी कामनाओ का पूरक है। इसकी उपयोगिता, वैज्ञानिकता, सार्थकता और व्यवहारिकता सारा संसार स्वीकार करता है। हमारी वर्ण-व्यवस्था सभी को अपना कर्म-व्यवसाय चुनने की पूर्णत: स्वतन्त्रता देती है। मनुष्य कर्म से देवता बन सकता है और कर्म से ही राक्षस बन सकता है। हमारी राष्ट्रीय-चेतना में कहीं भी संकीर्णता, जातीयता, क्षेत्रवाद और पक्षपात नही है। सभी मानव बराबर हैं। यहां तो 'सर्वे भवन्तु सुखिनः', 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की विशाल चेतना व्याप्त रही है। आज का मानव समाज अपने अतीत मे बहुत कुछ प्रेरणा चेतना एवं भावना ले सकता है। प्राचीनता एवं नवीनता का सुन्दर समन्वय आर्य-संस्कृति की प्रमुख विशेषता रही है।

आर्य संस्कृति की महत्ता

वैदिक-सस्कृति मानव-निर्माण में खान-पान, रहन-सहन, विचार-चिन्तन, व्यावहारिक-स्वच्छता आदि पर विशेष बल देती है। जबकि अन्य विचार धाराएं इस ओर कोई विशेष महत्व एवं बल नही देती हैं। वैदिक मान्यता है कि जैसा मनुष्य का भोजन होगा वैसे ही उसका मन, विचार, भावना एव कर्म होगे। आहार की शुद्धि से ही बुद्धि की पवित्रता व धार्मिकता स्थिर रह सकती है। अत: आर्य समाज का मनन रहा है कि मनुष्य का भोजन रहन-सहन, सरल, सात्विक, धार्मिक एव पवित्र होना चाहिए. तभी मानव देवत्व की ओर बढ सकता है। आज के मानव-जीवन मे अनेक प्रकार के विकार, दूषित खान-पान, विलासी रहन-सहन आडम्बरपूर्ण जीवन-चर्या, नास्तिकता, चरित्र हीनता आदि दुर्गण बडी तेजी से आ रहे हैं। इन्हें किस तरह से दूर किया जा सकता है? इनसे छूटने के क्या उपाय हैं? इनसे क्या हानियां हो सकती हैं आदि समस्याओ का समाधान केवल वैदिक विचारधारा ही दे सकती है। अत: आज के जीवन मे आर्य संस्कृति की महत्वपूर्ण भूमिका व उपयोगिता है इसी से जीवन स्वस्तिकारी बन सकता है।

बी-जे/२९, पूर्वी शालीमार बाग, दिल्ली-११००५२

श्रावणी पर्व तथा वेद प्रचार सप्ताह समारोह पूर्वक सम्पन्न

आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली

आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली मे दिनांक २ अगस्त से ११ अगस्त ९३ तक वेद अमृती सप्ताह (श्रावणी उपाकर्म से जन्माष्टमी तक) हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर धर्मदेव शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ का कार्य बड़ी कुशलता से सम्पन्न हुआ। ८ अगस्त रवि० को हैदराबाद सत्याग्रह स्मरण दिवस के रूप मे मनाया गया। इस भव्य समारोह में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री, श्री ब्रह्म दत्त तथा श्री अमरनाथ ने हैदराबाद की रोमांचकारी कहानी सुनाई। स्वतन्त्रता सेनानियों को समाज के प्रधान श्री राम मूर्ति कैंसा ने शाल एवं राशि भेंट कर सम्मानित किया। ११ अगस्त ९३ को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर ३ कुण्डी महायज्ञ हुआ। सार्वदेशिक आर्य प्रति. सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने सभी यजमानो को आशीर्वाद देते हुए कहा कि यज्ञ में पड़ी हुई आहुति न केवल आर्य समाज तक सीमित है अपितु न जाने कहां कहां तक पहुंचती है। थोड़ी सी आहुति सारे आकाश को सुगन्धित कर देती है। उन्होंने कहा कि मैं इस अवसर पर आप सभी को हार्दिक बधाई देता हूं।

यज्ञ की पूर्णाहुति पर माननीया कुमारी शैलजा, शिक्षा एवं संस्कृति उपमंत्री भारत सरकार अपनी पूज्या माताजी के साथ उपस्थित थीं। और उन्होंने यज्ञ में पूर्णाहुति प्रदान की।

आर्य समाज मंदिर शकरपुर दिल्ली

आर्य समाज मंदिर शकरपुर दिल्ली में वेद प्रचार सप्ताह के अन्तर्गत दिनांक ८-८-९३ से ११-८-९३ तक वेद प्रचार का कार्यक्रम तथा योगिराज श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर प्रतिदिन प्रातः ७ बजे से बृहद यज्ञ एवं श्री पतराम स्वामी का वेदों से सम्बन्धित ओजस्वी प्रवचन होता रहा। मुख्य कार्यक्रम ११ अगस्त को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व के रूप में सम्पन्न हुआ। प्रातः ९ बजे बृहद यज्ञ की पूर्णाहुति आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान आचार्य ओमवीर शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुई। आचार्य ओमवीर शास्त्री जी ने श्रीकृष्ण के प्रति आर्य समाज के दृष्टिकोण को अत्यन्त सारगर्भित भाषा में स्पष्ट किया। इस अवसर पर श्री पुष्कर अरोड़ा के भजनों की श्रोताओं ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की। समारोह में आर्य समाज के वयोवृद्ध संरक्षक श्री नारायणदास खन्ना तथा श्री ओम प्रकाश कौशिक का आर्य समाज के प्रति उनकी सेवाओं को ध्यान में रखते हुए पुष्प मालाओं से सम्मान किया गया। इस अवसर पर अनेकों अन्य वक्ताओं ने योगेश्वर श्रीकृष्ण के चरित्र से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री दामोदर प्रसाद आर्य ने की तथा संचालन आर्य समाज के उप प्रधान श्री ओम प्रकाश रुहिल ने किया। कार्यक्रम सफल बनाने में श्री मिश्रीलाल गुप्ता प्रधान, श्री रामनिवास कश्यप उपमन्त्री तथा श्री बृज वल्लभ गुप्ता, कोषा० एवं श्री नन्दकुमार वर्मा ने सराहनीय योगदान प्रदान किया।

आर्य समाज जोधपुर—

"श्रावणी उपाकर्म" पर्व आर्यसमाज जोधपुर महर्षि दयानन्द मार्ग रातानाडा जोधपुर में परिवार सत्संग समारोह के रूप में दि० १५ जुलाई ९३ से १ अगस्त १९९३ तक १८ दिन मनाया गया। प्रतिदिन प्रातःकाल का सत्संग कार्यक्रम के अन्तर्गत आर्य समाज भवन में यज्ञ, प्रवचन, भजनोपदेश होता था और प्रतिदिन सायंकाल भिन्न भिन्न परिवारों में यज्ञ, प्रवचन भजनोपदेश का कार्यक्रम होता था।

—योगेश चन्द्र मिश्र, मन्त्री

आर्य समाज बागपत

बागपत। यहां श्री कृष्ण जन्माष्टमी से वेद प्रचार सप्ताह का कार्यक्रम आरम्भ हुआ। यज्ञ के पश्चात प्रतिदिन भजन, प्रवचन व साहित्य वितरण का कार्य होता था। मा० मुरारीलाल आर्य सि० शास्त्री ने अपने प्रवचनों द्वारा वेद मन्त्रों की व्याख्या की।

समाज के मन्त्री मा० सत्य प्रकाश गौड़ ने सातो दिन कार्यक्रम का संचालन किया तथा आर्य दर्पण, सत्य दर्शन व वेद रत्न पुस्तकों का निःशुल्क वितरण किया।

—सत्य प्रकाश गौड़, मन्त्री

गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार

गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय के तत्वावधान में आयोजित योगीराज भगवान श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व पर बोलते हुए कुलपति डा० धर्मपाल आर्य ने ब्रह्मचारियों का अपने आचार्यों के संरक्षण में शिक्षा-दीक्षा लेकर एक योग चरित्रवान, अनुशासित, आदर्श नागरिक बनकर सत्यपथ पर चलते हुए राष्ट्र की सेवा करने के लिए निवेदन किया। भारत छोड़ो आन्दोलन के सम्बन्ध में कुलपति जी ने भगवान श्रीकृष्ण की नीतियों का अनुसरण कर राष्ट्र रक्षा की अपील की।

इस अवसर पर सर्वश्री महेन्द्र कुमार डा. दीनानाथ, जनेश्वरपाल शास्त्री, वीरेन्द्र दीक्षित एवं अमरनाथ दुबे ने अपने विचार व्यक्त किये। इस अवसर पर बृहद यज्ञ का आयोजन भी किया गया।

—महेश कुमार, सहायक मुख्याधिष्ठाता

आर्य समाज मोगा

आर्य समाज मोगा की ओर से आर्य समाज मन्दिर गली न० २ न्यू टाऊन मोगा में वेद सप्ताह तथा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व विशेष श्रद्धा भक्ति प्रेम तथा उत्साह से मनाये गये।

श्रावणी के पुण्य पर्व पर यजुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात—स्थानीय विद्वानो ने योगीराज श्रीकृष्ण के जीवन पर प्रकाश डाला।

राजकोट वैदिक संस्कार केन्द्र

राजकोट वैदिक संस्कार केन्द्र और आर्य समाज कोठारिया रोड द्वारा श्रावणी पर्व और हैदराबाद सत्याग्रह बलिदान दिवस मनाया गया।

श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य में ध्वजारोहण पर्वोचित यज्ञ भजन आदि, उत्साह पूर्वक सम्पन्न हुये विशाल जनसमुदाय की उपस्थिति में हैदराबाद सत्याग्रह के शहीदों को श्रद्धांजली दी गई।

—रमेश भाई आर्य, प्रधान

आर्य समाज शृंगार नगर

आर्य समाज शृंगार नगर, लखनऊ द्वारा वेद प्रचार सप्ताह विभिन्न परिवारों में तथा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी समाज मन्दिर में श्रद्धा-उत्साह पूर्वक मनायी गयी। इसमे बिजनौर के भजनोपदेशक पं० राम चन्द्र शर्मा के भजन तथा आर्य मित्र के प्रबन्ध सम्पादक डा० नरेन्द्र वेदालंकार के प्रवचन हुए।

—अमृतलाल मिश्रा, मन्त्री

आर्य समाज राजनगर

आर्य समाज राजनगर गाजियाबाद मे ११.८.९३ को कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता सुविख्यात विद्वान प्रो० वाचस्पति उपाध्याय ने की।

इस अवसर पर आचार्य रविकृष्ण शास्त्री एवं सनातन धर्म के नेता पं० चन्द्र प्रकाश कौशिक के भी सारगर्भित व्याख्यान हुए।

—श्रद्धानन्द, मन्त्री

देश तथा विदेश की विभिन्न आर्य समाजो मे श्रावण पूर्णिमा से श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तक वेद प्रचार सप्ताह समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर नये यज्ञोपवीत धारण किये गये तथा आर्य समाज के प्रकाण्ड विद्वानों द्वारा वेद का सन्देश सुनाया गया। सभी आर्य समाजों में बृहद् यज्ञ के आयोजन किये गये तथा अनेकों सम्मेलनों के माध्यम से वेदों की महत्ता पर प्रकाश डाला गया। बहुत बड़ी संख्या में वेद प्रचार सप्ताह मनाने के समाचार प्राप्त हो रहे हैं। अतः स्थानाभाव के कारण आर्य समाजों के केवल नाम प्रकाशित किये जा रहे हैं।

आर्य समाज मन्दिर बिरली पोखर मुजफ्फरपुर, आर्यसमाज सरदार पटेल मार्ग खलासी लाइन सहारनपुर, आर्य समाज बिसाऊ राज०, आर्य समाज मधुरिया मोहल्ला बिहार, आर्य समाज हिवर खेड़ अकोला, आर्य समाज बाजार सीताराम दिल्ली, आर्य समाज सुल्तान बाजार हैदराबाद, आर्य समाज श्री गंगानगर, आर्यसमाज सिलीगुड़ी, आर्यसमाज कैलाश ग्रेटर कैलाश दिल्ली,

(शेष पृष्ठ १० पर)

श्री पन्नालाल पीयूष

(पृष्ठ ७ का शेष)

निरन्तर चलता रहा और एम ए म्यूजिक कानपुर ललित कला स स्थान से व सीताचार्य परीक्षा उत्तीर्ण कर सर्वोच्च उपाधि प्राप्त की।

इतने लम्बे समय के मिशनरी की कहानी बड़ी रोचक व लम्बी है प्रचारक के रूप में जो कार्य करता है उसे ही पता है कि किन किन कष्टों को झेलकर मिशनरी बनता है। महर्षि दयानन्द की भट्टी से तपकर निकला लोहा भी कुन्दन बन जाता है।

आज ८२ वर्ष की आयु मे भी आप एक जवान व्यक्ति की भांति क्रियाशील हैं। आप की कार्यशैली व जीवन पद्धति पर अनेक संस्थानो ने अभिनन्दन भी किया है।

आर्य समाज शान्ताक्रुज (प० वेदरत्न जी) ने आपको ११ हजार रुपए देकर जो सम्मान दिया वह पीयूष जी का नहीं अपितु आर्य समाज शान्ताक्रुज ने अपना मान बढ़ाया है। वह यशस्वी हो क्योंकि सम्मान की परम्परा को विधिवत निभा रहे हैं। स्वतन्त्रता सेनानी के रूप मे भारत सरकार व राजस्थान सरकार ने ताम्र पत्र भी प्रदान किया है।

आपके विषय में क्या लिखू - आप स्वय एक चलते फिरते महर्षि भक्त प्रचारक एवं पुस्तकालय है। ह समुख स्वभाव-सीधा-सादा जीवन परम्परा से निभाते चले आ रहे हैं बस एक धुन है कि महर्षि के प्रचार प्रसार मे स्व प० प्रकाशचन्द्र कविरत्न की वाणी जनता जनार्दन तक पहुचती रहें। उनका साहित्य घर घर जाता रहे—आज जीवन के मोड़ पर खड़े हैं मैं क्या कहू—आयुष्मान भव ओजस्वी, तेजस्वी, वर्चस्वी-भूया"।

पंडित पन्नालाल जी पीयूष स्वस्थ रहकर जीवन की कला सदा बखेरते रहे। इस कामना के साथ— —डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

आभार व्यक्त

प्रभावती के निधन के समाचार से बहुत सी समाजों के सहानुभूति के संवेदना पत्र आये हैं। सबको उत्तर देना कठिन है। सार्वदेशिक के द्वारा ही मैं सब को उत्तर दे रहा हूं। प्रभावती जी के संगीत व व्याख्यानों की सब ने प्रशंसा की है। और यह विचार प्रकट किया है कि वे अपने ढंग की आप ही थी। उनके स्थान की पूर्ति होना कठिन है। वे मूल गुजराती थीं। परन्तु हिन्दी में इतना अच्छा बोलती थीं कि उन्हें कोई गुजराती नहीं समझता था उनका गृहस्थ जीवन ६० वर्ष तथा ४० वर्ष मेरे कन्धे से कन्धा मिलाकर काम किया। ७६ वर्ष की आयु मे उनका देहान्त हुआ। देश विदेश में मेरे साथ काम किया। —जोरावरसिंह आर्य भजनोपदेशक बरसाना

वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

(पृष्ठ ९ का शेष)

आर्य समाज भिनगा, महर्षि दयानन्द अन्तरराष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टकारा, आर्य समाज मन्दिर सुल्तानपुर पट्टी, आर्य समाज माटुंगा बम्बई आर्यसमाज मन्दिर शकरपुर दिल्ली, आर्यसमाज मयूर विहार दिल्ली।

वेद मन्दिर आर्य समाज ब्रह्मपुरी, आर्य समाज जवाहर लाल रोड मुजफ्फरपुर, आर्य समाज ससखिया राजपुर, आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना, छोटा नागपुर आर्य प्रतिनिधि सभा रांची, आर्य समाज इन्दूर निजामाबाद रांची, आर्य समाज महाराजपुर छतरपुर आर्य समाज बेमतारा पंच मनाया, आर्य समाज देवबन्द आर्य समाज हिरन मगरी उदयपुर, आर्य समाज सुजापुर, आर्य समाज भिनगा, आर्य समाज पीपाड़ नगर जोधपुर, आर्य केन्द्रीय सभा कानपुर।

आज़ादी हमारा कवच, एकता हमारी शक्ति

हम हैं एक राष्ट्र एक प्राण

हम हैं भारतीय

दिल्ली पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०२४/९३ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२९-८-१९९३) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (G)९३
R N. 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U (G) 93 Post in N.D.P.S.O. on 26-27-8-1993

१०१५०—पुस्तकालयाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी
— विश्वविद्यालय हरिद्वार, जि हरिद्वार

'सत्यार्थ प्रकाश'-पढ़ें, परीक्षाएं दें व लाभान्वित हों

महर्षिवर दयानन्द ने हजारो आर्ष ग्रन्थ व अनार्ष ग्रन्थो का अध्ययन करने के पश्चात मानव की सर्वांगीण उन्नति के लिये अपने ग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश" की रचना की थी। इस ग्रन्थ के पठन-पाठन से जहा धर्म का सच्चा स्वरूप विदित होता है और नाना मत-मतान्तरो की वेद विरुद्ध मान्यताओं का पता लगता है, वहां अन्ध विश्वासों से भी छूटने का सही रास्ता दृष्टिगोचर होता है। इसीलिए दिल्ली की इस आर्य युवक परिषद (पंजी०) ने प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी २६ सितम्बर को अखिल भारतीय स्तर पर सत्यार्थ प्रकाश सम्बन्धी चार परीक्षाओ का आयोजन पिछले २१ वर्षों की भांति किया है।

परीक्षाएं—सत्यार्थ रत्न, सत्यार्थ भूषण, सत्यार्थ विशारद व सत्यार्थ शास्त्री इन परीक्षाओ मे अधिक से अधिक संख्या में परीक्षार्थियों को बैठाने की प्रेरणा देकर नई पीढ़ी को राष्ट्र प्रेमी, धर्मावलम्बी और देश के सुयोग्य नागरिक बना कर अवसर प्रदान करें।

विस्तृत जानकारी के लिये सम्पर्क करें—

—चमनलाल एम० ए०, सत्यार्थप्रकाश परीक्षा-मन्त्री
एच ६४, अशोक विहार, दिल्ली-५२

स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती 'वेद-वेदांग पुरस्कार' से सम्मानित

स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती को आर्य समाज सान्ताक्रुज द्वारा संचालित. वेद-वेदांग पुरस्कार से १ अगस्त १९९३ को सुल्तानपुर (उ. प्र.) मे एक भव्य समारोह में सम्मानित किया गया। आठवें वेद-वेदांग पुरस्कार प्राप्त करने वाले स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान, सर्वप्रथम चारों वेदों के अंग्रेजी अनुवादक एवं भौतिकी के क्षेत्र मे शोध कार्य करने वाले हैं। इन दिनों अस्वस्थ स्वामी जी पं० दीनानाथ शास्त्री के निवास में स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं।

आर्य समाज सान्ताक्रुज से प्रतिनिधि के रूप में स्वामी जी को सम्मानित करने प्रधान श्री रामचन्द्र आर्य एवं मन्त्री श्री संगीत शर्मा सुल्तान पुर गए थे। वहां उन्हें आर्य समाज सान्ताक्रुज की ओर से रुपए २५००१/- का ड्राफ्ट, शाल, श्रीफल एवं चांदी की ट्राफी मुख्य अतिथि पं० नारायण दत्त तिवारी (पूर्व मुख्य मन्त्री उत्तर प्रदेश) के कर कमलो द्वारा भेंट की गयी।

वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्य समाज खिचड़ीपुर कालोनी (ब्लाक नं० ४) दिल्ली-९१ द्वारा दि० १२-८-९३ से १७-८-९३तक वेदप्रचार सप्ताह मनाया गया। जिसमें प्रातः ७-३० से ९-३० बजे तक नित्यप्रति आर्य जगत के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान महात्मा रामकिशोर जी वैद्य द्वारा चतुर्वेदशतकीय गायत्री महायज्ञ तथा प्रवचन स्वामी चन्द्रदेव जी हरिद्वार वाले, श्री तुलसीराम जी आर्य भजनोपदेशक के मधुर भजन एवं आचार्य यज्ञदेव जी गुरुकुल ततियाना मुजफ्फर नगर द्वारा किये गए। स्वामी भूमानन्द सरस्वती जी ने अस्वस्थ होते हुए भी इस कार्य को सफल बनाने मे बड़ा योगदान दिया।

मन्त्री—आर्य समाज खिचड़ीपुर
ब्लाक ४, दिल्ली-९१

पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज एवं दयानन्द आर्य विद्यालय हेतु आर्य पुरोहित सह धर्म शिक्षक की आवश्यकता है, जो (बी० ए० शास्त्री) की योग्यता एवं वैदिक रीति से संस्कार कराने मे क्षमता रखते हों। पूर्ण विवरण सहित १५ सितम्बर ९३ तक आवेदन पत्र भेजें। गृहस्थ को प्राथमिकता। वेतन योग्यतानुसार।

ज्ञान प्रकाश, मन्त्री
आर्य समाज सोनारी, पानी टंकी के समीप
पो० सोनारी, जमशेदपुर—२

राष्ट्रभृत यज्ञ

आर्य समाज शक्ति नगर अमृतसर में ९ अगस्त से १५ अगस्त तक स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती के ब्रह्मत्व में राष्ट्रभृत यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रतिदिन प्रातः सायं यज्ञ तथा पं० सत्यपाल जी पथिक एवं श्री जगतवर्मा के मधुर भजन होते रहें। यज्ञ की पूर्णाहुति १५ अगस्त को ११ बजे सम्पन्न हुई। ११ अगस्त को ही पूर्णाहुति के पश्चात "राष्ट्ररक्षा सम्मेलन" का आयोजन किया गया। सम्मेलन की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द जी शास्त्री ने की। इस अवसर पर अनेकों वक्ताओं ने अपने विचार प्रकट किए। सम्मेलन के बाद ऋषिलंगर का भी आयोजन किया गया था।

जीवन विज्ञान 'वैदिक सिद्धांत' प्रशिक्षण

असम आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में ७ जुलाई से १ अगस्त तक जीवन विज्ञान 'वैदिक सिद्धांत' प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का समापन समारोह डा० नारायण दास प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा असम की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री एस. एल. बड़जातिया थे। इस अवसर पर प्रत्येक प्रशिक्षित विद्यार्थी को प्रमाण पत्र तथा २०० रुपए प्रत्येक को पुरस्कार स्वरूप प्रदान किए गये।

सार्वदेशिक के ग्राहकों से

सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहको से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क भेजते समय या पत्र व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या का उल्लेख अवश्य करें।

अपना शुल्क समय पर स्वतः ही भेजने का प्रयास करें। कुछ ग्राहकों का बार बार स्मरण पत्र भेजे जाने के उपरान्त भी वार्षिक शुल्क प्राप्त नहीं हुआ है अतः अपना शुल्क अविलम्ब भेजें अन्यथा विवश होकर अखबार भेजना बन्द करना पड़ेगा।

'नया ग्राहक" बनते समय अपना पूरा पता तथा "नया ग्राहक" शब्द का उल्लेख अवश्य करें। बार बार शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिये, एक बार ३०० रुपये भेजकर सार्वदेशिक के आजीवन सदस्य बने।—सम्पादक

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

महर्षि दयानन्द उवाच

- वेद के पढने पढाने, सन्ध्योपासनादि पञ्च महायज्ञों के करने और होम मन्त्रों मे अनध्याय विषयक अनुरोध (आग्रह) नही है, क्योकि नित्यकर्मों मे अनध्याय नहीं होता, जैसे श्वास प्रश्वास सदा लिए जाते हैं (और) बन्द नही किये जा सकते, वैसे नित्यकर्म प्रतिदिन करना चाहिये न किसी भी दिन छोडना।
- सत्य पुरुषों को योग्य है कि मुख के सामने दूसरे के दोष कहना और अपना दोष सुनाना। परोक्ष मे दूसरे के गुण सदा कहना।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र   दूरभाष : ३२७४७७१   वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३१ अंक ३३]   दयानन्दाब्द १६९   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९४   भाद्रपद शु० ११   स० २०५० २६ सितम्बर १९९३

बोगस सार्वदेशिक सभा के गठन को अदालत में चुनौती

दिल्ली उच्च न्यायालय द्वारा कैलाशनाथ, अग्निवेश और इन्द्रवेश को सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों के रूप में प्रतिनिधित्व करने पर प्रतिबन्ध

दिल्ली १८ सितम्बर। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा श्री कैलाशनाथसिंह, अग्निवेश तथा इन्द्रवेश के विरुद्ध, एक नई वैकल्पिक सार्वदेशिक सभा के गठन को असवैधानिक करार कराने हेतु सभा के उपप्रधान तथा वरिष्ठ अधिवक्ता श्री सोमनाथ मरवाहा तथा श्री रामफल बसल ने दिल्ली उच्च न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री पी०एन० नाग के समक्ष एक याचिका प्रस्तुत करते हुए कहा कि समस्त प्रतिपक्षी आर्य समाज की प्राथमिक सदस्यता से कई वर्ष पूर्व निष्कासित किए जा चुके हैं। अत उन्हे किसी भी रूप मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (जिसके प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तथा मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री हैं) के समानान्तर इसी नाम से सभा के गठन का कोई अधिकार नही है, जब कि ३१ अगस्त के एक दैनिक अखबार मे इन लोगो के द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की कार्यकारिणी को भग करके कैलाशनाथसिह को प्रधान बनाने की घोषणा की गई थी।

याचिका मे यह भी कहा गया है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा सोसायटी एक्ट १८६० के अन्तंगत एक रजिस्टर्ड सस्था है जो कि समस्त विश्व के आर्य समाजो का प्रान्तीय सभाओं के माध्यम से प्रतिनिधित्व करती है। इस सभा का चुनाव प्रति तीन वर्ष पश्चात् होता है। गत चुनाव १९९१ को सम्पन्न हुआ था तथा अगला चुनाव १९९४ मे होगा। इस बीच किसी भी प्रकार से नई कार्यकारिणी का गठन न केवल असवैधानिक है अपितु निष्कासित व्यक्तियो अर्थात् बाहरी तत्वो द्वारा ऐसा किया जाना अपराध भी है।

दिल्ली उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति श्री पी०एन० नाग ने इस याचिका पर १८ सितम्बर १९९३ को सभा की तरफ से नियुक्त वरिष्ठ अधिवक्ताओ सर्वश्री रामफल बसल, श्री सोमनाथ मरवाहा तथा उनके कनिष्ठ अधिवक्ताओ—श्री अशोक मरवाहा तथा श्री एस०एन० गुप्ता की दलीलो को सुनने के बाद अपने अन्तरिम आदेश मे प्रतिवादियो सर्वश्री कैलाशनाथ सिह, अग्निवेश तथा इन्द्रवेश पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के चुने हुए अधिकारियो के रूप मे प्रतिनिधित्व करने पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगा दिया है। इन तीनो को अदालत द्वारा जारी नोटिस मे २९ अक्तूबर १९९३ को अदालत मे पेश होने तथा अपना उत्तर दाखिल करने को कहा गया है।

हैदराबाद राज्य का भारतीय गणतन्त्र में विलय मुक्ति दिवस के रूप में मनाया गया

हैदराबाद १७ सितम्बर, पूर्व हैदराबाद राज्य का भारतीय गणतन्त्र मे विलय ७ सितम्बर १९४८ के दिन हुआ था जब १९३८ ३९ के आर्य समाज सत्याग्रह के परिणाम स्वरूप अन्तत निजाम उसमान अली खान को सरदार पटेल के समक्ष झुकना पडा और इस विलय पत्र पर हस्ताक्षर किए, उसी दिवस की याद मे आज हैदराबाद के पब्लिक गार्डन, इन्दिरा प्रियदर्शनी हाल मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे आन्ध्रप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा मुक्ति दिवस" का आयोजन बड़े भव्य तथा विशाल स्तर पर किया गया। इस समारोह की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने की तथा आन्ध्रप्रदेश के गृहमन्त्री श्री धर्माराव मुख्य अतिथि थे।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

संपादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सार्वदेशिक सभा के अधिवक्ता श्री अशोक मरवाहा तथा श्री एस० एन० गुप्ता द्वारा श्री कैलाशनाथ को भेजे गए अन्तरिम आदेश के कानूनी नोटिस की मूलप्रति

SOM NATH MARWAHA
Senior Advocate

ASHOK K MARWAHA
Advocate

Office-cum-residence :
C3-C4 Green Park Extension
New Delhi-110016
office : High Court
16 Lawyer's Chamber
New Delhi
Telephone : Res : 650605
off : 6852234

(REGISTERED A. D.) Dated :18-9-1993

SUB : SUIT No, 2092/1993

Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha & others
Versus
Sh. Kailash Nath Singh Yadav and others
pending in the High Court of Delhi, New Delhi.
Date of hearing : 29-10-1993,
in IA 8126/93 as well as in Suit No. 2092/93.

Shri Kailash Nath Singh Yadav,
r/o K-1/116 Masodan
Varanasi (U. P.)

Please note and be advised :

1. That the above named plaintiff through its duly elected President and Secretary has filed a suit for declaration that Swami Anand Bodh Saraswati and Dr. Sachidanand Shastri are duly elected President and Secretary of the Plaintiff No. 1 as mentioned above, The said suit was listed before Hon'ble Judge P. N. Nag on 17-9-1993.

2. That in the suit plaintiffs had filed an interim application for stay.

3. Be informed and advised that vide order dt. 17-9-1993 you have been restrained from representing or proclaiming yourselves as elected office bearer of plaintiff No. 1 i. e. Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha. Notice of the suit and I. A and order of stay will be served upon you officially in due course. Please be warned and informed to punctually obey and comply with the above order, any breach thereof will render you liable for all consequences of contempt of court. Please be advised. Meanwhile please find enclosures :

1. A copy of the Application.
2. A copy of plaint with documents,
3. A list of documents.

Sd/ Ashok K Marwaha & S. N. Gupta
Advocates

Encl : As above.

दिल्ली उच्च न्यायालय द्वारा दिये गए अन्तरिम आदेश की सत्य प्रतिलिपि

IN THE HIGH COURT OF DELHI AT NEW DELHI.
SUIT No. 2092/1993

Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha & Ors, ...Plaintiffs
Versus
Shri Kailash Nath Singh Yadav and others ....Defendants.

17-9-1993 Present : Mr. R. P. Bansal and Mr. S. N. Marwaha, Senior Advocate with S. N. Gupta for the Plaintiffs.

S. No. 2092/93.

Let the plaint be registered as a suit.

Issue summons to the defendants by Registered AD Post, ordinary process and Dasti for 29th Oct. 1993.

I. A. 8126/93.

Since the matter is urgent and if, notice of the application is given to the Opposite party at this stage the very purpose of grant of interim injunction would be defeated. Therefore, interim injunction is garnted in the following terms.

Notice for 29th October, 1993.

In themeantime, defendants are restrained from representing or proclaiming themselves as Elected Office bearers of Plaintiff No. 1.

Provision of order 39 Rule 3 be complied with.

Dasti. as well.

Sd/-P. N. Nag, J.

17-9-1993
TRUE COPY.

मेरठ में महाराणा प्रताप जयन्ती समारोह

३०-३१ अक्टूबर १९९३ को होगा

क्रान्तिकारियों की महानगरी मेरठ में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के तत्वावधान में महान देशभक्त महाराणा प्रताप जयन्ती समारोह का दूसरा चरण आगामी ३०-३१ अक्टूबर १९९३को जिमखाना मैदान में सम्पन्न होगा। समारोह की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती करेंगे। मुख्य अतिथि होंगे केन्द्रीय कृषि मन्त्री डा० बलराम जाखड़। भारी संख्या में पधारकर समारोह को सफल बनावें।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री, सार्वदेशिक आ० प्र० सभा

कैलाशनाथ सिंह, अग्निवेश, इन्द्रवेश के तथाकथित संगठन विरोधी षडयन्त्रों की आर्य प्रतिनिधि सभाओं द्वारा कड़ी भर्त्सना

३१ अगस्त १९९३ को कुछ समाचार पत्रों में आर्य समाज से भ्रष्टाचार के आरोपों के कारण वर्षों पूर्व से निष्कासित उपरोक्त व्यक्तियों द्वारा सार्वदेशिक सभा के नाम पर की गई तथाकथित एवं अवैध घोषणा की कई आर्य प्रतिनिधि सभाओं द्वारा कड़ी भर्त्सना के निन्दा प्रस्ताव सार्वदेशिक सभा को प्राप्त हुए हैं, जो निम्नप्रकार हैं:—

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रस्ताव

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के साधारण अधिवेशन ५ सितम्बर १९९३ में सर्वसम्मति से पारित

प्रस्ताव की प्रतिलिपि

श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा एडवोकेट ने बताया कि कैलाशनाथ जी, श्री धर्मेन्द्र सिंह और श्री प्रो० रत्नसिंह जी आदि ने एक तथा-कथित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम से गठित की है। जो बिल्कुल अवैध है और ऐसा उन्होंने आर्य समाज को क्षति पहुचाने के लिये किया है। श्री शर्मा जी ने आगे बताया कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन आसफ अली रोड, नई दिल्ली में स्थित है। जिसके प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती है और यह सभा ही वैध है। श्री कैलाशनाथ सिंह को आर्यसमाज से छः वर्ष के लिये निष्कासित किया हुआ है। श्री स्वामी अग्निवेश जी और श्री स्वामी इन्द्रवेश जी भी आर्य समाज से निष्कासित है। उन्होंने कहा कि कैलाशनाथ आदि ने जो तथाकथित सार्वदेशिक सभा बनाई है उसकी हमें घोर निन्दा करनी चाहिये।

श्री योगेन्द्रपाल जी सेठ, श्री आशानन्द जी आर्य और श्री सरदारी लाल जी आर्य ने भी इस विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुये श्री अश्विनीकुमार शर्मा एडवोकेट के प्रस्ताव का समर्थन किया।

विचार विमर्श के पश्चात निश्चय हुआ कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि०) गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर उसी सार्वदेशिक सभा को मानती है जिसके प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती हैं और जिसका रजिस्टर्ड कार्यालय महर्षि दयानन्द भवन, आसफ अली रोड नई दिल्ली में स्थित है। इसके साथ ही यह भी निश्चय हुआ कि श्री कैलाशनाथ आदि द्वारा जो तथाकथित सार्वदेशिक सभा बनाई गईहै उसके विरुद्ध सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली व उसके प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती उनके विरुद्ध उचित कार्यवाही करे ताकि ऐसे तत्व आर्य समाज को कोई हानि न पहुंचा सकें।

अश्विनी कुमार
सभा-मन्त्री

सार्वदेशिक के ग्राहकों से

सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहकों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क भेजते समय या पत्र व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या का उल्लेख अवश्य करें।

अपना शुल्क समय पर स्वत: ही भेजने का प्रयास करें। कुछ ग्राहकों का बार बार स्मरण पत्र भेजे जाने के उपरान्त भी वार्षिक शुल्क प्राप्त नहीं हुआ है अत: अपना शुल्क अविलम्ब भेजें अन्यथा विवश होकर अखबार भेजना बन्द करना पड़ेगा।

"नया ग्राहक" बनते समय अपना पूरा पता तथा 'नया ग्राहक' शब्द का उल्लेख अवश्य करें। बार बार शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिये, एक बार ३०० रुपये भेजकर सार्वदेशिक के आजीवन सदस्य बने।—सम्पादक

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली का प्रस्ताव

नई दिल्ली १२ सितम्बर।

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली की अन्तरंग सभा आज आर्य समाज करौल बाग के सत्संग भवन में सम्पन्न हुई। इसकी अध्यक्षता महात्मा धर्मपाल जी ने की। मन्त्रिमण्डल के सदस्यों का परिचय तथा बैठक का संचालन महामन्त्री श्री शिवकुमार शास्त्री ने किया।

अन्तरंग सभा ने आर्य समाज से निष्कासित कैलाशनाथसिंह तथा अग्निवेश आदि की सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम से एक बोगस संगठन खड़ा करने के लिए तीव्र आलोचना करते हुए निम्न प्रस्ताव सर्व सम्मति से पारित किया।

प्रस्ताव

"यह सभा वर्तमान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा जिसका कार्यालय ३/५, आसफ अली रोड, महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली मे स्थित है और जिसके प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती एव मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री है, में पूर्ण आस्था एवं विश्वास व्यक्त करती है, क्योंकि इस सभा की कार्यकारिणी पूर्णतयः वैधानिक तरीके से पिछले त्रैवार्षिक साधारण अधिवेशन दिनांक २६-१०-९१ को गठित की गई थी।

कैलाशनाथ सिंह, अग्निवेश और इनके कुछ साथियों द्वारा समानान्तर सार्वदेशिक सभा गठित करने का दुष्प्रयत्न कानूनी दृष्टि से अपराध है तथा धार्मिक दृष्टि से महापाप है।

आर्य केन्द्रीय सभा इन स्वार्थी तत्वों की विघटनात्मक गतिविधियों से पूर्णतः अवगत है, अत: दिल्ली की आर्य जनता से इस प्रस्ताव के माध्यम से अपील की जाती है कि ऐसे गैर आर्य समाजी तत्वों का डटकर मुकाबला करे।

—विमल वधावन
उपप्रधान

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० का प्रस्ताव

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के अधिकारियों की आपात बैठक श्री कैलाशनाथ सिंह द्वारा अपने आपको सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का तथाकथित प्रधान घोषित करने की तीव्र भर्त्सना करती है।

श्री कैलाशनाथ सिंह यादव आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र० की अन्तरंग सभा दिनांक १५-४-८४ के प्रस्ताव संख्या ६ (अ) के द्वारा आर्य समाज से निष्कासित किये गये थे। इस निर्णय को रजिस्ट्रार फर्म्स चिट्स एण्ड सोसाइटीज ने भी स्वीकार किया था। अत: श्री कैलाशनाथसिंह यादव का आर्य समाज से कोई सम्बन्ध नहीं है।

आर्य समाज के विरुद्ध श्री कैलाशनाथ सिंह असामाजिक तत्वों के साथ मिलकर षड़यन्त्र कर रहे हैं जिसके लिए यह बैठक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली से इनके विरुद्ध दण्डात्मक कार्यवाही करने की पुरजोर मांग करती है।

अधिकारियों की यह बैठक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के नेतृत्व में अपनी पूर्ण आस्था और निष्ठा व्यक्त करती है तथा विश्वास दिलाती है कि आर्य प्रतिनिधि सभा स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के प्रत्येक आदेश को प्राणप्रण से पूर्ण करने हेतु सदैव कटिबद्ध है।,

दिनांक १३-९-१९९३ मनमोहन तिवारी
मन्त्री

(शेष पृष्ठ ४ पर)

आर्य प्रतिनिधि सभाओं के प्रस्ताव

(पृष्ठ १ का शेष)

आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली का प्रस्ताव

दिनांक ४-९-१९९३

आज आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली में आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के अन्तरंग सदस्यों, प्रतिष्ठित सदस्यों, आर्य समाजों, स्त्री आर्य समाजों तथा गुरुकुलों के अधिकारियों, आर्य विद्वानों, उपदेशकों की एक विशेष बैठक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की ओर से की गई। बैठक की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान श्री सूर्यदेव जी ने की। बैठक में निम्न प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया।

प्रस्ताव

आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के कार्यकारिणी सदस्यों, आर्य समाजों व शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों, विद्वानों तथा उपदेशकों की यह बैठक सर्वसम्मति से श्री कैलाशनाथसिंह, स्वामी इन्द्रवेश और अग्निवेश और इनके तथाकथित साथियों द्वारा आर्य समाज के संगठन को छिन्न-भिन्न करने की कोशिश को कड़ी निन्दा करती है। उन्होंने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का चुनाव करने और उसके प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को हटाकर श्री कैलाशनाथसिंह को प्रधान चुने जाने की मिथ्या घोषणा करके निन्दनीय कार्य किया है। आर्य समाज से वर्षों पूर्व भ्रष्टाचार के आरोपों में निष्कासित इस प्रकार के स्वार्थी लोगों की किसी भी प्रकार के प्रयास की सम्पूर्ण आर्य जगत द्वारा कड़ी भर्त्सना की जावे। यह सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा जो एक रजिस्टर्ड संस्था है और पूर्ण रूप से वैधानिक है तथा उसके वर्तमान प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के प्रति पूर्ण निष्ठा प्रकट करती है।

सूर्यदेव
प्रधान

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल का प्रस्ताव

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के अन्तर्गत प्रान्तीय आर्य समाजों की एक संयुक्त बैठक आर्यसमाज कलकत्ता, १९ विधान सरणी मे, सभाप्रधान श्री बटुटकृष्ण वर्मन की अध्यक्षता में मध्याह्न १ बजे हुई, जिसमें प्रो० कैलाशनाथ सिंह, स्वामी इन्द्रवेश, स्वामी अग्निवेश एवं उनके तथाकथित सहयोगियों द्वारा आर्यसमाज संगठन को छिन्न-भिन्न करने की साजिशों की भर्त्सना की गई, उनके द्वारा दिये गये बयान की निन्दा की गई उन लोगोंने जिस घटिया उपायसे सार्वदेशिकसभा पर कब्जा करने की यह योजना बनाई वह निन्दनीय है। अतः उनके कुकृत्यों की, घोर निन्दा करते हुये आज की यह सभा, सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास करती है और ऐसे लोगों को आर्य समाजों तथा आर्य संगठनों में प्रवेश के लिये निषेध करने का आग्रह करती है, इसके साथ ही सार्वदेशिक सभा के संवैधानिक निर्वाचित प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती एवं अन्तरंग सभा में अपनी पूर्ण आस्था व्यक्त करती है।

आनन्द कुमार आर्य
सभा-मन्त्री

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार में प्रवेश लें

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार में प्रथम कक्षा से स्नातकोत्तर तक विभिन्न विषयों में अध्ययन/अध्यापन की व्यवस्था है। यहां पर वेद, दर्शन, भारतीय संस्कृति एवं इतिहासके अध्ययनके साथ साथ माइक्रोबायलाजी तथा कम्प्यूटर एप्लीकेशन जैसे आधुनिक ज्ञान विज्ञान के विषयों के अध्ययन अध्यापन की व्यवस्था की गई है।

यहां पर स्वच्छ एवं प्राकृतिक वातावरण में गुरुकुल परम्परा के अनुसार आश्रम व्यवस्था भी उपलब्ध है। ब्रह्मचारियों के लिए आश्रम में आधुनिक प्रणाली का भोजनालय, शौचालय एवं स्नानागार की सुविधा है।

महाविद्यालय स्तर पर कम्प्यूटर प्रशिक्षण की व्यवस्था पहले से ही है। इस वर्ष यह व्यवस्था कक्षा ८ से कक्षा १२ तक के छात्रों के लिए भी कर दी गई है। इस समय विद्यालय विभाग के ब्रह्मचर्य आश्रम में २०० छात्र रह रहे हैं। अभिभावकों की मांग पर तथा कम्प्यूटर प्रशिक्षण व्यवस्था की नयी सुविधा को देखते हुए प्रवेश की अन्तिम तिथि को बढ़ाकर ३० सितम्बर १९९३ कर दिया गया है। अपने बच्चों को इस वैदिक संस्था में प्रवेश कराने के इच्छुक अभिभावकों से निवेदन है कि मुख्य अध्यापक, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय (विद्यालय विभाग), हरिद्वार से सम्पर्क करें।

सूर्यदेव प्रधान — डा० धर्मपाल
आर्य विद्या सभा — कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता

वेदालंकार के छात्रों के लिए छात्रवृत्तियां

आर्य विद्या सभा, गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार के २१ अगस्त १९९३ को हुए आर्य समाज, हनुमान रोड, नई दिल्ली में सम्पन्न त्रैवार्षिक साधारण अधिवेशन में यह निर्णय लिया गया है कि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार में वेदालंकार कक्षा के प्रथम वर्ष में प्रवेश लेने वाले छात्रों को रु० ५००) मासिक की छात्रवृत्ति आर्य विद्या सभा की ओर से दी जायेगी। आर्य समाज के सिद्धान्तों मे निष्ठा रखने वाले तथा वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार की भावना वाले तथा संस्कृत विषय लेकर इन्टरमीजिएट अथवा समकक्ष परीक्षा उच्च श्रेणी में उत्तीर्ण छात्रों को यह छात्रवृत्ति दी जायेगी। ऐसे सुयोग्य छात्रों को वेदालंकार करने के पश्चात समुचित वेतनमान में धर्माचार्य/धर्मशिक्षक अथवा उपदेशक आदि पदों पर नियुक्त किया जायेगा। छात्रों की संख्या अधिक होने पर एक एक इसी प्रकार की छात्रवृत्ति दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा की ओर से भी दी जायेगी।

छात्रवृत्ति के लिए अर्हता प्राप्त छात्रों से निवेदन है कि वे अपने आवेदन पत्र आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार, अध्यक्ष वेद विभाग एवं उपकुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के नाम भेजें। उनकी संस्तुति पर ही ये छात्रवृत्ति दी जायेगी।

सूर्यदेव प्रधान — डा० धर्मपाल
आर्य विद्या सभा — कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता

श्यामसिंह 'शशि' पुरस्कृत

नई दिल्ली, १४ सितम्बर। राष्ट्रपति डा० शंकर दयाल शर्मा ने आज यहां हिन्दी, अंग्रेजी में डेढ़ सौ पुस्तकों के लेखक डा० श्यामसिंह शशि को पन्द्रह हजार रुपए की राशि के साथ 'महापण्डित राहुल सांस्कृतायन पुरस्कार' से सम्मानित किया। यह राष्ट्रीय पुरस्कार उनके यायावर साहित्य में अद्वितीय योगदान के लिए दिया गया है। भारत सरकार के केन्द्रीय हिन्दी संस्थान ने पुरस्कार इसी वर्ष शुरू किया है तथा डा० शशि इस पुरस्कार को पाने वाले पहले यायावर साहित्यकार हैं। डा० शशि विगत ३० जून को सरकारी सेवा से निवृत्त होकर अब स्वतन्त्र लेखन में संलग्न है। वे अनेक राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक संस्थाओं से जुड़े हैं तथा आजकल साहित्य और सामाजिक विज्ञान के एक ऐतिहासिक प्रोजेक्ट में कार्यरत है।

डा० शशि को दो वर्ष पूर्व उनके हिन्दी, अंग्रेजी साहित्य के अद्वितीय योगदान के लिए पद्मश्री के उच्च राष्ट्रीय सम्मान से अलंकृत किया गया था। वे अनेक क्षेत्रों में प्रथम रहे हैं।

वैदिक वाङ्मय में आत्म-तत्व

श्री पं० ब्र० व्यासनन्दन शास्त्री, भागलपुर

समस्त वैदिक वाङ्मय में सर्वत्र आत्म-तत्व की चर्चायें प्राप्त होती हैं। अथर्ववेद के १०-८-८५ मंत्र में कहा गया है—

ओ३म् बालादेकमणीयस्कमुतैकं नेव दृश्यते ।
ततः परिष्वजीयसी देवता सा मम प्रिया ।।

अर्थात एक जीवात्मा बाल से भी अधिक सूक्ष्म है और एक प्रकृति मानों नहीं दीखती, उससे अधिक सूक्ष्म और व्यापक परमात्मा देवता है, वह मेरा प्रिय है।" इस तरह, परमात्मा जीव से सूक्ष्म और जीव में व्यापक है। वह सदा अंगसंग रहने वाला है, अतः जीव को उससे प्यार करना चाहिए। कल्याणाभिलाषी को प्रकृति के प्यार से ऊपर उठकर परमात्मा से प्रीति लगानी चाहिए। कितना कठिन और कितना सरल कार्य है यह। यथार्थ ज्ञान के बिना यह सिद्ध नहीं होता। वैदिक योगी कह गये हैं—

आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यो
मैत्रेयी। (बृहदारण्यकोपनिषद् ४ ५ ६ ।

अरे मैत्रेयी! आत्मा का साक्षात्कार करना चाहिए, उसके दर्शन के साधन हैं—श्रवण, मनन, निदिध्यासन। श्रोतव्यः श्रुतिवाक्येभ्यः—वेदवचनों के द्वारा आत्म-ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। वेद से बढ़कर आत्मज्ञान प्राप्त कराने वाला ग्रन्थ ब्रह्माण्ड में दूसरा नहीं है। आत्म-जिज्ञासु को तो अवश्य ही वेद पढ़ना चाहिए। मन्तव्यश्चोपपत्तिभिः=युक्तियों के द्वारा मनन करने योग्य है। क्योंकि, कहीं कोई श्रुति के नाम से अनर्गल बात हो न सुनाने लग जावे और श्रोता भ्रम में न पड़ जाये। इसी कारण तर्क विद्या को शास्त्रों में 'अध्यात्मविद्या' कहा गया है।

यह बात सभी मानते हैं कि शरीर और इन्द्रिय आत्मा के लिये हैं। शरीर आत्मा का भोगाधिष्ठान (सुख-दुःख भोगने का ठिकाना) है। इन्द्रियां आत्मा का करण (हथियार) हैं। अतः आत्मा इनसे श्रेष्ठ है। कठोपनिषद में इस तत्व का प्रतिपादन इन शब्दों में किया है

इन्द्रियेभ्यः परं मनो मनसः सत्वमुत्तमम् ।
सत्वादधि महानात्मा महतोऽव्यक्तमुत्तमम् ।।
अव्यक्तात्तु परः पुरुषो व्यापकोऽलिंग एव च ।
यज्ज्ञात्वा मुच्यते जन्तुरमृतत्वं च गच्छति ।।

अर्थात इन्द्रियों से मन श्रेष्ठ, मन से बुद्धि (अहंकार) उत्कृष्ट, अहंकार से महत्तत्व, महत्तत्व से अव्यक्त और प्रकृति उत्कृष्ट है, अव्यक्त से पुरुष उत्तम है। वह व्यापक सामर्थ्य वाला तथा किसी का उपादान कारण नहीं है। प्रकृति विकृति-दशा को प्राप्त हो रही है, उसके विकार उसके अनुमापक हैं, किन्तु आत्मा का इस प्रकार का कोई विकार या कार्य नहीं, अतः ऋषि ने आत्मा को अलिंग कहा है। आत्मा की शक्तियां सारी देह में कार्य कर रही हैं, अतः उसे 'व्यापक' कह दिया है। इसी उपनिषद में ही और भी तत्सम्बन्धी कथन द्रष्टव्य है—

आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव च ।
बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च ।।
इन्द्रियाणि हयानाहुर्विषयांस्तेषु गोचरान ।
आत्मेन्द्रियमनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः ।।

—आत्मा को रथी समझ और शरीर को रथ, बुद्धि को कोचवान जान और मन को लगाम, इन्द्रियों को घोड़ा कहते हैं और काम क्रोधादिक विषयों को उनका घास। आत्मा, इन्द्रिय और मन, इनके संघात को 'ज्ञानी' लोग 'भोक्ता' कहते हैं।

आत्मा अमर है और शरीर मर्त्य है। आत्मा अविनाशी है, शरीर विनाशी है, किन्तु वासना के कारण 'अमृत्यो मर्त्येन स योनिः—अमृत आत्मा मर्त्य के साथ एक ठिकाने वाला हो रहा है। शुद्ध पवित्र विमल, उज्ज्वल जीव अशुद्ध, अपवित्र समल, अंधेरे शरीर में फंसा है। यही आत्मा का—चारु-चित्रं जनिम (ऋ० ५. ३. ३.) सुन्दर अद्भुत जन्म है। आत्मा विष्णु-समान बना हुआ है। जैसे परमात्मा संसार में रहता हुआ उसका संचालन कर रहा है वैसे ही आत्मा शरीर में बैठा उसका। आत्मा-परमात्मा का स्वरूप-वर्णन एक मन्त्र इस प्रकार करता है—

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया: समानं वृक्षं परिषस्वजाते ।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्योऽभिचाकशीति ।।
(ऋ० १-७५-२०)

अर्थात् दो सुन्दर पंखों वाले पक्षी मित्रवत् एक वृक्ष पर बैठे हैं। उनमें से एक पक्षी उस वृक्ष के सुस्वादु फल को खाता है और दूसरा न खाता हुआ केवल देखता है, निरीक्षण करता है। यहां 'रूपक' अलंकार में यह बात कही गयी है। वास्तविकता यह है कि संसार अथवा शरीर-रूपी समान वृक्ष पर आत्मा-परमात्मा रूपी दो पक्षी बैठे हैं। जो एक पक्षी शरीर-रूप वृक्ष के फल (पाप-पुण्यादि फल) खाता है, उपभोग करता है, वह जीवात्मा है और जो न खाता हुआ केवल देखता है, व्यवस्था करता है, वह परमात्मा है। अस्तु, आत्मा भोगी है और परमात्मा निर्भोगी है।

आत्मा का परिमाण

बालाग्रशतभागस्य शतधा कल्पितस्य च ।
भागो जीवः स विज्ञेयः चानन्त्याय कल्पते ।
(श्वेताश्वतरोपनिषद् ५ । २)

अर्थात् बाल के अगले हिस्से के सौ टुकड़े कर दिये जायें, उस सूक्ष्म सौवें हिस्से के भी पुनः सौ टुकड़े कर दिए जायें। उस सूक्ष्मातिसूक्ष्म भाग के समान आत्मा है किन्तु बहुत सामर्थ्य वाला है। महर्षि दयानन्द जी ने भी कहा कि जीवात्मा एक सूक्ष्म पदार्थ है जो परमाणु में भी रह सकता है। उसकी शक्तियां शरीर में प्राण, बिजली एवं नाड़ी के साथ संयुक्त हो सकती है। श्वेताश्वतरोपनिषद् और स्वामी दयानन्द, दोनों ने यह रहस्य वेद और योग द्वारा जाना। वस्तुतः जीवात्मा शरीर में इन्द्र है और आंख, नाक, मुखादि इसके उपकरण होने से 'इन्द्रिय' कहलाते हैं।

साहित्यकार और धर्म

—पतराम त्यागी

साहित्यकार ससार का सर्वाधिक सुसस्कृत एव सवेदनशील प्राणी होता है। नित्यप्रति अपने आस पास घट रही घटनाओ का अकन वह बड़े ही सहृदयता पूर्वक करता है या यो कहिए कि वह लोक जीवन से सीधे सजीव रूप मे जुड़ा रहता है। साहित्यकार का कार्य केवल पाठको का मनोरजन करना मात्र ही नहीं है, अपितु उसका स्थान समाज मे बहुत ऊचा है। वह समाज का पथ प्रदर्शक होता है जो सदैव मानवीय जगत को जागृत करता रहता है और समाज मे सदभावना का सचार करके लोकमगल की कामना करता है।

साहित्यकार परिस्थितियो की विकटता से कभी नही घबराता बल्कि उसका यथोचित समाधान खोजता है और साहित्य सृजन करके समाज का मार्ग दर्शन करता है। उसकी लेखनी से लिखा गया एक एक शब्द एक एक वाक्य उसके हृदय की एक एक धड़कन से होकर गुजरता है और पाठको के अन्तर्हृदय को प्रेरित करता हुआ उनके मनोभावो को उद्वेलित करता है। साहित्यकार मन वचन कर्म का सन्यासी साधक, स्वय जलकर दूसरो को प्रकाश देने वाले दीपक के समान होता है।

एक उत्तम साहित्यकार केवल शब्दो वाक्यो अथवा व्याकरण की कलाकारी दिखावे मात्र के उद्देश्य से सारहीन धर्महीन अतात्त्विक साहित्य की रचना नही कर सकता क्योकि ऐसा साहित्य जनहित मे समर्थ नही हो सकता। यथार्थवाद के नाम पर जिस साहित्य का सृजन किया जा रहा है उसमे स्वार्थवाद की बहुलता आ जाने के कारण समाज मे आपाधापी द्वेष घृणा क्रोधादि दोषो का समावेश हो रहा है, जिससे समाज विभक्ति की ओर बढ रहा है। ऐसा साहित्यकार लोकमगल की कामना से दूर होता हुआ अपने स्वार्थों की पूर्ति मे लिप्त है। वह केवल यथार्थवाद का उदगाता बनकर ही रह गया है।

साहित्यकार को केवल यथार्थवाद का उद्गाता बनकर ही नही रहना चाहिए, उसके साहित्य मे धर्म पर आधारित आदर्शों की प्रेरणा भी होनी चाहिए तथा सत्य अहिंसा अस्तेय आदि का यथोचित समावेश भी होना चाहिए। जब तक साहित्यकार की साधना मे निस्वार्थ, निर्लिप्त और निष्काम की भावना नही होगी तब तक वह निर्भीक सत्यपथ गामी धर्म पथ गामी नही बन सकता और न ही सत्य शिव सुन्दरम का सवाहक बन सकता है।

जो लोग धर्मविहीन समाज की बात करते हैं वह यह भूल जाते हैं कि 'धर्म हीन जीवन का ही दूसरा नाम सिद्धात हीन जीवन है। (महात्मा गाधी) सिद्धात का जीवन ठीक उसी प्रकार होता है जिस प्रकार बिना पतवार की नाव मे बैठकर नदी पार करने का प्रयास करना। 'धर्म प्रजाओ को धारण करता है।" धर्म की गति बडी सूक्ष्म होती है वह सीधे अन्तरात्मा को प्रभावित करती है। इसीलिए तो धर्म को मोक्ष की नौका कहा गया है और धार्मिक साहित्य को उसकी पतवार। धर्म मे भी साहित्य की तरह लोकमगल की कामना निहित है। उसका प्रवाह ज्ञान कर्म और उपासना की त्रिवेणी मे प्रवाहित होता है।

धर्म के बारे मे पण्डित रामचन्द्र शुक्ल की धारणा है कि "वह व्यवस्था या वृत्ति जिससे लोक में मगल का विधान होता है, अभ्युदय की सिद्धि होती है, धर्म है।" महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपनी पुस्तक आर्योद्देश्य रत्नमाला मे धर्म की परिभाषा इस प्रकार की है "जिसका स्वरूप ईश्वर की आज्ञा का यथावत पालन और पक्षपात रहित न्याय सर्वहित करना है, जो कि प्रत्यक्षादि प्रमाणो से सुपरीक्षित और वेदोक्त होने से सब मनुष्यो के लिए मानने योग्य है, उसको धर्म कहते हैं।" ऋषि व्यवहारभानु मे लिखते हैं "जो न्यायाचरण सबके हित का करना आदि कर्म है उनको धर्म जानो।" वैशेषिक दर्शन शास्त्र मे 'यतोभ्युदयनि श्रेयससिद्धि स धर्मः" अर्थात जिसके आचरण से मनुष्य की त्रिविध आत्मिक, मानसिक व शारीरिक उन्नति और व्यावहारिक उत्तम सुख की प्राप्ति एव वृद्धि हो तथा मोक्ष की सिद्धि हो, वह आचरण या कर्तव्य धर्म है। पूर्व मीमासा मे चोदना लक्षणो धर्म" सूत्र के माध्यम से मीमासाकार ने वेदो मे मनुष्य को करने के लिए जो कर्तव्य निहित किए हैं वह धर्म है। इसीलिए स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वेद का पढ़ना पढाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परमधर्म माना है। महर्षि मनु ने 'वेदोऽखिलो धर्म मूलम कहकर वेद ही धर्म के मूलाधार है" मानते हुए धृति क्षमा दमोऽस्तेय आदि धर्म के दस लक्षण माने है, जिन पर चलकर समाज लोक मगल की कामना करते हुए मोक्ष की पगडडी को धारण करता है। महर्षि वेद-व्यास का कथन है कि 'धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षित।' अर्थात यदि तूने धर्म की रक्षा की तो वह तेरी रक्षा करेगा।'

अन्त मे कहा जा सकता है कि ज्ञान कर्म और उपासना के सन्तुलन से ही धर्माधारित आदर्शों की प्रेरणा करते हुए, लोक मगल की कामना के उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए साहित्य सृजन करना ही साहित्यकार का धर्म है।

W A १०० शकरपुर, दिल्ली-९२
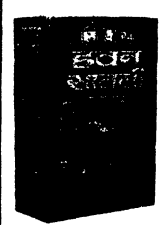
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित

सत्यार्थ-प्रकाश पत्राचार प्रतियोगिता के परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक सभा द्वारा आयोजित सत्यार्थ प्रकाश प्रतियोगिता मे जिन परीक्षार्थियो ने शुल्क जमा करके अपना रोल न० जारी कराया है, उनके लिए सूचनार्थ है कि प्रतियोगिता की उत्तर पुस्तिकाए भेजने की अन्तिम तिथि ३१-८-९१ के स्थान पर बढाकर १५-१०-९१ कर दी गई है। जो भी प्रतियोगी इस परीक्षा मे अब भी भाग लेना चाहे वह २०) रु० का मनीआर्डर सार्वदेशिक सभा के नाम से भेजकर १५ अक्तूबर तक परीक्षा मे भाग ले सकते हैं।

डा० ए० बी० आर्य
रजिस्ट्रार, सत्यार्थ प्रकाश प्रतियोगिता

ऋषि दयानन्द के भक्त और प्रशंसक—

महाराजाधिराज कर्नल सर प्रतापसिंह (५)

(आर्यसमाज के इतिहास का एक रोमांचक अध्याय)

प्रो० भवानीलाल भारतीय

इस प्रकार सर प्रताप के धार्मिक विचारों को उन्हीं के शब्दों में प्रस्तुत करने के पश्चात उनके जीवनी लेखक बानबार्ट ने लिखा—१९१९में सर प्रताप से धर्म विषयक उपर्युक्त उद्गार प्रकट किए थे और इसमें कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि उन्होंने खुले दिमाग से धर्म के उस रूप को जाना और प्राप्त किया जो उनकी आत्मा को शान्ति दे सकता था। आर्य समाज के प्रति उनकी आस्था और निष्ठा इस बात का प्रमाण है कि जिन बातों के प्रति उनकी निष्ठा रही उनके प्रति वे पूर्ण समर्पित और आस्थावान रहे।

स्वामी दयानन्द और आर्य समाज के प्रति सर प्रताप के अटूट आस्था भाव को स्वयं उन्हीं के शब्दों में जान लेने के पश्चात यह धारणा बनाना नितान्त असंगत एवं अन्याय पूर्ण होगा कि स्वामी जी के प्रति उनकी यह श्रद्धा केवल दिखावे के लिए थी, तथा वे उस भयंकर षड्यन्त्र के भी भागीदार थे जिसके कारण उनकी मृत्यु हुई। आगामी पंक्तियों में हम स्वामी दयानन्द के निधन के पश्चात सर प्रताप की आर्य सामाजिक गतिविधियों का विवरण प्रस्तुत करेंगे जिससे यह स्पष्ट हो जायगा कि वे निश्चय ही आर्य समाज की उन्नति और प्रगति चाहते थे तथा उनकी यह दृढ़ धारणा थी कि इसी संस्था के माध्यम से देश और हिन्दूधर्म का उत्थान हो सकता है।

आर्य समाज जोधपुर और सर प्रतापसिंह

जोधपुर नगर में आर्य समाज की स्थापना स्वामी दयानन्द के निधन के पश्चात ही हुई थी। इस आर्य समाज की स्थापना तथा उसके उत्तरोत्तर विकास एवं प्रगति में सर प्रताप का पूर्ण योगदान रहा है। उन्हीं की सहायता से आर्य समाज जोधपुर का विशाल भवन रातानाड़ा मुहल्ले में बना और उसमें आर्य समाज के सत्संग लगने लगे। सर प्रताप के कारण आर्य-समाज उस युग में मारवाड़ राज्य का राजधर्म ही बन गया था। आर्य समाज के कार्यों का सारा आर्थिक व्यय राज्य के कोष से दिया जाता था। यहां तक कि राज्य के अधिकारियों की जो सूची (सिविल लिस्ट) प्रकाशित होती थी, उसमें आर्य समाज का एक राजकीय विभाग "मेहकमा आरिया समाज" के रूप में ही अंकित किया जाता था। १८९४ ई० (१९५०-५१) में मारवाड़ राज्य की जंत्री (डाइरेक्टरी) का सम्पादन प्रसिद्ध इतिहासकार मुन्शी देवीप्रसाद मुन्सिफ ने किया था। इसमें मारवाड़ राज्य के उच्च पदाधिकारियों की जो सूची दी गई है उसमें आर्य समाज के पदाधिकारियों तथा अन्तरंग सभासदों की नामावली इस प्रकार अंकित है।—

१. महाराजाधिराज श्री सर प्रतापसिंह जी साहब प्रेसीडेन्ट (प्रधान)
२. प० सुखदेव प्रसाद जी सेक्रेटरी (मन्त्री)
३. प० ठाकुर प्रसाद जी, उपदेशक
४. पं० गणेश रामचन्द्र जी, परगनों के उपदेशक
५. पं० अचलेश्वरजी, शहर के वास्ते उपदेशक ईसाइयों के मुकाबिले पर।

ज्ञातव्य है कि पं० सुखदेव प्रसाद काश्मीरी पंडित "काक" जाति के थे। आगे चलकर ये "सर सुखदेवप्रसाद" के नामसे जाने गये। ये वर्षों तक मारवाड़ के प्रधान मन्त्री पद पर रहे। पश्चात उदयपुर राज्य के प्रधानमन्त्री भी रहे। इन्हीं के पुत्र पं० धर्मनारायण काक (दीवान बहादुर) १९४५-४६ तक मारवाड़ राज्य के उपप्रधान मन्त्री थे। पं० ठाकुर प्रसाद उत्तर प्रदेश के निवासी थे। वे आगरा कालेज में संस्कृत के प्राध्यापक रहे। इनका संस्कृत वैदुष्य इनकी व्याकरणाचार्य की उपाधि से ज्ञात होता है। आर्य समाज जोधपुर में ये वैतनिक उपदेशक के रूप में रहे। इनकी नियुक्ति १२ मार्च १८९३ ई० को हुई थी। इनका वेतन ७४ रु० मासिक था तथा सवारी भत्ते के रूप में १५ रु० मासिक पृथक् मिलता था। पं० गणेश रामचन्द्र मूलतः महाराष्ट्र के निवासी थे। इन्होंने ही सर्व प्रथम स्वामी दयानन्द के पुना प्रवचनों का मूल मराठी से हिन्दी में अनुवाद किया था। पं० अचलेश्वर श्रीमाली ब्राह्मण थे जिनकी नियुक्ति १२ मार्च १८९३ ई० को २५ रु० मासिक पर हुई थी। विशेष ध्यान देने की बात यह है कि इनकी नियुक्ति ईसाइयों द्वारा किये जाने वाले प्रचार का उत्तर देने के लिये ही की गई थी। जिस युग में ब्रिटिश शासकों का प्रोत्साहन और साहाय्य पाकर ईसाइयों ने भारत में सर्वत्र अपने प्रचारकों को हिन्दूधर्म के विरोध में प्रचार करने के लिये खड़ाकर रक्खा था, उस युग में सर प्रताप का यह कार्य सर्वथा प्रशंसनीय था कि मारवाड़ राज्य के सर्वोच्च अधिकारी होते हुए भी उन्होंने जोधपुर नगर में ईसाइयों के प्रचार का मुकाबिला करने के लिए आर्य समाज की ओर से उपदेशक नियुक्त ही नहीं किया, अपितु उनका मासिक वेतन भी राज्य के कोष से दिलाया।

१८९४ ई० में आर्य समाज की कार्यकारिणी में प्रधान सर प्रताप तथा मन्त्री पं० सुखदेव प्रसाद के अतिरिक्त रायबहादुर मुन्शी हरदयालसिंह (मेहकमा खास के मुख्य सचिव), ठाकुर रणजीतसिंह (नगर कोतवाल तथा पाल ठिकाने के ठाकुर) ठाकुर हरजीसिंह (पोलो के प्रसिद्ध खिलाड़ी) मिस्टर मानजी तथा डा० प्रियानाथ जो (काश्मीरी) नामक महानुभाव थे।

जोधपुर में आर्य समाज के अन्य अनेक उपदेशकों की नियुक्ति करने तथा उनके द्वारा धर्म प्रचार कराने का श्रेय भी सर प्रताप को ही है। ऐसे उपदेशकों के नाम हैं:—

राजपूत रामदयालसिंह—इसकी नियुक्ति ३१ मार्च १८९१ को ५० रु० मासिक वेतन पर हुई।

पं० उमरावदान—इतिहासकार जगदीशसिंह गहलोत के अनुसार ये चारण ऊमरदान ही थे, जिन्हें २२ फरवरी १८९० को ३० रु० मासिक पर प्रचारक नियुक्त किया गया था।

स्वामी प्रकाशानन्द—स्वामी अच्युतानन्द तथा स्वामी भास्करानन्द नाम के तीन संन्यासियों का भी सर प्रताप से निकट का सम्बन्ध था। स्वामी प्रकाशानन्द को सर प्रताप गुरु के तुल्य मानते थे। संन्यासी होने के नाते ये कोई वेतन नहीं लेते थे, किन्तु १२ मार्च १८९३ से इन्हें घोड़ा सवारी का २० रुपया मासिक भत्ता दिया जाने लगा था। इनके द्वारा रचित चार पुस्तकें—प्रार्थना प्रस्रवण, उपदेश प्रस्रवण, ईसाई मत-ढोल की पोल तथा व्याख्यान अग्निहोत्र इन पंक्तियों के लेखक के संग्रह में हैं। ये पुस्तकें मारवाड़ राज्य के प्रेस में सरकारी सहायता से प्रकाशित हुई थी। जोधपुर राज्य के व्यय से सर प्रताप ने स्वामी भास्करानन्द को १८८९ ई० में यूरोप तथा अमेरिका में धर्म प्रचारार्थ भेजा। ये लगभग १० वर्ष तक विदेशों में रहे। इनका सारा आर्थिक भार, राज्य सरकार ने ही वहन किया था। फर्रुखाबाद से प्रकाशित होने वाले मासिक पत्र भारत सुदशा प्रवर्तक में उक्त स्वामी जी के विदेशों से भेजे वृत्तान्त प्रकाशित हुए हैं। स्वामी अच्युतानन्द पंजाब के प्रसिद्ध आर्य संन्यासी थे, जिन्होंने कालान्तर में चारों वेदों के मन्त्रों का संग्रह कर चार शतक लिखे। उन्हें एक सितम्बर १८३६ ई० से ६० रुपये मासिक दक्षिणा दिये जाने का उल्लेख मिलता है। पं० कर्णसिंह को ३० रुपये मासिक पर ७ सितम्बर १८९४ ई० को तथा पं० विश्वेश्वर प्रसाद शर्मा को २३ जनवरी १८९६ को २५ रु० मासिक पर नियुक्त किया गया। शर्मा जी मूलतः उत्तर प्रदेश के निवासी थे। जोधपुर के निकटवर्ती "भूरों का तालाब" नामक स्थान पर आर्य समाज जोधपुर के तत्वावधान में एक वैदिक पाठशाला का संचालन किया जाता था। इसका सम्पूर्ण व्यय भी महाराजा प्रताप के आदेश से राज्य कोष से ही वहन किया जाता था। उक्त पं० विश्वेश्वर प्रसाद शर्मा को इसी पाठशाला में अध्यापक नियुक्त किया गया था। पं० देवीचन्द्र शास्त्री एक अन्य विद्वान थे जो इस पाठशाला में अध्यापक थे। इन्होंने "अभिनव महिम्न स्तोत्र" शीर्षक संस्कृत के शिखरिणी छन्दों में एक अत्यन्त भावपूर्ण काव्य का प्रणयन किया था। इसे सर प्रताप के गुरु स्वामी प्रकाशानन्द ने १९५३ वि० में प्रकाशित किया। (क्रमशः)

जीवात्मा के अस्तित्व में प्रमाण

श्रीमती देवी शास्त्री वेदाचार्य एम. ए.

आज हम अपने अस्तित्व के प्रमाण अर्थात जीवात्मा के अस्तित्व के विषय पर कुछ लिखना चाहते हैं यह तो सबको अच्छी प्रकार विदित है ही कि संसार में दो प्रकार की सृष्टि है एक जड़ तथा दूसरी चेतन, ऐसा कोई भी मनुष्य न होगा जो चेतन को न मानता हो अब विवाद इस बात का है कि चेतन शक्ति जड़ तत्वों के संयोग शक्ति से बनी उत्पन्न होती है या वह एक भिन्न शक्ति है यदि हम मान लें कि यह शक्ति तत्वों से भिन्न उत्पन्न होती है अथवा यह शक्ति भिन्न तत्वों में से या संयोग से उत्पन्न होती है यदि यह मान लें कि भिन्न तत्वों में है तो उस दशा में कोई भी वस्तु जड़ नहीं हो सकती क्योंकि चेतन तत्व का गुण हो गया यदि यह कहा जाये कि मूल भूतों में तो उनमें यह शक्ति नहीं परन्तु संयोग से उत्पन्न होती है, तो उस दशा में अभाव से भाव की उत्पत्ति माननी पड़ेगी जो सर्वांश में असम्भव तथा प्रत्यक्ष के विरुद्ध है महात्मा कपिल जी भी सांख्य शास्त्र में लिखते हैं कि—

"न भूता चैतन्य प्रत्येका दृष्टे साहत्येऽपि च साहत्येऽपिच। सां० ५।१२१

अर्थ—अलग अलग भूतो में चेतनता नहीं देखते इसलिए उनके मिलाप से चेतनता उत्पन्न नहीं हो सकती और संयोग से चेतनता हो नहीं सकती। महात्मा कपिल जी इस पर एक और प्रमाण देते हैं।

अस्त्यात्मा नास्तित्व साधना भावात् ॥ सां० ६। ५

मैं समझती हूँ कि इस प्रकार समय अनुभव होवे से आत्मा का होना तो अच्छी प्रकार विदित होता है और उसके अनास्तित्व करने के लिए साधक प्रमाणों का अभाव विदित होता है इसलिए आत्मा का होना सत्य है।

'देहादि व्यतिरिक्तोऽसौ वैचित्र्यात्' सां० ६-१

वह आत्मा शरीर से भिन्न वस्तु है क्योंकि शरीर और आत्मा भिन्न धर्म वाले हैं शरीर परिणामी है और आत्मा अपरिणामी है यह अनुमान और शास्त्रों के प्रमाणों से भी सिद्ध है। और आत्मा का अपरिणामी होना तो सदैव आते हुए विषय का ज्ञाता होने से विदित होता है जिस प्रकार आंख का विषय रूप है शब्द नहीं इसी प्रकार पुरुष का विषय बुद्धि की वृत्ति को साक्षात करना है।

"षष्ठी व्यपदेशादपि" सां० ६। ३॥

और इस मन से भी कि यह मेरा शरीर है और यह मेरी बुद्धि है मेरा मन कहीं गया हुआ था विदित होता है कि आत्मा, इन्द्रिय, मन, बुद्धि, शरीर यह सब भिन्न भिन्न वस्तुएं हैं।

महात्मा कपिल जी ने इस बात का प्रमाण दिया है कि यदि चेतन तत्व का गुण है तो कभी सुषुप्ति और मरण का होना सिद्ध न होगा क्योंकि गुण कभी अपने गुणी से भिन्न नहीं हो सकता महात्मा गोतम ने भी बहुत सी युक्तियां दी हैं कि आत्मा है।

"दर्शन स्पर्शनाभ्यामेकार्थ ग्रहणात् ॥ न्याय द० ३। १। १

जिस वस्तु को आंख से देखा उसको स्पर्श अर्थात त्वचा से स्पर्श किया कहते हैं कि जिसको मैंने आंखों से देखा था उसको स्पर्श करके देख लिया इससे विदित होता है कि इन्द्रियों के विषयों को मानने वाला जीवात्मा है।

तद् व्यवस्थाना देवात्म सद्भावाद प्रतिषेध: । न्याय० ३। १। ३

यदि एक इन्द्रिय सम्पूर्ण विषयों का ज्ञान कराने वाली होती तो इस दिशा में चेतन जीवात्मा की आवश्यकता न होती परन्तु जब एक इन्द्रिय दूसरी इन्द्रिय के विषयों का अनुभव नहीं करती तो किस प्रकार एक के ज्ञान का दूसरे को बोध हो सकता है इसलिए सम्पूर्ण विषयों के ग्रहण करने वाला जीवात्मा अवश्य है। इन्द्रियों का अपने नियत विषय को छोड़कर दूसरे का काम न करना ही इसका प्रमाण है।

अब यह बात विचारणीय है कि देहादि संघात से भिन्न जो आत्मा सिद्ध हुआ है वह नित्य है या अनित्य विद्यमान वस्तु नित्य वा अनित्य भेद से दो प्रकार का होता है आत्मा की सत्ता सिद्ध होने पर भी वह नित्य अथवा अनित्य यह सन्देह अवशिष्ट रहता है। देह से पृथक होने से पहले आत्मा की स्थिति जिन हेतुओं से उसे सिद्ध किया उन्हीं से सिद्ध हो गई। अब देह के नष्ट होने पर भी आत्मा विद्यमान रहता है पहले अभ्यास की स्मृति के अभाव से उत्पन्न हुए को हर्ष, भय शोक की प्राप्ति होने से आत्मा नित्य है।

उपरियुक्त युक्तियों से जीव का शरीर से भिन्न और अभौतिक होना अच्छी प्रकार ज्ञात होता है, मृत्यु और निद्रा का होना इस बात को सिद्ध करता है कि शरीर से आत्मा भिन्न हैं क्योंकि यदि शरीर को चेतन मानें तो भूतों का कार्य होने से उसके कारण को चेतन मानना पड़ेगा और भूतों के चेतन होने से घट, पट आदि सब चेतन हो जायेंगे इस समय जड़ और चेतन का भेद सर्वांश में नहीं रहेगा क्योंकि अब तो जड़ को भोज्य और चेतन को भोक्ता माना जाता है और फिर ज्ञेय और ज्ञाता का ज्ञान भी नहीं रहेगा क्योंकि सब ही चेतन हैं और चेतन द्रष्टा होता है—दृश्य नहीं होता। अतः सभी प्रमाणों से सिद्ध होता है कि आत्मा नित्य है।

पुस्तक समीक्षा

"द्वापर के कृष्ण : अधखुले पृष्ठ"
ऐतिहासिक पुस्तक

मूल्य ३५० रुपये

लेखक—श्री दीपक कुमार

भगवान श्रीकृष्ण पर एक ऐतिहासिक ग्रन्थ "द्वापर के कृष्ण अधखुले पृष्ठ" लिखी गयी है। यूं तो श्रीकृष्ण पर चाहे कोई कम्युनिस्ट हो या भौतिकवादी उन्होंने भी अवश्य ही कुछ न कुछ लिखा है, परन्तु यह पुस्तक इन सबसे अलग है। इस पुस्तक में कुल मिलाकर ग्यारह अध्याय हैं। "क्या श्रीकृष्ण रसीले थे ?" के अध्याय में कुछ बातें एकदम बेबाक और खुले तौर पर कही गई हैं।

पुस्तक में "द्वारका का समुद्र में पाया जाना" को आधार मानकर लेखक ने श्रीकृष्णका जन्म वास्तविकता है की विवेकपूर्ण और विस्तृत समीक्षा की है। श्रीकृष्ण की आयु निकालने के लिए लेखक ने तर्कों का सहारा लिया है। पुस्तक में एक नक्शा बनाया है। जिसमें यह दर्शाया गया है कि द्वारका से जो सेना निकली थी वह किन-किन मार्गों से होकर श्रीलंकासे लेकर साइबेरिया तक गई थी। लेखक ने श्रीकृष्ण साइबेरिया गये थे" इसको सिद्ध करने के लिए सोवियत दूतावास द्वारा भिन्न-भिन्न समयों पर निकाले गए इन्फोरमेशन बुलेटिनों का सहारा लिया है। लेखक ने कहा है कि हनुमान जी ने प्रद्युम्न की सहायता की थी और अर्जुन प्रद्युम्न के सेनापति भी बने थे। लेखक ने जो मानचित्र प्रस्तुत किया है उसमें उस समय के पौराणिक नाम, राजाओं के नाम और उनकी राजधानियां और आज उन पौराणिक नामों का वर्तमान नाम क्या है ? यह भी दिया है।

सम्भवतः पहली बार श्रीकृष्ण के जीवन के सभी पहलुओं को श्री दीपक कुमार ने क्रमबद्ध कर उसे सरल भाषा में प्रस्तुत किया है। इस प्रकार का भागीरथ प्रयास आज तक किसी लेखक ने सम्भवतः नहीं किया।

श्री दीपक कुमार ने अपनी इस पुस्तक में द्वारका कैसी थी का वर्णन किया है और उसी को आधार मानकर एक नक्शा दिया गया है।

लेखक ने पुस्तक के अन्तिम अध्यायों में श्रीकृष्ण के सहयोगियों और विरोधियों की एक सूची दी है जिसमें उनके नाम, तात्कालिक स्तर और टिप्पणी (इतिहास) शामिल है। इस प्रकार लेखक ने श्रीकृष्ण के जीवन में आए सभी चरित्रों के इतिहास को लेखन बद्ध करने का प्रयास किया है।

इस पुस्तक में जो भी सामग्री संग्रहित की गई है वह सभी पुराणों और गर्ग संहिता से लिया गया है।

यह पुस्तक सहजिल्द है। पुस्तक की पृष्ठ संख्या २८७ है इसका प्रकाशन, दीपक प्रकाशन, ३४१ डबल स्टोरी, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११००६० (भारत) ने किया है।

—अंजली वोहरा

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्वावधान में मध्य प्रदेश के बरखेड़ा (झाबुआ) में—

द्वितीय वन कन्या आश्रम की स्थापना एवं महाराणा प्रताप जयन्ती समारोह-१९९३

दिनांक ११-७-९३ को स्व० पं० राजगुरु शर्मा की पुण्य स्मृति में बरखेड़ा (झाबुआ) में द्वितीय वन कन्या आश्रम की स्थापना श्रीमती प्रेमलता जी खन्ना शास्त्री द्वारा की गई। इस अवसर पर जिस जगह पर "ओ३म्" का ध्वज फहराया गया और नींव का पत्थर रखा गया वह स्थली वहां एक दानवीर सरपंच श्री मूलचन्द बामनियां ने दान रूप मे संस्था को दी थी। 'ओ३म्' की व्याख्या करते हुए श्रीमती प्रेमलता जी ने कहा कि जब तक हमारी एक भाषा, एक ध्वज तथा एक पूजा पद्धति नहीं होगी तब तक हम बिखरे रहेंगे। किसी भी देश एवं जाति की एकता की जानकारी वस्तुतः हमें इन्हीं तीनों पहलुओं से ज्ञात होती है।

तदोपरान्त आर्य वीर दल के मन्त्री श्री राजसिंह जी द्वारा यज्ञ प्रारम्भ हुआ। यज्ञ की दक्षिणा के रूप में श्री राजसिंह जी ने सभी भील बन्धुओं से कई प्रकार की कुरीतियां एवं दुर्व्यसनों को त्यागने की शपथ दिलवाई, एवं उनका यज्ञोपवीत संस्कार भी किया गया। श्री राजसिंह जी से प्रभावित होकर एक महाशय ने अपनी जेब में से तम्बाकू की डिबिया निकालकर इनको दे दी और सभी के सामने तम्बाकू सेवन के दुर्व्यसन को सदा के लिए त्यागने की प्रतिज्ञा ली। सभी लोगो ने तालियां बजाकर उस व्यक्ति का स्वागत किया। यज्ञ के पश्चात श्री राजसिंह ने अपने ओजस्वी भाषण से ग्रामीण बन्धुओं को प्रेरित किया तथा कहानियां एवं उदाहरण सुनाकर समझाया कि किस प्रकार हमारे ये वनी बन्धु भी देश और जाति को सुरक्षित रख सकते हैं। श्री राजसिंह जी ने महाराणा प्रताप के जीवन पर भी प्रकाश डाला जिसका लोगों ने तालियां बजाकर अभिवादन किया।

प्रमुख वक्ता के रूप में श्रीमती प्रेमलता जी खन्ना शास्त्री ने अत्यन्त प्रभावशाली वक्तव्य दिया, जिसमे उन्होंने कन्याओं मे शिक्षा की आवश्यकता पर अधिक बल दिया और कहा कि एक-एक शिक्षित लड़की सौ-सौ अन्य अशिक्षित लड़कियों का निर्माण करे ताकि गांवों में कोई भी कन्या अनपढ़ न रह पाए। जब जैन भवन के संस्थापक ने ईसाइयत को १० वर्ष में समाप्त करने की बात कही, तब माताजी ने कहा कि १० वर्ष बहुत लम्बी अवधि है, यह कार्य केवल एक वर्ष मे ही हो जाना चाहिए। एक-एक योग्य व्यक्ति, एक-एक गांव अपने हाथ मे ले और चहु ओर कायाकल्प कर दे। देश और जाति की सुरक्षा का यही एक उचित तरीका होगा महाराणा प्रताप के उपलक्ष में बोलते हुए माता प्रेमलता जी ने कहा कि जब-जब धर्म की हानि होती है, महापुरुष जन्म लेते हैं, ऐसे ही सच्चे देशभक्त और महापुरुष थे महाराणा प्रताप। आज देश को उनसे प्रेरणा लेने की आवश्यकता है। दिल्ली में भी अभी-अभी महाराणा प्रताप जयन्ती समारोह मनाया गया, जिसकी अध्यक्षता श्री आनन्दबोध जी सरस्वती जी ने की। आज इसी अवसर पर मैं अपने भील बन्धुओ को उनकी शक्ति स्मरण कराना चाहती हूं यदि आप लोगो ने महाराणा प्रताप की सहायता न की होती तो कदाचित वो इतनी बड़ी मुगलशक्ति को परास्त न कर पाते और राणा से महाराणा न बनते। महाराणा प्रताप एक बार मन्दिर में खड़े थे, और देखा कि भामाशाह जो कि उस समय के मन्त्री थे, मन्दिर में चढ़ावा चढ़ा रहे हैं। महाराणा ने उनसे कहा कि भामाशाह, क्या कर रहे हो, यदि मन्दिर ही न रहे, तो पूजा कहां करोगे। इतना सुनते ही उनका माथा ठनका और हाथ एकाएक रुक गए। दूसरे दिन भामाशाह ने अपने पास एकत्रित संपूर्ण धन-मुद्रा को एक थैली में रखा और महाराणा जी को दे दिया। महाराणा चकित हो गए। भामाशाह ने कहा, यदि देश बचेगा तो धन की कमी न रहेगी। भामाशाह के साथ उनके अनेक भील बन्धुओं ने उसी समय महाराणा के सामने शपथ ली कि जब तक देश को सुरक्षित न कर लेंगे, घरों में नहीं रहेंगे। इस प्रकार अधिक हथियार न होते हुए भी आप लोगों ने महाराणा का साथ दिया और केवल पत्थरों से लड़-लड़कर जंग लड़ी और महाराणा को विजयी बनाया। परन्तु अब आप अपना स्वरूप भूल चुके हो। महाराणा प्रताप जयन्ती प्रतिवर्ष गांव-गांव में मनाओ तथा अपने आपको तथा अपनी सोई हुई जाति को जगाओ ताकि फिर से देश, धर्म और जाति के सच्चे प्रहरी बन सको।

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के महामन्त्री, श्री वेदव्रत मेहता जी ने कहा कि मैं जब १०वीं कक्षा में पढ़ता था तो एक इंग्लिश की कविता पढ़ी, जो देश एवं जाति की रक्षा एवं उत्थान से सम्बन्धित थी। तभी से मैंने मन ही मन में प्रण किया कि जितना हो सकेगा, देश और समाज की सेवा करूंगा। जिस दिन मैं सेवामुक्त हुआ, श्री पृथ्वीराज जी शास्त्री, जो उस समय अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के महामन्त्री थे, उन्होंने मुझे दूरभाष पर निर्देश दिया कि वेद जी आपने कोई और कार्य नहीं करना है, सीधे तत्काल मेरे पास चले आओ। उनका मुझ पर अपार स्नेह था। मैंने अपना सौभाग्य समझा और उनको दिए गए वचन के अनुसार संघ के कोषाध्यक्ष के रूप में कार्यजुट हो गया। उनके दुखद एवं असमय देहान्त के बाद, महामन्त्री के पद पर कार्य करता हुआ संघ की सेवा कर रहा हूं। सेवा का यह कार्य जीवन पर्यन्त करता रहूंगा, मैं अपने इस प्रण को दोहराता हूं।

भाई परमानन्द जी एवं बजाज साहब, जो कि पिछले ३० वर्षों से वनवासी क्षेत्रों में संघ के कार्यों को सकुशल एवं सफल तरीकों से चला रहे हैं, दोनों ही बन्धुओं ने अपने ओजस्वी विचारों से लोगों को सम्बोधित किया एवं उनका उत्साह वर्धन भी किया।

श्री आर्येन्द्र कुमार जी वैदिक ने घोषणा की कि नव स्थापित वन कन्या आश्रम की गतिविधियों को मैं स्वयं संचालित करूंगा। श्री आर्येन्द्र जी ने इस कन्या आश्रम की अध्यक्षता का पद भी स्वीकार किया। श्री राजगुरु शर्मा जी के परिवार ने, गांव वालो ने एवं सरपंच जी ने भी आर्येन्द्र जी की हर प्रकार से सहायता करने का संकल्प किया। उपस्थित लोगों ने आर्येन्द्र जी की इस उत्साहपूर्ण घोषणा का करतल ध्वनि से अभिनन्दन किया।

वहां के अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने भी प्रेरणादायक भाषणों से गांव वालों को सम्बोधित किया। सभी ने दयानन्द सेवाश्रम संघ के निस्वार्थ सेवा-भाव और सभी कार्यक्रमों की सफलता पर भूरि-भूरि प्रशंसा की।

१२-७-९३ को—अशोक विहार समाज (दिल्ली) एवं व्यक्तिगत लोगों के सहयोग से चल रहे "काली डूंगरी" आश्रम की छत का ध्यान करते हुए माता प्रेमलता ने "सत्यार्थ प्रकाश" का हवाला देते हुए भूतनी-डाकिनी भगाने की प्रेरणा दी और इस सन्दर्भ में निम्नलिखित पंक्तियों को कविता रूप मे बोलकर गांव वासियों में जागृति की लहर सी पैदा कर दी—

(शेषपृष्ठ १० पर)

वन कन्या आश्रम की स्थापना

(पृष्ठ ९ का शेष)

'जो जन ओ३म् नाम नित ध्यावें,
भूत-प्रेत निकट नहीं आवें।
जो जन घर-घर यज्ञ करावें,
डायन-डाकिन से मुक्त हो जावें ॥

इस अवसर पर माता जी ने वहां के एक क्षेत्रीय व्यक्ति श्री खेमा जी का परिचय देते हुए कहा कि ये भीलों के सम्राट हैं और वैदिक शिक्षा और ज्ञान के धनी हैं। जब-जब आवश्यकता हो इनको अपने घरों में बुलवाकर यज्ञ करावें। खेमा जी ने भी भाषण देकर लोगों को सम्बोधित किया। माता जी ने वनवासी क्षेत्रों में व्याप्त-दुर्व्यसनों और कुरीतियों को दूर करने के लिए एक समिति बनाने की प्रेरणा दी। इस पर पांच व्यक्तियों ने तत्काल ही हाथ खड़ा करके समिति में काम करने की इच्छा व्यक्त की। माता जी ने साधुवाद दिया और संकेत किया कि "गरीबी" भी एक कुरीति है। इसे दूर करने के लिए अभियान चलाओ। और कहा कि घरों में किसी की मृत्यु हो जाने पर मृतक भोज कराने की कुप्रथा को भी बन्द करो। यह भी एक बहुत बड़ी कुरीति है। यहां के अबोध वनवासी भील बन्धु अपने खेत, घर एवं टापरे इत्यादि बेचकर भी इस बेतुकी तथा अनावश्यक प्रथा को बनाए हुए हैं। एक और नवनिर्मित कुप्रथा पर भी माता प्रेमलता ने लोगों को सचेत किया जिसमें कि हाल ही में झाबुआ में डायन-डाकिन कहकर दस स्त्रियों को अकारण ही मार दिया गया। पिछले दिनों समाचार पत्रों एवं दूरदर्शन पर भी इसके बारे में बताया गया है। ऐसा कार्य फिर कभी भी न दोहराया जाए। महिलाओं को प्रेरणा देते हुए माता जी ने कहा कि जब तक अनपढ़ रहोगी, ऐसी दुर्दशा का शिकार बनती रहोगी। अपना उत्थान स्वयं करो। अपनी कन्याओं को पढ़ाओ। गायत्री का नित्य जाप करो और बुद्धि का विकास करो।

शिलान्यास एवं ध्वजारोहण का उपर्युक्त सारा कार्यक्रम इन्दौर के एक प्रसिद्ध समाज सेवी श्री जगदीश प्रसाद जी वैदिक मेघनगर के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री राठौर जी एवं उनके आदरणीय दामाद साहब जो कि एक समाज सेवी भी हैं, इनकी देखरेख एवं अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। समय-समय पर इनसे प्राप्त सेवाओं के लिए संघ इनका विशेष रूप से आभारी है।

बान्दला वन-कन्या आश्रम में ५० और कन्याओं की भर्ती की गई है। इनके रहन-सहन, खाने पीने तथा शिक्षा आदि से सम्बन्धित सारा प्रबन्ध दयानन्द सेवाश्रम संघ की ओर से होना है। इसी आश्रम में एक नलकूप लगाने का भी कार्यक्रम है, क्योंकि पानी की व्यवस्था नहीं है। पिछली बार श्री राजसिंह जी ने ११,००० रुपए दिए थे। १०,००० रुपये श्रीमती सुशीला खन्ना जी ने श्रीमती चांदरानी जी की प्रेरणा से दिए थे। संघ को अन्य महानुभावों से भी सहयोग की अपेक्षा है। जो कोई भी इस महान यज्ञ में अपनी आहुति देना चाहें संघ के निम्नलिखित पते पर सम्पर्क अथवा पत्र व्यवहार करें—

—ईश्वर रानी, उपमन्त्री
अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ
महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

मुक्ति दिवस मनाया गया

(पृष्ठ १ का शेष)

सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री पंडित वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने हैदराबाद मुक्तिसंग्राम के अपने तथा सरदार पटेल, श्री के०एम० मुन्शी आदि नेताओं और अपने वीर साथियों के संस्मरण सुनाते हुए कहा कि यदि आर्यसमाज सत्याग्रह के द्वारा निजाम को भारतीय गणतन्त्र में विलय के लिए मजबूर न करता तो हैदराबाद [illegible] भारतीय गणतन्त्र की सीमाओं के बीच ठीक पेट में केन्सर की [illegible]रह [illegible]ता, श्री [illegible] ने कहा कि निजाम का विरोध इसके [illegible] नहीं किया गया अपितु उसको भारत विरोधी नीतियों और [illegible] महत्वाकांक्षाओं पर पानी फेरने के लिए किया गया था, श्री वन्देमातरम ने कहा कि आर्यसमाज का सत्याग्रह तो १९३८-३९ में ही चला परन्तु वे स्वयं तथा उनके अनेक साथी १९४८ के पुलिस एकशन न हो जाने तक निरन्तर सरदार पटेल तथा कन्हैया लाल, माणिक लाल मुन्शी से सम्पर्क बनाए रखे हुए थे, पुलिस एकशन सफल होने पर सरदार पटेल ने स्वयं १९५० मे अपनी मृत्यु से कुछ दिन पूर्व दिल्ली में ऋषि निर्वाण उत्सव के अवसर पर कहा था कि यदि आर्य समाज यह भूमिका तैयार न करता तो भारत सरकार द्वारा पुलिस एकशन इतना आसान न होता।

गृहमन्त्री श्री धर्मा राव ने अपने तेलगू भाषा मे दिए भाषण में हैदराबाद विलय के लिए आर्यसमाज के प्रयत्नों तथा सहयोग की सराहना करते हुए कहा कि देश सदैव आर्य समाज का ऋणी रहेगा। स्वामी जी के द्वारा गृहमन्त्री को निजाम द्वारा सरदार पटेल के समक्ष झुक कर नमस्ते करते हुए एक पुराना अनुपलब्ध चित्र भी भेंट किया गया।

समारोह के अध्यक्ष पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आर्य जनता को आह्वान किया कि वर्तमान मे आर्य समाज को अन्याय अधर्म अव्यवस्था और अराजकता जैसी बुराइयों से देश को मुक्ति दिलाने का संकल्प लेकर लक्ष्यबद्ध रूप में नए आन्दोलन चलाने होंगे, स्वामी जी ने सरकार के धर्म और राजनीति को अलग करने सम्बन्धी प्रस्तावित कानून को अस्पष्ट तथा जल्दबाजी का कदम बताते हुए कहा कि धर्म के सदा सत्य रहने वाले सिद्धान्त तो बिना किसी भेद-भाव के कानूनी रूप से लागू किए जाने चाहिएं। जब कि राजनीति को साम्प्रदायिकता और जातिवाद से पूर्णतः अलग किया जाए।

स्वामी जी ने अपने भाषण में "अंग्रेजी हटाओ और भारतीय भाषाएं लाओ" आन्दोलन के प्रेरणा स्रोत पण्डित वन्देमातरम का धन्यवाद करते हुए कहा कि भविष्य में इसी मुख्य मुद्दे को आर्य समाज द्वारा पूर्ण आन्दोलन का रूप दिया जाएगा, सर्वप्रथम दिल्ली शहर से अंग्रेजी के नाम पट्ट आदि हटाने के कार्यक्रम की घोषणा शीघ्र ही की जाएगी।

समारोह को सार्वदेशिक न्याय सभा के संयोजक श्री विमल वधावन, आन्ध्रप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री क्रान्तिकुमार कोरटकर तथा मन्त्री श्री नरसिम्हा रेड्डी ने भी सम्बोधित किया।

मुक्ति दिवस पर शपथ-पत्र

मुक्ति दिवस समारोह में भाग लेने वाले जन समुदाय ने आन्ध्र प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री क्रान्ति कुमार कोरटकर के आह्वान पर निम्न सामूहिक शपथ ली।

आज मुक्ति दिवस के इस पुनीत अवसर पर निम्न शपथ लेते हैं—

१—हम भारतीय संविधान का पालन करेंगे।
उसके आदेशों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्र गान का आदर करेंगे।

२—भारत की प्रभुता, एकता अखण्डता की रक्षा करते हुए उसे हर कीमत पर अक्षुण्ण रखेंगे।

३—अपनी विशिष्ट संस्कृति और गौरवशाली परंपराओं का महत्व समझकर उनका परिरक्षण करेंगे।

श्री वीरेन्द्र जी सर्वसम्मति से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान निर्वाचित

५ सितम्बर १९९३ को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर में सभा का वार्षिक साधारण अधिवेशन हुआ जिसमें सर्वसम्मति से श्री वीरेन्द्र जी को प्रधान निर्वाचित किया गया। और शेष पदाधिकारियों आदि को मनोनीत करने का उन्हें अधिकार दिया गया जिसके अनुसार उन्होंने निम्न अधिकारी मनोनीत किये। श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा वरिष्ठ उपप्रधान, श्री हरबंसलाल जी शर्मा, श्रीमती कमला आर्या, श्री सरदारीलाल आर्य रत्न उपप्रधान, श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा महामन्त्री, श्री आशानन्द जी आर्य, श्री राधेश्याम जी मोहिल श्री रामरत्न महाजन, श्री जयदेव मन्त्री, श्री योगेन्द्रपाल सेठ कोषाध्यक्ष श्री रणवीर जी भाटिया अधिष्ठाता वेद प्रचार, श्री प्रिंसीपल अश्विनी कुमार जी शर्मा रजिस्ट्रार आर्य विद्या परिषद, श्री मनोहरलाल जी आर्य अधिष्ठाता आर्य वीर दल, प्रो० स्वतन्त्र कुमार जी अधिष्ठाता साहित्य विभाग।

इनके अतिरिक्त अन्तरंग सदस्य तथा दूसरी समितियो का भी गठन किया गया।

—धर्मदेव आर्य
सभा कार्यालयाध्यक्ष

परम दानवीर स्व० लाला दीवानचन्द जी का
१०९वां जन्मदिवस समारोह

परम दानवीर स्व० लाला दीवानचन्द जी का १०९ वा जन्मदिवस समारोह रविवार दिनांक २६ सितम्बर १९९३ को प्रातः ८ बजे आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली में समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। इस अवसर पर पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, लाला रामनारायण तथा पं० महेन्द्र कुमार शास्त्री लाला दीवान चन्द जी के जीवन पर प्रकाश डालेंगे। समारोह मे यज्ञ, मधुर संगीत, प्रवचन एवं श्रद्धांजलि के कार्यक्रम रखे गए हैं। आप सादर आमन्त्रित हैं।

त्रिवर्षीय सिद्धान्ताचार्य मे प्रवेश

महर्षि दयानन्द उपदेशक विद्यालय, टंकारा में ५ स्थान प्रवेश हेतु रिक्त हैं। यू० पी० बोर्ड संस्कृत सहित इन्टर मीडियेट उत्तीर्ण छात्र ही प्रवेश हेतु आवेदन करे। पाठ्यक्रम गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, विद्याभास्कर परीक्षा (बी. ए.) समकक्ष छात्रों का समस्त व्यय निःशुल्क विद्यालय द्वारा होगा।

— डा० विजयपाल शास्त्री
आचार्य

वैवाहिक विज्ञापन

(१)

क्षत्रिय कुलोत्पन्न आयु २८.६ वर्ष, कद (५ फीट ७ इंच) शिक्षा, बी. ए. बी. एड., एल. एल. बी. अध्ययनरत शासकीय सेवारत (न्यायिक) प्रतिष्ठित परिवार स्वाध्यायशील गम्भीर शैक्षणिक एवं कलात्मक अभिरुचि, तथा सक्रिय आर्य युवक हेतु योग्य आर्य कन्या की आवश्यकता है। कोई बन्धन नहीं।

(२)

सभाढ्य मुदगल गोत्रोत्पन्न आयु २६ वर्ष लगभग, कद ५ फीट, शिक्षा एम. ए. समाज शा० रंग गेहुंआ, सुशील तथा विनम्र, सिलाई कढ़ाई आदि में दक्ष, (माता मुस्लिम कुलोत्पन्न) कन्या के लिये योग्य आर्य युवक की आवश्यकता है।

पत्र व्यवहार का पता :—
श्री वि० द० मिश्र आर्यवंशीय
२३६ बड़ा बाजार सीहोर
जि० सीहोर (म० प्र०)
४६६००१

डोल्ड रजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०४६/९३ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१९-९-१९९३) [illegible]
R. N. 626/57 Licensed to post without prepayment licence No. U (C) 93 Post in N.D.P.S.O.on 23-24-9-1993

पूज्यपाद स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती 'वेद-वेदांग पुरस्कार' से सम्मानित

सुल्तानपुर १ अगस्त (नि प्र)। "५० वर्ष बाद आज अपने गुरुवर स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती (डा० सत्यप्रकाश डी एस सी प्रयाग वि वि) के दर्शन कर पुन कुछ सीखने के लिए आया हू। बहुत कम स्वातन्त्र्य सेनानी थे, जो विश्व विद्यालय मे प्रोफेसर थे, इसमें हमारे गुरुवर स्वामी जी भी हैं। वेद एव समाज दोनों के लिए मौलिक वैज्ञानिक विचारों के केन्द्र बिन्दु स्वामी जी थे और आगे भी रहेंगे। भारत की आजादी के बाद अनुसधान कार्य को प्रोत्साहन देने हेतु तत्कालीन मुख्यमन्त्री डा० सम्पूर्णानन्द ने 'साइन्टिफिक रिसर्च कमेटी' की स्थापना की और स्वामी जी को इसका सचिव बनाया। जिसका उद्देश्य वैज्ञानिक [illegible] को जन जन तक पहुचाना था।" उपरोक्त विचार जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा सुल्तानपुर के तत्वावधान मे आर्यसमाज सान्ताक्रूज बम्बई द्वारा सचालित 'रणवीर' इण्टर कालेज रामनगर (अमेठी) मे आयोजित आर्य जगत का सर्वोच्च पुरस्कार 'वेद वेदाग पुरस्कार समारोह' में स्वामी जी के शिष्य, पूर्व मुख्य मन्त्री उ प्र श्री नारायण दत्त तिवारी ने भाव भीने शब्दो मे स्वामी जी का कई बार दोनो हाथो से चरण स्पर्श करने के बाद व्यक्त किए।

श्री तिवारी जी ने स्वामी जी के विभिन्न वैज्ञानिक आध्यात्मिक साहित्य सेवाओं की चर्चा करते हुए कहा कि स्वामीश्री ने वैज्ञानिक भारतीय परम्परा, सामान्य रसायन शास्त्र विज्ञान परिषद अनुसन्धान पत्रिका आदि के क्षेत्र मे काम कर प्राचीन भारतीय वैज्ञानिकता को विश्व मे अग्रणी स्थान दिलाने मे अहम् भूमिका निभाया है। गवेषणा के क्षेत्र मे पिछड जाने के कारण हम प्राचीन वैज्ञानिक खोज, साहित्य को जो हम आगे नही बढा सके थे, उस अनूठे काम को स्वामी जी ने आगे बढाया लेकिन ध्यान रहे अध्यात्म एव विज्ञान साथ साथ चले तभी रोजी रोटी और भारतीय सस्कृति के समायोजन की समस्या हल होगी। टेक्नालाजी के युग मे आधारभूत मान्यताओ को जीवन्त स्वामी जी ने किया। वेदो उपनिषदो, शुल्व सूत्रो, ब्राह्मण ग्रन्थो आदि का अग्रेजी अनुवाद कर स्वामी जी ने भारत का मस्तक ऊचा किया।

श्री तिवारी जी ने स्वावलम्बन एव भारत छोडो आन्दोलन स्वर्ण जयन्ती' की सामयिक चर्चा करते हुए कहा कि इसी दिन से वेदो का अध्ययन प्रारम्भ होता था। भारत की आजादी के लिए करोड़ों लोगो ने बलिदान दिया है। इस नाते स्वतन्त्रता सेनानी होने के कारण स्वामी जी का अभिनन्दन करता हू। भौतिकता के युग मे वेदो और उपनिषदो का आज और महत्व है। हमारे गुरुवर स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती ने कितनी ऊची बात कही है कि मेरा शरीर और हड्डिया समाज और वैज्ञानिक खोज के लिए अर्पित हो, यह एक महान आदर्श है।

अन्त मे तिवारी जी ने भाव विभोर होकर कहा कि गुरु शिष्य परम्परा सदैव कायम रहे। हमारे गुरुवर जीवेम शरद शतम् को अपने जीवन में चरितार्थ करें यही हमारी कामना है। मैं अपने गुरुभाई एव सुहृद प० दीनानाथ शास्त्री तथा उनकी पत्नी-श्रीमती गायत्री को साधुवाद देता हू, जिनके कारण यह भव्य अभिनन्दन समारोह बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली, लखनऊ आदि बड़े शहरो में न होकर अमेठी मे इतने शानदार ढग से हो रहा है। तिवारी जी ने बम्बई आर्य समाज द्वारा लाए गए चांदी से निर्मित स्मृति चिन्ह, शाल, २५००१ रुपये (डा० सजयसिंह के साथ) स्वामी जी को प्रदान किया। स्वामी जी ने वेद प्रतिष्ठान दिल्ली द्वारा प्रकाशित एव स्वामी जी द्वारा अग्रेजी मे अनुवादित चारो वेदो के २१ खण्डो का सेट श्री नारायण दत्त तिवारी को प्रदान किया।

८८ वर्षीय स्वामी सत्यप्रकाश जी ने अपने आशीर्वचन मे कहा कि वेद ज्ञान के शाश्वत प्रेरणा स्रोत है। इनके अध्ययन से मनुष्य को जहा परम शान्ति मिलती है वहीं उनके जीवन का उद्देश्य सार्थक होता है। उन्होंने सबको सुख शान्ति के लिए आशीर्वाद दिया।

पूर्व केन्द्रीय मन्त्री एव सासद डा० सजयसिंह ने इस अवसर पर कहा कि जहा दयानन्द विवेकानन्द आदि महापुरुषो ने हम लोगों को मार्ग दर्शन दिया है वहीं स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती ने भी समाज तथा देश को बहुत कुछ दिया है। मैं वैदिक सस्कृति एव गौरव को बनाए रखने मे अपने पूर्वजो द्वारा अपनायी गयी वैदिक परम्परा सदैव कायम रखूगा। इस कार्य क्रम से मैं बहुत प्रभावित हू।

कार्यक्रम के सयोजक श्री० देवरत्न आर्य (बम्बई) ने वेद-वेदाग पुरस्कार के इतिहास पर प्रकाश डाला। बताया कि सान्ताक्रूज आर्यसमाज प्रोत्साहनार्थ वेद वेदाग पुरस्कार, वेदोपदेशक पुरस्कार, साहित्य लेखन पुरस्कार के माध्यम से लाखो रु० की सहायता विभिन्न विद्वानों को दे चुका है।

स्मरणीय है कि स्वामी जी विगत फरवरी से प० दीनानाथ शास्त्री के परिवार के साथ ए-६३ एच ए एल कोरवा मुशीगज (अमेठी) में स्वास्थ्य लाभ ले रहे हैं।

समारोह का संचालन श्री डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री ने किया।

——दीनानाथसिंह शास्त्री अमेठी

भूल सुधार

१९ सितम्बर के अक में प्रकाशित आर्यवीरदल शिविर सूची में १५ से २४ अक्टूबर तक आदर्श इण्टर कालिज असराना फिरोजाबाद उ० प्र० छपा है। यह शिविर इन्हीं तिथियो में दूसरे स्थान श्री दयानन्द इण्टर कालिज आजूमई फिरोजाबाद उ० प्र० मे आयोजित हो रहा है अत सम्बन्धित अधिकारी एव आर्य वीर समय पर आजूमई कालिज मे पहुंचे असराना नहीं।

—हरिसिंह आर्य
कार्यालय मन्त्री सार्वदेशिक आर्य वीर दल नई दिल्ली

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा [illegible] नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

महर्षि दयानन्द उवाच

- शरीर बल (के) बिना (केवल) बुद्धि-बल का क्या लाभ ? इसलिये शरीर बल सम्पादन के लिए और उसकी रक्षा करने के लिए बहुत प्रयत्न करते रहना चाहिए।
- सब सज्जनो को श्रम उठाकर इन सम्प्रदायो को जड मूल से उखाड डालना चाहिए। जो कभी उखाड डालने मे न आवे, तो अपने देश का कल्याण कभी होने का नही।
- जब तक तुम लोग जीते रहो तब तक सदा सत्य कर्म मे ही पुरुषार्थ करते रहो।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष। ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३१ अंक ३५] दयानन्दाब्द १६९ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९४ आश्विन कृ० ९ सं० २०५० १० अक्तूबर १९९३

भूकम्प पीड़ित क्षेत्रों में सार्वदेशिक सभा ने राहत केन्द्र खोल दिये हैं

जनता से सहयोग की अपील

महाराष्ट्र तथा उसके आस-पास के क्षेत्रो में आये भीषण भूकम्प से लगभग ५० हजार लोगो के मरने का अनुमान है। हजारो घायल अवस्था मे जीवन और मौत से लड़ रहे है, अरबो रुपयो की सम्पत्ति नष्ट हो गई है। पूरा राष्ट्र इससे स्तब्ध है।

३० सितम्बर १९९३ की प्रात आये इस भयावह भूकम्प ने देशवासियों के दिलो को दहला दिया। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने समूचे आर्य जगत् की ओर से पीडित परिवारो के प्रति गहरी सवेदना प्रकट करते हुए कहा कि आर्य समाज पीडित लोगों की सेवा के लिए हर सम्भव कार्य करेगा। उन्होने बताया कि सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान मे आर्य प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र, कर्नाटक और आन्ध्र प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभायें मिलकर राहत केन्द्रो का सचालन कर रही हैं। इस समय लातूर और उस्मानाबाद मे सहायता केन्द्र खोले जा चुके है और कई अन्य स्थानों पर भी खोलने की व्यवस्थाये की जा रही है। राहत सम्बन्धी कार्य प्रारम्भ करने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने तत्काल एक लाख रुपये की राशि वहा भिजवा दी है। दिल्ली से श्री राजसिंह आर्य के नेतृत्व मे आर्य वीरों का एक जत्था १ अक्तूबर को लातूर के लिए रवाना हो गया है। राहत कार्यों की देखरेख की जिम्मेदारी सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप-प्रधान प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव को सोपी गई है।

सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती ने समस्त स्वय सेवी सगठनो और आर्य समाजो से अनुरोध किया है कि इस भीषण त्रासदी से पीडित जनता की सेवा के लिए अपना हर प्रकार का सहयोग प्रदान कर और आर्य समाज के राहत केन्द्रो को सुचारु रूप से चलाने के लिए अधिक से अधिक धनराशि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली २ के पते पर मनीआर्डर/चैक अथवा बैंक ड्राफ्ट से भिजवाय। दान-दाताओ को सार्वदेशिक सभा की ओर से आयकर मुक्त प्रमाण-पत्र की रसीद भिजवाई जायेगी और सार्वदेशिक पत्र मे दान की सूची प्रकाशित की जायेगी।

डा०सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा मन्त्री

भूकम्प पीड़ितों की सहायता कीजिए

सार्वदेशिक सभा ने भूकम्प पीडितो की सेवा के लिए लातूर उस्मानाबाद आदि जगहो पर राहत केन्द्र खोल दिए हैं। आर्य समाजो व दानी महानुभावो से अपील है कि इस पुनीत कार्य के लिए अधिक से अधिक सहयोग राशि सार्वदेशिक सभा मे भेजें।

निवेदक
स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
सभा-प्रधान

मेरठ मे महाराणा प्रताप जयन्ती समारोह की जोरदार तैयारियां प्रारम्भ

महान विभूति पं० महेन्द्र प्रताप शास्त्री शिरोमणि दिवंगत

आर्य जगत में महेन्द्र प्रताप नाम से दो व्यक्तित्व सुने व जाने गये । एक थे—राजा महेन्द्र प्रताप, जो क्रान्तिकारी थे—और जिन्होंने भारत को स्वतन्त्र कराने में भारत से निर्वासित जीवन व्यतीत किया था और गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन को फरुखाबाद से वृन्दावन स्थानान्तरित करने में भूमि प्रदान की थी ।

दूसरे थे—श्री महेन्द्र प्रताप शास्त्री जो उस महान विभूति क्रान्तिकारी राजा महेन्द्र प्रताप की पावन भूमि से विद्योपार्जन करके समाज व शिक्षा के क्षेत्र में यश: कीर्ति प्राप्त की ।

लम्बे समय तक शिक्षा के क्षेत्र में आपने समय दिया । गुरुकुल वृन्दावन में पूर्ण काल अध्ययन के बाद आप शिक्षा क्षेत्र में पूरा समय दिया । मुझे स्मरण है कि पण्डित महेन्द्र प्रताप शास्त्री डी. ए. वी. कालिज लखनऊ में आचार्य पद पर कार्यरत थे । मैं उनके सामने अबोध बालक था, गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर से स्नातक होकर महोपदेशक बना था । उस समय सभा की बैठकों में यदा-कदा दर्शन करने का सुअवसर मिलता था ।

शिक्षा क्षेत्र में गुरुकुलों से पहली पीढ़ी के स्नातकों में वह कुशाग्र बुद्धि विद्वान व्यक्ति थे । सादा जीवन स्वामी दयानन्द के पद चिन्हों पर चलकर मर्यादा को बांधना उनका स्वभाव था ।

जैसा जीवन उन्होंने गुरुकुल की चार दीवारी में व्यतीत किया था वही जीवन वह शिक्षा जगत में भी देखना चाहते थे ।

डी. ए. वी. कालेज में प्राचार्य होकर समय पर आना ध्येय था । तब सभी अध्यापक भी अनुशासन में रहकर समय पर आते थे । उन्हें विद्यार्थी समुदाय में चरित्र हीनता अनुशासन हीनता स्वभाव से रुचिकर नहीं थी । विद्यार्थी आ रहा है और वह या अध्यापक सामने हैं फिर यदि छात्र ने विनम्र भाव से नमस्ते या अभिवादन नहीं किया तो वह छात्र को बुलाते उससे नाम श्रेणी, उसका अध्यापक कौन है, पूछ कर भेज देते । फिर अध्यापक को बुला कर उस छात्र के बारे में बात करते और अध्यापक को समझाते कि आपका विद्यार्थी नैतिकता से परे क्यों है । परिणामत: विद्यार्थी से लेकर अध्यापक वर्ग तक सावधान रहता था कि कहीं शास्त्री जी देख न लें । यह था उनका कर्तव्य बोध कराने का सरल उपाय ।

ऐसे ही श्री शास्त्री जी ने लखनऊ के बाद बड़ौत वैदिक कालिज में भी प्राचार्य पद पर रहकर शिक्षा क्षेत्र में नाम कमाया । शिक्षा क्षेत्र से मुक्ति पाकर आप शान्त नहीं बैठे ।

माता लक्ष्मीदेवी द्वारा स्थापित कन्या गुरुकुल हाथरस को अपना कार्यक्षेत्र बनाया । आपने अपनी यशस्वी धर्मपत्नि को लेकर कन्या गुरुकुल के संचालन में जीवन व्यतीत किया ।

वह जहां भी रहें डी० ए० वी० कालिज देहरादून या अन्यत्र आपके पढ़ाये छात्र बड़े २ पदों पर कार्यरत हैं ।

जीवन का अन्तिम अध्याय कन्या गुरुकुल हाथरस रहा—उसकी देखरेख, बच्चों में नैतिक भाव योग्यता देना उनके स्वभाव में था । पहले से गुरुकुल की स्थिति अच्छी बनाई थी ।

एक समय मनुष्य का ऐसा आता है जब संयोग से वियोगी रहना है । आपकी चिरसंगिनी धर्मपत्नि का देहावसान हो गया । आप विचलित नहीं हुए आपका युवा पुत्र दिवंगत हुआ । आप घबराये नहीं, जीवन में दृढ़ता रही । विद्वत्ता प्राप्त करना और बात है वास्तविकता से न हटकर जीवन को चलाना अलग बात है ।

आपने अपना विवाह अन्तर्जातीय वैदिक वर्ण व्यवस्थानुसार किया और आपने पुत्रों के भी वर्ण व्यवस्थानुसार ही सम्बन्ध किये थे ।

आचार-विचार से दृढ़व्रती लम्बा शरीर गौरवर्ण धोती-कुर्ते में श्री शास्त्री जी एक सरल साधु स्वभाव के व्यक्ति थे ।

धर्मपत्नि के दिवंगत होने के पश्चात और आयु की क्षीणता के साथ आप वृद्ध भी हो गये । गुरुकुल में ही वास—

ऐसे समय में—

आचार्या जी की शिष्या कु० डा० कमला स्नातिका को अपना उत्तराधिकारी चुना । कमला जी एक आर्य समाजी परिवार की होनहार कन्या है, उनका पालन पोषण शिक्षा सब कन्या गुरुकुल हाथरस में ही हुई । पूज्य शास्त्री जी की सेवा में कमला जी ने जरा भी कोताही नहीं की । पिता की सेवा, पुत्री की भांति पूर्ण दक्षता से निभायी ।

आज शास्त्री जी दिवंगत हो चुके हैं । उनका कार्यकाल योग्यता, दक्षता, नियमों में बंधकर चलना ध्येय निष्ठा होना हमारे लिये अनुकरणीय रहेगा ।

समस्त आर्य जगत उनकी सेवाओं का ऋणी रहेगा । अब उनकी छोड़ी गई जिम्मेदारी का भार केवल कमला जी पर ही नहीं रहेगा—किन्तु हम सभी उनके कार्य को आगे बढ़ाने में तत्पर रहेंगे ।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सम्पादक

मेरठ में महाराणा प्रताप जयन्ती समारोह की तैयारियां

मेरठ २ अक्टूबर ९३ । मेरठ में ३१ अक्तूबर १९९३ को मनाए जा रहे महाराणा प्रताप जयन्ती समारोह के कार्यक्रम और व्यवस्था को अंतिम रूप देने के लिए आज आर्य समाज सदर, मेरठ में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता में मेरठ जिले के समस्त आर्य समाजों की संयुक्त बैठक हुई ।

बैठक में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री इन्द्रराज और जिले के कई आर्य नेता उपस्थित थे । सबने मिलकर इस जयन्ती- समारोह को विशाल स्तर पर मनाने का आह्वान किया है । इस सम्मेलन का उद्घाटन केन्द्रीय कृषि मन्त्री डा० बलराम जाखड़ करेंगे । अन्य कई गणमान्य नेता भी इस अवसर पर उपस्थित रहेंगे । इस समारोह में दिल्ली, उ० प्र०, हरियाणा और राजस्थान से हजारों आर्य नर नारियों के पहुंचने की संभावना है ।

महर्षि दयानन्द स्मृति भवन न्यास जोधपुर का द्विवार्षिक चुनाव

दिल्ली १-१०-९३ ।

महर्षि दयानन्द स्मृति भवन न्यास जोधपुर का द्विवार्षिक निर्वाचन २९ सितम्बर को स्मृति भवन के ,कक्ष में स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ । श्री डा० भवानीलाल भारतीय के प्रस्ताव पर सर्वसम्मति से निश्चय किया गया कि अगले दो वर्षों के लिये न्यास के पदाधिकारियों की नियुक्ति का अधिकार श्री स्वामी जी को दे दिया जाये । और वे जिन व्यक्तियो को मनोनीत करेंगे वो सभी को मान्य होंगे । इस सर्वसम्मत निश्चय के आधार पर पूज्य स्वामी जी ने राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियो तथा न्यास के प्रमुख सदस्यों के साथ विचार विमर्श के पश्चात निम्न लिखित अधिकारियों की घोषणा की ।

१—श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती प्रधान—(पदेन)

२—श्री विद्यासागर जी शास्त्री उपप्रधान

३—श्री विजयसिंह भाटी कार्यकर्ता प्रधान

४—श्री बृजेश कुमारसिंह मन्त्री

५—श्री जगदीश आर्य उपमन्त्री

६—श्री मंगलाराम जी गहलोत कोषाध्यक्ष

७—श्री दाऊलाल आचेरी आय-व्यय निरीक्षक

अन्तरंग सदस्य—श्री रमेशचन्द्र भाटिया श्री कर्नल मनोहरदत्त वाली, श्री दाऊलाल जी सोनी, श्री स्वामी सुमेधानन्द जी, डा० भवानीलालजी भारतीय, डा० ओमप्रकाश जी शर्मा, श्री सुखदेव जी गोयल, श्री महेन्द्रसिंह मंडोर, श्री मोहनलाल जी गहलोत सुरसागर, श्रीमती कमला सोनी आर्या ।

आर्य समाज से निष्कासित व्यक्तियों के षडयन्त्रों से आर्य जनता सावधान रहे

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का प्रस्ताव

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की अन्तरंग सभा की बैठक दि० १९-९-९३ में सर्वसम्मति से पारित प्रस्ताव

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन, आसफअली रोड, नई दिल्ली से प्राप्त पत्र दिनाक ३ ९-९३ तथा विभिन्न समाचार पत्रो मे प्रकाशित इस आशय के समाचारो पर सभा ने विचार किया कि कुछ लोगो ने दिल्ली मे दि० २९-८-९३ को एकत्रित होकर स्वय को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा घोषित करते हुए लखनऊ निवासी श्री कैलाश नाथ सिंह को उक्त तथाकथित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रधान निर्वाचित करने एव सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन, आसफ अली रोड नई दिल्ली के वैध एवं सर्वसम्मत निर्वाचित प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती को प्रधान पद से हटाये जाने की घोषणा की है।

इस सभा का सर्वसम्मत मत एव निणय है कि उपर्युक्त दि० २९-८-९३ को श्री कैलाशनाथ सिंह को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रधान बनाये जाने एव उक्त सभा के वर्तमान प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती को उनके पद से हट ये जाने सम्बन्धित उक्त घोषणा सर्वथा अवैध एव अनधिकृत प्रयास है, और यह सभा ऐसे प्रयास की निन्दा करती है। यह सभा यह भी घोषणा करती है कि उक्त कार्यवाही जिन लोगो ने एकत्रित होकर स्वय को विभिन्न सभाओ के प्रतिनिधि घोषित करते हुए की थी, वे न तो किसी वैध आर्य प्रतिनिधि सभा के अथवा सार्वदेशिक सभा के प्रतिनिधि हैं, ना ही उक्त जनो को स्वय को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नामाकित करने अथवा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नाम से किसी प्रकार का समानान्तर सगठन घोषित करने का कोई वैधानिक अधिकार प्राप्त था। यह सारा प्रयास आर्य समाजो को भ्रमित करने के उद्देश्य से किया गया हैं, अ सर्वथा निन्दनीय है।

अन्त मे यह सभा यह भी घोषणा करती है कि आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान हर प्रकार से वैध सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, जिसके प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती हैं तथा जिसका कार्यालय महर्षि दयानन्द भवन, आसफअली रोड, नई दिल्ली मे है, उसी के साथ है और उसी की इकाई है। इस सभा की ओर से अन्यथा किसी प्रकार की कैसी भी घोषणा करने वाले किसी व्यक्ति के विरुद्ध अनुशासन की कार्यवाही करने के लिए यह सभा बाध्य होगी। अत राजस्थान राज्य के समस्त आर्यसमाजो के अधिकारियो एव सदस्यों को सूचित एव सावधान किया जाता है कि किसी भी प्रकार के भ्रामक प्रचार तथा गतिविधि के प्रति सजग रहे।

सुमेधानन्द सरस्वती
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रस्ताव

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नइ दिल्ली-२ पिन-११०००२ की स्थापना सन्त साधको वैदिक विद्वानों तथा आर्य नेताओ ने देश-विदेश मे आर्य समाज के प्रचार-प्रसार के लिए १९०८ ई० मे की थी। इस सभा का वर्तमान कार्यालय महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२ में स्थित है। सभा प्रारम्भ से ही देश विदेश मे आर्य समाज के प्रचार तथा वैदिक साहित्य के प्रकाशनार्थ प्रयत्नशील रही है।

यह सभा सरकार द्वारा विधिवत् निबधित तथा आर्य संसार की सर्व शिरोमणि एवं सर्वमान्य है। इस सभा का निर्वाचन नियमावली के अनुसार विभिन्न राज्यो तथा विदेश के प्रतिनिधियों द्वारा होता रहा है। दो वर्ष पूर्व भी सर्वसम्मति से करतल ध्वनि के साथ पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती सार्वदेशिक सभा के प्रधान पद पर प्रतिष्ठित किए गये।

उपर्युक्त परिस्थिति में आर्य समाज की कीर्ति, ख्याति तथा प्रतिष्ठा की ज्योति को आंखो से ओझल करने के लिए आर्य समाज से निष्कासित, पद-लोलुप, दिग्भ्रमित तथा उसकी छवि को धूमिल करने के लिए श्री कैलाश नाथ सिंह, श्री अग्निवेश तथा इन्द्रवेश आदि व्यक्तियो ने ३१-८-९३ को टेबुलटोक द्वारा श्री कैलाशनाथ सिंह को सार्वदेशिक सभा का तथाकथित प्रधान घोषित कर दिया है। यह कार्य इन लोगों का अत्यन्त अवैधानिक, हास्यास्पद घृणित तथा अमर्यादित षडयन्त्र है।

ऐसे असामाजिक तत्वो को ज्ञात होना चाहिए कि आज देश विदेश मे प्रतिदिन परिवर्तन शील परिस्थितियों मे पूज्य स्वामी जी ही पथ प्रदर्शन के लिए एक मात्र सम्बल दिखलाई पडते हैं। सर्वत्र आर्य समाज की वैजयन्ती को फहराने मे इनसे बढ कर दूसरा कोई दिखलाई नही पडता है। ऐसे गगनचुम्बी हिमालय सदृश्य व्यक्तित्व से टक्कर लेना दिवा स्वप्न है। प्रचण्ड सूर्य की तप्त किरणो को चादर से ढका नहीं जा सकता।

अत बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा श्री मुनीश्वरा नन्द भवन, नया टोला पटना-८००००४ उपर्युक्त जाली सगठन का घोर विरोध तथा क्षोभ प्रकट करती है। सार्वदेशिक सभा के तप. पूत सिद्ध साधक पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी तथा उनके महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री मे अविचल आस्था श्रद्धा तथा भक्ति प्रकट करती है और निवेदन करती है कि ऐसे असामाजिक तत्वों पर वैधानिक कार्यवाही करने की कृपा करेंगे। सभा इसके लिए सब प्रकार से आप के साथ है।

भवदीय
भूपनारायण शास्त्री (प्रधान)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का प्रस्ताव

इस सभा को कुछ समाचार पत्रो में यह समाचार पढ़ कर आश्चर्य हुआ कि आर्यसमाज की शिरोमणी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्य-समाज से अनुशासनहीनता के कारण पूर्व निष्कासित इन्द्रवेश, अग्निवेश, आदित्यवेश तथा श्री कैलाशनाथसिंह आदि ने आर्यसमाज के नियमो की अनदेखी करके सार्वदेशिक सभा के नाम का अवैध चुनाव किया है सार्वदेशिक सभा का चुनाव नियमानुसार प्रदेशो की आर्य प्रान्तीय सभाओ के चुने हुएप्रति-निधियो द्वारा होता है। हरयाणा सभा के किसी भी प्रतिनिधि को सार्वदेशिक सभा के चुनाव की सूचनादि नहीं भेजी गई। अत इन्होंने सार्वदेशिक सभा के नाम का जो चुनाव करने का षड्यन्त्र रचा है, यह अवैध है। हमारी सभा उनकी इस कार्यवाही की घोर निन्दा करती है। हमारी सभा सार्वदेशिक सभा से सम्बन्धित है और सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती को प्रधान तथा श्री सच्चिदानन्द शास्त्री को मन्त्री विधिवत निर्वा-चित अधिकारी मानती है। अत इनकी कथित चुनाव प्रक्रिया कानूनी तौर पर अमान्य है और इस प्रकार की गतिविधिया आर्यसमाज के हित मे नहीं है।

सूबेसिंह
सभामन्त्री

पाकिस्तान के अहमदी

—श्री के० नरेन्द्र

दीन इस्लाम के जो स्कालर हैं, उनका यह दावा है कि इस्लाम में जो सहन शक्ति है वह और किसी मजहब में नहीं मिल सकती है। सहन शक्ति के साथ इस्लाम में और भी कई विशेषताओं का जिक्र किया जाता है। चूंकि हमारे देश में सेकुलेरिज्म का प्रचलन है, इसलिए हम लोग यह खूबियां देखने में अयोग्य हैं लेकिन पाकिस्तान में इन खूबियों का खूब प्रदर्शन हो रहा है। स्व० भुट्टो ने अहमदियों को इस्लाम से खारिज कर दिया। इस्लाम के हठधर्मी मौलवियों और मुल्लाओं ने भुट्टो को ऐसा करने पर मजबूर कर दिया, हालांकि वह इस बात के खिलाफ था। उस दिन से पाकिस्तान में अहमदियों का जीना मुश्किल किया जा रहा है। इस समय पाकिस्तान में अहमदियों की आबादी ४० लाख के लगभग है, लेकिन इससे भी अहम बात जो है वह यह है कि कई नेता पाकिस्तानी अहमदी हैं। उन पर सरकार ने हाथ नहीं डाला, लेकिन आम अहमदियों को पाकिस्तान के संविधान में संशोधन करके यह बता दिया गया है कि पाकिस्तान में न उनका धर्म सुरक्षित है न जिन्दगी। इस प्रकरण से बचने के लिए पाकिस्तान सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका दायर की। इन लोगों को यह उम्मीद थी कि यह पाकिस्तान की अदालतों के बड़े-बड़े जजों को इस बात का यकीन दिला देंगे कि अहमद इस्लाम के सच्चे पैरुकार हैं। लेकिन इनका दुर्भाग्य है कि पाकिस्तान के जजों ने लकीर के फकीर की तरह अमल करते हुए पाकिस्तान के संविधान को अधिकृत मान कर इन अहमदियों को गैर मुस्लिम करार दे दिया। इन जजों ने जो फैसला दिया है इसमें उन्होंने कहा है कि मुल्क के संविधान में मुल्क के लोगों की भावनाओं का प्रतिनिधित्व किया है। इसलिए अदालत संविधान के नियमों की अवहेलना नहीं कर सकती। साफ है कि पाकिस्तान की १० करोड़ की आबादी में ४० लाख अल्पसंख्यक लोग ही होंगे। लेकिन आज दुनिया के कई संगठन अल्पसंख्यकों के अधिकारों की मांग कर रहे हैं और पाकिस्तान भी सब संगठनों के आदर्शों को स्वीकार करने का दावा करता है। इस सबके बावजूद पाकिस्तान की सरकार ने अहमदियों को न सिर्फ इस्लाम के दायरा से खारिज कर दिया है बल्कि उनके आम शहरी व मजहबी अधिकार भी छीन लिए हैं। जो परिवर्तन पाकिस्तान के संविधान में किया गया है उसमें यह कहा गया है कि अहमदी अपने आपको मुसलमान कहना छोड़ दें और इस्लामी ढंग से अपने खुदा की पूजा करना छोड़ दें तथा अपने पूजा करने के स्थानों को मस्जिद कहना छोड़ दें, और अहमदियों को नमाज अदा करने के लिए बुलाने के वास्ते मुसलमानों की तरह अजान न दें। जो कोई इन आदेशों की अवहेलना करेगा, उसे सजा मिलेगी और उस सजा में जुर्माना, उम्र कैद और फांसी देना शामिल है। अगर कोई अहमद हजरत मोहम्मद का नाम ले ले तो यह समझा जाता है कि उसने हजरत मोहम्मद की बेइज्जती की है जिसकी सजा मौत है। इस नये कानूनों के तहत लगभग ६०० अहमदियों के खिलाफ मुकदमें चल रहे हैं।

जो अफसरान इन कानूनों पर अमल कर रहे हैं उनका कहना है कि अहमदी अपना मजहब छोड़ दें, उनके रस्मों रिवाज छोड़ दें और यह भेष बदल कर रहें। सुप्रीम कोर्ट ने अहमदियों की यह याचिका खारिज करते हुए उन्हें यह कहा कि यह लोग पूजा के तरीके बदलें, नमाज के तरीके बदलें, नये-नये नाम रखें। इस बात पर हैरानी प्रकट की जा रही है कि अदालत ने यह निर्णय कैसे दे दिए? क्योंकि इस तरह के निर्णय जारी करना उनका काम नहीं है। लेकिन उसका अन्जाम यह हुआ कि मुल्क में आतंकवाद और ज्यादा ताकतवर हो गया और इस तरह यह साबित कर दिया गया कि (शरियत) को मुल्क के संविधान पर ज्यादा अहमियत हासिल है, और शरियत की नजरों में इन्सानी हकों की कोई जगह नहीं है, इस फैसले ने पाकिस्तान के अहमदियो को बिलकुल निराश करके रख दिया है लेकिन इस के साथ-साथ यह भी डर लगने लगा है कि कहीं दूसरा मुस्लिम मुल्क भी इस तरह अहमदियों को गैर मुस्लिम करार न दे दें। अहमदियों ने लन्दन की "अमेनिस्टी इन्टरनेशनल" और मानव अधिकार संरक्षण के संगठनों की तरफ से भी अहमबाया है, लेकिन पाकिस्तान सरकार पर कोई असर नहीं हुआ। भारतवासियों को जिस बात से चिन्ता हो रही है वह यह है कि यहां के शरारती मुसलमान भी कहीं अहमदियों से वही बर्ताव करना शुरू न कर दें जो उनके साथ पाकिस्तान में हो रहा है। इन अहमदियों की आशंकाएं बेबुनियाद नहीं हैं। इसलिए कि केरल में एक लाख के करीब अहमदी मुसलमान रहते हैं। इनमें से त्रिचूर के नजदीक कस्तोड के दो अहमदी खानदानों को अपना घर बार छोड़ कर कोचीन में जाकर रहना पड़ गया है। केरल के मुस्लिम संगठन ने केरल सरकार और केन्द्रीय सरकार से अपील की है कि वह कट्टर मुसलमानों को अहमदियों के खिलाफ प्रचार करने की इजाजत न दें इस संगठन के नेता कई विश्वव्यापी मानव अधिकार संरक्षण संगठनों से भी अपील की है कि वह पाकिस्तान सरकार पर दबाव डालें कि वह जबरदस्ती अहमदियों को गैर मुस्लिम करार न दें।

दैनिक प्रताप उर्दू
२७ सितम्बर १९९१ से साभार

आर्य समाज साक्षरता अभियान

आर्य समाज के आठवें नियम के अनुसार प्रत्येक आर्य को अविद्या का नाश तथा विद्या की वृद्धि करनी चाहिए। इसलिए सार्व० विद्यार्य सभा ने अपनी १९-८-९१ की बैठक में निश्चय किया है कि पूरे भारत में साक्षरता अभियान को पूरे उत्साह से चलाया जाए। इसका प्रयोग दिल्ली से किया जा रहा है। अतः दिल्ली की सभी आर्य समाजों, आर्य स्त्री समाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं तथा आर्य जनों से निवेदन है कि जो इस कार्य में अपना सहयोग देना चाहते हैं, वे पत्र द्वारा इसकी सूचना, संयोजक—सार्वदेशिक विद्यार्य सभा दयानन्द भवन, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-११०००२ के पते पर भिजवाने की कृपा करें। जहां साक्षरता का कार्य पहले से हो रहा है, वह कृपया इसकी सूचना दें।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री, सा० आर्य प्रति० सभा

महर्षि दयानन्द के भक्त और प्रशंसक—

महाराजाधिराज कर्नल सर प्रतापसिंह (७)

(आर्यसमाज के इतिहास का एक रोमांचक अध्याय)

प्रो० भवानीलाल भारतीय

सर प्रताप विवाह आदि के अवसर पर वेश्या नृत्य, शराब खोरी, अनावश्यक आडम्बर और फिजूलखर्ची के अत्यन्त विरोधी थे। अपनी पुत्रीका विवाह मारवाड़ के ठेड़ा ठिकाने के ठाकुर के साथ करते समय आपने सारी फिजूलखर्चियां बन्द कर दीं। इसी प्रकार अपने भतीजे महाराजा सरदारसिंह तथा अपने पोते महाराजा सुमेरसिंह का विवाह भी सादगीसे सम्पन्न कराया। इसमें वेश्या नृत्य तथा शराब का पूर्णतया बहिष्कार किया गया। सर प्रताप के इन विचारों और कार्यों में स्वामी दयानन्द की शिक्षाओं की स्पष्ट झलक दृष्टिगोचर होती है।

सर प्रताप का यज्ञोपवीत संस्कार—

जोधपुर निवासी एक तथाकथित शोधकर्ता महानुभाव प्राय यह प्रचार करते रहते हैं कि स्वामी दयानन्द को विष दिलाने में सर प्रताप का ही हाथ था तथा अंग्रेजों के प्रति अत्यधिक वफादारी रखने वाले महाराजा प्रतापसिंह की आर्य समाज विषयक नीतियां भी हाथी के दांतों की भांति "खाने के और दिखाने के और" की उक्ति का अनुसरण करती थी। किन्तु इन्हीं महानुभाव ने महाराजा सर प्रतापसिंह के यज्ञोपवीत संस्कारका विस्तृत विवरण राजस्थान राज्य के अभिलेखागार से संगृहीत कर आर्य मार्तण्ड अजमेर के एक जून १९७२ के अंक में प्रकाशित कराया था। यदि सचमुच ही सर प्रताप का आर्य समाज के प्रति रवैया संशयास्पद था, तो उन्हें यज्ञोपवीत लेने की क्या आवश्यकता थी? यदि उन्हें आर्य समाज के धार्मिक सिद्धान्तों में वास्तविक निष्ठा ही नहीं थी तो क्या उन्होंने केवल दिखावे के लिये ही यज्ञोपवीत धारण किया था? अस्तु। कहना होगा कि सर प्रताप का यज्ञोपवीत धारण करना दिखावा या आडम्बर नहीं अपितु वैदिक कर्मकाण्डके प्रति उनकी निष्ठा का ही परिचायक है। राज्य अभिलेखागार में सुरक्षित जोधपुर राज्य की बही (संवत् १९४५ वि०) के पृष्ठ ४५६ पर इस संस्कार का विवरण दिया गया है। इसके आधार पर जो जानकारी मिलती है वह इस प्रकार है— सर प्रताप का यज्ञोपवीत संस्कार कार्तिक अमावस्या (दीपावली) सं० १९४५ वि० के दिन (स्वामी दयानन्द के निधन के ठीक पांच वर्ष पश्चात्) पावटे के बंगले में स्वामी भास्करानन्दजी के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। स्वयं जोधपुर महाराजा जसवन्तसिंह इसमें सम्मिलित होने के लिये राई का बाग राजमहल से पावटा आये और उन्होंने यज्ञ में आहुति भी दी। इस संस्कार में दक्षिणादि कार्यों में ५०० रु० व्यय हुए थे।

डी. ए. वी. कालेज लाहौर के साथ सर प्रताप का सम्बन्ध

१८८६ ई० में स्वामी दयानन्द की स्मृति में लाहौर में डी ए वी स्कूल की स्थापना की गई। कुछ वर्षों के पश्चात् इसे कालेज का रूप दे दिया गया तथा महात्मा हंसराज के कुशल संचालन में यह शिक्षण संस्था न केवल पंजाब की, अपितु भारत की श्रेष्ठ शिक्षण संस्था के रूप में परिगणित होने लगी। २३ अप्रैल १९०५ को जब कालेज भवन की आधार शिला रखने का समारोह आयोजित हुआ तो महाराजा प्रतापसिंह को ही इस महत्त्वपूर्ण कार्य के लिये आमन्त्रित किया गया। इस समारोह का विवरण डी०ए०वी० कालेज यूनियन-मेगजीन के पृष्ठ ३२९-३३४ पर अंकित है। इसके अनुसार २२ अप्रैल १९०५ को सर प्रतापसिंह ईडर नरेश, बम्बई मेल से लाहौर पहुंचे। स्टेशन पर उनका स्वागत करनेवालों में कालेज कमेटीके सदस्यों के अतिरिक्त नगरके अन्य गण्य-मान्य लोग भी थे। उसी सायंकाल अनारकली उद्यान में लाहौर के प्रतिष्ठित समुदाय की ओर से महाराजा के सम्मान में एक अल्पाहार का आयोजन किया गया। दूसरे दिन २३ अप्रैल को कालेज भवन के शिलान्यास का समारम्भ निश्चित कार्यक्रम के अनुसार सम्पन्न हुआ। यज्ञ, प्रार्थना, मन्त्र गान तथा मंगलाचरण के अनन्तर कालेज के प्रिंसिपल लाला हंसराज ने कालेज का वार्षिक विवरण प्रस्तुत किया तथा लाला लाजपतराय ने समारोह के मुख्य अतिथि महाराजा प्रतापसिंह के सम्बन्ध में कुछ प्रशंसापूर्ण शब्द कहे। तत्पश्चात् महाराजा प्रतापसिंह के करकमलों से शिलान्यास सूचक संगमर्मर की पट्टिका स्थापित की गई। इस अवसर पर महाराजा ने डी० ए० वी० कालेज को पांच हजार रुपये प्रदान किये। स्मरणीय है कि महाराजा प्रताप ने अपने पुत्र द्वय रावराजा हनुवन्तसिंह तथा रावराजा संमतसिंह को १९१३-१४ में डी० ए० वी० कालेज लाहौर में अध्ययनार्थ प्रविष्ट कराया। १९१५-१६ के वर्ष में रावराजा अजबसिंह (तृतीय पुत्र) भी इसी कालेज में अध्ययनार्थ प्रविष्ट कराये गये। कालेज भवन में सर प्रताप ने दो कमरे अपनी ओर से बनवाये और छात्रों को घुड़सवारी सिखाने के लिये उत्तम कोटि के घोड़े भी प्रदान किये। (क्रमश.)

सभा के कानूनी सलाहकार बा० सोमनाथ मरवाहा, एडवोकेट

बाबू सोमनाथ जी मरवाहा सीनियर एडवोकेट सार्वदेशिक सभा के वर्तमान उपप्रधान और पूर्व कोषाध्यक्ष जबसे सार्वदेशिक सभा से जुड़े हैं, इन्होंने सार्वदेशिक सभा के कानूनी व वैधानिक पक्ष की रक्षा करने में महत्त्वपूर्ण सफलतायें प्राप्त की है। सभा से बाहर आर्य समाज संस्थाओं के मामलों में भी इन्होंने आर्य समाज की महान सेवा की है। इस समय बाबू जी अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के प्रधान तथा सार्वदेशिक प्रकाशन लि० के मुख्य संचालक भी हैं।

सार्वदेशिक सभा के विरुद्ध संगठन विरोधी लोगों ने पिछले दिनों जो बोगस संगठन बनाया है उस पर इनके प्रयत्नों से दिल्ली उच्च न्यायालय द्वारा रोक लग गई है। आर्य जगत उनके शतायु की कामना करता है।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सार्वदेशिक सभा द्वारा शास्त्रार्थ महारथी पं० गणपति शर्मा के ग्रन्थ का पुनः प्रकाशन

ईश्वर भक्ति विषयक व्याख्यान

मूल्य ३-५० रु०

लेखक - भवानीलाल भारतीय

स्व० पं० गणपति शर्मा आ० स० के इतिहास में प्रथम पंक्ति के विद्वान थे। उनकी लगभग १०० वर्ष पहले छपी इस दुर्लभ पुस्तक का प्रकाशन सभा ने पण्डित गणपति शर्मा के जीवन परिचय तथा उनके प्रचार कार्य के विवरण सहित किया है। अधिक संख्या में मंगा कर ईश्वरभक्ति विषयक इस महत्त्वपूर्ण कृति का प्रचार करें। लेखक बधाई के पात्र हैं जो ऐसे विद्वानोंके इतिहास के पृष्ठों को जनता के समक्ष प्रस्तुत कर नव जागरण करते हैं।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री सार्वदेशिक सभा
दयानन्द भवन, नई दिल्ली

धर्म संस्कृति एवं राष्ट्र रक्षार्थ हैदराबाद में आर्य समाज का संघर्ष (२)

लेखक : श्री लक्ष्मणार्य 'विद्यावाचस्पति' प्रधान आर्य समाज वरंगल आन्ध्र

जनता में आजाद हैदराबाद के नारों से अशान्ति उत्पन्न हो गई। बहु-संख्यक जनता के मत को कुचल कर निजाम सरकार ने जहां अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हाथ-पांव मारना शुरू किए वहां मजलिस इत्तेहादुलमुसलमीन ने तीस चार हजार रजाकार गुण्डों की भर्ती कर उन्हें सैनिक शिक्षा देकर चारों ओर लूट मार और आतंक फैला दिया। यह काल आर्य समाज तथा अन्य सभी देश भक्त संगठनों के लिए अत्यन्त कठिन समय था क्योंकि निजाम सरकार ने राज्य में समस्त स्वाधीनता तथा लोकतन्त्र प्रिय शक्तियों को पदृदलित करने का भीषण चक्र चला रखा था। आर्य समाज ने आजाद हैदराबाद नामक हुकूमत के आन्दोलन का डट कर विरोध किया और उनके विरुद्ध युद्ध करने में अपनी पूर्ण शक्ति लगा दी। आर्य समाज के नेतागण सर्वश्री विनायक जी, नरेन्द्र जी, वन्देमातरम रामचन्द्रराव जी आदि ने अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में घोषित किया कि हैदराबाद स्वतन्त्र भारत का एक अंग बन कर समृद्ध बन सकता है। इस हैदराबाद सरकार ने आर्य समाजों के अधिकारियों को गिरफ्तार करके जेलों में भेज दिया और रजाकारों को पूर्ण छुट्टी दे दी कि हैदराबाद की आजादी का जो कोई विरोध करेगा उसे गोलियों से उड़ा दिया जाए। इसके लिए कासिम रजवी के नेतृत्व में रजाकारों की सेना खड़ी कर दी गई थी। राज्य की भोलीभाली जनता को खत्म करने का प्लान भी बनाया गया। इसके लिए एक 'पिरेट सिडनी काटन नामक अंग्रेज के द्वारा पाकिस्तान तथा गोआ के रास्ते हथियारों की खेपें लाया करता था। यह जहाज जभी हैदराबाद, बीदर और वरंगल में हथियारों की पेटियां उतार कर लौट जाया करता था तो सर्वश्री विनायकराव, नरेन्द्र जी, वन्देमातरम् जी आदि के आदेश से कुछ आर्य वीर अपने वेश-भूषा बदल कर गुप्तचर बन कर भूमिगत कार्य गुप्त रूप में जाकर हवाई अड्डे के निकट साधारण व्यक्तियों के वेश में जाकर रातों में बराबर जाग कर प्राण हथेली पर रख कर इस जहाज का नम्बर, पेटियों के नम्बर हथियारों की संख्या क्वालिटी तथा उन्हें विभिन्न स्थानों तक पहुंचाने वाले ट्रकों के नम्बर ठीक-ठीक ज्ञात करते थे। जब सारी जनता निद्रादेवी की गोद में विश्राम करती थी तब ये रात भर जाग कर जान हथेली पर रख करके भूमिगत देश भक्त उसकी टोह लेते थे और भारत सरकार के द्वारा नियुक्त प्रतिनिधि हैदराबाद में कोठी में रहने वाले के० एम० मुन्शी तक ठीक-ठीक समाचार पहुंचाने में सफल होते थे।

इतना ही नहीं बल्कि अपनी जान पर खेल कर और कुछ देश भक्त, निजाम की आर्डिनेन्स फैक्टरी मे प्रवेश कर वहां की सारी गुप्त जानकारी लेकर जनता को सचेत करते थे। उस समय सरकारी मिलस हैंडग्रेनेड तथा जापानी थ्री नाट थ्री की जानकारी अपेक्षित थी। इस प्रकार भूमिगत आर्य वीर रजाकार गुण्डों के प्लान को जान कर जनता पर होने वाले अत्याचारों से जनता एवं स्त्रियों के मान की रक्षा करते थे। साथ-साथ वन्देमातरम, विनायकराव आदि नेता गण के आदेशों से भूमिगत इन वीरों ने मिलटरी वर्दी पहन कर निजामी सेना के कुछ को साथ लिये निषिद्ध क्षेत्रों में सेना निर्धारित कोटवर्ड शब्द का प्रयोग कर प्रवेश पा लिया और कुछ घन्टे इधर उधर घूम कर सारी जानकारी लेकर, इनके अत्याचारों से साधारण जनता की रक्षा की।

इन सब अत्याचारो के मुख्य मीर उस्मान अली खां को समझ कर वरंगल नगर निवासी श्री नारायण राव पवार जी मीर उस्मान अली खां पर बम्ब फेंके थे। और गिरफ्तार किया जाकर जेल की अन्धेरी कोठरी में रखे गए। निजाम सरकार की सेना, रजाकार गुण्डे आदि स्थान-स्थान पर अत्याचार, सतीत्व नष्ट आदि दुष्कार्य करते रहते तो भूमिगत आर्य वीरों ने उन सभी की रक्षा में प्रशंसनीय कार्य किए। जब निजाम गुप्त रूप से स्वतन्त्र भारत की सरकार से युद्ध करने की अन्दर ही अन्दर जोरदार तैयारियां कर रहा था उसका सारा भेद भाव इन भूमिगत आर्य वीरों ने जाना और के० एम० मुन्शी को इन जानकारियों को भेज दिया करते थे। दूसरी ओर भूमिगत कार्यकर्ता कुछ साधारण जनता एवं सतीत्व नष्ट की रक्षा में जान हथेली में लेकर लगे रहते थे। १९४७ के जून, जुलाई में निजाम राज्य के विभिन्न स्थानों पर रजाकारों एवं पुलिसों ने मिल कर हिन्दुओं पर फायरिंग कर दी तो अनेक हिन्दू जनता की हत्या हुई जिसमें वरंगल के पांच व्यक्ति भी शिकार बने। रजाकारों द्वारा ग्रामों को उजाड़ दिया गया। खेतियां भस्म कर दी गई। स्त्रियों के शरीर के आभूषण उतरवा लिए गये और उनके सतीत्व पर हाथ डाला गया। ऐसी भीषण स्थिति पर आर्य समाजी वीरों ने निजाम सरकार से सविनय प्रार्थना की कि हैदराबाद तुरन्त ही स्वतन्त्र भारत में विलीन हो जाय। जब तक हैदराबाद के नियन्ता मीर उस्मान अली खां भारत में विलीन होने की अपनी सम्मति प्रकट न की तब तक आर्य वीर अन्य देश भक्त वीरों ने पुलिस की आंख बचा कर हिन्दू नेता और स्त्रियों के मान रक्षा के लिए अपने वेषभूषा को बदल कर भूमिगत कार्य जान हथेली में रख कर किया है। उसका वर्णन करना कठिन ही है। जेल में रहने वालों की अपेक्षा में बाहर भूमिगत रह कर कार्य करने वाले आर्य वीर बेहतर ही समझ गये। इस प्रकार आर्य समाज के कार्यकर्ता एवं आर्य वीरों ने रजाकार गुण्डों एवं निजाम सरकार के अत्याचारों का विरोध किया और साथ-साथ इसका विवरण वन्देमातरम् तथा विनायकराव आदि के द्वारा श्री के० एम० मुन्शी को भेज देते थे, तो के० एम० मुन्शी इन विवरणों को स्वतन्त्र भारत के उप-प्रधान सरदार पटेल को पहुंचा देते थे। फलस्वरूप भारत सरकार ने निजाम राज्य पर १४ सितम्बर १९४८ को सैनिक कार्यवाही करना शुरू की तो भूमिगत कार्य करने वाले आर्य वीर भारत की सेना की बहुत कुछ सहायता की जिससे तीन ही दिन में भारतीय सेना ने आजाद हैदराबाद पर विजय पाई। इसका श्रेय भूमिगत आर्यों को मिलना चाहिए। इसके कारण मेजर जनरल जे० एन० चौधरी को मिलटरी गवर्नर पद पर नियुक्त किया गया।

जब भारत के उप-प्रधान मन्त्री सरदार पटेल ने हैदराबाद राज्य में आगमन के अवसर पर कहा था कि 'यदि पहले से आर्य समाज के कार्यकर्ताओं ने भूमिगत रह कर भूमिका न निभाते तो भारत की सेना का तीन ही दिन में हैदराबाद पर अधिकार करना सम्भव न था। इस प्रकार भूमिगत आर्यों का महत्व है। इस महत्व को भारत सरकार के गृह मन्त्री को अपनी दृष्टि में रखनी चाहिए और उन्हें पेंशन देने में पीछे कभी भी न हटना चाहिए। मानवता की दृष्टि से सोच विचार कर उन्हें भी पेंशन दिलाने के लिए जी० ओ० (प्रकाशित) जारी करें ताकि उन्हें पेंशन एवं अन्य सुविधाएं भी सरलता से प्राप्त हो सकें।

गुरुकुल शिक्षा-पद्धति की रूपरेखा (२)

(महर्षि दयानन्द की मान्यता)

सुदर्शनदेव आचार्य सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता, रोहतक

(२) अष्टाध्यायी द्वितीयावृत्ति—दूसरी बार शंका समाधान, वार्तिक, कारिका, परिभाषा की घटनापूर्वक अष्टाध्यायी की द्वितीयावृत्ति पढ़ावें। आजकल अष्टाध्यायी की द्वितीयावृत्ति में प जयादित्य-वामन द्वारा रचित काशिका वृत्ति का पठन-पाठन प्रचलित है।

महाभाष्य—तत्पश्चात् महाभाष्य पढ़ावें, अर्थात् जो बुद्धिमान, पुरुषार्थी, निष्कपटी और विद्यावृद्धि के चाहने वाले नित्य पढ़ें-पढ़ावें तो डेढ़ वर्ष में अष्टाध्यायी और डेढ़ वर्ष में महाभाष्य को पढ़कर तीन वर्ष में पूर्ण वैयाकरण होकर वैदिक और लौकिक शब्दों को व्याकरण से जानकर पुन अन्य शास्त्रों को शीघ्र सहज में पढ़-पढ़ा सकते हैं। किन्तु जैसा बड़ा परिश्रम व्याकरण में होता है वैसा श्रम अन्य शास्त्रों में नहीं करना पड़ता।

अष्टाध्यायी की महिमा—जितना बोध अष्टाध्यायी एव महाभाष्य के पढ़ने से तीन वर्षों में होता है, उतना बोध कुग्रन्थ अर्थात् सारस्वत चन्द्रिका, कौमुदी और मनोरमा आदि के पढ़ने से पचास वर्ष में भी नहीं हो सकता क्योंकि महाशय महर्षि लोगों ने सहजता से जो महान विषय अपने ग्रन्थों में प्रकाशित किया है, वैसा इन क्षुद्राशय मनुष्यों के कल्पित ग्रन्थों में क्योंकर हो सकता है।

आर्ष ग्रन्थों की महिमा—महर्षि लोगों का आशय, जहां तक हो सके वहां तक सुगम और जिसके ग्रहण करने में समय थोड़ा लगे, इस प्रकार का होता है, और क्षुद्राशय लोगों की मनसा ऐसी होती है कि जहा तक बने, वहा तक कठिन रचना करनी। जिसको बड़े परिश्रम से पढकर अल्प लाभ उठा सकें। जैसे पहाड़ का खोदना और कौड़ी का लाभ होना, और आर्ष ग्रन्थों को पढ़ना ऐसा है कि जैसा एक गोता लगाना और बहुमूल्य मोतियों का पाना।

३. निघण्टु-निरुक्त

व्याकरण को पढ़के यास्कमुनिकृत निघण्टु और निरुक्त (छ) छ वा (८) आठ महीने में सार्थक पढ़ें पढ़ावें। अन्य नास्तिक कृत अमरकोश आदि में वृथा वर्ष न खोवें।

४. छन्दः शास्त्र

तत्पश्चात् पिङ्गल आचार्यकृत छन्दोग्रन्थ, जिससे वैदिक और लौकिक छन्दों का परिज्ञान, नवीन रचना और श्लोक बनाने की रीति भी यथावत् सीखें। इस ग्रन्थ और श्लोकों की रचना तथा प्रस्तार को चार महीने में सीख पढ पढा सकते हैं और वृत्तरत्नाकर आदि अल्प बुद्धि कृत ग्रन्थों में अनेक वर्ष न खोवें।

५. मनुस्मृति-रामायण-महाभारत

तत्पश्चात् मनुस्मृति वाल्मीकि रामायण और महाभारत के उद्योग पर्वान्तर्गत विदुरनीति आदि अच्छे प्रकरण जिनसे व्यसन दूर हो और उत्तमता तथा सभ्यता प्राप्त हो वैसे को काव्यरीति से अर्थात पदच्छेद, पदार्थोक्ति, अन्वय, विशेष्य-विशेषण और भावार्थ को अध्यापक लोग जनावें और विद्यार्थी लोग जानते जावें। इनको एक वर्ष के भीतर पढ़ लें।

६. दर्शनशास्त्र (कल्प)

तत्पश्चात् पूर्वमीमांसा, वैशेषिक, न्याय, योग, सांख्य और वेदान्त-जहां तक बन सके वहां तक ऋषिकृत व्याख्या सहित अथवा उत्तम विद्वानों की सरल व्याख्या युक्त (छ) छ शास्त्रों को पढ़ें-पढ़ावें। परन्तु वेदान्त सूत्रों के पढ़ने से पूर्व ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तिरीय, छान्दोग्य और बृहदारण्यक इन दश उपनिषदों को पढ़े। इन छः शास्त्रों के भाष्य तथा वृत्तिसहित सूत्रों को दो वर्ष के भीतर पढ़ावें और पढ़ लेवें।

षड्दर्शन—पूर्वमीमांसा पर व्यास मुनिकृत व्याख्या, वैशेषिक पर गौतम मुनिकृत प्रशस्तपाद भाष्य, गौतम मुनिकृत न्याय सूत्र पर वात्स्यायन मुनिकृत भाष्य, पतञ्जलि मुनिकृत योग सूत्र पर व्यास मुनिकृत भाष्य, कपिल मुनिकृत सांख्य सूत्र पर भागुरि मुनिकृत भाष्य, व्यास मुनिकृत वेदान्त सूत्र पर वात्स्यायन मुनिकृत भाष्य अथवा बौधायन मुनिकृत भाष्य वृत्ति सहित पढ़ें पढ़ावें। इत्यादि सूत्रों को कल्प अग में भी गिनना चाहिए।

७. ब्राह्मण ग्रन्थ

तत्पश्चात् छ वर्षों के भीतर चारों ब्राह्मण अर्थात ऐतरेय, शतपथ, साम और गोपथ इन ब्राह्मणों के सहित चारों वेदों के स्वर, शब्द अर्थ, सम्बन्ध और क्रिया सहित पढ़ना योग्य है।

८. आयुर्वेद

इस प्रकार सब वेदों को पढ़कर आयुर्वेद अर्थात् जो चरक, सुश्रुत आदि ऋषि-मुनिकृत वैद्यकशास्त्र है उसको अर्थ, क्रिया शस्त्र, छेदन, भेदन लेप, चिकित्सा, निदान, औषध, पथ्य शरीर, देश, काल और वस्तु के गुण-ज्ञान पूर्वक (४) चार वर्ष के भीतर पढ़े और पढावें।

९. धनुर्वेद

तत्पश्चात् धनुर्वेद अर्थात् जो राजसम्बन्धी काम करना है इसके दो भेद हैं। एक निज-राजसम्बन्धी और दूसरा प्रजा-सम्बन्धी होता है। राजकार्य में सब सेना के अध्यक्ष, शस्त्र-अस्त्र विद्या, नाना प्रकार के व्यूहों का अभ्यास अर्थात् जिसको आजकल 'कवायद' कहते हैं, जो कि शत्रुओं से लड़ाई के समय क्रिया करनी होती है उनको यथावत् सीखें, और जो जो प्रजा के पालने और वृद्धि करने का प्रकार हैं, उनको सीख के न्यायपूर्वक सब प्रजा को प्रसन्न रखें। दुष्टों को यथायोग्य दण्ड और श्रेष्ठों के पालन का प्रकार सब सीख लें। इस राज विद्या को दो दो वर्षों में सीखें।

१०. गान्धर्ववेद

तत्पश्चात् गान्धर्ववेद जिसको कि गान-विद्या कहते हैं, उसमें स्वर, राग,

(शेष पृष्ठ ८ पर)

भारत के परमाणु बम

१९७४ में सबसे पहले भारतीय वैज्ञानिकों ने पोखरन के स्थान पर अपनी परमाणु शक्ति बना लेने की योग्यता का प्रदर्शन किया था। इसके पश्चात इस सिलसिले में ज्यादा कुछ न किया गया। जिन वैज्ञानिकों ने इतना कुछ कर लिया था उनके लिए परमाणु बम बना लेना कुछ कठिन न था। किन्तु भारत सरकार की यह पालिसी न थी इसीलिए उसने एटम बम बनाने पर और नहीं किया जब पोखरन एटामिक धमाका किया गया तब श्री भुट्टो पाकिस्तान के प्रधानमन्त्री थे। वह भारत की इस कामयाबी पर इतने बेहाल हो उठे कि उन्होंने ऐलान कर दिया कि अगर पाकिस्तान की जनता को अपनी एटमी बम बनाने के लिए यदि पैसे की कमी होती है तो वह घास खाकर गुजारा करेंगे और इस तरह बचाया हुआ धन एटम बम बनाने के काम में लगायेंगे। इस दिन से पाकिस्तान अपनी एटमी शक्ति बनाने की तैयारी में लगा हुआ है।

इसके मुकाबले में भारत सरकार ने अपना परमाणु बम तैयार किया है या नहीं, यह आज तक एक रहस्य बना हुआ है। जबकि भारत सरकार की तरफ से यह बार-बार कहा गया कि वह परमाणु शक्ति को अपनी फौजी ताकत बढ़ाने के लिए इस्तेमाल नहीं करेगा। लेकिन इन घोषणाओं के बावजूद कई लोग हैं जो यह मानते हैं कि भारत एटम बम तैयार करने की योग्यता रखता है। अब कुछ आस्ट्रेलिया के वैज्ञानिकों ने कहा है कि १९९५ तक भारत ६५ एटम बम बना लेगा। इसीलिए इस बम के बनाने में जिस प्रोटोनियम की जरूरत है, भारत में इसके भण्डार में वृद्धि हो रही है। इन वैज्ञानिकों का यह कहना है कि १९९१ में भारत के पास ऐसा बम बनाने का २९५ कि० ग्राम प्रोटोनियम था और आशा की कि १९९५ तक यह ४०० कि० ग्राम हो जायेगा, इसके मुकाबले में पाकिस्तान के पास केवल २०० कि० ग्राम यूरेनियम होगा। इससे वह केवल १३ बम बना पायेगा जबकि भारत ६५ बम तैयार कर सकेगा। इन वैज्ञानिकों का कहना है कि दक्षिणी एशिया में एटमी व्यापार की उन्नति हो रही है। सन १९९१ तक ऐसे १७ कारखाने थे। भारत के पास १७ ऐसे कारखाने हैं जबकि एक नया कारखाना बन रहा है और ६ नयी एटमी भट्ठियां तैयार हो रही हैं। पाकिस्तान के पास एक एटमी कारखाना तथा २ एटमी भट्ठियां हैं। ऐसी एक एटमी भट्टी दरी एकड़ बंगला देश में भी है। चीन के पास सिर्फ एक एटमी प्लांट है, जबकि २ नए एटमी प्लांट तैयार हो रहे हैं, लेकिन इसके पास १२ एटमी भट्ठियां हैं। चीन के अतिरिक्त सिर्फ भारत ही ऐसा उन्नतिशील देश है, जिसने स्वयं ही यह एटमी कारखाने तयार किये हैं। कुछ लोगों को इस बात की शिकायत है कि वैज्ञानिकों ने तरह-तरह के वायदे किये थे किन्तु वह अभी तक प्रबन्ध नहीं कर सके। दूसरी तरफ एटमी शक्ति बहुत महंगी है और इससे माहौल पर भी असर पड़ने का खतरा है। अमेरिका और इसके साथी एटमी शक्ति की ओर उन्नति करने के लिए अग्रसर हैं और इन पर काबू पाना चाहते हैं, किन्तु इनकी मुश्किल यह है कि वह दूसरे देशों के कारखानों का निरीक्षण खुद तो करना चाहते हैं किन्तु अपने कारखानों में दूसरे मुल्क वालों को पैर भी नहीं रखने देते, इसीलिये भारत भी अमेरिका के इस कन्ट्रोल को मानने के लिए तैयार नहीं है।

—के० नरेन्द्र

दैनिक प्रताप उर्दू (२७-९-९३)

गुरुकुल शिक्षा-पद्धति

(पृष्ठ ७ का शेष)

रागिनी, समय, अन्न, ताल, ग्राम, तान, वादित्र नृत्य और गीत आदि को यथावत् सीखें। परन्तु मुख्य करके सामवेद का गान वादित्र वादन पूर्वक सीखें, और नारद संहिता आदि जो-जो आर्ष ग्रन्थ हैं, उनको पढ़ें। परन्तु भड़ुवे, वेश्या और विषयासक्ति कारक वैरागियों के गर्दभ-शब्दवत् व्यर्थ आलाप कभी न करें।

११. अर्थवेद

तत्पश्चात् अर्थवेद जिसको कि शिल्पविद्या कहते हैं उसको पदार्थ-गुण-विज्ञान, क्रियाकौशल, नानाविध पदार्थों का निर्माण और पृथ्वी से लेकर आकाश पर्यन्त की विद्या को यथावत् सीखकर, अर्थ अर्थात् जो ऐश्वर्य को बढ़ाने वाला है उस विद्या को सीखें।

१२. ज्योतिषशास्त्र

तत्पश्चात् दो वर्ष में ज्योतिषशास्त्र, सूर्य-सिद्धांत आदि जिसमें बीज-गणित, अंकगणित, भूगोल, खगोल और भूगर्भ विद्या है, इसको यथावत् सीखें। तत्पश्चात् सब प्रकार की हस्तक्रिया, यन्त्रकला आदि को सीखें। परन्तु जितने ग्रह, नक्षत्र, जन्मपत्र, राशि और मुहूर्त आदि के फल के विधायक ग्रन्थ हैं, उनको झूठ समझकर कभी न पढ़ें और पढ़ावें।

आर्ष रीति की महिमा—ऐसा प्रयत्न पढ़ने और पढ़ाने वाले करें कि जिससे (२०) वा (२१) इक्कीस वर्ष के भीतर समग्र विद्या तथा उत्तम शिक्षा को प्राप्त होकर मनुष्य कृतकृत्य होकर सदा आनन्द में रहे। जितनी विद्या इस रीति से बीस वा इक्कीस वर्षों में हो सकती है उतनी अन्य प्रकार से (१००) सत वर्ष में भी नहीं हो सकती।

ऋषिप्रणीत ग्रन्थों को इसलिए पढ़ना चाहिए कि वे बड़े विद्वान्, शास्त्र-वित् और धर्मात्मा थे, और अनृषि अर्थात् जो अल्प शास्त्र पढ़े हैं, और जिनका आत्मा पक्षपात सहित है, उनके बनाए हुए ग्रन्थ भी वैसे ही हैं।

प्रामाणिकता—जैसे ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद ये चारों वेद ईश्वरकृत हैं, वैसे उनके ऐतरेय, शतपथ, साम और गोपथ चारों, ब्राह्मण, शिक्षा कल्प, व्याकरण, निघण्टु निरुक्त, छन्द और ज्योतिष ये छः वेदों के उपांग आयुर्वेद, धनुर्वेद गान्धर्ववेद और अर्थ वेद ये चार वेदों के उपवेद इत्यादि सब ऋषि-मुनियों के बनाए ग्रन्थ हैं। इनमें भी जो-जो वेद विरुद्ध प्रतीत हो उस-उस को छोड़ देना, क्योंकि वेद ईश्वरकृत होने से निर्भ्रान्त स्वतः प्रमाण हैं अर्थात वेद का प्रमाण वेद से ही होता है। ब्राह्मण आदि सब ग्रन्थ परत प्रमाण हैं अर्थात् इनका प्रमाण वेदाधीन है।

आज भारत में आर्यसमाज के अनेक गुरुकुल विश्वविद्यालय बनाकर महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रतिपादित पाठविधि के अनुसार शिक्षा प्रदान करे तो शिक्षा जगत में नई क्रांति उत्पन्न हो सकती है।

वैदिक धर्म

(एक संक्षिप्त परिचय)

—श्री ज्ञानेश्वरार्य, दर्शनयोग महाविद्यालय सागपुर-साबरकांठा

वैदिक धर्म का आधार चार वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद हैं। इनमें मानवोपयोगी समस्त ज्ञान विज्ञान मूलरूप में विद्यमान है। इसके अतिरिक्त वेदों की व्याख्या के ऋषिकृत ग्रन्थ (४ ब्राह्मण, ४ उपवेद, ६ दर्शन, १० उपनिषद तथा ६ वेदांग) भी वैदिक धर्म का विस्तार से परिज्ञान कराते हैं।

१—वैदिक धर्म संसार कें सब मतों और सम्प्रदायों से अधिक प्राचीन है। सृष्टि के प्रारम्भ से है।

२—संसार भर के अन्य मत, पन्थ किसी पीर, पैगम्बर, मसीहा, गुरु, महात्मा आदि के द्वारा चलाये हुए हैं, किन्तु वैदिक धर्म ईश्वरीय है, किसी मनुष्य का चलाया हुआ नहीं है।

३—वैदिक धर्म में एक, निराकार, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, न्यायकारी, ईश्वर को ही पूज्य=उपास्य माना जाता है, उसी की उपासना की जाती है, अन्य देवी देवताओं की नहीं।

४—ईश्वर अवतार नहीं लेता अर्थात कभी भी शरीर धारण नहीं करता।

५—जीव और ईश्वर (=ब्रह्म) एक नहीं है, बल्कि दोनों अलग-अलग हैं, और प्रकृति इन दोनों से अलग तीसरी वस्तु है। ये तीनों अनादि हैं।

६—वैदिक धर्म के सब सिद्धान्त सृष्टिक्रम के नियमो के अनुकूल हैं तथा वैज्ञानिक हैं। जबकि अन्य मतों के बहुत से सिद्धांत विज्ञान की कसोटी पर खरे नहीं उतरते।

७—हरिद्वार, काशी, मथुरा आदि तीर्थ नहीं है, तीर्थ तो विद्या का अध्ययन, यम-नियमों का पालन, योगाभ्यास, सत्संग आदि हैं, जिससे मनुष्य दुःख से तैर जाता है।

८—भूत, प्रेत, डाकिन आदि के प्रचलित स्वरूप को वैदिक धर्म में स्वीकार नहीं किया जाता है, यह सब कल्पना मात्र है तथा मिथ्या है।

९—स्वर्ग और नरक किसी स्थान विशेष में नहीं होते। जहां सुख है वहां स्वर्ग है और जहां दुःख होता है वहां नरक है।

१०—स्वर्ग के कोई अलग से देवता नहीं होते। माता, पिता, गुरु, विद्वान तथा पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु आदि ही स्वर्ग के देवता होते हैं।

११—राम, कृष्ण, शिव, ब्रह्मा, विष्णु आदि महापुरुष थे। न ईश्वर थे और न ईश्वर के अवतार थे।

१२—जो मनुष्य जैसा शुभ कर्म करता है, उसको वैसा ही सुख या दुःख फल अवश्य मिलता है। ईश्वर किसी भी मनुष्य के पाप को किसी भी परिस्थिति मे क्षमा नहीं करता है।

१३—मनुष्य मात्र को वेद पढ़ने का अधिकार है, चाहे वह स्त्री हो या शूद्र।

१४—कर्म के आधार पर मानव समाज को चार भागो में बांटा जाता है जिन्हें चार वर्ण भी कहते हैं - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्र।

१५—व्यक्तिगत जीवन को भी चार भागों में बांटा गया है, इन्हें चार आश्रम भी कहते हैं। २५ वर्ष की अवस्था तक ब्रह्मचर्याश्रम, ५० वर्ष की अवस्था तक गृहस्थाश्रम, ७५ वर्ष की अवस्था तक वानप्रस्थाश्रम, और इसके आगे संन्यासाश्रम माना गया है।

१६—जन्म से कोई भी व्यक्ति ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र नहीं होता, अपने अपने गुण, कर्म, स्वभाव से ब्राह्मण आदि कहलाते हैं। चाहे वे किसी के भी घर में उत्पन्न हुए हों।

१७—भंगी चमार आदि कोई भी मनुष्य जाति या जन्म के कारण अछूत नहीं होता। जो गन्दा है वह अछूत है, चाहे वह जन्म से ब्राह्मण हो या अन्य कोई।

१८—वैदिक धर्म पुनर्जन्म को मानता है। अच्छे कर्म अधिक करने पर अगले जन्म में मनुष्य का शरीर और बुरे कर्म अधिक करने पर पशु, पक्षी, कीट, पतंग आदि का शरीर मिलता है।

१९—गंगा यमुना आदि नदियों में स्नान करने से पाप नहीं छूटते। वेद के अनुसार उत्तम कर्म करने से व्यक्ति भविष्य में पाप करने से बच सकता है, किन्तु किए हुए पापों के फल से नहीं बच सकता।

२०—पंच महायज्ञ करना प्रत्येक वैदिक धर्मी के लिए आवश्यक है —१. ब्रह्म यज्ञ (ईश्वर की उपासना करना), २. देवयज्ञ (हवन करना), ३. पितृयज्ञ (माता, पिता, सास, ससुर आदि की सेवा करना), ४. बलिवैश्वदेवयज्ञ (गाय, कुत्ता, चिड़िया, चींटी आदि तथा विधवा, अनाथ, विकलांग आदि को भोजन देना) ५. अतिथियज्ञ (विद्वान, संन्यासी, उपदेशक आदि से उपदेश ग्रहण करना और उनकी सेवा सत्कार आदि करना)।

२१—जीवित माता, पिता, गुरु, विद्वान आदि की सेवा करना ही श्राद्ध कहलाता है। मृत पितरों के नाम पर ब्राह्मणों को दिया हुआ भोजन वस्त्र धनादि मृत पितरों को नहीं मिलता।

२२—मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा को सुसंस्कारी (=उत्तम) बनाने के लिए नामकरण, यज्ञोपवीत इत्यादि १६ संस्कारों का करना कर्तव्य है।

२३—मूर्तिपूजा, छुआछूत, जाति-पांति, जादू टोना, डोरा, धागा, तावीज, शकुन, जन्मपत्री, फलित ज्योतिष, हस्तरेखा, नवग्रह पूजा, अन्धविश्वास, बलि-प्रथा, सतीप्रथा, मांसाहार, मद्यपान, बहुविवाह आदि बातों का वैदिक धर्म में निषेध है।

२४—वेद के अनुसार जब मनुष्य सत्य ज्ञान को प्राप्त करके, निष्काम भाव से शुभ कर्मों को करता है और शुद्ध उपासना से ईश्वर के साथ सम्बन्ध जोड़ लेता है तब उसकी अविद्या (राग द्वेष आदि की वासनाएं) समाप्त हो जाती है, तभी जीव की मुक्ति होती है। मुक्ति में जीव सब दुःखों से छूटकर केवल आनन्द का ही भोग करके फिर लौट कर मनुष्य जन्म लेता है।

२५—वैदिक धर्मी मिलने पर परस्पर 'नमस्ते' शब्द बोलकर अभिवादन करते हैं।

२६—वेद में परमेश्वर के अनेक नामों का निर्देश किया गया है, जिनमें मुख्य नाम 'ओ३म्' है।

विशेष—उपर्युक्त सिद्धांतों से सम्बन्धित विशेष जानकारी के लिए स्वामी दयानन्द सरस्वती लिखित सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, संस्कार विधि आदि ग्रन्थों का स्वाध्याय करें।

शराब पीने की लत में बारह गुना वृद्धि

नई दिल्ली, १४ सितम्बर। सरकार और स्वयं सेवी संगठनों द्वारा शराब की बुराईयों का लगातार प्रचार करने के बावजूद गत वर्षों में शराब के सेवन में १२ गुना और तम्बाकू के सेवन में ४ गुना वृद्धि हुई है। समाज में नशे के बढ़ते प्रचलन से चिन्तित दिल्ली मेडिकल एसोसिएशन ने इस बुराई के खिलाफ जोरदार अभियान चलाने का फैसला किया है।

एसोसिएशन के अध्यक्ष डा० विनय अग्रवाल और नशे के खिलाफ गठित समिति के प्रधान डा० अवधेश शर्मा ने आज यहां एक सम्मेलन में बताया कि समाज में ८ से १० प्रतिशत लोग विभिन्न तरह के नशे स्मैक, कोकिन, मोरफीन, भांग, गांजा, चरस, शराब और ट्रकुलाईजर्स से पीड़ित है।

उन्होंने कहा कि निजी चिकित्सकों और अस्पतालों के बाह्य रोगी विभाग में आने वाले मरीजों में से २५ प्रतिशत शराब, तम्बाकू या अन्य नशीले पदार्थों के दुष्परिणाम की वजह से होने वाली बीमारियों के कारण आते हैं।

डा० अग्रवाल ने कहा कि नशीले पदार्थों का सेवन और इसका बढ़ता दायरा एक गम्भीर समस्या है, जिसका एक कानूनी पहलू भी है। उन्होंने कहा कि इस समस्या के चिकित्सकीय पहलू को लेकर दिल्ली मेडिकल एसोसिएशन ने अभियान चलाने का फैसला किया है। इस अभियान की शुरुआत १८ सितम्बर को केन्द्रीय कल्याण मन्त्री श्री सीताराम केसरी ने की।

वार्षिकोत्सव

—आर्य समाज टाटा फैजाबाद का १०२ वां वार्षिकोत्सव दिनांक २५ नवम्बर से २९ नवम्बर तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों के अतिरिक्त महिला सम्मेलन, संस्कृत सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन आदि का आयोजन भी किया गया है। समारोह में आर्य जगत के प्रतिष्ठित विद्वान एवं भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

—दाधिया (अलवर) आर्य कन्या गुरुकुल दाधिया का वार्षिकोत्सव हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी २७-२८ नवम्बर १९९३ को समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। अतः समस्त आर्य जनों, आर्य समाजों, स्त्री आर्य समाजों एवं अन्य आर्य संस्थाओं से प्रार्थना है कि उक्त तिथि को अभी से अंकित कर लेवें और अधिक से अधिक संख्या में गुरुकुल दाधिया पहुंचने की कृपा करें तथा सहयोग प्रदान करें।

—आर्य समाज नया नगल जि० रोपड़, पंजाब का ३३ वां वार्षिकोत्सव २७ सितम्बर से ३ अक्टूबर तक समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वानों तथा भजनोपदेशकों ने अपने ज्ञान वर्धक प्रवचनों एवं मनोहारी भजनों से श्रोताओं का ज्ञान वर्धन किया। इस अवसर पर प्रतिदिन सायंकाल को विभिन्न व्यक्तियों के घर पर पारिवारिक सत्संग का आयोजन किया गया तथा अनेकों अन्य सम्मेलन आयोजित किये गये। अन्तिम दिवस ऋषि लंगर में सैकड़ों व्यक्तियों ने भोजन ग्रहण किया।

—आर्य समाज बिरला लाइन्स दिल्ली का ६२ वां वार्षिकोत्सव ४ से १० अक्टूबर तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आचार्य रमेशचन्द्र जी के ब्रह्मत्व में अथर्ववेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया है। प्रतिदिन रात्रि में प० प्रकाशचन्द्र जी द्वारा वेद कथा सम्पन्न होगी। इस अवसर पर श्री अभयदेव जी शास्त्री एवं श्री शिवदेव जी बेधड़क के द्वारा मधुर भजनोपदेश होंगे। अन्तिम दिवस ऋषि लंगर का आयोजन भी किया गया है।

गुरु विरजानन्द दिवस

गुरुकुल कांगड़ी ब्रह्मचर्याश्रम में बाल सभा द्वारा आयोजित गुरु विरजानन्द दिवस पर सम्बोधित करते हुए वहां के मुख्याधिष्ठाता प० महेन्द्रकुमार ने कहा कि यदि गुरु विरजानन्द के आशीर्वाद में महर्षि दयानन्द ने विद्याध्ययन न किया होता तो वैदिकता का पुनरुद्धार होकर भारत अविद्या, अन्धविश्वास, पाखण्ड, दुर्व्यसन, शोषण, दासता के अन्धकार से न उभर पाता।

श्री कुमार ने कहा कि आज पुनः भारत राष्ट्र की स्वाधीनता नैतिकता स्वाभिमानिकता, संस्कृत धरोहर को नष्ट कर अखण्डता को चुनौती दिये जाने का कुचक्र चलाया जा रहा है।

छात्रों को शिक्षित होकर योग्य प्रतिभाशाली-निष्ठावान, चरित्रवान राष्ट्रभक्त नागरिक बनकर राष्ट्र रक्षार्थ संकल्प लेना चाहिए।

आयोजन अध्यक्ष श्री अनेश्वरपाल शास्त्री ने ब्रह्मचारियों को गुरु विरजानन्द और उनके परमभक्तशिष्य महर्षि दयानन्द के प्रेरक प्रसंग से लाभान्वित किया। सेनापति ब्रह्मचारी अभयकुमार ने धन्यवाद दिया।

—महेन्द्र कुमार, सहायक मुख्याधिष्ठाता

पं० महेन्द्र प्रताप शास्त्री का अवसान

आर्य जगत के महान शिक्षाविद श्रीयुत पं० महेन्द्र प्रताप जी शास्त्री, एम० ए०, एम० ओ० एल०, कुलपति, कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, हाथरस का ९३ वर्ष की आयु में अचानक ब्रेन हेमरेज हो जाने से ८ सितम्बर १९९१ को कन्या गुरुकुल में देहावसान हो गया। गुरुकुल अत्यन्त शोकाकुल है।

श्री शास्त्री जी सुप्रसिद्ध आर्य समाजी श्री ठा० माधवसिंह जी के सुपुत्र थे। उनका जन्म दीपावली सन १८९९ को आगरा के गोकुलपुरा मुहल्ले में काला महल नाम से प्रसिद्ध मकान में हुआ था। यह वह मकान था, जिसको मुतहा समझा जाता था और कोई किराए पर न लेता था। श्री शास्त्री जी के पिता ठा० माधव सिंह जी वैदिक विचारधारा से ओतप्रोत महर्षि दयानन्द के सच्चे अनुयायी थे। वे अखिल भारतीय शुद्धि सभा के महामन्त्री थे उन्होने साठ हजार मलकानों को शुद्ध किया था। उस समय स्वामी श्रद्धानन्द जी अखिल भारतीय शुद्धि सभा के प्रधान थे। ठा० माधवसिंह जी ने वह काला-महल मकान किराए पर लिया, वहीं श्री शास्त्री जी का जीवनदीप प्रज्वलित हुआ।

श्री शास्त्री जी की १०वीं तक की प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल विश्व विद्यालय, वृन्दावन में हुई। तत्पश्चात शास्त्री जी पंजाब विश्वविद्यालय, लाहौर से शास्त्री, बी० ए० इलाहाबाद विश्वविद्यालय, एम०ए० (द्वय) पंजाब विश्वविद्यालय एवं आगरा विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण किया पजाब विश्व विद्यालय, लाहौर से ही एम० ओ० एल० (मास्टर आफ ओरियन्टल लर्निंग) की उपाधि प्राप्त की।

श्री शास्त्री जी ने अपने जीवन का मुख्य कार्यक्षेत्र शिक्षा जगत को बनाया उनका दृढ़ विश्वास था कि अध्यापक राष्ट्रनिर्माता होता है। उन्होंने यावज्जीवन राष्ट्र के लिए उत्तम नागरिक तैयार करने का यत्न किया, और उसमें उन्हें अभूतपूर्व सफलता मिली। श्री शास्त्री जी ने अपनी सेवायें राजाराम डिग्री कालेज कोल्हापुर में संस्कृत के प्रोफेसर के रूप में प्रारम्भ की। तत्पश्चात शाहपुरा के राजकुमारों के गुरु एव अभिभावक रहें। १९२८ में इंगलैण्ड एवं फ्रांस की शैक्षिक यात्रा की। तत्पश्चात डी०ए०वी० कालेज देहरादून में प्रोफेसर, डी०ए०वी० कालेज लखनऊ एवं दयानन्द दीक्षा विद्यालय, लखनऊ के प्रधानाचार्य, जनता वैदिक स्नातकोत्तर कालेज, बड़ौत मेरठ) के प्रधानाचार्य, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के कुलपति एवं विजिटर तथा कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, हाथरस (अलीगढ़) के १९६४ से १९९१ तक आनरी कुलपति रहे।

इसके अतिरिक्त श्री शास्त्री जी उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद की हिन्दी, पाली, प्राकृत, पंजाबी, सिन्धी नेपाली समिति के सयोजक, आगरा विश्वविद्यालय सीनेट के सदस्य, संस्कृत समिति आगरा विश्वविद्यालय के सदस्य, लखनऊ विश्वविद्यालय, कोर्ट एवं एकेडेमिक कौंसिल के सदस्य रहे। प्रधान प्रदेशीय विद्यार्य सभा उ० प्र०, प्रस्तोता, गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन, निदेशक, भारतीय विद्या संस्थान, दिल्ली, प्रशासक, डी०ए०वी० कालेज, बुलन्दशहर, प्रशासक केदारनाथ सेकसरिया आर्य कन्या इन्टर कालेज, आगरा, प्रबन्धक आ० एंग्लो वैदिक इण्टर कालेज, देहरादून, ट्रस्टी नारी शिल्प मन्दिर इण्टर कालेज, देहरादून, संयोजक, प्रधान, हिन्दी समिति देहरादून संस्थापक, हरिजन बालिका विद्यालय, देहरादून, प्रधान, हरिजन विद्या सभा, देहरादून आदि विभिन्न पदों पर रहकर उन्होंने शिक्षा जगत की महत्वपूर्ण सेवा की। श्री शास्त्री जी ने 'काव्य-कुसुमावच" ग्रन्थ का प्रणयन किया। 'कादम्बरी-सार' कुमार सम्भव टीका' 'संस्कृत प्रभा' टीकाओं का प्रणयन किया। उन्होंने महात्मा नारायण स्वामी अभिनन्दन-ग्रन्थ, पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय अभिनन्दन, ग्रन्थ, पं० गंगाप्रसाद चीफ जज (टेहरी) अभिनन्दन-ग्रन्थ का सम्पादन किया तथा आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० लखनऊ से प्रकाशित दैनिक आर्य मित्र के अधिष्ठाता रहे।

श्री शास्त्री जी में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली और कालेज शिक्षा प्रणाली दोनों का अद्भुत समन्वय रहा। उन्होंने दोनों ही प्रणालियों में शिक्षा ग्रहण की और दोनों में ही कार्य किया। दोनों ही की विशेषताओं को एक दूसरे में सन्निविष्ट कर अध्यापन और प्रशासन में सफल प्रयोग किया। संस्थाओं का निर्माण और विकास उनकी प्रमुख विशेषता रही।

श्री शास्त्री जी शैक्षिक सेवाओं के साथ-साथ सामाजिक सेवा कार्य में भी अग्रणी रहे। उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र०, मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०, सदस्य सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली उत्तर प्रदेश से अन्तरंग सदस्य, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, प्रधान, आर्यसमाज, देहरादून अध्यक्ष, भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद, हैदराबाद सत्याग्रह संचालन समिति, दिल्ली के उत्तर प्रदेश से सदस्य, पश्चिमी उत्तर प्रदेश के हरिजन सेवक संघ के संयोजक, देहरादून जिले के हरिजन सेवक सघ के मन्त्री, प्रधान श्रद्धानन्द अनाथ वनिता आश्रम, देहरादून, अधिष्ठाता जात-पात तोड़क मण्डल, उ० प्र०, अधिष्ठाता, आर्यनगर सेटिलमेंट, लखनऊ आदि विभिन्न पदों पर रहे। श्री शास्त्री जी ने गढ़वाल की डोला पालकी समस्या को सफलता पूर्वक सुलझाया।

श्री महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री एक कुशल संयोजक, भी थे, वे आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०, के स्वर्ण जयन्ती समारोह के सयोजक, महात्मा नारायण स्वामी जन्म शताब्दी समारोह वृन्दावन, के संयोजक, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र० के तत्वावधान में आयोजित दयानन्द दीक्षा शताब्दी, मथुरा के संयोजक, काशी शास्त्रार्थ एव पाखण्ड खण्डिनी पताका शताब्दी समारोह, वाराणसी के संयोजक तथा हरि० हीरक जयन्ती समारोह, कन्या गुरुकुल हाथरस के संयोजक रहे।

श्री शास्त्री जी ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के अरबी के प्राध्यापक श्री महेशप्रसाद 'आलिम फाजिल' की पुत्री कु० कल्याणी देवी को पौराणिकों की नगरी काशी में वेदाध्ययन का अधिकार दिलाने का सफल प्रयत्न किया।

श्री शास्त्री जी राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत व्यक्ति थे। अंग्रेजों के शासनकाल में १९३० में महात्मा गांधी के देहरादून पधारने पर उन्होंने सार्वजनिक सभा की व्यवस्था की तथा सभा का संचालन किया। १९६२में चीनी आक्रमण के समय सभाओं का आयोजन किया जलूस निकाले तथा धन संग्रह कर राष्ट्रीय रक्षा कोष में भेजा। १९३४ में बिहार भूकम्प के समय धन संग्रह कर भेजा। इस प्रकार देश पर आई किसी भी विपत्ति के समय उन्होंने यथाशक्ति स्वयं तथा अन्यों को प्रेरित कर सहयोग किया।

श्री शास्त्री जी में स्वदेश, स्ववेश, स्वभाषा, स्वसभ्यता, स्वसंस्कृति के प्रति अपार निष्ठा थी। उन्होने अपने पुत्र श्री यतीन्द्र प्रताप जी को देश सेवा में संलग्न किया। उन्होंने मेजर जनरल पद से अवकाश ग्रहण किया है।

श्री शास्त्री जी सौम्य स्वभाव के मिलनसार सुन्दर व्यक्तित्व के धनी अनुशासन प्रिय व्यक्ति थे। प्रेमपूर्वक मीठी वाणी में बोलना उनमे प्रधान गुण था। कर्तव्यनिष्ठा उनके अन्दर कूट-कूट कर भरी हुई थी। उनके जीवन की सारी सफलताओं का श्रेय उनकी कर्मनिष्ठा है। वे अपने पूज्यपिता के अत्यन्त ऋणी थे। प्रायः उनके मुख से उदगार निकलते -मैं जो कुछ भी आज हूं, अपने पिता की बदौलत हूं। वे अटल ईश्वर विश्वासी थे। ईश्वर कृपा का वे साक्षात अनुभव करते थे तथा प्रायः कहते थे ईश्वर मेरे साथ विशेष पक्षपात करता है। उस ईश्वर की मेरे ऊपर बड़ी कृपा है। उसी अटल विश्वास के सहारे अन्तिम समय में भी उन्होंने कष्ट नहीं भोगा, और ८ सितम्बर १९९१ को मात्र २ घण्टे की रुग्णावस्था में शान्तिपूर्ण मुखमुद्रा की स्थिति में इहलोक लीला समाप्त की।

श्री शास्त्री जी एक दिव्य विभूति थे, जिधर भी उन्होंने कदम बढ़ा दिए, उधर ही पथ जगमगा उठा, जिस क्षेत्र में पदार्पण किया, उसी को चार चांद लगा दिए। कन्या गुरुकुल हाथरस में भी जब वे पधारे, १६५ छात्रायें थी, ५०,००० रु० का बजट था और वर्तमान समय में लगभग ७०० ब्रह्मचारिणियां तथा ३० लाख रु० का बजट है।

माता लक्ष्मी देवी द्वारा पुनरुज्जीवित एवं संचित लक्ष्य इस पौधे को अपनी धर्म पत्नी श्रीमती कमलकुमारी जी के सहयोग से उन्होंने विशाल पुष्पोद्यान का रूप प्रदान किया। प्रायः कहा करते—'माता लक्ष्मी देवी का त्याग, तप ही फल-फूल रहा है। श्री शास्त्री जी को कन्या गुरुकुल की हीरक जयन्ती

(शेष पृष्ठ १९ पर)

रजिस्टर्ड पंजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०७६/९३ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१०-१०-१९९३) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं०U (G)९३
R. N. 626/57 Licensed to post without prepayment Licence No. U (G) 93 Post in N.D.P.S.O.on 7-8-10-1993

शिक्षण संस्थाओं के लिए सूचना

भारत वर्ष में आर्य समाज की शिक्षा संस्थाओं, गुरुकुलों, विद्यालयों, महाविद्यालयों का विवरण एकत्र किया जा रहा है। इस सम्बन्ध में सार्वदेशिक साप्ताहिक के ५ सितम्बर, १९९३ के अंक में एक विज्ञप्ति प्रकाशित की गई थी।

सभी शिक्षण संस्थाओं के प्रबन्धकों, प्रधानाचार्यों से पुन: निवेदन है कि वे अपनी संस्था का पूर्ण विवरण संयोजक सार्वदेशिक विद्यार्य सभा, दयानन्द भवन, आसफ अली रोड नई दिल्ली-११०००२ के पते पर शीघ्रातिशीघ्र भेजने की कृपा करें तथा इसकी एक प्रति सम्बन्धित प्रतिनिधि सभा को भेजने का कष्ट करें।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री, मन्त्री

आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर

सार्वदेशिक आर्य वीर दल जनपद सहारनपुर के तत्वावधान में २२ अक्टूबर से ३० अक्टूबर तक हायर सैकेन्डरी स्कूल फतेहपुर (बेहट) में आर्य वीर दल ब्रह्मचर्य शिविर का आयोजन किया गया है। शिविर में व्यायाम, सन्ध्या, यज्ञ, आसन प्राणायाम, भारत खेल आदि के प्रशिक्षण के साथ वैदिक सिद्धान्तों का ज्ञान कराने हेतु धार्मिक व राष्ट्र उपयोगी बनाया जायेगा। प्रशिक्षण का संचालन समरसिंह प्रधान शिक्षक सार्वदेशिक आर्य वीर दल पलड़ी करेंगे। शिविरार्थियों को प्रमाण पत्र तथा प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय आने वालों को विशेष पुरस्कार दिये जायेंगे।

आर्य समाज में गणेशोत्सव

इस वर्ष आर्य समाज सान्ताक्रुज बम्बई में स्वर्ण जयन्ति वर्ष के अवसर पर पहली बार गणेशोत्सव रविवार दिनांक १९ सितम्बर से एक नये रूप में मनाया गया। गणेश या गणपति के वैदिक स्वरूप और कलात्मक प्रतीकात्मक महत्व एवं अलंकारिक रहस्यों पर प्रदर्शनी व प्रवचन हुए। प्रातः साप्ताहिक यज्ञ के पश्चात "गणेश का वास्तविक स्वरूप" विषय पर पण्डित प्रकाशचन्द्र जी शास्त्री के प्रवचन हुए तथा १०-३० बजे से सायं ६ बजे तक गणपति के विशेष मन्त्रों से आहुतियां दी गई।

वेदों में गणपति यज्ञेश्वर अग्नि को भी कहते हैं। वास्तव में अग्नि ही यज्ञ है। यज्ञ को प्रजापति (गणपति भी कहते हैं) क्योंकि यज्ञ से बादल, बादलों से वर्षा, वर्षा से अन्न, अन्न से प्रजाओं की उत्पत्ति पालन एवं पोषण होता है।

गणेश या गणपति के इसी स्वरूप को लेकर : इस दिन से आर्य समाज मन्दिर सान्ताक्रुज में सार्वजनिक प्राजापत्य यज्ञ का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर एक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया है। जिसमें गणपति के विभिन्न नामो की व्याख्या वेद मन्त्रो के आधार पर आम दर्शकों के सामने प्रदर्शित की जा रही है। जिससे गणेश भक्तों के आध्यात्मिक ज्ञान में वृद्धि हो सके। यह प्रदर्शनी २९ सितम्बर तक रही। प्रतीकात्मक यज्ञ भी २९ सितम्बर अनन्त चतुर्दशी तक जारी रहा।

आवश्यकता है

जयपुर में कार्यरत निजी चिकित्सक—आयु २५ वर्ष, योग्यता बी० ए० आयुर्वेद रत्न कद ५ फीट ५ सेन्टीमीटर, आय चार अंकों में, के लिए योग्य कुलीन परिवार की शिक्षित कन्या की आवश्यकता है। गुण कर्म स्वभाव को प्राथमिकता दी जाएगी। युवक के पिता प्रसिद्ध आर्य विद्वान व वैदिक मिशनरी हैं।

पत्र व्यवहार का पता :—
वैद्य मुनिदेव उपाध्याय देवी दुर्गा भवन
भुवनेश्वर बाग, सरदार पटेल मार्ग, जयपुर (राज०) पिन-३०२००१

महेन्द्र प्रताप शास्त्री

(पृष्ठ १२ का शेष)

के अवसर पर आर्य समाज शिक्षा दर्शन आचार्य महेन्द्रप्रताप शास्त्री अभिनन्दन ग्रन्थ तथा एक रजत प्रशस्तिपत्र भेंट किया गया था।

परिवार में धर्मपत्नी श्रीमती अक्षयकुमारी जी शास्त्री, मुख्याधिष्ठात्री, कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, हाथरस का देहावसान १४ दिसम्बर १९९० को हो गया था। श्री शास्त्री जी के दो सुपुत्र तथा एक सुपुत्री है।

दिनांक १८-९-९३ को शान्तियज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आर्य गुरुकुल एटा के उपाचार्य श्री रामदत्त जी के निर्देशन में यजुर्वेद-शतकम् तथा यजुर्वेद के ४० वें अध्याय से यज्ञ सम्पन्न हुआ। गुरुकुल परिवार एवं बाहर से आये मित्रों द्वारा हार्दिक भावभीनी श्रद्धांजलि समर्पित की गई। सारा वातावरण शोक पूरित हो उठा। अनेक स्थानों से शोक सम्वेदना-पत्र प्राप्त हुए।

उस महान विभूति को गुरुकुल परिवार का श्रद्धावनत शतशःनमन।

—कमला स्नातिका
मुख्याधिष्ठात्री, कन्या गुरुकुल महा विद्यालय, हाथरस

वैदिक धर्म ग्रहण किया

कानपुर। आर्य समाज मन्दिर गोविन्द नगर में समाज के तथा केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने कानपुर निवासी एक ईसाई परिवार तथा इस परिवार की एक युवती से विवाह करने वाले ईसाई युवक अनिल विलियम को वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) की दीक्षा देकर हिन्दू धर्म में प्रवेश कराया।

शुद्धि संस्कार तथा यज्ञोपवीत धारण कराने वाले जिसमें पति, पत्नी व पुत्री हैं, के नाम सुरेश कुमार, शान्ती देवी, तथा सुनीता रखने की घोषणा की। तत्पश्चात २० वर्षीया सुनीता का विवाह अनिल कुमार नामक युवक से वैदिक रीति से कराया। शुद्ध होने वाले चारों लोगों ने बताया कि उनके दादा व परदादा ने हिन्दू धर्म छोड़ने की जो भूल की थी उसको हम श्री देवीदास आर्य की प्रेरणा से सुधार रहे हैं।

—बाल गोविन्द आर्य मन्त्री

आदर्श विवाह

श्री नरेन्द्र कुमार की सुपुत्री सौभाग्यवती मेधा शर्मा का दहेज रहित आदर्श विवाह फतेहपुर निवासी महा० ब्रह्मानन्द जी के होनहार सुपुत्र चि० ओंकार शर्मा के साथ आर्य समाज बनत मुजफ्फर नगर में अत्यन्त सादे तरीके से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर क्षेत्र के अनेकों गणमान्य व्यक्तियों गुरुकुल बनत के आचार्य तथा अध्यापकों ने उपस्थित होकर वर कन्या को अपने शुभाशीष से अनुगृहीत किया।

वैदिक संपति छप रही है

पृष्ठ संख्या ७००, मूल्य १२५ रुपये

२४ अक्टूबर १९९३ तक अग्रिम धन देने पर ८० रु० में

आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान पं० रघुनन्दन शर्मा द्वारा लिखित "वैदिक सम्पत्ति" २०×३०×८ साइज में शीघ्र प्रकाशित हो रही है। २४ अक्टूबर १९९३ तक मूल्य अगाऊ भेजने पर प्रति पुस्तक ८०) रु० होगा, डाक व्यय २०) रु० प्रति पुस्तक अलग से होगा। अपनी प्रति आरक्षण हेतु मनीआर्डर अथवा चैक या बैंक ड्राफ्ट डा० सच्चिदानन्द शास्त्री, मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली के पते पर भेजें।

—सम्पादक

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य

महर्षि दयानन्द उवाच

● देखो ! तुम्हारे सामने पाखण्ड मत बढते जाते हैं। ईसाई मुसलमान तक होते जाते है। तनिक भी तुम से अपने घर की रक्षा और दूसरों का मिलाना नहीं बन सकता। बने तो तब, जब तुम करना चाहो। जब लो (तुम) वर्त्तमान और भविष्यत मे उन्नतिशील नही होते तब लो आर्यावर्त्त और इस देशस्थ मनुष्यों की वृद्धि नही हो सकती।

● जिनका सहाय धर्म है उन्ही का सहाय परमेश्वर है। जब बुरे बुराई न छोड तो भले भलाई क्यो छोडें?

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष। ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३१ अंक ३८] दयानन्दाब्द १६६ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९४ कार्तिक शु० २ वि० २०५० १७ अक्तूबर १९९३

गोवंशकी हत्या पर पूर्णप्रतिबंध, पूर्ण नशाबन्दी तथा अंग्रेजी हटाओ भारतीय भाषायें लाओ

आर्य समाज का तीन सूत्रीय कार्यक्रम

आगामी चुनाव मे उक्त तीन मुद्दों के समर्थक प्रत्याशियों को ही वोट दे

आर्य जनता से स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का अनुरोध

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने देश की समस्त आर्य समाजो से अनुरोध किया है कि वह आगामी विधान सभाओं के चुनावो मे ऐसे ही प्रत्याशियो का समर्थन करें जो गुजरात सरकार की तरह गोवश की हत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाने तथा आन्ध्र प्रदेश सरकार की तरह पूर्ण नशाबन्दी कानून लागू करने और अंग्रेजी हटाओ भारतीय भाषाए लाओ इन तीन मुद्दो के पूर्ण समर्थक हों।

स्वामी जी ने गुजरात सरकार द्वारा गोवश की हत्या पर प्रतिबन्ध लगाये जाने तथा आन्ध्र प्रदेश सरकार द्वारा नशाबन्दी कानून की घोषणा करने पर दोनो प्रान्तीय सरकारो को बधाई सन्देश भी भेजे हैं। स्वामी जी ने बताया कि सभी प्रान्तीय सरकारो एव केन्द्र सरकार को उन्ही सिद्धान्तो का पालन करना चाहिए जिसकी घोषणा आज दी से पूर्व कांग्रेस द्वारा की गई थी।

भूकम्प पीड़ितों की सहायता कीजिये

सार्वदेशिक सभा ने भूकम्प पीडितो की सेवा के लिये लातूर उस्मानाबाद तथा अन्य कई जगहो पर राहत केन्द्र तत्काल खोल दिये थे और एक लाख रुपये की राशि वहां पर तुरन्त भिजवा दी थी। सभाप्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आर्य समाजो स्वयसेवी सगठनो एव दानी महानुभावों से अपील की है कि इस भीषण त्रास ी से पीडित जनता की सेवा के लिये अपना हर प्रकार का सहयोग प्रदान करें और आर्य समाज के राहत केन्द्रो को सुचारु रूप से चलाने के लिये अधिक से अधिक धन राशि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली २ के पते पर भेजें।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
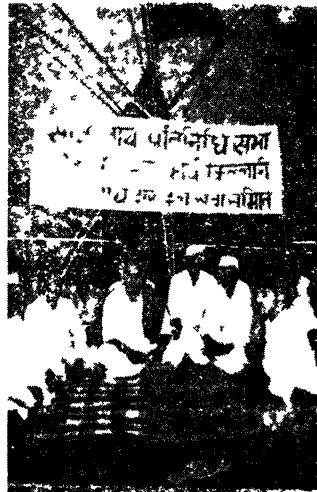
महाराष्ट्र मे आये भीषण भूकम्प से त्रस्त मगरूल गाव मे सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान प० वन्देमातरम रामचन्द्र राव पीडितो से पूछताछ तथा उनकी सहायता तथा राहत देने के कार्यक्रम पर विचार विमर्श करते हुये। साथ मे ममरून आर्यसमाज के प्रधान श्री गडाके काशीराम महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान बलीराम पाटिल तथा अन्य कार्यकर्ता।

संपादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

भूकम्प पीड़ितों की सहायतार्थ आर्य समाज न्यू मोतीनगर में
स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को ११००० की थैली भेंट

दिल्ली ८ अक्टूबर। आर्य समाज मन्दिर न्यू मोतीनगर में आयोजित एक समारोह में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का भव्य स्वागत किया गया। समारोह मे क्षेत्र के गणमान्य व्यक्ति विद्यालय की अध्यापिकायें तथा अन्य व्यक्ति उपस्थित थे। आर्य समाज न्यू-मोतीनगर के प्रधान श्री तीर्थराम टंडन ने महाराष्ट्र के भूकम्प पीड़ितों की सहायतार्थ स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को ११ हजार रुपए की थैली भेंट की। इस अवसर पर बोलते हुए स्वामी जी ने समस्त आर्य जनों एवं आर्य समाजों से अपील करते हुए कहा कि महाराष्ट्र मे आई इस विपदा से पीड़ित मानवता की सेवा का कार्य आर्य समाज बड़े पैमाने पर कर रहा है। महाराष्ट्र में सार्व० सभा के वरिष्ठ उपप्रधान पंडित वन्देमातरम रामचन्द्रराव इस कार्य की देखरेख कर रहे हैं। सभा ने वहां पर तत्काल एक लाख रुपयों की सहायता भेजी थी। परन्तु वहां की स्थिति को देखते हुए अत्यधिक धन की आवश्यकता है। श्री तीर्थराम जी टंडन ने सर्वप्रथम यह समारोह आयोजित करके जो ११ हजार रुपए की राशि प्रदान की है इसका अनुकरण सभी आर्य समाजों तथा आर्य संस्थाओं को करना चाहिए और अधिक से अधिक धन एकत्रित करके सभा को अतिशीघ्र भेजें जिससे पीड़ितों की सहायता की जा सके। स्वामी जी ने बताया कि पं० वन्देमातरम् रामचन्द्र राव जी कल दिल्ली आ रहे हैं उन्होंने वहां पर जो कार्य किए हैं और भूकम्प पीड़ित क्षेत्र की जो वास्तविक स्थिति है उससे वे अवगत करायेंगे। उनकी रिपोर्ट सार्वदेशिक में प्रकाशित की जायेगी।

आर्य जनता सावधान रहे
आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्भ का प्रस्ताव

यह सभा, आर्य समाज संगठन की सर्वोच्च संस्था-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजीकृत) महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली जिसके प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती और मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री हैं, के प्रति पूर्ण निष्ठा व्यक्त करती है और इसी सभा तथा उपरोक्त अधिकारियो के आदेश और निर्देशो को ही अंतिम मानती है। कैलाशनाथ सिंह, अग्निवेश और इन्द्रवेश आदि जिन लोगों को भ्रष्टाचार और अनुशासनहीनता के कारण आर्य समाज की प्राथमिक सदस्यता से वर्षों पूर्व से निष्कासित किया हुआ है, के द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा और उसके अधिकारियों के विषय में जो मनगढ़न्त और झूठे वक्तव्य दिये गये हैं, उनकी कड़ी निन्दा और भर्त्सना करती है।'

—रमेश चन्द्र
प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा म. प्र. व विदर्भ

पं० क्षितीश वेदालंकार स्मृति न्यास

दिवंगत पं० क्षितीश वेदालंकार की पुण्य-स्मृति में उनके द्वारा अपनाए गए कार्यक्षेत्रों में कार्यरत और उभरती प्रतिभाओं को सम्मानित प्रोत्साहित एवं विकसित करने के लिए उपर्युक्त नाम से एक धर्मार्थ न्यास की स्थापना की गई है।

न्यास के कार्यकलाप का शुभारम्भ पं० क्षितीश वेदालंकार की प्रथम पुण्य तिथि (२४ दिसम्बर, १९९३) पर अनेक गुरुकुलों के छात्रों की विभिन्न विषयों पर प्रतियोगिताओं से किया जा रहा। यह आयोजन स्व० आचार्य श्री राजेन्द्रनाथ शास्त्री द्वारा स्थापित श्रीमद् दयानन्द वेद विद्यालय, गुरुकुल गौतम नगर, नई दिल्ली में होगा।

न्यास के उद्देश्य की पूर्ति के लिये न्यास के कार्यकलापों में आपका आर्थिक एवं अन्य सहयोग प्रार्थनीय है।

लाला रामलाल मलिक पर पुस्तक का प्रकाशन

आर्य समाज के सुप्रसिद्ध नेता लाला रामलाल मलिक ने विभिन्न सभाओं शिक्षण संस्थाओं, विद्यालयों, गुरुकुलों, साप्ताहिक पत्रों की सराहनीय सेवा की है। उन्होंने देश, देशान्तर में वेद प्रचार यात्राओं का भी आयोजन किया। उनकी स्मृति में लाला रामलाल मलिक व्यक्तित्व एवं कृतित्व नामक पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। आर्यजगत के माननीय नेताओं, विद्वानों तथा लाला जी के सहयोगियों से विनम्र निवेदन है कि वे उनके सम्बन्ध मे संस्मरणात्मक लेख/कविता आदि "दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा" के नाम १५-हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ पते पर यथाशीघ्र भेजने की कृपा करें।

—डा० धर्मपाल महामन्त्री

ऋषि-निर्वाणोत्सव

१३ नवम्बर ९३, शनिवार, प्रातः ८ से १२ बजे तक

रामलीला मैदान, नई दिल्ली में

आमन्त्रित वक्ता :

श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती

डा० रामप्रकाश —प्रो० उत्तमचन्द 'शरर' —डा० वाचस्पति उपाध्याय डा० प्रेमचन्द श्रीधर।

दीपावली के पावन पर्व पर आप सब सपरिवार एवं इष्ट मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

इस अवसर पर डा० सुधीरकुमार गुप्त को पं० केदारनाथ दीक्षित वैदिक विद्वान् पुरस्कार से सम्मानित किया जायेगा।

निवेदक :

महात्मा धर्मपाल	डा० शिवकुमार शास्त्री
प्रधान	महामन्त्री

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य
१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

एक योगी अवधूत चाहिए
स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

वैदिक धर्म की रक्षार्थ संगठन सख्त मजबूत चाहिये।
भेदभाव और ऊंचनीच यहां कोई न छूआछूत चाहिये॥
आर्य जन सब प्रेमपूर्वक आपस में मिल रहना सीखें।
साधु सज्जन से प्रीति दुष्ट दुर्जन के शिर पर जूत चाहिये॥
सच्चा सैनिक दयानन्द का तूफानों से टकराता है।
समरांगण में कूद पड़े बन अरिदल को यमदूत चाहिये॥
हों सात पांच बेटे बेटी सारे कपूत तो क्या फायदा।
मर्यादा मे बंधा हुआ श्रीराम सा पूत सपूत चाहिये॥
जिसने तप त्याग गुणादिक से सेवक बन कर दिखलाया।
ऐसा बलधारी बजरंगी श्री हनुमान सा दूत चाहिये॥
विष के प्याले पिये स्वयं औरों को अमृत पिला गया।
जग में स्वामी दयानन्द सा एक योगी अवधूत चाहिये॥

अधिष्ठाता—वेद प्रचार विभाग
अवैतनिक—कार्यकर्ता दिल्ली सभा

पाकिस्तान की आर्थिक अवस्था

श्री के० नरेन्द्र

पिछले कुछ समय तक पाकिस्तान को अमरीका से काफी मात्रा मे आर्थिक सहायता मिलती रही है और इस कारण से किसी ने इस बात की तरफ ध्यान नहीं दिया। कि देश मे अपनी आर्थिक स्थिति क्या है असल बात यह है कि जबसे पाकिस्तान वजूद मे आया है उस पर बड़े बड़े जागीरदारो का प्रभुत्व रहा है। उन्होने देश की तरक्की की ओर ध्यान नही दिया जो सैकड़ो वर्षों तक विदेशी (देशो) मुल्को का गुलाम रहने के कारण आजादी हासिल करने पर देनी चाहिए थी। इसके विपरीत पाकिस्तानी इस बात पर गर्व करते रहे कि इनके देश मे हर वो वस्तु प्राप्त हो सकती है। जो किसी दूसरे देश मे तैयार होती है। इसका परिणाम है कि विदेशी लोग पाकिस्तान को काफी उन्नत देश समझते रहे और इन्होने यह ना देखा कि पाकिस्ता की जो दिखने वाली खुशहाली है वो इसकी अपनी उन्नति का प्रमाण नही है। अपितु विदेशो से प्राप्त की हुई चीजो की बदौलत है।

जो पाकिस्तानी इस अवस्था से मायूस थे इन्हे अपने प्रधानमन्त्री के फैसलो पर काफी इतमनान हुआ कायम मकाम प्रधानमन्त्री श्री कुरैशी ने सूरत हालात का जायजा लेने के बाद पाकिस्तानी जनता से कहा देश की आर्थिक स्थिति अत्यन्त शोचनीय तथा अफरा तफरी का शिकार है। सरकार के पास विदेशो से मंगवाए जाने वाले माल की कीमत अदा करने के लिए पैसा नही है। और तो और इसके पास अपने प्रतिदिन व्यय के लिए भी पैसा नही है। ऐसी अवस्था मे इनकी सरकार के लिए कठोर कदम उठाने के अलावा और कोई चारा नहीं था। श्री कुरैशी ने जो कहा इसका एक-एक शब्द सच्चाई पर आधारित था हर कोई देख रहा था कि देश आर्थिक अफरा तफरी की ओर बढ रहा है। परन्तु किसी मे इतनी हिम्मत न थी कि वो इस गिरावट को रोके। यह काम श्री कुरैसी ने ही किया। इसका सौभाग्य है कि इन्हें बेनजीर भुट्टो नवाज शरीफ और भूतपूर्व सदर गुलाम इसहाक खा का आशीर्वाद प्राप्त था आपने जो कुछ किया वो और कोई नही कर सकता था।

माह जून में नवाज शरीफ की सरकार ने अपने देश का ९३-९४ का बजट पेश किया जिसमे आपने बताया कि सरकार की आय १९५१४ करोड़ रुपए होगी। और व्यय ३३२५२ करोड़ रुपए। इस तरह १३७३८ करोड का घाटा होगा। जो कौमी पैदावार का ९"७% है। जो बात इस घाटे से भी ज्यादा भयानक है कि देश के ऊपर कर्जे का जो सूद है वो मिलकर २१०४९ करोड़ रुपए बनते है। जो सरकारी आय से १५३५ करोड़ रुपए अधिक है। इस तरह बजट बराबर नहीं हो सकता जब तक ये दोनो व्यय कम न किए जाए। परन्तु ऐसा करना सरल नही है। कर्जों से सूद का देना कानूनी मजबूरी है। व्यय कम करने की स्वीकृति पाकिस्तान हाईकमान नही देगा इस तरह पाकिस्तान की आर्थिक समस्या ज्यो की त्यो रहेगी। इसका एक हल था वो ये कि टैक्सो मे बढ़ोत्तरी कर दी जाए। जो श्री कुरैसी ने कर दिया है। परन्तु प्रश्न यह किया जा रहा है कि अब जब कि नई सरकार बनाने वाले ये बड़े-बड़े जागीरदारो और जमींदारो पर टैक्स लगा रहने देगी।

श्री कुरैशी को जनता के वोटो की जरूरत न थी इस लिए उन्होने जो उचित समझा, कर दिया। परन्तु पाकिस्तान की जनता की निर्वाचित कोई सरकार लगभग इस हालत मे नही है कि वो दोनो विचारो को नजर अन्दाज न कर सकें। श्री कुरैसी ने सरकार का घाटा पूरा करने के लिए कृषि पर टैक्स लगा दिया। आज तक इस टैक्स का अस्तित्व (वजूद) न था अब प्रश्न यह है कि पाकिस्तान के विधान के अनुसार कृषि पर टैक्स प्रान्तीय सरकारें ही लगा सकती है। केन्द्रीय सरकार अधिक से अधिक यह टैक्स जमा कर सकती है और इसके बाद इसे यह टैक्स प्रान्तों को देना होगा इसे केवल मात्र टैक्स वसूली करने की कमीशन मिल सकती इस प्रकार इस टैक्स से केन्द्र सरकार को कोई लाभ नहीं होगा।

अब देखने की बात यह है कि पाकिस्तान की नई सरकार क्या करती है -श्री कुरैशी कई वर्ष तक आलमी बैंक (विश्व बैंक) से सम्बन्धित रहे हैं। इस लिए आपने २५ करोड़ डालर का कर्जा इससे ले लिया। लेकिन यह कर्जा इस शर्त पर मिला कि श्री कुरैशी देश के बजट का घाटा पूरा करें। इसलिए इन्होने कृषि पर टैक्स लगाकर कुछ कोशिश की है। अब हर तरफ से यही प्रश्न हो रहा है क्या नई सरकार इस वायदे पर कायम रहती है या नहीं। और यह बात भी साफ है कि यदि यह धन पाकिस्तान को ना मिला तो पाकिस्तान का सारा माली ढांचा धड़ाम से नीचे आ गिरेगा। पाकिस्तान गत कई वर्षों से विदेशो से भिन्न-भिन्न प्रकार के वायदे करके ऋण लेता रहा है। और इसने कई वायदे तोडे हैं। अब देखने की बात यह है कि श्री कुरैसी का वायदा अगर तोडा जाता है। तो आर्थिक सहायता करने वाले क्या रवैया अपनाते हैं।

पाकिस्तान की आर्थिक बदहाली की सबसे बड़ी वजा यह है कि वो कई वर्षों से अपनी आय से व्यय अधिक कर रहा है बिना सोचे, समझे यह बढ़े हुये खर्चे का कारण उचित हो सकता है या नहीं। इसने अपने दिफायी बजट में वृद्धि करना शुरू कर दिया है। अब ७९ ८० के बजट मे यह १२६६ करोड़ रुपये था जो ८६-८७ मे बढ कर ४०१ ३ करोड रुपये हो गया। अब ९३-९४ के बजट मे यह ८९१० करोड़ रुपये था। इस तरह पाकिस्तान की विदेशी करेन्सी (मुद्रा) का भी संकट ही है। जब नवाज शरीफ सरकार को भंग किया गया तो विदेशी कर्ज २७ करोड़ डालर था लेकिन अगले दो माह मे यह घट कर ११ करोड रुपये रह गया। सरकार के पास विदेशी कर्जों का सूद अदा करने अथवा आवश्यक वस्तुओ का आयात करने का रुपया नहीं था।

ठीक इसी समय श्री कुरेशी ने विश्व बैंक से कर्जा लेकर काम चलाया। आपने वायदा किया आप पाकिस्तान के रुपये की कीमत मे ९६ की कमी करेंगी और कुल कर आमदनी मे तीस प्रतिशत कमी करने के आदेश जारी कर दिया १९८० मे पाकिस्तान का विदेशी ऋण १० अरब डालर था जो १९९१ मे बढ कर २१ अरब डालर हो गया। और दो वर्ष बाद अर्थात १९९३ मे यह २८ अरब डालर हो गया। यह समस्यायें हैं जिन से पाकिस्तान को निपटना होगा आज तक किसी भी सरकार ने इस ओर ध्यान नही दिया इसका परिणाम यह है कि इसे कर्जा देने वाली हुकूमतें जिन मे सर्वप्रथम है अमरीका जो अपनी हर बात स्वीकृत करवाने मे सफल हो रहा है। कुछ पाकिस्तानी बुद्धिमान अब अपने देश की हालत पर दुख. प्रकट करने लगे हैं। परन्तु यह देखने कि बात है कि नई सरकार बनती है वो इस तरफ इस चक्कर को खत्म करने को क्या उपाय अख्तयार करेगी।

देश को एकता हिन्दी से ही सम्भव

कानपुर। देश की एकता और समृद्धि के लिये यह अति आवश्यक है कि देश के समस्त कार्य केवल राष्ट्र भाषा हिन्दी मे ही हो। तभी हम विश्व मे अपने देश को गौरवपूर्ण स्थिति मे प्रतिष्ठित कर सकेंगे। परन्तु आज हिन्दी बोलने के लिये प्रधान मन्त्री को पर्ची भेज कर आग्रह करना पड़ता है। उपरोक्त विचार आर्य समाजी नेता व केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने आर्य समाज गोविन्द नगर मे हिन्दी दिवस पर आयोजित सभा की अध्यक्षता करते हुये व्यक्त किये।

सभा मे अन्य वक्ताओ ने कहा कि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द संस्कृत के महान विद्वान थे तथा उनकी मातृ भाषा गुजराती होते हुये भी उन्होने अपने समस्त ग्रन्थ हिन्दी मे लिखे और आर्य समाज में हिन्दी का ज्ञान अनिवार्य कर दिया। आर्य समाज ने सदैव ही हिन्दी के उत्थान के लिये संघर्ष किया।

वक्ताओ मे मुख्य रूप से सर्वश्री देवीदास आर्य, बाल गोविन्द आर्य, ओम प्रकाश तिवारी, राम सुमेर मिश्र, जगन्नाथ शास्त्री तथा डा० जातिभूषण थे। सभा की अध्यक्षता श्री देवीदास आर्य तथा सभा का संचालन आर्य-समाज के मन्त्री श्री बालगोविन्द आर्य ने किया।

—बालगोविन्द आर्य मन्त्री

वेद में शिक्षा और दीक्षा

वेदरक्षानन्द सरस्वती गुरुकुल कालवां (जींद)

व्रत का पालन करने से दीक्षा प्राप्त होती है, दीक्षा से दक्षिणा और बल प्राप्त होता है, दक्षिणा से श्रद्धा प्राप्त होती हैं और व्रत पालन करने से, दीक्षित होने से, बल प्राप्त करने से श्रद्धा द्वारा सत्य की प्राप्ति होती है। इन्हीं भावों को वेद में इस प्रकार बताया गया है—

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् ।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥

(यजुः० १९।३०)

अर्थ—(व्रतेन) व्रत से, सत्य नियम के पालन से मनुष्य (दीक्षाम्) दीक्षा को, प्रवेश को (आप्नोति) प्राप्त करता है। (दीक्षया) दीक्षा से (दक्षिणाम्) दक्षिणा को, वृद्धि को, बढ़ती को (आप्नोति) प्राप्त करता है। (दक्षिणा) दक्षिणा से (श्रद्धाम्) श्रद्धा को (आप्नोति) प्राप्त करता है और सदा (श्रद्धया) श्रद्धा द्वारा (सत्यम्) सत्य को (आप्यते) प्राप्त किया जाता है।

आज शिक्षा का विस्तार है, शिक्षकों की संख्या बढ़ रही है, ज्ञान के उपार्जन के नये-नये उपाय निकाले गये हैं। किन्तु जितना ज्ञान बढ़ता है उतनी अशान्ति बढ़ती है। शिक्षा के जगत में अनुशासनहीनता की धूम मची है। देश के नायक और संचालक इस अनुशासनहीनता के उपचार में संलग्न हैं। एक ओर विद्यार्थियों में एकता और संगठन बढ़ रहा है, दूसरी ओर संचालकों और अध्यापकों में संघर्ष बढ़ता जाता है। दोनों दल दो प्रतिद्वन्द्वियों के रूप में एक दूसरे के सम्मुख हैं। आदर्श गुरु विरजानन्द और आदर्श शिष्य दयानन्द के जीवन से उपर्युक्त समस्या का समाधान सरल, सुगम और सम्भव हो सकता है।

महर्षि दयानन्द में आदर्श शिष्य बनने के विशेष गुण निम्नलिखित थे—

१. आदर्श गुरु की खोज।

२. आदर्श गुरु की सेवा में पहुंचना और उनके आदेशों का पालन करना।

३. शिक्षा आरम्भ होने से पूर्व उस समय तक अशुद्ध और अप्रमाणित शिक्षा को अपने अन्दर से निकाल देना।

४. इस प्रकार हृदय को निर्मल भूमि बना कर गुरु के सत्य और प्राचीन आदेश को ग्रहण करना और केवल ईश्वरीय ज्ञान वेद ही को शिक्षा और दीक्षा का मूल आधार मानना।

५. शिक्षा ग्रहण करने में सेवा और तप का परिचय देना।

६. पढ़ाई हुई शिक्षा को भूल जाने पर स्वयं याद करने का प्रयत्न करना।

७. शिक्षा प्राप्त कर लेने पर गुरु से दीक्षा लेते समय गुरु के आदेश ग्रहण करना और प्रतिज्ञा करना कि जीवन भर उनका पालन करेंगे।

८. सारा जीवन गुरु की आज्ञा के अनुसार सत्य सनातन वैदिक धर्म का प्रचार करना और असत्य का निराकरण करना।

९. इस आदर्श की पूर्ति के लिए सर्वांगपूर्ण उन्नति की व्यवस्था करना अर्थात स्वस्थ शरीर, शान्त मस्तिष्क और पवित्र आत्मा :

१०- इस आदर्श की पूर्ति में हर प्रकार के लोभ और मोह से वंचित रहना और इसकी सफलता में अपना जीवन तक अर्पण कर देना।

केवल मनुष्य में ही यह विशेषता है कि वह ज्ञान प्राप्त कर सकता है, ज्ञान में वृद्धि कर सकता है। अन्य प्राणियो में केवल स्वाभाविक ज्ञान है, परन्तु मनुष्य मे केवल स्वाभाविक ज्ञान उसके विकास के लिए पर्याप्त नहीं है। उसमे ज्ञान प्राप्त करने की शक्ति है, परन्तु उसका ज्ञान दूसरों से मिलता है। जिनसे ज्ञान मिलता है, वे अध्यापक या गुरु कहलाते हैं। परन्तु ज्ञान आदि का अर्थ 'चरित्र का निर्माण' है ऐसी दशा में जिनके द्वारा ज्ञान प्राप्त हो उनके लिए सबसे उत्तम परिभाषा 'आचार्य' की है। आचार्य वे हैं जो स्वयं जैसा जानें वैसा करें, और जिनको ज्ञान दें उनको न केवल जानने और करने के लिये भी उत्साहित करें।

मनुष्य जीवन को 'यात्रा' से उपमा दी है। यात्रा पर चलने के लिए मनुष्य को उसके योग्य अपने को बनाना होगा। यह यात्रा इस प्रकार करनी होगी कि यात्री बीच में विचलित न होकर उद्दिष्ट स्थान पर पहुंच जाए। सफल जीवन का नाम ही बेड़ा है। संसार में देखा जाता है कि जब कोई पशु अन्य प्राणियों के सम्पर्क में आने और प्रयोग में लाने के लिए तैयार किया जाता है तो उसके लिए एक अंकुश की आवश्यकता होती है। बैल के लिये नाथ, ऊंट के लिए नकेल, घोड़े के लिए लगाम और हाथी के लिये त्रिशूल की आवश्यकता होता है। इसी प्रकार मनुष्य के लिए अंकुश चाहिए जो आन्तरिक रूप से मन को संयत करने वाला हो। यह अंकुश ईश्वर शक्ति में विश्वास रखने के रूप में ही हो सकता है। यदि ईश्वर का दिव्य स्वरूप मनुष्य के सम्मुख रहे और यह बात न बिसारी जाए कि ईश्वर सर्वव्यापक तथा न्यायकारी है तो वह बुरी बातों से बच जाएगा। मनुष्य के लिये भावनाओं का सागर बहुत बड़ा और गहरा है। मनुष्य के भीतर इच्छा, द्वेष, काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की तरंगे उठती हैं। इस भवसागर से पार होने के लिए आवश्यक है कि मन वशीभूत हो, यदि उस पर आत्मा का नियन्त्रण हो। ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों पर भी मन का नियन्त्रण रहे। यदि भवसागर से पार होना है तो भावनाओं को मर्यादित करना होगा, नहीं तो डूबने में कोई सन्देह नहीं।

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से भूकम्प पीड़ितों को लगभग एक लाख का सहयोग

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी धर्मानन्द जी ने भूकम्प पीड़ितो की सहायता के लिए लगभग एक लाख रुपये का सामान ट्रक में भरकर ३ अक्टूबर को अपने सहयोगी श्री स्वामी व्रतानन्द जी को महाराष्ट्र के पीड़ित क्षेत्रों मे बांटने के लिए भेजा है। इसमें ८० क्विंटल चावल एवं आटा ४० बण्डल नया-पुराना कपड़ा तथा तेल आदि खाद्य सामग्री है। यह सहायता गुरुकुल आमसेना, उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा तथा खरियार रोड नगर की ओर से भेजी गई है। इसमें खरियार रोड एन. एस. सी के चेयरमैन श्री राजूभाई धोलकिया का विशेष सहयोग रहा है।

इस अकाल ग्रस्त क्षेत्र में भी गत ४ माह से ३० ग्रामों के वृद्ध एवं निर्धन लोगों को अन्न एवं वस्त्र की सहायता निरन्तर दी जा रही है।

—धर्मानन्द सरस्वती प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्कल
गुरुकुल आमसेना, (खरियार रोड)
कालाहाडी, (उड़ीसा)

श्री शंकराचार्य का ढुलमुलवाद

डा० प्रज्ञादेवी, वाराणसी-१०

ब्रह्मज्ञान के सर्वोत्कृष्ट स्वरूप का बोध एवं आध्यात्मिक ज्ञान पिपासा को शान्त करने हेतु 'वेदान्त दर्शन" एक अनमोल ग्रन्थ है। त्रैतवाद=ईश्वर, जीव, प्रकृति के स्पष्ट प्रतिपादक इस ग्रन्थरत्न के सरल ब्रह्ममीमांसाविषयक सूत्रों का स्वाध्याय करते हुये चित्त प्रसन्न हो जाता है। ऋषियों ने उलझनें एवं सन्देह निवृत्ति हेतु ही शास्त्र-रचनायें की हैं अतः उन्हें उसी रूप में पढ़ने से तद्विषयक मन की भ्रान्ति दूर होने से चित्तप्रसाद स्वाभाविक ही है, किन्तु बीच के काल में इन ऋषिप्रणीत ग्रन्थों की टीका टिप्पणियां एवं भाष्यों की भरमार होने लगी और वे इस प्रकार के लिखे जाने लगे कि इन भाष्यों के कारण मूल सूत्रों में लिखे ऋषियों के भाव ही तिरोहित हो चले। यद्यपि ऐसा प्रायः सभी ऋषि-प्रणीत ग्रन्थों में हुआ किन्तु संसार में सम्भवतः जो दुर्दशा "वेदान्त-दर्शन" के सूत्रों की श्री शंकराचार्य सदृश भाष्यकारों ने की है इसका दूसरा उदाहरण देखने को नहीं मिलेगा। वेदान्त दर्शन=ब्रह्मसूत्र के भाष्यकारों में प्रसिद्ध स्थान शंकराचार्य जी को प्राप्त है जिन्होंने त्रैतवाद के स्थान पर स्वकल्पित अद्वैतपरक "अहं ब्रह्मास्मि" आदि वाक्यों की व्याख्यायें करके लोगों को व्यापक उलझन में डाल दिया। श्री शंकराचार्य जी ने स्वमनसा अध्यास अध्यारोप, माया, सोपाधिक ब्रह्म, निरुपाधिक ब्रह्म अभिन्ननिमित्तोपादान ब्रह्म आदि शब्द जाल रचकर यह सिद्ध किया कि जो हमारा शरीर या संसार है वह अध्यास=मिथ्या ज्ञान मात्र है, वस्तुतः जगत् झूठा है, जीव परमेश्वर का टुकड़ा है जो हमारे शरीर मे माया-अविद्या से ग्रस्त सोपाधिक ब्रह्म के रूप में है। माया के हटने पर हम भी शुद्ध निरुपाधिक ब्रह्म हो जायेंगे। ईश्वर जगत् का निमित्त एवं उपादान कारण दोनों है इत्यादि।

श्री शंकराचार्य जी की सम्पूर्ण तपस्या उपर्युक्त वेद विरुद्ध इन्हीं झूठी मान्यताओं को सिद्ध करने में लग गई। लोक-व्यवहार में जिस प्रकार एक कही हुई झूठी बात कहीं खुल न जाए तो उसे बचाने के लिए और पचास झूठ बोलने पड़ जाते हैं उसी प्रकार शंकराचार्य जी को अपने वेद विरुद्ध झूठे अद्वैतवाद को स्थापित करने के लिए बहुत से पैंतरे खेलने पड़े फिर भी वे सत्य को झांसा देने में असमर्थ हो गए और दबे स्वर से सत्य को कहना ही पड़ा जिसके कुछ उदाहरण यहां प्रस्तुत हैं—

१. श्री शंकराचार्यजी का मान्य सिद्धान्त है कि "जीवो ब्रह्मैव नाप" अर्थात् जीव और ब्रह्म में अविद्या-कल्पित भेद है वास्तविक नहीं। अविद्या अर्थात् माया के हट जाने पर जीव और ब्रह्म एक हो जाते हैं। इस विषय में शंकराचार्य जी के वेदान्त-भाष्य की टीका "भामती" में कहा है—

'सत्यं परमार्थतोऽभेदेऽपि अविद्यारोपितं भेदमुपाश्रित्य लब्धृलब्धव्यभाव उपपद्यते। जीवो ह्यविद्यया परब्रह्मणो भिन्नो दर्शितः।" (वे०द० १-१-१७) अर्थात् वस्तुतः जीव और ब्रह्म में अविद्यारोपित ही भेद है (वास्तविक नहीं) जिसे मानकर लब्धा=परमात्मा को प्राप्त करने वाला जीव एवं लब्धव्य=प्राप्तव्य परमेश्वर यह भेद बनता है। जीव को अविद्या के कारण ही परमात्मा से भिन्न दर्शाया गया है अन्यथा जीव और ब्रह्म अभिन्न हैं यह श्री शंकराचार्य जी "विकृतस्यैव ब्रह्मणो जीवभावाभ्युपगमात्" (वे०द० २-३-१७) कहकर स्वीकार करते हैं। तात्पर्य हुआ कि नवीन वेदान्तियों का अविद्योपाधि रहित ब्रह्म लब्धव्य है तथा अविद्यारोपित देहादि को प्राप्त ब्रह्म लब्धा है। बस यही भेद दोनों का है वस्तुतः भेद नहीं है। यह भेद अविद्या के हट जाने पर समाप्त हो जाता है।

अब प्रश्न है कि अविद्या के हटते ही जब जीव शुद्ध बुद्ध मुक्तस्वभाव वाला ब्रह्म हो जाता है तो परमात्मा में एकाकार हुए उस ब्रह्म (वस्तुतः जीव) का पूर्ण सामर्थ्य ब्रह्म वाला ही हो जाना चाहिए क्योंकि इनमें परस्पर भेद तो रहा ही नहीं। श्री शंकराचार्य जी ब्रह्म के सामर्थ्य के विषय में स्वयं कहते हैं कि—"तद् ब्रह्म सर्वज्ञं सर्वशक्ति जगदुत्पत्तिस्थितिलयकारणं वेदान्तशास्त्रादेवावगम्यते" (वे०द० १-१-४) अर्थात् ब्रह्म ही सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान् तथा जगत् की उत्पत्ति स्थिति एवं प्रलय का कारण है ये वेदान्त शास्त्र बताते हैं। इसलिए ब्रह्म हो जाने पर यही सामर्थ्य जीव का भी [हो जाना चाहिए क्योंकि वह शंकराचार्य जी के अनुसार ब्रह्म जो हो गया किन्तु] यह क्या ! अपनी सारी मान्यताओं को ताक में रखकर "जगद्व्यापारवर्जं प्रकरणादसन्निहितत्वाच्च" (४-४-१७) इस वेदान्त सूत्र के भाष्य में शंकराचार्य जी स्पष्ट मान रहे हैं कि सृष्टि की रचना जैसा गूढ़ कार्य मुक्त जीव=निरुपाधिक ब्रह्म भी नहीं कर पाता यह केवल परमेश्वर का कार्य है। वे लिखते हैं—

"समनस्कत्वादेव चैतेषामनेकमत्ये कस्यचित् स्थित्यभिप्रायः कस्यचित् संहाराभिप्राय इत्येवं विरोधोऽपि कदाचित् स्यात्। अथ कस्यचित् संकल्पमन्वन्यस्य संकल्प इत्यविरोधः समर्थ्येत। ततः परमेश्वराकूततन्त्रत्वमेव इतरेषामिति व्यवतिष्ठते।" (वे०द० ४-४-१७)

अर्थात् यदि समान सामर्थ्य रखने वाले कई (मुक्त) जीव सृष्टि रचना करने लगें तो कोई सृष्टि की स्थिति चाहेगा तो कोई प्रलय इस प्रकार परस्पर विरोध युक्त हुए ब्रह्म में होगा अतः यह सृष्टि रचना परमेश्वर के ही संकल्प शक्ति से होती है न कि मुक्त जीव से।

अब विचार यह है कि निरुपाधिक ब्रह्म एवं सोपाधिक ब्रह्म ये दो भेद तो अविद्या हटने से पूर्व तक के हैं। जहां अविद्या हटी वहीं जीव शुद्ध बुद्ध मुक्त स्वभाव वाला ब्रह्म जब हो गया तो फिर उस मुक्त स्वभाव वाले ब्रह्म जो अद्वैतावस्था को प्राप्त हो गया उसके द्वारा सृष्टि रचना क्यों नहीं हो सकती, यदि नहीं हो सकती जिसे आप मान रहे हैं तो सर्वशक्तिमान् और असर्वशक्तिमान् के रूप में भेद तो यहां भी बना रहा फिर अद्वैत कहां हुआ जिसका प्रतिपादन आप सारे शास्त्र में महता डिमडिम घोष के साथ कर रहे हैं? जीवात्मा और परमात्मा दो चेतन सत्तायें पृथक्-पृथक् मुक्त हों या बद्ध हर अवस्था में हैं यह सच्चाई आपके मुंह से निकल ही गई।

२. श्री शंकराचार्य जी के अद्वैत मत में जीव को परमेश्वर का अंश स्वीकार किया गया है। माया के हट जाने पर जब यह ब्रह्म में ही लीन हो जाता है तो जीव और ब्रह्म का भेद नहीं रहता। अब इस झूठी अंश-अंशिभाव की मान्यता को भी शंकराचार्य जी सम्पूर्ण शास्त्र में चला नहीं पाये तो वेदान्त दर्शन के अंशाधिकरण में कह ही बैठे—

"अंश इवांशो नहि निरवयवस्य मुख्योंऽशः सम्भवति। कस्मात् पुनर्निरवयवत्वात् स एव न भवति? नानाव्यपदेशात्।" (वे०द० २-३-४३)

अर्थात् जीव परमेश्वर के निरवयव होने के कारण परमेश्वर का मुख्य रूप से अंश (टुकड़ा) नहीं है किन्तु अंश के समान है क्योंकि जीवों का नानात्व पाया जाता है।

यहां जीव और ब्रह्म के अंश-अंशिभाव के खण्डन में प्रबल तर्क एवं युक्तियां होते हुए भी केवल एक ही बात रखी जाती है कि जब जीव परमेश्वर का अंश है तो उसमें सर्वज्ञतादि गुण ईश्वर वाले हर अवस्था में होने चाहिए पर वह ईश्वर का टुकड़ा होकर भी अल्पज्ञ कैसे बन गया। देहादि को प्राप्त ब्रह्म के टुकड़े जीव को अविद्योपाधि=माया क्यों लग गई। जब वह जीव अंश अज्ञान उपाधि वाला बन गया तो ईश्वर को क्यों यह उपाधि नहीं लगी, वह क्यों सर्वज्ञत्वादि गुणविशिष्ट बना रहा। इस प्रकार प्रकारान्तर से जीव और ब्रह्म दो अनादि चेतन सत्तायें हैं यह सत्य बात हुई। यहां पूर्वापर विचार करने से पता लगता है कि श्री शंकराचार्य जी लाख प्रयत्न करके वेदान्त दर्शन के भाष्य के पूर्व विषय "अध्यासविचारः" लिखकर भी न जगत् को झूठा सिद्ध कर पाये हैं न जीव ब्रह्म का अभेद=अभिन्ननिमित्तोपादान सिद्ध कर पाये हैं बल्कि "न जीवस्योत्पत्तिप्रलयौ स्तः शास्त्रफलसम्बन्धोपपत्तेः" (वे०द०शा० भाष्य २-३-१६) आदि उनके वचन जीव और ब्रह्म की पृथकता ही सिद्ध करते हैं।

३. शंकराचार्य जी के अद्वैतवाद का तृतीय मत है कि यह सारा संसार झूठा है स्वप्न के समान। माण्डूक्योपनिषद् की—

अन्तः स्थानात्तु भेदानां तस्माज्जागरिते स्मृतम्।
यथा तत्र तथा स्वप्ने संवृतत्वेन भिद्यते॥ (२-४)

इस गौडपादीय कारिका के भाष्य में श्री शंकराचार्य जी "बाह्य जगत् स्वप्न के सदृश है" इस विषय में लिखते हैं"—

"जाग्रद्दृश्यानां भावानां वैतथ्यमिति प्रतिज्ञा। दृश्यत्वादिति हेतुः। स्वप्नदृश्यभाववदिति दृष्टान्तः।" (गौडपादीय कारिका शा० भा० २-४)

अर्थात् जागृत अवस्था में देखी गई चीजें स्वप्न के समान झूठी हैं क्योंकि

(शेष पृष्ठ १० पर)

सिद्धान्तों पर आधारित राजनीति

त्रिलोकनाथ बजाज, मोहली गेट फगवाड़ा

स्वामी दयानन्द ने कहा था कि कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है इस कथन को इस युग के परिप्रेक्ष्य में देखने की आवश्यकता है आज कल भी कई लोग कहते हैं कि इस राज्य से तो अंग्रेजों का ही राज्य अच्छा था। वे दुखी हैं पीड़ित हैं। देश में निर्धनता है। बेरोजगारी है। जीवन सुरक्षित नहीं है। अपहरण हैं। देश निर्धारित लक्ष्यों को पूरा नहीं कर पाया है। देश अवनति के गहरे गड्ढे में गिरा हुआ है। चरित्र हनन है। चारों तरफ पैसे का ही बोलबाला है। सत्ता की भूख है। देश का भविष्य धूमिल दिखाई दे रहा है।

जब क्षुद्र स्वार्थ राजनीति का आधार बन जाता है तो देश का भविष्य उज्ज्वल नहीं हो सकता। आज देश को आवश्यकता है निष्ठावान व्यक्तियों की, कर्त्तव्यनिष्ठ नेताओं की सेवा भाव सम्पन्न पुरुषों की। परन्तु दुर्भाग्य की बात है कि हमारे नेतागण उचित अनुचित ढंग से सत्ता प्राप्ति के लिए संघर्षरत हैं। कोई गरीबी हटाओ का नारा लगाता रहा। कोई दलित वर्ग के हितों का मसीहा समझ कर, कोई किसानों का ही नेता बता कर कोई मन्दिर मस्जिद का विवाद खड़ा करके सत्ता हथियाने के लिए प्रयासरत है। अन्तिम लक्ष्य शासन पर अधिकार करने का ही है।

स्वामी दयानन्द के कथन की यथार्थता को समझने की आवश्यकता है। कथन का अभिप्राय: यह नहीं था कि राजनीतिक सत्ता के भूखे लोगों को सदा ही सहन किया जाये। भ्रष्टाचारी शासन को हमेशा के लिए सहन किया जाये, साम्प्रदायिक शक्तियों को उत्साह ही मिलता रहे। धर्म का दुरुपयोग करके देश में रक्तपात चलता रहे। आज वस्तु स्थित यह है कि शासकों का कोई सिद्धान्त नहीं। कोई चरित्र नहीं राष्ट्रीयता की कोई भावना ही नहीं चारों ओर देश में संकीर्ण राष्ट्रवाद है। जातिवाद है। सम्प्रदायवाद है।

धर्म के ठेकेदारों को समझना चाहिए कि धर्म तो एक फूल की तरह है जो निर्मल है निश्छल है, निष्काम है, सुगन्धित है। धर्म जोड़ता है, तोड़ता नहीं। जीवन देता है, लेता नहीं है। धर्म का अर्थ ईश्वरीय मार्ग है। जो सत्य का है। सादगी का है। सेवा का है। संयम का है। प्यार का है। शान्ति का है। और क्रोध का नहीं घृणा का नहीं दूसरे सम्प्रदायों की रक्षा करने का है। रक्तपात कराने का नहीं।

जनता पार्टी का शासन हुआ' हमारे वयोवृद्ध नेता श्री मोरार जी देसाई को प्रधान मन्त्री बनने का सुअवसर मिला। लोगो का यह मत था कि यदि यह शासन चलता रहा तो देश की काया पलट देगा। परन्तु खेद की बात है कि हकूमत के भूखे उनके सहयोगियों ने मोरारजी के विरुद्ध विद्रोह कर दिया यदि मोरार जी प्रधान मन्त्री बने रहना चाहते तो वह विपक्षी लोगो के साथ गठजोड़ कर सकते थे। परन्तु उन्होने दलगत राजनीति से ऊपर उठ कर अपना त्यागपत्र राष्ट्रपति के सम्मुख पेश कर दिया। यह भी सिद्धांतो पर आधारित राजनीति। हमारे स्वर्गीय प्रधानमन्त्री लालबहादुर शास्त्री जब पं० नेहरू जी के मन्त्रि-मण्डल में रेल मन्त्री थे तो उसने एक रेल दुर्घटना का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेकर तत्काल अपना त्याग पत्र प्रस्तुत कर दिया। यह थी सिद्धान्तों पर आधारित राजनीति। महात्मा गांधी और पं० नेहरू जी के पश्चात् देश की दुर्दशा हो रही है। देश दिशाहीन है। कोई निर्दिष्ट मार्ग चुनौतियों से निपटने का नहीं है। आज देश की एकता और अखण्डता खतरे में है। कोई दूसरा सिद्धान्तवादी और प्रभावशाली नेता उत्पन्न नहीं हो सका। जो देश में स्थिरता पैदा कर सके। यदि कुछ है तो उसके विरुद्ध अरबों रुपये अनुचित तरीके से डकार कर दूसरों को भी इस भ्रष्टाचार में संलिप्त कर रहे हैं। बड़ी लज्जाजनक बात है।

महर्षि दयानन्द के कथन का यह अर्थ नहीं था कि अपने शासन का स्वार्थी लोग इस प्रकार लाभ उठा सकेंगे। उनके कहने का यह भाव नहीं था कि आर्यत्व के सिद्धान्तो की बलि चढ़ा देंगे। यह सुधार कैसे हो। विधान सभाओं और लोक सभाओं से आशा रखना व्यर्थ ही लगता है।

ऐसी परिस्थितियों में केवल एक संस्था आर्य समाज ही है जिसे ओ३म् का झण्डा उठाना है तथा लोगों को वैदिक धर्म की शिक्षाओं तथा आदर्शों से प्रेरणा देनी है। लोगों को दयानन्द के सन्देश से परिचित कराना है। नेतागण की महत्वाकांक्षाएं देश को तबाही के कगार पर खड़ा कर रही है। (आर्य समाज को एक आन्दोलन के रूप में) पुन: वैदिक जीवन के सिद्धान्तों से परिचित कराना है।

आर्य समाज ने ही जनता में उदार राष्ट्रीयता की भावना को जगाना है। लोगों के दिलों में चाहे वे किसी भी समुदाय के हों एकात्मता, समानता और बन्धुत्व की भावना भरने का कार्य करना है अशान्ति और झगड़े पैदा करने वाले संकीर्ण राष्ट्रवाद जातिवाद सम्प्रदायवाद इत्यादि का विरोध करना है। सामाजिक कुरीतियों के साथ २ अन्याय भ्रष्टाचार दुराचार अनाचार इत्यादि को मिटाने का काम करना है तथा चरित्र निर्माण और सदाचार पर विशेष ध्यान देना केवल आर्य समाज ही कर सकता है।

आर्यों का अस्तित्व आज संकट में है। दिन प्रतिदिन हम अपनी प्राचीन वैदिक संस्कृति को खो रहे हैं। हम सब एक हैं। देश में जन्म लेने वालो की यही पवित्र भूमि है। चाहे वे अल्पसंख्यक हों। उन्होंने भी यहीं रहना है। यही उनकी मातृभूमि है। इस अस्त-व्यस्त भारत को पुन: स्वर्ग बनाने के लिए व्रत लेना है। राम राज्य का स्वप्न लेने वालो को आर्यव्रत प्राचीन संस्कृति को फिर से उजागर करने की प्रतिज्ञा लेनी है।

उत्कृष्ट सेवाओं के लिए अध्यापक पुरस्कृत

दिल्ली महानगर परिषद के अध्यक्ष श्री पुरुषोत्तम गोयल ने आज राष्ट्रीय राजधानी राज्य क्षेत्र, दिल्ली सरकार, दिल्ली नगर निगम व नई दिल्ली नगर पालिका से जुड़े ७० अध्यापकों को उनकी उत्कृष्ट व सराहनीय सेवाओं के लिए उन्हें राज्य स्तरीय पुरस्कारों से पुरस्कृत किया।

अध्यापको को स्मृति चिन्ह व प्रशस्ति पत्र दिये गए। समारोह का आयोजन दिल्ली राज्य भारत स्काउट्स व गाइड्स द्वारा पुराना सचिवालय सभागार मे किया गया। इसकी अध्यक्षता ख्याति प्राप्त समाजसेवी श्रीमती विद्याबेन शाह ने की।

ऋषि दयानन्द के भक्त और प्रशंसक—

महाराजाधिराज कर्नल सर प्रतापसिंह (८)

(आर्यसमाज के इतिहास का एक रोमांचक अध्याय)

प्रो० भवानीलाल भारतीय

कालेज भवन के शिलान्यास के समय महाराजा प्रताप ने जो अपना अध्यक्षीय भाषण दिया, उसके कुछ अंश यहां दिये जा रहे हैं। आपने कहा—"जिस कालेज की नींव आज रक्खी गई है वह आर्य समाज का एक बहुत बड़ा विद्यालय होगा जिसका गौरव सारे संसार में फैलेगा। कारण कि यह उस ऋषि के नाम पर स्थापित किया गया है जिसके जीवन का मुख्य उद्देश्य ही परोपकार करना था। जिस ऋषि के जीवन में कभी स्वार्थपरता का प्रवेश नहीं हुआ उसी तरह यह कालेज भी देश के उपकार के लिये ही स्थापित किया गया है।···मैं इस कालेज से बहुत प्यार करता हूं। मेरा आज से इस कालेज के साथ चिरस्थायी सम्बन्ध हुआ।······इस कालेज के नाम के आरम्भ में दयानन्द का नाम है। दयानन्द एक परोपकारी ऋषि थे और उनका एक मात्र उद्देश्य था परोपकार करना, वैदिक धर्म का प्रचार करना।"

डी. ए. वी. कालेज के सम्बन्ध में सर प्रताप ने अपनी आत्मकथा में जो लिखा था, उसे उनके जीवनी लेखक श्री आमबार्ट ने इन शब्दों में प्रकट किया है—"मैंने डी. ए. वी. कालेज लाहौर को देखा, उसके शिलान्यास की विधि अप्रैल १९०५ में मेरे द्वारा ही सम्पन्न हुई थी। मैंने उस समय कालेज का सावधानी पूर्वक निरीक्षण किया तथा मेरे विचार में यह भारत का एक महत्व पूर्ण शिक्षणालय है जिससे हिन्दुओं के शैक्षिक विकास की पूरी सम्भावना है।'

महाराजा प्रतापसिंह का महात्मा हंसराज से बहुत स्नेह था। इस सम्बन्ध में उनकी हिन्दी आत्मकथा के सम्पादक ने इस ग्रन्थ के परिशिष्ट में लिखा है—सन १९०४ मे महात्मा हंसराज जी को महाराजा साहब बड़ौदा (सर सयाजीराव गायकवाड़) ने आमन्त्रित किया। वे उनसे अपनी रियासत में शिक्षा प्रचार और सामाजिक सुधारों की तजवीजों पर परामर्श करना चाहते थे। महाराजा सर प्रताप सिंह जी उन्हें अपना धर्म भाई समझते थे। उन्होंने महात्माजी को हिम्मतनगर (ईडर की राजधानी) पधारने की प्रेरणा की। फलतः वे २-३ दिन के लिए आये। इस अवसर पर खानसामा लोगों को हटा दिया और दो राजपूतों से खाना तैयार कराया और स्वयं महात्मा जी के हाथ धुलाने को पानी लेकर खड़े हो गए। महाराजा साहब ने महात्मा जी से कहा कि आप मेरे भाई हैं। भाइयों की तरह आपका आतिथ्य करना मेरा कर्तव्य है।" पृ० १७९.

अप्रैल १९०५ में जब सर प्रताप लाहौर गए तो रविवार के दिन उन्हें आर्य समाज लाहौर में सत्संग हेतु जाना पड़ा इस प्रसंग का उल्लेख उनकी आत्मकथा के सम्पादक ने इस प्रकार किया है—'रविवार आया तो साप्ताहिक सत्संग मे शामिल होने का विचार प्रकट किया। कालेज वालों ने एक बहुत बढ़िया आराम कुर्सी उनके लिए एक कोने में रख दी। जब आप पधारे तो सबके कहने पर भी कुर्सी पर नहीं बैठे, बल्कि सर्वसाधारण के साथ दरी पर बैठ गये। आपने यह भी कहा कि परमात्मा के दरबार में सब समान हैं।" पृ० १७७.।

परोपकारिणी सभा और सर प्रताप :

स्वामी दयानन्द की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा ने अपने प्रथम अधिवेशन (२२ दिसम्बर १८८३) में ही महाराजा प्रताप को अपना सदस्य निर्वाचित कर लिया था। स्वामी दयानन्द के निधन के लगभग एक मास बाद सम्पन्न हुए इस अधिवेशन में श्री महाराज द्वारा नियुक्त सभा के २१ सभासदों में एक तथा मन्त्री पद पर अभिषिक्त लाला रामशरण दास की मृत्यु (१० जून १८८३) के कारण रिक्त हुए स्थान पर सर प्रताप को सभा ने अपना सदस्य मनोनीत किया था। पुनः १८९१ ई० में सभा ने अपने नैमित्तिक अधिवेशन में सर प्रताप को परोपकारिणी सभा का प्रधान मनोनीत किया। उन्होंने यह पद स्वीकार तो कर लिया तथा वे अपनी मृत्यु पर्यन्त इस पद पर रहे, किन्तु सभा के पुराने विवरण देखने से ज्ञात होता है कि वे किसी भी अधिवेशन में भाग लेने हेतु उपस्थित नहीं हुए। महाराजा के जीवनी लेखक जगदीशसिंह गहलोत ने स्वग्रन्थ में इस प्रसंग में लिखा है—'यह बात बड़े दुःख के साथ लिखी जायगी कि महाराजा साहब ने आज तक भी परोपकारिणी सभा को काम की खातिर याद नहीं किया। क्या ही अच्छा होता जो महाराजा साहब प्रधान की हैसियत से भी स्वामी जी की स्थापित परोपकारिणी सभा को भी जीवन दान देने का प्रयत्न करते।" अनुमान होता है कि सर प्रताप की प्रशासनिक जिम्मेदारियों के बढ़ जाने तथा निरन्तर युद्धों में भाग लेने के कारण ही वे परोपकारिणी सभा के कार्यों में मनोयोग पूर्वक अपनी भूमिका का निर्वाह नहीं कर सके थे।

सर प्रताप और मांस भक्षण :

यह तो एक सुनिश्चित तथ्य है कि मांस भक्षण, मद्यपान, बहुपत्नी विवाह आदि की बुराइयों से वे क्षत्रिय सामन्त और राजन्यवर्ग के लोग भी नहीं बच सके थे जो स्वामी दयानन्द के सम्पर्क में आकर अपने आपको उनका शिष्य घोषित करते थे। यह बात नहीं कि स्वामी जी अपने इन क्षत्रिय शिष्यों के इन दुश्चरित्रों से सर्वथा अपरिचित ही रहे हों। उन्हें भली भांति ज्ञात था कि जिन राजपूत राजाओं में परम्परागत रीति से मद्यपान, मांसाहार, वेश्यागमन, बहुविवाह, द्यूतक्रीड़ा आदि की बुराइयां घर की हुई हैं, उनसे एक दिन में ही उनका मुक्त होना सम्भव नहीं है। तथापि वे बराबर यह यत्न करते रहे कि ये क्षत्रिय लोग उनकी शिक्षाओं के अनुसार अपने जीवन एवं आचरण में परिवर्तन लायें तथा अपने चरित्र को सुधारें। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने उदयपुर के महाराणा सज्जनसिंह, जोधपुर के महाराजा प्रतापसिंह एवं जोधपुर नरेश महाराजा जसवन्तसिंह को समय समय पर पत्र लिखे तथा उन्हें चरित्र शोधन के लिए प्रेरित किया। स्वामी जी का यह प्रयास सर्वथा निष्फल हो गया, ऐसी बात भी नहीं है, किन्तु वे अपने उद्देश्य की पूर्ति में सर्वथा सफल ही रहे, यह भी नहीं कहा जा सकता। जहां तक महाराणा सज्जनसिंह का सम्बन्ध है, उन्होने स्वामी जी की शिक्षाओं को हृदयंगत कर कर स्वयं को बहुत कुछ सुधारा, किन्तु यह बात जोधपुर के सभी राजवर्ग के लोगों के लिए नहीं कही जा सकती। इस प्रसंग मे स्वामी जी के जीवन चरित का एक प्रसंग उल्लेखनीय है। कर्नल प्रताप ने एक दिन श्री महाराज से पूछा—'हमें कोई ऐसा काम बतलावें, जिससे कि हमें भी मोक्ष प्राप्ति सुलभ हो सके।' राजपूत राजाओं के दुराचारों को भली भांति जानने वाले दयानन्द ने इसके उत्तर में दो टूक कहा—'काम तो तुम्हारे मोक्ष के नहीं हैं। परन्तु एक न्याय तुम्हारे हाथ में हैं, यदि न्यायपूर्वक प्रजापालन करोगे तो तुम्हारा मोक्ष हो सकता है।" उक्त वाक्य की ध्वनि को समझना कठिन नहीं है। स्वामी जी भली भांति जानते थे कि यों तो भारत के क्षत्रिय सर्वतोभावेन अधोगति की सीमा तक पहुंच गए किन्तु परिस्थितियों ने उन्हें अभी तक लाखों लोगों के शासन का दायित्व सौंप रखा है। अतः यदि ये राजपूत प्रशासक न्याय एवं लोकरंजन की भावना को दृष्टि में रखकर कर्तव्य बुद्धि से प्रजापालन ही करें तो इनका कल्याण हो सकता है और उनके इहलोक तथा परलोक दोनों सुधर सकते हैं।

स्वास्थ्य चर्चा :–

नुस्खे सदा जवान रहने के

सभी को एक न एक दिन बूढ़ा होना ही है, पर समय से पहले यह स्थिति आ जाये तो आदमी के कई उपयोगी वर्ष बेकार चले जाते है। आज कल सभी देशो मे और हर देश के कई संस्थानो में, अनुसंधान-शालाओ में हजारो वैज्ञानिक इस कार्य में लगे हैं कि आदमी को बूढ़ा होने से कैसे रोका जाए, उसकी उम्र कैसे बढाई जाए। यदि बूढ़ापे का इलाज ढूंढ लिया जाए, तो ये आदमी की प्रकृति पर सब से बडी जीत होगी।

बूढ़ा होना सबसे स्वाभाविक चीज है परन्तु यदि कोई जवानी में ही बुढ़ापे का अनुभव करे तो वह अपने जीवन मे बहुत ही पिछड़ जाएगा। बुढापा आने का मतलब है कमजोरी महसूस करना तन और मन दोनो मे सुस्ती अत्यधिक थकान महसूस करना, ज्यादा बोलने या सुनने में अरुचि मन न लगना जी ऊबना, शरीर मे शिथिलता, शरीर और मन दोनों में कपन महसूस करना, थोड़े से काम मे ही थकान महसूस करना, पहले के मुकाबले काम मे सुस्ती और सब से बड़ी बात है कि मन मे ख्याल आना कि आप अब पहले की तरह जवान नहीं रहे।

कई एक नौजवान युवक एव युवती इस तरह की बीमारी से ग्रस्त हैं।

कई लोग इस 'बीमारी' को पहचान नहीं पाते और समझते हैं कि जो काम वह पिछले साल कर पाते थे वह अब इस साल नहीं कर पा रहे क्यो कि उनकी उम्र एक साल और बढ़ गई है। उनकी यह गलत फहमी है एक ही साल मे बुढापा नही आता बुढापा सालो में आता है। यदि इस साल आप वो काम नहीं कर पा रहे जो आप पिछले साल किया करते थे तो अवश्य ही इस साल आप अपने अन्दर कोई न कोई बीमारी पाल रहे हैं। ये बीमारी शारीरिक या मानसिक हो सकती है। ये कोई मामूली सी साधारण सी निवारण योग्य सक्रामक रोग अथवा किसी आवश्यक खाद्य पदार्थ की कमी से अथवा लाइलाज गम्भीर बीमारी कैन्सर या कोई अत्यन्त महगे इलाज वाली बीमारी हो सकती है।

कई ऐसी बीमारिया हैं जिनके मुख्य या अकेले लक्षण कमजोरी सुस्ती व थकान है। कई सालो तक कमजोरी बनी रहती है और इसकी पहचान नहीं हो पाती है, क्योंकि इसे साधारण बात मान कर मरीज उस समय तक डाक्टर की सलाह नही लेता जब तक कि बीमारी बढते बढ़ते बिल्कुल सामने नजर न आने लगे। फिर तो साधारण रोग भी असाधारण बन जाता है।

इसी वजह से विदेश मे जो बीमा योजनाए हैं और चिकित्सा सुविधाए हैं उनके अन्तर्गत हर व्यक्ति का अनिवार्य रूप से समय समय पर सम्पूर्ण रूप से मेडिकल निरीक्षण होता है और जो व्यक्ति अपने आपको बिल्कुल स्वस्थ समझ रहे हैं किन्तु जिनमे कोई छिपी बीमारी हो वो समय से पहचानी जाती है। बीमारिया जो आदमी को कमजोर सुस्त और थका हुआ बनाती है वह निम्न हैं—किसी भी इन्द्रिय का कैंसर, गुर्दे की बीमारी डायबीटीज, पेट की बीमारिया, अमीबायसिस, इरीटेबल बावेल, डीसेन्टरी, टी बी शरीर के किसी भी हिस्से की टी बी फेफड़े की बीमारिया टी बी दमा इत्यादि कोलाजेन बीमारिया दिल की बीमारी, एन्जाइना वाल्व की खराबी कार्डियोमायोपैथी की बीमारिया।

मनुष्य की ज्यादा से ज्यादा उम्र ११५ साल हो सकती है। साधारण रूप से यदि उसे हर हाल मे ठीक ठाक, सर्वोत्तम रूप से रखा जाये तो उसका जीवन काल ९५ वर्ष का होता है।

बुढ़ापा आने के कारण कई हैं इससे बचा तो नहीं जा सकता पर हा इसे टाला जरूर जा सकता है। इसके लिये कई एक विषयो पर ध्यान देना होगा। ये हैं—वातावरण, खानपान मानसिक स्थिति, वस्त्रादि, स्वास्थ्य, स्वच्छता सामाजिक एकता सदभाव यातायात सुविधाएं।

तो सर्वप्रथम अपने अन्दर से बीमारिया दूर भगाइये।

ध्यान रहे अनीमिया (यानि खून की कमी) और शरीर मे विटामीनो की कमी भी एक बीमारी है। छोटी से छोटी और बड़ी से बडी बीमारी का इलाज करायें।

अपना स्वास्थ्य ठीक रखें। मोटापा दूर करें। नियमित रूप से ब्लड प्रेशर या डायबिटीज यदि हो तो उसे नियन्त्रण मे रखें।

अपने शरीर को चुस्त, फुर्तीला बनायें। शरीर के एक एक अग का ध्यान दें। जैसे आख, नाक, कान, हाथ पैर दिल, चेहरा, चर्म केश इत्यादि।

अपने वातावरण को साफ रखें या फिर साफ सुथरे वातावरण में रहें। गन्दगी मे रहने वालों मे बुढापा तेजी से आता है। अधिक धूप, आन्धी, पानी, हवा, गर्मी सब आपको वृद्ध बनाते हैं। जहा तक सम्भव हो इनसे बचिए।

अपने दिन भर के कार्यक्रम को किसी नियमानुसार पूरा करें, व्यवस्थित तथा सयमित जीवन बितायें।

हर स्थिति मे समझौता करके जीना चाहिए। हर हाल मे खुश रहने की चेष्टा करनी चाहिए। हर परेशानी को बर्दाश्त करने की क्षमता रखनी चाहिए। किसी परेशानी से अपने मन को टूटने नहीं देना चाहिए।

बहुत ज्यादा खुश होने वाला क्रोध करने वाला, चिन्ता करने वाला लोभ करने वाला उत्तेजित होने वाला व्यक्ति जल्दी वृद्धावस्था मे प्रवेश करता है।

कई एक नौकरी पेशे भी ऐसे हैं जो आदमी को जल्दी बूढ़ा कर देते हैं। जैसे बहुत ज्यादा मेहनत करने वाले—खासकर जो ज्यादा वजन उठाते हैं—जैसे मजदूर, रिक्शे वाले, कुली आदि। परन्तु जिनको पेशे की वजह से ज्यादा चलना पड़ता है पर वजन उठाना नहीं पड़ता जैसे—डाकिया, अखबार बाटने वाले, बस कडक्टर आदि। वो जल्दी बूढें नहीं होते बनिस्पत उनके जो एक ही जगह बैठ कर काम करते हैं।

आपको जवान बने रहने के लिए अपने को हर तरह से ठीक रखना चाहिए। अपने घर, वातावरण नोकरी सबको सरल और सुन्दर रखना चाहिए और चिन्ता मुक्त रहना चाहिए। —डा० आरतीलाल चन्दानी
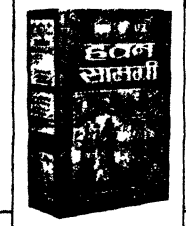
आर्य समाज के दानवीर

पं० ब्रह्मदत्त स्नातक

आर्य समाज के कार्यकर्त्ता मुख्यत: मध्यम वर्ग या निम्न श्रेणी की आर्थिक कोटि के अन्तर्गत आते हैं, पर जनसंख्या की दृष्टि से सदस्य संख्या सीमित होते हुए प्रत्येक क्षेत्र में उनका उल्लेखनीय योगदान रहा है। साहित्य, धर्म प्रचार, विद्यादान मानव कल्याण आदि सभी क्षेत्रों में और बलिदान में, देश सेवा और धर्म प्रचार में वे शहीद हुए हैं।

जहां तक कि धर्म स्थानों के निर्माण का प्रश्न है, उसमें भी शानदार मिसालें देखने को मिलती हैं। दक्षिण अफ्रीका डरबन का वेद मन्दिर अत्यन्त आधुनिक एवं विशाल धर्मस्थान दर्शनीय है बम्बई, कलकत्ता, मद्रास के अलावा लन्दन का वन्देमातरम भवन तथा भारत में विशाल अस्पताल, (फरीदाबाद) गुरुकुल कुरुक्षेत्र के निर्माण में पं० सत्यदेव भारद्वाज ट्रस्ट ने लाखों रुपए का दान दिया है। विदेशों में भी इस ट्रस्ट ने विशाल दान दिए है।

ऐसे ही एक आर्यसमाज के सेवक लाला दीवानचन्द जी ने ट्रस्ट बना कर चांदनी चौक में आर्य समाज दीवान हाल, कनाट प्लेस में आर्य समाज हनुमान रोड, करोल बाग में सतभ्रांवा गर्ल्स हायर सैकेण्डरी स्कूल, कनाट सर्कस में दीवानचन्द मेमोरियल अस्पताल, गुरुकुल खेड़ा खुर्द दिल्ली तथा फीरोजशाह रोड पर विशाल सूचना केन्द्र राजनैतिक एवं आर्थिक विषयों का निर्माण कराया। आज इसका वर्तमान मूल्य करोड़ो नही, एक अरब से ऊपर रुपयों में है। ऐसे परम दानवीर लाला दीवानचन्द जी का १०९वां जन्म दिवस २६ सितम्बर को मना कर भाव भीनी श्रद्धांजलि देकर उनकी समाज सेवा व राष्ट्र सेवा को याद किया गया। यश: कायेन जीवति उन पर सटीक बैठता है।

आर्य समाज के क्षेत्र में उच्च वर्ग के उदार धनी दानदाताओं के नाम उंगलियों पर गिने जा सकते हैं। स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज (पंडित कृपाराम शर्मा) ने सारी चलाचल सम्पत्ति सन्यासी होने पर दान में दे दी थी। कोवड़ी गांव को दान में देकर नजीबाबाद के मुन्शी अमनसिंह ने करोड़ों रुपयों का आज के हिसाब से मूल्य के द्वारा एक आदर्श शिक्षण संस्था की स्थापना को मूर्तरूप दिया था। महात्मा मुन्शीराम जी ने अपना जालन्धर स्थित निवास स्थान, प्रिंटिंग प्रेस दान में देकर स्वामी श्रद्धानन्द बनने पर अपनी शेष सम्पत्ति आ० प्र० सभा पंजाब तथा गुरुकुल कांगड़ी को दान में दे दी। देश भक्त राजा महेन्द्र प्रताप (मुरसान) ने गुरुकुल वृन्दावन की स्थापना हेतु अपना पक्का बाग दान में देकर और बाद में रही सही महल सम्पत्ति प्रेम महाविद्यालय के लिए दे दी थी।

इस सदी के उल्लेखनीय दानवीरों में फीजी के पं० हरदयाल शर्मा ने १९२४ मे मथुरा जन्म शताब्दी के अवसर पर ५०००० रुपये विदेश प्रचार के लिए सार्वदेशिक सभा को दिए। पंजाब आ० प्र० सभा की स्वर्ण जयन्ती पर प० ठाकुरदत्त शर्मा अमृतधारा वालो ने एक लाख रुपये तथा लाला दीवानचन्द ठेकेदार ने लाखों रुपयों से आर्य समाज मन्दिरों एवं संस्थाओं के निर्माण मे दिए। डेरा गाजी खां के एक सज्जन छात्रवृत्ति हेतु गुरुकुल कांगड़ी को २० हजार रुपये तथा डा० श्रीधर दयालु ने अनुसंधान कार्य के लिए जीवन भर की कमाई गुरुकुल वृन्दावन में दे दी। यो तो शहीद पं० लेखराम की पत्नी ने पति के नाम पर गुरुकुल में पढ़ने के लिए छात्रवृत्ति प्रदान की थी (पं० बुद्धदेव विद्यालंकार उससे पढ़े थे)।

वैदिक संपति छप रही है

पृष्ठ संख्या ७००, मूल्य १२५ रुपये

२४ अक्टूबर १९९३ तक अग्रिम धन देने पर ८० रु० में

आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान पं० रघुनन्दन शर्मा द्वारा लिखित "वैदिक सम्पति" २०×३०×८ साइज में शीघ्र प्रकाशित हो रही है। २४ अक्टूबर १९९३ तक मूल्य अगाऊ भेजने पर प्रति पुस्तक ८०) रु० होगा, डाक व्यय २०) रु० प्रति पुस्तक अलग से होगा। अपनी प्रति आरक्षण हेतु मनीआर्डर अथवा चैक या बैंक ड्राफ्ट डा० सच्चिदानन्द शास्त्री, मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली के पते पर भेजें।

—सम्पादक

विदेश समाचार

आर्यसमाज लन्दन में हिन्दी दिवस मनाया गया

भारत में हिन्दी को राष्ट्र भाषा के रूप में मान्यता की ४४वीं वर्षगांठ आर्य समाज लन्दन द्वारा १९ सितम्बर १९९३ को आर्य समाज के वन्देमातरम भवन में समारोह पूर्वक मनाया गया। साप्ताहिक सत्संग के पश्चात् हिन्दी दिवस पर लन्दन में भारत के उच्चायुक्त डा० एम० एल० सिंघवी का सदेश पढ़ कर सुनाया गया। वक्ताओ ने कहा कि विश्व की एक तिहाई आबादी हिन्दी भाषी है, इसलिए भारत सरकार को संयुक्त राष्ट्र संघ में इसका स्थान सुरक्षित बनाना चाहिये। समारोह मे आर्य प्रतिनिधि सभा इंगलेंड के प्रधान श्री एस० एन० भारद्वाज, सहित अनेक लोगो ने अपने-अपने विचार प्रकट किये।

श्री रीतेश शुभधन का देहान्त

शोक प्रस्ताव

आप लोगों को हम बहुत दुख के साथ सूचित करते है कि संस्था सत्य सनातन वैदिक धर्म, एम्सटर्डम के सदस्य श्री रीतेश शुभधन जो कि पण्डित सुन्दर प्रसाद शुभधन, कोषाध्यक्ष, आर्य प्रतिनिधि सभा, नीदरलैण्ड, के पुत्र थे, का देहान्त ३० वर्ष की आयु में ११-९-९३ को एम्सटर्डम में हो गया। १९-९-९३ को एक विशेष यज्ञ किया गया। २ मिनट का मौन धारण करके दिवंगत आत्मा की सद्गति एवं शान्ति के लिये ईश्वर से प्रार्थना करते हुए परिवार जनों को धैर्य प्रदान करने की कामना की गई।

भवदीय

महेन्द्र स्वरूप

नई निधियां

स्वामी सोमानन्द सरस्वती (दिल्ली) ने महात्मा नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़ (नैनीताल) में सन्यासियों और ब्रह्मचारियों के भोजन हेतु सार्वदेशिक सभा में ५-५ हजार रुपये की दो स्थिर निधियां स्थापित की हैं।

भूकम्प पीड़ितों की सहायतार्थ दिल खोल कर दान दें

दानदाताओं की सूची

श्री बचनसिंह आर्य, कृषि उप-मन्त्री, हरियाणा सरकार	५०००.००
मन्त्री आर्य समाज मन्दिर दरियागंज नई दिल्ली	५०१.००
वैदिक सत्संग संस्था से० ४ रोहिणी, नई दिल्ली	५०१.००
श्रीमती लक्ष्मी देवी, १२२४, से० २२ बी चण्डीगढ़	१५००.००
श्री खूबीराम गुप्ता व देवेन्द्र कुमार गोयल २१ स्टेट बेंक कालोनी जी० टी० रोड दिल्ली	१००.००
श्रीमती उर्मिला पत्नि श्री आर० एस० सिसोदिया, अरूण बिहार, नोएडा गा जयाबाद	१००.००
आर्य समाज मन्दिर दयानन्द मार्ग, रामपुर दरवाजा बहार कर्णावती	५००० ००
आर्य समाज मन्दिर न्यू मोती नगर नई दिल्ली द्वारा श्री तीर्थराम टंडन	११०००.००
प्रधानाचार्य, दयानन्द बाल मन्दिर, जू० हाई स्कूल, अमरोहा (मुरादाबाद)	१०००.००
आर्य समाज अमरोहा (मुरादाबाद)	५०१०.००
डा० नारायणदास बी० बी० कुकरेजा चेरिटेबल ट्रस्ट, गोहाटी	१०००.००
वैदिक धर्म समाज कैलीफोर्निया यू० एस० ए०	१४८४ (डालर)
आर्य समाज साकेत, नई दिल्ली	१२७००.००
श्रीमती नीरा मोहन २/११ शान्ति निकेतन नई दिल्ली	२५१.००
आर्य समाज बागपत	११०१.००

शराब मांस छोड़ो, बुद्धिमान बनो

दिनांक ९-१०-९३ को सार्वदेशिक सभा के कार्यालय में यज्ञोपरान्त ५००० स्टीकरों का विमोचन सभा प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। "शराब मांस छोड़ो, बुद्धिमान बनो" लिखे हुये यह स्टीकर न्याय सभा के संयोजक श्री विमल वधावन एडवोकेट की सुपुत्री कु० हर्षिता की तरफ से जारी किये गए हैं।

अभिनन्दन

हिन्दू नेता श्री चमनलाल क्षत्रिय का ७९वां जन्म दिवस हिन्दु सेवा समिति उत्तर प्रदेश की ओर से लक्ष्मी गार्डन दिल्ली में सोनी क्षेत्र के पूर्व संघ चालक डा० एम० सी शर्मा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अनेकगणमान्य व प्रतिष्ठित लोगों ने उपस्थित होकर श्री क्षत्रिय जी के दीर्घायु की कामना प्रकट की।

शुद्धि समाचार

अखिल भारतीय हिन्दू शुद्धि संरक्षिणी सभा समालखा के महामन्त्री स्वामी सेवानन्द सरस्वती तथा उनके साथियों के प्रयत्नों से १९९२-९३ में मध्य प्रदेश के डोंगा, कोट, बन्दा कुटरपरा, गुसार खाल, कुनिया, नर्मदापुर पिपरेकासा, पिडोया, माडवासराई, पोकसरी खातकरा, रतनपुर अमवीकापुर के ३०८१ परिवारों के १५,११२ लोग स्वेच्छा से वैदिक धर्म में दीक्षित हुए।

बुढ़लाडा में हिन्दी दिवस उत्साह के साथ मनाया गया

आर्य समाज बुढ़लाडा की ओर से १४ सितम्बर को डी. ए. वी. माडल स्कूल के हाल में हिन्दी दिवस श्री मेघराज गोयल की अध्यक्षता में मनाया गया। समारोह में हिन्दी प्रेमी संस्थाओं के अतिरिक्त अनेक विशिष्ट व्यक्तियों ने भाग लिया। समारोह में प्रस्ताव पास कर पंजाब में पंजाबी के साथ-साथ हिन्दी को दूसरी राज भाषा घोषित करने तथा शिक्षण संस्थाओं में हिन्दी को अनिवार्य विषय बनाने की मांग की गई।

महाराणा प्रताप जयन्ती मेरठ नगर में

३०-३१ अक्तूबर १९९३ को

आर्य जगत को विदित हो कि आगामी ३०-३१ अक्तू. को उत्तर प्रदेश के मेरठ नगर में विशाल स्तर पर महाराणा प्रताप जयन्ती समारोह मनाया जायेगा।

आप अधिक से अधिक संख्या में मेरठ चलने की तैयारी करें और मेरठ आर्य समाज को अपने पहुंचने की सूचना भी दे।

महर्षि दयानन्द भवन का उद्घाटन एवं विभिन्न सम्मेलनों का आयोजन

हर्ष के साथ सूचित कर रहे हैं कि आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के चिर प्रतीक्षित नवनिर्मित महर्षि दयानन्द भवन का उद्घाटन पूज्यपाद स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, प्रधान सार्वदेशिक, आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के कर कमलों से आगामी १७ दिसम्बर, ९३ को होना निश्चित हुआ है, इसके साथ ही बंग आर्य महासम्मेलन, महाराणा प्रताप जयन्ती, चतुर्थ भारतीय भाषा सम्मेलन, विद्वत सम्मान का विराट आयोजन १७ से १९ दिसम्बर, ९३ तक होने जा रहा है।

उक्त अवसर पर एक विशेषांक स्मारिका के रूप में एवं पांच से सात पुस्तकें वैदिक सिद्धान्तों पर आधारित आर्य समाज की मान्यताओं के प्रचार प्रसार के निमित्त प्रकाशित करने की योजना है, कार्यक्रम को सफल बनाने में आर्य जगत से आर्य नेतागण, बंगाल प्रान्त के आर्य लोग लगभग १००० (एक हजार) की संख्या में प्रतिनिधि रूप में पधार रहे हैं।

समारोह को सफल बनाने हेतु आप महानुभावो का उन्मुक्त हस्त सहयोग ही हमारे योजनाबद्ध कार्यक्रम का संबल है। अतः आपसे सानुरोध निवेदन है कि इस विराट आयोजन में सर्वात्मना सहयोग प्रदान करने की कृपा करें।

आनन्दकुमार आर्य
महामन्त्री

साक्षरता रैली

दिल्ली २५ सितम्बर।

लोगों में साक्षरता के प्रति जन चेतना जागृत करने के उद्देश्य से आज उत्तर पश्चिमी दिल्ली की शकूरपुर पुनर्वास बस्ती में एक विशाल साक्षरता रैली का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार के शिक्षा निदेशालय के अन्तर्गत चलाए जा रहे सम्पूर्ण साक्षरता अभियान के अधीन इस रैली का आयोजन उत्तरी शिक्षा जिला के मण्डल ने लिया। इसमें १५ स्कूलों के लगभग ५ हजार छात्र-छात्राओं, ४०० शिक्षकों, प्रधानाचार्यों, अभिभावक शिक्षक संघों के पदाधिकारियों, स्थानीय सामाजिक कार्यकर्त्ताओं एवं शिक्षा विभाग के अधिकारियो ने भाग लिया। ६ किलोमीटर लम्बे मार्ग पर बच्चे विभिन्न प्रकार के नारे लगा रहे थे। क्षेत्रीय निवासियों ने इस रैली में काफी रुचि दिखाई। तथा छात्र छात्राओं का उत्साह वर्धन किया।

योग एवं प्रशिक्षण शिविर

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा फिरोजाबाद के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द सरस्वती साधना मन्दिर इन्टर कालेज जाखूमई फिरोजाबाद में १५ से २४ अक्टूबर तक योग एवं व्यायाम प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। भारतवर्ष के सुविख्यात योगमार्तण्ड एवं वरिष्ठ व्यायाम शिक्षकों के निर्देशन में उक्त प्रशिक्षण सम्पन्न होगा। इस अवसर पर डा० रामप्रकाश वर्णी तथा श्रीमती राजबाला के प्रवचन कराये जायेंगे। नामांकन की अन्तिम तिथि ५ अक्टूबर १९९३ है नामांकन हेतु श्री वृषपालसिंह आर्य आदर्श जनता इन्टर कालेज असराना फिरोजाबाद से सम्पर्क करें।

दिल्ली पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०२४/९३ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१७ १०-१९९३) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० यू (G)९३
R N 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U (G) 93 Post in N D P.S.O.on 16-10-1993

शहीद परिवार सहायता वितरण समारोह

हिन्द समाचार पत्र समूह (जालन्धर) के सचालक श्री विजय कुमार चोपड़ा द्वारा शहीद परिवार सहायता वितरण का ५१वा समारोह २६ ९ ९३ को जालन्धर मे आयोजित किया गया। समारोह की अध्यक्षता पजाब के मुख्य म त्री सरदार बेअन्तसिंह ने की, मुख्य अतिथि हरियाणा के वित्तमन्त्री श्री मागेराम गुप्ता थे। इस अवसर पर अखिल भारतीय युवा काग्रेस के अध्यक्ष श्री मनीन्दरसिंह बिट्टा आदरणीय अतिथि थे। समारोह में १० लाख रुपये की राशि आतकवाद के कारण निराश्रित १०० परिवारो को यू०टी० आई० बोन्ड दैनिक उपयोग के सामान के रूप में वितरित की गई। श्री चोपड़ा ने बताया कि अब तक उनके पत्र समूह द्वारा चार करोड़ छियालीस लाख की राशि शहीद परिवार के सदस्यो मे वितरित की जा चुकी है।

चित्र में ५१वें सहायता वितरण समारोह के अवसर पर एक विधवा को श्री मागेराम गुप्ता यू० टी० आइ० बान्ड तथा सरदार बेअन्तसिंह और विजय कुमार चोपड़ा दैनिक उपयोग का सामान देते हुये।

वार्षिकोत्सव

आर्य गुरुकुल ऐरवा कटरा इटावा का १२वा वार्षिकोत्सव १८ से २१ नवम्बर ९३ तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती सहित आर्य जगत के प्रकाण्ड विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। समारोह में अनेको सम्मेलनो का आयोजन भी किया गया है इस अवसर पर १८ नवम्बर को गुरुकुल की नवनिर्मित यज्ञशाला का उद्घाटन स्वामी दिव्यानन्द जी महाराज के करकमलो द्वारा सम्पन्न होगा। समारोह मे आप सबका सहयोग तथा सपरिवार उपस्थिति प्रार्थनीय है।

—आर्य समाज ककरखेड़ा मेरठ का तृतीय वार्षिकोत्सव आर्य समाज मन्दिर मेहन्दी मोहल्ला ककरखेड़ा मेरठ मे ८ से १० अक्तूबर तक समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वानो द्वारा अपने अमृतमयी प्रवचनो से जनता जनार्दन का ज्ञानवर्धन किया गया समारोह में श्री आशाराम आर्य धनुधर द्वारा विभिन्न प्रकार के आकर्षक एव रोमान्चकारी धनुष विद्या के प्रदर्शन से जन समूह को आश्चर्य चकित कर दिया। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

—आर्य वीर दल आर्य समाज हरजेन्द्र नगर कानपुर का १८वां वार्षिकोत्सव बड़े ही हर्षोल्लास के साथ १५ से १६ अक्तूबर तक मनाया जायेगा इस उत्सव मे आर्य वीरो द्वारा बहुत ही आकर्षक कार्यक्रम प्रस्तुत किये जायगे इस अवसर पर भाषण गीत तथा अनेको अन्य कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। इस महोत्सव मे जनपद के अनेक गणमान्य अधिकारी एव समाज सेवी कार्यकर्ता पधार रहे है।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन दिल्ली २ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

महर्षि दयानन्द उवाच

- राज पुरुष प्रजा के लिए, सुमाता, सुपिता के समान और प्रजा पुरुष राज सम्बन्ध मे सुसन्तान के सदृश वर्त्त कर परस्पर आनन्द बढावें ।
- मेरा तात्पर्य किसी की हानि वा विरोध करने मे नहीं किन्तु सत्यासत्य का निर्णय करने का है । इसी प्रकार सब मनुष्यो को न्याय दृष्टि से वर्त्तना उचित है । मनुष्य जन्म का होना सत्य असत्य के निर्णय करने कराने के लिए है न कि वाद-विवाद विरोध करने कराने के लिए ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष । ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३१ अंक ३७] दयानन्दाब्द १६९ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९४ कातिक शु० ९ स० २०५० २४ अक्तूबर १९९३

हजरत बल दरगाह उड़ाने की कोशिश नाकाम

कश्मीर में उग्रवादियों की मांगों को सरकार ने ठुकराया

आतंकवादियों के खतरनाक खेल

श्रीनगर की दरगाह हजरत बल पर कब्जा करके आतंकवादियो ने 'ब्लू स्टार' कार्रवाई जैसी परिस्थितिया पैदा करने का खतरनाक षडयन्त्र रचा है। इस दरगाह में पैगम्बर मोहम्मद का पवित्र बाल रखा हुआ है । आतंकवादियो की घुसपैठ के बाद अचानक उस कमरे के दरवाजे का ताला टूटा हुआ पाया गया जिस मे यह पवित्र चिन्ह सुरक्षित रखा गया था । सुरक्षा बलो ने दरगाह को घेर लिया क्योंकि अधिकारियो के मुताबिक यह एक खतरनाक षडयन्त्र की शुरुआत थी जिसमें बाल' गायब करा कर यही प्रचारित किया जाने वाला था कि प्रशासन ने दरगाह की बेहुरमती नहीं की है बल्कि पैगम्बर के बाल को भी चुरा लिया है । आतंकवादी जानते थे कि इससे पूरी घाटी मे अफरा तफरी पैदा करके भारी पैमाने पर हिंसा भडकाई जा सकती थी । समय पर सूचना मिलने पर सुरक्षा दस्तो ने इमारत को घेर लिया मगर लगता है कि आतंकवादियों ने इस स्थिति के लिए तैयारी कर ली थी । उन्होने दरगाह पर उस समय कब्जा कर लिया जब वहा लगभग तीन सौ व्यक्ति मौजूद थे। इस तरह दरगाह मे इन बधक बनाये हुए नागरिको को ढाल बनाकर सुरक्षा दस्तो को इमारत के बाहर ही रहने पर मजबूर करने मे उन्हें सफलता मिल गई । इमारत म सशस्त्र आतंकवादियो को गिरफ्तार करने के लिए किसी भी पुलिस कारवाई को मसजिद की बेहुरमती के रूप में प्रचारित किया जा सकता है। जाहिर है कि सुरक्षा बलो के सामने एक विकट समस्या पैदा हो गई ।

प्रशासन ने आतंकवादियो से बातचीत करने की पेशकश की लेकिन आतंकवादियो ने जो शर्तें रखी है उन्हें हू-ब-हू स्वीकार करना सरकार के लिए मुश्किल है । आतंकवादियो की माग है कि आसपास के इलाको से कर्फ्यू हटा लिया जाए,शहर के उलेमाओ को दरगाह मे भेजा जाए जिन्हें पवित्र बाल वाले कमरे की चाबिया सौंपी जायेंगी और दरगाह के प्रागण में ही एक सभा का आयोजन किया जाए जिसमे आतंकवादी यह दावा करेंगे कि सरकार पवित्र बाल को चुराना चाहती थी जबकि आतंकवादियों ने ही यह सरकारी षडयन्त्र विफल कर दिया । इन तीनो शर्तों को स्वीकार करने का मतलब होगा कि सरकार परोक्ष रूप से यह स्वीकार करेगी कि दरगाह की बेइज्जती मे सरकार और सुरक्षा बलों की भूमिका थी । साफ है कि आतंकवादी इस व्यापक षड-यन्त्र की रूपरेखा अपने बूते पर नहीं-बना सकते थे । गृह मन्त्रालय का दावा है कि उसके पास ऐसे सबूत हैं कि इस षड्यन्त्र की रूप रेखा पाकिस्तान मे बनी थी । ये सबूत न भी हों तो भी इस घटना के तुरन्त बाद जिस तीव्रता के साथ पाकिस्तान ने दरगाह को अपवित्र करने का आरोप भारत सरकार पर लगाना शुरू किया उससे साफ पता चलता है कि योजना की जानकारी पाकिस्तान सरकार को पहले से थी । आतंकवादियों ने दावा किया कि उन्होंने दरगाह के चारो ओर बारूद बिछा दिया है और अगर सुरक्षा बलों ने इमारत में प्रवेश

(शेष पृष्ठ ११ पर)

भूकम्प से प्रभावित अनाथ बच्चों का पालन-पोषण आर्य समाज करेगा

हैदराबाद, १० अक्तूबर आर्य समाज ने महाराष्ट्र के भूकम्प में माता-पिता की छत्रछाया से-वंचित होने वाले बेसहारा बच्चो को अपनाने और उन के पालन पोषण का निर्णय लिया है ।

आर्य समाज के वरिष्ठ नेता प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने यहां जारी एक प्रेस विज्ञप्ति मे कहा है कि उनका सगठन प्रभावित क्षेत्र के छात्रों को जो इस माह के अन्त मे होने वाली सप्लीमेन्ट्री परीक्षा देना चाहते हैं आहार की व्यवस्था वर्षा से बचाव की सुविधा एव कम्बल आदि उपलब्ध कराएगा ।

उन्होने कहा कि आर्य समाज ने उन सभी क्षेत्रो का विशेषज्ञो द्वारा पुन सर्वेक्षण कराने और उन क्षेत्रो का स्पष्ट पता चलाने की सरकार से माग की है जहा भूकम्प आने की सम्भावना है ।

भूकम्प पीड़ितों की सहायता करो

पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव की कार दुर्घटनाग्रस्त

दिल्ली, १९ अक्टूबर । सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव की कार उस समय दुर्घटनाग्रस्त हो गई जब वह आर्यसमाज द्वारा खोले गये भूकम्प पीड़ित क्षेत्रो मे राहत केन्द्रो का निरीक्षण करने जा रहे थे, रास्ते में उनकी कार किसी अन्य वाहन से टकरा गई जिससे उनकी कार को तो क्षति हुई किन्तु पण्डित जी बाल बाल बच गये ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने बताया कि सार्वदेशिक सभा की ओर से भूकम्प पीडितो के लिए सहायतार्थ और राशि की एक किस्त वहा भेजी जा रही है । इससे पूर्व भी सभा से एक लाख रुपया वहा भेजा जा चुका है ।

स्वामी जी ने समस्त आर्य जनता से अपील करते हुए कहा कि वह भूकम्प पीड़ितों की अधिक से अधिक सहायता करें और उनकी सहायतार्थ राशि "सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा" के नाम से सभा कार्यालय में भेजें ।

संपादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

वेदप्रचार दिवस एवं अभिनन्दन समारोह

दिनांक २०-९-९१ को प्रान्तीय आर्य महिला सभा के तत्वावधान मे वेद प्रचार दिवस एव अभिनन्दन समारोह माण्या बहिन प्रभात शोभा जी पडिता की अध्यक्षता में आर्य समाज राजौरी गार्डन में मनाया गया। सर्व प्रथम यज्ञ श्रीमती आशा बहिन जी के निर्देशन में हुआ, ध्वजा रोहण श्रीमती राज पांडे व्यवधान महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल के बच्चो द्वारा, वेद गान आर्य कन्या गुरुकुल की छात्राओ द्वारा। प्रतियोगिता यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के मन्त्रो की हुई जिसमें १४ बहिनो ने भाग लिया। निर्णायिका श्रीमती शकुन्तला दीक्षित और सुशीला आनन्द ने बड़ी सूझ बूझ से पुष्पा साहनी प्रथम मनीषा मल्होत्रा कृष्णा रसवन्त द्वितीय कृष्णा खन्ना सुशीला महता, विमल ओबराय को तृतीय घोषित किया।

श्रीमती डा० शशीप्रभा जी ने कहा वेद को हम सबसे बड़ा प्रमाण मानते है ईश्वर अनन्त है और उसका ज्ञान भी अनन्त है वेद केवल चार ग्रन्थों का नाम नहीं, वेद बुद्धि पूर्वक है और सारे ससार की निधि है कर्म के मार्ग पर चलने के लिये ३ मार्ग ज्ञान-कर्म उपासना है। श्रीमती प्रभात शोभा जी ने कहा ईश्वर हमे सब ओर से देख रहा है यह जगत ईश्वर से व्याप्त है, हम कर्म करते हुए जीए फल की इच्छा न करें कर्मानुसार जो मिले उसी में सन्तुष्ट रहें। अभिनन्दन—डा० धर्मपाल जी कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्व-विद्यालय (हरिद्वार) श्रीमती सुशीला जी आनन्द, प्रभात शोभा जी, शान्ती देवी जी अग्निहोत्री, आशा बहिन जी, डा० शशीप्रभा कुमार डा० उषा जी शास्त्री इन सभी का अभिनन्दन छात्रो द्वारा अपनी ओर से श्रीमती सरला जी महता ने किया सभा की बहिनों ने तिलक लगाते हुए तथा सभी स्त्री समाजों की अधिकारी बहिनो ने पुष्प मालाओं और श्रीमती चन्द्रकला ने वैदिक साहित्य से अभिनन्दन किया, स्वागत गान सखी आर्या और स्वागत की कविता डा० उषा जी शास्त्री ने सुनाई। डा० धर्मपाल जी ने प्रान्तीय आर्य महिला सभा की बहिनों का धन्यवाद करते हुए कहा वेद सारे ससार के प्राणी मात्र के लिये है, हम वेद प्रचार करते रहें हम सब का यही उद्देश्य होना चाहिये। सभा का सयोजन मन्त्रिणी कृष्णा चड्ढा ने किया प्रधाना शकुन्तला आर्या ने धन्यवाद तथा दूर-दूर से आयी बहिनों का धन्यवाद किया।

कृष्णा चड्ढा
मन्त्रिणी प्रान्तीय सभा

संस्कार चन्द्रिका

दूसरा संस्करण प्रेस मे

सस्कार चन्द्रिका का प्रथम सस्करण समाप्त। दूसरा सस्करण प्रकाशनार्थ प्रेस में लागत दाम १००) रुपये कमीशन काटकर ८०) रुपये मे दी जायेगी।

—सम्पादक

वैदिक सम्पत्ति का विज्ञापन दिया जारहा है ग्राहक अविलम्ब धन भिजवा कर लाभ उठायें।

नवलखा महल उदयपुर को सत्यार्थप्रकाश के प्रचार का केन्द्र बनाया जायेगा

दिल्ली ११ अक्टूबर, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आज उदयपुर के दौरे से लौटने पर बताया कि १७ अक्टूबर को उदयपुर के नवलखा महल मे आर्य नेताओ की एक बैठक में निर्णय लिया गया कि नवलखा महल को सत्यार्थप्रकाश का प्रचार केन्द्र बनाया जावे और यहा पर सभी भाषाओ मे सत्यार्थप्रकाश के संस्करण रखे जायेंगे तथा एक बड़े स्तर की लायब्रेरी यहा पर खोली जायेगी।

उल्लेखनीय है कि उदयपुर के दानी महानुभाव श्री सेठ हनुमान प्रसाद चौधरी ने इस अवसर पर १० लाख रु० अपनी ओर से नवलखा महल के विकास हेतु देने की घोषणा की। इस अवसर पर बैठक में श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, प्रो० शेरसिंह, श्री रामसिंह राठौर, सेठ हनुमान प्रसाद चौधरी, स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती के अतिरिक्त राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के कई अधिकारी उपस्थित थे। इस बैठक का विस्तृत-समाचार आगामी अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

भूकम्प पीड़ितों की दिल खोल कर सहायता करें

दान दाताओं की सूची

श्री एस के गुप्ता, एडीशनल चीफ इन्जीनियर	डेसू	दिल्ली	५०० ००
श्री एस आर सचदेवा एस ई	"	"	१०० ००
श्री एस आर सेठी, एस ई	"	"	१०१ ००
श्री सुनील कटियार, एक्स ई एन	"	"	१०१ ००
श्री एस के त्यागी, एक्स ई एन	"	"	१०० ००
श्री सतवन्त सिंह, एक्स ई एन	"	"	१० ००
श्री निर्मलजीत सिंह, एक्स ई एन	"	"	१०० ००
श्री के आर जैन, ए ई	"	"	१००,००
श्री आर सी शर्मा ए ई	"	"	१०० ००
श्री एच एल गुप्ता, ए ई	"	"	१०१ ००
श्री आर एल नय, ए ई	"	"	१०१ ००
श्री के एल वार्ष्णेय, ए ई	"		१०१ ००
श्री के एल कपूर,	"	"	५१.००
श्री आर के नेगी, ए ई	"	"	१०१ ००
श्री एस के शर्मा ए ई	"	"	१०१ ००
श्री आर के नागपाल ए ई	"	"	१०१ ००
श्री ए के सेठी ए ई		"	५१ ००
श्री वेदप्रकाश शर्मा इन्सपेक्टर	"	"	१०१ ००
श्री के बी. बाबा,	"	"	५०० ००
श्री अजय जैन, इन्सपेक्टर	"	"	१०१ ००
श्री मनोहरलाल,	"	"	१००.००
श्री सुरेन्द्र कुमार	"	"	१०० ००
श्री पी पी बाबा,	"	"	२०० ००
श्री हासनी साहब,	"	"	१०१ ००
श्री नन्द किशोर शर्मा,	"	"	१०१ ००

(यू० एस० डालर)

श्रीमती कमला—श्री बाल कृष्ण शर्मा	२०० ००
जोसेफीन—राममूर्ती शर्मा	१०० ००
जया—अशोक कुमार शर्मा	१५० ००
इन्द्रा—श्याम शर्मा	१०० ००
चन्द्रकान्ता शर्मा	३० ००
डा० सुधीर कुमार आनन्द	१०० ००
श्रीमती अमरजीत—श्री कैलाश चमीशा एम ड,	१०१ ००
पडित सत्यपाल शर्मा, वेद शिरोमणि	१०० ००
श्रीमती सुमित्रा—श्री प्रदीप शर्मा	१०० ००
प्रेमलता—व्यासदेव महाजन	१०० ००
उर्मिला—लक्ष्मीचन्द गुप्ता	१०१ ००
सुधा—मदनलाल गुप्ता	५१ ००
उमा—डा० यशपाल मनचन्दा	५१,००
श्रीमती शील मित्तल	२१ ००
अदिति—श्री विनोद कूल	२१ ००
श्रीमती निर्मला शर्मा	२१ ००
निर्मला—डा० प्रेम प्रकाश गुप्ता	२१ ००
श्री देवराज डांग	२१ ००
श्रीमती प्रीति शर्मा	११.००
श्री ब्रह्मदत्त शर्मा	११ ००
श्रीमती शशि तलवार	११ ००
श्रीमती उषा—श्री ओम पराशर	११.००
श्रीमती सरोज—श्रीराम कक्कड़	११.००

यू० एस० डालर १६७४
द्वारा पण्डित वीर्य कृष्ण देवी
वैदिक धर्म प्रेमार्थ, कैलीफोर्निया (अमेरिका)

"अयं त इध्म आत्मा" मन्त्र की प्रामाणिकता तथा उसके विनियोग की असंदिग्धता

सार्वदेशिक सभा के धर्माधिकारी का स्पष्टीकरण

अपने विगत कानपुर प्रवास के समय मुझे बताया गया कि गुरुकुल शाही (पीलीभीत) के पं० इन्द्रदेव यति तथा कतिपय अन्य इस बात का प्रचार कर रहे हैं कि (१) अग्निहोत्र में समिधाधान के चार मन्त्रों के स्थान पर मात्र तीन ही मन्त्र बोलना ऋषि दयानन्द को अभीष्ट था—वे मन्त्र हैं :—

ओं समिधाग्निं, सुसमिद्धाय तथा तन्त्वा आदि (यजुर्वेद ३ । १, २, ३) (२) 'अयं त इध्म आत्मा' चूंकि वेद का मन्त्र नही है इसलिए न तो इससे प्रथम समिधा ही डाली जाए और न इस मन्त्र को बोल कर पांच घृताहुतियां ही दी जावें । (३) अयं त इध्म आत्मा यह गृह्य सूत्र (आश्वलायन १।१०।१२) का मन्त्र है अत: यज्ञ में इसका विनियोग उचित नहीं (४) अयं त इध्म आत्मा संस्कार विधि के मूल हस्तलेख में नहीं था, प्रेस कापी करते समय लेखक ने (लिपिकर्ता ने) इसे प्रक्षिप्त कर दिया । यह हाशिए मे बढ़ाया गया है ।

इसी प्रकार की एक शिकायत आर्यसमाज सीतापुर (उ० प्र०) के मन्त्री श्री बी. एस. चौहान ने भी विस्तार से लिख कर मुझे तथा सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी को भेजी है जिसमें इन्होंने लिखा है कि सौरागढ़ (आगरा) के कोई पं० विद्यादेव त्रिवेदी उनकी आर्यसमाज के वेदप्रचार सप्ताह में आये और उक्त प्रकार की बातें कहते हुए न तो अयं त इध्म आत्मा से पांच घृताहुतियां लगवाने दीं और न प्रथम समिधा ही डालने दी । उन्होंने भी यजुर्वेद अध्याय ३ के प्रथम तीन मन्त्रो से ही तीन समिधायें डलवाईं जब कि ऋषि ने प्रथम समिधा के लिये 'अयं त इध्म' द्वितीय के लिये यजु० ३।१,२ (दो मन्त्र) तथा तृतीय के लिये (यजु० ३।३) बोलने का विधान किया है । मन्त्र चार हैं और समिधायें तीन हैं ।

उपर्युक्त शंकाओं तथा शिकायतों के सम्बन्ध में धर्मार्य सभा का आदेश स्पष्ट है :—

(१) अयं त इध्म आत्मा का समिधाधान तथा पंच घृताहुति में विनियोग (विधान) ऋषि दयानन्द ने किया है । इसमें उलटफेर करने का किसी को अधिकार नहीं है । कर्मकाण्ड में न्यूनाधिकताकरना तथा ऋषि के विधान को न मानना स्वेच्छाचारिता से भिन्न कुछ भी नहीं है ।

(२) गृह्य मन्त्रो का कर्मकाण्ड में सर्वत्र विनियोग होता है । ऐसा प्राचीन गृह्य सूत्र रचयिता ऋषियो ने भी किया है और ऋषि दयानन्द ने भी संस्कार-विधि में अनेकत्र किया है । उदाहरणार्थ-गर्भाधान में 'अथास्यग्ने' यह मन्त्र पारस्कर का है । जातकर्म में आसिञ्चन् यह पारस्कर गृह्य का मन्त्र है । विवाह विधियों में लेखा संन्धिषु आदि मन्त्र ब्राह्मण के हैं । 'ध्रुवमसि' मन्त्र गोभिल गृह्य का है । इस प्रकार गृह्य सूत्रों के शतश: मन्त्र यज्ञादि तथा संस्कारों में विनियुक्त होते हैं ।

(३) ऋषि की मूल प्रति में लेखक ने प्रक्षेप कर दिया, यह कथन सर्वथा गैर जिम्मेदाराना है । महाराज ने स्वयं अपने ग्रन्थो की हस्तलिखित प्रतियों में हाशिये में अनेक चीजें स्व लेखनी से बढ़ाई है । उदाहरण के लिये देखें—ऋषि की आत्मकथा की मेरे द्वारा सम्पादित फोटो प्रति वाला संस्करण । इसके आरम्भ में ही ऋषि ने स्वहस्त से एक लम्बा वाक्य हाशिये में जोड़ा है जब कि हस्तलेख लेखक का है ।

कानपुर में मुझे बताया कि कुछ पण्डित पुरोहितों ने पं० इन्द्रदेव के कहने में आकर अयं त इध्म आदि का प्रयोग सर्वथा बन्द ही कर दिया है । मैंने उसी समय कहा था कि यह अनुशासनहीनता है । अत: आर्य जगत् सावधान रहे तथा किसी व्यक्तिके कहनेमें आकर कर्मकाण्डकी विधियों के साथ मनमानी नहीं करें ।

—डा० भवानीलाल भारतीय
८/४२३ नन्दनवन जोधपुर

आर्यसमाज संगठन विरोधी तत्वों से सावधान रहें

वैदिक धर्मसमाज केलीफोर्निया (अमेरिका) ने भी सार्वदेशिक सभा का समर्थन किया

भारत के गृह मन्त्री को विशेष पत्र

माननीय गृह मन्त्री जी
भारत सरकार
गृह मन्त्रालय, नई दिल्ली
भारत

आदरणीय महोदय······सम्मान पूर्वक नमस्ते ।

सार्वदेशिक साप्ताहिक समाचार पत्र के माध्यम् से यह जानकर बहुत दु:ख हुआ कि कुछ विरोधी तत्व आर्य समाज की छवि को धूमिल करने का षडयन्त्र चला रहें है, ऐसा घृणात्मक तथा नीच कार्य संन्यासी तो क्या एक साधारण आर्य समाजी भी नहीं करता । एक लम्बे काल से आर्य समाज का राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सार्वदेशिक सभा के नाम से एक ही संगठन है जिसको कि देश/विदेश की सभी आर्य समाजें मान्यता देती हैं । वदिक धर्म समाज लास एंजलस दक्षिणी कैलीफोर्निया U. S. A. पूज्य स्वामी आनन्दबोधजी सरस्वती को सभा का प्रधान तथा डा० सच्चिदानन्द जी को सभा का महामन्त्री स्वीकार करता आ रहा है, तथा इनके नेतृत्व में सभा का कार्य बड़े सुचारु रूप से चल रहा है और प्रगति की ओर बढ़ रहा है । मैं इस पत्र द्वारा माननीय गृह मन्त्री भारत सरकार से सविनय प्रार्थना करता हू कि ऐसे राष्ट्र विरोधी तत्वो ने अनेक बार भारत देश की छवी को भी विदेश में धूमिल किया है, इनके खिलाफ सख्त कार्यवाही की जाये, आर्य समाज की जिस सम्पत्ति को इन लोगो ने अवैध रूप से सहारनपुर में कौड़ियों के भाव मे बेचा है वह सम्पत्ति आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश को वापिस दिलवाई जाये ।

—मदनलाल गुप्ता पुरोहित
309 1/2 N. Atlantic Blvd.
ALHAMBRA CA 91801
U.S A.-

सार्वदेशिक के ग्राहकों से

सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहकों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क भेजते समय या पत्र व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या का उल्लेख अवश्य करें ।

अपना शुल्क समय पर स्वत: ही भेजने का प्रयास करें । कुछ ग्राहकों का बार बार स्मरण पत्र भेजे जाने के उपरान्त भी वार्षिक शुल्क प्राप्त नहीं हुआ है अत: अपना शुल्क अविलम्ब भेजें अन्यथा विवश होकर अखबार भेजना बन्द करना पड़ेगा ।

"नया ग्राहक" बनते समय अपना पूरा पता तथा "नया ग्राहक" शब्द का उल्लेख अवश्य करें । बार बार शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिये, एक बार ३०० रुपये भेजकर सार्वदेशिक के आजीवन सदस्य बनें ।—सम्पादक

महाराष्ट्र के भूकम्प क्षेत्रों का एक सर्वेक्षण

—क्रान्ति कुमार कोरटकर अध्यक्ष आन्ध्र प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा

गुरुवार ३० सितम्बर, १९९३ को रात्रि ३.५६ को हैदराबाद नगर-वासियों ने एक विचित्र ध्वनि के साथ पृथ्वी में कुछ झटके महसूस किये। अधिकांश नगरवासी अपनी शैया छोड़ कर बाहर आ गए।

शुक्रवार दि० १-१०-१९९३ को प्रातः ७ बजे दूरदर्शन तथा रेडियो के समाचारों एवं समाचार पत्रों से सारे देशवासियों को ज्ञात हुआ कि लातूर, उस्मानाबाद, बीदर एवं गुलबर्गा के ग्रामों में इस भूकम्प के कारण भारी तबाही हुई है। लातूर तथा उस्मानाबाद के जिलों के अनेक गांव इस भूकम्प के बुरी तरह शिकार हुए हैं। हजारों घर, मनुष्य तथा पशु धन इस भूकम्प की चपेट में आकर पूर्णतः नष्ट हो गए है।

इस समाचार को सुनते ही सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने तत्काल आवश्यक कदम उठाये। दिल्ली, गुलबर्गा तथा देश के अन्य स्थानों से आर्य वीर दल भूकम्प पीड़ितों की सहायता के लिए दुर्घटना स्थल पर आ पहुंचे। श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव, वरिष्ठ उपाध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आन्ध्र प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री क्रान्ति कुमार अपने स्वयंसेवकों के साथ महाराष्ट्र के भूकम्प पीड़ितों की सहायतार्थ लातूर एवं उस्मानाबाद आ पहुंचे।

आर्य समाज लातूर में एक आपात बैठक आयोजित की गई, जिसमें निम्न तथ्यों पर विचार किया गया—

१—इस भूकम्प में हुए जानमाल का ब्यौरा।

२—भूकम्प के मुख्य कारण।

३—भूकम्प पीड़ितों की सहायता के लिए उठाये जाने वाले आवश्यक कदम।

अनुमान लगाया जाता है कि इस भूकम्प में ३०,००० से अधिक लोग मृत्यु के शिकार हो गये हैं। अनगिनत पशुधन नष्ट हो गया है।

लातूर जिले के औसा तालुके में हजारों घर इस भूकम्प की चपेट में आ गए हैं। किलारी, किलारीवाडी तथा किलारी ताण्डा के लगभग सभी मकान इस भूकम्प की चपेट में आ गये हैं। मंगरोल, उमर्गा तालुके में एक लाख के व्यय से बनाया गया आर्य समाज का भवन इस भूकम्प के चपेट में आकर जीर्ण-शीर्ण हो गया है। अतिरिक्त जिलाधीश, श्री शरद पवार, श्री विलासराव देशमुख, जो किलारी ग्राम में किए जाने वाले राहत कार्यों के कार्यवाहक अधिकारी हैं, उन्होंने हमें बतलाया कि किलारी ग्राम में कितनी जान-माल की हानि हुई है उसका पूरी तरह अभी सर्वेक्षण नही हो पाया है। राहत पहुंचाने वाली संस्थाओं को शीघ्र ही इसकी जानकारी दी जायेगी।

श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने यह अनुभव किया कि राहत कार्यों में संलग्न अधिकारी कम अनुभव के कारण राहत कार्यों को आवश्यक गति नहीं दे पा रहे हैं। फिर भी यह देखा गया है कि वे इस दिशा में लगातार प्रयत्नशील हैं।

भारतीय सेना के जवान भूकम्प पीड़ितों की सहायता के लिए बड़ी ही तत्परता दर्शा रहे है। महाराष्ट्र के लातूर तथा उस्मानाबाद के भूकम्प पीड़ित क्षेत्रों का दौरा करने पर हमारे दल ने अनुमान लगाया कि महाराष्ट्र में भूकम्प के निम्न कारण हो सकते हैं—

१—हिमालय पर्वत का एक हिस्सा अपने स्थान से हिलने के कारण तेज भूकम्प का झटका लगा। भारत का कोई भी भाग भविष्य में भूकम्प की चपेट में आ सकता है।

२—नैसर्गिक चेतावनी से कोई भी बच नहीं सकता इस बात को सरकार तथा भूकम्प पीड़ित क्षेत्रों के नागरिकों को अच्छी तरह जान लेना चाहिए। विशेषतः लातूर जिले के औसा तालु के नागरिक जो इसके भुक्त भोगी हैं।

अगस्त सन १९९२ से सितम्बर १९९३ तक की अवधि में किलारी ग्राम में इस बात की चर्चा थी कि कभी भी वे भूकम्प की चपेट में आ सकते हैं। अक्तूबर १९९२ में इस आशंका से राज्य सरकार को सूचित किया गया था, किन्तु खेद है कि शासन ने इस ओर न तो विशेष ध्यान दिया और न ही सुरक्षा के कोई उपाय किये। अगर सरकार इस अफवाह की गहराई से जांच पड़ताल करके किलारी वासियों को दूसरे स्थान पर पुर्नवास की व्यवस्था करती तो आज इतनी अधिक जान-माल की हानि नहीं हुई होती। अपनी खेती तथा अन्य सम्पत्ति के मोह ने किलारी वासियों को अपने ग्राम में बने रहने पर विवश किया था। विशेषज्ञों का मत है कि इसके लिए सरकार तथा ग्रामीण दोनो ही उत्तरदायी हैं।

अब प्रश्न यह उठता है कि भूकम्प पीड़ितों के लिए सबसे आवश्यक कदम कौन से उठाये जायें—

१—पुर्नवास के लिए अस्थाई व्यवस्था करना सबसे आवश्यक कार्य है।

२—बिजली तथा पानी की व्यवस्था करना।

३—लोगों के लिये कम्बल आदि की व्यवस्था शीघ्र करना क्योंकि ग्रामीण खुले स्थान पर सो रहे हैं तथा शीतकाल आरम्भ होने वाला है।

आर्य समाज ने भूकम्प से पीड़ित उमर्गा के ग्राम मंगलरोल, सस्तापुर में भूकम्प पीड़ितों को कम्बल बांटने का कार्य किया है। जो भी राहत कार्य किए जा रहे हैं उनमें तेजी आनी चाहिए और हम अनुभव करते हैं। भूकम्प पीड़ितों के लिये नित्यावश्यक वस्तुएं, चिकित्सा की सुविधाएं आदि तुरन्त उपलब्ध करवानी चाहिए। आर्य वीर दल तथा अन्य स्वयं सेवी संस्थाएं पूर्ण निष्ठा से राहत कार्यों में जुटी हुई है। भूकम्प से नष्ट ग्रामों की फसलें जो खेतों में तैयार हैं, उनकी पूर्ण सुरक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए तथा इन खेतों के मालिकों तक इनकी खेती का अनाज पहुंचना चाहिए।

आर्य समाज सेवा दल ने निम्न कार्यक्रमों को अपने हाथ में लेने का संकल्प लिया है—

१—भूकम्प पीड़ितो को व्यापक स्तर पर कम्बलों की सप्लाई की जाए जिस से वे सर्दियों से बच सकें।

२—पांच वर्ष से अधिक आयु वाले अनाथ बच्चों के पालन-पोषण और उनकी शिक्षा की समुचित व्यवस्था करना।

३—भूकम्प क्षेत्रों में सप्लीमेंटरी परीक्षाओं के जो पांच परीक्षा केन्द्र स्थापित किये जाने वाले हैं, परीक्षार्थियों के लिए आवास एवं भोजन की व्यवस्था करना।

हम देश के प्रधान मन्त्री जी को यह विश्वास दिलाते हैं कि भूकम्प से पीड़ितों के पुर्नवास के लिये आर्य समाज अपना पूर्ण सहयोग देगा।

हम आशा करते हैं कि सरकार ने भूकम्प पीड़ितों के पुर्नवास के लिए घर देने का जो आश्वासन दिया है वह केवल चुनाव का हथकण्डा न होकर मूर्त्तरूप लेगा।

शक्ति हमें दो अहे महात्मन्

शक्ति हमें दो अहे महात्मन्, मार्ग तुम्हारा हम अपनाएं।
चले तुम्हारे पद चिन्हों पर, सत्य पथों पर कदम बढ़ाएं॥

अन्यायों से लड़े निरन्तर हमें कहीं न कोई भय हो।
फिर से धरती पर फैले नव, ज्योति धर्म की नयी विजय हो॥

हिंसा व आतंकवाद का, निर्भय होकर करें सामना।
ललकारें दानवता को हम, मानवता की जगे भावना॥

नया अहिंसा का पथ पावन, फिर से भारत में निर्मित हो।
ज्योतिर्मय हो जनमानस अब, अन्धकार सम्पूर्ण विजित हो॥

सदा रहे तुम मद्य विरोधी, हम भी इसका करें विरोध।
साहस से हम शक्ति सृजित कर, करें मद्यपान प्रतिरोध॥

नैतिकता का त्याग-तपो का, जीवन हम भी जीना सीखें।
सारे मानव को हम अपना, बन्धु समझकर, फिर से दीखें॥

फिर से राष्ट्र प्रेम की धारा, जनमानस में रहे प्रवाहित।
समता-ममता के भावों की गरिमा मन में रहे समाहित॥

भारत मां की सेवा में हम, कर डालें सर्वस्व समर्पित।
राष्ट्रवेदि पर फिर हो अपना, तन मन धन सारा कुछ अर्पित॥

वही शक्ति हम सबको बापू, नूतन पुनः मिले धरती पर।
समरसता का हो संचारण, स्वतन्त्रता हो सब धरती पर॥

—राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति

श्रमेव जयते

श्री कृष्णप्रीतार, बढ़ापुर (बिजनौर)

सत्यमेव जयते नानृतम (मुण्डक ३-१-६)

सत्य ही जीतता है असत्य नहीं। उपनिषद के ऋषि का यह वचन आज सर्वत्र असत्यमेव जयते हो रहा है।

स्वतन्त्रता प्राप्त होने पर हमारी सरकार ने 'सत्यमेव जयते' को राष्ट्रीय चिन्ह स्वीकार करके संसद भवन, सरकारी कार्यालयों न्यायालयों, विद्यालयों, नोटों व सिक्कों आदि पर उक्त सत्यमेव जयते' अंकित करा दिया।

परन्तु आज हम सर्वत्र देख रहे हैं 'असत्यमेव जयते असत्य की विजय हो रही है, और सत्य का गला घोटा जा रहा है। ऐसा क्यों ? विचार करने से ज्ञात हुआ कि संघर्ष से विरक्त और निष्क्रिय सत्य न कभी विजयी हुआ है, और न कभी होगा। संघर्ष और सक्रियता से युक्त होकर ही सत्य-असत्य पर विजय प्राप्त करता है।

इसी प्रकार 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम अथवा वैदिक धर्म की जय हो', अधर्म का नाश हो' केवल नारे लगाने मात्र से न तो विश्व आर्य बनेगा और ना ही धर्म की जय होगी।

ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति श्रम एवं तप से ही हुई है।

"श्रमेण तपसा सृष्टा ब्रह्मणा वित्तर्ते श्रिता।' अथर्व० १२-५-१

ब्रह्म के श्रम करने के कारण या गतिशील रहने के कारण सूर्य तप रहा है, वायु बह रही है, चन्द्रमा और पृथ्वी चल रहे हैं।

वेद के अनुसार श्रम अथवा तप केवल भौतिक सुख ही प्रदान नहीं करता अपितु परमानन्द एवं परमात्मा की प्राप्ति भी कराता है।

अभी तक संसार मे जितने भी भौतिक पदार्थ उत्पन्न हुए हैं और जितना भी ज्ञान-विज्ञान आविष्कृत हुआ है, वह उत्पादकों या श्रमशील पुरुषों एवं वैज्ञानिकों के श्रम का फल है।

ब्रह्म की यह क्रियाशीलता चराचर समस्त ब्रह्माण्ड मे प्रत्येक अणु-परमाणु में व्याप्त है।

"ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत" यजु० ४०-१

वह चेतन ब्रह्म अत्यन्त गतिवान या परम श्रम शील है, वह क्षण भर के लिए भी श्रम हीन नहीं रहता।

वैदिक दर्शन के अनुसार परमात्मा सत+चित+आनन्द=सच्चिदानन्द है। ब्रह्माण्ड के बाहर व भीतर जो कुछ है, वह सब सत्य है तथा सृष्टि के अन्दर व बाहर एक प्रकार की गति अथवा चेतन्य है। चेतनता ईश्वर का प्रमुख लक्षण है। ब्रह्म अनन्त है, अतः उसकी चेतना भी अनन्त है और अनन्त होने से अनश्वर है।

'नित्यो नित्यानां, चेतनश्चेतनानामेको बहूनां यो विदधाति कामान"

कठो० १।५।१३

वह अनन्त चेतना शाश्वत है। चेतना पदार्थ नहीं है, अत उसका कोई मूर्त आकार स्वरूप नहीं हो सकता। वेद में कहा है—'न तस्य प्रतिमा अस्ति, यस्य नाम महद यशः' यजु० ३२-३।

ब्रह्म अनन्त और चेतन है तथा सर्वव्याप्त है किन्तु आत्मा अल्प और चेतन है, तथा शरीर के माध्यम से ही कर्म करता है। अल्प सदैव अनन्त के आश्रित रहेगा।

इस प्रकार सृष्टि मे श्रम शाश्वत सत्य है। ईश्वर की भांति जीव भी चेतन है और चेतन होने से श्रमयुक्त है। 'ओ३म क्रतो स्मर' क्रतुमय पुरुष'। बिना श्रम के परम श्रम रूप परमेश्वर की प्राप्ति असम्भव है।

महर्षि दयानन्द के अनुसार आत्मा शब्द 'अत सातत्य गमने' धातु से बना है, जिसका अर्थ है—गमनशील या क्रियाशील। वेद में मनुष्य को सौ वर्ष तक कर्म/श्रम करते रहने का आदेश है।

'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत समा। यजु० ४०-२

श्रम से ही लौकिक एवं पारलौकिक सभी धन प्राप्त होते हैं। ईश्वर भी श्रम एवं तप से ही सृष्टि की रचना करता है।

इतिहास इस बात का साक्षी है, कि जिस काल तक मनुष्य श्रम शील रहा, वह काल सुख-समृद्धि से भरपूर था, किन्तु जबसे उसने श्रम की अवहेलना की तभी से वह दरिद्र एवं दु:खी बना हुआ है।

महात्मा बुद्ध की मृत्यु के बाद, बुद्ध के कर्मठ व्यक्तित्व और उनकी अदम्य कर्मशीलता को त्यागकर जैसे ही समाज ने बुद्ध की मूर्ति बनाकर उसकी आराधना प्रारम्भ की, वैसे ही विश्व का बहुत बड़ा भाग जड़पूजा की चपेट में आ गया। बुद्ध से पूर्व विश्व में मूर्ति-पूजा का चलन नहीं था। इसके बाद जैनियों तथा वैदिक मतावलम्बियों ने भी बुद्धमत का अनुकरण करके अपने भिन्न-भिन्न देवताओं और भिन्न-भिन्न महापुरुषों की भव्य मूर्तियां बनाकर मन्दिरों में स्थापित कर दी और उन्हें भगवान का साक्षात अवतार मानकर उनकी भक्ति पूजा का प्रचलन किया। फलस्वरूप समाज, कठोर तप श्रम व कर्म के मार्ग से विचलित होकर भक्तिमार्ग के कम कष्टप्रद मार्ग का अनुयायी बन गया।

भक्तिवाद ने समाज की श्रम शक्ति को क्षीण किया। सोमनाथ का मन्दिर लुटता रहा और समाज तमाशा देखता रहा। भारतीय नारियों का सतीत्व अपवित्र होता रहा और समाज आततायियों का प्रतिकार तक नहीं कर सका। तथा अशक्त अकर्मण्य, बनकर अपनी स्वतन्त्रता तक खो बैठा। भारतीय परतन्त्रता का कारण वैदिक श्रम कर्म मार्ग छोड़ देना है।

भक्ति मार्ग का सबसे बड़ा यह आश्वासन है कि बिना श्रम या कर्म किये ही सब कुछ मिल सकता है, तो फिर वह कर्म, श्रम क्यों करे।

अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम।
दास मलूका कह गये सबके दाता राम॥

विश्व मे प्रत्येक व्यक्ति प्रत्यक्ष देख रहा है कि कारखानों और खेतों में बिना श्रम या कर्म के उत्पादन नहीं किया जा सकता और बिना उत्पादन के सुख की कल्पना करना व्यर्थ है। अत मानव जीवन को सुख देने वाला यही कर्म मार्ग है।

"योग कर्मसु कौशलम्" गीता

कुशलता पूर्वक कर्म करने का नाम योग है।

भगवान न मन्दिर में है, न मस्जिद मे, न मठ में और न गिरजा में है। वह तो वृक्ष, लता, वनस्पति, पशु, पक्षी एवं स्त्री-पुरुष में जो जीवनी शक्ति है, उसमे व्याप्त है। (क्रमशः)

ऋषि दयानन्द के भक्त और प्रशंसक—

महाराजाधिराज कर्नल सर प्रतापसिंह (१)

(आर्यसमाज के इतिहास का एक रोमांचक अध्याय)

प्रो० भवानीलाल भारतीय

आर्य समाज के इतिहास के अध्येताओं को यह विदित है कि गत शताब्दी के अन्तिम दशक में पंजाब के आर्य समाजियो में मांसाहार के औचित्यानौचित्य को लेकर प्रचण्ड विवाद उत्पन्न हो गया था। मांस को लेकर उठे इस विवाद के मूल कारण चाहे कुछ भी क्यों न रहे हों, उस समय में पंजाब के आर्य सामाजिक जगत में घटी घटनाओं के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि निश्चय ही कुछ आर्य समाजी यह मानने लगे थे कि मनुष्य के खानपान से उसके धर्म का कोई सम्बन्ध नहीं है, अत: आर्य समाज का अनुयायी बनने के लिए मांसाहार का त्याग भी आवश्यक नही है। वे यहां तक कहने लगे थे कि स्वयं स्वामी दयानन्द ने मांसाहार न करने का कोई स्पष्ट विधान नहीं किया है। मांसाहार के समर्थन में प्रबल आन्दोलन करने वालों में राय मूलराज की प्रमुख भूमिका थी। वे तो यहां तक कहते थे कि स्वामी दयानन्द ने, यह जानते हुए भी कि वे मांस भक्षण से परहेज नहीं करते, उन्हें परोपकारिणी सभा का उपप्रधान बनाया था।

पंजाब के कुछ आर्य समाजियों से मांसाहार के पक्ष में जो वातावरण बनाया उसे जोधपुर के तत्कालीन आर्य समाज से भी बल मिला। उस समय जोधपुर आर्य समाज की सम्पूर्ण बागडोर महाराजा प्रतापसिंह के हाथों में थी और वे स्पष्ट रूप से मांसाहारी ही नहीं थे, अपितु अपनी इस धारणा को सदा सदा व्यक्त करने में भी संकोच नहीं करते थे कि मांसाहार को अपनाये बिना कोई भी व्यक्ति या जाति सबल नहीं बन सकती। अपनी आत्मकथा में उन्होंने एक प्रसंग लिखकर यह बताने की चेष्टा की है कि स्वामी दयानन्द भी मांसभक्षण के एकान्तत: विरोधी नहीं थे तथा वे क्षत्रियो के मांसाहार को बुरा भी नहीं समझते थे। इस स्थान पर हम यह स्पष्ट लिख देना चाहते हैं कि मांसाहार के समर्थन में स्वामी दयानन्द की साक्षी प्रस्तुत करना अथवा उन्हें मांसाहार का समर्थक बताना सर प्रताप का दुस्साहस ही था। सम्भवत: वे अपने चरित्र के इस अपरिहार्य दुर्गुण पर पर्दा डालने के लिये ही वे स्वामी जी के नाम को बीच में लाने के लिए विवश हुए होगे। अस्तु। सर प्रताप के जीवनी लेखक धानघार्ट ने इस प्रसंग को इस प्रकार प्रस्तुत किया है—

"महाराजा जसवन्तसिंह की यह धारणा थी कि स्वामी जी सम्भवत: सभी लोगो को मांस भक्षण करने से मना करते हैं। इसलिए एक दिन उन्होने उनसे कहा—"महाराज, हम क्षत्रिय हैं और प्राचीन काल से ही आरवेट तथा मांसभक्षण हमारी जाति में प्रचलित हैं। इन्हें छोड़ देना हमारे लिए नितान्त कठिन है। इन व्यसनो को त्यागे बिना हम आर्य समाज मे भी प्रवेश नही पा सकते।" इस पर स्वामी जी ने उन्हें कहा कि राजाओं और क्षत्रियों के लिए मांसाहार का त्याग आवश्यक नहीं है। तथापि राजा को चाहिए कि वह इनमें (आरवेट तथा मांसाहार) इतना आसक्त न हो जाय जिससे कि वह अपनी प्रजा के प्रति स्वकर्तव्य को विस्मृत कर इन्हीं में अपना सम्पूर्ण समय लगा दे। उनके इन वचनों को मैंने अपने कानो से सुना है तथा मेरा विश्वास है कि स्वामी जी की यह धारणा नितान्त सत्य है।"

आगे चल कर सर प्रताप मांसाहार के समर्थन में जो युक्तियां प्रस्तुत करते हैं वे हमारे प्रसंग से अधिक सम्बन्ध नहीं रखतीं। अपने कथन का समाहार करते हुए वे पुन: लिखते हैं—"कुछ भी हो, यह सत्य है कि स्वामी दयानन्द मांसाहार के अधिक विरोधी नहीं थे। भारत की वर्तमान परिस्थिति में वे उसका प्रत्यक्ष समर्थन भी नहीं कर सकते थे तो यह भी मानना होगा कि वे इसके विरोधी भी नहीं थे। आगे चलकर आर्य समाज में मांसाहार के प्रश्न को लेकर एक बहुत बड़ा वादविवाद चला परन्तु मेरे विचार से यह इतना महत्वपूर्ण प्रश्न नहीं है जिसे कि परस्पर विग्रह का आधार बनाया जाय। स्वयं स्वामी दयानन्द ने ही महाराणा उदयपुर को परोपकारिणी सभा का प्रधान नियुक्त किया था तथा महाराजा जसवन्तसिंह और मुझे आर्य समाज का सदस्य बनाया था। वे यह भली भांति जानते थे कि हम लोग मांसाहारी हैं।"

उपर्युक्त उद्धरण पर अधिक टिप्पणी करना आवश्यक नहीं है। स्वामी दयानन्द न तो मांसाहार के समर्थक थे और न उन्होंने किसी को किसी भी परिस्थिति में मांस खाने की आज्ञा दी थी। उनके मांस भक्षण विषयक सत्यार्थप्रकाश के भक्ष्याभक्ष्य विषयक दशम समुल्लास में स्पष्टतया अंकित हैं। सर प्रताप के एतद्विषयक विचारों को हमने स्पष्ट रूप में प्रस्तुत कर दिया है। जब पंजाब में आर्य समाज के एक दल द्वारा मांसाहार के पक्ष में प्रचार किया जाने लगा तो सर प्रताप को भी बहती गंगा में हाथ धोने का अवसर मिला। उन्होंने अपने निकट के पण्डितों से मांसाहार के समर्थन में अनेक पुस्तकें लिखवा कर प्रकाशित की। अन्वेषण से पता चलता है कि निम्न पुस्तकें सर प्रताप की प्रेरणा अथवा सहायता से लिखी गई थीं— (क्रमश:)

श्री रोशनलाल जी बांसल मानसा मण्डी द्वारा ४५००० रुपये का सात्विक दान

श्री रोशनलाल जी बांसल भू० पू० प्रधान आर्य समाज मानसा मण्डी ने अपनी पत्नी श्रीमती सोदा देवी जी के निधन पर (निधन ६-६-९१) उनकी स्मृति में एक कमरा बनाने के लिये आर्य समाज एवं आर्य हाई स्कूल मानसा मण्डी को ४५-०० रुपये का सात्विक दान प्रदान किया है।

—ओमप्रकाश वानप्रस्थी
गुरुकुल भटिण्डा

दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद और आर्यसमाज की भूमिका

श्री ब्रह्मदत्त स्नातक

भारत और भारतीय जनता के अफ्रीका की सरकार के साथ राजनयिक एवं आर्थिक सम्बन्ध विच्छेद होने पर भी उस देश के साथ और विशेष रूप से वहां की भारतवंशी जनता के साथ हमारे ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक सम्बन्ध अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं, भारत के मोहन दास करमचन्द गांधी, जो बाद में महात्मा गांधी के नाम से प्रख्यात हुए, की प्रथम कर्मभूमि दक्षिण अफ्रीका ही थी। १८९२ से १९१३ तक वहां रह कर अहिंसा और सत्य के प्रयोग उन्होंने किए थे। वहीं पर अश्वेतों के प्रति अन्याय के प्रतिरोध के लिए संस्थाएं बनाई एवं संगठन का कार्य उन्होंने शुरू किया था। कुछ समय पूर्व के अपने दक्षिण अफ्रीका के प्रवास काल में हमने गांधी जी द्वारा स्थापित फोनिक्स सैटलमेंट और पीटरमैरिट्जबर्ग के उस रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म को भी देखा जहां बैरिस्टर गांधी को एक गोरे ने रेल के डब्बे से धकिया कर गिरा दिया था।

दक्षिण अफ्रीका का महत्व इसलिए भी है कि वहां जनमे एक भारतीय सपूत भवानीलाल ने अपनी मातृभूमि की सेवा के दौरान वहां के दमनकारी कानूनों के खिलाफ प्रचण्ड आन्दोलनों में भाग लिया। यातनाएं भुगतीं और सपत्नीक वहां की जेलों में रहे। परन्तु इसके अतिरिक्त अपने माता और पिता की जन्म भूमि भारत की आजादी के लिए भी उन्होंने कारावास भुगता और विभिन्न प्रकार से राष्ट्रीय आन्दोलनों में अनेक बार भाग लिया। वे हिन्दी और अंग्रेजी के श्रेष्ठ वक्ता, लेखक तथा सम्पादक होने के अतिरिक्त प्रवासी भारतीयों के दुखदर्द के मसीहा थे। अपने युग की धारा के अनुकूल आर्यसमाज एवं हिन्दी की उन्होंने महती सेवा की थी। इस दृष्टि से वे अद्वितीय व्यक्ति थे। वे उस देश की आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रथम प्रधान थे।

हमारे लिए दक्षिण अफ्रीका का महत्व इसलिए है कि भारत के बाहर सबसे अधिक भारतवंशी इसी देश मे रहते है। इस समय इनकी संख्या लगभग १० लाख है। पिछली शताब्दी में दक्षिण अफ्रीका के चार राज्यों में से ट्रान्सवाल और नेटाल ब्रिटिश उपनिवेश थे और शेष दोनो डच या बोअर लोगों के शासन में थे। ब्रिटेन में १८३३ मे दास प्रथा समाप्त होने के बाद नेटाल प्रान्त में गन्ने की खेती के लिए जब मजदूरों की जरूरत पड़ी तब पांच साल की अवधि की शर्त पर भारत से मजदूर बुलाये जाने शुरू हुये। वह जिन शर्तों के अन्तर्गत लाये जाते थे, उसे गिरमिट और इन मजदूरों को गिरमिटया कहा जाता था। ब्रिटिश सरकार की अनुमति से १८३३ मे मोरीशस में १८४४ मे ब्रिटिश गुयाना तथा १८६० मे नेटाल में इन गिरमिटियो का आना शुरू हुआ। इनका पहला दल कलकत्ता के मटियाबुर्ज से रवाना हुआ। टूरो नामक जहाजसे मद्रास से दूसरा दल रवाना हुआ। दूसरा मजदूरों गिरमिटियों का दल सर्वप्रथम दक्षिण अफ्रीका में उतरा। प्राप्त विवरणो के अनुसार गिरमिट प्रथा समाप्त होने तक कुल मिला कर १,५२,१८४ भारतीय वहा पहुंचे। इनमे सर्वाधिक संख्या भूतपूर्व मद्रास प्रेसीडेंसी के निवासियों तथा उसके बाद मे पूर्वी उत्तर प्रदेश एवं बिहार राज्यों की थी। अन्त मे गुजरात और कच्छ काठियावाड़ के व्यापारी भी वहा पहुच गये। यो पूर्वी अफ्रीका तट पर भारतीय गुजराती पहले से रहते आये हैं। घोर सामाजिक अन्यायों के बावजूद और विषम परिस्थितियो के रहते हुए भी १९१० मे दक्षिण अफ्रीका नाम से और बाद में दक्षिण अफ्रीका गणराज्य नाम से बढ़ते इस प्रदेश के विकास में भारतवंशियों का बड़ा भारी योगदान रहा है। आजवे वे खेतीहर मजदूर की स्थिति से आगे बढ़ कर उस देश में छोटे-बड़े व्यापारी, डाक्टर, इन्जीनियर एकाउन्टेन्ट जैसे कार्यों में लगे हुये है। आज भी गोरों के बाद कृषि और औद्योगिक विकास में भारतीय सब से आगे है। चूंकि शुरू-शुरू में वे लोग नेटाल प्रान्त में ही बसाए गये थे, आज भी उस प्रदेश में उनकी संख्या बहुत अधिक है। डर्बन शहर मे लगभग नौ लाख निवासियों में अधिक संख्या भारतवंशियों की है। इस अतिरिक्त समूचे भारतवंशियों की संख्या का दो तिहाई भाग से ज्यादा उसी नेटाल प्रान्त और डर्बन के चारों ओर बसा हुआ है।

पिछले दिनों डर्बन में भारतवासियों का एक वैदिक सम्मेलन हुआ, जिस में लगभग दो हजार व्यक्ति अपनी सांस्कृतिक समस्याओं को सुलझाने के लिये एकत्रित हुए थे। दक्षिण अफ्रीका की आर्य प्रतिनिधि सभा की उन दिनों हीरक जयन्ती थी। इसके अतिरिक्त चतुर्थ विश्व वैदिक सम्मेलन का अवसर होने के कारण देश और विदेश के प्रतिनिधि बड़ी संख्या में वहां पर उपस्थित हुये थे। मोरिशस से ३५ प्रतिनिधि आये, परन्तु भारत सरकार ने केवल पांच प्रतिनिधियों को वहां आने की अनुमति दी थी। इस प्रकार दक्षिण अफ्रीका में होने वाले सम्मेलन में अब तक वहां हुये सम्मेलनों से अधिक प्रतिनिधियों का जमघट था। दस दिन के इस सम्मेलन की बैठकें आठ दिन डर्बन में और शेष दिन पीटरमैरिट्जबर्ग जो वहां से लगभग १०० किलोमीटर की दूरी पर स्थित हुई है।

इन दोनों सम्मेलनों में वहां पहुंचने वाला सर्वप्रथम व्यक्ति मैं ही था। उन दिनों में वहां चल रही हिंसा की घटनाओं और आन्दोलनों के वातावरण से हमारे मित्र और स्वजन चिन्तित थे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने इसके संयोजक के रूप में मुझे निमन्त्रित किया था अनेक वर्षों के बाद किसी भी भारतीय नागरिक का वहां यह पहला प्रवेश था। यह बताना प्रासंगिक होगा कि दक्षिण अफ्रीका के प्रतिनिधियों ने हमारे आने पर इस सम्मेलन के उद्देश्यों पर काफी जिज्ञासा प्रकट की।

जब उन्हें पता लगा कि भारत में आर्यसमाज स्वाधीनता आन्दोलन का जन्मदाता रहा है और उसके द्वारा देश की स्वाधीनता की आवाज सबसे पहले उठाई गई थी, तब उनकी आशंकाएं और भी बढ़ीं। इस सम्बन्ध में उन्होंने वक्तव्य को उद्धृत करते हुये एक भारतीय स्वाधीनता सेनानी का आगमन लिखा और आपार्थिड के सम्बन्ध में जाति भेद या रंगभेद को वैदिक आदर्शों के विरुद्ध लड़ने वाला एक सिपाही घोषित किया। वस्तुतः इस सम्बन्ध के मेरे विचार जो सम्मेलन के अवसर पर और उससे पहले प्रकाशित हुये, उससे रंगभेद के विरुद्ध जनमानस में एक चेतना उत्पन्न हुई।

डर्बन सम्मेलन में कुल मिला कर १५ रंगभेद विरोधी संघर्ष प्रस्ताव स्वीकार किये गये। इनमें सबसे महत्वपूर्ण प्रस्ताव यह था कि दक्षिण अफ्रीकी सरकार अपने देश से रंगभेद और जातिभेद को तुरन्त समाप्त करके अन्याय मूलक कानूनों को अविलम्ब समाप्त करे, क्योंकि धर्म में ऊंच नीच का स्थान कदापि नहीं है। इस प्रस्ताव को वहां की आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान शिशुपाल रामभरोसे ने प्रस्तुत किया, जिसका समर्थन भारतीय प्रतिनिधि श्री ओमप्रकाश त्यागी ने किया। प्रस्ताव से पूर्व आर्य समाज और राष्ट्रवाद पर मेरा एक भाषण हुआ।

एक अन्य प्रस्ताव द्वारा भारत सरकार से अनुरोध किया गया कि दक्षिण अफ्रीका में रहने वाले गैर हिन्दुओं की सांस्कृतिक आवश्यकताए तो पाकिस्तान व अरब देशों और पश्चिमी देशो द्वारा पूरी कर दी जाती है, परन्तु हिन्दुओ के लिये धार्मिक प्रचारक, धार्मिक साहित्य और पूजा की सामग्री मंगाने पर प्रतिबन्ध होने के कारण उनके सामने बड़ा सांस्कृतिक संकट खड़ा हुआ है, जिसका निराकरण भारत सरकार को शीघ्र करना चाहिये। हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के अध्यापक वहां नहीं पहुंच पाते। इससे भी वहां के भारतवासियों में एक प्रकार की निराशा व्याप्त थी। सम्मेलन में आये हुये प्रतिनिधियो को डर्बन के मेयर ने सिटी हाल में बुला कर स्वागत भोज दिया, और वे स्वयं सम्मेलन में आये और यह घोषणा की कि नगर के म्युनिसिपल समुद्री घाटों पर रंगभेद के कारण हर प्रकार का प्रतिबन्ध समाप्त कर दिया गया है। इसे सम्मेलन की आवाज की सफलता माना जाये कि इन प्रस्तावों के स्वीकृत होने के अगले मास ही दक्षिण अफ्रीका के प्रेसिडेन्ट प्राइम मिनिस्टर डिक्लार्क ने राष्ट्रीय पार्लियामेंन्ट के उद्घाटन के दिन ११ जनवरी को एक सार्वजनिक घोषणा द्वारा रंगभेद (यानि अपार्थिड) की असंगतता को खुले रूप में स्वीकार किया।

इस प्रकार वहां की नेशनलिस्ट सरकार के ३८ साल से चली आ रही अपार्थिड की नीति इस घोषणा द्वारा समाप्त हो चुकी है। इसके साथ ही इस जुलाई तक रंगभेद और अन्याय पर आश्रित कानूनों को निरस्त करने के लिए भी एक कदम उठाने की घोषणा हुई है। ३० जनवरी को गांधी जी का बलिदान दिवस था और उसके अगले दिन ही उनकी कर्मभूमि में की गई यह घोषणा एक अच्छा कदम सिद्ध हो सकती है।

'शाकाहारी अण्डा' एक भ्रामक नाम एवं फरेब है

मुर्गी अण्डे देती है २१ दिन तक सेयती है फिर उसमे से बच्चे निकलते हैं एक महीने मे स्वाभाविक रूप से १४, १५ अण्डे लगभग देती है। अण्डे खाने वाले मनुष्य बच्चा पैदा होते ही जीव रूप खाते रहे हैं। जीव हत्या बराबर करते रहे हैं। ये तो एक प्रकार के व्यक्ति हैं, दूसरे प्रकार के वे व्यक्ति हैं जो इनका उत्पादन कर अधिकाधिक पैसो कमाना चाहते हैं ये व्यक्ति उन व्यक्तियो के समान हैं जो दो या तीन वर्ष मे ही भैंस को अधिकाधिक इस प्रकार का चारा खिला कर उसके सम्पूर्ण जीवन की ताकत को थोड़े समय मे दूध के रूप मे अधिक से अधिक प्राप्त करके पैसा कमाते हैं। उसके बाद चाहे भैंस दूध दे या न दे। या उसमें घृत की मात्रा बेशक कम हो लेकिन दूध से पैसा वसूल कर लेते हैं।

यह प्रवृत्ति अण्डो का उत्पादन करने वाले मुर्गी फार्मों के संचालको मे भी आयी। जिसके कारण उन्होंने निम्नलिखित स्वरूप अपनाया।

मुर्गी फार्मों मे मादा बच्चो को अलग-अलग कर लिया जाता है। मादा बच्चो को शीघ्र जवान करने के लिये एक खास प्रकार की खुराक दी जाती है और इन्हें २४ घण्टे तेज प्रकाश मे रख कर सोने नहीं दिया जाता ताकि ये दिन रात खा खाकर जल्दी ही रज स्राव करने लगें और अंडा देने लायक हो जायें अब उन्हे जमीन की जगह तंग पिंजरो मे रखा जाता है इन पिंजरो मे इतनी अधिक मुर्गियां भर दी जाती हैं कि वे पंख भी नही फड़फड़ा सकती तंग जगह के कारण आपस मे चोंचे मारती हैं, जख्मी होती हैं, गुस्सा करती हैं, कष्ट भोगती हैं जब मुर्गी अण्डा देती है तो अण्डा जाली मे से किनारे पड़ कर अलग हो जाता है और उसे अपनी अण्डे सेयने की प्राकृतिक भावना से वंचित रखा जाता है ताकि वह अगला अण्डा शीघ्र दे। अत्याचार यहीं तक सीमित नही है, चोंचें काट दी जाती हैं। मुर्गी की इस तड़फा-तड़फी मे चूजो तक की जान भी चली जाती है। आधा घण्टे बाद उन मुर्दा चूजो को मशीनी गर्मी से सुखा कर चूर्ण बना कर मुर्गियो को आहार के रूप मे खिला जाता है। इसके अतिरिक्त हिंसक कोटि का आहार जैसे—

बोन मील (अस्थि), ब्लड-मील (रक्त आहार), फ्लश-मील (विष्ठा आहार) मीट (मांसाहार), फिश मील (मत्स्याहार) आदि दिया जाता है। परिणाम स्वरूप मुर्गी कम से कम समय मे अधिक अण्डे मुर्गे के संसर्ग के बिना भी अण्डे देने लग जाती है। इसकी पूर्ति के लिए मुर्गियो को विशिष्ट हार्मोन्स और एग फार्म्युलेशन के इन्जेक्शन भी दिए जाते हैं ताकि मुर्गियां लगातार अण्डे दे सके। अण्डो से चूजें जल्दी बाहर आ जायें इसके लिए उन अण्डों को इन्क्यूबेटर (सेटर) मे डाल दिया जाता है।

उपरोक्त प्रकार के विवरण से पता चलता है कि आधुनिक मशीनी स्वाभाविक अण्डो से अलग होने के कारण ही शाकाहारी अण्ड इस नाम से कहे जाने लगे। क्योंकि इनके उत्पादन मे हर बार मुर्गे के संसर्ग की आवश्यकता नहीं रहती। क्योंकि मुर्गे के शुक्राणु लम्बी अवधि तक मुर्गी मे पड़ रहते हैं। (लगभग ६ मास तक) लेकिन ये होते सजीव ही हैं।

इस प्रकार अपनी विष्ठा खाने वाली, अपने मृत बच्चो का पाउडर खाने वाली, गला सड़ा खाद्य खाने वाली, दुःख दर्दों से पीड़ित मुर्गी द्वारा प्राप्त अण्ड ज्यों ज्यों अपनी स्वाभाविक स्थिति से निकृष्ट होते गए त्यों त्यों अण्डे खाने वालो और अण्ड के व्यवसायियो ने उन्हे 'अहिंसक शाकाहारी' वेज आदि भ्रामक नामो से बताना शुरू कर दिया है। जिस प्रकार नकली घी (चर्बी मिश्रित डालडा घी) बेचने वाला असली घी का बोर्ड लगा कर ही उसे बेच पाता है और खूब पैसा कमाता है। उसी प्रकार घृणित अण्डो के लिए 'शाकाहारी' अण्डा एक भ्रामक नाम देकर जन साधारण से फरेब करता है।

जिसके कारण अण्डे खाने वाले को टोकने पर अपना दोष छिपाने के लिए यही बहाना बताते हैं कि हम तो शाकाहारी अण्डे खाते हैं। परिणाम स्वरूप धर्म भीरू लोग भी अपने ही घर में खुल्लम खुल्ला धड़ाधड़ निसंकोच होकर खाने लग गये हैं। लेकिन वास्तव मे वे स्वयं से फरेब कर रहे हैं वो भी केवल जिह्वा के स्वाद मे।

हम सज्जनो का कार्य वास्तविकता को प्रस्तुत करना है। क्योंकि मनुष्य का जीवन सत्य और असत्य (दूध का दूध पानी का पानी) करने कराने के लिए है न कि वृथा वाद विवाद के लिए।

जहां प्राकृतिक रूप से उत्पन्न अण्डा मानव के लिए अत्यन्त हानिकारक

आधुनिक, मशीनी, अनिषेचित अण्डो में भी क्रोमोसोम होते हैं। हां अन्तर इतना है कि इनमें क्रोमोसोम्स की संख्या अपेक्षाकृत ५०% होती है और क्रोमोसोम केवल जीवो में ही पाये जाते हैं अतः अण्डा कैसा भी हो उसे खाना जीव हत्या है।

—प्रसिद्ध अमरीकी वैज्ञानिक मि० फिलिप की खोज

होने के कारण मनीषियो ने उसे अभक्ष्य कहा है। वहां आधुनिक मशीनी अण्डे मानवता के पतन को कहां तक ले जा सकते हैं। उसकी कल्पना नहीं की जा सकती है।

शाकाहारी अण्डो के भुलावे मे आकर ये घृणित मशीनी अण्डे खाकर ऋषि मुनियो की भारतीय सन्तानें निम्न लिखित रोग एवं उनसे उत्पन्न हानियो से नही बच सकते।

रोग—हृदयाघात (हार्ट अटैक), आंत का कैंसर, शरीर मे अति अम्लता गठिया, जोड़ो मे थक्के जमना, एलर्जी पित्ती, दमा रोग, हाई ब्लड प्रैशर, लकवा, पाचन शक्ति मे विकार, डी०डी० टी० की अधिकता एवं उससे अनेक रोग, कोलेस्ट्रोल की अधिकता एवं इससे उत्पन्न विविध रोग आदि।

अण्डे मांस से केवल व्याधियां (शारीरिक रोग) ही नहीं बल्कि आधियां (मानसिक रोग) भी बहुत बढ़ रहे हैं। जैसे—

तानाशाही, गुण्डागर्दी, अश्लीलता, बलात्कार, दंगे कत्ल हमाये, भ्रष्टाचार, चरित्रहीनता आदि संसार भर मे फैला रहे हैं।

मुझे पूर्ण आशा है कि उपरोक्त विवरण पाठको के सभी भ्रान्तियो का निवारण कर सकेगा। सफलता की प्रतीति मे ही मैं अपने लघु प्रयास को निरन्तर जारी रखूंगा।

उग्राचरण आर्य
ग्राम आहूवाद मोहम्मदपुर, नई दिल्ली

आर्य समाजों के निर्वाचन

आर्य समाज बम्बई—श्री भाऊलाल शर्मा प्रधान, श्री राजेन्द्रनाथ पाण्डेय मन्त्री, श्री केशवलाल एल सराव्वा कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज कालांवाली मण्डी सिरसा—श्री अमरनाथ जी गोयल प्रधान, श्री ओमप्रकाश जी आर्य मन्त्री, श्री ओमप्रकाश जी आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

गोवंश रक्षा के 'अपराध' में गीता की नृशंस हत्या

गीता बहन का एकमात्र 'अपराध' यह था कि उन्होंने कसाई के यहां जा रहे ६ बछड़ों को बचाया था। उनकी आयु थी ३५ वर्ष और वह कर्णावती (अहमदाबाद) स्थित अखिल भारतीय हिंसा निवारण संघ की मानद इन्स्पेक्टर थी। घटना २७ अगस्त की है। सुबह साढ़े ग्यारह बजे सारंगपुर क्षेत्र मे दो मालवाहक आटो रिक्शा मे बछड़ों को कसाई के यहा ले जाते देख कर गीता बहन ने आस्टोडिया पुलिस चौकी पर एक रपट लिखवाई जिसके आधार पर पुलिस ने उन बछड़ों को बरामद कर लिया। गीता बहन ने उन छह बछड़ों को अखावाडी स्थित पिंजरापोल छोड़ा। २ ३० बजे दोपहर मालवाहक आटो रिक्शा मे जब वह घर लौट रही थी, उसी समय सी एन विद्यालय, अखावाडी सर्किल के पास दो स्कूटर सवार युवक मोहम्मद सलीम कुरेशी तथा भूरा महमद कुरेशी आए और उन्होंने श्रीमती गीता बहन को सबके देखते देखते स्कूटर से बाहर खींच कर सड़क पर पटका और वहा सबके सामने छुरे के १८ बार करके उनकी हत्या कर दी।

इस घटना से सी० एन० विद्यालय के छोटे-छोटे छात्र स्तब्ध रह गए और पूरे क्षेत्र मे आतंक फैल गया। गीता बहन की नृशंस हत्या के विरोध मे भारतीय जनता पार्टी तथा अनेक हिन्दू सगठनो ने ३० अगस्त को अहमदाबाद बन्द का आह्वान किया। इस दौरान नगर के सभी सरकारी दफ्तर, बैंक सिनेमाघर, राशन की दुकानें पूरी तौर पर बन्द रही और हिन्दू समाज ने अभूतपूर्व एकता का परिचय देकर इस घटना का विरोध किया। सिर्फ अहमदाबाद ही नही, इस घटना का पूरे गुजरात मे तीव्र असर हुआ है। गुजरात के अन्य छोटे-बड़े नगरो मे भी स्वत स्फूर्त बन्द हुआ रैलिया निकाली गई। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी भी स्व० गीता बहन की श्रद्धांजलि सभा मे उपस्थित रहे। इस सभा मे रा० स्व० सघ के वरिष्ठ अधिकारी, विश्व हिन्दू परिषद तथा अनेक हिन्दू सगठनो के पदाधिकारी, जैन समाज के नेता श्री श्रेणिक कस्तूर भाई जैन मुनि चन्द्र शेखर विजय जी महाराज, गुजरात भाजपा के वरिष्ठ नेता प्रदेशाध्यक्ष श्री काशीराम राणा, सासद हरिन पाठक अशोक भट्ट आदि थे। श्री आडवाणी ने पत्रकार सम्मेलन मे कहा कि गोहत्या प्रतिबन्ध कानून तुरन्त लागू करके ही स्व० गीता बहन को सच्ची श्रद्धांजलि दी जा सकती है।

स्व० गीता बहन के पति श्री बच्चूभाई शाह ने मुख्यमन्त्री चिमनभाई पटेल द्वारा दी गई एक लाख रुपये की सहायता राशि अस्वीकार करते हुए कहा कि गीता की मृत्यु अपना कर्त्तव्य करते हुए हुई। अत इसमे किसी विशेष रहम की आवश्यकता नही है। उन्होंने पैसे के लिए नही बल्कि गोवन्श की रक्षा के लिये अपना बलिदान दिया है। इसलिए पैसे देने की बजाय चिमनभाई पटेल को गोवन्श की रक्षा के लिए कानून लागू करवाना चाहिए। श्री बच्चूभाई ने कहा कि अब न केवल मैं स्वय आजीवन गोरक्षा के लिये समर्पित रहूंगा बल्कि इस कार्य हेतु सौ नौजवानो को भी तैयार करने की जिम्मेदारी लेता हू।

श्री आडवाणी स्व० गीता बहन के घर गये और वहा उन्होंने शोक सतप्त परिवार जनो को सात्वना दी। ३१ अगस्त को भाजपा तथा जैन सम्प्रदाय के सन्त श्री चन्द्रशेखर विजय जी महाराज व अन्य हिन्दू सगठनो ने गोवन्श की रक्षा के लिये कानून बनाने की माग की और सरकार को चेतावनी दी कि यदि यह माग शीघ्र स्वीकार न की गई तो पूरा समाज आन्दोलन करेगा।

हालाकि दोनो हत्यारो को गिरफ्तार कर लिया गया है परन्तु इस एक घटना ने पूरे गुजरात को उद्वेलित कर दिया है। हर जगह, हर सभा का यही एक विषय बन गया है। यह घटना गुजरात मे किसी तूफान के आने का सकेत दे रही प्रतीत होती है।

स्व० गीता बहन के पति श्री बच्चूभाई शाह ने मुख्यमंत्री चिमन पटेल द्वारा दी गई एक लाख रुपये की सहायता राशि अस्वीकार कर दी।

प्रान्तीय आर्य महिला सभा दिल्ली की ओर से

भूकम्प पीड़ितों की सहायतार्थ अपील

महाराष्ट्र मे आये भीषण भूकम्प से सैकड़ो गाव ध्वस्त हो गये तथा हजारो व्यक्ति अकाल मृत्यु को प्राप्त हुए हैं। तथा हजारो परिवार बेघर तथा बेसहारा हो गये हैं। प्रान्तीय आर्य महिला सभा दिल्ली की ओर से इस महा विपत्ति मे भूकम्प पीड़ितो की सहायतार्थ अधिक से अधिक सहायता राशि भेजने की अपील की गई है। प्रान्तीय आर्य महिला सभा की प्रधाना शकुन्तला आर्या तथा मन्त्रिणी कृष्णा चड्ढा ने महिलाओ से अपील की कि वे अधिक से अधिक धन राशि चैक, ड्राफ्ट, धनादेश द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के नाम से सभा कार्यालय में भेजें तथा पुण्य के भागी बनें।

शकुन्तला आर्या, सभा प्रधाना — कृष्णा चड्ढा, मन्त्रिणी सभा

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज साकेत नई दिल्ली ने अपना १४वां वार्षिकोत्सव १० से १७ अक्तूबर तक हर्षोल्लास के साथ मनाया। इस अवसर पर स्कूल के बच्चो की भाषण एव सगीत प्रतियोगिता वेद कथा सहित अनेकों अन्य कार्यक्रम सम्पन्न हुवे। मुख्य समारोह १७ अक्तूबर को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य जगत के अन्य प्रतिष्ठ विद्वान तथा भजनोपदेशक पधारे श्रोताओने अधिक से अधिक सख्या में पहुच कर समारोह को सफल बनाया।

शोक समाचार

—महर्षि दयानन्द के अनुयायी ऋषि भक्त चौ० बिजनदत्त जी डबास का दिनांक ३-१-१९९३ को ८७॥ वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया है। आर्य समाज पटेल नगर के आजीवन सदस्य रहे और बामपुर समाज के प्रधान भी रहे। उनकी अंत्येष्टि पूर्ण वैदिक रीत से पंचकुईया रोड, समशान घाट, नई दिल्ली पर हुई। जिसमें आर्य समाज पटेल नगर, आर्य समाज बामपुर तथा अन्य आर्य समाजो के प्रतिष्ठित महानुभाव सम्मिलित हुए।

उनकी श्रद्धांजलि सभा दिनांक ६-१-१९९२ को आर्य समाज पटेल नगर के सभागार में सायं ५ बजे हुई, जिसमे दिल्ली की आर्य समाजों के आर्य-जनो ने भारी संख्या मे उपस्थित होकर उनको श्रद्धांजलि अर्पित की।

—रामनाथ सहगल मन्त्री

अत्यन्त दुःख के साथ यह शोक सन्देश दिया जा रहा है कि हमारे एक सुयोग्य कर्मठ कार्यकर्ता एवं व्यायाम शिक्षक श्री ब्र० प्रवीण कुमार आर्य का ५-१-९३ को दिल्ली सफदरजंग हस्पताल मे आकस्मिक निधन हो गया है। वर्तमान में वे रठौड़ा (मेरठ) अपने मामा के घर पर रहते थे। इनका अभाव सार्वदेशिक आर्य वीर दल को हमेशा रहेगा क्योंकि ऐसे कार्यकर्ता कठिनता से तैयार होते हैं। इस घटना के बाद सार्वदेशिक आर्य वीर दल की एक शोक सभा की गयी जिसमे दिवंगत आत्मा की शान्ति तथा प्रभु से इस परिवार को यह दारुण दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करने।
की कामना की गई।

—हरीसिंह आर्य कार्यालय मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य वीर दल नई दिल्ली

—हालेंड के प्रमुख आर्य समाजी पं० एस० सुमन जी के ३० वर्षीय युवा पुत्र का आकस्मिक निधन होने से इस परिवार का ही नहीं किन्तु आर्य-समाज की युवा पीढ़ीको गहरा आघात पहुंचा है हमसभी आपके दुःख में दुखी हैं सार्वदेशिक सभा सम्पूर्ण आर्य जगत की ओर से शोकसंतप्त परिवार के प्रति हार्दिक सम्वेदना प्रकट करती है और दिवंगत आत्मा की सदगति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करती है। —डा० सच्चिदानन्द शास्त्री मन्त्री

—महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त आर्यसमाजके सिपाही, हिन्दी सेवी और देश भक्त स्वामी सच्चिदानन्द अमृतसरी जी का निधन रविवार १९ सितम्बर १९९३ को हो गया। उनकी अन्त्येष्टि उसी दिन सम्पन्न हुई। उस दिन परिषद के उपाध्यक्ष श्री पं० श्याम प्रकाश आर्य जी के नेतृत्व मे शोक सभा का आयोजन किया गया। जिसमे अनेको प्रतिष्ठित व्यक्तियो ने भाग लेकर उनको भाव भीनी श्रद्धाजली अर्पित की। —सन्तोष आर्य कार्यालय सचिव

पुरोहित/संस्कृत अध्यापक की आवश्यकता

आर्य समाज बुढलाडा (जिला मानसा, पंजाब) को एक योग्य पुरोहित की आवश्यकता है जो यज्ञ, सस्कार तथा प्रचार कार्य के अतिरिक्त आर्यसमाज की ओर से चल रहे डी. ए. वी. माडल स्कूल बुढ़लाडा में दसवी श्रेणी तक के विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा पढ़ा सकें। वेतन योग्यतानुसार तथा बातचीत से।

—नैपराज गोयल
प्रधान, आर्यसमाज तथा
चेयरमैन, डी. ए. वी. माडल स्कूल
प्रबन्धक समिति, बुढ़लाडा (पंजाब)

आर्य समाज सान्ताक्रुज बम्बई द्वारा

भूकम्प ग्रस्त ग्राम लिम्बाला में जाकर ३०० परिवारों को आवश्यक वस्तुओं का वितरण

आर्य समाज सान्ताक्रुज के प्रधान श्री रामचन्द्र आर्य, मन्त्री श्री सतीश शर्मा तथा अन्तरंग सदस्य श्री बद्रीलाल अग्रवाल एवं पण्डित प्रकाशचन्द्र शास्त्री भूकम्प ग्रस्त ३०० परिवारों के लिए १२०० थाली १२०० गिलास, २४०० कटोरी, ६०० पतीले ढक्कन सहित, ३०० बाल्टी, ३०० कड़छी, ६०० चम्मच ३०० तवा, ३०० चकला बेलन आदि सामान लेकर बम्बई से ७-१०-९३ को लिम्बाला (उमरगा) पहुंचे, जहां आर्य समाज के कार्यकर्ता श्री नामदेव जाधव भूकम्प के तीसरे दिन से ही वहां पहुंच गये थे। वहां की परिस्थियों के अनुसार उक्त सामान का वितरण किया गया।

गांव के लोगों की विशेष रूप से मांग है कि उन्हें स्टोव, लालटेन तथा मिट्टी का तेल रखने के लिए प्लास्टिक के केन चाहिए। इसके अतिरिक्त कम्बल चादरें तथा दरियों की भी आवश्यकता है। कलेक्टर महोदय का कहना है कि आर्य समाज इस गांव को दत्तक रूप में स्वीकार कर लें और इसकी पूरी सहायता करें।

हमारी आर्य समाज का दूसरा दल शीघ्र ही आवश्यक वस्तुएं लेकर लिम्बाला ग्राम में पुनः जायेगा। अभी तक डेढ लाख का सामान भेजा जा चुका है।

सतीश शर्मा

मन्त्री—आर्य समाज सांताक्रुज

आर्य समाज निर्माण विहार का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज निर्माण विहार नई दिल्ली ९२ का वार्षिकोत्सव १ नवम्बर से ७ नवम्बर ९३ तक आर्य समाज मन्दिर ए ब्लाक निर्माण विहार मे बड़े समारोह पूर्वक मनाया जायेगा। १ नवम्बर से ६ नवम्बर तक रात्रि साढ़े आठ से साढ़े नौ बजे तक डा० विश्वमित्र मेधावी विद्यामार्तण्ड के प्रभावशाली प्रवचन होंगे। कथा से पूर्व श्री सत्यदेव स्नातक भजनोपदेशक के मनोहर भजन होंगे। १ नवम्बर से ७ नवम्बर तक प्रातः ७ बजे यजुर्वेद बृहद यज्ञ होगा जिसके ब्रह्मा श्री विश्वमित्र मेधावी होंगे।

मुख्य कार्यक्रम रविवार ७ नवम्बर को सम्पन्न होगा।

प्रातः दस बजे यज्ञ की पूर्णाहुति होगी।

समारोह में डा० धर्मपाल कुलपति गुरुकुल कांगड़ी, विश्वविद्यालय श्री सूर्यदेव जी प्रधान दिल्ली सभा, महेश विद्यालंकार, श्री गुलाबसिंह राघव, श्री प्रेमचन्द श्रीधर तथा विश्वमित्र मेधावी सहित अनेकों अन्य विद्वान एवं नेता पधार रहे हैं। अधिक से अधिक संख्या मे पधार कर धर्मलाभ उठायें।

भूकम्प पीड़ितों हेतु शान्ति यज्ञ

आर्य समाज बागपत द्वारा आर्य क्लीनिक पर शान्ति यज्ञ के पश्चात आर्य विद्वान आ० मुरारीलाल शास्त्री ने कहा कि आज देश पर इतना वीभत्स प्राकृतिक संकट आया है, जिसकी कल्पना मात्र से ही हृदय कांप उठता है। चारों ओर चीत्कार व हाहाकार मचा हुआ है। देश ही नहीं विदेशों के लोग भी इस आपदा को देख दुखी हुये हैं और सहायता सामग्री भेज रहे हैं। ऐसे कष्ट दायक समय में प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह अपनी आय का कुछ न कुछ भाग सहायतार्थ देकर अपने को कृतार्थ करें। ऐसे संकट के समय में सहायता करना सबसे बड़ा धर्म व पुण्य का कार्य है।

सार्वदेशिक सभा दिल्ली के माध्यम से आर्य समाज बागपत द्वारा ११०० रुपये का दान भूकम्प पीड़ितों के लिए दिया गया यज्ञ में गणमान्य व्यक्तियों के अतिरिक्त प्रधान श्री [illegible] वर्मा सुभाषचन्द्र त्यागी एडवोकेट, मोठे सत्यप्रकाश [illegible], डा० पुरुषोत्तम शरण, कुंवरपाल सिंह आर्य, राजेन्द्र वर्मा, [illegible] त्यागी, आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन समाज के मन्त्री [illegible] ने किया।

सत्यप्रकाश [illegible]

मन्त्री

वैदिक संपत्ति छप रही है

पृष्ठ संख्या ७००, मूल्य १२५ रुपये

२४ अक्टूबर १९९३ तक अग्रिम धन देने पर ८० रु० में

आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान प० रघुनन्दन शर्मा द्वारा लिखित "वैदिक सम्पत्ति" २०×३०×८ साइज मे शीघ्र प्रकाशित हो रही है। २४ अक्टूबर १९९३ तक मूल्य अग्रिम भेजने पर प्रति पुस्तक ८०) रु० होगा, डाक व्यय २०) रु० प्रति पुस्तक अलग से होगा। अपनी प्रति आरक्षण हेतु मनीआर्डर अथवा चैक या बैंक ड्राफ्ट डा० सच्चिदानन्द शास्त्री, मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली के पते पर भेजें।

– सम्पादक

भूकम्प पीड़ित बच्चों का गुरुकुल आश्रम मे शिक्षण-पोषण

पिथौरागढ़ आर्य समाज मन्दिर में महाराष्ट्र भूकम्प दिवंगत आत्माओं हेतु शान्ति यज्ञ ४ अक्तूबर १९९३ को सम्पन्न हुआ। गुरुकुल आश्रम बिठूर (कानपुर) में कक्षा ६ से १० तक भूकम्प पीड़ित २० बच्चों के शिक्षण-पोषण आवास की निःशुल्क व्यवस्था स्वामी गुरुकुलानन्द कण्वाहारी द्वारा की जायेगी। प्रवेश प्रपत्र मंगाने हेतु 'आपात सेवा समिति, बैंक रोड पिथौरागढ़ (उ० प्र०)' को पत्र लिखें।

गुरुकुलानन्द सरस्वती

आर्य समाज पिथौरागढ़

आर्य कन्या इन्टर कालेज हरदोई का विवाद समाप्त

हरदोई स्थानीय आर्य कन्या पाठशाला इण्टर कालिज में उपशिक्षा निदेशक, षष्टम मण्डल, लखनऊ ने प्राधिकृत नियन्त्रक के पद को समाप्त कर कालेज को प्रबन्ध समिति को सौंप दिया है। इस प्रकार समिति में अध्यक्ष श्री रामदेव अग्निहोत्री एडवोकेट तथा प्रबन्धक श्री राजेश्वर दयाल (गुड्डि बाबू) प्रबन्ध समिति ने जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी से कार्य भार ग्रहण कर १५-९-१९९३ ई० से विधिवत कार्य करना प्रारम्भ कर दिया है।

ज्ञातव्य है कि उक्त कालेज मे प्रबन्ध समिति सम्बन्धी विवाद के कारण १५-३-१९९१ ई० को उपशिक्षा निदेशक ने जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी को कालेज का प्राधिकृत नियन्त्रक नियुक्त कर दिया था और तत्कालीन प्रबन्धक श्री बलीसिंह गौर को अन्य २ और अनुचित तथा आपत्तिजनक अनियमितताओं के कारण प्रबन्ध समिति सहित कार्यमुक्त कर दिया था। इस प्रकार विगत कई वर्षों से चला आ रहा विवाद समाप्त हो गया है।

चुनाव समाचार

आर्य समाज छाता—चौ० प्रतापसिंह आर्य प्रधान, श्री चन्द्रप्रकाश आर्य मन्त्री, श्री पुरुषोत्तम लाल गुप्त कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज जलाली अलीगढ़—श्री राजकुमार आर्य प्रधान, श्री लोकमन दास आर्य मन्त्री, श्री कृष्ण आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

हजरत बल दरगाह

(पृष्ठ १ का शेष)

किया तो वे इमारत को ही उड़ा देंगे। इसलिए प्रशासन पवित्र चिन्ह और दरगाह की सुरक्षा और बंधक बनाए गये नागरिकों की जान के बचाव का ध्यान रखे बिना कार्रवाई का जोखिम नहीं उठा सकता। लेकिन आतंकवादियों को पूरे राज्य में साम्प्रदायिक हिंसा भड़काने के इरादों में भी कामयाब होने नहीं दिया जा सकता। जब-जब राज्य में सुरक्षा बलों को थोड़ी बहुत भी सफलता मिलती है, आतंकवादी कोई न कोई ऐसी वारदात करने में कामयाब हो जाते हैं जिससे प्रशासन की उपलब्धियों पर पानी फिर जाता है। मौलवी फारूक की हत्या, रुबैया सईद के अपहरण, दोड़ा और मुशीरुल हक की हत्या आदि के क्रम में ही हजरत बल कांड को भी देखा जा सकता है।

((जनसत्ता १९-१०-९३ से साभार)

रोहतक रजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०२४/९३ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२४-१०-१९९३) दिल्ली पोस्टल रजि० नं० ...
R N 626/57 Licensed to post without prepayment licence No. U (C) 93 Post in N.D.P.S.O. on 21/22-10-1993

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज हल्द्वानी (नैनीताल) का वार्षिकोत्सव ८ से ९ अक्तूबर तक समारोहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर प्रतिदिन वृहद् यज्ञ आचार्य श्री प० यशपाल जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। समारोह में आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वानों व भजनोपदेशको ने पधार कर जनता जनार्दन का मार्गदर्शन किया।

—वेद प्रचार मण्डल जीन्द का तीसरा वार्षिकोत्सव १७ से १९ सितम्बर तक ग्राम बोबड़िया (जीन्द) मे समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रकाण्ड विद्वानो तथा भजनोपदेशको ने पधार कर कार्यक्रम को सफल बनाया। १७ सितम्बर को एक विशाल शोभायात्रा का आयोजन किया गया जिसका क्षेत्रीय जनता ने उत्साह वर्धन किया।

हंसराज महाविद्यालय मे हिन्दी दिवस

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी हंसराज महाविद्यालय मे हिन्दी दिवस सम्पन्न हुआ इस समारोह की अध्यक्षता दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रस्तोता (प्रोफेसर) एच० के० बासन ने की। प्रोफेसर बासन ने कहा कि उन्हें इस समारोह से बहुत प्रेरणा मिली है। वे दिल्ली विश्वविद्यालय मे हिन्दी में काम-काज कराने का प्रयत्न करेंगे।

समारोह के मुख्य वक्ता श्री हरिबाबू कसल ने अत्यन्त भावुकतापूर्ण शब्दो में हिन्दी की की [illegible] उपेक्षा पर चिन्ता व्यक्त की तथा अध्यापकों विद्यार्थियो और विशेष रूप से कर्मचारियो से अपील की कि वे निर्भय होकर हिन्दी में काम करना प्रारम्भ कर दें। हिन्दी का प्रयोग उनके दृढ निश्चय से ही होगा। समारोह में श्री [illegible] डी० ऑफिस विद्यार्थी विक्रमसिंह महाविद्यालय के प्राचार्य श्री कृष्णचन्द्र कपूर तथा समारोह के संयोजक डा० प्रशान्त वेदालकार [illegible] विचार रखे।

डा० प्रशान्त वेदालकार
संयोजक
हिन्दी दिवस समारोह

यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन

गत वर्षों की भांति इस बार भी आर्य समाज मन्दिर सुदर्शन पार्क के तत्वावधान मे दिनाक २१ १०-९३ से २८-११-९३ तक घर-घर में यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया है। इस यज्ञ का लक्ष्य वैदिक सिद्धान्तो का प्रचार-प्रसार तो है ही साथ ही इस बार मन्दिर में एक सभागार के निर्माण की भी योजना है जिसकी आधार शिला दिनाक २८-११-९३ को पूर्णाहुति के दिन रखी जाएगी।

निवेदन है कि समस्त आर्य समाजो एव आर्य जनो से सभागार के निर्माण हेतु यथा सामर्थ्य दान सहयोग देने की अपील की जा रही है। दान चैक/ ड्राफ्ट दोनो से स्वीकार्य है। कृपया चैक कृपया आर्य समाज मन्दिर सुदर्शनपार्क के नाम से भेजे जायें।

नोट—रुपये १ १०० अथवा अधिक के दानियो का नाम मानद दान पटल पर लिखवाया जायेगा।

भारतीमित्र शास्त्री
प्रधान

शोक समाचार

आर्य समाज निर्माण विहार के मन्त्री श्री प्रेमप्रकाश आर्य (आयु ५६ वर्ष) का रविवार २६ ९ ९३ को अकस्मात निधन हो गया है। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से निगमबोध घाट पर किया गया। अन्तिम शोक-सभा (शान्ति यज्ञ) बृहस्पतिवार ३० ९-९३ को आर्य समाज मन्दिर निर्माण विहार मे हुई जिसमे स्वामी स्वरूपानन्द जी सरस्वती दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से श्री पुरुषोत्तमलाल मुंजाल महामन्त्री दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा, श्री विश्वम्भरनाथ भाटिया प्रधान पूर्वी दिल्ली आर्य उपसभा एवं उप-प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा की ओर से तथा नगर की बहुत सी आर्यसमाजों के मन्त्री व प्रधानो ने श्रद्धांजलि अर्पित की। शोक प्रस्ताव दिए।

श्री प्रेमप्रकाश आर्य, आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता थे और तन मन धन से आर्य समाज की सेवा कर रहे थे उनके निधन से आर्य समाज को बहुत बड़ी हानि हुई है।

कागा करे हंस की होड़

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

काकर सारे हुए इकट्ठे एक थैली के चट्टे बट्टे।
रचें प्रपच अनेको इस हित करते ओछे होड़ पर होड़।
कागा करें हंस की होड़॥
उथल पुथल करते पालकी कागों की पकड़ी पगड़ी।
स्वर्गधाम की राह छोड़ कर पकड़ा नरक कुण्ड का रोड़।
कागा करें हंस की होड़॥
उड़ावत चाहें मौज बहार, एक म्यान और दो [illegible]।
दुख सुख हो या हानि लाभ हो इनको है [illegible] की होड़।
कागा करें हंस की होड़॥
सुय छिपे न धूल उड़ाये, [illegible]।
देख देख इनकी करतूतें सभी रहे [illegible]।
कागा करे हंस की होड़॥
धर्म कर्म सारा बिसराया, ऐसा क्या मैं मैल समाया।
खुले आम मिथ्या स्वांग रचा कर मनमानी करते है जोड़।
कागा करें हंस की होड़॥
द्वेष ईर्ष्या सभी मिटाओ, मिल-जुल करके प्रीति बढ़ाओ।
सारी बिगड़ी बात बनाओ जो पावनपथ है मुख मोड़।
कागा करें हंस की होड़॥

आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांवा

आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांवा को भजन मण्डली चाहिए (वादक व ढोलक वादक) आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव को एक अनुभवी आर्य भजन मण्डली की आवश्यकता है जो देहात व शहर में भजनोपदेश के माध्यम से प्रचार कर सके तथा यज्ञ आदि कर्मकाण्ड कराने में दक्ष हो। वेतन कार्य व योग्यता अनुसार सम्पर्क करने पर तय होगा। पूर्ण विवरण सहित सम्पर्क स्थापित करें।

—ओमप्रकाश चुटानी महामन्त्री
आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव
उपकार्यालय : आर्य समाज रामनगर गुड़गांव

सार्वदेशिक सभा द्वारा शास्त्रार्थ महारथी प० गणपति शर्मा के ग्रन्थ का पुनः प्रकाशन

ईश्वर भक्ति विषयक व्याख्यान

मूल्य १-५० रु०

लेखक . भवानीलाल भारतीय

स्व० प० गणपति शर्मा आर्य स के इतिहास में प्रथम पंक्ति के विद्वान थे। उनकी लगभग १०० वर्ष पहले छपी इस दुर्लभ पुस्तक का प्रकाशन सभा ने पण्डित गणपति शर्मा के जीवन परिचय तथा उनके प्रचार कार्य के विवरण सहित किया है। अधिक संख्या मे मंगा कर [illegible] इस बहुमूल्य पुर्ण कृति का प्रचार करें। लेखक बधाई के पात्र है [illegible] इतिहास के पृष्ठों को जनता के समक्ष प्रस्तुत कर [illegible] है।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री-सार्वदेशिक सभा
[illegible], नई दिल्ली

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

महर्षि दयानन्द उवाच

- जितना अहिंसा और चोरी, विश्वासघात, छल, कपट आदि से पदार्थों को प्राप्त होकर भोग करना है वह अभक्ष्य और अहिंसा धर्मादि कर्मों से प्राप्त होकर भोजनादि करना भक्ष्य है।
- सब सज्जनों को श्रम उठाकर इन सम्प्रदायों को जड़ मूल से उखाड़ डालना चाहिये। जो कभी उखाड़ डालने में न आवे, तो अपने देश का कल्याण कभी होने का नहीं।
- हे धार्मिक सज्जनो ! आप इन पशुओं की रक्षा तन, मन, धन से क्यों नहीं करते ?

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष : ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३१ अंक ३८] दयानन्दाब्द १६९ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९४ कार्तिक कृ० १ सं० २०५० ३१ अक्तूबर १९९३

हजरतबल दरगाह में छिपे उग्रवादियों को भोजन देने से सेना नाराज

सेना द्वारा बल प्रयोग स्थिति पर निर्भर

श्रीनगर २४ अक्तूबर। पिछले दस दिनों से चले आ रहे हजरत बल विवाद के शीघ्र समाधान के आसार आज उस समय प्रकट हुए जब दरगाह के भीतर घुसे उग्रवादियों ने खाद्य सामग्री अन्दर भेजने की इजाजत दे दी। राज्य सरकार के एक वरिष्ठ अधिकारी ने एक प्रमुख उग्रवादी नेता से दरगाह के भीतर बातचीत भी की।

दरगाह के अन्दर बैठे चालीस या पचास उग्रवादियों ने अपने रुख में बदलाव लाते हुए खाद्य सामग्री को भीतर ले जाने दिया। अनुमान है कि यह खाद्य सामिग्री दो बार के भोजन के लिए पर्याप्त है। कश्मीर के सम्भागीय आयुक्त वजाहत हबीबुल्लाह द्वारा यह खाद्य सामग्री दरगाह के अन्दर पहुंचाई गई। उनके साथ कुछ स्थानीय लोग भी हजरत बल दरगाह के भीतर गए। राज्य के अतिरिक्त मुख्य सचिव 'गृह' महमूद उर रहमान ने संवाददाताओं से कहा कि गतिरोध जल्दी खत्म करने के लिए प्रशासन दरगाह मे छिपे उग्रवादियों से मध्यस्थों के जरिए सम्पर्क बनाए हुए हैं।

भोजन देने से सेना नाराज

हजरत बल दरगाह में छिपे उग्रवादियों को बाहर निकालने के लिए तैनात सेना ने उग्रवादियों को खाद्य सामिग्री देने का कड़ा विरोध किया है। जानकार सूत्रों के मुताबिक सेना कमांडर ने अपना विरोध राज्यपाल जनरल के. वी. कृष्णराव और सलाहकार "आंतरिक सुरक्षा" ले० जनरल एम. ए. जाका को भेज दिया है। सेना उग्रवादियों को दूध, पके हुए चावल, मटन, चिकन और फल भेजने के फैसले से नाराज है। सेना के कमांडर का कहना है कि इस फैसले से सेना का मनोबल गिरेगा और उग्रवादियों को मजबूती मिलेगी। इससे उग्रवादियों को बाहर आने पर मजबूर नहीं किया जा सकता।

उल्लेखनीय है कि सेना की कमान सम्भाल रहे ले० जनरल एस. पद्मनाभन ने पहले ही घोषित कर दिया था कि वे दरगाह में छिपे उग्रवादियों को मुसीबत में डालना चाहते हैं इसी कारण पानी और बिजली की आपूर्ति १७ अक्तूबर को काट दी गई थी। सेना कमांडर की नाराजगी के तुरन्त बाद वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक बुलाई गयी।

गृहमन्त्री श्री शंकरराव चव्हाण ने आज स्पष्ट किया कि श्रीनगर

[शेष पृष्ठ १९ पर]

आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन का देहावसान

निगम बोध घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से अन्तिम संस्कार सम्पन्न

गुरुकुल ज्वालापुर के सुयोग्य पुरातन स्नातक स्वतन्त्रता सेनानी और प्रख्यात साहित्यकार पद्मश्री आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन का २३ अक्तूबर को रात्रि ८-५५ पर देहावसान हो गया। उनके जाने से आर्य जगत और साहित्य के क्षेत्र मे एक व्यक्तित्व का अभाव खटकेगा। आचार्य सुमन इस समय दिवंगत साहित्य सेवी नामक ग्रन्थ का तृतीय भाग तैयार कर रहे थे। उन्होंने अपने जीवन में पत्रकारिता एवं साहित्य के लेखन में महत्वपूर्ण कार्य किया। वह गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के प्रधान भी रहे।

उनके देहावसान पर उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री मोतीलाल वोहरा ने गहरा दुख प्रकट कर उनके परिवार के प्रति शोक सम्वेदना प्रकट की।

दिनांक २४ अक्तूबर को साय ४ बजे दिल्ली के निगम बोध घाट पर विद्वान पण्डितो द्वारा पूर्ण वैदिक रीति से अन्तिम संस्कार सम्पन्न किया गया। इस अवसर पर राजधानी और आस-पास के क्षेत्रों के अनेक समाज सेवी और साहित्यकार उपस्थित थे। इनमें सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती, पं० विष्णु प्रभाकर, डा० विजेन्द्र स्नातक, पं० ब्रह्मदत्त स्नातक पूर्व लेखाकार श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी, श्री यशपाल जैन, आचार्य मण्डन मिश्र, आदि विद्वान सम्मिलित थे।

श्री सुमन जी की आत्मा की शान्ति के लिए ५ नवम्बर को उनके निवास स्थान पर शान्ति यज्ञ का आयोजन किया गया है। तथा ३० अक्तूबर को २ बजे से ४ बजे तक आर्य समाज हनुमान रोड पर एक शोक सभा आयोजित की जावेगी।

संस्कार सम्पन्न होने के पश्चात प्रभु से उनकी आत्मा की सद्गति तथा पारिवारिक जनों को शान्ति प्रदान करने की प्रार्थना के साथ संस्कार सम्पन्न हुआ।

भूकम्प पीड़ितों का दिल खोल कर सहायता करें

दान दाताओं की सूची

श्री मधु बसंत,	डेसू	दिल्ली	५०.००
कु० संगीता,	"	"	५०.००
श्री प्रदीप त्यागी,	"	"	१०० ००
श्री अजय गुप्ता,	"	"	१००.००
श्री कान्ति प्रसाद,	"	"	५१.००
श्री लेखराम शर्मा,	"	"	२१.००
श्री माधवानन्द जी,	"	"	५१.००
श्री चन्द्रराम जी,	"	"	५१ ००
श्री शिवप्रसाद	"	"	१०१.००
श्री मुरलीधरन	"	"	५१.००
श्री लखबीर सिंह	"	"	५०.००
श्री राजेश श्रीवास्तव,	"	"	१००.००
श्री रामकुमार वत्स,	"	"	५१.००
आई. एम. एस. बाबा,	"	"	५१.००
श्री देशबन्धु,	"	"	१०१.००
श्री सनाउल हक	"	"	५१.००
श्री उम्मेद सिंह,	"	"	५०.००
श्री सुनील शर्मा,	"	"	२१८.००
श्री बालकनाथ (रामगोपाल)	"	"	२०१.००
श्री लोकेश जी,	"	"	१००.००
श्री रमेश जी,	"	"	५०.००
श्री शिवशंकर जी,	"	"	५०.००
श्री शंकरलाल जी,	"	"	२०.००
श्री ए. पी. गुप्ता	"	"	१०१.००
श्री मेहता जी,	"	"	६०.००
श्री एस. सी. अग्रवाल, सुपरिन्टेनडेन्ट	"	"	५१.००
श्रीमती शान्ती देवी डोगरा,	"	"	२०० ००
कु० गुड़िया, चिन्टू	"	"	१०.००
सुश्री सुषमा डोगरा	"	"	१५०.००
श्री पी. सी. शर्मा,	"	"	१०१.००
श्री रविन्द्र कुमार,	"	"	५०.००

श्री जगदीश कपूर जी, हनुमान मन्दिर नई दिल्ली	५१,००
मिस निर्मल डोगरा, प्रिंसिपल दरियापुर कलां, बवाना, दिल्ली	१०००,००
श्री यशवन्त शर्मा, दत्ता साइंटिफिक, जवाहर नगर दिल्ली	३५१.००
श्री अतुल वेदी जी, मदरसा रोड दिल्ली	४०० ००
सुश्री मधु जी चण्डीगढ़,	१००.००
श्री योगेन्द्र सिंह, दिल्ली	५१.००
आर्य केन्द्रीय सभा, गुड़गावां आर्य समाज मन्दिर, जैकमपुरा गुड़गावां	२५०००.००
बाबूलाल शर्मा द्वारा सोमप्रकाश, हरजीगढ़ी, अलीगढ़ (उ० प्र०)	२१.००
आर्य समाज कीर्तिनगर नई दिल्ली	१०.०००.००
श्रीमती मोहनदेवी मुखी आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट कीर्ति नगर नई दिल्ली	५१००.००
मै० रवि प्लास्टिक एड कैमिकल ५/६ ई० एरिया कीर्ति नगर नई दिल्ली	३१००,००
मै० एकता कम्प्यूटर्स डब्लू जैड ८/३१ ई० एरिया कीर्ति नगर नई दिल्ली	५००.००
श्री मूलचन्द आर्य १२५/६ साकेत कालोनी नई दिल्ली	१००.००
श्री बलदेव द्वारा बाल ज्योति आर्य पब्लिक स्कूल, पश्चिम विहार नई दिल्ली	११००.००
मन्त्री आर्य समाज तीतरो सहारनपुर (उ० प्र०)	६५०.००
श्री महेशचन्द पेंगोरिया, सब्जी मण्डी कोठी धौलपुर (राजस्थान)	५१.००
आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली	११०००.००
बृजलाल मुटियानी प्लाट सं० ५४, आई. पी. एक्स० नई दिल्ली	१५.००
आर्य समाज मन्दिर न्यू मोतीनगर नई दिल्ली	२६५.००
विशुन दयाल द्वारा प० जैं० जैं० रामजी हालैंड	२५०.००
पुरषोत्तमलाल २१/६ आर० के० पुरम नई दिल्ली	५०.००
एम० एस० मलिक ७७४/१२ आर० के० पुरम नई दिल्ली	५०.००
आर्य समाज चन्द्र नगर दिल्ली	१५००.००
आर्य समाज बरारा आगरा	३५०.००
हरीशचन्द्र वासुदेव १२२ लायर्स रोड दिल्ली	२०.००
कन्या गुरुकुल हाथरस	११००.००
आर्य समाज लोहारदगा बिहार	६२४.००
आर्य समाज चौक लखनऊ	३१००.००
बी० के० ट्रेडिंग कं० द्वारा मन्त्री महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा वाघेगांव नान्देड	५०१.००

आर्य केन्द्रीय सभा करनाल द्वारा विभिन्न आर्य समाजों से प्राप्त दान की सूची

आर्य समाज प्रेम नगर	२६००.००
वैदिक भक्ति स्थल अशोका कालोनी	२४१२.००
आर्य समाज दयालपुरा	११०० ००
आर्य समाज सैक्टर-६	१०००.००
आर्य केन्द्रीय सभा	८८७.००
आर्य समाज माडल टाउन	५००.००
वैदिक सत्संग सभा कुन्जपुरा रोड	५००.००
स्त्री आर्य समाज प्रेम नगर	५००.००
स्त्री आर्य समाज सदर बाजार	५००.००
आर्य समाज रमेश नगर	५०१.००
श्री वेदप्रकाश आर्य प्रधान केन्द्रीय सभा	५००.००
	११०००.००

नीदरलैंड के दान दाताओं की सूची

श्री लेखराम जैं० जैं० रामजी आर्य, नीदरलैंड	१०२००.००
श्री महेश्वर प्रसाद जैं० जैं० रामजी आर्य नीदरलैंड	४२५०.००
श्री हेमराज पांडे द्वारा जैं० जैं० राम जी आर्य, नीदरलैंड	१७००.००
श्रीमती रामप्रसाद जैं० जैं० राम जी आर्य, नीदरलैंड	५०००.००
	२११५०.००

स्मृति यज्ञ

आर्य समाज आर्यपुरा दिल्ली के भूतपूर्व मन्त्री स्व० श्री रणबीरसिंह आर्य की पुण्य स्मृति में २१-१०-९३ से २५-१०-९३ तक २९८२ आर्यपुरा दिल्ली मे पं० प्रेमप्रकाश शास्त्री के ब्रह्मत्व में यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सायं ७-३० से ८-३० तक अखिलेश भारती के अमृतमयी प्रवचन हुए तथा २५-१०-९३ को प्रातः ११ बजे महायज्ञ का आयोजन किया गया ।

'संस्कार विधि' के विरुद्ध अनर्गल प्रचार

डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री, एम. ए. पी. एच. डी.

आजकल कुछ आर्य विद्वान अपनी विद्वत्ता या पाण्डित्य दिखाने के लिए संस्कार विधि के विरुद्ध मनमाने आरोप या अनर्गल प्रचार मे लगे हुए हैं। स्वामी दयानन्द सरस्वती का एक अनुयायी तथा सार्वदेशिक धर्मार्य सभा का एक सदस्य होने के नाते मैं कुछ आर्य विद्वानो द्वारा संस्कारविधि: के विरुद्ध प्रचारित कुछ अवधारणाओं के निराकरण के लिए यह लेख लिख रहा हू।

(१) पीलीभीत के प्रसिद्ध 'पुरोहित' उपाधि प्राप्त पं० इन्द्रदेव जी सम्पादक 'आर्य राष्ट्र' का मत है कि 'अयन्त इध्म आत्मा० मन्त्र से न तो समिदाधान करना चाहिए और न इस मन्त्र से पंच घृताहुति ही देनी चाहिए। क्योकि संस्कार विधि: के हस्तलेख में 'अयं त इध्म आत्मा०' मन्त्र हाशिए में किसी ने बढ़ा दिया है। ९ नवम्बर १९९२ ई० के 'आर्य राष्ट्र' में 'इस मन्त्र को प्रेस कापी में बढ़ा दिया गया है' यह लिखा है। अर्थात हस्तलेख में यह मन्त्र है ही नहीं' यह अर्थ निकला। १० मई १९९३ ई० के 'आर्य राष्ट्र' में पुरोहित श्री इन्द्रदेव जी ने किसी गृह्यसूत्र का वचन उद्धृत करके यह लिखा है कि समिदाधान तथा जल प्रोक्षण से पूर्व आहुतियां नहीं होनी चाहिए। इन लोगो के कुप्रचार का कुपरिणाम यह हो रहा है कि किसी किसी आर्य समाज में 'अयंत इध्म आत्मा०' मन्त्र से समिदाधान नही हो रहा है। आर्य समाज गोविन्दनगर वेद मन्दिर कानपुर के श्री ओमप्रकाश आर्य (प्रधान) का एक वक्तव्य 'आर्य राष्ट्र' ९ नवम्बर १९९२ ई० के अंक में यह छपा है कि 'मैं आज से यज्ञ में 'अयंत इध्म आत्मा०' मन्त्र से समिधा नहीं चढ़ाऊंगा। क्योकि संस्कार विधि:' में एक-एक मन्त्र से एक-एक समिधा को अग्नि में चढ़ावें' यह लिखा है। श्री आर्य का तात्पर्य है कि जब एक-एक मन्त्र से लिखा है तब दूसरी समिधा दो मन्त्रों को बोलकर क्यों दी जाती है? श्री ओमप्रकाश आर्य इस निष्कर्ष या परिणाम पर पहुचे हैं कि यह 'अयं त इध्म' मन्त्र संस्कार विधि: में प्रक्षिप्त है।

समाधान—महाभाष्यकार पतञ्जलि लिखते हैं—'व्याख्यानतो विशेष प्रतिपत्तिर्नहि सन्देहादलक्षणम्'। अर्थात—व्याख्यान द्वारा विशेष बोध हो जाता है, सन्देह से आर्ष वचन को अप्रामाणिक नहीं बताना चाहिए। पहले संस्कार विधि: के हस्तलेख को लें। (१) हस्तलेखों में ऋषि द्वारा निरीक्षण या संशोधन करते समय हाशिये पर अनेक पाठ बढ़ाये गये हैं और वे पाठ पूर्ण प्रामाणिक हैं। साधारण जनता में ये प्रचारक यह प्रवाद फैला रहे हैं कि मात्र यही एक मन्त्र हाशिये में बढ़ाया गया है, जबकि तथ्य दूसरा है। संस्कार विधि: या सत्यार्थ प्रकाश: आदि ग्रन्थों में सेकड़ों पाठ हाशिये में पुनर्निरीक्षण करते समय ऋषि द्वारा या ऋषि की प्रेरणा से लेखकों द्वारा बढ़ाए गए है। फिर यह बावेला इसी 'अयं त इध्म' मन्त्र को लेकर क्यो मचाया जा रहा है?

(२) दूसरी बात—हाशिये मे बढ़ाया गया पाठ और अधिक महत्त्वपूर्ण होता है। अर्थात उस पाठ के बिना लेख अधूरा हो जाएगा इसलिए कोई लेखक हाशिये पर पाठ बढ़ाता है।

(३) हम सभी लेखकों को यह अनुभव है कि लेख लिखते समय कुछ बातें शीघ्रता में छूट जाती हैं। दुबारा लेख पढ़ते समय न्यूनता प्रतीत होती है तभी हम संशोधन या लेख को पूर्ण करने के लिए हम सभी लेखक हाशिये में कुछ पाठ बढ़ाते हैं। सभी प्रेस के या प्रकाशन से जुड़े व्यक्तियों और लेखको के लिए यह आम बात है और अनुभवसिद्ध है।

(४) संस्कार विधि: में यह मन्त्र प्रक्षिप्त तब माना जाएगा, जब इस मन्त्र का अग्रिम पाठसे विरोध होगा। जबकि वस्तुस्थिति यह है कि संस्कारविधि: के अनेक स्थलों में 'अयं त इध्म' मन्त्र से समिदाधान का उल्लेख है। आक्षेपकर्ताओं ने सम्पूर्ण 'संस्कार विधि:' को ध्यान से पढा होता तो यह आरोप न लगाते। द्रष्टव्य—(क) संस्कार विधि: के 'विवाह प्रकरणम्' में पूर्वविधि, के अन्तर्गत लिखा है—'पृष्ठ २३-२४ में लिखे (ओम् अयन्त इध्म०) इत्यादि मन्त्रों से समिदाधान ···' (संस्कार विधि:, पृष्ठ १३५)

(ख) संस्कार विधि: के विवाह प्रकरण में ही उत्तर विधि में लिखा है—(ओम अयन्त इध्म०) इत्यादि ४ मन्त्रों से समिदाधान करके (पृष्ठ १५१)।

(ग) पुन: उत्तरविधि मे ही लिखा है—'पृष्ठ २३-२४ में लिखे प्रमाणे (ओम् अयन्त इध्म०) इत्यादि चार मन्त्रों से समिधा होम दोनों जने करके' (संस्कार विधि: पृष्ठ १५४)।

अत: तीन मन्त्रों से तीन समिदाधान करने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। इन स्थलो में ये पाठ हाशिये पर नही है। बिना हाशिये के मूल में ही इन पाठो को किस आधार पर पूर्वपक्षी प्रक्षिप्त बतायेगा? हमने यहा पर 'अयं त इध्म' मन्त्र द्वारा समिदाधान का स्पष्ट उल्लेख सामान्य प्रकरण के अतिरिक्त तीन स्थलो का दिखाया है तथा पूर्वपक्षी के आरोप के उत्तर में संख्या चार (१) से (४) तक समाधान प्रस्तुत किए हैं। बुद्धिमान के लिए इशारा काफी है किन्तु ज्ञानलवदुर्विदग्ध को ब्रह्मा भी नहीं समझा सकता है। भर्तृहरि जी लिख गए हैं—ब्रह्मापि तं नरं रञ्जयितुं न शक्त:।

(२) एक दूसरे पुरोहित पं० वेदभूषण जी (अध्यक्ष-अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान हैदराबाद) ने यह तर्क दिया है कि ब्रह्मचारी को प्रजा की कामना नहीं होती अत: 'अयं त इध्म' मन्त्र—जिसमें प्रजा की कामना की गई है, द्वारा पंच घृताहुति नहीं देनी चाहिए। इनका यह भी मत है कि चूंकि इस मन्त्र से आहुति का विधान 'पंच महायज्ञ विधि: में नहीं है अत: किसी को भी 'अयं त इध्म' मन्त्र द्वारा पंच घृताहुति नहीं देनी चाहिए। हैदराबाद के ही पं० गंगाराम जी इनके बहकावे में आ गए हैं। उन्होने अपने 'वर्णाश्रम पत्रक' पत्रिका को पं० वेदभूषण जी के 'पुरोहित शिविर' का बुलेटिन बनाकर हजारो की संख्या मे आर्य समाजों को भेजकर वेदभूषण जी के मत के प्रचार में योगदान किया है।

समीक्षा और समाधान :

पं० वेदभूषण जी (पहली बात) यदि 'अन्तर्देशीय' अर्थ में 'अन्तर्राष्ट्रीय' शब्द का प्रयोग करते हैं तब तो 'अन्तर्राष्ट्रीय' लिखें अन्यथा देश-देशान्तर, राष्ट्र-राष्ट्रान्तर या अंग्रेजी के 'इन्टर नेशनल' के अर्थ में 'अन्तर्राष्ट्रीय' शब्द लिखना अशुद्ध या अयुक्त है। (द्रष्टव्य--आचार्य किशोरीदास वाजपेयी लिखित 'हिन्दी शब्दानुसंधान' ग्रन्थ) अन्तर्+राष्ट्रीय सन्धि में 'अन्तर्राष्ट्रीय' शब्द राष्ट्र के अन्दर या अन्तर्गत अर्थ को ही व्यक्त कर सकेगा। देश-देशान्तर के अर्थ में अन्तर+राष्ट्रीय शब्दों की सन्धि करनी होगी। ऐसी स्थिति में 'अन्तराष्ट्रीय शब्द साधु होगा। मानक पत्र-पत्रिकाएं इसी शब्द का प्रयोग करती है। 'अन्ताराष्ट्रिय वैदिक प्रतिष्ठान' पूना वाले भी इस शब्द सिद्धि पर ध्यान दें और वे भी 'अन्तर राष्ट्रीय' लिखा करें। अस्तु

(१) पं० वेदभूषण जी ने भी सम्यक रूप से सम्पूर्ण 'संस्कार विधि:' का अध्ययन नहीं किया है। अन्यथा वे यह नहीं कहते कि ब्रह्मचारी प्रजाकाम नहीं होता। वेदारम्भ संस्कार में ब्रह्मचारी जिन मन्त्रो से तीन समिधाएं वेदिस्थ अग्नि में छोड़ता है उन मन्त्रो मे प्रजा की प्रार्थना की गई है—'ओम् अग्नये समिधमाहार्षं······मेधया वर्चसा प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन······'
(संस्कार विधि: पृष्ठ ८६) (क्रमश:)

घर बैठे कानूनी ज्ञान प्राप्त होगा

नई दिल्ली : सत्य, न्याय और कानूनी जागृति के पवित्र संकल्प से दिल्ली के कुछ वकीलों ने "कानूनी पत्रिका" हिन्दी मासिक का प्रकाशन प्रारम्भ किया है। यह पत्रिका न्यायमूर्ति श्री महावीरसिंह जी के संरक्षकत्व में प्रकाशित होगी। इसके मुख्य सम्पादक श्री विमल वधावन एडवोकेट हैं।

श्री वधावन ने "कानूनी पत्रिका" की पहली प्रति सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी को भेंट की। इस पत्रिका मे कई स्थानों पर महर्षि दयानन्द के न्यायिक दृष्टिकोण को भी दर्शाया गया है।

सलाहकार प्रश्न मंच के माध्यम से पाठको की कानूनी समस्याओं पर विशेषज्ञों की राय नियमित रूप से प्रकाशित की जायगी।

इस "कानूनी पत्रिका" की वार्षिक सदस्यता राशि मात्र ४५) रुपये, मनीआर्डर, चैक या ड्राफ्ट द्वारा १७ए, डी. डी. ए. फ्लैट, लक्ष्मीबाई कालेज के पीछे, अशोक विहार-३, दिल्ली-५२ के पते पर भेजी जा सकती है। दिल्ली से बाहर के चैकों पर १०) जोड़कर सदस्यता राशि भेजनी होगी, ड्राफ्ट या मनिआर्डर पर नहीं।

श्री पं० वन्देमातरम् जी का भूकम्प पीड़ित क्षेत्रोंका दौरा

एक रिपोर्ट

३० सितम्बर १९९३ बृहस्पतिवार को प्रात काल के ठीक ३ बजकर ५६ मिनट पर ईश्वरीय, प्रकोप ने महाराष्ट्र आन्ध्र प्रदेश और कर्नाटक के एक बहुत बड़े हिस्से को झकझोर कर रख दिया, इस विनाशकारी भूकम्प का प्रभाव इसके केन्द्र से लगभग ३०० किलोमीटर दूर हैदराबाद तक भी महसूस किया गया। इस भूकम्प के कारण सबसे ज्यादा नुकसान लातूर उस्मानाबाद और बीदर जिले के सैकड़ो गावो मे हुआ है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने १ अक्टूबर ९३ को ही प्रात काल सभाके वरिष्ठ उपप्रधान श्री प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव से हैदराबाद मे टेलीफोन से बात की और उनसे तुरन्त सहायता कार्य प्रारम्भ करने का निवेदन किया। दूसरी तरफ दिल्ली से उसी दिन आर्य वीर दल के ५ उत्साही युवको को कुछ दवाईयो आदि सहित जीप से ही हैदराबाद और लातूर के लिए रवाना किया। एक तरफ आर्य जनता से इस सहायता कार्य में तन-मन-धन से सहयोग करने की अपील की गई और दूसरी तरफ सभा प्रधान स्वामी जी ने तत्काल एक लाख रु० का ड्राफ्ट सहायता कार्य प्रारम्भ करने के उद्देश्य से सभा के कोष से ही हैदराबाद भेज दिया।

श्री विनय कुमार के नेतृत्व मे आर्य वीर दल का यह जत्था लातूर पहुचा और उधर हैदराबाद से श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव तथा आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश के प्रधान श्री कान्तिकुमार कोरटकर कुछ अन्य अधिकारियो सहित भूकम्प ग्रसित क्षेत्रों का जायजा लेने के लिए लातूर पहुचे। आर्यसमाज लातूर मे एक आपातकालीन बैठक बुलाई गई जिसमे भूकम्प के कारण हुए नुकसान के विश्लेषण तथा सहायता कार्य प्रारम्भ करने के लिए गहन विचार विमर्श किया गया।

श्री वन्देमातरम् ने १० अक्टूबर ९३ को हुई सार्वदेशिक सभा की अन्तरग बैठक में पधारकर स्थिति की विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की। उनके अनुसार लगभग ३० हजार व्यक्तियो की जानें इस विनाशकारी भूकम्प मे गई है जबकि इससे भी ज्यादा सख्या मे पशुओ का नुकसान हुआ है। कुछ गावो में तो सारे के सारे मकान मिट्टी मे मिल गये हैं। मगरूल मे आर्य समाज के भवन को भी भारी क्षति हुई है।

श्री वन्देमातरम् ने कई गांवो का दौरा करने के बाद सरकारी अधिकारियो तथा सेना के जवानों से भी बातकी और उन्हें आर्य समाज द्वारा प्रारम्भ किये गये सहायता कार्यों से अवगत कराया। प० वन्देमातरम् जी का कहना है कि सरकार और जनता दोनो ने ही भूकम्प की पूर्व चेतावनियो को गम्भीरता से नहीं लिया। आकड़े बताते हैं कि अगस्त ९२ से लेकर सितम्बर १९९३ तक लगभग १०० से भी अधिक बार लातूर जिले के कुछ हिस्सो मे भूकम्प के हल्के झटके महसूस किये गये हैं। श्री वन्देमातरम् का कहना है कि सरकार को मकान बनाने के वायदो को मात्र चुनावी वायदे के रूप मे नही समझना चाहिए बल्कि वास्तविकता मे गम्भीरता पूर्वक इन सब विषयो पर विचार और अमल करने की आवश्यकता है।

आर्य समाज द्वारा भूकम्प पीडित क्षेत्रों, विशेषकर लातूर मे भोजन कपडे और दवाइया इत्यादि का वितरण प्रारम्भ कर दिया गया है और यह प्रयत्न किया जा रहा है कि अनाथ हुए बच्चो को आर्य समाज की शिक्षण सस्थाओ, गुरुकुलो और अनाथालयो द्वारा गोद लिया जायेगा। यह प्रस्ताव उन्होने अन्तरग सभा मे भी रखा था। जिस पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा ७० बच्चो के भार वहन की घोषणा की गई है।

दूसरी तरफ श्री वन्देमातरम् ने समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओ तथा अन्य धनी महानुभावो से यह अपील भी की है कि वे अपनी अपनी सहयोग राशि सार्वदेशिक सभा के माध्यम से ही आर्य समाज लातूर में खुले इस कैम्प तक पहुचाने का कष्ट करें।

—सम्पादक

आजाद हिन्द सरकार की स्वर्ण जयन्ती पर दो दिवसीय समारोह

नई दिल्ली, १८ अक्तूबर नेताजी सुभाष चन्द्र बोस द्वारा आजाद हिन्द की अस्थाई सरकार के गठन की स्वर्ण जयन्ती यहा आगामी २० अक्तूबर से दो दिवसीय समारोह मे मनाई गई।

नेता जी ने पचास वर्ष पहले २१ अक्तूबर १९४३ को आजाद हिन्द फौज का गठन किया था जो भारत के स्वतन्त्रता सग्राम के इतिहास में एक महत्व-पूर्ण घटना थी। इसने न केवल भारत की स्वाधीनता का मार्ग प्रशस्त किया बल्कि समूचे दक्षिण एशिया मे ब्रिटिश साम्राज्यवाद के वर्चस्व पर निर्णायक प्रहार किया। वरिष्ठ स्वतन्त्रता सेनानी तथा गांधी स्मृति एव दर्शन समिति के उपाध्यक्ष डा० विश्वम्भर नाथ पाडे की अध्यक्षता मे गठित राष्ट्रीय समिति मे देश के सभी प्रमुख राजनीतिक दलो के प्रतिनिधियो को शामिल किया गया है। इस समिति के तत्वावधान मे कृतज्ञ राष्ट्र इन स्वतन्त्रता सेनानियो की स्मृति को प्रणाम कर अपनी विनम्र श्रद्धाजलि अर्पित करेगा। इस अवसर पर चादी का एक सिक्का जारी किया गया जिसमे स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए भारत के शौर्यपूर्ण इतिहास की एक झलक को दिखाया गया है।

आजाद हिन्द फौज से सम्बद्ध रह चुके रणबाकुरे अपनी वृद्धावस्था के बाद राजधानी में एकत्र होकर २० अक्तूबर की प्रात राष्ट्रपिता महात्मा गाधी की समाधि राजघाट पर उन्हें श्रद्धा सुमन चढ़ायेंगे।

इस अवसर पर आजाद हिन्द फौज के ऐतिहासिक क्षणो को दर्शाने वाली एक प्रदर्शनी का भी उद्घाटन किया जायेगा, अगले दिन यानी २१ अक्तूबर को लालकिले के समक्ष सुभाष पार्क में नेता जी के चित्र पर माल्यार्पण आजाद हिन्द फौज के कर्नल जी० एस० ढिल्लो करेंगे और अपने पूर्व सेनानियों का स्वागत करेंगे तथा जनरल एन० एस० भगत घोषणा का वाचन करेंगे।

दिल्ली के लिये पृथक स्वरूप से श्री धर्मवीर के नेतृत्व में एक समिति का गठन किया गया है जो उसी दिन परेड ग्राउण्ड पर आयोजित एक भव्य समारोह में कर्मठ स्वतन्त्रता सेनानियों का सम्मान करेगी। यह समितियां १९९७ में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की जन्मशती तक कायम रहेंगी।

विजयादशमी पर्व का सांस्कृतिक चिन्तन

डा० महेश विद्यालंकार

भारत कृषि प्रधान देश है। पर्व यहा की सांस्कृतिक चेतना के आधार रहे हैं। कई पर्व फसलो के साथ जुड़े हैं तो कई पर्व ऋतु परिवर्तन, ऐतिहासिक घटनाओं और महापुरुषो के जीवनो से जोड़े गए हैं। पर्व जीवन मे उत्साह, उल्लास एव उमग का सचार करते हैं। इन त्योहारों से जीवन और समाज मे मेलजोल व भाईचारा आता है। हमारा देश त्योहारो का देश कहलाता है, यहा कोई न कोई पर्व हर दिन बना ही रहता है। इन पर्वों मे देश की धार्मिक सांस्कृतिक तथा सामाजिक जीवन की झाकी मिलती है।

विजयादशमी पर्व समूचे देश मे बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। वैदिक काल से ही इस त्योहार का महत्व व विशेषता रही है। हमारे देश मे मुख्य तीन ऋतुए होती है—सर्दी, गर्मी, वर्षा। वर्षा के कारण नदिया बाढ से उमड पड़ती हैं। चारो ओर पानी ही पानी नजर आता है। आने जाने के मार्ग बन्द हो जाते हैं। प्राचीन काल मे ऐसा होता था, आजकल तो इतने साधन सुविधाए उपलब्ध है कि वर्षा ऋतु का सामान्य जीवन पर कोई विशेष प्रभाव नही पड़ता है। पहले के समय मे इतने उन्नत साधन नही होते थे। किसान, व्यापारी और यात्री गाडी रथ, नौका आदि साधनो से अपना आवागमन का कार्य चलाते थे। वर्षा के दिनो मे व्यापार, विजययात्रा तथा दूसरे स्थान पर जाना प्राय बन्द रहता था। वर्षा के बन्द होते ही शरद ऋतु के आगमन पर व्यापार यात्रा, कृषि कर्म सब कुछ आरम्भ हो जाता था।

वर्षा ऋतु मे गाडी, रथ व अन्य साधनो मे जो जग व स्थिरता आ जाती थी। उन अस्त्र शस्त्रो और साधनो को साफ व तेज किया जाता था। घोडे, हाथियो की साज-सामग्री को साफ सुन्दर बनाया जाता था। यात्रा और व्यापार के लिए वाहनो व साधनो को सुसज्जित करने की तैयारी होने लगती थी। दुकानो व घरो के सामान को साफ सुथरा बनाकर उपयोग के काबिल किया जाता था। सभी अपने-अपने कार्य की तैयारी मे लग जाते थे। विजयादशमी के दिन से व्यापार, यात्रा, विजय यात्रा तथा विदेश गमन आदि आरम्भ हो जाते थे। लोग व्यापार यात्रा से पूर्व यज्ञ-अनुष्ठान पूजा आदि धार्मिक कार्यों को महत्व देते थे। परस्पर मिलकर मन-मुटाव दूर करके एक दूसरे को सफलता के लिए मगलकामनाए देते थे।
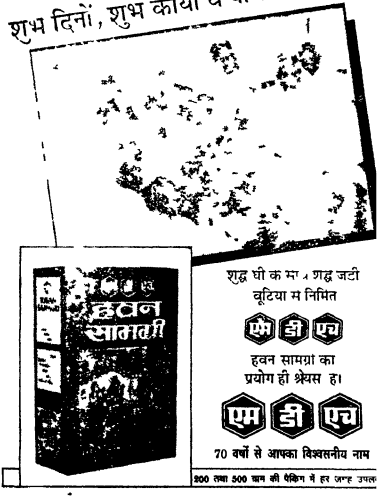
विजयादशमी पर्व क्षत्रियो की विजय का त्योहार कहलाता है। यह शक्ति पूजा का पर्व है। शस्त्र पूजा का विधान शास्त्र सम्मत रहा है 'शस्त्रेण रक्षिते राष्ट्रे शास्त्र चर्चा प्रवर्तते' जिस राष्ट्र मे शौर्य, पराक्रम और वीरता की पूजा होती है, उसी राष्ट्र मे शास्त्रो एव धर्म ग्रन्थो का पठन पाठन निर्विघ्न रूप से चलता है। इस पर्व का वैदिक स्वरूप ऐसा ही मिलता है। कालान्तर मे अनेक रूढ़िया, घटनाए और किवदन्तिया जुड़ती गई। सत्य व यथार्थ प्रेरक रूप छूटता गया।

वर्तमान मे जो इस पर्व का रूप स्वरूप दिखाई देता है, उसमे अनेक आडम्बर, विकृतिया कल्पनाए आदि जुड़ गई हैं। जिससे वास्तविकता का बोध होना कठिन हो गया है। जो आम धारणा है और प्रचलित भी हैं कि विजयादशमी के अवसर पर श्रीराम द्वारा रावण पर विजय की कथा को इस पर्व का मुख्य आधार स्वीकार किया जाता है, किन्तु विद्वानो तथा वाल्मीकि रामायण का इस तिथि पर मतभेद है। श्रीराम का लका विजय भारत का सबसे बड़ा पराक्रम माना जाता है। शायद उनकी विजय यात्रा इसी दिन आरम्भ हुई हो? इसीलिए हम भारतीयो का यह दिन विजय मुहूर्त बन गया हो। जो भी रहा हो, किन्तु जो आज लोक प्रचलन चल रहा है, वह बड़ा प्रबल है। इन दिनो नगर, ग्राम, शहर, देश-विदेश सर्वत्र रामलीलाओ, देवी पूजन, धार्मिक अनुष्ठान आदि की धूम मची होती है। कई दिनो तक रामलीला का मचन होता है। बाल युवा वृद्ध सभी नर नारी हर्षोल्लास के साथ सम्मलित होते हैं। श्रीराम के जीवन चरित्र और कार्यों का गुण कीर्तन होता है। सभी बड़ी धूमधाम तथा सजधज कर रावण वध मे भाग लेते हैं। ऐसा हर साल होता है। सवाल यह है कि हमने इस पर्व से जीवन, व्यवहार व आचार के लिए कुछ शिक्षा और प्रेरणा ली या नहीं? यदि नहीं ली, तो यह केवल रस्म, रिवाज व परम्परा थी, जिसका निर्वाह हो गया? यह आज के मानव तथा समाज की दुखान्त विडम्बना है कि सभी पर्व, रामलीलाए, कृष्णलीलाए, रासलीलाए, धार्मिक कर्म, तीर्थ यात्राए आदि मेले का रूप लेते जा रहे हैं। लोग खाने पीने, घूमने व तमाशा देखने के भाव से इन स्थानो पर जाने लगे हैं? चरित्र-निर्माण, जीवन सुधार और विचार प्राप्ति की भाव भावना छूटती जा रही है? कागज का रावण हर साल जला दिया जाता है। असली रावण सदा जिन्दा बना रहता है, हर साल बढ़ता फलता, फूलता और फैलता जा रहा है? पहले एक रावण था, आज अनेक रावण गली, मोहल्ले और कदम कदम पर मिल जायेंगे? जो घात लगाए बैठे हैं कब सीता मिले और हम उठाकर, चुराकर, भगाकर तथा फुसलाकर ले उड़ें। इस रावण-वृत्ति पर जब तक हम राम-वृत्ति द्वारा विजय प्राप्त नही करते, तब तक इस पर्व की महत्वपूर्ण सार्थकता सिद्ध न हो सकेगी? श्री राम का सम्पूर्ण जीवन प्रेरणा आदर्श कर्त्तव्य बुद्धि, प्रेम, त्याग और निर्माण का सन्देश देता है। इन्ही भावो से व्यक्ति, परिवार समाज एव राष्ट्र उन्नत बनता है। यही इस पर्व की मूल चेतना है।

विजयादशमी के साथ के नवरात्र व्रत, उपवास पूजा-पाठ अनुष्ठान आदि का सम्बन्ध जोडा जाता है। इन क्रियाओ का हमारे जीवन और विचारों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। जीवन का असद वृत्ति से सदवृत्ति की ओर तथा भगवद भक्ति की ओर लाने के लिए व्रत, पूजा, सत्सग यज्ञ आदि का महत्व पूर्ण योगदान है। नवरात्रो के माहात्म्य व क्रम का पुराण शास्त्रो मे विस्तार से चिन्तन किया गया है। मैं यहा पर मात्र आयुर्वेदिक दृष्टि से जो शरीर को निरोगी बनाने मे सहायक है उसका जिक्र कर रहा हू। इस शरीर मे आठ चक्र और नौ द्वार हैं। ऋतु परिवर्तन के अवसर पर शरीर के नौ द्वारो की स्वच्छता व शुद्धि की प्रेरणा भी इस नवरात्र मे छिपी है। नियम यह है कि जहा भी मल रुकता है वहीं रोग उत्पन्न हो जाते है। जब भी ऋतु परिवर्तन आता है तभी रोग आते हैं। यदि शरीर के नौ द्वारो को जब उपवास एव फलाहार आदि से स्वच्छ कर लिया जाय तो आने वाली ऋतु में व्यक्ति

(शेष पृष्ठ १० पर)

महर्षि दयानन्द के भक्त और प्रशंसक—

महाराजाधिराज कर्नल सर प्रतापसिंह (१०)

(आर्यसमाज के इतिहास का एक रोमांचक अध्याय)

प्रो० भवानीलाल भारतीय

पं० लालचन्द्र विद्याभास्कर लिखित आमिष समीक्षा। इस पुस्तक के लेखक पं० लालचन्द्र पुष्करणा पुरोहित जाति के ब्राह्मण थे। १० अगस्त १८९८ को इन्हें १०० रु० मासिक वेतन पर सर प्रताप ने आर्य समाज के उपदेशक के रूप में नियुक्त किया। पं० गणेश रामचन्द्र तथा पं० ठाकुरप्रसाद जैसे अधिक योग्य विद्वानो की तुलना मे पं० लालचन्द्र को अधिक वेतन पर नियुक्त करने का इसके अतिरिक्त और क्या मतलब निकाला जा सकता है कि सर प्रताप मासाहार के समर्थन मे उनकी योग्यता एव विद्वता का उपयोग करना चाहते थे। आमिष समीक्षा मे अनेक वेद मन्त्रो को मासाहार तथा यज्ञो में पशु बलि के समर्थन में प्रस्तुत किया गया है। इसी प्रकार मास भोजन विचार शीर्षक ३ भागो में लिखित एक अन्य ग्रन्थ भी सर प्रताप की प्रेरणा से ही लिखा गया। सर प्रताप का मांसाहार के समर्थन में अभियान पर्याप्त तीव्र गति से चलता रहा। इसे दुर्भाग्य ही कहना चाहिए कि उनके इस कार्य में स्वामी प्रकाशानन्द नामक एक संन्यासी ने भी पूर्ण सहयोग दिया जिसे सर प्रताप अपना गुरु मानते थे। फर्रुखाबाद से प्रकाशित मासिक पत्र भारतसुदशाप्रवर्तक के १८९५ ई. के एक अंक में एक विज्ञप्ति आर्य प्रतिनिधि सभा पश्चिमोत्तर प्रदेश (वर्तमान उत्तर प्रदेश) ने प्रकाशित की है जिसमें स्वामी प्रकाशानन्द द्वारा मांसाहार के समर्थन में किए जा रहे प्रचार की आलोचना करते हुए आर्य समाजों को सतर्क किया गया है कि वे इस भ्रामक प्रचार के शिकार न हों।

कालान्तर में जब मांसाहार के प्रश्न ने उग्र रूप धारण किया तो सर प्रताप ने स्वामी प्रकाशानन्द के परामर्श से स्वामी दयानन्द के शिष्य पं. भीमसेन शर्मा को जोधपुर आमन्त्रित किया तथा उन्हें राजकीय अतिथि के रूप में सम्मान प्रदान किया। ऐसा करने में सर प्रताप का प्रयोजन स्पष्ट था। वे चाहते थे कि उस युग के सर्वोच्च आर्य विद्वान पं. भीमसेन शर्मा से मांसाहार के समर्थन में कोई व्यवस्था लिखाई जाय, जिससे यह प्रकट हो कि वेदो में मांसाहार का समर्थन ही है, विरोध नहीं। पं. भीमसेन शर्मा अपनी सैद्धान्तिक दुर्बलताओ के कारण आर्य समाज में निरन्तर अपना सम्मान खोते जा रहे थे। स्वामी प्रकाशानन्द एवं स्वामी अच्युतानन्दने सरप्रतापका निर्देश पाकर प. भीमसेन को मांसाहार के वेद सम्मत होने के विषय मे अपनी सम्मति देने का आग्रह किया। उन्हें यह कह कर फुसलानेकी भी चेष्टा की गई कि यदि वे ऐसी व्यवस्था दे देंगे तो जोधपुर राज्य की ओर से उन्हें प्रभूत पुरस्कार मिलेगा तथा वे राजकीय सम्मानके पात्र होंगे। पं. भीमसेन सम्भवत: ऐसा कर भी देते, किन्तु संयोगवश उसी अवसर पर पं. लेखराम स्वामी दयानन्द के जीवनवृत्त विषयक घटनाओ के संग्रह के प्रसंग में जोधपुर आये। जब उन्हें यह ज्ञात हुआ कि पं. भीमसेन जोधपुर आए हुए हैं और सर प्रताप के दबाव में आकर मासाहार के समर्थन में कोई व्यवस्था देना चाहते हैं तो उन्होंने पं भीमसेन से मिल कर यह स्पष्ट कर दिया कि यदि वे ऐसा करेंगे तो आर्य-समाज में उनकी बड़ी बदनामी होगी और वे अपने सार्वजनिक जीवन मे कहीं मुंह दिखाने लायक नही रहेंगे। इस पर पं. भीमसेन ने मासाहार के समर्थन में कोई समर्थक वाक्य लिख कर देने से इन्कार कर दिया। परिणाम स्वरूप उन्हें सर प्रताप ने सामान्य दक्षिणा देकर ही जोधपुर से विदा किया। स्वयं पं भीमसेन शर्मा ने स्वसम्पादित 'आर्य सिद्धान्त' मासिक में इस प्रकरण को पूर्ण विस्तार से लिखा है। इसके पश्चात् पं भीमसेन ने जोधपुर आर्य समाज द्वारा प्रकाशित मास भोजन विचार के तीनो भागो की विस्तृत आलोचना स्वतन्त्र ग्रन्थ लिख कर की।

हमने सर प्रताप के मांस विषयक विचारों का विस्तृत ऊहापोह करना आवश्यक समझा है। कारण स्पष्ट है। उनके चरित्र के दुर्बल पहलुओं पर प्रकाश डालना भी उतना ही आवश्यक है, जितना कि उनके उज्ज्वल पक्ष पर।

आर्यसमाज और स्वामी दयानन्द के जीवन के प्रसंगों में सर प्रताप की चर्चा आने पर प्राय. यह कहा गया है कि वे अंग्रेजी सरकार के प्रबल समर्थक थे तथा अंग्रेजों के प्रति उन्होंने वफादारी प्रदर्शित की। अन्य शब्दों में लोग उन्हें विदेशी साम्राज्यवाद का पोषक तथा शासक जाति का पिट्ठू तक कह देते हैं। इसी विचार के आधार पर ये लोग यह धारणा व्यक्त करने में भी संकोच नहीं करते कि अंग्रेजों के प्रति इस कट्टर वफादारी ने ही तो कहीं सर प्रताप को स्वामी दयानन्द का अनिष्ट करने तथा उन्हें मृत्यु के मुख में धकेलने के षड्यन्त्र का एक मोहरा नहीं बना दिया था। आर्यसमाज के वर्तमान इतिहास चिन्तकों का एक वर्ग यदा कदा इस प्रकार की धारणा को मुखर करता रहा है।

हमारे इस निबन्ध का प्रयोजन सर प्रताप का अनावश्यक प्रशस्ति पाठ करना तथा उन्हें लोकोत्तर गुणों का भण्डार प्रतिपादित करना नहीं है। हमने उपर्युक्त अनुच्छेदो में उनके जीवन, चरित्र एवं व्यक्तित्व पर जो भी विचार प्रकट किए हैं, वे इसीलिए, ताकि पाठक बिना किसी पूर्वाग्रह के, उनके व्यक्तित्व का स्वतन्त्ररीत्या मूल्यांकन करें। उनके विचारों और कार्यों से स्वामी दयानन्द एवं आर्यसमाज के प्रति उनका जो आदर एवं सम्मान का भाव प्रकट होता है, उसे प्रमाणित करने के लिये ही उपर्युक्त तथ्य संगृहीत किये गये हैं। किन्तु सर प्रताप के चरित्र के स्खलनों तथा उनकी दुर्बलताओं को छिपाना भी हमें अभीष्ट नहीं है। मांस का प्रकरण इसी दृष्टि से लिखा गया है।

(क्रमश:)

श्रमेव जयते (२)

श्री कृष्णप्रौतार, बढ़ापुर (बिजनौर)

'ईश्वर सर्व भूताना हृद्देशे अर्जुन तिष्ठति' गीता

रामचरित मानस पढने व सुनने से हमारे घरो मे राम नहीं खेल सकते जब तक हम राम के आचरण व पुरुषार्थ को अपने कर्तृत्व मे स्थापित नहीं करते। योगेश्वर कृष्ण के गीता उपदेशो को आचरण मे लाकर ही योगीश्वरो की रचना होगी। इसी प्रकार वेद ज्ञान को भी हम अपने कर्तृत्व मे लाकर ही अपना परिवार, समाज, राष्ट्र एव विश्व का भला कर सकेंगे।

'आचार हीन न पुनन्ति वेदा

आचार हीन को वेद भी पवित्र नहीं कर सकते।

अब से ४६ वर्ष पूर्व भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त होने पर हमारे नेताओ ने देश को रामराज्य स्वर्ग समान बनान के सब्ज बाग दिखाए थे। परन्तु शासको की दिशाहीन नीतियो व कार्यक्रमो के साथ साथ शासन तन्त्र का भ्रष्टाचार मे डूबे रहने और आम जनता मे पुरुषार्थ श्रम के प्रति उपेक्षा और दूसरो पर निर्भरता तथा बिना परिश्रम किए दूसरे के शोषण पर जिन्दा रहने की आकाक्षा ने इस देश को तबाही व गरीबी के कगार पर खड़ा कर दिया इस समय विश्व के १६० देशो मे से गरीबी के हिसाब से हमारे देश की गिनती १२३वें स्थान पर है।

अग्रेजो ने जब भारत छोड़ा था, तब देश कर्जदार नहीं था। परन्तु स्वतन्त्रा के उपरान्त भारतीय शासको ने, जो बुद्धि से परतन्त्र थे, अपने देश की प्रकृति के प्रतिकूल और श्रम शक्ति का अनादर करते हुए ऐसी अव्यवहारिक पचवर्षीय योजनाओ का आयोजन किया जिससे भारत का भविष्य सदा के लिए कैद हो गया। सात पचवर्षीय योजनाओ मे अरबो रुपया व्यय करके भी न गरीबी मिटा सके और न समाज को उचित ढग से शिक्षा व चिकित्सा सुविधा प्रदान कर सके और न बेरोजगारी ही मिटा सके। आज स्थिति यह है कि विदेशी ऋण का ब्याज चुकाने के लिए भी ऋण लेना पड़ता है। स्वर्गीय राजीव गाधी के अनुसार गरीबो के लिए बनी योजनाओं के १०० पैसे में से गरीब को केवल १५ पैसे ही प्राप्त होते हैं, शेष ८५ पैसे नौकरशाही चट कर जाती है। आठवीं योजना के अन्त में भी ऋण एव बेरोजगारी मे वृद्धि ही प्राप्त होगी।

आज प्रत्येक क्षेत्र मे, बुद्धि जीवी, मजदूर और सरकारी कर्मचारी किसी न किसी बहाने से श्रम से बचने कामचोरी करने में लगा है। सब के दाता राम हैं ही फिर चाकरी व काम क्यो करना।

हमारे स्कूल कालिज और विश्वविद्यालय बुद्धिजीवियो के निर्माण केन्द्र हैं। इन केन्द्रों मे वर्ष के ३६५ दिनों मे से २५० दिन से लेकर २७५ दिन तक छुट्टियां रहती हैं। न विद्यार्थी को पढ़ने मे रुचि है और न प्राध्यापको को पढाने में रुचि है। मुश्किल से ३-४ महीने पढाई करने के बाद किसी भी तिकड़म से डिग्री प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है।

हमारे विश्वविद्यालयो और कालिजो से लाखो की सख्या मे जो युवक निकल रहे है उन्होने अपने जीवन निर्माण के सबसे अच्छे दिन अनुशासनहीनता और अवकाशो के मूड मे बिताये होते है। परिणाम स्वरूप जब वे असली जीवन के सघर्ष मे प्रवेश करते है चाहे सरकारी नौकरी हो या कोई व्यवसाय, वे अपनी कामचोर मनोवृति के कारण एक सफल नागरिक नहीं बन पाते और ना ही देश की उन्नति व विकास में कोई योगदान दे पाते हैं।

श्री लक्ष्मीधर मालवीय जापान के एक विश्वविद्यालय मे प्रोफेसर हैं उन्होने अपने एक लेख में लिखा है कि मैं जापान मे १७ वर्षों से प्राध्यापक हू, लेकिन मैंने १७ वर्षों मे एक दिन का भी अवकाश नहीं लिया। इसी प्रकार एक दूसरी घटना एक भारतीय विद्यार्थी के जीवन की है, जब वह १९३८ में लन्दन के एक कालिज में ट्रेनिंग ले रहे थे, ब्रिटेन के सम्राट की मृत्यु हो गई। विद्यार्थी को आशा थी कि सम्राट की मृत्यु के शोक में कम से कम तीन दिन का सार्वजनिक अवकाश होगा परन्तु उसे आचार्य की यह घोषणा सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि सम्राट का शव जब इस कालिज के भवन से गुजरेगा, तब सब विद्यार्थी सावधानी की मुद्रा में सम्राट के शव को सैल्यूट करेंगे और बाद में अपनी कक्षाओं मे जाकर पढ़ाई आरम्भ कर देंगे।

देश की अदालतों में तहसील से लेकर सुप्रीम कोर्ट तक लाखों मुकदमें बिना निपटाये पड़े हैं। आये दिन हड़ताल हो जाती है। मुकदमों के फैसले के लिये आदेश पाने के लिए भ्रष्टाचार ने सारे तन्त्र को जकड़ लिया है।

कारखानों और फैक्ट्रियो मे भी अजीब हाल है। पूजीपति मजदूरो के अधिक से अधिक शोषण मे लगा है। दूसरी तरफ मजदूर कम से कम उत्पादन करने व हड़ताल करने मे लगा है जापान व जर्मनी मे चाहे मजदूर हो या अध्यापक फालतू छुट्टी लेने या काम न करने को राष्ट्रद्रोह माना जाता है। द्वितीय विश्व युद्ध मे दोनो देशो की बेतहाशा तबाही व बरबादी हुई थी किन्तु वहा के नागरिको की श्रम के प्रति निष्ठा और देश प्रेम से वे विश्व के सबसे विकसित देश बन गये हैं।

प्राचीन भारत मे समस्त शिक्षा दीक्षा व्यक्ति को श्रमशील बनाने के लिए दी जाती थी। मनुष्य श्रमशील बने, इस लिये श्रम दीक्षा के लिए आश्रम (आ+श्रम) जहा निरन्तर श्रम का आवास हो, ऐसे विद्यालयो की स्थापना की गई थी। जहा श्रम के विभिन्न प्रकारो की शिक्षा दीक्षा दी जाती थी। उन आश्रमो मे आज कल के विद्यालयो की भांति केवल अक्षर ज्ञान या पुस्तकीय ज्ञान ही न दिया जाता था, बल्कि विद्यार्थी को २५ वर्ष तक ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए, ज्ञानवान, श्रमवान तपवान एव कर्मवान बनाया जाता था, तथा योग्यता के अनुसार ही आचार्य विद्यार्थी का वर्ण (कर्म क्षेत्र) निश्चित करते थे। जन्म से कोई भेद नहीं होता था। ऊच नीच, छोटे-बड़े अमीर-गरीब का कोई भेद भाव नहीं था। उस समय विदेशो के लोग यहा अपने-अपने चरित्रो की शिक्षा लेने आते थे।

मनु ने लिखा है—

एतद् देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन।
स्व स्व चरित्र शिक्षरेन पृथिव्या सर्व मानवा ॥

यदि हमें अपने प्राचीन गौरव को प्राप्त करना है, जिसके कारण भारत विश्व का सिरमौर था, तो वही ऋषि प्रणीत वर्णाश्रम प्रणाली को अपने व्यवहारिक जीवन में अपनाना होगा। इस सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द का सत्यार्थप्रकाश, स्वामी दर्शनानन्द जी की पुस्तक 'कायाकल्प' एव अन्य वैदिक विद्वानो की पुस्तकें उपलब्ध हैं—विस्तार के लिए उन्हें पढ़ें।

वैदिक ऋषियो ने सम्पूर्ण मानव प्रजा के लिए यह अमर घोषणा की है कि जिसने श्रम या तप नहीं किया है, वह उस आनन्द को जो लोक व परलोक में सर्व व्याप्त है, प्राप्त नहीं कर सकता।

'अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुते' । ऋ० ९-८३-१

ब्रह्म स्वय श्रमशील है। तपस्वी है। अत वह सभी जीवो को तपस्वी बनने की प्रेरणा दे रहा है। ब्रह्म तथा ब्रह्माण्ड का दर्शन बिना परिश्रम के नहीं किया जा सकता।

श्रम अथवा तप से ही राजा राष्ट्र की रक्षा कर सकता है। आलसी राजा राष्ट्र की रक्षा नहीं कर सकता।

ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्र विरक्षति' । अथर्व ११-५ १७

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के छटे समुल्लास मे राजधर्म के सम्बन्ध मे लिखा है—(राज्य के) 'सब सभासद और सभापति (मन्त्री और प्रधान मन्त्री) इन्द्रियो को जीत के अर्थात अपने वश मे रखके सदा धर्म मे वर्तें और अधर्म से हटे हटाये रहें। इसलिए रात दिन नियत समय मे योगाभ्यास भी करते रहे, क्योंकि जो जितेन्द्रिय की अपनी इन्द्रियो (जो मन, प्राण, और शरीर रूपी प्रजा है इस) को जीते बिना बाहर की प्रजा को अपने वश में स्थापन करने को समर्थ कभी नहीं हो सकता।"

मर्यादा पुरुषोत्तम राम के राज्य में ब्रह्मज्ञानी योगाभ्यासी, आत्मदर्शी अधिकारी राज्य प्रबन्ध करते थे।

महर्षि ने स्पष्ट शब्दो मे राजनीति मे भाग लेने वाले सभी मन्त्रियो, प्रधान मन्त्री और राष्ट्रपति को भी आत्मदर्शी, योगाभ्यासी तथा जितेन्द्रिय होने का आदेश दिया है। उक्त आदेश का पालन करने से ही हमारा देश सर्वांगीण उन्नति को प्राप्त कर सकता है, इसके अतिरिक्त दूसरा कोई मार्ग नहीं है।

"नान्य पन्था विद्यतेऽयनाय'

यदि आप अपने परिवार, समाज, राष्ट्र एव विश्व का सुनिर्माण करना चाहते हैं तो श्रम एव तप कीजिये, विवेक से सुकर्म कीजिए और सदाचार को अपनाइये तभी श्रमेव जयते होकर सत्यमेव जयते सार्थक होगा।

पुस्तक समीक्षा

योग दर्शनम्

मूल्य १० रुपये

लेखक स्व० आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री

प्रकाशिका—पण्डिता उर्मिला देवी शास्त्री

५४/१६ फरीदाबाद हरियाणा

भारतीय वाङ्मय मे दर्शनों का अपना ही महत्वपूर्ण स्थान है। इन दर्शनो मे "योग दर्शन" पातञ्जलि का रचित है।

योग के आठ अंग—

योग दर्शन मे इन्ही के उद्देश्यो की पूर्ति के लिए आठ अंगो का विधान किया है। यह आठ अंग किस प्रकार चित्त की एकाग्रता के साधन हैं जो पुस्तक मे दृष्टव्य हैं।

योग दर्शन की शिक्षा है कि जाति को इस प्रकार काम में लगाओ जिससे यह अधिक से अधिक उपयोगी वस्तु सिद्ध हो। साथ ही अन्तिम उद्देश्य की पूर्ति का साधन भी बन सके।

वह साधन है—यम-नियम- आसन- प्राणायाम-प्रत्याहार धारणा ध्यान और समाधि।

सर्व द्वाराणि संयम्य-मनो हृदि निरुध्य च।
मूर्ध्न्याधायात्मनः प्राणमास्थितो योग धारणम्—गीता—१२

'युज्यतेऽसौ योग' जो युक्त करे मिलावे उसे योग कहते हैं।

म० व्यास ने योग को "योगस्समधि' बतलाया है।

योगदर्शन के चार भाग हैं—

१ समाधि २. साधन ३ विभूति ४ कैवल्यपाद—इस विधि से चलने पर इसकी विशेषता यह है कि मनुष्य अधिक से अधिक शारीरिक मानसिक आत्मिक उन्नति कर सकता है।

इसी लक्ष्य को रख कर आचार्य स्व० प० वैद्यनाथ जी शास्त्री न इस दर्शन पर बुद्धि का उपयोग कर लेखनी चलाई और पुस्तक तैयार की। मान्यवर आचार्य वैद्यनाथ जी के दिवगत होने के बाद—

पूज्या माता पण्डिता उर्मिला देवी शास्त्री ने प्रकाशित करा कर आर्य जगत का महान् कल्याण किया है।

पुस्तक की उपयोगिता पुस्तक के पढ़ने पर ही लगेगी।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

विकासवाद या ह्रासवाद

मूल्य २५ रुपये

लेखक—वेदव्रत कश्यप

प्रकाशक—नीलेश प्रकाशन

ए७/४६ कृष्णानगर दिल्ली-५१

सृष्टि नियम के आधार पर प्रत्येक परिवर्तन विकास है जो कि हर समय होता दिखाई देता है जिसकी चर्चा मानव मे भी सदा होती है। "विकासवाद' आध्यात्मिक व भौतिकता से अभिप्रेत है। इसी से सृष्टि क्रम ही विकास है। यह पद्धति भारतीय वैदिक दर्शन है।

मार्क्सवाद के समर्थक डार्विन के विकासवाद सहायक मत मानते हैं।

डार्विन के विकासवाद के सामने भारतीय विकासवाद एक प्रश्न है अचेतन से चेतन, कथं वै असत सत् जायते, चेतन कैसे हो गया।

यह असम्भव है फिर बन्दर से मनुष्य कैसे हुआ। यह भी असम्भव है जड़ और चेतन मे मूलगत भेद है।

लेखक ने बताया है कि डारविन के विकासवाद के सहारे यह सिद्ध किया जा रहा है कि मानव की उत्पत्ति अमीबा से हुई। अत. मनुष्य ईश्वर कृत नहीं है।

अमेरिका के सम्बन्ध में गलत फैंमी

श्री के. नरेन्द्र

अंग्रेजी शिक्षा और अंग्रेजी प्रोपेगण्डे का परिणाम यह है कि हमारे यहां काफी लोग यह समझने लग गए हैं कि भारत में सिवाय चन्द लोगों के बाकी सब अशिक्षित है। जहा तक यूरोप और अमेरिका का सम्बन्ध है। वहा सब के सब शिक्षित है। हमारे देश मे अंग्रेजो की मौजूदगी का असर यह हुआ है कि हमने यह समझ लिया कि जो कोई विदेशियो की तरह रहता है वो तो शिक्षत है। बाकी सब जाहिल है। क्योकि पूर्वी देशो और अमेरिका में सब लोग सूट बूट पहनते और टाई लगाते हैं। इसलिए हम सब समझते हैं कि वो सब पढ़े लिखे हैं। लेकिन आपको यह सुन कर अचम्भा होगा कि अमेरिका की आबादी का आधा हिस्सा न तो अंग्रेजी ठीक तरह पढ सकता है और न इसे मामूली गिनती आती है। सच तो यह है कि अमेरिकी विद्वान गहरी चिन्ता प्रकट कर रहे हैं कि इनकी नौजवान पीढी मशीनरी (कम्प्यूटर) की इस कदर पराधीन होती जा रही है कि गिनती का हल वो अपनी बुद्धि का प्रयोग करने के स्थान पर छोटे २ कम्प्यूटर इस्तेमाल करते हैं।

इस तरह नौजवानो को हिसाब किताब का अनुभव ही नही हो रहा है। जिस के बिना तरक्की करना बहुत कठिन हो जाता है। अमेरिकी अधिकारी यह देख रहे हैं कि देश की शिक्षा का स्तर बहुत गिरता जा रहा है इन्हीं दिनो अमेरिका के शिक्षा विभाग ने एक निरीक्षण किया है। जिसमे यह पता चला कि (नौ) ९ करोड़ अमरीकी टाईमटेबल अच्छी तरह पढ़ नहीं सकते इनमे से कई बाजार मे जरूरत मे आने वाली वस्तुओ के दाम भी ठीक तरह से पढ भी नही सकते। अमेरिकी अधिकारियों को एक और फिक्र भी है। इनका यह अनुभव है कि अमेरिकी समाज दो भागोमे बटता जा रहा है। एक तबका ऐसा है जो विज्ञान, टैक्नोलोजी मे कहीं से कहीं पहुचता जा रहा है और दूसरा तबका वो है जो साधारण चिट्ठी तक भी नहीं पढ़ सकता। इसका परिणाम यह है कि पढ़े लिखे लोग इन अनपढ़ो को घृणा से देखने लग गए हैं। कई अमेरिकी तो इस वर्ग के लोगो से इसी तरह व्यवहार कर रहे हैं। जसा कभी पशुओ से किया जाता था। इनको इस बात का डर है कि ज्यो ज्यो टैकनोलोजी की उन्नति होगी पढ़े लिखे लोगो की आवश्यकता होगी मामूली कारखानो मे भी टैक्नोलोजी जगह ले रही है।

इनका इन्तजाम चलाने के लिए भी शिक्षित लोगो की आवश्यकता होगी इसलिए इस तरक्की को बरकरार रखने के लिए केवल शिक्षित लोगो को ही अपनाया जायेगा और इस तरह बेरोजगारों की संख्या मे भी वृद्धि होगी और इसका परिणाम देश की स्थिति मे अव्यस्था होगी।

इस प्रकार हमारे लोगो ने जो यूरोप और अमेरिका की जनता की बाबत जो भावना बना रखी है। वो अधिकतर गलत है। हम देहात में रहने वाले लोगो ने यूनिवर्सिटया की डिग्रियां न ली हो। लेकिन जो भी विदेशी इनके पास आता है। वो यह मानने पर विवश हो जाता है कि ये लोग निसन्देह अधिक पढे लिखे नही हैं लेकिन इनकी सूझबूझ किसी पढ़ेलिखे से कम नहीं।

औपनिषदिक विकासवाद डारविन के वाद से कुछ आगे जाता है।

डारविन के विकासवाद पर इतने आक्षेप है कि डारविन का विकासवाद सिद्धान्त नहीं माना जा सकता है। यहीं इस पुस्तक के लेखक का मन्तव्य है। वैज्ञानिक पक्ष के अतिरिक्त लेखक वेदव्रत कश्यप ने विभिन्न मतो एवं मान्यताओ का भी सुन्दर विवेचन किया है।

'विकासवाद या ह्रासवाद" पर अच्छे विचार संकलित किये हैं। लेखक के साथ प्रकाशक भी साधुवाद के पात्र है अच्छा तो तभी होगा जब स्वाध्याय-शील व्यक्ति इस पुस्तक की उपयोगिता को बढ़ायेंगे।

सम्पादक

और गीता बेन का बलिदान रंग लाया

—शिवकुमार गोयल

गुजरात की तेजस्वी गोभक्त महिला गीता बेन बच्चू भाई रठैया का बलिदान रंग लाया और गुजरात सरकार को सम्पूर्ण गोवंश की हत्या पर प्रतिबन्ध लगाने को विवश होना पड़ा। इस महान पशु कल्याण की प्रतीक ममतामयी महिला ने विगत दस वर्षों में हजारों मूक पशुओं को कसाइयों की छुरियों से बचा कर पूरे गुजरात में इतनी लोकप्रियता प्राप्त की थी कि उन्हें लोग 'प्राणी मित्र' कहने लगे थे। अखिल भारतीय हिंसा निवारण संघ ने पिछले साल ही गीता बेन को हैदराबाद में आयोजित एक विशेष समारोह में अभिनन्दित कर गोवंश की हत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध की मांग की थी।

गीता बेन के नेतृत्व मे पुरुष तथा महिलाएं हत्या के लिए ले जाने वाले गाय बैलों तथा बछड़ों की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहते थे। अहमदाबाद तथा अन्य नगरों के कसाईखाने चलाने वालों के लिए गीता बेन एक प्रबल चुनौती बन कर सामने आई। कसाइयों ने साजिश रच कर भाड़े के दो हत्यारे भेजे और गीता बेन की नृशंस हत्या करा डाली।

मोहम्मद और भूरा नामक दो हत्यारों ने जैसे ही ममतामयी गीता बेन की नृशंस हत्या की कि उधर से गुजर रहे पुलिस अधिकारी पी० बी पवार ने उन्हें धर दबोचा। दोनों हत्यारों ने स्वीकार किया कि कसाईखाने के मालिकों ने ही उनसे यह हत्या कराई है।

गीता बेन का बलिदान रंग लाया और सारे गुजरात में गोभक्त हिन्दुओं में आक्रोश व्याप्त हो गया। भारतीय जनता पार्टी, अ० भा० हिंसा निवारण संघ, गोरक्षा संघर्ष समिति, अ० भा० संत समिति तथा जन संघ जैसी दर्जनों संस्थाओं ने संकल्प लिया कि अब गुजरात की पावन भूमि पर गोहत्या सहन नहीं की जायेगी। विधायक अशोक भट्ट के नेतृत्व में विशाल रैली निकाली गई। जैन साधु-संत तथा साध्वी भी पशु वध के विरोध में सड़कों पर निकल आये और अन्ततः गुजरात सरकार को गोवंश की हत्या पर प्रतिबन्ध की घोषणा को विवश होना पड़ा।

गुजरात के मुख्य मन्त्री चिमनभाई पटेल निश्चित ही बधाई के पात्र हैं कि भले ही देरी से सही, महान गोभक्त विभूति गीता बेन के बलिदान के बाद ही सही, गोवंश की हत्या पर प्रतिबन्ध जैसा महत्वपूर्ण कदम उठाया तो उन्होंने।

यह दुर्भाग्य की बात है कि राज्य सरकारें गोहत्या बन्दी की घोषणा तो कर देती हैं किन्तु पुलिस तथा प्रशासन में बैठे भ्रष्ट तत्व गोहत्यारों से सांठ-गांठ कर आर्थिक लाभ के लिए गोवंश की हत्या के पाप को जारी रखने में बाज नहीं आते। उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार ने पिछले वर्ष ही गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध घोषित किया था किन्तु गोहत्या का कलंक दूर नहीं किया जा सका। आज भी पश्चिमी उत्तर प्रदेश का क्षेत्र अवैध गोहत्या का बहुत बड़ा अड्डा बना हुआ है। उत्तर प्रदेश से प्रतिदिन हजारों गाय-बैलो की हत्या कर उनका मास बम्बई, कलकत्ता तथा अन्य नगरो को भेजा जा रहा है। यहां तक कि विदेशों तक को धड़ल्ले से निर्यात किया जा रहा है।

काश! देश में गीता बेन जैसी महान गोभक्त नारियां तथा पुरुष गो-हत्या के कलंक के विरुद्ध सामने आएं तथा अपना बलिदान देने को तत्पर हो, तब गोहत्या के कलंक को जारी रखना सर्वथा असम्भव किया जा सकता है। महान गोभक्त बलिदानी ममतामयी मां गीता बेन बच्चू भाई रठैया के चरणों में हमारी हार्दिक श्रद्धांजलि।

अथारिटी स्टाफ द्वारा स्वतन्त्रता सेनानी का अपमान

नई दिल्ली, आर्य समाज के एक स्वतन्त्रता सेनानी श्री अमरनाथ मल्होत्रा ने आरोप लगाया है कि अथारिटी के एक इन्सपेक्टर द्वारा उनकी बस नं० डी० एल०-आई० पी० ४३६३ रूट नं० १७० के चालान को चुनौती देने के फलस्वरूप जब वे राज निवास मार्ग पर अथारिटी के कार्यालय में गये तो इन्सपेक्टर हवासिंह ने उनसे कहा कि तुम्हें किस उल्लू के पट्ठे ने कहा था कि देश सेवा करो, जेल में जाओ, देश को आजाद कराओ, श्री हवासिंह की बातें सुन कर बड़ा दुःख हुआ। इसके अतिरिक्त भी उसने देश के नेताओं को गालियां दी और देश पर मर मिटने वालों और शहीदों को बहुत बुरा भला कहा।

कितने दुख की बात है कि जिन लोगों ने इस देश को अपने खून से सींचा है उनके बारे में अथारिटी के कर्मचारी ऐसा बोलते हैं और ऐसा अभद्र व्यवहार करते हैं?

श्री मल्होत्रा ने इस अभद्र तथा अपमान जनक व्यवहार को राष्ट्रवादी शहीदों का अपमान बताते हुए सरकारसे कार्यवाही की मांग की है।

ऋषि-निर्वाणोत्सव

१३ नवम्बर ९३, शनिवार, प्रातः ८ से १२ बजे तक

रामलीला मैदान, नई दिल्ली में

आमन्त्रित वक्ता :

श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती

डा० रामप्रकाश—प्रो० उत्तमचन्द 'शरर'—डा० वाचस्पति उपाध्याय
डा० प्रेमचन्द श्रीधर।

दीपावली के पावन पर्व पर आप सब सपरिवार एवं इष्ट मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

इस अवसर पर डा० सुधीरकुमार गुप्त को पं० केदारनाथ दीक्षित वैदिक विद्वान् पुरस्कार से सम्मानित किया जायेगा।

निवेदक :

महात्मा धर्मपाल — प्रधान
डा० शिवकुमार शास्त्री — महामन्त्री

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य
१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१

विजयादशमी पर्व

(पृष्ठ ५ का शेष)

निरोगी रह सकता है, जब ऋतु बदलती है तभी नवरात्र आते हैं। आयुर्वेद यही कहता है—खान-पान, दिन चर्या, ऋतु-ऋतु परिवर्तन से आयुपर्यन्त जीवन सुखी व स्वस्थ रह सकता है। इस नवरात्र पर्व का यह वैज्ञानिक, व्यावहारिक व उपयोगी चिन्तन छूट रहा है मात्र बाह्य लोकाचार तथा आडम्बरों तक ही दृष्टि सीमित होती जा रही है।

विजयादशमी पर्व के साथ दुर्गा पूजा का महोत्सव बड़ी धूम धाम से मनाया जाता है। बंगाल-प्रान्त में दुर्गा पूजा बड़े भव्य स्तर पर होती है। बड़े बड़े पण्डालो में दुर्गा की प्रतिमा का दिव्य आकर्षक रूप प्रदर्शित किया जाता है। लोग श्रद्धा भक्ति उत्साह के साथ पूजा अर्चना में भाग लेते हैं। दुर्गा के नौ विशेष कार्यो के कारण अनेक नाम प्रचलित हैं। उन नामों व कार्यों की चर्चा न करके मात्र इस पर्व का जीवन और जगत को जो प्रेरणा और सन्देश है उसका सक्षेप मे चिन्तन रख रहा हूं। जब भी इस ससार मे अन्याय, अत्याचार और राक्षसी वृत्तियां बढ़ने लगती हैं, तब तब उनका दैवीय शक्ति से दमन हुआ है। उसी दैवीय शक्ति का नाम दुर्गा है। दुर्गा का एक अर्थ बुद्धि भी माना गया है। ससार मे बुद्धि का बल सबसे बडा बल माना गया है। हमारे धर्म ग्रन्थो मे परमात्मा से बुद्धि के बल की प्रार्थना की गई है। चाणक्य कहते हैं, परमात्मा तू मेरा सब कुछ छीन लेना, बुद्धि मत छीनना बुद्धि होगी तो मैं ससार मे सब कुछ प्राप्त कर लूंगा।

आज लोग दुर्व्यसनो, दुर्गुणो और गन्दे आचार विचार से अच्छी भली बुद्धि को खराब कर रहे हैं? यदि मानव अपना और ससार का कल्याण चाहता है, तो उसे पाप से पुण्य की ओर, असत्य से सत्य की ओर, राक्षस-वृत्ति से दैवीय वृत्ति की ओर अपने जीवन को बढ़ाना चाहिए। जो आसुरी भावों और कर्मों की ओर बढ़ते हैं उनका अन्तत विनाशकारी पतन होता है। जो चराचर मे व्याप्त शक्ति पर आस्था व श्रद्धा रखकर जीवन-यात्रा चलाते हैं, उनके जीवनों में सुख-शक्ति प्रसन्नता व आनन्द की प्राप्ति होती है। यही इस पर्व की सगति है।

सक्षेप में आज का युग वैज्ञानिक तर्क प्रमाण व युक्ति का है। हमारे जो पर्व, व्रत अनुष्ठान, धार्मिक सामाजिक, रीति-रिवाज हैं उनका व्यावहारिक, उपयोगी विज्ञान सम्मत, बुद्धि अनुकूल जो उज्ज्वल पक्ष है, जो जीवन और जगत के लिए उपयोगी हैं उसका पालन करना चाहिए। जो इन पर्वों के पीछे जीवन सन्देश दिया गया हैं उसके आचरण से ही हमारा जीवन जगत धन्य हो सकता है। तभी इन पर्वों के मनाने की सार्थकता, उपयोगिता और व्याव-हारिकता सफल होगी। ●

आचार्य प्रेमभिक्षु जी सम्मानित एवं पुरस्कृत

दिनांक ११ अगस्त जन्माष्टमी पर्व के शुभ अवसर पर आर्य समाज हिण्डोन सिटी (राज०) द्वारा आयोजित वेद प्रचार कार्यक्रम में ३१०० रुपये का 'श्री घूड़मल आर्य पुरस्कार' वैदिक साहित्य के प्रख्यात लेखक, कवि वेदोपदेशक, एवं सम्पादक श्री आचार्य प्रेम भिक्षु जी (पूर्व श्री ईश्वरी प्रसाद जी प्रेम) वेदमन्दिर मथुरा को, उनके प्रसिद्ध ग्रन्थ शुद्ध रामायण (भाग १ २) पर श्री प्रह्लाद कुमार जी आर्य एवं श्री प्रभाकर देव जी आर्य द्वारा मूल्यवान शाल सहित ससम्मान प्रदान किया गया। श्री आचार्य जी के साथ ही उनकी धर्मपत्नि श्रीमतीदेवी आर्या को भी सम्मानित किया गया।

भूकम्प पीड़ितों की सहायता कीजिये

सार्वदेशिक सभा ने [illegible] की सेवा के लिये लातूर, उस्मानाबाद तथा अन्य कई जगहों पर राहत केन्द्र तत्काल खोल दिये थे और एक लाख रुपये की राशि वहां पर तुरन्त भिजवा दी थी। सभाप्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आर्य समाजों, स्वयंसेवी संगठनों एवं दानी महानुभावों से अपील की है कि इस भीषण त्रासदी से पीड़ित जनता की सेवा के लिये अपना हर प्रकार का सहयोग प्रदान करें और आर्य समाज के राहत केन्द्रों को सुचारु रूप से चलाने के लिये अधिक से अधिक धन राशि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली-२ को भेजें।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्य समाजों के निर्वाचन

आर्य समाज नेमदारगंज नवादा—श्री हरिप्रसाद प्रधान, श्री अर्जुन प्रसाद "आजाद" मन्त्री, श्री सत्यदेव प्रसाद आर्य भक्त कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज फेफाना श्री गंगा नगर राज०—श्री गोपीराम जी प्रधान, श्री हेतराम आर्य मन्त्री, श्री अमरसिंह पूनिया कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज सिलीगुड़ी—श्री रतीराम शर्मा प्रधान, श्री सुभाष आर्य मन्त्री, श्री सुभाषचन्द्र नकीपुरिया कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज हबड़ा—श्री केशवदेव बामान प्रधान, श्री पुरुषोत्तमलाल मन्त्री, श्री प्रमोद कुमार अग्रवाल कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज दिवालहेड़ी सहारनपुर—श्री ध्यानसिंह जी प्रधान, विजेन्द्र कुमार आर्य मन्त्री, सियाराम आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज मुजफ्फरपुर—श्री पन्नालाल आर्य प्रधान, श्री यमुना प्रसाद मन्त्री, श्री वेदप्रकाश अग्रवाल कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य वीर दल नागौर—श्री शिवकुमार प्रधान, श्री नन्दकिशोर आर्य मन्त्री, श्री विजयकुमार आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

वेद प्रचार एवं सामवेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

दिनांक २-१०-१९९३ से ४-१०-१९९३ तक ग्राम खातीपुरा तहसील सांगानेर, जयपुर, (राजस्थान) मे आर्य समाज एवं वैदिक धर्म के प्रचार के लिये श्री नाथूलाल जी शर्मा एवं उनके परिवार जनो ने ग्रामवासियो के साथ मिलकर श्रद्धा भाव से सामवेद पारायण महायज्ञ, वेदोपदेश तथा भजनोपदेश का आयोजन करवाया।

यज्ञ के ब्रह्मा प० प्रकाशचन्द्र जी वेदालंकार तथा वेदपाठी ब्र० सुधीर कुमार जी थे। वेद प्रचार के इस कार्यक्रम मे आर्य जगत के अनुभवी प्रसिद्ध विद्वान एवं आर्य नेता प्रो० नेतीराम जी शर्मा सहित अनेको विद्वानो तथा भजनोपदेशको ने अपनी ओजस्वी वाणी से किये गये उपदेशो एव भजनों द्वारा ग्रामीण जनता मे वैदिक धर्म के प्रति श्रद्धा और विश्वास जगाने में सफलता प्राप्त की।

—हरिदेव शर्मा संयोजक

अम्बाला छावनी में वार्षिकोत्सव एवं ऋषि निर्वाण पर्व

वैदिक प्रचार मण्डल, २९ मन्दिर मार्ग राम नगर, अम्बाला छावनी के तत्वावधान में दिनांक १२ नवम्बर से १४ नवम्बर ९३ तक वार्षिकोत्सव एवं ऋषि निर्वाण पर्व बड़े उत्साह पूर्वक मनाया जायेगा। इस अवसर पर आर्य जगत के स्वामी [illegible] सरस्वती, स्वामी सच्चिदानन्द जी, आचार्य देवव्रत जी [illegible] वाले ब्रह्मचारी रामप्रकाश जी, डा. विक्रम जी, डा. ओ. पी. विद्यार्थी, पं. [illegible] वेदालंकार, प. [illegible]सिंह एवं [illegible] भजनोपदेशक पधारेंगे। इनके अतिरिक्त हरियाणा सरकार के मन्त्री श्री [illegible]सिंह आर्य [illegible] को भी आमन्त्रित किया गया है।

—वेद मित्र [illegible] वाले

अनमोल छन्द

देश,धर्म, हित, प्रेम से, जो देते हैं दान।
वे दानी, धर्मात्मा, हैं निश्चय लो जान॥

हैं निश्चय लो जान, मान जग में पाते हैं।
कहते हैं विद्वान, अमर वे हो जाते हैं॥

हरिश्चन्द्र, शिवि, वीर कर्ण थे सच्चे दानी।
उन वीरों की अमर, आज है त्याग कहानी॥

जब तक सूरज, चांद, सितारे हैं अम्बर में।
उन वीरो का नाम, रहेगा दुनिया भर में॥

देशवासियो देशभक्त, दानी बन जाओ।
'मानव तन अनमोल', सार्थक कर दिखलाओ॥

महाराष्ट्र में आ गया, खतरनाक भूचाल।
मरे वहा निर्दोष जन, करो साथियों ख्याल॥

करो साथियो ख्याल, बात है दुख की भारी।
बालक, बूढे, तरुण, मरे लाखो नर-नारी॥

बहुत बड़ा नुकसान, हुआ प्यारे भारत का।
सुन हर जन हैरान, हुआ प्यारे भारत का॥

धर्म हमारा आज, करें दुखियों की सेवा।
सेवा से ही मिले, जगत में सच्ची मेवा॥

भारत वीरो बढो, करो शुभ कर्म साथियो।
दुखियो की सब मदद, करो हे धर्म साथियों॥

—पं० नन्द लाल निर्भय सिद्धांत शास्त्री,

निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन

गूजरमल मोदी नेत्र चिकित्सालय मोदी नगर के सहयोग से आर्य समाज अग्रवाल मण्डी टटीरी (मेरठ) द्वारा सातवें निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन १७ से २३ अक्टूबर तक किया गया। शिविर में मरीजों को भोजन दूध दवाई का निःशुल्क वितरण किया गया तथा चश्मे दिये गये। शिविर का उद्घाटन डा० रामगोपाल बोहरा (मुख्य चिकित्सक राज० अस्पताल बागपत) ने किया तथा मुख्य अतिथि महात्मा धर्मपाल वानप्रस्थी थे।

संन्यास आश्रम में प्रवेश

मुराद नगर आर्य समाज के वयोवृद्ध सभासद, राष्ट्रीय आन्दोलन के स्वतन्त्रता सेनानी कालचक्र आर्य पचाग के सम्पादक एवं बीसियो लघु पुस्तिकाओ के लेखक मान्यवर श्री बालमुकुन्द शर्मा (वसिष्ठ जी) ने १७ अक्टूबर को स्वामी विवेकानन्द सरस्वती आचार्य गुरुकुल प्रभात आश्रम भोलाझाल (मेरठ) से दीक्षा प्राप्त कर सन्यास आश्रम में प्रवेश किया। अत: उनको नया नाम वसिष्ठ स्वामी दिया गया।

—सुरेन्द्रपालसिंह मन्त्री

आर्य समाज द्वारा जी० टी० रोड खामपुर में नवनिर्मित बूचड़खाने का घोर विरोध

नरेला के पास जी. टी. रोड पर टीकरी खुर्द और खामपुर की ५० बीघे भूमि जो कि अधिग्रहण करली गई है। इस स्थान पर दिल्ली की गन्द बूचड़ खाने को लाने का यत्न दिल्ली प्रशासन कर रहा है।

चौ० हीरासिंह जी पूर्व कार्यकारी पार्षद की अध्यक्षता में संघर्ष समिति बनाई जा चुकी है जिसके तहत, नरेला के सतरह (१७ गांवों) की पालम के बारह (१२ गांव) खेड़े के देहात की पञ्चायतें हो चुकी हैं और दवाने की बावनी (५२ गांव) और बख्तावरपुर के देहात की पञ्चायतें अभी होने जा रही हैं।

दिनांक २३-१०-९३ को १६० गांवों की ३६ कौमों की एक बहुत बड़ी पञ्चायत उसी स्थान पर हो रही है जहां यह बूचड़खाना बनना है इसमें सभी, कौमी, संस्थाओं व धर्मों के लोगों को बुलाया गया है।

—ब्र० सूर्यसिंह आर्य मन्त्री

लिम्बाला (महा०) मे आर्य वीरो का दल भूकम्प पीडित क्षेत्र मे मलवे को हटाकर पीडितो का सामान एव शवो को निकालते हुए।

श्रीमद् दयानन्द वेद विद्यालय, ११९ गौतम नगर, नई दिल्ली-४९ की ओर से

भूकम्प पीडितों को लगभग दो लाख का सहयोग

वेद विद्यालय ११९ गौतम नगर, नई दिल्ली ४९ की ओर से २० छात्रो एव अध्यापकों का दल अपने साथ पाच हजार धोतिया पांच हजार चद्दरें, एक हजार बनियानें कम्बल, दाल, चावल भी आदि लगभग दो लाख से भी अधिक की विविध आवश्यक वस्तुएं ट्रक मे भर कर महाराष्ट्र के भूकम्प प्रभावित इलाके में सहायता करने हेतु पहुच गया है।

शान्ति प्राप्त्यर्थ भूकम्प ग्रस्त गांवो मे शान्ति यज्ञ भी करना है। यज्ञ को भली-भांति सम्पन्न कराने हेतु यज्ञीय हवन सामग्री ८ बोरी १ क्विंटल घी तथा १ क्विंटल गुग्गल भी साथ मे ले गये हैं।

डा० धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री
स्नातक—वेद विद्यालय

आर्य वीर दल का गठन

ग्राम मान्द्रा जिला खरगोन मे पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में व श्री रामपाल शास्त्री जी तथा ब्र० जीववर्धन आर्य व्यायाम शिक्षक की प्रेरणा से दिनांक २०-८-९३ को आर्य वीर दल का गठन हर्षोल्लास पूर्वक किया।

जिसमे सब सम्मति से अधोलिखित पदाधिकारी गण चुने गये।

१ संचालक व कोषाध्यक्ष महेन्द्र कुमार आर्य २—उप संचालक—नरेन्द्र कुमार आर्य ३ मन्त्री—नितन कुमार आर्य ४—उपमन्त्री—देवेन्द्र कुमार आर्य ५—पुस्तकाध्यक्ष अशोक कुमार आर्य ६—प्रचार कार्य—प्रदीप कुमार आर्य योगेन्द्र आर्य सुनील आर्य ७—अधिष्ठाता—श्री डालूराम आर्य, (मन्त्री आर्य समाज नान्द्रा।

मन्त्री, आर्य वीर दल मान्द्रा

आर्य वीरो का सेवा कार्य

गत दिनो महाराष्ट्र में आये भयकर भूकम्प जिसमे मानवता भी कराह उठी थी के पीडित परिवारो की सहायतार्थ आर्य वीर दल खण्डवा शहर (म प्र) के आर्य वीरो ने रात दिन कठिन परिश्रम करके ११००० रुपये की राशि जुटाई और दल बल के साथ श्री प्रकाशवीर आर्य (मण्डलपति, खण्डवा जनपद के नेतृत्व मे भूकम्प दुर्घटना स्थल पहुचे। अ य है अ य वो दल परिवार जो देश सेवा मानव सेवा धर्म सेवा के लिए आपका विशेष सहयोग मांग रहा है।

आर्य वीर राठी, वरिष्ठ प्रशिक्षक
प्रचार विभाग, सा० आर्य वीर दल

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज शाहजहांपुर

आर्य समाज शाहजहांपुर एव स्त्री समाज का ९८ वां वार्षिकोत्सव आर्य महिला डिग्री कालेज के विशाल प्रांगण मे ७ से ९ अक्टूबर तक समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर श्री बुद्धिप्रकाश आर्य, तथा श्रीमती सावित्रीदेवी ने वेद के गम्भीर चिन्तन को सरल एवं हृदयग्राही बना के श्रोताओ को मन्त्रमुग्ध कर दिया। तथा प्रसिद्ध भजनोपदेशकों ने अपनी मधुर वाणी से श्रोताओं को अत्यन्त प्रभावित किया। समारोह में छोटे छोटे विद्यार्थियो ने रोचक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। समारोह की अध्यक्षता श्री हरनाथ जी एव सचालन श्री राजेशकुमार आर्य ने किया।

आर्य समाज दिवालहेड़ी

आर्य समाज दिवालहेड़ी का वार्षिकोत्सव १ से ३ अक्टूबर तक धूमधाम से मनाया गया। समारोह मे स्वामी अरण्य मुनि, बहन उर्मिला आर्या तथा श्री राजवीरसिंह सहित अनेको विद्वानों तथा भजनोपदेशकों ने पधार कर जनता का मार्ग दर्शन किया। इस अवसर पर एक प्रस्ताव पास करके सार्व० सभा के वास्तविक प्रधान श्री आनन्दबोध सरस्वती के नेतृत्व में विश्वास व्यक्त किया गया तथा कैलाशनाथसिंह तथा उनके साथियो की कड़ी निन्दा की गई।

आर्य समाज बिरला लाइन्स

आर्य समाज बिरला लाइन्स दिल्ली का वार्षिकोत्सव ४ से १० अक्टूबर तक हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रात काल जन जागरण का कार्यक्रम रखा गया जिसका क्षेत्र के निवासियो पर अच्छा प्रभाव पड़ा। वार्षिकोत्सव मे प० रमेशचन्द्र शास्त्री के ब्रह्मत्व मे अथर्ववेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया। रात्रि में प० प्रकाशचन्द्र जी के द्वारा वेद कथा का श्रोताओ ने लाभ उठाया। १० अक्टूबर को मुख्य कार्यक्रम स्वामी सत्यपति जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री नरेन्द्र जी वेदालंकार तथा श्री प्रकाशचन्द्र जी तथा भद्रकाम जी सहित अनेको प्रतिष्ठित व्यक्तियो ने अपने विचार प्रस्तुत किये। ९ अक्टूबर को स्त्री समाज का उत्सव भी सम्पन्न हुआ।

[पृष्ठ १ का शेष]

मे हजरत बल दरगाह से उग्रवादियों को निकालने के लिए सेना द्वारा बल प्रयोग की कारवाई वहा की स्थिति पर निर्भर करेगी। गृहमन्त्री ने कहा कि श्रीनगर की स्थिति पर सरकार बराबर नजर रखे हुए है। उन्होने कश्मीर मे उग्रवादियो की हरकतों के लिए पाकिस्तान की निंदा का। उन्होने अमेरिका के रवैए की भी आलोचना करते हुए कहा कि अमरीका ने भारत को परेशान करने के लिए अब फिर पाकिस्तान को प्रोत्साहित करना शुरू कर दिया है।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन दिल्ली-२ से प्रकाशित।

महर्षि दयानन्द उवाच

- आपस मे आर्यों का एक भोजन होने में कोई दोष नहीं दीखता, परन्तु जब तक एकमत एक हानि लाभ और एक सुख-दुःख परस्पर न माने, तब तक उन्नति होनी बहुत कठिन है, केवल खाना-पीना ही एक होने से सुधार नही हो सकता, किन्तु जब तक बुरी बातें नहीं छोड़ते और अच्छी बातें ग्रहण नही करते तब तक बढ़ती के बदले हानि ही होती है।
- जिनका सहाय धर्म है उन्ही का सहाय परमेश्वर है। जब बुरे बुराई न छोडें, तो भले भलाई क्यो छोडें ?

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३२ अंक ३९] दयानन्दाब्द १६९ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९४ कार्तिक कृ० ८ सं० २०५० ,७ नवम्बर १९९३

मेरठ में महाराणा प्रताप जयन्ती हर्षोल्लास के वातावरण में समारोह पूर्वक सम्पन्न

भूकम्प पीड़ितों की सहायता के लिए अपील

मेरठ ११ अक्तूबर १९९३। भारत के क्रान्तिकारियों की नगरी मेरठ के जीमखाना मैदान मे महान देशभक्त, महाराणा प्रताप जयन्ती समारोह का आयोजन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। महाराणा प्रताप की ४५३ वीं जयन्ती का दिल्ली में हुए समारोह के बाद आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के तत्वाव-धान में यह दूसरा कार्यक्रम था। विशाल जन सभा को सम्बोधित करते हुए स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा- राष्ट्र आज जिन परिस्थितियो से गुजर रहा है उसके निवारण के लिए महाराणा प्रताप जैसे व्यक्तित्व की नितान्त आवश्यकता है। महाराणा प्रताप ने देश और जाति की रक्षा के लिए अनेको कष्ट सहकर भी विशाल मुगल सेना के सामने कभी घुटने नहीं टेके थे। घास की रोटी खाकर भी उन्होने अपने संकल्प को कभी शिथिल नहीं होने दिया था।

सार्वदेशिक सभा ने मतवत यह निश्चय लिया था कि वह समय समय पर राष्ट्र पुरुषों के जीवन चरित्र से देशवासियो मे राष्ट्रभक्ति की भावना जागृत करता रहेगा। उसी निश्चय के अनुसार प्रण वीर महाराणा प्रताप की ५००वीं जयन्ती तक पूरे देश मे समय समय पर जयन्ती समारोहो का आयोजन चलता रहेगा। आगामी दिसम्बर ९३ मे आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल की ओर से कलकत्ता में राष्ट्रवीर महाराणा प्रताप की जयन्ती मनायी जायेगी।

स्वामी जी ने सम्पूर्ण आर्य जगत के नाम अपील करते हुए कहा कि महाराष्ट्र के विनाशकारी भूकम्प से पीड़ित जनता की सेवा के लिए सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में प्रभावित क्षेत्रों में चल रहे आर्य समाज के सेवा सहायता कार्यों को जारी रखने के लिए अपनी सहयोग राशि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को तुरन्त भेजें।

समारोह के मुख्य अतिथि केन्द्रीय मन्त्री श्री जी० वेंकट स्वामी ने आर्य समाज द्वारा राष्ट्र पुरुष महाराणा प्रताप के जयन्ती समारोह के आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा, महाराणा प्रताप, सरदार पटेल, नेताजी सुभाष-चन्द्र बोस, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, शहीद भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद जैसे महान नेताओ और क्रान्तिकारियों के जीवन से देशवासियो को हमेशा प्रेरणा मिलती रहेगी। अतः इन राष्ट्रभक्तों के भी विषय मे इस प्रकार के आयोजन समय समय पर किये जाने चाहिए। प्रभात आश्रम, मेरठ के संचा-लक स्वामी विवेकानन्द जी महाराज और सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने भी सभा मे अपने विचार प्रकट किए। आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के प्रधान श्री इन्द्रराज ने समारोह का संयोजन किया। इस अवसर पर मेरठ और उ० प्र० के अनेक नगरो के अतिरिक्त बंगाल, आ०प्र० दिल्ली हरियाणा आदि से भारी संख्या मे आर्य नर नारी उपस्थित थे।

दो दिवसीय कार्यक्रम में ३० १०-९३ को महारानी पद्मिनी की स्मृति मे माता शकुन्तला गोयल की अध्यक्षता मे महिला सम्मेलन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। जिसमे बड़ी संख्या मे आर्य माताओ बहनो ने भाग लेकर महारानी पद्मिनी को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

१९७९ में काबा में क्या हुआ था ?

पिछले दो सप्ताह से भारतीय सुरक्षा बलों के जवान कश्मीर में हजरत बल को घेरे बैठे हैं। अभी तक न तो हजरत बल मे छुपे बैठे उग्रवादियों ने आत्मसमर्पण किया है और न ही केन्द्र सरकार और कश्मीर प्रशासन ने हजरत बल में घुस कर उग्रवादियों को पकड़ने या मारने के सम्बन्ध में कोई निर्णय ही लिया है। कुल मिला कर हजरतबल के अन्दर और बाहर स्थिति दस दिन पुरानी ही है। जबकि पाकिस्तान की नवनिर्वाचित प्रधानमन्त्री श्रीमती बेनजीर भुट्टो ने हालात का राजनीतिक फायदा उठाते हुए पहले सार्क सम्मेलन और बाद में अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर भारत के विरुद्ध हजरतबल को लेकर जहर उगलने का कार्य शुरू कर रखा है। श्रीमती भुट्टो ने भारत के प्रधानमन्त्री श्री नरसिम्हा राव को अपनी भेजे संदेश में हजरतबल की घेराबन्दी खत्म करने की बात कही है। [illegible] और "। कैसे समाप्त होगा ? इस सम्बन्ध मे अभी कुछ नहीं कहा जा सकता। उच्च राजनीतिक और खुफिया सूत्रों के मुताबिक हजरतबल में उग्रवादियो और देशविरोधी तत्वो की गतिविधियां तो काफी अर्से से चल रही थी लेकिन इस बार खुफिया एजेंसियो की रिपोर्टों के मुताबिक हजरतबल के अन्दर पाकिस्तानी एजेंटो, अफगानिस्तान के कुछ मुजाहिदीनों और कश्मीर के दो प्रमुख उग्रवादी गुटों के प्रमुख नेताओ समेत लगभग ४० उग्रवादी छुपे बैठे हैं। सुना जाता है कि पाकिस्तान [illegible] इस संकट फंस चुकी है क्यों कि अगर हजरतबल में छुपे लोग आत्मसमर्पण करते हैं तो पाकिस्तान की पोल सारी दुनिया में [illegible] हजरतबल मे छुपे बैठ उग्रवादी आत्मसमर्पण नहीं कर रहे और भारत सरकार से उन्हे देश की सीमा से

(शेष पृष्ठ ११ पर)

संपादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

भूकम्प पीड़ितों की दिल खोल कर सहायता करें (२)

दान दाताओं की सूची

आर्य समाज, बल्केश्वर-कमलानगर, आगरा द्वारा

श्री लक्ष्मण दास जी	२१)
,, रामजीलाल जी शमशाबाद	१०)
,, रामलाल जी बजाज	१००
,, रामप्रकाश जी आर्य	५१)
,, तिलकराज जी लूथरा	१०)
,, भगवान स्वरूप जी	१०)
,, कुबेन्द्र नाथ जी गुप्त	५१)
,, महावीर सिंह जी	५)
श्री आर के गुप्ता पुत्र श्री रतनलाल जी गुप्ता	१००)
श्रीमती सत्यवती जी, बलकेश्वर आगरा	२१००)
श्री ओमप्रकाश जी पालीवाल	१०१)
,, एस पी कुमार जी	१०१)
,, एस आर. मल्होत्रा जी	७५)
श्री सत्यदेव जी शर्मा	२१)
, वेदप्रकाश जी पचौरी	१०)
, सत्येन्द्रनाथ जी	२५)
,, आर एन. शर्मा जी	११)
,, रामजीदास गुप्त	१०१)
श्री आर. के कपूर पुत्र, श्री पृथ्वीराज जी कपूर	१०१)
,, ओ पी अग्रवाल	२०)
,, टंडन जी ई ४५ कमलानगर	२०)
, नरेश जी महाजन	११)
,, सन्तोष जी छाबड़ा	११)
,, महाशय श्याम सुन्दर जी	५)
,, लाजपत राय जी	२१)
,, रघुनन्दन जी शर्मा	५१)
,, जितेन्द्र सिंह जी पवार	१०१)
,, जोगेन्द्र प्रताप जी	५१)
श्री सुरेश जी छाबड़ा	१०१)
,, के के सुराना	३०)
, अमरनाथ जी आनन्द	१००)
डा० अर्जुनदेव जी चमन	१०१)
श्री रमेश चन्द्र जी लोहिया	१०१)
, सूबेदार हुकमचन्द जी	१०१)
श्रीमती माताजी ज्ञानेश पालीवाल	१०१)
श्रीमती मुलिया देवी जी एच-११ कमलानगर	१०१)
श्री डा० सुरेश कुमार जी	२१)
,, बंगाली बाबू जी गुप्ता	१०१)
,, के के तलवार	१०)
,, महाशय लक्ष्मणदास जी ई-७१७	५१)
श्रीमती चन्द्रकुमारी जी माताजी श्री तीरथराम जी	५१)
,, पद्मा जी मसीन	५१)
श्रीमती लक्ष्मीदेवी जी	१५१)
,, शान्तिदेवी जी	२५)
,, भगवती देवी जी नमकापदी	२१)
,, मिथलेश गुप्ता पत्नी श्री आर के. गुप्ता	५१)
आर्य महिला समाज बलकेश्वर कमलानगर आगरा	२०१)
श्री नवलसिंह जी	५१)
श्री कमल सिंह खत्री	१०)
श्री रामप्रकाश जी गुप्त पुत्र श्री पूरनचन्द जी आर्य	१५१)
श्री जवाहरलाल जी तनेजा	१००)
आर्य महिला समाज बल्केश्वर कमलानगर आगरा	२११)
श्रीमती सुलक्षणा बक्शी	५१)
श्री नमनप्रकाश पौत्र श्रीमती मुलियादेवी एच-११ कमलानगर	५१)
श्रीमती शान्ती चतुर्वेदी	१०१)
श्री अबेदी	५१)

आर्यसमाज आंवला (बरेली) द्वारा

श्री रामप्रकाश मथुरिया (प्रधान) आर्यसमाज, आवला (बरेली)	५०१)
गुप्त दान	५०१)
श्री शिवओम शर्मा प्रधान वस्त्र भवन आवला, बरेली	२५१)
,, रामकुमार पाडया मु० ठाकुरद्वारा, आवला	२०१)
,, मुकेश कुमार खन्डेलवाल पक्का कटरा, आवला	२०१)
,, रामजी शरण अकिंचन मन्त्री आ स. आंवला	१०१)
,, जगदीश प्रसाद गुप्ता, स्वतन्त्रता सैनानी आवला	१०१)
,, दिनेशचन्द्र गुप्ता खाद विक्रेता, आवला	१०१)
,, रामपाल सिंह अध्यक्ष जिलाधिकार सै० समिति	१०१)
श्रीमती प्रेमवती माताश्री अतुल कुमार, आवला	१०१)
श्री सुभाष चन्द रस्तोगी गंज, आवला	१०१)
,, परसादी लाल आर्य ग्राम मनौना आवला	५१)
, रवीन्द्रपाल सिंह उर्फ पप्पू ग्राम कम्बरी, आवला	५१)
,, भगवान दास आर्य अध्यक्ष हिन्दू जागरण मंच, आवला	५१)
, भूकन सरन द्वारा कु० सगीना सक्सैना मुरादाबाद	३२)
,, जितेन्द्र कुमार मुर्जी टोला आवला	२५)
,, महावीर प्रसाद सिंह हरियाणा प्रदेश	३०)
,, रामजीलाल पहलवान मुर्जी टोला आवला	२१)
,, प्रेम शंकर , ,,	२२)
,, विजय कुमार , ,	२२)
,, विजय कुमार गुप्ता, गंज, आवला	२१)
श्रीमती रामश्री देवी पत्नी श्री ओमकार आर्य	११)
श्री मुकेश चन्द्रा मुर्जी टोला आवला	११)
श्री जगदीश शरण ,	११)
श्री सुनील खण्डुजा गंज आवला	११)
,, चन्द्रभानु मुर्जी टोला, आवला	११)
,, बृजकिशोर शर्मा , ,,	११)
,, नवल किशोर गुप्ता कच्चा कटरा	११)
,, महेश कुमार ,	११)
,, विनोद कुमार मुर्जी टोला आवला	११)
,, धर्मपाल किशन , ,	११)
,, मनोहरलाल दुआ ,, ,	११)
,, विजय कुमार गुप्ता गंज	२१)
,, कीरानन्द स० शि० मन्दिर आवला	२१)
,, ऋषि अग्रवाल पक्का कटरा ,,	१०)
आर्य समाज आवला	२५६)
विभिन्न दानियों से संग्रहित (जिन्होंने ५ रु० या उससे कम राशि दी है)	११७)

आर्य समाज किरतपुर का सहयोग

१.	श्री रमेशचन्द्र आर्य	२५१)
२.	श्री रविन्द्र कुमार पाराशर	२५१)
३	श्री डा० रामलाल जी शाह	२५१)
४.	श्री संजय गोयल	२५१)
५.	श्री सुमन कुमार अभिनन्दन कुमार	२५१)
६.	श्री दीपचन्द विजय कुमार गोयल	२५१)
७.	श्री प्रमोद कुमार गोयल	२५१)
८	श्री ब्रजनन्दन शरन अग्रवाल	२५१)
९.	श्री अशोक कुमार आर्य	५०१)
१०.	श्री कविन्द्र कुमार गोयल	५१)
११	श्री ओमप्रकाश वर्मा	५१)
१२.	श्री प० सत्यप्रकाश शर्मा	५१)
१३.	श्री सत्यप्रकाश अजय कुमार वर्मा	५१)
१४.	श्री विश्वम्भरसिंह (नजीबाबाद)	५१)

पद्मश्री पं० क्षेमचन्द सुमन का निधन

आर्य समाज को अपूर्णीय क्षति

हिन्दी साहित्य के विख्यात लेखक तथा पत्रकार श्री क्षेमचन्द सुमन का जन्म १६ सितम्बर १९१६ को मेरठ जिले के बाबूगढ़ ग्राम मे हुआ। इनकी शिक्षा गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर मे हुई थी। इनके जीवन में आर्य समाज की मान्यताओं और सिद्धान्तो का गहरा प्रभाव रहा। शिक्षा समाप्त करके वह पत्रकारिता के क्षेत्र मे प्रविष्ट हुए और आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मुख पत्र "आर्य मित्र" के सहायक सम्पादक बने। उसके पश्चात् उन्होंने अनेक पत्र पत्रिकाओ का भी सम्पादन किया था।

स्व० सुमन जी ने आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती की प्रशंसा मे कविताओं का संग्रह "वन्दना के स्वर" १९७५ मे सम्पादित किया था। इसके अतिरिक्त 'हिन्दी" साहित्य को आर्य समाज की देन" १९७१ मे प्रकाशित की थी। भारत सरकार ने हिन्दी सेवाओं के उपलक्ष में आपको पद्मश्री की उपाधि से सम्मानित किया था। विविध रूपो और शैलियों में आपने कविता समीक्षा, जीवनी, निबन्ध और संस्करणो की रचना की है। आर्य समाज के साथ उनके जीवन भर गहरे सम्बन्ध रहे। उन्होने आर्यसमाज से सम्बद्ध अनेक लेखकों का सचित्र विवरण भी निबद्ध किया था। महान देशभक्त कुंवर चादकरण शारदा स्मृति ग्रन्थ का सम्पादन भी सुमन जी द्वारा किया गया था।

पं० सुमन जी स्वतन्त्रता सेनानी थे। स्वतन्त्रता आन्दोलन मे भाग लेने के कारण आपको कई बार कारावास की यातनानायें भी सहन करनी पड़ी थी। देश के स्वतन्त्र हो जाने के पश्चात् आप ने दिल्ली को अपनी कार्य स्थली बनाया और विभिन्न साहित्यिक एवं सामाजिक प्रवृतियो मे संलग्न होते रहे। केन्द्रीय साहित्यक अकादमी मे में दीर्घ काल से सेवा करने के अनन्तर आपने अवकाश ग्रहण किया था।

स्व० सुमन जी हमारे परम सहयोगियो में से एक थे। विनोदी स्वभाव के श्री सुमन जी एकान्तप्रिय भी थे। वह पिछले कई वर्षों से बीमार चल रहे थे, परन्तु महर्षि दयानन्द की विचारधारा और आर्य समाज के मन्तव्यो का प्रचार वह घर से भी करते रहते थे। आर्य समाज के संगठनात्मक मामले में भी उनका परामर्श प्रभाव रखता था। कई बार तो वह अपने मित्रो को टेली-फोन से सम्पर्क करके घर बुला कर उन्हें सद् परामर्श दिया करते थे। इस महान लखक और विद्वान के चले जाने से आर्य समाज को अपूर्णीय क्षति पहुंची है। सारा आर्य जगत परमपिता परमात्मा से उनकी आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना करता हैं।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान—सार्वदेशिक सभा

आर्यसमाज मन्दिरों में होने वाले विवाहों के लिए सार्वदेशिक सभा के नियम

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग बैठक दिनांक २८ फरवरी १९९३ में आर्यसमाजों में कराये जा रहे विवाहों का विषय प्रस्तुत हुआ था। इस विषय पर कई, सदस्यों ने अपनी-अपनी राय प्रकट की और यह निर्णय हुआ कि समस्त आर्यसमाजो में विवाह संस्कारो के लिए एक जैसे नियम लागू किए जाने चाहिए। कई आर्यसमाजों में वैदिक सिद्धान्तो के विरुद्ध बेमेल विवाह कराए जाने के कई प्रकरणो पर भी इस बैठक में चर्चा हुई। जैसे ५० वर्ष के व्यक्ति का विवाह २२ वर्ष की कन्या से कराया जाना।

अन्तरग सदस्यो के विचार से इन विषयो का निर्धारण करने के लिए एक ५ सदस्यीय उप समिति गठित की गई जिसमे सर्वश्री महावीरसिंह, सोमनाथ मरवाह, विमल वधावन, जयनारायण अरुण तथा सूर्यदेव जी सदस्य थे। इन सदस्यों ने विचारोपरान्त आर्यसमाजों द्वारा वैदिक विवाह हेतु आवश्यक नियमों का एक प्रारूप तैयार किया था जिसे सार्वदेशिक सभा की १०-१०-९३ की अन्तरग ने सर्वसम्मति स्वीकार किया है, अतः भविष्य मे आर्यसमाज मन्दिरो में होने वाले विवाहो पर निम्न नियम लागू होगे।

नियम—

१—वर कन्या दोनो के पृथक् पृथक् प्रार्थना पत्र जिन पर एक दूसरे की स्वीकृति के हस्ताक्षर होगे।

२—दोनों प्रार्थना-पत्रों पर दो सम्भ्रान्त व्यक्तियो, आर्यसमाज ने सभासदो द्वारा संस्तुति।

३—आयु प्रमाण-पत्र (हाई स्कूल की सनद) आयु सीमा कन्या १८ वर्ष, वर २१ वर्ष। अशिक्षित होने की स्थिति मे सी०एम०ओ० (मुख्य चिकित्सा अधिकारी का आयु प्रमाण-पत्र)।

४—शपथ पत्र (बयान्-ए हल्फी) जिसमे नाम, वल्दियत, पता, आयु, शिक्षा, वर्तमान अवस्था, विवरण, (विवाहित, अविवाहित, विधुर, विधवा-तलाकशुदा आदि) मानसिक स्थिति स्वस्थ, परस्पर रिश्ता (यदि कोई है) निषिद्ध नातेदारी, सपिण्ड सगोत्र न होने की आस्था, विरुद्ध कोई पुलिस रिपोर्ट या कोर्ट केस न होने की आत्म स्वीकृति, लालच, दबाव, धमकी आदि न होकर स्वेच्छा से विवाह की स्वीकृति तथा बेमेल विवाह न होने का प्रमाण हो।

५—विधर्मी की स्थिति में शुद्धि प्रमाण-पत्र तथा नए नामों की घोषणा।

६—वर एवं कन्या के दो-दो फोटो ग्राफ (एक-एक प्रार्थना-पत्र पर तथा एक-एक समाज के रिकार्ड के लिए)।

७—तीन गवाहों के हस्ताक्षर (विवाह के साक्षी के रूप में मित्र या सम्बन्धी)।

८—आर्य समाज के नोटिस बोर्ड पर सूचना।

९—माता पिता को यथाशीघ्र सूचना तथा सहमति के लिए पत्र आर्य समाज द्वारा लिखा जाए।

१०—माता-पिता की असहमति होने पर उसके कारणों पर वैदिक सिद्धान्तानुसार निर्णय आर्य समाज के प्रधान मन्त्री अथवा विशेष नियुक्त विद्वान द्वारा लिया जाय।

यदि असहमति जन्म गत जातिवाद के कारण या अमीरी गरीबी के कारण हो, परन्तु वर और कन्या की योग्यता लगभग समान हो तो उसकी परवाह किए बिना विवाह कराया जा सकता है।

यदि असहमति बेमेल विवाह जैसे आयु का अन्तर बहुत अधिक होना या किसी प्रकार का चरित्र दोष आदि के कारण हो तो ऐसे विवाहो को नहीं कराया जाए।

११—समाज के पत्राचार-एजेण्डा, कार्यवारी पंजिका तथा प्रमाण-पत्र जिस पर प्रधान मन्त्री तथा पुरोहित के हस्ताक्षर तथा वर-कन्या के हस्ताक्षर हो, विधिवत रजिस्टर के रूप मे सुरक्षित रखे जाये।

सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री

वार्षिक उत्सव

आर्य समाज ग्राम इटावा, जनपद—मुजफ्फरनगर (उ० प्र०) अपना दसवां वार्षिकोत्सव दिनांक ९, १० नवम्बर ९३ को धूम धाम के साथ मना रहा है। जिसमे आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान, उपदेशक पधार रहे हैं। लाभ उठायें।

महेन्द्र सिंह राठी
—मन्त्री आर्य समाज ग्राम इटावा मुजफ्फरनगर (उ० प्र०)

'दिवंगत हिन्दी सेवी' का रचयिता ही दिवंगत हिन्दी सेवी हो गया

—डा० नरेन्द्र कुमार, उप सम्पादक नवन हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, नई दिल्ली-१

यमुनापार दिल्ली के बाहर से सटा सीमापुरी उसके निकट बस स्टड। पचास एक कदम की दूरी पर सडक से सटा अजय निवास जी ४० दिलशाद कालोनी। वहा कुर्सी पर बैठा एक हिन्दी साहित्य की सेवा करने वाला व्यक्तित्व। नाम आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन।

गर्मी का मौसम था। कार्यालय जाते समय सोचा कि तनिक इन महाशय से ही मिलता चलू। नाम तो बहुत सुना था। कामो की भी बडी बडी चर्चाए कानो मे पडती रहती थीं। उनके निवास पर पहुचा। नमस्ते हुई। फिर कुछ इधर की कुछ उधर की चर्चा। और फिर वही दिवगत हिन्दी सेवी की कल्पना को साकार करने का एक अडिग निश्चय लिए हुए उनका व्यक्तित्व उभरा। मन में यही इच्छा कि किसी तरह से यह कार्य पूरा हो पर समय की गति कौन जानता है।

और फिर एक पटाक्षप। गुरुतेग बहादुर अस्पताल। शनिवार को मौत की काली छाया ने हिन्दी सेवी को जो कि दिवंगत हिन्दी सेवी का सपना संजोए था उसी को,दिवगत हिन्दी सेवी बना दिया २३ अक्तूबर १९९३ को।

सुमन जी का जन्म १६ सितम्बर १९१६ रविवार को बाबूगढ जि० मेरठ (वर्तमान गाजियाबाद) मे हुआ था। पिता थे श्री हरिश्चन्द्र। मातुश्री थी श्रीमती भगवानी देवी। चार भाई थे। सुमन जी का भाईयो मे तीसरा स्थान था।

प्राइमरी तक की शिक्षा गाव के प्राइमरी स्कूल मे हुई। १२ वर्ष के हुए तो गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर मे प्रविष्ट हो गए। १९३७ मे विद्या भास्कर (स्नातक परीक्षा) की उपाधि प्राप्त की।

फिर शुरू हुआ सांसारिक जीवन। सरकारी नौकरी रास नही आई। पत्रकारिता एव साहित्य सेवा को जीवन का कर्म लक्ष्य बनाकर सुमन जी ने अपना जीवन प्रारम्भ किया।

उन दिनो आगरा से आर्य सन्देश निकलता था। सुमन जी इस पत्रिका का काम देखने लगे। किन्तु आर्थिक हानि होने के कारण इसका प्रकाशन बन्द हो गया।

सन १९३९ मे उन्होने आर्य मित्र सभाला। १२ रुपए मासिक वेतन था। प्रकाशक ने वेतन बढाने का आश्वासन दिया। लेकिन सुमन जी ने जब इसकी चर्चा की तो उन्हें कार्य भार से मुक्त कर दिया गया पत्रिका को सजाने सवारने मे सुमन जी ने दिन रात कठोर परिश्रम किया था। कुछ ही दिनो मे इसकी पठनीयता एव विश्वसनीयता की धाक जम गई थी। लेकिन प्रकाशक ने कुछ ही समय मे उन्हे हटा दिया। सुमन जी को ऐसी कतई उम्मीद न थी

आर्य मित्र से मुक्त हुए ही थे कि अमेठी के रणजयसिंह ने उन्हे अपने पास बुला लिया अब वहा सुमन जी मनस्वी पत्रिका का सम्पादन करने लगे थे। वेतन ठीक ठाक मिल जाता था। पर वहा भी उनका मन नही लगा कारण उनसे पौरोहित्य कर्म के लिए कहा गया। सुमन जी इसके लिए तैयार न थे बार बार टोके जाने पर सुमन जी ने मनस्वी को छोड दिया। १९४० की यह घटना है।

१९४२ ४३ मे लाहौर स्थित फतहचन्द कालिज फार वोमन मे हिन्दी के सहायक अध्यापक का पद सभाला। इसके साथ ही हिन्दी मिलाप के सह सम्पादक पद को भी स्वीकार कर पत्रकारिता को आगे बढाया लेकिन वहा पर स्वतन्त्रता सग्राम की गतिविधियों में भाग लेने के कारण अग्रेजी हुकूमत का कोप भाजन बनना पडा। फिर पजाब छोडना पडा। घर आए तो वहा पर भी पुलिस पुलिस ने नजरबन्द कर दिया। सुमन जी परेशान। रोजी रोटी का प्रश्न मुह बाए खडा था। तब उन्होने उस समय के कई प्रमुख समाज सेवियो को अपनी आजीविका के लिए लिखा। पर उन्हें निराशा ही हाथ लगी।

काफी लिखा पढत के बाद पुलिस ने उन्हे नजर बन्द से मुक्त किया। अब सुमन जी कई पत्र पत्रिकाओ मे लेख लिखने लगे। पर आजीविका की समस्या का फिर भी समाधान न हुआ।

गृहस्थ धर्म की जिम्मेदारियो को पूरा करना उनके लिए उस समय आसान काम न था। घर मे बेटी अचना पुत्र अजय विजय और सजय इन सबकी चिंता थी उन्हे सताती रहती थी।

अत उन्होंने कई प्रकाशको के यहा काम किया। प्रूफ रीडिंग की। सहायक ग्रन्थ लिखे। पाण्डुलिपिया ठीक की। यहा भी उन्हें स्थायित्व नही मिल सका। लगभग पचीस मौलिक कृतिया लिखी और इससे अधिक का सम्पादन किया

सुमन जी ने राजकमल प्रकाशन दिल्ली की त्रैमासिकी आलोचना का काया पलट किया। यहा भी उन्हें बधन लगा और अन्त मे उन्होने १९५ मे साहित्य अकादमी के प्रकाशन विभाग मे काम करना शुरू किया। सभी भारतीय भाषाओ को देखा भाल २३ वर्ष की सेवा करने के पश्चात १९७९ मे यहा से पदमुक्त हुए।

उसके बाद उन्होने घर पर रहकर ही साहित्य सृजना की।

आर्य जगत सुमन जी से परिचित ही नहीं अपितु सुपरिचित है। गुरुकुल महाविद्यालय ने अनेक हिन्दी साहित्यकार पत्रकार नेता सस्कृत विद्वान देश को दिए हैं। सुमन जी उनमे से एक हैं जिन्हे विस्मृत नहीं किया जा सकता।

गुरुकुल महा विद्यालय के प्रधान रहते हुए सुमन जी ने अपनी सेवाए जो दी हैं उनका मूल्याकन कर पाना कम से कम मेरे लिए तो दुष्कर ही है।

छात्र जीवन से ही सुमन जी पत्रकारिता में रुचि रखते थे। सस्था के

(शेष पष्ठ ९ पर)

वेद परिचय

—डा० जयसिंह सरोज

महर्षि दयानन्द सरस्वती के वचनामृत 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढना पढाना सुनना, सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।' (आर्य समाज का तीसरा नियम) के अनुसार हर व्यक्ति को वेदो से परिचित होना चाहिए परन्तु अधिकांश जन वेदो के सम्बन्ध में आज भी अनभिज्ञ है। वेदो के सम्बन्ध मे संक्षिप्त जानकारी यहा दी जा रही है।

वेदो की विशेषता—वेदो मे सरलता, एक वाक्यता, सुगम रचना, भाषा लावण्य, निष्पक्षता समस्त ज्ञान विद्यमान है।

वेदो को श्रुति भी कहते है। वेद चार हैं—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एव अथर्ववेद। सृष्टि के प्रारम्भ मे यह ज्ञान क्रमश अग्नि, वायु आदित्य एव अगिरा ऋषियो को मिला। इन चार ऋषियो से ब्रह्मा ने प्राप्त किया इसी कारण ब्रह्मा का नाम चतुर्मुख पडा। वेद मन्त्रो मे जो ऋषि लिखा है ये ऋषि सर्व प्रथम मन्त्र के प्रचारक हैं। वेदो को उत्पन्न हुए १९६०८५३०९४ वर्ष हो गये हैं।

महर्षि गौतम वात्स्यायन मुनि कपिलाचार्य, पतन्जलि, कणादि, शकराचार्य, दयानन्द सरस्वती के अनुसार 'वेद नित्य एव स्वत प्रमाणित है।''

ऋग्वेद—ज्ञान काण्ड, १०५१८ मन्त्र, ८ अष्टक, १० मण्डल, १०१७ सूक्त, २००३ वर्ग।

यजुर्वेद—ज्ञान एवं कर्म काण्ड, १९७५ मन्त्र, ४० अध्याय।

सामवेद—उपासना एव गान विद्या, २०६४ मन्त्र, २१ अध्याय।

अथर्ववेद—सम्पूर्ण विज्ञान, ५८४८ मन्त्र, २० काण्ड, ३४ प्रपाठक। अनुवाक ७३३ वर्ग।

शाखा—११२७ ऋषियो के वेद व्याख्यान रूपी ग्रन्थ।

वेदो मे छन्द—सात हैं। गायत्री (२४) उष्णिक (२८), अनुष्टप (३२), बृहति (३६), पंक्ति (४०), त्रिष्टुप (४४), जगति (४८), । कोष्ठको में अक्षर सख्या हैं।

प्रत्येक छन्द मे भेद—आठ-आठ हैं—आर्षी देवी, आसुरी, प्रजापत्या, याजुरी, साम्नी, आर्ची, ब्राह्मी।

वेदो के उपभेद—आयुर्वेद—वैदक शास्त्र ऋग्वेद सम्बन्धी। (२) धनुर्वेद युद्ध विद्या—यजुर्वेद सम्बन्धी। (३) गन्धर्व वेद राग विद्या सामवेद सम्बन्धी (४) अथर्ववेद—यन्त्रीय एव अर्थ विद्या—अथर्ववेद सम्बन्धी।

ब्राह्म ग्रन्थ—इनमे वेद व्याख्या है।

ऋग्वेद सम्बन्धी—एतरेय—ब्राह्मण कोषीतकी, ब्रह्मम्।

यजुर्वेद सम्बन्धी—ताण्डय महाब्राह्मणम्, देवदत्त, ब्राह्मम् आर्षेय साहितो पानिषद वश सामविधान ब्राह्मणम्।

अथर्ववेद सम्बन्धी—गोपथ, आरण्यक (वन सम्बन्धी)।

आरण्यक—ऋग्वेद सम्बन्धी (ऐतरेआरण्यक, शाख्ययना रायक)।

यजुर्वेद सम्बन्धी—तैत्तिरीयरण्यक बृहदारण्यका, उपनिषद)

वेद एवं विद्वान

महर्षि अत्रि—"वेद से श्रेष्ठ कोई शास्त्र नही है।"

महर्षि याज्ञवल्क्य—"सभी शास्त्र वेदो से निकल हैं तथा वेद का ज्ञान नित्य है। शुभ कार्यों के ज्ञान के लिए वेद ही परम कल्याण का साधन है।"

योगीराज श्रीकृष्ण—'धर्म कर्म की उत्पत्ति वेदो से ही होती है।'

महर्षि मनु—"वेद समस्त ज्ञान का भण्डार है। भूत, भविष्यत्, वर्तमान सबका बीज वेदो मे निहित है। वेद धर्म की मूल पुस्तक है।'

महर्षि व्यास—सृष्टि के आरम्भ मे स्वयम्भू परमेश्वर ने वेद रूप नित्य वाणी का प्रकाश किया है।

महर्षि बृहस्पति—'वेदो का अध्ययन करके मनुष्य दुखो से छूट जाता है। वह पवित्र धर्म का आचरण करता है और स्वर्ग लोक में महिमा को प्राप्त होता है।"

महर्षि जैमनि—'जिसके लिए वेद की आज्ञा हो वह धर्म जो वेद विरुद्ध हो वह अधर्म है।"

तैत्तिरीय ब्राह्मण वेद ज्ञान की राशि या पर्वत के समान है। इसके का अन्त नही।"

गरुड पुराण—"मैं दुहाई देकर एव भुजा उठा कर सत्य सत्य कहता हू कि वेद से बढ कर कोई शास्त्र नही और परमात्मा से बढ कर कोई देव नहीं।

कूर्मपुराण—'एक ओर इतिहास सहित सम्पूर्ण पुराण और एक ओर परम वेद। इनमे वेद ही परम है महान है श्रेष्ठ हैं।'

श्रीमद्भागवत पुराण—जो वेद मे कहा है वही धर्म है जो वेद के विरुद्ध है वही अधर्म है। वेद साक्षात नारायण स्वरूप हैं क्योकि वे आप ही प्रकट हुए हैं।'

देवी भागवत—'धर्म के सम्बन्ध मे वेद प्रमाण है जो वेद को छोड कर दूसरे ग्रन्थो को प्रामाणिक मानता है वह यम लोक मे जल कुन्ड म गिरता है।'

गुरु नानकदेव—ईश्वर की दी हुई भाषा (नाद) सत्य ज्ञान (वेद) गुरु की वाणी है।'

प० सत्यव्रत सामश्रमी—वेदो मे सारे विज्ञान सूक्ष्म रूप मे विद्यमान हैं।"

डा० सम्पूर्णानन्द—यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के केवल दो मन्त्रो से गीता जैसा महान ग्रन्थ बना।'

सर सैयद अहमद खा—यह बहलाम नहीं था तो क्या था जिसने स्वामी दयानन्द सरस्वती के दिल को मूर्ति पूजन से फेरा। वेदो के उन मुकाकाल को देखा जहा ज्योति स्वरूप निराकार को खुदा नियत और सिफात को बयान किया है।'

शम्सीनवेद उम्मानी—आज की तमाम समस्याओ का हल वेदो मे वर्णित है।'

प्रो० हीरेन—"जिस प्रकार वेद देदीप्यमान है। इस प्रकार अन्य कोई नहीं चमकता। वे मनुष्य मात्र की उन्नति और प्रगति के लिए दिव्य प्रकाश स्तम्भ का काम देते है।' (शेष पृष्ठ १० पर)

'संस्कार विधि' के विरुद्ध अनर्गल प्रचार [२]

डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री, एम. ए. पी. एच. डी.

(२) वेदारम्भ संस्कार मे ही ब्रह्मचारी जिस मन्त्र से परमेश्वर का उपस्थान करता है उस मन्त्र मे तीन बार प्रजा की कामना की गई है—'ओम् मयि मेधां मयि प्रजां मयीन्द्र इन्द्रियं दधातु । मयि मेधां मयि प्रजा मय्यग्निस्तेजो दधातु । मयि मेधां मयि प्रजा मयि सूर्यो भ्राजो दधातु ।......' (संस्कार विधि पृष्ठ ८७) ।

इस प्रकार प्रजा की प्रार्थना वाला ऋ. ६ मन्त्र हैं जिसका प्रार्थना ब्रह्मचारी वेदारम्भ संस्कार मे करता है ।

(३) ब्रह्मचारी द्वारा प्रजा की प्रार्थना का यह तात्पर्य नहीं है कि अभी ही उसको प्रजा की प्राप्ति हो जाए । यह सम्भव भी नही है क्योंकि अभी तो वह गुरुकुल या आचार्यकुल मे उपनयन संस्कार द्वारा प्रविष्ट हुआ है । उपनयन के बाद उसका वेदारम्भ संस्कार भी हो रहा है । अल्पवयस होने के कारण वह सन्तानोत्पादन योग्य भी नहीं है । किन्तु भविष्य मे गृहस्थाश्रम मे जाकर वह सन्तानोत्पादन करेगा । प्रजा की प्राप्ति उसको होगी । इस निमित्त बल, वीर्य का सचय तो उसे अभी से ही करना है । ब्रह्मचर्याश्रम में बल, वीर्य का वह न गवाये क्योंकि उसे गृहस्थाश्रम मे पूर्ण नीरोग और बलवान् पुत्र-पुत्री को प्राप्त करना है । यही प्रजा प्रार्थना का यह तात्पर्य है ।

(४) वेदारम्भ सस्कार में प्रजा की प्रार्थना में 'अहमायुषा मेधया वर्चसा प्रजया' मन्त्रपाठ मे तो 'अहम्' अर्थात् 'मैं' एकवचन का प्रयोग है तथा 'मयि मेधा' मयि प्रजा०' मन्त्र मे भी 'मयि' अर्थात् 'मुझमे' एक वचन का ही प्रयोग है । किन्तु पञ्चघृताहुति या प्रथम समिदाधान के मन्त्र 'ओम् अयं त इध्म०' मन्त्र मे 'अस्मान् प्रजया पशुभि: द्वारा 'अस्मान्' अर्थात् 'हम सबको प्रजा पशु आदि से वृद्धि हो' की प्रार्थना की गई है । अत: यह मन्त्र ब्रह्मचारी, गृहस्थ तथा वानप्रस्थ सभी बोल सकते हैं और सभी को इस 'ओम् अयं त इध्म०' मन्त्र द्वारा समिदाधान तथा पञ्चघृताहुति देनी चाहिए ।

(५) प्रजाकाम ब्रह्मचारी नहीं होता इसलिए यह मन्त्र वह न बोले—दुर्जनतोषन्याय से यदि मान भी लिया जाए तो संन्यासी वित्तैषणा त्याग चुका होता है फिर वह 'वयं स्याम पतयो रयीणाम्' मन्त्रपाठ क्यो करे ? क्योंकि इस मन्त्र में 'धनैश्वर्यों के स्वामी' होने की प्रार्थना की गई है । इसलिए यह कहा गया है कि—'उपाय चिन्तयन् प्राज्ञ., अपायमपि चिन्तयेत्' ।

(६) पञ्चमहायज्ञ विधि: मे 'अय त इध्म आत्मा: मन्त्र से आहुति का विधान नहीं है, इसलिए इस मन्त्र से आहुति नही देनी चाहिए, इस प्रश्न का उत्तर यह है कि पञ्चमहायज्ञ विधि' मे ईश्वर स्तुति-प्रार्थना-उपासना के ८ आठ मन्त्र नहीं है, फिर प्रार्थना के ८ आठ मन्त्र क्यो बोलते हैं ? पञ्चमहायज्ञ विधि: मे 'इदमग्नये प्राणाय—इद न मम' आदि पदों का भी निर्देश नही है फिर इन पदो को क्यों बोला जाता है ? 'सत्यार्थ प्रकाश:' में तो देवयज्ञ विधि. मे आचमन तथा 'सूर्यो ज्योतिर्ज्योति. सूर्य. स्वाहा', तथा 'अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्नि: स्वाहा' आदि मन्त्र भी नहीं है । फिर इन मन्त्रो से प्रात: और साय आहुतिया क्यो दी जाती हैं ?

(७) इस सम्बन्ध मे हमारा दृष्टिकोण यह है कि दैनिक यज्ञ या सस्कारो के सम्बन्ध मे 'सस्कार विधि:' मुख्य ग्रन्थ है, इसलिए यज्ञ का पूर्ण विधान 'सामान्य प्रकरण' के अन्तर्गत 'संस्कार विधि:' मे किया गया है । 'सत्यार्थप्रकाश:' तथा 'पञ्चमहायज्ञ विधि' मे सामान्य निर्देश मात्र है । दैनिक महायज्ञ के अन्तर्गत 'सन्ध्या' का पूर्ण विधान 'पञ्चमहायज्ञ विधि.' मे मिलता है । 'सस्कार विधि:' मे सन्ध्या का वर्णन प्रसङ्गत: 'गृहाश्रम प्रकरण' के अन्तर्गत मिलता है, मुख्यत: 'सन्ध्या' की विधि पञ्चमहायज्ञ विधि: मे मिलती है, अत: 'सन्ध्या' का प्रचलन महर्षि दयानन्द के समय से ही पञ्चमहायज्ञ विधि:' के अनुसार होता आया है । संस्कार विधि: का मुख्य विषय, यज्ञ-अग्निहोत्र तथा सस्कारो की पूर्ण विधि का वर्णन करना है ।

(८) जहां तक पं० इन्द्रदेव जी के इस कथन का प्रश्न है कि किसी गृह्यसूत्र के वचन के अनुसार जल प्रोक्षण से पूर्व आहुतियां नहीं देनी चाहिए, तो अग्निहोत्र विधि: को उसी गृह्यसूत्र के विधान के अनुसार क्यो नहीं वे कर लेते ? सस्कार विधि का पल्ला क्यों पकड़ना चाहते हैं ? जब संस्कार विधि: या उसके लेखक ऋषि दयानन्द सरस्वती के प्रति आस्था ही नहीं है तो अग्निहोत्र ही क्यों सभी संस्कार किसी गृह्यसूत्र के अनुसार वे करें और अपने अनुयायि वर्ग में उसी एक गृह्यसूत्र का प्रचलन करें-करावें, व्यर्थ में 'संस्कार विधि:' के साथ छेड़-छाड़ क्यों करना चाहते हैं ? गृह्यसूत्रो का अध्ययन संस्कार विधि: को स्पष्ट या पुष्ट करने के लिए होना चाहिए संस्कार विधि: के खण्डन के लिए नहीं । आर्य समाज को अपने आचार्य स्वामी दयानन्द सरस्वती में पूर्ण आस्था है । स्वामी दयानन्द ने संस्कार विधि: को वेद और वेदानुकूल आर्ष ग्रन्थो के अनुसार बनाया है, किसी विधि को किसी एक गृह्यसूत्र के अनुसार तो दूसरी विधि: को किसी दूसरे गृह्यसूत्र के अनुसार भी रखा है । किसी गृह्यसूत्र विशेष का ऐकान्तिक प्रमाण स्वामी जी ने नहीं माना । जैसे—

(१) प्राचीन याज्ञिकप्रक्रिया के अनुसार आहुति के पश्चात् यजमान त्याग के लिए 'इदमग्नये' (अभिप्रेत देवतापद का प्रयोग) अथवा 'इदं न मम' वाक्य का प्रयोग करते हैं । अर्थात् त्याग अर्थ के बोध के लिये इनमें से एक वाक्य का प्रयोग किया जाता है । परन्तु स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सर्वत्र 'स्वाहा' के पश्चात् 'इदमग्नये—इदं न मम' सदा दोनो वाक्यों का प्रयोग किया है । फिर पं० इन्द्रदेव प्रभृति जन स्व अभिमत यज्ञ विधि मे 'इदमग्नये' या 'इद न मम' ही बोला करें, दोनों वाक्यो को क्यों बोलते हैं ?

(२) पारस्कर, गोभिल आदि गृह्यसूत्रों के अनुसार जल प्रोक्षण में 'अदितेऽनुमन्यस्व' से दक्षिण में, 'अनुमतेऽनुमन्यस्व' से पश्चिम में, 'सरस्वत्यनुमन्यस्व' से उत्तर में तथा 'देव सवित: प्रसुव०' मन्त्र से चारों ओर जल छिड़कने का विधान है । स्पष्टत: ऋषि दयानन्द सरस्वती ने यहां इन मन्त्रों से जल छिड़कने में दिशा परिवर्त्तन किया है और हमें अपने आचार्य (दयानन्द सरस्वती) का यह परिवर्त्तन पूरी तरह मान्य है । उसी प्रकार स्वामी दयानन्द द्वारा यज्ञिय विधि: मे पूर्वाचार्यों द्वारा अभिमत विधि से भिन्न अन्य विधियों का निर्देश भी पूरी तरह मान्य है । जो किसी एक विधि विशेष में किसी एक गृह्यसूत्र विशेष की विधि को दुहाई देते हैं उन्हें फिर उसी गृह्यसूत्रकार का निर्देश सभी जगह मानना चाहिए संस्कार विधि: को उसमें घसीटने का प्रयोग बन्द कर देना चाहिए ।

(३) इसी प्रकार ऋषि दयानन्द सरस्वती ने विवाह संस्कार में लाजाहुति का विधान पारस्कर गृह्यसूत्र के अनुसार स्वीकार किया है, गोभिलगृह्यसूत्र के अनुसार नहीं । गोभिल के अनुसार लाजाहुति १ प्रथम मन्त्र से एक बार आहुति देने के बाद प्रदक्षिण क्रम से परिक्रमा की जाती है, फिर २ दूसरे मन्त्र से आहुति देकर दूसरी परिक्रमा तथा ३ तीसरे मन्त्र से आहुति देकर तीसरी परिक्रमा की जाती है । जबकि पारस्कर के मतानुसार लाजाहुति के तीन मन्त्रो में एक-एक मन्त्र से एक-एक बार थोड़ी-थोड़ी खांली की आहुति तीन बार प्रज्वलित इन्धन पर दे के 'सरस्वती प्रेदमव०' मन्त्र को बोल कर अपने दायें हाथ की हस्तांजली से वधू की हस्तांजली पकड़ के 'तुभ्यमग्रे०' तथा 'कन्यला पितृभ्य;०' मन्त्रों को पढ़कर यज्ञकुण्ड की प्रदक्षिणा करे । पुन: दो बार इसी प्रकार अर्थात् लाजाहुति की ३ तीन परिक्रमायें करनी हैं ।

(४) यही उत्तर 'अग्नये स्वाहा, सोमाय स्वाहा' को 'आघारावाज्याहुति' तथा 'प्रजापतये स्वाहा, इन्द्राय स्वाहा' को 'आज्यभागाहुति' मानने वाले ऋषि दयानन्द की सम्मति के सम्बन्ध में भी समझनी चाहिए । कुछ पण्डित गृह्यसूत्रों के अनुसार या श्रौतसूत्रों के अनुसार 'प्रजापतये स्वाहा, इन्द्राय स्वाहा' को 'आघारावाज्याहुति' तथा 'अग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहा' को 'आज्यभागाहुति' नाम देना चाहते हैं और इनका स्थान भी परिवर्तन करना चाहते हैं । अर्थात् 'प्रजापतये०' से उत्तर में तथा 'इन्द्राय०' से दक्षिण में एवं 'अग्नये० सोमाय०' से बीच में आहुति देना मानते हैं । स्पष्ट ही यह अनुचित है और स्वामी दयानन्द अभिमत नामकरण तथा स्थान ही उचित है ।

महर्षि दयानन्द के भक्त और प्रशंसक—

महाराजाधिराज कर्नल सर प्रतापसिंह (११)

(आर्यसमाज के इतिहास का एक रोमांचक अध्याय)

प्रो० भवानीलाल भारतीय

अब हम अंग्रेजों के प्रति उनके रवैये पर विचार करते हैं। सर प्रताप के शासक जाति से अन्तरंग सम्बन्ध थे। महारानी विक्टोरिया उन्हें पुत्र के तुल्य मानती थी। जोधपुर राज्य के रेजिडेन्ट, राजपूताना के एजेंट टु दि गवर्नर जनरल तथा भारत के वायसरायों से भी उनके मधुर सम्बन्ध रहे। उन्होने अंग्रेजी साम्राज्य के समर्थक और सहायक के रूप मे अनेक युद्धो में भी भाग लिया। उन्हें अंग्रेज शासको की ओर से अनेक उपाधियो, पदक तथा सम्मान आदि मिले। किन्तु यह सब होने पर भी सर प्रताप की स्वदेश भक्ति पर शंका नहीं की जा सकती। वे अपने देशवासियों की उन्नति के सदा इच्छुक रहे। अंग्रेजों के निकट रह कर भी उन्होने स्वदेशी पोशाक, स्वभाषा तथा रहन सहन के अपने ढंग में कोई परिवर्तन नहीं किया। राज्य की अदालतों में हिन्दी का प्रचार करने, स्वदेशी वस्त्रों को प्रोत्साहन देने तथा प्राचीन राजपूती गौरव की प्रतिष्ठा चाहने वाले सर प्रताप की स्वदेश निष्ठा पर शंका करना उनके प्रति अन्याय होगा। यदि वे अंग्रेजो के अन्धानुयायी होते तो आर्यसमाज जैसी विशुद्ध भारतीय भावों का पोषण करने वाली संस्था के अनुयायी न बन कर ब्रह्मसमाज या थियोसोफिकल सोसाइटी के सदस्य बनते, जिनमें विदेशी भाषा एवं भावों के अनुकरण की प्रवृत्ति सर्वाधिक हैं।

फिर एक बात और भी है। जिस युग में सर प्रताप पैदा हुए और कार्य किया उस जमाने में अंग्रेज भक्ति कोई आश्चर्य की चीज नहीं थी। सर प्रताप तो सामन्त वर्ग में उत्पन्न हुए थे। इसीलिये देश के विदेशी शासकों से नकट्य स्थापित करना उनके लिए अस्वाभाविक नहीं था। परन्तु उनकी इस प्रवृत्ति की आलोचना करने वाले यह क्यों भूल जाते हैं कि उस युग में देश के राजनैतिक क्षितिज पर चमकने वाले अनेक सार्वजनिक नेता तथा उनसे जुड़ी हुई संस्थाएं भी सरकार भक्ति का प्रदर्शन करने मे किसी से कम नहीं रहे। कांग्रेस के अधिवेशनों में "गाड सेव दि किंग" का गीत गाया जाता था तथा इंग्लैण्ड के शासक के दीर्घजीवन की कामना की जाती थी। उस युग में आर्यसमाज के उत्सवों की समाप्ति भी बरतानिया के बादशाह का धन्यवाद करने के साथ ही होती थी। यह भारत सुदशा प्रवर्तक की फाइलो से स्पष्ट होता है। अतः सर प्रताप को ही उनकी अंग्रेज भक्ति के लिये कोसना निरर्थक है।

अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में सर प्रताप आर्य समाज से सक्रिय सहयोग क्यों नहीं कर सके, इसके कुछ सम्भावित कारण हमने प्रसंगोपात्त लिखे हैं। इस सम्बन्ध में एक अन्य हेतु भी उपस्थित किया जा सकता है। इस शताब्दी के आरम्भ से लेकर महात्मा गांधी के भारत के राजनैतिक क्षितिज पर अवतरित होने तक आर्यसमाज में राष्ट्रवाद, देशभक्ति तथा स्वदेश को पराधीनता के पाशो से मुक्त कराने की तीव्र झलक दिखाई दी। इसी युग में लाला लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानन्द, भाई परमानन्द आदि स्वतन्त्रता सेनानियो ने आर्यसमाज के विचारो से ही अनुप्राणित होकर देश की आजादी के लिये अनेक प्रकार की कुर्बानिया दी थीं। उधर अमर शहीद भगतसिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, ठाकुर रोशनसिंह, पं० गेंदालाल दीक्षित तथा सोहनलाल पाठक आदि क्रान्तिकारियो ने भी स्वामी दयानन्द की स्वातन्त्र्य भावना से ही प्रेरणा ग्रहण कर अपने प्राणो की आहुति देश के लिये अर्पित की थी। निश्चय ही सर प्रताप जैसे राजभक्त व्यक्ति के लिये उपर्युक्त राष्ट्रीय भावधारा में प्रवाहित होने वाले स्वाधीनता कामी पुरुषों के साथ विचारों का तालमेल स्थापित करना कठिन था। फलतः वे उस अवधि में आर्यसमाज से उपराम रहे हों तो आश्चर्य ही क्या?

सर प्रताप के इसी अभिप्राय को उनके अंग्रेजी जीवनी लेखक ने निम्न प्रकार व्यक्त किया है—"आर्यसमाज के कतिपय सदस्यों की राजनैतिक गतिविधियो से उनकी सहमति नहीं थी तथा वे किसी भी परिस्थिति में उनका समर्थन करने में स्वयं को असमर्थ पाते थे, किन्तु वे उस संस्था के धार्मिक पक्ष से अपना सम्बन्ध विच्छेद करने का विचार भी मन में लाने के लिये तैयार नहीं थे जिसके साथ उनकी पूर्ण सहानुभूति थी।" अतः सर प्रताप के अंग्रेजो से सम्बन्ध रखने मात्र के कारण उनके आर्यसमाज के प्रति श्रद्धाभाव मे कोई न्यूनता आ गई हो, ऐसा मानने को कोई कारण नही है।

उपर्युक्त पंक्तियो मे हमने सर प्रताप के जीवन एवं व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओ पर विस्तार से विचार किया है। अब एक अन्य विवादास्पद विषय पर थोड़ा प्रकाश डालना आवश्यक है। महाराजा सर प्रतापसिंह ने अपनी आत्मकथा लिखी थी। वे स्वयं अधिक पढ़े लिखे नहीं थे। किन्तु जोधपुर राज्य मे उच्च पदासीन होने तथा कालान्तर मे गुजरात के ईडर राज्य के अधिपति बन जाने के कारण उन्हें सुपठित राज्याधिकारियो का लेखन कार्य में सहयोग मिलता ही था। इस आत्म कथा का सम्पादन ईडर राज्य के उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री राधाकृष्ण एम० ए० एल० एल० बी० ने किया था ग्रन्थ की भूमिका में सम्पादक ने सर प्रताप की आत्म कथा के सम्बन्ध में लिखा है—"सन् १०४ ई० मे एम० ए० की परीक्षा मे सफल होने के बाद मुझे कुछ महीनो के लिए सर प्रतापसिंह जी की आत्मकथा लिखने के निमित्त ईडर मे आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। "सर प्रताप मुझे प्रतिदिन एक या दो घण्टे तक अपनी जीवनी मे से कुछ अंश लिखाया करते और मैं बाद में उन्हें विस्तृत रूप देकर अगले दिन उन्हें सुना दिया करता। मैंने उसी वर्ष के अन्त में यह काम पूरा कर लिया "१९०५ मे इसका उर्दू तथा हिन्दी मे अनुवाद कराया गया। जीवन चरित्र के मसौदे को सर वाल्टर लारेंस के पास संशोधन के लिए भेजा गया। यह मसौदा उनके पास कई बरस तक पड़ा रहा। क्योंकि उन दिनो महाराजा सुमेरसिंह जी अभी नाबालिग थे, इसलिए उन्होने रीजेंसी के काल की समाप्ति तक आत्मकथा को प्रकाशित करने का विचार स्थगित कर दिया क्योंकि वह चाहते थे कि आत्मकथा में पूर्ण विवरण होना चाहिए। १९१६ मे अंग्रेजी का मसौदा सर प्रताप के पूर्व प्राइवेट सेक्रेटरी तथा बाद में जोधपुर स्टेट कौंसिल के सेक्रेटरी बाबू उमरावसिंह जी के पास छोड़ा गया था। उसकी सहायता से मि० बानबार्ट ने १९२६ मे सर प्रताप का जीवन चरित्र अंग्रेजी में लिखा, जिसे जोधपुर दरबार ने छपवाया। सर प्रताप के पौत्र महाराजा हिम्मतसिंह जी की स्वीकृति और संरक्षकता में तथा जोधपुर के हिज हाइनेस महाराजा सर उम्मेदसिंह जी की अनुमति से यह पुस्तक मैं प्रकाशित कर रहा हूं।"

उपर्युक्त उद्धरण से निम्न तथ्य प्रकाश में आते हैं—

१- सर प्रताप की यह आत्मकथा मूलतः उर्दू मे १९०४ मे लिखी गई। लेखक (लिपिकार) राधाकृष्ण पंजाबी थे अतः उन्होंने इसे उर्दू मे ही लिखा होगा।

२ १९०५ मे मूल उर्दू आत्मकथा का अनुवाद हिन्दी तथा अंग्रेजी मे कराया गया। (क्रमशः)

सार्वदेशिक के ग्राहकों से

सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहकों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क भेजते समय या पत्र व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या का उल्लेख अवश्य करें।

अपना शुल्क समय पर स्वतः ही भेजने का प्रयास करें। कुछ ग्राहको का बार बार स्मरण पत्र भेजे जाने के उपरान्त भी वार्षिक शुल्क प्राप्त नहीं हुआ है अतः अपना शुल्क अविलम्ब भेजें अन्यथा विवश होकर अखबार भेजना बन्द करना पड़ेगा।

"नया ग्राहक" बनते समय अपना पूरा पता तथा "नया ग्राहक" शब्द का उल्लेख अवश्य करें। बार बार शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिये, एक बार ३०० रुपये भेजकर सार्वदेशिक के आजीवन सदस्य बनें।—सम्पादक

वैदिक संस्कारों द्वारा श्रेष्ठ सन्तति तथा नवयुग निर्माण

—कृष्ण औतार, (पूर्व मन्त्री आर्य समाज) बढ़ापुर (बिजनौर)

संस्कार का अर्थ है किसी वस्तु के रूप को बदल देना, उसे नया रूप दे देना। संस्कार पहले से विद्यमान दुर्गुणों को हटाकर उनकी जगह सद्गुणों का आधान कर देने का नाम है। वैदिक संस्कारों से मानव की सर्वांगीण उन्नति (शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आत्मिक) तो होती है, साथ ही पुरुषार्थ चतुष्टय (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि भी प्राप्त हो जाती है, जो मानव जीवन का परम लक्ष्य है।

पशुता संस्कार विहीन जीवन का द्योतक है, जहा कोई रोक-टोक नहीं, कोई मर्यादा नही। केवल भोग ही भोग है। मनुष्यता तो संस्कारों से ही पनपती है, मानव नर से नारायण बनने के योग्य हो जाता है।

बालक का जब जन्म होता है, तब वह दो प्रकार के संस्कार लेकर आता है। प्रथम जन्म-जन्मान्तरों के अपने कर्म-जन्य संस्कार तथा दूसरे अपने माता-पिता से प्राप्त करता है। वैदिक संस्कारों द्वारा पिछले जन्मों के अशुभ संस्कारों को भी बदला जा सकता है।

महर्षि दयानन्द ने मानव को दिव्य मानव बनाने के लिए जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त १६ संस्कारों का विधान किया है, जो इस प्रकार है —गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूडाकर्म (मुण्डन), कर्णवेध, उपनयन यज्ञोपवीत), वेदारम्भ, समावर्तन, विवाह वानप्रस्थ, सन्यास और अन्त्येष्टि संस्कार।

इस लेख में दो सर्वाधिक महत्वपूर्ण संस्कारों गर्भाधान एवं विवाह संस्कार के विषय में वैदिक ऋषियों के विचार प्रस्तुत हैं।

वैदिक ऋषियों ने मानव-जीवन को १०० वर्ष का मानकर, उसे चार भागों में बांटकर चार आश्रमों—ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थाश्रम, सन्यासाश्रम के नाम से सम्बोधन किया है। प्रथम २५ वर्ष तक ब्रह्मचर्य, २५ से ५० वर्ष तक गृहस्थ, ५० से ७५ वर्ष तक वानप्रस्थ और ७५ से १०० वर्ष अथवा पूर्णायु तक सन्यास आश्रम की व्यवस्था बनाई है।

आश्रम शब्द का अर्थ है (आ + श्रम) जहा निरन्तर श्रम का आवास हो। प्रथम ब्रह्मचर्याश्रम, जिसमें विद्यार्थी गुरुकुल में २५ वर्ष तक ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन करते हुए ज्ञानवान, तपवान, कर्मवान एवं चरित्रवान बनाया जाता था। तत्पश्चात स्नातक बनने के बाद दूसरे सबसे ज्येष्ठ एवं श्रेष्ठ आश्रम गृहस्थाश्रम में प्रवेश करता था।

वैदिक ऋषियों ने अब्रह्मचारी या अब्रह्मचारिणी को गृहस्थाश्रम में प्रवेश पाने का अधिकार नहीं दिया है। जिनका ब्रह्मचर्य भंग न हुआ हो, वही गृहस्थाश्रम में प्रवेश करे। बिगड़े हुए इन्सान को अपने जैसी बिगड़ी सन्तान उत्पन्न करके, समाज को गन्दा करने का अधिकार नहीं है। अतः ब्रह्मचर्याश्रम (विद्यार्थी जीवन) में जो कुमार व कुमारी विद्या, बुद्धि, शक्ति व आत्मसंबल से सम्पन्न हो जाते हैं, उन्हीं के लिए विवाह अथवा गृहस्थाश्रम प्रवेश विहित है।

विवाह शब्द का अर्थ है विवहनार्थ (विविध कर्त्तव्यों व उत्तरदायित्वों के पालन हेतु) दो जीवनों और दो आत्माओं का अभिन्न मिलन, जहां दोनों मिलकर परिवार, समाज, राष्ट्र एवं विश्व की उन्नति में अपना योगदान करेंगे और लोक व परलोक को सुहावना करेंगे। गृहस्थ विज्ञान सबसे बड़ा विज्ञान है। गृहों के सुधार से ही समाज सुधार, राष्ट्र-सुधार एवं विश्व-सुधार स्वयमेव हो जायेगा। वर्तमान में भोगशाला बने घरों को योगशाला बनाकर हो, उनमें जीवन सुरभियां महकेंगी और सुसन्तान की प्राप्ति होकर संसार स्वर्गधाम बन जायेगा तथा वास्तविक परिवार नियोजन भी सार्थक हो जायेगा।

ब्रह्मचर्याश्रम की साधना पूर्ण कर सुयोग्य बन जाने पर कम से कम २५ वर्ष के नवयुवक एवं न्यूनतम १६ वर्ष की युवति का विवाह होना श्रेष्ठ बतलाया है। विवाह सम्बन्ध तय होने से पूर्व केवल चर्म नेत्रों से ही देखकर नहीं, बल्कि ज्ञान नेत्रों से वर एवं कन्या के रूप, गुण, शील, स्वभाव एवं चरित्र की परख करके दोनों की सहर्ष स्वीकृति होना आवश्यक है। आज कल की तरह कार-कोठी पैसा-सर्विस को प्राथमिकता नही दी जाती थी, और ना ही किसी प्रकार का प्रदर्शन, मिथ्या आडम्बर व फिजूलखर्ची की जाती थी। विवाह संस्कार पर विशेष ध्यान दिया जाता था।

वर एवं वधू दोनों यज्ञवेदी पर बैठकर स्वयं वेद मन्त्र बोलकर प्रतिज्ञायें करते हैं :—

ओ३म् समंजन्तु विश्वेदेवा: समापो हृदयानि नौ।
सं मातरिश्वा सं धाता समुदेष्ट्री दधातु नौ ॥ ऋ० १०-८५-४७

हे (विश्वे देवा) इस यज्ञशाला में बैठे हुए विद्वान लोगों ! आप हम दोनों को निश्चय करके जाने कि हम अपनी प्रसन्नता पूर्वक गृहस्थाश्रम में एकत्र रहने के लिए एक दूसरे को स्वीकार करते हैं, कि हमारे दोनों के हृदय जल के समान शान्त और मिले हुए रहेंगे। जैसे धारण करने हारा परमात्मा सब में मिला हुआ, सब जगत को धारण करता है, वैसे हम दोनों एक दूसरे को धारण करेंगे। जैसे उपदेश करने हारा श्रोताओं से प्रीति करता है, वैसे हमारे दोनों की आत्मा एक दूसरे के साथ दृढ़ प्रेम को धारण करें।

नोट—इस मन्त्र में जल की उपमा देने का विशेष प्रयोजन है। अन्य वस्तुओं की मिलावट तो अलग अलग की जा सकती है, परन्तु दो स्थानों का जल मिला देने से कोई भी बड़े से बड़ा वैज्ञानिक उन्हें अलग नहीं कर सकता।

निम्न वेद मन्त्र द्वारा पाणिग्रहण के अवसर पर वर-वधू प्रतिज्ञा करते हैं।

ओ गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथास:।
भगो अर्यमा सविता पुरन्धिर्मह्यं त्वा दुर्गार्हपत्याय देवा: ॥
ऋ० १०। ८५। ३६

हे वरानने ! जैसे मैं ऐश्वर्य, सुसन्तानादि सौभाग्य की वृद्धि के लिए तेरे हाथ को ग्रहण करता हूं, तू मुझ पति के साथ जरावस्था को प्राप्त हो, सुखपूर्वक हो, तथा हे वीर ! मैं सौभाग्य की वृद्धि के लिए आपके हस्त को ग्रहण करती हू। आप मुझ पत्नी के साथ वृद्धावस्था पर्यन्त प्रसन्न और अनुकूल रहिए। आपको मैं और मुझको आप आज से पति-पत्नी भाव को प्राप्त हुए हैं। सब जगत की उत्पत्ति का करता परमात्मा और ये सब सभा मण्डप में बैठे हुए विद्वान लोग गृहाश्रम कर्म के अनुष्ठान के लिए तुझको मुझे देते हैं। आज से मैं आपके हस्ते और आप मेरे हाथ बिक चुके हैं, कभी एक दूसरे का अप्रियाचरण न करेंगे।

वैदिक रीति से विवाह संस्कार में यज्ञ वेदी की परिक्रमा करते हुए वधू आगे चलती है और वर पीछे—जैसे उषा सूर्य के आगे चलती है। नारी नव का सुनयन करने वाली है। विवाह संस्कार पूर्ण हो जाने पर वधू साम्राज्ञी (महारानी) बनकर पतिगृह में प्रवेश करती है। अथर्ववेद मन्त्र (१४-१-४४) में कुलवधू को सम्बोधित करके वेदमाता आशीर्वाद दे रही है—

सम्राज्ञी एधि श्वसुरेषु सम्राज्ञी उत देवृषु।
ननान्दुः सम्राज्ञी एधि सम्राज्ञी उत श्वश्र्वा: ॥

हे कुलवधू ! तू जिस नवीन घर में जाने वाली है, तू वहां की सम्राज्ञी है, वहा तेरा राज होगा। तेरे श्वसुर, देवर, ननदें और सास तुझे सम्राज्ञी समझेंगे।

यह मन्त्र केवल बड़े घराने की बहू-बेटियों के ही लिए नहीं, बल्कि हर कन्या के विवाह पर पढ़ा जाता है।

वैदिक विवाह में तलाक को कोई स्थान नहीं है। आजीवन साथ रहने का विधान है। तलाक वहीं होता है जहां पर गुण-शील-चरित्र की परख न करके बाह्य रूप अथवा पैसे के लालच पर सम्बन्ध होते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र (८-३३-१९) में स्त्री को सृष्टि का ब्रह्मा कहा है साथ ही कुछ विशेष मर्यादाओं का पालन का आदेश दिया है।

अध: पश्यस्व मोपरि संतरां पादकौ हर।
मा ते कशप्लकौ दृशन्स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ ॥

इस मन्त्र में नारियों का शील, उनकी जीवनपद्धति और मानव समाज में उनकी समुच्च स्थिति का चित्रण किया है। लज्जा और सुशीलता नारी का सर्वोत्कृष्ट भूषण है। नीची दृष्टि रखना, सतर चाल चलना, अपने अंगों को ढके रखना, चरित्र-रक्षण का अमोघ विज्ञान है।

(क्रमश:)

दिवंगत हिन्दी सेवी

(पृष्ठ ४ का शेष)

हस्तलिखित पत्र सुबाधु एव किशोर मित्र का आपने अच्छा सम्पादन किया। आपके छात्र सम्पादकत्व मे कविताक बसन्ताक गुरुकुलाक निकले जो स्मरणीय हैं

आर्य आयसन्देश आयमित्र मनस्वी शिक्षा सुधा हिन्दी का सम्पादन करने के साथ साथ तत्कालीन साहित्यिक पत्र पत्रिकाओ मे अनेक शोध इति हास परक लेख लिखे।

पत्रकारिता के क्षेत्र मे आपका योगदान सराहनीय है। साहित्यिक पत्रकारिता के विकास एव योगदान की सेवा के फलस्वरूप सन १९८४ मे भारत सरकार ने आपको पदमश्री से सम्मानित किया। सन १९८६ में हिन्दी के यशस्वी पत्रकार नामक ग्रन्थ पर प्रकाशन मन्त्रालय ने भारतेन्दु पुरस्कार से पुरस्कृत किया। जब जगह जगह से उन्हें सम्मान मिलने लगा तो उत्तर प्रदेश हिन्दी सस्थान क्यो पिछडता। सस्थान ने १९९० में सुमन जी को सम्मानित किया।

आय समाज के लिए उन्होने एक मौलिक ग्रन्थ की रचना की जो कि आप मे आर्य समाज की पत्रकारिता का अजेय कोश है। हिन्दी को आयसमाज की देन (प्रकाशक मधुर प्रकाशन दिल्ली) नामक ग्रन्थ पठनीय है

एक बार मैं उनसे मिला। उस समय क्षितीश जी का देहावसान हो चुका था। सुमन जी उन्ही के बारे मे बतलाने लगे। बोले— क्षितीश मेरे से थोडा ही छोटा था। पर भगवान की लीला देखो मुझसे पहले ही चला गया और मैं यहीं रह गया। हम दोनो साथ साथ गुरुकुल महाविद्यालय मे पढे थे। उसका नाम छत्तरपाल था। कहते हुए उनका चेहरा मायूस हो गया।

फिर स्वय को सयत करते हुए बोले हिन्दी के दिवगत सेवी के दो खण्ड छप गए हैं। शेष काय पूरा ही समझो। कब प्रकाशित होगा मालूम नही

मेरी पीठ पर उन्होने हाथ रखा। बोले— भाई तुम तो अपनी सस्था के हो। जब तब मिल लिया करो। अपनो से मिलकर बहुत अच्छा लगता है।' कहते हुए चुप। तभी चाय आ गयी।

सुमन जी का आतिथ्य सत्कार गजब का था। घर मे घुसते ही माता जी या परिवार का कोई अन्य सदस्य पानी का गिलास लिए हुए हाजिर उसके बाद आपसे पूछें बगैर चाय और उसके साथ बिस्कुट आपके सामने। उस पर सुमन जी का प्यारा सा आग्रह। आप चाहकर भी मना नहीं कर सकते।

कहा तक लिखू ? आय जगत को सन १९९३ म दो जबरदस्त झटके लग हैं दो आय पत्रकारो का जाना हमारे लिए अपूरणीय क्षति है। दोनो ही यानि कि क्षितीश जी वेदालकार तथा क्षमचन्द्र जी सुमन महाविद्यालय ज्वालापुर के दो पुष्प थे। अब स्मृति रूप मे य पुष्प सवदा हसते मुसकराते हमारे बीच मे विद्यमान रहेंग

संगठन मे ही शक्ति है—आओ मिल कर काम करे—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली-२

आर्य समाज का सगठन एक है और इसी के सचालन से समस्त विश्व के आर्यजन अनुप्रेरित होते हैं।

अत समस्त आयजन सगठन सूत्र मे बध कर चलें सगठन मे शक्ति है आप सब सकट काल मे भी सभा के आदेशो का पालन कर। जब-जब शक्ति के साथ बन्ध कर चले हैं सफलता सामने फलीभूत हुई है।

गढवाल के तूफान म सभी ने साथ दिया है। महाराष्ट्र मे सावदेशिक सभा का सहयोग करके दुखी मानवता की सेवा करें।

तन मन धन सभी अपेक्षित हैं—

सच्चिदानन्द शास्त्री मन्त्री

तुम्हारे शव पर कितने सुमन बिखेरू

तुमने मुर्दा को जिन्दा किया।
मैं कैसे सुमन बटोरू ॥
आज तू जिन्दा है मुर्दा बन गया।
तेरे आस पास का वातावरण तन गया॥
गुरु सुमन तू कण्ठहार।
तुम को नम्न मेरा बार बार॥
तुम नहीं खिलोगे।
परन्तु महक तुम्हारी आयेगी।
तुम नही रहोगे।
परन्तु याद तुम्हारी आयेगी।

सुमन जी की शिष्या
डा० कुमारी जसवन्त गुलाटी पहलो
एफ २/६ कृष्णानगर दिल्ली-११००५१

वैदिक संपति छप रही है

पृष्ठ सख्या ७००, मूल्य १२५ रुपये

२४ अक्टूबर १९९३ तक अग्रिम धन देने पर ८० रु० मे

आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान प० रघुनन्दन शर्मा द्वारा लिखित 'वैदिक सम्पत्ति २०×३०×८ साइज मे शीघ्र प्रकाशित हो रही है। २४ अक्टूबर १९९३ तक मूल्य अगाऊ भेजने पर प्रति पुस्तक ८०) रु० होगा डाक व्यय २०) रु० प्रति पुस्तक अलग से होगा। अपनी प्रति आरक्षण हेतु मनीआर्डर अथवा बैंक या बक ड्राफ्ट डा० सच्चिदानन्द शास्त्री मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली के पते पर भेजें।

—सम्पादक

वेद परिचय

(पृष्ठ ८ का शेष)

लार्ड मोले— 'जो कुछ वेदो मे मिलता है वह अन्यत्र कही नही है।"

फ्रांसीसी विद्वान लेक्षो देल्बो—"ऋग्वेद मनुष्य मात्र को उच्चतम प्रगति और आदर्श की उच्चतम कल्पना है।"

प्रो० पालथीमा—'वेद वे पवित्र ग्रन्थ है जो न केवल भारतवर्ष के लिए अपितु समस्त ससार के लिए मूल्यवान है क्योंकि हम उनमे मनुष्योको सासारिकता से ऊपर उठने (मोक्ष प्राप्त करने) का यत्न करते हुए पाते हैं।

अमेरिकन विद्वान थ्योरो—"मैंने वेदों के जो उदाहरण पढ़े हैं वह मुझ पर एक उच्च पवित्र प्रकाश पुन्ज की भांति पड़े हैं। वेद एक उत्कृष्ठ मार्ग का वर्णन करते हैं। वेदो के उपदेश सरल सार्वभौम है और जाति तथा देश के इतिहास से रहित है। इनमे ईश्वर विषयक युक्ति युक्त विचार हैं।"

डब्लू० डी० ब्राउन—'वैदिक धर्म केवल एक ईश्वर को प्रतिपादित करता है। यह एक पूर्णतया वैज्ञानिक धर्म है जहा विज्ञान और धर्म साथ-साथ चलते हैं। वेदो मे धार्मिक सिद्धान्त विज्ञान और दर्शन पर आधारित हैं।'

पारसी विद्वान फर्दुन दादा चान—"वेद ज्ञान की पुस्तक है इसमे प्रकृति, धर्म, प्रार्थना, सदाचार, आदि विषय की पुस्तकें सम्मिलित हैं। वेद का अर्थ है ज्ञान और वस्तुत वद ज्ञान विज्ञान से ओत प्रोत है।'

आयरिश कवि और दार्शनिक जेम्स क्यून—"उस वैदिक आदर्श का अनुकरण करते हुए हो जो सार्वभौम होने के कारण विरोध के कारणो को नष्ट करता है, जो सहानुभूति को घृणा से जीत लेता है, यह सम्भव है कि पृथ्वी को पुन स्वर्गधाम बनाया जा सके।'

वार्षिकोत्सव

—आर्य समाज पजाबी बाग एक्सटेनशन नई दिल्ली २७ का आठवां वार्षिक महोत्सव दिनाक १ नवम्बर सोमवार से ७ नवम्बर को मनाया जा रहा है।

जिसमे उच्च कोटि के विद्वान, सर्व श्री प्रो० उत्तमचन्द जी शरर डा० वाचस्पति उपाध्याय एव श्री धर्मसिह जी भजनोपदेशक आदि विद्वान भाग ले रहे हैं।

मदन मोहन सलूजा
प्रधान

इसाई पादरी मोरिस फिलिप—'अत हमारे लिये इस परिणाम पर पहुचना अनिवार्य है कि भारत मे धार्मिक विचारो का विकास नही हुआ अपितु ह्रास हुआ है। उत्थान नही अपितु पतन हुआ है। इसलिए हम परिणाम निकालने मे न्यायशील है कि वैदिक आर्यों के उच्चतर और पवित्रतर विचार एक प्रारम्भिक ईश्वरीय ज्ञान का परिणाम है।'

जे० मास्को—'यदि भारत की कोई बाइबिल सकलित की जाये तो उसमे वेद, उपनिषद और भागवद् गीता माननीय आत्मा के हिमालय के समान सबसे ऊपर उठे ग्रन्थ होगे।

मैक्समूलर—'वेद चाहे जो हो वे हमारे लिए अद्वितीय और बहुमूल्य मार्ग दर्शक हैं।'

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के कल्याणकारी सन्देश 'वेदो की ओर वापिस चलो" का अनुसरण कर, आइये हम सभी वेदो के पढने पढाने व सुनने सुनाने का सकल्प लें।

—मन्त्री आर्य उप-प्रतिनिधि सभा जनपद नैनीताल (उ० प्र०)

दिल्ली में भी महिला पुलिस थाने खोले जाएं

उच्च न्यायालय द्वारा जनहित याचिका पर सरकार को नोटिस

नई दिल्ली। तमिलनाडु, मध्यप्रदेश तथा उत्तर प्रदेश में महिला थानों की सफल शुरूआत को ध्यान में रखते हुए दिल्ली उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति श्री ए० बी० सहारया तथा श्री सी० एम० नैयर की खण्डपीठ ने एक रिट याचिका पर केन्द्रीय सरकार, उप राज्यपाल तथा दिल्ली पुलिस आयुक्त को कारण बताओ नोटिस जारी किया हैं। इस याचिका पर बहस करते हुए (कानूनी पत्रिका) हिन्दी मासिक के मुख्य सम्पादक श्री विमल वधावन एडवोकेट ने अदालत को बताया कि दिल्ली पुलिस के पास समुचित संख्या में महिला पुलिस अधिकारी उपलब्ध है तथा अभी भी अधिकृत क्षमता तक और भर्ती की जा सकती है।

इस याचिका में कहा गया है कि जब भी कोई बलात्कार की शिकार महिला पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कराने जाती है तो उससे ऐसी अभद्रता और अश्लीलता पूर्वक पूछताछ की जाती हैं जिससे उसे और अधिक मानसिक पीड़ा पहुंचती है। मर्द पुलिस स्टाफ के तानों का भी उसे सामना करना पड़ता है। इसका प्रभाव यह है कि कई महिलाएं तो अपनी शिकायत थानों में दर्ज ही नहीं कराती, जिससे समाज में इस प्रकार के अपराध बढ़ रहे हैं। इन्हीं कारणों से बसों तथा अन्य स्थानों पर महिलाओं से छेड़छाड़ के मामले भी प्रकाश में नहीं आ पाते। पुलिस द्वारा दहेज पीड़ित महिलाओं के केस में भी अधिकतर ससुराल वालों के प्रति नरम रुख अपनाया जाता है ऐसा या तो रिश्वत या किसी प्रभाव के कारण किया जाता है।

इस जनहित याचिका में कहा गया है कि इस प्रकार नारी अपमान के बढ़ने के कारण ही समाज में सुख और शान्ति का अभाव हो रहा है। कानून के अतिरिक्त धार्मिक आधार पर भी तथ्यात्मक विवरण अदालत के समक्ष रखे गये हैं। याचिका की अगली सुनवाई आगामी २ दिसम्बर ९३ को होगी।

श्री वधावन ने अदालत में प्रस्तुत इस याचिका में यह स्पष्ट लिखा है कि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश में भी इस बात का उल्लेख किया है कि जिस परिवार में नारी का अपमान होता है वहां दुख और अशान्ति का साम्राज्य छाया रहता है। यही बात समाज पर भी पूर्णत लागू होती है।

राजकुमार तिवारी, व्यवस्थापक

विजयादशमी पर विशेष यज्ञ

बागपत यहां आर्य समाज मन्दिर में विजया दशमी पर्व पर विशेष यज्ञ आर्य विद्वान मा० मुरारीलाल सिद्धांत शास्त्री के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। यज्ञोपरान्त मा० मुरारी लाल आर्य ने विजया दशमी असत्य पर सत्य की, राक्षसत्व पर देवत्व की तथा दुर्गुणों पर सद्गुणों की विजय का प्रतीक बताया। भगवान राम के जीवन प्रसंगों का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि राम ने जीवन में किसी भी क्षण मर्यादाओं का उल्लंघन नहीं किया। समाज के प्रधान श्री जयप्रकाश वर्मा व सुभाष त्यागी एडवोकेट ने रामलीला में होने वाले धन के अपव्यय तथा झाँकि प्रदर्शन की निन्दा की। सार्वदेशिक के अनुसार चुनाव में गोवध बन्दी, शराबबन्दी व हिन्दी का समर्थन करने वाले प्रत्याशी का समर्थन करने का प्रस्ताव पास किया।

सत्यप्रकाश गौड़
मन्त्री—आर्य समाज बागपत

उत्सव समाचार

आर्य समाज लाल नगर का वार्षिकोत्सव दिनांक ४-११-९३ से ७-११-९३ तक यानि ४ दिनों के लिए मनाया जायेगा। प्रात ८ बजे से ११ बजे तक यज्ञ एवं प्रवचन, अपराह्न ३ बजे से ५ बजे तक महिला सत्सग, सन्ध्या साढ़े ६ बजे से १० बजे तक प्रवचन। अन्तिम दिन यानि ७-११-९३ को शोभा यात्रा जुलूस निकाला जायेगा।

रामाशंकर यादव
उपप्रधान लालनगर

काबा में क्या हुआ था?

(पृष्ठ १ का शेष)

दूसरी तरफ पाकिस्तान को देने की मांग कर रहे हैं। जबकि राष्ट्रसंघ के 'आब्जर्वरों' की मौजूदगी में भारत सरकार इस मौके पर जब पाकिस्तान और कश्मीरी उग्रवादियों से नंगा करने पर आमादा है।

वार्ता की असफलता के पश्चात भारतीय फौज हजरतबल के अन्दर घुसेगी। हालाकि इसकी सम्भावनाएं इस समय कम दिखाई दे रही है, लेकिन नवम्बर १९७९ में सऊदी अरब स्थित मुसलमानों के सबसे पवित्र स्थान मक्का स्थित 'काबा' में क्या हुआ था? जब वहां पर एक मुस्लिम उग्रवादी गुट ने हथियारों से लैस होकर कब्जा कर लिया था। इन उग्रवादियों ने 'काबा' पर पूर्ण कब्जा जमा लेने के उपरान्त सऊदी सुरक्षा बलों पर मस्जिद के अन्दर से पहले जम कर फायरिंग की थी। इस उग्रवादी गुट के नेता 'ओतेबी' नाम के व्यक्ति ने फिर सऊदी अरब के विरुद्ध धार्मिक युद्ध की घोषणा करते हुए सऊदी अरब की जनता को सऊदी किंग और उसके परिवार पर धर्म विरोधी नीतियों का अनुसरण करने की वजह से विद्रोह करने की अपील की थी। हजरत मुहम्मद के पवित्रतम स्थान मक्का स्थित काबा से हथियारबन्द उग्रवादियों को हटाने या मार गिराने के मुद्दे पर न केवल राजसी परिवार बल्कि वहां की सुरक्षा बल के जरनल भी असमंजस में पड़ गए थे। काफी समय तक सऊदी अरब सरकार ने काबा को कब्जे में लेने वाले उग्रवादियों से समझौता वार्ता जारी रखी। लेकिन जब समझौता वार्ता असफल हो गई तो सबसे पहले काबा को उग्रवादियों के कब्जे से आजाद रखने के लिए मौलवियों से पवित्र स्थल पर हथियार ले जाने के सम्बन्ध में फतवा जारी किया और उसके पश्चात फ्रांस से विशेष रूप से बुलाई गई कमाण्डो फोर्स की मदद से काबा को उग्रवादियों के कब्जे से छह घण्टे के 'आप्रेशन' के पश्चात आजाद करवा लिया गया।

अगर मुसलमानों के विश्व प्रसिद्ध पवित्रतम काबा को हथियार बन्द उग्रवादियों के कब्जे से वापिस लेने के लिए सऊदी अरब की सरकार टैंकों और बख्तरबन्द गाड़ियों को मस्जिद के अन्दर भेजने पर मजबूर हुई तो क्या हजरतबल को उग्रवादियों और देशद्रोही तथा विदेशी एजेंटों से मुक्त करवाने के लिए भारतीय फौज और सुरक्षा बल के जवान मस्जिद के अन्दर नहीं घुस सकते? पाकिस्तान की प्रधानमन्त्री श्रीमती भुट्टो ने हजरतबल के मुद्दे पर कश्मीर के मामले को अपनी लोकप्रियता की खातिर विश्व मंच में उछालना शुरू कर दिया है। लेकिन हजरतबल के मुद्दे पर देश का कानून सर्वोच्च है और इस मामले पर भारत सरकार को संयुक्तराष्ट्र संघ या अमरीका के दबाव और पाकिस्तान के शोर शराबे को नजर अन्दाज करके वही कदम उठाना चाहिए जो देशहित में हो।

—अश्विनी कुमार

सार्वदेशिक सभा द्वारा शास्त्रार्थ महारथी पं० गणपति शर्मा के ग्रन्थ का पुनः प्रकाशन

ईश्वर भक्ति विषयक व्याख्यान

मूल्य ३-२० रु०

लेखक . भवानीलाल भारतीय

स्व० पं० गणपति शर्मा आ.स. के इतिहास में प्रथम पंक्ति के विद्वान थे। उनकी लगभग १०० वर्ष पहले छपी इस दुर्लभ पुस्तक का प्रकाशन सभा ने पण्डित गणपति शर्मा के जीवन परिचय तथा उनके प्रचार कार्य के विवरण सहित किया है। अधिक संख्या में मंगा कर ईश्वरभक्ति विषयक इस महत्त्व-पूर्ण कृति का प्रचार करें। लेखक बधाई के पात्र हैं जो ऐसे विस्मृत इतिहास के पृष्ठों को जनता के समक्ष प्रस्तुत कर नव जागरण करते हैं।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री सार्वदेशिक सभा
दयानन्द भवन, नई दिल्ली

दिल्ली पत्रिका पंजी सं० डी० एल० ११०२४/९१ साप्ताहिक (७ ११-१९९३) बिना डाक टिकट भेजने का लाइसेंस नं० यू (ओ) ९३
R. N. 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U (O) 93 Post in N.D.P.S.O.on 4-5-11 1993

राजनिवास
दिल्ली-११००

अपील

महाराष्ट्र में भूकम्प की अभूतपूर्व त्रासदी ने जान-माल की व्यापक क्षति पहुंचाई है। कई हजार लोग बेघर हो गये हैं और उनकी विपदा व उनका दुखदर्द असीम है। दिल्लीवासियों ने राष्ट्रीय विपदा के ऐसे अवसरों पर हमेशा बढ़-चढ़ कर राहत में नकद एवं अन्य सामग्रियों के साथ उदारतापूर्वक योगदान किया है। मैं उनसे एक बार फिर अपील करता हूं कि वे अपना दान दिल्ली रेडक्रास, गोल्फ लिंक्स, नई दिल्ली-११०००३, (टेली न० ४६११८६१५) को भेजें जिसने इन सामग्रियों को प्रभावित क्षेत्रों में तत्काल पहुंचाने की व्यवस्था कर ली है।

(पी. के. दवे)

उपराज्यपाल, दिल्ली

आर्य समाज राजेन्द्र नगर की ओर से भूकम्प पीडितों की सहायतार्थ दस हजार रुपये सार्वदेशिक सभा को भेंट

नई दिल्ली। आर्य समाज राजेन्द्र नगर की पुरुष व महिला आर्य समाज (बहावलपुर आर्य स्त्री समाज) की ओर से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मान्य प्रधान श्री आनन्दबोध सरस्वती को भूकम्प पीड़ितों (महाराष्ट्र) के लिये दस हजार रुपये भेंट किये। और उनका शुभ आशीर्वाद प्राप्त किया।

इस धन को आ० स० के प्रधान श्री नमराज आर्य श्री सुरेन्द्र सहगल मन्त्री तथा बहावलपुर स्त्री आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती पुष्पा साहनी व श्रीमती ईश्वरदेवी मक्खाणी ने आर्य जनता से एकत्रित कर दुखी पीड़ित मानवता को सहाय प्रदान किये। और भी एकत्रित कर धन भेजने का आश्वासन दिया।

— सम्पादक

आर्य समाज पुष्पांजलि एन्क्लेव, दिल्ली ३४ का वार्षिकोत्सव १४ से २१ नवम्बर ९३ तक

आर्य समाज मन्दिर, पुष्पांजलि एन्क्लेव, दिल्ली ३४ का ७वां वार्षिकोत्सव रविवार १४ से रविवार २१ नवम्बर ९३ तक बड़े धूम-धाम से मनाया जा रहा है। इसी अवसर पर उस भव्य नव निर्मित यज्ञशाला जिसकी आधारशिला पूज्य स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती ने रखी थी का उद्घाटन समारोह तथा मनीषी डा० प्रेमचन्द जी श्रीधर पी० एच० डी० द्वारा वेद कथा का आयोजन किया गया है। नए वाद्य यन्त्र पर संगीतज्ञ श्री विवेक भूषण जी का सुप्रसिद्ध और श्री चुन्नीलाल जी द्वारा मनोहर भजन होंगे। आर्य जगत् में विख्यात वेदज्ञ विद्वान धर्मवेत्ता संन्यासी तथा महोपदेशक आ रहे हैं। धर्म प्रेमी उपस्थित होकर धर्म लाभ अर्जित कर और उत्सव को सफल बनावें।

महोरीलाल [illegible]
मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य वीर दल शिविर सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य वीर दल जनपद सहारनपुर में प्रकाशवान बालकुमारी देवी उ० मा० विद्यालय फतेहपुर (बेहट) में सार्वदेशिक आर्य वीर दल के संचालक डा० देवव्रत आचार्य जी की अध्यक्षता में तथा मुख्य अतिथि—श्री डा० सच्चिदानन्द जी शास्त्री महामन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली) तथा श्री सतबीर सिंह आर्य अपर जिला अधिकारी सहारनपुर, आर्य अतिथियों के नेतृत्व में सम्पन्न हुआ। जिसमें सभी ने देश की युवा पीढ़ी चरित्रवान कैसे बनें इस पर विचार किया तथा इसके लिए सभी स्थानों पर आर्य वीर दल के शिविर आयोजित किए जायें जिससे आज की बिगड़ती युवा पीढ़ी का निर्माण किया जा सके ऐसा निर्णय लिया। इस अवसर पर आर्य वीरों का व्यायाम प्रदर्शन अत्यन्त प्रभावी रहा जिसने आई हुई जनता को प्रभावित किया।

हरीसिंह आर्य
कार्यालय मन्त्री—सार्वदेशिक आर्य वीर दल

आर्य विद्या सभा, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार का निर्वाचन

२१ ८ ९३ को आर्य विद्या सभा के साधारण अधिवेशन में पदाधिकारियों का चुनाव निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ।

प्रधान	श्री सूर्यदेव दिल्ली।
उपप्रधान	डा० रणवीरसिंह हरियाणा।
उपप्रधान	श्री वीरेन्द्र पंजाब।
मन्त्री	श्री प्रकाशवीर विद्यालंकार हरियाणा।
उपमन्त्री	श्री वेदव्रत शर्मा दिल्ली।
उपमन्त्री	श्री [illegible] शर्मा [illegible]।
कोषाध्यक्ष	डा० सच्चिदानन्द सार्वदेशिक।
अन्तरंग सदस्य—	

१ स्वामी आनन्दबोध सरस्वती दिल्ली।
२ स्वामी ओमानन्द सरस्वती हरियाणा।
३ श्रीमती प्रभात शोभा पण्डिता हरियाणा।
४ श्री धर्मप्रकाश दत्त पंजाब।

—सभा मन्त्री

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

महर्षि दयानन्द उवाच

- जहां विषयों व अधर्म की चर्चा होती है वहां पर ब्रह्मचारी कभी खड़े न हों। भोजन छादन ऐसी रीति से करे कि जिससे कभी भी रोग, वीर्य हानि व प्रमाद न बढे। जो बुद्धि के नाश करने हारे नशा के पदार्थ हों उनको कभी ग्रहण न करे।
- ऋषि प्रणीत ग्रन्थों को इसलिए पढ़ना चाहिए कि वे (ऋषि) बड़े विद्वान्, सब शास्त्रवित् और धर्मात्मा थे, और अनृषि, अर्थात् जो अल्प शास्त्र पढ़े है और जिनका आत्मा पक्षपात सहित है उनके बनाये हुए ग्रन्थ भी वैसे ही है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष। ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३१ अंक ४१] दयानन्दाब्द १६९ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९४ कार्तिक शु० ८ सं० २०५० २१ नवम्बर १९९३

चार हिन्दू परिवारों को 'खाली पेट व खाली जेब' पाकिस्तान धकेला गया

अम्बाला शहर, १५ नवम्बर पाकिस्तान में रहने वाले हिन्दुओं पर तो अत्याचार के किस्से सुने ही थे, परन्तु वहां के अत्याचारों से अपनी जान बचा कर किसी तरह भारतवर्ष मे पहुंचने वाले चार हिन्दू परिवारों के लगभग ३० सदस्यों ने यह कभी सोचा भी न था कि उन्हें यहां भी चैन से रहने नहीं दिया जाएगा। इन ३० सदस्यों, जिनमें महिलाएं, जवान लड़कियां तथा छोटे छोटे बच्चे भी हैं, को गत दिवस जबरदस्ती पुलिस की बस में बिठा कर भूखे-प्यासे व सर्दी से ठिठुरते हुए पाकिस्तान की ओर रवाना कर दिए जाने की सूचना प्राप्त हुई है और फिर यह प्रयास भी उस समय किया गया, जबकि इन हिन्दू विस्थापितों को पुलिस अधीक्षक अम्बाला द्वारा भारत में बने रहने हेतु दी गई अनुमति की अवधि अभी समाप्त नहीं हुई थी तथा केन्द्रीय सरकार ने भी पुलिस अधीक्षक को निर्देश दिए थे कि इन हिन्दू परिवारो को तब तक अम्बाला में ही रहने दिया जाए जब तक इनके विषय मे केंद्रीय सरकार कोई निर्णय न ले ले।

अम्बाला शहर के साथ लगते रत्नगढ़ नामक गांव में पाकिस्तान से आ बसे इन चार हिन्दू परिवारों के मुखिया श्री चुन्नीलाल, बाबूराम, चमनलाल व मुन्शीराम तथा अन्य सदस्यों ने इस संवाददाता को अपनी व्यथा (कथा) सुनाते हुए कहा कि वे सभी स्यालकोट (पाकिस्तान) के रहने वाले मेघ बिरादरी (जो बुनकर का काम करते हैं) के लोग हैं। पाकिस्तान में उन्हें जबरदस्ती धर्म परिवर्तन के लिए मजबूर किया जाता था तथा उनके आस-पास रहने वाले लगभग २० हिन्दू परिवारों का धर्म परिवर्तन किया जा चुका था ६ दिसम्बर को अयोध्या में हुई घटना के बाद तो पाकिस्तान में हिन्दुओं की स्थिति और भी खराब हो गई है। उन्होंने बताया कि वहां रहने वाले हिन्दुओं पर इन दिनों किए जा रहे हमलों से बचने के लिए ये लोग अपने मकानों को ताले लगा कर पास पड़ौस के घरों मे छुपे रहे।

इन लोगों का कहना है कि पाकिस्तान सरकार से किसी तरह एक मास का वीजा प्राप्त करके अपना सब कुछ वहीं छोड़ कर वे भारत पहुंचने में सफल हो गए। इन लोगों के कुछ रिश्तेदार अम्बाला तथा जालन्धर में भी रहते हैं। इन परिवारों के एक प्रमुख मुंशीराम का कहना है कि उनका तो एक विवाहित सगा पुत्र जालन्धर में रहता है। जब लोग भारत आए थे तो इनकी संख्या ३३ थी परन्तु यहां इन लोगों ने तीन लड़कियों का विवाह विधिवत रूप से कर दिया है। अभी विवाह योग्य २ अन्य लड़किया भी इनके साथ हैं।

इन लोगों के भारत मे स्थायी निवास की व्यवस्था अम्बाला शहर के कुछ समाज सेवी लोग कराने में इनकी सहायता कर रहे हैं तथा इस विषय में केन्द्रीय सरकार के गृह व विदेश विभागों में भी कार्रवाइयां चल रही हैं परन्तु इन विस्थापितों का कहना है कि गत दिवस उन्हें अम्बाला पुलिस अधीक्षक के कार्यालय में प्रातः यह कहकर बुलाया गया कि उनके भारत में स्थायी निवास हेतु कार्रवाई की जाएगी। इन सभी सदस्यों को काफी समय तक वहीं पर रोक कर रखा गया। नगर के कुछ लोगों को जब इसकी जानकारी मिली तो उन्हें शंका उत्पन्न हुई कि कहीं इन्हें वापस पाकिस्तान भेजने की योजना न बना ली गई हो।

उनकी यह शंका सही निकली जब सायंकाल को पता चला कि उन तीस लोगों को बिना अपना सामान लिए पुलिस बस में बिठाकर पंजाब की भारत-पाकिस्तान सीमा की ओर रवाना कर दिया गया है। नगर के इन संभ्रांत लोगों ने अम्बाला के जिलाधीश से सम्पर्क किया कि उन लोगों के साथ जवान लड़कियां तथा छोटे-छोटे बच्चे है तथा इस अवस्था में (खाली पेट व खाली जेब) उनका पाकिस्तान पहुंच कर जीवित रहना असम्भव है, क्योंकि अब इन लोगों को सन्देह की दृष्टि से देखा जाएगा। इस पर जिलाधीश के प्रयासों व अन्य लोगों की सहायता से इन लोगों को ले जा रही बस के पीछे तीव्र गति से एक वाहन दौड़ाकर सराय बंजारा नामक स्थान पर इन्हे रोका गया व भूख से बिलखते तथा सर्दी में बिना गर्म कपड़ों के ठिठुरते इन लोगों को वापस अम्बाला शहर लाया गया।

इन लोगों के भारत मे स्थायी निवास हेतु किए गए प्रयासों के

(शेष पृष्ठ १२ पर)

सभाप्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा प्रधानमन्त्री को विशेष-पत्र

अम्बाला की इस घटना पर सभा-प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने प्रधानमन्त्री श्री पी.वी नरसिंहा राव, गृहमंत्री तथा विदेश मन्त्री श्री भाटिया को तत्काल पत्र लिखकर इन हिन्दू परिवारों की रक्षा एवं भारत मे स्थाई निवास तथा उन अफसरों के खिलाफ जांच करने का अनुरोध किया है, जिन्होंने इन परिवारो को जबरन पाकिस्तान भेजने का कदम उठाया। प्रधानमन्त्री को लिखा गया विशेष पत्र सार्वदेशिक के अगले अंक मे प्रकाशित किया जायेगा।

संपादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

महर्षि दयानन्द निर्वाण उत्सव ससमारोह पूर्वक सम्पन्न

आर्य महिला सभा दिल्ली द्वारा २५००० रुपए भूकम्प पीड़ितों की सहायतार्थ भेंट

वैदिक विद्वान डा० सुधीर कुमार गुप्त सम्मानित

नई दिल्ली १३ नवम्बर। आर्य समाज के संस्थापक तथा महान धार्मिक एवं समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाणोत्सव दिल्ली की सैकड़ो आर्य समाजो मे समारोह पूर्वक मनाया गया। मुख्य समारोह आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्वावधान में रामलीला मैदान मे आयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने की।

स्वामी जी ने महाराष्ट्र के विनाशकारी भूकम्प पीड़ित क्षेत्रो मे आर्य समाज द्वारा किये जा रहे सहायता कार्यों का उल्लेख करते हुए कहा कि निकट भविष्य में सार्वदेशिक सभा के द्वारा अनाथ तथा बेघर हुए बच्चो के संरक्षणार्थ लातूर या आसपास के किसी क्षेत्र में एक आर्य बाल गृह अथवा छात्रावास प्रारम्भ किया जाएगा। सभा के वरिष्ठ उप-प्रधान श्री वन्देमातरम रामचन्द्रराव सहायता कार्यों के निरीक्षण के लिए कई बार लातूर के सहायता शिविरों का दौरा कर चुके हैं।

स्वामी जी ने आर्य जनता को सम्बोधित करते हुए महाराष्ट्र में आये विनाशकारी भूकम्प से प्रभावित परिवारो के लिए सहायता की अपील की। इस अवसर पर आर्य महिला सभा दिल्ली की ओर से २५०००) रु० की राशि स्वामी जी को भूकम्प पीड़ितो की सहायतार्थ प्रदान की गई। स्वामी जी ने 'वैदिक प्रवचन' नामक एक पुस्तक का भी विमोचन किया।

ऋषि निर्वाणोत्सव के समारोह को हरियाणा के विधायक डा० रामप्रकाश गुप्त के अतिरिक्त वैदिक विद्वान प० वाचस्पति उपाध्याय श्री प्रेमचन्द्र श्रीधर तथा प्रो० उत्तमचन्द शरर आदि ने भी सम्बोधित किया। वक्ताओं ने ऋषि दयानन्द के जीवन से प्रेरणा लेते हुए राष्ट्रीय एकता भाई चारा तथा विश्व बन्धुता पर प्रकाश डाला। राष्ट्र के प्रमुख वैदिक विद्वान श्री सुधीर कुमार गुप्त को इस अवसर पर प्रशस्ति पत्र तथा नकद राशि देकर सम्मानित किया गया। समारोह का मंच संचालन आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री डा० शिवकुमार शास्त्री ने किया।

भूकम्प पीड़ितों की दिल खोल कर सहायता करें (४)

दान दाताओं की सूची

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली	५००००.००
श्रीमती कैलाशवती ए-१।२८० सफदरजंग एनक्लेव नई दिल्ली	२१००.००
शंकरलाल बोहरी ए-१।२८० सफदरजंग एन्क्लेव नई दिल्ली	२१००.००
आर्य समाज " "	१०००.००
केन्द्रीय आर्य समिति द्वारा श्री पं० इन्द्रराजी	२१०००.००
आर्य समाज केराकत जौनपुर	४००.००
आर्यसमाज दरियागंज नई दिल्ली	२०१.००
श्री विद्याप्रकाश ४८ चन्द्रलोक नई दिल्ली	१०१.००
सत्यप्रकाश शर्मा, नगला बराह बदायूं	१५०.००
लक्ष्मीदेवी कृष्णलाल आर्य, चैरिट्रस्ट सुन्दरनगर (हि. प्र.)	१०००.००
आर्य समाज हसनपुर, मुरादाबाद	२४८०.००
दयानन्द आर्य बालिका म० वि० ब्यावर (राज०)	४३६१.००
गोदावरी आर्य कन्या वरिष्ठ उ० मा० विद्यालय ब्यावर (राज)	१८०१.००
दयानन्द बाल मन्दिर ब्यावर (राज०)	१००१.००
वैदिक शोध संस्थान वेदमन्दिर, मुक्ताप्रसाद नगर बीकानेर	२५०० ००
श्री बारेलाल, कार्यालय अधीक्षक डाकघर मैनपुरी	११ ००
इन्द्रजीत डोरा, उड़ीसा	१०१.००
रणजीत सिंह, हरड़, फतहपुर, मुजफ्फर नगर	१०१.००
श्याम बिहारी आर्य, ब्रह्म नगर भरथना इटावा	१०० ००
कर्मचन्द बोस	८४३ ००
कैन्टूनमेंट आर्य समाज सदर बाजार लखनऊ	४००.००
महिला कैन्टूनमेन्ट आर्य समाज, सदर बाजार लखनऊ	१०००.००
आर्य समाज दयानन्द बाजार, निजामाबाद	१२५०.००
इन्द्रलाल मोतीलाल आर्य, सुरेन्द्रनगर	१००.००
श्री एच. कै. गुप्ता, दरीबा दिल्ली	२०१.००
सर्वदेवी कन्या उ० मा० विद्यालय अमरोहा मुरादाबाद	१४००.००
डा० बी० एस० रावत फर्श बाजार शाहदरा दिल्ली	१०१.००
श्रीमती शारदादेवी, बी-ए-५८ योजना विहार दिल्ली	१०१.००
श्रीमती मायादेवी, फर्श बाजार शाहदरा दिल्ली	११.००
आर्य समाज राधापुरी दिल्ली	११००.००
आर्य समाज परेव जिला पटना	१२१.००
श्रीमती ईश्वरदेवी आर्य, राजेन्द्रनगर पटना	२०१.००
आर्य समाज कोटली कालोनी जम्मू	१८००.००
ज्ञान दीपक सभा ब्रिसबेन, आस्ट्रेलिया	५००.००
ओ.एस. गर्ग द्वारा बनवारीलाल एण्ड सन्स स्टाफ रोड अम्बाला कैंट	१००.००
ओमप्रकाश पारीक सैन्ट्रल बैंक आफ इण्डिया अहमदाबाद	१००.००
आर्य समाज औरैया इटावा	४०५.००
बालकृष्ण आर्य हाउसिंग कालोनी, आदित्यपुर सिंहभूमि	११.००

सामवेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

सबगा। आर्य वीर बाल विद्यालय के सौजन्य से २८ अक्तूबर से १४ नवम्बर तक सामवेद पारायण यज्ञ श्री सुखपाल जी आर्य आचार्य आर्य वीर बाल विद्यालय सबगा (मेरठ) के ब्रह्मत्व मे सम्पन्न हुआ। ग्रामीण जनता में वैदिक धर्म के प्रति श्रद्धा और विश्वास जगाने में सफलता प्राप्त की।

मुस्लिम पर्सनल कानून मण्डल (पर्सनल ला बोर्ड) की विघटनकारी गतिविधियां

पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव, हैदराबाद (आ० प्र०)

कुछ लोगो का मानना है कि राजनीति एक ऐसा खेल है, जो केवल मनोरंजन के लिए खेला जाता है। लेकिन आजकल भारत में, और देखा जाये तो सारी दुनिया में, राजनीति का जो खेल खेला जा रहा है, वह ऐसा नहीं है। भारत को विरासत में एक ऐसा मानव समाज मिला था जो नस्ल अथवा जाति की दृष्टि से एक था लेकिन जिसे कुछ बाहरी विघटनकारी तत्वों ने, जो हमारे देश के शत्रु थे, जनता को गुमराह करके, लोगों के विचारों में मतभेद पैदा करके, हमारी राष्ट्रीयता में दरार डाल कर, अखण्ड भारत को खंडित कर, दो स्वतन्त्र राज्यों में बांट दिया।

पाकिस्तान का जन्म अंग्रेजों की विश्वासघाती नीतियों के कारण ही हुआ था, तथा हमारे ही देश के कुछ लोगों की कायरता ने, जो अपने आपको राजनेता मानते थे, ब्रिटिश विश्वासघात को शह दी जिससे देश का विभाजन हुआ। दक्षिण भारत में भी एक अलग मुस्लिम राज्य बनाने का प्रयत्न हुआ था, जिसे आर्थर लोथियन ने "तीसरे अधिराज्य" की संज्ञा दी थी। तत्कालीन ब्रिटिश कन्जरवेटिव पार्टी तथा सर वाल्टर मोन्कटन ने निजाम को दक्षिण में एक प्रभुसत्ता पूर्ण मुस्लिम राज्य की स्थापना करने के लिए हर सम्भव सहायता दी थी।

जनता ने विद्रोह किया और भारत सरकार को "पुलिस कार्यवाही" का सहारा लेना पड़ा जिसने देश को कमजोर बनाने वाले विघटनकारी तत्वों के प्रयास कों विफल कर दिया। पाकिस्तान के प्रादुर्भाव को रोकने में तो हम असफल रहे, किन्तु उसकी पुनरावृत्ति को रोकने में हम अवश्य सफल हुए। आज हमें आवश्यकता है प्रतिज्ञा करने की—

१—कि हमारा देश अविभाजित और अखण्ड रहेगा।

२—कि हमारा राष्ट्र संगठित होकर एक रहेगा।

हमारी सेना देश की सीमाओं की सुरक्षा के लिए सदा सतर्क है, जिससे कोई भी आक्रामक हमारे देश के अन्दर प्रवेश करने की हिम्मत नहीं कर सकता। लेकिन दुर्भाग्य से देश के अन्दर ही ऐसे भड़काने वाले राष्ट्र विरोधी तत्व मौजूद हैं, जो इस बात के दुष्प्रचार मे लगे हुए हैं कि भारत एक ऐसा देश है जहां कई प्रजातियां रहती हैं, जिनमें हमेशा लड़ाई झगड़े चलते रहते हैं, और जो अपनी-अपनी अलग पहचान बनाये रखना चाहते हैं। इस प्रकार वे देश को पुन: विभाजित करने का षड़यन्त्र रच रहे है।

हमारे संविधान के बनाने वालों ने भी गलती की। द्वि-राष्ट्र का सिद्धान्त स्वीकार करके, पाकिस्तान बन जाने के बाद भी, जन साधारण के कुछ समुदायों को अल्पसंख्यक स्वीकार करने की संवैधानिक वचन बद्धता प्रदान की, तथा धर्म एवं संस्कृति के आधार पर उन्हें अन्य सम्प्रदायों की तुलना में विशेष दर्जा दिया।

देश को खण्डित करने वाली इस वचन बद्धता ने अब भस्मासुर का रूप धारण कर संविधान के निर्माताओं को ही खतरे में डाल दिया है। मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड ने देश में मुस्लिम न्यायालयों की स्थापना करने का जो निर्णय लिया है, वह इसी खतरे की घण्टी है। यह शुरुआत है, दारुल-हरब (गैर मुस्लिम शासित राज्य) को दारुल इस्लाम (मुस्लिम शासित राज्य) बनाने की। वे चाहते हैं कि देश के ग्रामीण क्षेत्र भी इन न्यायालयों के नियंत्रण में आ जावे, और इस प्रकार, शहरी तथा ग्रामीण, दोनों क्षेत्रों में टकराव की स्थिति पैदा कर दी जाये।

कुछ लोगों का मत है कि इस दुष्कार्य का उद्देश्य देश में साम्प्रदायिक सद्‌भाव को नष्ट करके देश की प्रगति में बाधा पहुंचाना है। मैं इस विचार से पूर्णत: सहमत हूं। केन्द्रीय सरकार ने धर्म को राजनीति से अलग करने सम्बन्धी अपने अध्यादेश को जल्दी पारित कराने के लिए बहुत प्रयत्न किया। क्या इसका उद्देश्य मात्र जनता का ध्यान देशव्यापी भ्रष्टाचार से हटाने का

> संविधान के कुछ अध्यादेशों का, यदि सही तरीके से पालन किया जाए, तो भारत की जनता में धर्म भाषा और क्षेत्र की भावनाओं से ऊपर उठ कर आपसी भाईचारे और एकता को बल मिलेगा। हमने उन अध्यादेशों की उपेक्षा ही की। गांधी जी ने देश की जनता को बहुसंख्यक तथा अल्पसंख्यक समुदायों में विभाजित करने का विरोध किया था। वे एकता की ऐसी भावना को पैदा करना चाहते थे जिसमें न बहुसंख्यक होते न अल्प-संख्यक। हम सब ही धरती माता के पुत्र हैं। हमारी धार्मिक मान्यतायें अलग-अलग हो सकती हैं, किन्तु हमारी राष्ट्रीयता नहीं।

था ? मैंने सरकार से इस प्रश्न का उत्तर जानना चाहा था। धर्म को राजनीति से अलग करना हर समस्या का इलाज नहीं है, जो आज देश के सामने मुंह फैलाये खड़ी हैं। हमारा संविधान अच्छी और बुरी, दोनों ही प्रकार की नीतियों का सम्मिश्रण बन गया है।

संविधान के कुछ अध्यादेशों का, यदि सही तरीके से पालन किया जावे, तो भारत की जनता में धर्म, भाषा और क्षेत्र की भावनाओं से ऊपर उठकर आपसी भाई चारे और एकता को बल मिलेगा। हमने उन अध्यादेशों की उपेक्षा ही की। गांधी जी ने देश की जनता को बहु-संख्यक तथा अल्पसंख्यक समुदायों में विभाजित करने का विरोध किया था। वे एकता की ऐसी भावना को पैदा करना चाहते थे जिनमें न बहुसंख्यक होते न अल्प संख्यक। हम सब ही धरती माता के पुत्र हैं। हमारी धार्मिक मान्यतायें अलग-अलग हो सकती हैं, किन्तु हमारी राष्ट्रीयता नहीं ?

मुस्लिम पर्सनल कानून मंडल द्वारा जो नई चाल चली गयी है, उसका एक मात्र उद्देश्य देश की जनता को विभाजित करके मुसलमानों के लिए केवल इस्लामी कानून को ही लागू करने का अधिकार दिलाना है। वह भी एक ऐसे देश में जिसने धर्म निरपेक्षता के पालन करने का निश्चय किया हुआ है। इस अल्पसंख्यक समुदाय को समझना चाहिए कि यदि देश की बहुसंख्यक जनता ने उनके इस कार्य के विरुद्ध जवाबी कार्यवाही की तो उसका परिणाम क्या होगा ? मैं चाहता हूं कि भारतीय मुसलमान वर्तमान साम्प्रदायिक तनाव को और बढ़ाने के लिए कोई गलत काम नहीं करेंगे।

देश का इतिहास इस बात का साक्षी है कि मुसलमानों ने, भारतीय मूल के होते हुए भी, राष्ट्र की धारा से अपने आपको हमेशा दूर रखने का प्रयत्न किया। सर सैयद अहमद खां और जिन्ना की भूमिका इस बात का उदाहरण हैं। भारत कभी भी दारूल इस्लाम (इस्लाम शासित देश) नहीं बनेगा। देश के सभी वर्ग, सम्प्रदाय और जाति के लोगों को यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए। बहुसंख्यक समाज ने पाकिस्तान के निर्माण को तो स्वीकार कर लिया है, और वह उसके साथ अच्छे सम्बन्ध भी रखना चाहता है, लेकिन वह देश के और विभाजन को किसी भी आधार पर बर्दाश्त नहीं करेगा।

स्थिति की गम्भीरता को समझते हुए सरकार को इस विषय में सख्त कदम उठाने चाहिएं, जैसाकि उसने हैदराबाद के निजाम के साथ किया था। मुस्लिम पर्सनल कानून मण्डल के अध्यक्ष ने मण्डल के निर्णय को हानि रहित सिद्ध करने का प्रयास किया है। लेकिन मैं उन्हें बताना चाहता हूं कि उनके इस निर्णय का जो विनाशक प्रभाव देश की अखण्डता, एकता और प्रभुसत्ता पर पड़ेगा, वह किसी की भी आंख से छिपा हुआ नहीं है।

—मूल अंग्रेजी से अनुदित/अनुवादक—सुरेश चन्द्र पाठक

कश्मीर और अमरीकी नीति

इन्द्र कुमार गुजराल

अमरीका विदेश विभाग की सुश्री राफेल ने काश्मीर के बारे में बयान देकर नया विवाद पैदा कर दिया है। उन्होंने अपने बंगलादेश दौरे में वही बात दोहराई। उन्होंने पाकिस्तान की प्रधान मन्त्री श्रीमती बेनजीर भुट्टो से भी बातें की है। भूतपूर्व विदेशमन्त्री श्री गुजराल का कहना है कि राफेल के बयान का भले ही कोई तात्कालिक प्रभाव न हो, लेकिन इससे यह संकेत जरूर मिलता है कि अमरीका दक्षिण एशिया में सक्रिय होना चाहता है। इसलिए सतर्कता और सजगता जरूरी है।

भारतीय जनता ने अमरीका के विदेश विभाग की सुश्री राफेल के काश्मीर के सम्बन्ध में दिये गये इस बयान को ठुकरा दिया है, जिसमें कहा गया था कि अमरीका कश्मीर समस्या को नजर अन्दाज नहीं कर सकता संभव है कि कुछ विदेशी मामलों की विशेषज्ञ सुश्री राफेल के उपरोक्त बयान को गम्भीरता से न लें। वे यह कह दें कि ऐसा बयान किसी अनुभव- हीन अधिकारी का है अतः इसे गम्भीरता से लेने की जरूरत नहीं है। सुश्री राफेल, जिनके पति की पाकिस्तान के राष्ट्रपति जिया-उल-हक के साथ एक विमान दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी, ने शिमला समझौते को पुराना और अप्रासंगिक करार' दिया था। वह यह बयान देते समय इस तथ्य को नजर-अन्दाज कर गई कि इसी शिमला समझौते की बदौलत इस उप-महाद्वीप में लम्बे समय तक शांति रही। दोनों देशों के बीच कटुता और तनाव का दौर फिर से उस समय शुरू हुआ जब जिया सरकार ने भारत में आतंकवादी गति-विधियो को समर्थन देना बन्द कर दिया।

शिमला समझौते की खास बात

शिमला समझौते की खास बात यही है कि यह दोनों देशो के बीच समय-समय पर उठने वाले विवादो का शांतिपूर्ण तरीके से हल करने का अवसर देता है। इस महत्वपूर्ण समझौते पर उस समय हस्ताक्षर किये गये थे जब भारत पाकिस्तान से अपनी शर्तों को मनवाने की स्थिति में था।

इस समझौते पर हस्ताक्षर करते समय श्रीमती इन्दिरा गांधी और उनके सलाहकारों के दिमाग मे यह बात थी कि दोनों पड़ोसी देश शांति और सह-योग द्वारा भविष्य मे लाभ उठायेंगे।

इसमे कोई दो राय नही हैं कि अमरीका के विदेश विभाग की फाइलो में पाकिस्तान के भूतपूर्व राष्ट्रपति जेड ए. भुट्टो का वह वायदा दर्ज हो जो उन्होंने श्रीमती इन्दिरा गाधी के साथ किया था। जिसमे उन्होंने कहा था कि वे वास्तविक नियन्त्रण रेखा को दोनो देशों के बीच की सीमा मानेंगे।

भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री मोरारजी देसाई ने भी अपने प्रधानमन्त्रित्व काल में शिमला समझौते की भावना को गम्भीरता से समझा था। उन्होने तमाम दबावों के बावजूद जनरल जिया से श्री भुट्टो की फासी की सजा खत्म करने की अपील नहीं की। हालाकि मुझसे रूसी प्रधानमन्त्री कोसिगिन ने कहा था कि मैं श्री देसाई को श्री भुट्टो को माफ करने के लिए कह दूं। पर, श्री देसाई ने ऐसा नही किया क्योंकि वे मानते थे कि यदि उन्होने जनरल जिया से किसी तरह की अपील की तो वह पाकिस्तान के आंतरिक मामलों मे हस्त-क्षेप होगा। तब श्री कोसिगिन श्री देसाई के इस फैसले से बहुत आश्चर्यचकित हुए थे।

यदि अमरीकी अधिकारी यह मानते हैं कि पाकिस्तान शिमला समझौते को नहीं मानता, तो सुश्री राफेल अपने कश्मीर विवाद पर विवादास्पद विचार अपनी पाकिस्तान यात्रा के दौरान व्यक्त कर सकती थी। पर आश्चर्य की बात तो यह है कि सुश्री राफेल ने उस स्वाधीनता कानून का प्रतिकार किया। जिसके कारण पाकिस्तान स्थापित हुआ था। सुश्री राफेल ने उपरोक्त बयान पाकिस्तान की नवनिर्वाचित प्रधानमन्त्री से मिले बिना ही दे दिया।

अमरीका की काश्मीर नीति

अमरीकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन के संयुक्त राष्ट्र में भाषण तथा सुश्री राफेल के कश्मीर के मसले पर दिये बयान स्पष्ट करते हैं कि अमरीका की इस उप-महाद्वीप के बारे में नीति कम-से-कम भारत के पक्ष में नहीं है। ये दोनों बयान अमरीका की कश्मीर नीति को ही स्पष्ट करते हैं।

अमरीका की विदेश नीति में बुद्धिजीवियों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। अमरीका में नयी सरकार बनने के साथ ही वहां अलग-अलग सवालों पर नीतियों में कभी-कभी भारी परिवर्तन भी हो जाते हैं। हालांकि शीतयुद्ध काल में नीति बनाने में अधिक सुविधा रहती थी। तब 'मित्रों' और 'शत्रुओं' की पहचान आसानी से हो जाती थी।

पर शीत युद्ध के बाद तो हालात बिल्कुल ही बदल गए। अब अमरीका में आर्थिक मंदी का दौर चल रहा है। इससे अमरीकी राष्ट्रपति त्रस्त है।

शीत युद्ध की समाप्ति

शीत युद्ध खाड़ी युद्ध के बीच दिसम्बर १९९० में समाप्त हो गया था। बुश प्रशासन चाहता था कि अमरीका का एशियाई देशों से सहयोग बढ़े। यहा पर सद्दाम हुसैन द्वारा की गई बेवकूफी का जिक्र करना भी अनुचित नहीं होगा। उसने खाड़ी युद्ध भड़का दिया। खाड़ी युद्ध के कारण कुवैत में काम कर रहे करीब ३ लाख भारतीय मजदूरों को वहां से निकालना भारतीय विदेश नीति की सफलता ही थी।

भारत और अमरीका के सम्बन्धों में खाड़ी संकट के दौरान मजबूती आई थी। यह बात मुझे श्री जेम्सबेकर ने कही थी जब मैंने वी.पी. सिंह सर-कार के गिरने के बाद अपना पद छोड़ा था। तब अमरीकी विमानों को भारत में ईंधन लेने की अनुमति दी गई थी।

तब अमरीका तथा भारत के बीच सैन्य क्षेत्र में सहयोग के नये युग का सूत्रपात हुआ। इसके साथ ही हमारी सुरक्षा के सवाल पर अपनी एक अलग सोच भी है जो पूर्व के अनुभवो पर आधारित हैं। जो हमें उप-महाद्वीप से हटकर भी सोचने के लिए बाध्य करती है। भारतीय सुरक्षा के नीति-निर्धा-रको की कभी यह सोच नहीं रही कि किसी देश का हिस्सा हड़पा जाए।

भारत की इस क्षेत्र तथा विश्व मे स्थिति पर अमरीकी सोच का भी जायजा ले लेना चाहिए। विशेष रूप से इसलिए क्योंकि अमरीका अब विश्व मे एकमात्र महाशक्ति है। अमरीका के कुछ बुद्धिजीवियों की राय है कि अम-रीका को दक्षिण एशिया में अपनी भूमिका सिर्फ इतनी रखनी चाहिए कि उसके हित सधते रहे। कुछ इसी तरह की सोच से रंगे हुए बुश प्रशासन में शीर्ष अधिकारी श्री गेट्स सन १९९० में इस्लामाबाद तथा नई दिल्ली आए थे। तब उनकी यात्रा का मकसद भारत और पाकिस्तान के नीति-निर्धारकों से मन्त्रणा करना था। श्री गेट्स मुझसे इस्लामाबाद से लौटने के बाद मिले। श्री गेट्स पाकिस्तान यात्रा से लौटने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंच चुके थे। कि पाकिस्तान भारत में आतंकवादी गतिविधियों को बढ़ावा दे रहा है। श्री गेट्स को पाकिस्तान मे एक शीर्ष अधिकारी ने यहां तक बताया था कि पाकिस्तान ने ३६ आतंकवादी प्रशिक्षण शिविरों को बन्द कर दिया है श्री गेट्स चाहते थे कि भारत ऐसी कोई पहल करे ताकि दोनों देशों में सैन्य टकराव की कोई भी संभावना खत्म हो जाए। निस्संदेह यह एक ठोस सलाह थी। भारत ने तुरन्त अपनी ओर से कई सुझाव रख दिये ताकि दोनों में किसी भी तरह की कटुता न रहे। उसके बाद दोनों देशों के बीच विदेश मन्त्री स्तर पर

(शेष पृष्ठ १२ पर)

काश्मीर भारत का पूर्ण अभिन्न अंग नहीं है

—डा० योगेन्द्र कुमार शास्त्री (जम्मू)

कहने के लिए तो सत्तारूढ़ नेता बड़े ही भ्रामक शब्दों में कहते रहते हैं कि काश्मीर भारत का अभिन्न अंग है परन्तु सच्चाई यह नहीं है। भारत का प्रधान मन्त्री तथा भारत का राष्ट्रपति काश्मीर का नागरिक नहीं है और न कभी बन सकते हैं।

काश्मीरी को छोड़कर भारत का कोई भी बड़े से बड़ा नेता काश्मीर में विधान सभा के चुनाव में खड़ा नहीं हो सकता।

भारत का प्रधानमन्त्री या राष्ट्रपति एक इन्च भूमि काश्मीर में नहीं खरीद सकता।

काश्मीर का संविधान पृथक है जिसमे भारत की सरकार कोई परिवर्तन नहीं कर सकती।

काश्मीर की लड़कियां काश्मीर से बाहर शादी करने पर काश्मीर की नागरिक नहीं रहती।

विदेशों में १०, १२ वर्षों के उपरान्त भारत का व्यक्ति वहां का नागरिक बन सकता है परन्तु सन १९४७ के बाद १००, २०० वर्ष काश्मीर में रहने के बाद भी यहां का नागरिक नहीं बन सकता।

शेख अब्दुल्ला ने अपने मुख्यमन्त्री काल में अपनी विधानसभा में यह विधेयक पास कराया था कि पाकिस्तान में जो व्यक्ति जम्मू कश्मीर से चला गया है वह अब भी काश्मीर का नागरिक है और वह अपनी सम्पत्ति को काश्मीर में आकर ले सकता है तथा यहां बस सकता है। यह दूसरी बात है कि यह विधेयक पूरी तरह से पास नहीं हो सका।

कांग्रेस के नेताओं ने काश्मीर के विषय में जान बूझकर अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारी है।

देशभक्त महाराजा हरिसिंह के द्वारा भारत में काश्मीर के विलय पर हस्ताक्षर करने के बाद भी जनमत कराने की बात को स्वीकार करना एक महा भूल थी तथाकथित आजाद काश्मीर को पाकिस्तान से तीन युद्धों में भी न ले सकना कांग्रेस की कायरता और अदूरदर्शिता का द्योतक है। आर्यसमाज के एवं सनातन धर्म के मन्दिरों को जब काश्मीर के उग्रवादियों ने जलाया था तब सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री आनन्दबोध सरस्वती के द्वारा चेतावनी देने पर भी भारत सरकार नहीं जगी थी।

फारुक अब्दुल्ला ने तो साफ-साफ कह दिया था कि हजूरीबाग आर्यसमाज मन्दिर को दोबारा मत बनाओ इसमें कोई फिर आग लगा देगा। वैसा ही हुआ दोबारा उसमे आग लगाने की कोशिश की गई। रेनावाड़ी डी. ए. वी. स्कूल को दो बार जलाया गया। हिन्दुओ को योजना बद्ध तरीके से अत्याचारों के द्वारा भगा दिया गया।

अब भी जो कांग्रेस की नीतियां काश्मीर के विषय में चल रही हैं वे सब नीतियां कायरतापूर्ण अदूरदर्शी, आत्मघाती, और उपहासास्पद हैं।

नीतिकारों ने कहा है कि रोग को और शत्रु को उत्पन्न होते ही समाप्त कर दो नहीं तो ये असाध्य होकर आपको समाप्त कर देंगे। यही गल्ती कांग्रेस सरकार कर बैठी है जिसके कारण काश्मीर का रोग असाध्य हो गया है।

साम, दाम, भेद सब नीतियां कांग्रेस ने अपना ली है। अब तो केवल दण्ड नीति की ही आवश्यकता है। भारत की बहादुर सेना के लिए किसी बहादुर नेता की आवश्यकता है। जो इस समय देशद्रोहियों को वीरता से एवं सख्ती से पीस कर रख दे।

बहादुर कब किसी का आसरा अहसान लेते हैं।
वही कर गुजरते हैं जो दिल मे ठान लेते हैं॥

काश्मीर को सार्थक एवं वास्तविक अभिन्न अंग बनाने के लिए किसी निर्णायक दृढ़ संकल्प की आवश्यकता है। केन्द्र सरकार काश्मीर में भारत विरोधियों को रिश्तेदारों की तरह पालती रही है और वे लोग खाते हैं भारत का और गीत गाते हैं पाकिस्तान का।

काश्मीर में खुले आम भारतीय तिरंगे को जलाया गया है। भारतीय संविधान की धज्जियां उड़ाई जा रही हैं। कानून का सरे आम उल्लंघन हो रहा है। भेड़ बकरियों की तरह वहां से हिन्दुओं को भगा दिया गया है। तब भी कांग्रेसी नेता कहते हैं कि काश्मीर भारत का अभिन्न अंग है।

जब तक धारा ३७० को समाप्त नहीं किया जाता तथा तुष्टिकरण की नीति को त्यागकर देशद्रोहियों को सही दण्ड नहीं दिया जाता, जब तक पाकिस्तान के कुत्सित इरादों को बहादुरी के साथ नहीं कुचला जाता, और दोबारा हिन्दुओ को सुरक्षित रूप में नहीं बसाया जाता तब तक कैसे कहा जा सकता है कि काश्मीर भारत का अभिन्न अंग है।

हे भगवान इस समय हमारे राष्ट्र को कोई नीतिज्ञ, बुद्धिमान, बहादुर दूरदर्शी नेता प्रदान कर जिससे भारतमाता के मस्तिष्क काश्मीर की सुरक्षा हो सके।

भारत पर २६६१ अरब रुपए का विदेशी कर्ज

नई दिल्ली, ४ नवम्बर (वार्ता) देश पर वर्ष १९९२-९३ के अन्त में कुल ८५ अरब ४० करोड़ डालर अर्थात २६६१ अरब ६७ करोड़ रुपये का विदेशी कर्ज था। इसमें रक्षा कर्ज भी शामिल है। भारत पर विदेशी कर्ज के बारे में वित्त मन्त्रालय द्वारा जारी पहली रिपोर्ट के अनुसार १९८० के दशक के मध्य में देश पर विदेशी कर्ज का बोझ बढ़ा।

यद्यपि वर्ष १९८९-९० से पहले के रक्षा कर्ज से सम्बन्धित आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं फिर भी रिपोर्ट के अनुसार वर्ष १९८०-८१ में देश पर साढ़े २३ अरब डालर और १९८५-८६ में ३७ अरब ३५ करोड़ डालर का कर्ज था जो १९८९-९० में बढ़ कर ७४ अरब ८७ करोड़ डालर हो गया।

रिपोर्ट के आमुख में वित्त मन्त्री डा० मनमोहन सिंह ने कहा है कि परम्परागत रूप से हमारा देश पूंजी निवेश के लिए घरेलू बचत पर ही सर्वाधिक निर्भर है। अस्सी के दशक के पहले विदेशी बचतों का सहयोग सकल घरेलू उत्पाद का केवल दो प्रतिशत था और यह देश के निवेश का ज्यादा से ज्यादा १० प्रतिशत हुआ करता था।

श्री सिंह ने स्वीकार किया है कि १९९०-९१ के दौरान देश को जिस गम्भीर भुगतान संतुलन का सामना करना पड़ा उससे भारत के विदेशी कर्ज के परिणाम और संरचना के बारे में चिन्ताएं बढ़ गई। यह रिपोर्ट इसी चिन्ताओ के मद्दे नजर जारी की गई और इसे वार्षिक रूप से जारी किया जायेगा।

रिपोर्ट के मुताबिक गैर रक्षा विदेशी कर्ज में १९८०-८१ से १९८५-८६ के बीच सालाना औसत दो अरब ८० करोड़ डालर की वृद्धि है। ८५-८६ से ९०-९१ के बीच यह सालाना औसतन छह अरब २० करोड़ डालर हो गया। १९९१-९२ और १९९२-९३ में गैर रक्षा विदेशी कर्ज की वृद्धि सालाना तीन अरब १० करोड़ डालर के करीब रही।

मार्च १९९३ के अन्त तक कुल २६६१ अरब ६७ करोड़ रुपये के कर्ज में ७७३ अरब ९८ करोड़ रुपये विश्व बैंक तथा अन्य बहुपक्षीय एजेन्सियों, ४८६ अरब २३ करोड़ रुपये द्विपक्षीय करार, १४९ अरब ८५ करोड़ अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, १३१ अरब २७ करोड़ निर्यात ऋण, ३६२ अरब ५१ करोड़ रुपए वाणिज्यिक उधार, २३१ अरब २४ करोड़ प्रवासी भारतीयों और एफ. सी की जमा राशियां और ३११ अरब ४९ करोड़ रुपये रूस को देय के रूप में है। ये सभी कर्ज दीर्घकालिक हैं। इसके अलावा इसमें १९५ अरब १० करोड़ रुपये के बराबर अनिवासी भारतीयों की एक साल से अधिक परिपक्वता वाली जमा राशियां तथा अन्य अल्पावधि ऋण शामिल है। २६६१ अरब ६७ करोड़ रुपये के कर्ज में २३२२ अरब १६ करोड़ रुपये का कर्ज गैर रक्षा कर्ज की श्रेणी में था।

वैदिक संस्कारों द्वारा श्रेष्ठ सन्तति तथा नवयुग निर्माण

—कृष्ण औतार, (पूर्व मन्त्री आर्य समाज) बढ़ापुर (बिजनौर)

(७ नवम्बर के अंक से आगे)

स्त्री गृह यज्ञ की, समाज यज्ञ की, राष्ट्र व विश्व यज्ञ की ब्रह्मा है। मानव सृष्टि की रचयित्री तथा उसकी संचालिका स्त्री ही तो है। यथा ब्रह्मा तथा रचना। यदि स्त्री का अपना जीवन संयम, लज्जा सुशीलता, पवित्रता आदि गुणों से युक्त होगा तो उसकी सन्तान भी शुद्ध, संयमी, धर्मात्मा एवं कर्तव्य-परायण होगी। यदि ब्रह्मा अक्षम, अबोध और अज्ञानी है तो उसकी रचना भी त्रुटिपूर्ण होगी। जिस राष्ट्र की नारी आदर्श ब्रह्मा और शिक्षिका होगी, वही राष्ट्र उन्नत हो सकता है। बच्चे की प्रथम गुरु माता ही है, पिता का नम्बर दूसरा तथा आचार्य का तीसरा स्थान है।

वेद में जहां नारी की उपरोक्त मर्यादायें कही गई है, वहां निम्न मन्त्र में राष्ट्राध्यक्षों एवं पुरुषों को भी, नारी के साथ कैसा व्यवहार करें, आदेश दिया है—

इन्द्रश्चिद् घा तदब्रवीत् स्त्रिया अशास्यं मनः।
उतो अह क्रतुं रघुम्। ऋ० ८-३३-१७

स्त्रियों का मन अशास्य है और उनका क्रतु लघु है। अतः उनके मन का शासन न किया जाए, और उनसे कठोर व भारी काम न कराया जाए। स्त्री शासन नहीं स्नेह चाहती है।

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।'

जहां स्नेह, सौहार्द और समादर के साथ स्त्रियों का पूजन (आदर-सम्मान) होता है, वहीं देवोपम सन्तान का दर्शन होता है। जहां उनके प्रति कठोरता, क्रूरता व उन पर शासन किया जाता है, वहां राक्षस विचरण करते हैं। नारी नारायण की प्रतिमा है। नारी को नमस्कार कर उसका तिरस्कार न कर।

विवाह संस्कार के पश्चात अब थोड़ा गर्भाधान संस्कार के विषय में विचार करते हैं। यह संस्कार मानव जीवन का सर्वप्रथम संस्कार है। प्रत्येक माता पिता की स्वाभाविक इच्छा होती है कि उनकी सन्तान उनसे भी अधिक श्रेष्ठ एवं महान बने, अधिक उन्नति करे। वैदिक संस्कृति इसे एक पवित्र यज्ञ मानती है और श्रेष्ठ मानव निर्माण की नींव है यह संस्कार। जबकि आज का भौतिकवादी संसार विषय तृप्ति का साधन समझता है।

ऐतरेय ऋषि ने इस सम्बन्ध में बड़े ही महत्व की बात कही है, यदि आज के पति-पत्नी इस रहस्य को समझ लें तो, जो अपनी सन्तान के बिगड़ जाने पर रोते हैं, उन्हें जीवन मे कभी रोना नहीं पड़ेगा।

'पुरुषे ह वा आदितः गर्भः भवति' (ऐतरेयोपनिषद २-१)

कहने को तो स्त्री गर्भ धारण करती है, किन्तु आदि में पुरुष मे ही गर्भ धारण होता है। क्योंकि पुरुष के सभी अंगों से तेज इकट्ठा होकर वीर्य बनता है। पुरुष जब उस वीर्य को स्त्री में सिंचित करता है तब सन्तान का जन्म होता है। इसी कारण से वल्दियत मे पिता का नाम आता है। स्त्री अपने पति की धरोहर को धारण करके उसका निर्माण करती है।

ऋषि आगे कहते है—

'स अग्रे एव कुमारं जन्मनः अग्रे अधि भावयति (२-१)

पिता अपनी सन्तान के उत्पन्न होने से पूर्व ही उसका जैसा निर्माण करना चाहता है, नक्शा बन जाता है। जन्म लेने से पूर्व ही पिता के जैसे विचार जैसा चिन्तन और जैसा संकल्प होता है, उसी प्रकार का जीवात्मा उसके वीर्य में प्रवेश कर जाता है है। समान विचार, समान विचारों को ही आकर्षित करते हैं, के सिद्धान्तानुसार।

गर्भाशय में वीर्य का आधान उतना ही पवित्र है, जितना यज्ञ वेदी में अग्नि का आधान। गर्भाधान के समय पति और पत्नी का जैसा चिंतन, प्रेषण और सेवन होता है, वैसा ही अमिट संस्कारों से युक्त गर्भस्थ जीवन होगा।

जो दम्पति कौमार्य का पालन करके विवाहित होते हैं और परस्पर निष्ठा से (पतिव्रत एवं पत्नीव्रत) रहते हुए गृहस्थ धर्म का निर्वहन करते हैं, उनकी सन्तान दिव्य गुणों से युक्त होती है। दिव्य-गुणी सन्तान हेतु पति-पत्नी डेढ़ माह पूर्व से ही जिस प्रकारके बच्चे को जन्म देना हो, उसी प्रकार के वातावरण, भोजन, दिनचर्या, साहित्य का स्वाध्याय, भवन में उसी प्रकार के महापुरुषों के चित्रादि लगाकर तैयारी करें एवं संयम से रहें।

इसके विपरीत जिस दम्पती ने विवाह से पूर्व कौमार्य भंग किया होता है और बाद में भी जो निष्ठा विहीन रहते हैं, उनकी सन्तान विकृत होती है, मन्द बुद्धि, आचार भ्रष्ट, दुर्बल एवं अल्पायु तथा आज्ञा के विपरीत चलने वाली होती है। पति को यह स्मरण रखना कि गर्भावस्था में पत्नी के साथ कामाचार गर्भस्थ बालक के साथ व्यभिचार करना है। वैदिक संस्कृति में सन्तान की कामना के अतिरिक्त स्त्री-संग को व्यभिचार माना है। गीता अध्याय १० के श्लोक २८ में योगीराज श्रीकृष्ण ने भी केवल सुसन्तान के लिये काम सेवन को परमात्मा की विभूति कहा है, जिससे सृष्टि क्रम चलता है। गीता के ही अध्याय ३ के श्लोक ३९ में रजोगुण से उत्पन्न काम को कभी न अघानेवाला मानव का सबसे बड़ा शत्रु बतलाया है।

'माता निर्माता भवति'—गर्भिणी जिस प्रकार के बालक की मां बनना चाहती है, उसे १० माह तक उसी प्रकार का स्वाध्याय, चिन्तन, दर्शन, श्रवण, आहार-विहार करना चाहिए तथा उसी प्रकार की भावनाओं और संकल्पों से युक्त होकर सदा प्रसन्नचित्त रहना चाहिए। गर्भ साधना वह साधना है जिसके द्वारा मातायें संसार को दिव्य धाम बना सकती हैं। इसमें पतिदेव एवं पूरे परिवार का सहयोग भी मिलना चाहिए।

गर्भ स्थिति के बाद दूसरे व तीसरे महीने शिशु के शारीरिक विकास के लिए पुंसवन संस्कार, छठे महीने मानसिक विकास के लिए सीमन्तोन्नयन संस्कार तथा जन्म होने पर जातकर्म संस्कार करना चाहिए। इसके बाद नामकरण के समय बच्चे का कोई सार्थक नाम रखना चाहिए। यथा नाम तथा गुण का ध्यान रखें। अन्य संस्कार भी यथा समय करें।

इन वैदिक संस्कारों को विस्तार से समझने के लिए 'संस्कार चन्द्रिका' पुस्तक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली अथवा गोविन्दराम हासानन्द पुस्तक विक्रेता, नई सड़क दिल्ली से प्राप्त करें।

गृहस्थाश्रम का वैदिक आदर्श विषय भोग का साधन नहीं है। ५० वर्ष की आयु के पश्चात अथवा जब पौत्र हो जाए तब पत्नी सहित वानप्रस्थाश्रम में प्रवेश कर आत्मकल्याण की साधना करें। ७५ वर्ष की आयु होने पर संन्यासाश्रम में प्रवेश करके विश्व कल्याण में अपना शेष जीवन लगाकर अन्त में मोक्ष प्राप्त करें।

संस्कार वपन का काल गर्भधारण के क्षण से जन्म के पश्चात ५ वर्ष तक की आयु तक है। जिसका सर्वाधिक उत्तरदायित्व माता पर है। इस सम्बन्ध में महारानी मदालसा का उदाहरण अनुकरणीय है।

महारानी मदालसा, सदाचारी, धर्मात्मा, सत्यनिष्ठ राजा ऋतु ध्वज की महारानी थी। इन्होंने अपने सभी बच्चो के सब संस्कार वैदिक रीति से सम्पन्न किये थे। महारानी गर्भावस्था में गाया करती थी 'शुद्धोसि, बुद्धोसि, निरंजनोसि, ससारमाया परिवर्जितोसि ऐ मेरे बेटे, तू शुद्ध है, बुद्ध है, संसार की माया से निर्लिप्त है। इसके अतिरिक्त वैदिक साहित्य का स्वाध्याय एवं सन्ध्योपासना करती थी। और अपने भवन में ऋषि-महर्षियों व महापुरुषों के चित्र लगा रखे थे। परिणाम स्वरूप एक-एक करके तीन बेटे गुरुकुल की शिक्षा पूर्ण कर सन्यासी ऋषि बन गये।

एक दिन चिन्तित होकर महाराजा ने महारानी से कहा कि इस तीसरे बेटे के भी संन्यासी हो जाने से अब आगे वंश कैसे चलेगा और इस राज काज को कौन सम्भालेगा। पतिव्रता मदालसा ने पतिदेव को चिन्तामुक्त करते हुए वचन दिया कि अगला बेटा श्रेष्ठ क्षत्रिय धर्म का पालन करने वाला तथा राजकाज सम्भालने वाला दूंगी। उस देवी ने विधि पूर्वक गर्भधारण कर अपने भवन में नाना प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों, वीर योद्धाओं और वीर महापुरुषों के चित्र लगाये तथा राजनीति एवं शस्त्र निर्माण तथा युद्ध विद्याओं के ग्रन्थों का स्वाध्याय किया। इस प्रकार चौथा बेटा श्रेष्ठ क्षात्र गुण सम्पन्न हुआ।

वीर अभिमन्यु ने भी गर्भावस्था में चक्रव्यूह भेदन ज्ञान सीखा था।

मुनि अष्टावक्र ने गर्भावस्था में ही वेदान्त का ज्ञान प्राप्त कर लिया था।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

आर्य समाज के सफल आन्दोलन : विचारात्मक लेख

— लेखक स्वामी परमानन्द सरस्वती

दिल्ली से प्रकाशित सरस सलिल में "आर्य समाज आन्दोलन असफल क्यों" नामक लेख प्रकाशित हुआ है। जिसमें सत्यार्थ प्रकाश की बातों को तोड़-मरोड़ कर आक्षेप किया गया है। और महर्षि दयानन्द को रूढ़िवादी जन्मना जाति-पाति मानने वाले तथा शूद्र विरोधी माना है जो सर्वथा असत्य है। प्रस्तुत लेख में उन्हीं का उत्तर देने का प्रयास किया गया है।

श्री कंवल द्वारा लिखा गया लेख सरस सलिल अक्तूबर(प्रथम) १९९३ के पृष्ठ २७ पर पढ़ा। सम्पूर्ण लेख को पढ़ कर मुझे तनिक भी आश्चर्य नहीं हुआ क्योंकि मैं जानता हू कि खिस्यानी बिल्ली खम्बा नोचती है और स्वयं अपने नाखून तोड़ कर पश्चाताप करती है। आपने लिखा है कि आर्यसमाज आन्दोलन असफल क्यों हुआ है। कंवल जी आपको यह इलहाम कैसे हो गया कि आर्य समाज असफल हुआ है क्या आप कोई विशेष लेंस का चश्मा लगाते हैं या फिर बुद्धि से काम न लेने की केवल कसम खा रखी है। महर्षि दयानन्द जी ने जिस आन्दोलन के रेखा चित्र बनाए थे आज पूरा विश्व उन्हीं रेखा चित्रो पर रंग भर रहा है जैसे स्वराज्य, दलितोद्धार, अछूतोद्धार शूद्र, नारी को वेदाधिकार, बाल विवाह रोकना, विधवा विवाह करना शुद्धि कर उन्हें अपनाना आदि। दुनिया मे कुछ ऐसे भी प्राणी है जिन्हें सूर्य का प्रकाश नहीं दीखता। उसी प्रकार तुम्हें आर्य समाज की सफलता नहीं दिख रही है तो कोई आश्चर्य नहीं है। अगर देखना चाहते हो तो दुराग्रह के कूप से बाहर निकल कर देखो। वेद कहता है "तम सस्परि पश्यन्त" अन्धकार से उपर उठ कर देखो। आपने लिखा है कि आर्य समाजियों के पास इस सवाल का कोई जवाब नहीं है। देख कर सुरम्या मयूर की सूझी अन्धे को अन्धेरे से दूर की सूझी। होती है। चरितार्थ किया है। दुनिया जानती है कि शास्त्रार्थ में आर्य समाज दिग्विजय किया हुआ है, आज तक उसे कोई परास्त नहीं कर सका फिर तुम्हें ये दिवा स्वप्न कैसे आ गया कि आर्य समाज के पास कोई उत्तर नहीं है। तुमने प्रश्न किया कि दो किस्से है केवल अपने आप में तीसमार खां बन गये। तुम्हारी गर्वोक्ति तो ऐसी है जैसे एक जगह कुछ लोग बैठे थे। वहां पर आकर चद्दर हिन्दुस्तानी ने कहा मेरे प्रश्न का उत्तर दो कि ६ गायों में से २ भैंस निकाल दी जाये तो कितनी गायें बचेंगी। लोगों ने कहा गाय और भैंस विजातीय है इसलिये भैंस का ऋण (माइनस) गाय से नहीं होगा तब चद्दर हिन्दुस्तानी जी ने गर्व से कहा तुम लोगो के पास मेरे प्रश्न का उत्तर नही है। कंवल जी आपको यह जानकारी होनी चाहिए कि जाति और वर्ण पर्यायवाची शब्द नहीं है, ब्राह्मण क्षत्रीय वैश्य और शूद्र ये जाति नहीं है वर्ण है। जाति जन्म से होती है। बनाई नही जा सकती, वर्ण गुणो के आधार पर बनते हैं। प्रश्न और उत्तरों के नियम होते हैं जो आपको शायद विदित नहीं है। पहले प्रतिज्ञा होती है फिर हेतु दिया जाता है, फिर उदाहरण से स्पष्ट किया जाता है। जैसे आर्य समाजी ने प्रतिज्ञा की जाति जन्म से होती है इसमें हेतु दिया समान प्रसव आकृति से फिर उदाहरण दिया जैसे मनुष्य, गाय भैंस बकरी घोड़ा, हाथी ऊंट कुत्तादि ये सब जातियां हैं। वर्ण गुणों के आधार पर बनते हैं। वर्ण का अर्थ है वरण किया हुआ। वरण चुनाव सलेक्शन पर्यायवाची है मनुष्यों के वर्गीकरण को वर्ण और पशुओं के वर्गीकरण को वर्ण या नस्ल कहते हैं। जड़ वस्तुओं मे भी गुणों के आधार पर ही वर्गीकरण होते हैं। जैसे कंवल जी आपने ४ कम्बल अलग-अलग कीमत के खरीदे सस्ते से सस्ता ५० रुपये में और सबसे महगा ४०० रुपये में अब इन चारों के नाम ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र रख लीजिए जब कभी आपको बाहर धूल में बिछाने की जरूरत पड़ेगी तब कौन सा कम्बल बिछायेंगे ५० रुपये वाला या ४०० रुपये वाला ५० रुपये वाला शूद्र वर्ण है ४०० रुपये वाला ब्राह्मण वर्ण है अब आप अपने दृष्टिकोण से निर्णय कीजिए। किसी भी आफिस में जाइये वहां पर भी मनु दृष्टि गोचर होगी, चपरासी, एल० डी० सी०, यू० डी० सी० और आफिसर इन चारों के बिना कार्य सुचारु रूप से संचालन हो ही नही सकता। सारा विश्व मनु की व्यवस्था पर टिका हुआ है। मनुष्य समाज को चार भागों में गुण कर्म के अनुसार विभाजित किया है मनु की सामाजिक व्यवस्था यदि तुम्हें पसन्द नहीं है तो इससे अच्छी और किसी की हो तो बतलाइये अन्यथा लेख लिखनी मत चलिए। बन्धु कंवल जी महर्षि की बात को महर्षि ही समझ सकते है मनु और दयानन्द को समझना तुम्हारे वश का रोग नहीं है। आपने लिखा कि यजुर्वेद ३१/११ में एक मन्त्र में कहा गया है ब्राह्मण ईश्वर के मुख से क्षत्रिय उसके बांह से वैश्य उसके उरु से और शूद्र उसके पैरों से पैदा हुआ है। मन्त्र में कहा गया है। यह हुई तुम्हारी प्रतिज्ञा उसमें तुम्हें हेतु और उदाहरण देकर सिद्ध करना चाहिए था। किसी अर्थ को स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ ५८ में प्रश्न के रूप में उद्धृत कर उत्तर दिया है कि इस मन्त्र का अर्थ जो तुमने किया ठीक नही। यह प्रतिज्ञा करके हेतु दिया कि यह निराकार व्यापक परमात्मा की अनुवृत्ति है फिर उदाहरण देकर गलत सिद्ध किया तत पश्चात् सही अर्थ बताया आगे आप अपने अकल के दिवालियेपन का सबूत देते हुए लिखते है कि इस मन्त्र के अर्थ में महर्षि ने सिर्फ यह सिद्ध करने के लिए रेत की दीवाल खड़ी करने में मेहनत की है कि वर्ण व्यवस्था गुण कर्म पर आधारित है, सवाल यह है कि इस मन्त्र का ही खण्डन करने का साहस क्यों नहीं कर सके।

बन्धु कंवल जी मुझे आपकी बुद्धि पर तरस आता है। खण्डन गलत का किया जाता है, यथार्थ का नहीं जैसे मैं कहू कि सरस सलिल के सम्पादक विश्वनाथ है तो क्या आप खण्डन करके दिखा सकते हैं। आगे आप लिखते हैं कि यदि महर्षि के अर्थ को ही सही मान लिया तो सवाल यह भी पैदा होता है कि जानने का पैमाना क्या था, कि कौन सा गुण किसमें ज्यादा है और कौन सा गुण किसमें कम है। किसने गुणों की पहचान की और कब उन्हें विभिन्न वर्णों के लिए अलग-अलग तय किया गया। आर्य समाजी इस सवाल का जवाब नहीं देते।

बन्धु कंवल जी एच० टू० ओ० का सिद्धांत यदि प्राइमरी के छात्रों को समझाया जाय तो उनकी समझ मे नही आयेगा। इसी तरह यह वेद विज्ञान का विषय है, तुम्हारी समझ मे नहीं आयेगा फिर भी लिख रहा हू कि तुम्हारे न सही दूसरो की समझ में तो आ ही जायेगा। मनुष्य समाज की सर्व प्रथम सामाजिक व्यवस्था मनु ने ही की थी इसके पहले किसी ने नही की थी। मनु ने व्यवस्था यजुर्वेद के ३१.११ के मन्त्र के अनुसार ही की थी। मन्त्र मे मनुष्य शरीर को चार भागो में विभाजित किया गया है, पहला भाग गरदन से ऊपर का दूसरा भाग गरदन से नीचे कमर तक जिसमें हम भी हैं। तीसरा भाग है घुटने तक चौथा घुटने से नीचे तलवे तक। इन चारो भागों का नाम क्रमश: ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र रखा। यह विभाजन गुण कर्म के अनुसार किया। पाच ज्ञान इन्द्रियों में से एक त्वचा समान रूप से चारों भागों में है और पांचो ज्ञान इन्द्रियां सिर मे है और यह भाग सब से ऊपर है इसलिए इसे ब्राह्मण कहा दूसरे हिस्से को क्षत्रिय इसलिए कहा कि यह हिस्सा रक्षा का कार्य करता है, इसमें दो हाथ हैं। तीसरे हिस्से को वैश्य इसलिए कहा कि यह हिस्सा स्तम्भ का कार्य करता है। चौथे को शूद्र इसलिए कहा कि यह पूरे शरीर के भार को वहन करता है। फिर शरीर के गुरुत्व कार्य क्षमता के आधार पर वर्गीकरण किया : शरीर के चार भागो में सबसे छोटा मात्र मस्तिष्क है। ज्ञान का केन्द्र होने से ब्राह्मण और आकार और वजन मे कम होने से यह निर्देशित किया गया है कि ब्राह्मण सम्पत्ति में सबसे कम रहे धन का संग्रह न करे विद्या का ही लेन देन करे और सबका मार्ग दर्शक हो। दूसरे हिस्से को जो सबसे बड़ा और वजनदार है उसे राजा कहा हाथ होने से क्षत्रिय भी कहा और सबसे ज्यादा धनी और सबकी रक्षा करने वाला है। तीसरा भाग पहले और चौथे हिस्से से वजनदार है। मोटा है इसलिए वैश्य कहा यह धन में ब्राह्मण और शूद्र से ज्यादा और राजा से कम रहेगा, पृथ्वी वाणिज्य कर सबका पालन करने से इसे स्तम्भ कहा गया है। चौथा हिस्सा

(शेष पृष्ठ ८ पर)

महर्षि दयानन्द की क्रान्ति

त्रिलोक बजाज

भारत ने कई क्रान्तियां देखी। औद्योगिक क्रान्ति देखी तथा हरी क्रान्ति भी देखी। परन्तु जो वैचारिक क्रान्ति मानवीय क्रान्ति स्वामी दयानन्द ने पैदा की उसे देख कर हमारा मस्तक गौरवान्वित हो उठता है। स्वामी दयानन्द तो भारत के लिए प्रकृति का एक तोहफा थे। एक हीरा थे। निर्भीकता और निडरता का एक पुंज थे। धर्म, आस्था, स्पष्टता और दृढ़ता का एक प्रभावी और फलदायक नेतृत्व थे। नारों का सम्मोहन नहीं, बल्कि एक प्रेरणा स्रोत थे, देश के प्रति देव दयानन्द की प्रतिबद्धता को भुलाया नहीं जायेगा। जीवन के हर क्षेत्र में उनकी पैदा की गई जागरूकता को भुलाया नहीं जा सकेगा। दयानन्द की धर्म के प्रति सत्यनिष्ठा को उनके सर्वस्व को देश के लिए समर्पण को आर्य संस्कृति के मसीहा को उनके समाज सुधारक के रूप को कभी भुलाया नहीं जायेगा।

जिस धर्मवाद को, जातिवाद को, क्षेत्रीयवाद को, भाषायी उग्रवाद को सरकार समाप्त करने की चेष्टा कर रही है उसकी समाप्ति का शुभारम्भ तो स्वामी दयानन्द जी पहले ही कर चुके थे। जिस धर्म की विकृतियों को स्वामी जी ने खत्म करने का बीड़ा उठाया उसे देख कर मनभावुक हो उठता है। जिस मनोवृत्ति में अविश्वास को, अन्धविश्वास को, भय को, द्वेष को और हिंसा को दूर किया, उसे देख कर मन द्रवित हो उठता है। उन्होंने बताया कि वैदिक धर्म संसार के मतों, पन्थो और सम्प्रदायों से अधिक प्राचीन है। वैदिक धर्म तो सृष्टि के आरम्भ से ही चला आ रहा है। उन्होंने बताया कि संसार के अन्य मत पन्थ किसी पीर, मसीहा, पैगम्बर, गुरु महात्मा के द्वारा चलाए हुए हैं, किन्तु वैदिक धर्म तो ईश्वरीय धर्म है, किसी व्यक्ति विशेष का चलाया हुआ नहीं है। स्वामी जी ने अन्धविश्वास से ग्रस्त लोगों को बताया राम, कृष्ण, शिव, ब्रह्मा, विष्णु आदि महान व्यक्ति थे। न ईश्वर थे और न ईश्वर के अवतार थे।

आर्य समाज तो विश्व मानवता को जागृत करने वाला एक आन्दोलन है। इसका कार्य केवल धार्मिक क्षेत्र तक ही सीमित नहीं है। यह कोई साधारण संस्था नहीं है। एक वैचारिक और आध्यात्मिक क्रान्ति की परिचायक है। आर्य समाज की प्रासंगिता आज भी है। इसका स्थान आज भी गौरव पूर्ण है। इसे आज अत्यधिक गतिशील होने की आवश्यकता है।

वर्तमान परिस्थितियों में राजनीतिज्ञों के लिए तो चुनाव ही महानतम है। उन्हें तो उचित तथा अनुचित ढंग से चुनाव जीतने की चिन्ता है। सत्ता की भूख है। परन्तु खेद की बात है कि हमारी कोई भी सरकार गुलामी के अवशेषों को मिटा नहीं सकी टिकटार्थियों को टिकट देने की कोई कसौटी नहीं। प्रत्येक राजनीतिक दल का प्रयत्न है कि हमारा प्रत्याशी जीतना चाहिए चाहे वह सिद्धान्तों और नैतिक मूल्यो के प्रति प्रतिबद्ध न भी हों? लक्ष्य राजनीतिक सत्ता प्राप्ति का है। आर्य समाज चाहे राजनीतिक संस्था नहीं है। परन्तु एक आन्दोलन होने के नाते इस संस्था का उत्तरदायित्व और भी बढ़ गया है। आज की विकट और भयंकरतम परिस्थितियों मे इसे और भी गतिशील होना है।

दुर्भाग्य की बात है कि धर्म के नाम पर लोगो को गुमराह किया जा रहा है। उन्हे धर्म और राजनीति के मुद्दे को लेकर मुगालते में रखा जा रहा हैं। स्वयं आर्यसमाज को भी धर्म और राजनीति की यथार्थता को समझना है। मेरा अपना विचार है कि सरकार किसी के धर्म में, पूजा पाठ में पूजा अर्चना में हस्तक्षेप नहीं करना चाहती। आर्य समाज को तो लोगों को धर्म की असलियत समझानी है। आज धर्म निरपेक्षता का मजाक उड़ाया जा रहा है। वस्तुस्थिति तो यह है कि राजनीति में धर्म के दुरुपयोग को रोकना है। यदि कोई राजनीतिक दल राजनीतिक रथ पर बैठ कर अपनी पार्टी का झंडा लगा कर राम के नाम पर अपना वोट बैंक बनाना चाहता है तो उसे कोई भी धर्म निर्पेक्ष सरकार संवैधानिक सरकार और लोकतान्त्रिक सरकार ऐसा करने की अनुमति नही दे सकती। लोगों की धार्मिक भावनाओं को उत्तेजित करके वोट बैंक बनाने की इजाजत नहीं दे सकती। राजनीतिक महत्वकांक्षाओं की पूर्ति के लिए कोई भी सरकार राजनीतिक दलों को धार्मिक स्थलो में हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं दे सकती। इस संदर्भ में स्वयं आर्यसमाज को आगे आकर लोगो का मार्ग दर्शन करना चाहिए।

मन्दिर मस्जिद के विवाद ने भारत की आशाओं पर तुषारापात किया है। प्रजातन्त्र की जड़ों को खोखला किया है और देश को तबाही के कगार पर आन्तरिक कलह के कगार पर लाकर खड़ा किया है। देश का भविष्य उज्जवल दिखाई नहीं दे रहा है। देश के अन्दर तनाव पैदा किया जा रहा है। आज धर्म के नाम, मन्दिरों और मस्जिदों के नाम पर हिंसा फैलाई जा रही है। साम्प्रदायिकता फैलाई जा रही है। आज बेशरम राजनीतिज्ञों ने अवसरवादी, आदर्शहीन और सिद्धान्तहीन लोगों ने देश की मान्यताओं को समाप्त करके रख दिया है आर्यसमाज को पुनः विचार करना है कि क्या देश के अन्दर मन्दिर मसजिद के नाम पर अराजकता फैलाने की स्वतन्त्रता देनी चाहिए? एक बात से मैं सहमत हूं कि धर्म और राजनीति के विधेयक पास करने की बजाय लोगों को धर्म की यथार्थता का अर्थ समझाया जाए।

१९४७ के पश्चात आज देश की स्थिति बड़ी भयंकर और विकट है। विदेशी शक्तियां काश्मीर को लेकर देश को विखण्डित करने का षड्यन्त्र बना रही है। सबसे बड़ी चुनौती तो देश को संगठित और एकत्रित रखने की है। आवश्यकता तो इस बात की है कि सरकार जो भी कार्यवाही विदेशी शक्तियों के कुत्सित इरादों को नापाक बनाने की रणनीति बनाये उसका पूरा समर्थन किया जाए तथा पूर्ण सहयोग प्रदान किया जाए। स्थिति बड़ी गम्भीर है। इस परिप्रेक्ष्य में आर्य जगत को सरकार का साथ देना है। सावधान रहना है।

मेहली गेट फगवाड़ा, (पंजाब)

आर्य समाज के सफल आन्दोलन

(पृष्ठ ७ का शेष)

सबका वजन वहन करने से शूद्र और पहले हिस्से वजनदार होने से ब्राह्मण से अधिक धनी रहेगा। अब इनका परस्पर सहयोग देखो ब्राह्मण की जरा सी असावधानी से शूद्र को कांटा लगता है। तब क्षत्रिय दौड़ कर उसकी रक्षा करता है। और ब्राह्मण अपनी गलती पर आंसू बहाता है। और जब ब्राह्मण क्षत्रिय पर कष्ट आता है तब उन्हें शूद्र सुरक्षित जगह पर पहुंचा देता है। वर्ण व्यवस्था का उद्देश्य ही समाज को सुचारू रूप से चलाने का है न कि एक दूसरे को ऊंचा नीचा दिखाने का।

शारीरिक व्यवस्था के अनुरूप ही सामाजिक व्यवस्था को मनु ने निर्धारित किया है और आर्य समाज उसी व्यवस्था का प्रचारक है। कंवल जी आप जैसा एक व्यक्ति पतली सी बेल में २० किलो का कद्दू लगा देख कर कहने लगा कि ईश्वर के पास बुद्धि नहीं है। देखो पतली सी बेल पर इतना बड़ा फल लगा दिया और इतने बड़े वट वृक्ष पर छोटा सा फल लगा दिया यह कहते हुए वट वृक्ष के नीचे पहुंच गया तभी ऊपर के वट फल उसकी खोपड़ी मे गिरा तब वह सोचने लगा कि यदि बड़ा फल इसमें लगा होता तो मेरा काम ही तमाम हो गया होता इसलिए ईश्वर ने अच्छा ही किया है। कि इसमें बड़ा फल नहीं है। ठीक इसी तरह न समझने के कारण मनु की व्यवस्था को दोषी मानते हो। मेरी आपको चुनोती है कि यदि तुम्हें अपने बुद्धि बल पर भरोसा है तो सत्या-सत्य के निर्णय के लिए सामने आओ। एक थे चद्दर हिन्दुस्तानी वे अपने बुद्धि विकास के लिए बम्बई में जाकर मस्तिष्क आपरेशन करा कर दिल्ली आ गये एक महिने बाद उन्हें बम्बई के डाक्टर का पत्र मिला लिखा, था कि तुम जल्द बम्बई चले आओ तुम्हारा फिर से आपरेशन होगा। क्योंकि तुम्हारी बुद्धि यहीं रखी है, भूल से फिट नहीं हो पाई थी। तब उसने लिखा कि अब मैं हिन्दुस्तानी से भारती हो गया हूं। मेरे लेख सरस सलिल मे छपने लगे हैं अब मुझे बुद्धि की जरूरत नहीं है। अन्तिम परामर्श है कि बन्धु कंवल भारती की कुर्ती न उतारो बनियान काफी है।

उपाध्यक्ष, उत्कल वैदिक यति मण्डल गुरुकुल आश्रम, आमसेना

गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली एवं उसका निर्माण कार्य

सुश्री डा० प्रज्ञादेवी, वाराणसी

२२ अगस्त के आर्य जगत मे श्री प्रो० जयदेव आर्य के गुरुकुल शिक्षा प्रणाली पर कुछ विचार एव सुझाव लेख पढ कर कुछ बातो पर प्रसन्नता हुई। यथा—'गुरुकुल आपस मे अध्यापन के विषय बाट लें कोई दर्शन शास्त्र कोई व्याकरण शास्त्र आदि यह ठीक ही है। पर ऋषि दयानन्द प्रवर्तित वेदागो के अध्यापन की परम्परा तो सभी गुरुकुलो मे होनी ही चाहिए। विशेष व्यापक किन्हीं विषयो का गहनतम ज्ञान करने के लिए विषयो को बांट लेना उचित ही है।

दूसरी बात जो प्रो० जयदेव जी ने लिखी है वह अ यन्त महत्वपूर्ण है कि "छात्र चाहे थोड़े हों पर अच्छे योग्य हो या उन्हें अयोग्य से योग्य बनाया जाये। यह सत्य है कि गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली के साथ अ नवार्य रूप से छात्रो की आवासीय व्यवस्था का प्रश्न जुड़ा हुआ है। छात्रो की शिक्षा व्यवस्था एव उनके भोजन आच्छादन रहन सहन सरक्षण ये दोनो बातें व्यक्तित्व विकास मे अविनाभाव से सहायक होती है और यह निश्चित है कि भीड़ इकटठी कर लेने पर उपर्युक्त व्यवस्था सुचारू रूप से चल ही नहीं पायेगी। व्यवस्था बहुत से हाथो मे बाटनी पड़ेगी सचालक का नियत्रण उसमे बहुत न्यून हो जायेगा और फिर बालक बालिकाओ मे हम ओज और तेज का आधान आत्मबल का विकास कर पायें यह सम्भव ही नही। प्राय जिन दारिद्र्योपहत निम्न सस्कारो को लिए हुए विद्यार्थी गुरुकुलो मे प्रविष्ट होते हैं उन्हें बहुत बड़े परिश्रम के पश्चात ही चमका कर समाज मे खड़ा किया जा सकता है और यह परिश्रम भीड़-तन्त्र मे होता नहीं। गुरुकुलों मे यदि अनाथ और निधन छात्र आते हैं तो हमारा कर्तव्य हो जाता है कि उच्च विचारों के द्वारा हम उनकी हीन मनोवृत्ति का शोधन करें। परमेश्वर जैसे नाथ के विद्यमान रहते कोई भी अनाथ नहीं है ऐसी भावना छात्रो के मन मे भरनी चाहिये। यही हमारे लाल हैं जवाहरात हैं आशाबिन्दु हैं यह मान कर ही आचार्य को चलना होगा।

आज के सामाजिक परिवेश मे समर्थ बड घरो के छात्र आज यह गुरुकुलो के लिए एक खतरा ही है क्योकि धनिको के बच्चो मे विज्ञान के नाम पर वीडियो कैसेट आदि देख कर इतने निकृष्ट सस्कारो का बीजारोपण इस गम से ही हो रहा है कि उनका सशोधन अति कठिन है। एक गन्दी मछली सारे तालाब को गन्दा करती है। इस विषय मे यही कहावत पर्याप्त है। यह कुसस्कारो मे अपरिवर्तनीय स्थिति को देख लेने पर आचार्य को तत्काल ऐसे छात्र को बहिष्कृत कर देना चाहिए अन्यथा ये सक्रामक कुसस्कार सभी अपरिपक्व विद्यार्थियो मे व्याप्त होगे यह निश्चित है। कहीं से भी किसी कुसस्कार का परस्पर आदान-प्रदान न होने पाये इसीलिए महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश मे यह लिखा कि— छात्र छात्रायें) जब भ्रमण को जाय तब उनके साथ अध्यापक (अध्यापिका) रहे जिससे किसी प्रकार की कुचेष्टा न कर सकें और न आलस्य प्रमाद कर। भीड इकटठी करने वाली कालेजो की प्रवृत्ति को गुरुकुलों मे चला कर निर्माण नही किया जा सकता क्योकि दोनो के उद्देश्य और व्यवस्थायें भिन्न हैं।

अब रहती है छात्रों की सख्या दिखा कर दान मागने की तो मेरा विश्वास है यहा भी कोई बाधा नहीं। एक अनुभवी श्रेष्ठ वक्ता श्रोताओ का रुख जिधर मोड़ता है श्रोता वैसे ही बन जाते है। कथा कहानी हसी की बातें सुन कर कुछ समय के लिए प्रसन्न होने वाले श्रोताओ को भी समझा कर जब गम्भीर बातें बताई जाती हैं तो वे रुचि पूर्वक सुन कर मननशील बनने लगते हैं। इसी प्रकार दानी महानुभावो का भी रूख होता है। परिपक्व क्रियात्मक विचारो को लेकर जब हम दान मागने जायेंगे तो दो चार हठी लोगो को छोड कर सब हमारी बात से प्रभावित होगे। दान तो मिलेगा ही, परमेश्वर न्यायकारी है। वह हमारे कार्यों को देखते हुए क्यो नही सबकी आत्मा मे हमारे सहयोग के लिए उन्हे प्रेरित करेगा ? जो आज नही दे रहे हैं वह भी कल को देंगे। हम परिश्रम पूर्वक अपना कार्य करके जीवन को सफल करें और दानदाता दान देकर अपना जीवन सफल करेंगे। गुरुकुल की शताधिक सख्या बता कर हम लोगो को प्रभावित करें यह केवल दिग्भ्रान्त करने वाली बात है। उत्तम चीज थोडी होती है पर प्रभावशाली होती है यही याचक और दाता को समझना है।

गुरुकुलो मे बहुधा ऐसे दानी देखने को मिलेंगे जो अत्यधिक परिश्रम से उपार्जित अपने जीवन के सार तत्व के रूप में उपलब्ध सम्पत्ति को गुरुकुलीय पवित्र शिक्षा पर विश्वास रखते हुए यहा अर्पित करते हैं। उनके रोम रोम मे यह भाव समाया होता है कि इस सम्पत्ति से गगन मे चमकते हुए सितारो की तरह यहा से छात्र तैयार हो। उनके इस भाव की सुरक्षा कर पाना कठिन कर्त्तव्य होता है। दूसरी ओर बडी बड़ी फैक्ट्रियो के मालिको का प्रभूत दान हैं इन दोनो में अन्तर है जिसमें समन्वय सदुपयोग का औचित्य बिठाकर गुरुकुल सस्थाओ को चलाना ही होगा।

ऋषि दयानन्द प्रदर्शित शिक्षा प्रणाली ही हमारा लक्ष्य होना चाहिए। इस विषय में अष्टाध्यायी की प्राचीन सुवैज्ञानिक प्रक्रिया ही युक्तियुक्त है। नवीन सिद्धान्त कौमुदी आदि क्रम सर्वथा हानिकर होने से त्याज्य है। अन्य आधुनिक विषयो से कोई विरोध नही है, सर्वांगीण विकास हेतु यथावश्यक वे रहने चाहियें किन्तु वर्जित अश्लील काव्यादि ग्रन्थो का समावेश कदापि गुरुकुलो मे नही होना चाहिए क्योकि सदाचार सुरक्षा गुरुकुलो का अनिवार्य ध्येय हैं। बोल चाल मे सस्कृत भाषा की प्रवीणता जितनी आवश्यक है उतनी ही शास्त्र मर्मज्ञता भी आवश्यक है अत दोनो ओर प्रयासरत रह करके ही आगे बढा जा सकता है॥

वैंदिक संपति छप रही है

पृष्ठ सख्या ७००, मूल्य १२५ रुपये

३० नवम्बर १९९३ तक अग्रिम धन देने पर ८० रु० मे

आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान प० रघुनन्दन शर्मा द्वारा लिखित वैदिक सम्पति २०×३०×८ साइज मे शीघ्र प्रकाशित हो रही है। ३० नवम्बर १९९३ तक मूल्य अगाऊ भेजने पर प्रति पुस्तक ८०) रु० होगा, डाक व्यय २०) रु० प्रति पुस्तक अलग से होगा। अपनी प्रति आरक्षण हेतु मनीआर्डर अथवा चैक या बैंक ड्राफ्ट डा० सच्चिदानन्द शास्त्री मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली के पते पर भेजें।

—सम्पादक

विटामिनों का खजाना टमाटर

टमाटर बहुत लाभप्रद तरकारी है। इसके सेवन से रक्त विकार दूर होते हैं तथा दस्त साफ आते हैं। बच्चों के सूखा रोग में ताजे टमाटरों का रस नियमित प्रातः सायं पिलाने से बहुत शीघ्र लाभ होने लगता है। बेरी-बेरी गठिया, एग्जिमा की भी यह श्रेष्ठ दवा है।

टमाटर में जीवन पोषक तत्व बहुतायत में मिलते हैं। ताजे एवं उत्तम पके हुए टमाटर में पानी ९२.८, कार्बोहाइड्रेट ४·५, प्रोटीन १.९, खनिज पदार्थ ०.७, वसा ४.१, कैलशियम ०.०२, फासफोरस ०.०४ लोहा २.४ मि० ग्राम विटामीन ए ३२० मि० ग्राम विटामीन बी ४० मि० ग्राम विटामी सी ३२.२० मि० ग्राम प्रतिशत तथा साइट्रिक एसिड प्रचुर मात्रा मे प्राप्त होते हैं इसमें आर्कोलिक तथा गैलिक एसिड नाम मात्र ही पाए जाते है। कच्चे टमाटर मे विटामिन बी २३ मि० ग्राम विटामिन सी ३१·३ मि० ग्राम मिलता है। टमाटर के छिलके तथा छिलके के समीपस्थ गूदे में विटामिन ए० बहुत अधिक होता है।

टमाटर में कैलशियम तत्व अन्य फलों एवं तरकारियों की अपेक्षा अधिक पाया जाता है। यह तत्व हड्डियो को मजबूत बनाता है। प्रोटिन, पोटास, फासफोरस, गंधक, क्लोरिन इत्यादि तत्व भी अन्य तरकारियों से अधिक प्राप्त होते हैं। टमाटर में पाए जाने वाले विटामिनो में यह खासियत होती है कि ये अन्य फल तरकारियों के विटामिनो के समान अग्नि ताप से (६० प्रतिशत की ऊष्णता पर भी) नष्ट नहीं होते। इसमें उपस्थित खनिज तत्वो से रक्त की सफाई होकर रक्त शुद्ध बनता है।

टमाटर में कृमिनाशक गुण भी उपस्थित होता है। नियमित प्रातःकाल निराहार एक टमाटर पर काली मिर्च व सेंधा नमक का चूर्ण बुरक कर सेवन करने से पेट के कीड़े निकल जाते हैं।

भोजन मे नमक की मात्रा कम करते हुए, यदि पके हुए लाल टमाटरों का रस प्रातः एवं रात्रि में दो तोला की मात्रा में थोड़े से गुनगुने पानी में मिला कर कुछ दिन पिलाया जाय तो दाद, विचर्चिका, फोड़ा, फुन्सी इत्यादि चर्म विकारो को दूर होने मे सहायता मिलती है।

टमाटर उत्तम सौंदर्य प्रसाधक भी है। फटी हुई बिवाइयो पर एक पके हुए टमाटर का रस तथा इतनी ही मात्रा में ग्लिसरीन को मिला कर धीमे-धीमे मलने से बिवाइयो के दर्द में आराम मिलता है। चेहरे पर होने वाले कील मुहासो तथा काले धब्बो को दूर करने के लिए टमाटर के एक टुकड़े को उन स्थानो पर आहिस्ता-आहिस्ता रगड़े। तत्पश्चात गरम जल से चेहरा धोए। कुछ दिनो के नियमित प्रयोग से ही चेहरा लावण्य युक्त बन जाएगा।

—वैद्य अनुराग विजयवर्गीय

संजय दत्त पर तस्करी का हथियार लेने का आरोप

बम्बई, ४ नवम्बर (भाषा) फिल्म अभिनेता संजय दत्त पर तस्करी का हथियार लेने का आरोप है। १२ मार्च को बम्बई में हुए बम विस्फोटों के सिलसिले में दाखिल आरोप पत्र में यह बात कही गई। पुलिस के संयुक्त आयुक्त एम. एन. सिंह ने आज यहां संवाददाताओं को बताया कि संजय दत्त किसी खास बम विस्फोट के मामले में तो शामिल नहीं है लेकिन इन विस्फोटों के लिए बनाई गई व्यापक साजिश से वह कहीं न कहीं जुड़ा है।

नवयुग निर्माण

(पृष्ठ ६ का शेष)

नेपोलियन की माता के गर्भावस्था में सैनिक परेड देखते रहने से वह एक महान योद्धा बना। इस प्रकार के अनेकों उदाहरण इतिहास में हैं।

उपरोक्त पंक्तियों में हमने वैदिक संस्कारों की महानता के वर्णन किए।

संसार की अन्य संस्कृतियों में, किसी ने नारी में आत्मा ही नहीं मानी, किसी ने पैर की जूती कहा, पुरुष को एक साथ चार-चार विवाह करने की छूट दी और जब जी चाहे तलाक दे दो। स्त्री को पुरुष के मनोरंजन व भोग की वस्तु बतलाया।

भारत में इन विदेशी संस्कृतियों के प्रभाव एवं विदेशी शासन के कारण वैदिक संस्कृति की अपार हानि हुई है तथा पिछले २०-२५ वर्षों से ईसाई व अरब देश वाले सिनेमा व दूरदर्शन वालों को करोड़ों रुपया भेंट व उत्कोच देकर हमारी इस पावन संस्कृति को मिटाने पर लगे हैं। आज हम अपने ही घरों में देख रहे हैं कि माता-पिता विदा होकर, मम्मी-डैडी/पापा (पाप+आ) आ गए हैं। विदेशी भोगवादी संस्कृति के कारण सर्वोच्च पद को प्राप्त सृष्टि की ब्रह्मा नारी, परिवार की सम्राज्ञी, गृह लक्ष्मी नारियों से, (टैस्ट द्वारा गर्भ में कन्या होने पर) हजारों गर्भपात प्रतिदिन कराए जा रहे हैं। सैंकड़ों देवियां दहेज, बलात्कार व अन्य कारणों से आत्महत्या करती हैं। श्रद्धा की नारी आज विज्ञापन की सामग्री बन गई है। सह शिक्षा के कारण भ्रष्टाचार में लिप्त हो गई हैं, तथा संस्कृति का अर्थ नाचना व गाना समझा जाने लगा है।

हमारी सरकार भी विदेशी संस्कृति के प्रभाव से भारतीय संस्कृति को मिटाने में सहयोग दे रही है। वेद में प्रत्येक मनुष्य को सात मर्यादाओं के पालन का आदेश दिया है। इनमें से एक का भी उलंघन करने वाला पापी होता है और पापी को जीवन में सुख नहीं मिलता।

वेद की सात मर्यादायें ये हैं—१—शराब, २—मांस का सेवन न करना, ३—जुआ न खेलना. ४- व्यभिचार न करना, ५—झूठ न बोलना, ६—चोरी न करना तथा ७—कटु वचन न बोलना। इनमें अधिकांश का उल्लंघन सर्वाधिक हमारी सरकार कर रही है और यथा राजा तथा प्रजा की कहावत चरितार्थ हो रही है।

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास में बड़े स्पष्ट शब्दों में राजनीति में भाग लेने वाले सभासदों राजमन्त्रियों, प्रधानमन्त्री और राष्ट्रपति को भी आत्मदर्शी, योगाभ्यासी होने का आदेश दिया है। उक्त आदेश का पालन करने पर ही देश सर्वांगीण उन्नति कर सकेगा। अतः प्रत्येक नागरिक ऋषि के उक्त आदेश को ध्यान में रखकर ही चुनाव के अवसर पर चरित्रवान व्यक्ति को अपना मत देवे।

महर्षि के बनाये नियम 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना और पढ़ाना सुनना और सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है" को सभी व्यक्ति परम धर्म मानकर अपने दैनिक जीवन में पालन करें तो हमारी सारी बुराईयां दूर होकर हम लौकिक एवं पारलौकिक सभी सुखों को प्राप्त कर सकते हैं।

वैदिक संस्कृति ही संसार की श्रेष्ठतम संस्कृति है। इसे अपनाकर ही संसार स्वर्गधाम बनाया जा सकता है। वैदिक अष्टांग योग पद्धति (यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि) के केवल प्रथम दो अंगों ५ यम (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह) और ५ नियम (शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान) जो भारतीय संस्कृति के आधार स्तम्भ माने जाते हैं, इनमें से प्रथम ५ यमों का पालन करने से ही समस्त संसार, जो आज विनाश के कगार पर खड़ा है, बचाया जा सकता है। तथा यम-नियम दोनों को आचरण में लाने से व्यक्ति आत्मदर्शन एवं प्रभुदर्शन प्राप्त करके जीवन मुक्त होकर परमानन्द की प्राप्ति कर सकता है।

भारत के युवकों और युवतियों ! वैदिक संस्कृति भारत की आत्मा है। जैसे आत्मा के बिना शरीर निष्प्राण हो जाता है, उसी प्रकार इस वैदिक संस्कृति के बिना भारत राष्ट्र निष्प्राण हो रहा है। अपनी इस महान संस्कृति के सर्वस्व वेदों का स्वाध्याय, योग जीवन पद्धति, वर्णाश्रम व्यवस्था तथा १६ संस्कारों को अपने दैनिक व्यावहारिक जीवन में धारण करने से ही आप श्रेष्ठ सन्तति प्राप्त करके परिवार, समाज, एवं राष्ट्र की उन्नति करते हुए नवयुग का निर्माण कर सकोगे।

'मातृ कन्या विद्यतेऽयनाय'

चैक हिन्दी में लिखें

हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिए हम एक काम यह कर सकते हैं कि अपने चैक हिन्दी में लिखें। एक चैक दसियों हाथों से गुजरता है। यदि चैक हिन्दी में होगा तो हिन्दी के पक्ष में अनुकूल वातावरण बनेगा। इसमें कोई अतिरिक्त परिश्रम अथवा व्यय भी नहीं है। कृपया अपने साथियों में प्रचारित करें कि वे हिन्दी में ही चैक लिखें। अभी बैंकों में यदि उनके हस्ताक्षर हिन्दी में नहीं है तो वैसे ही रहने दें धीरे-धीरे हिन्दी में अपने हस्ताक्षरों को सैट करके बैंकों में वे बदलवा सकते हैं।

(जगन्नाथ)
संयोजक, राजभाषा कार्य
केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद,
एक्स वाई-६८, सरोजनी नगर,
नई दिल्ली-२३

आर्य समाज गोविन्द नगर कानपुर का महोत्सव

कानपुर—आर्य समाज, स्त्री आर्य समाज एवं आर्य कन्या इन्टर कालेज गोविन्द नगर का संयुक्त महोत्सव समाज के प्रधान तथा कालेज के संस्थापक प्रबन्धक श्री देवीदास आर्य की अध्यक्षता में कालेज प्रांगण में मनाया गया। पहले दिन विशाल शोभा यात्रा आर्य समाज मन्दिर से निकाली गयी जिसमें आर्य नर-नारियों के साथ चार हजार छात्रायें हाथों में ओ३म् पताका लेकर बाजारों में आर्य समाज तथा वैदिक धर्म के जयघोषों से आकर्षक वातावरण उत्पन्न कर दिया।

बालगोविन्द आर्य
मन्त्री आर्यसमाज गोविन्द नगर कानपुर

आर्य समाज गांधीनगर में धर्मार्थ औषधालय का शुभारम्भ

आर्य समाज गांधीनगर दिल्ली-३१ के तत्वावधान में धर्मार्थ औषधालय का शुभारम्भ सभा प्रधान श्री सूर्यदेव जी के कर कमलों के द्वारा इस आर्य समाज के वार्षिकोत्सव दिनांक २६-९-९३ के अवसर पर प्रारम्भ कर दिया गया है।

ओमप्रकाश आर्य गुप्त
मन्त्री आर्य समाज मन्दिर गांधीनगर दिल्ली-३१

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०७४/९३   सार्वदेशिक साप्ताहिक   (२१-११-१९९३)   बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० यू (G)९३
R N 626/57   Licensed to post without prepayment licence No. U (G) 93 Post in N.D.P.S.O.on [18-19-11-1993

कश्मीर और अमरीकी नीति

(पृष्ठ ४ का शेष)

वार्ता के कई दौर चले। पर कुख्यात आई एस आई की गतिविधिया बिना किसी रोक टोक के चलती रहीं। बावजूद इस तथ्य के कि अमरीकी प्रशासन ने पाकिस्तान को आतंकवादी राष्ट्र घोषित करने की धमकी दी थी।

वाशिंगटन की गोष्ठी

इस वर्ष के आरम्भ मे वाशिंगटन तथा नई दिल्ली मे 'अमरीका तथा भारत' विषय पर गोष्ठी आयोजित की गई। इन गोष्ठियों के फलस्वरूप दोनो देशो को एक दूसरे के करीब आने का मौका मिला।

प्रसिद्ध सैन्य विशेषज्ञ प्रोफेसर स्टीफन फिलिप्स कोहेन ने इस उप-महाद्वीप मे अमरीका के हितो की चर्चा की। यहा पर यह बताना गलत नहीं होगा कि कोहेन रीगन प्रशासन मे दक्षिण एशिया के सलाहकार थे।

श्री कोहेन की राय थी कि अमरीका का दक्षिण एशिया में कोई खास हित नहीं है पर उसका इसमे निश्चित रूप से हित स्वार्थ जुड़ा हुआ है कि इस क्षेत्र मे लोकतन्त्र तथा आर्थिक उदारीकरण की नीति पर यहा के विभिन्न देश चलें।

सार्क और सारी की तुलना

प्रो० कोहेन की राय थी कि, 'दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय पहल के अन्तर्गत अमरीका, जापान और रूस जर्मनी तथा ग्रेट ब्रिटेन की दिलचस्पी हो तो उन्हे भी ले लिया जाए। ऐसी किसी भी पहल मे जापान की भूमिका काफी महत्वपूर्ण होगी। क्योंकि जापान इस उप-महाद्वीप के देशो को अमरीका से भी अधिक मदद देता है। पर, इस पूरी प्रक्रिया के दौरान ऐसा नहीं होना चाहिए कि 'सारी' 'सार्क' आन्दोलन को ही अप्रासंगिक बना दें।'

—ये सभी देश वर्तमान हालातो को ध्यान में रखकर इस क्षेत्र में शांति के लिए कार्य करें।

—अमरीका जापान को उसकी औद्योगिक स्थिति के कारण गुप्तचर सुविधा दे, जिससे क्षेत्रीय परमाणु कार्यक्रमों का पता चलता रहे। इस पूरी प्रक्रिया मे समन्वय आवश्यक है।

—सारी के कामकाज को कई छोटी समितियों में बांट देना चाहिए। जो भारत पाकिस्तान रिश्तो के विभिन्न कोणों पर अध्ययन करें। इसमे परमाणु अप्रसार, कश्मीर की स्थिति, व्यापार, पर्यावरण जैसे मुद्दे पर विचार-विमर्श करने के लिए समितिया हो। इसके अलावा दोनो देशो के लोग, समाचार पत्र तथा किताबें दोनो देशो मे आराम से आ जा सकत हो।

—सारी के ही सहयोग से क्षेत्रीय परमाणु अप्रसार तथा कश्मीर के सवाल पर भारत पाकिस्तान मे वार्ता हो। ये दोनो ही मुद्दे एक दूसरे से काफी जुड़े हुए है।

—सारी का एक महत्वपूर्ण कार्य यह भी हो सकता है कि इसकी प्राथमिक और आस्था वाले राष्ट्र भारत और पाक को क्या प्रोत्साहन देते हैं और क्या नहीं देते। इस बाबत कुछ अमरीकी कानूनो में फेरबदल करने की भी जरूरत है। अमरीकी कानून इस तरह से बने हुए हैं जिससे मानवाधिकारो की रक्षा सभव हो जाती है। बहरहाल, सारी के देशो से भारत और पाकिस्तान को किसी भी तरह की मदद मिलने का आधार यही होना चाहिए कि ये दोनो देश विभिन्न सवालो पर अपनी किस तरह की नीति रखते हैं।

पर सवाल उठता है कि क्या भारत और पाकिस्तान 'सारी का समर्थन करेंगे ?' 'इसमे शक है कि इस्लामाबाद ऐसी किसी भी अन्तरराष्ट्रीय पहल का समर्थन करेगा जिसके फलस्वरूप भारत और पाकिस्तान के बीच बातचीत शुरू हो। ऐसा वह दो कारणों से करेगा। पहला, पाकिस्तान को पूरा यकीन है कि भारत ऐसे प्रस्तावो को अस्वीकार कर देगा। दूसरा, कश्मीर के सवाल पर उसकी स्थिति ज्यो की त्यो ही रहेगी। सभव है कि भारत 'सारी' को अपना समर्थन दे। वह तो पहले ही कई हल्के-फुल्के प्रस्तावो पर अमल कर चुका है। भारत मानता है कि अमरीका से करीब होने की स्थिति मे वह पाकिस्तान की कश्मीर मे का जा रही हरकतो को उजागर कर सकता है इसके अलावा वह पाकिस्तान को आतंकवादियों को समर्थन देने वाला देश भी घोषित करवा सकता है।'

पर, सवाल उठता है कि वाशिंगटन को ऐसे प्रयास करने से क्या मिलेगा और वह ऐसे प्रयास क्यो करेगा ? पहला, उसकी भारत से सामरिक सहयोग की सभावना मजबूत होगी। दक्षिण एशिया के अन्दर और बाहर दोनो। दूसरा, पाकिस्तान से कुछ क्षेत्रो मे सहयोग की सभावना पैदा होगी। तीसरा पाकिस्तान अपने परमाणु कार्यक्रमो को टाल देगा। चौथा, दोनों देश किसी गम्भीर सकट में नही फसेंगे।

यदि अभी सक्रिय नहीं हुआ तो अमरीका शीघ्र ही सक्रिय हो जाएगा यह बताने के लिए कि सुश्री राफेल ने कश्मीर पर क्स यू ही बयान दे डाला। पर, यह अपने आप में निश्चित रूप से दुखद बात होगी यदि सारी योजना को कम करके आंका गया।

('हिन्दुस्तान १०-११-९३ से साभार)

आर्य समाजों के कार्यक्रम

—आर्य समाज टाण्डा (फैजाबाद) का १०२वां वार्षिकोत्सव २५ नवम्बर से २९ नवम्बर १९९३ तक मिश्रीलाल आर्य महिला विद्यालय टाण्डा, फैजाबाद में यजुर्वेद पारायण यज्ञ के साथ मनाया जा रहा है।

—वैदिक योगाश्रम (गुरुकुल) शुक्रताल, मुजफ्फर नगर (उ० प्र०) का २१वां उत्सव २६ से २९ नवम्बर १९९३ तक धूमधाम से मनाया जा रहा है। अनेक महात्मा, विद्वान आदि इस अवसर पर पधारेंगे।

खाली पेट व खाली जेब

(पृष्ठ १ का शेष)

परिणामस्वरूप गत १५ सितम्बर १९९३ को भारत के विदेश राज्य-मन्त्री श्री रघुनन्दनलाल भाटिया ने एक पत्र गृहमन्त्री श्री एस० बी० चवन को लिखा कि इन विस्थापितो के भारत मे स्थायी निवास के निवेदन भेजे जा रहे हैं। पत्र मे यह भी कहा गया कि इन लोगो का वीजा जो १९ सितम्बर १९९३ को समाप्त हो गया है, की अवधि को तब तक के लिए आगे बढा दिया जाए, जब तक इनके विषय मे कोई निर्णय न हो जाए। इस पत्र की एक प्रति अम्बाला पुलिस अधीक्षक को भी आवश्यक कार्रवाई हेतु भेजीगई। तत्पश्चात् ८ अक्तूबर९३ को केन्द्रीय गृहविभाग ने गृहसचिव हरियाणा व पुलिस अधीक्षक अम्बाला का एक वायरलेस सन्देश भेजा कि इन लोगों को तब तक भारत मे ही रहने की अनुमति दी जाए, जब तक मामले का निर्णय नही हो जाता तथा यह भी कहा गया उनसे सम्बन्धित सभी कागजात तुरन्त केन्द्रीय गृहमन्त्रालय को भेजे जाए। इसके बाद २९अक्तूबर को भारत सरकार के अण्डर सचिव श्री आर० के० बिन्दल नें भी अम्बाला के पुलिस अधीक्षक को एक पत्र लिखा कि केन्द्रीय सरकार द्वारा कोई भी निर्णय लिए जाने तक इन पाक नागरिको को भारत मे ही रहने की अनुमति दी जाए।

इतना सब कुछ होने के बावजूद इन लोगो का कहना है कि उन्हे अम्बाला पुलिस प्रशासन द्वारा भारत मे रखने मे आनाकानी की जा रही है तथा जबरदस्ती पाकिस्तान भेजे जाने की कोशिश की जा रही है। इन लोगो का कहना है कि पाकिस्तान जाने से बेहतर वे भारत मे ही मर जाना चाहते है। नगर की समाजसेवी सस्थाओ की भी यही माग है कि इन लोगो को भारत मे स्थायी निवास के बारे मे सरकार शीघ्र ही पक्की व्यवस्था करे। (पंजाब केसरी १६-११-९३ से)

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन दिल्ली-२ से प्रकाशित।